Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाकवि आ० ज्ञान सागर

बृहद् संस्कृत-हिन्दी शब्द कोष

उदयचन्द जैन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाकवि आ० ज्ञान सागर

बृहद्
संस्कृत-हिन्दी शब्द कोष

भाग-३

(य से ह)

प्रो० उदयचन्द्र जैन

न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन

दिल्ली (भारत)

For Private and Personal Use Only

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया ज़ा सकता। सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं।

प्रकाशक :
न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन
५८२४, (समीप शिव मंदिर) न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७
फोन : २३८५१२९४, २३८५०४३७ ५५१९५८०९
E-mail : newbbe@indiatimes.com.

प्रथम संस्करण : २००६

आई.एस.बी.एन. : ८१-८३१५-०४८-९ (set)

मुद्रक :
जैन अमर प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली-७

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषय सूची

आत्म कथ्य	(v)
संक्षेपिका	(xi)
वर्ण अ से ह तक	१-१२५०
पारिभाषिक शब्द	१२५१-१२५८
भौगोलिक शब्द	१२५९-१२६३
नामवाचक शब्द	१२६४-१२८३
विशिष्ट शब्द	१२८४-१२९६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्म कथ्य

पंचविधमाचारं चारंति चारयन्तीत्याचार्याः चतुर्दशविद्यास्थानपारगाः एकादशाङ्गधरा।

पांच प्रकार के आचार का जो आचरण करते हैं, उनके अनुसार चलते हैं, वे आचार्य हैं। वे चौदह विद्या स्थानों में पारगामी एवं ग्यारह अंगों के धारी होते हैं। वे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य से परिपूर्ण बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विचारधारा से युक्त सूत्र का व्याख्यान करते हैं। स्वयं स्वाध्याय में लीन दूसरों को भी स्वाध्याय की ओर लगाते हैं। उनके श्रुत से प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग के विषय प्रकाश में आते हैं, जो श्रुत कहलाते हैं। वे श्रुत जिन वचन हैं, जिन्हें आगम, जिनवाणी, सरस्वती, आप्त वचन, आज्ञा, प्रज्ञापना, प्रवचन, समय, सिद्धांत आदि कहा जाता है।

श्रुत के धारण करने वाले श्रुतधराचार्य कहलाते हैं। वे प्रबुद्ध होने से प्रबुद्धाचार्य, उत्तम अर्थ के ज्ञाता होने से सारस्वताचार्य आदि कहलाते हैं। उनकी रचनायें तीर्थ बन जाती हैं। क्योंकि वे तीर्थंकर की वाणी हैं जिन्हें आचार्य गुणधर, आचार्य धरसेन, आचार्य पुष्प दन्त, आचार्य भूतवलि, आचार्य मंछू, आचार्य नागहस्ती, आचार्य वज्रयस, आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य वट्टकेर, शिवार्य, स्वामी कार्तिकेय आदि प्राकृत मनीषियों के साथ-साथ संस्कृत के सूत्रकार, काव्यकार, कथाकार, पुराण काव्य प्रणेता आदि ने सारस्वत मूल्यों की स्थापना की।

तावार्थसूत्र के सूत्रकर्त्ता उमास्वामी ने दस अध्यायों में वीतराग वाणी के समग्र पक्ष को प्रस्तुत कर दिया। आचार्य समन्तभद्र की भद्रता के आचार विचार आदि के साथ-साथ दार्शनिक मूल्यों की स्थापना के लिए आप्तमीमांसा जैसे ग्रंथ को लिखकर संस्कृत दार्शनिक साहित्य को पुष्ट किया। उन्होंने स्वयंभूस्त्रोत, स्तुतिविद्या, युक्त्यानुशासन, रत्नकरण्डश्रावकाचार जैसे सारगर्भित ग्रन्थों की रचना की। वे कवि हृदय सारस्वताचार्य हैं जिन्होंने ई० सन् द्वितीय शताब्दी में जीवसिद्धि, प्रमाणसिद्धि, तावविचार, कर्म आदि पर पर्याप्त प्रकाश डाला। आचार्य सिद्धासेन ने अनेकान्तसिद्धि के लिए सन्मतिसूत्र ग्रंथ की रचना की और उन्हीं ने कल्याण मंदिर स्त्रोत काव्य की रचना की। वे नय और प्रमाण की व्यापक दृष्टि को लिए हुए उक्त ग्रंथों को मूल्यवान् बनाते हैं।

आचार्य पूज्यपाद को आचार्य देवनंदी भी कहा गया वे एक कुशल व्याकरणकार हैं। उन्होंने जैनेन्द्र व्याकरण की सूत्रबद्ध रचना की। उनकी तावार्थ सूत्र पर लिखी गई वृत्ति सर्वार्थसिद्धि के नाम से प्रसिद्ध है वे योग, समाधि, आदि के विषय को आधार बनाकर समाधितन्त्र एवं इष्टोपदेश की रचना करते हैं। पात्र केशरी का पात्र केशरी स्त्रोत भावपूर्ण है। आचार्य जोइन्दु प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश के काव्यकार हैं, उनका परमात्म प्रकाश (अपभ्रंश) योगसार, श्रावकाचार, आध्यात्मसंदोह, सुहासिततंत्र जैसे संस्कृत रचनाएं भी प्रसिद्ध हैं। आचार्य मानतुंग का भक्तामर स्त्रोत जन-जन में प्रिय है। आचार्य विमल सूरि का प्राकृत का काव्य पउमचरियं रामायण के विकास में योगदान प्रदान करता है। आचार्य रविसेन ने भी राम से संबंधित पद्म चरित्र नामक ग्रंथ की रचना की, जो संस्कृत में सर्वबद्ध है। आचार्य जहानदीना वरांगचरित्र भी चरित्रकाव्य की परंपरा का सुन्दरतम् अलंकृत ग्रन्थ हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य अकलंकदेव न्यायशास्त्र के विशेषज्ञ माने जाते हैं। जिन्होंने जैन न्याय की यथार्थता को संस्कृत में प्रस्तुत किया। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ इस बात के प्रमाण हैं। लघीयस्त्रय (स्वोपज्ञवृत्तिसहित) न्यायविनिश्चय (स्वोपज्ञवृत्तियुक्त) सिद्धिविनिश्चयसवृत्ति, प्रमाण संग्रहसवृत्ति, तत्त्वार्थवार्तिक सभाष्य, अष्टशती (देवागम-विवृत्ति) आचार्य वीरसेन की धवला टीका, जय धवला टीका, सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। आचार्य जिनसेन ने भगवान ऋषभदेव से संबंधित जो रचना की है वह आदि पुराण के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने संस्कृत में पार्श्वाभ्युदय नामक महाकाव्य की रचना की है यह नवीं शताब्दी का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

आचार्य विद्यानंद परीक्षा प्रधानी आचार्य माने जाते हैं जिन्होंने दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। आप्तपरीक्षा, प्रमाण परीक्षा, पत्र परीक्षा, सत्यशासनपरीक्षा विद्यानंद महोदय, श्रीपुर पार्श्वनाथ स्त्रोत, तावार्थ श्लोक वार्तिक अष्टसहस्त्री युक्त्यनुशासनालंकार आदि जैसे दार्शनिक ग्रंथों का महत्वपूर्ण स्थान है। आचार्य देवसेन का दर्शनसार भावसंग्रह, आराधनासार, तावसार, लघुनयचक्र, आलापपद्धति आदि ग्रंथ संस्कृत साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

जैन संस्कृत काव्य परम्परा

संस्कृत काव्य परम्परा राष्ट्रीय मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी हुई परम्परा है। जिसमें वैदिक परंपरा और श्रवण परंपरा इन दोनों ही परंपराओं का महत्वपूर्ण स्थान है।.वेद उपनिषद् आदि के उपरान्त, रामायण, महाभारत आदि महाप्रबंधों की रचना हुई, जिन्होंने विषय, भाषा, भाव, छन्द, रस, अलंकार आदि के साथ-साथ मूल कथा को गतिशील बनाया। रामायण, महाभारत आदि के महाप्रबंध को जो काव्य शैली प्रदान की उसे कवि भाष अश्वघोष, कालिदास, भारती, माघ, राजशेखर आदि ने काव्य-शैली को गति प्रदान की। उनके प्रबंध महाप्रबंध बने।

संस्कृत काव्य परंपरा का संक्षिप्त विभाजन

१. **आदिकाल**-ई० पू० से ५ ई० प्रथम शती तक।

२. **विकासकाल**-ई० सन् की द्वितीय शती से सातवीं शती तक।

३. **ह्रासोन्मुखकाल**-ई० सन् की आठवीं शती से बारहवीं शती तक।

संस्कृत काव्य परंपरा के विविध चरणों में माघ, हर्षवर्धन, वाणभट्ट, मल्लिनाथ, आदि कवियों के काव्यों ने प्रकृति का सर्वस्व प्रदान किया। उनके कवियों ने अनेक महाप्रबंध लिखे, तथा महाकाव्य भी अनेक लिखे हैं। इसी तरह चरित काव्य, खण्ड काव्य, कथा-काव्य, चम्पूकाव्य आदि ने काव्य गुणों को जीवन्त बनाया।

जैन संस्कृत काव्य परम्परा

महावीर के पश्चात् सर्वप्रथम जैन मनीषियों ने आगम ग्रंथों की रचना की जो प्राकृत में है। प्राकृत के साथ जैनाचार्यों ने संस्कृत में भी अनेक रचनायें की हैं। जो कवि प्राकृत में रचना करते थे वे संस्कृत के भी जानकार थे परंतु उन्होंने संस्कृत में रचनायें प्रायः नहीं की, परंतु जो संस्कृत कवि थे उन्होंने प्रायः संस्कृत में ही रचनायें की, और कुछेएक रचनायें प्राकृत में की, प्रारंभिक में बारह अंग, उपांग, चौदह पूर्व, जैसी रचनाएं प्रसिद्ध हुई इसके अनंतर संस्कृत के प्रथम सूत्रकार आचार्य उमा स्वामी ने संस्कृत की सूत्र परंपरा को गति प्रदान की जो काव्य जगत् में कवियों के मुखारबिन्द की अनुपम शोभा बनी। आचार्य समन्तभद्र जैसे सारस्वताचार्य ने संस्कृत में न्याय, स्तुति और श्रावकों के आचार योग्य काव्यों की रचना की। इसके अनन्तर संस्कृत में ही आचार्य पूज्यपाद, आचार्य योगेन्द्र, आचार्य मानतुंग, आचार्य जिनसेन, आचार्य विद्यानन्द, आचार्य देवसेन, आचार्य अमितगति, आचार्य अमरचन्द्र, आचार्य नरेन्द्रसेन आदि ने जो धारा प्रवाहित की वह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काव्य परम्परा को गतिशील बनाने में सहायक हुई। पुराणकाव्य और महाकाव्य दोनों ही जहां विकास को प्राप्त हुये वहीं अनेक चरित काव्य भी काव्य की रमणीयता से युक्त पौराणिक और ऐतिहासिक क्विेचन को करने में समर्थ हुये।

डॉ० नेमीचन्द्र शास्त्री ने काव्य-विकास यात्रा के तीन चरण प्रतिपादित किये हैं।

(क) चरितनामांत महाकाव्य

(ख) चरितनामांत एकान्त काव्य

(ग) चरितनामांत लघु काव्य

चरित्रनामांत नाम से युक्त अनेक काव्य रचनायें हुई, जटासिंह नन्दी का वरांगचरित, रविसेण का पद्मचरित, वीरनंदी का चन्द्रप्रभुचरित, असग कवि का शान्तिनाथ चरित, वर्धमान चरित, महाकवि वादिराज का पार्श्वनाथ चरित, महाकवि महासेन का प्रद्युम्नचरित, आचार्य हेमचन्द्र का कुमारपाल चरित, गुणभद्र का धन्यकुमार चरित, उत्तर जिनदत्त चरित, नेमिसेन का धन्यकुमार चरित, धर्मकुमार का शाभद्रचरित, जिनपाल उपाध्याय का सनत कुमार चरित, मलधारी देवप्रभ का पांडवचरित, मृगावतीचरित, माणक चन्दसूरि का पार्श्वनाथ चरित, शान्तिनाथ चरित, सर्वानंद का चंद्रप्रभुचरित, पार्श्वनाथ चरित, विनयचंद्र का अजितनाथ चरित, पार्श्वचरित, मुनिसुव्रतचरित आदि कई ऐसे महाकाव्य हैं जो चरित प्रधान हैं।

विक्रम की चौदहवीं शताब्दी में मलधारी हेमचंद्र ने अनेक चरित ग्रंथों की रचना की। जिनमें नेमिनाथ चरित प्रमुख है। इसी तरह भट्टारक वर्धमान का वरांगचरित, कमलपभ का पुंडरीकचरित, भावदेवसूरि का पार्श्वनाथचरित, मुनिभद्र का शांतिपथचरित एवं चन्द्र तिलक का अभयकुमार चरित, शास्त्रीय महाकाव्य के लक्षणों से युक्त हैं जो पुराण कथा से परिपूर्ण प्रबंध की काव्यगत विशेषताओं को लिये हुए है।

संस्कृत काव्य की परंपरा में अकलंक, गुणभद्र, समन्तभद्र, मिमरचंद, काव्य महाभारत के कवि का काव्यत्व अनुपम है। इसके अतिरिक्त भी अनेक काव्य महाकाव्य लिखे गये। महाकवि हरिश्चंद्र का धर्मशर्माभ्युदय वैदिक परंपरा के संस्कृत काव्य रघुवंश, कुमारसंभव एवं किरात् आदि उस समय का प्रतिनिधित्व करते हैं। कवि हरिचंद्र का जीवंधर चंपू महाकवि असग का वर्धमान चरित भी महत्त्वपूर्ण है। वादीभसिंहसूरि की क्षत्रचूणामणि सूक्ति शैली का काव्य हैं। जिनसेन का आदिपुराण, हरिवंश पुराण आदि भी महत्वपूर्ण है। शिशुपालवध की शैली पर आधारित जयंतविजय का भी महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुपाल ने स्तुति काव्यों की विशेष रूप से रचना की आदिनाथ स्त्रोत, अंबिका स्त्रोत, नेमिनाथ स्त्रोत, आराधना गाथा आदि भक्ति प्रधान रचनायें हैं। इसमें कवि भारती के निरात आजुनेय की काव्य शैली भी है।

संधान ऐतिहासिक और स्तुति अभिलेख आदि काव्य भी लेन परम्परा में लिखे। द्विसंधान में कवि धनंजर ने कथा और काव्य दोनों का समावेश किया जो महाकाव्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। सप्तसंधान के रचनाकार मेघ विलयमणि है उनकी अन्य रचनाऐं भी है, जिनमें देवनन्द महाकाव्य, शांतिनाथ चरित, दिग्विजय महाकाव्य, हस्तसंजीवन के साथ-संस्कृत युक्ति प्रबोध नाटक मिलते हैं। नेमिदूत समस्यापूर्ति काव्य है। जैन मेघदूत कवि मेरुगुप्त की प्रसिद्ध रचना है। इसी तरह शीलदूत चरित्रगणि की रचना है। प्रबंध दूत के रचनाकार वादिसूरी हैं।

जैन काव्य परम्परा में द्वितीय, तृतीय शताब्दी से लेकर अब तक अनेक रचनाएं लिखी जा रही है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जैन जगत् के प्रसिद्ध महाकवि ज्ञानसागर् ने अनेक प्रकार की रचनाएं की। उनमें जयोदय, वीरोदय, सुदर्शनोदय, भद्रोदय जैसे महाकाव्य दयोदयचम्पू, सम्यंक्त्वसारशतक, मुनि मनोरंजनाशीति, भक्तिसंग्रह, हितसम्पादक आदि कई काव्य हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाकवि ज्ञानसागर सिद्धांतवेदता के साथ-साथ प्रबंध काव्य में निपुण एवं सुलझे हुए महाकवि हैं उनके काव्यों की संस्कृत साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है क्योंकि उनमें संस्कृत काव्य कला के पक्ष आदि विद्यमान हैं। उनकी ज्ञान-साधना में सिद्धांत एवं प्रबंध का महत्वपूर्ण स्थान है।

संस्कृत काव्य के आलोक में संस्कृत नाटकों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जैन जगत में विक्रांत कौरव जैसा नाटक प्रसिद्ध है। उसी संस्कृत में भास, कालिदास का शाकुन्तलम्, चन्द्रोदय, अविमारक, उत्तररामचरित, प्रतिमानाटकम् आदि अनेक नाटक संस्कृत और प्राकृत का प्रतिनिधित्व करते हैं। काव्य की रमणीयता में उनके शब्द क्या है उनका अर्थ क्या है एवं उनके क्या महत्व है यह तो ज्ञान-संस्कृत हिन्दी कोष से ही ज्ञात हो सकेगा। इस ज्ञान-संस्कृत शब्द-कोष में जैन संस्कृत काव्यों एवं वैदिक संस्कृत काव्यों के कुछ एक उद्धरण भी दिये गये हैं।

यह महाकवि आ० ज्ञान सागर संस्कृत हिन्दी शब्द-कोष सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण बनाया गया है। इसमें अधिक से अधिक ज्ञान के आधारभूत शब्दों को सम्मलित किया गया है। यह वैदिक एवं जैन दोनों ही विद्याओं के शब्दों से संबंधित कोश ग्रंथ है। इसे साहित्य के अनेक विषयों के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया परन्तु यह सीमित शब्दों का शब्द कोश केवल शब्द कोष नहीं है अपितु विविध शब्दार्थ का शब्द-कोष भी है। कुछ स्थानों पर शब्द चयन के साथ-साथ व्युत्पत्ति, परिभाषा, शब्द विश्लेषण, अर्थ गाम्भीर्य आदि को भी उचित स्थान दिया गया, जिससे इसकी उपादेयता अवश्य ही शब्द के अर्थ में सहायक बनेगी। इस कोश में सामान्य शब्द के अर्थ के साथ-साथ विशिष्ट अर्थ बोधक शब्दों को भी महत्व दिया गया।

शब्द संकलन

संस्कृत के स्वर और व्यंजन दोनों ही को क्रमबद्ध रखकर उन्हें उपयोगी बनाया गया है। इसमें सीमित शब्दों के उपरांत भी शब्द योजना को विशिष्टत अर्थों के साथ उद्धरण शब्द, पर्यायवाची शब्द आदि भी संख्याक्रम के अनुसार दिये गये है। यद्यपि संस्कृत में कई कोश ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। उनका अपना महत्वपूर्ण स्थान है। उनके क्रम युक्त शब्द में आचार्य के वों काव्य के शब्द संस्कृत हिन्दी शब्द कोश में समाहित हो गये हैं! इसे आवश्यक एवं अधिक उपयोगी बनाने के लिए वैदिक और जैन दोनों ही संस्कृतियों के शब्दों को स्थान दिया गया है। यहां यह ध्यान देने योग्य विचार है कि इसमें विस्तार की अपेक्षा संक्षिप्त में ही विषय विवरण को दिया गया है। इसके शब्द संग्रह में प्राय: प्रचलित शब्दों को स्थान दिया गया।

कोश का शब्द प्रवष्टियां एवं भाषागत विशेषताएं भी कुछेक संकेत के साथ ही दिये गये हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, कृदन्त, विशेषण, तद्धित आदि कितने ही प्रयोग कोश को महत्वपूर्ण बनाते हैं। इसलिए आवश्यकतानुसार कुछ ही स्थानों पर शब्द और अर्थ के चयन में उनकी सहायता दी गई है।

ज्ञान संस्कृत-हिन्दी शब्द कोश में आचार्य ज्ञानसागर के परम शिष्य आचार्य विद्यासागर और आचार्य विद्यासागर के ही प्रबुद्ध विचारक मुनि पुंगव सुधासागर जी, क्षुल्लक गंभीर सागर, क्षुल्लक धैर्यसागर एवं अन्य प्रबुद्ध विचारकों के परम आशीष से इस शब्द कोष को गति दी गई। यह कहते हुए मुझे अत्यंत गौरव का अनुभव हो रहा है कि जिन शब्द कोशकारों के शब्द और अर्थ के चयन करने में सहयोग मिला वह अत्यंत ही उपकारी है। जैनेन्द्र सिद्धांत कोश, जैन लक्षणावली, संस्कृत-हिन्दी शब्द कोश, राजपाल हिन्दी शब्दकोश, प्राकृत हिन्दी शब्द कोश आदि के संपादकों का मैं अत्यंत आभारी हूं। इसके तैयार करने में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के दर्शन विभाग के प्रोफेसर के० सी० सोगानी, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग में प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन, सह आचार्य हुकुमचन्द्र जैन एवं अन्य विभागीय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहयोग से इसे इस रूप में प्रस्तुत किया गया। जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में इसे गतिशील बनाया उनका मैं हृदय से आभारी हूं।

संस्कृत जगत् के वे सभी काव्यकार पूज्य हैं जिनकी विविध कृतियों को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं उनके शब्द सागर में प्रवेश नहीं कर पाया। परंतु यदा कदा जो कुछ भी उनसे ग्रहण किया या उन ग्रंथ कर्त्ताओं या उन संपादकों के पाठों को स्थान दिया। इसलिए मैं इस सहायता के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

आभारी हूं हितैषियों का, सहयोगियों का और अत्यंत आशीष को प्राप्त हुआ मैं आचार्य विद्यानंद के चरणों में बारंबार नमोस्तु करता हूं और यही भावना व्यक्त करता हूं कि उनका आशीष तथा मुनि पुंगव सुधासागर की सुधामयी वाणी इस महाकवि आ० ज्ञान सागर संस्कृत हिन्दी शब्द कोश की ज्ञान गंगा को गतिशील बनाये रखेगी। विशेष आभार है उन व्यक्तियों का जिन्होंने मुझे बहुत सम्मान दिया और उत्तम सुझाव भी दिये। इस शब्द में गागर से सागर तक की यात्रा गृह आंगन में ही हुई जिसमें सहयोगी बने घर के सदस्य ही। श्रीमती डॉ० माया जैन ने गृहणी के उत्तरदायित्व के साथ-साथ इसे उपयोगी बनाने में भी सहयोग किया। पुत्री पिऊ जैन एम- एस. सी०, बी० एड०, एवं प्राची जैन के अक्षर विन्यास ने भी गति प्रदान की। मैं इस शब्द-कोश के प्रकाशक श्री सुभाष जैन, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन, दिल्ली का भी आभार व्यक्त करता हूं। जिन्होंने इसे छापकर जनोपयोगी बनाया। मैं, साहित्य मनीषियों से निवेदन करता हूं कि वे अपने सुझावों से इसे उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे ताकि आगे आने वाले संस्करण में यदि उनको समावेश किया गया तो अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव करूंगा।

२ अप्रैल, २००५

–डॉ० उदयचंद्र जैन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संक्षेपिका

अमर०	अमरकोष
जयो०	जयोदय महाकाव्यम्
जयो० म०	जयोदय महाकाव्यम्
तत्त्वा०	तत्त्वार्थसूत्र
त०वा०	तत्त्वार्थ राजवार्तिक
त०वा० श्लोक	तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक
दयो०	दयोध्यम्
धव०पु०	धवला पुस्तक १ से १६
न्या०	न्यायदीपिका
प्रमे०	प्रमेयरत्नमाला
भ० सं	भक्तिसंग्रह
मू० मूला०	भगवती आराधना
मुनि-	मुनिरञ्जनासीति
मू०/मूला०	मूलाचार
वि० लोचन	विश्वलोचन कोष
वीरो०	वीरोदयम्
सुद०	सुदर्शनोदय
समु०	समुद्रदत्त चरित्र
सम्य०	सम्यक्त्वशतकम्
स०सि०	सर्वार्थसिद्धि
हि०सं०	हितसंपादक

मूल शब्द

पु०	पुलिंग
नपुं०	नपंसुकलिंग
स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग
क्रि०वि०	क्रिया विशेषण
वि०	विशेषण
अव्य०	अव्यय
अक०	अकर्मक
सक०	सकर्मक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

य

यः (पुं०) अन्तस्थ स्थान। यकार। (सुद० १ जयो० १/६६)

यः (पुं०) [या+ड] ०गाड़ी, यान।
०वायु, हवा।
०यश।
०जौव। यो वातयशसोः पुंसि इति च विश्वलोचनः। यशः कीर्ति, ०प्रेम। (जयो०)

यकन् (नपुं०) जिगर।

यकृत् (नपुं०) [यं संयमं करोति कृ क्विप् तुक् च] जिगर।

यकृतकोषः (पुं०) जिगर को ढकने वाली झिल्ली।

यकृतात्मिका (स्त्री०) एक कीट विशेष।

यकृतोदरं (नपुं०) जिगरकी वृद्धि।

यक्षः (पुं०) [यक्ष्यते-यक्ष्+घञ्] ०देव जाति, देव प्रकार। (वीरो० १३/२०)
०व्यन्तदेवों का एक भेद, व्यन्तरा किन्नर किं पुरुष महोरगः गांधर्वयक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः। (त०सू० ४/११)
०लोभ की प्रचुरता वाले। लोभभूयिष्ठाः भाण्डागारे नियुक्ताः यक्षाः। (धव० १३/३९१)

यक्षकर्दमः (पुं०) कपूर, लेप।

यक्षग्रहः (पुं०) यक्ष बाधा।

यक्षधूपः (पुं०) गूगल, लोबान।

यक्षरसः (पुं०) मादक पेय।

यक्षराज् (पुं०) कुबेर।

यक्षरात्रिः (स्त्री०) दीपावली।

यक्षवित्तः (पुं०) कुबेर सदृश धन।

यक्षिणी (स्त्री०) [यक्ष्+इनि+ङीप्] यक्ष जाति की स्त्री।
०कुबेर की पत्नी।
०एक अप्सरा।

यक्षी (स्त्री०) यक्षिणी।

यक्षेन्द्रः (पुं०) इन्द्र। (जयो० २६/६४) ०देवाधिपति।

यक्ष्मः (पुं०) [यक्ष्+मन्] क्षयरोग राजरुक्, राजरोग। (जयो०वृ० ६/७५)

यक्ष्मन् देखो ऊपर। ०राजयक्ष रोग। ०क्षयरोग।

यक्ष्मग्रहः (पुं०) क्षय रोग का आक्रमण।

यक्ष्मग्रस्त (वि०) क्षयरोगी।

यक्ष्मणं (नपुं०) राजरुक्, राजरोग। (जयो० ६/७५)

यक्ष्मरुज् (नपुं०) क्षयरोग।

यक्ष्मिन् (वि०) [यक्ष्म+इनि] क्षयरोग से पीड़ित।

यज् (अक०) पूजा करना, सम्मान करना।
०आहूति देना। ०अचर्ना करना, ०यज्ञ करना।

यजः (पुं०) याम, याग, यज्ञ, पूजा। 'यज' इति व्यत्पयेन विपर्ययेणाथवा कृत्वापि स 'यज' इत्येव भवति तस्मात् सा यजनेतत्पराभूदिति। (जयो० २२/५८)

यजत्रः (पुं०) [यज+अत्र] अग्निहोत्री। ०पुरोहित।

यजनं (नपुं०) [यज्+ल्युट्] यज्ञ, याग, पूजा, अर्चना। (जयो० ११/३१)
०यज्ञ भूमि, पूजास्थल।

यजमान (पुं०) [यज्+शानच्] क्रतुकर्त्री, यज्ञकर्ता, आतिथेयी, संरक्षक। (जयो० १२/७२)

यजिः (स्त्री०) [यज्+इनि] यज्ञकर्ता, यज्ञक्रिया।

यजुस् (नपुं०) [यज्+उसि] मन्त्रपाठ।

यजुर्विद् (वि०) यज्ञ ज्ञाता, यज्ञ की पद्धति जानने वाला।

यजुर्वेदः (पुं०) चार वेदों में द्वितीय वेद। (दयो० २४) (जयो० २९)

यजुर्वेदाध्यायः (पुं०) यजुर्वेद का अध्याय। (दयो० २९)

यज्ञः (पुं०) [यज् भावे नङ्] याग, मख।
०हवन। (दयो० २९)
०पूजा कार्य। (वीरो० २२/१६)

यज्ञकर्तृ (वि०) इष्ट समागम कर्ता इष्टिमान्। (जयो० ३/१४)

यज्ञकर्मन् (वि०) यज्ञकार्य वाला।

यज्ञकल्प (वि०) यज्ञ की प्रकृति।

यज्ञकीलकः (पुं०) यज्ञ की खूंटी।

यज्ञकुण्डं (नपुं०) हवनकुण्ड। (जयो०वृ० १६/८२)

यज्ञकृत् (वि०) यज्ञकर्ता, अनुष्ठान करने वाला।

यज्ञक्रतु (वि०) यज्ञकार्य वाला।

यज्ञघ्नः (पुं०) यज्ञ में बाधा।

यज्ञदक्षिणा (स्त्री०) पूजक के लिए उपहार/भेंट।

यज्ञदीक्षा (स्त्री०) यज्ञ का अनुष्ठान।

यज्ञद्रव्यं (नपुं०) यज्ञ की वस्तु।

यज्ञपति (पुं०) यजमान, पूजन कराने वाला।

यज्ञभागः (पुं०) यज्ञोपहार।

यज्ञभुज् (पुं०) देव, देवता।

यज्ञभूमिः (स्त्री०) यज्ञ स्थान। यागवनि। (जयो०वृ० १२/२५)

यज्ञभृत् (पुं०) विष्णु।

यज्ञभोक्तृ (पुं०) विष्णु।

यज्ञमंत्रं (नपुं०) हवनमन्त्र, यागसूत्र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यज्ञयष्टिः (स्त्री०) पवित्र यष्टि।

यज्ञवल्लिः (स्त्री०) सोम की लता।

यज्ञशाला (स्त्री०) हवनस्थान, पूजास्थल।

यज्ञसिद्धिः (स्त्री०) यज्ञपूर्ति, पूजा की पूर्ति, पूजन समाप्ति।

यज्ञसूत्रं (नपुं०) पवित्रसूत्र। (सुद० ३/१३) यज्ञोपवीत। (वीरो० १८/४०)

यज्ञस्थलः (नपुं०) पूजन स्थान अष्टवटभूवि। (जयो०२/२५)

यज्ञाङ्गं (नपुं०) यज्ञ भाग।

यज्ञार्थ (वि०) यज्ञ के निमित्त। (वीरो० १/३०)

यज्ञानुष्ठानं (नपुं०) यज्ञ क्रिया। (जयो० ८/२)

यज्ञानुष्ठायिन् (वि०) यज्ञ कर्ता। (वीरो० १४/३)

यज्ञिका (वि०) यज्ञ सम्बंधी, यज्ञपरक।

यज्ञिकः (पुं०) देव।

यज्ञिकदेशः (पुं०) यज्ञस्थान।

यज्ञीय (वि०) यज्ञ सम्बंधी।

यज्ञोपकरणं (नपुं०) यज्ञपात्र, पूजा की थाली।

यज्ञोपवीतं (नपुं०) जनेऊ (समु० ३/४२) यज्ञसूत्र। यज्ञोपवीतेऽपि सति, व्रतं पाल्यं मुमुक्षुणा। (हित० २९)

यज्वन् (वि०) [यज्+क्वनिप्] यज्ञ करने वाला, पूजा करने वाला, अर्चना करने वाला, अनुष्ठाता, अनुष्ठान कर्ता।

यत् (अक०) यत्न करना, प्रयत्न करना। यतते (जयो०११/६८)
०प्रयास करना, उद्योग करना।
०आतुर होना।
०श्रम करना, उद्योग करना।

यत् (सक०) सताना, दुःख देना, परेशान करना।
०लौटाना, फेर देना।

यत (भू०क०कृ०) [यम्+क्त] ०दमन किया हुआ, नियंत्रित, पराभूत।
०सीमित, संयत, मर्यादित।

यतं (नपुं०) एड़ लगाना।

यतनं (नपुं०) [यत्+ल्युट्] चेष्टा, प्रयत्न।

यतं (नपुं०) जो।

यतर (वि०) जो।

यतस् (अव्य०) [यद्+तसिल्] ०जहां से, जो कि, जिस जगह से।
०चाहे जहां से। कि (समु० ३/३२) क्योंकि, चूंकि, इसलिए। (सुद० ८१) सहजा स्फुरति यतः समुनस्ता (वीरो० १५/५८)
०तत्पश्चात्। (सुद० १००)
०जो कि, जो भी, जैसा। (समु० १/२०)

यतात्मन् (पुं०) संयतात्मा। (वीरो० १८)

यतिः (पुं०) साधु, श्रमण। (मुनि० ९१) दुर्भावं प्रयतेत रोद्धुमिति यो रौद्रं तथार्तं यति। (मुनि० ३३)
०संयत (जयो० १/८०) संयमी। (जयो० २७/५३)
०यते प्रयत्ने संयम-योगेषु यतमानः प्रयत्नवान् यति। (जैन० ९४) यतिर्यतिनिपुंसि स्त्री पाठ भेद विकारयोरिति। (जयो० ६/२५)

यतिः (स्त्री०) प्रबंध, रोक, नियंत्रण।
०रोकना, ठहरना, आराम।
०दिग्दर्शन, विश्राम। (जयो० १/९४)

यतिचरित्रं (नपुं०) एक देवालय। (जयो० ९/५२)

यतित (वि०) [यत्+क्त] चेष्टा की गई, यत्न किया गया। (सुद० १/२२)

यतित्व देखो ऊपर। प्रयत्न किया गया।

यतिस्थितिः (स्त्री०) मुन्याचारपालक। (जयो० २१/७)
०श्रमणोचित स्थिति।

यतिदोषः (पुं०) विश्रान्ति विच्छेद।

यतिधर्मः (पुं०) आगम निर्दिष्ट अनुष्ठान।

यतिनायकः (पुं०) योगीश्वर। (सुद० १२६) ०आचार्य।

यतिपति (पुं०) मुनिनायक, मुनिराज, (जयो० १/९५१) यतेर्विश्रामस्य पतिः क्रियारहितः। (जयो० १/९४)

यतिराड (पुं०) आचार्य। ०योगीश्वर, ०यतीश्वर।

यतिराज् (पुं०) मुनिराज। (भक्ति० ६)

यतीन्द्रः (पुं०) मुनिन्द्र, ऋषिवर। ऋतीशः (सुद० ११५) (जयो० १८/१०)

यतीन्द्रभूपः (पुं०) मुनराज। (सुद० १२०) ०आचार्य।

यतीश्वरः (पुं०) आचार्य मुनिराज। (सुद० ४५)

यतोऽत्र (अव्य०) क्योंकि। (सुद० १३०)

यत् (सर्व०) यः, स्त्री, या, नपुं यं। देवी च यं धीयचयम्। (सुद० ६८) 'ये ये रणन्नूपुरसाररसा' (वीरो०) सुदमनोऽपि यस्य वो जातु। (सुद० १३२) यस्या मुखे कौसुमसंविकास (सुद० २/८) या नाम पात्री। (सुद० २/१०) यस्मिन् (सुद० १/२६) यया (सुद० ३/२०) येषां (सुद० ११७)

यत्किञ्चित् (अव्य०) जो कुछ भी। (सुद० ८३) (वीरो० ४/२६, समु० ३/३९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यत्किल (अव्य०) जो कि। (दयो० ३५) (जयो० १/२२)

यत्तु (अव्य०) जो भी। (जयो० २/१०)

यत्नः (पुं०) [यत् भावे नङ्] ०प्रयत्न (सुद० ३/४९, सुद० ८/१८)

०चेष्टा प्रयास। असम्भवोऽपि सम्भाव्य सता यत्नेन जायते। (दयो० ४६)

०मनोयाग, दत्तचित्त, मेहनत।

०श्रम, परिश्रम, उद्योग।

०पीड़ा, कष्ट।

यत्नगत (वि०) प्रयत्न को प्राप्त हुआ।

यत्नजाति (वि०) पीड़ा जनक उत्पत्ति।

यत्नतापस् (वि०) उद्योगशील तपस्वी। ०तपस्यारत साधक।

यत्नवती (वि०) प्रत्यत्नशील। (जयो० २१/४६) ०उद्यमशील।

यत्नवान् (वि०) उद्यमशील, श्रम युक्त। (वीरो० ७/४)

यत्प्रयुक्तिः (स्त्री०) उद्यमशीलता। (वीरो० २२/१३)

यत्र (अव्य०) [यद्+त्रल्] जहां, जिस स्थान पर, जिस जगह। 'यत्र गीयते गीतं प्रायः' (सुद० १३८) यत्र गंधोदसंसिक्ता (जयो० ३/८३)

०जब, जैसा कि-यत्र मनाङ् न कला। (सुद० ७६)

०चूंकि, क्योंकि। 'यत्रोदयं याति किलायेमायः' (भक्ति०२५)

यत्रत्थ (वि०) [यत्र+त्यप्] जिस स्थान का, जिस स्थान पर रहता हुआ।

यत्र तत्र तु (अव्य०) जहां तहां भी। (सुद० ९४)

यत्र न (अव्य०) जिस स्थान पर नहीं। (सुद० १९)

यत्राथ (अव्य०) जहां इस तरह से। (जयो० ८/२७)

यत्रापि (अव्य०) जहां भी। (वीरो० १८/४३)

यत्रैतादृक् यत्रापि (अव्य०) जहां वैसा ही।

यत्रैव (अव्य०) जहां भी, जिस स्थान पर ही। (सुद० ११७)

यथा (अव्य०) [यद् प्रकारे थाल्] ०जैसा कि-जैसे (सुद० २/४९)

०जिस भांति का।

०जिस तरह का।

०जैसी, जिस तरह की-'बन्धो यथा स्यात्स्थिति भागमंच। (सम्य० १००)

०उदाहरण, दृष्टान्त रूप में प्रयुक्त होने वाला अव्यय। यौवनेनाद्भुतं तस्याः स्यात्कारेण यथा गिराः। (जयो० ३/४३)

यथाकदापि (अव्य०) जब कभी भी। (समु० ३/२१)

यथाकालः (पुं०) ठीक समय, उचित समय।

यथाकृत (वि०) जैसा मान लिया गया।

यथाक्रमं (अव्य०) ठीक क्रम, परम्परानुसार से, अनुक्रम से। (समु० ६/३५)

यथाक्रमेण (अव्य०) उचित नियम से।

यथाख्यातचरितं (नपुं०) छद्म अस्थ जिन का चरित्र। (सम्य० १३१)

यथाक्षम (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना संभव।

यथाजात (वि०) तद्रूप उत्पन्न हुआ।

०अज्ञानी, जड, दिगम्बर। (समु० ३/१)

यथाजातपदः (पुं०) दिगम्बर वेश (समु० ६/३६) 'यथाजातो बाह्यभ्यन्तरपरिग्रह चिन्ताव्यावृतः' (जैन० ९४०)

यथाज्ञानं (अव्य०) बुद्धि के अनुसार।

यथाज्येष्ठं (अव्य०) पद के अनुसार, वरिष्ठता के अनुसार।

यथातथ (वि०) सत्य, सही, परिशुद्ध, खरा, सम्यक्, समीचीन।

यथातथं (नपुं०) व्याख्यान, विवरण, सूक्ष्म कथन।

यथातिथिः (स्त्री०) मरणासन्न। (जयो०७/१६)

यथादिक् (अव्य०) सभी दिशाओं में।

यथानिर्दिष्ट (वि०) वास्तविक निर्देश युक्त।

यथान्यायं (अव्य०) उचित पद्धति से, यथार्थ नीति से।

यथापद (अव्य०) यथास्थान। (जयो० २/८५)

यथापुरं (अव्य०) जैसा कि पहले था, जैसा कि पूर्व अवसरों पर था।

यथापाक (वि०) यथा भाव विपाक। (जयो० २८/७०)

यथापूर्व (वि०) पहले जैसा।

यथापूर्वकं (अव्य०) क्रम से, परम्परा से।

यथाप्रतीति (वि०) ०वास्तविक प्रतीति, ०यथासमय, ०यथासम्भव। (जयो० २/१२०)

यथाप्रदेशं (अव्य०) उपयुक्त स्थान में, उचित स्थान में।

यथाप्रधानं (अव्य०) स्थिति के अनुसार।

यथाप्राप्त (वि०) अनुरूप, परस्थिति के अनुकूल।

यथाप्रार्थितं (अव्य०) प्रार्थना के अनुकूल।

यथाबलं (नपुं०) अत्यधिक शक्ति के साथ/शक्ति के अनुरूप।

यथाभागं (अव्य०) प्रत्येक अंश में, समस्त प्रदेशों में।

यथाभाग्यविपाक (वि०) यथापाकलि। (जयो० २८/७०)

यथाभिरुचिः (स्त्री०) स्वेच्छानुसार, अपनी इच्छा के अनुरूप।

यथाभूतं (अव्य०) जो कुछ हो चुका उसके अनुसार। सत्यतः यथार्थतः।

यथामुखीन (वि०) ठीक सामने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यथायथं (अव्य०) यथा योग्य, जैसा कि यथोचित, नियमित, क्रम से।
यथायुक्तं (अव्य०) यथायोग्य, यथोचित, शक्ति के अनुसार।
यथायोग (अव्य०) यथोचित, नियमित, उचित, सही।
यथारुक् (अव्य०) रुचि के अनुसार।
यथारुचं (अव्य०) रुचि के अनुकूल। (सुद० २१)
यथारुचि (अव्य०) स्वेच्छानुसार।
यथारूपं (अव्य०) रूप के अनुसार, दर्शन के अनुरूप।
यथार्थ (वि०) वास्तविक, स्वाभाविक। (जयो० १६/४२)
यथार्थतः (अव्य०) स्वाभाविकतः। 'संपद्येत यथार्थतो जनुषि सत्येवं मुदा मथ्यते। (मुनि० ३१)
यथावत् (अव्य०) ठीक ठीक, ज्यों का त्यों, यथोचित। (वीरो० २२/८) विधि, नियम के अनुसार। सम्यक् प्रकारेण (जयो० १/४४) श्रीविग्रहे स्निग्धतनोर्यथावत्सोऽन्तः स्थसम्यग्वलिनोऽनुभावः। (सुद० २/४३)
यथावसर (अव्य०) यथानुरूप। (जयो० २/१००)
यथाविधि (अव्य०) विधि के अनुसार, ठीक ठीक, यथोचित। (सुद० ११४)
यथाविभवं (अव्य०) अपनी आय के अनुपात से।
यथावृत्त (वि०) जैसा कि हो चुका। ०किया गया।
यथाशक्यं (अव्य०) यथासंभव। (दयो० १/२५)
यथाशक्ति (अव्य०) शक्ति के अनुसार, यथासंभव। (दयो० ४८) 'निरीहत्वमनुध्यायेद्यथाशक्त्यर्तिहानये' (सुद० १२५) परोपकरणं पुण्याय पुनर्न किमिति यथाशक्ति सञ्चरतु। (सुद० १००)
यथाशक्त्या (अव्य०) शक्ति के अनुसार।
यथा शास्त्रं (अव्य०) ०धर्मशास्त्रों के अनुसार, ०जैसा कि धर्मशास्त्रों में कहा गया।
यथाश्रुतं (अव्य०) जैसा सुना गया।
यथाश्रुति (अव्य०) श्रुति के अनुसार, परम्परानुसार।
यथासंख्यं (अव्य०) ०संख्यानुसार। ०(नपुं०) अलंकार विशेष। (जयो०वृ० ३/१)
यथासंख्येन (अव्य०) संख्या के अनुरूप।
यथासंभव (वि०) शम्य, समर्थ, यथाप्रतीति। (सम्य० १३५, जयो०वृ० २/१२०)
यथासमयं (अव्य०) उचित समय पर, समयानुसार। (दयो० ६१)
यथासुखं (अव्य०) इच्छानुसार, आराम से, सुखपूर्वक, परिस्थितियों के अनुकूल।

यथास्थानं (अव्य०) सही, उचित स्थान।
यथास्थित (वि०) वास्तविकता को प्राप्त हुआ।
यथास्यात् (अव्य०) जैसा हो। (जयो०वृ० १५/४९)
यथास्वं (अव्य०) अपने अपने क्रम से।
यथास्वशक्ति (अव्य०) शक्ति के अनुरूप। (समु० १/१०)
यथेच्छ (अव्य०) इच्छानुसार, चाहा गया हो जैसा।
यथेच्छा (अव्य०) कामना के अनुसार, चाहा गया हो। (जयो० १/२०) इच्छानुसार (वीरो० ५/२१)
०इष्टं, प्रिय, मनोज्ञ। (जयो०वृ० ३/१६)
०अभिप्राय सहित। (दयो० ९५)
०जितनी आवश्यकता हो उतना। (जयो० १/६६)
०मन भरकर, अभिप्रेत।
यथेष्ट (अव्य०) पर्याप्त बहुत सा। (समु० ९/२५)
यथेष्टवस्तु (वि०) पर्याप्त सामग्री। (जयो० १/१७)
यथैव (अव्य०) जैसा कि-जिस प्रकार। (सुद० १/९)
यथोक्त (वि०) पूर्वोक्त, जैसा कि कहा गया।
यथोक्तकाल (वि०) काल के अनुसार प्रतिपादित। (दयो० २२)
यथोज्झित (वि०) विधिवत् त्यागा गया। (मुनि० १७)
यथोचितं (अव्य०) उपयुक्त, उचित, योग्य, ठीक ठीक, उपयुक्त, ०यथाशम्य (जयो० २/९१) ०न्यायोपार्जित। (जयो० २/९१)
यथोत्तरं (अव्य०) उत्तरोत्तर। (सुद० २/४६) यथोत्तरं पीवरसत्कुचोरः स्थलम्। (सुद० २/४६)
०नियमित क्रम से, यथाक्रम से। (सुद० ११/८०) (वीरो० २/४६)
०अग्रेऽग्र, आगे आगे। (जयो० ५/९३) यथोत्तरं शक्ततया विचित्रं (भक्ति० १०) नमामि तत्पञ्चविधं चरित्रम्। (भक्ति० १०)
यथोत्साहं (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, पूरी शक्ति से।
यथोदय (अक०) समुद्य काल, पूर्वोक्त समय। (जयो० १५/२) यथोचित। (जयो०२/७७)
यथोद्देश्यं (अव्य०) संकेतित पद्धति से, विशेष रीति से।
यथोपजोषं (अव्य०) मन के अनुसार, इच्छानुसार।
यथोपयोगं (अव्य०) कार्य की दृष्टि से।
यद् (सर्व०) जो, जो कुछ।
०जैसा कि, जो कोई।
०पश्चात्, तदनंतर।
०चूंकि, क्योंकि, इसलिए, लेकिन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०जिस कारण, जिस हेतु।
०फिर भी।
यद् तदा (अव्य०) स्वेच्छया। (जयो० ९/६८)
यदकिञ्चित् (अव्य०) जो कुछ भी नहीं। (जयो० २३/३८)
यदन्तिक (अव्य०) पार्श्व भाग में (जयो० २४/९)
यदपि (अव्य०) जो भी, जो कुछ भी। (जयो० १/९८)
०फिर भी। (जयो० ९/१३)
यद्वा (अव्य०) कल्पनान्तरे, अथवा, या तथा। (जयो० ११/३६)
०जैसा कि। (सुद० १११)
०जो कि, इसलिए। (सुद० ८९)
यदा (अव्य०) जब, उस समय। (जयो० २२/४०) जबकि (सुद० ३/४०) 'नवयौवनभूषिता यदा' (समु० २/११४)
यदाकिल (अव्य०) जो कि चूंकि, क्योंकि, जबकि। सुदर्शनभुजाश्लिष्टा यदा किल धरातले। (सुद० ८५)
यदि (अव्य०) [यद्+णिच्+इन्] अगर, जो, ऐसा। (सुद० २/२२) 'प्रत्ययमत्ययकरविद्धि यदि वृद्धि नरत्वम्। (जयो० २/१५४)
०चाहे, तो भी।
यदिङ्गणं (नपुं०) समुद्गमन। (जयो० १३/२४) उछलते हुए गमन।
यदिङ्गवशी (वि०) उसके वश में होने वाला। कामोऽपि नामास्तु यदिङ्गवश्यः। (सुद० २/४)
यदीदृक् (अव्य०) ऐसा ही है। (दयो० ६९)
यदीयस् (अव्य०) ०जिसका यह है, ०ऐसा जो है। 'यस्य सम्बंधी यदीयः' (जयो० १/१९, वीरो० १/१)
यदीयसेवा (स्त्री०) जिसकी ऐसी सेवा। यस्येयं यदीया सा चासौ सेवा चेति। (वीरो० १/१)
यदीया (अव्य०) जिसकी। (जयो० १/३०)
यदुः (पुं०) एक अधिपति, यादव वंश का प्रवर्तक।
यदुत्कृत् (वि०) अपराध करने वाला। हे सुदर्शन मया यदुत्कृतं क्षम्यतामिति विमत्युपार्जितम्। (सुद० ११०)
यदेकदा (अव्य०) एक बार। (समु० ४/१४)
यदृच्छा (अव्य०) [यद्+ऋच्छ+अङ्+टाप्] ०मनपसंद करना, स्वेच्छा, मनभावी। (सम्य० ७०)
०संभोग, घटना।
यन्तृ (पुं०) [यम्+तृच्] निदेशक, शासक।
०राज्यपाल।
०चालक, कोचवान, सारथि।
यन्त्र् (सक०) नियंत्रण करना, रोकना।
०बांधना, कसना। (जयो० ११/५८)
०दमन करना, जकड़ना।
यन्त्रं (नपुं०) [यन्त्र+अच्] ०थूणी, खंभा, स्तम्भ।
०पेटी, बेल्ट, कमरबन्द।
०चटकनी, कुंडी, ताला।
०नियंत्रण, बल।
यन्त्रकः (पुं०) [यन्त्र्+ण्वुल्] यांत्रिक, यन्त्र में कुशल।
यन्त्रकं (नपुं०) पट्टी।
यन्त्रकस्थिति (स्त्री०) मन्त्राक्षर। (वीरो० ६/३०)
यन्त्रणं (नपुं०) नियंत्रण।
०दमन, रोकथाम।
०प्रतिबन्ध, कसना, बांधना।
०बल, निग्रह, कष्ट, पीड़ा।
०अभिरक्षा।
०जाल, ढांचा। (जयो० २५/२०)
यन्त्रणी (स्त्री०) [यन्त्रण+ङीप्] छोटी साली।
यन्त्रभ्रमं (नपुं०) चर्खी घुमाना, पतंग की डोरी। (वीरो० १२/२५)
यन्त्रिन् (वि०) नियन्त्रिक।
०सताने वाला।
यन्त्रिक (वि०) नियन्त्रिक। (जयो० १०/४०)
यम् (सक०) नियंत्रण करना, दमन करना, बांधना, कसना।
०ठहराना।
०प्रदान करना, देना अर्पण करना।
०थामना, दबाना।
०उठाना, उन्नत करना।
०प्रयास करना, घेरना।
०शासन करना, प्रबन्ध करना।
०पकड़ना, ग्रहण करना।
०रोकना।
यमः (पुं०) [यम्+घञ्] संयत करना, नियंत्रित करना।
०नियंत्रण, संयम। (सुद० ३७)
०जीवन पर्यन्त का नियम। यावज्जीवं यमो ध्रियते-'यमस्तत्र यथा यावज्जीवनं प्रतिपालनम्' (जैन०ल० ९४५) 'तदङ्गनाऽहो ध्रियते यमेन तृणवणालीव समीरणेन' (दयो० ३८)
०यमराज। (जयो०वृ० ६/४७)
०उष्ट्रदेश का राजा। (वीरो० १५/२९)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यमकः (पुं०) [यम् स्वार्थे कन्] ०प्रतिबन्ध, रोक, नियंत्रण। ०यमक अलंकार। अर्थ परिवर्तन शब्द पुनरावृत्ति के साथ। समुदङ्गः समुद्गाद् मार्गलं मार्गलक्षणम्' नरराट् परराड्वैरी सत्वरं सत्त्वरञ्चितः।। (जयो० ३/१०९)
०युगल, दो। मध्यादि दानीं यमकस्नुभाजोः सीतेव सम्यक् परिपूरिताजो।। (जयो० ११/३९)

यमकं (नपुं०) युगल पट्टी।

यमकालङ्कारः (पुं०) यमक अलंकार। (जयो०वृ० ३/१०९) (जयो० २५/४१, २४/८०) स्यात्पादपदवर्णानामावृत्तिः संयुतायुता।
यमकं भिन्नवाच्यानामादिमध्यान्तगोचरम्।। (वाग्भट्टल० ४/२८) जहां भिन्न अर्थ वाले पाद, पद और वर्ण की संयुक्त या असंयुक्त रूप से आवृत्ति हो वहां यमक होता है। यह श्लोक के आदि मध्य या अन्त में भी हो सकता है।
पाद-श्लोक का चतुर्थांश
पद-विभक्तियुक्त शब्द।
वर्ण- अक्षर।
संयुक्त और असंयुक्त।
आदि मध्य अन्त आदि मध्य अन्त,
पद संयुक्त असंयुक्त।
आदि मध्य अन्त आदि मध्य, अन्त
वर्णगत संयुक्त असंयुक्त।
आदि मध्य अन्त आदि मध्य अन्त।
अन्तस्तले स्वामनुभाव यन्तस्त्रुटिं बहिर्भावुकतां नयन्ताः।
तस्थुः सशल्याग्रिदशां वहन्तः हृदार्त्तिमेतामनुचिन्तयन्तः।। (वीरो० १४/१४)

यमकिङ्करः (पुं०) यम का सेवक।

यमकीलः (पुं०) विष्णु।

यमज (वि०) युगल उत्पत्ति, जुड़वा।

यमदूतः (पुं०) यमराज। (समु० ७/१)
०काक, कौवा।

यमद्वितीया (स्त्री०) ०कार्तिक शुक्ला दूज, ०भाई दूज, ०भातृद्वितीया।

यमधामः (पुं०) यम का स्थान।

यमन (वि०) संयत, संयमी।

यमनुमा (वि०) यम नाम वाला। (समु० ७/११)

यगपाशः (पुं०) चाण्डाल। (वीरो० १७/३९)

यमभागिनी (स्त्री०) यमुना नदी।

यमभागिनी (स्त्री०) यम की पत्नी। (वीरो० ९/४०) न यामिनीयं यमभामिनीति। (वीरो० ९/४०)

यमभूपतिः (पुं०) यमराज। (समु० ७/२)

यमयातना (स्त्री०) भीषण कष्ट।

यमराट् (पुं०) यमराज। (समु० ७/५)

यमराज् (पुं०) देखो ऊपर।

यमल (वि०) जुड़वा, युगल उत्पन्न हुआ।

यमसभा (स्त्री०) यमराज की सभा।

यमसात् (अव्य०) यम की शक्ति में।

यमसूर्यं (नपुं०) भवन की आकृति, जिनमें दो कमरे हो एक का मुंह पश्चिम की ओर और दूसरे का मुख उत्तर की ओर।

यमस्थली (वि०) ०यमभूमि, ०पीड़ा जनक भूमि। अहो पशूनां ध्रियते यतो बलिः श्मसानतामञ्चति देवतास्थली।
यमस्थली वाऽतुलरक्तरञ्जिता विभाति,
यस्याः सततं हि देहली।। (वीरो० ९/१३)

यमारातः (पुं०) कालशत्रु, यम के शत्रु, मृत्यु। (जयो०७/३५)

यमाशायुग्म (वि०) यमपुर को प्राप्त। (वीरो० २१/३)

यमित (वि०) ०संयमित, नियंत्रित। ०यम, ध्यान की विधि। (जयो० २८/३१)

यमी (वि०) संयमधर, संयमी। (जयो० २६/३७) संयत। (मुनि०२)

यमुना (स्त्री०) कालिन्दी। (जयो०वृ० ६/४३)
०जमुना नदी। (जयो० ६/१०६)

यमुनाभिधानं (नपुं०) यमुना नदी नाम। (जयो० ८/४०)

ययातिः (पुं०) एक वंश विशेष।

ययावरः (पुं०) वंश।

ययुः (पुं०) प्राप्त हुए। (वीरो० ५/१३)

यर्हि (अव्य०) [यद्+र्हिल्] जब, जबकि।

यवः (पुं०) [यु+अच्] जौ।
०समुदाय (सुद० १/३७) भुवि वरं पुरमेतदियं मतिः प्रवितता खलु यव सतां ततिः।। (सुद० १/३७)
०माप, नाप, लम्बाई का एक पैमाना।

यवक्षारः (पुं०) जवाखार, शोरा, सज्जी।

यवनः (पुं०) युवन जाति, मुसलिम जाति।

यवनानी (वि०) यवन लिपि, उर्दु, फारसी।

यवनि (स्त्री०) पर्दा, आवरण। (समु० ८/३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यवनिका (स्त्री०) परदा, संवृतिका। (जयो० २४/३७)

यवनी (स्त्री०) [यु+ल्युट्+ङीप्] यवन स्त्री।

यवसम् (नपुं०) [यु+असच्] घांस, चारा।

यवागु (स्त्री०) [यूयते मिश्रयते यु-आगु] खिचड़ी। (दयो० ९३) ०कांजी, चावलों का मांड।

यवानिका (स्त्री०) [दुष्टो यवो यवानी यव+ङीष्] अजवायन।

यविष्ट (वि०) [युवन्+इष्ठन्] कनिष्ठ, सबसे छोटा।

यवीयस् (वि०) [युवन्+ईयसुन्] छोटा बच्चा।

यशस् (नपुं०) [अश् स्तुतौ असुन् धातोः युट् च्] ०यश, प्रतिष्ठा, कीति, प्रसिद्धि। (जयो० २/२१)
०प्रशस्ति। (जयो०वृ० १/१५) गौरीकृतं किन्तु यशोमयेन।
०विश्रुत, ख्याति। (सम्य० १५४) 'परिकलितः किल यशसां राशिः((सुद० १/४४) यशसा विधुमात्मतेजसाऽर्कमपाकर्तुमुतास्थितो रसात्। (समु० २/११)

यशःकिणः (पुं०) कीर्ति से परिपूर्ण। अथ जन्मनि सन्मनीक्षिण प्रससाराप्यभितो यशः किणः। (वीरो० ७/१)

यशःप्रयस् (नपुं०) धवल दूध। (सुद० ३/१८)
०कीर्ति का विस्तार-अभितोऽपि भवस्तलं यशः पयसाऽलङ्कृतवान्निजेन सः।

यशःप्रकाशित (वि०) कीर्ति से मंडित। (सुद० ३/११)

यशःप्रशस्तिः (स्त्री०) कीर्ति लाभ, (वीरो० १८/३१) प्रशस्ति की प्राप्ति। (जयो० ६/६६)

यशःप्रसारः (पुं०) कीर्तिकलाप-'गर्भार्भकस्येव यशः प्रसारैः' (वीरो० ६/३)

यशःशरीरं (नपुं०) प्रशस्तदेह, उज्ज्वलशरीर, कान्तिमान देह। (जयो० १/३३)

यशःस्फूर्तिः (स्त्री०) कीर्ति का विस्तार, प्रतिष्ठा गान। यशसः स्फूर्तिरुद् भूति। (जयो० ६/६५)

यशस्कर (वि०) यशस्वी, कीर्ति प्रदाता।

यशस्काम (वि०) प्रसिद्धि की कामना करने वाला।

यशस्कायं (नपुं०) कान्ति युक्त शरीर, प्रभावान् देह, देदीप्यमान शरीर।

यशस्तिलकः (पुं०) सोमदेव रचित एक जैन संस्कृत चम्पूकाव्य। यशस्तिलकचम्पू (जयो० २२/८५)

यशस्य (वि०) कीर्ति स्थापत करने वाला।

यशस्विन् (वि०) [यशस्+विनि] प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत। सहजंकीर्तिमान् (जयो० २३/६९)

यशोद (वि०) कीर्तिकर।

यशोदा (स्त्री०) नन्द की पत्नी, कृष्ण को पालन वाली। (दयो० ५८)

यशोधन (वि०) प्रसिद्धि प्राप्त, कीर्ति के धन को प्राप्त हुआ। 'यश एवं धनं यस्याः सा यशोधनाः' (जयो० १७/३९)

यशोधरा (स्त्री०) अलकापुरी के राजा दर्शक एवं रानी श्रीधरा की पुत्री। (समु० ५/२१)
०राजा सूर्यावर्त की रानी। (समु० ५/२१)

यशोनिरुपिणी (वि०) कीर्ति स्थापन करने वाली। यशसः कीर्तेनिर्रुपपिणी,प्ररूपणाकारिणी। (जयो० १३/६१)

यशोपटहः (पुं०) कीर्ति निनाद।

यशोभिरामः (पुं०) कीर्ति प्राप्त। (वीरो० १३/१२)

यशोलाभः (पुं०) कीर्तिलाभ। (जयो०वृ० ३/१३)

यशोवितानं (नपुं०) यश मंडप। (वीरो० १३/१०)

यशोविशिष्ट (वि०) प्रख्यात, कीर्तियुत। (जयो० ३/२३)

यशोवृष (वि०) कीर्तियुक्त। (समु० ३/३४)

यष्टिः (स्त्री०) लकड़ी, लाठी, छड़ी।
०सोटा, गदा।
०खंभा, स्तम्भ, तना। (जयो० १४/३३)
०डंठल, वृन्त।
०शाखा, टहनी।

यष्टिग्रहः (पुं०) गदाधर।

यष्टिनिवासः (पुं०) मयूरवास।

यष्टिप्राणः (पुं०) शक्तिहीन।

यस् (अक०) प्रयास करना, प्रयत्न करना।

या (सक०) जाना, प्राप्त होना। यामि गच्छामि (जयो० १६/७२) प्रयाण करना। याम एव सदसीह (जयो० ४/२८) यान्ति (सुद० ९०) यातु, याति (सुद० ८८) यास्यामि-जाऊंगा- (समु० ३/९)

या (अक०) चलना-यास्यतीव हि भवान् (जयो० ४/१०) यामि यात यदिवश्चिदुदेदि भूपवित्तु जनतावशगेति यातुम्। (जयो० ४/११) यास्यसि (सुद० ४/२७)
०नष्ट होन, ओझल होना।

या (सर्व० स्त्री०) यस्या सा काशी। रुचिरा पुरी। (जयो० ३/३०)

यागः (पुं०) [यज्+घञ्] यज्ञ, आहूति, उपहार, हवन। (जयो० १६/२५)

याच् (सक०) मांगना, निवेदन करना।
०प्रार्थना करना, अनुरोध करना। (जयो० ६/७७)
०अनुनय विनय करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याचकः (पुं०) [याच्+ण्वुल्] भिक्षुक, भिखारी, आवेदक। दीनता। (वीरो० १२/४१)

यागगुरुराट् (पुं०) पुरोहित। (जयो० १२/२७)

यागगुणाभिषेकः (पुं०) विप्रवर, पुरोहित, यज्ञकर्ता। 'यागस्य हवनस्य गुणे वृद्धिकरणेऽभिषेको दीक्षाप्रयोगो यस्य यज्ञकर्ता विप्रवर! (जयो० १६/२५)

यागविभूति (स्त्री०) सुवृत्त, गोलाकार कुण्ड, यज्ञकुण्ड। (जयो०वृ० १०/८०)

यागावनि (स्त्री०) यज्ञ भूमि। (जयो० १२/२५)

याचनं (स्त्री०) [याच्+ल्युट्] ०मांगना, निवेदन करना।
०प्रार्थना, अनुरोध।

याचनकः (पुं०) [याचन्+कन्] भिखारी, भिक्षुक, अभियोक्ता, आवेदक।

याचना (स्त्री०) मांगना, प्रार्थना करना।
०अनुनय करना।
०अभ्यर्थना (जयो० १२/१४४)

याचित (भू०क०कृ०) [याच्+क्त] निवेदन किया गया, मांगा गया।

याचितकं (नपुं०) [याचित+कन्] मांगी गई वस्तु।

याचिवान् (वि०) मांगी गई वस्तु। (जयो० १/९२)

याञ्चा (स्त्री०) [याच्+नङ्+टाप्] ०प्रार्थना, अनुरोध, निवेदन। (जयो० १/७२)
०याचना। (जयो० १४/३५)
०मांगना।

याजकः (पुं०) [यज्+णिच्+ण्वुल्] पुरोहित, यज्ञ कराने वाला।

याजनं (नपुं०) [यज्+णिच्+ल्युट्] यज्ञ का संचालन, अनुष्ठान।

याज्ञसेनी (स्त्री०) [यज्ञसेन+अण्+ङीप्] द्रौपती का पितृपरक नाम।

याज्ञिक (वि०) [यज्ञाय हितं, यज्ञ: प्रयोजनस्य वा ठक्] यज्ञ सम्बन्धी।
०वेदानुयायी। (वीरो० २२/१६)

याज्ञिकः (पुं०) पुरोहित।

याज्य (व०) [यज्+ण्यत्] त्याग करने योग्य।

यात (भू०क०कृ०) गया हुआ, प्रयात, दूरगत। (जयो० ११/४४)

यातं (नपुं०) गति, चाल।
०बीतता, चला गया। (सुद० १०८)
०प्रयाण, गमन।

यातनं (नपुं०) [यत्+णिच्+ल्युट्] ०प्रतिहिंसा, प्रतिरोध, बदला।
०कष्ट, पीड़ा, दु:ख देना।

यातना (स्त्री०) वेदना, पीड़ा, कष्ट, दु:ख।
०प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति।
०संताप, संपीडन।

यातन्त (वि०) प्रकरणान्त, मार्गान्त। (जयो० ३/८४)

यातुः (पुं०) यात्री, बटोही।
०हवा, पवन।
०भूतप्रेत, पिशाच, राक्षस।

यात् (स्त्री०) [यत्+कन्] जेठानी, देवरानी।

यात्रा (स्त्री०) [या+ष्ट्रन्+टाप्] ०गति, जाना, प्रयाण, गमन। (जयो० ३/९१) 'म्लायन्ति तद्वधूनां मुखारविंदानि यात्रासु' (जयो० ६/५३)
०तीर्थाटन, भ्रमण। (जयो० ३/८६)
०उत्सव, पर्व, संस्कार।
०रीति, पद्धति, उपाय।
०प्रथा, प्रचलन।

यात्रिक (वि०) यात्रा करता हुआ।
०प्रचलित, प्रथानुकूल।

यात्रिकः (पुं०) यात्री, बटोही।

यात्रिकं (नपुं०) प्रयाण, अभियान, चढ़ाई, प्रस्थान।

यात्री (पुं०) यात्री, बटोही, देशाटनी। (जयो० १८/६०)

याथातथ्यं (नपुं०) [यथातथ+ष्यञ्] ०वास्तविकता, सच्चाई, यथार्थता।
०औचित्य।

याथार्थ्यं (नपुं०) सही प्रकृति, सच्चा चरित्र।

यादवः (पुं०) [यदोरपत्यं-अण्] यदुवंशी।

यादस् (नपुं०) [यान्ति वेगेन-या असुन्] समुद्री जन्तु, विशाल जन्तु, दानव।

यादृक् (वि०) जिस प्रकार का, जैसाकि।

यादृक्ष (वि०) जिस प्रकार का, जिसके समान। (सम्य० ७/८) (जयो० १६/३२)

यादृच्छिक (वि०) ऐच्छिक-आकस्मिक।

यादृश् (वि०) जैसा ही, जिस तरह का।

यादृशी (वि०) जैसी-यादृशी भवतामिच्छा। (दयो० ७४)

यानं (नपुं०) [या भावे ल्युट्] जाना, चलना।
०अभियान, गमन।
०यात्रा प्रयाण।
०वाहन, सवारी, गाड़ी।

यानजः (पुं०) निहार, गमन। (सुद० ८६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यानबन्धं (नपुं०) गति बन्ध, छन्द की विशेषता। (वीरो० २२/३८)
यानपात्रं (नपुं०) नाव, नौका, जहाज।
यानभङ्ग् (पुं०) जहाज टूटना।
यानि (अव्य०) जबकि, जो कि। (सुद० ९९)
यानमुखं (नपुं०) गाड़ी का अगला भाग।
यानवाहकः (पुं०) चालक, सारथी। (जयो० ६/६३)
यान्त (वि०) आत्मवर्ग, स्वपक्षीय। (जयो० १३/८२)
यान्यजनः (पुं०) शिविका वाहक, कहार। (जयो० ६/२६)
यापनं (नपुं०) जाने देना, निकालना।
०निष्कासन, हटाना।
०सहारा, आश्रय, आधार।
०प्रचलन, अभ्यास।
यापित (वि०) व्यतीत। (जयो० १८/३२)
याप्य (वि०) हटाए जाने योग्य निकालने योग्य।
याप्ययानं (नपुं०) शिविका, पालकी।
यामः (पुं०) नियंत्रण, विरोध।
०धैर्य।
०प्रहर, दिन का आठवां भाग।
यामघोष (पुं०) मुर्गा।
यामलं (नपुं०) [यमल+अण्] जोड़ी, मिथुन।
यामवृत्तिः (स्त्री०) पहरा देना।
यामवती (स्त्री०) रात।
यामि (स्त्री०) बहन।
यामिकः (पुं०) पहरेदार, चौकीदार।
यामिका (स्त्री०) रात्रि, रजनी।
यामिकापतिः (स्त्री०) रजनी।
यामिकापतिः (स्त्री०) चन्द्रमा।
०कपूर।
यामुन (वि०) यमुना से सम्बन्धित।
यामुनेष्टकं (नपुं०) [यमुना+इष्टकम्] सीसा, रांगा।
याम्य (वि०) दक्षिणी।
याम्या (स्त्री०) दक्षिणीदिशा।
यायावरः (पुं०) संत, साधक, परिव्रज्याशील साधु।
यावः (पुं०) [यु+अच्+अण्] जौ से। तैयार पदार्थ।
०लाख।
०लाल रंग, महावर। (जयो० १६/४२)
यावकः (पुं०) ०लाख, ०महावर, ०रक्तवर्ण।
यावकालः (पुं०) प्रभातकाल। (सुद० १०४)
यावच्छरीरं (नपुं०) विस्तृत देह। (सुद० १३०)
यावत् (वि०) [यद्+वतुप्] जितना, जितने। 'यावच्चावच्च साकल्येऽवधौ मानवधारणे' इत्यमरः। (जयो० १४/३३) 'यावदागमयतेऽथ नरेन्द्रान्' (जयो० ४/१)
०जैसे जैसे। (सुद० १०१)
०सब, समस्त, सम्पूर्ण।
०जितना बड़ा, जितना विस्तृत।
०जबकि, उसी समय तक। (सुद० २/४४) (सम्य० ४१)
यावत्तावत् (वि०) जितना उतना। (दयो० ९५)
यावत्तु (वि०) जैसे जैसे (सुद० १०१) जिस तरह से, जैसे ही। (जयो०वृ० १२/११९)
यावद्दिन (वि०) जितने दिन तक। (दयो० ४१) दिनमनापि। (जयो०वृ० १५/१४) (जयो०वृ० ५/१६)
यावबलं (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार।
यावमात्रं (अव्य०) इतना बड़ा, इतना विस्तृत।
०नगण्य, तुच्छ।
यावशक्यं (अव्य०) जहां तक संभव हो।
यावसः (पुं०) घास का ढेर।
०चारा।
०खाद्य सामग्री।
याशिका (स्त्री०) अभिलाषा। (जयो०वृ० ७/६३)
याष्टीक (वि०) लाठी से सुसज्जित।
याष्टीकः (पुं०) यष्टि योद्धा। ०लाठी से लड़ना।
यास्कः (पुं०) निरुक्तार।
युः (अक०) सम्मिलित होना, मिलना।
यु (सक०) बांधना, जकड़ना।
युक्त (भू०क०कृ०) [युज्+क्त] ०सम्मिलित, मिला हुआ, संयुक्त। (वीरो० ५)
०सुव्यवस्थित, सहित।
०अञ्चित। (जयो०वृ० २/६)
०योग्य, उचित, ठीक, उपयुक्त।
०भरा हुआ, तर्क संगत। (सुद० १/२७)
युक्तं (नपुं०) युगल जोड़ी।
युक्तकर्मन् (वि०) कर्त्तव्य में नियुक्त किया गया।
युक्तदण्ड (वि०) उचित दण्ड देने वाला।
युक्तन्याय (वि०) समुचित न्याय वाला।
युक्तपद्धति (स्त्री०) व्यवस्थित रीति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युक्तपाठक (वि०) वाचक। (जयो० १८/१)
युक्तमनस् (वि०) सावधान मन वाला।
युक्तमनुज (वि०) मनुजता सहित।
युक्तरीति (स्त्री०) संयुक्त पद्धति।
युक्तार्थधर (वि०) युक्तियुक्त वाणी वाला।
युक्तिः (स्त्री०) [युज्+क्तिन्] ०उपाय, योजना। (सुद० २/४२)
०व्यवहार, प्रचलन।
०औचित्य, योग्यता, सामंजस्य। (सम्य० १२) संगति, उपयुक्तता।
०क्रमबद्धता, रचना।
०संभावना, परिस्थिति।
०तर्कशक्ति, तर्कना, दलील।
'युक्त्यागमाभ्यामविरुद्धकोष!' (जयो० २६/९९)
०अनुमान, निगमन, हेतु, कारण। शिरो गुरुत्वान्नतिमाप-भक्तितुलास्थितं चेत्युचितैक युक्तिः। (वीरो० ५/२५)
युक्तिकथनं (नपुं०) हेतुओं का वर्णन।
युक्तिकर (वि०) उपयुक्त, योग्य।
युक्तिगत (वि०) तर्क संगत। (दयो० २२/१३)
युक्तिज्ञ (वि०) आविष्कार, कुशल।
युक्तिबलं (नपुं०) उपाय की शक्ति।
युक्तियुक्त (वि०) उपयुक्त, योग्य, युक्ति गत। (वीरो० २२/१३)
युक्तिसंगत (वि०) तर्क संगत, योग्य, उपयुक्त। (वीरो० २२/१३)
युग् (वि०) [युनक्तीति युग् एतादृगपि लसति] युक्त। (जयो० १/९६)
युगं (नपुं०) [युज्+घञ्] जुआं। खच्चर, घोड़ा आदि के कांधे पर रखा जाने वाला। गाड़ी या हल का भाग।
युगः (पुं०) जोड़ा, युगल, संयुक्त, युग्म। (जयो०वृ० १/३३)
०श्लोकार्ध, जिसमें दो चरण होते हैं।
०मिथ, सम्बन्ध। (जयो० ८/४५) भुजयोर्बाहुदण्डयोः युंग-युगलं (जयो० ५/४७) वाच्य-वाचकयोर्युगं द्वितीयं धरति (जयो० ५/४५) कुचयुगम्। (जयो०वृ० ५/४५)
०कालविशेष, पांच वर्षों का एक युग। पंचेहिं वरिसेहिं जुगं (ति०प० ४/२९०)
युगतं (वि०) सम संख्या।
युगतातिरेक (वि०) सम संख्या का अतिरेक। (जयो० १/१९)
युगदोषः (पुं०) युग/जूआ से पीड़ित। कायोत्सर्ग का एक दोष, युग से पीड़ित बैल के समान जो गर्दन को फैलाकर कायोत्सर्ग में स्थित होता है। वह कायोत्सर्ग के युगदोष से दूषित होता है।

युगनद्ध (वि०) [युगमि नद्धो युगनद्धः] 'युगं वृषभस्कंध योरारोपितं वर्तते तद्वत्, योगोऽपि यः प्रतिभाति स युगनद्ध इत्युच्यते। (जैन०ल० ९४८)
युगन्धरः (पुं०) गाड़ी की जोड़ी, जुआं का भाग।
युगपद् (अव्य०) [युग्+पद्+क्विप्] एक साथ, एक ही समय।
युगलं (नपुं०) [युज्+कलच्] ०मिथुन, जोड़ा, दम्पत्ति। (जयो० १२/७४)
युगलकं (नपुं०) जोड़ा, युग्म, दो श्लोक।
युगादिभर्तृ (पुं०) ऋषभनाथ तीर्थंकर।
०प्रथम तीर्थंकर। 'युगादिभर्तुः श्री ऋषभनाथतीर्थङ्करस्य सदसः सभायाः सदस्यः' (जयो० १/४३)
युगादिभास्करः (पुं०) ०आदीश्वरसूर्य ०प्रथम तीर्थंकर *आदिनाथरूपी सूर्य। ०आदीश्वर भगवान। (जयो० २६/५८) ०युग के प्रथम सूर्य। ०प्रथम सूर्यवंशी।
युगान्तस्थायिन् (वि०) अनन्तकाल व्यापी। (जयो० ७/५)
युग्म (वि०) [युज्+मक्] युगल, मिथुन, जोड़ा। (सुद० ४/३१) ध्रियते द्रुतमेव पाणिसत्तलयुग्मे स्म हितैषिणो हि सः। (सुद० ३/२४)
०सम, समान, सदृश, एक सा। 'जुम्मं सममिदि एयट्ठो' (धव० १०/२२)
०संगम, मिलाप।
युग्मधारा (स्त्री०) संयुक्त प्रवाह, सम प्रवाह।
युग्मनिरूपः (नपुं०) युगल विवेचन। युग्मं तस्य निरूपो निरूपणमिव। (जयो०वृ० ५/४७)
युग्मनीति (स्त्री०) समान नीति, सदृश पद्धति, एक सी नियम पद्धति।
युग्मपादः (पुं०) युगल चरण।
युग्मभावः (पुं०) संयुक्त भाव।
युग्ममनुजः (पुं०) दम्पत्ति।
युग्मश्लोकः (पुं०) दो श्लोक, एक अर्थ के लिए दो श्लोक देना।
युग्य (वि०) [युगाय हितः यत्] जोतने के योग्य।
युग्यः (पुं०) जुता हुआ।
युज् (अक०) सम्मिलित होना, मिलना, अनुरक्त होना।
०संबद्ध होना, जुड़ना।
युज् (सक०) जोतना, नियुक्त करना।
०रखना, स्थिर करना।
०स्थापित करना (युज्यते० सुद० ४/३८)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०पूछना, प्रश्न करना।
०कहना, बोलना।
०तैयार करना।
०चखना, उपभोग करना।

युज् (वि०) जुड़ा हुआ, संबद्ध। (सम्य० ४७)

युञ्जानः (पुं०) [युज्+शानच्] रथवान, सारथि, वाहक, चालक।

युत (भू०क०कृ०) [युत+क्त] सम्मिलित, जुड़ा हुआ।

युतकं (नपुं०) [युत+कन्] ०संयुक्त, मिलाप, मिलन।
०युगल। संगम।
०मित्रता, मैत्री।

युतिः (स्त्री०) [यु+क्तिन्] संगम, मिलन, मिलाप, भेंट।
०जोड़, योग।
०समीपता, संयोग। सामीप्यं संयोगो वा युतिः। (धव० १३/३४८)
०संयुक्ति, स्पष्ट योग।

युद्धं (नपुं०) [युध्+क्त] संग्राम, समर, लड़ाई। (सम्य० ६५)
०संघर्ष, द्वन्द्व। (सम्य० ७६)
०भिडन्त, आपसी संघर्ष।

युद्धकारिन् (वि०) संग्रामशील, लड़ाई करने वाला।

युद्धकार्यं (नपुं०) संग्राम का कार्य। (जयो०वृ० ८/२)

युद्धगत (वि०) संग्राम को प्रात।

युद्धघोषः (पुं०) संग्राम की घोषणा।

युद्धजनित (वि०) युद्ध में संलग्न। (जयो० ८/१३)

युद्धटंकारः (पुं०) संग्राम की गूंज।

युद्धदण्डः (पुं०) संग्राम पद्धति।

युद्धपटहः (पुं०) युद्ध घोष। (जयो० ८२२)

युद्धभय (वि०) लड़ाई से डरने वाला, संघर्ष से डर।

युद्धभीति (स्त्री०) संघर्ष से डर।

युद्धभू (स्त्री०) रणक्षेत्र, संग्राम स्थल।

युद्धभूमि (स्त्री०) युद्धस्थल, संग्राम क्षेत्र।

युद्धरङ्गः (पुं०) रणक्षेत्र, लड़ाई का मैदान।

युद्धवीरः (पुं०) योद्धा, शूरवीर, जांबाज़, रणबांकुर।

युद्धसंलग्न (वि०) युद्ध में लीन, संग्राम में तत्पर। (जयो० ८/१३)

युद्धसूचक (वि०) युद्ध घोष करने वाला, संग्राम की घोषणा/रण की सूचना देने वाला। (जयो०वृ० ८/३)

युद्धस्थलं (नपुं०) संग्राम स्थान, रणस्थान, रणभूमि। (जयो० ८/४) रणांगण युद्धभू, युद्धधरा। (वीरो० २/४१) अद्य युद्धस्थले धैर्यं दृश्यतेऽमुष्य तेजसः। मम वा यमवाक्-सन्धाकारयाऽऽयुधधारया।। (जयो० ७/२७)

युद्धागत (वि०) युद्ध में आया हुआ।

युद्धाचरणं (नपुं०) युद्ध का आचरण। (जयो० १२/१०७)

युद्धाभिलाषिन् (वि०) युद्धार्थिन्, युद्ध की इच्छा करने वाला। (जयो०वृ० ३/१००)

युद्धाभ्यासः (पुं०) संग्राम की शिक्षा, संग्राम का अध्ययन।

युद्धार्थिन् (वि०) युद्धाभिलाषी, युद्ध का इच्छुक।

युद्धेच्छुक (वि०) युद्ध चाहने वाला।

युध् (अक०) लड़ना, संघर्ष करना, युद्ध करना, द्वन्द्व करना। (जयो०वृ० १/१८)

युधानः (पुं०) [युध्+आनच्] योद्धा, बहादुर, रणवीर, रणबांकुरे।

युधिष्ठिरः (पुं०) पाण्डुपुत्र, पांण्डु की अग्रज सन्तान। (जयो० १/१८)

युधिष्ठिर (वि०) युद्ध में स्थिर रहने वाला।

युन् (सक०) ग्रहण करना लेना, युनक्ति, गृहणाति। (जयो० २/७)

युप् (सक०) मिटा देना, नष्ट करना।

युयुः (पुं०) घोड़ा, अश्व।

युयुत्सा (वि०) [युध्+सन्+अङ्+टाप्] लड़ने की इच्छा, विरोधी इरादा।

युयुत्सु (वि०) लड़ने की इच्छा वाला।

युवकः (पुं०) कुमार, तरुण। (जयो०५/११)

युवगणः (पुं०) तरुण समूह। (जयो० ५/२५) ईदृशे युवगणेऽथ विदग्धे का क्षती रतिपतावपि दुग्धे। (जयो० ५/२५)

युवतिः (स्त्री०) तरुणी। [युवत्+ति+ङीप्] ०तलुनी/तरुणी (जयो०वृ० ३/८२) (सुद० ७/३४)
०अंगना, स्त्री।
०नायिका। (जयो०वृ० ४/५५)
०महिला (सुद० ८८) काठिन्यमेवं कुचयोर्युवत्याः कण्ठे ठकत्वं न पुनर्जगत्याम्। (सुद० १/३४)
०योषा-जो मनुष्य को दुःख से योजित करती है। 'नरं दुःखेन योजतीति युवतिर्योषा च। (भ०आ०टी० ९७९)

युवतिकालः (पुं०) तरुणी काल, तरुणाई का समय।

युवतिगतिः (स्त्री०) मंथन गति, तरुणी की तरह मन्द मन्द गति।

युवतिनयनं (नपुं०) चपल नयन, तरुणी के नेत्र।

युवतिपाशः (पुं०) तरुणीपाश। (जयो० २/१५७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युवतिभुजः (पुं०) स्त्री का भुजा, मांसल बाहु। (जयो० २/१५७) साक्षात्कुरुते हन्त युवतिभुजपाशनिवद्धं-किञ्चाङ्गाति-गमोहनिगडवर्तितमपि न स्वंवेत्ति विकारी। (जयो० २/१५७)

युवतिरत्नं (नपुं०) स्त्री रत्न। युवति रत्नमयत्नमवाप्यते तदधि कं तु शमाय समाप्यते।

युवतीर्थः (पुं०) युवावस्था। (वीरो० ८/७६) (जयो० ९/२३)

युवनृपः (पुं०) युवराज। (जयो० ९/११)

युवभावः (पुं०) ०तरुणभाव। ०चपल विचार।

युवमनसी (स्त्री०) तरुण भावो। (जयो० ५/७४) ०युवामनस्विनी। (जयो० ५/७४)

युवभावः (पुं०) तरुण भाव। (सुद० ३/३३)

युवराज् (पुं०) युवनृप, राजकुमार। (समु० ४/१७)

युवा (वि०) यौवन प्राप्त, युवावस्था को प्राप्त व्यक्ति। (जयो० ५/४)

युवाधिराजः (पुं०) राजकुमार। (वीरो० ११/१३)

युवान्त (वि०) तरुणान्त। (जयो० १२/१३२)

युष्मद् (सर्व०) तू, तुम। त्वम् (सुद० १/१६) (सम्य० १५) तस्माद् (सुद० ९१) त्वदीयाम् (सुद० ४/१७) वरिस्यति त्वं तु सतीति (जयो० ३/८८) तस्य (सम्य० ३/३८) 'तव सम्मुखमस्यहं पिपासुः' (जयो० १२/११९) युवाभ्याम् (सुद० ४/४५) त्वयि (सुद० ४/३८)

युष्मत्पदप्रयोगेण, सम्भवेदुत्तमः पुमान्।
आदेशशोभवतामस्ति, न परप्रत्यवायकृत्।। (समु० ७/३३)
युष्मद् पद का प्रयोग मध्यम पुरुष के लिए होता है।

युस्मादृश् (वि०) तुम्हारी तरह।

युस्माकम् (वि०) तुम्हारे के लिए।

यूतिः (स्त्री०) मिश्रण, मेल, मिलाप।

यूथं (नपुं०) [यु+थक्] भीड़, टोली, समुदाय, झुण्ड। ०रेवड़, लहंडा।

यूथिका (स्त्री०) जूही, बेला।

यून् (पुं०) कामी युवक। (सुद० १०१) युवक (जयो० १/५९)

यूना (पुं०) तरुण, युवक, युवा। (जयो० ११/२६) तरुणानां यूनानामपि हृदये (जयो० ५/२९)

यूनुः (पुं०) पुत्र, सुत। (जयो०)

यूपः (पुं०) यज्ञ की लकड़ी।

यूषः (पुं०) [यूष्+क] रसा, झोल, रस, सूप।

येन (अव्य०) जिससे, जिसके द्वारा, जिसलिए, जिस कारण से। ०चूंकि, क्योंकि।

येन केन प्रकारेण (अव्य०) जिस किसी तरह से। (सुद० १०४)

योक्त्रं (नपुं०) [युज्+ष्ट्रन्] डोरी, रस्सी, धागा, रज्जू।

योगः (पुं०) [युज् भावादौ घञ्] ०जोड़ना, मिलाना।
०संयुक्त, संयोग, मिलान।
०संपर्क, स्पर्श।
०मिलान। योग एक इह मानवतायामेवमुद्धरितुमस्तु अपायत्। भोगतो गमयतः पुनरेतां किं भवेदनुभवेद् दृढचेता।। (समु० ५/५)
०शरीर निग्रह। (जयो० २७/११)
०आत्मपरिस्पंद-मनोवचः कायकृतात्मचेष्टात्मकं तु योगं स किलोपदेष्टा। शुभाशुभप्रायतया जगाद, द्वेधा जिनो यस्य वदोऽभिवादः।। (समु० ८/२५)
०प्रयोग (सुद० १३३) स्वर्णत्वं रसयोगतोऽत्र लभते लोहस्य लेखा यतः। (सुद० १३३)
०कारण, निमित्त। हेतु। वदाद्य का दशा ते स्यान्मदीयकर योगतः। (सुद० १३४)
०व्यवहार-त्वमिमां शोचनीयास्थामाप्तो नैष्ठुर्ययोगतः।। (सुद० १३४)
०योग नाम एकाग्रचिन्तानिरोधकम्। (जयो० २८/१४)
०सम्बन्ध। (सुद० १/३०) 'स्वतोऽधरं पूर्णमिदं सुयोगैः' (सुद० १/३०)
०तल्लीनता। (सुद० ७०) योग-भोगयोरन्तर खलु नासा दृशा समस्य।
०एकता, समुदाय, सामञ्जस्य। (सम्य० ८४)
०समय। वर्षायोग हिसारस्य श्रीसमाजानुरोधतः। (सम्य० १५६)
०सन्निकटता। (योग आत्मनि सम्पन्नो दशमाद्गुणतः परम्। (सम्य० १४२)
०नियम, विधि।
०उपाय, योजना।
०व्यवसाय, कार्यपद्धति।
०औचित्य, योग्यता।
०कोशिश, उत्साह।
०फल, परिणाम।
०पद्धति, रीति, क्रम।

योगक्षेमः (पुं०) समीचीन सुरक्षा, उचित उपाय। (जयो०वृ० २/२)
०सम्पत्ति की सुरक्षा।
०दुर्घटनाओं से सम्पत्ति को सुरक्षित रखने का शुल्क।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०बीमाकरण।
०कुशलक्षेम, कल्याण, सम्पत्ति लाभ।

योगक्षेमार्थ (वि०) कल्याणार्थ-सम्पूर्ण प्रबन्ध के लिए।
प्रजोपयोगिवस्तूनामाम-व्यय-निबन्धनाम्।
विधाय योग-क्षेमार्थं, यतिश्च मर्षिरित्यसौ।।
(हित० सं०९)

योगचूर्ण (नपुं०) वशीकरण चूर्ण।

योगछाया (स्त्री०) ध्यान की छाया। (जयो० २८/३३)

योगतारका (स्त्री०) नक्षत्रों का योग।

योगत्रय (वि०) मन, वचन, और काम का योग। (भक्ति०१४)

योगदानं (नपुं०) सिद्धान्त का संचारण।

योगदृष्टिः (स्त्री०) निग्रहदृष्टि। (वीरो० २०/१०)

योगधारणा (स्त्री०) सतत चिंतन।

योगनिद्रा (स्त्री०) सचेतनता, जागरण, अर्धनिद्रा।

योगनिमित्तं (नपुं०) योग का कारण।

योगपदं (नपुं०) उचित स्थान।

योगफलं (नपुं०) नियम पालन का फल।

योगभक्तिः (स्त्री०) इन्द्रिय निरोध की भक्ति, मन, वचन और काय की भक्ति।
यथैति दूरेक्षणयन्त्रशक्त्या चन्द्रादिलोक किमु योगभक्त्या।।
(वीरो० ९)
०समस्त विकल्पों का अभाव।
०निर्विकल्प समाधि।
०योजित कारण।

योगबलं (नपुं०) त्रिविध योग की शक्ति।

योगमाया (स्त्री०) सम्मोहन क्रिया, जादुई शक्ति।

योगरङ्गः (पुं०) नारंगी।

योगरुढ (वि०) निर्वचनमूलक अर्थ वाले शब्द।

योगवर्तिका (स्त्री०) स्निग्ध बत्ती।

योगवक्रता (वि०) मन, वचन और काय की कुटिलता।

योगवाही (स्त्री०) रेह, सज्जी।
०मधु।
०पारा।

योगविक्रयः (पुं०) छल से बिक्री।

योगशास्त्रं (नपुं०) हेमचन्द्रचार्य विरचित एक ग्रन्थ।

योगसत्यं (नपुं०) मन, वचन और काय की याथर्थता का नाम।

योगसंक्रान्तिः (स्त्री०) उपयुक्त ध्यान का संचार।

योगसमाधिः (स्त्री०) आत्म तल्लीनता।

योगसारः (पुं०) एक ग्रंथ विशेष, अपार नाम परमात्म प्रकाश।

योगसेवा (स्त्री०) ध्यानाराधना, योगेन्द्र देवकृत।

योगिकुलः (पुं०) यति समूह। (वीरो० २/४९)

योगिन् (वि०) [योग+इनि] ०युक्त, संयुक्त, संलग्न, योग से सहित।

योगिन् (पुं०) योगी, संन्यासी।
०मुनीन्द्र, निर्मल स्वभावी मुनि। योगि तदन्यभेदेन द्वेधा भवति साधकः' (हित० ३)
०यति। (वीरो० ९/१९)
०परिव्राजक, तपस्वी। (दयो० २४)
०संयमी। 'रहस्यमङ्गीकुरुतेऽत्र योगी' (जयो० २७/६)
०सन्यास-आश्रम। (जयो० २/१७)

योगिभक्तिः (स्त्री०) एक भक्ति पद, मुक्तियों की ध्यानाराधना। आचार्य कुन्दकुन्द, पूज्यपाद जैसे पुराविद रचित भक्ति। आचार्य ज्ञानसागर ने योगिभक्ति से सम्बंधित पांच श्लोक संस्कृत में लिखे हैं। जो भक्तिसंग्रह में संकलित है। (भक्ति० सं० १४)

योगिकरः (पुं०) योगिराज। (सुद० २/२२)

योगिभूपः (पुं०) मुनिराज, योगिराज। (भक्ति० २९)

योगिराट् (पुं०) मुनिराज। (मुनि० १२) 'विश्वस्य किन्तु साम्राज्यमधिगच्छति योगिराट्' (वीरो० १६२२९)

योगिराज् (पुं०) मुनिराज, मुनीन्द्र, आचार्य। (समु० ३/३०, ९/२५)

योगिहृदयानन्दः (पुं०) मुनिराज के हृदय का आरम्भ। (मुनि० २५)

योगी (पुं०) मुनि, तपस्वी, साधक, योग धारक व्रती। योगं यः परमात्मनाऽभिलषते योगीत्यसौ संमतः। (मुनि० ३३) जो परमात्मा के साथ सम्बन्ध की अभिलाषा रखते हैं वे योगी हैं।

योगीतरः (पुं०) साधक। (हित० ३) ०तपस्वी।

योगीन्द्रः (पुं०) मुनिराज। योगीन्द्रस्य समन्ततोऽपि तु पुनर्भेदोऽयमेतादृशः। (वीरो० १६/२८) योगीन्द्रपद। मुनिपद (वीरो० ११/२३)

योगीय् (अक०) आचरण करना, निग्रह करना। योगीयते 'योगीवाचरति योगीव निश्चेष्टतया' (जयो० १८/५३)

योगीश्वरः (पुं०) यतिनायक, मुनिराज। (सुद० १२६) ०आचार्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगेष्टं (नपुं०) सीसा, रांगा।

योग्य (वि०) [योगमर्हति यत्, युज्+ण्यत् वा] उचित, समुचित, लायक, उपयुक्त। (सुद० १११)
०सक्षम, उपयोगी।
०सेवा करने योग्य।
०अर्हन्, समर्थ। (जयो०वृ० ४/४०)
* शक्य। (जयो०वृ० २/१६)

योग्यः (पुं०) युक्ति, उपाय।

योग्यं (नपुं०) यान, वाहन, सवारी।

योग्यता (स्त्री०) [योग्य+तन्+टाप्] ०सामर्थ्य, सक्षमता।
०अनुरूपता, समीचीनता। (जयो० २/१०१) दानमुज्झतु भवार्णवसेतु र्योग्यतैव सुकृताय तु हेतुः। (जयो० २/१०१)
०औचित्य, उपयुक्तता।

योग्यत्व (वि०) उचितत्व, सामर्थ्यता। (सुद० ७६)

योग्यदेशः (पुं०) उचित स्थान, समीचीन प्रदेश। (सुद० १३०) कृतोऽपि कुर्यान्न मनः प्रवृत्तिमयोग्यदेशे प्रशमैकवृत्तिः। (सुद० १३०)

योग्यधनं (नपुं०) उचित धन, समुचित सम्पत्ति।

योग्यधारा (स्त्री०) उचित प्रवाह।

योग्यपदं (नपुं०) उचित स्थान, अच्छा पद।

योग्यफलं (नपुं०) उपयोगी फल।

योग्यभावः (पुं०) समुचित भाव।

योग्यभेदः (पुं०) उपयुक्त विवरण।

योग्ययोगः (पुं०) योग की उपयुक्तता। (वीरो० २२/१३)

योग्यवरः (पुं०) श्रेष्ठ दूल्हा। (जयो०वृ० ३/६६)

योग्यसङ्गमः (पुं०) योग्य सम्बन्ध। (जयो० ३/८८)

योग्यसमागमः (पुं०) उचित समागम। (जयो० ५/८७)

योज (वि०) नियोजित करना, नियुक्त करना। (जयो०वृ० १/९९)

योजनं (नपुं०) [युज् भावादौ ल्युट्] ०विधान। (जयो० ८/३८)
०जोड़ना, मिलाना, जोतना।
०प्रयोग, मिलाना, स्थिर करना।
०तैयारी, व्यवस्था (जयो० २/३४) लेखन, प्रतिपादन। 'योजनं हि जिननामतः पुनः स्वोक्तकर्मणि समस्तु वस्तुनः' (जयो० २/३४)
०चार कोस की दूरी का माप। 'चतुः कोशात्मकप्रमाण' (जयो० २८/१०) चतुर्गव्यूतं योजनम्। (त०वा० ३/३८) 'अट्ठहिं दण्डसहस्सेहि जोयणं' (धव० १३/३३९)

योजनपृथकत्व (वि०) योजन को आठ से गुणा करना।

योत्रं (नपुं०) रज्जू, रस्सी।

योधः (पुं०) [युध्+अच्] सैनिक, योद्धा, शूरवीर, जाबाज़, रणबांकुरे। (जयो० ८/८) संग्राम, लड़ाई, युद्ध।

योधगर्भः (पुं०) सैनिक धर्म, सैन्य कर्त्तव्य।

योधनं (नपुं०) [युध् भावे ल्युट्] युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

योधिन् (पुं०) [युध्+णिनि] योद्धा, सैनिक, बहादुर।

योनिः (पुं०/स्त्री०) ०स्थान, स्थल, जगह। (जयो० १९/४)
०गर्भाशय, बच्चादानी।
०जन्मस्थान, मूलस्थान।
०आवास, घर, आधार।
०कुल, गोत्र, वंश।
०उत्पत्ति-जीव उत्पत्ति स्थान। 'योनयो जीवोत्पत्तिस्थानानि' (मूला० टी० १२/३) 'यूयते भवपरिणत आत्मा यस्मामिति योनिर्भवाधारः' (मूला०टी० १२/५८)

योपनं (नपुं०) [युप्+ल्युट्] मिटाना, विलुप्त करना, नष्ट करना।
०उत्पीड़न, अत्याचार, ध्वंस, नाश।

योषा (स्त्री०) तरुणी, स्त्री, बालिका। (जयो० १७/१२९)

योषाजनः (पुं०) स्त्रीजन। (जयो० १८/७) 'योषाजनस्य परिवर्तितनाभिदध्ने' (जयो० १८/२७)

योषास्यत् (नपुं०) स्त्रीमुख। 'योषाया आस्यतः स्त्रीमुखात्' (जयो० २/१४४)

योषित (वि०) चेष्टित, चेष्टा युक्त। (जयो० २/१३१)

योषित् (स्त्री०) स्त्री, नारी।

योषिता (स्त्री०) स्त्री, नारी, महिला। 'योषितां तु जघनं भवेत्तथा ह्यामपात्रमिव तोयतो यथा। (जयो० २/४२)

यौक्तिक (वि०) [युक्तित आगतः-] ०उपयुक्त, योग्य, उचित।
०तर्कसंगत, समीचीन, तर्क पर केन्द्रित।
०तर्क्य, अनुमेय।
०प्रचलित, प्रथानुकूल।

यौक्तिकः (पुं०) राजा का आमोदप्रिय साथी।

यौगः (पुं०) योग दर्शन का अनुयायी।

यौगिक (वि०) [योग+ठक्] उचित, समीचीन, उपयुक्त। तर्कसंगत।
०प्रचलित, व्युत्पन्न।
०उपचार परक।
०योग सम्बंधी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यौतक (वि०) [युते विवाहकाले अधिगतं वुण्] किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति।

यौतकं (नपुं०) निजी सम्पत्ति, अपना वैभव। ०स्त्रीधन।

यौतवं (नपुं०) [योतु+अण्] एक माप विशेष।

यौध (वि०) लड़ने वाला, संग्राम करने वाला।

यौन (वि०) [योनितः योनि सम्बन्धात् वा आगतः अण्] सोदर। ०वैवाहिक।

यौनं (नपुं०) विवाह, मिथुन।

यौवतं (नपुं०) [युवतीनां समूह-अण्] युवतीनां समूहो योक्तं तस्मिन् (जयो० १६/५६) तरुणी समुदाय, युवति समूह। (जयो० १४/६)

यौवति (स्त्री०)

यौवनं (नपुं०) [यूनो भावः अण्] ०तारुण्य, जवानी, तरुणाई। (जयो० ३/४३)
०नव यौवन रूप-यौवनादिमसरिद्ध्रवदूर्मेः (जयो० ४/१९)
०वयस्कता, सम्पन्नता। क्रमाच्च सा वाल्यमतीत्य 'यौवनमवाप शापादिव पुण्यमात्मनः। (समु० ४/२६) निधानकुम्भाविव यौवनस्य परिप्लवौ कामसुधारसस्य। (सुद० १००)

यौवनगत (वि०) युवावस्था को प्राप्त।

यौवनपादपः (पुं०) सम्पन्नता युक्त वृक्ष, कोपलादि से समृद्ध वृक्ष। (समु० ६/२३) ०समृद्ध वृक्ष। ०हरित वृक्ष।

यौवनवती (स्त्री०) तरुणी, युवा स्त्री, तारुण्ययुक्त स्त्री। (वीरो०३/३२, जयो० ३/४२)

यौवनवयः (पुं०) युवावस्था (वीरो० २२/८)

यौवनहानिः (स्त्री०) युवावस्था की क्षति। (दयो० ५४)

यौवनारम्भः (पुं०) तरुण अवस्था का प्रारम्भ। (जयो० ३/५५) यौवनरूप। (जयो०वृ० ११/१०)

यौवनारामः (पुं०) तरुणिमोद्यान, तरुण उद्यान, पुष्पों से समृद्ध बगीचा। (सुद० ८६) (जयो० ११/९८)

यौवनाश्वः (पुं०) युवनाश्व का पुत्र मान्धाता।

यौवराज्यं (नपुं०) [युजराज+ष्यञ्] युवराज पद, युवराज का अधिकार।

यौष्माक (वि०) तुम्हारा, आपका।

र

रः (पुं०) खर प्रतृयाहार का एक वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है। इसे अन्तस्थ में गिना जाता है।

रः (पुं०) रकार।

रः (पुं०) [रा+ड] ०आग, अग्नि।
०लाल रंग-हींकार में जो 'र' है वह रक्त लाल रंग का वाचक है। ह्रीकार मध्ये यो रकारः स रक्तवर्णः (जयो०वृ० १९/५१)
०कामानल, वह्नि-'रस्तु कामानल वह्नौ' इति विश्वलोचनः। (जयो० १५/५४) 'रकारेण कामानलेन सहितः' (जयो०वृ० १५/५४)
०रान्त, सुरा। (जयो०वृ० १६/४९)
०गर्मी, उष्णता।
०प्रेम, इच्छा, वाञ्छा, कामना।
०गति, चाल।

रंह् (अक०) जल्दी करना, वेग से चलना।

रंह् (अक०) ०बहाना, जाना।
०बोलना।

रंहतिः (स्त्री०) [रंह्+शितप्] वेग, गति।

रंहस् (पुं०) [रंह्+असुन्] गति, वेग।
०आतुरता, प्रचण्डता, उत्कटता, उग्रता।
०गृहस्थाश्रामजनिज। (जयो०२४/१४४)

रक्त (भू०क०कृ०) [रञ्ज् करणे क्तः] रंगा हुआ, रागिमा युक्त, लालिमा सहित, लिप्त, सना हुआ।
०अनुरक्त, अनुराग, सानुराग।
०प्रेमासक्त, स्निहिल।
०प्रिय, वल्लभ, सराग। (सम्य० १२३)
०सुहावना, आकर्षक, मधुर, सुखद।

रक्तः (पुं०) लाल वर्ण, लाल रंग।
०कुसुम्भ।

रक्तं (नपुं०) रुधिर, खून। लोहित वर्ण (जयो० १५/२)
०तांबा, केसर।

रक्तक (वि०) लाल।
०अनुराग युक्त।

रक्तकण्ठ (वि०) मधुर कण्ठ वाला।

रक्तकण्ठिन् (वि०) माधुर्यपूर्ण कण्ठ वाला।

रक्तकंदः (पुं०) मूंगा, प्रवाल।

रक्तकंदलः (पुं०) प्रवाल, मूंगा।

रक्तकमलं (नपुं०) लाल कमल, अरविंद। (जयो०वृ० १५/१)

रक्तचंदनं (नपुं०) लाल चन्दन।
०केसर।

रक्तचूर्णं (नपुं०) सिन्दूर।

रक्तछर्दि (स्त्री०) रुधिर युक्त वमन, खून की उल्टी।

रक्तजिह्वः (पुं०) सिंह।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्ततुण्डः (पुं०) शुक, तोता।
रक्तदृश् (पुं०) कबूतर।
रक्तधातुः (पुं०) गेरु, हरताल, तांबा।
रक्तपः (पुं०) पिशाच, भूत प्रेत।
रक्तपल्लवः (पुं०) अशोक तरु।
रक्तपा (स्त्री०) प्यासा। (समु० १/१९)
०जोंक।
रक्तपातः (पुं०) नरहत्या।
रक्तपाद (वि०) रक्त पैरों वाला।
रक्तपादः (पुं०) तोता। ०शुक, कीर।
०युद्धस्थ।
०हस्ति।
रक्तपायिन् (पुं०) खटमल।
रक्तपायिनी (स्त्री०) जोंक।
रक्तपिण्डं (नपुं०) लाल फुंसी।
रक्तप्रकोपः (पुं०) कोपदेश, क्रोध स्थान। (जयो० १८/२२)
रक्तप्रभा (स्त्री०) गैरिकाली। (जयो०वृ० १८/६३) ०गेरुकी धूलि, लालप्रभा।
रक्तप्रमेहः (पुं०) मूत्र में रक्त आना।
रक्तप्रमोक्षणं (नपुं०) खून बहाना। (वीरो० १६/३)
रक्तभवं (नपुं०) मांस।
रक्तमोचनं (नपुं०) रुधिर आना।
रक्तमृत्तिका (वि०) गैरिक मिट्टी। (वीरो० १६/३)
रक्तयुक्त (वि०) अनुरक्त, ०अनुराग सहित, स्नेहिल। (जयो०वृ० ६/९३)
रक्तरहित (वि०) ०अनुराग रहित। (जयो० १६/९३) ०लालिमा विहीन। ०क्षीण कान्ति वाला।
रक्तवटी (स्त्री०) चेचक।
रक्तवत् (वि०) अनुरक्त, (जयो० वृ० ५/९३) ०राग सहित।
रक्तवर्गः (पुं०) ०लाख।
०अनार का वृक्ष।
रक्तवर्णः (पुं०) लाल रंग।
रक्तवर्णम् (नपुं०) स्वर्ण, सोना।
रक्तवर्णा (वि०) दिवानुरागिणी। (जयो० १०/११६)
रक्तवसन (वि०) गेरुए वस्त्र वाला, लाल वस्त्र धारण करने वाला।
रक्तवसनं (नपुं०) लाल वस्त्र। ०गेरिक वस्त्र।
रक्तशासनं (नपुं०) सिन्दूर।
रक्तशीर्षकः (पुं०) सारस।
रक्तसन्ध्यकं (नपुं०) लाल कमल।
रक्तसारं (नपुं०) लाल चंदन।
रक्ता (स्त्री०) ०लाख।
०गुंजा का पौधा।
रक्ताक्षः (पुं०) भैंसा।
०कबूतर।
रक्ताक्षिका (पुं०) भैंस। (सुद० ४/२८)
०अनुराग युक्त नेत्रवाली। (जयो०वृ० ११/८२)
रक्तांगः (पुं०) खटमल।
०मंगलग्रह।
रक्ताधिमंथः (पुं०) आंखों की सूजन।
रक्तांबरः (पुं०) लाल वस्त्रधारी।
रक्ताम्बरं (नपुं०) लाल वस्त्र।
रक्तांबरता (स्त्री०) आकाश की लालिमा। (जयो० १८/५९) 'नानाप्रसक्तिरिति यज्जडेषु तेन रक्ताम्बरत्वमितमर्कमहोदयेन। (जयो० १८/५९) रक्ताम्बरत्वमाकाशस्यारुणत्वमुत चार्कमहाशयेन रक्तांबरत्वं रक्तवस्त्रधारकसम्प्रदायित्वम्। (जयो०वृ० १८/५९)
रक्तार्बुदः (पुं०) रसौली।
रक्ताशोकः (पुं०) लाल फूलों वाला अशोक।
रक्ताशयः (पुं०) रक्त के आधार युक्त।
रक्तिका (पुं०) गुंजा।
रक्तिमन् (पुं०) राग। (जयो०वृ० १६/४०) ललाई। अनुराग, प्रसन्नता। (जयो० ५/१३) [रक्त इमनिच]
रक्ष् (अक०) रक्षा करना, पोषण करना, राज्य करना। रक्षतासि (समु० ४/२२) रक्षत (४/४१)
रक्ष् (सक०) बचाना। आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि (दयो० २/४)
रक्षक (वि०) [रक्ष्+ण्वुल्] रक्षा करने वाला, चौकसी करने वाला, पालन-पोषण करने वाला। (दयो० १/२१)
रक्षकः (पुं०) संरक्षक, पालक, अभिभावक।
०पहरेदार, चौकीदार, संधारक (जयो० ८/१०४)
रक्षण (नपुं०) [रक्ष्+ल्युट्] संधारण, अभिरक्षा, सुरक्षा, बचाव, चौकसी। (जयो० ११/९५) 'कोः पृथिव्या रक्षणे उद्यन्ते' (जयो० १/४५)
रक्षणतातिः (स्त्री०) संरक्षण परम्परा, संधारण रीति। (जयो० १३/१०२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्षस् (स्त्री०) [रक्ष् भावे अ+टाप्] ०सुरक्षा, अभिरक्षा।
०चौकसी, पहरा।
०रक्षासूत्र, रक्षाबन्धन।
०भस्म, राख।
०दण्डनायक।

रक्षाकरणं (नपुं०) सुरक्षा करना। (वीरो० १४/३७)

रक्षागृहं (नपुं०) प्रसूति गृह।

रक्षाधिकृतः (पुं०) अधीक्षक, शासक।

रक्षापेक्षकः (पुं०) द्वारपाल, पहरेदार।

रक्षापात्रः (पुं०) भोजपत्र।

रक्षापालः (पुं०) पहरेदार, चौकीदार, रक्षक, द्वारपाल।

रक्षाभूषणं (नपुं०) ताबीज।

रक्षामणि (स्त्री०) ताबीज।

रक्षाहारः (पुं०) ताबीज।

रक्षितृ (वि०) बचाने वाला।

रक्ष्य (वि०) रक्षा करने वाला।

रक्ष्यरक्षकः (पुं०) पिशाच से रक्षा करने वाला। (जयो०वृ० १५/६३)

रघुः (पुं०) [लंघति, ज्ञानसीमान प्राप्नंति-लंघ्+कु] एक सूर्यवंशी नृप, दिलीप, पुत्र, अज का पिता।

रघुकुलः (पुं०) सूर्यवंश।

रघुनंदनः (पुं०) राम।

रघुपतिः (पुं०) राम।

रङ्कः (वि०) [रमते तुष्यति-रम्-क] ०अधम, नीच।
०गरीब, निर्धन। (जयो० २/१३१)
०अभागा, बेचारा, असह्यय। (जयो० २/१५७)
०दयनीय।
०मन्थर।

रङ्कः (पुं०) भूखा, व्याकुल।

रङ्कुः (पुं०) हरिण, कुरंग, कृष्णसार, मृग।

रङ्ग (पुं०) [रञ्ज् भावे घञ्] ०वर्ण, लेप, रोगन।
०रांगा। (जयो० १५/८१)
०मण्डप (जयो०१२/७६) रंगमंच, नाट्यशाला, नाट्यगृह, आमोदस्थल। (जयो०; सु० १२८)
०सभा भवन।
०सुरत स्थल। (जयो०वृ० ६/६८)

रङ्गं (नपुं०) रांगा, टिन।

रङ्गकारः (पुं०) चित्रकार।

रङ्गकर्मी (पुं०) चित्रकार, चितेरा।

रङ्गजीवकः (पुं०) चित्रकार, रंगवेपक।

रङ्गचुरः (पुं०) अभिनेता, नाटक का पात्र।

रङ्गजं (नपुं०) सिन्दूर।

रङ्गतत्त्वं (नपुं०) रात्रिवृत्त। (जयो० १७/११५) रागतत्त्व।

रङ्गद्वारं (नपुं०) रंगशाला का द्वार, नाटक की प्रस्तावना, मंगलगीत।

रङ्गधरः (पुं०) चित्रकार।

रङ्गधर (वि०) रागधारण करने वाला। 'रङ्गं शरीरगत-रङ्गधरं चकार'

रङ्गप्र (वि०) रूप रंग प्रतिष्ठायुक्त। (वीरो० १७/२८)

रङ्गप्रासादः (पुं०) उच्च भवन, सौध। (जयो०वृ० ११/४९) (सुद० १३६)

रङ्गभू (स्त्री०) नाट्यगृह, नाटकघर, रंगभूमि, रंगमंच। (सुद० ४/९)

रङ्गभूमिः (स्त्री०) रंगमंच, नाट्यशाला, अभिनय केन्द्र। (दयो०८) (जयो० ५/६०)
०रणक्षेत्र, रणस्थल।

रङ्गमण्डपः (पुं०) रंगशाला, नाट्यशाला।

रङ्गमातृ (स्त्री०) महावर।
०कुटनी, दूती।

रङ्गय् (सक०) आलिंगन करना, सजाना। (जयो० १४/८९)

रङ्गवाटः (पुं०) अखाड़ा, रंगमंच।

रङ्गशाला (स्त्री०) रंगमंच। ०कला मंडप।

रङ्गस्थलं (नपुं०) ०सुरतस्थल, प्रेम स्थान। (जयो०वृ० ६/६८)
०रंगमंच, रंगशाला, रंगभूमि। (सुद० १२२) 'नमस्तु रङ्गस्थलम्' (समु० ८/३)

रङ्गिणी (स्त्री०) मनोरञ्जिका। (जयो०वृ० ९/६७)

रच् (सक०) सुसज्जित करना, विभूषित करना, व्यवस्थित करना।
०बनाना, निर्माण करना। (रचितु (जयो० ५/२३) रचयितुं-सम्पादयितुम् (जयो०वृ० ५/२३)
०सम्पादन करना, ग्रहण करना।
०लिखना, रचना करना।
०अलंकृत करना, सजाना।
०रखना, स्थिर करना।

रचनं (नपुं०) विन्यास, तैयारी।
०सन्निवेश, सर्जन करना, उत्पन्न करना।
०सम्पन्नता, पूर्ति, निष्पत्ति।
०सृजन, निर्माण, संरचना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रचना (स्त्री०) [रच्+युच् स्त्रियां टाप्] सृजन, निर्माण, संरचना, कृति।
०सन्निवेश। (जयो०वृ० १/११)
०सम्पन्नता, पूर्ति, निष्पत्ति।
०उत्पन्न करना, बनाना।

रचनापाटवः (पुं०) सृजन कला, संरचना विशेषता। (जयो० १११)

रचनानुरक्त (वि०) मनोनुरक्त, प्रसन्न। (जयो०वृ० १६/६४)

रचित (वि०) सन्निवेशित, (सम्य० १५६) सृजित। (जयो० ११/१०) ०अभिनिर्मित, ०संरचित।

रजकः (पुं०) धोबी।

रजका (स्त्री०) धोबन, धोबिन। (सुद० ४/२८)

रजकी (स्त्री०) ०धोबिन, ०धोबी की भार्या।

रजत (वि०) उज्ज्वल, सफेद रंग का, धवलता युक्त।
०दुर्वण। (जयो० ३/७)

रजतं (नपुं०) चांदी।
०माला।
०रुधिर।
०हाथी दांत।
०तारा समूह।

रजताचलः (पुं०) रजतपर्वत। (वीरो० ११/२५)

रजनि (स्त्री०) रात्रि, रात। (सुद० ९९) चमकाने वाली, पीली। (दयो० १/१७)

रजनी (स्त्री०) ०निशा, ०शशिता, ०तमस्विनी।

रजनीकरः (पुं०) चन्द्र, शशि।

रजनीचरः (पुं०) पिशाच, बेताल।

रजनीजलं (नपुं०) ओस, बेताल।

रजनीजनं (नपुं०) ओस, हिमकण, धुंध।

रजनीपतिः (पुं०) चन्द्र, शशि।

रजनीप्रबन्धः (पुं०) निशासत्त्व। (जयो० १८/३)

रजनीमुखं (नपुं०) सन्ध्या, प्रदोष। (जयो० १५/८)

रजनीशः (पुं०) चन्द्र। ०हिमांशु, ०निशाशु।

रजनीशकला (स्त्री०) चन्द्रकिरण। (जयो० ५/६७)

रजस् (पुं०) [रञ्ज्+असुन्] धूली, रज, रेणु, गर्द। (समु० ३/१६) (सुद० १२५)
०अन्धकार, तमस्।
०गुण विशेष।

रजसानु (पुं०) मेघ, बादल।
०हृदय।
०आत्मा।

रजः समूहः (पुं०) धूलि का ढेर। (वीरो० १६/५)

रजस्पुत्रः (पुं०) लोलुपता, लालच।

रजस्बंधः (पुं०) रजोधर्म बन्द होना।

रजस्वल (वि०) [रजस्+वलच्] ०मैला, ०धूल से भरा हुआ, धूल धूसरित।

रजस्वला (स्त्री०) ०रेणुबहुला, धूलि की प्रमुखता। (जयो० १३/९२)
०मासिकधर्मवती, मासिकधर्मयुक्ता, रजोधर्मयुक्ता। (जयो० ८/१०) (जयो०वृ० २१/९) (दयो० २/६)

रजांसि (वि०) धूलिकण युक्त, पराग परिपूर्ण। (जयो० १/५३)

रजोगुणकः (पुं०) रजधोना।
०धोबी। (जयो० २५/५२)

रज्जुः (स्त्री०) रस्सी, डोरी, धागा, सूत।

रज्जुगुणं (नपुं०) ०सूत्र, रस्सी, धागा। (जयो० १२/१३) (सम्य० ७३)

रज्जूवत् (वि०) रस्सी की तरह। यथावलं बुद्धिरुदेतिजन्तोरज्जूवदस्योद्वलितुं समन्तोः। (सम्य० ७३)

रंज् (अक०) चमकना, रंगना, लाल होना।
०मुग्ध होना, प्रेमासक्त होना।
०प्रसन्न होना, संतुष्ट होना।
०सुशोभित होना। (जयो० ३/१०९)

रञ्जकः (पुं०) [रंजयति-रंज्+णिच्-ण्वुल्] चित्रकार, रंगरेज।
०उत्तेजक, उद्दीपक, रोचक। (जयो०वृ० १२/१२८)

रञ्जक (वि०) रंज करने वाला, शोक करने वाला।

रञ्जकं (वि०) लाल चन्दन।
०सिन्दूर।

रञ्जनः (पुं०) रंगरेज। (समु० ९/१८)

रञ्जनं (नपुं०) [रज्यतेऽनेन रञ्ज् करणे ल्युट्] रंग करना, हल्का करना, लेप करना, रगना।
०वर्ण, रंग।
०प्रसन्न, खुश, संतुष्ट, तृप्त।

रञ्जनकृत् (वि०) रंजन करने वाला, मनोरंजन करने वाला। जनकसुतादिकवृत्तवचस्तु जनरञ्जनकृत्केवलमस्तु। (सुद० ८८)

रञ्जनव्रती (वि०) प्रसन्न करने वाला, खुश करने वाला। न क्षलमेत्यपि समरी यावज्जन रञ्जनव्रती समरीन। (जयो० ६/९३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रञ्जनार्थ (वि०) रागार्थ। (जयो०वृ० १२/१३५) ०सुतृप्ति के लिए। ०प्रसन्नतार्थ।

रञ्जनी (स्त्री०) [रञ्जन्+ङीप्] नील, का पौधा।
०मदिरा रोचनी।

रञ्जित (वि०) सुशोभित। (जयो० ३/१०७)
रञ्जनी नीलिका शुण्डा मञ्जिष्ठा रोप नीष्वपि इति विश्लो। (जयो० १६/७६)

रज्यमान (वि०) राज्य करने वाला। (सुद० ४/८)

रट् (वि०) ०रटना, चिल्लाना।
०दहाड़ना, चीखना, चीत्कार करना।
०क्रन्दन करना।
उद्घोषणा करना, पुकारना।
०उच्चारण करना-पुनः पुनरुच्चारण। (जयो० २३/६१)

रटनं (नपुं०) [रट्+ल्युट्] चिल्लाना, उच्चारण करना, चीत्कार करना।
०घोघकना, स्मरण करना।

रटनकारक (वि०) रट लगाने वाला। (दयो०३४)

रण् (अक०) ध्वनि करना, झुनझुनाना, टनटनाना, शब्द करना।

रणः (पुं०) [रण्+अप्] युद्ध, संग्राम, लड़ाई।
०शब्द, शोर, कोलाहल।
०प्रतियोगिता। (जयो० ११/९६) मृक्षणं म्रदिमलक्षणे रणे काद्रवेयमपि वक्रिमक्षणे। (जयो० ९१/९६) 'भूमिकोण-रणः कोणे क्वणे युद्ध।' इति विश्वलोचनः' (जयो०वृ० २३/४०) (१६/३०)
०कलह, ईर्ष्या। (जयो०वृ० १६/३०)

रणकर्श्री (वि०) कलह करने वाली। (जयो०वृ० १/७)

रणक्षितिः (स्त्री०) युद्धस्थल। ०रणस्थल, ०संग्राम भू-भाग।

रणक्षेत्रं (नपुं०) युद्धभूमि।

रणतुलं (नपुं०) युद्धघोष, संग्राम बिगुल। (वीरो० ४/६३)

रणतूर्यं (नपुं०) युद्ध दुन्दुभि, युद्ध घोष।

रणत्कारः (पुं०) रण रण के शब्द।

रणदुंदुभिः (स्त्री०) युद्ध घोष, युद्ध विगुल।

रणधुरा (वि०) युद्ध में अग्रणी।

रणन्नूपुरः (पुं०) रण रण झुनझुन करने वाले नूपुर। ये ये रणन्नूपुरसाररासा यूनां तु चेतः पततां सुभासाः। (वीरो० ९/३८)

रणभूमिः (स्त्री०) आजि, रणक्षेत्र, युद्ध स्थान। (जयो०वृ०६/८०)

रणमत्तः (पुं०) हस्ति, हाथी।

रणमुखं (नपुं०) युद्ध का अग्रभाग।

रणमूर्धन् (पुं०) लड़ाई का मुख्य क्षेत्र, सेना का मूलस्थान।

रणरंकः (पुं०) हस्ति दंत के मध्य की दूरी।

रणरंगः (पुं०) मच्छर।

रणरणकः (पुं०) चिन्ता, बेचैनी, खेद, व्याकुलता।

रणरेणु (स्त्री०) संग्राम रज। (जयो० ६/३८)

रणवाद्यं (नपुं०) युद्ध विगुल।

रणशिक्षा (स्त्री०) युद्ध की शिक्षा, सैन्यविज्ञान का अभ्यास।

रणसंकुलं (नपुं०) घोर युद्ध, घमासान युद्ध।

रणसज्जा (स्त्री०) युद्ध सामग्री।

रणसहायः (पुं०) युद्ध का सहभागी।

रणसिद्धि -शिङ्गः (पुं०) रणसिद्धि में उन्मत्त। (जयो० ८/१५)

रणस्तम्भः (पुं०) विजय स्तम्भ, विजयस्मारक।

रणस्थलं (नपुं०) युद्ध क्षेत्र। ०संग्रामस्थल।

रणस्थली (स्त्री०) युद्ध भूमि। (जयो० ११/२७)

रणाङ्गणं (नपुं०) युद्ध स्थल। (जयो० ८/१०)

रणाग्रं (नपुं०) युद्ध स्थान का अग्रभाग।

रणातोद्यं (नपुं०) युद्धवाद्य, संग्राम विगुल।

रणापेत (वि०) भगोड़ा, युद्ध से भागने वाला।

रणारम्भपरा (वि०) युद्धारम्भार्थ सन्नद्ध।

रणिज् (वि०) खनखनाहट। (जयो० ८/५३)

रणेच्छु (वि०) युद्ध की इच्छा करने वाला। (जयो० ७/५१)

रणोत्थशर्म (वि०) युद्धजनित सुख, युद्ध करने वाले का जोश। (जयो० ८/१३)

रणोत्सुक (वि०) युद्धाभिलाषी। (जयो० ३/१००)

रंडः (पुं०) बंजर।

रत (भू०क०कृ०) [रम्+क्त] निमग्न। (जयो० ३/३)
०लीन, तल्लीन, प्रवृत्ति।(जयो०वृ० १२/११५)
०तत्पर। (जयो० २/४८) (जयो०१/४०)
०खुश, प्रसन्न, तृप्त। (सुद० ८८)
०निरत। (सुद० १३५)
०व्यस्त, संलग्न ।(जयो०वृ० १/२२)
०चिरपरिचित। (जयो० २३/६८)

रतं (नपुं०) संभोग, मिथुन, रतिक्रीड़ा। सहेत विद्वानपदे कुतो रतम् (जयो० २/१४०)

रतकूजि (नपुं०) कामासक्त की सीत्कार।

रतज्वरः (पुं०) काक, कौवा।

रततालिन् (पुं०) कामासक्त, स्वेच्छाचारी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रतनारीचः (पुं०) कामदेव, मदन।
०श्वान, कुत्ता।
रतबन्धः (पुं०) मैथुन, संभोग।
रतहिंडकः (पुं०) बलात्कारी, कामुक, विलासी।
रता (स्त्री०) रतिक्रीड़ा, कामक्रीड़ा। ०अनुरक्ति।
रताङ्गी (स्त्री०) कोमलाङ्गी। लतावत्सुकोमलशरीरा। (जयो० ११/९४)
रतिः (स्त्री०) [रम्+क्तिन्] ०आनंद, हर्ष, खुशी, संतोष।
०मैथुन, संभोग, सहवास, रतिक्रीड़ा, सुरत।
०प्रेम, स्नेह।
०रति-कामदेव स्त्री, रतिदेवी। (सुद० १/४१) 'कुचौ स्वकीयो विवृतो तयाऽत: रतेरिवाक्रीडधरो स्म भात:।। (सुद० १००) 'अनङ्गस्य स्त्री रति' (जयो० ३/८८) शर्मपात्री रति:। (जयो०वृ० ३/८७)
रतिकर (वि०) प्रीतिकर, राग सम्पादक। (जयो०वृ० ३/१२)
रतिका (स्त्री०) लतिका कामलता।
रतिकेतनं (नपुं०) रतिगृह। (मुनि० २, जयो० २२/४६)
०कामकेलि स्थल, ०सुरत-रति मंडल।
रति कौतुक (वि०) नाम की उत्सुकता।
रतिकौतुकः (पुं०) रति और कामदेव। (सुद० २/२६)
रतिगृहं (नपुं०) क्रीड़ागृह, रतिक्रीड़ा भवन।
रतितस्करः (पुं०) व्यभिचारी पुरुष, कामासक्त।
रतितुलित (वि०) रतितुल्य रूप। (जयो० ६/१६)
रतिदूती (स्त्री०) प्रेम संदेशिनी।
रतिनाथः (पुं०) महादेव।
०कामदेव। (जयो० ५/२४)
रतिपतिः (पुं०) कामदेव। (जयो०वृ० १/७८) (जयो०वृ० ३/२१) स्मर (जयो०वृ० ३/४९) 'ईदृशे युवगणेऽथ विदग्ध का क्षति रतिपतावपि दग्धे। (जयो० ६/२५)
रतिप्रतिमा (स्त्री०) काममूर्ति। (जयो० ६/७३) ०रतिबिम्ब।
रतिप्रभः (पुं०) रतिप्रभ नामक सर्प, नागराज। (जयो०वृ० २/१५८)
रतिप्रियः (पुं०) कामदेव।
रतिरमणः (पुं०) कामदेव।
रतिरसप्रसरः (पुं०) रतिक्रीड़ा समूह। (जयो० १८/२५)
रतिराड् (पुं०) कामदेव, स्मर। (जयो० २/१५७) 'रतिराट् चापाल्लालितगात्र:' (जयो० २/१५७)
रतिरासः (पुं०) सुरतक्रीड़ा। (जयो० १८/१०)
रतिलपट (वि०) कामासक्त, कामी, विनाशी।
रतिवरः (पुं०) रतिवर नामक कबूतर। रतिवर: कपोत:। (जयो० २३/४५)
रतिषेणा (स्त्री०) रतिषेणा नामक कपोति, कबूतरी। (जयो० २३/४५)
रतीन्द्रः (पुं०) कामदेव। (जयो० ६/५०)
रतीन्द्रवरः (पुं०) रतिवर। ०कामदेव, ०मदन।
रतीशः (पुं०) कामदेव, स्मर। (जयो० १/६१) (जयो० १६/४७)
रतीशकेतुः (स्त्री०) कामदेव की पताका। (सुद० १०१)
रतीशमतिः (स्त्री०) कामदेव की बुद्धि। 'रतीशस्य कामदेवस्य मतिरिव' (जयो० ६/७३)
रतीशयज्ञः (पुं०) कामयज्ञ। (जयो०२३/६)
रतीशशासनप्रवर्तक (वि०) स्मरादेशकर। (जयो०वृ० १६/४७)
रतीश्वरः (पुं०) कामदेव, स्मर। (जयो० १६/५) राजाधि राजस्य रतीश्वरस्य रतिर्यथाप्रीतिकरीह तस्य। (समु० ६/११)
रत्नं (नपुं०) [रमतेऽत्र, रम्+न तान्तादेश:] मणि, मुक्ता, आभूषण।
०मूल्यवान् पदार्थ, श्रेष्ठतम वस्तु। जिनोक्ततत्त्वाध्ययने प्रयत्नं कुर्याद्यदिष्टप्रविधायि रत्नम्। (सम्य० ७२)
०अत्यधिक प्रिय। भोग उत्तमतमो भुवि दारास्तेषु रत्नमियमेव ससारा। (जयो० ५/१६)
रत्नकंदलः (पुं०) मूंगा।
रत्नखचित (वि०) रत्नजटित। (जयो० १५/८१)
रत्नगर्भः (पुं०) रत्नाकर, समुद्र।
रत्नगुलिका (स्त्री०) रत्नपोटली, रत्नपिटक। (समु० ३/४३)
रत्नजूटः (पुं०) रत्नसमूह। (वीरो० २/१८)
रत्नत्रयं (नपुं०) तीन रत्न। (भक्ति० २९) दर्शन, ज्ञान और चारित्र। (सम्य० ३०)
०खनिज। (हीरा पन्ना)
०जलज। (सीप-मोती)
०प्राणिज। (गजमुक्ता) (सुद०पृ० ४३)
रत्नत्रयमार्गी (वि०) मोक्षमार्गी, मोक्षमार्ग के सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का अनुसरण करने वाला।
रत्नत्रयसंसूचक (वि०) मोक्षमार्ग के तीन गुणों का सूचक। (जयो० ६/१३०)
यत्पादयो: पतित्वाऽन्यभूपकरकुड्मलं व्रजति बाले।
रत्नत्रयसंसूचकचित्रिकरुचिमवनितल भाले।। (जयो० ६/३०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रत्नत्रयाराधनकारिन् (वि०) ०तीन महारत्नों के धारण करने वाले। ०सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की आराधना करने वाले। रत्नत्रयाराधनकारिणा वा प्रस्पष्ट-मुक्तोचितवृत्तभावा। (सुद० २/३०)

रत्नदीपः (पुं०) रत्नजटित दीपक।

रत्नप्रदीपः (पुं०) ०प्रदीप्त दीपक, ०प्रज्वलित दीपक।

रत्नद्वीपः (पुं०) एक समुद्री द्वीप। (समु० ३/१७)

रत्ननिकरः (पुं०) वसुमार, रत्नसमूह। (जयो०वृ० १२/६६)

रत्नपरीक्षकः (पुं०) मणिकार, जौहरी। (जयो० ७/८)

रत्नभूपः (पुं०) प्रमुख राजा। (सुद० २/३९)

रत्नमाला (स्त्री०) तिलकनगर के राजा अतिवेग की रानी प्रियकारिणी की पुत्री। (समु० ६/२५)

रत्नमुख्यं (नपुं०) हीरा।

रत्नराशिः (स्त्री०) रत्नसमूह। सुगुणैरमलैर्गुणितो रत्नैरिव रत्नराशिरिह रम्यः।। (वीरो० ४/५५)

रत्नवृष्टिः (स्त्री०) रत्नवर्षा (दयो० ९)

रत्नसमर्पक (वि०) रत्न प्रदाता। (जयो० १२/५४)

रत्नसानु (पुं०) मेरुपर्वत।

रत्नसू (स्त्री०) पृथ्वी, धरा, भू, भूमि।

रत्नसूति (स्त्री०) भू, भूमि, ०धरणी, धरत्री।

रत्नाकारः (पुं०) समुद्र।

रत्नाकरः (पुं०) ०रत्नों की खान। ०समुद्र।

रत्नाञ्चित (वि०) रत्नखचित।

रत्नान्वेषणकारि (वि०) रत्नत्रय का अनुसंधान करने वाला। (मुनि० ८)

रत्नायुधः (पुं०) नाम विशेष, वज्रायुध कुमार की भार्या रत्नमाला का पुत्र। (समु० ६/२९)

रत्नालोकः (पुं०) मणि कान्ति।

रत्नावली (स्त्री०) रत्नसमूह।

रत्नांशकः (पुं०) रत्ननिर्मित। रत्नों से बना। (वीरो० १९/५)

रत्निः (स्त्री०) कोहनी। २४ अंगुल का एक हाथ।

रत्नोचितद्वीपः (पुं०) रत्नद्वीप। व्यापारकार्यार्थमचिन्त्य धाम, रत्नोचित द्वीप मतो व्रजामः। (समु० १/३२)

रत्यादयिणी (वि०) रति की तरह आदर वाली। (जयो० १७/३५)

रथः (पुं०) यान, वाहन, गाड़ी। (दयो० २८)
०गमनचिह्न, गति। (जयो० ६/२८)
०वेग, गति। (जयो० ६/९८)
०वेतस्। (जयो० १३/७४) 'रथस्तु स्यन्दने कार्य वेतसे चरणेऽपि चेति' विश्वलोचनः (जयो०वृ० १३/७४)
०अवयव, भाग, अंश, हिस्सा।
०नायक।
०चरण।
०स्यन्दन। (जयो०वृ० १३/७४)

रथकट्या (स्त्री०) रथ समूह।

रथकारः (नपुं०) बढ़ई, सुधार।

रथकुटुम्बिन् (पुं०) सारथि, वाहक।

रथकूबरः (पुं०) गाड़ी की शहतीरी।

रथकूबरं (नपुं०) देखो ऊपर।

रथकेतुः (नपुं०) रथ की ध्वजा।

रथक्षोभः (पुं०) रथ का हिलना, हिचकोले लेना।

रथगर्भकः (पुं०) पालकी, डोली।

रथगुप्तिः (स्त्री०) रथ का रक्षा कवच।

रथचरणः (पुं०) पहिया, चक्र।

रथचर्या (स्त्री०) रथ का संचरण, रथ का घूमना।

रथधुर् (स्त्री०) रथ की धुरी।

रथधुरी (स्त्री०) यानधुरी। (जयो० ६/१२)
०वाहक। (जयो० ६/१२)

रथनाभिः (स्त्री०) रथधुरी।

रथनीडः (पुं०) रथ का भीतरी भाग।

रथबन्धः (पुं०) रथ का साज़-समान।

रथमण्डलं (नपुं०) रथ समूह। (जयो० १३/३५) 'रथानां मण्डलं समूहः।'

रथमण्डलनिस्वनः (पुं०) रथ समूह की ध्वनि। 'रथानां मण्डलं समूहस्तस्य निस्वनैश्चीत्कारैः' (जयो० १३/३५)

रथमहोत्सवः (पुं०) रथोत्सव। ०रथयात्रा।

रथयात्रा (स्त्री०) रथोत्सव।

रथयुद्धं (नपुं०) रथ में बैठे हुए युद्ध करना।

रथरेणु (स्त्री०) आठ त्रसरेणु का एक रथरेणु।

रथवर्त्मन् (नपुं०) राजमार्ग; मुख्यपथ।

रथवाहकः (पुं०) सारथि, चालक। (दयो० ७९)

रथवीथिः (स्त्री०) राजमार्ग।

रथशक्तिः (स्त्री०) यान शक्ति।

रथशाला (स्त्री०) गाड़ीघर, यानशाला।

रथस्थलं (नपुं०) यानस्थान। (जयो०वृ० १/१८)

रथस्थितिः (स्त्री०) यान की स्थिति, वाहन की स्थिति। (जयो० २१/२०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रथाक्षः (पुं०) रथ की धुरी।

रथाग्रणी (पुं०) सारथि, वाहक। (जयो० १३/५)

रथाङ्गं (नपुं०) रथचक्र, रथ का पहिया। (जयो० ८/५८, दयो० १/१९)

रथाङ्गिन् (वि०) चक्री युक्त, चक्रवर्ती, चक्रधारी। (जयो० ९/५६) रथाङ्गिनं बाहुबलिः स एकः जिगाय पश्चात्त सांश्रिये कः। (वीरो० १८/३)

रथाङ्गिवद्ध (वि०) चक्री युक्त। (वीरो० १३/६)

रथिक (वि०) रथ की सवारी करने वाला।

रथिन् (वि०) [रथ+इनि] रथ में सवारी करने वाला। रथेन गमनशीला रथगामी। (जयो० १३/१२)

रथिन् (पुं०) रथ का नायक, रथ का स्वामी।
०रथारुढ। (जयो०)

रथ्यः (पुं०) [रथं वहति-यत्] रथाश्व, रथ का घोड़ा।

रथ्या (स्त्री०) मार्ग, राजपथ। रथ्या रजांसीह किरन-समीर-उन्मत्तकल्पो भ्रमतीत्यधीरः। (वीरो० १२/२२)

रद् (सक०) खुरचना, साफ करना।
०फाड़ना, विदीर्ण करना।

रदः (पुं०) दांत, खुरचना, दन्त। (जयो०५/८८)

रदखण्डनं (नपुं०) दांत से काटना।

रदचक्रं (नपुं०) दंतमण्डल। (जयो०वृ० १३/३६)

रदछदः (पुं०) ओष्ठ, होंठ।

रदनः (पुं०) [रद्+ल्युट्] दांत, दन्त।

रदनखण्डित (वि०) दन्त खण्डित, दांत से टूटने वाला। (जयो० ७/९६)

रदरोचिषा (स्त्री०) दन्तप्रभा, दांतों की चमक। 'रदानां दन्तानां रोचिषा किरणेन दन्तकान्तिः' (जयो० १७/१२९)

रदवासस् (पुं०) अधर, ओष्ठ। (जयो० १२/७८, ११/९९)

रदालिः (स्त्री०) दंत पंक्ति। (वीरो० ५/२०)

रदांशपुष्पाञ्जलिः (स्त्री०) दन्तकिरण का समर्पण। (सुद० २/१२)

रदांशु (नपुं०) दन्तप्रभा।

रध् (सक०) चोट पहुंचाना, मार डालना, नष्ट करना।
०संताप देना, कष्ट देना।

रन्तु (स्त्री०) [रम्+तुन्] रास्ता, मार्ग।
०नदी।

रन्धनं (नपुं०) [रध्+ल्युट्] क्षति पहुंचाना, सन्ताप देना।

रन्ध्रं (नपुं०) विवर, छिद्र, छेद, गर्त, गड्ढा, खाई, दरार।
०बलहीन स्थल।
०त्रुटि, दोष, कमी।

रन्ध्रवभ्रु (स्त्री०) मूषक, चूहा।

रन्ध्रवंशः (पुं०) पोला बांस।

रभ् (सक०) प्रारंभ करना शुरू करना, वर्णन, करना। (जयो० ८/७४) (जयो० ६/१०२)

रभस् (नपुं०) [नभ्+असुन्] ०प्रचण्डता, उत्साह।
०बल, सामर्थ्य।

रभस (वि०) [रभ्+असच्] ०वेग, गति, प्रवाह। (जयो० २६/५०)
०प्रबल, गहन, उत्कट, शक्तिशाली, तीक्ष्ण, तीव्र।
०प्रचण्डता, भीषणता, उग्रता।
०साहसिकता।
०क्रोध, आवेश।
०खेद, शोक, खिन्नता।
०हर्ष, आनन्द, खुशी।

रभसात् (अव्य०) शीघ्रमेव। (जयो० २६/३०)

रभसोदयी (वि०) अतिशीघ्र।

रम् (अक०) खुश होना, प्रसन्न होना। (वीरो० ८/१७)
०खेलना, क्रीड़ा करना।
०रहना, ठहरना।

रम् (सक०) सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना।

रम (वि०) [रम्+अच्] सुहावना, आनन्दप्रद, संतोष जनक।

रमः (पुं०) प्रेम, प्रीति, स्नेह, कामदेव, पति।

रमण (वि०) सुहावना, प्रिय, मनोहर।

रमणः (पुं०) कान्त, प्रेमी, पति। (जयो० २/१४८)
०कामदेव, मदन, स्मर।
०गधा।
०अण्डकोष।

रमणं (नपुं०) क्रीड़ा करना, प्रेमालिंगन।
०रति, मैथुन।
०हर्ष, उल्लास।
०कूल्हा, पुट्ठा।

रमणा (स्त्री०) [रमण+टाप्] सुंदर स्त्री।

रमणी (स्त्री०) कामिनी। (जयो० ३/३६)
०कान्ता, प्रिया, तरुणी। (जयो०वृ० ६/३५)

रमणीक (वि०) सुंदर, मनोहर। 'रमण्या इमं रमणीकमधरं' (जयो० १७/११८)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रमणीधामं (नपुं०) तरुणी तेज, कान्तास्थान। (जयो० १०/११९)
रमणीमणि (स्त्री०) स्त्रीरत्न। (जयो० ३/६४)
रमन्ते (वर्त०) रमण करते हैं।
रममाण (रम्+शानच्) क्रीड़ा करने वाले। कालक्षेपं चकारासौ रममाणो निजेच्छया। (वीरो० ८/१३)
रमा (स्त्री०) [रमयति-रम्+अच्+टाप्] ०पत्नी, स्त्री, स्वामिनी।
०लक्ष्मी। (दयो० २७) (सुद० ३/३८)
०शोभा, कान्ति, प्रभा, आभा। (जयो० ११/५९)
०धन-सम्पत्ति।
रमाकान्तः (पुं०) विष्णु।
रमानाथः (पुं०) विष्णु।
रमारती (वि०) अर्थ काम पुरुषार्थी। 'रमा च रतिश्च रमारती अर्थकामपुरुषार्थौ' (जयो० २/१०)
रमासमाजः (पुं०) स्त्री समूह। (जयो० १/६३)
रमितुं (रम्+तुमुन्) रमण करने के लिए। (सुद० ११३)
रम्भा (स्त्री०) कदली, केला। (सुद० ७२) (सुद० ७१) (जयो० १०/९३, १२/२५) 'जितापि रम्भा विधुजन्मदात्री' (जयो० ५/८१)
०स्वर्ग अप्सरा।
रम्भाजिता (वि०) रम्भा नामक अप्सरा को जीतने वाली। 'तरुणी रम्भा तरुणवयस्का रम्भा नाम स्वर्वेश्यापि जिता पराजिता' (जयो०वृ० ११/२१)
रम्भातरु (पुं०) कदलीवृक्ष। (जयो० ११/२१)
रम्भाव्यञ्जनं (नपुं०) कदली शाक। (जयो० १२/३०)
रम्य (वि०) [रम्यतेऽत्र यत्] ०सुखद, रमणीय, लुहावना। आनन्दप्रद। (सुद० ८७)
०सुन्दर, प्रिय, मनोहर।
रम्यः (पुं०) चम्पक वृक्ष।
रम्यकः (पुं०) जम्बूद्वीप स्थित चौथा क्षेत्र।
रम्यगत (वि०) रमणीयता को प्राप्त।
रम्यजातिः (स्त्री०) सुंदर उत्पत्ति।
रम्यतरु (पुं०) लुहावने वृक्ष।
रम्यदर्शन (नपुं०) सुदर्शनी, देखने में अत्यन्त प्रिय। (जयो० १३/६६)
रम्यधारा (स्त्री०) सुरम्य प्रवाह।
रम्यनारी (स्त्री०) सुंदर स्त्री।
रम्यपद (नपुं०) उचित स्थान।
रम्यपादपः (पुं०) सुंदर वृक्षावली।
रम्यफलं (नपुं०) अच्छे फल।
रम्यभावः (पुं०) मनोहर परिणाम।
रम्यशाला (स्त्री०) सुंदर क्रीड़ा स्थल।
रय् (सक०) जाना, पहुंचना।
रयः (पुं०) नदी प्रवाह।
०बल, सैन्य।
०गति, वेग। (जयो० ६/१०६) (जयो० ६/२२)
रय। वर्णन, विवेचन (जयो० ४/६५) कौशरस्य समुपेत्य शुचित्वं शारदोदयरयेऽस्तु कवित्वम्।
०उत्साह, उत्कण्ठा।
रयात् (अव्य०) शीघ्रमेव। (जयो० ९/६२)
रल्लकः (पुं०) [रमणं रत्-इच्छा तां लाति ला+क=रल्ल+कन्] कम्बक, ऊनी वस्त्र।
रवः (पुं०) (रु+अप्) क्रन्दन, चीख, चीत्कार, चिंघाड़।
०शब्द, कोलाहल, झनझनाहट।
०घंटा, भूषण, चाप।
रवण (वि०) क्रन्दन करने वाला, चिंघाड़ने वाला।
०ध्वन्यात्मक, शब्दायमान।
०तीक्ष्ण, तप्त।
०चंचल, अस्थिर।
रवणः (पुं०) ऊंट।
रवणं (नपुं०) पीतल, कांसा।
रविः (पुं०) [रु+इ] ०सूर्य, दिनकर, भानु। (सुद० ३/१)
* अर्क (जयो० ४/२५) 'सुमहोऽभिकलितलोको रविरिव वा केवलालोकः' (वीरो० ४/४२)
०अर्ककीर्ति राजा, रविकीर्ति राजा। (जयो० ४/२५)
रविकरः (पुं०) सूर्यकिरण। (जयो० ५/२२)
रविकलः (पुं०) सूर्यकिरण, भानुकला। (सुद०)
रविकान्तः (पुं०) सूर्यकान्तमणि।
रविकीर्ति (पुं०) अर्ककीर्ति राजा, अकंपन देश का राजा।
रविजः (पुं०) शनिग्रह।
रवितनयः (पुं०) शनिग्रह।
रविदिनं (नपुं०) रविवार।
रविधामं (नपुं०) सूर्य का स्थान।
रविपुत्रः (पुं०) शनिग्रह।
रविप्रसादः (पुं०) सूर्य रूपी दीपक। (सुद० ११७)
रविप्रभः (पुं०) एक देव, सौधर्म सभा का एक देव। (जयो० २४/१०१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रविप्रभव्योमयानं (नपुं०) रविप्रभविमान। (समु० ४/३६)
रविभासः (पुं०) सूर्यप्रभा, सूर्यकान्त। (समु० ५/१०)
रविरीतिः (पुं०) अर्ककीर्ति राजा। (जयो० ४/५)
रविवारः (पुं०) रविवार, आदित्यवार।
रविवासरः (पुं०) देखो ऊपर। ०सूर्यवार।
रविसंक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य की एक राशि।
रशना (स्त्री०) रस्सी, डोरी, धागा।
०रास, लगाम।
०कटिबंध, कंदौरा, कमरबंध करधौनी, करधानी।
रश्मिः (स्त्री०) डोर, डोरी, रस्सी।
०लगाम, रास।
०किरण, चन्द्रकला, प्रकाश, आभा।
०कान्ति, प्रभा।
रश्मिवेशः (पुं०) राजा सूर्यावर्त का पुत्र, यशोधरा रानी का नंदन। (समु० ५/२३)
रस् (सक०) भोजन करना, चखना, स्वाद लेना, खाना। 'रसति-भोजनं भुञ्जाने' (वीरो० ४/२४)
०देखना, अवलोकन करना। रसति-पश्यति, प्रेम्णावलोकयति (जयो० १०/११९)
रसः (पुं०) सार। फलों का रस। (सुद० ४/३९)
०शृंगार। (जयो० ३/४०) (जयो० १/४)
०प्रसाद, जल, वारि, नीर। (जयो० ११/३३)
०तरल द्रव्य, तरल पदार्थ, द्रव, बहाव। (जयो०वृ० १ २/७)
०मदिरा। 'रसं रसित्वा भ्रमतो वसित्वा' (वीरो० ४/२४)
०रसायन। (वीरो०१/११)
०गन्धरस। (जयो० १२/७)
०पंच रस। खट्टा, मीठ, कडुवा, चरपरा और कसौला।
०स्नेह, प्रेम।
०आनंद, प्रसन्नता, खुशी।
०लावण्य, अभिरुचि, सौंदर्य।
०धातु। (जयो०वृ० १२/७) (जयो०वृ० १२/७)
०शरीर। (जयो०वृ० १२/७)
०विष। (जयो०वृ० १२/७)
०काव्य के नव रस।
०स्वादिष्ट पदार्थ।
रसकः (पुं०) चर्मपात्र। (जयो० २/५) कूपले च रसकोऽप्युपेक्षते:' (जयो० २/१६)

रसकूपिका (स्त्री०) रसभरी बावडी। 'रसस्य कूपिकेव रसकूपिका' (जयो० ३/४७)
रसकेलि (स्त्री०) रसक्रीड़ा, रसोद्वेलन। (जयो० २२/७१) (जयो० २०/४२) रसस्य केलिरापि (जयो०वृ० २२/७१)
रसकेसरं (नपुं०) कपूर।
रसगन्धः (पुं०) लोबान, खुशबूदार गोंद।
रसगुल्लुला (स्त्री०) रसगुल्ला। 'अधरलता रसगुल्लुलेति' 'रसगुल्गुला नाम खाद्यं सरसत्वादेवं कृत्वा स्मितरूपेण' (जयो० ३/६०)
रसग्रह (वि०) रस ज्ञाता, प्रसन्नता व्यक्त करने वाला।
रसजः (पुं०) राब, शीरा।
रसजं (नपुं०) रुधिर।
रसज्ञ (वि०) रस का पारखी, रसायन शास्त्र का ज्ञाता।
रसज्ञः (पुं०) भावुक, कवि।
रसज्ञा (स्त्री०) जिह्वा, जीभ, रसनेन्द्रिय। (वीरो० ५/२०) (जयो०वृ० २४/८७) ०रसना।
रसतारतम्यफालि (स्त्री०) गुड़, मिष्टमधुरगुण वाला गुड।
रसतेजस् (नपुं०) रुधिर, रक्त।
रसदः (पुं०) वैद्य, चिकित्सक।
रसधातु (नपुं०) पारा।
रसनं (नपुं०) [रस्+ल्युट्] ०स्वाद, रस।
०आस्वादन। (वीरो० १/१)
०कोलाहल करना, टनटन करना।
०क्रन्दन करना, शोर मचाना।
०गड़गड़ाहट, गरजन।
रसना (स्त्री०) काञ्ची, मेखला। रसनया काञ्च्या। (जयो०वृ० ६/४६)
०आस्वादन। (जयो० ६/४६)
०जिह्वा, जीभ, रसनेन्द्रिय। (सुद० ८६) (जयो० १/७)
०रसभरी। (सुद० ८६) एवं रसनया राज्याश्चित्ते रसनयात्तया। (सुद० ८६)
रसनाकलापच्छलं (नपुं०) काञ्चीदाममिष, करधनी के बहाने। (जयो० ११/२३)
रसनाग्रवर्तिः (स्त्री०) जीभ के अग्रभागवर्ती, जिह्वाग्रवर्ती। (समु० १/११)
रसनालिका (स्त्री०) काव्य रस, विवाह वर्णनात्मक काव्यरस। (जयो० १०/२)
रसपरित्यागः (पुं०) विविध रसों का त्याग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसप्रबन्धः (पुं०) रस से परिपूर्ण काव्य।

रसप्रसन्ना (वि०) शृंगार से प्रसन्न। आह्लादकारिण-'रसेन शृंगारेण प्रसन्ना' (जयो० १४/४७)

रसफलः (पुं०) नारिकेल तरु।

रसभङ्गः (पुं०) रसावरोध।

रसभवं (नपुं०) रुधिर।

रसमय (वि०) आनन्द के वेग से युक्त, शृंगार से परिपूर्ण। (सुद० ७२) (जयो० ९/६६)

रसयोगः (पुं०) रसायन प्रयोग। (सुद० १३३)

रसराजः (पुं०) शृंगार रस। (जयो० ५/७७) संसारे रसराज एत्यतिथि सान्नित्यं प्रतिष्ठापन। (वीरो० १/३७)
०पारा।

रसलीन (वि०) रसासक्त। (सम्य० १५२)

रसवती (स्त्री०) रसोई, भोजनसामग्री। 'रसवत्यपि पायसस्मिता वा घृतवद्-व्यञ्जनशालिनी स्वभावात्। (जयो० १२/१२३)

रसवती (वि०) शृंगार रूप युक्ता। स्मितपयसा मधुरेण रसवतीयं बहुगम्या' (जयो० ३/६०) 'रसवती। शृंगाररसयुक्ता' (जयो०वृ० ३/६०)

रसवतीकरः (पुं०) सूपकार, रसोइया। (जयो० २०/८०)

रसवश (वि०) प्रेमयुक्त, प्रेमभाव से परिपूर्ण। (जयो० ५/१८(

रसवशिन् (वि०) शृंगाराख्य अभिलाषी। ०शृंगार रस का इच्छुक। (जयो० ६/९९) 'रस: शृङ्गाराख्यो जलात्मकश्च' (जयो०वृ० ६/९९)

रसविक्रयः (पुं०) मद्यविक्रय, शराब बिक्रीकेन्द्र।

रसशास्त्रं (नपुं०) रसायनशास्त्र। ०काव्य रस ग्रन्थ।

रससारः (पुं०) अनुराग का सार। (जयो०१४/८९)
०आनन्दसार। (जयो० १०/१९)

रससिद्ध (वि०) काव्य सम्पन्न, रसवेत्ता।

रससिद्धिः (स्त्री०) रसायन की सिद्धि, रसकला की प्रवीणता।

रसस्थलं (नपुं०) जलस्थान। 'रसस्य स्थलं-जलस्थानम्' (जयो० ११/३०)

रसस्थितिः (स्त्री०) सरसता की परिणति। (वीरो० १)

रसा (स्त्री०) [रस्+अच्+टाप्] ०जिह्वा, जीभ। (समु० ७/४) (जयो० १/३२)
०रसना। (जयो० ३/२२)
०निम्नतर, रसातल, निम्नस्थल, नरक।
०नाटकीय प्रवेश।

रसातलं (नपुं०) पाताललोक। (समु० २/४) नरक, अधोभाग। (जयो० ३/९) (जयो० ५/९०)

रसात्मक (वि०) रस से परिपूर्ण।

रसादित (वि०) रस क्रिया युक्त, सरसता से परिपूर्ण। (सुद० १२३)

रसाधिका (पुं०) प्रभूतजलवती नदी।

रसाधिकारः (पुं०) नवरस विवेचन। (जयो० १/४) (जयो० २०/४७)

रसाभासः (पुं०) रस की प्रतीति।

रसायनं (नपुं०) रस विज्ञान, रस पद्धति। (जयो०वृ० २६/५३) श्रेष्ठस्य वस्तुनो रसायनस्य योगत: प्रसङ्गतो गरं विषम्' (जयो०वृ० २६/५३) 'रसायनं काव्यमिदं श्रयाम:' (वीरो० १/२२) 'रसानां शृङ्गारादीनामयनं स्थानम्' (वीरो०वृ० १/२२)

रसायनाधीट् (पुं०) चिकित्सक, भिषग, वैद्य।

रसायनाधीश्वरः (पुं०) चिकित्सक, वैद्य, वैद्यराज। (जयो० १६/१८) 'रसायनाधीश्वर वैद्य इव भाति। तथाहि-रसस्य जलस्यायनं प्रवर्तनं, पक्षे रसस्य पारदाख्य धातोरयनं उपयोगकरणं तस्याधीश्वरोऽधिकारी। (वीरो०वृ० ४/४)

रसालः (पुं०) आम्र, आम। (दयो० ५३) 'सद्रसालसहितोऽमुना पथा राजते' (जयो०वृ० २१/३१)

रसाल (वि०) शृंगार रस से अलसाए हुए। (जयो०वृ० २१/३१) शृंगार रस से परिपूर्ण। (जयो० ३/३०) सुमना मनुजो यस्यां महिलासारसालया। (जयो० ३/३०) 'रसालया शृंगाररसपरिपूर्णा' (जयो०वृ० ३/३०)
०सरस, रस सहित। (वीरो० १/१२) 'उपद्रुतोऽपयेष तरुरसालं फलं श्रणत्यङ्गभृते त्रिकालम्। (वीरो० १/१२)

रसालकोटकः (पुं०) आम के बौर। (दयो० ५३)

रसालता (वि०) आम्रफल तुल्यता। (वीरो० ३/२८)

रसालदलं (वि०) आम्रपल्लव। (वीरो० ६/३०)

रसाल-रसिक (वि०) आम्र के रस के रसिक। रसालानामम्प्राणं रसिका:। (जयो०वृ० ६/६९) अधर-स्वादिष्ट, अधर के पान का इच्छुक। (जयो० ६/६९)

रसाला (स्त्री०) जिह्वा, रसना, जीभ।
०रसपरिपूर्ण बाला। (जयो०वृ० १७/६)
०रसभरी। इमां रसालां सरसां वाचा' (जयो०वृ० ४/६)

रसिक (वि०) [रसोऽस्त्यस्य ठन्] ०स्वादिष्ट रस से परिपूर्ण।
०आस्वादनशील। (जयो० ६/६९)
०स्वादयुक्त, गुणग्राही।
०विवेचक।
०सुन्दर, ललित, प्रिय।
०आनन्द देने वाला, प्रसन्नता अनुभव करने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसिकः (पुं०) रसिया, प्रेमी।
०गुणग्राही।
रसिका (स्त्री०) प्रेमवती। (जयो० ६/११)
०ईख रस, इक्षुरस।
०राव
०जिह्वा, रसना, जीभा।
रसित (भू०क०कृ०) [रस्+क्त] ०ललित, प्रेम युक्त।
०आस्वादित, स्वाद को चखा गया।
०मनोगत, इष्ट, प्रिय।
रसितं (नपुं०) मद्य। ०मधु, शहद।
०क्रंदन, चीत्कार।
रसिता (वि०) आस्वादिता। (जयो०वृ० ३/२९)
रसिति (अव्य०) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी। 'वै रिषन् रसिति वैरिसंग्रमव्यथेऽकथि' शत्रु समूहं रसिति शीघ्रं रिषन्-मारयन्' (जयो०वृ० ३/६)
रसितुं (रस्+तुमुन्) देखने योग्य। अवलोकयितुम्। (जयो०वृ० १२/१३१)
रसिन् (पुं०) रसिक पति-प्रीतिकर। कठिनस्तनस्थले वनितायाः सिक्तं रसिना दग्धुमथायात्। (जयो० १४/७३)
रसेष्टित (वि०) रस से प्रिय-रसः शरीरं तस्येष्टौ रसः स्वादेऽपि तिक्तादौ शृङ्गारादौ द्रवे विषं। पारदे धातुवीर्याम्बुरागे गन्धरसे तनौ।। इति वि०। (जयो०वृ० १२/७)
रसोत्करिणी (वि०) सौन्दर्यधारिणी। (जयो० ११/९७)
रसोदकं (नपुं०) ०रस से परिपूर्ण जल, ०रस एवं जलयुक्त। (सुद०)
रसोदयः (पुं०) शृंगार का अभ्युदय।
रसोद्वेलनं (नपुं०) रसकेलि। (जयो० १२/७२)
रसोनः (पुं०) [रसेनैकेन ऊनः] लहसुन।
रसोल्लसित (वि०) रस से प्रसन्नचित्त। (सुद० ३/४६)
रसौघदात्री (वि०) रस समूह को प्रदान करने वाली। (वीरो० ४/१०)
रस्य (वि०) रस वाला, स्वादिष्ट, रुचिकर।
रह् (सक०) ०छोड़ देना, ०त्यागना ०तिलांजलि देना।
रहणं (नपुं०) [रह्+ल्युट्] त्यागना, छोड़कर भागना, अलग हो जाना।
रहस् (नपुं०) [रह्+ल्युट्] त्यागना, छोड़कर भागना, अलग हो जाना।
रहस् (नपुं०) [रह्+ल्युट्] ०निर्जनता, एकान्तता, अकेलापन। (सम्य० १५३)
०भेद की बात, रहस्य।
०मैथुन, संभोग।
०चुपचाप, मौन, गुप्त।
०एकान्त। (सुद० २/४७)
०रहस्य। (जयो० ६/३१)
रहस्य (वि०) [रहसि भवः यत्] ०गुप्त, प्रच्छन्न।
०भेद पूर्ण, रहस्ययुक्त।
रहस्यं (नपुं०) भेद, कौतुक, उत्सुकता।
०गुह्य, गोपनीय।
रहस्यभावः (पुं०) कौतुक भाव। (सुद० २/२१)
रहस्यवादः (पुं०) गुप्त कथन, प्रच्छन्नवाद। (जयो० २६/६०)
रहस्यवृत्ति (स्त्री०) रहस्यपूर्ण वृत्ति। (जयो० २६/६०)
रहस्यफुटि (स्त्री०) रहस्यपूर्ण अभिव्यक्ति। (सुद० ११६)
रहःकृत (वि०) स्त्रीसम्पर्क। (जयो० १७/२)
रहित (वि०) अभाव, छोड़ा गया।
०परित्यक्त, वियुक्त, मुक्त।
०हीन, वंचित। (सम्य० १३५)
०अकेला, एकाकी। (जयो०वृ० १/२२)
रहोनीतिः (स्त्री०) रहस्यवाद। (जयो० २६/६०) रहस्यवृत्ति।
रा (सक०) देना, समपर्ण करना, प्रदान करना।
०अनुदान देना। (जयो० २/११४)
राका (स्त्री०) [रा+क+टाप्] पूर्णिमा।
राक्षस (वि०) [रक्षस इदं अण्] ०दैत्य, पिशाच, भूतप्रेत, बेताल। 'राक्षसाशन-मद्य-मांसादिरूपभोजनम्' (जयो० २/१०९)
०दानव, भीषण-रूपविकरणप्रियाः राक्षसाः'
०देव जाति।
०ज्योतिष विषयक योग।
रागः (पुं०) आसक्ति। (जयो० १२/७९)
०अनुराग, प्रीति, स्नेह, प्रेम।
०यत्नेन योऽम्भोजदृशां महीयान् रागो दृशोः प्रीततमं प्रतीयान्। (जयो० १६/४०)
०देह सेवा। 'रागः कियानस्ति स देह-सेवः' (वीरो० ५/३०)
०काम-वासना, विषयासक्ति। (सम्य० १४७)
०विभाग परिणति, विकार। (सम्य० ४१)
०रुचि। (सम्य० १०८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०वर्ण, रंग, रंजक वस्तु।
०लालिमा, लाल रंग।
०प्रेम, प्रणयानन्द।
०हर्ष, आनन्द।
०क्रोध, रोष।
०प्रियता, सौन्दर्य।
०खेद, शोक
०लालच, ईर्ष्या।
माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेदाणं दव्वकम्मोदयजणिदपरिणामो रागो (धव० १२/२८३)
०प्रीतिलक्षणो रागः। (जैन०ल० ३५७)
०लोहितत्त्व, लालिमा। (जयो०वृ० ११/५७)
०गान्धार राग। (जयो० ११/५७)
०भैरवी मल्हार आदि राग। (वीरो० १६/१२)

रागकर्मन् (वि०) आसक्तिजन्य कर्म वाला।

रागकारिन् (वि०) अनुराग शील।

रागखण्डं (नपुं०) प्रेमांश। ०अनुराग, आसक्ति।

रागचूर्णः (पुं०) खैरवृक्ष।

रागज (वि०) राग को उत्पन्न करने वाला।

रागतरु (पुं०) राग रूपी वृक्ष। (सम्य० १४७) ०खैर।

रागद (वि०) रागोत्पत्ति वाला। (वीरो० ६/३३)

रागद्रव्यं (नपुं०) रंग, लेप।

राग-द्वेष (वि०) राग और द्वेष युक्त।

राग-द्वेषरहित (वि०) राग-द्वेष से रहित। (सुद० ७०)

रागनिवाहिनी (पुं०) राग संधारिणी। (जयो० ८/३३)

रागपादः (पुं०) रक्तवर्ण वाले चरण।

रागपादपः (पुं०) रक्तिमवृक्ष।

रागबन्धः (पुं०) राग से बन्ध।

रागभावः (पुं०) राग परिणाम।

रागमंद (वि०) राग की मंदता।

रागयुज् (पुं०) लाल।

रागयोगः (पुं०) अनुराग का संयोग।

रागरञ्जित (वि०) राग से अनुरक्त। (दयो० १८)

रागरुष् (वि०) प्रणयविद्वेष। (जयो० २४/२५)

रागसम्पादक (वि०) प्रीतिकर, रतिकर। (जयो०वृ० ३/१२)

रागसुभागः (पुं०) प्रीतिभाव-'गान्धारादिगीतस्य प्रीतिभावस्य च सुभागस्य। (जयो० ११/५७)

रागसूत्रं (नपुं०) रंगीन सूत्र।

रागायास्वादित (वि०) राग को प्रकट करने वाला, लालिमा या स्नेह व्यक्त करने वाला। (जयो० १२/१३५)

रागार्थ (वि०) अनुरञ्जनार्थ। (जयो० ८/२७)

रागिषि (वि०) रक्तवर्णा, रागयुक्ता। (जयो० ६/६४) स्वैरिणी, पुंश्चली।

रागित्वं (वि०) राग से परिपूर्ण, अनुराग सहित। (सम्य० ११०)

रागिन् (वि०) [रग+इनि] ०रंगीन, रंगा हुआ।
०प्रेमपूर्ण, स्नेहिल।
०कामासक्त, स्वेच्छाचारी।
०प्रेमी, स्नेही।
०स्नेहशील, अभिलाषी।

राघवः (पुं०) [रघोर्गोत्रापत्यम्] ०रघुवंशी, रघु की संतान।

राज् (अक०) चमकना, शोभित होना, (सुद० १२४) जगमगाना। रराज (जयो० ३/१९) देदीप्यमान होना। **स्वयम्वरीभूततमा** रराज मुक्तिश्रियःश्रीजिनदेवराज। (वीरो० १२/३९) 'रराज मातुरुत्सङ्गे महोदारविचेष्टित' (वीरो० ८/८) '**वर्षेण** पूर्णोद्वारिणी रराज' (वीरो० ६/२) राजते (जयो० ३/३७)

राज् (पुं०) राजा, नृप, युवराज।

राजकः (पुं०) [राजन्+कन्] राणा, राजा, नृप।

राजकं (नपुं०) राजाओं का समूह।

राजकरः (पुं०) राजशुल्क।

राजकार्यं (नपुं०) राज्य का काम। (दयो० ६५)

राजकन्या (स्त्री०) राजकुमारी, राजपुत्री। (दयो० ११०)

राजकुमारः (पुं०) युवराज, राजपुत्र।

राजकुमारी (स्त्री०) राजपुत्री। (दयो० १०८)

राजकीय (वि०) राजकार्य सम्बंधी, राजपरिवार से सम्बंधित। (जयो० २८/२)
०प्रशासकीय, शासकीय, राजसत्ता से सम्बंधित। (जयो० वृ० २८/१)

राजकीयसदनं (नपुं०) राजभवन, राजप्रासाद। (जयो० ४/२६)

राजकुलः (पुं०) राजवंश, क्षत्रियकुल।

राजकुलोचितः (पुं०) राजवंश के अनुकुल। (वीरो० ६/५)

राजगणः (पुं०) चन्दकुटुम्ब। (जयो० ११/९१)

राजगामिन् (वि०) राज्याधीन।

राजगोपालः (पुं०) राजगोपालाचार्य। (जयो० १८/८३)

राजगृहं (नपुं०) शासकीय निवास, राजभवन।
०राजगृह नामक, क्षत्रिय कुल के प्रसिद्ध शासक सिद्धार्थ कुल का एक गणराज्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजगृहाधिराजः (पुं०) राजगृह का अधिपति। (वीरो० १५/१६)

राजघः (पुं०) राजाधिराज-'राज्ञ एव समर्थानेवानीतिवर्तिनो हन्तीति राजघः' (जयो० २३/४)

राजचिह्नं (नपुं०) राजशक्ति, राजकुल का प्रतीक।

राजतत्त्वं (नपुं०) राजसभा। (जयो०वृ० ३/७)

राजतत्त्वः (पुं०) पृथिवीपालक। (जयो०वृ० २८/१)

राजतत्त्व (वि०) गदी युक्त। (वीरो० १३/६)

राजतत्त्वविशारदः (पुं०) राजनीतिज्ञ। (जयो० ३/७)

राजतुक् (पुं०) राजपुत्र, स्वामीपुत्र। (जयो० ९/३, भूपतिबालक। (जयो० ६/१३) किं राजतुक्तोद्वाहेन प्रजायाः सेवया तु सा' (वीरो० ८/४३)

राजतुज् (पुं०) राजकुमार, ०राजपुत्र।

राजतालः (पुं०) सुपारी का पेड़।

राजदण्डः (पुं०) राजशासन, राजसत्ता।

राजदन्तः (पुं०) आगे का दांत।

राजता (वि०) शोभता। (जयो० ४/३६)

राजदुहितृ (स्त्री०) राजपुत्री, राजकन्या। (दयो० ११०)

राजदूतः (पुं०) राजा का प्रतिनिधि।

राजद्रोहः (पुं०) राजा के प्रति विद्रोह, राजा के प्रति विश्वासघात।

राजद्वारं (स्त्री०) राजमहल।

राजद्वारं (नपुं०) राजप्रासाद का प्रधान तोरण। (जयो० १०/८४)

राजद्वारिकः (पुं०) राज पहरेदार, ड्योढ़ीवान्।

राजधर्मः (पुं०) राजकर्तव्य, राजनियम।

राजधानं (नपुं०) राजप्रासाद।

राजधुरा (स्त्री०) शासन का उत्तरदायित्व।

राजनयः (पुं०) राजनीति।

राजनीति (पुं०) राजनय, शासन नियम।

राजनेतृ (पुं०) राजनेता, राजनायक। (जयो० १९/८१)

राजनेत्री (स्त्री०) सरोजिनी नायडू जैसे राजाधिकारिणी। (जयो० १८/२३)

राजन् (पुं०) नृप, राजा, अधिपति। (जयो०वृ० १/३) (सुद० १/४३) राज्ञे।

०नायक, प्रधान पुरुष, भूपति, चन्द्र। राजा प्रभौ नये चन्द्र यूक्षे क्षत्रिय शक्रयोः इति वि (जयो०वृ० १५/४८)

०उच्चाधिकारी।

०मेदिनीरमण। (जयो०वृ० १८/११)

०पृथिवीपालक। (जयो०वृ० २८/५)

०शोभनशरीर। (जयो०वृ० २८/५)

सदाचारविहीनोऽपि सदाचारपरायणः।
स राजापि तपस्वी सन् समक्षोऽप्यक्षरोधकः।।
(जयो०वृ० २८/५)

राजन्य (वि०) [राजन्+यत्] शाही, राजकीय।

राजन्यः (पुं०) राजकीय यक्ति।

राजन्वतिषत्तनं (नपुं०) नरपति नगर। (जयो० १२/८५)

राजपथः (नपुं०) राजमार्ग। (जयो० १०/५८)

राजपण्डितः (पुं०) राजा का विद्वान्। (दयो० ३१)

राजपद्धतिः (स्त्री०) राजनीति, राजविधि।

राजपट्टः (पुं०) राज्याधिकार।

राजपुत्री (स्त्री०) राजकुमारी।

राजपुरुषः (पुं०) सिपाही, सैनिक मन्त्री।

राजप्रिया (स्त्री०) राजरानी, महारानी। (जयो० २/१५१)

राजप्रेष्यः (पुं०) राजसेवक।

राजभृतः (पुं०) सिपाही, सैनिक।

राजभृत्यः (पुं०) राजसेवक, सचिव, मन्त्री।

राजमतिः (स्त्री०) राजुल, एक राजकुमारी। (सुद० १३६) भोजवंशीय राजा उग्रसेन की पुत्री।

राजमान (राज्+शानच्) शोभायमान्। (जयो० ५/२७)

राजमार्गः (पुं०) राजपथ।

राजमुद्रा (स्त्री०) राजा की मोहर।

राजमुनि (पुं०) प्रमुख मुनि। (वीरो० १७/३८)

राजयक्ष्मम् (स्त्री०) क्षयरोग, तपेदिक, टी० बी० रोग। (जयो २६/२६)

राजयानं (नपुं०) राजवाहन, रथ।

राजयोगः (पुं०) राजसत्ता का योग।

राजरङ्गं (नपुं०) रजत, चांदी।

राजराजः (पुं०) राजाधिराज, चक्रवर्ती। (जयो० २५/१) ०चन्द्रमा।

राजराजिः (स्त्री०) राजाओं की पंक्ति। राजाओं की बहुलता। (जयो० ४/३६)

राजरुक् (पुं०) राज्ञश्चन्द्रस्य रुचिं कान्तिं विजयते प्रहरतीति राजरुग्विजयी क्षयरोगः। तपेदिक, क्षयरोग। (जयो० १८/२२)

राजरुज् राजकओ यक्ष्मण, तपेदिक। (जयो० ६/७५)

राजरुम (पुं०) चन्द्ररुचि। (जयो०वृ० ६/७५)

राजर्षि (पुं०) राज ऋषि।

राजलक्षणं (नपुं०) राजचिह्न।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजलक्ष्मी (स्त्री०) राजसमृद्धि, राजवैभव, राजसम्पत्ति।

राजवंशः (पुं०) राजकुल। (जयो० ५/१)

राजवंशावली (स्त्री०) राजकुल की परम्परा।

राजवर्गः (पुं०) राजवंश। (वीरो० १५/५०)

राजवर्त्मन् (नपुं०) राजमार्ग। प्रधानमार्ग। (जयो० ५/९)

राजवार्तिकं (नपुं०) तत्त्वार्थसूत्र की टीका। (जयो० १८/८३)

राजविद्या (स्त्री०) राजनीति।

राजविहारः (पुं०) राजकीय शिक्षालय।

राजश्रेष्ठी (पुं०) राजसेठ, प्रमुख सेठ। (दयो० १/१४)

राजशासनं (नपुं०) राजा का अनुशासन।

राजस (वि०) राजाज्ञा। तमोगुण, रजोगुण। (जयो० २८/१५)

राजसंसद् (स्त्री०) राजकीय दण्ड व्यवस्था का स्थान। राजसभा।

राजसत्त्वः (पुं०) रजोगुण। (जयो० २८/१५)

राजसत्र (नपुं०) चन्द्रछल। 'राज्ञश्चन्द्रमसः सत्रं छद्मं' (जयो० १५/५९)

राजसदनं (नपुं०) राज प्रासाद, राजभवन। (जयो०वृ० १०/१५)

राजसर्षपः (पुं०) काली सरसों।

राजसायुज्यं (नपुं०) प्रभुसत्ता।

राजसारसः (पुं०) मयूर, मोर।

राजसिंहासनं (नपुं०) नृपासन, राजपीठ। (जयो० ३/१९)

राजसुता (स्त्री०) राजपुत्री, राजकन्या। (जयो० ६/१०२)

राजसुराजः (पुं०) नृप श्रेष्ठ। (जयो० ९/६३)

राजस्कंधः (पुं०) घोड़ा, अश्व।

राजस्थानं (नपुं०) राजस्थान प्रदेश, राजपूतों का प्रान्त। (दयो० १०५)

राजस्वं (नपुं०) राजकीय सम्पत्ति।

राजहंसः (पुं०) श्वेत हंस, मराल। (भक्ति० ६)
०भूपवर। (जयो०वृ० ३/८)
'राजान् एव हंसास्तैर्निषेव्यम्' (जयो०वृ० ३/७६)

राजहंसी (स्त्री०) मराली, हंसी। (वीरो० ३/७)
०राजकुमारी, राजपुत्री, राजकन्या। (जयो० १/७४)

राजहस्तिन् (पुं०) राजहस्ती, राजकीय सवारी वाला हाथी।

राजाग्र (वि०) राजाओं में अग्रणी।

राजाग्रशब्दः (पुं०) राजाग्र शब्द, राजाओं के प्रमुख शब्द। (वीरो० ११/२६)

राजाङ्गनं (नपुं०) राज दरबार का व्यक्ति, राज्याधिकारी।

राजाधिकारिन् (पुं०) राज्याधिकारी, राजकीय व्यक्ति, मन्त्री, सचिव।

राजाधिकृतः (पुं०) राजकीय व्यक्ति, राजा द्वारा नियुक्त किया गया व्यक्ति।

राजाधिराजः (पुं०) प्रमुख राजा, प्रधान अधिपति, राजराज।

राजाध्यरोधी (वि०) राजमार्ग के प्रतिकूल। (जयो० १८/४) (जयो० २०/१)

राजानकः (पुं०) लघु राजा, छोटे राज्य का शासक।

राजापसदः (पुं०) अयोग्य राजा, तुच्छप्रवृत्ति वाला राजा।

राजाभिषेकः (पुं०) राजा का अभिषेक।

राजार्हं (नपुं०) चंदन, अगर। कण्ठीकृतामोदमयस्रजान्तु स्तनेषु राजार्हपरिप्लवानाम्। (वीरो० १२/२९)

राजार्हणं (नपुं०) राजकीय सम्मान।

राजिः (स्त्री०) पंक्ति, रेखा।

राजित (विच०) सुशोभित, प्रशंसित। (जयो० ३/८१)

राजिका (स्त्री०) [राजि+कन्+टाप] ०पंक्ति, रेखा, कतार।
०खेत।
०पीली सरसों।

राजिलः (पुं०) [राज्+इलच्] सर्प जाति विशेष।

राजीवः (पुं०) हरिण, सारस।
०हस्ति।

राजीव (नपुं०) नील कमल।

राजीवकुलः (पुं०) कमलसमूह। (जयो० ६/१७)

राजीवदृक् (नपुं०) कमलनयन। (जयो० १/८४)

राजीवमधुरा (स्त्री०) कमलिनी। (जयो० १६/५९)

राजीविनी (स्त्री०) कमलवल्ली। (जयो० १५/१९)

राजेन्द्रप्रसादः (पुं०) भारत के प्रथम राष्ट्रपति (जयो०१८/५)

राज्ञी (वि०) रानी। राज्ञी माता मह्यम्। (सुद० ११०) [राजन्+ङीप्] महारानी। एवं रसनया राज्याश्चित्ते रसनयात्तया' (सुद० ८६) सन्निशम्य वचो राज्ञयाः पण्डिता खण्डिता हृदि। (सुद० १०४)

राज्यं (नपुं०) [राज्ञो भावः, कर्म वा राजन्+यत्] राज्य, (जयो० १/५) साम्राज्य, प्रभुसत्ता, प्रान्त। (जयो० १/१९)
०अधिकार, शासन। हतु मोहतमसा समावृतं त्वं हि गच्छ कुरु राज्यमप्यतः। (सुद० ११०)

राज्यकरः (पुं०) शासकीय शुल्क।

राज्यकालः (पुं०) शासनकाल। (वीरो० २९/११)

राज्यच्युत (वि०) राजसत्ता से पतित।

राजतन्त्रं (नपुं०) शासनविज्ञान, प्रशासन पद्धति।

राज्यधुरा (स्त्री०) शासन भार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्यभङ्गः (पुं०) राजसत्ता का विनाश।
राज्यभारः (पुं०) शासन का उत्तरदायित्व।
राज्यभितः (पुं०) राज्यशासन, शासन का उत्तरदायित्व। (दयो०८)
राज्यमोदः (पुं०) राज्यसत्ता का प्रयत्न।
राज्य व्यवहारः (पुं०) प्रशासन, शासकीय कार्य।
राज्यसम्मतः (पुं०) शासन से मान्य। (दयो० १७)
राज्यसिंहासनं (नपुं०) ०शासनासन, ०राजसत्ता का पद। (दयो०८)
राज्याङ्गं (नपुं०) प्रभुसत्ता का अधिकार।
राज्यापहरणं (नपुं०) राज्य छीनना।
राज्यार्ध (वि०) अर्ध राज्य। (दयो० १०८)
राढा (स्त्री०) आभा।
राट् (पुं०) राजा। (सुद० ७८) 'नृराडास्तां विलम्बेन' (सुद०७८)
रात्रिः (स्त्री०) [रातिं सुखं भयं वा, रा+त्रिप्] ०रजनी, रात्रि, रात, पुरोष। (सम्य० १/१)
०निशा-'रात्रिः स्वतो घोरतमो विधात्री' (भक्ति० २५)
०प्रदोषभाव। (जयो० १५/२१)
०अन्धकार पूर्णा तमिस्रा। (जयो० ३/८७)
रात्रिकरः (पुं०) चन्द्र, शशि।
रात्रिंचरः (पुं०) निशाचर, चोर, डाकू।
०आरक्षी, पहरेदार।
०पिशाच, भूत-प्रेत, बेताल।
रात्रिचर्या (स्त्री०) रात्रि में भ्रमण।
रात्रिजं (नपुं०) तारा, नक्षत्र।
रात्रिजलं (नपुं०) ओस।
रात्रिजागरः (पुं०) रात्रि में जागना।
रात्रितरा (स्त्री०) अर्धरात्रि।
रात्रिंदिवं (नपुं०) अहोरात्र्य। (जयो० १८/५)
रात्रिपुष्पं (नपुं०) कुमुदिनी।
रात्रियोगः (पुं०) निशागमन।
रात्रिरक्षः (पुं०) अन्धकार।
रात्रिवायस् (नपुं०) अन्धकार।
रात्रिविगमः (पुं०) ०रात्रि की समाप्ति, ०दिन का प्रारंभ। ०पौ फटना।
रात्रिवेदः (पुं०) मुर्गा।
रात्रिवेदिन् (पुं०) कुक्कुट, मुर्गा।
रात्रिसंचारिन् (पुं०) निशाचर। (वीरो० १८/३६)
०आरक्षी।

राद्ध (भू०क०कृ०) [राध् कर्तरि कर्मणि वा क्त] आराधित।
०कार्यान्वित, सम्पन्न, निष्पन्न।
०प्रसादित।
०अनुष्ठित।
०सफल, सौभाग्यशाली, प्रसन्न।
०पकाया हुआ, रांधा हुआ।
राध् (सक०) प्रसन्न करना, खुश करना।
०अनुष्ठान करना, निष्पन्न करना।
०प्रस्तुत करना, तैयार करना।
०नष्ट करना, समाप्त करना।
०क्षय करना, विघात करना।
०उखाड़ना, उन्मूलन करना।
राध् (अक०) सफल होना, समृद्ध होना, तैयार होना।
०आराधना करना। (जयो० २/४१)
राधा (स्त्री०) ०समृद्धि, सफलता, ०गोपिका। ०राज नाम विशेष।
राधाकृष्णः (पुं०) राधा और कृष्ण। (जयो० ६/२०)
राम (वि०) [रम् कर्तरि घञ्, ण वा] ०प्रिय, इष्ट, सुहावना। (जयो०वृ० २/१४८)
०सुंदर, अभीष्ट, मनोरम, रमणीय। (जयो० १५/६६)
०मलिन, धूमिल, काला।
रामः (पुं०) [रम्+घञ्] ०राम, दशरथ पुत्र। (जयो० १५/६६) (सम्य० ६२) (जयो० १७/५९)
०जमदाग्नि पुत्र, परशुराम।
०वसुदेव पुत्र बलराम। 'सती सीतेव रामस्य यया भाति भवानमा' (सुद० ४/३७)
०शुद्धात्मा, काम की सम्पदा से रहित। (जयो० १६/३) परमात्मा।
रामगत (वि०) सौंदर्य को प्राप्त।
रामचन्द्रः (पुं०) दशरथपुत्र राम, कौशल्या नन्दन, रघुवंश का पुरुषोत्तम पुरुष राम। (दयो० ८)
रामठः (पुं०) हींग।
रामणीक (वि०) सौंदर्य। (जयो०वृ० ३/८६)
रामणीयक (वि०) [रम्+णीय+ठञ्] ०प्रिय, सुंदर, सुखद। (जयो० ३/९०)
रामणीयकं (नपुं०) प्रियता, सौंदर्य। (जयो० १/९०)
रामदत्ता (स्त्री०) सिंहसेन की प्रिया। राज्ञीह नाम्ना भुवि रामदत्ता, निसर्गतः शीलगुणैक सत्ता। (समु० ३/२०) सिंहपुर के राजा सिंहसेन की प्रिया रामदत्ता।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रामा (स्त्री०) [रमनेऽनया रम् मरणे घञ्] ०सुंदर स्त्री, कामिनी, तरुणी। (जयो० ४/९६)
०प्रिया, पत्नी, गृहस्वामिनी। (जयो० १७/४९)
०सिन्दूर।
०हींग।
रामाजन: (पुं०) स्त्रीजन। (सुद० ८३)
रामाभिधा (स्त्री०) स्त्री स्मरण।
०शुद्धात्मा, परमात्मा, कामसम्पदा। (जयो०वृ० १६/३)
रामाविभूषित (वि०) स्त्री से सुशोभित, प्रिया के सौंदर्य से परिपूर्ण। (जयो० १७/११३)
रामोपयोगिनी (स्त्री०) विवाहयोग्य। (वीरो० ८/७२)
राम्भ: (पुं०) [रम्भा+अण्] सन्यासी की लकड़ी।
राव: (पुं०) [रु+घञ्] क्रन्दन, चीत्कार।
०चिंघाड़, दहाड़।
०शब्द, ध्वनि। (जयो० ५/७०)
रावण (वि०) [रावयति भीषयीति सर्वान् रु+णिच्+ल्युट्] क्रन्दन करने वाला, चीखने वाला।
रावण: (पुं०) लंकाधिपति रावण। (सम्य० ६२) (दयो० ८५)
रावणि: (पुं०) इन्द्रजित, रावण का पुत्र।
राशि: (स्त्री०) [अश्नुते व्याप्नोति+अश+इञ्] ०ढेर, संग्रह, समुच्चय, समुदाय।
०संख्या विशेष।
०नाना समूह। (सुद० १२१)
०भण्डार। (सुद० १/४४)
राशिचक्रं (नपुं०) तारामण्डल।
राशित्रयं (नपुं०) त्रैराशिक गणित।
राशिफलं (नपुं०) नाम राशि फल।
राशिभाग: (पुं०) किसी राशि का अंश।
राशिभोग: (पुं०) सूर्य, चन्द्र।
राशिमण्डलं (नपुं०) राशिचक्र।
राष्ट्रं (नपुं०) [राज्+ष्ट्रन्] राज्य, देश, साम्राज्य। ०जिला, प्रदेश, मण्डल।
०अधिवासी, जनता, प्रजा।
राष्ट्र: (पुं०) सार्वजनिक कष्ट।
राष्ट्रकण्टव: (पुं०) राष्ट्र का कांटा। (सुद० १०५)
राष्ट्रनेतृपरिकर (वि०) राष्ट्र के नेताओं का समूह। (जयो० १८/८४) ०राष्ट्र नायक समूह।
राष्ट्रिय (वि०) [राष्ट्रेभव:] राज्य से सम्बंधित।
राष्ट्रिय: (पुं०) नृप, अधिपति, शासक।
रास् (अक०) शब्द करना, चिल्लाना, किल किलाना।
रास: (पुं०) [रास्+घञ्] कोलाहल, शब्द, ध्वनि।
०एक नृत्य विशेष।
रासक (वि०) क्रीड़ा कारक।
रासकं (नपुं०) अभिनय का छोटा अंश।
रासकर (वि०) क्रीड़ा करने वाला। (जयो० २५)
राजक्रीड़ाकरी (वि०) गोचारक क्रीड़ा।
रासभ: (पुं०) [रासे: अभाच्] गर्दभ, गधा।
राहु: (पुं०) [रह्+उण्] एक ग्रह नक्षत्र। (वीरो० २/२९) (जयो० ८/३४)
०राक्षस।
०विप्रचित।
राहुग्रसनं (नपुं०) चन्द्र या सूर्य ग्रहण।
राहुग्रहणं (नपुं०) राहुग्रसन।
राहुदर्शनं (नपुं०) राहुग्रहण।
राहुसूतकं (नपुं०) राहुग्रहण सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण।
रि (सक०) जाना, पहुंचना।
रिक्त (भू०क०कृ०) [रिच्+क्त] ०खाली, शून्य, अभाव।
०साफ किया गया, छोड़ा गया।
रिक्तं (नपुं०) खाली स्थान, छोड़ा गया स्थल।
रिक्तपाणि (स्त्री०) खाली हाथ वाला। (दयो० २०)
रिक्तहस्त (पुं०) खाली हाथ वाला।
रिक्ता (स्त्री०) चन्द्रमास के पक्ष की चतुर्थी।
रिक्तार्थिका (स्त्री०) रिक्तातिथि। (जयो० ६/८८)
रिक्तोदर: (पुं०) भूखे पेट। (दयो० ३४)
रिक्थं (नपुं०) [रिच्+थक्] वैभव, धन सम्पत्ति।
०उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति।
रिक्थहर: (पुं०) उत्तराधिकारी।
रिङ्ग् (अक०) रेंगना, सरकना, पेट के बल चलना, दवे पांव चलना।
रिङ्गणं (नपुं०) [रिङ्ख+ल्युट्] रेंगना, चलना, गमन, क्रियाशील, गति। (जयो० १३/२४)
रिच् (सक०) निर्मल करना, साफ करना।
०बढ़ाना, विस्तार करना।
०वियुक्त करना, छोड़ना, त्यागना।
रिटि: (स्त्री०) [रि+टिन्] वाद्य विशेष।
रिपु: (पुं०) शत्रु, प्रतिपक्षी दुश्मन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०कमजोर, हीन, क्षीण।
०बलहीन, शक्तिरहित।
रिपुसम्पदः (पुं०) शत्रु सम्पत्ति। (जयो० ६/५९)
रिपुसारः (पुं०) वैरिशिरोमणि। (जयो० ६/२४)
रिफ् (अक०) कलंक लगाना।
रिष् (सक०) क्षति पहुंचाना, चोट पहुंचाना।
०नष्ट करना, मार डालना। (रिषन्-मारयन्) (जयो०३/६)
०संहार करना (जयो० ३/५) रिषन्-संहरन्।
रिष्ट (भू०क०कृ०) [रिष+क्त] क्षतिग्रस्त, चोटग्रस्त।
०अभागा। (जयो० ६/१३२)
रिष्टं (नपुं०) उत्पात, क्षति, ठेस।
०दुर्भाग्य, विनाश, हानि।
०सौभाग्य, समृद्धि।
रिष्टिः (पुं०) [रिष्+क्तिन्] असि, तलवार।
री (अक०) टपकना, गिरना, रिसना, बहना, पसीजना।
री (स्त्री०) कर्ण, कान। (श्रोतरि भुवि स्त्रियामिति) (जयो० ५/९५)
रीज्या (स्त्री०) निन्दा, झिड़की।
०कलह, ईर्ष्या।
रीढकः (पुं०) मेरु दण्ड, रीढ की हड्डी।
रीढा (स्त्री०) [रीह्+क्त+टाप्] अनादर, तिरस्कार, अपमान।
रीण (भू०क०कृ०) [री+क्त] टपका हुआ, रिसा हुआ, झरता हुआ।
रीणा (स्त्री०) उदासीनता, उदासीना। 'रीणात्युदासीना सती मुहुः' (जयो० ११/४७) 'जिता हरिण्यो द्रुताश्च रीणाः' (जयो० १४/५०)
रीतिः (स्त्री०) [री+क्तिन्] ०पद्धति, क्रम।
०प्रणाली, ढंग, मार्ग, शैली, विधा, प्रक्रिया।
०नीति। (जयो० १/२१)
०प्रथा, प्रचलन। (सुद० १०२)
०वाक्यविन्यास।
०आरकट, पीतल-रीतिः स्यन्दे प्रचारे च लोहकिट्टारकूटयो इति वि० (जयो० २८/४३)
हंसोऽभ्यवापि काकस्य रीतिः सौवर्ण्य भागिति।
प्रतिलोमविचारेण सोऽहमित्यनुवादिना।।
(जयो०वृ० ३/४)
०प्रकार-शीतिरीतिमपि तच्छ्रुत्वा' (जयो० २/६०)
०विचार-समन्ताद्भद्र विख्याता श्रियो भूराप्तपथरीतिः। (सुद० ८३)
रीतिकरी (वि०) विचार करने वाली। (जयो० १५/३८)
रीतिसृद्धिः (स्त्री०) ०पदरीति। ०शब्द शक्ति।
रीतिज्ञ (वि०) रीति जानने वाला। ०पद्धति विचारक।
रीतिधर (वि०) पित्तलयुक्तं (जयो० ८/६६)
०रीकार सहित। (जयो०वृ० ८/६६)
रु (अक०) बोलना, चिल्लाना, शब्द करना।
०रोना, शोर करना।
रुक् (स्त्री०) रुचि, शोभा, कान्ति। (जयो० ६/७५, ५/८१)
रुक्कर (वि०) रुचिकर। (सुद० ८९)
रुक्म (वि०) [रुच्+मन्] उज्ज्वल, स्वच्छ, धवल।
रुक्मः (पुं०) स्वर्णाभूषण।
रुक्मं (नपुं०) स्वर्ण सोना।
०लोहा।
रुक्मकारकः (पुं०) सुनार।
रुक्मिन् (पुं०) [रुक्म्+इनि] रुक्मिणी का भाई।
रुक्मिणी (स्त्री०) [रुक्मिन्+ङीप्] विदर्भ शासक भीष्मक की पुत्री।
रुक्ष (वि०) रुखा, बालुकामय।
रुक्ष् (अक०) चढ़ना, आरुढ़ होना। (अरुक्षत्) (जयो०८/६०)
रुखं (नपुं०) निर्भय होना। रोर्भयस्य खं शून्य नाशरूपं निर्भयनिवासस्थानं सम्भवति' (जयो० ११/५१) दृग्व्यापार (जयो०वृ० ११/५०) सदृश (सुद० १०२)
रुग् (पुं०) रोगी। (सुद० १०१) रोग (सम्य० ४६)
रुग्ण (भू०क०कृ०) [रुज्+क्त] ०रोगी, ज्वर ग्रस्त, व्याधि पीड़ित।
०व्यथीकृत, वकीकृत।
०क्षतिग्रस्त, टूटा हुआ। 'जो बुखार आदि के वश होकर अपना धन्धा न कर पाए। (हित०सं० ४९) (जयो० १४/८५, जयो० ११/५२)
रुच् (अक०) चकमना, जगमगाना।
०पसंद करना, सुहावना करना।
०प्रसन्न होना।
०रुचना, अच्छा लगना। 'न रोचते चेदमुकास चौरतुजे' (समु० १/१६)
रुच/रुचा (स्त्री०) कान्ति, प्रभा, प्रकाश। (जयो० १०/३)
आपं चैव हलंतानां यथा वाच। निशा दिशा।
०रंग, छवि। इत्युक्ते रुच् शब्दादाप् प्रत्यय। (जयो० २ २/१४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०अभिरुचि, इच्छा। (सुद० १०२)

०शोभना (जयो० १/९३) अच्छा लगना।

रुचक (वि०) रुचिकर, सुखद, आनंदप्रद।

०क्षुधावर्धक।

०चरपरा, तीक्ष्ण।

रुचकः (पुं०) नींबू।

०कबूतर।

रुचकं (नपुं०) दांत।

०हार, माला।

०काला नमक।

रुचात्मन् (वि०) अभिरुचिपूर्ण। (जयो० १४/२९)

रुचामय (वि०) कान्तिमय। (जयो० १०/३)

रुचिः (स्त्री०) [रुच्+कि] कान्ति, प्रकाश आभा, प्रभा। (सुद० १२०)

०उज्ज्वलता।

०छवि, रंग।

०स्वाद, आनंद, अभिरुचि। 'रुच्यां न जातु तमृते सकला समस्या'। (सुद० २६)

०शोभामनुरक्ति (जयो० ४/६०)

०लवलीनता, तल्लीनता। (सुद० ५/३)

०कामना, खुशी। 'फलतीष्टं सतां रुचि।' (सुद० ३/४३)

रुचिकर (वि०) स्वादिष्ट, रोचक। (जयो०वृ०१२/१२८) चमकीला। ०शोभायमान। (समु० ७/१)

रुचिकरी (वि०) इष्टकरी, आनंदायी। (जयो०वृ० ३/६३)

रुचिकारक (वि०) सुरुचिपूर्ण। (जयो० १/९४) (जयो० १/१७) कान्तिपूर्ण। गुणवती। (जयो० ३/६१)

रुचित (वि०) सौंदर्यपूर्ण, अभिरुचि युक्त। (जयो० २/१५५)

रुचिदा (वि०) रुचिकर। (समु० १/१४)

रुचिधुरी (वि०) यशस्वी। (समु० ५/२२)

रुचिभर्तृ (पुं०) सूर्य, दिनकर।

०चन्द्र।

रुचिमल्ल (वि०) शोभा युक्त। (समु० २/१)

रुचिर (वि०) [रुचिं राति ददाति-रुच्+किरच्] मनोज्ञ। (जयो० ६/९४)

०उज्ज्वल, कान्तिमय, रुचिकर।

०मधुर, ललित।

०क्षुधावर्धक, भूख बढ़ाने वाला।

०पुष्टिदायक, बलवर्धक।

रुचिरं (नपुं०) केसर।

रुचिरता (वि०) मधुरता, ललितपना, मनोहरता। 'रुचिरतामिति कोकिकपित्सतां सरसभावभृतां मधुरारवैः' (वीरो० ६/३५)

रुचिरुचिता (स्त्री०) तल्लीनता की विशेषता, अभिरुचि की इच्छा। (सुद० ९१)

रुचिवेदनं (नपुं०) इच्छाज्ञान। (वीरो० ५/३४) ०उचित संवेदन।

रुचिहेतु (पुं०) रुचि का कारण। 'जल इव तृडपहारिणीशे तु स्वादु तेव सासीद्रुचिहेतुः। (जयो० २२/६०)

रोचमान (रुच्+शानच्) प्रिय लगने वाला। (सुद० १२५)

रोचिष्णु (वि०) रुचिकर लगने वाला। (जयो० २७/४०)

रुच्य (वि०) उज्ज्वल, साफ, स्वच्छ, प्रिय, सुंदर, मनोज्ञ।

रुच्यर्थ (वि०) उत्तमता, अच्छा लगने वाला। (सुद० १०२)

रुज् (सक०) नष्ट करना, ध्वंस करना।

०दुःख देना। (जयो० २/७०)

०पीड़ा देना, रोगग्रस्त होना।

रुज्/रुजा (स्त्री०) भंग।

०पीड़ा, संताप, यातना, वेदना। (जयो० ९/६३)

०रोग। (जयो० २/२८)

०अस्वास्थ्यकर। (जयो० ११/४३)

०बाधा, विघ्न। 'शत्रुसम्पत्तीनां मध्ये रुजां प्रजातिः' (जयो० १/५२)

०बीमारी, व्याधि।

०थकावट, श्रम, प्रयत्न, कष्ट।

रुजप्रतिक्रिया (स्त्री०) रोग की चिकित्सा।

रुजभेषजं (नपुं०) औषध।

रुजसद्मन् (नपुं०) विष्ठा, मल।

रुजि (स्त्री०) वेदना, रोग। (सम्य० ५१)

रुण्डः (पुं०) [रुण्ड्+अच्] कबन्ध, धड़, सिर रहित शरीर।

रुतं (नपुं०) [रु+क्त] क्रन्दन विपलन, विलाप। (जयो० ९/२०)

०किलकिलाना, दहाड़ना।

०सूजना, शब्द करना।

रुतज्ञः (पुं०) भविष्यवक्ता, ज्योतिषी।

रुतव्याजः (पुं०) कूट क्रन्दन, स्वांग।

रुद् (अक०) रोना, विलाप करना, क्रंदन करना। (सुद० ३/२६) रौति (जयो० २५/७१) रुदति (जयो० ९/७) (सुद० ४/१०)

०शोक मनाना, आंसू बहाना, दहाड़ना, चिल्लाना।

०फूट फूटकर रोना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुदनं (नपुं०) [रुद्+ल्युट्] क्रंदन, विलाप, शोक करना। (जयो० ३/२६)

रुदित (वि०) [रुद्+क्त] क्रंदित, विलापित, शोकाकुल हुआ। (सुद० १०९)

रुद्ध (भू०क०कृ०) [रुध्+क्त] अवरुद्ध, बाधा युक्त, रुका हुआ विरोधी।
०घिरा हुआ। (सुद० २/)

रुद (वि०) [रोदिति-रुद्+रक्] भयंकर, भयानक, डरावना, भीषण।

रुद्रः (पुं०) आदि देव, शिव।

रुद्रपक्षः (पुं०) भीषण पक्ष। (जयो० १/२((जयो० १/१५)

रुद्राक्षः (पुं०) रुद्राक्ष नामक वृक्ष।

रुद्राक्षमाला (स्त्री०) रुद्राक्षमा। (जयो० २४/८३)

रुद्राणी (स्त्री०) पार्वती, गौरी। (दयो० १/१६)

रुद्रावासः (पुं०) कैलास पर्वत, हिमालय।
०श्मशान।

रुध् (सक०) अवरुद्ध करना, रोकना, विरोध करना।
०विघ्न डालना, बाधा डालना।
०थामना, संधारण करना।
०बांधना, बन्द करना।
०सीमित करना, घेरना।
०छिपाना, ओझल करना।
०गुप्त करना।
०आज्ञा मानना, स्वीकार करना।
०नियंत्रण करना।

रुधिरं (नपुं०) [रुध्+किरच्] ०लहू, खूंन।
०मंगलग्रह।

रुरुः (पुं०) हरिण। ०मृग।

रुवर्णाभावः (पुं०) 'रु' वर्ण का अभाव। (जयो०वृ० ११/५२)

रुश् (सक०) नष्ट करना, मारना, घायल करना।

रुशत् (रुश्+शत्) घायल करने वाला, चोट पहुंचाने वाला, नष्ट करने वाला।

रुष् (अक०) रुषना, नाराज होना।
०क्षुब्ध होना, रोष करना। (जयो० ७/८२)
०रुष्ट होना, क्रोधित होना। (सुद० १०८)

रुष् (स्त्री०) क्रोध, कोप, गुस्सा, रोष।

रुषा (स्त्री०) क्रोध, कोप, गुस्सा, रोष। (जयो० ३/५)

रुषाङ्कित (वि०) क्रोध से युक्त, रोष सहित। (जयो० २४/२८)

रुषान्वितं (वि०) सरोष, कोप सहित। (जयो० ७/६१)

रुषारुणं (नपुं०) क्रोध से लाल। (जयो० ११/१५)

रुषःस्थली (स्त्री०) कोपवती। (जयो० १७/१०३)

रुष्टा (वि०) क्रोधित हुआ, कुपित हुआ। (जयो० २०/६८)

रुह् (अक०) उगना, फूटना, अंकुरित होना। (सुद० २/३३)
०उपजना, विकसित होना, बढ़ना।
०उठना, उन्नत होना, चाहना। (जयो०वृ० ८/६०)
०स्वस्थ होना।

रुह् (सक०) रखना, उठाना, निदेशित करना, आरोपित करना। नियुक्त करना।

रुह्/रुह (वि०) अंकुरित हुआ, उत्पन्न हुआ।

रुह्वा (स्त्री०) [रुह्+टाप्] दूर्वा, घास, दूबड़ा।

रुक्ष् (वि०) [रुक्ष्+अच्] खुरदरा, रुखा, कठोर।
०कसैला।
०असम, कठिन, कर्कश।
०दूषित, मलिन, मैला।
०क्रूर, निर्दय।
०नीरस, सूखा, शुष्क।

रुक्षणं (नपुं०) [रुक्ष्+ल्युट्] सुखाना, पतला करना।

रुढ (भू०क०कृ०) [रुह्+क्त] ०अंकुरित, उगा हुआ, उपजा हुआ।
०विकसित, वृद्धि को प्राप्त।
०विस्तृत, विकीर्ण, बृहद्।
०स्थूलकाय।
०विदित, ज्ञात।
०व्यापक।
०आरुढ़। (सम्य० १२६)
०शब्द रुढ़।

रुढिः (स्त्री०) [रुह्+क्तिन्] ०परम्परा, प्रथा, रिवाज।
०प्रसिद्धि, ख्याति।
०उगना, उपजना।
०वृद्धि, विकास, वर्धन।
०प्रचलित अर्थ।

रुप् (सक०) गढ़ना, बनाना।
०विचार करना, निश्चित करना।
०ढूंढना, खोजना, अन्वेषण करना।
०परीक्षा करना, अनुसंधान करना।

रुपं (नपुं०) ०आकृति, शक्ल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०रूपता, प्रकार। 'निवृत्तिरूपं चरणं मुदे वा।' (सम्य० १३०) सद्वृत्तिरूपं चरणं श्रुतं च। (सम्य० १२८)
०स्वरूप, वस्तु स्वभाव।
०प्रकार, भेद, जाति।
०प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया।
०सादृश्य समरूपता।
०ध्वनि, शब्द।
०धातुरूप, शब्द रूप।

रुपक: (पुं०) [रूप्+ण्वुल्] रुपया, सिक्का। ०नगर कलदार।

रुपकं (नपुं०) शक्ल, आकृति।
०चिह्न, चेहरा-मोहरा।
०प्रकार, जाति।
०रूपक नाट्य विशेष। 'दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम्' (साहित्य दर्पण)
०रूपक अलंकार-जिसमें उपमेय को उपमान के ठीक समनुरूप वर्णित किया जाता है।
रूपकं यत्र साधर्म्यादर्थयोरभिदा भवेत्।
समस्तं वा समस्तं वा खण्डं वाखण्डमेव वा।।
(वाग्भटालंकार ४/६४) जहां धर्मसाम्य के कारण उपमेय और उपमान में भेद ही न रह जाय, वहां 'रूपक' अलंकार होता है।
०समासयुक्त।
०समास रहित।
०अपूर्ण और पूर्ण। अपूर्ण को निरङ्ग और पूर्ण को साङ्गरूपक कहते हैं। (वीरो० ५/२५, जयो०वृ० २५/२) हिमालयोल्लासि गुण स एव द्वीपाधिपस्येव धनु र्विशेष:। ०रूपकयुक्तसमाभसोक्ति, रूपकयुक्तापह्नुति। (वीरो० २/५७) (जयो० १४/६९) रूपक श्लोषानुप्राणित (जयो०वृ० ७/६४) वाराशिवंशस्थितिरातिविभाति भो:! पाठका क्षात्रयशोऽनुपाती। (वीरो० २/७) (जयो०वृ० ३/२३, जयो० २१/७५, जयो० २६/६९, ६/१०४, ८/९, ८/३५, ८/४२, ८/५८) संसदीह नियतो नृपासने सोऽजयज्जयनृप: कृपाशाने। दुर्मदाचलभिद: सदा स्वतो धारक: क्षणलसच्चमत्कृत:।। (जयो० ३/१९)

रुपकरणं (नपुं०) रूपोद्योतन। (जयो० ४/६६)

रुपणं (नपुं०) [रूप्+ल्युट्] ०गवेषण, परीक्षा।
०आलंकारिक वर्णन।

रुपता (वि०) स्वरूपता। (सम्य० १४४)

रुपदानं (नपुं०) रुपये का दान।

रुपदात्री (वि०) स्वरूप प्रतिपादन करने वाली।

रुपधुरी (स्त्री०) रूप युक्त। (सुद० १२०)

रुपनिधि: (स्त्री०) सौंदर्य सिन्धु।

रुपमाला (स्त्री०) सौंदर्य परम्परा। (जयो० २२/८६) (जयो० ११/९२) ०रमणीय स्रग।

रुपया (स्त्री०) चमेली।

रुपराशि: (स्त्री०) सौंदर्य समूह। (जयो० ३/६३)

रुपरेखा (स्त्री०) वर्णन प्रक्रिया। (वीरो० १/२९)

रुपवत् (वि०) मनोहर, सुंदर।
०शारीरिक सौंदर्य युक्त।

रुपवती (स्त्री०) सौंदर्यशाली। (जयो० ६/४१)

रुपसम्पदि (स्त्री०) रूप-चेष्टा (जयो० ४/९८) (सुद० १/४१)
०सौंदर्य भाव, ०रमणीयता।

रुपसुधासवित्री (वि०) रूप सुधा को जन्म देने वाली। (जयो० १/६४) ०रूप सौंदर्य।

रुपाचलं (नपुं०) एक पर्वत। (भक्ति० ३६)

रुपाजीवा (स्त्री०) वेश्या। (सुद० ११९)

रुपान्तूपासकाधिप: (पुं०) श्रावक शिरोमणि। (सुद० १३४)

रुपाभृत (वि०) रूप वाला। (सुद० ३/९)

रुपिणी (वि०) मनोहारिणी। (जयो० १०/३८)

रुपी (स्त्री०) रूप, रसादि युक्त।

रुप्य (वि०) [रूप+यत्] सुंदर, ललित।

रुप्यं (नपुं०) चांदी, रुपया।

रुप्यक: (पुं०) नाणक। (जयो० १५/४२) रुपया।

रुष् (सक०) अलंकृत करना, सजाना, विभूषित करना।
०पोतना, चुपड़ना, मण्डित करना, लीपना।

रुषित (भू०क०कृ०) [रुष्+क्त] अलंकृत।
०बिछाया हुआ।
०खुरदरा, सूखा, रूक्ष।

रे (अव्य०) [रा+के] सम्बोधनात्मक अव्यय, अरे, अये, (सुद० ८८) (सुद० १३५) रे सम्बोधने। (जयो० १३/७९)

रेकहा (स्त्री०) भंकाहर, नीचवृत्ति परिहारक। (जयो०वृ०२१/३६)

रे रे: (अव्य०) अरे, अये। (समु० ३/२९) 'रे रे कियज्जल्पसि कोऽसि' (समु० ३/२९)

रेखा (स्त्री०) [लिख्+अच्+टाप् लस्य र:] ०पंक्ति, लकीर, श्रेणी। रेखैकिका नैव लघुर्न गुर्वी लध्व्या: परस्या भवति स्विदुर्वी। (वीरो० १९/५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०चित्रांकन, रेखांकन, आलेखन, विलेखन।
०अंश, भाग।

रेखांकनं (नपुं०) चिह्न। ०प्रतीक, ०रेखा चित्र, ०लेखसंकेत।

रेखाङ्कित (वि०) पंक्तिबद्ध। (जयो० ८/६६)

रेखात्रयं (पुं०) तीन रेखाएं। स्वर्गात् सुरद्रो सलिलान्नलस्य लताप्रतानस्य भुवोऽपकृष्य। सारं किलालङ्कृत एष हस्तो रेखात्रयेणेत्यथवा प्रशस्तः।। (जयो० १/५०)

रेखात्रित्रयं (नपुं०) त्रिसूत्री। (जयो०वृ० ५/५०)

रेखागणितं (नपुं०) ज्यामिति। ०रेखाओं से गणना।

रेखानुबिद्ध (वि०) रेखांकित। (वीरो० ८/३)

रेखापरम्परा (स्त्री०) अंकपाली। (जयो०वृ० २३/२५)

रेखाव्याप्त (वि०) रेखा की व्यापकता युक्त। (जयो०वृ० ६/१०५)

रेचक (वि०) [रेचयति रिच्+णिच्+ण्वुल्] रिक्त करने वाला।

रेचकः (पुं०) श्वसन, श्वांस।

रेचकं (नपुं०) दस्त, विरेचन।

रेचनं (नपुं०) [रिच्+ल्युट्] ०रिक्त करना।
०घटाना।
०श्वास बाहर निकालना, मल बाहर निकालना।

रेचित (वि०) [रिच्+णिच्+क्त] साफ किया गया, विरेचित।
०श्वसित।

रेज् (अक०) सुशोभित होना। (जयो० ३/१०१)

रेणुः (स्त्री०/पुं०) धूल, रजकण, रेतल। धूली, पांशु। (जयो०वृ० १/१०४) (मुनि० २२, जयो० ३/११)
०पराग, पुष्परज।

रेणुका (स्त्री०) परशुराम की माता।

रेणुगत (वि०) पांशुगत।

रेणुभारः (पुं०) धूलि पुञ्ज। (जयो० १३/१०३)

रेतस् (नपुं०) वीर्य, धातु। (सुद० १००)

रेप (वि०) ०तिरस्करणीय, ०नीच, अधम, निम्न।

रेपः (पुं०) क्रूर, निष्ठुर।

रेफ (वि०) [रिफ+अच्] निम्न, अधम।
०निन्दित। रेको निन्दितो' (जयो०वृ० २४/१३९)
०मञ्जुल (जयो० २४/१४१) भयंकर। (जयो० ७/२५)

रेफः (पुं०) 'र' वर्ण।
रेफो 'र' वर्ण पुंस्येवकुत्सिते,
त्वभिधेयवत् इति विश्वलोचनः।
(जयो०वृ० २४/१४१)

रेवटः (पुं०) [रेव+अटच्] सूकर, सूअर, बांस की छड़ी।
०बवंडर।

रेवतः (पुं०) [रेव+अतच्] नींबू वृक्ष।

रेवती (स्त्री०) नक्षत्र विशेष।

रेवा (स्त्री०) रेवा नदी, नर्मदा नदी।
०रति, रुचि। रेवा नीली स्मरस्त्रियो इति विश्वलोचनाः (जयो० २७/७)

रेवारसः (पुं०) आनन्द रस। 'रेवाया रते रस आनन्दः' (जयो० २/१२३)

रेष् (अक०) दहाड़ना, चिल्लाना।

रेषणं (नपुं०) [रेष्+ल्युट्] दहाड़ना, चिल्लाना।

रै (पुं०) [रातेः डैः] धन, सम्पत्ति, वैभव।

रैवतः (पुं०) [रेवत्या अदूरो देशः] रैवतक पर्वत।

रैवतकः (पुं०) रैवतकगिरि।

रोकं (नपुं०) [रु+कन्] ०छिद्र।
०नाव, नौका, जहाज।
०निःसंकोच-'रोकस्तु रोचिषी'ति विश्वलोचन' (जयो०वृ० १/८४)

रोकारः (पुं०) रोज, प्रतिदिन। (जयो० १७/११७)

रोगः (पुं०) [रुज्+घञ्] रोग, व्याधि, पीड़ा, कष्ट।
०नरकादि दुःख, संयुतोऽपि समञ्जसि भोगानात्मनाऽनुभवितुं किल रोगान्। (समु० ५/३)
०रहस्य (सुद० १०७)

रोगंकरी (वि०) रोग युक्त, व्याधि वाला। (वीरो० १७/४)

रोगगत (वि०) दुःख से प्राप्त हुआ।

रोगग्रस्त (वि०) दुःख से पीड़ित।

रोगस्थानं (नपुं०) व्याधि से पीड़ित।

रोगहर (वि०) पीड़ा नाशक।

रोगहारिन् (वि०) चिकित्सा विषयक।

रोगिणी (स्त्री०) रोगग्रस्त स्त्री। (जयो० १६/१८)

रोगी (वि०) रोगग्रस्त व्यक्ति।

रोचक (वि०) [रुच्+ण्वुल्] ०रुचिकर, रंजक, सुखद। (जयो० १२/१२८)
०भूख बढ़ाने वाला, उत्तेजक। क्षुधोत्तेजक।

रोचकं (नपुं०) भूख।

रोचनं (नपुं०) सुंदर, प्रिय, इष्ट।
०लाल कमल, रक्तकमल। कूटशाल्मलीवृक्ष। रोचनो रक्तकहलारेकूट शाल्मलि-शाखिनि इतिवि (जयो० २१/८६)
०उज्ज्वल, आकाश, अन्तरिक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोचना (स्त्री०) [रोचन+टाप्] ०सुंदर स्त्री।
०रुचिकरी। (जयो० ३/६३)
०उज्ज्वल आकाश, स्वच्छ अन्तरिक्ष।

रोचनकारक (वि०) रुचिकर। (जयो० १/२०) (सुद० १२७)

रोचमान (वि०) [रुच्+शानच्] उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ।
०कान्तिमान, प्रभावान्।

रोचित (वि०) रुचिकर, प्रिय।

रोचिष्णु (वि०) [रुच्+इष्णुच्] चमकीला, उज्ज्वल, चमकदार। देदीप्यमान।
०प्रफुल्लवदन।
०क्षुधावर्धक।

रोचिस् (नपुं०) [रुचेः इसिः] प्रकाश, आभा, कान्ति, प्रभा।

रोदनं (नपुं०) [रुद्+ल्युट्] रोना, (जयो० १/११) क्रंदन करना। (जयो० १४/६१, दयो० १६)

रोदस् (नपुं०) [रुद्+असुन्] आकाश और पृथ्वी।

रोदित (वि०) कलकलकरण। (जयो० १८/४५)

रोधः (पुं०) [रुध्+घञ्] अवरोध, गतिरोध, बाधा, विघ्न। (मुनि० ३)
०दबाना, प्रतिबन्ध लगाना, पकड़ना, रोकना। (सुद०९२)
०बन्द करना, घेरना।

रोधनः (पुं०) [रुध्+घञ्] बुधग्रह।

रोधनं (नपुं०) [रुध्+ल्युट्] रोकना, ठहराना।
०निरोध, अवरोध, गतिरोध, नियंत्रण, बाधा।

रोधकरणं (नपुं०) निरोध करना, रोकना। (सुद० ९२)

रोधवशः (पुं०) रोध का कारण, अवरोधवश। (सुद० १३३) गतिरोधवशेनासावेतस्योपरि रोषणा। (सुद० १३३)

रोधस् (नपुं०) [रुध्+असुन्] ०बांध, पुल, तटबन्ध।
०किनारा, ऊंचा गतिरोध।

रोध्रः (पुं०) [रुध्+रन्] लोध्रवृक्ष।

रोध्रं (नपुं०) पाप, अपराध, क्षति।

रोपः (पुं०) उगाना, बौना, रोपना।
०पौध लगाना।
०छिद्र, गह्वर।

रोपणं (नपुं०) ०रोपना, उगाना।
०जमाना, उठाना।
०पौध लगाना।

रोमकः (पुं०) रोम नामक नगर।

रोमकूपः (पुं०) चमड़ी के ऊपर छिद्र।

रोमकेशरं (नपुं०) चंवर, मुरछल।

रोमगर्तः (पुं०) रोम छिद्र।

रोमन् (नपुं०) रोम, शरीर के छोटे-छोटे बाल।

रोमन्थः (पुं०) जुगाली, चर्वण।

रोमपङ्क्तिः (स्त्री०) लोमाली। (जयो० १६/८२)

रोमपुलकः (पुं०) हर्षातिरेक, रोंगटे खड़ा होना।

रोमभार (पुं०) रोमाञ्चपन। (वीरो० १२/४५)

रोमभूमिः (स्त्री०) बालों का स्थान।

रोमरन्ध्रं (नपुं०) रोमकूप।

रोमराजिः (स्त्री०) रोमावली। ०रोम समूह।

रोमलता (स्त्री०) रोम समूह।

रोमविकारः (पुं०) पुलक, रोमाञ्च।

रोमविक्रिया (स्त्री०) पुलक, रोमाञ्च।

रोमविभेदः (पुं०) पुलक, रोमाञ्च, हर्ष।

रोमहर्षः (पुं०) रोमों का खड़ा होना।

रोमहर्षणः (पुं०) बहेडा, विभीतक। (जयो० २१/३५)

रोमाङ्कः (पुं०) ०रोम चिह्न।

रोमाणी (वि०) रोमाञ्चित, हर्षित। (वीरो० १५/१४)

रोमाञ्चः (पुं०) हर्ष, खुशी, पुलक, आनंद। (जयो० ३/८३) 'सूचीव रोमाञ्चततीप्यहो सकृत्' (वीरो० ९/२०)
०अञ्चन (जयो०वृ० ३/३४)

रोमाञ्चकारिणी (वि०) रोमाञ्च को उत्पन्न करने वाली, आनन्दकारिणी। 'यत्कथा खलु धीराणामपि रोमाञ्चकारिणी।

रोमाञ्चनं (नपुं०) आनंद, खुशी, पुलकभाव। (जयो० २२/२१)

रोमाञ्चनतः (वि०) रोमाञ्चकारी। (सुद० ७९)

रोमाञ्चभर (वि०) हर्ष से परिपूर्ण, आनन्द युक्त। (जयो०१८/८)

रोमाञ्चित (वि०) हर्षित, अंकुरित। (जयो० ३/९३) पुलकित उत्कण्ठित। (जयो०वृ० १/८९)

रोमावली (स्त्री०) रोमपंक्ति, रोमराजि। (वीरो० ३/२१)

रोमोद्गम (वि०) परिपुष्ट। (जयो०वृ० १०/६०)

रोरुदा (स्त्री०) [रुद्+यङ्+अ+टाप्] प्रचण्डक्रंदन, अत्यन्त विलाप।

रोलम्बः (पुं०) [रो+लम्ब्+अच्] भौंरा, भ्रमर।

रोलम्बकुलः (पुं०) षट्पद समूह, भ्रमरसमूह। रोलम्बः षट्पदो भृङ्गश्चञ्चरीकोऽलिरित्यापि' इति कोष (जयो० १४/६४)

रोषः (पुं०) [रुष्+घञ्] कोप, क्रोध, गुस्सा। (सुद० २/४७) जनेषु वा रोषमितेऽपि भूपे। (सुद० १०७) क्रोधनस्य पुंसूक्तीव्रपरिपणामो रोषः। (नि०स०वृ० ६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०उपसर्ग (सुद० १३३) गतिरोधवशेनासावेतस्योपरि रोषणा। (सुद० १३३)

०तमस्। (जयो०वृ० ४/२५)

०द्वेष। भूरागस्य न वा रोषस्य न, शान्तिमयी सहजा वा। (सुद० ७४)

रोषकर (वि०) गुस्सा करने वाला।

रोषकारक (वि०) कोप को बढ़ाने वाला।

रोषगत (वि०) उपसर्ग को प्राप्त।

रोषगात्र (वि०) कुपित शरीर वाला।

रोषजन्य (वि०) क्रोधजन्य।

रोषताप (वि०) क्रोध से पीड़ित।

रोषभावः (पुं०) क्रोध भाव।

रोषशील (वि०) द्वेष शील।

रोषहर (वि०) क्रोध को जीतने वाला।

रोषाग्नि (स्त्री०) क्रोध रूपी अग्नि।

रोषारूणं (नपुं०) प्रभातिकमरूणिमा, प्रातःकालीन लालिमा। (जयो० १८/३६)

०कोपासण, क्रोध से तमतमाया हुआ। (जयो० १३/१०७)

रोहः (पुं०) [रुह्+अच्] गहराई, ऊंचाई।

०बुद्धि विकास।

०कली, बौर, अंकुर।

रोहणः (पुं०) [रुह्+ल्युट्] एक पर्वत नाम।

रोहणं (नपुं०) आरोहण, सवार होना।

रोहणद्रुमः (पुं०) चन्दन तरु।

रोहन्तः (पुं०) वृक्ष।

रोहन्ती (स्त्री०) लता।

रोहिः (पुं०) [रुह+इनि] हरिण।

०धर्मात्मा व्यक्ति।

०वृक्ष।

०बीज।

रोहिणी (स्त्री०) [रुह्+इनन्+ङीष्] ०लाल रंग की गाय।

०नक्षत्र विशेष, चतुर्थ नक्षत्र।

०एक प्रसिद्ध रानी।

०बलराम की मातुश्री।

रोहिणीपतिः (पुं०) चन्द्र।

रोहिणीप्रियः (पुं०) चन्द्र।

रोहिणीरमणः (पुं०) चन्द्र।

रोहित (वि०) लाल रंग।

रोहितः (पुं०) लोमड़ी, रोहित मछली। (दयो० १४)

रोहितं (नपुं०) ०रुधिर।

०केसर।

रोहिताश्वः (पुं०) अग्नि, आग।

रोहिषः (पुं०) [रुह्+इषन्] रोहित मछली।

रौक्ष्यं (नपुं०) [रुक्ष्+ष्यन्] कठोरता, रुखापन।

०कर्कशता, क्रूरता।

रौद्र (वि०) चिड़चिड़ा, गुस्से वाला।

०भीषण, बर्बर, भयानक।

रौद्रं (नपुं०) जोश, उमंग, क्रूर, कोप। रुद्रः क्रूराशयः तस्य कर्म तत्र भवं वा रौद्रम्।

०निरन्तर प्राणवधादिक चिन्तन।

०भीम, भयानक। 'रुद्राशयभवं भीममपि' रोदयते प्राणिन इति रुद्रो हिंस्त्रो रुद्रेभवं रौद्रम्' (जैन०ल० ९६४)

रौद्रध्यानं (नपुं०) रुद्र परिणामों से युक्त ध्यान। (समु० ४/३७) क्रूरमनुष्य का ध्यान।

अन्येषां हतये मृषोक्तिकृत्ये चौर्यप्रयोगाय वा,
वित्ताद्यर्जन हेतवे च य इमे चित्तानुरक्तिस्तवाः। (मुनि० २१)

०मानसिक अनुराग। (समु० ८/३६) हिंसानंदी, मृषानन्दी, मौर्यानन्दी और परिग्रहानन्दी ये चार मनुष्य के क्रूरभाव है, इनका चिन्तन रौद्रध्यान है। (मुनि० २१)

रौद्रपरिणामः (पुं०) रौद्रभाव। (समु० ४/३७)

रौद्रमानसः (नपुं०) रौद्रध्यान। (समु० ५/३४)

रौप्य (वि०) चांदी से संबंधित, चांदी से निर्मित।

रौरवः (पुं०) बर्बर, कठोर, दुःखपूर्ण। नरक विशेष। (वीरो० ११/१९) (समु० १/३४)

रौरव (वि०) [रुरु+अण्] मृग की खाल से निर्मित।

रौरवनरकः (पुं०) रौरव नामक नरक। (वीरो० ११/१९)

रौहिणः (पुं०) चंदन तरु, वटवृक्ष।

रौहिणेयः (पुं०) बछड़ा, वत्स।

०बुध ग्रह।

रौहिणेयं (नपुं०) पन्ना, मरकतमणि।

रौहिष् (पुं०) हरिण।

रौहिषः (पुं०) हरिण।

रौहिषं (नपुं०) तृण विशेष।

ल

लः (पुं०) अन्तःस्थ वर्ण इसका उच्चारण स्थान दन्त्य है। (दयो० १४/८४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लः (पुं०) इन्द्र।
०ह्रस्वमात्रा।
लक् (सक०) स्वाद लेना, चखना।
०ग्रहण करना, प्राप्त करना।
लकः (पुं०) [लक्+अच्] मस्तक, सिर।
लकचः (पुं०) बडहर तरु।
लकुचाञ्चित (वि०) लीची वृक्ष से युक्त। (वीरो० ७/२५)
लकुटः (पुं०) [लक्+उटन्] मुद्गर, सोंटा, दण्ड।
लक्तकः (पुं०) लाख, महावर।
०चिथड़ा, लत्ता, जीर्ण वस्त्र।
लक्तिका (स्त्री०) [लक्तक+टाप्] छिपकली।
लक्ष् (सक०) प्रत्यक्ष करना, जानना, समझना।
०अवलोकन करना, देखना।
०निरंतर, परखना, ज्ञात करना।
०अंकित करना, चिह्नित करना।
०प्रकट करना, मनोनीत करना।
लक्षं (नपुं०) [लक्ष्+अच्] सौ हजार, लाख। (समु० २/२०)
०चिह्न, संकेत, निशान।
०छद्मवेश।
लक्षक (वि०) [लक्ष्+ण्वुल्] गौण रूप से अभिव्यक्त करने वाला।
लक्षकं (नपुं०) लाख।
लक्षणं (नपुं०) विवक्षित वस्तु की भिन्नता का बोध। परस्परव्यतिकरे सति येनान्यत्वं लक्ष्यते तल्लक्षणम्। (त०वा० २/८)
लक्षणं (नपुं०) [लक्ष्यतेऽनेन लक्ष करणे ल्युट्] चिह्न-'सुभृते शुभलक्षणं सुतम्' (सुद० ३/१)
०विशेषता, खूबी, आकृति। (जयो० ६/१३) शरदं भुवि वर्षणात् पुनःक्षणवल्लक्षणमेत्य वस्तुनः। (सुद० ३/३२)
०स्वरूप, परिभाषा, यथार्थ वर्णन। 'तस्मात् सम्यक्त्वमेकं स्यादर्थात्तल्लक्षण। दपि' (सम्य० १२२)
०बोधक चिह्न, संकेत, निशान। (सम्य० ८४)
०नाम, पद, स्थान, अभिधान।
०कारण, हेतु।
०चिह्न। (जयो० १/५३) (जयो० २/६)
०बहाना।
लक्षणहीन (वि०) विलक्षण। (जयो०वृ० ६/५४) ०संकेत रहित।

लक्षणा (स्त्री०) उद्देश्य, ध्येय।
०शब्द का परोक्षप्रयोग।
०गौण सार्थकता।
०शब्द की एक शक्ति। मुख्यार्थ बाधे तद्योगे रुढितोऽथप्रयोजनात् अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपित क्रिया:।। (काव्य ५)
लक्षणान्वित (वि०) शुभलक्षणों से युक्त।
लक्षणान्विति (स्त्री०) शुभ लक्षण की प्रतीति। सदनेक-सुलक्षणान्वितितनयेनाथ, लसत्तमस्थितिः। (वीरो० ६/४०)
लक्षण्य (वि०) [लक्षण+यत्] शुभ लक्षण वाला।
लक्षशस् (अव्य०) [लक्ष+शस्] लाख लाख संख्या में, बड़ी संख्या में।
लक्षाधिपः (पुं०) लखपति। (सम्य० १००)
लक्षित (भू०क०कृ०) [लक्ष्+क्त] ०अवलोकित, दर्शित।
०चिह्नित, अंकित।
०उद्दिष्ट, परिभाषित।
०परीक्षित।
लक्षीकृत् (वि०) प्रत्यक्षीकृत, परीक्षित। (दयो० ६०)
लक्ष्मण (वि०) शुभ लक्षण युक्त, सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली।
लक्ष्मणः (पुं०) राम का अनुज लक्ष्मण, दशरथ पुत्र, सुमित्रा तनुज। (समु० ४/१०) (सम्य० ६५)
०एक औषधि। (जयो०वृ० १३/५९)
०सारस।
लक्ष्मणा (स्त्री०) हंसिनी।
लक्ष्मन् (पुं०) [लक्ष्+मनिन्] चिह्न, निशान, विशेषता।
०अंकन, परिलक्षण।
०सारस पक्षी।
लक्ष्माधर्म (वि०) अधर्म के स्वरूप वाला। (सुद० ४/१२)
लक्ष्मीः (स्त्री०) [लक्ष्+ई, मुट्+च] ०विष्णु पत्नी। (सुद० २/११ हरि रामा (जयो०वृ० १४/८८) 'तयोरेका सुता लक्ष्मीरिवाभूदब्धिवेलयोः' (दयो० १/१७)
०सौभाग्यवती, समृद्धि, धनदेवी, (जयो० ७) सौभाग्य।
०श्री। (जयो०वृ० १२/१३)
०इन्दिरा। (जयो०वृ० ५/८७)
०मोती।
०हल्दी।
०प्रियता, लावण्य, सौंदर्य।
०दानस्वभावी, त्यागलक्षणा। 'लक्ष्मीति शब्दस्य प्रथमैकवचने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्प्राप्तस्य विसर्गाभावस्य लोपो न भवति, यथा नद्यादिशब्दस्य भवति' (जयो० १३/३५)

लक्ष्मीक्षः (पुं०) विष्णु।

०आम्र तरु। ०अहकार।

०भाग्यशाली व्यक्ति।

लक्ष्मीकान्तः (पुं०) ०विष्णु। ०नृप।

लक्ष्मीगत (वि०) धनकोष प्राप्त।

लक्ष्मीगृहं (नपुं०) रक्त कमल, पद्म।

लक्ष्मीनाथः (पुं०) विष्णु।

लक्ष्मीनिवासः (पुं०) धनदेवी का वास। (जयो० ६/१२९) (जयो० १/४९)

लक्ष्मीपतिः (पुं०) विष्णु।

०सुपारी का पेड़।

लक्ष्मीपुत्रः (पुं०) कामदेव, धनिक, धनवान्।

लक्ष्मीपुष्पः (पुं०) लाल।

लक्ष्मीपूजनं (नपुं०) धन की पूजा। ०लक्ष्मी अर्चना।

लक्ष्मीपूजा (स्त्री०) लक्ष्मी अर्चना।

लक्ष्मीफलः (पुं०) बिल्व तरु।

लक्ष्मीमति (स्त्री०) सेनापति गङ्गराज की पत्नी। (वीरो० १५/५०)

लक्ष्मीरमणः (पुं०) विष्णु।

लक्ष्मीवसति (स्त्री०) लक्ष्मी का निकास, पद्म निवास।

लक्ष्मीवारः (पुं०) बृहस्पतिवार।

लक्ष्मीवेष्टः (पुं०) तारपीन।

लक्ष्मीसहजः (पुं०) चन्द्र।

लक्ष्य (सं०कृ०) [लक्ष्+ण्यत्] ०दृश्य, पश्य, देखने योग्य।

०ज्ञातव्य, प्राप्त।

०चिह्नित, अंकित।

०संकेतित, अभिज्ञेय।

लक्ष्यं (नपुं०) उद्देश्य, चिह्न, निशाना। (सुद० १३५)

लक्ष्यक्रम (वि०) प्रत्यक्षज्ञेय।

लक्ष्यभेदः (पुं०) निशाना लगाना। ०उद्देश्य पूर्ति।

लक्ष्यवलना (स्त्री०) शरण्य परम्परा, बाणों का लक्ष्य। (जयो०१४/३१)

लक्ष्यसुप्त (वि०) उद्देश्यविहीन सोया हुआ, असत्य सोया हुआ। ०निद्रा की भूमिका वाला।

लग् (अक०) लग जाना, चिपकना, मिलना, सम्मिलित होना। लगतु (सुद ५/३)

०लगना, प्राप्त होना। (जयो० १०/२३)

लगड (वि०) प्रिय, रमणीय, मनोहर।

लगवर्णं (नपुं०) व्यञ्जन। (जयो०वृ० २८/३४)

लगदलि (पुं०) भ्रमर, भौंरा। (वीरो० ६/३८)

लगित (भू०क०कृ०) [लग+क्त] संबद्ध, अनुसक्त, प्राप्त, उपलब्ध।

लगुडः (पुं०) मुद्गर, लाठी, लकड़ी। (दयो० ९७) (समु० २/३१) दण्ड, डण्डा। (जयो० २५/४४)

लग्न (भू०क०कृ०) [लग्+क्त] जड़ा हुआ, चिपका हुआ।

०अनुषक्त, संबद्ध। (सम्य० ९०)

लग्नः (पुं०) भाट, चारण।

लग्नं (नपुं०) संपर्क बिन्दु, शुभ दिन का मुहूर्त। (सम्य० ९०)

लग्नकुण्डलकः (पुं०) लग्नस्थान। (जयो०वृ० १७/५६)

लग्नदिनः (नपुं०) शुभदिन।

लग्ननक्षत्रं (नपुं०) शुभनक्षत्र।

लग्नभृंगवत् (वि०) भृंगचिह्न युक्त। (सुद० ३/१६)

लग्नमण्डलं (नपुं०) राशिचक्र।

लग्नमासः (पुं०) शुभ महीना।

लग्नविधि (वि०) शुभविधि। (दयो० ६९) ०मंगल प्रसंग।

लग्नशुद्धिः (स्त्री०) मंगल प्रसंग।

लग्निका (स्त्री०) [लग्न+कन्+टाप्] लग्नक्रिया।

लघिमन् (पुं०) [लघु+इमनिच्] ०हलकापन।

०कम करना, घटाना, धीमा करना, न्यून करना।

०तिरस्कार करना, घृणा करना।

०लघुता, नगण्यता।

लघिमा (स्त्री०) लघुता, स्वल्पीभाव। (जयो० ४/६१) एक ऋद्धि विशेष, जिस ऋद्धि से वायु के समान अतिशय लघु शरीर किया जा सके। 'वायोरपि लघुतरशरीरता लघिमा' (त०वा० ३/३६)

लघिष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन-लघु+इष्ठन्] हलके से हलका, बहु लघु।

लघीयस् (वि०) [अयमनयो अतिशयेन लघुः ईयमुन्] अत्यन्त हलका, बहुत हलका।

लघु (वि०) हल्का, अल्प।

०न्यून, तुच्छ, कम।

०ह्रस्व, संक्षिप्त, सामासिक।

०क्षुद्र, तृणप्राय, नगण्य, महत्त्वहीन।

०नीच, अधम।

०अशक्त, दुर्बल, ओछा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०चुस्त, फुर्तीला, चपल।
०प्रिय, मनोहर, सुंदर, रमणीय।
लघुकाय (वि०) हलके शरीर वाला।
लघुक्रम (वि०) जल्दी चलने वाला।
लघुखट्विका (स्त्री०) खटोला।
लघुगोधूमः (पुं०) छोटी जाति का गेहूं।
लघुचित्त (वि०) हलके मन वाला।
लघुचेतस् (वि०) हलके चित्त वाला।
लघुजङ्गलः (पुं०) लवा पक्षी।
लघुता/लघुत्व (वि०) हलकापन, लाघव। (जयो० २०/६३) अल्पत्व (जयो० २०/८१) (वीरो० २२/३२)
ममाऽमृदुगुरङ्कोऽयं सोमत्वादतिवर्त्यपि।
विकासयतु पूषेव मनोऽम्भोजं मनस्विनाम्।।
(वीरो०२२/३२)
०नगण्यता, महत्त्वहीनता, तिरस्कार।
०अपमान, निरादर।
०संक्षेप, संक्षिप्तता।
०सुगमता, सुविधा।
०निरर्थकता, स्वेच्छाचारिता।
लघ्वी (स्त्री०) [लघु+ङीष्] हलकी, अल्प, लघुतरा।
०कोमलांगी स्त्री।
लङ्का (स्त्री०) लंका, रावण की राजधानी।
लङ्कार्थ (वि०) व्यभिचारिणीनार्थ। (वीरो०)
लङ्काधिपः (पुं०) रावण।
लङ्काधीशः (पुं०) रावण। (सुद० ८८)
लङ्कापति (देखो ऊपर)।
लङ्घनी (स्त्री०) लगाम की बल्गा।
लङ्गः (पुं०) लंगड़ापन।
लङ्गूलं (नपुं०) लांगूल जंगली पशु।
लङ्घ (अक०) उछलना, मूदना, छलांग लगाना। (जयो०१/७३)
०चढ़ना, सवारी करना।
०आक्रमण करना, झपट्टा मारना।
०उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना।
०उपवास करना।
०अवज्ञा करना।
लङ्घनं (नपुं०) उपवास, संयम। ०अनशन, तप का भेद। (जयो० २९/१०)
०छलांग, उछाल, कूदना।
०चढ़ना, उठना।
०हानि, अपमान।
०अनिष्ठ, क्षति।
लङ्घनाशय (वि०) मार्गातिक्रम। (जयो०वृ० ३/१५) उल्लंघन का अभिप्राय।
लङ्घित (भू०क०कृ०) [लङ्घ्+क्त] ०उपवासित।
०अवज्ञात।
०अपमानित, अनाहत।
०उल्लंघन किया गया।
०पार किया गया।
लङ्घितवती (वि०) अतिक्रमावती (जयो० २२/१०)
लछ् (सक०) चिह्न लगाना, देखना।
लज् (सक०) छिपाना, ढकना।
लज्ज् (अक०) लज्जित होना, कलंकित होना, शर्मिंदा होना। (जयो०वृ० ६/१२०) 'कामो न तु लज्जेति' (जयो०वृ० ६/१२०)
लज्जा (स्त्री०) [लज्ज्+अ+टाप्] शर्म, त्रपा। (जयो० ६/४८)
०लज्जा नामक स्त्री (जयो० १७/२०)
०शर्मीलापन, शर्मिंदगी।
०छुईमुई का पौधा।
लज्जाकर (वि०) शर्म को प्राप्त हुआ।
लज्जाधर (वि०) विनय धारक।
लज्जायवती (स्त्री०) लज्जाशीला। (जयो० १७/९२)
लज्जालु (वि०) विनयशील, शर्मीला। लजाया हुआ।
लज्जालुता (वि०) ह्रीणता, लज्जायुक्त हुआ। (जयो०वृ० १७/२८)
लज्जालुभावः (पुं०) अपत्रपा। (जयो० २४/२३)
लज्जाविहीन (वि०) लज्जारहित, विनयहीन। (जयो० १७/२०)
लज्जासरि (स्त्री०) त्रपापगा। (जयो० १७/७४)
लज्जास्पदः (पुं०) लज्जायुक्त। (सुद० ८७)
लज्जित (भू०क०कृ०) [लज्ज्+क्त] ०विनयशील, शर्मीला।
०लजाया हुआ, शर्मिंदा।
लञ्ज् (सक०) कलंक लगान, निन्दा करना।
०भूनना, तलना।
०मारना, नष्ट करना।
०कहना।
०प्रहार करना।
लञ्जः (पुं०) [लञ्ज+अच्] पांव, पैर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०पूंछ।

०कच्छा, धोती की लांग।

लञ्जा (स्त्री०) [लञ्ज+टाप्] ०कच्छा। (जयो० ७/४३)

०धार।

०व्यभिचारिणी स्त्री।

०लक्ष्मी।

०निन्द्रा।

लञ्जिका (स्त्री०) [लञ्ज+ण्वुल्+टाप्] ०रण्डी, वेश्या। (जयो० १३/४०)

लट् (अक०) तुतलाना, क्रंदन करना, रोना।

लटः (पुं०) [लट्+अच्] मूर्ख, बुद्धु।

०त्रुटि, दोष।

०लुटेरा।

लटकः (पुं०) [लट्+क्वुन्] ०ठग, धूर्त, छली।

लटभ (वि०) सुंदर स्त्री, तरुणी।

०लावण्यमय, मनोहर, प्रिय।

लट्टः (पुं०) दुष्ट, बदमाश।

लट्वः (पुं०) [लटेः क्वन्] घोड़ा, अश्व।

०नट।

०अलक।

०गैरेया।

लड् (अक०) खेलना, क्रीड़ा करना।

लड् (सक०) फेंकना, उछालना।

०कलंक लगाना।

०जीभ लपलपाना, दुलारना, पुचकारना, सताना।

लड्डुः (पुं०) लड्डू, मोदक। (जयो० ६/१२१) (जयो० ४/५१)

लड्डुकः (पुं०) देखो ऊपर।

लड्डुकं (नपुं०) मोदकानि लड्डुकानि च। (दयो० ९५, जयो०वृ० ४/५) (जयो०वृ० १२/११३)

लड्डुभक्तिः (स्त्री०) मोदक भक्षण। (जयो० २६/३८)

लण्ड् (सक०) ऊपर उछालना, फेंकना।

लण्डं (नपुं०) [लण्ड्+घञ्] विष्ठा, मल।

लण्ड्रः (पुं०) लंदन।

लता (स्त्री०) [लत+अच्+टाप्] ०बल्ली, बेल, वल्लरी। (जयो० १/९१) (सुद० ८१) 'जयस्य वाग्वाण्येव वल्लरी लता पल्लविता' (जयो०वृ० १/९)

०नवपल्लव युक्त वल्लरी। नवपल्लवतो यथा लता शुशुभे साऽऽशु शुभेन वा सता। (वीरो० ६/३९)

लतागृहं (नपुं०) लतामण्डप, लताकुंज।

लताग्रदुःस्थाङ्घ्रिता (वि०) लता पर चढ़ी हुई। लताग्रे दुष्टतया तिष्ठति स दुःस्थ स चासावंघ्रिःतया' (जयो०वृ० १४/२७)

लताङ्गी (स्त्री०) लता से समान सुकुमार अंगो वाली। (जयो० २१/७८)

लताजिह्वः (पुं०) सर्प, सांप।

लतातरु (पुं०) साल वृक्ष, नांरगी का पेड़।

लतापनसः (पुं०) तरबूज।

लताप्रतानं (नपुं०) लतातन्तु, लताविस्तार। (जयो० १/५०)

०वल्लरी संलग्न। (वीरो० ९/४२)

०लता झुरमुट-'लतानां प्रताने गता' (जयो० १४/२५)

लताभवनं (नपुं०) लताकुंज।

लतामणिः (स्त्री०) मूंगा।

लतामण्डपः (पुं०) लताकुंज, लतागृह। ०लताभवन, ०शीतगृह।

लतामय (वि०) अंकुर।

लतावलयं (नपुं०) लता सहित। (सुद० २/२५)

लतामृगः (पुं०) वानर, बन्दर।

लतायावकं (नपुं०) लतागृह, लताकुंज।

लतावृक्षः (पुं०) नारियल का पेड़।

लतावेष्टः (पुं०) रतिबंध, संभोग का एक प्रकार।

लतावेष्टनं (नपुं०) आलिंगन, संभोगजनक स्थिति।

लतासदनं (नपुं०) लताकुंज।

लति (स्त्री०) आश्रय। (सुद० ७९)

लतिका (स्त्री०) [लता+कन्+टाप्] छोटी लता, बेल, वल्लरी।

०मोतियों की लड़ी।

लत्तिका (स्त्री०) छिपकली।

लप् (नपुं०) बोलना, वार्तालाप करना, कानाफूंसी करना।

०दिखलाना, बतलाना। (सुद० १३६)

०दुहराना, बार-बार बोलना।

०मुकरना, मेंटना, झूठ बोल जाना।

लपनं (नपुं०) [लप्+ल्युट्] बोलना, कथन, प्रतिपादन, वार्ता।

०मुख। (जयो० १३/५, १३/४०)

लपनोमानं (वि०) सुख साधन। (सुद० १/२४)

लपित (भू०क०कृ०) [लप्+क्त] कहा हुआ, बोला हुआ।

लब्ध (भू०क०कृ०) [लभ्+क्त] ०प्राप्त किया, ग्रहण किया।

०उपलब्ध किया, स्वीकार किया।

०ज्ञान प्राप्त किया।

०अवशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लब्धघात (वि०) प्राप्तघात। (जयो० ८/२९)

लब्धफलं (नपुं०) प्राप्त फल। (जयो० ३/९१)

लब्धबाहु (वि०) अनावश्यक। (वीरो० २२/२२)

लब्धविषय (वि०) विषय को प्राप्त। (जयो० २/२)

लब्धिः (स्त्री०) जीव समागम, ऋद्धि प्राप्ति, प्राप्ति, शक्ति आश्रय। (वीरो०) एका दुरितस्य तादृक् क्षयोपशान्तिः लब्धि अस्ति।
०अर्थग्रहण शक्ति। (सम्य० ४२)
०क्षपोपशमविशेष लब्धि।
०लम्भनं लब्धि अभिग्रहण, प्राप्ति।
०तप विशेष से प्राप्त ऋद्धि।

लब्धिस्थानं (नपुं०) समस्त चारित्रस्थान की प्राप्ति 'सव्वाणि चेव चरित्तट्ठाणानि लद्धिट्ठणाणि' (कसाय पा० ६७२)

लब्धिं (नपुं०) प्राप्त, अवाप्त, उपलब्ध।

लब्ध्वा (सं०) प्राप्त कर, पहुंचकर। (सम्य० ४३)

लभ् (सक०) ०प्राप्त करना, ग्रहण करना। लभ्यनिष्ठति प्रातव्यवस्तु, अलब्धवान्। (सुद० १०१)
०अधिकार करना, स्वीकार करना। (सुद० १३३)
०जानना, सीखना।
०उपलब्ध करना, अवाप्त करना। (समु० ८/१६)
०समझना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना। (सम्य० ८९)
०पहुंचना, (सम्य० ४३) 'लब्धा पदं तट्टति किञ्चशस्यैः' (वीरो० ५/८)

लभनं (नपुं०) [लभ्+ल्युट्] प्राप्त करना, ग्रहण, अवाप्त स्वीकार।
०जानना, सीखना।
०पहुंचना।

लभसः (पुं०) धन, वैभव, सम्पत्ति।

लभसं (नपुं०) घोड़े की रस्सी।

लभ्य (वि०) [लभ+कर्मणि यत्] ०प्राप्त होने के योग्य।
०पहुंचने योग्य, मिलने योग्य।
०योग्य, उपयुक्त, उचित।

लमकः (पुं०) प्रेमी।

लम्पटः (पुं०) दुश्चरित्त, स्वेच्छाचारी।

लम्पट (वि०) लालची, लोलुप, लालायित।
०विषयी, विलासी, कामुक, व्यसनी, इन्द्रियपरायण।

लम्फः (पुं०) [लम्फ्-घञ्] कूद, उछाल, छलांग।

लम्फनं (नपुं०) [लम्फ्+ल्युट्] कूदना, उछलना।

लम्ब् (अक०) लटकना, दोलायमान होना, हिलना।
०अनुषक्त होना।
०पड़ना, पिछड़ना।

लम्ब् (सक०) उठाना। 'बहुशैत्यमितीरयंल्ललम्बे' (जयो० १२/१२०)
०ठहराना, आश्रय देना, दूर करना, बड़ा करना। ललम्बे (जयो० ८/१४)
०हराना, बिछाना।
०थामना, संभालना।

लम्ब (वि०) [लम्ब्+अच्] दीर्घ। (जयो०वृ० १/२५)
०लम्बमान, झूलता हुआ, लटकता हुआ। (सुद० ७८)
०फैला हुआ, विस्तृत। (जयो० १/२५)
०बड़ा, विस्तार युक्त।
०चम्पू लम्ब। ०अध्याय, ०सर्ग।

लम्बकः (पुं०) लंबरेखा अक्षांशरेखा। (जयो० १८/५३)

लम्बकर्णः (पुं०) ०गर्दभ।
०बकरा।
०हस्ति।
०बाज, शिकरा।
०पिशाच, राक्षस।

लम्बजठर (वि०) मोटे पेट वाला, लम्बोदर।

लम्बनः (पुं०) [लम्ब्+ल्युट्] शिव, शंकर।
०कफ प्रधान प्रकृति।

लम्बनं (नपुं०) झालर, लटकन।
०उतरना, नीचे आना।

लम्बपयोधरा (स्त्री०) लटकते स्तन वाली।

लम्बबाहु (पुं०) लम्बी भुजा। (वीरो० ३/११)

लम्बा (स्त्री०) लक्ष्मी, दुर्गा।

लम्बिका (स्त्री०) [लम्ब्+ण्वुल्+टाप्] कोमल तालुका, उपजिह्वा। गल कण्ठ का कौवा।

लम्बित (भू०क०कृ०) [लम्ब+क्त] लटकता हुआ, झूलता हुआ।
०अनुषक्त, सहारा लिए हुए।

लम्बितालका (स्त्री०) लम्बे लटकते हुए बालों वाली। (जयो० २१/६२)

लम्बुषा (स्त्री०) लम्बा हार, सात लड़ियों का हार।

लम्बोदर (वि०) स्थूलोदार, मोटे पेट वाला, तोंदवाला।

लम्बोदरः (पुं०) गजानन, गणपति, गणेश। (दयो०५४)

लम्बोदरजा (वि०) भयवर्जित, पीड़ा नाशक। (जयो० १९/४९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लम्बोष्ठ (पुं०) ऊंट, ऊष्ट्र।

लम्भः (पुं०) [लभ्+घञ्+नुम्] ०सिद्धि, अवाप्ति।
०मिलन।
०पुनः प्राप्ति।
०लाभ।

लम्भनं (नपुं०) [लभ्+ल्युट्+नुम्] प्राप्ति, अवाहित, ग्रहण स्वीकार। (मुनि० १४)

लम्भित (भू०क०कृ०) [लभ्+क्त, नुम्] उपार्जित, गृहीत, प्राप्त हुआ, दत्त, हासिल।
०नियुक्त, प्रयुक्त, संजोया गया।
०सम्बोधित, कहा गया।

लम्भितपार (वि०) पारगत। ०उस पार गया हुआ।

लय् (सक०) जाना, पहुंचना।

लयः (पुं०) [ली+अच्] कीर्तन कला। (जयो० २/६०)
०चिपकना, मिलाप, लगाव।
०प्रच्छन्न, ढका हुआ।
०संगलन, पिघलना, घोल।
०अदर्शन, विघटन, बुझाना, विनाश।
०मन की लीनता, गहन एकाग्रता।
०संगीत में विश्राम, विराम, गति।
०आवास, निवास। (सुद० १/२७)
०अभाव। (जयो०वृ० १/३९) विनाश, नाश।
०सुरक्षात्मक उपाय। (जयो० १५/९)
०बहाना, चढ़ाना-'बाराधारा विसर्जनेन तु पदयोजिनमुद्रायाः' लयोऽस्तु कलङ्ककलायाः। (सुद० ७१)

लयकालः (पुं०) प्रलयकाल।

लयक्रिय (वि०) लयक्रिया, विनाश। (जयो० ३/२३)

लयगत (वि०) विघटित, पिघला हुआ। ०आवास युक्त।

लयजन्य (वि०) संगलित हुआ।

लयनं (नपुं०) [ली+ल्युट्] जुड़ना, चिपकना।

लयपुत्री (स्त्री०) नटी, अभिनेत्री।

लल् (सक०) खेलना, इठलाना, क्रीड़ा करना।
०प्रेमालिंगन करना।
०लपलपाना।

लल् (वि०) क्रीड़ासक्त, विनोद प्रिय, लालसा युक्त।
०अभिलाषी, इच्छुक।

ललजिह्वा (वि०) लपलपाती जीभ वाला।

ललत् (वि०) [लल्+शतृ] खेलने वाला, लपलपाता हुआ।

ललनं (नपुं०) [लल्+ल्युट्] क्रीड़ा, खेल, आमोद-प्रमोद, रंगरेली।

ललना (स्त्री०) [लल्+णिच्+ल्युट्+टाप्] कामिनी, स्त्री, तरुणी। (सुद० १/२५) (जयो० ६/१२८)

ललनाकलः (स्त्री०) नारी समूह, ललनैतत्कलं मनोहर। (जयो० १३/९)

ललनिका (स्त्री०) [ललना+कन्+टाप्] छोटी सी।

ललन्तिका (स्त्री०) [लल्+शतृ+ङीप्+कन्+टाप्] लम्बी माला।
०छिपकली।

ललाकः (पुं०) [लल्+आकन्] जननेन्द्रिय।

ललाटं (नपुं०) मस्तक, माथा। (जयो० ११/६४) 'ललाटमिन्दुचितमेन तासाम्' (वीरो० ५/२१)

ललाटतटं (नपुं०) माथा।

ललाटपट्टिका (स्त्री०) सिरमोर।

ललाटलतिका (स्त्री०) मस्तक रेखा। (जयो० २९/८२)

ललाटरेखा (स्त्री०) मस्तकरेखा।

ललाटिका (स्त्री०) [ललाट+कन्+टाप्] टीका, सिरमोर, मत्थे का आभूषण।

ललान्त (वि०) पुष्पान्तर। (जयो० ९/९२)

ललाम (वि०) सुंदर, प्रिय, मनोहर। (जयो० १६/९०) 'आसीत्तदाराम-ललाममञ्चमहो' (जयो० १/४९)
०दर्शनीय, रमणीय। (जयो० १३/४०)

ललामसारः (पुं०) सुंदर उद्देश्य। (जयो० १७/१२)

ललित (वि०) [लल्+क्त] सुंदर, प्रिय, शृंगार युक्त, रमणीय। (जयो० ५/४६)
०प्रांजल, सुहावना, लावण्यमय, रुचिकर।
०अभीष्ट, मृदु, कोमल, आकर्षण।

ललितं (नपुं०) क्रीड़ा, रंगरेली, खेल, विनोद, प्रीतिभाव।

ललिततम (वि०) सुंदरतम। (सुद० ८२)

ललितपद (वि०) शृंगार युक्त रचना, प्रांजल काव्यपद।

ललितप्रहारः (पुं०) मृदु आघात।

ललिता (स्त्री०) [ललित+टाप्] सुंदर स्त्री, तरुणी, कामिनी।
०स्वेच्छाचारिणी स्त्री।
०कस्तूरी।

ललिताक्षरं (नपुं०) कोमलाक्षर, प्रांजलाक्षर।

ललिताभावती (स्त्री०) मृदु अक्षर से युक्त स्त्री। (जयो०३/३५)

ललितान्तरङ्ग (वि०) सुंदर अंतरंग वाले (समु० १/२८)

ललिताप्सरस् (स्त्री०) सुंदर अप्सरा। (दयो० ४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ललितावर्तः (पुं०) भंवर, जलावर्त। (जयो० १४/५३)
ललित्व (वि०) शृंगार युक्त, प्रियत्व, मनोहरत्व। (सम्य०१५५)
लवः (पुं०) उत्पाटन, लल्लुंचन। कटाई, लावनी।
०अनुभाग, हिस्सा, अंश। (वीरो० २/!४) (जयो० १/९२)
०ग्रास, टुकड़ा, खण्ड।
०कण, बिन्दु, अल्पमात्रा, अनुभाग। (जयो० ६/५९)
०लेश, पल्लव। (जयो० १/४७)
०हानि, विनाश। (सात श्लोक का एक लव)
०राम पुत्र-लव। (जयो० १३/५९)
लवकुशाख्य (वि०) लव और कुश सहित। पुत्रयोगेन सहित। (जयो० १३/५९)
लवङ्गः (पुं०) [लू+अङ्गच्] लौंग का पौधा।
लवङ्गं (नपुं०) लौंग।
लवङ्गकं (नपुं०) [लवङ्ग+कन्] लौंग।
लवङ्गि (वि०) लताङ्गि। (वीरो० ६/३२)
लवंण (वि०) ०क्षारीय, नमकीन।
०सुंदर, प्रिय, मनोहर।
लवणः (पुं०) खारा, नमक का पानी, नमकीन, लवणसमुद्र।
लवणं (नपुं०) नमक, खारा। (जयो० २/१५३) लूण, नोन।
०कटक, छावनी। (जयो० १२/१२४)
लवणपूर्ण (वि०) कान्तियुक्त।
लवणातिगत (वि०) नमकीनपने को प्राप्त, लवण वाला। (जयो०वृ० १२/१२५)
०कान्तिहीन। (जयो०वृ० १२/१२५)
लवणात्मता (वि०) खारापन, नमकीनपना। (वीरो० १०/२०)
लवणाधिक (वि०) लवण से परिपूर्ण। कान्तियुक्त। (जयो०वृ० १२/१२८)
लवणापरिणाम (वि०) कान्ति प्रसार युक्त, कान्ति युक्त परिणाम वाला। (जयो० ५/२६)
लवणाब्धि (पुं०) लवण समुद्र।
लवणाम्बुराशिः (स्त्री०) लवण समुद्र।
लवणाम्भस् (पुं०) लवणोदधि।
लवणालयः (पुं०) लवण सागर।
लवणिमा (वि०) लावण्य, सौंदर्य। (जयो० २६/५)
लवणोत्तमं (नपुं०) सेंधा नमक, यवक्षार।
लवणोदकः (पुं०) क्षीर समुद्र।
लवणोदधिः (पुं०) लवण समुद्र।
लवनं (नपुं०) [लू भावे कर्मणि च ल्युट्] ०लुनाई, काटना, लावनी, कटाई। (दयो० ३६)
लवनं (नपुं०) दरांती, हंसिया, काटने का साधन।
लवली (स्त्री०) [लव+ला+क+ङीष्] लता विशेष।
लवित्रं (नपुं०) [लूयतेऽनेन+लू+इत्र] दरांती, हंसिया।
लश् (सक०) अभ्यास करना, कला सीखना।
लशुनः (पुं०) लहसुन।
लष् (सक०) चाहना, इच्छा करना।
लषित (भू०क०कृ०) [लष्+क्त] वाञ्छित, इच्छित, चाहा गया।
लष्वः (पुं०) [लष्+वन्] नट, अभिनेता।
लस् (अक०) चमकना, दमकना, देदीप्यमान होना। (जयो०१/५६)
०प्रकट होना, उगना। (सुद० ८१)
०क्रीड़ा करना, खेलना, उदित होना।
०बन जाना, होना (इवैरण्डबीजवज्जगतिलसतिवै) (सम्य० १४९)
लसत्प्रसाद (वि०) सुशोभित राज भवन। (सुद० ४/२५)
लसत्सुवास (वि०) सुंदर आभूषण। (सुद० २/१२)
लसन्त (लस्+शतृ) शोभायमान। (सुद० १/२४)
०चमकता हुआ।
०उगता हुआ। (सुद० १/२२)
लसन्निधानं (नपुं०) शोभा निधान। (जयो० १/११२)
लसा (स्त्री०) [लस्+अच्+टाप्] केसर।
०हल्दी।
लसिका (स्त्री०) [लस्+अच्+कन्+टाप्] थूक, लार।
लसित (भू०क०कृ०) [लस्+क्त] देदीप्यमान हुआ, सुशोभित।
लसीका (स्त्री०) [लस्+ङीष्+कन्+टाप्] थूक ०पीप।
०इक्षुरस।
०टीके का रस।
लस्ज् (अक०) शर्मिन्दा होना, लज्जित होना, शर्माना, लजाना।
लस्त (वि०) [तस्+क्त] आलिंगित,
०दक्ष, कुशल, निपुण।
लस्तकः (पुं०) [लस्त+कन्] धनुष का मध्यभाग।
लस्तकिन् (पुं०) [लस्तक+इनि] धनुष।
लहरिः (स्त्री०) [लेव इन्देण इव ह्रियते ऊर्ध्वगमनाय ल+ह्इन्] लहर, जलकल्लोल। (जयो० २५/४) तरंग।
०स्वेच्छाचारिणी स्त्री।
०जिह्वा।
लहरिप्रियः (पुं०) कदंब तरु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लहरिमति (स्त्री०) समुत्कण्ठावती, उत्कण्ठित बुद्धि वाली। (जयो० १७/२५)

लहरियुक्त (वि०) भूरिवलिबद्ध। (जयो०वृ० २०/२)

लहरी (स्त्री०) [ल+हृ+इन+ङीष्] तरंग, जलकल्लोल। (वीरो०७/२४)

ला (सक०) ग्रहण करना, प्राप्त करना, लेना, लाना। (जयो०१/७) लाति-गृह्णातीति

०लान्ति। (जयो०१/३९) (जयो० १/७२)

ला (स्त्री०) समागम, दान, देना। गौ पुमान् वृषभे स्वर्गे खण्डवज्रहिमांशुषु। ला तु दाने किलाश्लेष इति कोषात् व्याख्या कार्या। (जयो०व०० ३/३९)

०लाभ। (जयो०वृ० १९/३६)

लाकुटिक (वि०) [लकुटः प्रहरण मस्य ठक्] लाठी से सुशोभित, दण्ड से विभूषित।

लाकुटिकः (पुं०) संतरी, पहरेदार, द्वारपाल।

लाक्षकी (स्त्री०) सीता।

लाक्षणिक (वि०) [लक्षणया बोधयति ठक्] ०विशिष्ट, संकेतित, चिह्नित।

०पारिभाषिक, गौण, निकृष्ट।

लाक्षणिकः (पुं०) पारिभाषिक शब्द।

लाक्षण्य (वि०) [लक्षणं वेत्ति-ञ्य] ०संकेत सम्बंधी, परिभाषा सम्बन्धी।

०चिह्न युक्त, लक्षण और चिह्नों की व्याख्या करने योग्य।

लाक्षा (स्त्री०) [लक्ष्यतेऽनया लक्ष्+अच्] ०लाख, जतुपरिणति (जयो०१२/१०६)

०महावर, वीरबहूटी।

लाक्षातरु (पुं०) पलास, ढाकतरु।

लाक्षाप्रसादः (पुं०) लोध्रवृक्ष।

लाक्षाप्रसाधनः (पुं०) लोध्रवृक्ष।

लाक्षारंगः (पुं०) यावक, लाक्षारस। (जयो० १८/९९)

लाक्षारक्त (वि०) लाख से रंगा हुआ। ०लाख से लिपटा हुआ।

लाक्षारसः (पुं०) लाल रंग, महावर, आलक्त। (जयो० १६/५१)

लाक्षावाणिज्यं (नपुं०) लाख का व्यापार।

लाक्षिक (वि०) [लाक्षा+ठक्] लाख से सम्बंध रखने वाला, लाख से बना हुआ।

लाख् (अक०) सूख जाना, नीरस होना।

०सक्षम होना, पर्याप्त होना।

लागुडिक (वि०) यष्टि विभूषित।

लाघ् (अक०) बराबर होना, पर्याप्त होना, सक्षम होना।

लाघवं (नपुं०) [लघोर्भावः अण्] ०अल्पता, क्षुद्रता, लघुता।

०हल्कापन, नगण्यता।

०अनादर, घृणा, अपमान, अप्रतिष्ठा।

०फुर्ती, चुस्ती, वेग।

०क्रियाशीलता, दक्षता, तत्परता।

०संक्षेप, अल्पमात्रा। लघोर्भावो लाघवं-लोभनिवृत्ति।

०दक्षता- व्यसनोपनिपात।

०शुचिता-कुशलता।

लाङ्गलं (नपुं०) [लङ्ग+कलच्] ०हल।

०ताडवृक्ष।

०शिश्न।

०लिंग।

लाङ्गलग्रहः (पुं०) किसान, कृषक, हाली।

लाङ्गलदण्डः (पुं०) हलस, हल का दण्ड।

लाङ्गलपद्धतिः (स्त्री०) खूड, हल की रेखा।

लाङ्गलफालः (पुं०) हल्की फाली।

लाङ्गलिन् (पुं०) [लाङ्गल+इनि] ०बलराम।

०नारिकेल तरु।

लाङ्गली (स्त्री०) [लाङ्गल+अच्+ङीष्] नारिकेल तरु।

लाङ्गलीषा (स्त्री०) हलस, हल की मूठ।

लाङ्गुलं (नपुं०) पूंछ।

०शिश्न।

०लिंग।

लाङ्गूलं (नपुं०) ०पूंछ, शिश्न।

०लिंग।

०बंदर। (दयो० १६)

लाङ्गूलिन् (पुं०) [लाङ्गूल+इनि] वानर, बन्दर, लंगूर।

लाङ्लिकाफलं (नपुं०) नालिकेर, नारियल। (जयो० २५/११)

लाज् (सक०) कलंक लगाना, निन्दा करना।

०भूनना, तलना।

लाजः (पुं०) [लाज्+अच्] गीला धान।

लाजा (स्त्री०) लाजे, खील, धान्य के फूले हुए लाजा। (जयो० १२/७१, सुद० ३/१५) भ्रष्टव्रीही (जयो० १३/१०) धान्य लावा। (जयो० १०/१०३)

लाजि (स्त्री०) राजि, पंक्ति। (जयो० ३/४७)

लाञ्छ् (सक०) सजाना, अलंकृत करना।

०भेद करना, विशिष्ट बनाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाञ्छनं (नपुं०) [लाञ्छ् कर्मणि ल्युट्] ०चिह्न, निशान। (वीरो० १०/७) (जयो० १/१४)
०नाम, अभिधान।
०धूम। (जयो० १०/८०)
०दाग, धब्बा, कलंक। (जयो० १५/५८)

लाञ्छनयुक्त (वि०) कलंकित। (जयो० १५/५८)

लाञ्छनेशः (पुं०) चंद्र। (जयो० १५/६८)

लाञ्छित (भू०क०कृ०) [लाञ्छ्+क्त] चिह्नित, निशान युक्त, अन्तरयुक्त।
०कलंकित, कलंकयुक्त। (जयो० ३/५४)
०सुसज्जित, विभूषित।

लाटः (पुं०) लाट देश।

लाटानुप्रासः (पुं०) शब्द और शब्दों की पुनरावृत्ति।

लाटिका (स्त्री०) रचना, एक विशेष शैली।

लाड् (सक०) दुलारना, पुचकारना, प्रेम करना।
०कलंकित करना, निन्दा करना।
०फेंकना, उछालना।

लाण्ठनी (स्त्री०) व्यभिचारिणी, कुल्टा स्त्री।

लात (भू०क०कृ०) [ला+क्त] लिया, ग्रहण किया।

लात्वा (सं०कृ०) लाकर, ग्रहणकर। (सुद० ७१)

लानित (वि०) लाया, ग्रहण किया, लिया। (जयो० ६/४७)

लान्तकः (पुं०) लान्तव स्वर्ग। (वीरो०)

लापः (पुं०) [लप्+घञ्] बोलना, बाते करना।
०किलकिलाना, तुतलाकर बोलना।
०लपर-लपर करना, लत्वी बोलना, बातूनी।

लावः (पुं०) बटेर पक्षी। [लू+घञ्]

लावकः (देखो ऊपर)

लाबुः (पुं०) लौंकी, आल, अलाबु, नूमड़ी।

लाभः (पुं०) [लभ्+घञ्]०फायदा, नफा।
०प्राप्ति, आवाप्ति, उपलब्धि, अभिलषितार्थ की प्राप्ति, इच्छित प्राप्ति।
०इच्छा, लोलुपता, लालच।

लाभकः (पुं०) फायदा, मुनाफा।

लाभमान (लभ्+शानच्) लाभ होने वाला।

लाभान्तरायः (पुं०) लाभ में बाधा, इच्छा में रुकावट/विघ्न। 'लाभस्य विघ्नमृदन्तरायः'

लाभालाभः (पुं०) लाभ-हानि। (दयो० १०७)

लामञ्जकं (नपुं०) सुगंधित घास।

लाम्पट्य (वि०) [लम्पट+ष्यञ्] लम्पटता, कामुकता, भोगासक्ति। (सुद० १२८) 'स्वार्थस्येयं पराकाष्ठा जिह्वलामपट्यपुष्ट्यै। अन्यस्य जीवनमसौ संहरेन्मानवो भवन्।। (सुद० १२८)

लाल् (सक०) दुलार करना, प्यारा करना। ०लालन करना। ०स्नेह करना। (लाल्यते जयो० १२/७९)

लालः (पुं०) लार, थूक, थुत्कधारा। (जयो० २७/३५) निष्ठीवन। (जयो० ३/२९)

लालनं (नपुं०) [लल्+ल्युट्] ०प्यार, लाड, दुलारना, पुचकारना. स्नेह करना। (दयो० ५४)
०आत्मरंजन, मनोरंजन, सम्भालना। (जयो० २१/१९)

लालनीय (वि०) [लल्+अनीयर्] दुलार योग्य, 'प्यार योग्य। 'लालनीयः स्तनन्धपः अबोध बालकः' (हित सं०११)

लालस (वि०) लालसा, इच्छुक, वाञ्छा युक्त, लालायित, * आनंद देने वाला।
०अनुरक्त, भक्त, रागी, तल्लीन, तन्मयता।

लालसकर (वि०) इच्छावर्धक। (जयो० १६/८५)

लालसा (स्त्री०) [लस् स्पृहायां यङ् लुक् भावे अ] ०इच्छा, अभिलाषा, उत्सुकता, वाञ्छा। (जयो० १५/१)
०याचना, निवेदन, अनुनय, अभ्यर्थना।
०खेद, शोक।

लालसीकं (नपुं०) चटनी।

लाला (स्त्री०) [लल्+णिच्+अच्+टाप्] लार, थूंक, निष्ठीवन, थूत्कार। (दयो० ११०)

लालाटी (वि०) माथा, मस्तक।

लालायित (वि०) इच्छुक, वाञ्छाशील, उत्कण्ठित। (जयो०१६/३१)

लालालाम (वि०) लार युक्त।

लालावित (वि०) लार से भरा हुआ। (सुद० १०२)
स्त्रियां मुखं पद्मरुखं ब्रुवाणा,
भवन्ति किन्नाथ विदेकशाणा।
लालाविकं शोणितकोणितत्त्वात्,
जातु रुच्यर्थमिहैमि तत्त्वात्।। (सुद० १०२)

लालिकः (पुं०) [लाला+ठञ्] भैंसा।

लालित (भू०क०कृ०) [लल्+णिच्+क्त] ०स्वीकृत। (जयो० २/१५७) ०पालित।
०प्यार किया गया, दुलार किया गया। (सुद० ३/२३)
०अवस्थित, स्थित। करपल्लवलालिते सुधा-लतिकाया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवनावहो बुधाः। (सुद० ३/१७)

०पालन क्रिया गया, स्नेहित।

०अभिलषित, इच्छित, अभीषित।

लालितकः (पुं०) [लालित+कन्] ०लाडला, प्यारा, दुराला, प्रिय।

०स्नेहपात्र, वात्सल्य भाजन।

लालित्य (वि०) प्रियता, लावण्य, सौंदर्य, आकर्षण, माधुर्य, रमणीयता, अभीष्टता।

लालिन् (वि०) [लल्+णिच्+णिनि] बहकाने वाला, फुसलाने वाला।

लालिनी (स्त्री०) [लालिन्+ङीप्] स्वेच्छाचारिणी स्त्री, कामिनी।

लालुका (स्त्री०) माला, हार।

लाव (वि०) [लू कर्तरि घञ्] काटने वाला, धुनाई करने वाला।

लावः (पुं०) काटना, लुनाई करने वाला।

०लाव पक्षी।

लावकः (पुं०) [लू+ण्वुल्] लवा पक्षी, बटेर।

लावक (वि०) लावनी, काटने वाला, एकत्र करने वाला।

लावण (वि०) [लवणं संस्कृतं अण्] ०नमकीन, खारा।

लावणिक (वि०) [लवणे संस्कृतं ठण्] नमकीन, नमक से निर्मित।

०प्रिय, सुंदर, मनोहर।

लावण्य (वि०) [लवण+ष्यञ्] सौंदर्य, सलोनापन, मनोहरता, रमणीयता। ('लावण्य' का सरल अर्थ सौंदर्य है, पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाये तो इसका अर्थ शरीर की वह चमक है, जिसमें सामने स्थिति वस्तु प्रतिबिम्बति हो। (जयो० हि० ११/४२)

०लावण्य-सौंदर्यम्, लावण्यं-लवणभावम्, लावण्यं-क्षारभूतम् (जयो०वृ० ६/९४)

लावण्यकरः (पुं०) सौंदर्य को बहाना, लावण्य का पूर, सौंदर्य की धारा। 'लावण्यस्य पू झरः' पूरो बभौ' (जयो०वृ० १२/७८)

लावण्यखचित (वि०) लावण्ययुक्त, सौंदर्य से परिपूर्ण-लावण्येन सौंदर्येन खचितः परिपूर्णः

०लवण भाव से परिपूर्ण-लवण भावेन खचितः परिपूर्णः। (जयो० ६/८१)

लावण्यमय (वि०) [लावण्य+मयट्] सौंदर्य युक्त, रमणीयता से परिपूर्ण।

लावण्यवती (स्त्री०) सौंदर्यशालिनी स्त्री। (समु० ६/१३)

लावण्यसुमनोलता (स्त्री०) सौंदर्य रूप पुष्पों की लता। लावण्यं सौंदर्य तदेव सुमनसः पुष्पाणि तेषां लता वल्लीरूपं (जयो० ३/३९)

लावण्याङ्कः (पुं०) मधुर, लावण्यगृह। (जयो० ६/५४) लावण्यस्य सौंदर्यस्याङ्को भवन्। (जयो०वृ० ६/५४)

लावण्यासारः (पुं०) सुंदरता का सार 'लावण्यस्य सौंदर्यस्य आसारः प्रसारः' (जयो०वृ० ६/५१)

लावनं (नपुं०) उच्छेदन। (जयो० २४/७३)

लाविकः (पुं०) [लाव्+ठक्] भैंसा।

लाषुक (वि०) [लष्+उकञ्] लोलुप, लालची, लोभ।

लासक (वि०) [लण्+ण्वुल्] खेलने वाला, किल्लोल करने वाला।

लासकः (पुं०) नर्तक। ०उल्लासक, ०अभिनयक।

०मयूर, मोर।

०आलिंगन।

लासकं (नपुं०) चौबारा, बुर्ज।

लासकी (स्त्री०) नर्तकी।

लासनिवासः (पुं०) नृत्य शाला, रंगमंच। (जयो० २६/६५)

लासिका (स्त्री०) [लासक+ङीष्] नर्तकी।

लास्यं (नपुं०) [लस्+ण्यत्] नृत्य, नाच, नाचना। (जयो० १/३२, २/२९)

लिक्षा (स्त्री०) ल्हीक, लीख।

लिक्षिका (स्त्री०) [लिक्षा+कन्+टाप् त्वम्] लीख।

लिख् (सक०) लिखना, उत्कीर्ण करना, अंकन करना। लिलेख। (जयो० ६/१२३) आलिखत् (जयो० ७/८३) आलेखन करना, चित्रित करना, रङ्ग भरना। (दयो० ७६)

०पीस डालना, खोदना।

लिखनं (नपुं०) [लिख्+ल्युट्] लिखना, लेखन, अंकन, चित्रांकन।

०लेख, हस्तांकन। ०चित्रण, ०निरूपण।

लिखित (भू०क०कृ०) [लिख्+क्त] लिखा हुआ, चित्रित, समङ्कित। (जयो० ११/५८)

लिखितं (नपुं०) लेख, लेखन, अंकन।

०रचना, काव्य रचना।

लिगुः (पुं०) [लिंग्+कु] ०हरिण।

०मूर्ख।

लिङ्ख (अक०) जाना, हिलना-डुलना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिङ्ग (सक०) आलिंगन करना, परिभ्रमण करना, ०परिरमरण करना, ०रंग भरना, ०चित्रित करना।

लिङ्गं (नपुं०) [लिङ्ग्+अच्] चिह्न निशान, संकेत, लक्षण।
०प्रतीक, प्ररूप, प्रतिबिम्ब।
०मूर्ति।

लिङ्गधारिन् (वि०) वेषधारी, लक्षणयुक्त।

लिङ्गनाशः (नपुं०) आलिंगन।

लिङ्गपरामर्शः (पुं०) चिह्न विचारना, लक्षण सोचना।

लिङ्गपुराणः (पुं०) एक पुराण का नाम।

लिङ्गप्रतिष्ठा (स्त्री०) पिण्ड स्थापन, मूर्तिस्थापना।

लिङ्गवर्धन् (वि०) उत्तेजना पैदा करने वाला।

लिङ्गवेदी (वि०) लक्षण का ज्ञाता।

लिङ्गिन् (वि०) [लिङ्गमस्त्यस्य इति] ०विशेषता युक्त, लक्षण सहित, ०छद्मवेशी, पाखंडी, सूक्ष्म शरीरधारी।

लिङ्गिन् (पुं०) ब्रह्मचारी।

लिपिः (स्त्री०) [लिप्+इक्] लिपि विशेष।
०ब्राह्मी लिपि, खर्राष्ट्रीलिपि-देवनागर लिपि।
०लिखना, लेख, लिखितवर्ण, वर्णमाला, लिखने की कला।
०लीपना पोतना।

लिपिकः (पुं०) ०लेखक, ०लिपिक, ०अंकेक्षक।

लिपिकरः (पुं०) लेखक, लिपिक, नक्काशी वाला।

लिपिकारः (पुं०) लेखक, लिपिक।

लिपिज्ञ (वि०) लिखने वाला।

लिपिन्यास् (पुं०) नकल करने की कला।

लिपिफलकं (नपुं०) लिखने का पट्ट।

लिपिशाला (स्त्री०) पाठशाला। ०विद्या केन्द्र।

लिपिसज्जा (स्त्री०) लिखने का उपकरण।

लिप् (सक०) लीपना, पोतना। (जयो० २/७८)

लिप्त (भू०क०कृ०) [लिप्+क्त] ०संलग्न, आसक्त, लगा हुआ।
०सना हुआ, ढका हुआ, लीपा हुआ।
०संयुक्त, मिला हुआ, जुड़ा हुआ।

लिप्तहस्तकवती (वि०) संयुक्त हाथों वाली, लिपटे हुए हाथों वाली। (मुनि० ११)

लिप्सा (स्त्री०) [लभ् सन् भावे अ] अभिलाषा, वाञ्छा, प्राप्त करने की इच्छा। (सुद० ४/४५)

लिप्सु (वि०) [लभ्+सन्+उ] प्राप्त करने का इच्छुक। 'शक्रज्ञया लिप्सुरसौ त्वदाज्ञां सुरीगणः स्यात्सफलोऽपि भाग्यात्। (वीरो० ५/५)

लिबिः (स्त्री०) लिपि।

लिम्प् (सक०) लीपना, पोतना
०कलंक लगाना, मलिन करना, कलुषित रहना।

लिम्पः (पुं०) लेप, मालिश।

लिम्पट (वि०) कामासक्त, विषयाभिलाषी।

लिम्पटः (पुं०) दुश्चरित्र, व्यभिचारी।

लिम्पाकः (पुं०) नींबू, चकोतरा।

लिम्पाकं (नपुं०) नींबू।

लिम्पितुं (लिम्प्+तुमुन्) लीपने के लिए। (जयो० ९/९३)

लिलिङ्ग (वि०) आलिङ्गितवती। (जयो० १९/१६)

लिश् (सक०) जाना, चोट पहुंचाना।

लिष्ट (भू०क०कृ०) [लिश्+क्त] न्यून हो गया।

लिष्वः (पुं०) नर्तक, अभिनेता।

लिह् (सक०) चाटना, चखना।
०चबाना, खाना।

ली (सक०) पिघलना, टपकना, विघटित होना।
०चिपकना, लेटना, विश्राम करना।
०लीन होना, अनुरक्त होना।

लीक्का (स्त्री०) लीख, यूकांड।

लीढ (भू०क०कृ०) [लिह्+क्त] चखा गया, चाटा गया, खाया गया।

लीन (भू०क०कृ०) [ली+क्त] चिपका हुआ, जुड़ा हुआ, संयुक्त, तल्लीन।
०प्रच्छन्न, आवृत्त, आच्छादित। (सम्य० १५२)
०संलग्न (समु० ६/१२) लुप्त, ओझल।

लीला (स्त्री०) [लियंलाति-ला+क] खेल, क्रीड़ा, विनोद, मनोरंजन, आनन्द।
०विलास। (सुद० १/२५) यस्मिन् पुमांसः मुरसार्थलीलाः (सुद० १/२५)
०केलि। (जयो० १६/८१)
०सौन्दर्य, लावण्य, लालित्य।
०छाद्मवेश, ढोंग, बनावट।

लीलागृहं (नपुं०) क्रीड़ा स्थल, रमणभवन।

लीलागेहं (नपुं०) देखो ऊपर। ० रंग शाला।

लीलाकमलं (नपुं०) मनोरंजन, केलिकमल।

लीलातामरसं (नपुं०) केलिकमल, पराग। (जयो० १६/८१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लीलामात्रं (नपुं०) क्रीडामात्र।
लीलारति (स्त्री०) मनोविनोद।
लीलावत् (वि०) क्रीड़ामय, खिलाड़ी।
लीलावती (स्त्री०) लावण्यमयी स्त्री।
लुक् (अव्य०) लुक् प्रत्यय।
लुञ्च् (सक०) तोड़ना, लोंचना, खींचना, छीला, काटना, उखाड़ना। लुञ्चेत्। (जयो० २७/४०)
लुञ्चः (पुं०) उखाड़ना, लोंच करना।
लुञ्चित (भू०क०कृ०) [लुञ्च्+क्त] उखाड़ा हुआ, निकाला गया, खींचा हुआ।
लुट् (सक०) मुकाबला करना, विरोध करना, उठाना, चमकना। कष्ट उठाना, बोलना।
०अपहरण करना।
लुठ् (अक०) पछाड़ना, बदलना, देदीप्यमान होना, चमकना (जयो० ३/१०४) लेटना। लुठन् भुवीह प्रणनाम दण्डवज्जिनं यथासौ शरणागतः स्मरः। (जयो० २४/६७)
लुठित (भू०क०कृ०) [लुठ्+क्त] लौटाया हुआ, लुड़कता हुआ।
लुड (सक०) क्षुब्ध करना, बिलोना आलोडित करना।
०ढकना।
लुण्ट् (सक०) चुराना, जाना।
०लूटना, खसोटना
लुण्टकः (पुं०) चोर, लुटेरा।
लुण्टाकः (पुं०) चोर, डाकू, लुटेरा। (जयो०वृ० १/३०, सुद० ९७)
लुण्ठ् (सक०) जाना, गति देना, क्षुब्ध करना।
०लूटना, खसोटना।
लुण्ठकः (पुं०) [लुण्ठ्+ण्वुल्] चोर, डाकू, लुटेरा।
लुण्ठनं (नपुं०) [लुण्ठ्+ल्युट्] लूटना, चुराना।
लुण्ठा (स्त्री०) [लुण्ठ्+अ+टाप्] लूट, खसोट।
०लुड़ना।
लुण्ठाकः (पुं०) लुटेरा, चोर, डाकू।
लुण्ठिः (स्त्री०) लूटना, चुराना, डकैती डालना।
लुण्ड् (स्त्री०) लूटना, चुराना, डकैती डालना।
लुण्डिका (स्त्री०) गेंद, कंदुक गोल पिड।
०उचित चाल चलन।
लुन् (सक०) अपहरण करना, छीनना। लुनीते (जयो० ३/८२) (दयो० ९८)
लुन्थ् (सक०) प्रहार करना, मारना, कष्ट उठाना।
लुप् (सक०) विस्मित करना, आश्चर्य करना, ०घबड़ा देना।
०अपहरण करना, छीनना, ठगना, लूटना।
०उल्लंघन करना, अपकार करना, उपेक्षा करना।
लुप्त (भू०क०कृ०) अदृश। (वीरो०) ०भग्न ०टूटा हुआ, ०क्षतिग्रस्त, ०नष्ट, ०वञ्चित, ०सोया हुआ, ०ठगा गया, ०लूटा गया।
०ओझल हुआ, ०लोप हुआ, ०उपेक्षित, ०अप्रयुक्त।
लुप्तकिरण (वि०) अदृश किरण।
लुप्तधन (वि०) छिपा हुआ धन।
लुप्तधर्म (वि०) धर्म से वञ्चित हुआ।
लुप्तधाम (वि०) नष्ट स्थान वाला।
लुप्तपद (वि०) पदविहीन।
लुप्तपादप (वि०) वनस्पति का अभाव।
लुप्तफल (वि०) फल रहित।
लुप्त बन्धु (वि०) बन्धुओं का अभाव।
लुप्तभाव (वि०) भाव रहित।
लुप्तमोह (वि०) क्षीण मोह।
लुप्तयत्न (वि०) प्रयत्न से रहित।
लुप्तयान (वि०) नष्ट मन वाला।
लुप्तराशि (वि०) धन की क्षीणता वाला, निर्धन।
लुप्तशील (वि०) शीलमुक्त।
लुब्ध (भू०क०कृ०) [लुभ+क्त] लोभ, लालची, उत्सुक, लालायित।
लुब्धः (पुं०) लम्पट, शिकारी, व्याध। (जयो० २४/१०७)
लुब्धकः (पुं०) लालची, ०लम्पट, ०शिकारी।
लुब्धकता (वि०) उत्सुकतावश। लुब्धकताबलेन कीटादिनाम्। (वीरो०१४/२७)
लुभ् (अक०) लालच करना, लोभ करना, उत्सुक होना। भटकना, ललचाना।
लुम्ब् (सक०) सताना, तंग करना।
लुम्बिका (स्त्री०) एक वाद्ययंत्र।
लुल् (सक०) ०घूमना, ०लुड़कना, ०लोटना। ०हिलाना, ०क्षुब्ध करना, ०दबाना, कुचलना। (जयो० ३/७४)
लुलित (भू०क०कृ०) गुदगुदाया। (सुद० १०३)
०हिलाया (जयो० ३/७४) लुढकाया हुआ।
०अव्यवस्थित, छितराया हुआ।
०दबाया हुआ, कुचला हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लुलिता (स्त्री०) चंचला, चपला। (जयो० २१/५)

लुष् (सक०) चोट पहुंचाना, नष्ट करना।

लुषभः (पुं०) उन्मत्त हस्ति।

लुह् (अक०) लालच करना, उत्सुक होना, लोभ होना। लालायित होना।

लू (सक०) काटना, कतरना, वियुक्त होना। विध्वंस करना, नष्ट करना।

लूकाकृत (वि०) मर्कटिकार्थ, मकड़ी के प्रयोजनार्थ। (जयो० २०/३०)

लूता (स्त्री०) [लू+तक्+टाप्] मकड़ी।
०चींटी।

लूतातन्तु (पुं०) मकड़ी का जाल।

लून (भू०क०कृ०) काटा गया, छांटा गया, वियुक्त किया गया, चुना गया, नष्ट किया गया।

लूनं (नपुं०) पूंछ।

लूमं (नपुं०) [लू+मक्] पूंछ।

लूमशिखा (स्त्री०) जहरीली पूंछ।

लूव् (सक०) चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना।
०लूटना, चुराना, डकैती डालना।

लेखः (पुं०) [लिख्+घञ्] लिखना, लिखावट।
०प्रशस्ति। (जयो०वृ० ११/३२)
०अभिलेख, शिलालेख, कूटलेख।

लेखकः (पुं०) [लिख्+ण्वुल्] लिपिक, लिपिकार, चितेरा (दयो० ६३, जयो० २/१३)

लेखन (वि०) लिखने वाला, चितेरा।

लेखनः (पुं०) हिसाब, लिपिकार। (जयो० २/१३)

लेखनं (नपुं०) लिखना, प्रतिलिपि करना, खुरचना, छीलना, पतला करना।

लेखनप्रमादः (पुं०) लिखने में प्रमाद। (दयो० ६५)

लेखनिकः (पुं०) [लेखन्+ठन्] पत्रवाहक।

लेखनी (स्त्री०) कलम।
०चम्मच।

लेखपत्रं (नपुं०) पत्र, लेख, लिखावट, संदेश।

लेखपत्रिका (स्त्री०) चिट्ठी, पत्र, संदेश।

लेखलेशः (पुं०) तिलक। लेखस्य लेशस्तिलक रूप। (जयो० १८/३५)

लेखसंदेशः (पुं०) लिखित संदेश।

लेखहरः (पुं०) दूत, संदेशवाहक। (जयो० ९/६२)

लेखहारः (पुं०) पत्रवाहक।

लेखहारिन् (पुं०) चिट्ठिदशा, ०डाकिया, ०पत्रवाहक।

लेखा (वि०) [लिख्+अ+टाप्] रेखा, धारी, लकीर, शलाका, सलाई। (सुद० १३३)
०रेखांकन, लिखावट, चित्रांकन, चित्रण।
०आकृति, छाप, निशान,
०गोट, किनारी, अंचल, झालर।
०चोरी।

लेखाकृत (वि०) अङ्गुलीकृत। (जयो० १९/२)

लेखाङ्कित (वि०) रेखाङ्कित, लेख से अंकित। 'लेखेनाङ्कितं तथा व्यक्ताभिर्लेखाभिराङ्कितं' (जयो० ११/५८)

लेखातिगः (पुं०) लेखिनी, कमल। (समु० ६/२)

लेखावितय (वि०) तीन रेखाए। (जयो० ११/४८)

लेखिनी (स्त्री०) [लेख्+ल्युट्+ङीप्] कमल। समुल्लेखकर्त्री। (जयो० १२/८१)

लेख्य (वि०) [लिख्+ण्यत्] अंकित किये जाने योग्य, चित्रित करने योग्य।

लेख्यं (नपुं०) लिखना, अंकित करना, प्रतिलिपि, चित्रण, रेखांकन।

लेख्यकृत (वि०) लिखा गया।

लेख्यगत (वि०) चित्रित, लिखित, अंकित।

लेख्यचूर्णिका (स्त्री०) कूची, तूलिका।

लेख्यपत्रं (नपुं०) लेख, पत्र, संदेश पत्र।

लेख्यप्रसङ्गः (पुं०) दस्तावेज।

लेख्यस्थानं (नपुं०) लिखने का स्थान।

लेण्डं (नपुं०) विष्टा, मल।

लेतः/लेतं (पुं०/नपुं०) आंसू, अश्रु।

लेप् (सक०) जाना, पहुंचना।

लेपः (पुं०) [लिप्+घञ्] लीपना, पोतना।
०उपटन, मालिश।

लेपकः (पुं०) लीपना, पोतना। ०स्वच्छ करना। ०सफाई करना।

लेपकरः (पुं०) पोतने वाला, चुनाई करने वाला।

लेपनः (पुं०) [लिप्+घञ्] धूप, लोबान।

लेपनं (नपुं०) पोतना, लींपना। (जयो० ११/४)

लेपनी (स्त्री०) चूना, सफेदी।

लेप्य (वि०) [लिप्+ण्यत्] लीपे जाने योग्य।

लेप्यं (नपुं०) लीपना, पोतना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेप्यकृत् (पुं०) प्रतिमाकार, मूर्तिकार। ०बेलदार।
लेप्यमयी (स्त्री०) [लेप्य+मयट्+ङीप्] पुत्तालिका, गुड़िया, पुतली।
लेलिहः (पुं०) [लिह्+यङ्, लुक् द्वित्वादि ततः अच] ०सर्प, सांप।
लेलिहानः (पुं०) सर्प, सांप।
०शिव।
लेशः (पुं०) अल्प, थोड़ा, अंश, कण। (सुद० १/९) हिस्सा, अणु।
०बिन्दु। (जयो०)
०समय माप, गुण।
०लेश अलंकार-जिसमें इष्ट का अनिष्ट के रूप में और अनिष्ट का इष्ट के रूप में वर्णन विद्यमान होता है।
लेशमात्रं (नपुं०) कणिकामात्र। (जयो०व०० २/१३३)
लेश्या (स्त्री०) दुर्भावना। (सुद० १०५) राजा जगाद न हि दर्शनमस्य मे स्यादेतादृशीह परिणामवतोऽस्ति लेश्याः। (सुद० १०५)
०आकुल भाव। (जयो०वृ० २७/३२)
०प्रकाश, प्रभा, रोशनी।
०कषाय की रंजना, कषाय योग।
०जिससे प्राणी कर्म से बंधता है।
लेश्यागत (वि०) लेश्या को प्राप्त हुआ।
लेश्यागेहं (नपुं०) लेश्या स्थान।
लेश्यापरिणति (स्त्री०) लेश्या की स्थिति, शुभ स्थिति, अशुभस्थिति।
लेश्याभावः (पुं०) लेश्या परिणाम।
लेश्यावान् (वि०) लेश्या वाला।
लेश्यावलम्बनं (नपुं०) लेश्या का आधार। (सम्य० ११५)
लेश्याविशुद्धिः (स्त्री०) निराकुल भाव। (जयो० २७/३२)
लेष्टुः (स्त्री०) मिट्टी/मृत्तिका, ढेला।
लेसिकः (पुं०) हस्ति पर आरुढ।
लेहः (पुं०) [लिह्+घञ्] चाटना, चखना।
०चाट, चटनी, अवलेह।
लेहनं (नपुं०) चाट, चटनी, चाटना।
लेहिनः (पुं०) सुहागा।
लेह्य (वि०) चाट, अवलेह।
लैङ्गं (नपुं०) [लिङ्ग+ठण्] किसी चिह्न से सम्बन्धित, अनुमित।
लैङ्गिकः (पुं०) मूर्तिकार, प्रतिमाकार।

लोक् (सक०) अवलोकन करना, देखना, निहारना, प्रत्यक्ष ज्ञान करना। लोकयति (जयो० २/१५३)
०जानना, मानना, समझना।
०अभिवादन करना, बधाई देना।
लोकः (पुं०) लोग, मनुष्य (समु० २/३१) (जयो० १/५१) वारा वस्त्राणि लोकानां क्षालयामास या पुरा (सुद० ४/३६)
०संसार, जगत्, विश्व। (जयो० १/११) (सम्य० ९७)
०समुदाय, समिति, समूह। (वीरो० १/२०)
०क्षेत्र, स्थान, प्रान्त, प्रदेश। (सुद० ११०)
०दृष्टि, प्रचलन, परम्परा। (सम्य० ६१)
०दृष्टि, दर्शन।
०लोक जीवन। (सुद० १२०)
लोककण्टकः (पुं०) दुष्ट पुरुष, दुर्जन।
लोकख्याति (स्त्री०) लौकिक प्रसिद्धि। (जयो० १/८९)
लोककथा (स्त्री०) जन प्रचलित कथा।
लोककर्तृ (वि०) संसार का रचयिता। सृष्टिकर्ता।
लोककृत देखों ऊपर।
लोकख्यातः (पुं०) लोक प्रसिद्ध। (जयो०वृ० १/२५)
लोकगाथा (स्त्री०) जन सामान्य की प्रचलित कहानी। लोकगान लोगों में गाया जाने वाला गान।
लोकचक्षुस् (पुं०) सूर्य, दिनकर, रवि।
लोकचमत्कारक (वि०) जन-जन को आश्चर्य उत्पन्न करने वाला। (भक्ति० २१)
लोकचारित्र (नपुं०) लोक व्यवहार।
लोकजननी (स्त्री०) ०लक्ष्मी, ०जगत् माता।
लोकजित (पुं०) जिनदेव, जिनप्रभु। (जयो० ९/५३)
लोकज्येष्ठः (पुं०) जिनदेव, जितेन्द्रिय पुरुष।
लोकज्ञ (वि०) संसार को जानने वाला।
लोकज्ञता (वि०) लोकविदता। (जयो०वृ० १९/४४)
लोकतत्त्वं (नपुं०) जन-जन का ज्ञान।
लोकतन्त्रं (नपुं०) जनतन्त्र।
लोकतिलकः (पुं०) जन-जन का पूजा स्थल, देवालय। जिवालय (वीरो० १५/३६)
लोकतुषारः (पुं०) कपूर।
लोकत्रयं (नपुं०) तीन लोक, उर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक। (वीरो० ६/९)
लोकत्रयहित (वि०) तीनों लोकों का हितकारी। (जयो० १/९७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोकत्रयी (नपुं०) तीनों लोक।
लोकत्रयीतिलकः (वि०) तीनों लोकों का मुख्य स्थान। (सुद० १/३६)
लोकद्वारं (नपुं०) स्वर्ग स्थान।
लोकधर्मः (पुं०) जनता का धर्म। (वीरो० २२/१६)
लोकधातु (पुं०) संसार की श्रेष्ठ वस्तु।
लोकधातृ (पुं०) आदि ब्रह्म, शिव, विधाता। (वीरो० १८/१७)
लोकधैर्य (वि०) लोगों की धीरता।
लोकनाथः (पुं०) ०आदि प्रभु, ०शिव।
लोक निर्गत (वि०) संसार से निकलता हुआ। (जयो० २/१७)
लोकनेतृ (पुं०) ०आदीश्वर, ०शिव।
लोकनिन्दालयः (पुं०) जनापवाद। (जयो०वृ० १/६७)
लोकपः लोकपालः (पुं०) दिक्पाल। राज, प्रभु।
लोकपतिः (पुं०) ब्रह्मा। राजा, प्रभु। नरशिरोमणि (जयो०वृ० १/८३)
लोकपथः (पुं०) संसार पद्धति, विश्व की परम्परा। (सम्य० ६१)
लोकपद्धतिः (स्त्री०) लोक रीति।
लोकपितामहः (पुं०) ब्रह्मा।
लोकप्रान्तः (पुं०) सर्व प्राप्त। (वीरो० १४/४६)
लोकप्रकाशनः (पुं०) सूर्य।
लोकप्रख्यानः (पुं०) लोक प्रसिद्ध। (वीरो० १५/१६)
लोकप्रवादः (पुं०) एक पूर्व विशेष। सर्वसाधारण में प्रचलित बात।
लोकप्रवाहः (पुं०) जनसमूह। (दयो० ८१)
लोकबन्धु (पुं०) सूर्य, दिनकर, भानु।
लोकबाह्य (वि०) समाज से बहिष्कृत्।
लोकमातृ (स्त्री०) लक्ष्मी।
लोकमार्गः (पुं०) लोक सम्मत प्रथा, जनप्रचलित पथ। (जयो० १)
लोकमार्गदशिन् (वि०) जन-जन की वास्तविकता को दिखलाने वाला।
लोकमूढता (स्त्री०) लोक में अन्ध विश्वास। (जयो० २/८७)
लोकमूर्खता देखो ऊपर।
लोकयात्रा (स्त्री०) लोक व्यवहार, जीवनचर्या, आजीविका, वृत्ति। (वीरो० १८/४०)
लोकरक्षः (पुं०) नृप, राजा, प्रभु।
लोकरञ्जनं (नपुं०) सर्व साधारण का अनुरञ्जन।
लोकरवः (पुं०) जनश्रुति, सर्वमान्य चर्चा।
लोकरीतिः (स्त्री०) लोक पद्धति। (जयो० २/६)
लोकलोचनं (नपुं०) सूर्य, रवि।
लोकलोपिन् (वि०) लोकोत्तर, अनुपम। 'लोकलोपिलवणापरिणामः' (जयो० ५/२६)
लोकवचनं (नपुं०) किंवदन्ती, लोकवाता, जनश्रुति।
लोकवर्त्मन् (नपुं०) लोक प्रचलित मार्ग। (जयो० २/१७) संसारिक मार्ग। (सुद० १३२)
लोकवादः (पुं०) जनचर्चा, जनप्रवाद।
लोकविधिः (स्त्री०) लोक प्रचलित क्रिया।
लोकवित्त (वि०) लोक की जानकारी। (जयो० १९/४४)
लोकविपरीत (वि०) संसार से भिन्न, लोगों की मान्यता से पृथक्। (जयो० २/१५)
लोकवृत्तं (नपुं०) लोक व्यवहार। ०लोक चर्चा, ०जनवाद।
लोहव्यवहारः (पुं०) लोकरीति, लोक परम्परा। (वीरो० १९/२१)
लोकश्रुतिः (स्त्री०) जनश्रुति। ०जनप्रवाद।
लोकसंकरः (पुं०) लोक की अव्यवस्था। लोक के एकमात्र गुरु ऋषभदेव। (जयो० २/९०)
लोकसंग्रहः (पुं०) लोककल्याण। ०शिव, ब्रह्म।
लोकसमयः (पुं०) लोकशास्त्र। (जयो०वृ० १/१९) ०लोक सिद्धान्त। (दयो० १/८)
लोकसम्प्रदायः (पुं०) जनसमूह। (दयो० २०)
लोकसमयख्यातिः (स्त्री०) लोकशास्त्र में प्रसिद्ध। (जयो०वृ० १/५) ०जनप्रवाद, ०लोकबिंदुसार।
लोकसिद्ध (वि०) लोक प्रचलित।
लोकस्थिति (स्त्री०) संसार का संचालन, संसारिक अस्तित्व।
लोकहास्य (वि०) जन परिहास।
लोकहित (वि०) जन जीवन का कल्याण।
लोकहितैकलोपी (वि०) संसार हित का एकमात्र नाशक। (वीरो० १८/१८)
लोकाकाशः (पुं०) धर्मादिद्रव्य से युक्त प्रदेश, लोक से सम्बंधी आकाश। (सम्य० १९)
लोकाख्यानं (नपुं०) लोक का उद्देश्य।
लोकाग्रः (पुं०) लोक का अग्रभाग। (भक्ति० २) जहां तक छह द्रव्य का अन्तिम भाग है। (सम्य० ५८)
लोकाग्रशिखामणिः (स्त्री०) सिद्धशिला। (भक्ति० ३४) ०सिद्धस्थान।
लोकाग्रहः (वि०) वर्णन का आग्रह। (जयो० १०/११९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोकाचारः (पुं०) व्यवहार। (जयो० ५/४७) ०जन-व्यवहार। ०लोकविधि।

लोकाचारखेदित्व (वि०) व्यवहार के आचरण के प्रति खिन्नता प्रकट करने वाला। (जयो० १९/४४)

लोकातिग (वि०) असाधारण, अतिप्राकृतिक।

लोकातिशय (वि०) असाधारण, संसार के लिए श्रेष्ठ।

लोकाधिपः (पुं०) नृप, राजा।

लोकाधिपतिः (पुं०) नृप, राजा।

लोकानुप्रेक्षा (पुं०) संसारानुप्रेक्षा।

लोकानुरागः (पुं०) लोकरुचि, जनरुचि।

लोकान्तरं (नपुं०) लोगों के बीच। ०लोक के मध्य। (सुद० २/३३)

लोकान्तिकः (पुं०) लोकान्तिक देव।

लोकापवादः (पुं०) जनापवाद। ०जन श्रुति का अपवाद।

लोकाभ्युदयः (पुं०) लोककल्याण, जनकल्याण।

लोकायितकः (पुं०) लोकवाद को महत्त्व देने वाला चार्वाक दर्शन। (दयो० ४१) अनात्मवादी। ०नास्तिक, ०भूततत्त्ववादी।

लोकालोकः (पुं०) लोक और अलोक। लोकाकाश और अलोकाश।

लोकाश्रयः (पुं०) संसार का आधार। (हित० ३)

लोकोत्तरः (पुं०) अनुपम, श्रेष्ठ। (वीरो० ३/८)

लोकोत्तरकान्तिः (स्त्री०) अनुपम सौंदर्य। (जयो० १४/७५)

लोकोत्तरगुणः (पुं०) उन्नत गुण, सर्वश्रेष्ठ गुण। (जयो० ५/५३)

लोकोत्तरमहिमा (स्त्री०) महती प्रभावना। (भक्ति० ३)

लोकोत्तररूपः (पुं०) लोकातिशायी रूप, अनुपम सौंदर्य। (जयो० ११/८५)

लोकोत्तरवृत्तिः (स्त्री०) विसर्ग परिणाम। (जयो० १८/५५)

लोकोत्तरसौंदर्य (वि०) विशेष सुंदरता। (जयो० १/४६)

लोकोपकारी (वि०) जन जन का उपकार करने वाला। (वीरो० १८/१५)

लोकोपकृत (वि०) जनोपकारी। ०लोकहितकारी।

लोच् (सक०) देखना, अवलोकन करना। निरीक्षण करना, सोचना, विचारना।

लोचं (नपुं०) अश्रु, आंसु।

लोचकः (पुं०) [लोच्+ण्वुल्] मूर्ख पुरुष, धूर्त। लोचो मौर्व्या भ्रूश्लथ धर्मणि इति वि (जयो० ८/५१) आंख की पुतली। केंचुली।
०मोमपिण्ड। ०निरीक्षक, ०दर्शक।

लोचनः (पुं०) नाम विरूप। (सुद० १/३२)

लोचनं (नपुं०) [लोच्+ल्युट्] नेत्र, नयन। (सुद० १३७) अवलोकन, दर्शन, देखना। (दयो० ६५)

लोचनता (वि०) नयनरूपता। (जयो० १६/६९)

लोचनापथः (पुं०) दृष्टिक्षेत्र।

लोट् (अक०) मूर्ख होना, पागल होना मदहोश होना, उन्मत्त होना।

लोठः (पुं०) [लुठ्+घञ्] लोटना, लुड़कना।

लोड् (अक०) पागल होना, मूर्ख होना, मूर्च्छित होना। विलोडित करना। (जयो० २१/५)

लोडनं (नपुं०) अशान्त करना, उद्विग्न करना।

लोणारः (पुं०) नमक।

लोत् (पुं०) [लू+तन्] अश्रु, आंसू।
०चिह्न, संकेत।

लोत्रं (नपुं०) चुराई गई सम्पत्ति, लूटा गया धन।

लोध/लोध्रः (पुं०) लाल, रक्त।
०लोध्रवृक्ष।

लोपः (पुं०) [लुप्-भावे घञ्] ०लोप, क्षति, हानि, अभाव, समाप्ति। (जयो०वृ० १/६२)
०प्रकृति प्रत्ययादि लोप (जयो०वृ० १/३१)
०उन्मूलन, अपाकरण, उत्साधन, अन्तर्धान, अप्रचलन, उल्लंघन, अतिक्रमण।
०अनुपस्थिति।
०अदर्शन, वर्णलोप।

लोपनं (नपुं०) अतिक्रमण, उल्लंघन।
०अभाव, हानि, क्षति करना।
०छूट देना।

लोपमित (वि०) व्यलोपि। (जयो० १/६२)

लोपयति (व०क०) लोप करता है। (जयो० ५/४)

लोपा (स्त्री०) अगस्त्य मुनि की पत्नी।

लोपाकः (पुं०) गीदड, शृंगाल।

लोपिन् (वि०) [लुप्+णिनि] हानि पहुंचाने वाला, लोप करने वाला। (सम्य० ६१) लुप्त होने वाला।

लोभः (पुं०) [लुभ्+घञ्] लालच, लोलुपता, लालसा।
लोभात्क्रोधः प्रभवति, लोभात्कामा, प्रजायते।
लोभान्मानश्च माया च लोभः अपस्य कारणम्।। (जयो०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८२)
०आसक्ति, इच्छा, वाञ्छा, चाह।
०लोभकषाय।
०बाह्य पदार्थ की इच्छा।
०ममकार बुद्धि।
०उत्कण्ठा।
लोभगत (वि०) लोभ कषाय को प्राप्त।
लोभजन्य (वि०) लालसा युक्त।
लोभद्रव्य (वि०) द्रव्य का आकांक्षी।
लोभपिण्ड (वि०) आहारलोलुपी। ०पिण्ड इच्छुक।
लोभभक्त (वि०) भोजन का इच्छुक। ०आहारासक्त। ०भोजन भट्ट।
लोभित् (वि०) लोभ करने वाला। (मुनि० १८)
लोमः (पुं०) पूंछ।
०दल, समूह। (जयो० २६/१८)
०रोम, शरीर के रोम समूह। (जयो० १६/८२)
०मृदुल। (जयो० १/५८)
लोमक (वि०) रोमाञ्चित, हर्षित, प्रफुल्लित। (जयो० ५/२१)
लोमकिन् (पुं०) एक पक्षी विशेष।
लोमतति (स्त्री०) रोमराजि। (जयो०११/३१)
लोमन् (नपुं०) रोम, शरीरगत बाल।
लोमकीटः (पुं०) जूं, लीख।
लोमकूपः (पुं०) रोम के छिद्र।
लोमगर्तः (पुं०) रोम छिद्र। ०रोम रंध्र।
लोमपंक्ति (स्त्री०) रोमसमूह।
लोमरन्ध्रं (नपुं०) रोमछिद्र।
लोमराजिः (स्त्री०) रोम समूह। (जयो० ११/३१)
लोमलाजिः (स्त्री०) रोम समूह।
लोमसृष्टिः (स्त्री०) रोम उत्पत्ति। (जयो० ११/३३)
रोमाभाव (वि०) निलोम। (जयो०वृ० ११/१८)
लोमालिक (स्त्री०) रोमपंक्ति। (जयो० १६/८२)
लोमाली (स्त्री०) रोमपंक्ति। ०रोमावलि।
लोमावलिः (स्त्री०) रोम समूह। (जयो० ११/३२)
लोमाशः (पुं०) गीदड़, मृगाल।
लोल (वि०) [लोड्+अच् उस्य ल लुल्+घञ्] कांपता हुआ, हिलता हुआ, दोलायमान।
०विक्षुब्ध, अशान्त, व्याकुल, बेचैन।
०चंचल, चपल, अस्थिर, आतुर, उत्सुक।
०अस्थायी, नश्वर।

लोलता (वि०) चंचलता। (जयो० १३/२९)
लोलाक्षिका (स्त्री०) चंचल नेत्र वाली स्त्री।
लोलाञ्चता (स्त्री०) चंचला स्त्री। लोलं चञ्चलमञ्चलं यस्याः सा (जयो० ८/३६)
लोलुप (वि०) [लुभ्+यङ्+अच् भस्य प:] उत्सुक, इच्छुक लोभवशंगत। (जयो० १६/४८) ०लाल सागत।
०लालची, लोभी।
लोलुपा (स्त्री०) लालची, लोभी, लालसा, उत्कण्ठा।
लोलुभ (वि०) अत्यन्त लालसा युक्त, लालसाशील, उत्कण्ठाजन्य।
लोष्ट् (सक०) ढेर लगाना, संग्रह करना।
लोष्टः (पुं०) [लुष्+तन्] मिट्टी का ढेला।
लोष्टं (नपुं०) मृत्तिका पिण्ड।
लोष्टुः (स्त्री०) मृत्तिका पिण्ड।
लोष्ठः (पुं०) पत्थर, पाषाण। (जयो० ९/२९५)
लोह (वि०) [लूयतेऽनेन, तू+ह्] ताम्रमय, तांबे से युक्त।
लोहः (पुं०) लोहा, अयस्क, एक धातु। (सुद० ४/३०, सम्य० ६१)
०इस्पात, धातु, अस्त्र, हथियार।
लोहकण्टकः (पुं०) वंशी, बडिरा। (जयो०वृ० २५/७७)
लोहकारः (पुं०) लुहार।
लोहकिट्टं (नपुं०) लोहे की जंग।
लोहकीलकः (पुं०) ०लोहे की कील, ०शलाका। (जयो०वृ० ३/१७)
लोहखण्डः (पुं०) अयस्क समूह।
लोहचूर्णं (नपुं०) लोहभस्म।
लोहजं (नपुं०) कांसा।
लोहजालं (नपुं०) कवच।
लोहदण्डः (पुं०) लोहे की छड़। (सम्य० ६१)
लोहद्राविन् (पुं०) सुहागा।
लोहबद्ध (वि०) लोहे से युक्त।
लोहमुक्तिका (स्त्री०) लाल मोती।
लोहरजस् (नपुं०) लोहे की जंग, मोर्चा।
लोहराजकं (नपुं०) चांदी, रजत।
लोहल (वि०) लोहे से निर्मित।
लोहशंकु (स्त्री०) लोहे की कील।
लोहिका (स्त्री०) [लोह+ठन्+टाप्] लोहे का पात्र।
लोहित (वि०) लाल रंग का, ताम्र निर्मित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोहितः (पुं०) एक वृक्ष विशेष।
०लाल रंग, मंगल ग्रह।
०सर्प।
लोहितं (नपुं०) तांबा।
०रुधिर।
०केसर, जाफरान।
लोहितवर्णः (पुं०) आरक्तवर्ण। (जयो० १५/२)
लोहितकल्माष (वि०) लाल धब्बों वाला।
लोहितक्षय (वि०) रुधिर नाश।
लोहिनी (स्त्री०) रक्तवर्ण वाली स्त्री।
लौकान्तिकः (पुं०) सुर ऋषि। ०देव विशेष। (भक्ति० ३२)
लौकिक (वि०) [लौके विदितः प्रसिद्धो हितो वा ठण्] सांसारिक, भौतिक, पार्थिव। (जयो० २६/१००)
०सामान्य, साधारण, प्रचलित।
लौकिक-कल्याणं (नपुं०) सांसारिक हित। (जयो० २/७)
लौकिकाचरणं (नपुं०) सांसारिक हित। (जयो० २/७)
लौकिकज्ञ (वि०) लोक व्यवहार जानने वाला।
लौम्य (वि०) [लौके भवः-लोक ष्यञ्] सांसारिक, भौतिक।
लौड् (अक०) पागल होना।
लौल्य (वि०) [लोलस्य भावः ष्यञ्] चापल्य। (जयो० २३/२८) तरलता। (जयो० १४/७६)
लौह (वि०) लोहे से निर्मित।
लौहं (नपुं०) लोहा, अयस्क।
लौहजं (नपुं०) लोहे की जंग।
लौहबन्ध (पुं०) लोहे की बेड़ी, जंजीर।
लौहभाण्डं (नपुं०) लोहपात्र।
ल्पी (अक०) मिलना, सम्मिलित होना।
ल्वी (सक०) जाना, पहुंचना।

व

वः (पुं०) इसका स्थान अन्तस्थ है। वकार (जयो०वृ० २/१५) आभ्यन्तर ईषत् स्पृष्ट।
वः (पुं०) पवन, वायु, हवा।
०भुजा, वरुण। (समु० १/४)
०समाधान, सम्बोधन, मांगलिक कार्य।
०निवास, आवास।
०सागर।
०व्याघ्र।
०अस्मद् शब्द के षष्ठी एकवचन में :' वः युस्माकं वः श्रीवधमानो भुवि देवदेवः (वीरो० ६/१) हमारी, हमारा अर्थ निकलता है।
वं (नपुं०) वरुण, कुम्भ वः कुम्भे वरुणे 'ति' विश्वलोचन (जयो०वृ० १/१५)
व (अव्य०) अथवा, यथा, तदह, जैसा कि।
वंशः (पुं०) [वमति उद्‌गिरति वम्+श् तस्य नेत्वम्] ०बांस, वेणु (जयो०वृ० ८४)
०हस्तिकुम्भस्थल। (जयो० ६/८०)
०मानदण्ड। (जयो० ६/४०)
०कुल, परिवार, जाति, कुटुम्ब, परम्परा। वंशस्य जातिर्जकनस्य मातुः पिता (सुद० २१) (वीरो० ७७/६) (सुद० १/४२)
०संग्रह, समूह, समुदाय, संघात, समुच्चय।
०रीढ़ की हड्डी।
०सालवृक्ष।
यत्राप्यहो लोचनमैमि वंशे तत्रैव तन्मौक्तिकमित्यशंसे।
श्रीदेवकी यत्तनुजापिदूने कंसे भवत्युग्रहीपसून।।
(वीरो० १७/५४)
वंशकठिनः (पुं०) बांसों का झुरमुट।
वंशकुट (वि०) वंक्ष स्थापक, वंश चलाने वाला, कुल प्रवर्तक।
वंशकर्पूररोचना (स्त्री०) वंशलोचन, तवाशीर।
वंशकृत् (पुं०) कुल संस्थापक, कुलप्रवर्तक।
वंशक्रमः (पुं०) वंशपरम्परा, कुल परम्परा।
वंशक्षीदी (स्त्री०) वंसलोचन।
वंशगत (वि०) परम्परा को प्राप्त हुआ।
वंशगति (स्त्री०) कुलरीति, वंश व्यवस्था।
वंशचरितं (नपुं०) कुलपरिचय। ०परम्परागत परिचय।
वंशचिन्तक (वि०) वंश जानने वाला, कुल परम्परा का चिन्तक।
वंशछेत्तु (वि०) कुल का अंतिम व्यक्ति।
वंशज (वि०) पूर्वज, कुल परम्परा के।
वंशजः (पुं०) सन्तान, प्रजा, पवित्रकुलोत्पन्न। (जयो० १२/१३)
वंशजं (नपुं०) वंशलोचनं।
वंशज्योति (स्त्री०) कुल परम्परा की प्रभा।
वंशतत्त्वं (नपुं०) बांस का सार।
वंशनर्तिन् (पुं०) नट, विदूषक।
वंशनाडिका (स्त्री०) बांसुरी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वंशनाथः (पुं०) वंश प्रमुख, कुलनायक।
वंशनिर्माता (पुं०) कुलकर। (जयो०वृ० २/८)
वंशनेत्रं (नपुं०) बांस का पत्ता।
वंशपत्रकः (पुं०) नरकुल।
०पौंड्रा।
वंशपत्रकं (नपुं०) हरताल।
वंशपरम्परा (स्त्री०) कुलरीति, वंशानुक्रम। (जयो०वृ० २/१२४)
वंशपूरकं (नपुं०) इक्षुमूल, गन्ने की जड़।
वंशभागः (पुं०) कुलांश।
वंशभेदकर (वि०) गोत्रभिद। (जयो०वृ० १/४१)
वंशभोज्य (वि०) आनुवंशिक।
वंशभोज्य (नपुं०) वंश परम्परा की सम्पत्ति।
वंशमहीरुहः (पुं०) वेणुवृक्ष, कुलपादप। (जयो० २५/३०)
वंशरीति (स्त्री०) कुल परम्परा।
वंशलक्ष्मी (स्त्री०) कुल का सौभाग्य।
वंशलोचनं (नपुं०) औषधि विशेष। (वीरो० १७/३४)
वंशवाद्यं (नपुं०) बांसुरी, वंशे महरे कुतो वंशवाद्यस्यतु समुद्भवः। (दयो० ४८)
वंशविततिः (स्त्री०) परिवार, संतान।
वंशशर्करा (स्त्री०) बंसलोचन।
वंशशलाका (स्त्री०) बांस की खूंटी।
वंशस्थिति (स्त्री०) कुल की धारा।
वंशिका (स्त्री०) बांसुरी।
वंशिवरः (पुं०) गृहस्थ। (जयो०वृ० १२/१)
वंशी (स्त्री०) [वंश+अच्+ङीष्] वाद्य विशेष। (जयो० १२/७७) बांसुरी, मुरली।
०व्याध, शिकारी। (जयो०)
वंशीधरः (पुं०) कृष्ण, वासुदेव।
०बंसी बजाने वाला।
वंशीधरिन् (पुं०) कृष्ण, वासुदेव, ०मुरलीधर।
वंश्य (वि०) [वंशे भवः यत्] कुल परम्परा से सम्बंधित, मेरुदण्ड से सम्बन्धित।
वंश्यः (पुं०) पूर्वज, कुलज, वंशज।
०परिवार का सदस्य।
०शहतीर।
वकुशः (पुं०) वकुशमुनि, जो उत्तरगुणों को भी अच्छी तरह नहीं समझ पाया। (सम्य० १४०)
वक (पुं०) बगुला।
०ठग, धूर्त।
०एक राक्षस, बकासुर।
वकिक् (नपुं०) ०वणिक्पथ, ०हारस्थान, विक्रय केन्द्र। (जयो०२१/७६)
वक्क् (सक०) जाना, पहुंचना।
वक्तव्य (सं०कृ०) [वच्+तव्यत्] कहे जाने योग्य, कहने योग्य, प्रकथन योग्य।
०गर्हणीय, निन्दनीय। दूषणीय।
०नीच, दुष्ट।
०कवित्वसामर्थ-'वक्तव्यतोऽलंकृति दूरवृत्ते' (वीरो० १/२६)
वक्तव्यं (नपुं०) भाषण, कथन, प्रतिपादन।
०विधि, नियम, सिद्धान्त, वाक्य। 'सज्ज्ञानैकविलोयन! वक्तव्यं श्रीमता च तद्भवता। (वीरो० ४/३६)
वक्ता (वि०) बोलने वाला। (समु० ३/२२)
वक्तु (वि०) वक्ता, कहने वाला। (समु० ९/३१)
वक्ति (वि०) सूचक। (जयो० ३/१०६)
वक्तृ (वि०) [वच्+तृच्] वक्ता, बोलने वाला, कहने वाला। वाक्पटु, प्रवक्ता।
वक्तृ (पुं०) विद्वान् पुरुष, अध्यापक, व्याख्याता। 'सत्यमसत्यं ब्रवीतीति वक्ता' (धव० ९/२२०)
वक्त्रं (नपुं०) [वक्ति अनेन वच् करणे ष्ट्रन्] ०मुख, मुह, बदन।
०थूथन, (जयो० ८/६)
०प्रोथ, चोंच।
०आरंभ।
०बाण की नोंक।
वक्त्रखुरः (पुं०) दन्त, दांत।
वक्त्रजः (पुं०) ब्राह्मण, विप्र।
वक्त्रतालं (नपुं०) मुख से बजाया जाने वाला वाद्ययन्त्र।
वक्त्रदलं (नपुं०) तालु।
वक्त्रपटः (पुं०) परदा, आच्छादन।
वक्त्ररन्ध्र (नपुं०) मुखछिद्र, मुख विवर।
वक्त्रभेदिन् ( ) चरपरा, तीक्ष्ण।
वक्त्रवासः (पुं०) संतरा, मौसमी।
वक्त्रशोधनं (नपुं०) मुखा साफ करना।
०नींबू, चकोतचरा।
वक्त्रशोधिन् (पुं०) नींबू, चकोतरा।
वक्त्रेन्द्र (स्त्री०) मुखेन्द्र। (सुद० २/३५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वक्र (वि०) [वङ्क्+रन्] ०कुटिल, तिर्यग्।
०टेढा, झुका हुआ, चक्करदार। (सुद० २/४६)
०गोलमोल, मण्डलाकार।
०कूट, धातक, नाशक, विध्वंसक।

वक्रः (पुं०) शनिग्रह, मंगलग्रह।

वक्रं (नपुं०) नदी का मोड़।
०प्रतिगमन, बहाव।

वक्रकण्टः (पुं०) बेर का पेड़।

वक्रकण्टकः (पुं०) खैर तरु।

वक्रखड्गः (पुं०) कटार, तलवार।

वक्रगति (स्त्री०) टेढ़ी चाल, तिर्यक् गति। (सुद० १०५) दर्पवतः सर्पस्येवास्य तु वक्रगतिः सहसाऽवगता। (सुद० १०५)

वक्रगामिन् (वि०) कुटिल गति वाला, टेढ़ी चाल चलने वाला, जालसाज, बेईमान।

वक्रग्रीवः (पुं०) ऊँट, उष्ट्र।

वक्रचञ्चु (स्त्री०) तोता, शुक्र।

वक्रतुण्डः (पुं०) गणपति, गणेश।

वक्रदंष्ट्रः (पुं०) सूकर, सूअर।

वक्रदृष्टि (स्त्री०) तिरछी चितवन वाला, भैंगा, कुटिलता युक्त आंख वाला।

वक्रदृष्टिः (स्त्री०) तिरछी अक्षि, तिर्यग् नेत्र।

वक्रता (वि०) कुटिलता, वक्रिम। (जयो०वृ० ११/९६)

वक्रतावस्था (स्त्री०) वक्रिमक्षण, कुटिल भाव की स्थिति। (जयो०वृ० ११/८)

वक्रत्व (वि०) कुटिलता, तिर्यग् गति युक्त। (वीरो० २/४८) अहीनत्व किमादायि त्वया वक्रत्वमीयुषा। (वीरो० १०/२२)
०कौटिल्यक। (जयो० २/१४६)

वक्रनकः (पुं०) शुक, तोता।

वक्रनासिकः (पुं०) उल्लू।

वक्रपुच्छः/वक्रपुच्छकः (पुं०) श्वान, कुत्ता।

वक्रपुष्पः (पुं०) ढाक वृक्ष।

वक्रबालधिः (पुं०) श्वान, कुत्ता।

वक्रभावः (पुं०) टेढ़ापन, कुटिलभाव।

वक्रभू (पुं०) कुटिल भौंह। (जयो० २२/६५)

वक्रलता (स्त्री०) झुकी हुई लता, मण्डलाकार बल्लरी।

वक्रलांगूलः (पुं०) कुत्ता, कुक्कुट, श्वान।

वक्रवक्रः (पुं०) सूकर, सूअर।

वक्रवाक्यं (नपुं०) कुटिलवाक्य, घुमावदार कथन। (जयो० १६/५२)

वक्रिन् (वि०) [वक्र+इनि] कुटिल (जयो० ११/९६) कुटिल गामी, वक्रता। (सुद० १/४२) चापलतेव च सुवंशजाता गुणयुक्तक पि वक्रिकख्याता। (सुद० १/४२)

वक्रिमन् (पुं०) [वक्र+इमनिच्]०कुटिलता, वक्रता, टेढ़ापन।
०चक्कर, घुमाव।
०धूर्तता, चलाकी, ठगी, छलभाव।

वक्रिमक्षणं (नपुं०) वक्रतावस्था, कुटिलता का समय। (जयो० ११/९६)

वक्रिमकल्पः (पुं०) कुटिल विचार। 'वक्रस्य भावो वक्रिमा तस्य कल्पः समुत्पादः' (वीरो० १/३८)

वक्रोष्टिः/वक्रोष्टिका (स्त्री०) [वक्रं ओष्ठो यस्याम्] मृदु मुसकान, मन्द-मन्द हास्यता।

वक्रोक्ति (स्त्री०) [वक्रः उक्ति यस्याम्] ०वक्रकथन, कुटिल प्रतिपादन। (जयो० ७/६६)
०वक्रोक्ति नामक अलंकार। जिसमें टालमटोल युक्त कथन श्लेष के साथ कहा जाता है।
प्रस्तुतादपरं वाच्यमुपादायोत्तरप्रदः।
भङ्गश्लेषमुखेनाह यत्र वक्रोक्तिरेव सा।
(वाग्भट्टालंकार ४/१४)
कुमाराद्य यमाराते जातुचिन्नात्र संशयः।
मुक्त्वा क्षमामिदानीं तु जयं जयसि जित्वरः।।
(जयो० ७/३५) (जयो० १४/३०, २६/७६, ५/१८, २२/७०, २२/६८, २२/४७, वीरो० १/१०)

वक्रोक्तिश्लेषः (पुं०) वक्रोक्ति युक्त श्लेष। (जयो०वृ० २२/१०)

वक्रोक्तिर्दृष्टान्तः (पुं०) वक्रोक्ति पूर्ण दृष्टान्त।
रजो यथा पुष्पसमाश्रयेण किलाऽऽबिलं मद्वचनं च येन।
वीरोदयोदारविचारचिह्नं सतां गलालाङ्करणाय किन्न।।
(वीरो० १/१०)

वक्रोडुपः (पुं०) स्वकीय मुखचन्द्र मुख। वक्रोडुपे किंपुरुषाङ्गनाभिः क्लृप्तावलोक्याथ च राहुणा भीः। (जयो० ८/३४)

वक्ष् (अक०) वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना, कहना। (जयो० ३/५५) शक्तिशाली होना।
०क्रुद्ध होना।
०संचित होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वक्षस् (नपुं०) [वह्+असुन्+मुच च] छाती, वक्षस्थल, हृदय, सीना। वक्षसो हृदयस्य स्फुरणं। (जयो०वृ० १४/३८)

वक्षजा (स्त्री०) स्त्री का वक्षस्थल।

वक्षरुहा (स्त्री०) देखो ऊपर।

वक्षणं (नपुं०) सम्पत्तिकर। पूर्णकलश, मंगलकलश। (जयो०२६/१)

वक्षस्थलं (नपुं०) छाती, उरस्थल।

वक्षस्फुरणं (नपुं०) हृदय स्फुरण। (जयो० १४/३८)

वक्षारः (पुं०) वक्षारपर्वत। (भक्ति० ३६)

वक्षागिरि (पुं०) वक्षारपर्वत। (जयो० २४/१४)

वख् (सक०) जाना, पहुंचना।

वगाहः (पुं०) अवगाह।

वङ्कः (पुं०) [वङ्क+अच] नदी का मोड़।

वङ्का (स्त्री०) [वङ्क+टाप्] मेढ़ी।

वङ्किलः (पुं०) [वङ्क्+इलच्] कांटा।

वङ्क्रि (स्त्री०) एक वाद्य यन्त्र।

वङ्ग् (सक०) जाना, लंगड़ाना।

वङ्गरः (नपुं०) वङ्गवासी।

वङ्गा (पुं०) कपास, बैंगन का पौधा।

वङ्गं (नपुं०) सीसा। ०रांगा।

वङ्गाजः (पुं०) ०पीतल, ०सिन्दूर।

वङ्गजीवनं (नपुं०) चांदी, रजत।

वङ्गदेशः (पुं०) बंगाल का राजा।

वङ्गदेशनृपः (पुं०) बंगाल का राजा। (जयो० ६/६६)

वङ्गाधिपतिः (पुं०) वंग अधिपति। (जयो० ६/६५)

वङ्गाधिपतिः (पुं०) वंग देश का राजा। (जयो० ६/५५)

वच् (सक०) कहना, बोलना, प्रतिपादन करना।
०वर्णन करना, बखान करना। (सुद० ८४) वाचयेत् (दयो०७६)
०समाचार देना, संदेश देना।
०घोषणा करना, पुकारना।

वचः (पुं०) [वच्+अच्] तोता, शुक।
०सूर्य दिनकर।

वचं (नपुं०) कथन, बात। (सम्य० १२१) वंचन। (जयो० ७/८) हि० २१) उपदेश, संदेश। (वीरो० १०/८)

वचनं (नपुं०) [वच्+ल्युट्] बोलना, कहना।
०उच्चारण, बात, प्रकथन, उक्ति, उद्गार।
०भाषण, प्रवचन, उद्घोष। (सम्य० ४/)
०दुहराना, पाठ करना, घोषणा।
०वाक्य, वाणी, नियम, विधि। (सुद० ४/४२)
०एकवचन, बहुवचन।

वचनकर (वि०) आज्ञाकारी, आदेश पालक। ०उपदेशक।

वचनकारिन् (वि०) आज्ञाकारी, वचन पालक।

वचनक्रमः (पुं०) प्रवचन, धारावाह निरूपण।

वचनग्राहि (वि०) आज्ञाकारी, अनुवर्ती।

वचनपटु (वि०) कहने में अतुर।

वचनप्रचारः (पुं०) दिव्यध्वनि (भक्ति० ३३)

वचनविरोधः (पुं०) पाठ विरोध।

वचनबलं (नपुं०) वचन विषयक व्यापार।

वचनामृतं (नपुं०) अमृत रूप वाणी। (वीरो० १३/३३)

वचनीयर (वि०) [वच्+अनीयर्] कथनीय, निरूपणीय, प्रवचनीय, कहने योग्य, प्रतिपादित करने योग्य।
०निन्दनीय, दूषणीय।

वचनीयं (नपुं०) कलंक, निन्दा।

वचनोच्चारणं (नपुं०) वाक्योच्चारण।(जयो०वृ० २३/३१)

वचरः (पुं०) कुक्कुट, मुर्गा।
०निम्नव्यक्ति।
०ठग, धूर्त, वाचारल, मुखरी।

वचस् (वच्+असुन्) भाषण, वचन, कथन, विधि, आज्ञा, उपदेश, विवेचन। (सुद० ७८)

वचसाम्पतिः (स्त्री०) [वचसां वाचां पतिः षष्ठ्या अलुक्] बृहस्पति, गुरु गृह।

वचस्ततिः (स्त्री०) वचनमाला, (सुद० ८८) वाक्यावलि।

वचस्तम्भः (पुं०) वचन कीलित। (जयो० १९/७२)

वचोधिदेवता (स्त्री०) सरस्वती, भारती। (जयो० १२/२)

वचोधृत (वि०) वचन धारक। (दयो० २/७)

वज्र (सक०) जाना, पहुंचना।

व्रजः (पुं०) इन्द्र अस्त्र, वज्रायुध, हीरक (सुद० १/२८)

वज्रं (नपुं०) मुदगर, ०इन्द्र अस्त्र। (समु० ६/३९)
०हीरमणि, विद्युत। (सम्य० ७७)

वज्रः (पुं०) सैन्य व्यूह, सैन्य रचना, सैन्य सुरक्षा की पद्धति।

वज्रं (नपुं०) अभ्रक।
०इस्पात।
०कठोर, कठिन।
०आंबलक।
०बच्चा, बालक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वज्रकंटकः (पुं०) वज्रकील।
वज्रकङ्कुरः (पुं०) हनुमान।
वज्रकाण्डं (नपुं०) वज्रकाण्डसन्धान। (जयो० ८/४३)
वज्रकीलः (पुं०) वज्र निर्मित कील, दृढ़कील।
०बिजली।
वज्रक्षारं (नपुं०) वज्र मिट्टी, श्वेत कंकण। ०क्षेत्र/खेत कंकर।
वज्रखण्डं (नपुं०) हीरकखण्ड। (जयो० १९/७)
वज्रगोपः (पुं०) वीरवधूटी।
वज्रचञ्चुः (पुं०) गिद्धपक्षी।
वज्रचर्मन् गैंडा।
वज्रजित् (पुं०) गरुड़ पक्षी।
वज्रज्वलनं (नपुं०) विद्युत, बिजली।
वज्रज्वाला (स्त्री०) बिजली।
वज्रतुण्डः (पुं०) गिद्ध।
०मच्छर।
वज्रनाराचसंहननं (नपुं०) वज्रमयी हड्डी।
वज्रर्षभनाराचसंननं (नपुं०) अभेद्य हड्डियों का संचय।
०डांस मच्छर।
०गरुड़।
वज्रतुल्यं (नपुं०) नीलम मणि।
वज्रदंष्ट्रः (पुं०) एक कीट विशेष।
वज्रदन्तः (पुं०) ०मूषक।
०सूकर।
वज्रदशनः (पुं०) मूषक, चूहा।
वज्रदेह (वि०) दृढ़ शरीरी।
वज्रदेह्नि (वि०) शक्ति सम्पन्न, शक्तिशाली देह।
वज्रदृढ़ (वि०) वज्र की तरह मजबूत, वज्र की तरह शक्तिशाली। (दयो० ७७)
वज्रधरः (पुं०) इन्द्र।
वज्रनाभः (पुं०) कृष्णाचक्र, सुदर्शन चक्र।
वज्रनिर्घोषः (पुं०) बिजली की चमक, विद्युत्तडक।
वज्रपाणिः (पुं०) इन्द्र।
वज्रपातः (पुं०) विद्युत् पतन, बिजली गिरना, बिजली का आघात। (दयो० ४३)
वज्रपुष्पं (नपुं०) तिल का पुष्प।
वज्रभृत् (पुं०) इन्द्र।
वज्रमणिः (स्त्री०) हीरक मणि।
वज्रमुष्टिः (पुं०) इन्द्र।
वज्ररदः (पुं०) सूकर, सूअर।
वज्रलेपः (पुं०) दृढ़लेप, सीमेन्ट आदि का प्लास्तर।
वज्रलोहकः (पुं०) चुम्बक।
वज्रव्यूहः (पुं०) सैन्य व्यूह, सैन्य सुरक्षा विधि।
वज्रशल्यः (पुं०) सेही जानवर।
वज्रसार (वि०) पत्थर की भांति कठोर।
वज्रसूचि (स्त्री०) हीरक सुई।
वज्रषेणः (पुं०) साकेत नगरी का राजा। (वीरो० ११/२८)
वज्रसेनः (पुं०) महाकच्छ का एक राजा, जो अत्यंत दुराचारी था। (समु० २/२८)
वज्रहृदयं (नपुं०) कठोर हृदय, दृढ़ हृदय।
वज्राकारः (वि०) वज्र तुल्य आकार वाला।
वज्रायुधः (पुं०) चक्रायुध राजा का पुत्र। (समु० ६/२८)
वज्रिन् (पुं०) इन्द्र, शक्र, पुरन्दर, ०देव इन्द्र। (समु० २/१७)
०ऊलूक, उल्लू।
वञ्च् (सक०) ठगना, धोखा देना।
०जाना, भागना, हटना।
वञ्चक (वि०) [वञ्च्+णिच्+ण्वुल्] ०ठग, धूर्त, चालाक, मक्कार।
०धोखेबाज, छली।
वञ्चकः (पुं०) ठग, धूर्त।
०गीदड़। (दयो० ३७)
०छछूंदर।
०पालतू नेवला।
वञ्चकता (वि०) ठगीपना, धूर्तता। (दयो० ३५, सुद० १०५, ३/२२)
वञ्चतिः (स्त्री०) अग्नि, आग।
वञ्चथः (पुं०) [वञ्च्+अथ:] ०ठगना, धोखा देना, चालाकी।
०ठग, धूर्त, बदमाश, उचक्का।
०कोयल।
वञ्चनं (नपुं०) [वञ्च्+ल्युट्] ०ठगा, धोखा देना, धूर्त, ठग।
वञ्चना (स्त्री०) माया, छल, भ्रम। (सुद० ७५)
०ठगी, चालाकी, धूर्तता। (जयो० २/५७)
०क्षति, हानि, अभाव।
वञ्चित (भू०क०कृ०) [वञ्च+क्त] ०ठगा गया, धोखा खाया गया। किमन्यैरहमप्यस्मिवञ्चितो माययाऽनया। (वीरो०१०/६)
०असमर्थ। (जयो० ९/७२) प्रतारित।
वञ्चुक (वि०) छल से परिपूर्ण, धोखे से युक्त।
०ठगी, धोखा देने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वञ्चुकः (पुं०) गीदड़।
वञ्जुलः (पुं०) [वञ्च+इलच्] बेंत, नरकुल।
०एक पक्षी विशेष। ०अशोक वृक्ष!
०रम्य, सुंदर। (जयो० ७/९८)
वञ्जुलद्रुम (पुं०) अशोक वृक्ष।
वट् (सक०) घेरना।
०कहना, बांटना, विभाजन करना, घेरा डालना।
वटः (पुं०) [वट्+अच्] बड़ का पेड़। (सुद० १२९, हित० ४७) कौड़ी।
०गोलिका, छोटी गेंद, अंटी, वटिका।
०डोरी, रस्सी।
वटकः (पुं०) नमकीन।
०बड़ा चुम्बन। (जयो० १२/१२४)
०[वट+कन्] बाटी, एक गोल, आटे से निर्मित बाटी।
०छोटा पिंड, गेंद, वटिका।
वटपत्रं (नपुं०) चमेली पुष्प।
वटरः (पुं०) [वट्+अरन्] मुर्गा, कुक्कुट।
०चटाई।
०पगड़ी।
०चोर, लुटेरा।
०सुगन्धित घास।
वटाकरः (पुं०) डोरी, रस्सी।
वटिकः (पुं०) [वट्+इन्+कन्] शतरंज का मोहरा।
वटिका (स्त्री०) [वट्+इन्+कन्+टाप्] टिकिया, गोली।
वटिन् (वि०) [वट्+इन्] डोरीदार, मंडलाकार, गोलाकार।
वटिन् (पुं०) वटिक, गेंद, कन्दुक।
वटी (स्त्री०) [वट्+अच्+ङीष्] ०डोरी, रस्सी, धागा।
०वटिका।
वटीवलनं (नपुं०) रज्जुसम्पादन, रस्सी बांटना। (जयो० २६/६८)
वटुः (पुं०) [वटति अल्पवस्त्र-वट+उ] ०लड़का, बटुक, किशोर।
०ब्रह्मचारी।
वटुकः (पुं०) [वटु+कन्] लड़का, छोकरा, किशोर, बालक।
वठ् (अक०) मोटा होना, शक्तिशाली होना।
वठर (वि०) मन्द बुद्धि वाला।
वठरः (पुं०) मूढ, मूर्ख, बुद्धिहीन। 'निभालयामो' वठरं जगज्जनम्' (वीरो० ९/१)
०वैद्य, चिकित्सक।
०जलपात्र।
वडभः (पुं०) संकुचित हाथ-पांव वाला मनुष्य।
वडवा (स्त्री०) [बलं वाति-बल+वा+क+टाप्] घोड़ी।
०वेश्या, रण्डी।
०अग्नि।
वडवाग्निः (स्त्री०) वडवानल, अरण्य अग्नि। (जयो० ७/७२) समुद्राग्नि।
वडवानलं (नपुं०) अरण्याग्नि, समुद्र की अग्नि।
वडवामुखः (पुं०) समुद्र के अंदर रहने वाली आग।
वडा (स्त्री०) [वड्+अच्+टाप्] बड़ा, दाल की बनी हुई बांटी।
वडिशं (नपुं०) [बलिनो मत्स्यान् श्यति नाशयति] ०वंशी 'मीनोऽसौ वडिशस्य मांसमुपयन्मृत्युं समापद्यते। (सुद० १२७)
वण् (सक०) शब्द करना, ध्वनि करना।
वणिज् (पुं०) [पणायते व्यवहरति पण्+इजि पस्य व:] व्यापारी, सौदागर।
वणिक्कर्मन् (नपुं०) व्यापार कर्म।
वणिक्कर्मार्यः (पुं०) बहुमूल्य वस्तुओं की बिक्री करने वाला व्यापारी।
वणिक्क्रिया (स्त्री०) क्रय-विक्रय व्यापार।
वणिक्जनः (पुं०) व्यापारी, व्यवसायी, व्यवहारी।
वणिक्जनः (पुं०) व्यापारी वर्ग, निगम। (जयो० २/११३)
वणिक्तुजः (पुं०) वैश्य बालक। (समु० ४/३)
वणिक्पथः (पुं०) व्यापार, क्रय विक्रय, विपणि प्रदेश, बाजार (सुद० १/३२) व्यापार केन्द्र, विपणिस्थान। (वीरो० २/१७) सौदागर, (वीरो० २/२६) आपणिका, दुकान।
वणिक्वश (पुं०) सौदागर, सेठ। (सुद० २/४)
वणिक्वृत्तिः (स्त्री०) व्यापारिक क्रिया, व्यापार, सौदागर। (वीरो० २२/२६)
वणिक्सार्थः (पुं०) व्यापारी वर्ग।
वणिगीसः (पुं०) वैश्यपति, सेठ। (सुद० ३/३४)
वणिज् (पुं०) [पणायते व्यवहरति पण्+इज् पस्य व:] व्यापारी, सौदागर।
वणिजः (पुं०) [वगिज्+अच्] सौदागर, व्यापारी।
०तुलाराशि।
वणिजकः (पुं०) सौदागर, व्यापारी।
वणिज्यं (नपुं०) व्यापार, क्रय विक्रय।
वण्ट् (सक०) बांटना, विभाजित करना।
०बनाना, हिस्सा करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वण्टः (पुं०) [वण्ट्+घञ्] ०हिस्सा, भाग, खण्ड, अंश।
०कुंआरा व्यक्ति।

वण्टकः (पुं०) [वण्ट्+घञ् स्वार्थे क] ०बांटने वाला, * वितरण करने वाला। ०विभाजन।
०वितरक, हिस्सा, अंश, भाग।

वण्टनं (नपुं०) [वण्ट्+ल्युट्] ०विभाजन, विभक्त करना, बांटना, हिस्सा करना।

वण्टालः (पुं०) [वण्ट्+अलच्] ०कुदाल, खुर्पा। ०नाव।

वण्ठ् (सक०) एकाकी जाना।

वण्ठ (वि०) [वण्ठ्+अच्] ०विकलांग।
०अविवाहित।

वण्ठः (पुं०) कुआरा व्यक्ति, सेवक, ठिगना।

वण्ठरः (पुं०) [वण्ड्+अरन्] ०बांस का आवेष्टन।
०रस्सी।
०कुत्ता, श्वान।

वण्ड् (सक०) बांटना, हिस्से करना, घेरना, आवेष्टित करना।

वण्ड (वि०) [वण्ड्+अच्] अपांग, विकलांग अपाहिज।
०अविवाहित, कुंआरा।

वण्डः (पुं०) जननेन्द्रिय की कमी।

वण्डरः (पुं०) [वण्ड्+अरन्] कंजूस।
०हिजड़ा।

वत् (वि०) संज्ञा शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय। वतेति खेद (जयो० ९/८०) वतायं खेदोऽस्ति (जयो० १३/८८) वतेति खेदे (जयो० १२/१४१) 'दुग्धाब्धिवदुज्ज्वले तथा कं' (सुद० ९८) कौमुदं तु परं तस्मिन् कलावति कलावति। (सुद० ९०)

वतंसः (पुं०) [अवतंस्+अच् वा घञ्] मुकुट (जयो० ११/१४) शिरोमणि (जयो० ६/११२) सिर आभूषण। 'दिगम्बरीभूय सतां वतंसः ययो महाशुक्रसुवालयं स (वीरो० ११/१४)

वतोका (स्त्री०) [अवगत लोक यस्याः-अवस्था अकार लोपः] बांझ स्त्री, निःसंतान स्त्री।

वत्सः (पुं०) [वद्+सः] बछड़ा, गाय का बच्चा।
०लड़का, पुत्र। (सुद० ४/) (सुद० ३/२२)

वत्सं (नपुं०) छाती, वक्षस्थल, हृदय। (सम्य० ९६)

वत्सकवत् (वि०) बछड़े की तरह। (जयो० ९/७१)

वत्सराजः (पुं०) वत्सदेश का राजा।

वत्सशाला (स्त्री०) गौशाला।

वत्सल (वि०) प्रिय, अतिस्नेही, दयालु, अनुरागी।

वत्सलं (नपुं०) प्रेम, स्नेही।

वत्सलताभिलाषी (वि०) स्नेह का इच्छुक। (सुद० १/२१)

वत्सा (स्त्री०) [वत्स्+टाप्] बछिया। बहड़ी।

वत्सिमन् (पुं०) [वत्स्+इमनिच्] बचपन, कौमार्य, जवानी।

वत्सीयः (पुं०) गोप, ग्वाला।

वद् (सक०) बोलना, कहना, उच्चारण करना। अवदत् (सुद० ८५) वदामः (सुद० २/२३)
०घोषणा करना, समाचार देना, संदेश देना। (वीरो० ५/७)
०संकेत करना, आभास देना। (सम्य० १००)
०उद्योग करना, चेष्टा करना।
०लुभाना, फुसलाना, मनाना।
०संबोधित करना, पुकारना। वक्तुं (सुद० २/२२)
०अंकित करना, निर्धारित करना। (सुद० ८८)
०विवाद करना। पीयूष कुम्भाविति हन्त कामी वदत्यहो सम्प्रति किम्वदामि।। (सुद० १०२)

वद (वि०) [वद्+अच्] बोलने वाला, कहने वाला।

वदनं (नपुं०) [वद्+ल्युट्] ०मुख, चेहरा। (जयो० ६/४८) (सुद० ११३)
०छवि, दर्शन, शरीर। (सुद० ३/२८)

वदनैकविद्धि (वि०) सच्चा वक्ता। (समु० १/३५)

वदन्ती (स्त्री०) [वद्+झच्+ङीष्] भाषण, प्रवचन।

वदन्य (वि०) प्रवाही वक्ता।

वदालः (पुं०) बवण्डर, भंवर, तूफान।

वदावद (वि०) [अत्यंत वदति-वद्+अच्] अधिक बोलने वाला, वाक्पटु, बातूनी, वाचाल।

वदान्य (वि०) [वद्+आन्य] प्रवाही वक्ता।

वदान्यः (पुं०) उदार, दानशील, दाता, अत्युदार व्यक्ति।

वदि (अव्य०) चन्द्रमास, कृष्णपक्ष।

वद्य (वि०) [वद्+यत्] कहने योग्य।

वद्यं (सक०) मारना, प्रवचन, कथन।

वधः (पुं०) मारना, हत्या, घात, विनाश, आघात, प्रहार।
०प्राणवियोग-'आयुरिन्द्रियबलप्राणवियोगकरणं वधः। (स०सि० ६/११)
०प्राणी पीड़ा, ताडन, हनन।

वधकः (पुं०) जल्लाद, कातिल, हत्यारा।

वधकर्माधिकारिन् (वि०) जल्लाद, फांसी देने वाला।

वधक्रिया (स्त्री०) घातक क्रिया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वधकोपदेशः (पुं०) संहारक व्यक्तियों के लिए उपदेश।
वधजीविन् (पुं०) शिकारी, कसाई।
वधत्रं (नपुं०) अस्त्र, हथियार।
वधदण्डः (पुं०) शारीरिक दण्ड, दैहिक यातना।
वधपरीषहजयः (पुं०) विकारों का शान्तिकपूर्वक सहन करना। मारपीट सहना। (त०सू० १४६)
वधातिवर्ति (स्त्री०) नित्य रूप-सुकारप्रणाशः स्यात्तेन वधातिवर्ति। (जयो०वृ० ११/५४)
वधित्रं (नपुं०) कामोन्मत्त, कामदेव।
वधुः (स्त्री०) पुत्रवधु, स्नुषा, युवति, स्त्री।
वधूः (स्त्री०) [उह्यते पितृगेहात् पतिगृहं वह्+ऊधक्] दुलहिन, पत्नी, भार्या।
०महिला, स्त्री, परिणीता, विवाहिता स्त्री। (जयो० १/८१) 'पुरिसं वधमुवणेदित्ति होदि' (भ०आ० ९७७)
वधूजनः (पुं०) स्त्री समूह। (जयो० २/५६)
वधूटी (स्त्री०) [वधू+टि+ङीष्] अल्पवयस्का वधूः। पुत्रवधू। नवोढा, तरुणी स्त्री, नवयौवना, (जयो० १२/११४) नवाङ्गी। 'नवप्रसङ्गे परिहस्टचेता नवां वधूटीमिष कामि एताम्' (वीरो० ६/२०)
वधूदोषः (पुं०) कायोत्सर्ग में सिर नीचा करना एक दोष है।
वधूव्रतिनी (स्त्री०) विधवा नियमवती। (जयो० ६/८६)
वध्य (वि०) [वधमर्हति वध्+यत्] मारे जाने योग्य, हत्या किये जाने योग्य।
वध्यः (पुं०) शिकार, हनन।
वध्यपटहः (पुं०) मृत्युदण्ड का घोष।
वध्यभूमिः (स्त्री०) मृत्युदण्ड का स्थल।
वध्यमाला (स्त्री०) मृत्युदण्ड के समय पहनाई जाने वाली माला।
वध्यस्थलं (नपुं०) मृत्युदण्ड का स्थान।
वध्या (स्त्री०) [वध्य+टाप्] वध, हत्या, कातिल।
वध्रं (नपुं०) चमड़े की पट्टी।
वन् (सक०) सम्मान करना, पूजा करना।
०याचना करना, प्रार्थना करना।
०अनुग्रह करना, सहायता करना।
०विनाश करना, नष्ट करना।
वनं (नपुं०) [वन्+अच्] जल। (जयो० १४/७९)
०भुवन, जन-जीवनं भुवनं वनं इत्यमरः (जयो० १४/४७) अरण्य, जंगल, वृक्षदल।
०स्थान। (जयो० १५/७३) (सुद० ४/२)
०विपिन। (जयो०वृ० १३/४७) काननः (जयो० ३/११३)
वनकणा (स्त्री०) पिप्पली।
वनकदली (स्त्री०) जंगली केला।
वनकारिन् (पुं०) जंगली हाथी।
वनक्रीड़ा (स्त्री०) जलक्रीड़ा। ०वन विहार, अरण्य परिभ्रमण। (जयो०वृ० २०/८९)
वनकुञ्जरः (पुं०) जंगली हाथी।
वनकुक्कुटः (पुं०) जंगली मुर्गा।
वनक्षेत्र (नपुं०) वनतानित, अरण्यस्थल। (जयो० १३/७५)
वनखण्डं (नपुं०) जंगल का भाग।
वनगजः (पुं०) जंगली हाथी।
वनगवः (पुं०) जंगली बैल।
वनगहनं (नपुं०) झुरमुट, सघनवन क्षेत्र।
वनगुप्तः (पुं०) भेदिया, जासूस।
वनगुल्मः (पुं०) जंगली झाड़ी।
वनगोचर (वि०) अरण्य को जानने वाला। ०वन क्षेत्र को समझने वाला।
वनगोचरः (पुं०) अरण्य, जंगल।
वनचंदनं (नपुं०) देवदारु का वृक्ष।
वचचन्द्रिका (स्त्री०) चमेली।
वनचम्पकः (पुं०) जंगली चम्पा।
वनचर (वि०) वनवासी, अरण्यचर।
वनचर्या (स्त्री०) अरण्यवास, जंगल में आवास।
वनछागः (पुं०) जंगली बकरा।
वनजः (पुं०) हस्ति, हाथी।
०एक घास विशेष।
वनजा (स्त्री०) जंगली अदरक।
वनजीविन् (वि०) वनवासी, अरण्यवासी।
वनततिः (स्त्री०) वनराजि, वनसम्पदा। (दयो० ९)
वनतानितः (पुं०) वन विस्तार-वनस्य तानिते विस्तारे-वनक्षेत्रं (जयो० ३/७६)
वनदः (पुं०) बादल, मेघ।
वनदाहः (पुं०) दावानल, दावाग्नि।
वनदेवता (पुं०) वनदेवता, वनरक्षक।
वनद्रुमः (पुं०) जंगली वृक्ष।
वनधारा (स्त्री०) वृक्षावलि, छायादार मार्ग।
वनधेनुः (स्त्री०) गाय, गवय।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वननिवासकरः (पुं०) दावैकनाथ। (जयो०वृ० १/३७)

वनपजातः (पुं०) मालिपुत्र, मालाकारतनय। (जयो० ६/७१)

वनपाठः (पुं०) वनरक्षक, (जयो०वृ० १/९०) मालाकार, माली। (जयो० १/७८)

वनपांसुलः (पुं०) शिकारी।

वनपार्श्वं (नपुं०) वनप्रदेश, अरण्यक्षेत्र।

वनपुष्पं (नपुं०) जंगली फूल।

वनप्रवेशः (पुं०) तपस्वी जीवन में प्रवेश।

वनप्रस्थः (पुं०) पठार, सघन वन क्षेत्र।

वनप्रियः (पुं०) कोयल।

०दाल चीनी का वृक्ष।

वन बर्हिणः (पुं०) अरण्य मयूर।

वनभूः/वनभूमिः (वि०) ०वनभूमि ०अरण्यभू, ०गहनावनि। (जयो० १३/४२)

वनभूमिरुपागत (वि०) अरण्य क्षेत्रगत।

वनमक्षिका (स्त्री०) गोमक्षी, डांस।

वनमल्ली (स्त्री०) जंगली चमेली।

वनमाला (स्त्री०) वृक्षावली, सघन वृक्ष पंक्तियां।

वनमालिन् (पुं०) कृष्ण।

वनमालिनी (स्त्री०) द्वारिका पुरी।

वचमुच् (वि०) जल डालने वाला।

वनमूतः (पुं०) मेघ, बादल।

वनमुद्गः (पुं०) अरण्य मूंग।

वनमोच (स्त्री०) अरण्य कदली।

वनरक्षकः (पुं०) वनपालक।

वनराजः (पुं०) सिंह।

वनरुहं (नपुं०) कमल का फूल।

वनलक्ष्मी (स्त्री०) अरण्य शोभा।

०कदली, वनश्री। (दयो० ७०)

वनलता (स्त्री०) जंगली बेल।

वनवह्निः (स्त्री०) दावानल, दावाग्नि।

वनवासः (पुं०) वन में निवास।

वन वासनः (पुं०) गंधबिलाव।

०वानप्रस्थ आश्रम। (जयो० २/११७)

वनवासिन् (पुं०) वनवासी (दयो० ४६) कमल। (जयो०वृ० १८/४७)

वनविचरणं (नपुं०) वन में भ्रमण। (सुद० ८८)

वनव्रीहि (स्त्री०) अरण्य धान्य।

वनशोभनं (नपुं०) कमल। ०अरविंद।

वनश्वन् (पुं०) गीदड़, व्याघ्र गंध बिलाव।

वनश्री (स्त्री०) वनदेवी, वनलक्ष्मी। (दयो० ७०) अरण्य शोभा।

वनसंकटः (पुं०) मसूर।

वनसद् (पुं०) वनवासी।

वनसरोजिनी (स्त्री०) जंगली कपास।

वनस्थः (पुं०) हरिण।

०तापस। (जयो० १/३८)

वनस्थली (स्त्री०) वन सम्पदा समूह। (वीरो० ६/१३)

०आधुनिक शिक्षा केन्द्र।

वनस्पति (स्त्री०) वन सम्पदा, सजीव वृक्ष। (मुनि० ९)

वनस्पतिकायिकः (पुं०) वनसम्पदा, जिनका शरीर वनस्पति होता है। (वीरो० १९/३१) 'वनस्पतिः कायः येषां ते वनस्पतिकायः वनस्पतिकाया एव वनस्पतिकायिकाः (धव० ३/३५७)

वनस्पतिजीवः (पुं०) वनस्पति जीव, जो जीव वनस्पतिकाय नामकर्म के उदय से युक्त होता है।

वनाखुः (पुं०) खरगोश।

वनाग्निः (स्त्री०) दावानल।

वनाजः (पुं०) जंगली बकरा।

वनान्तः (पुं०) अरण्यप्रदेश, जंगली सीमा। (सुद० ४/२३) 'हिंसामहं प्रोज्झितवानथान्ते प्राणांश्च संन्यासितया वनान्ते' (वीरो० ११२२३)

वनान्तरं (नपुं०) उपवन, अरण्य का पृथक् भाग।

वनापगा (स्त्री०) अरण्यसरित, जंगली नदी।

वनारिष्टा (स्त्री०) जंगली हल्दी।

वनार्द्रका (स्त्री०) जंगली अदरक।

वनालक्तं (नपुं०) लाल मिट्टी, गेरुक।

वनालिका (स्त्री०) सूरजमुखी।

वनावनिः (स्त्री०) काननभूमि। (जयो० ३/११३)

वनाश्रमः (पुं०) जंगल में आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, एकान्त वास।

वनाश्रमिन् (पुं०) वानप्रस्थी, संन्यासी, तपस्वी।

वनाश्रयः (पुं०) वनवासी।

वनिः (स्त्री०) [वन्+इ] कामना, इच्छा, वाञ्छा, चाह।

वनिका (स्त्री०) [वनीकन्+टाप्] उपवन, छोटा जंगल।

वनिता (स्त्री०) [वन+क्त+टाप्] वनीजनी। (वीरो० ६/१३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्त्री, महिला।

०पत्नी, गृहिणी, गृहस्वामिनी, पतिपरायण स्त्री, कान्ता। (जयो०वृ० १/११२) (दयो० १/८) योषिता (जयो० ३/६५)

वनिताकथा (स्त्री०) स्त्री सम्बंधी कथा, स्त्रियों के विषय में चर्चा।

वनिताक्षणी (पुं०) श्री लक्षणा। (जयो० ३/३) वनिताविलास। वनिता स्त्रियस्तासां क्षणो विलासविभ्रमादिलक्षण। (जयो० ३/३)

वनिताजनः (पुं०) स्त्री समूह।

वनिताद्विष् (पुं०) स्त्री से घृणा करने वाला।

वनिताधामं (नपुं०) गृहिणीकक्ष।

वनितानन्द (वि०) स्त्री सम्बंधी आनन्द।

वनितानूपुरः (पुं०) स्त्री के नुपूर।

वनितापादः (पुं०) स्त्री के पैर।

वनितामोदः (पुं०) स्त्रियों में आमोद।

वनितालावण्यः (पुं०) स्त्रियों की छवि।

वनितास्नेहः (पुं०) स्त्रीप्रेम।

वनितासौन्दर्य (वि०) स्त्रियों का सौंदर्य।

वनिन् (पुं०) [वन+इनि] वृक्ष, तरु।

०सोमलता।

०वानप्रस्थ।

वनिष्णु (वि०) [वन्+इष्णुच्] मांगने वाला, याचना करने वाला।

वनी (स्त्री०) [वन+ङीष्] जंगल, अरण्य, गुल्म, झुरमुट।

वनीजनी (स्त्री०) वनिता, स्त्री। (वीरो० ६/१३)

वनीयकः (पुं०) [वनि याचनामिच्छतिवनि+क्यच्+ण्वुल्] भिक्षुक, साधु।

वनेकिंशुकः (पुं०) जंगल में किंशुक।

वनेचर (वि०) जंगल में रहने वाला।

वनेचरः (पुं०) वनवासी।

०तपस्वी, सन्यासी।

०वन्यपशु।

०वनदेवता, वनमानुष, पिशाच।

०अरण्यजाति, शवर, भील।

वनेज्यः (पुं०) आम की जाति।

वन्द् (सक०) प्रमाण करना, वन्दना करना, नमन करना। (सम्य० ५८) भूरा जी शान्तये वन्दितुं पादौ लगतु विरागभृतः (सुद० ५/३) 'वन्दे तमेव सततम्' (सुद० ९८)

०आराधना करना, पूजा करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना।

वन्दकः (पुं०) [वन्द्+ण्वुल्] प्रशंसक, चारण, भाट, स्तुतिकर्ता।

०पूजक, अर्चक, स्तुतिकर्ता।

वन्दनं (नपुं०) [वन्द्+ल्युट्] ०नमन, प्रणाम, नमस्कार।

०अभिवादन, प्रणाम, स्तुति।

०आराधना, अर्चना, गुणानुवाद।

०प्रशंसा, कीर्तन।

वन्दनमाला (स्त्री०) वन्दनवार, स्वागत द्वार। (जयो० १४/२३) वन्दन वारण, मत्तवारण (जयो० १०/४७)

वन्दनमालिका देखो ऊपर।

वन्दनवारः (पुं०) मत्तवारण। (जयो० ३/८१)

वन्दना (स्त्री०) पूजा, स्तुति, आराधना। 'वन्दना त्रिशुद्धि द्वयासना चतुःशिरोऽवनति, द्वादशावर्तना। (त०वा० ६/२४)

०साधुओं के छह आवश्यक कर्म में तीसरा आवश्यक कर्म।

०आवर्त पूर्वक सिर झुकाना।

०कायोत्सर्ग पूर्वक नमन।

०तीर्थंकर स्तवन।

वन्दनार्थ (वि०) पूजनीय। (जयो० १/७९) अर्चनार्थ। (समु० ५/३१)

वन्दनी (स्त्री०) पूजा, अर्चना, आराधना, स्तुति।

वन्दनीय (वि०) प्रशंसनीय, प्रणम्य योग्य, सत्कार योग्य। (हित० १८)

वन्दनीया (स्त्री०) हरताल, गौरोचना।

वन्दा (स्त्री०) [वन्द्+अच्+टाप्] भिक्षुणी, सन्यासिनी, आराधक। (भक्ति० ७)

वन्दारु (वि०) [वन्द्+आरु] श्रद्धालु, विनीत, शिष्ट।

वन्दित (भू०क०कृ०) [वन्द्+क्त] आराधित। (जयो० १२/१) पूजित, अर्चित, प्रशंसित।

वन्दित्वा (सं०कृ०) [वन्द्+क्त्वा] पूजकर, स्तुति करके। (वीरो० ५/६)

वन्दिन् (पुं०) [वन्द्+इन्] स्तुति गायक, चारण, भाट।

वन्दी (वि०) [वन्दि+ङीष्] बन्दीगृह।

वन्दीपालः (पुं०) काराध्यक्ष, जेलर।

वन्द्य (वि०) [वन्द्+ण्यत्] पूज्य, सत्कार योग्य, माननीय, सम्मानीय, प्रशंसनीय, नमस्करणीय।

०स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसा का पात्र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वन्द्रः (पुं०) [वन्द्+रक्] भक्त, पूजा करने वाला।

वन्दं (नपुं०) समृद्धि।

वन्ध्या (स्त्री०) बांझ स्त्री। (सम्य० ११६)

वन्धुरा (वि०) शोभायमान। (जयो० १३/५४)

वन्ध्यासुतः (पुं०) वन्ध्यापुत्र, बांझ का पुत्र, एक दार्शनिक दृष्टान्त है, जिसमें पूर्ण अभाव के लिए ऐसा कथन किया जाता है। 'खपुष्पैः कुरुते मूढः स वन्ध्यासुतशेखरम्।' (सम्य० ११६)

वन्य (वि०) [वने भवः यत्] जंगल से सम्बन्ध रखने वाला।

वन्यः (पुं०) जंगली जानवर।

वन्यं (नपुं०) जंगली उपज।

वन्यगजः (पुं०) जंगली हाथी।

वन्यगत (वि०) अरण्य को प्राप्त हुआ।

वन्यजातिः (स्त्री०) अरण्य जनसमूह।

वन्यपादय (पुं०) अरण्य वन सम्पदा।

वन्यप्राणी (स्त्री०) जंगली पशु-पक्षी।

वन्य भिल्लः (पुं०) वनवासी।

वन्यवनस्पतिः (स्त्री०) जंगली वनस्पतियां।

वन्या (स्त्री०) [वन्य+टाप्] वन समूह, झुरमुट।
०जलराशि, बाढ़, जलप्रलय।

वप् (सक०) बोना, बिखेरना, लगाना, रोपना। (जयो०वृ० २/३१)
०मूढ़ना, कांटना।

वपः (पुं०) बीज बोना,
०मूंडना, बुना।

वपनं (नपुं०) [वप्+ल्युट्] बोना, ०मूड्ना, कांटना।
०बुनना। ०वीर्य, शुक्र, बीज।

वपनी (स्त्री०) नाई की दुकान क्षौर शाला।
०तन्तु शाला।

वपा (स्त्री०) चर्वी, वसा।
०छिद्र, रन्ध्र, गर्त।
०बमी, दीमक का टीला।

वपाकृत् (पुं०) वसा, मज्जा।

वपिलः (पुं०) [वप्+इलच्] प्रजापति, वाप, पिताश्री।

वपुनः (पुं०) सुर, देवता।

वपुष्मत् (वि०) [वप्+उसि+मतुप्]
०सुन्दर, मनोहर।
०शक्तिशाली। (समु० २/१८)

वपुष्मती (वि०) दिव्यदेह सम्पन्न। (जयो० २/४४)

वपुस् (नपुं०) [वप्+उसि] शरीर, देह। (सुद० ९८)
०रस, प्रकृति, सौन्दर्य, छवि।
०तनु (जयो० १/४७, जयो० २/४६) 'न वपुषि अशस्ताः' (सुद० १/२९)

वपुस्गुणः (पुं०) रूप की श्रेष्ठता। ०शरीर सौष्ठव।

वपुस्थ (वि०) शरीरस्थ, देहगत। (भक्ति० ३२) वपुषि तिष्ठतीति वपुःस्थ शरीरवर्ती। (जयो० १३/९९)

वपुःस्थ (वि०) शरीरवर्ती, ०देहजन्य।

वप्तृ (पुं०) [वप्+तृच्] पिताश्री, वाप। वप्ता, पिता। (जयो० ३/११६)
०कवि।

वप्तृ (वि०) बोने वाला, पादप लगाने वाला।

वप्रः (वि०) [उप्यते अत्र वप्+रन्] दुर्गप्राचीर, प्राकार, परकोटा। (वीरो० २/२४)
०दीवार, टीला, भित्ति, तटबन्ध।
०नदीतट, पार्श्व, किनारा।
०भवन की मूल नींव।
०खाई, खातिका।

वप्रक्रिया (स्त्री०) प्रहारक क्रिया।

वप्रक्रीड़ा (स्त्री०) तटबन्ध पर भ्रमण की स्थिति। ०नदी तट पर परिभ्रमण।

वप्रच्छल (नपुं०) परकोटे के बहाने। (वीरो० १३/८) ०तट बन्ध का भोग।

वप्रशिखरः (पुं०) परकोटा, खतिका का ऊपरी भाग। (सुद० १/३६)

वप्रि (पुं०) [वप्+किन्] खेत, समुद्र।

वप्री (स्त्री०) [वप्रि+ङीष्] मिट्टी का टीला, पहाड़ी भाग, ऊँचा भाग।

वभ्र (सक०) जाना, पहुंचना, प्राप्त होना।

वम् (सक०) वमन करना, थूकना। (जयो० १/८२)
०बाहर निकालना, उड़ेलना, उत्सर्जन करना।
०अस्वीकृत करना, छोड़ना।

वमः (पुं०) [वम्+अप्] वमन करना, कै करना, छोड़ना, विसर्जन करना।

वमथुः (पुं०) [वम्+असुच्] थूकना, वमन करना, उद्‌वमन, थूत्कार, फूत्कार।

वमथुच्छलं (नपुं०) थूत्कार व्याज, फूत्कार के छल से।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जयो० १३/१००) मतङ्गजैस्तैर्वम थुच्छलेन तदेतदेवो द्वलितं बलेन। (जयो० ३/१००)

वमनं (नपुं०) [वम्+ल्युट्] कै, उल्टी। (जयो०वृ० ६/१०)
०बाहर निकालना, फेंकना। (जयो०वृ० २६/७९)

वमनः (पुं०) गांजा।

वमनी (स्त्री०) जोंक।

वमनीया (स्त्री०) मक्खी।

वमिः (स्त्री०) [वम्+इनि] अग्नि, आग।
०बीमारी, जी मिचलाना।

वमिः (पुं०) ठग, छली व्यक्ति।

वमिहेतु (पुं०) वमन का कारण। (वीरो० २२/९०)

वमितवंत [वम्+शत्] वमन करने वाला। (जयो०वृ० १/८२)

वमी (स्त्री०) [वमि+ङीष्] उलटी करना।

वंभाखः (पुं०) रंभाने की आवाज।

वभ्रः (स्त्री०) चिंडटी।

वभ्रकूटं (नपुं०) बाँबी, बिल।

वय् (सक०) जाना, पहुंचना।

वयनं (नपुं०) [वि+ल्युट्] बुनना।

वयनकीटः (पुं०) मकड़ी, ऊर्णनाम। (जयो० २५/७२)

वयस् (नपुं०) आयु, जीवन, यौवन, बाल्यकार।
०अवस्था, वय, जवानी। वयस्तु यौवने बाल्यप्रभृतौ वया इति वि (जयो० १४/१६)

वयस् (पुं०) काक, कौवा।

वयस्कर (वि०) स्वास्थ्य देने वाला, आयु बढ़ाने वाला।

वयस्गत (वि०) वयस्क, वयोवृद्ध।

वयस्थ (वि०) परिपक्वावस्था।

वयस्था (स्त्री०) सखि। ०सहेली, ०समान वयस्का।

वयस्य (वि०) [वयसा तुल्यः यत्] समवस्क, मित्र, साथी। (समु० ३/१२) समान अवस्था वाला। (सुद० ३/३५)

वयः सन्धि (स्त्री०) तारुण्यमूर्ति। (जयो०वृ० १६/२)

वयस्यवर्गः (पुं०) मित्र समूह। (समु० १/३१)

वयुनं (नपुं०) ज्ञान, विवेक, प्रत्यक्षज्ञानशक्ति।

वयोधस् (पुं०) [वयो यौवनं दधाति-वयस्+धा+असि] युवा, प्रौढ़ व्यक्ति।

वयोभियुक्त (वि०) पक्षियों सहित, वयसा नवयौवनेनाभिव्युक्ता, वदोभि, पक्षिभिरभिर्युक्ता।

वयोरंगं (नपुं०) [वयसो रंगमिव] सीसा, दर्पण।

वयोवृद्धः (पुं०) वय में अधिक। (जयो० २०/८१, दयो० ५९)

वर् (सक०) मांगना, चुनाना, छांटना, वरण करना, वरिष्यति (जयो० ३/८८)

वर (वि०) [वृ-कर्मणि अप्] श्रेष्ठ, प्रधान, प्रमुख, उत्तम, अच्छा। (सुद० १/३७)
०दूल्हा, पति। (दयो० ७९) वरमन्वेषयेद्विद्वान् कन्यायै सर्व सम्मत। (दयो० ७९)
०याचना, अनुरोध, अनुनय, विनती, प्रार्थना। (सुद०९३)
०जमाता, जमाई, कुंवर सा।
०कामुक, कामासक्त।
०तीक्ष्ण। (जयो०वृ० ५/९५)
०कामना, इच्छा, वाञ्छा, चाह।
०उत्तम भाग।
० बल (जयो०) वरेत्यत्र रलयोरभेदाद् बला बलवती। (जयो०)

वरं (नपुं०) केसर, जाफरान।

वरंग (वि०) उत्तम अंग।

वरंगः (पुं०) हस्ति, हाथी।
०सिर, मस्तक।

वरंगना (स्त्री०) कमनीय स्त्री।

वरणं (नपुं०) प्राकार, परकोटा। (जयो० २६/५७) कोट (वीरो० २/२९)

वरचंदना (नपुं०) देवदारु, चीड़ की लकड़ी।

वरणं (नपुं०) ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना। (जयो०वृ ५/९५)

वरटः (पुं०) हंस।

वरटापतिः (पुं०) हंस। (जयो० २५/५२)

वरणार्थ (वि०) वरण करने के लिए। (जयो०वृ० ५/९५)

वरतनु (वि०) सुन्दर शरीर वाला।

वरतनु (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, कामिनी।

वरतन्तु (पुं०) एक ऋषि विशेष।

वरद (वि०) मंगलप्रद, अभीष्टदायक, वरदायक, वरदेने वाला। (जयो० १२/३)

वरदरङ्गः (पुं०) यथेष्ट वरदान का स्थान। वरं ददातीति वरदो यो रङ्गः स्थानम्। (जयो० ७/६५)

वरदर्शन (वि०) सुदर्शन, सुन्दर दर्शन, वरदायक, वरदान।

वरदा (स्त्री०) पुत्री, कन्या, कुमारी कन्या। 'वरं वल्लभं ददातीति वरदा' (जयो० ५/१४) वरं यथेष्टं ददातीति यावत् (जयो० ५/१४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरदान (वि०) वर प्रदान करने वाला।

वरदायक (वि०) वर प्रदाता।

वरदे/वरदेवः (पुं०) उत्तम देव। (जयो० ८/८७) सुदेव।

वरद्रुमः (पुं०) अगर का वृक्ष। ०उत्तम जाति का वृक्ष।

वरनिर्वाचनं (नपुं०) वरचयन। (जयो० ३/६६)

वरपक्षः (पुं०) दुल्हे का पक्ष।

वरप्रस्थानं (नपुं०) विवाह के लिए दूल्हे का प्रस्थान।

वरफलः (पुं०) नारिकेल तरु।

वर बाह्लिकं (नपुं०) केसर, जाफरान।

वरमाल्य (स्त्री०) वरमाला, वरण करने की माली, स्वीकारोक्ति माला। (जयो० ६/१२६)

वरमाला (स्त्री०) वरणमाला।

वरयात्रा (स्त्री०) विवाह के लिए दूल्हे का प्रस्थान।

वरयात्रिकर (वि०) बराती, दूल्हे के साथ चलते वाले व्यक्ति। (जयो०वृ० १२/२८)

वरयातृकसमूहः (पुं०) बराती। (जयो० १०/५५)

वरयानं (नपुं०) विवाह योग्य वाहन। (जयो० १०/५५)

वरयानसमूहः (पुं०) वरयात्रा समूह। (जयो० १०/५५)

वररुचिः (पुं०) प्राकृत व्याकरण का रचनाकार।

वरर्तु (स्त्री०) श्रेष्ठ ऋतु, श्रेष्ठ कान्ति। (जयो० ५/९५)

वरलः (पुं०) बर्र।
०हँसिनी।

वरलब्ध (वि०) वरदान को प्राप्त।

वरलब्धः (पुं०) चम्पक वृक्ष।

वरवत्सला (स्त्री०) चम्पक वृक्ष।

वरवत्सला (स्त्री०) सासू।

वरवर्णं (नपुं०) स्वर्ण, सोना।

वरवर्णशासिका (वि०) श्रेष्ठ रूपधारिणी, वरवर्णिनी, उत्तमकामिनी (जयो० २/५७)

वरवर्णिनी (स्त्री०) रूपिणी स्त्री, सुन्दर स्त्री, कामिनी।
०लक्ष्मी।
०दुर्गा, सरस्वती।

वरवेशधारक (वि०) सुंदर रूप का धारण करने वाला। (जयो० ९/९)

वरसन्नयः (पुं०) वनयात्रिक, बराती। (जयो० १०/५५)

वरस्रजः (पुं०) वरमाला, दूल्हे के वरण की माली, पतिचयन की माला।

वरा (स्त्री०) [वृ+अच्+टाप्] ०त्रिफला-हरड़, बहेड़ा और आंवला।
०सुगंधित द्रव्य।
०हल्दी।

वराक (वि०) बेचारा, दयनीय। वृद्धो वराको जडधी रयेण। (वीरो० ४/२३) असहाय, आर्त, पीड़ाजन्य स्थिति वाला, अभागा, दुःखी, त्रस्त, व्याकुल। (वीरो० ४/२३)

वराकः (पुं०) शिव, संग्राम।
०युद्ध।

वराकी (स्त्री०) दीन। ०बेचारी, ०अभागिन्।
०चकवी। (वीरो० ४/२५)

वराङ्गं (नपुं०) सिर, मस्तक। 'वराङ्गमूर्धगुह्ययो' इत्यमर (जयो० १७/४०) वराङ्गमस्तके योतैः इति वि (जयो० १७/४०)

वराङ्गिन् (वि०) सुंदर देह वाली रूपवती। (वीरो० ४/६३)

वराटः (पुं०) [वरमल्य मटति-अट्+अण्] ०कपर्दिका।
०कौड़ी,
०रस्सी, डोरी।

वराटकः (पुं०) कमल, ०कोड़ी।
०डोरी, रस्सी।

वराटिका (स्त्री०) [वराट्+कन्+टाप्] कौड़ी।

वराणः (पुं०) इन्द्र।

वराणसी (स्त्री०) बनारस नगरी। ०वरुणा और अस्सी नदी का स्थान।

वरारकं (नपुं०) हीरक मणि।

वरार्थ (वि०) वरण योग्य। (जयो० ५/९५)

वरार्ह (वि०) वर के योग्य। (जयो० ४/४०)

वरालः (पुं०) लौंग, लवण।

वराशिः (स्त्री०) [वरं आवरणमश्नुते वर+अश्+इन्] [वरैः श्रेष्ठैः अस्यते क्षिप्यते-वर+अस्+इन्] मोटा कपड़ा, स्थूल वस्त्र।

वरासिराट् (पुं०) श्रेष्ठखड्ग। (जयो० ७/१०६)

वराह। (पुं०) [वराय अभीष्टाय मुस्तादिलाभाय आहन्ति-भूमिन् आ+हृ+ड] सूकर।
०मैंढा, बैल, बादल।

वराहकंदः (पुं०) वराहीकन्द, एक खाद्य पदार्थ।

वराहकर्णः (पुं०) एक बाण विशेष।

वराहकर्णिका (स्त्री०) एक अस्त्र विशेष।

वराहकल्पः (पुं०) वराहावतार का समय।

वराहमिहिरः (पुं०) ज्योतिर्वेत्ता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वराहश्रृंग: (पुं०) शिव, शंकर।

वरिमन् (पुं०) श्रेष्ठता, सर्वोपरिता, प्रमुखता।

वरिवसित (वि०) पूजा गया, अर्चित, सम्मनित, सत्कृत।

वरिवस्या (स्त्री०) [वरिवस: पूजाया: करणं, वरि वस्+क्यप्+अ+टाप्] पूजा, अर्चना, प्रार्थना, सम्मान, सत्कार, भक्ति।

वरिष्ठ (वि०) [वर! उरुर्वा उरु+इष्ठन्] ०सर्वोत्तमता, अत्यन्त श्रेष्ठ, अत्यन्त पूज्य। (वीरो०)
०पूज्य, प्रमुख।
०अत्यन्त विशाल, अत्यन्त विस्तृत।

वरिष्ठ: (पुं०) तीतर पक्षी।
०संतरे का वृक्ष।

वरिष्ठं (नपुं०) तांबा।
०मिर्च।

वरी (स्त्री०) [वृ+अच्+ङीष्] सूर्य की पत्नी छाया, शतावरी का पौधा।

वरीतुम् (वरी+कुमुन्) वरण करने के लिए। (जयो० ५/२)

वरीयस् (वि०) [वर: उरुर्षा उरु+ईयसुन्] ०अधिक समीचीन, उत्तमोत्तम। अत्युच्चै (जयो० १३/३) ०अत्युत्तम, बहुत अच्छा, अच्छे रूप में प्रवर्तित। (वीरो० ९/३५)

वरीवर्तिन् (वि०) उत्तमोत्तम। ०अच्छे रूप में प्रवर्तित।

वरीवर्द: (पुं०) बैल, सांड।

वरीषु: (पुं०) [वर: श्रेष्ठ: इषु यस्य] कामदेव।

वरुट: (पुं०) म्लेच्छ जाति।

वरुड: (पुं०) एक जाति विशेष।

वरुण: (पुं०) आदित्य, सूर्य।
०वृक्ष-सुखाशो राजतिनिशे वरुणे सुमनोरथ इति विश्वलोचन:। (जयो० २१/३२)
०अन्तरिक्ष, समुद्र।

वरुणपाश: (पुं०) घड़ियाल।

वरूथं (नपुं०) बख्तर, कवच।

वरोचित: (वि०) वरयोगय, वरण योगय, विवाह करने योग्य। (दयो० ७०)

वरेण्य (वि०) [वृ+एन्य] ०वान्छनीय, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, प्रमुख, पूज्यमत।

वरोट: (पुं०) [वराणिश्रेष्ठानि उटानि दलानि यस्य] मकवे का पौधा।

वरोटं (नपुं०) बर्र, भिड़।

वर्कर: (पुं०) [वृक्+अरन्] मेमना।
०बकरा, पालतू जानवर।
०आमोद, क्रीड़ा विहार, मनोरंजन।

वर्कराट: (पुं०) [वर्करं परिहासं अटति गच्छति वर्कर+अट्+अण] कटाक्ष, तिरछी नजर।

वर्कुट: (पुं०) कील, अर्गला, चटखनी।

वर्ग: (पुं०) [वृञ्+घञ्]०श्रेणी, विभाग।
०एक राशि, अविभागप्रतिच्छेद।
०समूह समुदाय, समन्वय, एक रूपता। (जयो० ५/२०)
०अनुभाग, अध्याय, परिच्छेद, ग्रन्थ का एक अनुच्छेद/हिस्सा।
०कर्म प्रदेश के अनुभाग।
०प्रवर्ग, टोली, पक्ष।
०भाग। (जयो० १/३)
०कवर्ग आदि का समूह। त्रिवर्ग भावात्प्रतिपत्तिसार: स्वयं चतुर्वर्णविधिं चकार। जनोऽपवर्ग स्थितये भवेऽद: स नाऽभिज्ञत्वममुष्य वेद।। (वीरो० ३/९) 'क-च--ट वर्गाणां भावात्सद्भावाद् ज्ञानान्तरं य: स्वयमेव चतुर्थां वर्णानां त-थ-द-धां विधिं चकार। (जयो०वृ० ३/९)

वर्गघन: (पुं०) वर्ग का घनफल।

वर्गजात (वि०) समन्वय को प्राप्त हुआ।

वर्गणा (स्त्री०) समूह, समुदाय, संख्या योग। (सम्य० ३४) सब जीवों के अनन्तवें भाग प्रमाण वर्गों के समूह-वर्गसमूहलक्षणां' वर्गाणां समूहो वर्गणा भण्यते। (जैन०ल० ९८३)
०असंख्यात लोक प्रमाण योगाविभाग प्रतिच्छेदों की एक वर्गणा होती है।

वर्गणाप्रदेश: (पुं०) वर्गणा नाम, वर्गणा प्रदेश।

वर्गनिसर्ग: (पुं०) वर्ग की रचना। (जयो० १/३)

वर्गपदं (नपुं०) वर्गमूल, संख्या निकालने की पद्धति।

वर्गफल: (पुं०) घनफल।

वर्गबन्ध: (पुं०) अनुच्छेद में विभक्त।

वर्गभाव: (पुं०) अनुभाग, अध्याय।

वर्गमण्डित (वि०) त्रिवर्ग से सुशोभित। कु-चु-टुनामेव समूहसेवित:, (जयो०वृ० ३/२०)
०अपवर्ग विचारक। (जयो० ३/२०)

वर्गमूलं (नपुं०) वर्गमूल, वर्गपद।

वर्गशस् (अव्य०) समूहवार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्गशब्दः (पुं०) प्रत्येक वर्ग शब्द, कवर्ग, चवर्ग, आदि के शब्द। (जयो०वृ० १/२४)
०शब्द संग्रह। (जयो०वृ० १/२४) 'वर्गशब्दस्य जात्यर्थकत्वात्' (जयो०वृ० १/२४)

वर्गशिरः (पुं०) समूह में अग्रणी। वर्गः समूहस्तस्य शिरांसि मस्तकानि। (जयो०वृ० १/६९)

वर्गीय (वि०) [वर्ग+छ] प्रवर्ग से सम्बन्धित, समूह से जुड़ा हुआ।

वर्ग्य (वि०) [वर्गे भवः यत्] एक ही श्रेणी का।

वर्ग्यः (पुं०) सहयोगी, सहपाठी।

वर्च् (अक०) चमकना, प्रकाशित होना, कान्तिगत होना।

वर्चस् (नपुं०) [वर्च्+असुन्] ०शक्ति, बल, वीर्य।
०प्रभा, कान्ति, आभा।
०रूप, आकृति।
०विष्ठा, मल।

वर्चस्कः (पुं०) [वर्चस्+कन्] प्रभा, कान्ति, प्रकाश, आभा, तेज।
०वीर्य, बलु, शक्ति।

वर्चस्मिन् (वि०) [वर्चस्+विनि] ओजस्वी, शक्तिशाली, सक्रिय।
०तेजस्वी, प्रकाशवान्, उज्ज्वल।

वर्जः (पुं०) [वृज्+घञ्] त्याग, परित्याग, छोड़ना।

वर्जनं (नपुं०) [वृज्+ल्युट्] त्याग, परित्याग, छोड़ना, विसर्जन, परिमुंचन।
०तिलांजलि, बहिष्करण।
०क्षति, हानि, चोट, हत्या।
०वैराग्य।

वर्जं (अव्य०) निकालकर, त्यागकर, बाहर करके, निष्क्रान्त।

वर्जित (भू०क०कृ०) [वृज्+क्त] ०विसर्जित, निःसृरित।
०परित्यक्य, उत्सृष्ट, बहिष्कृत।
०वंचित, विरहित।
०हीन, निम्न।

वर्ज्य (वि०) [वृज्+ण्यत्] छोड़ने योग्य, बहिष्कृत किये जाने योग्य।

वर्ण् (सक०) वर्णन करना, व्याख्यान करना, प्रतिपादित करना, चित्रित करना।
०कथन करना, निरूपण करना। 'वर्णी वर्णयते किलाक्ष विषयान्' (मुनि० ३३)

वर्णः (पुं०) वर्ण, शब्द, अक्षर।
०ककार, कवर्ग। (जयो०वृ० १/४८)
०ब्राह्मणादिवर्ण (जयो०वृ० १/४८) वर्णानां ब्राह्मणादीनाम्' (जयो०वृ० १/५१)
०श्रेणी, जाति, वर्ग।
०वंश, प्रकार, जातिभेद।
०ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति, विभूति।
०प्रशंसा, यश।
०रूप, आकृति, छवि। (जयो०वृ० ११/९६)
०रंग, रोगन।
०सौंदर्य, लावण्य।
०सजावट, वेशभूषा।
०अक्षर, ध्वनि, कवर्गादि वर्ण।
०आवरण, चादर, दुपट्टा।
०ढक्कन, चपनी।
०गुण, धर्म।

वर्णं (नपुं०) केसर, जाफरान।

वर्णक (वि०) श्रेणीगत, वर्ग गत।

वर्णकर (वि०) ब्राह्मणादि वर्ण करने वाला।

वर्णकालः (पुं०) वर्णनकाल। ०प्रस्तुति समय।

वर्णकूपिका (स्त्री) दबात, स्याहीपात्र।

वर्णक्रमः (पुं०) परम्परागत, एक वर्ण युक्त, वर्ण व्यवस्था।

वर्णवृति (पुं०) चित्रकार, कलाकार।
०वर्णमाला, कवर्ग क्रम।

वर्णचारकः (पुं०) चितेरा।

वर्णचारिन् (वि०) वर्ण के अनुसार विचरण करने वाला, वर्ण व्यवस्था का अनुसरण करने वाला।

वर्णचेष्टा (स्त्री०) रूपसम्पदा की इच्छा। (जयो० ११/९६)

वर्णज्येष्ठः (पुं०) वर्ण में प्रमुख।

वर्णतूलिः (स्त्री०) कूची, तूलिका, रंगकर्मी की कूची।

वर्णद (वि०) रंग साज।

वर्णदं (नपुं०) दारु लकड़ी।

वर्णदात्री (स्त्री०) हल्दी, हरिद्रा।

वर्णदूतः (पुं०) पत्र, संदेश।

वर्णधर्मः (पुं०) विशिष्ट कर्त्तव्य।

वर्णनं (नपुं०) [वर्ण्+ल्युट्] वर्णन, कथन, विवेचन, निरूपण, प्रतिपादन, विवेचन। (जयो० ६/८५) रूपं प्रविघ्नमिति तस्य च वर्णने कः (सुद० १३४)
०चित्रण, आलेखन, चित्रांकन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०प्रशंसा, स्तुति।

० वक्तव्य, उक्ति, विचार।

वर्णनपर (वि०) वर्णनपरक, वाचक, विवेचक। (सुद० १/४६)
देशादेर्नृपतेश्च वर्णनपर: सर्गोऽयमद्योऽनक:। (सुद० १/४६)

वर्णनीय (वि०) प्रशंसनीय, अक्षरांकन से युक्त। (जयो०वृ० १/२९)

वर्णपदं (नपुं०) अक्षरमाला।

वर्णपातः (पुं०) अक्षरलोप।

वर्णपुष्पं (नपुं०) पारिजात का फूल।

वर्णपुष्पकः (पुं०) पारिजात पुष्प।

वर्ण प्रकर्षः (पुं०) रंगों की महनीयता।

वर्णप्रसादनं (नपुं०) अगर की लकड़ी।

वर्णप्रेमिन् (वि०) सौंदर्य का इच्छुक।

वर्णभङ्गिन् (वि०) वर्णभेद वाला। (वीरो० १७/२८)

वर्णमातृ (स्त्री०) कूचिका, कूची।
०लेखनी, निर्झरणी, प्रसादिनी।
०प्रमार्जनी।

वर्णमातृका (स्त्री०) भारती, सरस्वती।

वर्णमाला (स्त्री०) अक्षरमाला। (जयो० १२/३७) वर्णनां माला-वर्णक्रम। (जयो०वृ० १/४८)

वर्णमालाक्रमः (पुं०) अक्षरमाला के वर्ग का क्रम। (जयो० १/४८)

वर्णयोगः (पुं०) सौंदर्य का संयोग। ०अक्षर संयोग।

वर्णराशिः (स्त्री०) अक्षर माला।

वर्णवर्ति (स्त्री०) तूलिका, कूची।

वर्णवर्तिका (स्त्री०) कूची। ०तूलिका।

वर्णलोपः (पुं०) अक्षरलोप। (जयो० १/३०)

वर्णलोपवती (स्त्री०) वर्णलोप ।

वर्णविधिः (स्त्री०) वर्णस्थापना।
नक्षत्ररीतिरधुना नभसो न भाति,
गुप्तोऽप्युलूकतनस्य तथा सजाति:।
विप्राप्तवंसदनतो नरपामरत्वं,
केषाञ्चिदुद्धरति वर्णविधेर्महत्त्वम्।। (जयो० १८/५०)

वर्ण विलासिनी (स्त्री०) हल्दी, हरिद्रा।

वर्णविलोडक (वि०) अक्षरों की चोरी करने वाला, साहित्यक चोर।

वर्णविशेधिनी (स्त्री०) संशोधकत्री। (जयो० १२/९६)

वर्णवृत्तं (नपुं०) वर्णिक छन्द, जिसमें वर्णों की गणना की जाती है।
सम् अर्धसम विषम
इन्द्रवज्रा, भुजंगप्रपात
यगण, मगण, तगण, रगण, जगण,
भगण, नगण, सगण युक्त छन्द।

वर्ण व्यवस्थितिः (स्त्री०) वर्ण व्यवस्था, वर्णविभाग।

वर्णशिक्षा (स्त्री०) वर्णमाला, की शिक्षा, लिपिज्ञान, अक्षरज्ञान।

वर्णसंकरः (पुं०) अर्न्तजातीय विवाह के कारण उत्पन्न वर्ण। (हित० २४) यदि जन्म संस्काराभ्यां, कौलीन्यमिति कथ्यते। नादीणां किल संस्काराभावात: काऽस्य संगति।। (हित० २३२ श्लोक ७२)
०वर्णों का सम्मिश्रण।

वर्णसंघातः (पुं०) वर्णमाला।

वर्णसाङ्कर्य (वि०) वर्ण मिश्रित। (जयो० ३/८०)

वर्णाङ्कः (पुं०) लेखनी, कलम।

वर्णागमः (पुं०) वर्णों का जोड़ना। ०अक्षर समागम। ०सन्धि।

वर्णापसदः (पुं०) जातिच्युत।

वर्णापेत (वि०) जातिशून्य।

वर्णाश्रमः (पुं०) विविध आश्रम, ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्राम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम। (जयो०वृ० २/११८)
वर्णी-गेहि-वनवासि-योगी। (जयो०वृ० २/११८)
०आर्यप्रवृति, सुन्दर। (जयो०वृ० ११/६)

वर्णाश्रमपद्धतिः (स्त्री०) समान वर्ण व्यवस्था।
आसावर्ण विवाहश्च प्रभवत्यार्षसम्मत:।
समाचारविचारेद्धाऽतो वर्णाश्रमपद्धति:।।
(हित० सं० १९) विस्तार के लिए हित सम्पादक हिन्दी पृ० १९।

वर्णिकछन्द (पुं०) वर्णवृत्त, यगण, मगण आदि गण युक्त काव्य रचना। जात्या वृत्तेनापि लसन्तौ,
सालंकारतया खलु सन्तौ।
सार्द्धविरामायच्च जम्पती,
श्रीछन्दसी गुणेन सम्प्रति।।
(जयो० २२/८१) 'वृत्तेनेति मात्रिक छन्दो जातिर्वर्णिक छन्दश्च वृत्तमिति। (जयो०वृ० २२/८१)

वर्णिका (स्त्री०) लेखनी, कमल, निर्क्षरणी। १. कूची, तूलिका। रंगलेप।
०स्याही, मसि।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्णित (भू०क०कृ०) [वर्ण्+क्त] ०चित्रित, लिखित, रचित, खचित।
०ब्रह्मचर्य योग्य।
०वर्णन की गई, प्रशंसति।

वर्णिन् (वि०) [वर्णोऽस्त्यस्य इनि] ०चित्रवाला, लेख युक्त, रचित।
०वर्ण से सम्बन्धित, जातिगत वर्ण से युक्त।

वर्णिन् (पुं०) [वर्ण+इनि] वर्णी, ब्रह्मचारी।
०गृहस्थवान्, प्रस्थर्षिनामकाः। ब्रह्मचर्य को प्राप्त। (जयो०वृ० १८/४५)
०वर्णि आश्रम, ब्रह्मचर्याश्रम (जयो० २/११७) वाणीभूषणवर्णिनं घृतवरी देवी च यं धीचयम् (सुद० १/४६) 'वर्णि वर्णयते किलाक्षविषयान्स्वप्नेपमा नित्यतः' (मुनि० ३३) जो इन्द्रिय सम्बन्धी विषयों को स्वप्न के समान वर्णित करते हैं, बताते हैं वे वर्णी हैं।

वर्णिनी (स्त्री०) [वर्णिन्+ङीष्] स्त्री, वनिता। एक वर्ण की स्त्री।
०हल्दी।

वर्णुः (पुं०) [वृ+णुः नित्] दिनकर, भानु, सूर्य।

वर्णोघः (पुं०) अक्षर समूह। (जयो० ३/२३)

वर्ण्य (वि०) [वर्ण्+ण्यत्] वर्णन करने योग्य, विवेचन करने योग्य।

वर्ण्यं (नपुं०) केसर, जाफरान।

वर्ण्यभावः (पुं०) वर्णनीयता के भाव, वर्णन करने योग्य विचार। (जयो० ५/३५)

वर्तः (पुं०) [वृत्+घञ्] वृत्ति, जीविका।

वर्तक (वि०) [वृत्+ण्वुल्] वर्तमान, विद्यमान, अवस्थित, स्थित, जीवित।
०संघ प्रवर्तक।

वर्तकः (पुं०) बटेर, लबा।
०घोड़े का सुम।

वर्तकं (नपुं०) पित्तल, कांसा।

वर्तका (स्त्री०) बटेर, लबा।

वर्तकी (स्त्री०) बटेर, लबा।

वर्तन (वि०) [वृत्+ल्युट्] स्थिर रहने वाला, विद्यमान रहने वाला, टिकाऊ रहने वाला।
०स्थिर, विद्यमान, वर्तमान।

वर्तनः (पुं०) ठिगना, बौना।

वर्तनं (नपुं०) वृत्ति, व्यवसाय, ०जीविका, जीवन निर्वाह। (हित० १३)
वर्तनं कस्यचित्कोऽपि, कदाचित् कर्तुमर्हति। (हित० १३)
०चलना, प्रवर्तन, जाना, गमन। (दयो० ६१) चाल चलन, व्यवहार, आचरण। ०व्यापार, क्रय-विक्रय।
०पात्र, भाण्ड। 'वर्तनानां पात्राणाम्' (जयो०वृ० २४/७१) वर्तनादि परिणामतो हितम्। (जयो० २/७७)
०गोलक, गेंद।

वर्तना (स्त्री०) कालाश्रित वृत्ति, परिवर्तित होना, कालाश्रया वृत्ति।
०पुनरभ्यसन, परिणमन। 'वृतेर्णिजन्तात् कर्मणि भावे वा युटि स्त्रीलिंगे वर्तनेति भवति, वर्त्यते वर्तनमात्रं वा वर्तना-इति (स०सि० ५/२२) अपनी सत्ता को स्वीकार करते हुए हर एक द्रव्य की समय-समय पर होने वाले परिवर्तन को वर्तना कहते हैं। (तत्त्वार्थ सूत्र० पृ० ७८)
०प्रवर्तना, परावर्तन, पलटना।

वर्तनिः (पुं०) [वर्तन्तेऽस्यां जनाः, वृत्+निः] सूक्त, प्रशंसा, सूक्ति, स्तुति।

वर्तनिः (स्त्री०) मार्ग, पथ, रास्ता।

वर्तनी (स्त्री०) पथ, रास्ता, मार्ग।
०पीसना, चूर्ण बनाना।
०जीना, जीवन।
०कर्म, गति।

वर्तमान (वि०) [वृत्+शानच्] विद्यमान, स्थित। जीने वाला, ठहरने वाला।
०मुड़ना, चक्कर काटना।
०परिणत होने वाला, परिवर्तन होने वाला।

वर्तमानः (पुं०) वर्तमान काल, अद्यतनकाल। चलने वाला काल। (सम्य० १३७) ०प्रत्युत्पन्न।

वर्तमानकालः (पुं०) सम्प्रतिकाल। (भक्ति० १८)
०वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित काल।

वर्तमानगतिः (स्त्री०) आधुनिक गति, सम्प्रतिकाल की क्रिया।

वर्तमानदृष्टिः (स्त्री०) आधुनिक दृष्टि। ०परिणत दृष्टि।

वर्तमान पथः (पुं०) प्रवर्तन का मार्ग।

वर्तमान स्थितिः (स्त्री०) आधुनिक परिस्थिति।

वर्तरुकः (पुं०) [वर्त+रा+ऊक्] ०पोखर, जोहड़, गर्त, गड्ढा।
०जलावर्त, भंवर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्तिः (स्त्री०) [वृत्+इन्] दशालोचन। (जयो० १०/११४)
पत्राली, बही।
०उबटन, लेप, कज्जल।
०अंगराग, मल्हम।
०दीपक की बत्त।
०झालर, किनारी।

वर्तित (वि० भू०क०कृ०) प्रवर्तित। (जयो० २/१५७)

वर्तिन् (वि०) प्रवर्तित होने वाला, स्थित रहने वाला।
०गतिशील, परिवर्तनशील।
०युक्त। (जयो०वृ० १/११०)
०अनुष्ठाता, अभ्यास करने वाला।
०व्यवहारी, व्यापारी।

वर्तिरः (पुं०) बटेर, लबा।

वर्तिष्णुः (वि०) [वृत्+उलच्] गतिशील रहने वाला, परिवर्तन करने वाला, प्रवर्तित होने वाला, चलने वाला, चक्कर लगाने वाला।
०वर्तुलाकार।
०वर्तमान, विद्यमान।

वर्तुल (वि०) [वृर्त्+उलच्] गोल, कुण्डालाकार, मण्डलाकार।

वर्तुलः (नपुं०) वृत्त।

वर्तुलः (पुं०) मटर।

वर्तुलभङ्ग विभङ्गाकारः (पुं०) जवलेविका, जलेबी, जो गोलाकार तीन चार घेरों से युक्त होती है। (जयो० ३/६०)

वर्तुलाकृतिः (स्त्री०) सुवृत्त, अत्यन्त गोलाकार आकृति। (जयो०वृ० २४/११)

वर्त्मन् (नपुं०) [वृत्+मनिन्] पथ, रास्ता, मार्ग। (सुद० ३/१०) मनोऽपि यस्य नो जातु संसारोचित वर्त्मनि। (सुद० १३२)
०रीति, पद्धति, विधि।
०प्रचलनक्रम, पूर्वानुक्रम।
०धार, किनारा।
०मर्यादा सन्निवेद्य च कुनङ्कैः कुलान्येतवाचरणामिङ्गितं बलात्। आचरेत् स्वकुल सक्तिमानियद्वर्त्मसद्भिरूपतिष्ठितं हि यत्।। (जयो० २/८)

वर्त्मनि (स्त्री०) रास्ता, मार्ग।

वर्त्मबन्धः (पुं०) पलक रोग।

वर्द्धित (भू०क०कृ०) संल्ललित, पालित। (जयो० १३/२२)
०निरादरीकृत् (जयो० २१/७)

वर्त्मभू (स्त्री०) मार्ग स्थान, भूभाग। (जयो० ३/११५)

वर्त्मविरोधिन् (वि०) मार्गविरोधी। (जयो० १३/१३)

वर्त्मसद् (नपुं०) सदाचरण का मार्ग। 'वर्त्म सदाचारमार्गोऽस्ति' (जयो० २/८)

वर्त्मसम्बलः (पुं०) पथ का कलेवा, मार्ग का पाथेय। (समु० ४/३१) पाथेय पथ्य, पाथेय पिण्ड।

वर्द्धमान (वि०) बढ़ते हुए, विकास करते हुए, बृद्धि को प्राप्त। (समु० १/२ दयो० १/३) ०उद्वर्धनशील। (जयो०१८/३७)

वर्द्धमानः (पुं०) सिद्धार्थ पुत्र, त्रिशलानन्दन।
०कुण्डग्राम का राजकुमार, जो वैराग्य धारण कर घोर तपस्वी बना और केवल ज्ञान को प्राप्त कर तीर्थंकर महावीर भी कहलाए।

वर्द्धमानस्वामिन् (पुं०) देखो ऊपर। (जयो० १९/२१)

वर्ध् (सक०) काटना, छेदना, विभक्त करना।
०मूंड़ना, बांटना।
०पूरा करना।

वर्धः (पुं०) [वर्ध्+अच्] काटना, बांधना।
०बढ़ाना, समृद्धि करना।
०वृद्धि, बढ़ोत्तरी।

वर्धकः (पुं०) [वृध्+ण्चि्+ण्वुल्] बढ़ई।

वर्धन (वि०) [वृध्+णिच्+ल्युट्] ०बढ़ने वाला, उगने वाला।
०आवर्धन, समृद्धि करने वाला।

वर्धनः (पुं०) शिव।

वर्धनं (नपुं०) उगना, बढ़ना, शिक्षा देना, उल्लास, उन्नति।

वर्धनी (स्त्री०) बुहारी, झाड़ू।

वर्धनशील (वि०) बर्धिष्णुक। (जयो०वृ० ८/५२)

वर्धमान (वि०) [वृध्+शानच्] बढ़ने वाला, गतिशील होने वाला, वृद्धि कारक।
श्रिया सम्वर्धमानन्तमनुक्षणमपि प्रभुम्।
श्रीवर्धमाननामाऽयं तस्य चक्रे विशाम्पतिः।। (वीरो० ८/६)

वर्धमानः (पुं०) एक जिले का नाम।
०अन्तिम तीर्थंकर महावीर के जीवन का प्रारंभिक नाम।
०श्रीवर्धमाननामाऽयं तस्य चक्रे विशाम्पति' (वीरो० ८/६) वर्धमानस्य अर्हतोऽभिधानतस्तनामोच्चारणपूर्वकं अभिजनं स्वजन्मस्थानं सम्प्राताः। (जयो० ८/२३)
०अर्हत् वर्धमान, तीर्थंकर वर्धमान।

वर्धमानं (नपुं०) ढक्कन, तश्तरी।
०रहस्यमय रेखाचित्र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्धमानकः (पुं०) एक पात्र विशेष, ढक्कन, चपनी।
वर्धमानत (वि०) बढ़ते हुए, विकास करते हुए। (सुद०३/२७)
वर्धय् (अक०) प्रसार करना, विकास करना, फैलाना विस्तृत होना। (सुद० ३/१३) 'जगदाह्लादको बालचन्द्रमा: समवर्धत' (वीरो० ८/७)
वर्धयत् (वि०) बढ़ते हुए, विकास करते हुए-इङ्गितेन निजस्याथ वर्धयन्मोदवारिधिम्। (वीरो० ८/७)
वर्धयन्त (वर्धय्+शतृ) बढ़ते हुए, प्रसार करते हुए।
वर्धस्व (वि०) बधाई। (जयो०वृ० २६/२८)
वर्धापनं (नपुं०) [वर्ध छेदं करोति-वृध्-णिच् आप ततो भावे ल्युट्] ०काटना, बांटना।
०छेदन करना, भेदन करना।
वर्धित (भू०क०कृ०) [वृध्+णिच्+क्त] बढ़ता हुआ, विकास करता हुआ।
०विस्तृत किया हुआ, फैला हुआ।
०विशाल बनाया हुआ।
वर्धिष्णु (वि०) [वृध्+इष्णुच्] ०वर्धनशील, विकासशील।
०फलने फूलने वाला।
०उमड़ने वाला, वृद्धिशील। बर्द्धिष्णुरधुनाऽऽनन्द-वारिधिस्तस्य तावता। (जयो०वृ० १/१०२) 'गुण समुद्रो वर्धिष्णु: वृद्धिशीलोऽभवत्' (जयो०वृ० १०२)
वर्धिष्णुक (वि०) वर्धनशील, बढ़ती हुई, वृद्धिगत। तेजोनिधौ सोमसुते प्रतीपा वर्धिष्णुके मृत्युमुखे समीपात्। (जयो० ८/५२)
वर्ध्रं (नपुं०) [वृध्+रन्] पट्टी, बेल्ट।
०सीसा, दर्पण।
वध्रिका (स्त्री०) [वर्ध+ङीष्+कन्+टाप्] चमड़े की पट्टी, कमरबन्द।
वर्मन् (नपुं०) [आवृणोति अंगं-वृ-मनिन्] ०कवच।
०छाल, वल्कल। (जयो० ८/१३)
वर्मणः (पुं०) नारंगी तरु।
वर्मिः (पुं०) वामी मछली, मत्स्य विशेष।
वर्मित (वि०) [वर्मन्+इतच्] कवच युक्त, कवचधारी। (जयो० ३/१००)
वर्मितुं (वर्म्+तुमुन्) कवचित, कवच करने के लिए। (जयो०२१/४)
वर्य (वि०) [वृ+यत्] सर्वोत्तम, उत्कृष्ट।
०मुख्य, प्रधान, प्रमुख।
वर्याः (पुं०) कामदेव, मदन।
वर्या (स्त्री०) वरण करने वाली कन्या।
वर्वरः (पुं०) वर्वर जाति, भील जाति।
०बुद्धु, प्रलापी, मूर्ख।
०जाति च्युत, बहिष्कृत।
वर्वर (वि०) [वृ+अरच्] बल खाता हुआ, हकलाने वाला।
वर्वरकं (नपुं०) [वर्वर+कन्] चन्दन लकड़ी।
वर्वरं (नपुं०) पीला चंदन।
०सिंदूर।
वर्वरा (स्त्री०) मक्खी।
०वनतुलसी।
वर्वरीकः (पुं०) [वृ+ईकन्] घुंघराले बाल।
वर्षः (पुं०) [वृष् भावे घञ् कर्तरि अच् वा] द्वन्दसमासे वर्षम्। वर्षा, बारिश। मुमुदे समुदीक्ष्य ततपतिर्भुवि वर्षामिव चातकः सतीम् (सुद० २/३०)
०छिड़कना, सींचना, फेंकना, उत्सरण, बौछार।
वर्षः (पुं०) वर्ष, साल,
वर्षं (नपुं०) भारतवर्ष। (जयो०वृ० १/६) वत्सर, संवत्सर।
०क्षेत्र, स्थान। (भक्ति० ३४) (जयो० १/६)
वर्षक (वि०) बरसने वाला, गिरने वाला।
वर्षकरः (पुं०) मेघ, बादल।
वर्षकोषः (पुं०) ०मास, महीना।
०ज्योतिषी, निमित्तशास्त्री।
वर्षगिरि (पुं०) वर्ष पर्वत, वर्षधर पर्वत।
वर्षज (वि०) बरसात से उत्पन्न।
वर्षणं (नपुं०) [वृष+ल्युट्] वर्षाकाल वृष्टि, वर्षा। (वीरो० १२/३३) (जयो० ८/६२) (सुद० ३/३२)
०सिंचन, बौछार।
वर्षधरः (पुं०) मेघ, बादल।
वर्षधरगिरि (पुं०) वर्षधर पर्वत। (त०सू० ५१) तद्विभाजिन: पूर्वापरायता हिमवन् महाहिमवन्निषध नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधरपर्वता:। (त०सू० ३/११)
वर्षपूगः (पुं०) वर्षों का समुच्चय।
वर्षप्रतिबन्धः (पुं०) अनावृष्टि, सूखा, अकाल। वर्षाभाव।
वर्षप्रियः (पुं०) चातक पक्षी, चक्रवाक।
वर्षयन्त (वृष्+शतृ) बरसते हुए। 'अखण्डरूपेण जगज्जनेभ्यो ऽमृतं समन्तादपि वर्षयन्तम्। (वीरो० १३/२४)
वर्षवरः (पुं०) हिजड़ा, अन्त:पुर रक्षक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्षवृद्धिः (स्त्री०) जन्मदिन।

वर्षशतं (नपुं०) सौ वर्ष।

वर्षसहस्रं (नपुं०) एक हजार वर्ष।

वर्षा (स्त्री०) [वृष्+अच्+टाप्] वर्षाकाल। (वीरो० ६/२) ०वर्षाऋतु-पत्रशाकं च वर्षासु नाऽऽहर्तव्यं हयावता। (सुद० १२९)
०मेघवृष्टि, वर्षा, बरसात, वर्षा होना। (सुद० २/५०)
'वर्षायां तु न निर्व्रजेत् पथि पुनर्वर्षयत्सुमेघेषु च। (मुनि०९)

वर्षाऋतु (स्त्री०) वर्षा का समय, पयोदकाल (भक्ति १४) बरसात का समय। (भक्ति० १४)

वर्षाकालः (पुं०) पयोदकाल, वर्षा का समय। (वीरो० ६/२) (वीरो० २/१५)

वर्षाक्लेशः (पुं०) वर्षाभाग का कष्ट। (जयो० वृ० २२/१२)

वर्षान्तर (पुं०) क्षेत्र के बीज, स्थान के मध्य। (भक्ति० ३४)

वर्षान्तर पर्वतः (पुं०) क्षेत्रों के मध्य आए हुए कुलाचल। (भक्ति० ३४) वर्षोषु वर्षान्तर, नन्दीश्वरे यानि च मन्दरेषु। (भक्ति०३४)

वर्षाभू (पुं०) मेंढक।

वर्षाम्बु (नपुं०) चातुर्मास, वर्षाकाल का संयोग। (सम्य० १५६)
* श्रावण कृष्ण प्रतिपदा से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तक। "पञ्चम्या नभसः प्रकृत्यभवतादूर्जस्विनी या क्षमा, तावद्ध सशतावधौ निवसतादेकत्र लब्ध्वा समां। एतस्मिन्भवति स्वतोऽवनिरियं प्राणिव्रजैराकुला, संजायेत ततोऽर्हतां सुमनो सावुज्जजृम्भे तुला। (मुनि० ७)

वर्षार्चिस् (पुं०) मंग्रलग्रह।

वर्षावसरसमयः (पुं०) शरद काल। (जयो० ४/९)

वर्षावसारः (पुं०) बौछार, दृष्टि। कलिर्नुलिफल। (वीरो० ४/६)

वर्षिका (स्त्री०) वर्षाकत्री। (जयो० १५/२४)

वर्षितं (नपुं०) [वृष्+क्त] वर्षा, वृष्टि।

वर्षिष्ठ (वि०) [अतिशयेन वृद्ध] अत्यन्त वृद्ध, बहुत बूढ़ा।

वर्षीयस् (वि०) अधिक बड़ा।

वर्षुक (वि०) [वृष्+उकञ्] जलमय, बरसने वाला, देह।

वर्ष्मन् (नपुं०) शरीर, देह।

वर्हः (पुं०) मयूर। (समु० ७/२५)

वल् (सक०) जाना, पहुंचना, ठकना, घेरना।

वल् (अक०) मुंडना, आकृष्ट होना, अनुरक्त होना।

वलग्नः (पुं०) [अवलग्न इत्यत्र भागुरिमतेर अकरलोपः] कमर।

वलग्नं (नपुं०) कमर, कटि।

वलनं (नपुं०) [वल् भावे ल्युट्] ०घूमना, चक्कर काटना, मुड़ना।
०गोलाकार, मण्डलाकार, वर्तुलाकार।

वलभी (स्त्री०) छज्जा। (जयो० १०/६१)

वलभी (स्त्री०) एक नगरी, स्थान विशेष। श्वेताम्बर जैनागमों की एक वाचना वलभी वाचना के रूप में प्रसिद्ध है। यह वाचना महावीर निर्वाण के ९८० में देवर्धिगणी की अध्यक्षता में हुई थी।

वलभीतलं (नपुं०) छज्जा। (जयो० १०/६१)

वलयः (पुं०) [वल्+अयन्] कंगन, कड़ा, हाथ के आभूषण।
०गोलाकार कंकण।
श्री वीरमातुर्वलयानि तानि माणिक्यमुक्तादिविनिर्मितानि। (वीरो० ५/१५)
०छल्ला, कुंडल।
०वृत्त, परिधि, मण्डल। (जयो० ५/८६, ९/६९)
०बाड़, घेरा, झाड़बन्दी।
०गलगण्ड रोग।

वलयस्वनं (नपुं०) कंकणशब्द, कंगनध्वनि। (जयो० १४/२५)

वलयाकारः (पुं०) वर्तुलाकार।

वलयावारकंकणं (नपुं०) गोल कंगन।

वलयाकारकुंडल (नपुं०) गोलाकार कुण्डल।

वल्याकारगिरि (पुं०) मण्डलकार पर्वत।

वल्याकारपृथिवी (स्त्री०) गोल भूभाग।

वलयाकुल (वि०) कङ्कणसहित व्याकुल। (जयो० १७/८५)

वलयाङ्कित (वि०) कंगनाङ्कित (जयो० १८/१००) वलयेन कटकेन अङ्कितः (जयो०वृ० १८/१००)

वलयित (वि०) [वलय+इतच्] घिरा हुआ, परिवृत्त, चारों ओर लपेटा गया।

वलारि (स्त्री०) इन्द्रपुरी। (जयो०वृ० २४/२९)

वलायमरणं (नपुं०) संयमहीन मरण।

वलाहकः (पुं०) मेघा, बादल। (जयो० ५३)

वलिः (स्त्री०) [वल्+इन्] शिकन, झुर्री, सिकुड़न।

वलिकः (पुं०) छत का किनारा।

वलित (भू०क०कृ०) [वल्+क्त] तिरछी, टेढ़ी, तिर्यक्। (जयो० १३/२६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०घिरा हुआ, लिपटा हुआ।
०झुर्रियों युक्त, झुर्रीदार।
०गतिशील, प्रवाहमान।
वलित्रय (वि०) तीन रेखाओं वाली। (वीरो० ६/७)
वलिन् (वि०) झुर्रीदार, आकुंचित।
वलिर (वि०) [वल्+किरच्] भैंगी आँख वाला।
वलिशं (नपुं०) मछली पकड़ने का कांटा।
वलीकं (नपुं०) [वल्+कीकन्] ओलती, छप्पर का किनारा, मुंडेर।
वलूकः (पुं०) पक्ष विशेष।
वलूकं (नपुं०) कमलनाल।
वलूल (वि०) [वल्+लच्] बलवान, शक्तिमान्, हृष्ट पुष्ट।
वल्ल् (सक०) बोलना, कहना।
वल्कः (पुं०) वृक्ष की छाल। (सम्य० ४९)
वल्कं (नपुं०) वृक्ष की छाल।
०भाग, खण्ड, अंश, हिस्सा।
वल्कतरु (पुं०) वृक्ष, तरु, छाल वाला पेड़।
वल्कलः (पुं०) [वल्+कलच्, कस्य नेत्वम्] ०वल्कल, छाल का वस्त्र। (सम्य० १४९)
वल्कलं (नपुं०) देखो ऊपर।
वल्कवन् (वि०)पपडी युक्त मछली।
वकलसंवीतः (पुं०) छालवस्त्र धारण करने वाला।
वल्किलः (पुं०) [वल्क्+इलच्] कांटा।
वल्कुटं (नपुं०) छाल, वल्कल।
वल्ग् (सक०) उछलना, इधर-उधर जाना।
०छलांग मारना, कुलांच भरना, चौकड़ी भरना।
०कूदना।
वल्गनं (नपुं०) [वल्ग्+ल्युट्] उछलना, कूदना, दौड़ना, चौकड़ी भरना।
०लगाम। (दयो० ४०)
वल्गा (स्त्री०) [वल्ग्+अच्+टाप्] ०लगाम, रास।
वल्गित (भू०क०कृ०) [वल्ग्+क्त] ०उछला हुआ, कूदा हुआ।
०गतिशील किया गया, नचाया गया।
वल्गितं (नपुं०) दौड़, चलना, नाचना, कूदना।
वल्गुन (वि०) [वल् संवरणे उ गुक् च] प्रिय, रमणीय, मनमोहक, सुंदर, मनोज्ञ।
०आकर्षक, लुभावना, मधुर, श्रेष्ठ।
०मूल्यवान।
वल्गुः (पुं०) बकरा, अज।
वल्गुक (वि०) [वल्गु+कन्] प्रिय, मनोहर, रमणीय।
वल्गुकं (नपुं०) चंदन।
०मूल्य।
०लकड़ी।
वल्गुलः (पुं०) [वल्ग्+उल] गीदड़।
वल्गुलिका (स्त्री०) [वल्गुल+कन्+टाप्] तैल चोर।
०पेटी।
०डिब्बा।
वल्भ् (सक०) खाना, निगलना, आस्वादन करना, चखना।
वल्मी (स्त्री०) [वल्+अच्+ङीष्] चिऊँटी, चींटी।
वल्मीकं (नपुं०) वामी।
वल्मीकूटं (नपुं०) वामी, दीमक निर्मित मिट्टी का ढेर, कुटी। (दयो० २२/)
वल्युल् (सक०) काट डालना।
वल्ल् (सक०) ढकना। ०आच्छादित करना।
वल्लः (पुं०) चादर, आवरण, ढक्कन, प्रवारण।
०भार विशेष, तीन गुंजाओं का तौल।
०प्रतिषेध।
वल्लकिका (स्त्री०) ०वीणा, ०एक वाद्य विशेष।
वल्लकी (स्त्री०) [वल्ल्+क्वुन्+ङीष्] वीणा। (जयो० १०/८) (सुद० २/१२)
वल्लभ (वि०) [वल्ल्+अभच्] ०प्रिय, मनोज्ञ, प्यारा, इष्ट, प्रेय। (जयो० १/९६)
०सर्वोपरि, अभिलषित।
वल्लभः (पुं०) प्रेमी, स्नेही, प्रिय. पति।
०कृपापात्र, दयागत।
०अधीक्षक, अध्यवेक्षक।
वल्लभता (वि०) मनोज्ञ, प्रियता, रमणीयता। (वीरो० २१/१)
'शिवश्रियं यः परिणेतुमिद्धः समाश्रितो वल्लभतां प्रसिद्धः'
वल्लभभाई पटेलः (पुं०) बीसवीं शताब्दी के नेता, जो मृदुस्वभाषी थे। (जयो० १८/८१)
वल्लभाचार्यः (पुं०) वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक।
वल्लभायितं (नपुं०) [वल्लभ्+क्यङ्+क्त] रति बन्ध, सुरत क्रीड़ा की पद्धति।
वल्लरं (नपुं०) [वल्ल्+अरन्] अगर की लकड़ी।
०निकुंज।
०झुरमुट।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्लरी (स्त्री०) [वल्ल्+अरि+ङीष्] बेल, लता।
०मञ्जरी। (दयो० ११२)
वल्लव: (पुं०) ग्वाला, गोपाल।
वल्लि: (स्त्री०) लता, बेल, गुल्म।
०भू, भूमि, धरा।
वल्ली (स्त्री०) लता, बेल। (जयो० १४/१७) गुल्म। (जयो०वृ० ३/३९)
वल्लीलं (नपुं०) मिर्च।
वल्लीवृक्ष: (पुं०) सालतरु।
वल्लुरं (नपुं०) [वल्ल्+उरन्] निकुंज, पर्णशाला।
०मंजरी।
०अरण्य।
०रेगिस्तान।
०सूखा मांस।
वल्ह् (अक०) प्रमुख होना, सर्वोत्तम होना।
वल्ह् (सक०) बोलना, कहना।
०चोट पहुंचाना, ढंकना।
०मार डालना, नष्ट करना।
वश् (सक०) चाहना, इच्छा करना, अभिलाषा करना, लालसा करना।
०अनुग्रह करना।
०चमकना।
वश (वि०) [वश् कर्तरि अच् भावे अप् वा] ०आधीन, प्रभावगत, नियंत्रणगत। (सुद० ७२) पुण्याशयवशाज्जातं शुद्धलेश्यावलम्बनात्। (सम्य० ११५)
०अभिलाषा, वाञ्छा, चाह, इच्छा। (जयो० ६/९९)
०शक्ति, प्रभाव, स्वामित्व, अधिकार।
वशंकर (वि०) आधीन युक्त। (जयो० १३/९९)
वशकृत (वि०) वशीगत। (जयो० ४/४८)
वशंगत (वि०) वशवर्तिता को प्राप्त, अधिकार को प्राप्त हुआ। अनेकविघ्नप्रकरेऽत्र येन, सन्मानसोत्साह वशंगतेन। (सम्य० ९५)
वशङ्ग (वि०) लोलुपी। (सुद० १२७)
वशंवद (वि०) [वश्+वद्+खच्] ०आज्ञाकारी, समझदार। (जयो० २/६५) ०अनुवर्ती, ०विनीत, ०आधीन, प्रभावित। (समु० ३/७)
वशका (वि०) ०आज्ञाकारिणी भार्या, ०प्रिया।
वशग (स्त्री०) वशवर्ती, आज्ञाकारी। (सुद० ११२)
वशवर्तिन् (पुं०) सेवक, भृत्य, प्रिया।
वशवर्तिन् (पुं०) सेवक, भृत्य, अनुचर। (सुद० १२१, जयो० १६/६३, सुद० ३/४२)
वशा (स्त्री०) [वश्+अच्+टाप्] ०अबला, वनिता, नारी, कन्या, नारी। 'वशास्त्रियां सुतायाञ्चेति' विश्वलोचन:' (जयो० १३/२०)
०पत्नी, भार्या, प्रिया।
०पुत्री, ननद।
०गाय।
०हथिनि।
वशि: (स्त्री०) आधीनता, सम्मोहन।
वशिक (वि०) [वश्+ठन्] शून्य, रहित।
वशिताभृत (वि०) जितेन्द्रिय। 'वशी सुगतशक्रयोरि' ति कोषसद् भावात्' (जयो०वृ० ३/२९)
वशिन् (वि०) [वश: अस्त्यस्य इनि] ०शक्तिशाली, बलशाली।
०विज्ञ, पाठक। (जयो० ७/१०२)
०आधीन, वशीभूत।
०विनीत, नम्र, जितेन्द्रिय। (जयो० १२/१)
वशिनिन्दित (वि०) संयमधारिघृणित। (जयो० २६/२३)
वशिनी (स्त्री०) [वशिन्+ङीप्] शमीवृक्ष।
वशिर: (पुं०) [वश्+किरच्] एक प्रकार का मिर्च।
वशिरं (नपुं०) समुद्री नमक।
वशीगत (वि०) आधीनता को प्राप्त हुआ। (जयो० ४/४८)
वशेन्द्रियत्व (वि०) जितेन्द्रियत्व। (वीरो० १६/१५)
वश्य (वि०) वशीभूत, आधीनता युक्त। (सुद० १/३२)
वश्य: (पुं०) सेवक, भृत्य, अनुचर। आधीन-कुतोऽस्य वश्य: न हि तत्त्वबुद्धि। (वीरो० ५/३१)
०साधक का दोष, मंत्र-तन्त्र के उपदेश से दाता को आधीन करना।
वश्यका (स्त्री०) [वश्य+कन्+टाप्] आज्ञाकारिणी पत्नी, विनम्रा, विनीता।
वष् (सक०) मारना, नष्ट करना,
०क्षति पहुंचाना, वध करना।
वषद (अव्य०) [वह्+उषटि] आहूति के समय उच्चरित होने वाला शब्द।
वष्क् (सक०) जाना, पहुंचना।
वष्कय: (पुं०) [वष्क्+अयन्] छोटा बछड़ा, एक वर्ष का बछड़ा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वष्कयणी (स्त्री०) [वष्कय+नी+क्विप्+ङीष्] चिर प्रसूता गाय, बहुत दिनों से ब्याही हुई गाय।

वस् (अक०) रहना, ठहरना, निवास करना।
०स्थित होना, खड़े होना।
०विद्यमान होना।
०अवस्थित रहना। (सुद० ९८) 'किमुशर्करिले वसति हतत्वाद्। (सुद० ९८)
०स्थिर होना, सीधा होना।

वसतिः (स्त्री०) [वस्+अति वा ङीष्] ०रहना, स्थित होना, ठहरना।
०नगर, पुर। (मुनि० १९)
०घर, आवास, निवास, स्थान।
०आधार, आश्रय, आशय, पात्र।
०शिविर, पड़ाव, छावनी, डेरा।

वसनं (नपुं०) [वस्+ल्युट्] ०रहना, ठहरना, रुकना, निवास।
०घर, आवास, स्थल।
०प्रसाधन करना, धारण करना, पहनना।
०वस्त्र, कपड़ा, परिधान। (जयो० १२/९९) 'वसनेभ्यश्च तिलाञ्जलिमुक्त्वा' आह्वयति तु दैगम्वर्यन्तत्। (सुद० ८१)
०वेष। (सुद० ७५)
०करधनी, कंदौरा, कमरबन्द। तगड़ी।

वसनगत (वि०) वस्त्र सहित।

वसनजात (वि०) परिधान सुसज्जित।

वसनताटंकः (पुं०) वस्त्राभूषण।

वसनत्यक्त (वि०) वस्त्र त्याग करने वाला, निर्ग्रन्थ, दिगम्बर।

वसनधर (वि०) वस्त्रधारक।

वसनमुक्त (वि०) निर्ग्रन्थ।

वसनाभरणं (नपुं०) वस्त्राभरण। (जयो० १३/७६)
०वस्त्राभूषण (सुद० ७५) वसनाभरणैरादरणीयाः सन्तु मूर्त्तयः किन्तु न हीयान्। (सुद० ७५)

वसन्तः (पुं०) वसन्त ऋतु, ऋतुराज। (सुद० ४/१) (जयो० ४/४) (जयो० १/७३) 'स वसन्तः स्वीक्रियतां सन्तः सवसन्तः' (सुद० ८१) स वसन्त आगतो हे सन्तः। स वसन्तः।
०चैत्रमास, वसन्तोत्सव।

वसन्त (वस्-शतृ) रहते हुए। (सुद० १/२७)

वसन्तकालः (पुं०) वसन्त का समय।

वसन्तघोषिन् (पुं०) कोयल।

वसन्तजा (स्त्री०) माधवी लता, वसन्तोत्सव।

वसन्ततिलकः (पुं०) वसन्त की शोभा, वसन्त ऋतु का अलंकरण।

वसन्तदूतः (पुं०) कोकिल, कोयल, कुहू कुहू शब्द।
०चैत्रमास।

वसन्तदूती (स्त्री०) शृंगवल्ली का पुष्प।

वसन्तद्रु (पुं०) आम्र तरु।

वसन्तद्रुमः (पुं०) आम्र तरु।

वसन्तपंचमी (स्त्री०) ऋतु की पञ्चमी।

वसन्तबन्धुः (पुं०) कामदेव, मदन।

वसन्तर्तु (स्त्री०) वसन्त का समय।

वसन्तऋतु (स्त्री०) वसन्तमास। (वीरो० ६/३६) वन्योमधो पाणिधृतिस्तदुक्तं पुंस्कोकिलैर्विप्रवरैस्तु सूक्तम्। (वीरो० ६/१४)

वसन्तश्री (स्त्री०) वसंत शोभा। 'वेणी वसन्तश्रिय एव रम्याऽसौ शृंखला कामगजेन्द्रगम्या' (वीरो० ६/२६)

वसन्तसम्राट्ः (पुं०) वसन्त राज, वसन्त ऋतु, ऋतुराज वसन्त। (वीरो० ४/५)

वसन्तसम्पदा (स्त्री०) वसन्तश्री। (समु० २/१४)

वसन्तसेना (स्त्री०) वसन्त सेना वेश्या, जो आर्यिका बनकर तप पूर्वक स्वर्ग को प्राप्त हुई।
०एक पण्याङ्गना (दयो० ६९) सर्वार्थासिद्धिं खलु सोम आप वसन्तसेना च विषा निरापत्। (दयो० १२५)

वसा (स्त्री०) [वस्+अच्+टाप्] ०मेद, चर्बी, मज्जा।

वसाढ्यः (पुं०) सूंस।

वसापायिन् (पुं०) कुत्ता, श्वान।

वसि (नपुं०) [वस्+इनि] वस्त्र, परिधान।
०निवास, आवास।

वसित (भू०क०कृ०) [वस्+णिच्+क्त] ०स्थित, रहता हुआ, धारण किए हुए।
०निवास युक्त।

वसिष्ठः (पुं०) एक मुनि, तापस।

वसुः (पुं०) कौशला पुरी निवासी गणधर अचल के पिता श्री, नवें गणधर के पिता। वसुः पिताऽम्बाऽस्य वभौ च नन्दा सा कौशलाऽऽख्या नगरीत्यमन्दा। (वीरो० १४/१०)
०कुबेर, अग्नि, शिव, सरोवर, तालाब। ०वसु राजा।

वसु (नपुं०) [वस्+उन्] धन, सम्पत्ति, वैभव।
०मणि, रत्न, स्वर्ण। (समु० ३/३०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०जल, वारि।
०वस्तु द्रव्य।
०हाटक। (जयो० ३/७८)
वसुकः (पुं०) आक पादप।
वसुकं (नपुं०) रत्न, मणि। भो भो! भट्टिनि भद्रमित्र वसुकं, भारं तु मे देहि तत्। (समु० ३/४४)
०समुद्री नमक।
०शिलीभूत नमक, लोडी नमक।
वसुकसारा (स्त्री०) प्रकाश, किरण।
०अमरावती, अलकापुरी।
वसुकीटः (पुं०) भिक्षुक।
वसुकृमि देखो ऊपर।
वसुदा (स्त्री०) भूमि, भू, धरा।
वसुदेवः (पुं०) कृष्ण के पिता।
०वसुदेव राजा। (वीरो० १७/१८)
वसुदेव्या (स्त्री०) घनिष्ठा नक्षत्र।
वसुधा (स्त्री०) भू, धरा, पृथ्वी। (जयो० ६/४)
०भूतल, भू भाग। (जयो० ११/५२)
वसुधातिवर्तिः (स्त्री०) स्वर्गीय सुख। ०परमानन्द। 'यतो वसुधामतीत्य वर्तते सुधातिवर्ति' (जयो० ११/५२)
वसुधामं (नपुं०) रत्न स्थान, मणिमुक्ताओं का स्थान। 'वसूनां रत्नानां धाम स्थानभूता' (जयो० १२/५)
वसुधालयः (पुं०) धरानिवासी 'न सुधा वसुधालयैस्तु पीतोत्तममस्यास्तु हविः कवीन्द्र गीतौ। (जयो० १२/७०)
वसुधावलयः (पुं०) भूतल। (वीरो० २२/८)
वसुधावसु (नपुं०) पृथिवी रत्न, भूरत्न। वसुधायाः पृथिव्यां वसुरूपां रत्नतुल्याम्' (जयो०वृ० ५/७)
वसुधासुधानिधानं (नपुं०) पृथ्वी के सुधाकर। 'वसुधायाः पृथिव्याः सुधानिधाने चन्द्रमसीव' (जयो० ६/५०)
वसुधैवकुटुम्बिन् (पुं०) पृथ्वीमात्रस्य बन्धु, भू भाग रूप कुटुम्बी।
वसुन्धरा (स्त्री०) [वसूनि धारयति वसु+धृ+णिच्+खच्+टाप्] ०नाना रत्नधारिणी, ०भूमि, ०पृथ्वी, ०धरिणी, ०धरती। (वीरो० ४/११)
वसुप्रणाशः (पुं०) ०रत्न हड़पना, ०रत्न ले लेना। *भूमि को छीनना। * ममर्तादीनस्य वसुप्रणाशात्, किं शाम्यता तेऽपधियो दुराशा। (समु० ३/३६)
वसुभानु (पुं०) नररत्न। (जयो० ४/३८) ०नरेंद्र, नृप। ०सज्जन।
वसुभूति (पुं०) मगध देशान्तर्गत गोबर ग्राम निवासी वसुभूति ब्राह्मण (वीरो० १४/४)
वसुमत् (वि०) [वसु+मतुप्] धनवान, वैभवसम्पन्न।
वसुमती (स्त्री०) धरणी, धरती, धरा, पृथ्वी। (जयो० २१/१४)
वसुमतीवलयः (पुं०) महीमण्डल, भूभाग। (जयो० ५/२७)
वसुराजा (स्त्री०) न्यायधीश वसुराजा। (वीरो० १८/५०)
वसुरेतस् (पुं०) आग, अग्नि।
वसुर्वाग्विवश (वि०) वसुराजा के वचन से विवश हुआ। 'न्यायाधिपः प्राह च पार्वतीयं वचो वर्सुर्वाग्विवशो महीयम्। (वीरो० १८/१५)
वसुलः (पुं०) [वसु+ला+क] अमर, देव, देवता।
वसुसारः (पुं०) रत्ननिकट, रत्नसमूह। (जयो० १२/६६)
०पृथ्वी खनिज सम्पदा।
वसूपयुक्तभूति (पुं०) वसुभूति ब्राह्मण, मगध देशान्तर्गत गोबर निवासी ब्राह्मण। (वीरो० १४/४)
वसूरा (स्त्री०) [वस्+अरच्+टाप्] गणिका, वेश्या, रण्डी।
वस्क् (सक०) जाना, पहुंचना, प्राप्त होना।
वस्कराटिका (स्त्री०) बिच्छू, वृश्चिक।
वस्त् (सक०) क्षति पहुंचना, नाश करना।
०मांगना, याचना करना।
वस्त् (नपुं०) आवास, निवास।
वस्तः (पुं०) बकरा, अज।
वस्तकं (नपुं०) [वस्त+कै+क] कृत्रिम लवण।
वस्तिः (स्त्री०) [वस्+नि] आवास, निवास, रहने का स्थान, जहां लोगों का परिकर हो।
०उदर।
०पेटू।
०मूत्राशय।
०एनीमा, पिचकारी।
वस्तिकर्मन् (नपुं०) एनीमा कार्य।
वस्तिमलं (नपुं०) मूत्र।
वस्तिशिरस् (नपुं०) एनीमा की नली।
वस्तिशोधनं (नपुं०) मूत्र बढ़ाने वाली दवा।
वस्तु (नपुं०) [वस्+तुन्] पदार्थ, द्रव्य, वस्तु, सामग्री, मामला। (सुद० ४/५) 'अनित्यतैवास्ति न वस्तुभूताऽसौ नित्यताऽप्यस्ति यतः सुरतम् (वीरो० १२/४२)
०समुत्पत्तिस्थान। (जयो० ११/२१)
०वास्तविकता, विद्यमान चीज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०सामान्य विशेषात्मक वस्तु।
०धन सम्पत्ति-'वस्तुमेणाक्षीणां मनस्युदारे (सुद० ८८)
०मूलस्थिति, द्रव्य की स्थिति। (सम्य० ७४)
०योजता, रूपरेखा।
०अवस्था। (सुद० ३/३२)
०माल, चीज। (जयो० २/११३)

वस्तुजाति (स्त्री०) पदार्थ की उत्पत्ति, द्रव्य उत्पत्ति। 'त्रयात्मिकाऽतः खलु वस्तुजातिः' (वीरो० १९/३)

वस्तुतः (अव्य०) स्वभावतः, यथार्थतः, तत्त्वतः, वाकई। 'वस्तुस्तु मदमात्सर्याद्याः' (सुद० ११०)

वस्तुतं (अव्य०) वास्तव में, अनिवार्यता, यथार्थ में, वाकई, मूलतः।

वस्तुतत्त्वं (नपुं०) पदार्थ तत्त्व, द्रव्य का रूप। 'अनेकशक्त्यात्मकवस्तुतत्त्वम्' (वीरो० १९/८)

वस्तुत्व (वि०) वस्तु का गुण-वस्तु में जो सामान्य और विशेषरूपता होती है यही वस्तु का वस्तुत्व है। सामान्य-विशेषात्मकत्वं वस्तुत्वलक्षणम्। (अष्टशती० १९)

वस्तुत्वधर्मः (पुं०) जो सर्वथा साथ रहता है, स्वभावगतधर्म। (वीरो० १९/४०) समस्ति वस्तुत्वमकाट्यमेतन्नोचेत् किमाश्वासनमेतु चेतः। (वीरो० १९/४०)

वस्तुपरिच्छदं (नपुं०) पदार्थ संचरण, वस्तु परिभ्रमण। 'बाह्यं वस्तुपरिच्छदं न तु कनागप्यत्र तद्वानसि' (मुनि० २५)

वस्तुसंविदः (पुं०) तत्त्वविचारकवृत्ति। (जयो० २८/४४)

वस्तुसत्त्वं (नपुं०) वस्तु का यथार्थ रूप, उत्पाद, व्यय और ध्रुव इन तीन रूप वस्तु की यथार्थ रूपता है।
स्यूतिः पराभूतिरिव ध्रुवत्वं
पर्यायतस्तस्य यदेकतत्त्वम्।
नोत्पद्यते नश्यति नापि
वस्तुसत्त्वं सदैत द्विदधत्समस्तु।। (वीरो० १९/१६)

वस्तुस्वभावः (पुं०) पदार्थ का स्वभाव।
रेखैकिका नैव लघुर्नगुर्वी,
लघ्व्याः परस्या भवति स्विदुर्वी।
गुर्वी समीक्ष्याथ लघुस्तृतीयां,
वस्तुस्वभावः सुतरामितीयान्। (वीरो० १९/५)

वस्तुस्थितिः (स्त्री०) पदार्थ की स्थिति। (मुनि० १३)

वस्त्यं (नपुं०) [वस्ति+यत्] आवास, निवास, घर, स्थान।

वस्त्रं (नपुं०) [वस्+ष्ट्रन्] परिधान, पहनावा, वेषभूषा, पोशाक। (सुद० ७/९४) वारा वस्त्राणि लोकानां क्षालयामास या पुरा' (सुद० ४/३६)
०अनेक, वस्त्र। जलेन क्षालनादिक्षालितमंशुकं वस्त्रमनकं मलवर्जित परिपठ्यते। (जयो०वृ० २/८०) 'मामकीन वस्त्रं मह्यं न ददासि तर्हि कस्मै दास्यसि?' (जयो० १७/१३१)

वस्त्रकुट्टिमं (नपुं०) तम्बू, डेरा।

वस्त्रगृहं (नपुं०) तम्बू, डेरा, दूष्यक। (जयो०वृ० १३/७१)

वस्त्रग्रन्थिः (स्त्री०) धोती या साड़ी की गांठ। नीवि, नाड़ा।

वस्त्रनिर्णेजकः (पुं०) धोबी, वस्त्रपरिक्षालक।

वस्त्रपगृहं (नपुं०) पटविरचित स्थान, पाण्डाल तम्ब। (जयो० ६/१३२)

वस्त्रपरिक्षालकः (पुं०) धोबी।

वस्त्रपरिधानं (नपुं०) कपड़े पहनना, वस्त्रधारण करना।

वस्त्रपूतः (पुं०) वस्त्र से छना। (हित० ४८, सुद० १/४३)
जलाशयस्य कं वस्त्रपूतं कृत्वाऽथ बह्निना।
सन्तप्य तदुपादानं प्रशस्तमभिधीयते।। (हित० १/८)

वस्त्रपुत्तिका (स्त्री०) पुतली, कपड़े की गुड़िया।

वस्त्रभेदकः (पुं०) दर्जी, नामदेव।

वस्त्रभेदिन् (पुं०) दर्जी, नामदेव।

वस्त्रयुग्मं (नपुं०) युगल वस्त्र। (सुद० ४/३१)

वस्त्रयोनिः (स्त्री०) कपड़े की उत्पत्ति, कपास।

वस्त्ररंजनं (नपुं०) कुसुंभ।

वस्त्रव्यपेतः (पुं०) निर्ग्रन्थ, वस्त्रत्यागी, दिगम्बर।
शिशूपमा ये खलु निर्विकाराः,
विश्वप्रमोदाय कृतप्रचाराः।
वस्त्रव्यपेतोत्तमसम्प्रदाया स्ते सन्तु,
नित्यं गुरवः सहायाः।। (भक्ति० १६)

वस्त्रसंक्षालकः (पुं०) रजक, धोबी। (जयो०वृ० २८)

वस्त्राभरणं (नपुं०) वस्त्राभूषण।

वस्त्राभ्यन्तरं (नपुं०) चीवरान्तर। (जयो० १३/२७)

वस्नं (नपुं०) [वस्+न] भाड़ा, किराया, मज़दूरी।
०आवास, घर, निवासस्थल।
०धन, वैभव, सम्पत्ति, द्रव्य।
०वस्त्र, आभरण।
०मूल्य।
०मृत्यु।

वस्ननं (नपुं०) करधनी, कंदौरा, तगड़ी, पटका।

वस्नसा (स्त्री०) [वस्नपं चर्म सीव्यति-सिव+ड+टाप्] कण्डरा, स्नायु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्वौकसारा (स्त्री०) कमलिनी-'वस्वौकसारा श्रीदस्य नलिन्यामलकापुरि' इति विश्वलोचनः' (जयो०वृ० ११/११७)

वंह् (सक०) उज्ज्वल करना, चमकाना, कान्तिमय करना।

वह् (सक०) ले जाना, धारण करना, ग्रहण करना। (जयो० ६/१०१) दिगपि गन्धवहं ननु दक्षिणा वहति विप्रियनिश्वसनं त्वाम्। (वीरो० ६/३७)

०परिवहन करना, वहन करना। तस्थु सशल्यांघ्रिदशां वहन्तः। (वीरो० १४/१४)

०नेतृत्व करना, निकलना। (सुद० २/३६)

०ढोना, चलाना, धकेलना।

०सहारा देना, आश्रय देना, थाम लेना, धारण करना। (जयो० १/६४)

०वहना, फैलना। (जयो० २/९३) (जयो० १/८)

०हांकना, ठेलना, पारगमन करना।

०छोड़ना, त्यागना, तिलाञ्जलि देना। (सुद० ७०)

०घटाना, प्रयोग करना, उपयोग करना।

०संभालना, ऊँचे उठाना, संधारण करना।

०उपक्रम करना, आरंभ करना। (जयो० २/५३)

वहः (पुं०) [वह् कर्तरि अच्] वहन करने वाला, ले जाने वाला, धारण करना।

०हवा, पवन।

०नद, नाला।

०माप विशेष।

वहतः (पुं०) [वह्+अतच्] ०यात्री।

०बैल, वृषभ, बलिवर्द।

वहतिः (पुं०) बैल, बलिवर्द।

०पवन, वायु।

०मित्र।

०परामर्श दाता, सलाहकार।

वहती (स्त्री०) नदी, सरिता।

वहतु (पुं०) बैल, बलिवर्द।

वहनं (नपुं०) [वह्+ल्युट्] ०यान, वाहन, नाव, डोंगी।

०ले जाना, धारण करना।

०ढोना, सहारा देना।

०वहना, प्रवहमान होना।

वहनक्रिया (स्त्री०) सधारण क्रिया, पाणिपीडन क्रिया। (जयो० १४/७)

वहंतः (पुं०) [वह्+अच्] पवन।

वर्हभारः (पुं०) पंखों का भार। (जयो० १३/८६)

वहित्रं (नपुं०) [वह्+इत्र] डोंगी, नाव, किश्ती।

वहिरास्थित (वि०) बाह्य स्थित। (समु० २/३१)

वहिष्कः (वि०) [वहिस्+कन्] बाहरी।

वहेडकः (पुं०) विभीतक तरु, बहेड़ा का वृक्ष।

वहेडुकः (पुं०) बहेडा का वृक्ष।

वह्निः (पुं०) [वह्+निः] आग, अग्नि। (सम्य० ७)

०तेज, ज्वाला।

०वह्नि देव, लौकान्तिक देव की एक जाति।

०हविरासन् (जयो०वृ० १८/४४)

०पाचनशक्ति, आमाशय का रस।

०हाजमा, भूख लगना।

वह्निकर्णं (नपुं०) अङ्गारकभाव। (जयो०वृ० १६/२४)

वह्निकायिकः (पुं०) अग्निकायिक जीव। नान्यत्र सम्मिश्रणकृत्प्रशस्ति र्वह्निश्च सञ्जीवनभृत्समस्ति। (वीरो० १०/३०)

वह्निकाष्ठं (नपुं०) चन्दन की लकड़ी, अगर लकड़ी।

वह्निगंधः (पुं०) धूप, लोबान।

वह्निगर्भः (पुं०) बांस।

०शमीवृक्ष।

वह्निज्वाला (स्त्री०) अन लार्चि। (जयो० १२/५६)

वह्निदीपका (स्त्री०) कुसंभ तरु।

वह्निभोग्यं (नपुं०) घृत।

वह्निमित्रः (पुं०) पवन, हवा, वायु।

वह्निरेतस् (नपुं०) शिव।

वह्निलोहं (नपुं०) तांबा।

वह्निवर्णं (नपुं०) लाल रंग का कुमुद, रक्तोपल।

वह्निवल्लभः (पुं०) राल।

वह्निवाधानिवृत्ति (स्त्री०) अग्निबाधा की शान्ति। (जयो०वृ० ९/७३)

वह्निबीज (नपुं०) स्वर्ण, सोना।

०चूना।

वह्नि-शिखं (नपुं०) केसर, कुसुंभ।

वह्निशिखा (स्त्री०) अग्निज्वाला। ०अंगार, लौ।

वह्निसखः (पुं०) पवन, वायु, अनिल।

वह्निसमूहः (पुं०) अग्निपुंज। (वीरो० ४/५६)

वह्निसंज्ञकः (पुं०) चित्रक तरु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह्निस्फुलिङ्ग (पुं०) अंगार, लौ, ज्वाला। (जयो० ७/१८)

वहन्यपकल्पि (वि०) ०अग्नि पक्व, आग में पका हुआ। (सुद० ४/३४)

वह्यं (नपुं०) [वह्+यत्] वाहन, यान, सवारी, गाड़ी, गमनागमन का साधन।

वा (अव्य०) [वा+क्विप्] विकल्प बोधक अव्यय-
०अथवा- विधोः कला वा। (सुद० २/६)
०और, तथा (जयो०वृ० १/५)-
लतेव मृद्धी मृदुपल्लवा वा,
कादम्बिनी पीनपयोधरा वा।
समेखलाभ्युन्नमन्नितम्बा,
तटी स्मरोत्तानगिरेरियं वा।।
(सुद० २/५)
०मानो, क्यों (सुद० ३/७)-'सरोवरे वा हृदि कामिजेतुर्विरजतुः सम्प्रसरच्छरे तु। (सुद० २/४५)
०एव, तरह-वा शब्दोऽत्रेवार्थे योऽभ्येति मालिन्यमहो (वीरो० १/२०) न जाने काव्ये दिने वा प्रतिभासमाने। (वीरो० १/२०)
०अर्थात्-'पीयूषमीयुर्विबुधा बुधा वा नाद्याप्युपायान्त्य-निमेषभावात्। (वीरो० १/२२)
०तथा-तृष्णातुराय वाऽमृतसिद्धिं श्रणतीति संसारे। (वीरो० ४/४८)
०पादपूर्ति अव्यय-'किं दुष्फला वा सुफलाऽफला वा। (सुद० २/३५) 'वा' अव्यय बहुधा विकल्प के रूप में होता है, परन्तु कहीं सम्भावना, कहीं वाक्यपूर्ति, कहीं दो वाक्यों के जोड़ने रूप एवं कहीं प्रश्नवाचक आदि के रूप में प्रयुक्त होता है। 'शस्यवृत्तिमभिवीक्ष्य सदा वा। (जयो० २७/७) युक्त पंक्ति में 'वा' विशेषता को व्यक्त करता है।
०निशो जिवृत्तौ स्विदुषो गतं वा रुषो विधिं पूर्वदिशोऽविलम्बात्' (जयो० २४/२३) उक्त पंक्ति में 'वा' का प्रयोग, पर, परन्तु, किन्तु के लिए हुआ है। और (जयो० १/६) या (जयो०वृ० १/५) वा अथवा, तथा, किन्तु, परन्तु, इव, एव आदि के अतिरिक्त अन्यथा कुछ-कुछ, यदि के रूप में भी होता है।

वा (अक०) वहना, चलना। (जयो० २/८३) वा आपकी (सुद० २/१८)

वा (सक०) प्रहार करना, चोट पहुंचाना, फूंक मारना, बुझाना, शांत करना।
०सान्त्वना देना, आराम पहुंचाना।

वाः (पुं०) वारि, जल। वार्वारि के पयोऽम्भोऽम्बु इति धनज्जय नाममाला। (जयो० १७/९४)

वाकं (नपुं०) [वक्+अण्] सारस समूह, उड़ान।

वाक् (स्त्री०) वाणी। वाक् सत्कविसमुदिता वाणी। (जयो०वृ० ३/११५) वाज् नामक सरणी। (जयो० ६/२७)

वाक्कधेनुः (स्त्री०) वाणी रूपी कामधेनु गाय। (समु० १/२६)

वाक्चपल (वि०) वाक्पटु।

वाक्छलं (नपुं०) गोलमोल कथन।

वाक्कौशलं (नपुं०) चातुर्य-वाचां वाणीनां कौशलं चातुर्यम् (जयो० ६/१४३)

वाक्प्रलापः (पुं०) वचनालाप। ०पटुवचन।

वाक्सरिता (स्त्री०) वचन प्रवाह, वाणी रूपी नदी। (जयो० ९/६४) ०धारावाहिक कथन।

वाक्सुगङ्गा (स्त्री०) जिनवाणी। (भक्ति० ४)

वाक्यं (नपुं०) [वच्+ण्यत् तस्य कः] ०कथन, उक्ति, विचार, वक्तव्य। (सुद० २/२८)
०बात, वार्तालाप।
०तर्क, अनुमान।

वाक्यखण्डनं (नपुं०) तर्क युक्त निराकरण।

वाक्यगत (वि०) विचारगत, वक्तव्य को प्राप्त।

वाक्यगतिः (स्त्री०) कथन पद्धति।

वाक्यगीतः (पुं०) उक्ति युक्त गीत।

वाक्यतत्त्वं (नपुं०) विचार तत्त्व।

वाक्यतर्कः (पुं०) तर्कसंगत कथन।

वाक्यदानं (नपुं०) विचार-विनिमय।

वाक्यनन्दः (पुं०) रचना शोभा, कथन की सुकुमारता।

वाक्यपदं (नपुं०) कथन युक्त पद।

वाक्यपद्धतिः (स्त्री०) कथनपद्धति।

वाक्यपदीयं (नपुं०) भर्तृहरि द्वारा रचित एक संस्कृत ग्रंथ।

वाक्यपूरणार्थ (वि०) वाक्यपूर्ति के लिए। (जयो० १०/८३)

वाक्यप्रबन्धः (पुं०) वाक्य प्रवाह, वाक्य रचना, रचना शैली।

वाक्यप्रयोगः (पुं०) भाषा उपयोग, प्रबन्ध, रचनाधर्मिता, कथन की सार्थकता। (वीरो० १९/१४)

वाक्यभेदः (पुं०) उक्ति भेद, कथन में भिन्नता।

वाक्यमोहिनी (स्त्री०) वाचनिक चतुराई।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाक्ययोगः (पुं०) वाक्य संयोग, रचना प्रयोग।
वाक्यरचना (स्त्री०) शब्द क्रम, अक्षर विन्यास।
वाक्यरीतिः (स्त्री०) रचना पद्धति।
वाक्यशुद्धिः (स्त्री०) वचनशुद्धि। (हित० ५१)
वाक्य विन्यासः (पुं०) शब्द योजना, प्रबन्ध योजना।
वाक्यशेषः (पुं०) किसी बात का अवशिष्ट भाग।
वाक्संयमः (पुं०) वचन समय।
वाक्यसुरभिः (स्त्री०) शब्द सौरभ।
वाक्यावली (स्त्री०) वचनावली। (वीरो० १८/५३)
वाग् (नपुं०) वाग देना, आवाज करना। (सुद० ३/४१) वचन (सुद० २/२७)
वागरः (पुं०) [वाचा इयर्ति गच्छति-वाच्+ऋ+अच्] ऋषि, मुनि, पुण्यात्मा।
०विद्यार्थी।
०शूरवीर, योद्धा।
०सान, सिल्ली।
०बाधा, रुकावट।
वागलंकरणं (नपुं०) वचन शोभा। (जयो० २/५४) वाक् आभरण।
वागा (स्त्री०) वल्गा, लगाम।
वागधिष्ठात्री (स्त्री०) सरस्वती। (जयो० २/४१)
वागाडम्बरः (पुं०) वचनसमूह, शब्दजाल, वाक्चातुर्य, वाक्पटु।
वागात्मन् (वि०) वचन युक्त, शब्द सहित।
वागाश्रित (वि०) सगाई। (जयो० १४/९) वाग्दानात्मिक। (जयो० १४/७)
वागीशः (पुं०) वाक्यपटु, चतुर, होशियार।
०सुवक्ता।
०ब्रह्मा।
वागीश्वरः (पुं०) वाक्यपटु।
०ब्रह्मा।
वागृषभः (पुं०) वाक्पटु।
वाग्गुप्तिः (स्त्री०) वचनगुप्ति, असत्य वचनों का परित्याग।
वाग्जाल (नपुं०) शब्दाडम्बर, कथन समूह।
०तर्कसंगत विचार।
वाग्जीवी (स्त्री०) वैतालिक, स्तुतिपाठक।
वाग्डम्बरः (पुं०) निस्सार उक्ति।
वाग्दण्डः (पुं०) भर्त्सना पूर्ण युक्ति।
वाग्दत्त (वि०) प्रतिज्ञात, संबद्ध, वचन सम्मति।
वाग्दरिद्र (वि०) वचनों में कमी, कम बोलने वाला।
वाग्दलं (नपुं०) ओष्ठ।
वाग्दानं (नपुं०) सगाई, वचनदान। (जयो०वृ० १४/९) आपसी वचन बद्धता।
वाग्दुष्प्रणिधानं (नपुं०) अर्थ का बोध न होना।
वाग्दुष्ट (वि०) अश्लील भाषा, निंदक।
वाग्देवता (स्त्री०) सरस्वती। (समु० १/११)
वाग्दोषः (पुं०) वचन दोष, वाक्य अशुद्धि।
वाग्निबन्धन (वि०) वचनों पर आश्रित रहने वाला।
वाग्बली (स्त्री०) कथनबल बुद्धि।
वाग्मित (वि०) भाषणपटु। (जयो० ३/२७) विचारवान्। (जयो० १४/७२)
वाग्युद्ध (नपुं०) वाद विवाद, चर्चा, आपसी वचनिक कलंक।
वाग्योगः (पुं०) वचन वर्गणा का आलम्बन।
वाग्वज्रं (नपुं०) कठोर शब्द, कठिन व्यवहार।
वाग्विदग्ध (वि०) वाक्यपटु, बोलने में चतुर।
वाग्विदग्धा (स्त्री०) मधुर भाषिणी।
वाग्विभवः (पुं०) वचन वर्गणा, वचनशील, वर्णनपद्धति, विवेचन कुशलता।
वाग्विलासः (पुं०) प्रांजल भाषा। ०वचन कौशल।
वाग्विशुद्धिः (स्त्री०) वचनशुद्धि। (जयो० २/२५)
वाग्व्यवहारः (पुं०) विचार विमर्श। ०उचित वचन व्यापार।
वाग्व्ययः (पुं०) शब्द ह्रास। ०वचनिक त्रुटि।
वाग्व्यापारः (पुं०) वचन पद्धति।
वागुरा (स्त्री०) [वा हिंसने उरच् गन् च] ०पिंजला, जाल, फंदा, रस्सी। (जयो० ३/३९) बन्धनवध्री (जयो० ३/३९)
०बहेलिया, शिकारी।
वागुरिकः (पुं०) [वागुरा+ठक्] बहेलिया, शिकारी।
वाग्भटः (पुं०) वाग्भट्टाचार्य, अष्टांगहृदयग्रन्थकार, आयुर्वेद शास्त्रनिर्माता। (सम्य० ३/१६)
वाग्मिन् (वि०) [वाच् अस्त्यर्थे ग्मिनिः चस्य कः] ०वचनचातुर्य, वाक्पटु।
०बातूनी।
वाग्मिन् (पुं०) प्रवक्ता, सुवक्ता।
वाग्य (वि०) [वाचं यच्छति-यम्+ड] ०मितभाषी।
०सत्य बोलने वाला। (सुद० १/१)
वाग्यः (पुं०) विनय, नम्रता।
वाग्यत् (वि०) मौनी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाकः (पुं०) समुद्र। उदधि।
वाग्वल्लरी (स्त्री०) वचन जाल, वाक्पटुता। (जयो० १/९१)
वांक्ष् (अक०) अभिलाषा करना, इच्छा करना।
वाङ्निश्चयः (पुं०) वाग्दान, वचनबद्धता।
वाङ्मय (वि०) [वाच्+मयट्] वचन से सम्बन्धित, वाणी से परिपूर्ण। (जयो०वृ० ६/११०)
०वाक्यपटु, वचन चतुराई।
०अलंकारपूर्ण, वाग्विदग्ध।
वाङ्मयं (नपुं०) शास्त्र, सिद्धान्त। रमयन् गमयत्वेष वाङ्मये समयं मनः। (वीरो० २२/३७)
०वाणी, भाषा, वचन, कथन।
०परस्पर वाच्य-वाचक से समन्वय युक्त शास्त्र।
वाङ्मयी (स्त्री०) सरस्वती, भारती।
वाङ्मुखं (नपुं०) प्रस्तावना, प्रारम्भिकी।
वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप्] ०शब्द, वचनावली, पदावली।
०भाषा, वाणी। (सुद० १०२)
०वचन, बात, कथन। (सुद० १०९)
०रचना, काव्य।
०वक्तव्य, कहावत, लोकोक्ति। भवन्ति वाचः सुत! ते पवित्रः। (समु० ३/१०)
०प्रतिज्ञा, भरोसा।
वाचः (पुं०) [वच्+णिच्+अच्] ०एक मछली विशेष।
वाचंयम (वि०) [वाचो वाक्यात् यच्छति विरमति वाच्+यम्+खच्] जिह्वा पर नियंत्रण रखने वाला, मौनी, शान्तचित्त साधक।
वाचक (व०) [वक्ति अभिधावृत्या बोधयति-वच्+ण्वुल्] प्रवाचक, प्रवक्ता। द्वादशाङ्गविद् वाचकः-
०उद्घोषक, भाषक।
०बोलने वाला, कहने करने वाला।
०अभिव्यक्त करने वाला, अर्थ बतलाने वाला, समझाने वाला।
०व्याख्याकार, वृत्तिकार, विवेचनकर्ता।
वाचकः (पुं०) वक्ता, पाठक, अध्यापक।
वाचकत्व (वि०) वाचकता, वचन सम्बंधी। (जयो०वृ० ३/११५)
वाचनं (नपुं०) [वच्+णिच्+ल्युट्] ०वाचना, घोषणा, निरूपणा।
०प्राक्कथन, उच्चारण, प्रबोधन।
०पठन, अध्यापन। ०प्रकथन, ०प्रवचन।

वाचना (स्त्री०) निरूपण, कथन, विवेचन, अध्यापन, व्याख्यान। (वीरो० १८/५६)
वाचनिक (वि०) [वचनेन निर्वृत्तम्-वच्+ठक्] ०मौखिक, वचन से सम्बन्धित।
०शब्दों की अभिव्यक्ति।
वाचस्पतिः (पुं०) [वाचः पति षष्ठ्यलुक्] वचन का अधिपति, वाणी का स्वामी।
०बृहस्पति।
वाचस्पत्यं (नपुं०) [वाचस्पति+ष्यञ्] वक्तृता, वाक्पटुता।
वाचा (स्त्री०) [वाक्+आप्] भाषण, कथन, वचन, वाणी। 'वाचां रोतिमिति प्रसङ्गकरणे' (सुद० १०२)
०पाठ सूत्र।
०शपथ।
वाचाङ्गं (नपुं०) वचन और अंग। (मुनि० १७)
वाचाट (वि०) [वाच्+आटच्] ०मुखरी, व्यर्थ का बोलने वाला।
०वाचाल।
वाचाल (वि०) [वाच्+आलच्-चस्यनकः] ०मुखरी, प्रलापी, व्यर्थ बोलने वाला।
०बकवास करने वाला, बातूनी।
०वारिद, मुखरी। (जयो०वृ० २०/७२)
०वाग्बहुलता (जयो० ८/६) वाचालानि वाग्बहुलानि (जयो०वृ० ८/६)
०शब्दायमान, कोलाहल, क्रन्दनशील।
वाचि (स्त्री०) भाषिणी, कथनी। (सुद० २/९) (सम्य० १५५)
वाचिक (वि०) [वाचाकृतं वाच्+ठक्] वचन सम्बन्धी, शाब्दिक प्रतिवेदन।
वाचिकं (नपुं०) ०शाब्दिक प्रतिवेदन। ०मौखिक कथन।
०समाचार, बातचीत, वार्ता।
वाचोयुक्ति (वि०) [वाचो युक्ति यस्य]०वाक्पटु, वचन की कुशलता।
वाचोयुक्तिः (स्त्री०) अभिभाषण, प्रतिवेदन, कथन, विवेचन। घोषणा, उद्भाषण।
वाच्य (वि०) [वच-कर्मणि ण्यत्] कहे जाने योग्य, संबोधित किये जाने लायक।
०अभिधानीय, गुणवाचक विशेषण।
०अभिव्यक्त, कथित।
०दूषणीय, निन्दनीय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाच्यं (नपुं०) कलंक, निन्दा।
०अभिव्यक्त अर्थ जो अभिधा द्वारा ज्ञात हो। लक्ष्य, व्यंग।
०वाच्यवैचित्र्यप्रतिभासादेव चारुताप्रतीतिः। (काव्य प्रकाश १०)
०विधेय-क्रिया की वाच्यता।

वाच्यता (स्त्री०) वचन योग्यता। (जयो०वृ० ११/८३)
०निन्दा, कलंक, अपमान। (जयो०वृ० ११/८३, जयो० १/१८)
०अभिधेय, अभिधानीय, गुणवाचक विशेषण। नकुलस्य वाच्यता अभिधेयः।
०सार्थका। (जयो० ११/१३)

वाच्यत्व (वि०) वचन विशेषता। (सम्य० १४२)

वाच्य-वाचकः (पुं०) वाच्य और वाचक। (जयो० ५/४५) साध्य साधन, लक्ष्य-लक्षी।

वाजः (पुं०) [वज्+घञ्] बाजू, डैना।
०पंख, बाज पक्षी।
०बाण का पंख।
०युद्ध, संग्राम।
०ध्वनि।

वाजं (नपुं०) घृत, स्त्री।
०जल, वारि।

वाजपेयः (पुं०) यज्ञ मंत्र।

वाजसनेयिन् (पुं०) शुक्लयजुर्वेद का अनुयायी।

वाजिन् (पुं०) [वाज+इनि] अश्व, घोड़ा। (जयो० ३/११४) (जयो० ३/२७) (दयो० २८)
०बाण।
०पक्षी, बाजपक्षी।

वाजिकञ्चुकः (पुं०) थामना। (जयो० १३/३८)

वाजिपृष्ठः (पुं०) गोल सदाबहार।

वाञ्छिनिष्पत्ति (स्त्री०) इच्छापूर्ति।

वाजिभक्षः (पुं०) छोटी मटर, बठरा।

वाजिभोजनः (पुं०) लोबिया।

वाजिमेधः (पुं०) अश्वमेध यज्ञ।

वाजियोग्यः (पुं०) जीतने योग्य। (वीरो० १७/१४)

वाजिशाला (स्त्री०) अस्तबल, घुड़साल।

वाजिराजि (स्त्री०) घोड़ों का समूह। (जयो० १३/२३)

वाजीकर (वि०) [वाज+च्वि+कृ+अच्] कामक्रीड़ा से पीड़ित।

वाजीकरण (वि०) शक्ति विशेष, कामक्रीड़ा से उत्तेजित। शरीर पुष्टि के लिए प्रयुक्त प्रयोग। (वीरो० ८/३५)

वाञ्छ् (सक०) चाहना, अभिलाषा करना, इच्छा करना। (जयो० वीरो० ९/७१) (सुद० १३१)

वाञ्छक (वि०) इच्छुक। (मुनि० २४)

वाञ्छनं (नपुं०) चाह, इच्छा, कामना, अभिलाषा। (सुद० ४/४२)

वाञ्छा (स्त्री०) इच्छा, चाह। (जयो०वृ० ४/४१) अभिलाषा, कामना। (सुद० १२६) तृष्णा, पिपासा (जयो० ६/८१)

वाञ्छिका (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा। (जयो०वृ० १२/२०)

वाञ्छित (वि०) [वाञ्छ+क्त] अभिलाषित। (जयो० १७/२७) इच्छित, अभीष्ट, अभिलषित, ईहित (जयो० ३/६३) (जो० २/९३)

वाञ्छितं (नपुं०) इच्छा, चाह।

वाञ्छितदायिनी (वि०) कामदा। (जयो० ११/९४)

वाञ्छाकर्त्री (स्त्री०) तृषा करने वाली। (जयो०वृ० २२/५)

वाञ्छापूर्ति (स्त्री०) आकांक्षा की पूर्ति, कामनापूर्ति। (सुद०९२)

वाञ्छारहित (वि०) कामना रहित। (जयो०वृ० १६/४४)

वाञ्छितार्थ (वि०) इच्छार्थ। (वीरो० ९/५)

वाञ्छितप्राप्ति (स्त्री०) इच्छापूर्ति। (जयो० १९/६८) अभीष्टसिद्धि। (जयो०वृ० २३/३५)

वाञ्छिन् (वि०) [वाञ्छ्+णिनि] ०अभिलाषी, इच्छुक।

वाञ्छैकसम्भावना (स्त्री०) इच्छा की अद्वितीय सम्भावना। (जयो० १७/१२)

वाटः (पुं०) [वट्+घञ्] बाड़ी, घेरा,
०श्मशान।
०उद्यान, उपवन, वाटिका, बगीची।

वाटिका (स्त्री०) बगीची, उपवन,
०उद्यान, उपवन, रम्य भूखण्ड।
०आरामगृह, फलोपवन।

वाटी (स्त्री०) [वाट+ङीष्] वाटिका, बगीची। (समु० ५/१८)
०उपवन, आरामस्थल, विश्राम स्थल।
०आवास, निवास भू-भाग।
०सड़क, राजपथ।
०पानी रोकने के लिए बांध, वरबन्ध।
०मोटे आटे से निर्मित गोलाकार रोटी।

वाट्या (स्त्री०) अतिवला नामक पौधा।

वाड् (अक०) स्नान करना, नहाना, डुबकी लगाना।

वाडवः (पुं०) [वडवाया अपत्यं वडवानां समूहो वा अण्]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वड्वानल।

०विप्र, ब्राह्मण। (वीरो० १/२२)

वाडवं (नपुं०) अश्व समूह।

वाडवधूमकेतुः (पुं०) वडवानल। (जयो० २०/२७)

वाडवाग्निः (स्त्री०) समुद्री ज्वाला।

वाडवानिलः (पुं०) समुद्री आग।

वाडवेयः (पुं०) [वडवा+ढक्] ०सांड,

०घोड़ा, अश्व।

वाडव्यं (नपुं०) [वाडव+यन्] विप्र समूह।

वाढं (अव्य०) हां! वाढमिति सत्य प्रतीतिकमेव। (जयो० १६/३२) बढ़ती हुई। (मुनि० १४)

वाणं (नपुं०) बाण, तीर।

वाणिः (स्त्री०) [वण्+इण्] बुनना, जुलाहे की खड्डी।

०करघा।

वाणिजः (पुं०) [वणिज्+अण्] व्यापारी, सौदागर।

वाणिज्यं (नपुं०) [वणिज्+ष्यज्] वैश्यकार्य, व्यापार लेन-देन क्रय-विक्रय। वाणिज्य वाणिजा कर्म (महा०पु० १६/८२) इतस्ततस्तत्प्रक्षेप्तुं, क्रमो वाणिज्यमिष्यते। (हि०सं० ९)

वाणिनी (स्त्री०) [वण्+णिनि+ङीष्] ०चतुर स्त्री, नर्तकी, अभिनेत्री।

०शृंगारप्रिया, स्वेच्छाचारिणी।

वाणी (स्त्री०) [वण्+इण्+ङीप्] ०वचन, कथन, भाषण। (जयो० ११/३३) (सुद० ७८)

०भाषा, साहित्यिक कृति। वाणी कृपाणीव च वर्म भेत्तुम्। (वीरो० १/३८)

०भारती, सरस्वती, विद्या अधिष्ठात्री।

०वाणी नामक सखी। (जयो० ६/३४)

०प्रशंसा। (जयो० १७/३३)

वाणीभूषणं (नपुं०) वाक्पटु। (सुद० १/४६)

वाण्टवत् (वि०) बांटे की तरह, पशु आहार की तरह। (जयो० २/२०)

वात् (सक०) हवा करना, पंखा करना।

०प्रसन्न करना।

वात (भू०क०कृ०) [वा+क्त] ०बही हुई, इच्छित।

वातः (पुं०) पवन, वायु, हवा। (जयो० १५/९३) (सुद० ११९)

०गठिवात, सन्धिवात। ०जोड़ों की पीड़ा।

वातकः (पुं०) [वात्+कन्] जार, प्रेमी।

वातकर्मन् (नपुं०) पाद मारना, पैर पटकना।

वातकुंडलिका (स्त्री०) मूत्ररोग, बूंद बूंद मूत्र आना।

वातकुंभः (पुं०) गण्डस्थल, हस्तिकुम्भस्थल।

वातकुमारः (पुं०) देव, जो तीर्थंकर के बिहार मार्ग को शुद्ध करते हैं।

वातकेतुः (पुं०) धूल।

वातकेलिः (स्त्री०) कानाफुंसी, प्रेमालाप।

०प्रेमी, प्रेक्षिका।

वातगजः (पुं०)

वातगुल्मः (पुं०) अंधड़, आंधी।

०गठियारोग।

वातज्वरः (पुं०) मलेरिया, वायु प्रदूषण से उत्पन्न रोग।

वाततति: (स्त्री०) वायुवृत्तिः। (जयो०२१/९०)

वातनिसर्गः (पुं०) अपान से वायु निकलना।

वातपुत्रः (पुं०) हनुमान, पनवनपुत्र, मारुती।

वातपोथः (पुं०) पलाश वृक्ष, ढाक तरु।

वातपेरित (वि०) वायु प्रभावित। (जयो० ५/३)

वातमंडली (स्त्री०) भंवर, जलावर्त।

वातमृगः (पुं०) तेज दौड़ने वाला हिरण।

वातर (वि०) वेगशील, झंझामय, तूफानी।

वातरक्तं (नपुं०) गठियावात।

वातरंग (पुं०) गूलर का वृक्ष।

वातरायणः (पुं०) ०बाण।

०चोरी, शिखर।

०सरल वृक्ष।

वातरुपः (पुं०) प्रचण्ड वायु वेग, तीव्र वेग युक्त वायु।

०आंधी, तूफान।

०इन्द्रधनुष।

०रिश्वत।

वातरोगः (पुं०) गठिया रोग।

वातल (वि०) तूफानी, वेगशील।

वातवसनता (वि०) दिगम्बरता। वातवसनता साधुत्वायेति। (वीरो० १३/३१)

वातव्याधिः (स्त्री०) गठियावात रोग।

वातवृद्धिः (स्त्री०) अंडकोष की सूजन।

वातशीर्षं (नपुं०) पेडू।

वातशूलं (नपुं०) उदर पीड़ा, अफारा, अजीर्ण।

वातसारथिः (पुं०) अग्नि, आग।

वातापिः (पुं०) एक राक्षस विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वातायनं (नपुं०) गवाक्ष। (जयो० २४/८६)

वातिः (पुं०) [वा+क्तिच्] ०सूर्य, दिनकर।
०पवन, वायु।
०चन्द्र, शशि।

वातिक (वि०) वातपीड़ित, सन्धिवात युक्त।

वातिकः (पुं०) वायु प्रदूषण से उत्पन्न ज्वर।

वातीय (वि०) [वात+छ] हवादार।

वातीयं (नपुं०) चावल की मांड।

वातुल (वि०) [वात+उलच्] गठियावात से पीड़ित, वायु प्रकोप युक्त।
०पागल।

वातुलिः (स्त्री०) [वा+उलि+तुट्] चमगादड़।

वातृ (पुं०) [वा+तृच्] पवन, हवा।

वात्या (स्त्री०) [वातानां समूह यत्] ०अंधड़, भंवर, वायुप्रलय, झंझावात।

वात्सकं (नपुं०) बछड़ों का समूह।

वात्सल्यं (नपुं०) [वत्सलस्य भावः ष्यञ्] स्नेह, प्रीति, अनुराग, सुकुमारता, प्राणिवर्ग पर अनुराग, धर्मी पर स्नेह।
०लाडप्यार।

वात्स्यायनः (पुं०) [वत्सस्य गोत्रापत्यं वत्स+यज्+फक्] कामसूत्र प्रणेता, न्यायसूत्र के भाष्यकार।

वादः (पुं०) [वद्+घञ्] वचन, बात, ०पक्ष प्रस्तुति। * अभीष्ट साध्य की सिद्धि के लिए कथन।
०भाषण, कथन, विवेचन, आलाप। (जयो०वृ० १/३)
०वक्तव्य, उक्ति, आरोप।
०वर्णन, वृत्त, समविवेचन।
०विचार, निरूपण, प्ररूपण।
०तर्क, प्रस्तुतीकरण।
०विवृति, व्याख्या।
०उपसंहार, सिद्धान्त।
०विवरण, टिप्पणी।

वादक (वि०) बजाने वाला। गीत-प्रबन्धगति-विशेषवादक चतुर्विधातोद्य प्रचार कुशलो वादक। (नीशते वा १४/२५)

वादकण्डूपः (पुं०) वाद की अभिलाषा, कथन की इच्छा। (दयो० ९१)

वादकर (वि०) विवाद करने वाला, वार्तालाप करने वाला।

वादकृत् (वि०) विवाद करने वाला, पक्ष रखने वाला।

वादग्रस्त (वि०) विवादग्रस्त, आपसी मतभेद युक्त।

वादनं (नपुं०) [वद्+णिच्+ल्युट्] बाजा, वाद्य।
०बजाना, ध्वनि करना।

वादनार्थ (वि०) मुररीकृ, बजाने के लिए। (जयो०वृ० २२/६१) फूत्कृतेर्विचारादुत किल मुररीं वंशीमुररीचकार, वादनार्थमिति शेषः। (जयो०वृ० १२/७६)

वादर (वि०) [वदरायाः कार्पस्याः विकारः वादरा+अण्] कपास से निर्मित।

वादरं (नपुं०) सूती वस्त्र।

वादरंगः (पुं०) [वादर+खच्+डित्] पीपल तरु।
०गूलर वृक्ष।

वादि (वि०) [वादयति व्यक्तमुच्चारयति वद्+णिच्+इञ्] विद्वान्, कुशल, बुद्धिमान।
०पक्ष प्रस्तुत करने वाला।

वादिकरया (वि०) कुशल। (जयो०वृ० १/६)

वादित (भू०क०कृ०) [वद्+णिच्+क्त] ०बजाया गया, घोषित कराया गया।
०उच्चरित कराया गया, बुलवाया गया।

वादित्व (वि०) अभिमत तत्त्व वाला।

वादित्रं (नपुं०) वाद्य, संगीत। (जयो० ८/६२) (जयो०वृ०१/१९)

वादिन् (वि०) [वद्+णिनि] बोलने वाला, अभिव्यक्त करने वाला।
०विपक्षी, तर्क-वितर्क कर्ता। (जयो०वृ० ३/१२)
०व्याख्याता, अभियोक्ता, अध्यापक।

वादिशः (पुं०) विद्वान्, ऋषि, साधक।

वादी (वि०) पक्ष प्रतिपादक व्यक्ति।

वाद्यं (नपुं०) [वद्+णिच्+क्त] ०बाजा (जयो० ५/५०) 'घन-सुषितर-तत-आनद्धरूपाणि चतुर्विधवाद्यन्यवाद्यन्त अमरकोश। (जयो०वृ० १०/१६) सघनं घनमेतदास्वनत् सुषिरं चाशु शिरोऽकरोत्स्वनम् स ततेन ततः कृतो ध्वनिः सममानद्धममानमध्वनीत्।। (जयो० १०/१६)

वाद्यकर (वि०) संगीतज्ञ।

वाद्यभाण्डं (नपुं०) वाद्ययन्त्र समूह, स्वराञ्जलि पूर्ण।

वाद्यमान (वि०) बजाए जाते हुए।

वाद्यवादनं (नपुं०) परिवाद्य। (जयो० १५/७०) (जयो० १०/११)

वाधूक्यं (नपुं०) विवाह, परिणय।

वाध्रीणसः (पुं०) गैंडा।

वाध्यता (वि०) परित्यागता। (मुनि० १६)

वान (वि०) [वन+अण्] खिला हुआ, पुष्पित।
०शुष्क, सूखा हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वानं (नपुं०) सूखा फल।
०चलना।
०जीना लुढ़कना।
०गंध।

वानप्रस्थः (पुं०) [वाने वनसमूहे प्रतिष्ठते-स्था-क] वानप्रस्थ साधु, वैरागी, मुनि (जयो०) 'वानप्रस्थस्तु मध्यमम्' (दयो० ११८) जो संसार के सभी झंझटों से दूर तथा ध्यान-अध्ययन में लीन रहते हैं वे वानप्रस्थ आश्रम वाले यति हैं। 'वानप्रस्था अपरिगृहीतजिनरूपा वस्त्रखण्डधारिणो निरतिशयतपः समुद्यताः' (सागर ध०टी० ७/२०)
०मधूक वृक्ष।
०पलाश वृक्ष, ढाक।
०धार्मिक जीवन के तृतीय आश्रम में प्रविष्ट व्यक्ति।

वानरः (पुं०) [वानं वनसम्बंधि फलादिकं राति गृह्णति रा+क, वा विकल्पेन नरो वा] बंदर, लंगूर।

वानरप्रियः (पुं०) खिरनी वृक्ष।

वानराक्षः (पुं०) जंगली अज।

वानरावातः (पुं०) लोध्र वृक्ष।

वानरेद्रः (पुं०) सुग्रीव, हनुमान।

वानलः (पुं०) [वानं वनसम्बन्धि वनभावं निविडतां लाति ला+क] तुलसी पादप।

वाना (स्त्री०) बटेर, लवा।

वानायुः (पुं०) एक देश।

वानास्पत्यः (पुं०) [वनस्पति+ष्यञ्] आम्र तरु।

वानीरः (पुं०) [वन+ईरन्+अण्] बेंत।

वानीरकः (पुं०) [वानीर+कन्] मूंज नामक घास।

वानेयं (नपुं०) [वन+ढञ्] ०नागर मोथा, ०सुगन्धित घास।

वान्त (भू०क०कृ०) [वम्+क्त] वमन, उद्गीर्ण। (जयो०८/३०)
०प्रक्षिप्त, उगला हुआ, उंडेला हुआ।

वान्ति (स्त्री०) [वम्+क्तिन्] वमन, कै।

वान्तिकृत् (वि०) वमन करने वाला।

वान्या (स्त्री०) [वन+यत्+टाप्] अरण्य समूह।

वापः (पुं०) [वप्+घञ्] बीज बोना।
०बुनना।
०बाल मूंडना।

वापदण्डः (नपुं०) [वप्+णिच्+क्त] बोया हुआ, मुंडा हुआ।

वापि (अव्य०) और भी, फिर भी। (सुद० २/१६)

वापि (स्त्री०) [वप्+इञ् वा ङीप्] बावड़ी, कुंआ, वापिका (जयो० १/५८), (समु० ६/२१) कापीव वापी सरसा सुवृत्ता मुद्रेव शाटीव गुणैकसत्ता। (सुद० २/६)
०दीर्घिका (जयो० ३/४८) विधिर्येनाभ्युपायेन नाभिवापीं निखातवान् (जयो० ३/४८)

वापीतटः (पुं०) वापिका तट। (जयो० २१/८८)

वाबिन्दु (नपुं०) जल की बूंद। (सुद० ४/३०) कान्ताप्रसङ्गरहिता खलु चक्रवाकी वापीतटेऽप्यहनि ताम्यति सा वराकी। (वीरो० २/४५)

वाम (वि०) [वम्+ण, वा+मन्] ०बांया ०बाईं ओर। प्रजया परिपूर्यते पुरस्तादिति वामे क्रियते स्म सा तु शस्ता। (जयो०१२/८९)
०दक्षिण। (तनया तावदवाममेव हस्तम्) (जयो० १२/६१)
०दक्षिण भाग। प्रथमं भुवि सज्जनैर्वृत इति वामोऽपि सदक्षिणीकृतः। (जयो० १२/७४)
०सुंदर-वामोऽपि सुंदरोऽपि (जयो०वृ० १२/७५)
०विपरीत, उलटा, विरुद्ध, विरोधी।
०प्रतिकूल। (जयो० ३/९१)
०प्रिय, सुंदर, लावण्ययुक्त, मनोहर। वामं मनोहरं रूपं यस्य तस्य। (जयो०वृ० १/४६)
०दुष्ट, दुर्वृत्त, अधम, नीच, कमीना।
०कुटिल, वक्रगति, युक्त, दुराग्रही।

वामः (पुं०) सजीव प्राणी, जन्तु।
०कामदेव।
०सर्प।
०औड़ी, ऐन।

वामं (नपुं०) सम्पत्ति, वैभव।

वामदृश् (स्त्री०) मनोहर दृष्टि।

वामन (वि०) ठिगना, बौना। (जयो० २/१४८)

वामदेवः (पुं०) कामदेव।
०महादेव, शिव। (जयो० २६/१०२)

वामनपुराणः (पुं०) एक पुराण विशेष।

वामनसंस्थानं (नपुं०) हस्त पादादिहीन होना।

वामपथः (पुं०) विपरीत मार्ग, कुटिल मार्ग।

वामपरम्परा (स्त्री०) वामा मनोहर परम्परा यस्याः सा (मनोहर परम्परा) (जयो० ११/९)

वामपादः (पुं०) बांया पैर।

वामबोधः (पुं०) प्रतिकूल ज्ञान।

वामभागः (पुं०) बाईं तरफ, बाईं ओर। (दयो० ७५) किं वा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रतिः परिकरोति किलानुरागं श्रीरेव भूषयति या मम वामभागम्। (दयो० १०९)

वामयोगः (पुं०) सुंदर योग।

वामरीतिः (स्त्री०) अच्छी परम्परा, सुयोग्य पद्धति।

वामलूरः (पुं०) बांबी, दीमकों द्वारा निर्मित मिट्टी का ढेर।

वामलोचना (स्त्री०) सुंदर नेत्र वाली स्त्री, सुनयना।

वामशील (वि०) वक्र प्रकृति।

वामस्कन्धः (पुं०) बांया कंधा। (समु० २/३२)

वामा (स्त्री०) [वामति सौंदर्यम् वाम्+अण्+टाप्] ०सुंदर स्त्री, लावण्यवती तरुणी। अर्धाङ्गिनी (जयो० १२/९३) कमनीय कामिनी युवती। (वीरो० २/४९)

०श्री (जयो० ५/९९) लक्ष्मी, गौरी।

०सरस्वती।

०अमावस्या। (जयो०वृ० ५/९९)

०विरुद्धा। (जयो० २/१५०)

०वक्रा, कुटिला, प्रतिकूला, (जयो० १७/१४) (जयो०वृ० १२/९३)

वामा रूपः (पुं०) अर्धाङ्गिनी, वामास्त्री। (सुद० ९८)

वामास्तनं (नपुं०) नवोढा स्तन। (वीरो० १२/६६)

वामिल (वि०) [वाम+इलच्] सुंदर, रमणीय, सुभग, मनोहर, लावण्ययुक्त।

०घमण्डी, अहंकारी, अभिमानी।

०चालाक, धूर्त, छली-कपटी।

वामी (स्त्री०) [वाम+ङीष्] घोड़ी, गधी।

०हथिनी।

वामेता (वि०) पार्श्वभाग। (जयो०वृ० १२/९५)

वाम्बूलः (पुं०) बबूल। (वीरो० १९/११)

वायः (पुं०) [वे+घञ्] बुनना, सीना।

वायकः (पुं०) [वे+ण्वुल्] जुलाहा।

०ढेर, समुदाय, संग्रह, समुच्चय।

वायनं (नपुं०) [वे+णिच्+ल्युट्] नैवेद्य, वायना, पकवान।

वायव (वि०) वायु से सम्बन्धित।

वायवीय (वि०) हवा से सम्बन्ध रखने वाला।

वायव्य (वि०) हवा से सम्बन्धित।

वायस् (पुं०) [वयोऽसच् णित्] काक, कौवा। ०सुगन्धित लकड़ी। अगर की लकड़ी। (जयो० ४/६६)

वायु (पुं०) पवन, हवा, अनिल, ईरण, समीर। (जयो० २/८३) 'वायु वायुमात्रं वायुरुच्यते' सन्तति पालनबुद्धिः वायु वा वात-तातयोर्ग्रन्थौ- इति वि। (जयो० २५/३०)

०प्राण, अपान, व्यान, उदान वायु।

०वातरोग, वायु प्रकोप।

वायुकायः (पुं०) वायु के शरीर वाला जीव।

वायुकायिकः (पुं०) वायु के शरीर को धारण करने वाला जीव।

वातं तथा तं सहजप्रयातं सचित्तमाहाखिलवेदितातः। स्यात्स्पर्शनं हीन्द्रियमेतकेषु यत्प्रासुकत्वाय न चेतरेषु।। (वीरो० १९/३४)

०वायु ही है, जिनका शरीर ऐसे जीव वायुकायिक हैं। सहज स्वभाव से बहने वाली वायु को सर्वज्ञ देव ने सचित्त कहा है। सभी वायुकायिक जीव एक स्पर्शनेन्द्रिय हैं।

वायुकुमारः (पुं०) पवनकुमार।

वायुकेतुः (पुं०) धूल, रंज।

वायुकोणः (पुं०) पश्चिमोत्तरी कोना।

वायुगण्डः (पुं०) अपचन, वायुविकार, अफारा।

वायुगुल्मः (पुं०) आंधी, तूफान, बवंडर, भंवर।

वायुगोचरः (पुं०) पवन की प्रतीति, हवा का स्पर्श।

वायुग्रस्त (वि०) वातरोग से पीड़ित, गठियावात युक्त।

वायुचारणा (स्त्री०) एक ऋद्धि, जिसके प्रभाव से वायु में चला जाता है।

वायुजात (वि०) हवा से उत्पन्न।

वायुजातः (पुं०) हनुमान।

वायुजीवः (पुं०) वायु रूप जीव।

वायुतनयः (पुं०) पवनपुत्र, हनुमान।

वायुतातिः (स्त्री०) वायुवेग, हवा की गति। (नशोषपेत्तं भुवि वायुतातिः) (वीरो० १२/३४)

वायुनन्दनः (पुं०) हनुमान।

वायुनिघ्न (वि०) वातपीड़ित। ०गठियावात से पीड़ित।

वायुपुत्रः (पुं०) पवनपुत्र, हनुमान।

वायुपुराणः (पुं०) अठारह पुराणों में एक वायुपुराण। (दयो०३१)

वायुफलं (नपुं०) ओला, हिमखण्ड।

०इन्द्रधनुष।

वायुभक्षः (पुं०) योगी।

वायुभूति (पुं०) तृतीय गणधर। (वीरो० १४/२) 'वायुभूतिस्तृतीयः सफलोकृताऽऽयुः' (वीरो०१४/२)

वायुमण्डलं (नपुं०) पवन दल। जो आकार में गोल, बिन्दुओं से व्याप्त, काले अंजन रूप, मेघ के समान चंचल, पवन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से सहित एवं जो देखने में न आने वाले हों, उसे वायुमण्डल कहा जाता है।

वायुरथः (पुं०) विजयार्ध पर्वत का राजा, पुण्डरीक नगर का शासक। (जयो० २३/५२)

वायुरोगः (पुं०) वातरोग।

वायुरोषा (स्त्री०) रात्रि, रजनी।

वायुरुग्ण (वि०) वात रोग से पीड़ित।

वायु वर्त्मन् (पुं०/नपुं०) आकाश, अन्तरिक्ष, आकाश पथ।

वायुवाहः (पुं०) धूंआ।

वायुवाहिनी (स्त्री०) शिरा, धमनी।

वायुवृत्तिः (स्त्री०) वाततति, पवन वेग। (जयो०वृ० २१/७०)

वायुवेगः (पुं०) वाततति-पवन गति।

वायुसंवर्द्धिनी (स्त्री०) थोकनी, भस्त्रा। (जयो० ११/६८)

वायुसखः (पुं०) अग्नि, आग।

वायुसेवनं (नपुं०) हवा खोरी। (दयो० ८९)

वार् -निवारण करना। (जयो० २/२१)

वार् (नपुं०) [वृ+णिच्+क्विप्] जल, पानी।

वाःकिटिः (स्त्री०) सूंस।

वाःदरं (नपुं०) मेघ, बादल, जिमूच।

वाःपुष्पं (नपुं०) लवंग, लौंग।

वाःसदनं (नपुं०) जलाशय, हौज, जलकुण्ड।

वाःस्थानं (नपुं०) जल में स्थान।

वारः (पुं०) [वृ+घञ्] ०संसचूक ०जयवारय *वारसम्पदा ०परिषत् सा परिसंचरन्मदा। (जयो० २६/१८)
०आवरण, आच्छादन, परदा, चादर। (सुद० ४/३६)
०बालक। (जयो०वृ० ६/६८)
०समूह, समुच्चय, समुदाय, संग्रह।
०रेवड़, लंहगा।
०कुब्ज वृक्ष। (जयो०२१/३४)
०समय, वारी, दिन।

वारं (नपुं०) मदिरा, शराब, मद्य।

वारकीरः (पुं०) पत्नी का भाई, साला।
०कंघी।
०जूं।
०अश्व। (युद्ध अश्व)।

वारक (वि०) रुकावट डालने वाला।

वारकः (पुं०) अश्व।
०बालक, लड़का, शिशु। (जयो०१७/११४)
०कर प्रचार। (जयो०वृ० १७/११४)

वारंगः (पुं०) तलवार की मूठ।

वारजनी (स्त्री०) वेश्या, गणिका। (वीरो० ६/३३)

वारटं (नपुं०) खेत, खेत समूह।

वारण (वि०) निवारण, हटाने वाला, विरोध करने वाला। (जयो०वृ० १९/७४)

वारणं (नपुं०) रुकावट, विरोध, विघ्न, बाधा, निवारण। लोकोऽयं वृषभावतोऽपि सुतरां दुष्कर्मणां वारणं। (मुनि०३९)
०आवरण, पर्दा, आच्छादन।
०ढकना, ढक्कन।
०प्रतिरोधक, प्रतिरक्षा, सुरक्षा।

वारणः (पुं०) हस्ति, गज, हाथी। (जयो० २१/२२) 'पथि सादिवरः कृतेक्षणः कृतवानास्तरणं तु वारणे'

वारणावतं (पुं०) एक नगर विशेष।

वारत्रं (नपुं०) चमड़े की पट्टी।

वारंवार (अव्य०) [वृ+णमुल्] प्रायः बहुधा, बार बार, फिर-फिर (मुनि० १३)

वारयात्रिकः (नपुं०) जन्यजन, बाराती लोग। मृदुलड्डकुचा प्रियेव शस्तैरूपभुक्त्वा बहु वारयात्रिकैस्तैः (जयो० १२/१२३)

वारय् (सक०) निवारण करना। (जयो० २/१२१)

वारयितुं (वार+तुमुन्) निवारण करने के लिए। (सुद० १२०)

वारला (स्त्री०) [वार+ला+क+टाप्] बर्र, भिड़।
०हंसिनी।

वारा (स्त्री०) शिविका, पालकी। (जयो० ६/४०)

वाराकर-वारः (पुं०) नवोढा का कर निवारण। (जयो० १)

वाराणसी (स्त्री०) [वरुणा च असी तयोः नद्योरदूरे भवा इत्यर्थे-अण्+ङीप्] वाराणसी नगरी, बनारस, काशी। (जयो० ९/९२)

वाराणसीशः (पुं०) वाराणसी का राजा। (जयो० २०/३९) राजा अकम्पन्न। (जयो० २०/३९)

वारानिधि (पुं०) [वारिनिधिं चुलुकीचकारागस्त्य इति जनश्रुतेः] समुद्र, वारिधि। (जयो० १७/८)

वाराशि (पुं०) लवणसमुद्र। (वीरो० २/७)

वाराह (वि०) शूकर से सम्बन्धित।

वाराहः (पुं०) शूकर, एक वृक्ष विशेष।

वाराहकल्पः (पुं०) वर्तमान युग।

वाराहपुराणं (नपुं०) पुराण का नाम।

वाराही (स्त्री०) [वाराह+ङीप्] शूकरी।
०पृथ्वी।
०माप विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाराहीकंदः (पुं०) महाकंद।

वारि (नपुं०) ०जल, पानी, क्षीर। (सुद० १००) (सुद० ४/१५) अम्बु, पयस्, अम्भ। (वीरो० २/३१) वार्वारिकं पयोऽम्भोऽम्बु इति धनञ्जयो (वीरो० २/३१) ०क, वा।

वारिः (स्त्री०) ०गजबन्धनी, शृंखला, सांकल। (जयो० १३/११०) वारी गजबन्धनी येन स स्तम्भं बन्धनस्थूलमुत्खायातितराम्' (जयो० १३/११०)
०सरस्वती, भारती।
०बंदी, कैदी।
०जलपात्र।

वारिकर्पूरः (पुं०) मछली विशेष।

वारिका (स्त्री०) असि, तलवार। (जयो० १६/७६) संस्फुरत्तरल वारिकां हि (जयो० १६/७६) तरलश्चञ्चले खड्गे इति विश्वलोचनः।

वारिकाायिकः (पुं०) जलकायिक जीव। (वीरो० १०/२९)

वारिकुब्जकः (पुं०) सिंघाड़ा, शृंगाटक।

वारिक्रिमीः (स्त्री०) जोंक।

वारिचत्वरः (पुं०) जलाशय, बावड़ी।

वारिचर (वि०) जलचर जीव। मीनादयो वारिचरा जन्तवो' (जयो० २०/७)
०मछली, मगर आदि।

वारिचरी (स्त्री०) सरस्वती, बुद्धिमती। (जयो० १२/३४) 'सरस्वत्यां चरतीति वारिचरी' (जयो०वृ० १२/३४)
०मछली, मीन। वारिचरी मत्स्यिकेव धीवरतो बुद्धिमतो मीनग्रहिणो' (जयो०वृ १२/३४)

वारिज (वि०) जल में उत्पन्न होने वाला।

वारिजः (पुं०) पङ्कज, कमल। (जयो० ४/५६)

वारिजं (नपुं०) कमल, पद्म। ०नमक।
०गौरसुवर्ण।
०लवंग, लौंग।

वारिजतुल (वि०) कमल सदृश। (जयो० ३/१३)

वारिजराज (वि०) कमल सदृश। (जयो० २४/७४)

वारिजातः (पुं०) कमल। 'कुमुदं कैरवे क्लीवं कृपणे कुमुदन्यवदिति कोषः।

वारित (वि०) निवारित, हटाया। (जयो०वृ० ६/९६)

वारितस्करः (पुं०) मेघ, बादल।

वारितापक्रमः (पुं०) जल रहित। (जयो० २८/५३)

वारित्रा (स्त्री०) छतरी, छाता।

वारिदः (पुं०) मेघ, बादल। (वीरो० २/३३) 'वारिं जलं ददातीति वारिदोमेघस्तेन' (जयो०वृ० १७/२१)
०सरस्वती।
०वचनोच्चारण। 'वारिं सरस्वतीं वाचं ददातीति वारिदस्तेन' (जयो०वृ० १७/२१) वारिं सरस्वतीं देव्यां वारिह्वीवेदनीरयो इति विश्वलोचनः। (जयो० १७/२१)

वारिदः (पुं०) आप्त पुरुष-'वारिं धर्मोपदेशं ददातीति वारिदा आप्तपुरुषाः' (जयो०वृ० ३/५)

वारिदगणः (पुं०) मेघाडम्बर, मेघ समूह। (जयो० ३/५)

वारिदवारिदक्षः (पुं०) मेघ जल देने में प्रवीण। अभिलाषी। वारिदस्य मेघस्य वारिजले वक्षरूपोऽभिलाषी। (जयो० १२/८६)

वारिद्रः (पुं०) चातक पक्षी।

वारिधरः (पुं०) मेघ, बादल।

वारिधारा (स्त्री०) जलप्रवाह, बौछार। (जयो० ६/१०७)

वारिधाराधारिणी (वि०) जलप्रवाह युक्ता। (दयो० ११२) जल के प्रवाह में चलने वाली।

वारिधाराधारिणी (स्त्री०) नदी, सरिता।

वारिधि (पुं०) समुद्र, सागर।

वारिनाथः (पुं०) समुद्र, सागर।
०मेघ, बादल।

वारिनिधि (पुं०) समुद्र, सागर, जलोदधि। (समु० ६/२०) 'वारि सैव निधिर्यस्य सः' (जयो० ७/५७)

वारिनिवर्षा (स्त्री०) जल वर्षा। वचन रूप वर्षा-'वारेर्वाचो निवर्षैः' वर्षाभिः' (जयो० ३/९२)

वारिपथः (पुं०) जल यात्रा, नौका विहार, जल क्रीड़ा।

वारिपूरः (पुं०) जलपूर, जलप्रवाह। (जयो० ४/३५)

वारिप्रवाहः (पुं०) झरना, जलप्रपात।

वारिभरिता (स्त्री०) बटलोई, जल भरने का पात्र। (दयो०९३)

वारिभवं (नपुं०) कमल। (जयो० १९/५)

वारिभवोज्जवलः (पुं०) जल के सद्भाव से उज्ज्वल। 'वारिभवोज्ज्वलेन वारिभवं कमलं तद्वदुज्ज्वलेन। यद्वा वारिणो भवः सद्भावस्तेनोज्ज्वलः' (जयो० १९/५)

वारिमुक्ता (स्त्री०) जल बिन्दु, जलस्राविता, वारिमुक्तामथ च वारिणो जलस्य मुक्तां बिन्दुम्। (जयो०वृ० १६/१९)
०वचनमुक्ता-वारिं वाचं मुञ्चतीति तस्य भावस्तां वारिमुक्ताम्' (जयो०वृ० १६/१९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वारिमुग् (पुं०) जलद, मेघ, वारिद। (वीरो० २/३०, जयो० १२/५१)

वारिमुच् (पुं०) मेघ, जलद।

वारियन्त्रं (नपुं०) जल घटिका, रहट।

वारिरथः (पुं०) नाव, डोंगी, जलयान।

वारिराशिः (स्त्री०) समुद्र।
०तालाब, सरोवर।

वारिरुहं (नपुं०) कमल, अरविन्द।

वारिवासः (पुं०) कलाल, शराब बेचने वाला।

वारिवाहः (पुं०) मेघ, बादल।

वारिविलासि (स्त्री०) निर्मलजलधारा। (जयो० २४/६०)

वारिशः (पुं०) शिव, शंकर।

वारिसंभवः (पुं०) लवंग, लौंग।
०खश की सुगन्धित जड़।

वारिसमुन्नयः (पुं०) जलप्रवाह। (जयो० ९/६६)

वारिहारित (वि०) जलाहरण। (जयो० १०/२६)

वारीटः (पुं०) हस्ति, हाथी।

वारु (पुं०) [वारयति रिपून् वृ+णिच्+उण्] विजय हस्ति, जयकुंजर।

वारुठः (पुं०) अरथी, शव ले जाने की अरथी।

वारुण (वि०) वरुण सम्बंधी।

वारुणः (पुं०) वारुणखण्ड एक क्षेत्र विशेष।

वारुणं (नपुं०) जल, पानी।

वारुणिः (पुं०) [वरुण+इञ्] अगस्त्य मुनि।

वारुणी (स्त्री०) पश्चिम दिशा।
०मदिरा।
०मेतार्य गणधर की माता, श्रीदत्त की भार्या।
०दशवें गणधर की माता।
मेतार्यवाक् तुङ्गिकसन्निवेश-वासी,
पित्तादत्त इयान् द्विजेशः।
माताऽस्य जाता वरुणेति नाम्ना,
गणीत्युपान्त्यो निलयः स धाम्नाम्।। (वीरो० १४/११)
०कौशलदेश के वृद्ध गांव के मृगायण ब्राह्मण की पुत्री वारुणी।
मृगायणी कोशलेदशसन्धिज,
प्रवृद्धनाम्नीह जनाश्रये द्विजः।
यदङ्गनाऽऽसीन्मधुराऽनयोः,
सुताऽथवारुणीनामसुरूपसंस्तुता।। (समु० ४/२४)
०नक्षत्र विशेष। आर्य व्यक्त गणधर की माता। (वीरो०१४/५)

वारुंडः (पुं०) नाग जाति।

वार्णिकः (पुं०) [वर्ण+ठञ्] लिपिकार, लेखक।

वार्ता (स्त्री०) बातचीत, नीति। (वीरो० ५/३७)
विनोदवार्तामनुसम्विधात्री समं तयाऽगाच्छनकैः सुगात्री।।
०बात, कथन, आपसी विचार-विमर्श। वार्ताऽप्यदृष्ट-श्रुतपूर्विका वः यस्यान केनापि रहस्यभावः। (सुद०२/२१)
'स्त्रियास्तु वार्तापि सदैव हेया' (वीरो०१८/२९)

वार्ताकः (पुं०) बैंगन का पौधा।

वार्ताजीविन् (पुं०) वैश्य, वणिक। (जयो० २/१११)

वार्तिका (स्त्री०) बटेर, लवा।

वार्त्त (वि०) [वृत्ति+अण्] ०नीरोग, तन्दुरुस्त, स्वस्थ।
०व्यवसायी, व्यवहारी।
०सारहीन, कमजोर।

वार्त्तं (नपुं०) कल्याण, हित।
०भूसी, चूरी।

वार्त्ता (स्त्री०) [वार्त्त+टाप्] ठहरना, स्थित होना, रहना।
०समाचार, संदेश, बात, कथन।
०आजीविका, वृत्ति, व्यवसाय, खेती।

वार्त्तारंभः (पुं०) व्यापारिक उपक्रम।

वार्त्तावहः (पुं०) दूत, संदेशवाहक।
०अंगराग।

वार्त्तावृत्तिः (स्त्री०) खेती से आजीविका चलाने वाला।

वार्त्ताव्यतिकरः (पुं०) सामान्य विवरण।

वार्त्ताहरः (पुं०) दूत, संदेशवाहक।

वार्त्तिक (वि०) व्याख्यात्मक, विवरणात्मक।
०समाचार लाने वाला।

वार्त्तिकः (पुं०) दूत, संदेशवाहक, भेदिया।

वार्त्तिकं (नपुं०) व्याख्या, वृत्ति, विवरण।

वार्त्रघ्नः (पुं०) अर्जुन।

वार्द्धकं (नपुं०) [वृद्धानां समूहः तस्य भावः कर्म वा] स्थिविर, थेर, वृद्धावस्था, बुढ़ापा। (जयो० २३/६०)

वार्द्धक्यं (नपुं०) वृद्धत्व, बुढ़ापा। (जयो० २३/६०)
वृद्धत्वे सत्ययाति धी इत्यादि। (जयो०वृ० २०/२९) (हित०२)

वार्धक्यापन्न (वि०) मरणासन्न (जयो०वृ० ७/१६) वृद्धापन, (जयो० ९/७२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वार्द्धुष्यं (नपुं०) सूद, ब्याज।
वार्दलः (पुं०) ०बादल, मेघ।
वार्दकुलः (पुं०) मेघ, बादल। (वीरो० १९/२२) (वीरो०४/१३)
वार्धि (पुं०) समुद्र, सागर। (जयो० १२/८, वीरो० ३/२)
वार्ध्रं (नपुं०) चमड़े की पट्टी।
वार्मणं (नपुं०) कवच युक्त।
वार्यं (नपुं०) [वृ+ण्यत्] आशीष, शुभ कामना।
०वरदान।
०सम्पत्ति, वैभव।
वार्वणा (स्त्री०) [वर्वणा+अण्+टाप्] नीले रंग की मक्खी।
वार्ष (वि०) [वर्ष+अण्] ०वार्षिक।
०वर्षा से सम्बंध रखने वाला।
वार्षिक (वि०) [वर्ष+ठक्] वर्ष सम्बंधी।
०वर्षा सम्बंधी। (जयो० २/३३)
०सलाना, प्रतिवर्ष का।
वार्षिला (स्त्री०) [वार्जाताशिला] ओला, हिमखण्ड।
वार्ष्णेयः (पुं०) [वृष्णि+ठक्] वृष्णि की संतान।
०नल के सारथि का नाम।
०कृष्ण।
वार्हेः (पुं०) बालक।
वालवः (पुं०) अजगर।
वालबालक (पुं०) अजगर का बालक। (जयो० १३/४५)
वालिः (स्त्री०) वानर राज।
वालुका (स्त्री०) [वल्+उण्+कन्+टाप्] ०रेत, बजरी।
०चूर्ण।
०कपूर।
०ककड़ी।
वाल्क (वि०) [वल्क+अण्] वृक्षों की छाल से निर्मित।
वाल्कल (वि०) [वल्कल+अण्] वृक्षों की छाल से बना हुआ।
वाल्कलं (नपुं०) वल्कल वस्त्र, छाल से बने परिधान।
वाल्मीकिः/वाल्मीकिः (पुं०) [वल्मीके भवः अण् इञ् वा] विख्यात मुनि, रामायण के प्रणेता।
०वामी। (दयो० ३९)
वाल्लभ्यं (नपुं०) [वल्लभ+ष्यञ्] वल्लभता, प्रिय होने का भाव।
वावदूक (वि०) [पुनः पुनरतिशयेन वा वदति वद्+यङ् लुक्] बातूनी, मुखर, वाक्पटु।
वावयः (पुं०) [वय्+यङ्-लुक्] तुलसी।
वाविलः (पुं०) बाईविल, ईसाई धर्म का प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ। (वीरो० १९/१०)
वावुटः (पुं०) नाव, नौका, डोंगी।
वावृत् (सक०) छांटना, चुनना, चयन करना।
०प्रेम करना, पसंद करना।
वावृत्त (वि०) [वावत्+क्त] छांटा गया, चयन किया गया।
वाश् (सक०) दहाड़ना, चिल्लाना।
०चीत्कार करना, ध्वनि करना।
०हू हू करना, गुनगुनाना।
०बुलाना, पुकारना।
वाशक (वि०) [वाश्+ण्वुल्] ०चिल्लाने वाला, पुकारने वाला।
०दहाड़ने वाला, मुखर, निनादी।
वाशकं (नपुं०) [वाश्+ल्युट्] ०दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना।
०आक्रोश करना।
०चहचहाना, कूकना, भिनभिनाना।
वाशिः (पुं०) [वाश्+इञ्] अग्नि, आग।
वाशितं (नपुं०) कलरव, चहचहाना।
वाशिता (स्त्री०) [वाशित+टाप्]०हथिनी।
०स्त्री, वनिता।
वाश्रः (पुं०) [वाश्+रक्] दिन।
वाश्रं (नपुं०) आवास स्थान, घर।
०चौराहा।
०गोबर।
वाष्पः (पुं०) भाप, अश्रु।
वाष्पं (नपुं०) देखो ऊपर।
वाष्पाम्बुपूरः (पुं०) नेत्रजलप्रवाह। (जयो० १६/६)
वाष्पिन् (वि०) भाप युक्त। (वीरो० १९/४३)
वास् (सक०) सुगन्धित करना, सुवासित करना, धूप देना।
०सिक्त करना, भिगोना।
वासः (पुं०) ०सुगंन्ध। ०निवास, आवास। (सम्य० ७०)
०घर, स्थान, जगह।
०सद्भाव। (जयो० १/३)
०वस्त्र, परिधान, कपड़े। (जयो० २/५०) (सुद० २/१२)
अथ प्रभाते कृतमङ्गला सा हृदेकदेवाय लसत्सुवासः। (सुद० २/१२)
वासक (वि०) सुगन्धित करने वाला, धूप देने वाला, आबाद करने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वासकं (नपुं०) वस्त्र, परिधान।
वासकणी (स्त्री०) प्रतियोगिता स्थल।
वासगत (वि०) निवास को प्राप्त हुआ।
वासज (वि०) सुगन्धित।
वासतः (पुं०) गधा, गर्दभ।
वासताम्बूलं (नपुं०) सुगन्धित पान।
वासतेय (वि०) निवास करने योग्य।
वासनन् (नपुं०) [वास्+ल्युट्] सुगन्धित करना, धूप देना।
०निवास करना, रहना, स्थित होना, पात्र, आधार।
वासना (स्त्री०) [वास्+णिच्+युच्+आप्] कामेच्छा।
०मिथ्याविचार, कुभावना, कुअभिलाषा।
०आदर, रुचि।
वासन्त (वि०) वसंतकालीन।
वासभवनं (नपुं०) निवासस्थान, घर।
वासमन्दिरं (नपुं०) निवासस्थल, घर, मकान।
वासयष्टिः (पुं०) सुगन्धित चूर्ण।
वासरः (पुं०) दिवस, दिन। (वीरो० ४/२५, वीरो० १/२१)
वासरं (नपुं०) देखो ऊपर।
वास सज्जा (स्त्री०) घर की शोभा।
वासस् (नपुं०) [वस् आच्छादने असि णिच्च] वस्त्र परिधान, पोशाक, कपड़ा। (जयो० १३/६४)
वासस्थितिः (स्त्री०) वस्त्र स्वरूप। (सुद० ११७)
वासिः (पुं०/स्त्री०) [वस्+इञ्] छेनी, बसूला।
०निवास, आवास, गृह, घर।
वासित (भू०क०कृ०) [वास्+क्त] सुगन्धित, सुवासित, गंध युक्त हुआ, तर किया गया।
०वस्त्र धारक, परिधानयुक्त।
०विख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत।
वासितं (नपुं०) कलरव, गुनगुन, कूजना।
वासिनी (स्त्री०) निलयभूता, परिशोधकारिणी। (जयो० १३/५८)
वासिष्ठ (वि०) वशिष्ट सम्बंधी।
वासिष्ठः (पुं०) वशिष्ट ऋषि की संतान।
वासुः (पुं०) [सर्वोऽत्र वसति-वस्+उण्] ०आत्मा।
०परमात्मा।
०विश्वेश्वर।
वासुकिः (पुं०) एक नागराज।
वासुदेवः (पुं०) वसुदेव की संतान कृष्ण।
वासुपूज्यः (पुं०) बारहवें तीर्थंकर वासुपूज्य। (भक्ति० १९)
वासुरा (स्त्री०) ०रात्रि, रजनी, रात। 'रात्रिरपिवान वासुरा न रात्रिर्जाता' (जयो० १५/५४)
०पृथ्वी, भूमि।
०स्त्री। 'वासुरा वारितायास्यान्निशाभूम्याश्च वासुरा' इति विश्वलोचन' (जयो०वृ० १५/५४)
वासू (स्त्री०) [वास्+ऊ] तरुणी, कुमारी, युवती।
वास्तव (वि०) [वस्तु+अण्] सचमुच, यथार्थ में, सारयुक्त, समीचीन।
०निर्धारित, निश्चित।
वास्तवा (स्त्री०) [वास्तव+टाप्] प्रभात, उषा, प्रातःकाल, अरुणोदय।
वास्तविक (वि०) यथार्थ रूप, सारगर्भित, समीचीन।
०स्वाभाविक, सच्चा।
वास्तविकार्थ (वि०) तत्त्वार्थ। (जयो०वृ० ३/६७)
वास्तिकं (नपुं०) अज समूह।
वास्तव्य (वि०) वास्तविक, यथार्थ, सचमुच, समीचीन। नो चेत्परिस्खलत्येव वास्तव्यादात्मवर्त्मनः।' (वीरो० ११/३९)
०[वस्+तव्यत्] निवासी, रहने वाला, रहने योग्य।
वास्तव्यः (पुं०) आवासी, निवासी। ०गृही, गेही।
वास्तव्यं (नपुं०) निवास, गृह, आवास।
०वसति, निवास स्थल।
वास्तु (पुं०/नपुं०) गृह स्थान। 'वास्तु अगारम्' वास्तु च गृहम् (त०वृ० ७/२९) ०घर बनाने का स्थल, ०भवनभूखण्ड।
०निवासस्थान। (जयो० १/५२)
०भूमि, गृह, आवास (जयो० ३/७१)
वास्तुकलाः (स्त्री०) भूकला। भूमि पर निर्मित प्रासाद, भवन, मन्दिर आदि की कला।
वास्तुकः (पुं०) बथुआ, एक प्रकार की हरी सब्जी। (जयो० २८/३४)
वास्तुनीतिनिपुणः (पुं०) गृह निर्माण कला में प्रवीण। वास्तुविद। (जयो० ३/७१)
वास्तुमुखं (नपुं०) गृहमुख। 'वास्तुगृहं मुखं प्रधानम्' (जयो० २/९७)
वास्तुयागः (पुं०) घर का आधार शिला, वास्तु पद्धति।
वास्तुवासस्थानं (नपुं०) निवास स्थल। (जयो०वृ० ३/६३)
वास्तुविधानं (नपुं०) भूखण्ड सम्बंधी नियम।
वास्तुविद्या (स्त्री०) गृह विद्या, यह एक ऐसी विद्या है जो गृह निर्माण के सभी अंशों का खुलासा करती है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वास्तुशास्त्रं (नपुं०) गृहनिर्माण शास्त्र। (जयो० २/६२)
वास्त्र (वि०) [वस्त्र+अण्] वस्त्र से निर्मित।
वास्त्रः (पुं०) वस्त्राच्छादित यान।
वाह् (अक०) उद्योग करना, प्रयत्न करना, चेष्टा करना।
वाह (वि०) धारण करने वाला, ले जाने वाला।
वाहः (पुं०) वाहन, यान, गाड़ी।
वाहकः (पुं०) कुली, भारवाहक।
०चालक, गाड़ीवान्, वाहक।
वाहनं (नपुं०) [वाह्यति-वह्+णिच्+ल्युट्] ०धारण करना, ले जाना।
०हांकना, ले जाना, ढोना, खींचना।
०सवारी, यान।
०आधार (सुद० ११४) अश्वादि सवारी। (जयो० ४/६३)
वाहसः (पुं०) [न वहति न गच्छति वह+असच्] ०जलमार्ग।
०अजगर।
वाहा (पुं०) बाहु, भुजा। (सुद० २/९)
वाहिकः (पुं०) [वाह्+ठक] बड़ा ढोल।
०बैलगाड़ी।
०वाहक।
वाहितं (नपुं०) [वह्+णिच्+क्त] भारी बोझ।
वाहित्थं (नपुं०) [वाह्नि+स्था+क] हाथी के लालट का निम्न भाग।
वाहिनी (स्त्री०) [वाहो अस्त्यस्या इनि+ङीप्] ०सेना, सैन्य समूह। (जयो० ७/९१)
०नदी, सरिता। (वीरो० ४/२३) (जयो० १०/८७) (जयो० ७/९८)
वाहिनीनाथ (पुं०) समुद्र, सागर।
वाहिनीशः (पुं०) समुद्र, रत्नाकर (दयो० १०४) ०सेनानी (जयो० ६/११०)
वाह्य (वि०) बाहरी, बाहर का।
वाह्लिकः (पुं०) एक देश का नाम।
वि (अव्य०) [वा+इण्] यह धातु और संज्ञा शब्दों के पूर्व में जोड़ा जाता है। जिससे उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है-विकीर्यते-में 'वि' उपसर्ग से फैलाने का अर्थ व्यक्त होता है।
०विकथा-में प्रयुक्त 'वि' अव्यय से कथा का वह रूप सामने आ जाता है, जो विकार या उचित नहीं ऐसी कथाएं आ जाती हैं।
०विभाव, विकलता, विमोह विमान आदि में 'वि' अभाव को प्रकट करता है।
०कही कही पर 'वि' अव्यय वस्तु की विशेषता को व्यक्त करता है। विशेष, विनियोजन, विकर्ष आदि।
विः (पुं०/स्त्री०) [वा+इण्] अश्व, घोड़ा।
०पक्षी। वीनां पक्षीणां भवेन सत्त्वेन (जयो० १८/४५, भक्ति० १६) सहिता। (जयो०वृ० ३/११५)
विंश (वि०) बीसवां।
विंशः (पुं०) बीसवां भाग।
विंशक (वि०) [विंशति+ण्वुन्] बीस।
विंशत् (स्त्री०) बीस।
विंशतिः (स्त्री०) बीस, एक संख्या विशेष।
विंशतिसर्गः (पुं०) बीसवां सर्ग।
विंशतिलक्षः (पुं०) बीस लाख। (समु० २/२०)
विकम् (नपुं०) [विगतं कं जलं सुखं वा यत्र] व्याही गाय का दूध।
विकण्टकः (पुं०) [वि+कंक्+अटन्] एक वृक्ष विशेष।
विकच (वि०) [विकक्+अच्] खिला हुआ, प्रफुल्लित, फूला हुआ, विकसित।
०फैलाया हुआ, बखेरा हुआ।
विकचः (पुं०) केतु, बौद्ध भिक्षु।
विकट (वि०) [वि+कटच्] अत्यधिक, भयानक, भीषण, डरावना, दुर्धर्ष। ०विकराल, कुरूप।
०विस्तृत, विस्तीर्ण, महान्, विशाल।
०प्रशस्त, व्यापक।
०दारुण, खुंखार, वर्बर।
०घमण्डी, अभिमानी, अहंकारी।
विकटं (नपुं०) फोड़ा, घाव, अर्बुद, रसौली।
विकत्थनं (नपुं०) [वि+कत्थ्+ल्युट्] ०धौंस जमाना, मिथ्या प्रशंसा।
०दर्पभाव, अहंकार पूर्ण कथन।
विकत्थन (वि०) आत्मप्रशंसक, स्वयं की प्रशंसा करने वाला, अहंकारी, अभिमानी।
विकत्था (स्त्री०) [वि+कत्थ्+अच्+टाप्] मिथ्या प्रशंसा, झूठा कथन, आत्मश्लाघा।
०व्यंग्योक्ति, दर्पोक्ति।
विकथा (स्त्री०) मिथ्या कथा, झूठी कथा, विरुद्ध कथा, संयम विनाशक कथा। 'विरुद्धा संयमबाधकत्वेन कथा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचनपद्धतिर्विकथा' (जैन०ल० ९९६) 'विरुद्धा विनष्टा वा कथा विकथा, सा च स्त्रीकथादिलक्षणा' (जैन०ल० ९९६)

विकथानुयोगः (पुं०) कामोत्तेजक कथाओं का प्रयोग।

विकथाप्रपञ्चः (पुं०) विकथाओं का विस्तार, स्त्रीकथा, भक्तकथा, राजकथा, चोरकथा आदि का विस्तार।

अवादि कृत्वा विकथाप्रपञ्चं,
कौत्कुच्यमौखर्यकटूक्तिकं च।
कुतः कदाचित् परिषत्क्रमे तत्,
सम्प्रार्थ्यते नाथ। मृषा क्रियेत।। (भक्ति० ४६)

विकम्प (वि०) [विशेषेण कम्पो यस्य] अधिक कांपने वाला, अथिर चित्त वाला, चंचल, चलायमान।

विकरः (पुं०) [विकीर्यते हस्तपादादिकमनेन वि+कृ+अप्] विकार, रोग, व्याधि, बीमारी।

विकरणं (नपुं०) [वि+कृ+ल्युट्] गणद्योतकचिह्न।

विकरणपरिणामः (पुं०) जलदानलक्षण। (जयो०वृ० १५/४८)

विकराल (वि०) भयानक, डरावना, भयपूर्ण। (दयो० ४०)

विकर्णः (पुं०) [विशिष्टौ कर्णौ यस्य] एक कुरुवंशी राजकुंवर।

विकर्तनः (पुं०) [विशेषेण कर्तनं यस्य] ०सूर्य।
०मदार पादप।

विकर्मन् (वि०) [विरुद्धं कर्म यस्य] अनुचित रीति से कार्य करने वाला।
०पापकर्मी, निषिद्धकार्य वाला।

विकर्मक्रिया (स्त्री०) अवैध कार्य, अनीतिपूण आचरण।

विकर्मगुणः (पुं०) अनैतिक गुण, दुराचरण।

विकर्मपद्धति (स्त्री०) दुश्चरण रीति।

विकर्मस्थ (वि०) निषिद्ध कार्यों में रत।

विकर्षः (पुं०) [वि+कृष्+घञ्] रेखांकन।
०तीर, बाण।

विकर्षणं (नपुं०) [वि+कृष्+ल्युट्] रेखांकन, फेंकना, विक्षेपण।

विकल (वि०) [विगतः कलो यत्र] ०दूर। (वीरो० १७/४६)
०रहित, शून्य, अभाव युक्त। (सम्य० ४१)
०अपरिपूर्ण। (जयो० २७/६१)
०विच्छिन्न, त्रस्त, डरा हुआ, भयभीत।
०क्षीण, मुर्झाया।
०विक्षुब्ध, क्लान्त, थका हुआ, कमजोर।
०उत्साहहीन, अवसन्न, हतोत्साह।
०सदोष, अधूरा। (दयो० ८८)
०अपाहिज, विकलांग।

विकलचरणं (नपुं०) अणुव्रतादि का अपूर्ण पालन।

विकलता (वि०) विच्छिन्नता। (जयो० २३/६०)
०दुःखमय अवस्था।
किन्त्वद्यापि न वेत्सि तां विकलतां तन्नासि मोक्तुं क्षमः। (मुनि० १९)

विकलप्रत्यक्षः (पुं०) परिमित ज्ञान होना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा परिमितज्ञान होना।

विकलविकल्प (वि०) विकल्प से दूर। (वीरो० १७/४६)

विकला (स्त्री०) निर्धन, दरिद्र (जयो० ५/१०७) अपरिपूर्णा (जयो० २७/६१)

विकला (स्त्री०) [विगतः कर्तो यस्याः] कला का साठवां भाग।

विकलादेशः (पुं०) अंशों की कल्पना, साध्य विशेष का निर्धारण।
०नयाधीन। विकलादेशः नयाधीनः। (स०स १/६)
'निरंशस्यापि गुणभेदादंशकल्पना विकलादेशः'। (त०वा० ४/४२)
०बोधजनक वाक्य।

विकलित (वि०) व्यतीत, समाप्त। (वीरो० ६/३२)

विकल्पः (पुं०) [वि+क्लृप्+घञ्] ०भेद, प्रकार, विविधता।
०भूल, अज्ञान, अशुद्धि।
०कूटयुक्ति, मायाचार।
०शंका, संदेह, अनिश्चय।
०संकोच, हर्ष-विषाद रूप परिणाम।

विकल्पजालः (पुं०) अनिश्चयता का जाल, संदेह का जाल। (मुनि० २६)

विकल्पनं (नपुं०) [वि+क्लृप्+ल्युट्] ०संदेह में पड़ना, अनिश्चय होना।
०अनिर्णय की स्थिति, विशेष कल्पना, विशेष विचार।
प्रसूनबाणः स कुतो न वायुर्वेदी त्रिवेदीति विकल्पनायुः (जयो० १/७६)

विकल्पना (स्त्री०) विशेष कल्पना। (वीरो० १७/२७)

विकल्पधी (स्त्री०) निर्णय रूप बुद्धि।

विकल्पबुद्धि (स्त्री०) संकल्प-विकल्प युक्त बुद्धि। (समु० ३३)

विकल्मषः (वि०) [विगतः कल्मषो यस्य] निष्पाप, कलंकरहित, निर्दोष। ०विशुद्ध, ०पूर्णशुद्ध।

विकस् (अक०) विकसित होना, खिलना, हर्षित होना। (सुद० ८७) मनो विकसति नियति रेषा (सुद० १२४)

विकसः (पुं०) [वि+कस्+अच्] चन्द्र, शशि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकसित (भू०क०कृ०) [वि+कस्+क्त] ०प्रफुल्लित। प्रमुदित। (जयो० ३/९३), हर्षित।
०उफुल्लित। (जयो०वृ० १४/८८)
०विकाशील , हर्षयुक्त। ०खिला हुआ।

विकस्वर (वि०) [विकस्+वरच्] खिला हुआ, विकासमान (जयो० १३/६१)
०खुला हुआ, प्रफुल्लित।

विकार: (पुं०) खोटा निमित्त। यतो मातुरादौ पयो भुक्तवान् तु स न सिंहस्य चाहार एवास्ति मांस। विकार: पुनर्दुर्निमित्त-प्रभावात्समुत्थो न संस्थाप्यतां सर्वदा वा।। (वीरो० १६/२२)

विकार: (पुं०) [वि+कृ+घञ्] विभाव परिणति।
०विक्षोभ, उत्तेजना, उद्वेग।
०विकृत परिणाम, राग-द्वेषादि भाव।
०षडयन्त्र-'मनाङ् न भूपेन कृतो विचार: कच्चिन्महिष्याश्च भवेद्विकार:' (सुद० १०७)
०विषय-वासना, कामभाव। मनाङ् न चित्तेऽस्य पुनर्विकार: (सुद० ९९)
०व्याधि, रोग, पीड़ा।

विकारकृत (वि०) वैचित्य पूर्ण। (जयो० १७/८२)

विकारगत (वि०) विक्षोभ को प्राप्त हुआ।

विकारजन्य (वि०) विकृत परिणाम युक्त।

विकारविभर्त्री (वि०) विकारधारी। (जयो० ५/६६)

विकारभाव: (पुं०) विषय-वासना युक्त भाव। (भक्ति० २)

विकारशून्य (वि०) राग-द्वेषादि रहित।

विकारि (वि०) व्याधिग्रस्त। (सुद० १०७)

विकारित (वि०) [वि+कृ+णिच्+क्त] परिवर्तित, पथभ्रष्ट, पतित, रोगी।

विकारिन् (वि०) [वि+कृ+णिच्+णिनि] ०विकार युक्त, *पतित हुआ, ०राग-द्वेषादि (जयो० २/१५७) परिणामों वाला।
०संवेग युक्त। (सम्य० १९)

विकाल: (वि०) [विरुद्ध: काल:] सन्ध्या।
०दिनावसान, अस्ताचल।
०काल को छोड़ना।

विकालिका (स्त्री०) [विज्ञात: कालो यया] समय का अभाव।

विकाश: (पुं०) [नि+कश्+घञ्] ०खिलना, फूलना, विकसित होना। (जयो० ३/१३)
०प्रकटीकरण, प्रदर्शन।
०उत्सुकता, उत्कण्ठा, हर्ष, आनन्द।
०एकान्तवास, एकाकीपन।

विकाशक (वि०) विकसित करने वाला, प्रदर्शन करने वाला, खिलने वाला।

विकाशनं (नपुं०) [वि+काश्+ल्युट्] ०प्रदर्शन, प्रकटीकरण।
०खिलना, प्रफल्लित होना। 'यदस्तुतच्चित्तसरोजसत्कलि-विकाशनायार्कमह: किलाछलि।

विकाशपरत्व (वि०) खिलने वाले। (समु० ७/२०)

विकाशशील (वि०) खिलने वाले। (जयो० ९/१३)

विकाशिन् (वि०) [वि+काश्+णिनि] ०दिखाई देने वाला, चमकने वाला।
०खिलने वाला, प्रफुल्लित होने वाला। (जयो० ३/१३)

विकास: (पुं०) [वि+कस्+घञ्] ०खिलना, प्रफुल्लित होना, फूलना।
०खुलना, विकसित होना। (सुद० ७९)

विकासनं (नपुं०) [वि+कस्+ल्युट्] ०फूलना, खिलना, खुलना।

विकासयामास (वि०) विकास होने वाले।
०खिलने वाले, खुलने वाले।
०दिखने वाली। यूनो दृगाप्लावन हेतवे तु विकासयामास रतीशकेतु:। (सुद० १०१)

विकाससंकटी (वि०) विकास युक्त, खिलने वाले, हर्षित होने वाले। (समु० २/९)

विकासिकुमाञ्जलि (स्त्री०) खिले हुए पुष्प समूह। (जयो० ३/१०७)

विकासिन् (वि०) हर्षित होने वाले, आनन्द को प्राप्त होने वाले, खिलने वाले। (जयो० ३/४९)

विकासिहास (वि०) निकली हुई हंसी, प्रकट हुई हंसी। (जयो० १३/९१) तत् सङ्गमोत्पन्नसुखानुभूत्या विकासिहासच्छुरितेव तावत्। (जयो० १३/९१) 'विकासी प्रकटतामाप्तो यो हासस्तेन' (जयो०वृ० १३/९१)

विकिर: (पुं०) [वि+कृ+अप्] बिखरा हुआ।
०गिरा हुआ, टूटा हुआ, पतित हुआ।
०कुंआ।
०वृक्ष।

विकिरणं (नपुं०) [वि+वृ+ल्युट्] ०बिखेरना, फेलाना, छितराना।
०ज्ञान, बोध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकीर्ण (भू०क०कृ०) फैलाया हुआ। 'केशान् विकीर्णानपरा प्रधर्तुम्।। (वीरो० ५/३९) बिखेरा गया, छितराया गया। टूटना। (जयो० ८/३०)
०प्रसूत, उत्पन्न।
०विख्यात, प्रसिद्ध।
विकीर्णकेश (वि०) बिखरे हुए बालों वाला।
विकीर्णमूर्धज (वि०) बालों को नोंचने वाला।
विकीर्य (वि०) फैलाए हुए, बिखेरे हुए। (वीरो० ९/१५)
विकुण्ठः (पुं०) विगता कुंठा यस्य।
०स्वर्ग, परमधाम, ब्रह्मस्थान।
विकुर्वाण (वि०) [वि-कृ+शानच्] परिवर्तित होने वाला।
०प्रसन्न, खुश, हर्ष, हृष्ट।
विकुस्रः (पुं०) चन्द्र, शशि।
निकूजनं (नपुं०) [वि+कुज्+ल्युट्] ०कूजन ०गुनगुनाना, कलरव करना। ०शब्द करना।
०चहचहाना।
विकूणनं (नपुं०) [वि+कूण्+ल्युट्] ०तिरछी चितवन, कटाक्ष।
विकृ (सक०) बिखेरना, फैलाना-विकरोमि (जयो० ४/३१) (सम्य० ७/६)
विकृत (भू०क०कृ०) [वि+कृ+क्त] ०विकार युक्त। (जयो० ११/८५)
०आक्रोशात्मक। (जयो० १८/३६)
०रोग व्याधि, पीड़ा। (जयो० १८/१९)
०परिवर्तित, बदला हुआ।
०विरूपित, क्षत-विक्षिप्त।
०अपूर्ण, अधूरा।
०बीभत्स, अनोखा, पराङ्मुख।
०असाधारण।
विकृतं (नपुं०) परिवर्तन, सुधार।
०अरुचि, अश्रद्धा, विकार।
०जुगुप्सा, ग्लानि।
विकृतिः (स्त्री०) [वि+कृ+क्तिन्] भङ्ग। (जयो० ६/१९)
०अरुचि, अश्रद्धा, रोग, विकार।
०उत्तेजना, उद्वेग, क्रोध, रोष।
विकृष्ट (भू०क०कृ०) [वि+कृष्+क्त] ०खींचा हुआ, बाहर किया हुआ, घसीटा हुआ।
०आकृष्ट।
०विस्तारित, फैलाया हुआ, विस्फारित।

विकेश (वि०) [विकीर्णाः केशा यस्य] बिखरे हुए बालों वाला, गंजा।
विकेशी (स्त्री०) खुले केशों वाली स्त्री।
०गंजी।
विकोश (वि०) [विगतः कोशो यस्य] ०म्यान रहित, बिना आधार का।
०भूसी रहित, अनाच्छादित।
विक्कः (पुं०) [विक्+कै+क] युवा हाथी, तरुण हस्ति।
विक्रमः (पुं०) [वि+क्रम्+घञ्] ०शौर्य। (जयो० ६/८)
०विक्रमादित्य। (वीरो० २२/१५)
०पराक्रम, शक्ति प्रदर्शन, वीरता, बहादुरी।
०विक्रम संवत्। (वीरो० १५/४७)
०कदम, क्रम, परम्परा, डग भरना।
विक्रमकर्मन् (नपुं०) पराक्रम का कार्य।
विक्रमणं (नपुं०) [वि+क्रम्+ल्युट्] चलना, कदम, डग भरना।
विक्रमाङ्कित (वि०) साहसयुक्त। (जयो० २१/३८)
विक्रमातिशयः (पुं०) सहज पराक्रम संयुत। (जयो० २१/२९)
विक्रमादित्यः (पुं०) उज्जैनी का प्रसिद्ध राजा।
विक्रमिन् (वि०) [वि+क्रम्+णिनि] ०पराक्रमी, शूरवीर बहादुर।
विक्रमिन् (पुं०) सिंह।
०नायक।
०विष्णु।
विक्रय (वि०) [वि+क्री+अच्] बिक्री, बेचना। (सम्य० १५५)
विक्रयपत्रं (नपुं०) बिक्री पत्र।
०नामा वही।
विक्रयस्थानं (नपुं०) आपणिका। (जयो०वृ० २/१३३)
विक्रयानुशयः (पुं०) बिक्री का खण्डन।
विक्रयिकः (पुं०) [बिक्री+इकन्] ०व्यापारी, व्यवसायी, विक्रेता।
विक्रस्रः (पुं०) [वि+कस्+रक्] चन्द, शशि।
विक्रान्त (भू०क०कृ०) [वि+क्रम्+क्त] ०शक्तिशाली, शूरवीर, पराक्रमी।
विक्रान्तः (पुं०) शूरवीर, योद्धा, बहादुर, जाबाज़।
०सिंह, ०केसरी। (जयो० ६/१०३)
विक्रान्तं (नपुं०) पद, डग।
०घोड़े की चाल।
०पराक्रम।
विक्रान्तिः (स्त्री०) [वि+क्रम+क्तिन्] ०बहादुरी, पराक्रम,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शूरवीरता।
०कदमचाल, पग बढ़ाना।
विक्रान्तृ (वि०) [वि+क्रम्+तृच्] विजयी, बहादुर।
विक्रान्तृ (पुं०) सिंह।
०शूरवीर।
विक्रिया (स्त्री०) [वि+कृ+श+टाप्] ०अनुचित कार्य। (हित० ११)
०विकार, निवृति।
०माया (जयो०वृ० ३/६८) छल-कपट।
०विक्षोभ, उत्तेजना, उद्वेग, जोश।
०क्रोध, आवेग, गुस्सा।
०अप्रसन्नता, हर्षाभाव।
०अनिष्ट, उल्लंघन।
०गुण सामर्थ्य, अणिमादिशक्ति। जिस शक्ति के माध्यम से छोटा-बड़ा आदि रूप धारण किया जा सके।
०ऋद्धि। (सम्य० २२)
०अनेक प्रकार के रूप धारण करना।
विक्री (सक०) बेचना, विक्रय करना। विक्रीयते-निष्करुणैर्मृगीव' (वीरो० ९/७)
विक्रीण (वि०) बेचना, विक्रय करना। यः क्रीणाति ज्ञमर्घमितीदं विक्रीणीतेऽवश्यम्। (सुद० ९१)
विक्रीत (वि०) पणयित, बेचा गया। (जयो०वृ० २५/८७५)
विक्रेय (वि०) [वि+क्री+यत्] बेचने योग्य, विक्रय करने योग्य।
विक्रोशनं (नपुं०) [वि+क्रुश्+ल्युट्] ०चीत्कार, चिल्लाना, पुकार, ढेर।
०गाली देना।
विक्लप (वि०) विचार करने वाला, सोचने वाला। (दयो० ५२६)
विक्लव (वि०) [वि+क्लु+अच्] ०त्रस्त, भयभीत, डरा हुआ।
०व्याकुल। (जयो० १३/३८)
०घबराना। (दयो० ९२)
०विह्वल। 'रथवेगवशेनविक्लवः' समभूत्तत्र वरः समुत्सवः।' (जयो० १३/६९)
०दुःखी, कष्टग्रस्थ, संतप्त।
०रोगग्रस्त, परास्त।
०हकलाने वाले, लड़खड़ाने वाला।
विक्लिन्न (भू०क०कृ०) [वि+क्लिद्+क्त] ०मुर्झाया हुआ, क्लान्त।
०थका हुआ।
०भीगा हुआ, अत्यंत गीला।
०सूखा, पुराना।
विक्लिष्ट (भू०क०कृ०) [वि+क्लिष्+क्त] ०अत्यंत दुःखी, व्याकुल, परेशान, संत्रस्त।
०घायल, परितापजन्य।
विक्षत (भू०क०कृ०) [वि+क्षण्+क्त] ०घायल, क्षत-विक्षत, चोट ग्रस्त।
०फाड़ा गया, विदीर्घ किया गया।
विक्षावः (पुं०) [वि+क्षु+घञ्] ०खांसी, छींक आना।
०ध्वनि।
विक्षिप्त (भू०क०कृ०) [वि+छिप्+क्त] ०बिखेरा हुआ, फेंका हुआ, छितराया हुआ।
०पदच्युत किया हुआ।
०उन्मत्त। (मुनि० ११)
०चालाक। (समु० ३/३२)
०भ्रान्त।
०व्याकुल, विक्षुब्ध, निराकृत।
विक्षिप्तता (वि०) पागलपन। (दयो० ७६) (सुद० ३/४०)
विक्षीणकः (पुं०) देवसभा। ०इन्द्र परिषद्।
विक्षीरः (पुं०) [विशिष्टं विगतं वा क्षीरं यस्य] मदार का पौधा।
विक्षेपः (पुं०) [वि+छिप्+घञ्]०फेंकना, बिखेरना, डालना।
०भेजना, प्रेषण करना।
०ध्यान हटाना, विचलित होना।
०पागल। विज्ञोऽपि विक्षेपमितिप्रथा नः (वीरो० १७/१५)
०हड़बड़ाना, व्याकुल होना।
०भय, बेचैनी, निराशा।
विक्षेपणं (नपुं०) [वि+क्षिप्+ल्युट्] फेंकना, डालना, निकाल बाहर करना।
०भेजना, प्रेषण।
०बिखेरना, फैलाना।
विक्षेपणीकथा (स्त्री०) स्वमत-परमत की कथा।
विक्षोभः (पुं०) [वि+क्षुभ्+घञ्] ०दुःख, पीड़ा।
०द्वन्द्व, संघर्ष।
०हलचल, हिलाना, ध्यान हटाना।
विखु (वि०) [नासिकायाः खु] नासिका रहित, नाक रहित।
विखण्डित (भू०क०कृ०) [वि+खण्ड्+क्त] विभक्त किया हुआ, पृथक् किया हुआ, विभाजित।
विखानसः (पुं०) एक साधु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विखुरः (पुं०) पिशाच, राक्षस। ०चोर।

विख्यात (भू०क०कृ०) [वि+ख्या+क्त] प्रसिद्ध, विश्रुत। (सुद० ८३) कीर्ति, यश युक्त।
०श्लाघ युक्त, प्रशंसा युक्त।

विख्यातिः (स्त्री०) [वि+ख्या+क्तिन्] आत्मश्लाघा। (जयो० २७/२२)
०कीर्ति, यश, प्रसिद्धि

विगणनं (नपुं०) [वि+गण्+ल्युट्] गिनना, संगणन, हिसाब करना, गणना करना।
०विचारना, सोचना, चिन्तन करना।
०विचार विनिमय करना।

विगत (भू०क०कृ०) [वि+गम्+क्त] ०चला गया, पलायन कर गया, प्रयाण कर गया।
०लुप्त, रहित, समाप्त, नष्ट, वियुक्त।
०विरहित, शून्य, मुक्त।
०खोया हुआ, धुंधला, विलीन, अस्पष्ट।

विगत-कल्मष (वि०) निष्पाप, पवित्र, पूत।

विगतकषाय (वि०) कषाय रहित।

विगतखेद (वि०) खेद मुक्त।

विगतगति (वि०) विमुक्त गति, सिद्ध।

विगतगेह (वि०) घर रहित, अनगार प्रवृत्ति वाला।

विगतगोत्र (वि०) गोत्र विहीन।

विगतजन्म (वि०) जन्म से मुक्त।

विगततप (वि०) तप से शून्य।

विगतदान (वि०) दान प्रवृत्ति से रहित।

विगत दोष (वि०) दोष रहित।

विगतधन (वि०) निर्धन, धनहीन।

विगतधर्म (वि०) धर्म से रहित।

विगतनयन (वि०) नेत्र विहीन।

विगतपंथ (वि०) पंथ विहीन।

विगतबन्ध (वि०) बन्धनमुक्त।

विगतबुद्धिबल (वि०) विवेकहीनत्व। (जयो० ९/१७)

विगतभाव (वि०) भाव/स्वभाव से हीन।

विगतमोह (वि०) मोह रहित, निर्मोही।

विगतयोग (वि०) मन, वचन एवं काय इन योगों से अलग।

विगतराग (वि०) वीतरागी, राग रहित।

विगतविषाद (वि०) विषाद रहित, खेद रहित। (जयो० २/१३७)

विगतशील (वि०) शील रहित।

विगताधिकार (वि०) अधिकार रहित। (वीरो० २१/९)

विगन्धकः (पुं०) इंगुदी तरु।

विगमः (पुं०) [वि+गम्+अप्] ०प्रस्थान करना, अन्तर्धान होना।
०समाप्ति, क्षत, अन्त, नष्ट। (मुनि० ७७)
०परित्याग।
०हानि, विनाश, क्षति।

विगरः (पुं०) नग्न रहने वाला।
०पर्वत।
०असन त्यागी।

विगर्हणं (नपुं०) [वि+गर्ह्+ल्युट्] ०निन्दा, कलंक, भर्त्सना।

विगर्हणीय (वि०) निन्दनीय। (वीरो० १७/१९)

विगर्हित (भू०क०कृ०) [वि+गर्ह्+क्त] ०निन्दित। (समु०२/३४)
०तिरस्कृत, अपमानित।
०फटकारा गया, प्रतिषिद्ध।
०निम्न, दुष्ट।

विगर्हिन् (वि०) जुगुप्सित। (जयो० २५/८)
०निन्दित, अपमाश्रित।

विगल् (अक०) पिघलना, टपकना, रिसना, बूंद बूंद गिरना। (जयो०वृ० ११/८६)
०द्रवित होना। (जयो २/१५२)

विगलनं (नपुं०) बहना, झरना, टपकना, पिघलना। (जयो०वृ० ११/८६)

वगलित (भू०क०कृ०) [वि+गल्+क्त] झरता हुआ, पिघलता हुआ, टपकता हुआ।
०निःसृत्, प्रवाहित, अधः पतित।

विगानं (नपुं०) [विरुद्धं गानं] निन्दा, भर्त्सना।
०मानहानि, बदनामी, अपमान।
०परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध, असंगति।

विगाल्याम्बुं (नपुं०) गालित जल। (वीरो० १८/३८)

विगाहः (पुं०) [वि+गाह्+घञ्] स्नान, नहान।

विगिलन् (वि०) टपकता हुआ। (जयो० ७०)

विगीत (भू०क०कृ०) [वि+गै+क्त] ०निन्दा/गर्हा/भर्त्सना करता हुआ।
०विरोधी।
०निन्दित।
०अपमानित।
०अयुक्ति जन्य।
०कथन में न आने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विगीतिः (स्त्री०) [वि+गै+क्तिन्] निन्दा, गर्हा, भर्त्सना।
○विरोधी कथन।
○विपरीत कथन।

विगुण (वि०) [विगतः विपरीतो वा गुणो यस्य] ०गुण रहित, शून्य भाव, चिंतन विहीन।
○अल्पगुण। (जयो० २२/१३)
○निकम्मा, बुरा।

विगूढ (भू०क०कृ०) [वि+गूह+क्त] ०गुप्त, रहस्य पूर्ण, आच्छन्न।
○छिपा हुआ।
○भेद।
○निन्दित, निर्भत्सित।

विगृहीत (भू०क०कृ०) [वि+ग्रह्+क्त] विभक्त, भग्न किया हुआ, विघटित।
○विश्लिष्ट किया हुआ।
○पकड़ा हुआ, निगृहीत।
○सम्मुख किया हुआ, सामना किया हुआ।
○विरोध किया गया।

विग्रहः (पुं०) [वि+ग्रह्+अप्] ०देह, शरीर। (जयो० ११/१२, ६/११४) (जयो० ११/२८) प्रजापतेर्यः शिशुभावमाप्तोऽस्या विग्रहात्स प्रथमोऽपि भावः। (जयो० ११/१२) 'विग्रहात् पलायते शरीरन्निर्गच्छति। (जयो०वृ० ११/१२)
○संग्राम, युद्ध, लड़ाई। (जयो०वृ० ६/११४) विग्रहे संग्रामे (जयो०वृ० ६/११४) सर्वत्र विग्रहे योऽनन्यसहायो व्यभात् स चेह रयात्। तव विग्रहेऽद्य मदनं सहायमिच्छत्यधीरतया।। (जयो० ६/११४) प्रथम विग्रह का अर्थ संग्राम और द्वितीय पंक्ति के विग्रह का अर्थ शरीर है।
○विस्तार, फैलाव, विस्तीर्णता, प्रसार।
○रूप, आकृति, आकार, प्रतिमा।
○पृथक्करण, विघटन, विश्लेषण, वियोजन।
○कलह, झगड़ा, विशद, मनमुटाव।
○अनुगह।
○भाग।
○हिस्सा, अंश, प्रभाग।
○अपराधो विग्रहः। विजय की इच्छा वाला।

विग्रहगतिः (स्त्री०) जीव की गति, शरीर गत पर्याय, कर्म शरीर ग्रहण। शरीर की अवस्था, नवीन शरीर की प्राप्ति। 'विरुद्धो ग्रहो विग्रहो व्याघात इति वा'

विग्रहगृहं (नपुं०) रणक्षेत्र। (जयो० ७/६५) (त०वा० २/२५)

विघट् (सक०) विनाश करना, विभक्त करना।

विघटनं (नपुं०) [वि+घट्+ल्युट्] ०विनाश, विध्वंस, क्षति हानि।
○विभक्त, पृथक्करण।
○विरोध। (जयो० ९/४८)

विघटिका (स्त्री०) [विभक्ता घटिका यया] समय का माप।

विघटित (भू०क०कृ०) [वि+घट्+क्त]०वियुक्त, विभक्त, विभाजित।
○विनष्ट, प्रणष्ट। (जयो० २/१४८)

विघट्टनं (नपुं०) [वि+घट्ट+ल्युट्] ०घर्षण, रगड़, स्पर्श।
○विभाग।

विघट्टित (भू०क०कृ०) [वि+घट्ट+क्त] ०हिलाया हुआ, विलोया गया।
○चोट पहुंचाया हुआ, आघात किया गया।
○विवृत किया गया, ढीला किया हुआ।
○वियुक्त किया हुआ, विभक्त किया हुआ।

विघनः (पुं०) [वि+हन्+अप्] ०घन, हथौड़ा, प्रहारक।

विघसः (पुं०) जूठन, अर्ध चर्वण।
○भोजन।

विघसं (नपुं०) मोम।

विघसाशः (पुं०) भुक्त का अवशेष, जूठन।

विघात (वि०) [वि+हन्+क्त] ०तिरस्कार। (जयो० ९/७)
○हवन किया गया, नष्ट किया गया।

विघातः (पुं०) विघ्न, बाधा, रुकावट।
○विनाश, नष्ट क्षति, हानि।
○प्रहार, मारना, क्षति पहुंचाना।
○परित्याग करना, छोड़ना।

विघूर्णित (भू०क०कृ०) [वि+घूर्ण्+क्त] ०दोलायित, चलायमान।
○लुढ़काया गया, विचलित किया गया।

विघृष्ट (भू०क०कृ०) [वि+घष्+क्त] रगड़ा हुआ, घिसा हुआ।
○पीड़ित, व्याकुलित।

विघ्नः (पुं०) [वि+हन्+क] ०बाधा, हस्तक्षेप, रुकावट। (सम्य० ९५)
○कठिनाई, कष्ट।
○अन्तराल (जयो० १०/९५)
○विनाश-'दानादिविहननं विघ्नः'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विघ्नकर (वि०) विरोध करने वाला, बाधा उत्पन्न करने वाला, अवरोध कारक।

विघ्नकरण (वि०) बाधक। ०अवरोधक।

विघ्नकारिन् (वि०) बाधाकारी, कष्टदायी, व्याकुलता उत्पन्न करने वाला।

विघ्नकृत् (वि०) अन्तरायकृत्। (जयो० १७/८२)

विघ्नगत (वि०) कष्ट को प्राप्त हुआ।

विघ्नजन्य (वि०) बाधा जनक।

विघ्नध्वंसः (पुं०) कष्ट दूर करने वाला।

विघ्ननायकः (पुं०) गणपति, गणेश।

विघ्ननाशक (वि०) बाधा नष्ट करने वाला, कष्ट दूर करने वाला।

विघ्नविघ्न (वि०) विघ्न बाधाएं। (जयो० २/३७)

विघ्नपाप (वि०) पाप जन्य बाधा।

विघ्नप्रतिक्रिया (स्त्री०) बाधाओं को दूर करना।

विघ्नप्रसंग (वि०) हारिकारक बान्धव।

विघ्नमोह (वि०) मोह की बाधा वाला।

विघ्नलोपिन् (वि०) बाधा नाशक। (वीरो० १/६)

विघ्नविनायकः (पुं०) गणपति, गणेश।

विघ्नसंग्रहः (पुं०) विघ्नामुपडवाणां संग्रहं विघ्नतो निवारयः। (जयो० १९/८६)

विघ्नसिद्धिः (स्त्री०) कष्ट दूर करना।

विघ्नहर (वि०) नष्ट नाशक। (जयो० १२/२४)

विघ्नित (वि०) [विघ्न+इतच्] कष्ट सहित, बाधा जनित।

विङ्खः (पुं०) अश्व खुर।

विच् (सक०) विभक्त करना, बांटना, विभाजित करना, पृथक् पृथक् करना।
०विवेचन करना, विवरण देना, निरूपण करना।
०वञ्चित करना, हटाना।
०विभाग करना, भेद करना।

विचकत्व (वि०) केशलोंच युक्त। (जयो० १८/४६)

विचकिलः (पुं०) [विच्+क, किल्+क] चमेली, मदन तरु।

विचक्षण (वि०) चतुर, विद्वान्, बुद्धिमान, धीमंत, धीमति।
०मनोहर सुंदर। (जयो०वृ० ३/३७)
०स्पष्टदर्शी, दीर्घदर्शी, सावधान, सचेत।

विचक्षणं (नपुं०) [वि+चक्ष्+ल्युट्] चतुर, निपुण, तेज। (सुद० ११९)

विचक्षणा (स्त्री०) बुद्धिमति, प्रवीणा, प्रज्ञावंता।

विचक्षणः (पुं०) [वि+चक्ष्+घञ्] ज्ञानी पुरुष, धीमान व्यक्ति, बुद्धिमंत पुरुष।

विचक्षुस् (वि०) [विगतं विनष्टं वा चक्षुर्यस्य] दृष्टि हीन, समदर्शी, अंधा, नेत्रहीन।
०व्याकुल, खिन्न।

विचचार (भू०) विचारा गया, सोचा गया। (जयो० ४/२०)

विचयः (पुं०) [वि+च+अप्] ०खोजबीन, अनुसंधान, शोध।
०विवेक, विचारणा-'विचयनं विचयो विवेको विचारण मित्यर्थः' (स०सि० ९/३६) 'विचितिर्विवेको विचरणं विचयः' (त०वा० ९/३६)
०ध्यानदृष्टि-आज्ञाविचय, अपायविचय और संस्थानविचय। (सम्य० ७९)

विचयनं (नपुं०) विवेक, विचार, शोध, अनुसंधान, विचारणा।

विचर् (सक०) विचारना, सोचना, विचरण करना। (जयो० ४/४८) (वीरो० १०/५३)

विचरणं (नपुं०) विहार, घूमना। (सुद० ८८)

विचर्चिका (स्त्री०) विशेषेण चर्व्यते पाणिपादस्य त्वक् विदार्यतेऽनया [वि+चर्च्+ण्वुल्+टाप्] खुजली, कर्कन्दु, खाज। विसर्पिका।

विचल् (अक०) चलना, इधर, उधर घूमना। (जयो० ५/१५)

विचल (वि०) [वि+चल्+अच्] इधर-उधर घूमाने वाला, हिलने वाला, चलित।
०चंचल, चपल।
०अभिमानी।

विचलनं (नपुं०) [वि+चल्+ल्युट्] ०स्पन्दन, हलन-चलन, स्फुरण, व्यतिक्रम।
०अस्थिरता, चंचलता, अभिमान।

विचारः (पुं०) [वि+चर्+घञ्] चिन्तन, मनन, सोच। (सम्य० ४५) ०चन्द्रिका। (सुद० २/४५)
एताहगुत्साहिविचारदृब्धिरुदेति,
चित्तेऽस्य विशुद्धिलब्धिः। (सम्य० ४५)
०परीक्षा, निर्णय, गवेषणा, खोज।
०यथावस्थित वस्तु की व्यवस्था।
०विवेचन, निरूपण, विवेक, तर्कना।
०अर्थ, व्यञ्जनं और योग का परिवर्तन।
०निश्चय, निर्धारणं ०चयन ०विवेक (जयो० १/३६)
०संदेह, संकोच, ०दूरदर्शिता, सतर्कता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचारक (वि०) चिन्तनशील। मनन युक्त (जयो० २१/१९)
विचारकर्ता देखो ऊपर।
विचारकारिन् (वि०) विचारशील। (जयो० १२/५, दयो०३८)
विचारचतुरः (पुं०) चिन्तनशील। (हित०)
विचारजात (वि०) चिन्तन को प्राप्त हुआ। (सुद० १०७)
विचारजाते स्विदनेक रूप,
जनेषु वा रोषमितेऽपि भूपे। (सुद० १०७)
विचारज्ञ (वि०) निर्णायक, निश्चय करने योग्य।
विचारणं (नपुं०) [वि+चर्+णिच्+ल्युट्]
०चिन्तन, निरूपण, परीक्षा।
०समीक्षा, पर्यालोचन, अन्वेषण।
०सन्देह, संकोच।
विचारणा (स्त्री०) [वि+चर्+णिच्+युच्+टाप्]
* परीक्षण, पर्यालोचन, अन्वेषण। (दयो० ७१)
०पुनर्विचार, चिन्तन-मनन, अनुचिन्तन। (जयो० १३/४३)
०अनुशीलन।
विचारणीय (वि०) चिन्तनीय। (हित० १६)
विचारतत्त्वं (नपुं०) निर्णयात्मक तत्त्व।
विचारदेहिन् (वि०) विचारशील।
विचारदृष्ट (वि०) पूर्वा पर विचार दृष्टि। (जयो० २३/३)
विचारधारा (स्त्री०) चर्चा, चिन्तन की परम्परा, (जयो०वृ० १/२३) तत्त्वनिर्णय का विवेचन। (सुद० १०७)
विचारपद्धतिः (स्त्री०) चिन्तन की परम्परा, समीक्षण धारा, निर्णय का रीति।
विचारभाज (वि०) विचारशील। (सुद० १२९)
विचाररहित (वि०) विचारहीन। (सुद० ११२)
विचारय (वि०) सोचने वाला। (जयो० २/१४२)
विचारयामास (वि०) मानने वाला। (जयो० १/२१)
विचारहीन (वि०) चिन्तन रहित। (सुद० १०१)
विचारिणा (स्त्री०) मनस्विना। (जयो० १०/७३)
विचारभावः (पुं०) चिन्तन भाव।
विचारलोपिन
विचारलोपी (वि०) चिन्तन को क्षीण करने वाला। पक्षियों के संचार का लोप वाला। (वीरो० ९/३५)
विचारवान् (वि०) चिन्तनयुक्त। (सुद० २/२)
विचारवृद्धि (स्त्री०) चयन में वृद्धि। सोच का विकास। (वीरो० १२१)
विचारवतं (वि०) विचारशील। (समु० ८/३४)

विचारशील (वि०) चिन्तन युक्त। (जयो० ४/२५)
विचारसारः (पुं०) तत्त्ववधान। (जयो० ४/६२)
विचारस्थल (नपुं०) मनन का स्थान।
विचाराधीनः (पुं०) विचारने योग्य। (सुद० ८२)
विचारित (वि०) चिन्तन योग्य, सोचा गया। ०निश्चित, निर्धारित। परीक्षित।
विचारितवती (स्त्री०) सोचने वाली स्त्री। (दयो० ५४)
विचार्य (वि०) विचारने योग्य। (सुद० १५) (सम्य० ६८)
विचिः (स्त्री०/पुं०) [विच्+इन्] ०लहर, तरंग।
विचारहारः (पुं०) हृदयालङ्कार। (दयो० १/८६)
विचाला (वि०) विचार वाली। (दयो० ११२)
विचिकित्सा (स्त्री०) रुचि न रखना।
० मति विभ्रम, संदेह।
०निन्दा, ग्लानि। ०भूल, विभ्रम।
विचित्पणं (वि०) मूल्य रहित। पणं मूल्यं विगतं। (जयो० १०/६५)
विचित (भू०क०कृ०) [वि+चि+क्त] ०खोजा, अन्वेषित।
विचितिः (स्त्री०) [वि+चि+क्तिन्] ०अन्वेषण, अनुसंधान, परिशोधन।
०खोज, ढूंढना, तलाश करना।
विचित्र (वि०) [विशेषेण चित्रम्] विविध प्रकार, बहुविध। (जयो० ३/८०)
०नाना प्रकार, अनेक प्रकार का।
०आश्चर्य जन्य, विश्मयकारी। चमत्कार कारक। (जयो० १/१४) (भक्ति० १०)
०रंगलिप्त, अनुरक्त।
०सुंदर, रमणीय, मनोहर। (जयो० २/१५७)
विचित्रं (नपुं०) आश्चर्य, विश्मय।
विचित्रकः (पुं०) [विचित्र+कन्] भोजपत्र तरु।
विचित्रकं (नपुं०) आश्चर्य, विश्मय।
विचित्रगात्रं (नपुं०) विश्मय युक्त शरीर।
०मनोहर देह, सुंदर शरीर।
विचित्रजन्मन् (नपुं०) विविध जन्म। ०विविध गति, नाना उत्पत्ति।
विचित्रजाति (स्त्री०) नाना प्रकार की उत्पत्ति।
विचित्रदेहं (नपुं०) सुंदर शरीर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचित्रध्यानं (नपुं०) शुभाशुभ रहित ध्यान। ०विशुद्ध ध्यान, शुक्ल ध्यान।

विचित्रभावः (पुं०) आश्चर्य युक्त भाव, चमत्कारपूर्ण भाव। (सुद० १/२५)

विचित्रमाला (स्त्री०) रमणीय हार, मनोहारी।

विचित्ररत्नं (नपुं०) नाना प्रकार के रत्न।

विचित्रराशि (स्त्री०) विविध राशियां।

विचित्रयोग (वि०) नाना प्रकार योग वाला।

विचित्रवस्तुगेहं (नपुं०) अजायबघर। (जयो० १८/४९)

विचित्रवर्गः (पुं०) विचित्र आकार। (वीरो० ४/२०)

विचित्रसंयोगः (पुं०) सुनिश्चित योग।

विचिन्वत्कः (पुं०) [वि+चि+शतृ+कन्] ०खोज, अन्वेषण, अनुसंधान।
०बहादुर, जाबाज।

विचीर्ण (वि०) [विगता चेतना यस्य] ०निर्जीव, चेतना रहित, शून्यगत, मृतक।
०प्राणविहीन।

विचेतस् (वि०) [विगतं चेतो यस्य] अज्ञानी, मूढ़। मूर्ख।
०संज्ञारहित, चेतनाशून्य।
०व्याकुल, उदास।

विचेष्टित (भू०क०कृ०) [वि+चेष्ट्+क्त] ०महान्, चेष्टायुक्त। (जयो० १२/१४२)
०चेष्टा करने वाला, उद्यमशील।
०संघर्ष किया गया।
०परीक्षण किया गया, गवेषणा की गई।
०दुष्कृत।

विचेष्टितं (नपुं०) कर्म, कार्य, काम।
०प्रयत्न, प्रयास, उद्यम।
०उद्योग, साहसिककार्य।
०संवेदना, षड्यन्त्र, प्रबन्ध।

विच्छ् (सक०) जाना, पहुंचना।

विच्छन्दः (पुं०) [विशिष्टः छन्दोऽभिप्रायो यस्मिन्] ०अनेक खण्ड वाला प्रसाद, उच्च प्रासाद।

विच्छर्दकः (पुं०) [वि+छृद्+ण्वुल्] ०प्रासाद, महल, उच्चभवन राजभवन।

विच्छर्दनं (नपुं०) [वि+छृद्+ल्युट्] वमन, कै करना।
०उगलना।

विच्छर्दित (वि०) [वि+छृद्+क्त] उगला हुआ, वमित।

विच्छाय (वि०) [विगताछाया यस्य] ०निष्प्रभ, धुंधला, छाया रहित।

विच्छायः (पुं०) रत्न, मणि, मुक्ता।

विच्छित्तिः (स्त्री०) [वि+छिद्+क्तिन्] ०काटना, विच्छेद करना, भेदन करना। ० विभाजन, ०गणितीय विभाग।
०लोप, विराम, अभाव।
०अन्तर्धान, अनुपस्थिति।

विच्छिन्न (भू०क०कृ०) [वि+छिद्+क्त] ०छिपा हुआ, आच्छादित हुआ। विच्छिन्न आत्मभुविरागनगो विनेतुरन्तर्मुहूर्तत इयान् पुनरभ्युदेतु।। (सम्य० १४७)
०विभक्त, वियुक्त, विभाग युक्त।
०समाप्त किया गया, नष्ट किया गया।
०गुप्त, रहस्यमय।

विच्छिन्नता (वि०) विकलता। (जयो० २३/६०)

विच्छुरित (भू०क०कृ०) [विच्छुर+क्त] ०ढका गया, छिपाया गया।
०जड़ा गया, पोता गया, लीपा गया।
०फैलाया गया।

विच्छेदः (पुं०) [वि+छिद्+घञ्] ०काटना, छेदना, भेदना।
०तोड़ना, विभाग करना।
०विराम, रोक, हस्तक्षेप।
०प्रतिषेध, हटाना।
०परिच्छेद, अनुभाग, अंश, भाग, हिस्सा।
०अंतराल, अवकाश।

विच्छेदरहित (वि०) अखण्ड अनपायिनी। (जयो०वृ० २/३८) व्यनपायी। (जयो० १३/२७)

विच्युत (भू०क०कृ०) [वि+च्यु+क्त] ०अधः पतित, नीचे गिरा हुआ।
०विस्थापित, व्यतिक्रान्त, परित्यक्त।

विच्युतिः (स्त्री०) [वि+च्यु+क्तिन्] ०अधःपतन, स्खलन, वियोग।
०बिछोह, क्षय, छति, हानि, विनाश।
०विचलन, असफलता।

विज् (सक०) विभक्त करना, वियुक्त करना, भेद करना, अन्तर पहचानना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विज् (अक०) विक्षुब्ध होना, कांपना, डरना।
०दुःखी होना, कष्ट ग्रस्त होना।

विजन (वि०) [वि गतो जनो यस्मात्] एकाकी, अकेला, सेवानिवृत्त।

विजनं (नपुं०) एकान्त स्थान, सुनसान शून्य स्थान। (जयो० १३/६५) (वीरो० २१/२०) निर्जन। (जयो० २५/८६) विजनं स विरक्तात्मा गत्वाऽप्यविजनाकुलम्' (वीरो० १०/२४)

विजननं (नपुं०) [वि+जन्+ल्युट्] जन्म, प्रसव, प्रसूति, उत्पत्ति।

विजन्मन् (वि०) [विरुद्धं जन्म यस्य] विरुद्ध उत्पन्न होने वाला।
०विजातीय उत्पत्ति वाला।

विजपिलं (नपुं०) [विज्+क, पिल्+क] पंक, कीचड़, मल। गारा।

विजयः (पुं०) [वि+जि+घञ्] ०जीतना, हराना, परास्त करना।
०जीत, फतह, जय यात्रा।
०पोदनपुरी के राजा प्रजापति एवं रानी जया का पुत्र। विशाख भूतिर्नभसोऽत्र जातः प्रजापतेः श्री विजयो जयातः। मृगावतीतस्तनयस्त्रिपृष्ठनाम्नाऽप्यहं पोदनपुर्यथातः। (वीरो० ११/१७)

विजयकरणं (नपुं०) शास्त्रार्थ विषय। (जयो०वृ० २२/८६)

विजयकुंजरः (पुं०) लड़ाई का हाथी, जय हस्ति।

विजगीषुं (वि०) जीतने की इच्छा वाला। (जयो० १९/१६)

विजयछन्दः (पुं०) एक हार विशेष।

विजयडिंडिमः (पुं०) सेना का विशाल ढोल।

विजयता (वि०) विजय प्राप्त होने वाला। (सम्य० १५४) विजयशील। (वीरो० १६/३०)

विजयंतः (पुं०) इन्द्र।

विजयनं (नपुं०) जय, जीत, विजय। (जयो० ७/१)

विजयनगरं (नपुं०) एक नगर विशेष।

विजया (स्त्री०) मौर्यपुत्र की माता, सातवें गणधर की माता,
०जय नामक तीसरी तिथि। (जयो०वृ० ८/८८)
०मण्डिक गणधर की माता। पिताऽस्य नाम्ना धनदेव आसीत् ख्याता च माता विजया शुभाशीः। (वीरो० १४/७)
०दुर्गा।
०विजयादशमी-दशहरा।
०विजयोत्सव।

विजयान्वित (वि०) जयेनान्वित, जय से पूर्ण हुआ। (जयो० ८/८९)

विजयार्द्धः (पुं०) विजयार्द्ध पर्वत। (जयो०वृ० २३/५)

विजयिन् (पुं०) [वि+जि+इनि] विजेता, जीतने वाला। (सुद० १३०)

विजयिनी (वि०) जयकारिणी। (जयो० १८/५२)

विजरं (नपुं०) [विगता जरा यस्मात्] वृक्ष का तना।

विजरति (वि०) अतिवृद्ध। (जयो० ३/५३)

विजरत् (वि०) ज्वाला, लौ। (जयो० १३/५०)

विजल्पः (पुं०) [वि+जल्प्+घञ्] ऊट-पटांग, मूर्खतापूर्ण बात, मुखरी वचन।
०व्यर्थ प्रलाप, विद्वेषपूर्ण भाषण।

विजल्पित (भू०क०कृ०) [वि+जल्प्+क्त] ०कथित, प्रतिपादित, निरूपित।
०भाषित, कही गई बात।

विजात (भू०क०कृ०) [विरुद्धं जातं जन्म यस्य] ०नीच कुलोत्पन्न, वर्णसंकर।
०उत्पन्न हुआ, जन्म को प्राप्त हुआ।

विजातिः (स्त्री०) [विभिन्ना जाति] भिन्न प्रकार की जाति, विषम, असमान।
०भिन्नवर्ण।
०अन्य जन्म में उत्पत्ति।

विजातीय (वि०) असमान, विषम, अन्य जाति वाला।

विजिगीषु (वि०) [वि+जि+सन्+उ] जीत का इच्छुक, विजय की इच्छा वाला।
०नीति एवं पराक्रम की इच्छा वाला।
०योद्धा, शूरवीर।
०प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिपक्षी।

विजिगुषुकथा (स्त्री०) जय-पराजय संबंधी कथा।

विजिज्ञासा (स्त्री०) [वि+ज्ञा+सन्+आ] स्पष्ट जानने की इच्छा।

विजित (सक०) जीतना, विजय प्राप्त करना, परास्त करना, हटाना। 'दैवं किन्तु निहत्य यो विजयते तस्यात्र संहारकः'। (वीरो० १६/३०)

विजित (भू०क०कृ०) जीता हुआ, विजय को प्राप्त हुआ, हराने वाला, पराजित, निषेध (जयो० २/१२७)
०जितेन्द्रिय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विजितः (पुं०) [वि+ज+क्तिन्] विजय, जीत, फतह।

विजित्य (सं०कृ०) जीतकर। (सुद० २/४८)

विजिनः (पुं०) चटनी।

विजिह्य (वि०) कुटिल, वक्र, मुड़ा हुआ।

विजुलः (पुं०) [विज्+उलच्] शाल्मलि तरु, सेमलवृक्ष।

विजृंम्भ् (अक०) जम्भाई लेना, उबासी लेना। (वीरो० ६/१२)

विजृंम्भणं (नपुं०) [वि+जृम्भ+ल्युट्] ०जम्भाई लेना, मुंह खोलना, आलस्य चिह्न। (जयो०वृ० ६/३९)

०खिलाना, मुकुलित होना, उन्मुक्त होना।

०दिखलाना, प्रदर्शन करना, खोलना, फैलाना।

०मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, रंगरेलियां मनाना।

०अरुचिधारिणी। (जयो०वृ० ६/३९)

विजृम्भित (भू०क०कृ०) [वि+जृम्भ्+क्त] ०जंभाई ली।

०विकसित फैलाया।

०प्रदर्शित, दिखाया गया।

विजृम्भितं (नपुं०) मनोरंजन क्रीड़ा, खेल ०प्रदर्शन * अभिलाषा, वाञ्छा, चाह।

०कृत्य कार्य, कर्म, आचरण।

विजेतुं (वि०+जि+तुमुन्) जीतने के लिए। (वीरो० २२/३३)

विज्जनं (नपुं०) एक प्रकार की चटनी।

०तीर, बाण।

विज्जुलं (नपुं०) दालचीनी।

विज्ञ (वि०) [वि+ज्ञा+क] प्रज्ञ, विज्ञान।

०जानकार, समझने वाला, सोचने वाला, समझदार। (दयो० १/९)

०निपुण, चतुर, प्रवीण, जानकार लोग। (सुद० १०७)

०ज्ञानी, मनीषी, विचारज्ञ। विज्ञो न सम्पत्तिषु हर्षमेति (सुद० १११)

विज्ञः (पुं०) बुद्धिमान् पुरुष। 'धर्मात्मतां विज्ञ उपेति' (सम्य०७०)

विज्ञतुक (पुं०) विज्ञ का पुत्र। (वीरो० १७/३५)

विज्ञप्त (भू०क०कृ०) [वि+ज्ञप्+क्त] कथित, प्रार्थित, निरूपित।

विज्ञा (वि०) चतुरा, विज्ञाय विज्ञा रुचिवेदने ताः। (वीरो०५/३४)

विज्ञप्तिः (स्त्री०) [वि+ज्ञप्+क्तिन्] ०प्रार्थना, अनुरोध, समाचार।

०तर्कसंगत पदार्थ का ज्ञान।

०सादर उक्ति, घोषणा।

विज्ञभाषित (वि०) विद्वान् द्वारा कथित-'विज्ञेन विदुषो भाषितं कथितमिदम्' (जयो० ४/२५)

विज्ञवर (वि०) श्रेष्ठज्ञानी। (वीरो० १२/४४)

विज्ञात (भू०क०कृ०) [वि+ज्ञा+क्त] ०विदित, ज्ञात, जानकारी। कलित। (जयो०वृ० ८/९२)

०ज्ञान किया गया, अनुभूत।

०विख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत।

विज्ञानं (नपुं०) [वि+ज्ञा+ल्युट्] ०ज्ञान, अनुभूति, अनुभव, (दयो० १०) प्रतीति, जानकारी, आत्म-ज्ञान। (दयो० ५९) परमात्म प्रतीति, वस्तु तत्त्व ज्ञान। (सम्य० १०६)

०भेद विज्ञान, वस्तुज्ञान, परमात्मज्ञान, विशुद्धात्म, प्रतीति (सम्य० १०७)

०अनध्वसाय, संदेह और विपरीता से रहित ज्ञान।

०स्व-पर-विषयक प्रतिभास। विशेषस्य ज्ञात्याद्याकारस्य ज्ञानमवबोधनं निश्चयो यस्य तद्विज्ञानम्' (जैन०ल० १००)

०व्यवसाय, प्रयोजन, नियोजन।

०विवेचन, निरूपण, प्रतिपादन।

विज्ञानगत (वि०) भेद विज्ञान को प्राप्त।

०कैवल्यविशिष्ट ज्ञान (वीरो० ५/३३)

विज्ञानगति (स्त्री०) ज्ञान की अवस्था। परमात्म ज्ञान की स्थिति।

विज्ञानज्योति (स्त्री०) भेद विज्ञान की प्रतीति।

विज्ञानतत्त्वं (नपुं०) परमात्म तत्त्व, विशेष ज्ञान तत्त्व, सम्यग्ज्ञान की विशेषता।

विज्ञानधामं (नपुं०) परमज्ञान का स्थान।

विज्ञानभातृकः (पुं०) बुद्ध।

विज्ञानवादः (पुं०) बौद्ध सिद्धांत की एक शाखा।

विज्ञानविद्या (स्त्री०) आध्यात्मविद्या (दयो० १०)

विज्ञानविधायिन (वि०) अध्यात्म विधा युक्त। कथमस्तु जडप्रसङ्गताऽखिविज्ञानविधायिना सता। (वीरो० ७)

विज्ञानसंतुलित (वि०) भेद विज्ञान की एक रूपता वाली दृष्टि।

वीरस्तु धर्ममिति यं परितोऽनपायं,
विज्ञानतस्तुलितमाह जगद्धिताय।
तस्यानुयायिधृतविस्मरणादि दोषा,
द्याऽभूद्दशा क्रमगतोच्यत इत्यहो सा।। (वीरो० २२/१)

विज्ञानार्थ (वि०) विशेष ज्ञान के लिए। (जयो०वृ० २/४९)

विज्ञानिक (वि०) [विज्ञान+ठन्] विद्वान्, ज्ञायक, जानकर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विज्ञापक: (पुं०) [वि+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] ०अध्यापक, शिक्षक, उपदेशक।
०प्रतिभाषक, संदेशक।

विज्ञापनं (नपुं०) [वि+ज्ञा+णिच्+ल्युट्] ०सूचना, वर्णन, संदेश, जानकारी।
०वस्तु विशेषता का उल्लेख, शिष्ट कथन।
०प्रसारण, प्रचारण पद्धति।

विज्ञापित (भू०क०कृ०) [वि+ज्ञा+णिच्+क्त] ०सूचित, प्रदर्शित, कथित।
०प्रार्थित।
०अनुरोध किया गया।

विज्ञाप्ति (वि०) [वि+ज्ञा+णिच्+क्तिन्] विज्ञप्ति, सूचना, अनुरोध, प्रार्थना।

विज्ञाप्यं (नपुं०) [वि+ज्ञा+णिच्+यत्] सूचना, संदेश, प्रार्थना, अनुरोध।

विज्ञाविज्ञ (वि०) ज्ञानी-अज्ञानी। (जयो० १९)

विज्वर: (वि०) [विगतो ज्वरो यस्य] ज्वरमुक्त, व्याधि रहित।

विंजामरं (नपुं०) आंखों की सफेदी, श्वेत भाग युक्त नयन।

विंजोलि: (स्त्री०) रेखा, पंक्ति।

विट् (सक०) ध्वनि करना, शब्द करना।
०दुर्वचन कहना, निन्दा करना।
०अभिशाप देना।

विट: (पुं०) विष्ठा, पुरीष। (जयो०वृ० २५/२१)
०प्रेमी, यार।
०लम्पट, कामुक, कामीजन।
०धूर्त, ठग, छली।
०मूषक।
०नारंगी तरु।

विट्कारिका (स्त्री०) एक पक्षी विशेष।

विटङ्क: (पुं०) [विशेषेण टक्यते बध्यते इति-वि+टंक्+घञ्] अजायब घर, चिड़ियाघर।
०कलश, कंगूरा, छत के ऊपरी भाग की चोटी।
०चिह्न, मुद्रा।

विटङ्कित (वि०) [वि+टंक्+क्त] ०चिह्नित, मुद्रांकित।

विट्चर: (पुं०) पालतू सूअर।

विटप: (पुं०) [विटं विस्तारं वा पाति-पीबति-पा+क] ०वृक्ष, तरु-विटं कामिनं पाति रमतीति विटपोऽयं च विटपो वृक्ष' इत्युक्ते। (वीरो०वृ० ६/२७)
०शाखा, टहनी।
०झाड़ी, झुरमुट।
०विस्तार।
०कामुक, कामीजन। (जयो०वृ०३/११३) (जयो०१६/२२)

विटपत्व (वि०) शाखित्व। (जयो० ८/३५) (जयो० २०/६२)

विटपप्रपञ्च: (पुं०) वृक्ष रूप विभाग, वृक्ष की शाखाएं। (सुद० १३२)

विटपविधानं (नपुं०) वृक्ष विधान। 'विटपानां वृक्षाणां विधानं यत्र' (जयो०वृ० २०/६१)
०कामुक विधान। विटपानां कामिनां विधानम्'। (जयो०वृ० २०/६१)

विटपिन् (पुं०) [विटप+इनि] वृक्ष समूह, वट वृक्ष, गूलर तरु।

विटपिभृग: (पुं०) बंदर, लंगूर।

विटसङ्ग: (पुं०) कब्ज, कोष्ठबद्धता।

विद्सारिका (स्त्री०) मैना।

विठङ्क (वि०) अधम, निम्न, नीच, बुरा।

विठर (पुं०) बृहस्पति।

विड् (सक०) अभिशाप देना, दुर्वचन कहना, चिल्लाना।

विडं (नपुं०) कृषिकर्म, खेती। निगद्यविड्भ्य: कृषिकर्म चायमिहार्थशास्त्रं नृपसंस्तवाय। (वीरो० १८/१४)
०कृत्रिम नमक, समुद्री नमक।

विडंग: (पुं०) वायविडंग, कृमिनाशक औषधि।

विडंगं (नपुं०) वायविडंग।

विडमक्ष्यवस्तुं (नपुं०) विष्टा रूप अभक्ष वस्तु। (वीरो० १९/४)

विडम्ब: (पुं०) [विडम्ब+अप्] दु:खी करना, संताप देना, कष्ट देना।

विडम्बनं (नपुं०) [विडम्ब+ल्युट्] नकल, छद्मवेश, बनावटी वेश।
०धोखेबाजी, छल-प्रपञ्च।
०क्लेश, कष्ट, संताप।
०दु:ख देना, निराश करना।
०उपहार, हंसी उड़ाना।

विडम्बित (भू०क०कृ०) [विडम्ब+क्त] अनुकरण किया गया, परिहास किया गया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* ठगा गया, छल किया गया।
* कष्ट पहुंचाया गया।
* अधम, निम्नता।

विडशनं (नपुं०) पुरीषभाषण। (जयो० २५/२१)
विडारकः (पुं०) [विडाल+कन्, लस्य रः] बिलाब, बिल्ली।
विडालः (पुं०) बिलाव, औतुन। (जयो० २३/५५)
विडालकः (पुं०) देखो ऊपर।
विडालजातः (पुं०) विलाब पुत्र। (जयो० २०/३०)
विडीजं (नपुं०) [वि+डी+क्त] पक्षियों की उड़ान।
विडुलः (पुं०) [विड्+कुलन्] बेंत।
विडूरजं (नपुं०) [विजूर+जन्+ड] वैडूर्यमणि, नीलम।
विडोजस् (पुं०) [विट व्यापक अजो यस्य] इन्द्र।
विडौजस् देखो ऊपर।
वितंसः (पुं०) [वि+तंस्+घञ्] पिंजरा।
* रस्सी, श्रृंखला, सांकल।
* जाल।

वितंडः (पुं०) [वितंड+टाप्] आक्षेप, छिद्रानुवेषण, दोषपूर्ण आलोचना, दार्शनिक कथन में निरर्थक तर्क-वितर्क।
* चम्मच, स्रुवा।
* गुगुल, धूप।

वितत (भू०क०कृ०) [वि+तन्+क्त] * आयत, विशाल, व्यापक, विस्तीर्ण, विस्तृत।
* बिछाया हुआ, फैलाया हुआ।
* निमग्न। (सुद० ९२)
* सम्पन्न, निष्पन्न, कार्यान्वित।
* विस्तारित। (जयो० १३/४९)
* आच्छादित, प्रच्छन्न, ढका हुआ।

विततः (पुं०) पटह शब्द, भेरी ध्वनि, सुघोष।
विततिः (स्त्री०) [वि+तन्+क्तिन्] * रेखा, पंक्ति।
* परिमाण, संग्रह।
* गुल्म, लताझुण्ड।
* विस्तार, प्रसार, फैलाव।

वितथ (वि०) [वि+तन्+क्थन्] मिथ्या, झूठ, अलीक युक्त।
* निरर्थक, निष्प्रयोजन।

वितथ्य (वि०) [वितथ्+यत्] मिथ्या, सारहीन, असत्य युक्त, निरर्थक।
वितद्रुः (स्त्री०) झेलम नदी।
वितनु (वि०) अनङ्ग, शरीर रहित। (जयो० ३/८८)
वितंतुः (पुं०) अश्व, श्रेष्ठ जाति का घोड़ा।
वितरणं (नपुं०) पार जाना, अलग होना, छोड़ना।
* वितरण करना, उपहार देना, दान, प्राभृत, भेंट।
* तिलाञ्जलि देना, त्याग देना।

वितरणचेष्टा (स्त्री०) त्याग प्रवृत्ति। (जयो०वृ० १२/११८)
वितर्कः (पुं०) [वि+तर्क्+अच्] युक्ति, तर्कसंगत कथन, निश्चित विवेचना। (सम्य० १४८)
* विभङ्ग। (जयो०वृ० ३/१०)
* चिन्तन, समझ, विचार। 'किं करोमीति वितर्कमाप्त, (जयो०वृ० २४/९०)
* श्रुत ज्ञान, द्वादशांग रूप ज्ञान। सम्यक् रूप से ग्रहण किया गया विवेचन।
विशेषेण विशिष्टं वा तर्कणं सम्यग्ग्रहणं वितर्कः श्रुतज्ञानम्।' (जैन० १००)
* सन्देह, वस्तु में निर्णयात्मकता की कमी।

वितर्ककारकः (पुं०) विवेचन का विषय। (जयो०वृ० १/२४)
वितर्कगतः (पुं०) युक्ति युक्त, तर्कसंगत।
वितर्कणं (नपुं०) तर्क करना, विवेचन, निष्पादन।
वितर्कणा (स्त्री०) निरूपणा, विवेचना, व्याख्या, कथन। (वीरो०वृ० ३/६)
वितर्कदृष्टिः (स्त्री०) विवेचन की दृष्टि।
* संदेह की दृष्टि।

वितर्कधरः (वि०) चिंतन युक्त।
वितर्कपात्रं (नपुं०) कल्पना पात्र। * चिन्तन शील।
वितर्कभावः (पुं०) विभङ्ग भाग। * विचार-परिणाम।
वितर्कमतिः (स्त्री०) विचारशील बुद्धि।
वितर्कविधात्री (वि०) तर्क पैदा करने वाली। (जयो० ५/७४)
वितर्क विषयः (पुं०) अनुमान का विषय। (जयो० २/४९)
वितर्कसत्त्वं (नपुं०) न्यायशास्त्र।
* वितर्कणा का विषय। (वीरो० ३/६)

वितर्दिः (स्त्री०) [वि+तर्द्+इन्] छज्जा, बरामदा।
* चौकोतरा चबूतरा।

वितलं (नपुं०) [विशेषेण तलम्] विशेष खण्ड, पृथ्वी का भाग।
वितस्ता (स्त्री०) नदी।
वितस्तिः (स्त्री०) [वि+तस्+ति] बारह अंगुल का माप। दो पैर की दूरी-द्वाभ्यां पादाभ्यां वितस्तिः (जैन०ल० १०१)
वितान (वि०) फैलाना, विस्तार करना, प्रसार।
* चादर। (सुद० ११७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* चंदोबा, छत, छज्जा, बरामदा। (दयो० २/१०)
* संग्रह, परिमाण, समवाय, समूह।
* यज्ञ, आहूति।
* अवकाश, आराम, विश्राम।

वितानकः (पुं०) प्रसार, फैलाव, विस्तार।

वितानकं (नपुं०) प्रसार।
* ढेर, समुच्चय, समुदाय, संग्रह, राशि।
* शामियाना, चंदोबा, छत।
* वृक्ष विशेष।

वितीर्ण (भू०क०कृ०) [वि+तृ+क्त] अर्पित, समर्पित, दत्तवान, दिया हुआ। (जयो० ३/९४)
* वितरण करता हुआ, देता हुआ।
* अवतरित, नीचे आया हुआ।
* पार किया हुआ, पास से गुजरा हुआ।
* ढोया हुआ, लिया हुआ, ग्रहण किया हुआ।

वितीर्णवान् (वि०) दत्तवान्, देने वाला। (जयो०वृ० ३/९४)

वितुन्नं (नपुं०) [वि+तुद्+क्त] सेवारघास, शैवाल।

वितुन्नकं (नपुं०) [वितुन्न+कन्] * धनिया।
* तूतिया।

वितुष्ट (भू०क०कृ०) [वि+तुष्+क्त] * असंतुष्ट, अप्रसन्न, संतोष रहित, आनन्द रहित।

वितृ (सक०) [वि+तृ] पहनाना। (जयो० १२/१२)
* प्रयत्न करना। (सुद० ९२)
* वितरण करना, देना, प्रदान करना। (जयो०वृ० ५/७५)
* दान करना। (जयो० ९/१२)
* बांटना। (वितरीतुं (जयो० ५/२)

वितृष्ण (वि०) [विगता तृष्णा यस्य] तृष्णा रहित, इच्छाओं से मुक्त।
* संतुष्ट, प्रशान्त, व्याकुलता रहित।

वित्त् (सक०) उपहार देना, भेंट देना, समर्पित करना, प्रदान करना।

वित्त (भू०क०कृ०) [विद् लाभे क्त] * लब्ध, प्राप्त, गृहीत।
* परीक्षित, अनुसंहित।
* विख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत।
* पाया, प्राप्त किया।

वित्तं (नपुं०) धन, सम्पत्ति, वैभव। एकैकया कपर्दिकया खलु वित्तं बहुविचित्रम्। (जयो०२३/५९) धन, वस्तु। धात्रीफलं केवलमश्नुवानः कौपीनवित्तोऽरिरिवेशिता नः। (जयो० १/३८) विभव। (जयो०वृ० ३८)

प्राणादपीष्टं जगतां तु वित्तं,
हर्तुर्व्यपायि स्वयमेव चित्तम्।
स्वनिर्मितं गर्तमिवाशु मर्तं,
चौर्यं तदिच्छेत् किल कोऽत्र कर्तुम्।। (जयो० २/१३५)

समर्जितुं वित्तमथात्मनीनदोर्भ्यामिदानीं समभूत्प्रवीणः। (समु० ३/१)

वित्तंसः (पुं०) पैसा, धन सम्पत्ति। (दयो० ८२)

वित्तगत (वि०) धन युक्त।

वित्तद (वि०) दानी, दाता।

वित्तदानं (नपुं०) धनदेना।

वित्तमात्रा (स्त्री०) सम्पत्ति, सम्पदा।

वित्तयोगः (पुं०) धन का कारण।

वित्तवर्त्मन् (नपुं०) अर्थाजन, धन कमाना। (जयो० ३/१०)

वित्तविधि (स्त्री०) सम्पत्ति विधि। (सुद० ४/२४)

वित्तागमः (पुं०) धन का अधिग्रहण।

वित्ति (स्त्री०) चिन्तन, निर्णय, ज्ञान, विवेचन।

वित्तीशः (पुं०) कुबेर।

वित्तोपार्जनं (नपुं०) धन अधिग्रहण।

वित्रासः (पुं०) [वि+त्रस्+घञ्] भय, संकट, कष्ट, संताप।

वित्सनः (पुं०) सांड, बलिवर्द।

विथ् (अक०) निवेदन करना, प्रार्थना करना।

विथुरः (पुं०) राक्षस।
* चोर।

विद् (सक०) जानना, समझना, सोचना। विद्धि-जानीहि (जयो० २/८४)
* चिंतन करना, ज्ञात करना, मालूम करना।
* विचार करना। त्व ब्राह्मणोऽसि स्वयमेक विद्धि। (वीरो० १४/३५)
* अनुभव करना, मानना।
* अवगत करना, बतलाना। (सुद० २/३४)
* व्याख्या करना, निरूपण करना।
* सावधान करना, सूचित करना। (सुद० ९७)
* उपलब्ध करना, प्राप्त करना।
* निवेदन करना, कहना, प्रकथन करना। (जयो०)

विद् (वि०) ज्ञान, समझ, बोध। (जयो० १/९५)
* विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान, विवेक। (सम्य० ५८)

विद् (पुं०) बुधग्रह।
* विद्वान्, विज्ञ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विदः (स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि, प्राज्ञ।
* बुधग्रह। (सम्य० १०७)

विदग्ध (भू०क०कृ०) [वि+दह्+क] * जला हुआ, भस्म हुआ, जली हुई। (जयो० ५/२५)
* नष्ट हुआ, समाप्त हुआ।
* चतुर, निपुण, कुशल, कुशाग्रबुद्धि।
* सूक्ष्मदर्शी, तत्त्वदर्शी।
* भस्मीभूत। (जयो० १२/७०)

विदग्धः (पुं०) कलाविद्, विद्याभ्यासी।

विदग्धकषायिन् (वि०) कषाय को नष्ट करने वाला।

विदग्धक्षोभ (वि०) क्षोभ नाशक।

विदग्धचेतना (वि०) चेतनाशून्य, निष्प्राण।

विदग्धजन (वि०) कुशाग्रजन, बुद्धिमान।

विदग्धपरिकर (वि०) चारों ओर से जलने वाला। (दयो०६६)

विदग्धनीति (स्त्री०) अच्छी नीति।

विदग्धवन (वि०) जलता हुआ अरण्य।

विदग्धारण्य (वि०) देखो ऊपर।

विदथः (पुं०) [विद्+कथच्] विद्वान्, नीतिज्ञ, विद्याभ्यासी।
* यति, मुनि।

विदधत् (भ०) तपाया हुआ। (सुद० ३/१४)

विदरः (पुं०) [वि+दृ+अप्] तोड़ना, काटना।
* विदीर्ण करना।

विदरं (नपुं०) कंकरी तरु।

विदर्भः (पुं०) विदर्भक्षेत्र।
* मरुभूमि।

विदर्भजा (पुं०) विदर्भ राजपुत्री।

विदल (वि०) [विघट्टितानि दलानि यस्य-वि+दल-एक] टुकड़े टुकड़े हुए। खुला हुआ, खिला हुआ।

विदलः (पुं०) विभक्त करना, अलग करना।

विदलमं (नपुं०) [वि+दल्+ल्युट्] फाड़ना, चीरना, अलग अलग करना।
* विभक्त करना, विभाग करना।

विदाननं (नपुं०) सरस्वती मुख। (जयो०)

विदारः (पुं०) [वि+दृ+घञ्] फाड़ना, चीरना।
* भेदना, विभक्त करना।
* संग्राम, युद्ध, लड़ाई।

विदारकः (पुं०) [वि+ट्ट+ण्वुल्] चट्टान।

विदारक (वि०) भेदक, फाड़ने वाला, टूक-टूक करने वाला। (दयो० ६४)

विदारणः (पुं०) नदी के मध्य स्थित चट्टान।

विदारणं (नपुं०) फाड़ना, चीरना, मारा जाना। (जयो० २/११२)
* भेदन। (जयो० २/५)

विदारणा (स्त्री०) युद्ध, संग्राम।
* कष्ट, संताप, दु:ख।
* वध, हत्या।

विदारयेत्-विदीर्ण करना चाहिए। (सम्य० ९९)

विदारित (वि०) विदीर्ण, खण्डित, विभाजित। (जयो० १३/२६)

विदारु (स्त्री०) छिपकली गृहकोकिला।

विदित (भू०क०कृ०) [विद्+क्त] * ज्ञात, समझा हुआ, सीखा हुआ।
* सूचित संदेशित।
* विश्रुत, विख्यात, प्रसिद्ध।

विदितः (पुं०) विद्वान् पुरुष।

विदिश् (स्त्री०) [दिग्भ्यो विगता] दो दिशाओं का मध्यवर्ती बिंदु।

विदिशा (स्त्री०) दशार्ण प्रदेश की राजधानी, भेलसा।

विदीर्ण (वि०) [वि+दृ+क्त] * खण्डित, विदारित, विस्फालित।
* भेदित, फैलाया गया।
* खोला गया, फाड़ा गया।

विदुः (पुं०) हस्ति ललटा। * विद्वान्। 'उषसि दिगनुरागिणीति पूर्वा रविपि हृष्टवपुर्विदो विदुर्वा' (जयो० १०/११६)

विदुर (वि०) बुद्धिमान्, विद्वान्।

विदुरः (पुं०) पाण्डु के छोटे भाई का नाम।

विदुलः (पुं०) [वि+दुल्+क] बेंत।

विदुष् (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान्। (हित० १/) (सुद० ८०) 'येन सधर्मो विदुषामतः' गतं न शोच्य विदुषा समस्तु। (वीरो० १४/३४)

विदुषी (वि०) बुद्धिमति। (जयो०वृ० ११/२०)

विदूषक (वि०) [विदूषयति स्वं परं वा-वि+दूष्+णिच्+ण्वुल्] दूषित करने वाला। मलिन करने वाला।
* रसिक, मसखरा, ठिठोलिया। (वीरो० ६/३७)

विदूषकः (पुं०) ०हंसोड़ा, ०भांड, ०रसिक व्यक्ति ०परिहासक।

विदूषणं (नपुं०) [वि+दूष्+ल्युट्] * दुर्वचन, दुर्व्यवहार, परिवाद।
* दोष लगाना, भ्रष्ट करना।

विदृति (स्त्री०) सन्धि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विदेशः (पुं०) [विप्रकृष्टो देशः] परदेश, अन्य प्रान्त, दूसरा देश।

विदेशीय (वि०) परदेशी, अन्य देश वाला।

विदेहः (पुं०) जो शरीर संस्कार से रहित है।
* नष्ट शरीर वाले मुनियों के विदेह होता है। 'पूर्वापर विदेहक्षेत्र। (जयो० २४/७)

विदेहक्षेत्रं (नपुं०) विदेह स्थान। (वीरो० ११/२५)

विदेहजनपद (पुं०) विदेह नामक जनपद।

विदेहदेशः (पुं०) जम्बूद्वीप का एक स्थल।

विदेहनिष्ठ (वि०) पूर्व विदेह में स्थित। (वीरो० ११/२५)

विदेहभावः (पुं०) शरीर का विकारी भाव। (वीरो० २/९)

विदेहा (स्त्री०) मिथिला नगरी। (सम्य० ९३)

विद्ध (भू०क०कृ०) [व्यध्+क्त] बींधा हुआ, चुभा हुआ। विद्धेय (सुद० १०४)
* घायल। (सुद० १०५)
* निदेशित, प्रेषित।

विद्धं (नपुं०) घाव।

विद्धकर्ण (वि०) छिदे हुए कान वाला। समझें।

विद्यः (स्त्री०) विद्या ऋद्धि। (जयो० २३/८६)

विद्या (स्त्री०) [विद्+क्यप्+टाप्] वृत्त, शास्त्रसार। (जयो०वृ० २४/१४४)
* शिक्षा, ज्ञान, अवगम, बोध। (जयो० १/६) विद्वद्भिः का सा बन्धा। (जयो० २८/१०७)
* शास्त्रोपजीवन, साधितसिद्धि।
* यथार्थ ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान, त्रयी वार्ता।
* वाद, विचार। (जयो० वृ० १/६)

विद्यमान (वि०) वर्तमान।

विद्यमातत्व (वि०) वर्तमान में स्थित। (हित० १४)

विद्याकर्मन् (नपुं०) असि, मषि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और विद्या ये छह विद्या कर्म हैं। (हित० १०)

विद्याकर (पुं०) विद्वान्, पुरुषा विज्ञजन।

विद्याकर्मार्यः (पुं०) बहत्तर कलाओं में निपुण पुरुष एवं चौसठ कलाओं में प्रवीण नारी।

विद्याचारणा (स्त्री०) विद्या शक्ति।

विद्यादानं (नपुं०) ज्ञानदान, शिक्षा देना, ज्ञानाभ्यास कराना।

विद्यादेवी (स्त्री०) सरस्वती, विद्याधारी।

विद्यादोषः (पुं०) विद्या/ज्ञान में दोष, ज्ञान को दूषित करना।

विद्याधनं (नपुं०) ज्ञानधन, ज्ञानसम्पत्ति।

विद्याधरः (पुं०) देवयोनिगत विद्या विषयक ज्ञानी।
* अम्बरचारी (जयो०वृ० ६/१२) विजयार्ध पर्वत पर रहने वाले मनुष्य।

विद्याधरलोकः (पुं०) विद्याधरों का क्षेत्र। (समु० २/५)

विद्याधरी (स्त्री०) विद्याधर की भार्या।

विद्याधृत् (पुं०) विद्याधर, खेचर। (जयो० ८/४५)

विद्याध्ययनं (नपुं०) विद्या प्राप्ति। (दयो० ९१)

विद्यानन्दः (पुं०) आचार्य विद्यानन्द, अष्ट सहस्त्री के रचनाकार। (जयो० ६/५) (जयो० २२/८४) * आधुनिक २०वीं एवं २१वीं शताब्दी में प्रविष्ट आचार्य विद्यानन्द जिनकी आयु ७८ वर्ष की भी है।

विद्यानन्दसत्कृति (स्त्री०) विद्यानन्द द्वारा रचित अष्ट सहस्त्री (जयो० २२/८४)

विद्यानन्दविवर्णिता (वि०) विद्यानन्द द्वारा रचित अष्टसहस्त्री। (जयो० ३/८७७) विद्याया आनन्देन विकीर्णता अष्टसहस्त्री।

विद्यानन्दि (पुं०) आचार्य विद्यानन्दि।

विद्यानुयोगः (पुं०) विद्याभ्यास। (वीरो० १८/३२०

विद्यानुवादः (पुं०) परिज्ञान विद्या, विद्यानुप्रवाद, विद्यानुयोग आदि। जिस श्रुत में समस्त विद्याओं, आठ महानिमित्तों, उनके विषय, राजुराशि के विधान, क्षेत्र, श्रेणी, लोकस्थिति, संस्थान और समुद्घात का कथन किया जाता है। 'ओं णमो दसपुव्वीणं सद्धयो विधानुवादतः। णमो चोदसपुव्वीणं श्रुतज्ञानेन सम्भृतः। (जयो० १९/६७) विद्यानुवादत्योऽपि विद्यानुवादस्य पूर्वस्य परिज्ञानाद्विद्यानां रोहिण्यादीनामनुवादतः। (जयो०वृ० १९/६७)

विद्यानुयोगः (पुं०) दशम पूर्वश्रुत।

विद्यापदं (नपुं०) ज्ञान पद।

विद्यापिण्डं (नपुं०) विद्या का मन्त्र तन्त्रादि का प्रयोग करके आहार प्राप्त करना।

विद्याप्राप्तिः (स्त्री०) ज्ञान की उपलब्धि।

विद्याभ्यासः (पुं०) ज्ञानाभ्यास। (दयो० ५५)

विद्यामदं (नपुं०) विद्या का अभिमान।

विद्यमानं (नपुं०) विद्या/ज्ञान का सम्मान। * ज्ञान का अहंकार।

विद्यमोदः (पुं०) विद्याओं से आनंद।

विद्यायोगः (पुं०) ज्ञान योग।

विद्यारत्नं (नपुं०) * उत्कृष्ट विद्या, * उत्तम विद्या।

विद्यानुरागः (पुं०) शिक्षा के प्रति अनुराग।

विद्यार्थिन् (वि०) विद्या का इच्छुक। (जयो०वृ० १५/२५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्यालयः (पुं०) शिक्षा केन्द्र, यत्र नास्ति कोऽपि विद्यालयः समस्ति किलैको गुरुर्यो।

विद्यालाभः (पुं०) ज्ञानलाभ में, श्रुतलाभ, प्रवचन लाभ। आगम के प्रति रुचि।

विद्यावान् (वि०) विद्या प्राप्ति वाला, विद्वान्, प्रज्ञ पुरुष।

विद्याशील (वि०) विद्या युक्त। * ज्ञान वेत, * विचारक।

विद्यसरित् (स्त्री०) विद्यारूपी नदी। (समु० ५/३०)
* प्रवाहिनी विद्या।
* गतिशील विद्या।

विद्यासिद्धः (पुं०) विद्याओं का अधिपति।

विद्युत् (स्त्री०) [विशेषेण द्योतते-वि+द्युत्+क्विप्] अशनि (जयो०वृ० ५/३६) बिजली, चपला। रत्त-धवल-समवण्णाओ तेजब्भहियाओ कुवियभुजंगोव्व चलंतसरीरा मेहेसु उवलब्भभाणाओ विज्जुओ णाम। (धव० १४/३५) जो रक्त, धवल एवं श्याम वर्ग से संयुक्त चंचलप्रभा उत्पन्न होती है उसे विद्युत कहते हैं। जो कोप रूपी भुजंग के मेघ से उत्पन्न होती है।

विद्यत्चरः (पुं०) पूर्वक्षणे चौरतयाऽतिनिंद्यः स एव पश्चाज्जगतोऽभिवन्द्यः। (वीरो० १७/२)

विद्युच्चोरः (पुं०) विद्युत नामक चोर, जिसने अपना चौर्यकर्म छोड़कर जम्बू कुमार के साथ पांच सौ साथियों सहित श्रमणदीक्षा धारण कर ली थी। (जयो० २३/७०) हिरण्वर्मामुनि और प्रभावती आर्यिका का शत्रु। (जयो० २७/७०)
विद्युच्चोरोऽप्यत: पञ्चशतसंख्यैः स्वसार्थिभिः।
समं समेत्य श्रामण्यमात्मबोधमगादसौ।। (वीरो० १५/२६)

विद्युज्ज्वाला (स्त्री०) बिजली की चमक।

विद्युज्ज्योति (स्त्री०) * विद्युत प्रभा, * प्रकाश, * आभा।

विद्युत्द्योतः (पुं०) बिजली की प्रभा।

विद्युत्तावः (पुं०) बिजली का संताप।

विद्युद्दानं (नपुं०) बिजली की कड़क।

विद्युत्प्रभा (स्त्री०) नाम विशेष। * विद्युज्योति।
* बिजली की चमक। रत्नपुर के राजा पिंगलागान्धार की पुत्री (जयो० २४/१०५)

विद्युत्प्रियं (नपुं०) कांसा।

विद्युल्लता (स्त्री०) बिजली का प्रकाश।

विद्युल्लेखा (स्त्री०) बिजली की रेखा, प्रकाश किरण।

विद्युत्वत् (वि०) बिजली की तरह।

विद्योतन (वि०) [वि+द्युत्+णिच्+ल्युट्] प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला।

विद्रः (पुं०) [व्यध्+रक्] फाड़ना, विदीर्ण करना, खण्ड खण्ड करना।
* दरार, छिद्र, विवर।

विद्रधिः (स्त्री०) [विद्+रुध्+कि] पीपयुक्त, फोड़ा, मवादयुक्त फोड़ा।

विद्रवः (पुं०) [वि+द्रु+अप्] उड़ान, प्रत्यावर्तन।
* आतंक।
* प्रवाह।
* पिघलना, गलना, बहना।

विद्राण (वि०) [वि+द्रा+क्त] उद्बुद्ध, जागृत, सचेत।

विद्रावणं (नपुं०) [वि+द्रु+णिच्+ल्युट्] उद्बुद्ध करना, जागृत करना।
* खदेड़ना, भगाना।
* परास्त करना, दूर करना।
* गलाना, पिघलाना, बहाना।

विद्रुमः (पुं०) [विशिष्टो द्रुम] मूंगा, प्रवाल। (जयो० ३/२५) (वीरो० ३/३१) * किसलय, कोंपल, पराग।

विद्रुमच्छायः (पुं०) प्रवालच्छाय। (जयो० ११/५९)

विद्रुमता (वि०) किसलयता, कोंपल रूपता। (जयो० ५/८८)

विद्रुमलता (स्त्री०) मूंगे की शाखा।

विद्रुमलतिका (स्त्री०) विद्रुम लता।

विद्वस् (वि०) [विद्+क्वसु] विद्वान्, विज्ञ, जानकार, ज्ञानी।

विद्वज्जनः (पुं०) प्रज्ञा पुरुष।

विद्वत्कल्प (पुं०) अल्पज्ञानी, थोड़ा पढ़ा हुआ।

विद्वद्देश्य (वि०) अल्पज्ञानी।

विद्ववर (वि०) ज्ञानी, बुद्धिमान्। (जयो० ३/२३)

विद्वान् (वि०) ज्ञानी, जानकर, प्रज्ञ, विवेकी, ज्ञातवान्। (जयो० ३/८५)

विद्वानपद (वि०) अयोग्य स्थान। (जयो० २/१४०)

विद्विष् (वि०) [वि+द्विष्+क्विप्] शत्रु, दुश्मन।

विद्विण्ट (वि०) घृणित, निन्दित, कुत्सित, अनीप्सित।

विद्वेषः (पुं०) [वि+द्विष्+घञ्] * शत्रुता, घृणा, कुत्सा, द्वेष, ग्लानि।
* गर्हा, तिरस्कार भाव।

विद्वेषणं (नपुं०) [वि+द्विष्+ल्युट्] घृणा, ग्लानि, गर्हा।
* विरोध। (जयो० १९/८८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्वेषणः (पुं०) शत्रु, दुश्मन।

विद्वेषणा (स्त्री०) घृणा करने वाली स्त्री।

विद्वेषिन् (वि०) [वि+द्विष्+णिनि] घृणा करने वाला, गर्हा युक्त।

विद्वेषिन् (पुं०) शत्रु, घृणक, दुश्मन, परिहासिन्। (जयो०वृ० २/१०२) * विरोधक। (जयो०वृ० ८/९६)

विधः (पुं०) [विध्+क] प्रकार, तरह, किस्म, विविधा, बहुलता। (जयो० ११/७७)

* ढंग, रीति, रूप। (सम्य० १/८)
* त्रिविध।
* समृद्धि।

विधनरः (पुं०) सुंदर पुरुष, लावण्युक्त व्यक्ति। (हन्ता भुवि या भवद्विधनरं सन्त्यक्त्वत्यस्तु सा (सुद० ९८)

विधवनं (नपुं०) [वि+धू+ल्युट्] हिलाना, क्षुब्ध करना, दुःखी करना।

* कपकपाना, थरथराना।

विधवा (स्त्री०) [विगतो धवो यस्याः सा] रांड, बेवा, पतिशून्य।

विधस् (पुं०) ब्रह्मा।

विधा (स्त्री०) [वि+धा+क्विप्] * ढंग, रीति, रूप, आकृति।

* प्रकार, पद्धति। (जयो० ३/९०)
* काव्य विद्या, काव्यकला।
* छेद करना।
* किराया।
* मज़दूरी। विगतो धाकारो यस्यास्तां विधामेव। (जयो०१६)
* आदत। (न तुङ् ममायं कुविधामनुष्यादेकेति (सम्य०६८)

विधातृ (पुं०) [वि+धा+तृच्] स्रष्टा, विधाता। (जयो० ८/९१)

* निर्माता
* प्रदाता, अनुदाता।
* भाग्य, दैव।
* विश्वकर्मा।
* कामदेव।
* विधायक। (सुद० ९७)
* मद्य, मदिरा।
* अङ्कृति। (जयो०वृ० १०/४४)

विधाता (पु०) ब्रह्मा, सृष्टा। (वीरो० १८/१५) ऋषभदेव जगत् के विधाता/ब्रह्मा, सृष्टा।

विधात्री (वि०) विधानकत्री। (जयो० ३/५७) विधान करने वाली। (भक्ति० २५)

* विधायक। (सुद० ९२)

रात्रिः स्वतो घोरतमो विधानी।

विधातुं (वि+धा+तुमुन्) * बनाने के लिए। (जयो० ८/६३)

* निर्माण करने के लिए। (जयो० ३/९०)
* स्त्री करने के लिए। (जयो० १/७८)

विधानं (नपुं०) [वि+धा+ल्युट्] * अनुकरण। (सुद० २/११)

* विधि। (सुद० १/१६) (सुद० १/४२)
* नियम, पद्धति, रीति, उपदेश। (सम्य० १५२)
* अध्यदेश, आज्ञा।
* प्रतीति। (सुद० १/१३)
* उपयोग, प्रयोग, नियोजन।
* नियत करना, आदेश देना।

विधानकं (नपुं०) [विधान+कन्] दुःख, कष्ट, पीड़ा।

विधाप् (सक०) बनाना, रचना, निर्माण करना। (जयो० २/१४)

विधायक (वि०) [वि+धा+ण्वुल्] बिलौना।

* विधान सभा का सदस्य, जो जन प्रतिनिधि भी कहलाता है।
* व्यवस्थित करने वाला, नियम बनाने वाला।
* कार्यान्वित करने वाला, निर्धारित करने वाला।

विधायिका (स्त्री०) व्यवस्थित करने वाली, निर्धारित करने वाली, प्रख्यातिभर्त्री प्रख्यात करने वाली। (जयो०वृ० १२/३७)

विधायिन् (वि०) निर्धारण करने वाली। (सुद० ७९)

विधिः (स्त्री०) [वि+धा+कि] विधान, नियम। (जयो० ४/५)

* पद्धति, रीति, प्रणाली, साधन, ढंग। (सम्य० ९०)
* कर्म। (विधीनां मवधा विभागः) (सम्य० १३२) तेनामृतेनेवरुगस्तु पूर्वार्जितविधिः शीतहतस्तरुर्वा (सम्य० ४६) ब्रह्मा, धाता (जयो० ३/४८) (जयो० १/३५) 'विधिः धाता अदृष्टविशेषो येन' (जयो० ३/४८)
* दैव। फलवत्तां तु विधिर्विधातु। (सुद० ९२)
* करने योग्य कार्य। 'भाव एव भविनां वरो विधिः' (जयो० २/८४)
* विधान, साधन। (जयो०वृ० १/४२)
* रचना। (वीरो० २२/६)
* व्यवहार, आचरण।

विधिकित्सनं (नपुं०) रीति-रिवाज। (वीरो० २२/१९)

विधिगत (वि०) भाग्य को प्राप्त हुआ।

विधिज्ञ (वि०) विधि वाला, विधि जानने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विधिज्ञातृ (वि०) नियम ज्ञाता।

विधिदृष्ट (वि०) नियत, विहित।

विधिद्वैधं (नपुं०) नियमों की विविधता।

विधिपूर्वकं (अव्य०) नियमानुसार, प्रणाली युक्त, पद्धति के अनुसार।

विधिप्रयोगः (पुं०) भाग्यबल।

विधिरेकतानः (पुं०) इतिहास। (वीरो० २०/२२)

विधिवधू (स्त्री०) सरस्वती।

विधिवेदिन् (पुं०) ब्रह्मा, विधाता। 'विधानज्ञेन विधिना' (जयो०३/५०)

विधिशायिन् (वि०) नियम से शाप युक्त हुआ। (सुद० १०९)

विधिहीन (वि०) नियत रहित, साधन शून्य।

विधीय् (सक०) बनाना, रचना विधीयते (जयो०वृ० २/११९) विधीयते-क्रियते (जयो०वृ० २/१६) विधीयन्ते (जयो०वृ० ४/६४)

विधुः (पुं०) चन्द्र, शशि, चन्द्रमा। (सुद० ३/४४) (जयो० १/५६) विधुरिव कौमुदमिह वा कलाधरो ह्येधयेत्किञ्च (वीरो० ४/४६) 'विधावित्येत् सम्यक्येकवचनमेव जानामि, किन्तु इकारान्त विधिशब्दस्य सप्तम्येकवचनं यद् भवति तस्य व स्मराम्यहं किल। (जयो० १६/७२) विधुः कलाभिः परिवर्द्धकः सन्, पितुः प्रसक्तयै जगतोऽप्यलंसः। (समु०३/३)

* ब्रह्मा, विष्णु।
* कपूर।
* पिशाच, दानव।
* सविता, विधवति।

विधुकरं (नपुं०) चन्द्रकिरण।

विधुगौरवः (पुं०) ब्रह्मा की विशालता।

विधुक्षयः (पुं०) चन्द्रक्षय, कृष्ण पक्ष का समय।

विधुजन्मदात्री (स्त्री०) कर्पूर को जन्म देने वाली, कदली, केलातरु। 'विधोः कर्पूरस्य जन्मदात्री रम्भा कदल्यपि' (जयो०वृ० ५/८१)

विधुत (वि०) उत्सृष्ट, धुले हुए, सकम्प। (जयो० १२/३२)

विधुताम्बुधारा (स्त्री०) उत्सृष्टाम्बुसार, हाथ धोने से बही हुई जलधारा। (जयो०वृ० १२/१३२)

विधुदीधिति (स्त्री०) चन्द्र किरण। विधेश्चन्द्रस्य दीधितिर्नाम् रश्मि' (जयो० १३/५४)

विधुन् (सक०) [वि+धुन्] धुनना, झलना, हिलाना, कंपकंपाना। (जयो० १२/१२१)

विधुननं (नपुं०) [वि+धु+णिच्+ल्युट्] * हिलना, झूमना, विक्षुब्ध होना।

* थरथराना, कंपकंपाना।

विधुन्तुदः (पुं०) [विधुं चन्द्रं तुदति त्रासयति-विधु+तुद्+खश्+मुम्] राहु। (जयो० ९/१५)

विधुन्वन्ती (वि०) [वि+धु+शतृ+ङीप्] धुनती हुई, झलती हुई। (जयो० १२/१२१)

विधुबिम्बं (नपुं०) चन्द्रमण्डल, शशिमण्डल। चन्द्र प्रतिबिम्ब-विधुबिम्बान् चन्द्रमण्डान्। (जयो०वृ० ५/२३)

विधुमात्मन् (पुं०) चन्द्रमण्डल। (समु० २/११)

विधुर (वि०) [विगता धूः कार्य भारो यस्मात्] शून्य रहित, अभाव ग्रस्त।

* शोकग्रस्त, पत्नि के अभाव वाला।
* व्याकुल, निराश।
* दयनीय, शोकाकुल, दुःखी।
* वञ्चित, विरहित, विपद ग्रस्त।
* शत्रु, विरोधी, बैरी।

विधुरं (नपुं०) खटका, भय, चिन्ता।

* शोकाकुल।.
* पत्नि वियोगी।

विधुरः (पुं०) रंडुवा।

विधुरा (स्त्री०) [विधुर+टाप्] मसाले युक्त दहि।

विधुवनं (नपुं०) [वि+धु+ल्युट्] हिलना, कांपना, थरथराना।

विधूत (भू०क०कृ०) [वि+धू+क्त] * धुला हुआ।

* तरंगित, विक्षोभित।
* उखड़ा हुआ, मिटाया हुआ।
* थरथराया हुआ, कंपकंपाया हुआ।

विधूतिः (स्त्री०) हिलना, कांपना, थरथराना, विक्षोभ।

विधूदयः (पुं०) चन्द्रोदय। (सुद० १३७)

विधृत (भू०क०कृ०) [वि+धृ+क्त] * पकड़ा हुआ, गृहीत, सहारा प्राप्त हुआ। विधृताङ्गलि उत्थितः क्षणं समुपस्थाय पतन् सुलक्षणः। (सुद० ३/२४)

* बांधी गई, रोकी गई, नियन्त्रित की गई।
* ममेतिकण्ठे विधृताऽसिपुत्री। (समु० ३/२२)

विधेय (वि०) [वि+धा+यत्] किए जाने योग्य। * अनुष्ठेय।

* नियत किये जाने योग्य।
* आश्रित, निर्भर।
* आधीन, प्रभावित, नियन्त्रित, दमित, परास्त किया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गया।

* आज्ञाकारी, शासनीय, अनुवर्ती।

* कर्ता के सम्बन्ध में कही जाने वाली बात।

विधेयं (नपुं०) किये जाने योग्य, कर्त्तव्य।

* प्रतिज्ञा। (सुद० ९५)

विधेयज्ञ (वि०) कर्त्तव्य जानने वाला।

विधेयपदं (नपुं०) उद्देश्यपद।

विधेयभावः (पुं०) आधीनता का भाव।

विधेयवादः (पुं०) कर्त्तव्य निर्वाह। (सुद० ४/२५) 'यत्सूक्तिपूर्वकमुपारत्तविधेयवादः व्यत्येति जीवनमथ स्म लसत्प्रसादः' (सुद० ४/२५)

विध्वंसः (पुं०) [वि+ध्वंस्+घञ्] * विनाश, नाश, क्षति, हानि, घात।

* अपमान, अपराध।

विध्वंसकारिन् (वि०) नाशित, हानिकारक। (जयो० ९/६)

* मारना, हनन करना। (दयो० ५२)

विध्वंसिन् (वि०) [वि+ध्वंस्+णिनि] नष्ट करने वाले। सर्वे सन्तु निरामयाः सुखयुजः सर्वेऽघविध्वंसिनः; विद्वान्सोऽप्यखिला भवन्तु सुतरामन्योऽन्यमाशंसिनः।। (मुनि० १६)

विध्वस्त (वि०) [वि+ध्वंस्+क्त]* विनष्ट, समाप्त, क्षीण।

* गिरा हुआ, पतित।

* बिखरा हुआ, छितराया हुआ।

विनत (भू०क०कृ०) [वि+नम्+क्त] * नम्र, नमनशील।

* झुका हुआ, नतमस्तक।

* डूबा हुआ, अवसन्न।

* कुटिल, वक्र।

* विनीत, शिष्ट।

* नमितागत। (जयो० १२/१४)

* क्षमाप्रार्थी। विनतोऽस्मि पुरापयुक्तये ह्यनुमन्यध्वमबन्धयुक्तये (जयो० २६/३३) विनतोऽस्मि क्षमाप्रार्थी भवामि। (जयो० २६/३३)

विनता (स्त्री०) [विनत+टाप्] ०नम्रता, ०क्षान्तता ०विनयशीलता। ०गरुड़। (सुद० ३/२८)

विनताङ्गजः (पुं०) विनता सुत, वैनतेय, गरुड़। (सुद० ३/२८) 'विनताङ्गजवर्धमानता वदनेऽमुष्य सुधानिधानता। (सुद० ३/२८)

विनतिः (स्त्री०) [वि+नम्+क्तिन्] * प्रार्थना, स्तुति, अर्चना, भक्तिभाव। (जयो० १८/१५) 'शृणु विनतिं मम दुःखिनः श्री जिनकृपानिधान। (सुद० ७३)

* प्रणाम, नमन। विनतिरस्ति समागमनाय, मे समुपामुपयामि तव क्रमे। (जयो० ९/४६)

* नम्रता, विनय, विनयभाव, आदरभाव, प्रणामाञ्जलि।

विनमनं (नपुं०) [वि+नम्+ल्युट्] झुकना, नमना, नतमस्तक होना।

विनमि (पुं०) विद्याधर पुत्र। (जयो० ६२६)

विनम्र (वि०) [वि+नम्+र] विनम्र।

* नम्र, झुका हुआ, नमनशील।

* नतमस्तक, विनीत, प्रणमगत।

* अवसन्न, डूबा हुआ।

विनम्रानन (वि०) नतमुख, झुके हुए मुख वाला। (जयो० १७/७३)

विनय (वि०) [वि+नी+अक्] अशिष्टाचारी, डाला हुआ, फेंका हुआ, गुप्त।

विनयः (पुं०) श्रद्धा, आस्था।

* नम्रता, विनीतभाव, नतभाव।

* सदाचरण, शिष्टाचार।

* नमस्कारादिगुण (जयो० ५/६)

* मान-सम्मान। दानमानविनयैर्यथोचितंतोषयन्निह सधर्मिसंहतिम्' (जयो० २/७२)

* कषाय और इन्द्रिय का दमन।

* पूज्यों पर आदर।

* मर्यादा, उपासना।

* गौरव, श्रद्धा, भक्ति, प्रार्थना। 'विनीयते क्षिप्यतेऽष्टप्रकारं कर्मानेनेति विनयः'

* गुरुशुश्रूषा, वैय्यावृत्य भाव।

* स्वाध्याय का एक भेद।

प्रायश्चित्तं चकारैष विनयेन समन्वितम्।
स्वाध्यायसहितं धीरः परिणामानुयोगवान्।।
(जयो० २८/९)

स्वाध्यायसहितं विनयेन नम्रताभावेन समन्वितम्। (जयो० २८/९)

* जितेन्द्रिय, इन्द्रिय निग्रही।

* निर्देश, अनुशासन, अनुदेश।

विनयकरण (वि०) विनयशील। (जयो०वृ० १/३)

विनयकर्मन् (नपुं०) विनयभाव।

* संसार से मुक्त कराने वाला कर्म।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनयगत (वि०) श्रद्धागत, विनयशील।

विनयग्राहि (वि०) * आज्ञाकारी, * अनुवर्ती, * शासन योग्य। * नम्रता को अंगीकार करने वाला।

विनयता (वि०) नम्रता (जयो० २/११९)

विनयनं (नपुं०) [वि+नी+ल्युट्] हटना, दूर होना।
* शिक्षा होना।
* शिक्षा, सीख।

विनयपदं (नपुं०) श्रद्धापद, भक्तिपद, प्रार्थना के पुञ्ज।

विनयपदावली (स्त्री०) भक्ति पदावली। * श्रद्धागीत।

विनयपत्रिका (स्त्री०) संत तुलसीकृत काव्य।

विनयभावः (पुं०) नम्रभाव। * उपासना युक्त भाव।

विनयभृत (वि०) विनयवान्, नीतिजन्य। विनयभृदुन्नतवंशः सुलक्षणोऽसौ विलक्षणोक्तनुः' (जयो० ६/५४) 'विगतः प्रणष्टो नयो नीतिमार्गः' 'विनयं नम्रत्वं बिभवर्तीति विनयभृदिति'

विनयशील (वि०) उन्नतशील, ऊपर उठा हुआ। (जयो०वृ० १/५)

विनयशुद्धि (स्त्री०) विनय पूर्वक भक्ति। (जयो०वृ० ६/५४)

विनयसम्पन्नता (स्त्री०) गुरु आदि का सत्कार करना, सच्चे गुरु/वीतरागमार्ग प्रवर्तक गुरु आदि का आदर-सत्कार करना। 'ज्ञानादिषु तद्वत्सु चादरः कषायनिवृत्तिर्वा विनयसम्पन्नता।
* तीर्थंकर नामकर्म की प्रकृति। (त०सू०प० ९३)

विनयसम्बिधानी (वि०) विनय का ध्यान रखने वाला। (दयो० ९८)

वि-नयाचारः (पुं०) शुद्ध परिणामों का आचरण। (भक्ति०८)

विनयाधिगत (वि०) नयों से रहित। (जयो० २८/४१)

विनयान्वित (वि०) विनय युक्त, आदरशालिनी। (जयो०वृ०३/५)

विनयाश्रित (वि०) नम्रताश्रित, विनयशील। देवतापि नुमया खलु बुद्धिर्मस्तकेन विनयाश्रितशुद्धिः। (जयो० ५/३८)

विनशनं (नपुं०) [वि+नश्+ल्युट्] * नाश, हानि, विनाश, लोप।

विनष्ट (भू०क०कृ०) [वि+नश्+क्त]* उच्छिन्न, ध्वस्त।
* ओझल, लुप्त। (जयो०वृ० १/२१)
* बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट।

विनस (वि०) [विगता नासिका यस्य] नासिका रहित, नाकरहित।

विना (अव्य०) बिना, सिवाय, इसके अतिरिक्त। धर्म एवाद्य आख्यातस्तं विनाऽन्ये न जातुचित्। (सुद० ४/४०)
* अभाव, समाप्ति। (जयो ८/८१)

विनामक (वि०) वर्ण सहित। (जयो०वृ० ११/७०)

विनामवाक् (वि०) काम का नहीं, पुरुषार्थहीन, नपुंसक। (सुद० ९९)

विनायकः (पुं०) विशिष्टो नायकः।
* गणपति, अर्हत्। (जयो० ८/८६) (जयो० १३/३९)
* गरुड़।
* बुद्धधर्म का देव।
* रुकावट, बाधा।

विनारि (पुं०) आजतशत्रु। * विना अभावं गता अरयो यस्य स विनारि। (जयो० १८/८१)

विनाशः (पुं०) [वि+श्+घञ्]* नाश, घात, क्षति, हानि। (सुद० ७२)
* विध्वंस, समाप्ति, इतिश्री।
* विनश्वर। (सुद० १२१)

विनाशनं (नपुं०) [वि+नश्+णिच्+ल्युट्] * विनाश, क्षति, हानि। (समु० ९/८)
* उन्मूलन।

विनाशिन् (वि०) नष्ट करने वाला, क्षय करने वाला। (सुद० १/८) विनश्वर। (भक्ति० २६)

विनाहः (पुं०) [वि+नह्+घञ्] कुएं को ढंकना।

विनिक्षेपः (पुं०) [वि+नि+क्षिप्+घञ्] फेंक देना, भेज देना।

विनिग्रहः (पुं०) [वि+नि+ग्रह+अप्] * वश में करना, दमन करना, नियन्त्रित करना। (मुनि० ३०)
* निरोध, निग्रह, दमन, शमन।

विनिद्र (वि०) [विगता निद्रा यस्य] * जागृत, सुमुप्ति रहित, निद्रा विहीन।
* मुकुलित, खुला हुआ, पुष्पित।

विनिद्रनेत्र (वि०) हर्षित नयन, खुले हुए नेत्र।

विनिन्दिनं (नपुं०) निन्दा। (दयो० २१) * श्रद्धा रहित।

विनिपत् (सक०) आना, निकलना। (जयो० ९/४९) (जयो० १८/९२)

विनिपातः (पुं०) [वि+नि+पत्+घञ्] अधोगमन। (जयो०वृ० १८/३२) अधः पतन।
* संकट, हानि, क्षति, विनाश।
* क्षय, मृत्यु, अवपात।
* घटना, घटित होना।
* पीड़ा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* दुःख।
* अनादर।

विनिमयः (पुं०) [वि+नि+मी+अप्] * लेन-देन, क्रय-विक्रय, आदान-प्रदान।
* अदला-बदली, आयात-निर्यात।
* न्यास, धरोहर, अमानत।

विनिमेषः (पुं०) [वि+नि+मिष्+घञ्] झपकना, आंखों में उदासी आना।

विनियत (भू०क०कृ०) [वि+नि+यम्+क्त] * नियंत्रित, प्रतिबद्ध, विनियमित।
* रोका गया, नियत किया गया।

विनियमः (पुं०) [वि+नि+यम्+अच्] * नियंत्रण, प्रतिबन्ध, रोक।
* विराम, गति, प्रतिरोध, गतिरोध।

विनियुक्त (भू०क०कृ०) [वि+नि+युज्+क्त] * विच्छिन्न, पृथक्। खुला हुआ। * स्पष्टगत।
* समादिष्ट, व्यवहृत, विहित।

विनियोगः (पुं०) [वि+नि+युज्+घञ्] * विच्छिन्न होना, अलग होना।
* प्रश्न करना। (जयो० ४/४४)
* छोड़ना, त्यागना, तिलाञ्जलि देना।
* कार्याधिभार, कर लगाना।
* विवाही हुई स्त्री से व्याह करना। (दयो० ४१)
* रुकावट, अड़चन, बाधा।

विनिर्गतः (पुं०) [वि+निर्+गम्+अच्] * निकला, अलग हुआ, बाहर आया। (दयो० ४०) संसार-तापोज्जयिसामतोया-विनिर्गताऽर्हत्तुहिनाद्रितो या। (जयो० ४)

विनिर्गताश्रु (स्त्री०) परिस्नुताश्रु, निकले हुए आंसु। (जयो० १३/१०)

विनिर्गतिः (स्त्री०) गमन करण। (जयो० २१/१)

विनिर्गमः (पुं०) प्रयाण, प्रस्थान। (जयो० १३/३)

विनिर्जयः (पुं०) [वि+निर्+जि+अच्] पूर्ण विजय। जितवान्। (जयो० १/६९)

विनिर्जित (भू०क०कृ०) [वि+निद्+जि+क्त] पराभूत, परास्त किया, विजित हुआ। 'विनिर्जिता खण्डलशुण्डिशुण्डे' (जयो० १/२५)

विनिर्जेतुं [वि+निर्-जि+तुमुन्] जीतने के लिए। (जयो० १/६९)

विनिर्णयः (पुं०) [वि+निर्+नी+अच्] * निश्चय, निर्णीत, निश्चित नियम।
* पूर्ण फैसला।

विनिर्वधः (पुं०) [वि+निर्+बंध्+घञ्] आग्रह, दृढ़ता।

विनिर्माणः (पुं०) सृष्टि, निर्माणविधि। (जयो० ११/३०)

विनिर्मित (भू०क०कृ०) [वि+निर्+मा+क्त] * निर्माण किया हुआ, बनाया हुआ।
* निर्मित-तैयार किया हुआ।

विनिर्मितस्थली (स्त्री०) निर्माण स्थल। (वीरो ७/९)

विनिर्वह् (सक०) निर्वाह करना, चलाना। (जयो० २७/६०)

विनिवृत्त (भू०क०कृ०) [वि+नि+वृत्+क्त] * लौटा हुआ, वापिस आया हुआ। (जयो०वृ० १/२२)
* ठहरा हुआ, थमा हुआ, रुका हुआ।
* मुक्त हुआ, सेवा से हटा, विनिर्वतन। (जयो० ३/२८)

विनिवृत्तिः (स्त्री०) [वि+नि+वृत्+क्तिने] * अन्त, अवसान, समाप्ति।
* निवृत्ति, विश्रान्ति, विराम, रोक।
* लौटना, वापिस आना। (सुद० १२६)

विनिश् (सक०) सुनना, श्रवण करना। (जयो० ४/६) (समु० २/२३)

विनिश्चयः (पुं०) [वि+निस्+चि+अच्] * निश्चित करना, स्थिर करना, दृढ़ करना।

विनिश्चन् (वि०) निश्चल, अचल, स्थिर।

विनिश्चलावलिः (स्त्री०) निश्चलता को प्राप्त। स्फटिकाश्मविनिर्मितास्थलीव च नाकस्य विनिश्चलावलि। (वीरो० ७/९)

विनिवर्तत् (वि०) लौटा हुआ, वापिस आया हुआ। (समु०७/३१)

विनिवारक (वि०) परिहारक, रोकने वाला। (जयो० ९/५८)

विनिविश् (सक०) [वि+नि+विश्] समीप रखना, पास पहुंचाना। (वीरो० ७/९३)

विनिवेद्य (वि०) प्रार्थित, कथित। * आमन्त्रित।

विनिवेदित (वि०) प्रार्थित, कथित। (जयो० २६/३४) (सुद० ११२)

विनिवेश्य (सं०कृ०) समीप लाकर। (वीरो० ७/१३)

विनिश्वासः (पुं०) [वि+नि+श्वस्+घञ्] * सांस लेना, आह भरना।
* गहरी श्वांस लेना।

विनिष्पेषः (पुं०) [वि+निस्+विप्+घञ्] * कुचलना, मर्दन करना, मसलना।
* पीसना, चूर्ण करना।

विनिहत (भू०क०कृ०) [वि+नि+हृ+क्त] * आहत, घायल।
* मार डाला हुआ, पूरी तरह परास्त किया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनिह्नवः (पुं०) निश्छल भाव। (जयो० १५/१००)
विनिहितः (पुं०) अपशकुन, धूमकेतु।
विनीत (भू०क०कृ०) [वि+नी+क्त] * नम्रीभूत, नम्रता युक्त।
* शिष्ट, शालीन, सौम्यतापूर्ण।
* सुसंस्कृत, संस्कारयुक्त, सदाचरणशील, नम्रव्यवहारी। (सुद० ४/४५)
* सीधा, सरल, शांतचित्त।
* प्रिय, इष्ट, मनोज्ञ, मनोहर।
* आत्मसंयमी, जितेन्द्रिय।
विनीतः (पुं०) विनीत/सधा हुआ।
विनीतकं (नपुं०) [विनीत+कन्] * यान, वाहन, सवारी, गाड़ी।
* मृदुलोपेत। (जयो० १/१००)
* मृदुलता युक्त।
* ले जाने वाला, वाहक।
विनीतत्त्व (वि०) विनम्रापन, नम्रशीलता। (दयो० ७०)
विनूत्न (वि०) नवीनता रहित। (जयो० २७/३०)
विनेतृ (पुं०) [वि+नी+तृच्] नेता, पथ प्रदर्शक।
* शिक्षक, अध्यापक।
* नायक।
* शासक।
* प्रशासक।
विनैव (अव्य०) इसके बिना ही। (सुद० ८६) इसके अतिरिक्त ही। (जयो० १/३१)
विनोदः (पुं०) आनन्द, मनोरंजन, खुशी।
* कौतुक (जयो० २/१३४) उत्सुकता, उत्कण्ठा। (जयो० १/४)
आमोद-प्रमोद, प्रसन्नता, परितृप्ति।
* रतिबन्ध विशेष।
विनोदकृत् (वि०) हर्ष धारक, प्रसन्नता युक्त। (जयो० १८/१) 'श्री युक्त पाठक! शृणूत विनोदकृत्ते'
विनोदगत (वि०) प्रसन्नता युक्त।
विनोदगृहं (नपुं०) क्रीड़ा स्थान।
विनोदनं (नपुं०) [वि+नुद्+ल्युट्] * मनोरंजन, आनंद, कौतुहल।
* हटाना, निवारण करना।
विनोदपात्रं (वि०) आनंद का अधिकारी।
विनोदबन्धः (पुं०) रतिबन्ध।
विनोदभावः (पुं०) हर्षभाव, कौतुक। (जयो०वृ० १/८६)
विनोदवशः (पुं०) हर्षाधीन। (वीरो० २२१३)
विनोदवशंगत (वि०) नर्मवश, विनोदप्रिय हुआ। (जयो०१४/२९)
विनोदशील (वि०) आनन्दप्रिय, हर्षभाव युक्त।
विनोदिन् (वि०) विनोदरसिक। (जयो० १८/३८)
विन्द् (सक०) विभक्त होना, विभाजित होना। (सम्य० ४१)
विन्दल्लभमान (वि०) सुंदर, रमणीय, कान्तिमय। (जयो०वृ० ११/१५)
विन्ध्यः (पुं०) [विदधाति करोति भयम्] एक पर्वत विशेष, विन्ध्यगिरि।
विन्ध्यकूटः (पुं०) विन्ध्यगिरि का शिखर।
विन्ध्यगिरि (पुं०) विन्ध्याचल पर्वत। (सुद० ४/१७)
विन्ध्याचलः (पुं०) देखो ऊपर।
विन्ध्याटवी (स्त्री०) विन्ध्य महावन।
विन्न (भू०क०कृ०) [विद्+क्त] * ज्ञात, परिज्ञात, जाना हुआ। * शान्त, श्रान्त।
* स्थिर किया हुआ।
विन्नकः (पुं०) [विन्न+कन्] अगतस्य ऋषि का नाम।
विन्नरः (पुं०) विद्वान् पुरुष। नहि किन्नर एष विन्नरो भवतां येन सतामिहादरः (जयो० १०/७९) 'विन्नरोऽयं यतश्च सतां भवतामिहादरः' (जयो०वृ० १०/७९)
विन्यस्त (भू०क०कृ०) [वि+नि+अस्+क्त] * निक्षिप्त, रखा हुआ, निवेशित। (दयो० ८७)
* न्यास युक्त, धरोहर रूप।
* जुड़ा हुआ, सम्बंधित।
* उपस्थित, प्रस्तुत।
विन्यासः (पुं०) [वि+न्यस्+घञ्] * धरोहर, अमानत, न्यास।
* सौंपना, रखना, देना।
* संग्रह, समवाय, संकलन।
* आश्रय, आधार।
* क्रमपूर्वक निक्षेप करना।
विपक्त्रिम (वि०) [वि+पच्+क्त्रि+मप्] * परिपक्व, पका हुआ।
* विकसित, खिला हुआ, पूर्णता को प्राप्त।
विपक्व (वि+पच्+क्त) परिपक्व, पका हुआ।
* विकसित, प्रफुल्लित, खिला हुआ।
विपक्ष (वि०) [विरुद्ध पक्षो यस्य] * प्रतिकूल, विरुद्ध, बैरी।
* परिवादी।
विपक्षः (पुं०) शत्रु, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वि।
* परिवाद। (जयो० २८/३२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विपंचिका (स्त्री०) [विपंची+कन्+टाप्] * वीणा।
* खेल, क्रीड़ा, मनोरंजन। (जयो० ६/७)

विपंची (स्त्री०) वीणा।
* खेल, क्रीड़ा।
पञ्चभ्यो विहीना विपञ्चतीति। (जयो० ११/४७)

विपणः (पुं०) [वि+पण्+घञ्] बिक्री।
* लघु व्यापार।

विपणनं (नपुं०) [वि+पण+ल्युट्] * व्यापार। * बिक्री।

विपणिः (स्त्री०) [विपण+इन्] * बाजार, हाट, मण्डी।
* माल, सामान, बिक्री योग्य वस्तु।
* वाणिज्य, व्यापार। (सुद० ९१)

विपणिन् (पुं०) [विपण्+इनि] व्यापारी, सौदागर, दुकानदार।

विपणिस्थानं (नपुं०) वणिकपथ, बाजार। (वीरो० २/१०)

विपण्ण (वि०) व्यापार युक्त।

विपत्परिहारक (वि०) विपत्ति से बचाने वाला।

विपत्परिहारकत्व (वि०) आपत्ति का विनाशक।

विपत्प्रतीयः (वि०) निपत्ति नाशक। (दयो० ३)

विपत्तिः (स्त्री०) [वि+पद्+क्तिन्] क्षणादेव विपत्तिः स्यात्सम्पत्ति अधिगच्छतः (वीरो० १०/२)
* आपत्ति, कष्ट, दुःख, अनर्थ। (सुद० १११)
* दुर्भाग्य, संकट।
* वेदना, यातना।
* विनाश, क्षति, हानि।

विपत्तिकर (वि०) गुणहीन। (जयो० १६/७३)

विपत्तिकरत्व (वि०) गुणों का अभाव वाला।

विपत्तिकारिन् (वि०) आपत्ति करने वाला। (समु० ७/२८) (वीरो० १/१९)

विपत्र (वि०) पत्र रहित। (सुद० ११८) (जयो० ३/३५)

विपथः (पुं०) [विरुद्ध पंथ] कुमार्ग, कुपथ।

विपद् (सक०) प्राप्त होना, (सुद० १२८) पाना। विपद्यते (सुद० १२८)

विपद् (स्त्री०) [वि+पद्+क्विप्] आपद, आपत्ति। (जयो०३/५५)
* बाधा, रुकावट।
* असुंदर-परिणमन। (जयो० २/४९)
* दुःख, कष्ट, व्यधान। (सुद० ८९)
* मृत्यु। (सुद० १०५)

वि-पदः (पुं०) पक्षी कलरव, वाग्विन्यास। (जयो० १८/३०)

विपदकालः (पुं०) संकट का समय।

विपदगा (स्त्री०) विरुद्धभाव, 'विरुद्धभावं गच्छतीति विपदगा' (जयो० ९/११)

विपदम्बुविधिः (स्त्री०) आपद रूपी-जलनिधि। (जयो० २०/५९)

विपदा (स्त्री०) विपत्ति, आपत्ति, संकट, कष्ट। (सुद० १०३)

विपदी (स्त्री०) विपत्ति, संकट। (मुनि० १६)

विपदोपहत (वि०) संकट ग्रस्त, कष्ट युक्त। (जयो० १८/३०)

विपद्य (वि०) प्राप्त हुआ। (सुद० ११९)
* पदहीन, निष्क्रिरण। (जयो० १५/१४)

विपन्न (भू०क०कृ०) [विपद्+क्त] * लुप्त, नष्ट। * कष्टग्रस्त, संकट युक्त।
* दुःखी, पीड़ित। (सुद० ९०)
* क्षीण, कृश।
* अयोग्य, अशक्त।

विपन्नः (पुं०) सर्प, सांप। * अहि, * विषधर।

विपन्नगी (स्त्री०) विपत्ति की स्थली। 'विपदामापदां नगीव स्थलीव' (जयो०वृ० ३/५५) वक्ष्यते वीक्षमाणेभ्यः पन्नगीव विपन्नगी। (जयो.० ३/५५)

विपन्नसमयः (पुं०) विपत्ति का समय।

विपन्निपातः (पुं०) आपत्ति स्थान। (वीरो० १७/१०) (सुद०९०)

विपन्निवारक (वि०) विपत्ति निवारक, कष्ट निवारण करने वाला। (जयो०वृ० ३/३५)

विपन्निवेशः (पुं०) विपत्तिस्थान। (वीरो० १७/१३)

विपरिणमनं (नपुं०) [वि+परि+नम्+ल्युट्] परिवर्तन, बदलना, रूपान्तरण।
* असुंदर परिणति। (जयो० २/४९)

विपरिणामः (पुं०) [वि+परि+वृत्+ल्युट्] * मुड़ना, लुढ़कना, परावर्तन करना, घूमना। * रूपान्तरण।

विपरिवर्तनं (नपुं०) [वि+परि+वृत्+ल्युट्] परावर्तन, चुभना।

विपरीत (वि०) [वि+परि+इ+क्त] प्रतिकूल विरोधी, प्रतिवर्ती, औंधा। (जयो० ६/९७)
* अशुद्ध, नियमविरुद्ध।
* मिथ्या, असत्य। (दयो० ३५)
* अरुचिकर, अशुभ।

विपरीतकर (वि०) विरुद्ध कार्य करने वाला, विरोधी, विरुद्धगामी।

विपरीतकार्यः (पुं०) अशुभकार्य। (वीरो० १९/३७)

विपरीतचेतस् (वि०) विरुद्ध बुद्धि वाला, कुमति युक्त।

विपर्णकः (पुं०) [विशिष्टानि पर्णानि यस्य] पलाशतरु, ढाक का पेड़।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विपर्ययः (पुं०) [वि+परि+इ+अच्] * विपरीत, प्रतिकूल, व्यतिक्रम।
* विलोमता। (जयो० २२/५८)
* लोप, हानि, क्षति, विध्वंस।
* त्रुटि, उल्लंघन, भूल।
* संकट, दुर्भाग्य।
* शत्रुता, दुश्मनी।

विपर्यस्त (भू०क०कृ०) [वि+परि+अस्+क्त] * परिवर्तित, व्युत्क्रान्त, उलटा।
* सीप में चांदी का आभास होना।
* विरोधी, प्रतिकूल।

विपर्यायः (पुं०) [वि+परि+इ+घञ्] वैपरीत्य, प्रतिकूलता।

विपर्यासः (पुं०) [वि+परि+अस्+घञ्] व्यतिक्रम, प्रतिकूलता।
* विपरीत्ता, परिवर्तन।

विपलं (नपुं०) [विभक्तं पलं येन] क्षण, समय का छोटा अंश।

विपलायनं (नपुं०) [विशेषणं पलायनम्] पलायन करना, भागना, अन्यत्र जाना।

विपल्लव (वि०) भृष्टपत्र। (जयो० १४/२१) 'विकृतानां पदानां ये लवास्ते विपल्लवा' (वीरो० १/२३)

विपल्लवित्व (वि०) पत्र सहित्व का विनाश। विगतं विनष्टं पल्लववित्वं पत्रसहितत्त्वं विपदां लवा अंशा विद्यन्ते यस्य स विपल्लवी तस्य भावः। (जयो० १४/४०)

विपश्चित् (वि०) [विप्रकृष्टं चिनोति चेतति चिन्तयति-वि+प्र+चि+क्विप्] * धीमत् (जयो०वृ० ४/३३)
* विद्वान्। (भक्ति० ३१)
* विचारशील-सूक्तानुशीलनेनात्र कालो याति विपश्चिताम्' (दयो० १०१)
* पण्डितस्याङ्गशरा। (जयो० १९/१०)
* बुद्धिमान्, धीमान्, ज्ञानी।
* हेयोपादेय का जानने वाला।
* विचक्षण, प्रतिभाशाली। (जयो० ५/२२)

विपाकः (पुं०) [वि+पच्+घञ्] * पकना, पकाना, भोजन पकाना।
* पाचनशक्ति, परिपक्वता, परिपाक।
* परिणाम, फल, परिणति, कर्मस्थिति। * शुभाशुभ परिणाम।
* अवस्थापरिवर्तन-कर्म की अनुभाग शक्ति।
* कठिनाई, कष्ट, विपत्ति, संकट।

विपाकगत (वि०) परिपक्वता को प्राप्त।

विपाकजा (स्त्री०) स्थिति पूर्ण होने पर पकने पर फल देना।

विपाकपटुक (वि०) फल काल में सुखद। (जयो० २७/६४)

विपाकविचयः (पुं०) कर्मों का अनुभवन। (समु० ८/३९)

विपाकसूत्र (नपुं०) एक जैन अंगागम। * शुभ-अशुभ विपाक के फल का प्रतिपादक अङ्ग आगम सूत्र।

विपाटनं (नपुं०) [वि+पट्+णिच्+ल्युट्] * उखाड़ना, अपहरण।
* खण्ड खण्ड करना, फाड़कर खोलना। विभाजन करना।

विपाठः (पुं०) लम्बा तीर।

विपाण्डु (वि०) पीला, विवर्ण।

विपादिका (स्त्री०) बिवाई, पैर फटना।

विपाश् (स्त्री०) व्यास नदी।

विपिनं (नपुं०) [वेपन्ते जनाः अत्र, वेप्+इनन्] अरण्य (जयो० १८/४८)
* कानन। (जयो० १३/५०) वन (जयो० १३/५४)
* जंगल।
* वाटिका। * लतागृह, * लता मण्डप।
* लताकुंज, झुरमुट।

विपिनकंदः (पुं०) काननकंद।

विपिनधनं (नपुं०) अरण्य सम्पत्ति। * वन सम्पदा।

विपिनशोभा (स्त्री०) वन शोभा। (जयो० १/८९)

विपिनश्री (स्त्री०) अरण्य गरिमा, वन सौंदर्य।

विपुल (वि०) [विशेषेण पोलति वि+पुल्+क] विस्तृत, विशाल, अधिक, पर्याप्त।
* प्रशस्त, आयत।
* अतिविशाल, मोटी। (जयो०वृ० ६/७)
* अनल्प। (जयो० २/१४९)
* अगाध, गहरा।

विपुलः (पुं०) विपुलाचल पर्वत, मेरु पर्वत।

विपुलकर्म (वि०) गम्भीर परिणाम।

विपुलकार्य (वि०) अत्यधिक काम।

विपुलकौतुकः (पुं०) पर्यात उत्सुकता।

विपुलकौमुदी (स्त्री०) विस्तृत चांदनी, फैली हुई चांदनी।

विपुलगामिन् (वि०) सम्माननीय।

विपुल गेहं (नपुं०) विशालघर, बड़ा भवन।

विपुलछाय (वि०) सघन छाया।

विपुलमति (स्त्री०) मनोगत पदार्थ को जानने वाली बुद्धि।
* मनीषी, प्रज्ञावान्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* मन पर्यय ज्ञान का भेद-जो बात किसी के मन में अभी हो और पहले आ चुकी हो या आगे आने वाली हो, उस बात के बारे में भी जो जान सकता है वह विपुल मति है। (त०सू०पृ० २२)

विपुलमतिज्ञानं (नपुं०) मनः पर्यय ज्ञान का एक नाम-'सर्वत्र णमो विउलमदीणं मनः सम्भवेत्तरामरीणम्।
येन श्रुतसंग्रहे प्रवीणं, पापाचारादपि, प्रहीणम्।।
(जयो० १९/६)

विपुलरसः (पुं०) गन्ना, इक्षु, ईख।

विपुलशक्ति (स्त्री०) अपूर्व बल।

विपुलसिद्धि (स्त्री०) प्रशस्त सिद्धि।

विपुला (पुं०) पृथ्वी।

विपूत (वि०) [विशेषेण पूता पवित्रा विपूता] निर्मल, पवित्र (जयो० ८/९०)

विपूयः (पुं०) [वि+पू+क्यप्] एक घास विशेष, मंजु घास।

विप्रः (पुं०) [वप्+रन्] ब्राह्मण, द्विजन्मन् (जयो०वृ० २/१११) विप्रःकृषौ प्रवृत्तोऽपि, विप्र एवाभिधीयते। (हित०सं० १३)

विप्रकर्षः (पुं०) [वि+प्र+कृष्+घञ्] * दूरी, फासला, अधिकता।

विप्रकारः (पुं०) [वि+प्र+कृ+घञ्] * अपमान, कटु व्यवहार, दुर्वचन।
* क्षति, अपराध।
* दुष्टता, विरोध।
* प्रतिक्रिया, प्रतिहिंसा।

विप्रकीर्ण (वि०) [वि+प्र+कृ+क्त] * फैला हुआ, बिखरा हुआ।
* प्रसारित, विस्तृत, विस्तीर्ण।
* व्यापक।

विप्रकृत (वि०) [वि+प्र+कृ+क्त] * आहत, घायल, आघात।

विप्रकृतिः (स्त्री०) क्षति, आघात।
* अपमान, अपशब्द, कटुव्यवहार।
* प्रतिहिंसा, बदला।

विप्रकृष्ट (भू०क०कृ०) [वि+प्र+कृष्+क्त] * हटाया गया, खींचा गया।
* विस्तारित, विस्तीर्ण, फैलाया गया।

विप्रतिकारः (पुं०) [वि+प्रति+कृ+घञ्] * विरोध, निवारण, रोकना।
* प्रतिहिंसा।

विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [वि+प्रति+पद्+क्तिन्] * पारस्परिक असंगति, संघर्ष, विरोध।
* असमहति, आपत्ति।
* परिचय, पहचान।

विप्रतिपन्न (भू०क०कृ०) [वि+प्रति+पद्+क्त] * विरोधी, परस्पर विरुद्ध।
* व्याकुल, शोकाग्रस्त।
* परस्पर सम्बद्ध।

विप्रतिषेधः (पुं०) [वि+प्रति+सिध्+घञ्] * निषेध, नियम विरुद्ध। (मुनि० ३)
* प्रतिरोध, प्रतिवर्तन।

विप्रतिसारः (पुं०) [वि+प्रति+सृ+घञ्] * क्रोध, कोप, गुस्सा।
* पछतावा।
* दुष्टता, शत्रुता।

विप्रत्व (वि०) ब्राह्मणपना। (हित० १५)

विप्रदुष्ट (भू०क०कृ०) [वि+प्र+दुष्+क्त] * दूषित, विकृत, मलिन।
* भ्रष्ट, पतित, गिरा हुआ।

विप्रनष्ट (भू०क०कृ०) [वि+प्र+नश्+क्त] * लुप्त, खोया हुआ।
* व्यर्थ, निरर्थक।

विप्रबुद्धिः (स्त्री०) ब्राह्मण बुद्धि। (वीरो० १४/४७)

विप्रमुक्त (भू०क०कृ०) [वि+प्र+मुच्+क्त] * छोड़ा हुआ, परित्यक्त। * रहित शून्य, * अभाव, विमुक्त।
* निशाना बनाया हुआ।

विप्रयुक्त (भू०क०कृ०) [वि+प्र+युज्+क्त] * वियुक्त, विच्छिन्न, पृथक् किया हुआ।
* मुक्त किया हुआ, परित्यक्त।
* वञ्चित, विरहित।

विप्रयोगः (पुं०) [वि+प्र+युज्+घञ्] * वियोग, विछोह, अलगाव।
* कलह, असमहति।
* अनैक्य, पार्थक्य।

विप्रराट् (पुं०) श्रेष्ठ ब्राह्मण। (सुद० ३/३५)

विप्रलब्ध (भू०क०कृ०) [वि+प्र+लभ्+क्त] * धोखा दिया गया, ठगा गया।
* निराश किया गया, चोट पहुंचाया गया।
* क्षतिग्रस्त, ध्वस्त।

विप्रलम्भः (पुं०) [वि+प्र+लम्भ्+घञ्] * छल, चालाकी, धोखा।
* कलह, असहमति।
* अनैक्य, पार्थक्य, विछोह, वियोग।

विप्रलापः (पुं०) [वि+प्र+लप्+घञ्] * बकवास, व्यर्थ का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रलाप।

* निरर्थक बात, विरोध जन्य कथन।

विप्रलापः (पुं०) [विशेषेण प्रलयः] विघटन, विनाश, क्षय।

* आघात, हानि।

विप्रलापिनी (वि०) प्रलाप करने वाली। (जयो० १३/५२)

विप्रलुप्त (भू०क०कृ०) [वि+प्र+लुप्+क्त] * अपहृत, छीना हुआ। * अपहरण किया गया।

* बाधा युक्त, समाप्त किया गया।

विप्रलोभिन् (पुं०) [वि+प्र+लुभ्+णिच्+णिनि] अशोकवृक्ष, किंकिरात तरु।

विप्रवरः (पुं०) पक्षी। (सुद० ८१)

* ब्राह्मण। (सुद० ५/२)

विप्रवासः (पुं०) [वि+प्र+वस्+घञ्] * प्रवासगत, विदेश गया, बाहर जाना।

* अपने स्थान से दूर होना।

विप्रश्निका (स्त्री०) [विशेषेण प्रश्नो यस्याः] [वि+प्रश्न+नप्-टाप्] प्रश्न करने वाली स्त्री, भाष्यपूर्वक कथन करने वाली स्त्री, ज्योतिषी स्त्री।

विप्रहीण (वि०) [वि+प्र+हा+क] वञ्चित, रहित।

विप्राणी (स्त्री०) ब्राह्मणी-इत्यतः प्रत्युवाचापि विप्राणी प्राणितार्थिनी। (सुद० ८५)

विप्राप्त (वि०) पक्षियों को प्राप्त हुआ। 'विभ्यः पक्षिभ्यः प्राप्तः' (जयो० १८/५०)

विप्रिय (वि०) [वि+प्री+क-इयङ्] * प्रिय वियोग, प्रिय विछोह। (वीरो० ६/३३)

* अरुचिकर, अनिष्टकर।

विप्रियं (नपुं०) अपराध, बाधा, रोग, अरुचि।

विप्रुष् (स्त्री०) [वि+प्रुष्+क्विप्] * चिह्न, संकेत, धब्बा बिन्दु।

विप्रोषित (भू०क०कृ०) [वि+प्र+वस्+क्त] * निर्वासित, देश निकाला प्राप्त।

* विसर्जित, अन्यत्र गया हुआ।

विप्लवः (पुं०) [वि+प्लु+अप्] * विनाश, नाश, क्षति (जयो०वृ० ५/२३) (सम्य० ११०)

* दूसरे का संयोग। (हित० १७)

* हानिकारक-'विप्लवाय भवत्यत्र विजात्योः कर-पीडनम्' (हित० २१)

* विरोध, वैपरीत्य।

* उपद्रव। (जयो० २२/७७)

* व्याकुलता, आकुलता।

* आपदा, संकट, बाधा। (मुनि०)

* बहना, इधर-उधर घूमना।

विप्लववधू (वि०) आपातकालीन लघु नौका। (जयो० २२/७३)

विप्लवभूत (वि०) हानिकारक, सन्तापकारी। (जयो०वृ०२६/२५)

विप्लवल (वि०) आपदा युक्त। (जयो० ४/६७) क्षोदकर।

विप्लावः (पुं०) [वि+प्लु+घञ्] जलप्लावन, बाढ़।

* उपद्रव।

विप्लुत (भू०क०कृ०) [वि+प्लु+क्त] * निमग्न, डूबा हुआ, विध्वस्त, उजड़ा हुआ।

* लुप्त, समाप्त।

* विरूपित, विपरीत।

* अपमानित, अनात।

* तिरोहित, ढका हुआ। (हित०)

विफल (वि०) [विगतं फलं यस्य] व्यर्थ, बेकार, अनुपयोगी। निष्फल। (जयो० ११/६१)

* प्रभावशून्य, प्रभावरहित। (दयो० २/२६)

* निरर्थक।

विफलत्व (वि०) विफलता, असफलता। (सुद० १२३)

विफलीकृत (वि०) उन्मस्कृत। (जयो०वृ० १२/१३२)

विबन्ध (पुं०) [वि+बन्ध्+घञ्] * कोष्ट बद्धता।

* परकोटा।

विबाधा (स्त्री०) [विशिष्टा बाधा] * वेदना, पीड़ा, संताप।

* मानसिक व्याधि।

विबुद्ध (भू०क०कृ०) [वि+बुध्+क्त] * जागृत, सचेत।

* चतुर, कुशल, प्रवीण।

* जगाया हुआ, उठाया हुआ।

विबुधः (पुं०) [विशेषेण बुध्यते-बुध नक] * विद्वान् पुरुष।

* ब्रह्मा। (जयो० ५/२३)

* देवता, देव, सुर। (जयो० १०/१२)

* बुद्धिमान्। (जयो० ५/२३)

विबुधद्विष् (पुं०) राक्षस, पिशाच।

विबुधाधिपतिः (पुं०) इन्द्र।

विबुधानः (पुं०) [वि+बुध्+शानच्] बुद्धिमान पुरुष।

विबुधेन्द्रः (पुं०) इन्द्र।

विबोधः (पुं०) [विबुध्+घञ्] * जागरण, जागते रहना।

* प्रत्यक्ष ज्ञान।

* बुद्धि, प्रतिभा।

* सचेत भाव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभक्त (भू०क०कृ०) [वि+भज्+क्त] * विभाजित की गई, बांटी गई।
* विभिन्न, विविध।
* नियमित, सममित।

विभक्तवान् (वि०) विभाजित करने वाला।

विभक्तिः (स्त्री०) [वि+भज्+क्तिन्] * विभाजन, विभाग, बांटना।
* प्रभाग, पार्थक्य।
* कारक चिह्न।

विभक्षित (वि०) भुंजित। (समु० ४/९) * खाया हुआ।

विभंगः (पुं०) [वि+भंज्+घञ्] * टूटना, भग्न होना, खंडित होना।
* अवरोध, रुकावट, विराम।
* झुर्री, शिकन।
* फूट पड़ना, प्रकटीकरण।
* सिकोड़ना।

विभज (अक०) बांटना, विभक्त करना। (सुद० ३०)

विभङ्गज्ञानं (नपुं०) विपरीत अवधिज्ञान, मिथ्यात्व युक्त अवधिज्ञान। 'विपरीतो भंगः परिच्छित्तिप्रकारो यस्य तद्विभङ्गम्, तच्च तत्।

विभङ्गदेशिनी (वि०) विपरीत ज्ञान की देशना वाली।
* नाना प्रकार के ज्ञान को प्रदर्शित करने वाली। (जयो० ३/१०)

विभग्न (वि०) त्रुट्यत्व। (जयो० ११/३४)

विभवकृत् (वि०) सम्पत्ति कर्त्री। (जयो० १०/९७) ज्ञानं च विभङ्गज्ञानम्। (जैन०ल० १०११)

विभज्य (सं०कृ०) विभक्तकर, विभाजितकर। (सम्य० २४)

विभवः (पुं०) [वि+भू+अच्] धन, सम्पत्ति,
* ऐश्वर्यानन्द। (जयो० १२/१३७)
* वैभव, * शक्ति, पराक्रम, बड़प्पन।
* प्रभाव (जयो० ५/२४) * क्रान्तिमत्व। (जयो० ११/१५)
* उन्नत अवस्था, पद प्रतिष्ठा। * समूह (जयो०वृ० ३/१३)
* कटाक्ष (जयो० १/१२०) आनन्द (जयो० ३/४५)
* मुक्ति निर्वाण।

विभवमयसम्पत्तिशाली (वि०) सम्पत्ति से पूर्ण। (जयो०२२/४)

विभवाश्रयः (पुं०) काव्य रचना में चतुर। (जयो०)

विभा (अक०) सुशोभित होना, सेवन करना। (जयो० ३/१) विभाति (सम्य० १३२)

विभा (स्त्री०) [वि+भा+क्विप्] प्रतीत होना। (सुद० १०७)
* कान्ति, प्रभा, आभा, प्रकाश। (जयो०वृ० १/१२)
* किरण। * अप्रभा। (जयो०वृ० १/१२)

विभाकरः (पुं०) * सूर्य, दिनकर। (जयो० ५/१७)
* मदार पादप, * चन्द्र।

विभाकरमूर्तिः (स्त्री०) सूर्य बिम्ब। (जयो० ५/७१)

विभागः (पुं०) * विभाजन, बांटना।
* अलग-अलग करना, * अंश, अनुभाग, हिस्सा।
* भेद-विधीनां नवधा विभागः (सम्य० १३२)
* भिन्न-भिन्न-चैद्रुप्यं जडरूपतां च दधतोः कृत्वा विभागम्' (सम्य० १४४)

विभागकल्पना (स्त्री०) अंश नियत करना।

विभागगामिन् (वि०) अंश देने वाला।

विभागधर्मः (पुं०) धर्म विभाजन।

विभागपत्रिका (स्त्री०) पत्र का एक अंश।

विभागभाज् (पुं०) बंटी हुई सम्पत्ति का भागीदार।

विभाजनं (नपुं०) [वि+भज्+णिच्+ल्युट्] वितरण करना, बांटना।

विभाज्य (वि०) [वि+भज्+ण्यत्] विभक्त किये जाने योग्य, विभजनीय।

विभातं (नपुं०) [वि+भा+क्त] * प्रभात, प्रातःकाल होना। (जयो० ८/८९, जयो० ५/२२) पौ फटना, अरुणोदय।

विभातनामषडरचक्रबन्धः (पुं०) एक छन्द की रचना। (जयो० १८/१०३)

विभान्ती (वि०) शोभमान। (जयो० १२/४३)

विभामूर्तिः (स्त्री०) प्रकाश पुंज। (जयो० ८/८९)

विभावः (पुं०) [वि+भू+घञ्] * विपरीत भाव, विकारी भाव।
* अशाश्वतभाव (जयो० १३/५५)
* मिथ्याभाव, कुभाव।
* आत्म-स्वरूप के प्रतिकूल भाव।
* प्रलय (जयो० १८/५२)

विभावगुणं (नपुं०) विपरीत गुण, विकारी गुण।

विभावनं (नपुं०) [वि+भू+णिच्+ल्युट्] * विवेक, निर्णय।
* विचार, चिन्तन-मनन।
* गवेषण, परीक्षण।
* प्रत्यय, कल्पना।

विभावना (स्त्री०) सम्बुद्धि विशेष भावना। (जयो० १/१४) एक अलंकार विशेष, जिसमें बिना कारण के कार्य का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्णन किया जाता है।

विना कारणसद्भावं यत्र कार्यस्य दर्शनम्।

नैसर्गिक गुणोत्कर्ष-भावनात्सा विभावना।। (वाग्भ० ४/९६)

विभावान्वयि (वि०) विभाव के साथ नियम से अन्वय वाला। (सम्य० १३०)

विभावसूचिन् (वि०) विभावपरिणाम को सूचित करने वाला। (वीरो० १०/३८)

विभावपर्यायः (पुं०) चतुर्विध अलग-अलग पर्याय, मनुष्य, देव, नारक और तिर्यंच् ये विभावपर्याय हैं।

विभावरी (स्त्री०) [वि+भा+वनिप्+ङीप्] * रात्रि, रजनी, रात। (जयो० ३/५७)

* हल्दी।

* कुटनी।

* वेश्या।

* मुखरा स्त्री, बातूनी स्त्री।

विभावरीकृत् (वि०) विकृतभावस्य विभावस्य रीतिश्चेष्टा प्रलयमेति विनश्यति। (जयो० १८/५२) ०राचिकृत।

विभावित (भू०क०कृ०) [वि+भू+णिच्+क्त] * निर्णीत, विवेचित, वर्णित, कथित।

* संकेत्ति, निर्देशित, प्रकटीकृत।

* निश्चित किया गया।

विभाविह (वि०) शत्रु नष्ट करने वाला। (जयो०वृ० २४/४)

विभाव्यते -ग्रहण करता है। (जयो० ५/७६)

विभाषा (स्त्री०) [वि+भाष्+अ+टाप्] * सूत्र सूचित अर्थ की व्याख्या।

* विवरण, विवेचन, विशेष कथन।

* नियम की विकल्पता, ईप्सित वस्तु का विकल्प।

विभासा (स्त्री०) [वि+भास्+अ+टाप्] * प्रभा, कान्ति, आभा, प्रकाश। * चमक, दीप्ति।

विभासुर (वि०) कान्तियुक्त। (जयो०)

विभिद्य (वि०) भिन्न। (सुद० १३३)

विभिन्न (भू०क०कृ०) [वि+भिद्+क्त] भेद किया हुआ, विभाजित किया हुआ, विभागयुक्त। (सुद० २/३३)

* विविध, नानाविध, बहुविध।

* मिश्रित, मिलाया हुआ।

विभिन्नजः (पुं०) महादेव, शिव।

विभिन्नविपणित्व (वि०) जुदी जुदी दुकान वाले। (वीरो० २२/२७)

विभिन्नशैवालदलम् (नपुं०) नाना प्रकार के शैवाल दल। (जयो० १४/४९)

विभीतः/विभीतकः (पुं०) बहेड़ा, हरीतकी।

विभीषक (वि०) [विशेषेण भीषयते वि+भी+णिच्+ण्वुल्] संत्रास युक्त, भयप्रदायी।

विभीषण (वि०) भयदायक। (जयो० ८/७)

विभीषिका (स्त्री०) [वि+भी+णिच्+ण्वुल्+टाप्] डर, भय, डरावना, भयावह स्थिति, कठिनपरिस्थिति।

विभु (वि०) [वि+भू+डु] * शक्तिसम्पन्न, बलशाली।

* प्रभावशाली, स्वामिन्। (सुद० २/१३)

* प्रमुख, सर्वोपरि, प्रधान। (सर्वज्ञ० सुद० १२९)

* योग्य, समर्थ।

* सर्वव्यापी, सर्वगत, व्यापक।

विभु (पुं०) प्रभु, स्वामी, नृप। (सम्य० ११०) त्वद्विभुर्विभुषु (जयो० ४/४०)

* आकाश। * व्यापक, विशाल।

* काल। अवकाश।

* आत्मा।

* सेवक।

* ब्रह्मा।

* राजा। (जयो० ४/३२)

विभुग्न (वि०) [वि+भुज्+क्त] कुटिल, तिरछा, वक्र।

* झुका हुआ।

* कुण्ठभाव। (जयो० १७/५२)

विभूतिः (स्त्री०) [वि+भू+क्त] * समृद्धि, वैभव, सम्पत्ति।

* घर।

* कल्याण, हित।

* भवाभावात्मिकश्री (जयो० २३/७१)

* प्रतिष्ठा, उच्चपद।

* महिमायुक्त।

* भस्म। (सुद० ११२)

विभूतिभागः (पुं०) विराग भाव। (सुद० १११)

विभूतिमत्त्व (वि०) वैभव युक्त। (जयो०वृ० १/३०) (वीरो० ३/१३) वैभववान् (जयो० १८/१६)

* भस्म रूप। (जयो० १६/१५) वैभवसंयुक्त। (जयो० ३/२९) भस्माधिकारी। (जयो० ६/२९)

विभूतिमान् (वि०) ऐश्वर्य युक्त। * धन-सम्पत्ति वाला।

विभूषणं (नपुं०) [वि+भूष्+ल्युट्] * अलंकरण, सजावट।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(सुद० ८४) * अलंकार, * सौंदर्य साधन।
* आभूषण, आभरण। * प्रसाधन।
विभूषा (स्त्री०) [वि+भूष्+अ+टाप्] * अलंकार, सजावट।
* प्रकाश, कान्ति, सौंदर्य, गरिमा। * शोभा।
विभूषित (भू०क०कृ०) अलंकृत, सुशोभित। (जयो० १/३८)
विभृ (सक०) धारण करना। (जयो० २/११५) (वीरो० ९/२८)
विभृत (भू०क०कृ०) [वि+भृ+क्त] * आश्रय दिया गया, सहारा दिया गया।
* संधारित, संपोषित, संरक्षित।
विभ्रंशः (पुं०) [वि+भ्रंश्+घञ्] * क्षति, हानि, नाश।
* गिरना, टूटना।
* चट्टान।
विभ्रंशित (भू०क०कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] * वंचित, ठगा गया, बहकाया गया।
* फुसलाया गया।
विभ्रमः (पुं०) [वि+भ्रम्+घञ्] * भ्रमण, घूमना, टहलना। चलभाव। (जयो० ३/८२)
* भ्रम होना, भ्रान्ति होना, संदेह, आशंका। (वीरो० २०/१५)
* विक्षेप, किलिकिञ्चित।
* आवर्त। (जयो० ७/२०)
* अंगचेष्टित। (जयो० ५/२९)
* अनासक्ति, मनोदोष। (जयो० ३/३)
* उन्मनीभाव (जयो० ६/३५)
* जातसन्देह। (जयो० ६/३५)
* त्रुटि, भूल, गलती। (सम्य० ११५)
* अव्यवस्था।
* नेत्रविकार। (जयो० १६/२०)
* कामकेलि, आमोद-प्रमोद।
* विलास। (जयो० ३/११३) * क्रीडाभाव।
विभ्रमपुंस् (पुं०) भ्रान्ति युक्त पुरुष। (जयो० १६/५४)
विभ्रमा (स्त्री०) [वि+भ्रम्+अच्+टाप्] बुढ़ापा, वृद्धापन।
विभ्रष्ट (भू०क०कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] * पतित, गिरा हुआ।
* क्षीण, लुप्त।
* ओझल, अन्तर्हित।
* अलग हुआ।
विभ्राज् (वि०) [वि+भ्राज्+क्विप्] * कान्तिमान्, देदीप्यमान्। (जयो० १८/५४) * सौंदर्य से परिपूर्ण।
* चमकीला, प्रभायुक्त।
विभ्रान्त (भू०क०कृ०) [वि+भ्रम्+क्त] * विक्षुब्ध, व्याकुल, परेशान।
* भ्रम युक्त, आशंकाशील।
* अव्यवस्थित, हड़बड़ाया हुआ।
* चक्कर में पड़ा हुआ।
* उन्मत्त, मदहोश।
विभ्रान्तिः (स्त्री०) [वि+भ्रम्+क्तिन्] * चक्कर, फेरा, आशंका, संदेह।
* उतावली, हड़बड़ी।
* त्रुटि, भूल।
विमत (भू०क०कृ०) [वि+मन्+क्त] * असहमत, असम्मत।
* विषम, असंगत।
* अनाहत, अपमानित, उपेक्षित।
विमति (वि०) [विरुद्धा विगता वा मतिर्यस्य] * मूर्ख, मूढ़, अज्ञानी।
विमतिः (स्त्री०) असम्मति, असहमति।
* अरुचि, जड़ता, मूर्खता।
विमतिन् (वि०) अन्यधर्मावलम्बि। (जयो० २/७२) असहमति वाला।
विमत्युपार्जित (वि०) कुबुद्धि के वश। (सुद० ११०)
विमत्सरं (नपुं०) [विगतः मत्सरो यस्य] ईर्ष्या रहित, द्वेष रहित।
विमद (वि०) [विगता मदो यस्य] * मद रहित, * मोह विमुक्त, उन्मत्तता रहित।
* हर्षशून्य, ईर्ष्यालु।
विमध्या (वि०) [विकारो मध्ये यस्याः सा] पतली कमल वाली स्त्री।
विमनस् (वि०) [विरुद्धं मनो यस्य] (जयो० २२/४४)
* उदास, खिन्न, विषण्ण, अवसन्न।
* अनमना, उदासीन, परेशान, व्याकुल।
* अप्रसन्न, हर्ष विगत।
विमन्यु (वि०) [विगता मन्युर्यस्य] * क्रोध रहित, शोक विहीन।
* क्षमाशील, मृदुस्वाभावी।
विमयः (पुं०) [वि+मी+अच्] विनिमय, लेन-देन, आदान-प्रदान।
विमर्दः (पुं०) [वि+मृद्+घञ्] कुचलना, कूटना, मर्दन करना, मसलना।
* रगड़ना, घिसना, संमर्दन करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* उपटन लगाना।
* संग्राम युद्ध लड़ाई।
* विनाश, उजाड़।
* ग्रहण, संयोग, मेल।

विमर्दक (वि०) पीसने वाला, चूर्ण करने वाला।
* मर्दन करने वाला, मसलने वाला।

विमर्दकः (पुं०) सूर्य ग्रहण, चन्द्रग्रहण।

विमर्दनं (नपुं०) [वि+मृद्+ल्युट्] कसना। (दयो० ३२)
* कुचलना, मसलना, रगड़ना।
* रौंदना, मर्दन करना।
* नशन। (जयो० २७/१३)
* उपटन लगाना, चुपड़ना।

विमर्शः (पुं०) [वि+मृश्+घञ्] * विचार, विचारविनिमय।
* अधीरता, असहिष्णुता।
* असंतोष, अप्रसन्नता।

विमर्षणं (नपुं०) रोष में आना, असंतुष्ट होना।

विमर्षणः (पुं०) विमर्षण नामक मनुष्य।

विमल (वि०) [विगतो मलो यस्मात्] विगतोमलो विमलः-
* निर्मल, स्वच्छ, धवल, शुभ्र। विगतो विनष्ये मलो यस्य
* उज्ज्वल, कान्तिमय।

विमलं (नपुं०) * कलई, सफेदी, तालक, छुई। * सेलखड़ी, चूना, खडिया मिट्टी।

विमलः (पुं०) विमलनाथ तीर्थंकर। तेरहवें तीर्थंकर का नाम। (भक्ति० १९)
* विमल नामक योगीश्वर। (सुद० ११४)

जिनेश्वरस्याभिषवं सुदर्शनः प्रसाध्य पूजां स्तवनं दयाधनः।
अथात्र नाम्ना विमलस्य वाहनः, ददर्श योगीश्वरमात्मसाधनम्।। (सुद० ११४)

विमलधी (स्त्री०) निर्मल, बुद्धि। * धवल मति।

विमलनाथः (पुं०) तीर्थंकर विमलनाथ, तेरहवें तीर्थंकर का नाम।

विमलवाहनः (पुं०) विमलवाहन नामक योगीश्वर। (सुद०११४)

विमलशील (वि०) निर्मलाचार युक्त। (जयो० ७/७७)

विमला (स्त्री०) एक व्यभिचारिण स्त्री। (वीरो० १७/५७)

विमातृ (स्त्री०) [विरुद्धा माता] सौतेली मां।

विमातृजः (पुं०) सौतेली मां का पुत्र।

विमान (वि०) मान रहित, अहंकार विहीन। (सुद० ७३)
अभिलषितं वरमाप्तवान् लोकः किन्न विमान। (सुद०७३)

विमानः (वि०) विमान, देवयान। (सुद० २/३९) मेरुं सुरदुं जलधिं विमानं निर्धूमवह्निं च न तद्विदा नः। (सुद० २/३४)
* व्योमयान, आकाशगामी यान। (जयो० २०/७१)
'विशेषणात्मस्थान सुकृतिनो मानयन्तीति विमानानि' (स०सि० ४/१६)
* सौधर्मादि कल्पों के देवों के विमान।

विमानगत (वि०) मान रहित हुआ। * अहंकार परिशून्य।
* विमान/यान को प्राप्त हुआ।

विमानजः (पुं०) वैमानिक देव।

विमानदर्शनं (नपुं०) विमान देखना। (भक्ति० ३५)

विमानदीप्ति (स्त्री०) यान की प्रभा।

विमानता (स्त्री०) अनादर, अपनाम।

विमानप्रस्तारः (पुं०) प्रकीर्णक नामक विमान।

विमानभूमि (स्त्री०) समवसरण स्थान। (वीरो० १३/२७)

विमानवत् (वि०) विमान की तरह। (सुद० २/३९)

विमानसुयानं (नपुं०) गमन साधन। (जयो० ५/५८)

विमानारुढं (पुं०) विमान में स्थित।

विमानिता (वि०) व्योमयानिता।
* मानरहिता। (जयो० ९)

विमानिनीय (वि०) मानरहित। (जयो० २९/७९)

विमानिसमूहः (पुं०) मानहीनता, स्वाभिमानरहित-'विमानेन गमनशीलानां विमानानिं स्वर्गिगामपि समूहः' (जयो०वृ० ५/१८)

विमार्गः (पुं०) [विरुद्धो मार्गः] * कुपथ, दुराचरण, विरुद्ध मार्ग।

विमार्गगामिन् (वि०) दुराचरण पर चलने वाला।

विमार्गचारिन् (वि०) सदाचरण से रहित मार्ग का अनुगामी।

विमार्गणं (नपुं०) [वि+मार्ग्+ल्युट्] * ढूंढना, खोजना, तलाश करना।

विमिश्रित (वि०) [वि+मिश्र+अच्] * संयुक्त, मिला हुआ, स्पर्शित किया गया।
* एकमेक किया गया।

विमुक्त (भू०क०कृ०) [वि+मुच्+क्त] * परित्यक्त, छोड़ा गया, त्यागा गया। (जयो० ५/५)
* स्वतंत्र, स्वाधीन।
* बंधन मुक्त, अपराध मुक्त किया गया।

विमुक्तिः (स्त्री०) [वि+मुच्+क्तिन्] * मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण।
* वियोग, विछोह, छूटना।

विमुख (वि०) [विरुद्धमननुकूलं मुखं यस्य] * पराङ्मुख, विरुद्ध। * अननुकूल, * स्वभाव से विपरीत।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* उदासीन। * खिन्न मन वाला, व्याकुल।

* विरोधी, डराने वाले का विरोधी।

भीरुभ्यो विमुखो भूत्वा, सर्वेभ्योऽप्यभयप्रदः। (समु० ९/६)

* रहित, शून्य, विहीन।

* जगत् के प्रति लगाव नहीं रखने वाला। जगतां विमुखेनापि सतां मार्गे सपक्षता। (जयो० २२/३२)

* शत्रु, प्रतिपक्षी।

विमुग्ध (वि०) [वि+मुह्+क्त] आसक्त, विषयभावनागत, मूर्च्छित, मोहासक्त। * अत्यधिक मोह को प्राप्त।

* व्याकुल, निराश।

विमुच (वि०) ग्रहण करने वाला, छोड़ने वाला नहीं।

विमुद्र (वि०) [विगता मुद्रा यस्य] मुद्रा रहित, चिह्न रहित, पहचान शून्य।

* खुला हुआ, मुकुलित।

विमुद्रित (भू०क०कृ०) [वि+मुद्र+क्त] निमीलित। (जयो०वृ० १५/४९)

* मुद्रा रहित हुआ, चिह्न वियुक्त।

विमूढ (भू०क०कृ०) [वि+मुह्+क्त] * मुग्ध, आसक्त हुआ।

* व्याकुल, घबड़ाया हुआ।

* बैचेन, उदासीन, विमुग्ध।

विमूढमन (वि०) [विमूढो मनो यस्य] * जडान्त करण, जड़शील। (जयो० २/१४२)

* मूढ बुद्धि माला।

विमृष्ट (भू०क०कृ०) [वि+मृज्+क्त] * साफ किया गया, पोंछा गया।

* मद्रित किया गया, प्रक्षालित। प्रमार्जित, प्रशोधित।

* चिन्तन किया गया, सोचा गया।

विमोक्षः (पुं०) [वि+मोक्ष्+घञ्] * मुक्ति, छुटकारा, बन्धनविहीन।

विमोक्षणं (नपुं०) [वि+मोक्ष्+ल्युट्] * मुक्त करना, छोड़ना।

* मुंचन, परित्यक्तन।

विमोचनं (नपुं०) [वि+मुच्+ल्युट्] * खोलना, छोड़ना, त्यागना।

* छुटकारा, मुक्ति।

विमोचिन (भू०क०कृ०) [वि+मुच्+क्त] * फेंके गए, छोड़े गए, त्यागे गए।

* परित्यक्त-'धनिना विमोचित माढ्यपरित्यक्तं पदादि'। (जयो०वृ० २/२८)

विमोह (वि०) मुग्ध किया हुआ, आसक्त किया हुआ।

विमोहं (नपुं०) [वि+मुह्+णिच्+ल्युट्] * रिझाना, * प्रलोभन देना। * मोहित करना, अपनी ओर आकर्षित करना।

* आसक्त करना।

* आकृष्ट करना, प्रभावित करना।

विमोहित (वि०) आकर्षित। (समु० ७/१८)

विमोहिनी (स्त्री०) स्नेहकर्मी। (जयो० १२/५२)

विम्बटः (पुं०) [विब्+अट्+अच्] राई का पौधा।

वियत् (नपुं०) [वियच्छति न विरमति-वि+यम्+क्विप्] अन्तरिक्षि, आकाश, गगन, नभ। (जयो० १८/२२)

वियत्गंगा (स्त्री०) आकाश गंगा, स्वर्ग गंगा।

वियत्गामिन् (पुं०) आकशगामी, विद्याधर।

वियत्चारिन् (पुं०) पक्षी, गृद्ध पक्षी।

वियत्भूतिः (स्त्री०) अंधकार, तम, अंधेरा।

वियत्मणिः (पुं०) सूर्य, दिनकर।

वियतिः (पुं०) पक्षी, गमन। (जयो० १३/२४)

वियमः (पुं०) [वि+यम्+अप्] प्रतिबन्ध, रोक, विराम, गतिरोध। नियंत्रण, बन्धन।

वियात (वि०) [विरुद्धं निन्दां यातः] धृष्ट, निर्लज्ज, ढीठ।

वियुक्त (भू०क०कृ०) [वि+युज्+क्त] * पृथक्, अलग।

* विच्छिन्न, परित्यक्त।

* जुदा हुआ, वंचित।

वियुक्तिः (स्त्री०) परित्याग। (हित० ४२;)

वियुज् (अक०) बिछुड़ना, अलग होना। (जयो० १२/१०)

* दुःख, कष्ट, पीड़ा, वेदना, व्याधि।

वियुत (भू०क०कृ०) [वि+यु+क्त] * पृथक्, भिन्न-भिन्न।

* वञ्चित, शून्य, विरहित।

वियोगः (पुं०) [वि+युज्+घञ्] * विछोह, विच्छेद, जुदाई।

* सम्बन्ध विच्छेद। (समु० ८/६)

* अभाव, हानि, क्षति।

वियोगज (वि०) वियोग को प्राप्त होने वाला। (मुनि० ८)

वियोगिन् (वि०) [वियोग+इनि] वियुक्त।

* चक्रवाक् पक्षी।

वियोगिचित्तं (नपुं०) वैराग्यशील। (जयो० १७/९) (जयो० १६/३)

वियोगिनी (स्त्री०) [वियोगिन्+ङीष्] वियुक्त स्त्री, विरहिणी, पतिवियोग युक्त। छाया वृक्षत्वं विदधाति तावद्वियोगिनीयं। (वीरो० १२/५)

* एक छन्द का नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वियोगिवर्गः (पुं०) साधक समूह। (वीरो० ६/२३)

वियोजित (भू०क०कृ०) [वि+युज्+णिच्+क्त] परित्यक्त, छोड़ा गया।

* वञ्चित।

वियोनिः (स्त्री०) [विविधा विरुद्धा वा योनि] नाना जन्म, विविध पर्याय, अलग-अलग जन्म।

* कुयोनि, कुजन्म।

विरक्त (भू०क०कृ०) [वि+रंज्+क्त] * लालसा विहीन, इच्छा रहित।

* विराग युक्त, राग रहित, वीतरागता पूर्ण। (जयो० १७/८२) विरुद्धाचरण (जयो० ६/९२)

* संन्यासी। (जयो० ६/२३, * रक्तरहित (जयो० १६/९३)

विरक्त (स्त्री०) [वि+रञ्ज्+क्तिन्] * चित्तवृत्ति में परिवर्तन, असंतोष।

* उदासीनता, विलगाव, बिछोह, वियोग।

* आसक्ति मुक्त, विराग, वीतरागभाव।

विरचनं (नपुं०) [वि+रच्+ल्युट्] * संरचना, काव्यप्रणयन।

* निर्माण करना, सृजन करना।

* संकलन करना, संग्रह करना।

विरचित (भू०क०कृ०) [वि+रच्+क्त] * निर्मित, * बनाया, गया प्रणयन किया गया।

* संरचित, प्ररूपित, निरूपित।

* सृर्जित, गठित।

* परिष्कृत किया गया, तैयार किया गया।

* धारण किया गया, पहनाया गया।

* जड़ा गया, बैठाया गया।

विरज् (सक०) अनुराग करना, प्रेम करना, प्रसन्न करना। खुश करना। (सुद० ४/१०) रज्यमानोऽत इत्यत्र परस्मात्तु विरज्यते। (सुद० ४/८)

* विरक्त रहना। (सुद० १३२)

विरज (वि०) [विगतं रजो यस्मात्] * रज विहीन, धूल रहित।

विरजस् (वि०) [विगतं रजं यस्मात् यस्य] * राग रहित, अनुराग विहीन। * आसक्ति रहित।

* धूल रहित। * कर्म परमाणुओं से विगत।

विरञ्चः (पुं०) [वि+रच्+अच्] ब्रह्मा। (जयो० २४/१०)

विरञ्चि (पुं०) ब्रह्मा।

विरञ्चिपुत्रः (पुं०) नारद। (जयो० २४/१०)

विरञ्चिभू (पुं०) विधाता, ब्रह्मा। (जयो०)

विरटः (पुं०) अगुरु, कृष्णचंदन।

विरणं (नपुं०) [विशिष्टो रणो मूलं यस्य] सुगन्धित घास।

विरत (वि०) [वि+रम+क्त] * रहित, विहीन। (मुनि० २५) भो! भोगाद् विरतो रतो भगवतः संचेतने धीश्वर!

* विश्रान्त, थका हुआ, क्लान्त।

* उपसंहृत, समाप्त।

विरतिः (स्त्री०) [वि+रम्+क्तिन्] * बंद करना, रोकना, ठहरना।

* विश्राम, अवसान, यति।

* विराग, संयम में प्रवृत्ति।

विरदावली (स्त्री०) वंशावली। * वंशपट्टावली। (वीरो० ९/२६, दयो० ५२)

विरम् [वि+रम्] * छोड़ना, त्यागना। (सुद० ८७) विरम विरम भो स्वामिमि त्वम्।

* विराम करना, चिरस्थिर करना। परहिताय जयेज्जनता नवं विरम भो विरमेति सुमानवं।। (जयो० ९/७०) 'विरम विरम चिरं स्थिरो भवेत्यर्थः' (जयो० २९/७०)

विरम् (अक०) विरत होना, चुप होना। (जयो० २५/६) दूर होना। (जयो० ३/९२)

विरमः (पुं०) रोक, विश्राम, विराम।

* छिपना, अदृश होना।

विरल (वि०) [वि+रा+कलन्] अन्तराल युक्त, कोई कोई। (जयो० ९/८६)

* पतला, कोमल, मृदु।

* ढीला, विस्तृत।

* निराला, दुर्लभ, अनूठा।

* थोड़ा, कम।

* दूरवर्ती, लम्बा।

विरलं (नपुं०) दही, जमाया हुआ दूध।

विरलं (अव्य०) * कठिनाई से, कभी कभी, * नहीं के बराबर (जयो० ९/८६)

विरलभावः (पुं०) मृदुभाव।

विरव (वि०) विशिष्ट शब्द। (जयो० ८/२०, १३/३)

विरस (वि०) [विगताः रसो यस्य] * नीरस, स्वाद रहित।

* अप्रिय, अरुचिकर।

* क्रूर, निर्दय।

विरसः (पुं०) पीड़ा, कष्ट, दुःख।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विरह: (पुं०) [वि+रह्+अच्] विछोह, वियोग। (जयो०वृ० १५/२९) 'पाणिग्रहणादि भूत्वा पश्चान्मे विरहो न स्यादिति' (जयो०वृ० ११/५१)
* छोड़ना। (जयो० १६/७२) त्यागना।
* अभाव।

विरहगत (वि०) वियोग को प्राप्त हुआ।

विरहज्वर: (पुं०) वियोग वेदना।

विरहपीड़ा (स्त्री०) बिछोह का दु:ख।

विरहाग्निनान्त (वि०) विरह रूपी अग्नि से जलने वाला। (जयो० १६/१६)

विरहानल: (पुं०) विरहाग्नि।

विरहाविरहाशा (वि०) विरह का खेद। (जयो० १३/७७)

विरहासहा (वि०) वियोगमसहमाना, वियोग को सहने वाला। (जयो० २१/१४)

विरहार्त (वि०) विरह से पीड़ित।

विरहावस्था (स्त्री०) वियोगजन्य दशा।

विरहिणी (स्त्री०) वियोगिनी। (वीरो० ६/३६)

विरहित (वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

विरहोत्कण्ठ (वि०) वियोग का कष्ठ भोगने वाला।

विरहोत्सुक (वि०) विछोय युक्त।

विराग (वि०) [वि+रञ्ज्+घञ्] * विरक्ति, सांसरिक कारणों से निवृत्ति, विषयाभाव।
* अरुचि। * गृह परिवार भोगादि से निवृत्ति। (जयो०६/१००)
* इच्छा रहित।
* वृत्तिपरिवर्तन, असंतोष।

विरागभृत (वि०) विरक्ति से परिपूर्ण। (सुद० ५/९)

विरागिन् (वि०) विरक्ति युक्त, विषयवासना रहित। (सुद०१२२) इत्येवं प्रत्युत विरागिणं समनुभवन्तं स्वात्मन: किणम्। (सुद० १२२)

विराज् (पुं०) [वि+राज्+क्विप्] * कान्ति, आभा, शोभा, प्रभा। (जयो० १/९७) (समु० ६/१)

विराजित (भू०क०कृ०) [वि+राज्+क्त] सुशोभित, देदीप्यमान, प्रकाशित। (जयो० १/९७)
* प्रदर्शित, प्रकटीकृत।

विराट: (पुं०) [विशेषो राटो यत्र] विराट नामक राजा, जहां पांडवों ने छद्मवेश में निवास किया था।

विराटक: (पुं०) [विराट+कन्] अल्प प्रमाण वाला हीरा।

विराणिन् (पुं०) हस्ति, हाथी।

विराद्ध (भू०क०कृ०) [वि+राध्+क्त] * विरुद्ध, प्रतिकूल।
* कुपित, क्षतिग्रस्त।
* घृणापूर्वक, व्यवहृत।

विराध: (पुं०) [वि+राध्+घञ्] * विरोध, प्रतिरोध, विवाद। सताना। (समु० २/१३)
* संतप्त, दु:खी, पीड़ित।

विराधक (वि०) सताने वाला। 'विराधक: सन्नखिप्रजाया, अवादि वृद्धैर्नरकं स यायात्' (समु० २/३३)

विराधनं (नपुं०) [वि+राध्+ल्युट्] * विरोध करना, चोट पहुंचाना, सताना।
* कष्ट देना, पीड़ित करना।

विराधना (स्त्री०) संताप, पीड़ा, दु:खी।

विराधिन् (वि०) विराधना करने वाला। कुर्वन्वृथाज्ञस्स्वधियो विराधी, सम्पन्नतामेत्वमधुना समाधि:। (भक्ति० २७)

विराम: (पुं०) [वि+रम्+घञ्] रोकना, बन्द करना, समाप्त करना।
* विश्राम। (जयो० २२/८१)
* अन्त, समाप्ति, उपसंहार।
* यति, रुकावट, ठहराव।

विराव: (पुं०) [वि+रु+घञ्] ध्वनि, कोलाहल, आवाज।

विराविन् (वि०) [वि+राव+इनि] रोने वाला, चीखने वाला, चिल्लाने वाला।

विराविणी (स्त्री०) चिल्लाने वाली, रोने वाली।

विरिक्तक (वि०) खाली, रीता हुआ। (जयो० १२/७९)

विरिंच: (पुं०) [वि+रिंच्+इन्] ब्रह्मा।

विरुग्ण (भू०क०कृ०) [वि+रुज्+क्त] * रोग ग्रस्त।
* विनष्ट हुआ।
* झुका हुआ। * ठूंठ।

विरुत (भू०क०कृ०) [वि+रु+क्त] * चीखा हुआ, चिल्लाया हुआ।
* चीत्कारपूर्ण, गुंजायमान।

विरुतं (नपुं०) चिल्लाना, चीखना, दहाड़ना।
* चिल्लाहट, ध्वनि, घोषणा।
* कूंजना, गुनगुनाना, भिनभिनाना।

विरुद: (पुं०) घोषणा करना, चिल्लाना।

विरुदं (नपुं०) ध्वनि करना।

विरुदावली (स्त्री०) यश प्रशस्ति, गुणगान गीतिका। (वीरो० ९/१२, जयो० ६/६०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विरुदितं (नपुं०) [वि+इतच्+क्त] विलाप करना, जोर से चिल्लाना।

विरुद्ध (वि०) [वि+रुध्+क्त]

* विपरीत, उलटा, असम्बद्ध, असंगत।
* बाधित, रोका गया, विरोध किया गया।
* प्रतिकूल, विरोधी।
* अनुकूल, अनुपयुक्त।
* प्रतिषिद्ध, वर्जित, त्याज्य योग्य।
* अशुद्ध, अनुचित।

विरुद्धं (नपुं०) विरोध, वैपरीत्य, शत्रुता। (सम्य० ९३)

* असहमति, असंगति।

विरुद्धकथन (वि०) विपरीत कथन, मिथ्या कथन। (जयो०वृ० १/२९)

विरुद्धगमनं (नपुं०) दोषों का प्रसंग। 'अयनमयोगमनं प्रत्ययो विरुद्ध गममम्'

विरुद्धगाम (वि०) चौरलुण्टाक (जयो० १/२०) (जयो०१/५१)

विरुद्धता (वि०) * विपरीतता, विरोधिपना, * अनुपयुक्तता, प्रतिकूलता।

विरुद्धताकारक (वि०) वैचित्रता का कारक, प्रतिकूलता का कारक। 'य एव हेतुः प्रकल्प्येत स ततोऽन्य इति विरुद्धताकारकः स्यात्' (जयो०वृ० २६/८६)

विरुद्धदानं (नपुं०) अनुचित दान।

विरुद्धपानं (नपुं०) विपरीत पान योग्य पदार्थ।

विरुद्धभावः (पुं०) विपरीत भाव। 'जनैरुपादायि विरुद्धभाव इवाशुवंशैर्विपिनेऽपि दावः' (दयो० ३८)

विरुद्धभोज्य (वि०) निषिद्ध भोजन वाला। (भक्ति० ४०)

विरुद्धराज्यातिक्रमः (पुं०) राज्य के विरुद्ध कार्य करना, राजाज्ञा का उल्लंघन करना।

विरुक्षणं (नपुं०) [वि+रुक्ष्+ल्युट्] * कलंक, दोष, निन्दा।

* अभिशाप, कोसना।
* *रुखा करना।*

विरूप (वि०) [विकृतं रूपं यस्य] * कुरूप, विकृत, असुंदरता युक्त।

* रूप विहीन, लावण्य रहित, गुणहीन। (जयो०वृ०१६/७३)
* काम वृत्ति। (जयो०वृ० १/४६)
* विपत्तिका। (जयो० १६/७३)

विरूपक (वि०) सौंदर्य विहीन, पूतिगन्धयुक्त। (जयो०वृ० ६/७६)

विरूपकरणं (नपुं०) सौंदर्य विहीन होना, लावण्यता से रहित होना।

विरूपगत (वि०) कुरूपता को प्राप्त हुआ।

विरूपगामी (वि०) कुमार्ग गामी, काम-वासना ज़नित।

विरूपधारी (वि०) कुरूपता युक्त।

विरूपिन् [विरुद्धं सरूपमस्ति अस्य] कुरूप, लावण्यहीन।

विरेकः (पुं०) [वि+रिच्+घञ्] विरेचक, जुलाब, मलाशय स्वच्छ करना।

विरेचनं (नपुं०) [वि+रिच्+ल्युट्] दस्त, मलोत्सर्ग। (जयो० २६/७९)

* जुलाब, मलाशय स्वच्छ करना। (समु० ९/२८) (जयो० ६/१०)

विरेचित (वि०) मल्लोत्सर्जित, मल का उत्सर्ग करने वाला।

विरेफः (पुं०) [विशिष्टो रेफो यस्य] * नदी, सरिता, प्रवाहिनी।

विरोकः (पुं०) [वि+रुच्+घञ्] छिद्र, सुराख।

* दरार।

विरोचनः (पुं०) [विशेषेण रोचते-वि+रुच्+ल्युट्] * सूर्य।

* चन्द्र।
* अग्नि। (दयो० २०)

विरोधः (पुं०) [वि+रुध्+घञ्] प्रतिरोध, रुकावट, ठहराव।

* आवरण, ढक्कन।
* कलह, संकट, असहमति। (जयो० १/१२)
* अन्तर्कलह, शत्रुतापूर्ण व्यवहार।
* विरोधाभास अलंकार। (जयो०वृ० ३/५)

विरोधकर (वि०) प्रतिरोध करने वाला, गतिरोध करने वाला। (जयो०वृ० २/६८)

विरोधकारिणी (वि०) गतिरोध उत्पन्न करने वाली। (सुद०११२)

विरोधकारिन् (वि०) कलह करने वाला, संकट उत्पन्न करने वाला।

विरोधकृत् (पुं०) शत्रु।

विरोधकृत् (वि०) कलहकारी, झगड़ालु।

विरोधगत (वि०) शत्रुता को प्राप्त हुआ।

विरोधगामिन् (वि०) प्रतिकूल चलने वाला।

विरोधजन्य (वि०) कहलपूर्ण।

विरोधनं (नपुं०) [वि+रुध्+ल्युट्] * कलह।

* बाधा, संकट, रोक।
* विग्ध करना, बाधा डालना। (वीरो० २०/१३)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* घेरा डालना।
* प्रतिरोध करना।
* असहमति, असंगति।

विरोधभासः (पुं०) विरोधाभास अलंकार, विरोध की प्रतीति होना। (जयो०वृ० १/१२)
आपाते हि विरुद्धत्वं यत्र वाक्ये न तत्त्वतः।
शब्दार्थकृतमाभाति स विरोध स्मृतो यथा। (वाग्भट्टलंकार ४/२०) 'जिस वाक्य के कहने या सुनने से तत्काल ही शब्द और अर्थ में विरोध उत्पन्न हो, परन्तु वास्तव में किसी प्रकार का भी विरोध न हो वहां विरोधाभास अलंकार होता है।
अनङ्गरम्योपि सदङ्गभावादभूत् समुद्रोऽप्यजडस्वभावात्।
न गोत्रभित्किन्तु सदा पवित्रः स्वचेष्टितेनेत्थमसौ विचित्रः।। (जयो० १/४१) (जयो०वृ० ३/३५, २३/३, ६/९३, ८/३६, ३/१०८) (वीरो०१/२, १/५, ३/३२)

विरोधाभासालंकारः देखो ऊपर।

विरोधिता (वि०) शत्रुता, प्रतिकूलता (जयो० २/७०)

विरोधिन् (वि०) [वि+रुध्+णिनि] * प्रतिरोध करने वाला, रोकने वाला। (सुद० ४/३५)
* मिथ-मिथ्या। (जयो०वृ० २/१९)
* शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल, विरुद्ध प्रकृति वाला।
* प्रतिद्वन्द्वि, असंगत, विरोधी।

विरोधिन् (पुं०) शत्रु, प्रतिपक्षी।

विरोपणं (नपुं०) [वि+रुह्+ल्युट्] * घाव भरना।
* रोपना।

विल् (सक०) ढकना, छिपाना।
* आच्छादित करना, आवरण करना।
* तोड़ना, बांटना, फेंकना।
* धकेलना।

विलक्ष (वि०) [विलक्ष्+अच्] * लक्षण रहित, चिह्न विहीन।
* व्याकुल, विह्वल।
* आश्चर्यान्वित, अचम्भे युक्त।
* लज्जित, शर्मिन्दा युक्त।

विलक्षणं (नपुं०) [विगतं लक्षणं यस्य] * सर्वसाधारण। (जयो०वृ० ६/५४)
* भेद युक्त। (जयो०वृ० १/१५)
* असाधारण।
* भिन्न, इतर। (सम्य० ८४)

विलक्षणता (वि०) विलाप भाव वाली, प्रतिकूल स्वभाव वाली। (दयो० १६)
* असाधारण।

विलक्षणत्व (वि०) बनावटी, बिना लक्षण वाली। (जयो०वृ० १/३५) (हित० १८)

विलक्षणभावः (पुं०) विनाश भाव। (सुद० १०३)

विलक्षित (भू०क०कृ०) [वि+लक्ष्+क्त] * विकलता गत, व्याकुल होता हुआ। कमलमेत्य पुनः शशिना धृतो मधुकरोऽतिविरौति विलक्षितः।। (जयो०वृ० २५/२५)
* विश्रुत, प्रसिद्ध, ख्यात।
* प्रत्यक्षीकृत, दृष्ट, आविष्कृत।
* विवचेनीय।
* उद्विग्न।
* विह्वल, व्याकुल।
* प्रकोपी, क्रोधित।

विलक्षिन् (वि०) सर्वसाधारणता (सुद० १/१९) सन्तो विलक्ष्या हि भवन्ति लाभ्यः सत्र प्रपास्थापनभावनाभ्यः।

विलग् (अक०) अलग होना। (सम्य० १५४) (सुद० १/१९)

विलग्न (वि०) [वि+लस्ज्+क्त] * संलग्न, अवलम्बित, आधारित, आश्रित।
* लगा हुआ, चिपका हुआ, चिपटा हुआ।
* निर्दिष्ट, स्थिर किया हुआ।
* पतला, सुकुमार।

विलग्नं (नपुं०) कूल्हा।
* कमर।

विलंघनं (नपुं०) [वि+लंघ्+ल्युट्] * अतिक्रमण करना, लांघ जाना।
* अपराध, अतिक्रमण, शांत, क्षति, हानि।

विलंघित (भू०क०कृ०) [वि+लंघ्+क्त] * अतिक्रान्त, व्यतीत, बीता हुआ।
* आगे गया, आगे बढ़ा हुआ।
* परास्त, पराजित।

विलज्ज (वि०) [विगता लज्जा यस्य] निर्लज्ज, बेशर्म।

विलप् (अक०) रोना, विलाप करना। (जयो०वृ० ९/७)

विलपनं (नपुं०) [वि+लप्+क्त] रोता हुआ, विलाप करता हुआ।

विलम्बः (पुं०) [वि+लम्ब्+घञ्] * लटकना, झूलना, ढोलायमान होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* देरी, विलम्ब करना-भूरास्तामिह जातुचिदहो सुंदल न विलम्बस्य' (सुद० ९४) नृराडास्तां विलम्बेन भुवि लम्बेन कर्मणा। (सुद० ७८)

विलम्बनं (नपुं०) [वि+लम्ब्+ल्युट्] * लटकना, झूलना।
 * देरी, विलम्ब करना। (जयो० ९)
 * लटकी हुई। (जयो० ५/१५)

विलम्बिका (स्त्री०) कब्जी, कोष्ठबद्धता।

विलम्बित (भू०क०कृ०) [विलम्ब+णिनि] * नीचे लटकता हुआ, झूलता हुआ।
 * देरी करने वाला, टालमटोल करने वाला।

विलम्भः (पुं०) [वि+लभ्+घञ्] उदारता, भेंट, उपहार, पुरस्कार।

विलयः (पुं०) [वि+ली+अच्] विघटन।
 * पिघलना।
 * विनाश, मृत्यु, अन्त।
 * नष्ट। (मुनि० १४) विलीन।

विलयनं (नपुं०) [वि+ली+ल्युट्] * प्रलय, विनाश।
 * पिघलना, क्षीण होना।
 * विघटन, विनाश।

विलयाह्वय (वि०) * पक्षियों को सुरक्षा प्रदान करने वाला। 'वीना-पक्षीणां लयाह्वयं गुप्तिकारकम्' (जयो०वृ० १५/९) कालं समयं विलोक्य (जयो०वृ० १५/९)

विलब्धपूर्णा (वि०) विपरीतता को धारण करने वाला। (वीरो० १४/३०)

विलस् (अक०) चमकता होना, कोंधना, लहराना, उज्ज्वल होना। (सुद० ८४ विलसतु। (विलसत् (जयो० ३/१७)

विलसत् (स्त्री०) चमकना, उज्ज्वल, प्रभा, सुंदर, प्रिय। (सुद०३/३)

विसलत्तनु (पुं०) शोभायमान शरीर, सुंदर देह। अवालभावतो जङ्घे सुवृत्ते, विलसत्तनोः' (जयो० ३/४६) 'विलसत्तनोः सुंदरशरीरायाः'।

विलसत्तमालः (पुं०) सुंदर तमाल तरु। (सुद० १३६)

विलसनं (नपुं०) [वि+लस्+ल्युट्] चमकना, सुंदर, सुभग, प्रिय।
 * मनोज्ञ।
 * सुशोभित, प्रभायुक्त।
 * जगमगाना, क्रीड़ा करना।

विलसित (भू०क०कृ०) [वि+लस्+क्त] * चमकता हुआ, सुशोभित।
 * प्रकटीकृत, प्रकट हुआ।
 * क्रीड़ाप्रिय, स्वेच्छाचारी।

विलसितं (नपुं०) विलास, लीला, क्रीड़ा।
 * चमक, प्रभा।

विलाप् (सक०) तपाना, बिलौना। (जयो०वृ० २/१४)

विलापः (वि०) [वि+लप्+घञ्] * रोना, क्रंदन, रुदन, कराहना।

विलापी (वि०) रुदन करने वाला।

विलालः (पुं०) [वि+लल्+घञ्] विलाव,
 * उपकरण, यन्त्र।

विलासः (पुं०) [वि+लस्+घञ्] नेत्रविभ्रम (जयो० ३/५८)
 * लीला, क्रीड़ा, खेल।
 * ललित, अनुराग, कामुकता। (जयो० १/१४)
 * लालित्य, सौंदर्य, चारुता। लावण्य। (सुद० २/८)
 * आसक्ति। (जयो०२/७१)
 * मनोविनोद, मनोरंजन।
 * अभिनय। (जयो० ११/८४)

विलासगति (स्त्री०) लीला का संचालन।

विलासगेहं (नपुं०) रतिगृह, कामक्रीड़ा स्थल।

विलास-तत्परः (पुं०) विषय में संलग्न। (जयो० २/२०)

विलासनं (नपुं०) [विलास्+णिच्+ल्युट्] * क्रीड़ा, मनोरंजन, मनोविनोद।
 * आसक्ति, वासना, कामना।
 * कामुकता।

विलासनीतिः (स्त्री०) कामप्रवृत्ति।

विलासवासिन् (वि०) आरम्भ परिग्रहासक्त। (जयो० २/७१)

विलासविभ्रमः (पुं०) काम-विभ्रम। (जयो० ३/३)

विलासिन् (वि०) कामासक्त हुआ, विलासशाली। (जयो०३/१३)

विलासिनी (स्त्री०) पण्यस्त्री, वेश्या। (जयो० १५/५३)
 * वरवर्णिनी। (जयो० ९/७८)

विलासिनी-नीतिः (स्त्री०) कुटल स्त्री की प्रवृत्ति। विलासिभ्यो विलासिनीनां वा नीतिः प्रवृत्तिः' (जयो० १५/८)

विलिख् (सक०) लिखना, कुदेरना, गूंदना।

विलिखनं (नपुं०) [वि+लिख्+ल्युट्] लिखना, कुदेरना, खुरचना।

विलिप् (सक०) लींपना, साफ करना।

विलिप्त (भू०क०कृ०) [वि+लिप्+क्त] संसक्त, लिपटे हुए, सने हुए (जयो० १२/७६) लीपा हुआ, चुपड़ा हुआ, पोता हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलीन (भू०क०कृ०) विलिप्त, अनुषक्त, लिपटा हुआ, चिपकने वाला।
* संसक्त, लीन, मिला हुआ।
* अन्तर्हित, विनष्ट, ओझल, समाप्त।

विलुंच् (सक०) लोंच करना, उखाड़ना।

विलुंचनं (नपुं०) [वि+लुच्+ल्युट्] * उखाड़ना, लोंच करना।

विलुंठनं (नपुं०) [वि+लुंठ्+ल्युट्] लूटना, डाका डालना, ठगना।

विलुप्त (भू०क०कृ०) [वि+लुप्+क्त] * नष्ट, समाप्त।
* फाड़ा गया, तोड़ा गया।
* पकड़ा गया।

विलुम्प् (अक०) विलुप्त होना, नष्ट होना।

विलुम्पकः (पुं०) चोर, डाकू।
* अपहर्ता, लुटेरा।

विलुम्पन्त (वि+लुप्+शतृ) ओझल होता हुआ, नष्ट होता हुआ। 'वृषं विलुम्पन्तमहो सनातन यथात्म विष्वकृतनुभृन्नि मालनम्' (वीरो० ९/१)

विलुलित (भू०क०कृ०) [वि+लुल्+क्त] * लुढ़का हुआ।
* अस्थिर हुआ, हिला हुआ।
* क्रमरहित, क्रमशून्य।

विलून (भू०क०कृ०) [वि+लू+क्त] कटा हुआ, चीरा हुआ।
* छिन्न। (जयो० ८/५१)

विलेखनं (नपुं०) [वि+लिख्+णिच्+ल्युट्] * गोदना, लिखना।
* खोदना।
* खुरचना, कुदेरना।
* उखाड़ना।

विलेपः (पुं०) [वि+लिप्+घञ्]
* उबटन, मल्हम।
* लिपाई, पुताई।

विलेपनं (नपुं०) [वि+लिप्+ल्युट्] * लींपना, पोतना।
* उबटन लगाना।
* सुगन्धित पदार्थ रगड़ना। घिसे गए सुगन्धित पदार्थ का लेप।

विलेपनी (स्त्री०) [विलेपन+ङीप्] उपटन युक्त स्त्री, अलंकृत स्त्री। * सुवेशा, सुंदरी।

विलेपिका (स्त्री०) चांवल का मांड।

विलेप्यशङ्का (स्त्री०) चित्रोल्लिखित की शङ्का। (वीरो० २/१३)

विलोक् (सक०) * देखना, अवलोकन करना।
* निहारना, परखना, दृष्टि डालना।

विलोकनं (नपुं०) देखना, अवलोकन करना।
* ढूंढना, खोजना-'मम सहचरी यस्यै वर-विलोकनोत्कण्ठाम्' (दयो० ६५)
* दर्शन। (जयो०वृ० १/१०६)
* दृष्टि, निरीक्षण। (जयो० ११/३)

विलोकनीय (वि०) [विलोक्+अनीयर्] * दर्शनीय, निरीक्षण योग्य, देखने योग्य। (जयो० १२/४५)

विलोकयत् देखता हुआ, निरीक्षण करता हुआ।

विलोकयल्लोकपतिः (वि०) लोकपति को देखने वाला। 'लोकपति नरशिरोमणिं मुनिं विलोकयन् सस्नेहं पश्यन्' (जयो०वृ० १/८३)

विलोकित (वि०) निरीक्षित, दृष्टिगत हुआ।

विलोक्य (सं०कृ०) देखकर, अवलोकन करके, निरीक्षण करके। (जयो०, सुद० १०८)

विलोचनं (नपुं०) [वि+लोच्+ल्युट्] नेत्र, नयन, अक्षि।

विलोचनाम्बु (नपुं०) अश्रु, आंसू।

विलोडनं (नपुं०) [वि+लोड्+ल्युट्] * मंथन, बिलौना, मथना। (जयो० २३/८५)
* विक्षुब्ध होना, झूलना।

विलोडित (भू०क०कृ०) [वि+लोड्+क्त] * मथित, बिलोया हुआ, मथा हुआ।
* हिलाया हुआ।

विलोपः (पुं०) [वि+लुप्+घञ्] * लोप, हानि, क्षति, विनाशघात। (सुद० १०२)
* पकड़ना, लूटना, अपहरण करना।
* अदर्शन।

विलोपनं (नपुं०) [वि+लुप्+ल्युट्] * लोप, हानि, विनाश, क्षति।
* नष्ट करन, क्षति करना।
* अपहरण।

विलोपिन् (वि०) नाश करने वाला, क्षति पहुंचाने वाला। (समु० ६/३२)

विलोभः (पुं०) [वि+लुभ्+घञ्] * प्रलोभन, लुभाना, आकर्षित करना।
* अपनी ओर खींचना, आकृष्ट करना।

विलोभनं (नपुं०) [वि+लुभ्+णिच्+ल्युट्] * लुभाना, आकर्षित करना।
* ललचाना, आकृष्ट करना।
* प्रलोभन।
* खुशामद, प्रशंसा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलोम (वि०) [विगतं लोमं यत्र] * विपर्यय। (जयो०२२/५८)
* प्रतिकूल, विपरीत, प्रतिलोम।
* हर्ष रहित, लोम रहित-विलोमेनैव सर्वाङ्गनांनुल्लंघ्य विलोम प्रक्रिया' (जयो०वृ० १२/११८)
* विरुद्ध, पिछड़ा हुआ।

विलोमः (पुं०) विपरीत क्रम, प्रतिलोम।
* कुत्ता, सर्प, वरुण।

विलोमं (नपुं०) रहट, पानी निकालने का यन्त्र।

विलोमगामिन् (वि०) विपरीत पाठ वाला। (जयो० २८/२१)
* विपरीत चलने वाला।

विलोमज (वि०) लोमाभाव, हर्ष का अभाव। (वीरो० २/४८)
* निर्लोमता। (जयो० ११/१८)
* विपर्यय। (जयो० २२/५८) वैपरीत्य। (जयो० २/२३)
* विपरीतता। (जयो० २४/९१)

विलोमविधिः (स्त्री०) प्रतिकूल कर्म।

विलोल (वि०) [विशेषेण लोलः] * चञ्चल, चपल। (जयो० १७/१३०)
* ढोलायमान, चलायमान, थरथर करने वाला।
* ढीला, विपर्यस्त, बिखरा हुआ।

विलोलनं (नपुं०) चञ्चल, परिचालन। (जयो० ५/८५)

विलोहितः (पुं०) रुद्र।

विल्वः (पुं०) बिल्वफल।
* श्रीफल। (जयो० १२/४३)

विल्वफलं (नपुं०) बेल का फल। (जयो०वृ० १४/९)

विवक्षा (स्त्री०) [वच्+सन्+अ+टाप्] * अभिलाषा, कामना, चाह, इच्छा।
* अर्थ, आशय, प्रयोजन।

विवक्षित (वि०) [विवक्षा+इतच्] * अभिप्रेत, कहे जाने योग्य।
* अर्थ युक्त, प्रयोजनभूत।
* अभिप्राय युक्त, उद्देश्यपूर्ण।
* आशय युक्त।

विवक्षितं (नपुं०) आशय, अभिप्राय, प्रयोजन।

विवक्षु (वि०) [वच्+सन्+उ] बोलने की इच्छा वाला।

विवत्सा (स्त्री०) [विगताः वत्सो यस्याः] बिना बछड़े वाली गाय, वत्स विहीन गाय।

विवद् (सक०) निवेदन करना, बोलना, कहना। (मुनि० ३)

विविधः (पुं०) [विवधो विगतो वा वध, हननं गतिर्वा यत्र]।
* जूआ-बैलों के कांधे पर रखा जाने वाला जूआ।
* मार्ग।
* बोझ।
* भार।

विवधिक (वि०) [विवध+ठन्] बोझ ढोने वाला, भारवाहक।
* फेरी वाला।

विवरं (नपुं०) [वि+वृ+अच्] * छिद्र, रन्ध्र, सुराग, बिल। (सुद० १/३७)
* दरार, खोखलापन। (जयो० १३/४३)
* एकान्त स्थान।
* विच्छेद।
* दोष, त्रुटि।
* घाव।

विवरणं (नपुं०) * प्रदर्शन, * अभिव्यंजन * स्पष्ट। * व्याख्यान करण। (जयो० ५/९५) * गणना, * निरूपण।

विवरनालिका (स्त्री०) बंसरी, बंसी, मुरली।

विवरप्रयोगः (पुं०) छेद-छिद्र। (समु० ६/७)

विवर्जनं (नपुं०) [वि+रज्+ल्युट्] छोड़ना, निकाल देना, परित्याग करना।

विवर्जित (भू०क०कृ०) [वि+रज्+क्त] * परित्यक्त, विसर्जित। (सम्य० ९३)
* छोड़ा गया।
* प्रदत्त, दिया गया।
* परिहृत, वञ्चित।

विवर्ण (वि०) [विगतः वर्णो यस्य] * निष्प्रभ, पाण्डु, फीका, भदरंगा।
* वर्ण रहित।
* अज्ञानी, मूढ, निरक्षर।

विवर्णः (पुं०) जाति बहिष्कृत।

विवर्णता (वि०) कान्तिहीनता। (वीरो० १९/२२)

विवर्णिका (स्त्री०) व्याख्या, भाष्य।

विवर्णिता (स्त्री०) व्याख्या, भाष्य। (जयो०वृ० ३/७७)

विवर्तः (पुं०) [वि+वृत्+घञ्] * आवर्त, परावर्तन, परिभ्रमण, घूमना।
* चक्कर लगाना, आगे पीछे होना।
* अवस्थन, अनेक प्रकार का। (जयो० १३/४१)
* बदलना, सुधारना।
* पर्याय। (जयो० २१/१३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवर्तनं (नपुं०) [वि+वृत्+ल्युट्] * परार्तन, परिभ्रमण, घूमना।
* चक्कर काटना, लौटना।

विवर्तवार्ता (स्त्री०) अवस्थान वार्ता, पथिकगतवार्ता। (जयो०१३/४१)

विवर्धनं (नपुं०) विस्तार, वृद्धि, विकास।
* अभ्युदय, उत्थान।

विवर्धित (भू०क०कृ०) [वि+वृध्+क्त] * बढ़ा हुआ, वृद्धिगत, विकासशील।
* प्रगत, प्रोन्नत, आगे बढ़ाया हुआ।
* संतुष्ट, तृप्त।

विवलित (वि०) मोड़ा गया, व्यामोडित। (जयो० १८/९५)

विवश (वि०) [वि+वश्+अच्] * लाचार, असहाय, आश्रयहीन।
* अनियन्त्रित, विषयाधीन। (जयो० २३/१६)

विवसन (वि०) [विगतं वसनं यस्य] वस्त्र रहित, निर्वस्त्र।

विवस्वत् (पुं०) [विशेषेण वस्ते आच्छादयति-वि+वस्+क्विप्+मतुप्] * दिनकर, सूर्य।
* मनु।
* मदार पादप। (जयो० २४/३४)

विवहः (पुं०) [वि+वह्+अच्] अग्निजिह्वा।

विवहनक्रिया (स्त्री०) विवाह क्रिया। (जयो० १४/७)

विवाकः (पुं०) [विशिष्टो वाको यस्य] न्यायधीश, निर्यायक पुरुष।

विवादः (पुं०) [वि+वद्+घञ्] * प्रतिपक्ष वचन, वार्तालाप।
* शास्त्रार्थ, परस्पर विचार विनिमय।
* कलह, संघर्ष।
* तर्क, चर्चा, वार्ता।
* आदेश, आज्ञा।
* विसँवाद। (जयो० १८/६१)

वि-वादः (पुं०) पक्षी कलरव, खगध्वनि। (जयो०वृ० १८/६१)

विवादकारिन् (वि०) विसंवाद युक्त।

विवादगत (वि०) संघर्ष को प्राप्त।

विवाद पदं (नपुं०) कलहस्थान।

विवादभावः (पुं०) संघर्ष भाव।

विवादमति (स्त्री०) निर्णायक बुद्धि।

विवादवस्तु (नपुं०) विचारणीय विषय।

विवादस्थानं (नपुं०) विचार-विमर्श का स्थान।

विवादिन् (वि०) [विवाद+इनि] कलह करने वाला, तर्कप्रिय, कलकारी।
* पक्ष प्रस्तुत करने वाला।

विवारः (पुं०) [वि+वृ+घञ्] मुंह। * प्रवेश द्वार।
* छिद्र।

विवासः (पुं०) [वि+वस्+णिच्+घञ्] * निष्कासन, देश निकाला।

विवासित (भू०क०कृ०) [वि+वस्+णिच्+क्त] * निर्वासित, निस्वासित, निकाला गया।
* सुगन्धित।

विवाहः (पुं०) [वि+वह्+घञ्] ब्याह, परिणय, शादी। (समु० ५/२०) (जयोव० ३/९०) (हित० १०) दर्शकोऽधिपतिरत्र गतया: सन्मनुष्यवसतरेलकाया:।
तेन सार्द्धमभवत्तु विवाह: प्रेमतत्त्वत्मनयो: समुदाह।।
त्रिवर्गश्रिय: आधारो, विवाहोऽथामुनोदित:।
विचारपूर्वकं कार्य:, कन्ययाऽन्य कुलोत्थया।। (हित० १०)

विवाहकर्मन् (नपुं०) परिणय क्रिया। (समु०५/२०)

विवाहकार्यः (पुं०) विवाह का कार्य।

विवाहगामिन् (वि०) परिणय के मार्ग पर चलने वाला।

विवाहपूजा (स्त्री०) वैवाहिक कार्य पद्धति। (जयो०२/३३)

विवाहयोग्यः (पुं०) परिणय योग्य।

विवाहलग्नः (पुं०) विवाह की शुभ बेला। (जयो०वृ० १०/५३)

विवाहवीक्षा (स्त्री०) वैवाहिक संस्कार।

विवाहसमयः (पुं०) वैवाहिक काल। (जयो०वृ० २/३३)

विवाहसम्बन्धः (पुं०) वैवाहिक संस्कार, वैवाहिक वीक्षा। (जयो० ७/८३)

विवाहित (भू०क०कृ०) परिणित, परिणय किया हुआ, ब्याह हुआ। (वीरो० ११/२९)

विवाह्यः (पुं०) [वि+वह्+ण्यत्] * जमाई, दूल्हा, कुंवर साब।

विविक्त (भू०क०कृ०) [वि+विच्+क्त] * वियुक्त, पृथक् किया गया।
* अकेला, एकाकी, विवृत्त, विलग्न।
* प्रभिन्न, विवेचन।
* पवित्र, निर्दोष।

विविक्तं (नपुं०) एकान्त स्थान।
* अकेलापन।

विविक्ता (स्त्री०) दुर्भगा, भाग्यहीन स्त्री, असहाय स्त्री।

विविग्न (वि०) [विशेषेण विग्न: वि+विज्+क्त] अत्यन्त, व्याकुल, क्षुब्ध।

विविध (वि०) [विभिन्ना विधा यस्य] ०नाना प्रकार का ०अनेक प्रकार का।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवीतः (पुं०) [विशिष्टं वीतं] चरगाह स्थान। बाड़ा घेरा।

विवुधः (पुं०) देवता (वीरो० १/२२) * बुद्धिहीन। (वीरो० १/२२)

विवृक्त (स्त्री०) [विवृक्त+टाप्] दुर्भगा स्त्री, पति के प्रेम से रहित स्त्री।

विवृत (वि०) कहा गया, बतलाया गया, प्रतिपादित किया गया। (जयो० १/) (जयो० ५/५३)

विवृत (भू०क०कृ०) [वि+वृ+क्त] * अभिव्यक्त, प्रदर्शित, प्रकटीकृत।
* निराच्छादन (जयो २४/३७)
* स्पष्ट, * उद्घोषित।
* व्याख्यायित, विस्तारित। (सम्य० १५४)

विवृति (स्त्री०) [वि०+वृ+क्तिन्] * विस्तार, ०फैलाव। ०रहित, अभाव। (सुद० १००)
* प्रदर्शन, प्रकटीकरण।
* अनावरण, व्यक्तिकरण।
* भाष्य, टीका, वृत्ति, व्याख्या।

विवृत (भू०क०कृ०) [वि+वृत्+क्त] मुड़कर आया हुआ, मुड़ा हुआ, घूमा हुआ। (जयो०वृ० १/२२) चक्कर काटा हुआ। भंवर, चक्कर।

विवृत्तिः (स्त्री०) चक्कर, परावर्तन, परिभ्रमण।

निवृतोक्त (वि०) जीवनोपयोगी कथन। (वीरो० ११/३)

विवृद्ध (भू०क०कृ०) [वि+वृध्+क्त] * बढ़ा हुआ, विकास को प्राप्त हुआ।
* तीव्र, विपुल, विशाल, प्रचुर।

विवृत्ति (स्त्री०) [वि+वृध्+क्तिन्] निकास, बढ़ना, वर्धना।
* समृद्धि।

विवेकः (पुं०) [वि+विक्+घञ्] * बोध, ज्ञान, बुद्धि, प्रज्ञा। (सम्य० ७५)
* हेयोपादेयज्ञान।
* विचार, गवेषणा, अनुशीलन। (जयो०वृ० १/३६)
* प्रबोध, वस्तु तत्त्व की निर्णायक। (सम्य० १२२)
* शक्ति, विशेष अभिव्यक्ति।

विवेककुल्यु (वि०) बुद्धिमान्। (सम्य० ९६)

विवेकगम्य (वि०) ज्ञानी आत्मा। (सम्य० १२२)

विवेकज्ञ (वि०) विचारज्ञ, प्रज्ञ अज्ञ, विज्ञ।

विवेकज्ञानं (नपुं०) उचित ज्ञान, अच्छा ज्ञान।

विवेकधामः (पुं०) ज्ञान स्थान। चैतन्यधाम। (सुद० १३३)

विवेकपदवी (स्त्री०) चिन्तन, विचार।

विवेकवान (वि०) बुद्धिमान्। (सुद० ४/२)

विवेकशाणा (स्त्री०) विवेक की कसौटी। (सुद० १०२)

विवेकशाली (वि०) विद्वान्, ज्ञानी। (जयो०वृ० ३/८४)

विवेकशील (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान्।

विवेकाञ्चिता (वि०) विवेक शालिनी, प्रौढ़ा स्त्री।

विवेकिन् (वि०) विवेकी, ज्ञानी, बुद्धिमान्। (सुद० १२१)

विवेकिना (स्त्री०) मनस्विना। (जयो० १३/६३)

विवेकिनी (स्त्री०) विवेकशीला स्त्री। बुद्धिमति। (समु० ८/१३)

विवेक्तृ (पुं०) न्यायकारी।

विवेचक (वि०) पृथक्करणशील, व्याख्याकार, निरूपक, भाष्यकार। (जयो० ६/३७)

विवेचनं (नपुं०) [वि+विच्+ल्युट्] * कथन, निरूपण, प्ररूपणा। (समु० ४/१)
* विचार, चिन्तन। (जयो० ५/१९)
* प्रतिपादन, व्याख्यान।

विवेचना (स्त्री०) प्ररूपणा, कथन। (सम्य. १२४)

विश् (अक०) प्रविष्ट होना, घुसना। (जयो० १४/२३) आना, पड़ाव डालना, डेरा लगाना।

विश् (अक०) लिख देना, उत्कीर्ण करना।
* सौंपना, देना, प्रदान करना।

विश् (पुं०) वैश्य, वणिक्। (सुद० ३/३)

विश् (स्त्री०) पुत्री, प्रजा, राष्ट्र।

विशं (नपुं०) कमल नाल।
* सद्म, दिव्यभवन। (जयो० ३/७१) (समु०५/२०) प्रासाद।
* वस्तु। (जयो० २/३०)

विशङ्कट (वि०) [वि+शक्+अटच्] * बड़ा, विशाल, वृहत्।
* दृढ़, मजबूत, प्रचंड, शक्तिशाली।

विशङ्का (स्त्री०) [विशिष्टा विगता वा शङ्का] आशंका, भय, डर।

विशजित (वि०) प्रजा को जीतने वाला।

विशद (वि०) [वि+शद्+अच्] निर्मल। * स्पष्ट।
* विशुद्ध, निर्मल, स्वच्छ। (वीरो० ४/३१)
* विशद, निर्मल, प्रख्यात। (जयो० ३/६)
* निर्दोष। (जयो० २/९)
* समुज्ज्वल। (जयो० १७/४९)
* उज्ज्वल, सुंदर, रमणीय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* शुद्ध। (जयो० ६/६६)

* स्पष्ट, प्रकट। * पवित्र।

* शान्त, निश्चिन्त।

विशद-कामना (स्त्री०) पवित्र कामना।

विशदगति (स्त्री०) शांत अवस्था।

विशदचित (वि०) निर्मल चित्त वाला। स्वच्छ हृदय वाला।

विशद प्रभा (स्त्री०) उज्ज्वल कीर्ति।

विशदप्रमाणं (नपुं०) स्पष्ट प्रमाण।

विशदभावना (स्त्री०) निर्दोष भावना। विशदा भावना। (जयो०वृ० २/९१)

विशदमतिः (स्त्री०) शुद्ध धी। (जयो० ६/६६) * निर्मल बुद्धि, सुमति।

विशदस्वभावः (पुं०) समुज्ज्वल रूप। (जयो० १७/४९)

विशदांशु (नपुं०) उज्ज्वल किरण, स्वच्छकिरण। (वीरो०४/३१)

विशदांशुक (वि०) श्वेत वस्त्रधारी, धवल परिधान युक्त। (जयो० २६/१३)

विशदांशुकः (पुं०) चन्द्र किरण। विशदा अंशुकाः किरणा यस्य स विशदांशुकः। (जयो० १०/८२)

* स्वच्छ वस्त्र। विशदान्यंशुकानि वस्त्राणि यस्य सः (जयो०वृ० १०/८२)

विशदाक्षता (वि०) पवित्रात्मत्व, उज्ज्वल अक्षत युक्त, प्रसन्न खण्ड युक्त। 'विशदाक्षतया पवित्रात्मत्वेन यातमन्तं स्वरूपं यस्याः सा पवित्रात्मरूपवती सुलोचना' (जयो०वृ० ३/८४) 'विशदं चाक्षतमखण्डं च यातस्य प्रकरणस्यान्तं निर्बहणं यस्याः सा प्रसन्नाखण्डाधिकारवती' (जयो०वृ० ३/८४) 'विशदमसङ्कीर्णमक्षतमत्रुटितं च या तस्य मार्गस्यान्तं यस्यां सा' (जयो०वृ० ३/८४) 'विशदैरुज्ज्वलैरक्षतैस्तण्डुलैर्यातं लब्ध प्रान्तं यस्याः सा' (जयो०वृ० ३/८४)

विशदाननं (नपुं०) स्वच्छ मुख। (जयो० ११/४४)

विशदीकृ (वि०) स्पष्ट करने वाला। (जयो० ८/९०)

विशयः (पुं०) [वि+शी+अच्] सन्देह, अनिश्चयता।

* शरण, सहारा।

विशरः (पुं०) [वि+शृ+अप्] * फाड़ना, चीरना।

* वध, हत्या, विनाश।

विशल्य (वि०) [विगतं शल्यं यस्मात्] सुरक्षित, चिन्तामुक्त।

विशल्या (स्त्री०) लक्ष्मण की मूर्च्छा अवस्था को ठीक करने वाली एक नारी। (दयो० ९३)

विशसनं (नपुं०) [वि+शस्+ल्युट्] * वध, हनन, घात, हत्या।

विशसनः (पुं०) कटार, असि, तलवार।

विशस्त (भू०क०कृ०) [वि+शस्+क्त] * घातित, हनित, विस्फारित, फाड़ा गया।

* उजड्ड, अशिष्ट।

* प्रशस्त, प्रख्यात, विश्रुत।

विशस्तृ (पुं०) चाण्डाल, वधक।

विशस्त्र (वि०) [विगतं शस्त्र यस्य] शस्त्रविहीन, अस्त्र रहित।

विशाखः (पुं०) [विशाखानक्षत्रे भवः-विशाखा+अण्] कार्तिकेय।

* भिक्षुक, आवेदक।

* तकुवा।

विशाख (वि०) शाखा विहीन, ठूंठ।

विशाखजः (पुं०) नारंगी तरु।

विशाखा (स्त्री०) [विशिष्टा शाखा प्रकारो यस्य] विशाखा नक्षत्र, नक्षत्रों के भेद में सोलहवां नक्षत्र। (समु० ६/१९)

विशाम्पति (पुं०) एक राजा, महाराज। (जयो० ३/१०५, वीरो० ८/६)

विशाम्वरः (पुं०) वैश्य, वणिक् श्रेष्ठ। (सुद० २/३३)

विशायः (पुं०) [वि+शी+घञ्] * पहरा देना, बारी बारी से शयन करना।

विशारणं (नपुं०) [वि+शृ+विच्+ल्युट्] * फाड़ना, विदीर्ण करना, नष्ट करना।

* खण्ड खण्ड करना।

विशारद (वि०) [विशाल+दा+क लस्य रः] चतुर, दक्ष, प्रवीण। विज्ञ, जानकार।

* साहसी।

* विद्वान्, बुद्धिमान्।

* प्रसिद्ध, ख्यात।

विशारदा (स्त्री०) बकुलवृक्ष, मौलसिरि तरु।

विशारदा (स्त्री०) विदुषी, प्रज्ञ-स्त्री। (वीरो० ४/१३)

* शरदागम रहित। (वीरो० ४/१३)

विशाल (वि०) [वि+शालच्] बड़ा, बहुत, लम्बा, अत्यधिक।

* प्रशस्त, व्यापक, विस्तीर्ण।

* उन्नत (जयो०वृ० १/१३) वृंहिण (जयो० १९/५०) (सुद० १/२८) समृद्ध, परिपूर्ण।

* प्रमुख, महान्, उत्तम। (सुद० १/२५)

विशालः (पुं०) * एक हरिण विशेष।

विशालतरु (पुं०) उन्नत वृक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशालदानं (नपुं०) परिपूर्ण दान।

विशालधनं (नपुं०) अत्यधिक वैभव।

विशालनन्दि (पुं०) राजगृहनगर के एक ब्राह्मण का पुत्र। (वीरो० ११/१२)

विशालभूति (पुं०) राजगृहनगर का एक ब्राह्मण। (वीरो० ११/१२)

विशालमति (स्त्री०) प्रशस्त बुद्धि।

विशालयोगः (पुं०) उत्तम संयोग।

विशालवक्षः (पुं०) विस्तीर्ण वक्षस्थल।

विशालहृदयः (पुं०) बृहत्मन (जयो० ७/५९) (जयो० ६/६०)

विशाला (स्त्री०) उज्जयिनी नगरी का एक नाम।

विशाला (वि०) शाला रहित। (जयो० ३/७८)

विशिख (वि०) [विगता शिखा यस्य] मुकुटरहित, बिना चोटी का। * अस्तित्व हीन। कूट रहित। * नग्न।
* शिखावर्जित। (जयो० ९/२५)

विशिखा (स्त्री०) [विशिख+टाप्] फावड़ा। * नकुवा।
* सुईया पिन।
* तीक्ष्ण बाण।
* राजमार्ग।
* नापित भार्या।

विशित (वि०) [वि+शो+क्त] * तीव्र, तीक्ष्ण। * प्रवीण, इष्ट।

विशित (वि०) देवालय, मंदिर।
* आवासस्थल, गृह, निवासस्थान।

विशिष्ट (भू०क०कृ०) [वि+शिष्+क्त] * विशेष, असाधारण, असामान्य। (जयो० १/)
* प्रशस्त। (सम्य० ८४) मनोरम, रमणीय।
* अतिशय, अधिक। (जयो० ५/५७)
* श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, प्रमुख, उत्कृष्ट, परम। (जयो०वृ० १/१२) विभा (जयो० १/१२) महान्, उन्नत, समीचीन।
* बढवारी। (समु० १/८)
* विशेष लक्षण युक्त, विलक्षण।

विशिष्टगीतः (पुं०) प्रशस्त गीत, मनोरम गीत।

विशिष्टजातिः (स्त्री०) उन्नत जाति।

विशिष्टज्योतिः (स्त्री०) पवित्र ज्योति।

विशिष्ट ज्ञानी (वि०) असामान्य ज्ञानी।

विशिष्ट तपः (पुं०) अतिशय तप।

विशिष्तालः (पुं०) परमशोभन ताल-विशिष्टतां लातीति।

विशिष्टदानं (नपुं०) सर्वोत्तम दान।

विशिष्टदाता (वि०) प्रमुख देने वाला।

विशिष्टधी (स्त्री०) प्रकृष्ट बुद्धि, महान बुद्धि।

विशिष्टपुण्यबन्धः (पुं०) प्रशस्त शुभ बन्ध। (सम्य० ८४)

विशिष्टप्रभा (स्त्री०) विशेष कान्ति।

विशिष्टभावः (पुं०) अतिशय भाव। (जयो० ६/५७)

विशिष्टमतिः (स्त्री०) उत्तम बुद्धि।

विशिष्टयोगः (पुं०) परम योग।

विशिष्टरत्नं (नपुं०) विलक्षण रत्न, उन्नत रत्न।

विशिष्ट शब्दं (नपुं०) पक्षी कलरव। (जयो०वृ० १३/३)

विशिष्टाद्वैतवादः (पुं०) रामानुज का एक सिद्धांत।

विशिष्टि (वि०) विशेषता। लोको निन्दतु पूजतादुत ततस्ते का विशिष्टः प्रभो? (मुनि० १४)

विशीर्ण (भू०क०कृ०) [वि+ॠ+क्त] * खण्डित, त्रुटित, बाधित।
* छिन्न-भिन्न हुआ, मुर्झाया हुआ।
* संकुचित, सिकुड़ा हुआ।

विशीर्णपर्णः (पुं०) नीम का वृक्ष।

विशीर्णमूर्ति (स्त्री०) खण्डित मूर्ति।

विशुद्ध (वि०) [वि+शुध्+क्त] * स्वच्छ, पवित्र, निर्मल, विमल। (जयो०वृ० ३/२४)
* निर्दोष, दोष विमुक्त।
* उन्नत, सर्वोत्तम, अतिशय।

विशुद्धकामना (स्त्री०) उन्नत कामना। * प्रबुद्ध विचार।

विशुद्धगात्रं (नपुं०) स्वच्छ शरीर।

विशुद्धभावना (स्त्री०) निर्दोष भावना।

विशुद्धभोजनं (नपुं०) सात्त्विक भोजन।

विशुद्धपार्ष्णी (स्त्री०) निर्दोष एड़ियां, चरणपृष्ठदेश। (जयो० ११/१७)

विशुद्धमतिः (स्त्री०) निर्मल बुद्धि। * प्रकर्ष मति।

विशुद्धयोगः (पुं०) सर्वोत्तम योग।

विशुद्धरत्नत्रय (वि०) विशुद्ध रत्नत्रय युक्त, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप रत्नत्रय से युक्त।

विशुद्धवृत्तं (नपुं०) विमल आचरण। 'विशुद्ध निर्दोषं विमलं च वृत्तमाचरणं यस्य' (जयो०वृ० ३/२४)

विशुद्धाचरणं (नपुं०) विमल आचरण, निर्दोष आचरण।

विशुद्धात्मन् (वि०) पवित्र आत्मावाला।

विशुद्धाधार (वि०) अतिशय आधार युक्त।

विशुद्धाश्रय (वि०) अच्छे आश्रय वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशुद्धाहारः (पुं०) सात्त्विक आहार, पवित्र भोजन।

विशुद्धि (स्त्री०) [वि+शुध्+क्तिन्] * पवित्रता, निर्मलता, निर्दोषता।
* विमलता, सात्त्विकता।
* पवित्रीकरण, निर्मलीकरण।
* परिष्कार। भैक्ष्ययापि विशुद्धये प्रतिवहेद् बुद्धिं भवादुन्मनाः' (मुनि० ३)

विशुद्धिगतं (वि०) पवित्रता को प्राप्त हुआ।

विशुद्धि देवी (स्त्री०) नाम विशेष (वीरो० १४/४)

विशुद्धिधर (वि०) निर्दोषता को धारण करने वाला।

विशुद्धिभावः (पुं०) निर्मलता से परिपूर्ण भाव।

विशुद्धिलब्धिः (स्त्री०) वैचारिक कोमलता, कर्मचेष्टा से विमुक्ति की उपलब्धि। 'चित्तेऽस्य विशुद्धिलब्धिः'

विशुद्धिविधिः (स्त्री०) क्षमापन। (जयो० १/९२) (सम्य० ४५) * निर्दोषता युक्त विधि।

विशूल (वि०) [विगत शूलं यस्य] त्रिशूल रहित, बर्छी रहित, भाला विहीन।

विशृंखल (वि०) [विगता शृंखला यस्य] अनियंत्रित, अप्रतिबद्ध, निरंकुश।
* बंधनों से मुक्त।
* लम्पट।

विशेष (वि०) [विगत शेषो यस्मात्] * विशिष्ट, अच्छा, उचित।

विशेषः (पुं०) * प्रभेद, भेद, अन्तर, प्रकार।
* जैन दर्शन में वस्तु विवेचन की एक पद्धति, जिसमें विशेष-भेद की प्रमुखता होती है। पर्याय विशेष।
* विविध उद्देश्य, नानाविध वस्तु।
* उत्तमता, श्रेष्ठता, प्रमुखता। (सुद० १/४२)
* उत्तम, पूज्य, प्रमुख, उत्कृष्ट।
* विशिष्ट चिह्न, पहचान। विशिष्यते विशिष्टिर्वा विशेषः (त०वा० ६/८)
* विवेचन, भेदीकरण।

विशेषक (वि०) [वि+शिष्+ण्वुल्] प्रभेदक, नाना विध, वस्तु विवेचक।

विशेषकं (नपुं०) तिलक, मस्तिष्क पर टीका, रेखांकन। (जयो० २२/८०)

विशेषाकायानुमतः (पुं०) तिलक के लिए स्वीकृत। 'विशेषकाय तिलकाय नामानुमतं मानितम्' (जयो० २२/८०)
* विशिष्ट शरीर सहित। (जयो०वृ० २२/८०)

विशेषणं (नपुं०) [वि+शिष्+ल्युट्] विवेचन, विभेदन, प्रभेदन, निरूपण।
* अन्तर, विशेषता।
* चिह्न, लक्षण।
* जाति, प्रकार।
* गुणवाचक शब्द-जो वस्तु की विशेषता को प्रकट करता है।

विशेषज्ञ (वि०) जानकार, विज्ञ।

विशेषतम् (अव्य०) [विशेष+तस्] विशेष रूप से-प्रकृष्टरूपेण।

विशेषदर्शनं (नपुं०) सांख्य, वैशेषिकदर्शन। (जयो० ६/२०) (जयो०वृ० २/२३)

विशेषय् (सक०) कहना, विवेचन करना। 'केचित्परे तु यतयेऽपि विशेषयन्ति' (वीरो० २२/२२)

विशेषरसः (पुं०) शृंगार रस। (जयो० १/७४)

विशेषाद्भनी (वि०) विशेष रूप से निर्मित। (जयो० २४/११८)

विशेषित (भू०क०कृ०) [वि+शिष्+णिच्+क्त] विलक्षण, परिभाषित।

विशेषोऽलंकारः (पुं०) विशेष अलंकार, विशेषताओं को विवेचित करने वाला अलंकार-
मतङ्गजानां गुरुगर्जितेन जातं प्रहृत्यष्यद्धयगर्जितेन।
अथो रथानामपि चीत्कृतेन छन्नः प्रणादः पटहस्य केन॥ (जयो० ८/२३)

विशेष्य (वि०) [वि+शिष्+ण्यत्] * विलक्षण होने योग्य, मुख्य, प्रमुख।
* उत्तम, श्रेष्ठ।

विशेष्यं (नपुं०) वह शब्द जिससे विशेषण द्वारा सीमित कर दिया गया हो।
* वह पदार्थ जो किसी दूसरे शब्द द्वारा परिभाषित कर दिया गया हो। 'विशेष्यं नाभिधा गच्छेत्क्षीणशक्तिर्विशेषणे' (काव्य० २)

विशोक (वि०) [विगतः शोको यस्य] शोक से रहित, हर्ष युक्त, प्रसन्न। (जयो० ५/६७)

विशोकः (पुं०) अशोक तरु।

विशोधनं (नपुं०) [वि+शुध्+ल्युट्] * शुद्ध करना, प्रक्षालन, प्रमार्जन। (जयो० १७/३९)
* दोष रहित, पवित्र।
* अन्वेषण। (जयो० २/४५)
* प्रायश्चित्त, परिशोधन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशोधिन् (वि०) [विशेषेण शोधिर्विशोधि:] प्रायश्चित्त वाला।

विशोधिनी (स्त्री०) नाशिनी, प्रक्षालिनी। (हस्त० ५७)

विशोध्य (वि०) [वि+क्षुध्+ण्यत्] पवित्र किये जाने योग्य, शुद्ध किये जाने योग्य।

विशोषणं (नपुं०) [वि+शुष्+ल्युट्] सुखाना, शुद्ध करना, प्रमार्जन करना।

विशोषय् (सक०) सुखाना, शुद्ध करना। (जयो० १२/२८)

विश्रणनं (नपुं०) [वि+श्रण्+ल्युट्] * प्रदान करना, समर्पण करना, सौंपना।

* उपहार, दान, भेंट।

विश्रब्ध (भू०क०कृ०) [वि+श्रम्भ्+क्त] * बन्द किया गया, सौंपा गया।

* विश्वस्त, निडर।

* निश्चल, सौम्य, शान्त।

* दृढ़ स्थिर।

* नम्र, विनीत।

विश्रब्धं (नपुं०) विश्वासपूर्वक, निर्भीकता के साथ।

विश्रम् (अक०) ठहरना, रुकना, विराम लेना। (जयो० २/१२३)

विश्रम: (पुं०) [वि+श्रम्+अप्] आराम, विश्रान्ति।

* विराम, विश्राम।

विश्रम्भ: (पुं०) [वि+श्रम्भ्+घञ्] * विश्वास, भरोसा।

* नम्रता, क्रीड़ा कलह, केलिकलह। 'नम्रतायामुत क्रीडाकलहे परायणाम् विश्रम्भ: केलिकहले विश्वासे प्रणये वधे' इति विश्वलोचन:' (जयो० १०/४)

* विराम, विश्रान्त।

* आराम, विश्राम।

* स्नेह युक्त।

* रहस्य।

* वध, हत्या, हनन।

विश्रम्भभाषणं (नपुं०) गुप्त वार्तालाप।

विश्रम्भ भूमि: (स्त्री०) विश्वास करने योग्य स्थान।

विश्रम्भस्थानं (नपुं०) विश्वस्त, विश्वसनीय व्यक्ति।

विश्रय: (पुं०) [वि+श्रि+अच्] * शरण, आश्रय, आधार भूतस्थल।

विश्रवस् (पुं०) पुलस्त्य के पुत्र का नाम, रावण के पिता।

विश्राणित (भू०क०कृ०) [वि+श्रण्+णिच्+क्त] समर्पित, प्रदत्त दिया गया।

विश्रान्त (भू०क०कृ०) [वि+श्रम्+क्त] * विश्राम, आराम (दयो० १८) * अवरोध, * गति विराम।

* बन्द किया गया, रोका गया।

* रुकावट। (जयो० १/११)

विश्रान्ति: (स्त्री०) [वि+श्रम्+क्तिन्] * आराम, विश्राम, विराम, रोक। (वीरो० ५/३४)

* क्रिया रहित। (जयो०वृ० १/९४)

विश्रान्तिगृहं (नपुं०) आराम गृह।

विश्रान्तिशून्य: (वि०) अविराम, गति युक्त। (जयो०वृ० २३/६१)

विश्राम: (पुं०) [वि+श्रम्+घञ्] क्रिया रहित। (जयो० १/९४)

* आराम, विराम, रुकना, ठहरना। (जयो०वृ० ७/४६)

* केलि, क्रीड़ा।

* शान्ति, सौम्यता, एकाग्रता, स्थिर होना, थकान दूर करना। (मुनि० ६)

विश्रामगृहं (नपुं०) आराम गृह।

विश्रामशैल: (पुं०) क्रीडापर्वत, केलिगिरि। (वीरो० २/११) प्राच्या: प्रतीचीं व्रजतोऽब्जपस्य विश्रामशैला इव भान्ति तस्य। (वीरो०२/११)

विश्राव: (पुं०) [वि+श्रु+घञ्] * बहना, टपकना, झरना।

* ख्याति, कीर्ति।

विश्रुत (भू०क०कृ०) [वि+श्रु+क्त] * प्रसिद्ध, प्रख्यात, यशस्वी, प्रतिष्ठित। (जयो० २१/६५)

* आकर्णित। (जयो० ६/६२)

* प्रसन्न, आनन्दित, हर्ष युक्त।

विश्रुतगुणं (नपुं०) उन्नत गुण। (सुद० ३/६)

विश्रुति: (स्त्री०) [वि+श्रु+क्तिन्] प्रसिद्ध, ख्याति, कीर्ति, यश, प्रतिष्ठा।

विशलथ (वि०) [विशेषण श्लथ:] शिथिल, ढीला, खुला हुआ।

* स्फूर्ति रहित।

* निष्प्रभ, कान्तिहीन।

विश्लिष्ट (भू०क०कृ०) [वि+श्लिष्+क्त] वियुक्त, पृथक्कृत, अलग हुआ।

विश्लेष: (पुं०) [वि+श्लिष्+घञ्] * अलगाव, वियोजन।

* वियोग, विछोह।

* अभाव, हानि, क्षति।

* छिद्र, दरार।

विश्लेषणं (नपुं०) भिन्न-भिन्न करना। (वीरो० १८/२२)

विश्लेषित (भू०क०कृ०) [वि+श्लिष्+णिच्+क्त] वियुक्त, पृथक्कृत, अलग किया हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विश्व (वि०) [विश्+व] * सम्पूर्ण, समग्र, * समस्त, पूर्ण, सारा।
* प्रत्येक, हरेक।

विश्वं (नपुं०) लोक, संसार, जगत्।
* लोकसमूह (जयो० ३/५४)
* षट्द्रव्य समूह-जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल का समूह विश्व है-'एवं तु षड्द्रव्यमयीय-मिष्टिर्यतः समुत्था स्वयमेव सृष्टिः' (वीरो० १९/३८)
* लोक (विश्वं सुदर्शनमयं विभूव (सुद० ८६)

विश्वंकरः (पुं०) अक्षि, आंख।

विश्वकद्रु (वि०) दुष्ट, नीच, अधम।

विश्वकर्मन् (पुं०) सूर्य।

विश्वकृत् (वि०) सब प्राणियों का सृष्टा।

विश्वकृत् (पुं०) ब्रह्मा, शिव, * आदीश्वर।

विश्वकेतु (पुं०) अनिरुद्ध।

विश्वगंधः (पुं०) प्याज, लोबान।

विश्वगंधा (स्त्री०) पृथ्वी, भू, धरा।

विश्वजनं (नपुं०) मानव जाति।

विश्वजनसौहृद (वि०) समस्त लौकिक जनों पर मैत्री। विश्वचासौ जन इति विश्वजनस्तस्य सौहृदं तस्मात् समस्तलौकिक-जनमैत्री भावादेव संभवति' (जयो०वृ० २/२१)

विश्वजनीन् (वि०) प्राणीमात्र के लिए उपयोगी।

विश्वजन्य (वि०) समस्त प्राणियों के लिए उपयोगी।

विश्वजयिन् (वि०) विश्व को जीतने वाले। (मुनि० ३)

विश्वजित् (पुं०) जितेन्द्रिय प्रभु।

विश्वतस् (अव्य०) [विश्व-तसील्] सब ओर, सर्वत्र, सब जगह, चारों ओर। (सुद० २/३२)

विश्वतत्त्वज्ञ (वि०) समस्त जगत् के तत्त्व ज्ञाता, विश्वभर के पदार्थ एक साथ, झलकने वाले। 'युगपद्विश्वतत्त्वज्ञ प्रध्वस्तान्तर्मलवन्त्वः' (हित०सं० ५५)

विश्वतोमुदा (वि०) सबको हर्ष देने वाली मुद्रा। विश्वतःसर्वेषा मुदं हर्षं राति-ददात्येवंभूता। (जयो० २/११४)

विश्वतोरोचनः (पुं०) श्रीधराचार्य विरचित विश्वलोचन कोष (जयो० १/१७)

विश्वदेवः (पुं०) जगत् पिता।

विश्वदृश्वा (वि०) समस्त जगत् को देखने वाले। (वीरो० २०/२१)

विश्वधारिणी (स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।

विश्वधारिन् (पुं०) शिव, आदीश्वर।

विश्वनाथः (पुं०) आदीश्वर, ऋषभदेव।
* शिव।

विश्वनन्दी (पुं०) राजगृह नगर के विश्वभूति ब्राह्मण एवं जैनी नामक ब्राह्मणी का पुत्र-भूत्वा परिव्राट् स गतो महेन्द्रस्वर्गं ततो राजगृहेऽपकेन्द्रः' जैन्या भवामि स्म च विश्वभूतेस्तुक्' विश्वनन्दी जगतीत्यपूते।। (वीरो० ११/११)

विश्वपथप्रदर्शकः (पुं०) दिनेश, सूर्य। 'विश्वस्स संसारस्य पथप्रदर्शको मार्गनिर्देशक एष दिनेश, (जयो०वृ० ४/६२)

विश्वपा (पुं०) सूर्य।
* चन्द्र।
* अग्नि।

विश्वपालनपर (वि०) विश्व के पालन में तत्पर। विश्वस्य पालने सम्भालने परस्तत्परो भवादृशो नरो यतः (जयो०वृ० ७/५८)

विश्वपावनी (स्त्री०) तुलसी का पौधा।

विश्वपितुः (पुं०) जगत् पिता, आदीश्वर जिन। 'विश्वपितुः जिन एव सविता' (जयो० ८/८९)

विश्वपूजिता (स्त्री०) तुलसी पादप।

विश्वप्रणयप्रदा (स्त्री०) सरस्वती। * वाग्देवी। विश्वस्य जगन्मात्रस्य यः खलु प्रणयः प्रेमभावस्तं प्रददातीति सरस्वती (जयो० १९/३४)

विश्वप्रबन्धक (वि०) विश्वनियामक। (वीरो० १९/४३)

विश्वप्सन् (पुं०) देव, अमर, सुर।
* सूर्य।
* चन्द्र।

विश्वभुज् (पुं०) इन्द्र।

विश्वभूति (पुं०) राजगृह नगर का एक ही ब्राह्मण। (वीरो० ११/११)

विश्वभूषणं (नपुं०) जगद्विभूषण। (जयो० १८/७६)

विश्वभेषजं (नपुं०) सोंठ, सुंठि, सूखा अदरक।

विश्वमात्मसात् (वि०) विश्व को अपने समान मानता हुआ। (सुद० ४/६)

विश्वमातृ (वि०) विश्व की माता। (सुद० ३/२)

विश्वमूर्ति (वि०) सर्वव्यापी।

विश्वमोहनः (वि०) संसार को वश में करने वाला मोहन। विश्वस्य संसारस्य वशीकरणमस्तीति। (जयो० २/६०)

विश्वम्भरः (पुं०) जगत्पाल। (वीरो० ५/२३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विश्वयोनिः (पुं०) ब्रह्मा।

विश्वराज् (पुं०) विश्वप्रभु।

विश्वरोचनः (पुं०) विश्वलोचनकोष। (जयो०वृ० १/१७)

विश्ववस्तुविद् (वि०) सकल पदार्थों का ज्ञायक। (सम्य० १४८)

विश्ववित्त (वि०) विश्वप्रसिद्ध। (जयो० ६/१०८) विश्वस्मिँल्लोके वित्तं प्रसिद्धम्। (जयो०वृ० ६/१०८)

विश्वविद् (वि०) जगत् ज्ञाता, सर्वज्ञ। (सम्य० ५८)

विश्वविदेकधामः (पुं०) विश्वविद का एकमात्र स्थान। (सम्य० १८)

विश्वविधानं (नपुं०) जगत् का विधान। (सम्य० १५२)

विश्वविपदः (पुं०) प्रजा की विपत्ति। (जयो० २/११३)

विश्वविश्वसन (वि०) सम्पूर्ण विश्वास योग्य। (जयो० २/५१)

विश्वविश्वासकारिन् (वि०) जगत् में विश्वास करने योग्य। (दयो० ७१)

विश्ववेद (वि०) विश्वज्ञाता। (दयो० २९)

विश्ववैरिन् (पुं०) प्राणिमात्र का शत्रु। 'विश्वस्य प्राणिवर्गस्य वैरिणः शत्रून्' (जयो० २/५४)

विश्वशिरोमणि (स्त्री०) जगत् तिलक। (जयो०वृ० १४/२९)

विश्वसनीय (सं०कृ०) [वि+श्वस्+अनीयर] विश्वास किये जाने योग्य।

विश्वसम्माननीय (वि०) भुवनमानिनी। (जयो०वृ० २२/७८)

विश्वसात् (वि०) विश्वहित की पवित्र भावना वाला। (जयो० २/९१) विश्वस्य सम्पूर्णसमाजस्य हितं स्यादिति विश्वसाद् विशदा भावना निर्दोष भावना तस्यां परः (जयो०वृ० २/९१)

विश्वसित् (वि०) विश्वास करने योग्य। (जयो० २/१४२)

विश्वसेनः (पुं०) त्रिलोकीनाथ विश्वंभर। (जयो० १०/९५)

विश्वस्रष्टुः (वि०) विश्वनिर्माता। (जयो० ८/३७)

विश्वस्त (भू०क०कृ०) [वि+श्वस्+क्त] विश्वास करने योग्य, विश्रब्ध, निडर, साहसी।

विश्वहितः (पुं०) जगत् कल्याण। (सुद० ११८)

विश्वात्मता (वि०) सर्वजनहितकारिता। (जयो० २७/२२)

विश्वंधायस् (पुं०) [विश्वं दधाति पालयति-विश्व+धा+णिच्+असुन्] देवता, अमर।

विश्वानरः (पुं०) सूर्य।

विश्वामित्रः (पुं०) एक ऋषि।

विश्वावसु (पुं०) एक गन्धर्व विशेष।

विश्वाश्रयिन (वि०) लोक के आधार भूत। (जयो० १८/५२)

विश्वासः (पुं०) [वि+श्वस्+घञ्] * निष्ठा, श्रद्धा, आस्था।
* प्रत्यय, विश्रम्भ। (जयो० २/१५१)
* भेद, रहस्य, गुप्त समाचार।
* धारणा, निश्चय, अस्था। 'विश्वासमसाद्य जिनोक्तवाचि वालेन तत्त्वार्थ मियादसाचि। (सम्य० ७२)

विश्वासगत (वि०) आस्थागत, श्रद्धा को प्राप्त हुआ।

विश्वासघातः (पुं०) धोखा देना, द्रोह रखना।

विश्वासघातिन् (वि०) द्रोही, धोखे देने वाला।

विश्वासजन्य (वि०) आस्थायोग्य।

विश्वासपात्रं (नपुं०) विश्वसनीय स्थान।

विश्वासभंगः (पुं०) विश्वासघात।

विश्वासभूमि (स्त्री०) आस्था स्थल।

विश्वास योग्य (पुं०) आस्था योग्य, श्रद्धा का आधार। (दयो० ६०)

विश्वासवाज्जनगणः (पुं०) विश्वास युक्त जनसमूह। (वीरो० २२/१२)

विश्वासशील (वि०) निष्ठावान्।

विश्वासस्थानं (नपुं०) विश्वसनीय स्थल।

विश्वोत्तमः (पुं०) लोक में उत्तम। (वीरो० ९/२५)

विश्वोपकर्त्री (वि०) जगत् निर्माता। (मुनि० ८)

विष् (सक०) घेरना, आवृत्त करना।
* फैलाना, विस्तार करना।
* वियुक्त करना, पृथक् करना।
* उड़ेलना।

विष् (स्त्री०) [विष्+क्विप्] मल, विष्ठा।
* फैलाना, विस्तार करना।

विषं (नपुं०) जहर, हलाहल। विषस्यागदं प्रतीकारो विषमेव भवतीति। (जयो० १४/३९) * जल, (जयो० १४/७९) (वीरो० २/२४) * लोबान, * रस गन्ध।

विषकुम्भः (पुं०) जहर से परिपूर्ण कलश।

विषकृमिः (स्त्री०) जहर का कीड़ा।

विषच्छल (वि०) कमलनालच्छलयुक्त। (जयो० १३/१०२)

विषज्वरः (पुं०) भैंसा।

विषज्वहरणं (नपुं०) विष के ज्वर का निवारण। (जयो०वृ० १९/७६)

विषण्ण (भू०क०कृ०) दुःखी, हताश, व्याकुल।

विषण्णचित्त (नपुं०) खिन्नचित्त, अनमन। (जयो०वृ० २/१४९)

विषदः (पुं०) * मेघ, बादल, * तूतिया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषता (वि०) विषरूपता। (जयो० २६/६)

विषदन्तकः (पुं०) सर्प, सांप।

विषदर्शनः (पुं०) चकोर पक्षी।

विषधरः (पुं०) सर्प, सांप, अहि, शेषनाग। (दयो० १०५)

विषमसंख्यत्व (वि०) विषम संख्या वाला। (जयो०वृ० १/१९)

विषमाशुगः (पुं०) पञ्चबाण, तीक्ष्ण वायु। (जयो० २२/२१)

विषमीकृत् (वि०) ऊबड़-खाबड़ किया हुआ। विषम नीचोच्चीकृत। (जयो० १३/२६)

विष निलयः (पुं०) सर्प बिल।

विषपुष्पं (नपुं०) नीलकमल।

विषसापः (पुं०) जलवेग। (वीरो० ४/)

विषप्रयोगः (पुं०) जहर देना।

विषभिवग्र

विषभक्षक (वि०) विष शान्त करने वाला। (जयो० १/३५)

विषभीत (वि०) विष से परिपूर्ण। (दयो० ४०)

विषशिषज् (पुं०) वैद्य, सर्प चिकित्सक। (समु० ७/१५)

विषम (वि०) [विगतो विरुद्धो वा सम] असमान, अनिमित।

* ऊबड़-खाबड़, असम।
* कठिन, अगम्य, दुर्गम।
* कुटिल (जयो० १२/८२)
* दृढ़, मजबूत, उत्कट।
* खतरनाक, भ्यानक।
* प्रतिकूल, विरुद्ध, विपरीत। (वीरो० १०/१९)

विषमं (नपुं०) दुर्गमस्थान, कठिनस्थल। ऊबड़-खाबड़-जगह। (सुद० ७८)

* विरुद्ध (जयो० वृ० १/३०, कामचेष्टा (जयो० १/३०)
* वैरी, शत्रु (जयो० ३/९६)
* एक अलंकार, जिसमें कार्य कारण के बीच में अनोखा सम्बंध दर्शाया जाता है।

विषमः (पुं०) विष्णु।

विषमत्व (वि०) वक्रत्व, टेढ़ापन। (जयो० २/५४)

विषमन्त्रः (पुं०) सपेरा, बाजीगर।

विषमय (वि०) विष से परिपूर्ण। (जयो०वृ० १४६)

विषलक्ष्मी (स्त्री०) दुर्भाग्य।

विषविभागः (पुं०) अभागा, सम्पत्ति में असमान वितरण।

विषयः (पुं०) पदार्थ, वस्तु, द्रव्य। * प्रयोजन (जयो० १/३)

* व्याख्येय प्रसंग, प्रस्तुतीकरण।
* इन्द्रिय विषय। (सुद० १२८)
* देश, राष्ट्र, प्रदेश, मण्डल, साम्राज्य।
* इन्द्रिय, आनन्द। * सम्बंध (सुद० ८५)

विषयइच्छा (स्त्री०) इन्द्रिय अभिलाषा। (जयो०वृ० २५/१७)

विषयतर्षपाशिन् (वि०) तृषारूप रज्जु बद्ध। (जयो० २/७१) विषयाणां तर्ष एव पाशोऽस्ति येषाम्।

विषयातिशयः (पुं०) [विषयस्य देशस्यातिशय] देश की विशेषता (जयो० १३/४४)

विषयाभिलाषा (स्त्री०) सांसारिक भोगों की आकांक्षा।

विषयाशयः (पुं०) विषयवाञ्छा। (जयो० २५/१५)

विषयासक्त (वि०) विषय लोलुपी, विलासी।

विषयासक्ति (स्त्री०) कामासक्ति।

विषरूपता (वि०) विष युक्ता। (जयो० २६/६)

विषलः (पुं०) जहर, हलाहल।

विषलक्ष्मी (स्त्री०) दुर्भाग्य।

विषसार (वि०) अप्रसन्नता (जयो० २६/६)

विषलः (पुं०) जहर, हलाहल।

विषविकारः (पुं०) विष की हानि। (जयो०वृ० २५/६१)

विषस्थ (वि०) दुर्गम स्थिति।

विषसंहरणार्थ (वि०) विष शान्ति हेतु। (जयो० १९/७१)

विषह्य (वि०) [वि+सह्+क्त] सहने करने योग्य।

* संभव, शम्य।

विषा (स्त्री०) [विष्+अच्+टाप्] गुण पाल राजा गुणश्री रानी की पुत्री। (दयो० ४३)

* विष्ठा, मल।
* प्रतिभा।
* ज्ञान, समझ।

विषाणः (पुं०) सींग। (जयो०१३/५१)

विषरणं (नपुं०) सींग।

विषाणडम्बरः (पुं०) सींगों का बोझ। (जयो० १३/५१) विषणानां डम्बरः समूहस्त।

विषाणिन् (वि०) [विषाण+इनि] सींगों वाला।

* दांतों वाला।

विषाणिन् (पुं०) हस्ति, हाथी।

* बाहर निकले हुए दांत वाला।
* सांड।

विषान्नभोजनं (नपुं०) विष युक्त भोजन। (दयो० १०३)

विषादः (पुं०) [वि+सद्+घञ्] दुःख, खेद, भिन्नता, व्याकुलता। (सम्य० १३५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* शोक, विष भक्षण परिणाम। (जयो०वृ० ३/१३)

* निराशा, हताशा, नैराश्य। विषादायैव तत्पश्चान्नश्यदेव प्रपश्यते। (वीरो० १०/३)

* थकान, म्लान।

* अवस्था।

* मन्दता, जड़ता, संज्ञाहीनता।

विषाददायक: (पुं०) कष्टदायक, निराशाजनक। (जयो०वृ० ८/८३)

विषादिन् (वि०) [विषाद+इनि] खिन्न, उद्विग्न।

* उदास, विषण्ण। (जयो० १/३५)

* विष खाने वाला। (सुद० ११२)

विषादिदुर्गा (स्त्री०) दुःख गम्या दुर्गा, रुद्ररूप दुर्गा। (जयो० ३/८७)

विषार: (पुं०) [विष+सृ+अच्] सर्प, सांप।

विषालु (वि०) [विष+आलुच्] विषैला, जहरीला।

विषु (अव्य०) [विष्+कु] * भिन्नतापूर्वक।

* समान, सदृश।

* दो सदृश भागों में।

विषुपं (नपुं०) [विषु+पा+क] विषुवत् रेखा।

विषुवं (नपुं०) मेषराशि या तुलाराशि में प्रवेश होना।

विषूचिका (स्त्री०) [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्] हैजा एक महामारी।

विषोपयोग: (पुं०) विष का उपयोग। (दयो० १२३)

विष्क् (सक०) मारना, हनन करना वध करना, मात करना।

* देखना, प्रत्यक्ष करना।

विष्कन्द: (पुं०) [वि+स्कन्द्+अच्] * तितर बितर होना, * जाना, गमन।

विष्कम्भ: (पुं०) [वि+स्कंभ्+अच्] * अवरोध, रुकावट, बाधा।

* सांकल, चटकनी।

* थूणी, स्तम्भ।

विष्कम्भ: (पुं०) अवान्तर कथा।

विष्कम्भक: (पुं०) नाटक की कथावस्तु का स्थापन।

* विस्तार, लम्बाई।

विष्कम्भित (वि०) [विष्कंभ्+इतच्] अवरुद्ध, बाधायुक्त।

विष्कंभिन् (पुं०) [विष्कंभ्+इनि] अर्गला, सांकल, चटखनी।

विष्किट: (पुं०) [वि+कृ+क] इधर-उधर बखेरना, फाड़ डालना।

* मुर्गा।

* पक्षी।

* तीतर।

विष्टप: (पुं०) [विष्+कपन्] लोक, संसार, भुवन। (जयो० १/६६)

विष्टपं (नपुं०) संसार, लोक, भुवन।

विष्टपहारिन् (वि०) लोक को हर्षित करने वाला।

विष्टब्ध (भू०क०कृ०) [वि+स्तंभ्+क्त] * आश्रित, आधारित, सहारा दिया गया।

* अवरुद्ध, बाधा युक्त।

* गतिहीन।

विष्टंभ: (पुं०) [वि+स्तंभ्+घञ्] अवरोध, रुकावट, बाधा, गतिरोध। (जयो० १९/७७)

* लकवा, ठहरना। उपद्रव।

विष्टंभनिवारण (नपुं०) उपद्रव निवारण।

विष्टर: (पुं०) [वि+स्तृ+अप्] आसन, तह, परत।

* विस्तार।

* वृक्ष।

विष्टरभाज् (वि०) आसन पर बैठा हुआ।

विस्टरश्रवस् (पुं०) विष्णु, कृष्ण।

विष्टि: (स्त्री०) [विष्+क्तिन्] व्याप्ति। (सम्य० ११०)

* कर्म, व्यवसाय।

* भाड़ा, मज़दूरी।

विष्ठलं (नपुं०) दूरवर्ती स्थल, दूरी वाला स्थान।

विष्ठा (स्त्री०) [वि+स्था+क+टाप्] * मल, पाखाना, लीद। (मुनि० १३)

विष्णु: (पुं०) विष्णु नाम विशेष। (दयो० ३१)

* अग्नि।

* पुण्यात्मा।

विष्णुक्रम: (पुं०) विष्णु के पैर।

विष्णुगुप्त: (पुं०) चाणक्य।

विष्णुचन्द्र: (पुं०) एक राजा का नाम। (वीरो० १५/४९)

विष्णुतैलं (नपुं०) एक औषधि विशेष।

विष्णुदैवत्या (स्त्री०) चान्द्रमास की एकादशी।

विष्णुपदं (नपुं०) आकाश, अन्तरिक्ष।

विष्णुपदी (स्त्री०) गंगा।

विष्णुपुराणं (नपुं०) अठारह पुराणों में एक पुराण। (दयो०३१)

विष्णुरथ: (पुं०) गरुड।

विष्णुवर्धन: (पुं०) एक राजा। (वीरो० १५/४६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विष्णुवल्लभा (स्त्री०) लक्ष्मी।
विष्णुवाहनः (पुं०) गरुड पक्षी।
विष्पन्दः (पुं०) [वि+स्पन्द+घञ्] * धड़कन, स्पन्दन, कंपन।
विष्फारः (पुं०) [वि+स्फुर+णिच्] धनुष की टंकार, कंपन।
विष्य (वि०) [विशेण वध्य] विष देकर मारे जाने योग्य।
विष्यन्दः (पुं०) [वि+ष्यन्द्+घञ्] बहना, रिसना, झरना, टपकना, चूना।
विष्व (वि०) पीड़ादायक, कष्टजन्य।
* उत्पातकारी, हारिकारक।
विष्वक् (वि०) सर्वत्र। (वीरो० २१/१५)
विष्वग्भू (पुं०) राजा। (वीरो० २२/१४)
विष्वच् (वि०) [विषुं अञ्चति-विष्+अच्+क्विन्] सर्वव्यापक, पूर्ण व्याप्त।
* भिन्न-भिन्न, पृथक्-पृथक्।
विष्वणनं (नपुं०) [वि+स्वन्+ल्युट्] भोजन करना, आहार लेना।
विष्वद्रयच् (स्त्री०) सर्वत्र, सर्वव्यापक।
विस् (सक०) डालना, फेंकना, भेजना।
विसंयुक्त (भू०क०कृ०) [वि+सम्+युज्+क्त] पृथक् पृथक् किया हुआ, वियुक्त किया हुआ।
विसंयोगः (पुं०) [वि+सम्+युज्+घञ्] बिछोह, वियोग, अलग अलग होना।
विसंवादः (पुं०) [वि+सम्+वद्+घञ्] * धोखा, छल, विवाद। (जयो०वृ० २/१८७)
* निराशा, असंगति, असंबद्धता।
* असमञ्जस। (जयो० १२/१८)
* असहमति।
* वचनविरोध।
विसंवादिन् (वि०) [विसंवाद+इनि] * असहमति व्यक्त करने वाला, विवाद करने वाला।
* असंगत, विरोधात्मक।
* धूर्तता, जालसाजी।
* असहमत, धोखा देने वाला।
विसंष्ठुल (वि०) [वि+सम्+स्था+उलच्] अस्थिर, विक्षुब्ध।
* असम।
विसंकट (वि०) [विशिष्टः संकटो यस्मात्] भयानक, डरावना।
विसंकटः (पुं०) सिंह।
* इंगुदी वृक्ष।

विसंगत (वि०) [वि+सम्+गम्+क्त] अयोग्य, असम्बद्ध, बेमेल।
विसंधिः (स्त्री०) [विरुद्धः सन्धि] सन्धि अभाव, विग्रह युक्त।
विसरः (पुं०) [वि+सृ+अप्] * जाना, फैलाना, विस्तार करना। (जयो० २३/६७)
* भीड़, समुच्चय, समुदाय।
* ढेर, राशि।
विसर्गः (पुं०) [वि+सृज्+घञ्] * खोटा धंधा। (सुद० १/२३)
* उत्सर्जन, परित्याग, विसर्जन। (जयो० ८/६७)
* गिराना, उड़ेलना, फेंकना।
* अन्तिमावस्था। (जयो० २६/१)
* भेंट देना, दान, उपहार।
* जुदाई, बिछोह, वियोग।
* प्रकाश, ज्योति, बिन्दु, निर्दिष्ट। (जयो० ३/४९)
* लिखने में एक प्रतीक, जो स्पष्ट रूप से महाप्राण है तथा दो बिन्दु (:) लगाकर प्रकट किया जाता है। (जयो०वृ० ८/४९)
विसर्गपरिणामः (पुं०) लोकोत्तरवृत्ति। (जयो० ८/५५)
विसर्गलोपः (पुं०) त्याग लक्षण। (जयो० १९/३५)
विसर्जनं (नपुं०) [वि+सृज्+ल्युट्] * परित्याग, छोड़ना, भेजना। (वीरो० १५/५०) (सुद० १०३)
* विदा करना, प्रेषण करना। (सुद० ७१)
* भेंट, दान, उपहार, प्राभृत।
* उद्गार, उड़ेलना।
* पलायन। (जयो० ७/२३)
विसर्जनीय (वि०) [वि+सृज+अनीयर्] परित्यक्त किये जाने योग्य, प्रेषण करने योग्य, उपहार योग्य।
* विसर्ग युक्तता।
विसर्जित (भू०क०कृ०) [वि+सृज्+णिच्+क्त] * उद्गीर्ण, परित्यक्त, त्यागा गया।
* प्रदत्त, दिया गया।
* प्रेषित, भेजा गया।
विसर्पः (पुं०) [वि+सृप+घञ्] * रेंगना, सरकना।
* फैलाव, संचार, प्रवाह।
विसर्पणं (नपुं०) [वि+सृप्+ल्युट्] * रेंगना, सरकना, चलना।
* प्रसारण, फैलाव, विस्तारण।
विसस्थितः (पुं०) कमलदलान्त। (जयो० २५/३७)
विसामकरणं (नपुं०) सामनीति का प्रयोग। (जयो० ७/८०)
विसारः (पुं०) [वि+सृ+घञ्] * प्रसारण, फैलाना, बिछाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* रेंगना, सरकना।
* मछली, मीन। (जयो० ३/३१)

विसारसन्तति (स्त्री०) मीन संतान। (जयो० ३/३१)

विसारिन् (वि०) [वि+सृ+णिनि] * प्रसार करने वाला, फैलाने वाला।
* रेंगने वाला, सरकने वाला।

विसिनी (स्त्री०) कमलिनी । (दयो०२/७)

विसूचिका (स्त्री०) [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्] हैजा।

विसूरणं (नपुं०) [वि+सूर्+ल्युट्] दुःख, शोक।

विसूरितं (नपुं०) पश्चात्ताप, दुःख शोक।

विसूरिता (स्त्री०) ज्वर, बुखार।

विसृज् (सक०) छोड़ना, त्यागना, विसर्जन करना। (सुद०७०)

विसृत (भू०क०कृ०) [वि+सृ+क्त] * फैलाया हुआ, प्रसारित किया हुआ।
* विस्तारित, कथित।

विसृमर (वि०) [वि+सृ+क्वरप्] रेंगने वाला, सरकने वाला, व्याप्त होने वाला। चलने वाला।

विसृष्ट (भू०क०कृ०) [वि+सृज्+क्त] उद्गीर्ण, उगला हुआ।
* उत्पन्न, निःसृत।
* टपकाया हुआ, झराया हुआ।
* फेंका गया, बाहर किया गया।
* परित्यक्त, उन्मुक्त।

विस्टरतवरः (पुं०) सिंहासन। (दयो० १०६)

विस्तरः (पुं०) [वि+स्तृ+अप्] * विस्तार, फैलाव, प्रसार।
* वैपुल्य, विपुलता। (जयो०वृ० ६/१०२)
* विस्तरा, आसन।
* वितान। (जयो०वृ० १/५०)
* विस्तर, बिछौना (दयो० ८९)
* बहुतायत, परिमाण, समुच्चय।

विस्तरिणी (पुं०) बिछौना। (सुद० ८२)

विस्तारः (पुं०) [वि+स्तृ+घञ्] * प्रसारण, फैलाव, विकास।
* विपुलता, विशालता। (सुद० १२४)
* आयाम, चौड़ाई।
* परिणाह। (जयो०वृ० १७/५३) * परिणाम।
* विवरण, ब्यौरा, विरचेन। * कयास
* झाड़ी।

विस्तारिणी (स्त्री०) सारिणी, पंक्ति। (जयो०वृ० ३/४१) रेखा। सारिणी विस्तारिणी चन्द्रलेखेव भाति।
* उत्तरोत्तर विस्तरण शीला (वीरो० २/२०)

विस्तीर्ण (भू०क०कृ०) [वि+स्तृ+क्त] * विशाल, व्यापक, बृहद्, बड़ा।
* चौड़ा, फैला हुआ।
* सघन।
* बिछाया गया, फैलाया गया।
* विस्तार किया गया।

विस्तीर्ण जलप्रपातः (पुं०) फैला हुआ जल स्रोत।

विस्तीर्ण ज्योति (स्त्री०) व्यापक ज्योति।

विस्तीर्णपर्णं (नपुं०) जड़, मानक।

विस्तीर्णपत्रं (नपुं०) सघन पत्र।

विस्तीर्णमाला (स्त्री०) बड़ी माला।

विस्तीर्ण सरिता (स्त्री०) व्यापक क्षेत्र वाली नदी।

विस्तीर्ण स्थानं (नपुं०) चौड़ा स्थान।

विस्तीर्णारण्यं (नपुं०) सघन वन क्षेत्र।

विस्तृत (भू०क०कृ०) [वि+स्तृ+क्त] * सुपरिणाह, व्यापक। (जयो० २२/६०)
* व्यापन्न। (जयो०वृ० ३/८४)
* चौड़ा।
* प्रसारित, फैलाया गया।
* विपुल, सघन, अधिक।

विस्तृत चरितं (नपुं०) व्यापक चरित्र। 'विस्तृतं सुपरिणाहं चरितं यस्य' (जयो०वृ० २२/६०)

विस्तृतशृंखला (स्त्री०) सघन माला।

विस्तृतशाखा (स्त्री०) फैली हुई शाखाएं।

विस्तृतिः (स्त्री०) [वि+स्तृ+क्तिन्] * विस्तार, फैलाव।
* चौड़ाई, फासला।
* विशालता।
* व्यापकता।

विस्पष्ट (वि०) [विशेषेण स्पष्ट] * सुबोध, सरल, सीधा।
* स्पष्ट, व्यक्त, प्रत्यक्ष।

विस्फारः (पुं०) [वि+स्फुट्+घञ्] * कम्पन, धड़कन।
* हलन चलन।
* धनुष की टंकार।

विस्फारित (भू०क०कृ०) [विस्फार+इतच्] * प्रकम्पमान, चलायमान।
* विस्तृत किया हुआ, फैलाया हुआ।
* प्रकटित, प्रदर्शित।
* टंकार युक्त, ध्वनित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विस्फारिन् (वि०) प्रलम्बमान, लटका हुआ, फैलाया हुआ, (वीरो० २/३) विस्तृत हुआ।

विस्फालित (वि०) फैलाया हुआ। (वीरो० २१/६)

विस्फुर् (अक०) चमकना, प्रकाशित होना। (सुद० ८१)

विस्फुलिंगः (पुं०) [वि+स्फुर्+डु] * चिनगारी, ज्योति तरंग।
* विष विशेष।

विस्फूर्जथः (पुं०) [वि+स्फूर्ज+अथुच्] दहाड़ना, गरजना, कड़कना।
* आन्दोलित होना, हिलना।
* लहरों का उठना।

विस्फूर्जितं (नपुं०) दहाड़, चीत्कार, चिल्लाहट।
* फल, परिणाम।

विस्फूर्तिमान् (वि०) ०चहल-पहल, ०आन्दोलित, ०प्रकंपित। (जयो० १८/२२)

विस्फोटः (पुं०) [वि+स्फुट्+घञ्] * फोड़ा, अर्बुद, रसौली।
* चेचक, शीतला।

विस्फोटव (पुं०) चेचक, शीतला रोग। (जयो०वृ० १८/१९)

विस्फोटकनामरोगः (पुं०) चेचक। * शीतला रोग।

विस्फोटा (स्त्री०) घाव, फोड़ा, अर्बुद, रसौली।

विस्मयः (पुं०) [वि+स्मि+अच्] * आश्चर्य, अचम्भा, अचरज। (जयो०१२/८५)
* अद्भुत। (जयो०वृ० २०/८९) सुरतानुसारिसमयैर्वा मानवविस्मयायाऽमी' (जयो० ६/९)
* अभिमान, अहंकार, घमण्ड। (समु० ६/४३) नभोगत्तवातिगतश्च-विस्मयः
* अनिश्चय, संदेह।

विस्मयंगम (वि०) [विस्मयं गच्छति-विस्मय+गम्+खश्+मुम्]

विस्मयकर/विस्मयकरी (वि०) आश्चर्यजनक। अद्भुत (जयो०वृ० २०/८९) आश्चर्य को उत्पन्न करने वाली। (जयो० २२/१५७)

विस्मयोत्पादक (वि०) आश्चर्यकर, विस्मयकर। (जयो० ८/७३)
* अदभुत कार्यकारी।

विस्मरणं (नपुं०) [वि+स्मृ+ल्युट्] विस्मृति, भूल जाना, याद न रहना।

विस्मापनं (वि०) [वि+स्मि+णिच्+ल्युट्] आश्चर्य उत्पन्न करना, विस्मय होना।

विस्मापनः (पुं०) कामदेव।
* छल, धोखा। विस्मापनो हरिश्चन्द्रपुरे वा कुहने स्मरः 'इत्यभिधानात्' (जयो० ११/६२)

विस्मित (भू०क०कृ०) [वि+स्मि+क्ति] * अदभुत, चकित, आश्चर्यान्वित, आश्चर्यचकित। (जयो०वृ० १५२५) (जयो० २०/८२)
* भौचक्का, हक्काबक्का।
* कार्य के प्रति विपरीतता।

विस्मितमित (वि०) ग्लानि युक्त। (मुनि० १३)

विस्मृ (सक०) भूलना, स्मरण नहीं रहना। (सुद० ९९)

विस्मृत (भू०क०कृ०) [वि+स्मृ+क्त] * भूला हुआ, स्मरणविहीन हुआ।

विस्मृतिः (स्त्री०) [वि+स्मृ+क्तिन्] अस्मरण, भूलना, याद न रहना।

विस्मेर (वि०) [वि+स्मि+रन्] * विस्मय युक्त, आश्चर्य चकित।
* भौचक्का, हड़बड़ाया हुआ।

विस्रंसः (पुं०) क्षत होना, गिरना। लुड़कना, पतित होना।
* शैथिल्य, कमजोरी, निर्बलता।

विस्रंसन (वि०) [वि+स्रंस्+ल्युट्] * पतन, बहना, टपकना।
* खोलना, ढीला करना।
* रेचक, विरेचन।

विस्रब्ध (वि०) क्षत, क्षय, घात।

विस्रसा (स्त्री०) [वि+स्रंस्+क+टाप्] * क्षय, गिरना, अधःपतन।
* निर्बलता, जर्जरता।

विस्रस्त (भू०क०कृ०) [वि+स्रंस्+क्त] ढीला किया हुआ।
* दुर्बल, बलहीन।

विस्रवः (पुं०) [वि+स्रु+अप्] बहना, टपकना, रिसना, चूना।

विस्रावणं (नपुं०) [वि+स्रु+णिच्+ल्युट्] रक्त बहना, रिसना।

विस्रुतिः (स्त्री०) [वि+स्रु+क्तिन्] रिसना, गिरना, झरना, टपकना।

विस्वर (वि०) [विरुद्धः विगतो ता वरो यस्य] स्वर विहीन, बेसुरा।

विहगः (पुं०) [विहायसा गच्छति-गम्+ड] * पक्षी।
* बादल।
* बाण।
* सूर्य।
* चन्द्र।
* नक्षत्र।

विहङ्गः (पुं०) [विहायसा गच्छति-गम्+खच्] * पक्षी।
* बादल।
* बाण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* सूर्य।
* चन्द्र। (जयो० १५/२०)

विहङ्गमः (पुं०) पक्षी।

विहङ्गरात (पुं०) पक्षी राज, गृद्ध, गरुड़।

विहङ्गेन्द्रः (पुं०) पक्षी-गरुड़ पक्षी।

विहत (भू०क०कृ०) [वि+हृ+क्त] पूर्ण आहत, घायल।
* बध युक्त।
* चोट ग्रस्त।
* अवरुद्ध, विरोध किया गया।

विहतिः (स्त्री०) [वि+हन्+क्तिच्] सखा, साथी, मित्र।

विहननं (नपुं०) [वि+हन्+ल्युट्] * हनन्, ०घात, * क्षति, ०हानि।
* हत्या, वध।
* अवरोध, रुकावट, अड़चन।

विहरः (पुं०) [वि+हृ+अप्] * अपहरण करना, छीनना, हटाना।
* वियोग, बिछोह।

विहरणं (नपुं०) अपहरण करना।
* टहलना, घूमना।

विहरन्त [वि+ह्य+शत्] विचरण करता हुआ।
* अपहरण करता हुआ। (विहरत् (जयो० ९/६८) विहरन्त। (सुद० २/१८)

विहरन्ती (वि+हृ+शतृ+ङीप्) विचरण करती हुई। (सुद०१३३)

विहरन्तु (विचरण करें (सुद० ७६)

विहर्तृ (पुं०) [वि+हृ+तृच] भ्रमणशील, लुटेरा।

विहर्षः (पुं०) [विशिष्टो हर्षः] उल्लास, प्रसन्नता।

विहसमं (नपुं०) [वि+हस्+ल्युट्] मुस्कान, मंद हंसी।

विहस्त (वि०) [विगतः हस्तो यस्य] हस्तरहित।
* व्याकुल, पराभूत, शक्तिहीन।
* छाया रहित। अशक्त, अक्षम।

विहा (अव्य०) स्वर्ग।

विहापित (भू०क०कृ०) [वि+हा+णिच्+क्त-पुकागमः] * परित्यक्त कराया गया, छुड़ाया गया।

विहायस् (नपुं०/पुं०) [वि+ह्य+असुन्] आकाश, अंतरिक्ष, मेघ। (सुद० २/१८)
* पक्षी।

विहायसा (वि०) गमनशीला। (जयो०२४/४) * आकाशीय।

विहायसदनं (नपुं०) आकाशगृह।

विहारः (पुं०) [वि+हृ+घञ्] गमन, पर्यटन। (जयो० १/५८)
* भ्रमण, परिभ्रमण, सैर करना।
* गमन। (सुद० ८४)
* क्रीड़ा, खेल, मनोविनोद, मनोरञ्जन, आमोद-प्रमोद।
* वाटिका, आरामगृह, उद्यान, उपवन।
* आश्रम।

विहारिन् (वि०) गमनशील। (जयो० ९/२५)
* मनोविनोदी, मनोरंजन युक्त।

विहित (भू०क०कृ०) [वि+धा+क्त] प्रस्तुत, प्रकाशित। (जयो०४/१६)
* अनुष्ठित, कृत, बनाया हुआ।
* निर्मित, समादिष्ट, आदिष्ट।
* संचरित, रक्खा हुआ।
* सुसज्जित।
* वितरित।

विहितिः (स्त्री०) अनुष्ठान, क्रिया, कार्य।
* व्यवस्था।

विहीन (भू०क०कृ०) [वि+हा+क्त] * रहित, अभाव, परित्यक्त, त्यागा गया।
* शून्य, वञ्चित।
* अधम, निम्न, नीचा। (सम्य० १५३)

विहीनगेह (वि०) घर रहित।

विहीनजाति (वि०) हीन जाति वाला।

विहीनवादी (वि०) यथार्थवादिता रहित।

भो गोमयादाविह वृश्चिकादि-
शिवच्छक्ति रायाति विभो अनादि।
जनोऽप्युपादान विहीनवादी,
वह्निं च पश्यन्नरणे प्रमादी।। (जयो० २६/९४)

विहीनशक्ति (वि०) शक्तिशून्य, बल रहित।

विहृत (भू०क०कृ०) [वि+हृ+क्त] खेला हुआ, खिलाया हुआ।

विहृतिः (स्त्री०) [वि+हृ+क्तिन्] हटाना, दूर रहना।
* क्रीड़ा, मनोविनोद।
* विहार।
* प्रसार।

विहेठक (वि०) [वि+हेठ्+ण्वुल्] क्षति पहुंचाने वाला।

विहेठनं (नपुं०) [वि+हेठ्+ल्युट्] * क्षति पहुंचाना, घात करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* पीसना, रगड़ना, मसलना।
* कष्ट देना, पीड़ा, दुःख।

विह्वल (वि०) [वि+ह्वल्+अच्] विक्षुब्ध, अशान्त, व्याकुल, घबराया हुआ।
* डरा हुआ, विक्लव। (जयो०वृ० १३/६९)
* कष्टग्रस्त, दुःखी।
* विषादपूर्ण।
* पिघला हुआ।

वी (सक०) जाना, पहुंचना।
* लाना।
* उपभोग करना, प्राप्त करना।
* जन्म लेना।

वी (पुं०) पक्षी, विहग। (वीरो० २/१४) (जयो० ३/११३)

वीकः (पुं०) पक्षी, विहग।
* वायु, पवन।
* मन।

वीकासजुष (वि०) विकासोन्मुखी। (वीरो० ९/४२)

वीक्षं (नपुं०) [वि+ईक्ष्+अच्] आश्चर्य, अचम्भा, अद्भुत।

वीक्षणं (नपुं०) [वि+ईक्ष्+ल्युट्] अवलोकन। (जयो० ९/६८) देखना, निहारना, दृष्टि डालना।

वीक्षमाण (वि०) दर्शक, देखने वाला। (जयो० ३/५५)

वीक्षा (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, देखना।

वीक्षाकारिणी (स्त्री०) प्रतिष्ठादायिनी (जयो०वृ० २३/४)

वीक्षितं (नपुं०) [वी+ईक्ष्+क्त] दृष्टि, झलक। अवलोकित। (जयो० ९/६९)

वीक्ष्य (वि०) [वि+ईक्ष्+ण्यत्] देखे जाने योग्य, दृश्य।
* दृष्टिगोचर।

वीक्ष्यः (पुं०) अभिनेता, नायक, नर्तक।
* पात्र, नट।

वीक्ष्यं (नपुं०) दृश्यमान पदार्थ।
* आश्चर्य, अचम्भा।

वीङ्खा (स्त्री०) [वि+इङ्ख्+अ+टाप्] * प्रगति, गति, गमन।

वीचारः (पुं०) अर्थ, व्यञ्जन और योग परिवर्तन।

वीचिः (स्त्री०) [व+ईचि] तरंग, लहर।
* सुख, अवकाश-अवकाश सुखे वीचिः इति वि। (जयो०वृ० १५/६)
* असंगति, विचारशून्यता, आनंद, प्रसन्नता।
* विश्राम, अवकाश।
* प्रकाश किरण।

वीचिचक्रं (नपुं०) तरंग घेरा। (जयो० १६/२१)

वीजन (नपुं०) [वीज+ल्युट्] गुल्ली, गिल्ली। बीज, पंखा, तालवृन्त, वायुसम्पतकर (जयो० २२/४९) एकान्विता वीजनमेवकर्तुम् (वीरो० ५/३९)

वीजय् (सक०) हिलाना। (जयो० ७/१०७)

वीटिः (स्त्री०) पान की बेल, पान लगाना।
* बंधन, गांठ, ग्रन्थि।

वीटिका (स्त्री०) नाश। (जयो० २०/४०)

वीणा (स्त्री०) [वेति वृद्धिमात्रामपगच्छति] विपञ्ची (जयो०वृ० ६/७) सारंगी, वीणा, एक वाद्य विशेष।

वीणादण्डः (पुं०) वीणा की गर्दन। (जयो० १२/७७) कोलम्ब। वीणादण्डस्तु कोलम्बः इत्यमरः (जयो० १२/७७) (जयो० १०/२०)

वीणावादकः (पुं०) वीणा बजाने वाला।

वीणावती (स्त्री०) एक अप्सरा। (जयो० २२/६७)

वीत (भू०क०कृ०) [वि+इ+क्त] बीत गया, चला गया।
* अन्तर्हित, तिरोहित।
* अतीत, पूर्वगत, तिरोहित।
* उन्मुक्त, छोड़ा गया।

वीतभय (वि०) शोक रहित। (मुनि० ३४)

वीतराग (वि०) राग रहित, * अनुराग विहीन। (सम्य० १४०)

वीतरागकथा (स्त्री०) वस्तु स्वरूप की कथा।
* वीतराग प्रभु के गुणों का कथन।

वीतरागचरितं (नपुं०) वीतरागी का कथानक।

वीतरागवृत्तिः (स्त्री०) वीतराग की प्रवृत्ति।
* पक्षियों का कलरव-विभि, पक्षिभिरितस्य सम्प्राप्तस्य रागस्य सुस्वरोच्चारणस्य वृत्ति सुस्वरोच्चारः। (जयो०वृ० १८/५३)

वीतरागस्तवं (नपुं०) वीत राग प्रभु का गुणगान। (भक्ति०२५)

वीतमय (वि०) निभ्रय। (वीरो० १८/६)

वीतंसः (पुं०) [विशेषेण बहिरेव तस्यते भूष्यते-वि+तंस्+घञ्]
* पींजरा, जाल, कटघरा।
* चिड़ियाघर।

वीतहेतु (स्त्री०) विधिमुख से जो साध्य को सिद्ध किया जाना वह सांख्यमानुसार वीतहेतु है।

वीतिः (स्त्री०) गति, चाल, गमन।
* उपज, पैदावार।
* प्रकाश, कान्ति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीथिः (स्त्री०) मार्ग, पथ, रास्ता।
* पंक्ति, कतार।
* हाट, आपणिका।
* नाटक का एक भेद।

वीथिका (स्त्री०) [वीथि+कन्+टाप्] * मार्ग, पथ, रास्ता।
* चित्रसारिणी, चित्रशाला, कलामंच।

वीध्र (वि०) [विशेषेण इन्धते-वि+इन्ध्+क्रन्] निर्मल, स्वच्छ, साफ, शुभ।

वीध्रं (नपुं०) * आकाश, वायु, हवा, अग्नि।

वीनत (वि०) तत्पर। (सुद० १०९)

वीनतः (पुं०) वैनतय, गरुड़, कृष्ण का वाहन। (सुद० १०९)

वीप्सा (स्त्री०) [वि+अप्+सन्+अ+टाप्] परिव्याप्ति, शब्द, पुनरावृत्ति।

वीना (स्त्री०) पक्षी।

वीभ (अक०) डींग मारना, शेखी मारना।

वीर (वि०) [अजे: रक् वीभावश्च] विशेषेण ईरयति क्षिपति कर्माणीति वीर: (जैन०ल० १०२१) योद्धा, शूरवीर, शक्तिशाली, बलवान्, विक्रान्त।

वीरः (पुं०) वीर, योद्धा।
* अभिनेता।
* अग्नि। वीरो० १/५) विशिष्टा मां लक्ष्मीं मुक्तिलक्षणा मभ्युदयलक्षणां वा रातीति वीरः।
* तीर्थंकर महावीर का अपर नाम, चौबीसवें तीर्थंकर का नाम—निजगाद स विस्मयो गिरा भुवि वीरोऽयमितीह देवराट्। (वीरो० ७/३१)

वीर! त्वमानन्दभुवामवीर: मीरो गुणानां जगताममीरः।
एकोऽपि सम्पातितममनेक लोकाननेकान्तमतेन नेक।। (वीरो०१/५)

वीरकुञ्जरः (पुं०) वीर शिरोमणि, शूरवीर। (जयो० १३/२७)

वीरकीटः (पुं०) निम्न सैनिक।

वीरगर्भः (पुं०) वीरप्रभु का गर्भ में प्रवेश।

वीरस्य गर्भेऽभिगमप्रकार आषाढमास: शुचिपक्षसारः।
तिथिश्च सम्बन्धवशेन षष्ठी, ऋतुः समारब्धपुनीतवृष्टिः।। (वीरो० ४/२)

वीरचर्या (स्त्री०) आर्यिकाओं के लिए निषिद्ध एक चर्या। (मुनि० २८)

भूत्वा पूर्ववदाचारेत् सुचरितं,
नो वीर्यचर्यादिकम्।
कुर्यात् क्वापि कदापि जन्म,
च निजं पश्येदिदं साधिकम्।।

वीरचामुण्डराज् (पुं०) नृप विशेष। (वीरो० १५/४०) (मुनि०२८) * राजा चामुण्डराज।

वीरजयन्तिका (स्त्री०) रणनृत्य, रणोत्वन।
* संग्राम, युद्ध।

वीरता (वि०) शौर्य, पराक्रम, शक्तिसम्पन्नता। (जाये० ९/८९)
वीरता शक्तिभावश्चेद्भीरुता किं पुनर्भवेत। (वीरो० १०/२९)
चिन्तिं हृदये तेन वीरं नाम वदन्ति माम्।
किं कदैतन्मयाऽबोधि कीदृशीमपि वीरता।।
* तिथि विशेष। (जयो० ६/८८) (वीरो० १०/२८)

वीरतरु (पुं०) अर्जुनवृक्ष।

वीरदेवः (पुं०) महावीर। (वीरो० १९/१)

वीरधन्वन् (पुं०) कामदेव।

वीरपट्टः (पुं०) युद्धपट्ट, पराक्रम पट्ट। (जयो० ७/२८)

वीरपुरुषः (पुं०) शूरवीर व्यक्ति। (जयो०वृ० १/१६)

वीप्रतिवेदनं (नपुं०) महावीर की देशना। (वीरो० १४/४४)

वीरप्रभुः (पुं०) तीर्थंकर वीरप्रभु, चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का अपर नाम। (मुनि० ३४) (वीरो० १३/२०) (सुद० १/१) (वीरो० १६/३६) किन्तु वीरप्रभुर्वीरो हेलया तानतीतवान् (वीरो० १०/३६)

वीरभगवन् (पुं०) वीरप्रभु, तीर्थंकर महावीर। (वीरो० १/९)

वीरभक्ति (स्त्री०) वीरप्रभु की शक्ति।

वीरभावः (पुं०) सिंहवृत्ति। * वीरता युक्त स्वभाव (वीरो० २२/५१)

वीरभास्वत (वि०) वीरप्रभु रूपी किरण वाला। (वीरो० १५/५३)

वीरमति (स्त्री०) पुष्कलदेश के छत्रपुरी के राजा की रानी। (वीरो० ११/३५)

वीर मनुजः (पुं०) शक्तिशाली मनुष्य।

वीरमार्गानुयायिन् (वि०) महावीर के मार्ग का अनुसरण करने वाले। (वीरो० १५/५८)

वीरमुद्रिका (स्त्री०) पैर का छल्ला, बिछुड़ी।

वीररसः (पुं०) वीरता से परिपूर्ण भाव।

वीररजस् (पुं०) सिंदूर।

वीरराट समनुदायिन (वि०) वीर प्रभु के अनुयायी।

वीरवल्लालः (पुं०) एक राजा का नाम। (वीरो० १५/४१)

वीरवाचि (वि०) श्रुतकेवली। (वीरो० २२/३)

वीरविक्रमादित्यः (पुं०) नृप विशेष। (वीरो० २२/१५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीरविभुः (पुं०) वीरप्रभु। (सुद० १/४)
वीरवीरः (पुं०) वीरता में अग्रणी। (वीरो० १६/३०)
वीरवृक्षः (पुं०) अर्जुनवृक्ष। (वीरो० १५/२१, १५/५३-५५)
वीरश्री (स्त्री०) बललक्ष्मी, शौर्यश्री। (जयो० ८/२४)
वीरसंदेशः वीर प्रभु की देशना। * (वीरो० १४/१)
वीरसैन्यं (नपुं०) लहसुन।
वीरस्कन्धः (पुं०) भैंसा।
वीरहू (पुं०) विष्णु।
वीरा (स्त्री०) वीराङ्गना, * पत्नी, भार्या।
* जननी, गृहिणी। * गद्य। * अगरलकड़ी।
वीरांध्रिन् (नपुं०) वीर प्रभु के चरण। (वीरो० १५/२२)
वीरवर्त्मन् (नपुं०) वीरप्रभु का मार्ग। (वीरो० १५/५९)
वीरासनं (नपुं०) एक आसन विशेष, दोनों जंघाओं के ऊपर दोनों पांवों को रखना।
वीरुध् (स्त्री०) शाखा, अंकुर, * बेंत, लता, झाड़ी।
वीरोक्त (वि०) वीर द्वारा कथित। (सुद० १३७)
वीरोदयः (नपुं०) वीरोदय नामक महाकाव्य, (वीरो० १४/४९) आचार्य ज्ञानसागर द्वारा संस्कृत का एक महाकाव्य।
वीरोदयं यं विदधातुमेव न,
शक्तिमान् श्रीगणराजदेवः।
दधाम्यहं तम्प्रति बालसत्त्वं
वहन्निदानीं जलगेन्दुतत्त्वम्। (वीरो० १/७)
वीरोदयोदार विचारचिह्नं
सतां गलालङ्करणाय किन्न।। (वीरो० १/१०)
वीरोदित (वि०) वीर द्वारा कथित। वीरस्य श्रीवर्धमान तीर्थकर्तुरुदिते संवदिते। (जयो० १८/४५)
वीर्यं (नपुं०) [वीर्+यत्] शक्ति, बल, पराक्रम। (सम्य०९२)
* पुंस्त्व, * ऊर्जा, * द्रव्य की स्वशक्ति विशेष। * दृढ़ता, * साहस क्षमता।
* शुक्र, वीर्य, * गौरव, महिमा।
वीर्यप्रवादः (पुं०) एक विवेचन युक्त पूर्वग्रंथ, जिसमें आत्म विवेचन हो। (जयो०)
वीर्यवत् (वि०) [वीर्य+मतुप्] दृढ़, शक्तिशाली, शक्ति से सम्पन्न।
वीर्यसंज्ञितः (पुं०) अनन्तवीर्य। राजा जयकुमार का पुत्र। 'वीर्यपदं तेन संज्ञितोऽनन्तवीर्यनामा' (जयो० २६/२)
वीर्याचारः (पुं०) स्वशक्ति निगूहन वृत्ति।
* स्वसामर्थ्यनिगूहन वृत्ति।
वीर्यानुप्रवादः (पुं०) एक पूर्वग्रंथ।
वीर्यानुवादः देखों ऊपर।
वीर्यान्तरायः (पुं०) शक्ति में अन्तराय। वीर्यं बलं शुक्रमित्येकोऽर्थः' 'अन्तरमेति गच्छतीत्यन्तरायः' वीर्यस्य विघ्नकृदन्तरायः वीर्यान्तरायः' (जैन ल० १०२२)
वीवधः (पुं०) बहंगी, बोझ वाहन।
* अनाज संचयन, * मार्ग, पथ।
वृची (स्त्री०) भयसूचक शब्द। (जयो० २/६५)
वृण् (सक०) छांटना, चुनना, चयन करना, पसंद करना।
* घेरना, लपेटना।
वृंहण/वृंहिण (नपुं०) दावानल दववह्नेर्विषेषणं स्यात्। (जयो० १३/५०)
वृंहित (वि०) गर्जित, चिंघाड़। (जयो० १३/३५)
वृक् (सक०) पकड़ना, लेना, ग्रहण करना।
वृकः (पुं०) भेड़िया, लकड़बग्घा। (वीरो० १४/५९)
* गीदड़।
* काक।
* उल्लू।
* लुटेरा।
* क्षत्रिय।
* एक राक्षस।
वृकदंशः (पुं०) कुत्ता, श्वान।
वृकधूपः (पुं०) तारपीन, मिश्रगन्ध।
वृकधूर्तः (पुं०) गीदड़।
वृकारातिः (पुं०) कुत्ता।
वृकारिः (पुं०) श्वान, कुत्ता।
वृक्कः (पुं०) हृदय, गुर्दा।
वृक्ण (भू०क०कृ०) [वृश्च्+क्त] कटा हुआ, बांटा हुआ, फाड़ा हुआ।
वृक्त (भू०क०कृ०) [वृज्+क्त] स्वच्छ किया गया, साफ किया गया, निर्मल किया गया।
वृक्ष् (सक०) स्वीकार करना, चयन करना, अंगीकार करना।
* ढकना।
वृक्षः (पुं०) पेड़, तरु, पादप, रुख।
* अनोहकट। (वीरो० २/१९, जयो० १४/६)
वृक्षकुक्कुटः (पुं०) जंगली मुर्गा।
वृक्षखण्डः (पुं०) निकुंज, वृक्ष समूह।
वृक्षचरः (पुं०) वानर, बंदर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृक्षछाया (स्त्री०) तरुतल, वृक्ष के नीचे। (सुद० ११८)

वृक्षधूपः (पुं०) तारपीन।

वृक्षनाथः (पुं०) वटवृक्ष।

वृक्षनिवासी (स्त्री०) नगौकस, खग, पक्षी। 'नगौकसी वृक्षनिवासिनः सन्ति' (जयो०वृ० ६/८)

वृक्षपत्रं (नपुं०) अगदल, वृक्षों के पत्ते। (जयो०वृ० १४/४)

वृक्षपाकः (पुं०) वटवृक्ष।

वृक्षभिद् (स्त्री०) कुल्हाड़ी।

वृक्षकर्मटिका (स्त्री०) गिलहरी।

वृक्षमूलः (पुं०) वृक्षभाग, वृक्षतल। (दयो० २२)

वृक्षवाटिका (स्त्री०) उद्यान, आराम, उपवन।

वृक्षशः (पुं०) छिपकली।

वृक्षशायिका (स्त्री०) गिलहरी।

वृच् (सक०) चयन करना, छांटना।

* स्वीकार करना।

वृज् (सक०) टालना, कतराना, परित्याग करना।

* चुनना, चयन करना।
* नष्ट करना, समाप्त करना।
* उड़ेलना, फेंकना।

वृजनः (पुं०) [वृजे+क्युः] घुंघराले बाल।

वृजनं (नपुं०) पाप।

* संकट।
* आकाश।
* घेरा, बाड़ा।

वृजिन (वि०) [वृजेः इनज् कित् च] * वक्र, कुटिल, झुका हुआ।

* अधम, नीच, निम्न, पतित। (जयो०वृ० ८/७)

वृजिनः (पुं०) घुंघराले बाल।

वृजिनं (नपुं०) पाप। वृजिनं कलुषे क्लीवं केशे वा कुटिले त्रिषु इति वि (जयो०वृ० २८/७)

* दुःख, कष्ट, पीड़ा।

वृण् (सक०) उपभोग करना, खाना, वरण करना। (जयो० ४/६)

वृजिनोपमा (स्त्री०) पाप से उपमा।

* केश से उपमा। (जयो० २८/७)

वृणीत्व (वि०) अंगीकृत। (जयो० ६/७)

वृणीष्क (वि०) स्वीकार करने योग्य। (जयो०वृ० ६/७)

वृत् (सक०) चयन करना, स्वीकार करना, पसंद करना।

* अभ्यास करना, अनुष्ठान करना।
* अनुसरण करना।
* अनुरंजन करना।
* लौटना।

वृत (भू०क०कृ०) [वृ+क्त] छाटा गया, चुना गया।

* समाच्छादित। (जयो० १३/६८) घेरा गया, लपेटा गया।

वृतिः (स्त्री०) [वृ+क्तिन्] छांटना, चुनना, स्वीकार करना।

* घेरना, लपेटना।
* अनुरोध, प्रार्थना, अनुनय।

वृतिका (स्त्री०) वर्तुलाकार। (जयो० १६/६७)

वृत्त (भू०क०कृ०) [वृत्+क्त] * दृढ, विद्यमान, अनुष्ठित।

* कृत, किया गया।
* गोल, गोलाकार।

वृत्तं (नपुं०) चारित्र, आचरण, सम्यक्चरित्र। (जयो० २/६९) (भक्ति० ३०) ज्ञानेन वृत्तेन किलेत्यनेनः (सम्य० १२४)

* बात, घटना।
* समाचार।
* प्रवर्तन। (सुद० ८६)
* प्रवृत्ति, पेशा, व्यवसाय, परिचय। (जयो० ५/५३)
* आचरण, व्यवहार, रीति। (सम्य० १२०) (सम्य० १३७)
* छन्द-मात्राओं की गणना वाला छन्द। (सुद० २/३०)
* नियम, पद्धति, विधान, गोलाकार। (सुद० २/३०)
* छन्द-मुदुनीव खेः पद्मे पीठे वृत्ते कवेरिव' (दयो० १०६)
* षडरचक्रात्मवृत्त। (जयो०वृ० ६/१३२)
* पद्यावली। (जयो० २०/३१)
* वृतान्त। (सुद० ११६)

वृत्तकर्कटी (स्त्री०) तरबूज, सरदा।

वृत्तकुबल (पुं०) गोल गोल मुक्ता। कुवलं तूप्पले मुक्ताफलेऽपि बदरी फले इति वि (जयो० २२/३१)

वृत्तगन्धि (नपुं०) छन्दानुबद्धता।

वृत्तचूड (नपुं०) मुंडित।

वृत्तजातिः (स्त्री०) छन्द रचना।

वृत्तपुष्पः (पुं०) बेत, वानीर।

* सिरस तरु, कदम्बवृक्ष।

वृत्तप्रेषणं (नपुं०) संदेशपत्र, पत्र। (जयो० १/६७)

वृत्तफलः (पुं०) बेर।

* उन्नाव तना।
* अनार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृत्तभावः (पुं०) आचरण भाव।
 * वर्तुलाकारत्व। (जयो० ५/४६)
वृत्तमुखः (पुं०) गगन मुख। (सुद०)
वृत्तमोहः (पुं०) चारित्रमोह, (सम्य० १२०) किं वृत्तमोहाऽस्तु दृशे किलारिः।
वृत्तरत्नाकरः (पुं०) छन्दशास्त्र का नाम।
वृत्तवचः (पुं०) वृतान्त, समाचार। (सुद० ८८)
वृत्तशास्त्रं (नपुं०) छन्द शास्त्र।
वृतशास्त्रज्ञ (वि०) छन्दशास्त्रज्ञ।
वृत्तसरूपः (पुं०) सुंदर वृतान्त। (रूप। (जयो० ५/४७)
वृत्ताधिगमिन् (वि०) कथानक को प्राप्त। (वीरो० ११/१)
वृतान्त (वि०) उदन्त, कथन। (जयो०वृ० २/१४१)
वृत्तिः (स्त्री०) [वृत्+क्तिन्] कार्य, गति, कृत्य, क्रिया। सद्‌वृत्तिरूपं चरणं श्रुतं च। (सम्य० १२८)
 * साधन।
 * प्रवृत्ति। (सम्य० ४०) (समु० १/२३)
 * अस्तित्व, सत्ता।
 * अवस्था, दशा।
 * स्वभाव। (सुद० २/२)
 * क्रम, प्रणाली। (सुद० ७३)
 * सदाचरण, चारित्तदशा, कार्यपद्धति।
 * रचना शैली। (सुद० १२४)
 * मजदूरी, भाड़ा।
 * भाष्य, टीका, विवेचन, टिप्पणिका। (जयो० १८/६१) महावृत्ति (सुद० ८२)
वृत्तिपरिसंख्यानं (नपुं०) आजीविका के साधनों में सीमाकरण।
 * तप विशेष।* बाह्य तप का एक भेद, जिसमें आजीविका के साधनों पर भी विराम लगाया जाता है।
वृत्तिकर्षित (वि०) जीविका से दुःखी।
वृत्तिचक्रं (नपुं०) राजचक्र।
वृत्तिछेदः (पुं०) जीविका विहीन व्यक्ति।
वृत्तियुत (वि०) जीविका सहित। (दयो० ११३)
वृत्तिवैकल्य (नपुं०) जीविका का अभाव।
वृत्तिस्थ (वि०) सदाचारी।
वृत्तिसंख्यानं (नपुं०) तप का एक भेद। (जयो० २८/११)
वृत्रः (पुं०) [वृत्+रक्] राक्षस विशेष। * दानव। (जयो०वृ० १८/७४)
 * मेघ, ०तम, ०अंधकार, ०ध्वनि, ०गिरि ०पर्वत। वृत्रो दानवशक्रादि ध्वान्तवारिदवैरिषु इति विश्वलोचनः (जयो०वृ० १८/७४)
वृथा (अव्य०) [वृ+थाल्+किच्च] व्यर्थ का, निष्प्रयोजन युक्त। (सुद० ४/१०) (समु० ७/१०)
 * अनावश्यक रूप से, आलस्य पूर्णता से, अनुचित रूप में।
 * मिथ्या, आलसी।
वृथाकथा (स्त्री०) व्यर्थ का जन्म, सार्धकता रहित जन्म।
वृथाकारः (पुं०) मिथ्या रूप।
वृथाजन्मन् (नपुं०) व्यर्थ का जन्म, सार्धकता रहित जन्म।
वृथादानं (नपुं०) अन्यथा दान। निष्फल दान।
वृथाभिमानं (नपुं०) निष्प्रयोजन अहंकार। (वीरो० २०/२३)
वृथामतिः (स्त्री०) दुर्बुद्धि, मूर्ख।
वृथामांसं (नपुं०) अनिष्ट योग्य मांस।
वृथावादिन् (वि०) मिथ्या भाषी।
वृथाश्रमः (पुं०) व्यर्थ चेष्टा।
वृद्ध (वि०) [वृध्+क्त] वरिष्ठ, ज्येष्ठ, वृद्धिगत, बढ़ा हुआ। जिसकी बुद्धि इन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों का कार्य शिथिल पड़ गया हो। जिसके हाथ, पैर अवस्था विशेष के कारण शिथिल होने से समुचित काम न कर सके। (हित० ४९)
 * बड़ा, महत्, विशाल।
 * बुद्धिमान्, विद्वान्।
वृद्धः (पुं०) ०बूढ़ा व्यक्ति, ०योग्य व्यक्ति, ०आदरणीय व्यक्ति। (सुद० १/१८)
वृद्धं (नपुं०) गुग्गुल।
वृद्धकाकाकः (पुं०) पर्वतीय कोवा।
वृद्धद्वारा (पुं०) वृद्धपुरुष। (जयो० ६/१०५)
वृद्धनाभिः (स्त्री०) स्थूलकाय, मोटे पेट वाला।
वृद्धपरम्परा (स्त्री०) तीर्थसम्भव। (जयो०वृ० ३/१०)
वृद्धभावः (पुं०) बुढ़ापा, वृद्धापन।
वृद्धवाहनः (पुं०) आम्र तरु।
वृद्धशशकः (पुं०) बूढ़ा खरगोश। (दयो० ४६)
वृद्धशासनं (नपुं०) वृद्धजन की आज्ञा।
वृद्धश्वश्रू (स्त्री०) बूढ़ी सास। (दयो० १७)
वृद्धसमयः (पुं०) काव्यशास्त्र। (जयो० २/३४)
वृद्धसूत्रकं (नपुं०) कपास का गाला, इन्द्रतूल।
वृद्धा (स्त्री०) [वृद्ध+टाप्] बूढ़ी स्त्री।
वृद्धानुपेयः (पुं०) वृद्धों की सेवा। (वीरो० १७/८)
वृद्धाम्बुधि (पुं०) वृद्ध समुद्र। (सुद० १/१८) श्रयन्ति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृद्धाम्बुधिमेव गत्वा ता निम्नगा एव जडाशयत्वात्।। (सुद० १/१८)

वृद्धावस्था (स्त्री०) बुढ़ापा, वृद्धपना। (जयो० १/३६)

वृद्धावस्थापन्न (वि०) धवल, कर्चक। (जयो०वृ० २/१५३)

वृद्धिः (स्त्री०) [वृध्+क्तिन्] उत्कर्षभुवि धुतोऽग्रविधिगुणवृद्धिमान् सपदि तद्धितमेव कृतं भजन्। (जयो० वृ०१/९५)

* विकास, उन्नति, प्रगति, परिवर्धन।
* लाभ, वस्तुगत अंशलाभ।
* सम्वर्धन, बढ़ोत्तरी।
* सूद, सूदखोरी।
* कलावृद्धि, चन्द्रवृद्धि।
* समृद्धि।
* समुदय, समुच्चय, ढेर।
* स्वरो की वृद्धि-अ+इ=ए,

आ+ए=ऐ, आदि। 'गुण एव अदेङ्, वृद्धिरेप् आदैग, तयो सिद्धिरपि (जयो०वृ० १/३१)

अ+ए=ए-	तव+एव=तवैव
आ+ए=ऐ	तथा+एव=तथैव।
अ+ऐ=ऐ	देव+ऐश्वर्यम्-देवैश्यम्।
आ+ऐ=ऐ	महा+ऐश्वर्यम्=महैश्वर्यम्।
अ+ओ=औ	उष्ण+ओदनम्=उष्णौदनम्।
आ+ओ=औ	गंगा+ओघः=गंगोघः।
अ+औ=औ	कृष्ण+औतकण्ठ्यम्, कृष्णौतकण्ठ्यम्।
आ+औ=औ	महा+औषधम्=महौषधम्।

* 'पाणिनीयव्याकरणसमुक्त्वामक्षरशो' (जयो० २०/७४) 'गुणश्च वृद्धिश्च गुणवृद्धी व्याकरणशास्त्रोक्तोक्ते संज्ञो तद्वान् उक्तिविदां वैयाकरणानां पूज्यपात्रामाचार्यवर्यो जैनेन्द्रव्याकरणकर्ता महाशय इव कथितः' (जयो०वृ०१/९५)

वृद्धिंगत (वि०) वृद्धिको प्राप्त हुआ। 'वृद्धिंगतत्वात्पलितोज्ज्वला-द्यकीर्तिर्भुजङ्गस्य गृहं प्रसाद्य' (जयो० १/३६)

वृद्धिजीवनं (नपुं०) साहूकारी, सूदखोरी।

वृद्धिद (वि०) समृद्धि को उन्नत करने वाला।

वृद्धिपत्रं (नपुं०) उस्तरा।

वृद्धिमान् (वि०) उत्कर्षशील।

वृद्धिशील (वि०) बढ़ने वाला। (जयो०वृ० १/१०२)

वृद्धिसंधि (स्त्री०) संधि का एक भेद, जिसमें ह्रस्व अ, दीर्घ आ के पश्चात् ए या ऐ होने पर 'ऐ' और ह्रस्व 'अ' एवं दीर्घ 'आ' बाद ओ या ओ होने पर 'औ' हो जाता है। 'वृद्धिरेप्, आदैग्' (जयो०वृ० १/३१)

वृद्धिस्थानं (नपुं०) वृद्धिपद 'वृद्धिस्थाने रास्थाने गुणादेशात् रकारविधानाद्' (जयो०वृ० ७/९)

वृध् (अक०) बढ़ना, विकसित होना।

* फलना, समृद्ध होना।
* चमकना।

वृधसानः (पुं०) [वृधेः छन्दसि असानच्] मनुष्य।

वृधसानुः (पुं०) [वृध्+असानुच्] * मनुष्य।

* पत्त।
* कर्म, कार्य।

वृन्तं (नपुं०) डंठल, डंडी, बौंडी, अग्रभाग।

वृन्ताकः (पुं०) [वृन्त+अक्+अण्] बैंगन का पौधा।

वृन्तिका (स्त्री०) [वृन्त+कन्+टाप् इत्वम्] डंठल।

वृन्दं (नपुं०) सम्प्रदाय। (वीरो० ३/४)

* समुच्चय, समुदाय, समूह, ढेर, परिमाण। (वीरो०२१/२५)

वृन्दगत (वि०) समुच्चय युक्त। * समूह युक्त।

वृन्दचम् (वि०) सैन्यसमूह। * चतुर्विध सैन्य समुदाय।

वृन्दा (वि०) [वृन्द+टाप्] तुलसी पौधा।

वृन्दार (वि०) अधिक, बड़ा, भारी।

* प्रमुख, श्रेष्ठ, उत्तम, आदरणीय।

वृन्दादक (वि०) देखो ऊपर।

वृन्दारण्यं (नपुं०) गोकुल का क्षेत्र।

वृन्दावनं (नपुं०) गोकुल क्षेत्र। * नगर विशेष।

वृन्दिष्ठ (वि०) सुंदरतम, पवित्रतम। अत्यन्त बड़ा।

वृन्दीयस् (वि०) सम्माननीय, पूजनीय, आदरणीय, * मनोहर, सुंदर, उत्तम।

वृश् (सक०) छांटना, चुनना।

वृशः (पुं०) [वृश्+क] चूहा।

वृशं (नपुं०) अदरक।

वृशा (स्त्री०) एक औषधि, अडूमा।

वृश्चिकः (पुं०) [व्रश्च्+किकन्] बिच्छू। (जयो०वृ० २३/४१)

* केंकड़ा, कनकजूरा।

वृश्चिकराशिः (स्त्री०) वृश्चिकराशि।

वृष् (अक०) बरसना, गिरना, उछालना, उड़ेलना।

* बौछार करना, फुहार करना।
* अनुदान देना, अर्पण करना।
* तर करना।

वृषः (पुं०) [वृष्+क] * सांड, वृषभ, बैल, बलिवर्द।

* वृषराशि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* उत्तम दल, समुदाय।

* धर्म-वृषं धर्ममपेक्ष्य (जयो०वृ० २/२०) नासौ नरो या न विभाति भोगी, भोगोऽपि नासा वृषप्रयोगी। वृषो न सोऽसख्यसमर्थितः स्यात्साख्यं च तन्नात्र कदापि न स्यात्।। (वीरो० २/३८)

* कामदेव।

* सदाचारी व्यक्ति।

* शत्रु, विपक्षी। (वीरो० २/३८)

* नैतिकता, न्याय।

* उत्तम, श्रेष्ठ, सुंदर। (सुद० १३२)

वृषचक्रः (पुं०) धर्मचक्र। (जयो० १२/४)

* बैल युक्त।

वृषचक्राह्वयत (वि०) वृष चक्र का धारक। (जयो० २६/६४)

वृषचिन्तामणिः (स्त्री०) धर्मचिन्तामणि। (जयो० २८/८५)

वृषदंशः (पुं०) विलाव।

वृषधर (वि०) वृषभ/बैल के चिह्न को धारण करने वाले ऋषभदेव, आदि तीर्थंकर ऋषभदेव। (जयो० ९/८२)

वृषध्वजः (पुं०) वृषचिह्न।

* नाभेयतीर्थंकर, महादेव। 'वृषो नाम बलीवर्दो ध्वजे यस्य स वृषध्वजो नाभेय तीर्थंकर महादेवोऽपि। (जयो० १९/२२)

* सद्गुणी, धर्मात्मा, पुण्यशाली।

वृषपतिः (पुं०) नाभेय तीर्थंकर, महादेव।

वृषपर्वन् (पुं०) ऋषभदेव, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव।

* महादेव।

* वर्र, भिरड।

वृषप्रयोगिन् (वि०) धर्माचारी। (वीरो० २/३८)

वृषभः (पुं०) बैल, बलीवर्द, सांड। (समु० ६/४३)* ऋषभदेव, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ नाभिराजा का पुत्र। (वीरो० २/२, दयो० ३०) (सुद० ४/१४) वृषभ देव। (जयो०९/८२)

* धर्म भावना। (जयो०वृ० ७/६५)

* हस्तिकर्ण।

* कर्ण विवर।

* वृषभ स्वप्न, बैल का देखना-

मूलगुणादिसमन्वित-रत्नत्रयधर्मकटन्तु।

मुक्तिपुरीमुपनेतुं धुरन्धरो वृषवदयन्तु।। (वीरो० ४/४२)

वृषभदत्तः (पुं०) उज्जयिनी का एक राजा। (दयो० १/१२)

वृषभदत्ता (स्त्री०) उज्जयिनी के राजा की रानी। (दयो० १/१३)

वृषभदासः (स्त्री०) वृषभ देव का दास, वृषभदास सेठ (सुद० ४/१३) तमाश्विनं मेघहरं श्रितस्तदाऽधियोऽपि दासो वृषभस्य सम्पदाम्। (सुद० ४/१४)

वृषभावः (पुं०) धर्मभाव, नीतिपूर्ण व्यवहार।

* वलीवर्द (वीरो० ३/३६) 'लोकोऽयं वृषभावतोऽपि सुतरां दुष्कर्मणां वारणम्' (मुनि० ३३)

* बलीवर्द रूप। (जयो० २८/५८)

वृषभावना (स्त्री०) धर्मभावना। (दयो० १/१२) * उत्तम चिन्तन।

वृषभी (वि०) [वृषभ+ङीष्] विधवा, कवच्।

वृषभृत् (वि०) आगम गत नियम पालक। (जयो० २/११७)

वृषलः (पुं०) [वृष्+कलच्] * शूद्र। (जयो०वृ० १/४०)

* धर्माचार में तत्पर-वृषं लातीति वृषलो धर्माचरणतत्परश्च' (जयो०वृ० १/४०)

* पृथुल-शूद्र। (जयो०वृ० १/४०)

* चाण्डाल- (जयो०वृ० १/४०)

* दास (जयो० २५/२५) 'यस्यानुकम्पा हृदि तूदियाय स शिल्पकल्पं वृषभलोत्सवाय। सेवा परायण शूद्रों की नाना प्रकार की शिल्पकलाएं हैं। (वीरो० १८/१४) 'सद्वृत्तभावाद वृषलोऽपि वन्द्याः'। (वीरो० १७/१७)

वृषलक (वि०) तिरस्कार योग्य शूद्र।

वृषलपालित (वि०) दास द्वारा पोषण किया गया। (जयो० २५/६५)

वृषली (स्त्री०) [वृषल+ङीष्] रजस्वला स्त्री।

* शूद्रस्त्री।

वृषलीपतिः (पुं०) शूद्रस्त्री का पति।

वृषवः (पुं०) धर्मस्थान, धर्मशाला। (जयो० २५/३९)

वृष-वत्सलत्व (वि०) बैल एवं बछड़े की वात्सल्यता। (जयो० २१/४४) गो प्रीति युक्त।

वृषवास्तुवः (पुं०) धर्म रूप मकान। करोतु धर्मग्रहणं न वा प्रभो! समादिशेदं वृषवास्तुवप्रभोः! (समु० ४/२१) * देवालय।

वृषवृद्धिः (स्त्री०) वृषभवृद्धि, बैलों की वृद्धि। (सुद० २/२९)

वृषसंयोजनः (नपुं०) बलीवर्द संयोग। (जयो० १२/११२)

वृषाङ्कः (पुं०) महादेव, वृषभ, प्रथम तीर्थंकर वृषभदेव, ऋषभनाथ। (जयो० ५/२४)

* रुद्र (जयो०वृ० ५/२४) 'वृषाङ्कस्य रुद्रस्य उत नाभेयस्य प्रथमतीर्थंकरस्य' (जयो०वृ० ५/२४)

वृषाङ्कविभवः (पुं०) भस्मीकरण रूप, भस्मधरी। 'वृषाङ्कस्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभवेन भस्मीकरणसार्थ्येन उपद्रुतस्य कामस्य प्राणनाशो नाभूत्' (जयो०वृ० ५/२४)

वृषाधिरुढः (पुं०) वृषराशि पर आरुढ़।

वृषायणः (पुं०) शिव, गौरेया पक्षी। (वीरो० १२/१)

वृषाश्रयः (पुं०) धर्माश्रय, धर्माधार, धर्म का सहारा। (समु० ४/३२) "इतीरितः प्राह मुनिर्महाशयः, स्वपूर्वजन्मश्रवणाद् वृषाश्रयः" (समु० ४/२२)

वृषिन् (पुं०) मोर।
०धर्मी, धर्मात्मन्।

वृषिबोधिन् (वि०) धर्मात्माओं के जानने योग्य। "वृषिभिर्धर्मात्मभिः सज्जनैर्बोध्यमनुमननीयम्" (जयो०वृ० १२/१)

वृषी (स्त्री०) ब्रह्मचारी की शय्या, ०आसन, कुशासन।

वृषोपयोगः (पुं०) धर्म का उपयोग।

वृषोपयोगी (वि०) धर्म को भावना युक्त। नरो न यो यत्र न भाति भोगी, भोगो न सोऽस्मिन्न वृषोपयोगी। (समु०६/३)

वृष्ट (भू०क०कृ०) बरसा हुआ, झरता हुआ।

वृष्टिः (स्त्री०) बारिश, बरसात, बौछार।

वृष्टिगतक्षेत्रं (नपुं०) बारिश युक्त स्थान।

वृष्टिजीवन (वि०) सिंचित प्रदेश।

वृष्टिभूः (पुं०) मेंढक।

वृष्टिमत् (वि०) [वृष्टि+मतुप्] बरसने वाला, बरसाती।
०बादल, मेघ।

वृष्णि (वि०) [वृषेः हि किच्च] ०पाखण्डी, धर्मच्युत।
०कुपित, अभिमानी।

वृष्णिः (पुं०) कृष्ण के पूर्व वंशज।
०अग्नि।
०इन्द्र।
०मेंढक।
०मेघ।

वृष्णिगर्भः (पुं०) कृष्ण।

वृष्णिपुत्रः (पुं०) कृष्ण।

वृष्य (वि०) [वृष्+क्यप्] कामोद्दीपक, बाजीकर, पुंस्त्व बढ़ाने वाला।
०बौंछार युक्त।

वृह् (वि०) बहुत, बड़ा, महत्त्वपूर्ण।

वृहती (स्त्री०) [वृह्+अति+ङीष्] नारद की वीणा का नाम।
०मिष्ठान्न विशेष। (जयो० ३/६०)
०छत्तीस संख्या।
०दुपट्टा, आवरण।

वृहन्निह (वि०) बहुत बड़ा, विशालतम्। (समु० २/५)

वृहस्पतिः (पुं०) नाम विशेष।

वृहस्पतिवारः (पुं०) गुरुवार, एक दिन विशेष। (दयो० ६९)

वे (सक०) ०बुनना, गूंथना, सिलना।
०बनाना, रचना, निर्माण करना।
०नत्थी करना, इकत्रित करना।
०जमाना, संग्रह करना।

वेकटः (पुं०) ०जौहरी, पारिख।
०युवा व्यक्ति।
०हसोकड़ा।

वेगः (पुं०) तेजी, गतिशीलता, आवेग। (जयो० १/१९)
०गति, शीघ्रता।
०प्रचण्डता, प्रबलता, प्रमुखता।
०प्रवाह, धारा, झरना।
०शक्ति, बल, वीर्य, औजस्विता, क्रियाशीलता।
०संचार।
०विक्षोभ।

वेगजित् (वि०) कोप की प्रबलता को जीतने वाला। 'वेगान् मानसिक-शारीरिकोपद्रवान् जयतीति वेगजिदपि' (जयो० २३/३)

वेगनाशनः (पुं०) श्लेष्मा, कफ।

वेगपूर्वक (वि०) संवेग पूर्वक।

वेगयुक्त (वि०) गतिशीलता युक्त। (जयो०वृ० ५/३)

वेगवाहिन् (वि०) स्फूर्ति, तेजी। ०गतिशीलता।

वेगविधारणं (नपुं०) गति रोकना।

वेगसरः (पुं०) खच्चर।

वेगानिलः (पुं०) आंधी प्रवाह, तीव्र पवन वेग।

वेगिन् (वि०) [वेग+इनि] तेज, स्फूर्ति युक्त, द्रुतगामी, गतिशील, प्रवाहमयी। (जयो० ५/३)
०प्रचण्ड, तीव्र।

वेगिन् (पुं०) बाज।
०हरकारा।

वेगिनी (स्त्री०) नदी। वेग युक्त प्रवाहिनी, सरिता।

वेङ्कटः (पुं०) वेंकटाचल, पर्वत विशेष।

वेचा (स्त्री०) [विच्+अच्+टाप्] भाड़ा, मजदूरी।

वेण् (सक०) जाना, पहुंचना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०जानना, पहचानना, प्रत्यक्ष करना।
०सोचना, विचार-विमर्श करना।
०ग्रहण करना, स्वीकार करना।
वेण: (पुं०) [वेण्+अच्] गायक जाति।
वेणा (स्त्री०) नदी विशेष।
वेणि/वेणी (स्त्री०) कवरां, चोटी, गुथे हुए बाल। (जयो० १२/११)
वेणीयमेणीदृश एव भायाच्छ्रेणी,
सदा मेकल-कन्यकाया:।
हरस्य हाराकृतिमादधाना,
यूनां मनोमोहकरी विधानात्।।
(जयो० ११/७०)
०केशतति, केशपाश। श्रेणीति कालबालानां वेणी चेणीदृशो भृशम्' वक्ष्यते वीक्षमाणेभ्य: पन्नगीव विपन्नगी।। (जयो० ३/५५)
०प्रवाह, धारा, गति।
०नदी नाम विशेष।
वेणीकृत (वि०) केशपाश वाली।
वेणीगत (वि०) गुथे हुए बालों को प्राप्त हुई।
वेणीबन्ध: (पुं०) मींढी, केशपाश।
वेणीवेधिनी (स्त्री०) ०जोंक, ०कंघी। ०केश/बाल श्रृंगार प्रसाधिनी।
वेणीसंहार: (पुं०) ०केश गुंफन, केशबन्ध।
०भट्टनारायणकृत एक संस्कृत नाटक।
वेणु: (वेण्+उण्) बांस वृक्ष। (जयो० २१/३४)
०बांसुरी, मुरली, बंसी।
वेणुक (वि०) वेणूत्पन्न, वेणु से उत्पन्न।
वेणुक: (पुं०) बांसुरी, बंसी। (जयो० १०/२१)
वेणुकं (नपुं०) [वेणु+कन्] बांस की मूठ वाला अंकुश।
वेणुज: (पुं०) बांस का बीज।
वेणुदण्ड: (पुं०) बांस की लकड़ी। (जयो०वृ० १/३२)
वेणध्म: (पुं०) बंसीवादक।
वेणुनिसृति: (स्त्री०) इक्षु, गन्ना, ईख।
वेणुयष्टि: (स्त्री०) बांस की लकड़ी।
वेणुर्वाद्य: (पुं०) बांसुरी, मुरली। (जयो०वृ० १०/२०)
वेणुवाद: (पुं०) बांसुरी बजाने वाला।
वेणुवादक: (पुं०) बांसुरी बजाने वाला। ०बंसी वादक।
वेणुवादनं (नपुं०) बांसुरी, मुरली।
वेणूत्पन्न: (पुं०) बांसुरी, मुरली। (जयो०वृ० १०/२१)
वेणूदित (वि०) मुरली सम्पादित। (जयो० २२)
वेतंड: (नपुं०) हस्ति, हाथी।
वेतनं (नपुं०) [अज्+तनन् वीभाव:] किराया, मजदूरी, तनख्वाह, वृत्ति।
०अजीविका, जीवनयापन का साधन।
वेतनादानं (नपुं०) वृत्ति न देना।
वेतस: (पुं०) [अज्+असुन्+तुक् च वीभाव:] ०नरकुल, नरसल, बेंत।
वेतसी (स्त्री०) [वेतरु+ङीष्] नरकुल।
वेतस्वत् (वि०) [वेतस्+] नरकुल की बहुलता वाला स्थान।
वेताल: (पुं०) [अज्+विच्-वी आदेश: तल्+घञ्] भूतयोनि, प्रेतात्मा।
०अधिकार रखने वाला भूत।
वेत्तु (पुं०) ज्ञाता, जानकार, मुनि साधक।
०पति।
वेत्र: (पुं०) बेंत, नरसल।
०लाठी, छड़ी।
वेत्रवती (स्त्री०) द्वारपाल स्त्री।
वेत्रासनं (नपुं०) बेंत का आसन, गद्दी।
वेत्रिन् (पुं०) [वेत्र+इनि] द्वारपाल, दरबान, चौकीदार, पहरेदार।
वेथ् (सक०) प्रार्थना, प्रतिपादन करना, कहना, निवेदन करना।
वेद: (पुं०) [विद्+घञ्] [वेधत इति वेद:] ०ज्ञान, बोध, जानना-'वेद्यं यदा वेदकमेष वेद:' (भक्ति० ३०)
०वेदन, अनुभव। (सम्य० १०७) मृदन्तरा बीजवदीष्यतेऽद: पुन: किलास्पष्टसदात्मवेद:। (सम्य० १०७)
०जो अनुभव में आत्मा है वह वेद है।
०सुख-दु:ख का अनुभवन।
०जीव का पर्यायवाची शब्द।
०श्रुत के वाचक ४१ नामों से एक। अशेशपदार्थान् वेत्ति वेदिष्यति अवेदीदिति वेद: सिद्धान्त: (धव० १३/२८६)
०सिद्धान्त।
०वेदग्रन्थ, वेदशास्त्र-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थवेद। 'वेदमेतन्नाम शास्त्रमतीत्य समुपेक्ष्यान्यत एव व्रजति' (जयो०वृ० ४/६७)
वेदक (वि०) वेदना वाला, दु:ख युक्त अनुज्ञात। (जयो० २३/४०) जानने वाला। (भक्ति० ३१)
वेदक: (पुं०) वेदक सम्यक्त्व का नाम है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेदकसम्यक्त्वं (नपुं०) वेदक सम्यक्त्व। दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से वेदक सम्यक्त्व होता है।

वेदगर्भः (पुं०) वेद ज्ञाता।

वेदग्रन्थः (पुं०) वेद। (वीरो० २०/११) ०वेदशास्त्र।

वेदत्रयं (नपुं०) तीन वेद कर समूह।

वेदध्वनि (स्त्री०) आत्म कल्याणकारक ध्वनि, द्रव्यानुयोगशास्त्र की ध्वनि। महर्षि पठित वाक्य। (जयो० १/८७)

वेदनं (नपुं०) [विद्+ल्युट्] ०परिज्ञान, बोध।
हे छिन्नमोह जनमोदनमोदनाय,
तुभ्यं नमोऽशमन संशमनोदमाय।
निर्वृत्यपेक्षित निवेदन-वेदनाय,
सूर्याय मे हृदरविन्दविनोदनाय।। (जयो० १०/९६)
०वेद ज्ञान। (वीरो० ३/५)
०दु:ख, वेदना। (जयो० १/५९, वीरो० ३/५)
०भावना, संवेदन, पीड़ा, क्लेश, कष्ट। (सम्य० २४)
०अधिग्रहण।

वेदना (स्त्री०) दु:ख, पीड़ा, संताप, खेद। (सुद० ३/२८)

वेदनागत (वि०) दु:खित, पीड़ित, व्याकुल।

वेदनाजन्य (वि०) कष्ट युक्त, पीड़ा सहित।

वेदनाजन्यः (पुं०) आर्तध्यान के निदान, वेदनाजन्य, अनिष्टसंयोगज और इष्टवियोजग ये चार भेद हैं, उनमें दूसरा भेद वेदनाजन्य है। (मुनि० २१)

वेदनाधारः (पुं०) दु:ख का कारण, व्याकुलता का मूल आधार।

वेदनीय (वि०) सुख-दु:ख का कारण रूप कर्म, पीड़ा, कष्ट।

वेदनीयकर्मन् (पुं०) वेदनीयकर्म, आठ कर्मों में तीसरा कर्म-वेद्यत इति वेदनीयम्, अथवा वेदयतीति वेदनीयम्।

वेदनाप्राप्त (वि०) दु:खित, पीड़ित।

वेदनाभयः (पुं०) अज्ञानता पूर्ण भय।

वेदनाभावः (पुं०) परिज्ञान भाव।

वेदनामुक्त (वि०) आकुलता रहित।

वेदनायुक्त (वि०) रुग्णता युक्त, आधि-व्याधि सहित। (जयो०वृ० ११/८५)

वेदनिन्दक (वि०) पाखण्डी, श्रद्धाहीन।

वेदनिन्दा (स्त्री०) पाखण्ड, अविश्वास, ज्ञाननिन्दा।

वेदपदं (नपुं०) वेदसूत्र। ०वेद ऋचा। (वीरो० १४/३)

वेदपाठी (वि०) वेद पढ़ने वाला, आत्म ज्ञान करने वाला।

वेदपारगः (पुं०) वेदों में निपुण।

वेदबाह्य (वि०) वेद से विपरीत। (दयो० २४) (दयो० २६)

वेदमातृ (स्त्री०) वैदिक मन्त्र।

वेदमूढता (स्त्री०) पापजन्य उपदेश।

वेदवचनं (नपुं०) वेदवाक्य, ज्ञानसूत्र, आत्म कल्याणकारी शब्द व्यवहार।

वेदवाक् (नपुं०) ज्ञान वचन, सिद्धांत निरूपण, वेदज्ञान।

वेदवाक्यं (नपुं०) बोध जन्य वाक्य। (वीरो० १३/२१) आत्मकल्याणकारी वचन। 'सा देवता, तत्र गतो भवान्' इत्यादिभिर्वेदवाक्यैः कामोत्पादकवचनैः' (जयो०वृ० २४/३३)

वेदविद् (पुं०) वेदशास्त्र प्रवीण व्यक्ति, वेदविशारद। (दयो०२४)

वेदविहित (वि०) वेद निरूपित, आगम प्रतिपादित।

वेदवेदाङ्ग (वि०) वेद-पुराणादि का ज्ञाता। इत्येवमेतस्य सतीं विभूतिं स वेद-वेदाङ्गविदिन्द्रभूतिः' (वीरो० १३/२५)

वेदवेदाङ्ग-पारङ्गत (वि०) वेद और वेदपङ्गों में निपुण। (दयो० ९१)

वेदवेदाङ्गविद् (वि०) वेद-वेदाङ्ग का ज्ञाता। (वीरो० १३/२५)

वेदव्यासः (पुं०) एक वेद विचारक, जिसने वेदों के वर्तमान रूप को प्रस्तुत किया।

वेदसूत्रं (नपुं०) वेदपद। (वीरो० १४/३) ०ज्ञानसूत्र।

वेदानुयायिन् (वि०) हिन्दु जन, वेदशास्त्र के नियमों का पालक। (जयो० १४/७९) (वीरो० २२/१६)
०याज्ञिक। (वीरो० २२/१६) ०ज्ञानविज्ञ, वेदविज्ञ।

वेदाम्बुधिः (पुं०) वेदशास्त्र रूपी समुद्र। (वीरो० १३/२६)
०वेद रहस्य।

वेदार्थः (पुं०) वेदों का अर्थ। ०वेद रहस्य, ०वेदज्ञान। **धूर्तैः** समाच्छादि जनस्य सा दृक् वेदस्य चार्थः समवादि तादृक्। (वीरो० १/३२)

वेदिः (पुं०) विद्वान्, प्राज्ञ, विज्ञ, ज्ञ, ऋषि, ज्ञानी पुरुष।

वेदिः (स्त्री०) वेदी, कटनी, मूर्ति स्थापना के लिए बनाई गई कमर के ऊपर तक ऊँचा स्थान, जो मांगलिक प्रातिहार्यों एवं सुंदरता से युक्त होती है।
०मंदिर/देवालय का उच्चासन।
०सरस्वती।
०मुद्रा।
०अंगूठी।
०चबूतरा, चौकोर स्थान। (जयो०वृ० २/७८)

वेदिका (स्त्री०) [वेदि+कन्+टाप्] ०वेदी, चबूतरा, आसन।
०लतामण्डप, निकुंज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेदिकी (वि०) ज्ञानवती, वेदिनी, वेदज्ञातृ। (जयो०वृ० १४/९)

वेदिन् (पुं०) [विद्+णिनि] ०ज्ञाता, प्राज्ञ।
०व्याख्याकार, विवेचक।

वेदिन् (पुं०) ज्ञानी पुरुष, ०माहण, ब्राह्मण।

वेदिनी (वि०) संवेदन कत्री। ०ज्ञात करने योग्य।

वेदिघ्न: (पुं०) एक द्रव्य विशेष। (जयो० ६/३१)

वेदिलिम्पनं (नपुं०) चबूतरा का लिम्पन, आंगन का लींपना। गोमयेन खलु वेदिलिम्पनप्रायकर्म लभतामितो जन:। (जयो० २/७८)

वेदी (स्त्री०) वेदी, मूर्तियुक्त स्थान, अर्हत् विराजित उच्च आसन। 'वेदीं मनोहरतमां समगान्नवीनामालोकितुं दृगमुकस्य मुदामधीना। (जयो० १०/९४)
०वेदी देवाधिकरण भूता परिष्कृता भूमि:' (जयो०वृ० १०/९३)

वेद्य (वि०) [विद्+ण्यत्] जानने योग्य। (दयो० ३१)
०वेदनीय (सम्य० ८४) 'क्षान्ति शौचमिति सदवेद्यस्य' (सम्य० ८४)
०व्याख्येय, शिक्षणीय।
०विवाह योग्य, परिणय योग्य।

वेध: (पुं०) [विध्+घञ्] छेद करना, बींधना। नासिकादि बेधन।
०छिद्रयुक्त बनाना।
०गर्त, गड्ढा।
०गहराई।
०समय का माप।

वेधक: (पुं०) [विध्+ण्वुल्] नरक के एक प्रभाग का नाम।
०कपूर।

वेधकं (नपुं०) छेद।

वेधनं (नपुं०) [विध्+ल्युट्] छेदन, बीधना।
०शून्यीकरण।
०चुभोना, घायल करना।

वेधनिका (स्त्री०) [वेधनी+कन्+टाप्] अस्त्र विशेष, नुकीला शस्त्र। ०वर्मा, छेद करने का उपकरण।

वेधनी (स्त्री०) [वेधन+ङीप्] छेद करने का उपकरण, वर्मा। छेदनी।

वेधस् (पुं०) [विधा+असुन्] धाता, विधाता (जयो०वृ० ३/६२)
०स्रष्टा, ब्रह्मा। (वीरो० १/३६)
०सूर्य।
०मदार पादप। ०विज्ञ पुरुष।

वेधसं (नपुं०) हथेली का भाग।

वेधात्मक (वि०) संवेदन लाने योग्य। (सम्य० ३१)

वेधित (भू०क०कृ०) [वेध+इतच्] छिद्रित, बींधा हुआ, छेदा गया।

वेप् (अक०) कांपना, हिलना। वेपते (जयो० २५/७१) घबराना, डरना (जयो०वृ० ६/२४) 'स्वार्थक प्रत्यय: सत्प्रकम्पवती' (जयो० १७/३०)

वेपथु: (स्त्री०) [वेप्+अथुच्] प्रकम्पन। (जयो० १७/३०, १२/७६)
०थरथरी, कंपकपी।
०कंपन।

वेपथुकारिक (वि०) कम्पन उत्पन्न करने वाली। (भक्ति०१४)

वेपथुनिमित्तं (नपुं०) कम्प का कारण। (जयो०वृ० ७/२०)

वेपनं (नपुं०) कांपना, थरथराना।

वेमन् (पुं०/नपुं०) करघा, खंड्डी।

वेमपाक (वि०) ओजस्विता का परिणाम। (जयो० ३/१७)

वेर: (पुं०) ०शरीर।
०केसर। (जयो० ५/२०)
०बैंगन।

वेरम् (नपुं०) ०देह काय। ०केशर, ०बैंगन।

वेरट: (पुं०) क्षुद्र व्यक्ति।

वेल् (सक०) जाना, पहुंचना।

वेल् (अक०) कांपना।

वेलं (नपुं०) उद्यान, वाटिका, उपवन, आरामगृह।

वेला (स्त्री०) समय, अवसर। (सुद० ७३)
०ऋतुकाल, मौसम। (सुद० ७८)
०अवकाश, अन्तराल।
०लहर, प्रवाह, धारा।
०समुद्र तट।
०सीमा, हदबन्दी।
०भाषण, प्रवचन।

वेलाकुलं (नपुं०) ताम्रलिप्त क्षेत्र।

वेलातटं (नपुं०) समुद्री तट।

वेलातिग् (वि०) वेलामति गच्छतीति। अतिकांत तट। (जयो० ११/३९) ०उद्वेलित किनारा।

वेलामूलं (नपुं०) समुद्री किनारा। ०सीमा, ०धारा का उद्गम स्थल।

वेलारण्यं (नपुं०) समुद्र तटीय अरण्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेल्ल् (सक०) जाना, पहुंचना।
वेल्ल् (अक०) कांपना, हिलना, घूमना, चक्कर काटना। (जयो० १९/९०)
वेल्ल: (पुं०) [वेल्ल्+घञ्] हिलना, कांपना।
०गतिशील होना, अग्रणी होना।
वेल्लत (वि०) प्रलुण्ठत, घूमते हुए। (जयो० १३/९०)
वेल्लनं (नपुं०) [वेल्ल्+ल्युट्] हिलना, कांपना।
वेल्लहल: (पुं०) लम्पट, लालची।
वेल्लि: (स्त्री०) [वेल्ल्+इन्] लता।
वेल्लित (भू०क०कृ०) [वेल्ल्+क्त] ०कंपायमान, हिलाया हुआ।
०टेढ़ा-मेढ़ा।
वेवी (सक०) जाना, प्राप्त करना, ग्रहण करना। ०गर्भधारण करना।
०व्याप्त करना।
०डाल देना, फेंकना।
०लाना।
वेश: (पुं०) [विश्+घञ्] ०प्रवेश, ०घुसना जाना, ०पहुंचना, ०अंदर होना।
०घर, आवास, निवास स्थल।
०चकला।
०परिधान, वेशभूषा, वस्त्र, कपड़े।
वेशक: (पुं०) [विश्+कन्] गृह, घर। ०आवास।
वेशन्त: (पुं०) [विश्+अच्] पोखर, तालाब।
वेशवार: (पुं०) मिर्च, लवणादि मसाला। (जयो० १२/३०)
वेशिन् (नपुं०) श्रृंगार, अलंकरण। (जयो० १०/७१)
वेशर: (पुं०) खच्चर, गधा।
वेशवान् (वि०) ललितवस्त्राभूषण विहित। (जयो० ५/२६)
वेशिनी (पुं०) प्रकशिनी। (जयो० २/४३)
वेश्मन् (नपुं०) [विश्+मनिन्] घर, निवास स्थल।
०भवन, आवास।
वेश्मकर्मन् (नपुं०) घर निर्माण, गृह बनाना।
वेश्मकलिंग: (पुं०) एक पक्षी।
वेश्म नकुल: (पुं०) छछूंदर।
वेश्मभू (स्त्री०) भूखण्ड, गृहभूमि।
वेश्यं (नपुं०) [विश्+ण्यत्] चकला, वेश्यालय।
वेश्या (स्त्री०) [वेशेन पण्ययोगेन जीवति-वेश्+यत्+टाप्] ०गणिका, पण्यइच्छुका।
०कामुका, रण्डी।
वेश्याचार्य: (पुं०) भडुवा, लौंडा, गांडू।
वेश्याश्रय: (पुं०) वेश्यालय, चकला।
वेश्यावशी (वि०) वेश्या के आधीन। (सुद० २१)
वेश्यायुगासीत् (वि०) वेश्या के द्वारा सेवित। (वीरो० १७/२१)
वेश्यासुता (पुं०) वेश्या की पुत्री। (वीरो० १७/१८)
वेषण (नपुं०) [विष्+ल्युट्] स्वामित्व, आधीनता।
वेषम्य (वि०) विषमता। (सुद० २/३) 'दृशो न वेषम्यमगात्कुतोऽपि स पाशुपत्यं महदाश्रितोऽपि। (सुद० २/३)
वेष्ट् (सक०) घेरना, लपेटना।
०मरोड़ना, वस्त्र पहनाना।
वेष्ट: (पुं०) घेरा, लपेटना।
०बाड़।
०पगड़ी।
वेष्टक: (पुं०) बाड़, बाड़ा, घेरा।
०लौकी।
वेष्टकं (नपुं०) पगड़ी।
०चादर।
०गोंद, रस।
०तार पीन।
वेष्टनं (नपुं०) [वेष्ट्+ल्युट्] ०लपेटना, घेरना।
०अंगूठी।
०ओढ़नी।
०संदूक।
०पगड़ी।
०बाड़ा, घेरा।
०तगड़ी, कमरबन्द।
०पट्टी।
०गुग्गुल।
०नृत्य की एक मुद्रा।
वेष्टनक: (पुं०) [वेष्टन्+कन्] संभोग की एक स्थिति।
०मिथुन क्रीड़ा।
वेष्टित (भू०क०कृ०) [वेष्ट्+क्त] आवृत्त। (जयो० ३/३६) घेरा हुआ, बांधा हुआ, लपेटा हुआ।
०लिपटा हुआ।
०रोका हुआ।
०विघ्न डाला हुआ।
०सुसज्जित किया हुआ।
वेष्य: (पुं०) जल, वारि, पानी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेसरः (पुं०) खच्चर, गधा।
वेसवारः (पुं०) [वेस्+वृ+अण्] गर्म मसाला।
वेहाणसमरणं (नपुं०) फंदा लगाकर मरना।
वेहारः (पुं०) विवाद क्षेत्र।
वेहल् (सक०) जाना, पहुंचना।
वै (अक०) सूखना, शुष्क होना।
०म्लान, निढाल, अवसन्न।
वै (अव्य०) निश्चयात्मक अव्यय, स्वीकृतिजन्य अव्यय। (सुद० ३/२०) निःसंदेह, सचमुच, यथार्थ में ही, एव। धर्मेण वै संध्रियतेऽत्रवस्तु, न वस्तुसत्त्वं तमृते समस्तु। (सम्य० ७१)
०कभी कभी यह 'वै' सम्बोधन अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।
वैंशतिक (वि०) बीस में खरीदा हुआ।
वैकक्षं (नपुं०) [विशेषेण कक्षति व्याप्नोति] ०उत्तरीय, अंगोछा, ओढ़नी, योग।
वैकटिकः (पुं०) जौहरी, पारिख।
वैकर्तनः (पुं०) कर्ण का नाम।
वैकल्प (वि०) [विकल्प+अण्] विकल्पता, ऐच्छिकता।
०संदिग्धता, अनिश्चय, असमंजस।
०संशय, संदेह।
वैकल्पिक (वि०) [विकल्प+ठक्] ०ऐच्छिक, विकल्प युक्त।
०अनिर्णीत, संदिग्ध, संशय।
वैकल्यं (नपुं०) [विकल+ष्यञ्] विकलता, निःसारता। (जयो० २८/२६)
०त्रुटि, कमी, अभाव। अस्तित्वाभाव।
०अक्षमता, विक्षोभ। (सम्य० १/६)
वैकारिक (वि०) [विकार+ठक्] विकृत, विकार विषयक।
वैकालः (पुं०) [विकाल+अण्] तीसरा प्रहर, मध्याह्नोत्तरकाल, सायंकाल।
वैकालिक (वि०) सायंकाल सम्बन्धी।
वैकुण्ठः (पुं०) विष्णु।
०इन्द्र।
वैकुण्डं (नपुं०) स्वर्ग।
०अभ्रक।
वैकुण्ठलोकः (पुं०) स्वर्ग स्थान।
वैकृत (वि०) परिवर्तित, बिगड़ा हुआ, बदला हुआ।
वैकृतं (नपुं०) परिवर्तन, अरुचि।
०अपशकुन, अनिष्ट सूचक घटना।
वैकृतिक (वि०) [विकृति+ठक्] परिवर्तित, संशोधित।
०विकृति सम्बंधी।
वैकृत्यं (नपुं०) [विकृत+ष्यञ्] परिवर्तन।
वैक्रान्तं (नपुं०) रत्न विशेष।
वैक्रिया (स्त्री०) एक ऋद्धि विशेष, जिसमें शरीर को सूक्ष्म से सूक्ष्म या बड़े से बड़ा किया जा सकता है। 'अष्टगुणैश्वर्ययोगादेकानेकाणु-महच्छरीरविविध-करणं विक्रिया' (स०सि० २/३६)
वैक्रियिकं (नपुं०) विक्रिया का प्रयोजन। 'विक्रिया प्रयोजनं वैक्रियिकम्' (त०वा० २/२६) 'विविधर्धिगुणयुक्तविकार-लक्षणं वैक्रियिकम्' (त०वा० २/४९)
वैक्रियिककाययोगः (पुं०) ऋद्धि के आश्रय से आत्मप्रदेशों में परिस्पन्दन होना।
वैक्रियिकशरीरः (पुं०) विक्रिया ऋद्धि युक्त शरीर।
वैक्लेव्ययुत (वि०) नपुंसकता रहित। (सुद० ८४)
वैखरी (स्त्री०) [विशेषेणं खं राति-रा+क+अण्+ङीप्] ०स्पष्ट उच्चारण, ध्वनि उत्पादन।
०वाक्शक्ति।
०वाणी, भाषण।
वैखानस (वि०) [वैखानसस्य इदम्+अण्] संयासी योगी से सम्बंधित।
वैखानखः (पुं०) वैरागी, वानप्रस्थ।
वैगुण्य (वि०) [विगुण+ष्यञ्] सद्गुण का अभाव, गुण विहीनता।
०त्रुटि, दोष, कमी।
वैचक्षणं (नपुं०) [विचक्षण+ष्यञ्] ०प्रवीणता, कुशलता, निपुणता।
वैचित्य (वि०) मानसिक विकलता, मन के भावों का अभाव, शोक।
वैचित्र्यं (नपुं०) [विचित्र+ष्यञ्] ०विविधता, विभिन्नता।
०नाना प्रकार।
०आश्चर्यजनक। (हित० १५)
वैचित्र्यसंदेशक (वि०) नाना प्रकार का संदेश देने वाला।
वैजननं (नपुं०) [विजनन+अच्] गर्भ का अन्तिम महिना। (जयो० २३/७५)
वैजयन्तः (पुं०) ध्वज, पताका,
०घर, भवन, महल।
०इन्द्र भवन, वैजयन्तदेव। (त०सू०पृ० ६६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैजयन्तिका (स्त्री०) ध्वज, पताका, झण्डा ०मुक्ताहार।
वैजयन्ती (स्त्री०) [विजयन्त+अण्+ङीप्] पताका, ध्वजा। (जयो० ३/८६, सुद० २/२०)
०चिह्न, प्रतीक।
०उपहार भेंट।
०माला, कण्ठाहार।
वैजात्य (वि०) जाति की भिन्नता, वर्ण की भिन्नता।
०जातिबहिष्कृत, स्वेच्छाचारिता।
वैज्ञानिक (वि०) [विज्ञान+ठक्] ०विचारक, कुशल, चतुर।
०अनुसंधान कर्ता।
वैडूर्य (नपुं०) एक मणि विशेष। (जयो०वृ० १०/८६)
०विमान विशेष। (समु० ५/१५)
वैणः (पुं०) [वेणु+अण्-उकारस्य लोपः] बांस का कार्य करने वाला।
वैणव (वि०) बांस से निर्मित।
वैणव (नपुं०) बांस का डंडा।
वैणवं (नपुं०) बांस का बीज।
वैणविकर (वि०) बांसुरी वादक।
वैणविन् (वि०) शिव, महादेव।
वैणिकः (पुं०) वीणा वादक।
वैतंसिकः (पुं०) मांस विक्रेता।
वैतण्डिकः (पुं०) वितण्डावादी। छिद्रान्वेषी।
वैतनिक (वि०) वेतन पाने वाला।
वैतनिकः (पुं०) श्रमिक, मजदूर।
वैतरणिः (स्त्री०) [वितरेण दानेन लंध्यते वितरण+अण्+ङीष्] नरक नदी।
वैतस् (वि०) वेंत से सम्बंधित।
० घुटने टेकने वाला।
वैताढ्यः (पुं०) वैताढ्य पर्वत। (वीरो० २/८)
वैतान (वि०) [वितान+अण्] यज्ञ सम्बंधी, पवित्र।
वैतानं (नपुं०) यज्ञकार्य। आहुति।
वैताली (स्त्री०) वैताली छन्द जिसके प्रथम एवं तृतीय चरण में चौदह मात्रा, द्वितीय, चतुर्थ में सोलह मात्राएं हो, पदान्त में रगण, लघु और गुरु का प्रयोग हो।
वैदः (नपुं०) [वेद+अण्] बुद्धिमान व्यक्ति।
वैदग्ध (वि०) विदग्धता, क्षीणता।
०बुद्धिमत्ता, कौशल, चतुराई। (जयो० ११/४०)
०निपुणता, स्फूर्ति, दक्षण, कुशलता।
वैदग्ध्य देखो ऊपर।
वैदर्भः (पुं०) विदर्भ का राजा।
* रचना शैली, ०दमयन्ती, ० रुक्मणी।
वैदर्भी (स्त्री०) एक काव्य रचना की शैली, वैदर्भी रीति।
वैदल (वि०) [विदलस्य विकारः, विदल+अण्] बेंत निर्मित, टहनियों से निर्मित।
वैदलः (पुं०) एक रोटी विशेष।
वैदली (स्त्री०) डलिया, टोकरी, बांस से बनी हुई टोकरी।
वैदिक (वि०) [वेदं वेत्त्यधीते वा ठञ् वेदेषु विहितः वेद+ठक्] वेद सम्बन्धी, ज्ञान सम्बंधी।
०वेदविहित, ०पवित्र। ०आर्ष। (जयो० २/४)
वैदिकः (वि०) ०आर्य, वेद ज्ञाता ब्राह्मण।
वैदिक (वि०) अनुभव करने वाला।
वैदिकजनः (पुं०) वेद ज्ञान के ज्ञाता लोग।
०वैदिक मान्यता वाले लोग। (वीरो० २२/१३)
वैदिकधर्मः (पुं०) वेद वेत्ताओं का धर्म। (वीरो० १५/५७)
वैदिकनियमः (पुं०) आर्षरीति। (जयो०वृ० २/४)
वैदिकसम्प्रदाय (पुं०) वैदिक मान्यता के सम्प्रदाय। (वीरो० २२/१६)
वैदिकसम्प्रदाय-मान्य (वि०) वैदिक सम्प्रदाय द्वारा मानी गई स्नान, आचमन आदि विधि। (वीरो० २२/१६)
वैदिकसम्प्रदायिन् (वि०) वैदिक मान्यता वाले।
अत्युद्धतत्त्वमित वैदिक सम्प्रदायी प्राप्तोऽभवत्
कुवलये वलयेऽभ्युपायी। (वीरो० २२/१४)
वैदुषी (स्त्री०) [विद्वस्+अण्+ङीप्] ज्ञान, अधिगम, बुद्धिमत्ता।
वैदूर्य (वि०) [विदूर+ष्यञ्] विदूर से उत्पन्न।
वैदूर्य (नपुं०) वैदूर्यमणि, नीलम।
वैदेशिक (वि०) दूसरे देश से सम्बन्ध रखने वाला, विदेशी, परदेशी।
वैदेशिकः (पुं०) [विदेश+ठञ्] विदेशी व्यक्ति, परदेशी जन।
वैदेश्य (वि०) [विदेश+ष्यञ्] विदेशीपन।
वैदेहः (पुं०) [विदेह+अण्] विदेह देश का राजा।
०व्यापारी, वैश्य।
वैदेहकः (पुं०) व्यापारी।
वैदेहिकः (पुं०) सौदागर।
वैद्य (वि०) [वेद्+यत्] वेद सम्बन्धी, ज्ञान जन्य, आध्यात्मिक।
०आयुर्वेद सम्बन्धी, आयुर्वेद विषयक।
वैद्यः (पुं०) [विद्या अस्ति, अस्य-विद्या+अण्] प्राणाचार्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जयो० ६/१०)

०चिकित्सक, निदानक, भैषजज्ञ। (जयो०वृ० ६/७५) (मुनि० ३१)

०विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान व्यक्ति।

वैद्यकः (पुं०) [वैद्य+कन्] चिकित्सक, वैद्य।

वैद्यकं (नपुं०) चिकित्सा पद्धति, औषध विज्ञान।

वैद्युत (वि०) [विद्युत+अण्] बिजली से उत्पन्न।

वैद्युतवह्निः (स्त्री०) बिजली की अग्नि।

वैद्युताग्निः (स्त्री०) बिजली से उत्पन्न आग।

वैद्युतानलः (पुं०) बिजली से प्राप्त होने वाली ऊर्जा।

वैद्योपक्रमः (पुं०) प्राणाचार्य उपक्रम।

०रोगी। (जयो० ६/१०)

वैधः (पुं०) नीति, व्यवहार, लोकाचार। (जयो० ५/४७)

वैधर्म्यं (नपुं०) [विधर्म+ष्यञ्] ०भिन्नता, असमानता।

०वैपरीत्य।

०अवैधता।

०अनौचित्य।

०अन्याय।

०पाखण्ड।

वैधवेयः (पुं०) [विधवा+ढक्] विधवा का पुत्र।

वैधव्य (वि०) [विधवा+ष्यञ्] विधवापन, पति विहीनता युक्त।

वैधुर्यं (नपुं०) [विधुर+ष्यञ्] ०विक्षोभ, सिहरन, कंपकंपी।

०व्याकुलता, आकुलता।

०शोकावस्था।

वैधेय (वि०) [विधि+ढक्] ०मूर्ख, मूढ, जड़, बुद्धु।

०नियमानुकूल, विहित।

०प्रतिपादित, कथित।

वैधेयः (पुं०) मूढ।

वैनतेयः (पुं०) [विनता+ढक्] गरुड़ पक्षी। (जयो०वृ० १/४४)

वैनयिक (वि०) [विनय+ठक्] शिष्टता, "विनयेन चरन्तीति वैनयिका" सौजन्य, सदाचरण। विनय को स्वीकार करने वाले।

वैनयिकः (पुं०) सामरिक रथ, युद्ध रथ।

वैनयिकवादः (पुं०) विनय को स्वीकार करने वाले मिथ्यादृष्टि।

वैनायक (वि०) [विनायक+अण्] गणधर सम्बंधी, गणेश सम्बंधी।

वैनायिकः (पुं०) [विनायं खण्डनमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः विनाय+ठक्] बौद्धमत का एक दार्शनिक सम्प्रदाय।

वैनाशिकः (पुं०) [विनाश+ठक्]०दास।

०मकड़ी।

०ज्योतिष।

०बौद्धसिद्धांत।

वैपरीत्य (वि०) ०विपरीतता, विरोधिता। (दयो० १२२)

* निर्लोमता (जयो०वृ० ११/१८)

०असंगति। (सम्य० ६)

०विपरीत वृत्ति।

वैफुल्यं (नपुं०) [विपुल ष्यञ्] ०विस्तार, विशालता।

०पुष्कलता, ०बहुलता, ०अधिकता।

वैपुल्यं (नपुं०) [विफल+ष्यञ्] निष्फलपना, निरर्थकता, विफलता। (समु० ६/६)

वैबोधिकः (पुं०) [विबोध+ठक्] चौकीदार, पहरेदार, जागृति एवं सजगता उत्पन्न करने वाला गश्ती।

वैभवं (नपुं०) [विभु+अण्] बड़प्पन, यश, महिमा।

०शक्ति, दल। (सम्य० ४१) 'दूरारूढचरित्रवैभवबलां चञ्चच्चिदर्चिर्मयीम्' (सम्य० ४१)

वैभाविकी (स्त्री०) वैभाविकी शक्ति, जीव द्रव्य और पुद्गल द्रव्य इन दोनों में एक वैभाविकी शक्ति होती है। दूसरे से मिलने पर उसके प्रभाव को स्वीकार करना और अपना प्रभाव उस पर दिखाना। (सम्य० २३)

एकोन्यतः सम्मिलतीति,
यावद्वैभाविकी शक्तिरुदेति तावत्।
तयोरथैकाकिताऽन्वये तु,
शक्तिः पुनः सा खलु मौनमेतुः।।
(सम्य० २९)

वैभ्राज्यं (नपुं०) [विभ्राज+अण्] स्वर्गीय उपवन, स्वर्गीय आराम। ०रमणीय बगीचा।

वैमत्यं (नपुं०) [विमत+ष्यञ्] ०मतभेद।

०विचारभेद।

०अनबन।

०अरुचि।

वैमनस्यं (नपुं०) [विमनस्+ष्यञ्] ०शोक, उदासी, मानसिक वेदना, बैचेनी।

वैमात्रः (पुं०) सौतेली मां का बेटा।

वैमानिक (वि०) [विमान+ठक्] विमान में आसीन।

वैमानिकः (पुं०) विमानवासी देव। 'विमानेषु भवा वैमानिकाः'

वैमुख्यं (नपुं०) [विमुख+ष्यञ्] ०विमुखता। ०मुंह मोड़ना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पलायन, प्रत्यावर्तन। वैमुख्यमप्यस्त्वभिमानिनीनामस्तीह' (वीरो० ९/३९)
०अरुचि।
०जुगुप्सा।

वैमेय: (पुं०) [विमेय+अण्] विनिमय, बदला।

वैयग्रं (नपुं०) [व्यग्र+अण्] व्यग्रता, बैचेनी, आकुलता, व्याकुलता।
०तल्लीनता, अनन्यभक्ति।

वैयर्थ्य (नपुं०) [व्यर्थ+ष्यञ्] व्यर्थता, अनुत्पादकता। (वीरो० १३/१३) वैयर्थ्य मावेदयितुं स्वमेष समीपमेति स्म सुदद्धुदेश:। (वीरो० १३/१३)

वैयधिकरण्यं (नपुं०) [व्यधिकरण+ष्यञ्] भिन्न स्थानों में होने वाला भाव।

वैया (स्त्री०) सेवा। वैयावृत्ति। (सम्य० ९२)

वैयाकरणं (नपुं०) [व्याकरणमधीते वेत्ति वा अण्] व्याकरण विषयक, व्याकरण सम्बंधी। (जयो० १/३१)

वैयाकरणमति: (स्त्री०) व्याकरण सम्बंधी दृष्टि। (दयो० ४)

वैयाघ्र (वि०) [व्याघ्र+अञ्] चीते की तरह।

वैयात्यं (नपुं०) [वियात+ष्यञ्] साहस।
०निर्लज्जता।
०अविनय।

वैयावृत्ति: (स्त्री०) ०सेवा, ०स्रुसुसा। ०प्रीतिभाव पूर्वक धर्मात्मा की सेवा। गुणानुरागात्तु करोतु वैयावृत्तयप्रणीतिं रुचयेऽस्तु वैया' (सम्य० ९२)

वैयावृत्यकर (वि०) सेवा करने वाला। (जयो० २८/४१)

वैयावृत्तियक्रिया (स्त्री०) सेवा भाव। (वीरो० ३/६)

वैयावृत्यतप: (पुं०) वंन्दनादि रूप उपकार का भाव।

वैयावृत्त्ययोग: (पुं०) वैयावृत्त्य में लगना। 'व्यापृते यत्क्रियते तद्वैयावृत्त्यम्' तस्य योग:'।

वैयासिक: (पुं०) [व्यासस्य अपत्यं, व्यास इञ्] व्यास का पुत्र।

वैरं (नपुं०) [वीरस्य भाव:]०विरोध, शत्रुता, कलह, द्वेष। (समु० ४/११)
०मनमुटाव, ईर्ष्या।
०निन्दा, ग्लानि। (जयो० १/७३()
०द्रोह, वैमनस्य। (सुद० १/१६)
०घृणा, प्रतिहिंसा।
०पराक्रम।
०शूरवीरता, बहादुरी।

वैरकर (वि०) वैर विरोध करने वाला, शत्रु विरोध करने वाला। 'आत्मीयजन शत्रुत्व विधायक:' (जयोवृ० ९/८१) 'स्वजनेषु वैरं करोतीति स्वजनवैरकर'।

वैरकार: (पुं०) शत्रुता का भाव।
०प्रतिहिंसा।

वैरकृत् (पुं०) शत्रु, द्रोह।

वैरक्तं (नपुं०) [विरक्त+अण्]०इच्छा का अभाव, सांसारिक आसक्तियों के प्रति उदासीनता।

वैरगत (वि०) शत्रुता युक्त, विरोध को प्राप्त हुआ।

वैरजन्य (वि०) विरोध स्वरूप।

वैरङ्गिक: (पुं०) [विरङ्गं विरागं नित्यमर्हति ठक्] * विरागी।
०सन्यासी, ०सद्मार्गी।

वैरनिर्यातनं (नपुं०) ०प्रतिहिंसा, ०विरोध भाव।

वैरभाव: (पुं०) विरोध भाव।

वैररक्षणं (नपुं०) विरोध की रक्षा।

वैरल्यं (नपुं०) [विरल+ष्यञ्] न्यूनता, विरलता, ढीलापन।
०मृदुता।

वैरहरणमंत्र (नपुं०) शत्रुहरण मन्त्र। (जयो० १९/६३)

वैराग्यं (नपुं०) [विरागस्य भाव+-ष्यञ्] विरक्ति, विरागी की अवस्था।
० संसार-शरीर-भोगेषु निर्वेदलक्षणम्' 'भवांग-भोग विरतिर्वैराग्यम्'
०उदासीनता, अरुचि, असंतोष।
०रंज, शोक।

वैराग्यभर्तु: (पुं०) वैराग्य स्वामी। (मुनि० ५)

वैराट: (पुं०) इन्द्रगोप नामक क्रीड़ा।

वैरात्रिक (वि०) रात्रि के पश्चात्, आधी रात पश्चात् दो घड़ी बीतने क समय विरात्री, उसका काल वैरात्रिक।

वैरिन् (वि०) [वैर+इनि] विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

वैरिन् (पुं०) शत्रु, नाशक। (जयो० वृ० ३/१०९) दुश्मन, प्रतिपक्षी। प्रताप, शत्रु (जयो०वृ० १/४०)

वैरिसंग्रह: (पुं०) शत्रुसमूह। (जयो० ३/६)

वैरिआननं (नपुं०) वैरिमुख।

वैरिमुखं देखो ऊपर।

वैरिनिवारक (वि०) विरोध शान्त करने वाला। (जयो०२०/१९)

वैरूप्यं (नपुं०) [विरूप+ष्यञ्] विरूपता, कुरूपता। ०रूपों की विभिन्नता।

वैरीश: (पुं०) अरिनृप, शुत्रराजा। (जयो०वृ० ३/२७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैरोचनः (पुं०) विरोचन का पुत्र।

वैलक्षण्यं (नपुं०) [विलक्षस्य भावः ष्यञ्] आश्चर्य ०विपरीतता, विरोध, ०अन्तर, भेद।

वैलक्ष्य (वि०) [विलक्ष+ष्यञ्] उलझन, गड़बड़ी। ०विरूपता, (सुद० ७८) कृत्रिमता, ०लज्जा।

वैलोक्यं (नपुं०) [विलोम+ष्यञ्] विरोध, व्युत्क्रम, वैपरीत्य।

वैवधिकः (पुं०) [विवध+ठक्] फेरी वाला, आवाज लगाकर वस्तु बेचने वाला।

वैवर्ण्यं (नपुं०) [विवर्णस्य भाव-ष्यञ्] निष्प्रभता, विविधता। विभिन्नता, विरूपता। (सुद० ७९)

वैवस्वतः (पुं०) [विवस्वतोऽपत्यम्-अण्] अन्तक, यमराज। (जयो०वृ० २/१३४)

वैवस्वती (स्त्री०) [वैवस्वत+ङीप्] दक्षिण दिशा। ०यमुना नदी।

वैवाहिक (वि०) विवाह सम्बंधी।

वैवाहिकं (नपुं०) परिणय, शादी।

वैवाहिकः (पुं०) पुत्रवधु का श्वसुर, दामाद का श्वसुर।

वैशद्यं (नपुं०) [विशद+ष्यञ्] 'वैशद्यं कुद्धेः ज्ञानस्य। ०विशदता, स्वच्छता, निर्मलता। ०सफेदी। धवलता। ०शान्ति, स्थिरता।

वैशसं (नपुं०) [विशस्+अण्] ० वध, विनाश, हत्या। ०दु:ख, सन्ताप, कष्ट, पीड़ा। ०कठिनाई।

वैशस्त्रं (नपुं०) [विशस्त्र+अण्] ०असुरक्षा, ०शस्त्रविहीनता, राजकीय शासन।

वैशाखः (पुं०) [विशाख+अण्] चान्द्रवर्ष का दूसरा माह। ०वैशाखमास।

वैशाखं (नपुं०) एक बाण चलाते समय की स्थिति।

वैशाखस्थानं (नपुं०) एक आसन विशेष, जिसमें एड़ियों पर जोर दिया जाता है।

वैशाखी (स्त्री०) वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशिक (वि०) [विशैन जीवति-वेश+ठक्] वैश्याओं की कला।

वैशाली (स्त्री०) बिहार प्रान्त में स्थित एक नगर-जिसका शासक राजा चेट कथा। एक गणराज्य का नाम। 'वैशाल्या भूमिपालस्य चेटकस्य समन्वयः' (वीरो० १५/१९)

वैशिष्ट्य (वि०) [विशिष्ट+ष्यञ्] ०भेद, अन्तर, विशेषता। ०विशिष्टिता, प्रधानता, अनुकूलता। (मुनि० १४) ०श्रेष्ठता, अच्छाई।

वैशेषिकं (नपुं०) वैशेषिक दर्शन, जिसके प्रणेता कणाद ऋषि माने जाते हैं।

वैशेष्यं (नपुं०) [विशेष+ष्यञ्] विशेषता, श्रेष्ठता, प्रधानता, प्रमुखता।

वैश्यः (पुं०) खेतीहर एवं वाणिज्य कर्ता। (हित०) ०दूसरे के कार्यों में सहयोग करने वाले। ०वैश्यावाणिज्ययोगतः। (हरि०वृ० ९/३९) ०वणिजोऽर्थार्जनान्यात्। (महा०पु० ३८/४६)
प्रयोजनं परेषां तु, सम्पादितुमुद्यतान्।
जंघा वलेन तानुक्त्वा, वैश्या इत्येतदाख्यया।।
(हित०सं० ८)

वैश्यकर्मन् (नपुं०) वैश्य का कर्म, व्यवसाय, वाणिज्य करना।

वैश्यकुलावतंसः (पुं०) वैश्य कुल का आभूषण। (सुद०२/१)
अथोत्तमो वैश्यकुलावतंसः सदेकसंसत्सरसीसुहंसः।।
(सुद० २/१)

वैश्यजाति (स्त्री०) वैश्य सम्प्रदाय।

वैश्यत्व (वि०) वणिक्पना। सैवाऽऽगतोऽस्ति वणिजामहहाद्यहस्ते, वैश्यत्ववर्मव हृदयेन सरन्त्यदस्ते। (वीरो० २२/२६)

वैश्यवर्गः (पुं०) वैश्य समूह। (वीरो० २२/२६)

वैश्यवर्णः (पुं०) वैश्यजाति। (जयो०वृ० १८/५०)

वैश्यवृत्तिः (स्त्री०) वैश्य का व्यवसाय, वैश्य की आजीविका।

वैश्रवणः (पुं०) [विश्रवणस्यापत्यम्] कुबेर, धनपति। ०रावण।

वैश्यागारः (पुं०) आपणक, दुकान।

वैश्याधारः (पुं०) वैश्य का आधार।

वैश्व (वि०) वार्ताजीवि। (जयो०वृ० २/१११)

वैश्वानरः (पुं०) [विश्वानर+अण्] अग्नि, आग, बह्नि। (वीरो० १/७)

वैश्वासिक (वि०) [विश्वास+ठक्] विश्वसनीय, गोपनीय।

वैषम्यं (नपुं०) [विषम+ष्यञ्] असमता, कठोरता। ०अन्याय। ०विपत्ति। संकट। ०आपत्ति। ०कठिनाई।

वैषम्यमित (वि०) विषमता। (वीरो० ३/१३) ०कठोरता, कठिनाई। ०आपत्ति, संकट। कालेन वैषम्यमिते नृवर्गे क्रौर्यं पशूनामुपयाति सर्गे। (वीरो० ११/४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैषयिक (वि०) [विषय+ठक्] विषयों से सम्बन्ध रखने वाला।
वैषयिकः (पुं०) कामुक, वासनाजन्य व्यक्ति।
वैष्टृः (पुं०) [विश+ष्ट्रन्] ०अंतरिक्ष।
०वायु, पवन।
०लोक, विश्व।
वैष्णवः (पुं०) एक सम्प्रदाय, जो शिव या विष्णु का भक्त होता है।
वैसारिणः (पुं०) [विशेषेण सरति विसारी मत्स्यः स एवं-विसा+रिन्+अण्] ०मछली, मत्स्य।
वैहायस (वि०) [विहायस्+अण्] पवन, हवा।
वैहार्य (वि०) [विशेषेण ह्रियते-वि-हृ+ण्यत्+अण्] उपहास करने योग्य व्यक्ति। साला आदि।
वैहासिकः (पुं०) [विहासं करोति-विहास+ठक्] विदूषक।
०हंसोकड़ा, मजाकिया।
वोढृ (पुं०) कुली, भार वाहक।
०पति।
०नेता, नायक।
वोढा (स्त्री०) नव विवाहिता। वोढा नवोढामिव भूमिजातरछाया-मुपान्तान्त जहात्यथानः। (वीरो०)
वोढारः (पुं०) उद्यत, तैयार। (वीरो० १६/४)
वोद्धार (वि०) समझाया गया। (जयो० १६/६८)
वोंटः (पुं०) डंठल, वृन्त।
वोद्धुर (वि०) झुकने वाला। (जयो० २/१३८)
वोद (वि०) तर, गीला, आर्द्र।
वोरकः (पुं०) लेखक, लिपिकार।
वोलः (पुं०) [वुल्+अच्] गुग्गुल, रसगन्ध।
वोल्लाहः (पुं०) अश्व विशेष।
वौषट् (अव्य०) आहूति शब्द।
व्यंशाकः (पुं०) [विशिष्टः अंशो यस्य] पर्वत, पहाड़।
व्यंशुकः (वि०) [विगतं अंशुकं यस्य] ०वस्त्रहीन, निर्वस्त्र, नग्न।
व्यंसकः (पुं०) [वि+अंस्+ण्वुल्] ०धूर्त, ठग।
व्यंसनं (नपुं०) [वि+अंस्+ल्युट्] ठगना, धोखा देना।
व्यकसत् (भू०) विकास भाव को प्राप्त हुआ। (जयो० १/८४)
व्यक्त (भू०क०कृ०) [वि+अज्ज+क्त] ०कथित, प्रतिपादित, विवेचित। (सम्य० १३५)
०प्रकटीकृत, प्रदर्शित।
०विकसित, रचित।
०स्पष्ट, साफ, स्वच्छ, सरल।
०विशिष्ट, श्रेष्ठ, उत्तम।
०ख्यात, प्रसिद्ध।
व्यक्तं (अव्य०) स्पष्ट रूप से।
व्यक्तगेयं (नपुं०) अक्षर एवं स्वर की स्पष्टता।
व्यक्तमङ्गलं (नपुं०) अभिव्यक्त मंगल। (जयो० ३/८४)
व्यक्ताव्यक्तं (नपुं०) कथित-अकथित, निरूपित-अनिरूपित। (सम्य० १३५) 'व्यक्ताव्यक्तस्वभावेनेहापूर्वकमिष्टानिष्ट' (सम्य० १३५)
व्यक्ताश्रयः (पुं०) संभाषण युक्त। (मुनि० २)
व्यक्तेश्वरनिषिद्ध (वि०) एक उत्पादन दोष, आहार क्रिया में लगने वाला दोष।
०व्यक्त ईश्वर के द्वारा रोके गए आहार को ग्रहण करना।
व्यक्तिः (स्त्री०) [वि+अञ्ज+क्तिन्] ०अभिव्यक्ति, कथन, विवेचन।
०प्रकटीकरण।
०विशद प्रत्यक्षज्ञान।
०पुरुष।
व्यग्र (वि०) [विरुद्धं अगति-वि+अग्+रक्] व्याकुल, संवेग युक्त, दुःखित, पीड़ित।
०भयभीत, शंकित, आतङ्कित।
व्यग्रताविहीन (वि०) अनाकुल, आकुलता रहित। (जयो० २३/६)
व्यङ्ग (वि०) [विगतं वा अङ्ग यस्य] ०अपंग, अंगहीन।
०विरूप, अपाहिज।
०कटाक्ष, हंसी।
व्यङ्गः (पुं०) लुञ्जा।
०मेंढक।
व्यङ्गता (वि०) कटाक्षता, हंसी। (जयो०वृ० १२/२५) 'व्यङ्गतयाऽवदत्-यद् हे आर्ये यत्त्वोक्तं भोक्तमारभेथाः' (जयो०वृ० १२/१२५)
व्यङ्गुलं (नपुं०) अंगुल का ६०वां अंश। लम्बाई का अत्यंत छोटा माप।
व्यङ्ग्य (वि०) [वि+अञ्ज्+ण्यत्] ध्वनित, व्यञ्जना शक्ति द्वारा कथित। परोक्षसंकेत द्वारा सूचित।
व्यङ्ग्यं (नपुं०) उपलक्षित संकेत।
व्यच् (सक०) ठगना, धोखा देना।
व्यचलत् (भू०) विचलित हुआ। (सुद० १२३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यच्छादि (वि०) आच्छादित। (जयो० १५/७३)

व्यज: (पुं०) [वि+अज्+घञ्] विजन, बीजना, पंखा।

व्यजनं (नपुं०) [वि+अज्+ल्युट्] ०पंखा, हवा करने का उपकरण।

व्यञ्जक (वि०) [वि+अञ्ज्+ण्वुल्] संकेतित, प्रकटित, ०स्पष्ट भाव को प्राप्त। उपलक्षित।

व्यञ्जक: (पुं०) नाटकीय भाव, हाव-भाव, हास-परिहास।
०संकेत।
०प्रतीक।

व्यञ्जनं (नपुं०) [वि+अञ्ज्+ल्युट्] व्यञ्जन अक्षर-कवर्ग से लेकर पवर्ग तक। स्वर रहित अक्षरों या अवयवों का वर्ग (जयो० ३/४९)
०संकेत, प्रकट करना।
०चिह्न, निशान, स्मृति चिह्न।
०छद्मवेश, परिधान।
०लिंगबोधक चिह्न।
०मिष्ठान्न। (जयो०वृ० ३/६०)
०खाद्य पदार्थ, विविध प्रकार के पकवान। (दयो० ९५, जयो०वृ० १२/१११) शाकादि पकवान।
०व्यञ्जनं वास्तुकोद्भूतलक्षणं तत्र सम्मतम्। (जयो०२८/३४)
०तालवृन्त, पंखा। (जयो०वृ० १२/२२)

व्यञ्जनचित्रं (नपुं०) एक अलंकार, जिसमें समस्त श्लोक की रचना में एक व्यञ्जन को चित्रित किया जाता है।

व्यञ्जनदलं (नपुं०) खाद्य समूह। (सुद० ७२)
०शब्द प्रकाशन।

व्यञ्जनवय: (पुं०) शब्द के भेद से वस्तु का ग्रहण, वस्तु भेद का अध्यवसाय।

व्यञ्जननिमित्तं (नपुं०) तिल, मशादि से सुख का कारण, चिह्न का हेतु। ०प्रतीति का कारण।

व्यञ्जनपर्याय: (पुं०) चक्षु से ग्रहण करने योग्य पर्याय, सामान्य ज्ञान का विषय।

व्यञ्जनशुद्धि (स्त्री०) व्यञ्जनाक्षर में शुद्धि।

व्यञ्जनसंक्रान्ति: (स्त्री०) श्रुतवचन का आलम्बन।

व्यञ्जनाचार: (पुं०) प्राप्त अर्थ का ग्रहण। 'व्यञ्जनमव्यक्तं शब्दादिजातम्' तस्यावग्रहो (जैन०ल० १०२६) 'पत्तत्थगहणं वंजणावग्गहो' (धव० १/३५५)

व्यञ्जित (भू०क०कृ०) [वि+अञ्ज्+क्त] ०ध्वनित, व्यक्त, प्रकट हुआ।
०साफ किया गया, संकेतित।
०चिह्नित, चित्रित, अभिव्यक्त।

व्यडम्बक: (पुं०) अरण्ड पेड़।

व्यतिकर: (पुं०) [वि+अति+कृ+अप्] संज्ञापरिवर्तन, अदला-बदली। (जयो० ११/५७)
०मिश्रण, इकट्ठा मिला देना।
०सम्मिलन, मिलाप, सम्पर्क।
०रगड़ना।
०घटना।
०सम्भूति।
०वृत्तान्त।
०अवसर।
०संकट।

व्यतिकीर्ण (भू०क०कृ०) [वि+अति+कृ+क्त] मिश्रित, मिला हुआ, संयुक्त।

व्यतिक्रम: (पुं०) [वि+अति+क्रम्+घञ्] ०अतिक्रमण, विचलन, उल्लंघन।
०भंग विनाश।
०अवहेलना, उपेक्षा, भूल।
०वैपरीत्य, उलट।
०विपर्यस्त।
०बीता हुआ, गुजरा हुआ।
०ग्रहण करने में दोष लगना, अतिचार आना। 'विशेषेण पद भेदकारणतोऽतिक्रमो व्यतिक्रम:' (जैन०ल० १०३७)

व्यतिक्रमणं (नपुं०) विषयोपकरण में प्रवृत्ति, उपेक्षा भाव की वृत्ति।

व्यतिक्रान्त (भू०क०कृ०) [वि+अति+क्रम+क्त] ०वियुक्त, भिन्न, पृथक्।
०अतिक्रमण, उल्लंघन।
०उपेक्षित, बीता हुआ।

व्यतिरिक्त (भू०क०कृ०) [वि+अति+रीच्+क्त] ०वियुक्त, भिन्न। (हित० १८)
०प्रत्याहृत, रोका हुआ।

व्यतिरेक: (पुं०) [वि+अति+रिच्+घञ्] ०भेद, अन्तर।
०वियोग।
०निष्कासन, अपवर्जन।
०वैषम्य।
०असमानता।
०अनन्वय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०एक अलंकार (जयो०वृ० १/३) जिसमें किसी विशेष दशाओं में उपमान की अपेक्षा उपमेय को श्रेष्ठतम बताया जाता है। (जयो०वृ० १/३) 'उपमानाद्यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः' (काव्य० १०) केनचिद्यत्र धर्मेण द्वयोः संसिद्धसाम्ययोः भवत्येकतराधिक्यं व्यतिरेकः स उच्यते।। (वाग्भटालंकार ४/८३) 'गुप्तिभागिह च कामवत्तुः न, पक्षपाति च शीतरश्मिवत्पुनः। (जयो० ३/१५)

०भिन्न संतान, जो विसदृशता रूप अवस्था है।

०कारण के अभाव में जो कार्य का भी अभाव है। (वीरो० १९/२०)

०अन्वय के साथ कार्य-कारण का भाव। (हित० सं०१६)

व्यतिरेकदृष्टान्तः (पुं०) साध्य के अभाव में साधन का अभाव जहां कहा जाता है। 'साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्तः' (परीक्षा ३/४४)

व्यतिरेकिन् (वि०) [व्यतिरेक+इनि] ०आगे बढ़ जाने वाला, आगे निकल जाने वाला।

०अपवर्जन करने वाला।

०अभाव दर्शाने वाला।

व्यतिरेकोपमा (स्त्री०) व्यतिरेक अलंकार और उपमा। (जयो० ३/१५)

व्यतिषक्त (भू०क०कृ०) [वि+अति+शञ्ज्+क्त] पारस्परिक सम्बन्धयुक्त, आपस में मिला हुआ, संसक्त, मिश्रित।

व्यतिषंगः (पुं०) [वि+अति+शञ्ज्+घञ्] ०संयोग, मिलाप।

०पारस्परिक सम्बंध।

०अन्योन्य सम्बन्ध, एकनेकता।

व्यतिहारः (पुं०) [वि+अति+हृ+घञ्] ०विनिमय।

०लेन-देन।

०अदला-बदली।

व्यतीत (भू०क०क०) [वि+अति+इ+क्त] ०बीता हुआ हुआ।

०समाप्त। (समु० ४/१९)

०यापित। (जयो०वृ० १८/८२)

०विसर्जित, परित्यक्त, छोड़ा गया।

व्यतीति (वि०) व्यपगम। (जयो० १८/)

व्यतीत्य (वि०) हितकर। (जयो० १/६) (सुद० ११६)

व्यतीपातः (पुं०) [वि+अति+पत्+घञ्] ०अनादर, अपमान, तिरस्कार।

०पूर्ण प्रयाण, अति गतिशीलता।

०सम्पूर्ण विचलन।

व्यत्य (वि०) समाप्त। (सुद० १/४६)

व्यत्ययः (पुं०) [वि+अति+इ+अच्] ०पार करना।

०उस पार होना।

०अभिप्राय। (जयो० २२/५८)

०व्युत्क्रान्ति।

०अन्तः परिवर्तन, (जयो० ६/६९) रूपान्तरण।

०अवरोध, अड़चन।

०विरोध।

०विपर्यस्त, वैपरीत्य।

व्यत्यस्त (भू०क०कृ०) [वि+अति+अस्+क्त] व्युत्क्रान्त, विपर्यस्त।

०विपरीत, विरोधी।

०असंगत।

०विकीर्णगत।

व्यत्यासः (पुं०) [वि+अति+अस्+घञ्] ०विरोध, असंगत विपरीतता।

०व्युत्क्रान्त।

व्यथ् (अक०) व्यथित होना, व्याकुल होना।

०दु:खी होना, कष्ट होना।

०शोकाक्रान्त होना, अशान्त होना।

०खिन्न होना, म्लान होना।

०कांपना, भयभीत होना।

व्यथक (वि०) [व्यथ्+णिच्+ण्वुल्] ०दु:खद, कष्टकर, व्याकुलित।

व्यथनं (नपुं०) [व्यथ्+ल्युट्] सताना, पीड़ा देना।

व्यथा (स्त्री०) [व्यथ्+अङ्+टाप्] पीड़ा, कष्ट, वेदना। (जयो० २/४८)

०भय, चिंता, व्याकुलता।

०विक्षोभ, अशांति।

०रोग।

व्यथाकथा (स्त्री०) व्यर्थ कथा। व्यथाकथामेष कुतः प्रयातु। (वीरो० १२/३४)

व्यथाकर (वि०) व्यथां करोतीति व्यथाकरः, बाधाकारक। (जयो० २/२६)

व्यथित (भू०क०कृ०) [व्यथ्+क्त] ०पीड़ित, दु:खी, कष्ट युक्त। (जयो० १/८)

०आतङ्कित।

०विक्षुब्ध।

०अशान्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यध् (सक०) बींधना, कष्ट पहुंचाना। ०प्रहार करना, मारना, घात करना।
०छिद्र करना, खोदना।
०गर्त बनाना।

व्यधः (पुं०) [व्यध्+अच्] बींधना, प्रहार करना, नष्ट करना, घात करना।
०घायल करना।
०छिद्र करना।

व्यधिकरणं (नपुं०) [वि+अधि+कृ+ल्युट्] भिन्न आधार, पृथक् आश्रय।

व्यध्यः (पुं०) [व्यध्+ण्यत्] निशाना, लक्ष्य।

व्यनक्तिः (स्त्री०) प्रकटीकरण। (जयो० ११/१३)

व्यनपायि (वि०) विच्छेदरहित, अखण्ड। (जयो० १३/२७)

व्युनुनादः (पुं०) प्रतिध्वनि, ऊँची गूंज।

व्यन्तरः (पुं०) [विशिष्टः अन्तरो यस्य] ०पिशाच, यक्ष। अनेक प्रकार के निवास युक्त देव। (भक्ति० ३५) 'विविधदेशान्तराणि येषां निवासास्ते व्यन्तरा।'' व्यन्तर जाति के देव। 'व्यन्तरा किन्नर किं पुरुष-महोरग-गन्धर्व' यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचा (त०सू० ४/११)
०चार निकायों के देवों में द्वितीय व्यन्तरदेव। (त०सू०पृ० ५६)

व्यन्तरी (स्त्री०) यक्षिणी। (सुद० १३३) देवी (सुद० ११६)

व्यप् (सक०) फेंकना।
०घटाना।
०दूर हटाना।
०अलग करना।

व्यपकृष्ट (भू०क०कृ०) [वि+अप्+कृष+क्त] ०हटाया हुआ, दूर किया हुआ।

व्यपगत (भू०क०कृ०) [वि+अप्+गम+क्त्] ०विसर्जित, *हटाया गया, दूर किया गया।
०अन्तर्हित।

व्यपगमः (पुं०) [वि+अप्+गम+अप्] विसर्जन, अन्तर्धान।

व्यपत्रय (वि०) [विगता अपत्रया यस्य] निर्लज्ज, ढीठ, लज्जा रहित।

व्यपदिष्ट (भू०क०कृ०) [वि+अप्+दिश्+क्त] नामांकित किया गया।
०प्रस्तुत किया गया।

व्यपदेशः (पुं०) [वि+अप्+दिश्+घञ्] व्याजता (वीरो० ६/३६)
०संदेश।
०छल (जयो० ५/४५) सूचना, निरूपण।
०नाम, अभिधान।
०उपाय, प्रयत्न।

व्यपदेष्टृ (पुं०) [वि+अप+दिश+तृच्] छलिया, ठग।

व्यपरोपणं (नपुं०) [वि+अप्+रुह्+णिच्+ल्युट्] ०उन्मूलन, उखाड़ना,
०हटाना, भगाना
०फाड़ना, काटना।

व्यपहारः (पुं०) आहार सम्बंधी दोष।

व्यपाक् (सक०) निकाल देना, बचाना। (मुनि० ६)

व्यपाकृतिः (स्त्री०) [वि+अप+अ+कृ क्तिन्] ०निष्कासन, दूरीकरण, निकाल देना।

व्यपायः (पुं०) [वि+अप+इ+घञ्] ०अन्त, समाप्ति, अभाव नाश, विनाश, क्षति।
०लोप।

व्यपायि (वि०) अपाययुक्त। (जयो०वृ० २/१३५)
०भयभीत। (जयो०वृ० २/१३५)

व्यपाश्रयः (पुं०) [वि+अप+आ+श्रि+अप्] ०शरण लेना, सहारा लेना, आश्रय लेना।
०विश्वास करना।

व्यपेक्षा (स्त्री०) [वि+अप्+ईक्ष्+अङ्+टाप्] ०आशा, इच्छा, वाञ्छा।
०विचार, व्यवहार, सम्बन्ध।

व्यपेत (भू०क०कृ०) [वि+अप्+इ+क्त] ०वियुक्त, रहित। (भक्ति० १६)
०विसर्जित, परित्यक्त।

व्यपोढ (भू०क०कृ०) [वि+अप्+वह्+क्त] ०विपरीत, विरोधी।
०प्रदर्शित, बतलाया।
०प्रकटीकृत।

व्यपोहः (पुं०) [वि+अप्+ऊह्+घञ्] ०दूर करना, अलग करना, निकालना।

व्यभिधरित (वि०) ०विलक्षण होता हुआ, ०समझा जाता, ०दिखाई पड़ता है। (हित० १८)

व्यभिचारः (पुं०) [वि+अभि+चर्+घञ्] ०कुकर्म, कुशील, कुसेवन।
०कुमार्गनुसरण, दुराचरण।
०दुःशीलाचरण। (जयो० १/४०)
०अतिक्रमण, उल्लंघन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०मारण कर्म। (जयो०वृ० १/४०)

०विच्छेद्यता, अनास्था, अविश्वास।

०अभक्ति, अशुद्धि, पाप।

०असंगति, अनियमितता, अपवाद।

०हेत्वाभास, साध्य के न होने पर भी हेतु की विद्यमानता। विलक्षणत्वादिव्यत्र, व्यभिचारः पुरादिना। (हित० १८)

व्यभिचारभृत (वि०) अनियमित्ता होना। पदत्वाद् ब्राह्मण पदमद्वैते व्यभिचारभृत्।

व्यभिचारलीन (वि०) व्यभिचार में तत्पर। (जयो० १/४०) (हित० सं० १८)

व्यभिचारिणी (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री, सतित्व विहीन स्त्री, पररमणरती स्त्री।

व्यभिचारिन् (वि०) [व्यभिचार+इनि] ०अनियमित, असंगत।

०असत्य, मिथ्या।

०दुःशीलाचरण। (जयो०वृ० १/४०)

०पथभ्रष्ट, भ्रान्त।

०श्रद्धाहीन, परस्त्रीगामी पुरुष।

व्यभिचारिभावः (पुं०) ०असंगत भाव, ०मिथ्याभाव, रस के विभाव, अनुभाव और व्यभिचारि भाव।

०नियमित रूप से किसी रस के साथ न रहने से व्यभिचारिभाव है। संचारी भाव का नाम व्यभिचारि भाव है।

व्यय् (सक०) जाना, पहुंचना। ०व्यय करना, प्रदान करना, अर्पण करना।

०फेंकना, डालना, छोड़ना।

०हांकना।

व्यय (वि०) [वि+इ+अच्] विनाश, लोप, हानि। (भक्ति०४)

०परिवर्तनशील, परिणमन युक्त।

०क्षय, ह्रास, अधःपतन।

०सर्च, परिव्यय, विनियोग। (जयो० २/११३)

०अपव्यय। 'पूर्व भावविगमो व्ययनं व्ययः'

०पूर्व पर्याय का विनाश।

व्ययनं (नपुं०) [व्यय्+ल्युट्] खर्च करना, विनाश करना, हानि करना।

व्ययस्थान (नपुं०) नाशस्वरूप, राहुग्रहनाश रूप। (जयो० १५/६९)

व्ययार्थ (वि०) [व्यगतोऽर्थो यस्य तद् व्ययार्थम्] अन्यथा बात, निष्प्रयोजन। (जयो० १२/१४६)

०विनाशनार्थ, खर्च हेतु।

व्ययित (भू०क०कृ०) [व्यय्+क्तु] व्यय किया गया, खर्च किया गया, क्षय ग्रस्त।

०हानियुक्त, विनाश युक्त।

व्ययिनी (वि०) हानिकर्त्री। (जयो० १५/३७)

व्ययीकरणं (नपुं०) विनाश रूप। (जयो०वृ० ९/१)

व्यर्थ (वि०) [विगतोऽर्थो यस्मात्] निरर्थक, विफल, अर्थ हीन, निष्प्रयोजन (जयो० २/७१) प्रयोजन रहित। व्यर्थमेव गुरुताप्रकाशिनः कं श्रयन्तु किल शर्मनाशिनः (जयो० २/७१)

व्यर्थता (वि०) निष्प्रयोजनता, निरर्थकता। (हित० १५)

गोत्ववत् सदृशाकारं, विप्रत्वमिति चोदितम्।

तथा प्रतीत्यभावेन, व्यर्थतामेव गच्छति।। (हित० १५)

व्यर्थीकृत (वि०) बेकार किया हुआ, निरर्थक हुआ, निष्प्रयोजन को प्राप्त हुआ। (वीरो० १४/३३)

व्यलीक (वि०) [विशेषेण अलति-वि+अल्+कीकन्] ०मिथ्या, झूठ, असत्य।

०कुत्सित, असुखद, अनभिमत।

व्यलीकं (नपुं०) अप्रिय, दुःखद।

०पीड़ा शोक, दुःख, संताप।

०व्याकुलता।

०झूठ, असत्य।

व्यलीकिन् (वि०) असत्य बोलने वाला, झूठ बोलने वाला।

व्यलीकिनोऽप्रत्ययसम्विधाऽतः प्रोत्पादयेस्तं न कदापि मातः।

व्यलोक (वि०) देखा गया। (दयो० ५६) (समु० १/९)

व्यलोपिन् (वि०) हरण करने वाला, लोपमि। (जयो० १/६२)

'लुप्तप्राया जातेत्यर्थः' (जयो० ३/३२)

व्यवकलनं (नपुं०) [वि+अव+कल+ल्युट्] वियोग, विछोह, घटाना, एक राशि से दूसरी राशि को कम करना।

व्यवक्रोशनं (नपुं०) [वि+अव+क्रुश+ल्युट्] ०तू तू मैं मैं करना, गाली-गलौच करना।

०व्यर्थ में विवाद करना।

व्यवच्छिन्न (भू०क०कृ०) [वि+अव+छिद+क्त] ०वियुक्त, विभक्त, विभाजित।

०अंकित, चिह्नित।

०अवरुद्ध, बाधित।

०काट डाला गया, फाड़ा गया।

व्यवच्छेदः (पुं०) [वि+अव+छिद्+घञ्] ०विभाजन, वियोजन, विनाश, घात।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०विभेदक, भिन्न भिन्न करना।

०वैषम्य, विपरीतता।

०ग्रन्थ का परिच्छेद, अनुभाग।

व्यवधा (स्त्री०) [वि+अव+धा+अङ्+टाप्] ०परदा, व्यवधान, रोक, आवरण।

व्यवधानं (नपुं०) रोक, आवरण, परदा। (जयो० १७/२५)

०अवरोध, हस्त:क्षेप, वियोग।

०छिपाना, अन्तर्धान, व्यंशन।

०अवकाश, अन्तराल।

व्यवधायक (वि०) [वि+अव+धा+ण्वुल्] ०आवरण, रोक, ढकना।

०अवरोध, अन्तर्धान।

व्यवधि: (स्त्री०) [वि+अव+धा+कि] ०आवरण, हस्तक्षेप, गतिरोध।

व्यवसाय: (पुं०) [वि+अव+सो+घञ्] ०प्रयत्न, व्यापार, चेष्टा।

०उद्योग, वाणिज्य, व्यवहार।

०अवाय, अनुष्ठेय के अनुष्ठान में उत्साह रखना।

०कृत्य, कर्म, क्रिया। (जयो०वृ० ३/१७)

०नौकरी, धन्धा, प्रवृत्ति।

व्यवसायगत (वि०) प्रयत्नशील।

व्यवसायघोष: (पुं०) वाणिज्य संघ।

व्यवसायचेष्टा (स्त्री०) उद्योग की चेष्टा। (समु० १/३१)

व्यवसायजन्य (वि०) व्यवहार युक्त।

व्यवसायहीन (वि०) प्रयत्न रहित, उद्योग से विमुख। (समु० १/३३)

व्यवसायिन् (वि०) [व्यवसाय+इनि] ०उद्योगी, परिश्रमी, ऊर्जाशील।

०चेष्टायुक्त, प्रयत्नशील।

०दृढ़ संकल्पी, धैर्यगत।

व्यवसित (भू०क०कृ०) [वि+अव+सो+क्त] संकल्पित, धैर्ययुक्त, प्रयत्नशील, उद्यमवान्।

०निश्चित, निर्धारित, आयोजित।

०प्रयास किया गया।

व्यवस्था (स्त्री०) [वि+अव+स्था+अङ्+टाप्] ०स्थिरता, निश्चितता।

०दृढ़ता, धैर्यता।

०विभाग, विभाजन। (वीरो० १८/१३)

०क्रम स्थापन।

०नियम पद्धति। (सम्य० १२५)

०सहमति, स्वीकृति।

०अवस्था, दशा। वीक्ष्येदृशीमङ्गभृतामवस्थां तेषां महात्मा कृतवान् व्यवस्थाम्। (वीरो० १८/१३) विभज्य तान् क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रभेदेन मेधा-सरितां समुद्र:।। (वीरो० १८/१३)

व्यवस्थापनं (नपुं०) [वि+अव+स्था+ल्युट्] ०क्रमबन्धन, समाधान, निर्धारण।

०नियम, विधान, निश्चय।

०स्थिरता।

०दृढ़ता, धैर्य।

०वियोग।

व्यवस्थापक (वि०) [वि+अव+स्था+णिच्+ण्वुल्]०व्यवस्था करने वाला, प्रबन्धक।

०संयमक।

व्यवस्थापनं (नपुं०) [वि+अव+स्था+णिच्+ल्युट्] ०निर्धारण, निश्चयकरण। (जयो०वृ० २/२)

०स्थिर करना, दृढ़ करना, नियमित करना।

व्यवस्थापित (भू०क०कृ०) [वि+अव+स्था+णिच्+क्त]

०क्रमबद्ध, निश्चित।

०अवस्थित, दृढ़ता युक्त।

व्यवस्थित (भू०क०कृ०) [वि+अव+स्था+क्त] ०निश्चित, अवस्थित, स्थिर।

०निर्धारित, नियमित।

०अवलम्बित, आधारित।

०वियुक्त, क्रम युक्त किया गया।

व्यवस्थिति (स्त्री०) स्थिरता। (जयो० २/२)

व्यवहर्तृ (पुं०) [वि+अव+हृ+तृच्] ०प्रबन्धकर्ता, व्यवस्थापक।

०न्यायधीश।

०नियमन कर्ता, निर्धारण करने वाला व्यक्ति।

व्यवहृ (अक०) घूमना, चलना, परिभ्रमण करना। (समु०२/२०) व्यवहारन-संचरन् (जयो०वृ० २/१८)

व्यवहार: (पुं०) [वि+अव+हृ+घञ्] ०वृत्ति, प्रवृत्ति।

०व्यवसाय। (जयो०वृ० १३/९)

०आचरण, क्रिया, कर्म। (सम्य० १२६) 'विधिपूर्वकमवहरणं व्यवहार:' (जैन०ल० १०३९)

०रीति, पद्धति, नियम।

०प्रचलन, प्रथा, प्रशासन।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०विशेष का कथन करने वाला, विकल्प प्रतिपादक।
सद्वृत्तिरूपं चरणं श्रुतं च तथैव नाम व्यवहारमंचत्।
(सम्य० १२८)
०वस्तु विवेचन/स्वरूप विवेचन की पद्धति-
श्रद्धानाधिगमोपेक्षाः याः पुनः स्युः परात्मनाम्।
सम्यक्त्वज्ञानवृत्तात्मा, स मार्गो व्यवहारतः।। (सम्य० ८३)

व्यवहारज्ञ (वि०) व्यवसाय को समझने वाला, विशेष भेदादि का ज्ञायक।

व्यवहारतन्त्रं (नपुं०) आचरणक्रम।

व्यवहारतन्तुः (पुं०) मोक्षमार्ग, व्यवहार से सम्बन्धित मोक्षमार्ग। (सम्य० १२६)

व्यवहार दर्शनं (नपुं०) आचरण प्रधान दर्शन।
०व्यवहार से श्रद्धाभाव।

व्यवहारध्यानं (नपुं०) जिस ध्यान में आत्मा के अति अन्य का आवलम्बन होना।

व्यवहारनयं (नपुं०) सामान्य के अभाव के लिए सब द्रव्यों में जो प्रवृत्त होता है।
०संग्रहनय ने द्वारा ग्रहण किये गए पदार्थों का भेद व्यवहार-नय है।

व्यवहारपदं (नपुं०) व्यवहार का विषय।

व्यवहारपरमाणु (पुं०) आठ सन्ना सन्न द्रव्यों का एक व्यवहार परमाणु होता है।

व्यवहारपल्यं (नपुं०) एक प्रमाण विशेष, प्रमाणांगुल से निष्पन्न योजन प्रमाण चौड़े, लम्बे और गहरे तीन गढ्डे करें। उसमें वालाग्र से भरना व्यवहारपल्य है।

व्यवहारमातृका (स्त्री०) कानूनी प्रक्रिया।

व्यवहारविधिः (स्त्री०) विधि संहिता, कानून नियम।

व्यवहारविषयः (पुं०) कानून योग्य विषय।

व्यवहारसत्यं (नपुं०) लोक व्यवहार से सम्मत सत्य, जैसे-रोटी पकाओ।

व्यवहार सूर्यः (पुं०) सौभाग्यसूर्य।

व्यवहारहिंसा (स्त्री०) शस्त्रादि से हिंसा।

व्यवहारिन् (वि०) व्यवहार अनुष्ठान में प्रवृत्त।

व्यवहित (वि०) अन्तर्हित हेतु विषयक कथन, अलग-अलग रखना हुआ, बाधित, रोका गया।

व्यवहृतिः (स्त्री०) व्यवहार। (जयो० २/५) अभ्यास, प्रक्रिया।

व्यवहारिका (स्त्री०) प्रथा, पद्धति, रीति।

व्यवायः (पुं०) [अव+अय्+अच्] ०सम्भोग, मैथुन, सुरत। व्यवसायः सुरतेऽन्तर्द्धौ'इति विश्वलोचनः। (जयो०वृ० २७/१२)
०विश्लेषण, पृथक्करण, वियोजन।
०विघटन।
०आवरण, आच्छन्न, आवृत्त।
०हस्तक्षेप, अंतराल, व्यवधान।

व्यवायं (नपुं०) आभा, कान्ति, दीप्ति।

व्यवायिन् (पुं०) [व्यवाय+इनि] ०कामुक व्यक्ति, भोगाकांक्षी पुरुष।
०कामोद्दीपक।

व्यवेत (भू०क०कृ०) [वि+अव+इ+क्त] वियोजित, विश्लिष्ट।
०पृथक् भिन्न।

व्यशेषन् (भू०) भरा हुआ। (जयो० १/२६)

व्यष्टि (स्त्री०) एकाकीपन, वैयक्तिकता।
०वितरण शील विस्तार।

व्यसनं (नपुं०) [वि+अस्+ल्युट्] ०बुरी आदत, बुरी लत।
०अनुपसेव्य का सेवन, अभक्ष का भक्षण, अखाद्य का उपयोग।
०अपेय का पीना।
क्षौद्रं किलाक्षुद्रमना मनुष्यः किमु सञ्चरेत्।
भङ्गातमाखुसुलफादिषु व्यसनितां हरेत्।। (सुद० १३०)
अभ्यास-खङ्गस्तस्य व्यसनमभ्यासस्तस्य आपद्विपत्तिर्यस्य (जयो०वृ० १/७५)
०पाप। (जयो०वृ० १/१०९)
०विपत्स्थान, कष्टमयस्थान। (जाये०६/४९)
०कल्याणमार्ग को भ्रष्ट करने वाला, श्रेयस्कर मार्ग घातक।
०विपत्ति, आधि, रोग, कष्ट।
०अनिष्ट, संकट, अभाग्य।
०पतन, पराजय, दोष, विविध कष्ट। (जयो०वृ० २/१२५)
०हानि, विनाश, क्षति, आघात।
०जुटना, संलग्न होना।
०हवा, वायु, पवन।

व्यसनगत (वि०) व्यसन को प्राप्त हुआ।

व्यसनभाव (पुं०) दोष भाव।

व्यसनसङ्कुलः (वि०) व्यसन समूह युक्त, विविध कष्टों से घिरा हुआ। 'व्यसनैर्विविधकष्टैः संकुला व्याप्ता भवेदिति' (जयो०वृ० २/१२५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्यूत-मांस-मदिरा-पराङ्गनापण्यदार-मृगयाचुराश्च ना।
नास्तिकत्वमपि संहरेत्तरामन्यथा व्यसनसङ्कुला धरा।।
(जयो० २/१२५)

व्यसनिन् (वि०) [व्यसन+इनि] दुव्यसनी। (दयो० ४१)०अभागा, भाग्यहीन, दुश्चरित्र शील।

व्यसु (वि०) [विगता: असव: प्राणा: यस्य] मृतक, निर्जीव, अचेतन।

व्यस्त (भू०क०कृ०) [वि+अस्+क्त]०वियुक्त, विभक्त।
०विक्षुब्ध, कष्टमय, अव्यवस्थित।
०क्रमहीन, क्रमरहित, विश्रृंखिल।
०विक्षिप्त, डाला हुआ, फेंका गया।
०बिखेरा हुआ, हटाया हुआ।

व्यस्तार: (पुं०) गंडस्थल से मद झरना।

व्याकरणं (नपुं०) [व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा: येन-वि+आ+कृ+ल्युट्] विग्रह, विश्लेषण।
०एक ग्रन्थ, जिसमें संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, कृदन्त, तद्धित, समास, सन्धि आदि का स्पष्टीकरण होता है। (जयो०वृ० १५/३५) (जयो०वृ० १/९५) 'धातुतो भू प्रभृतेरग्रे पुरतो विधिर्विधानं प्रत्ययादिप्रदानलक्षणं येन स:। गुणश्च वृद्धिश्च गुणवृद्धी व्याकरणशास्त्रोक्ते संज्ञे तद्वान्, पुनस्तद्धितं संज्ञात: संज्ञान्तरकरणार्थं प्रत्ययविधानम्। (जयो०वृ० १/९५)

व्याकरणाज्ञानं (नपुं०) शब्द प्रक्रिया का बोध। (जयो०वृ०१/९५)

व्याकरणशास्त्रं (नपुं०) व्याकरण ग्रन्थ। (जयो०वृ० ५/४२)

व्याकार: (पुं०) [वि+आ+कृ+घञ्] ०रूपान्तरण, रूपपरिवर्तन।
०विरूपता, विवर्णता।

व्याकीर्ण (भू०क०कृ०) [वि+आ+कृ+क्त] बिखेरा हुआ, फैला हुआ, विस्तृत किया हुआ।
०अस्तव्यस्त किया।
०यत्र तत्र विक्षिप्त।

व्याकुल (वि०) [विशेषेण आकुल:] ०आकुल, खेदयुक्त, विक्षुब्ध।
०उत्कल। (जयो०वृ० २१/९)
०घबराया हुआ, दु:खी, पीड़ित।
०किंकर्त्तव्य विमूढ़, शोकाकुल। (जयो० १२/१२९)
०आतंकित, उद्विग्न, भयभीत, भयाक्रान्त।
०संलग्न, तत्पर, व्यस्त।

व्याकुलित (वि०) [वि+आ+कुल+क्त] ०आतंकित, उद्विग्न, शोकग्रस्त।
०भयभीत, घबराया हुआ।

व्याकुलीभूत (वि०) घबराया हुआ। (जयो०वृ० १/५९)

व्याकूति: (स्त्री०) धोखा, छल, छद्मवेश।

व्याकृ (सक०) बिगाड़ना, विकृत करना, रूप परिवर्तन करना। स्पष्ट करना। (जयो०वृ० २/४३)
०स्पष्ट करना, व्याख्या करना।

व्याकृत (भू०क०कृ०) [वि+आ+कृ+क्त] ०विश्लिष्ट, व्याकृष्ट।
०व्याख्यात, कथित, निरूपित।
०स्पष्ट किया गया, समझाया गया।
०विकृत, बिगाड़ा गया, विरूपित।

व्याकृति: (स्त्री०) व्याकरण शास्त्र। व्याकृतिं व्याकरणं (जयो०वृ० २/५५) 'व्याकृतेर्व्याकरणस्य सत्क्रिया प्रतिभाति' (जयो०वृ० १५/३५)

व्याक्रोश (वि०) [वि+आ+क्रुश्+अच्] ०पुष्पित, प्रफुल्लित, खिला हुआ।
०मुकुलित, विकसित।
०विकास युक्त।

व्याक्षेप: (पुं०) [वि+आ+क्षिप्+घञ्] ०उछालना, ऊपर फेंकना, इधर-उधर विकीर्ण करना।
०अवरोध, गतिरोध, रुकावट।
०विलम्ब, उलझन।

व्याख्या (स्त्री०) [वि+आ+ख्या+अङ्+टाप्] ०स्फुटिक्रिया प्राप्त टीका। (जयो० ३/३६)
०स्पष्टीकर, व्याख्या, वृत्ति, टीका, विवरण, टिप्पण, भाष्य।
०वृतान्त, वर्णन।

व्याख्यात (वि०) [वि+आ+ख्या+क्त] ०कथित, निरूपित, प्ररूपित।
०वर्णित, विवेचित।
०स्पष्टीकरण युक्त, विवृत, भाष्य युक्त।

व्याख्यानं (नपुं०) [वि+आ+ख्या+ल्युट्] ०भाषण, प्रवचन, उपदेश। (जयो०वृ० १/५५)
०सूचना, वर्णन, कथन।
०स्पष्टीकरण, विवृति, अर्थ निरूपण।

व्याख्याकरणं (नपुं०) विवरण, विवेचन। (जयो०वृ० ५/९५)

व्याख्याप्रज्ञप्ति (स्त्री०) एक आगम, जिसमें आठ हजार प्रश्नों का निरूपण है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्याख्याय (सक०) व्याख्यान करना, उपदेश करना। (भक्ति० ३२)

व्याघट्टनं (नपुं०) [वि+आ+घट्+ल्युट्] ०मथना, रगड़ना। ०बिलोना, मंथन क्रिया। ०घर्षण करना, माजना।

व्याघात: (पुं०) [वि+आ+हन्+क्त] प्रहार, विघ्न, बाधा, विघात, रुकावट। ०वचन अवरोध, आघात।

व्याघ्र: (पुं०) [व्याजिघ्रति-वि+आ+घ्रा+क] ०बाघ, चीता। ०मुख्य, प्रधान, प्रमुख।

व्याघ्रनायक: (पुं०) गीदड़।

व्याघ्रि (स्त्री०) मादा चीता, बाघिन। (दयो० २०) अनेन चिन्तातुरमानसा तु सा, विपद्य च व्याघ्रि अभूदहो रुषा। (समु० ४/८)

व्याघ्री (स्त्री०) चीता, बाघिन।

व्याच्छन्न (वि०) कृशीकरण, तंग, क्षीणता युक्त। (जयो०वृ० १३/६७)

व्याज: (पुं०) [व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन-वि+अज्+घञ्] ०धोखा, छल, जालसाजी। छद्मभाव। (जयो० ७/४) ०बहाना, व्यपदेश, आभास। ०कूटयुक्ति, कूटवचन। ०छल। (जयो०वृ० १/३३)

व्याजनिन्दा (स्त्री०) छल पूर्वक निन्दा।

व्याजस्तुति: (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें किसी कारण के स्पष्ट फल का जानते हुए भी कोई अन्य कारण प्रतिपादित किया जाए, जहां वास्तविक भावना को कोई दूसरा कारण बताकर छिपा लिया जाता है।
त्रिवर्गसम्पत्तिमतोऽत्र मन्तुमदक्षराणां कलना: क्व सन्तु।
न वेति वार्थान्निधयो भवन्तु तस्येतिवार्तास्तु लयं व्रजन्तु।। (जयो० १/३९)

व्याड: (पुं०) [वि+आ+अड्+अच्] मांस भक्षी जानवर। ०गुण्डा, बदमाश।

व्याडि (पुं०) एक वैयाकरण।

व्यात्त (भू०क०कृ०) [वि+आ+दा+क] ०विस्तृत, विस्तीर्ण, फैला हुआ।
०फुलाया गया।

व्यात्युक्षी (स्त्री०) [वि+आ+अति+उक्ष्+णिच्+अज्+ङीष्] जलक्रीड़ा, जलविहार।

व्यादानं (नपुं०) [वि+आ+दा+ल्युट्] ०उद्घाटन, खोलना।

व्यादिश: (पुं०) [विशेषणे आदिशति स्वे स्वे कर्मणि नियोजयति वि+आ+दिश्+क] विष्णु, हरि।

व्याध: (पुं०) [व्यध्+ण] शिकारी, वहेलिया। (समु० ४/३८)

व्याधकुलज (वि०) शिकारी के कुल में उत्पन्न हुआ। (जयो०वृ० २/१३०)

व्याधभीत (वि०) शिकारी से डरा हुआ।

व्याधभीत: (पुं०) हरिण, मृग।

व्याधि: (स्त्री०) [वि+आ+धा+कि] ०रोग, शारीरीक अवस्था, रुजा। शारीरिक रोग (जयो० २६/१०१) ०दु:ख, आतंक, शोक, चिन्ता।

व्याधिकर (वि०) अस्वास्थ्यकर, रोगजनक।

व्याधिगत (वि०) रोग ग्रस्त।

व्याधिजात (वि०) आतंक को प्राप्त हुआ।

व्याधित (वि०) [व्याधि: सञ्जातोऽस्य] रोगाक्रान्त, दु:खी। बीमार। (दयो० ४८)

व्याधिप्रतीकारक (वि०) आयुर्वेदविज्ञान विज्ञ। चिकित्सक, वैद्य। (जयो०वृ० १/७६) आयुर्वेदी स एवात्मन: परस्य च व्याधिप्रतीकारक:।

व्याधूत (भू०क०कृ०) [वि+आ+धू+क्त] कांपता हुआ, घबराता हुआ, डरता हुआ।

व्यान: (पुं०) [व्यानिति सर्वशरीरं व्याप्नोति] [वि+आ+अच्+अच्] प्राण तत्त्व की व्यापकता। ०जो वायु समस्त शरीर को व्याप्त करती है।

व्यानतं (नपुं०) [वि+आ+नम्+क्त] रतिबन्ध, मैथुन पद्धति।

व्याप् (सक०) [वि+अच्] विस्तृत होना, फैलना। (दयो०३६)

व्यापकं (वि०) [विशेषेण आप्नोति-वि+आप्+ण्वुल्] विस्तृत, विस्तीर्ण। ०फैला हुआ, प्रसारित। ०बहुमुखी।

व्यापक: (पुं०) अन्तर्हित गुण, सहवर्ती गुण।

व्यापत्ति: (स्त्री०) [वि+आ+पद्+क्तिन्] ०आपत्ति, संकट, दुर्भाग्य। ०मरण, मृत्यु, हनन।

व्यापद् (स्त्री०) [वि+आ+पद्+क्विप्] संकट, कष्ट, दुष्ट। ०दुर्भाग्य। ०रोग, विश्रृंखलता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०चित्त विक्षेप।
०मृत्यु, मरण, निधन।

व्यापाद्यमान (वि०) मरण को प्राप्त। (जयो०२३/५५)

व्यापन्नं (नपुं०) विनाश, हानि, नाश, क्षय, क्षति।
०फैलना, सर्वत्र फेलना।

व्यापन्न (भू०क०कृ०) [वि+आ+पद्+क्त] क्षत किया गया, मारा गया। (दयो० ८६)
०खिन्न, खेद, दु:ख। (जयो०वृ० ३/१९०)
०विस्तृत, फैला हुआ, (जयो०वृ० ३/८४) व्यापक। (हित० ४७)

व्यापार: (पुं०) [वि+आ+पृ+घञ्] व्यवसाय, धन्धा, व्यवहार।
* आरम्भ (जयो०१/१०) 'ग्रन्थारम्भसमये परिग्रह-व्यापाररूपे'
०चेष्टा, प्रयत्न, उद्योग, कार्य शैली। 'मनोवचनकाव्य-व्यारकरणम्' (सम्य० १३५)
०नियोजन, संलग्नता, तत्परता, उद्यमशीलता।
०वाणिज्य, काम, कृत्य, प्रभाव।

व्यापारकार्यार्थ (वि०) व्यवसाय कार्य के लिए। (समु०१/३२)

व्यापारकृ (वि०) भाग लेना, प्रभाव डालना।

व्यापारगत (वि०) प्रयत्नशील, उद्यमशील।

व्यापाजन्य (वि०) चेष्टा युक्त।

व्यापारधर्मन् (पुं०) व्यवहार धर्म।

व्यापारधर्मिन् (पुं०) व्यवसाय धर्म करने वाला।

व्यापारमन्त्रं (नपुं०) उद्योग क्रिया।

व्यापारवन्त (वि०) उद्यमशीलता। (जयो० १२/१३३)

व्यापारित (भू०क०कृ०) [वि+आ+दृ+णिच्+क्त] नियोजित, चेष्टा युक्त, कार्य में लगाया हुआ।
०स्थापित, नियुक्त।
०रक्खा हुआ।
०निश्चित।

व्यापारिन् (पुं०) [व्यापार+इनि] व्यवसायी, व्यापारी, विक्रेता।

व्यापार्थ (वि०) व्यर्थ व्यय करने के लिए। (वीरो० १९/४२)

व्यापिन् (वि०) [वि+आप्+णिनि] ०व्याप्त होने वाला, सर्वव्यापक। (वीरो० १९/३२)
०अधिकार करने वाला।

व्यापृत (भू०क०कृ०) [वि+आप्+क्त] व्यस्त, नियोजित।
०स्थापित, स्थिर किया हुआ।

व्यापृत: (पुं०) कर्मचारी, सचिव, मन्त्री।

व्यापृति: (स्त्री०) [व्यापृ+क्तिन्] व्यवसाय, व्यापार।
०कार्य, कर्म।
०चेष्टा, प्रयत्न।
०उद्यम, उद्योग।

व्याप्त (भू०क०कृ०) [वि+आप्+क्त] ०व्यापक, फैला हुआ, विस्तृत। (सुद० १/३०)
०परिपूर्ण, भरा हुआ।
०स्थापित, जमाया हुआ।
०प्राप्त किया हुआ।
०अधिकृत।
०सम्मिलित।
०प्रसिद्ध, विख्यात, ख्यात, तान्त। (जयो०वृ० १२/७९)
०कीर्ण। (मुनि० २९)
०प्रसरित। (जयो०वृ० १/२३)

व्याप्तता (वि०) व्यापकता। (जयो०वृ० १/२३)

व्याप्ति: (स्त्री०) [वि+आप्+क्तिन्] ०प्रसार, फैलाव, विस्तार।
०सार्वजनिक नियम, विश्वव्यापकता।
०पूर्णता।
०प्राप्ति।
०साध्य और साधन में अविनाभाव होना। व्याप्तिर्हि साध्य-साधनयोरविनाभाव:। (जैन०ल० १४४)

व्याप्तिकर्त्री (वि०) आप्तकर्त्री, व्यापकता प्रकट करने वाला। (जयो०वृ० १६/४९)

व्याप्तिज्ञानं (नपुं०) साध्य-साधन का ज्ञान, किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला होने का ज्ञान। साहचर्य नियम का बोध-यत्र यत्र धूम: तत्र अग्निरिति साहचर्य नियमो व्याप्ति:।

व्याप्तिदोष: (पुं०) साध्य-साधक में दोष। (हित० १७)

व्याप्तिमती (वि०) सर्वत्र गमनशील। (जयो०वृ० १३/५४)

व्याप्य (वि०) [वि+आप्+ण्यत्] व्यापकता युक्त, पूर्णता युक्त।
०भरे जाने योग्य।

व्याप्यं (नपुं०) अनुमान प्रक्रिया का चिह्न। (हेतु, साधन)

व्याप्यत्व (वि०) नित्यता।

व्याम: (पुं०) एक माप विशेष।

व्यामनं (नपुं०) माप विशेष।

व्यामिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र+अच्] मिश्रित, मिला हुआ।
०एकमेक किया हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यायोडित (वि०) मोड़ा गया, विवलित (जयो०वृ० १८/८५)

व्यामोहः (पुं०) [वि+आ+मुह्+घञ्] ०व्याकुलता, आकुलता, परेशानी।

०उन्माद, प्रणयमद।

व्यायत (भू०क०कृ०) [वि+आ+यम्+क्त] विस्तृत, विस्तीर्ण, लम्बा, फैला।

०अधिकृत, दृढ़, गहन।

०व्यापक, अत्यधिक।

०गहरा, शक्तिपूर्ण, बलिष्ठ।

व्यायतत्त्वं (नपुं०) [व्यायत+त्व] पुट्ठों का पुष्ट होना, फैलना।

व्यायामः (पुं०) [वि+आ+यम्+घञ्] ०फैलाना, विस्तार करना।

०कसरत, श्रम, थकान, उद्यम, प्रयत्न।

०चेष्टा, संघर्ष। शरीरयासजननी क्रिया व्यायामः। (जैन०ल० १०४४)

०अभ्यास, मल्यादिकला शिक्षा।

व्यायामभूमिः (स्त्री०) अखाड़ा। (जयो०वृ० २५/७४)

व्यायामिक (वि०) [व्यायाम+ठक्] शारीरिक श्रम सम्बंधी कार्य, मल्यविद्या विषयक सीख सीखने वाला।

व्यायोगः (पुं०) [वि+आ+युज्+घञ्] नाट्यसाहित्य की एक पद्धति।

व्याल (वि०) [वि+आ+अल्+अच्] दुष्ट, व्यसनी।

०अधम, नीच।

०क्रूर, पापी।

व्यालः (पुं०) सप्र, सांप। (जयो० १०१) बाघ, चीता।

०ठग, छली।

व्यालग्राहिन् (पुं०) सपेरा।

व्यालनखः (पुं०) एक जड़ी बूटी।

व्यालमृगः (पुं०) शिकारी, जंगली जानवर।

व्यालम्बः (पुं०) एरंड पादप।

व्यालोल (वि०) [वि+आ+लोड्+अच्] कंपनशील, अव्यवस्थित, अस्त व्यस्त।

व्यावकलनं (नपुं०) [वि+आ+अव्+कल्+ल्युट्] घटना, कम करना।

व्यावक्रोशी (वि०) [वि+आ+अव्+क्रुश्+णिच्+अञ्+ङीप्] दुर्वचन कहना, कुवचन बोलना।

व्यावर्तः (पुं०) [वि+आ+वृत्+घञ्] ०घेरना, लपेटना,

०क्रान्ति।

०परिभ्रमण।

०चक्कर लगाना।

व्यावर्तक (वि०) [वि+आ+वृत्+णिच्+ण्वुल्] ०लपेटने वाला, घेरने वाला।

०अपवर्जन करने वाला, वियुक्त करने वाला।

०मुड़ने वाला।

व्यावर्तनं (नपुं०) [वि+आ+वृत्+ल्युट्] घेरना, लपेटना।

०घूमना, मुड़ना।

०पट्टी, गोल लपेट।

व्यावर्ण्य (वि०) निवेद्य। (जयो० २३/८३)

व्यावल्गित (भू०क०कृ०) [वि+आ+वल्ग्+क्त] ०द्रवित, विक्षुब्ध, पसीजा हुआ।

व्यावहारिक (वि०) [व्यवहार+ठक्] प्रयोगात्मक, व्यवहार नय सम्बंधी। (जयो०वृ० २/३)

०कानूनी, वैध।

०प्रथागत, प्रचलित।

०भ्रमात्मक।

व्यावहारिकः (पुं०) मन्त्री, परामर्शदाता।

व्यावहारी (वि०) व्यवसायी, व्यापारी।

व्यावहासी (वि०) [वि+आ+अव्+हस्+णिच्+अञ्+ङीप्] पारस्परिक अवज्ञा।

व्यावृत्तिः (स्त्री०) [वि+आ+वृत्+क्तिन्] ०आवरण, परदा, डालना।

०निकाल देना, निष्कासन।

व्यावृत्त (भू०क०कृ०) [वि+आ+वृत्+क्त] हटाया गया, अलग किया गया।

०वियुक्त किया गया।

०निकाला हुआ।

०लपेटा हुआ, घिरा हुआ।

०रुका हुआ।

०उपरत।

व्यासः (पुं०) [वि+अस्+घञ्] वितरण, विभाजन, विश्लेषण।

०पृथकता, अलगाव।

०प्रसार, फैलाव। (वीरो० ८/२०)

०वृत्त का व्यास, फैलाव, विस्तार। (जयो० १/६१)

०व्यवस्था, सँकलन।

०व्यवस्थापक।

०व्यास ऋषि।

व्यासक्त (भू०क०कृ०) [वि+आ+सञ्ज+क्त] ०संयुक्त, जुटा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुआ, लगा हुआ, व्यस्त।
०नियुक्त, अलग किया हुआ।

व्यासङ्गः (पुं०) [वि+आ+सञ्ज्+घञ्]
०प्रसंग। (दयो० ६५)
०ध्यान।
०भक्ति।
०एकाग्रता, संयोग, तल्लीनता।

व्यासर्षिन् (पुं०) व्यास ऋर्षि। पाण्डवों के दादा।
व्यासर्षिणाथो भविता पुनस्ताः,
प्रयत्नतः सङ्कलिताः समस्ताः।
यथोचितं पल्लविताश्च तेन,
सङ्कल्पने बुद्धिविशारदेन॥
(वीरो० १८/५४)

व्यासिद्ध (भू०क०कृ०) [वि+आ+विध्+क्त] ०निषेधित।
०प्रतिषिद्ध, वर्जित।

व्यासोपसंगृहीत (वि०) वेद व्यास जी द्वारा संकलित। (वीरो० ८/२०)

व्याहत (भू०क०कृ०) [वि+हन्आ+हन्+क्त] अवरुद्ध, रोका हुआ।
०हटाया हुआ, पीछे किया हुआ।
०विफल किया हुआ।
०निराश।
०व्याकुल, घबड़ाया हुआ, आतंकित।

व्याहरणं (नपुं०) [वि+आ+हृ+ल्युट्] बोलना, उच्चारना करना।
प्ररूपण, कथन, प्रतिपादन, निरूपण।
०वर्णन, व्याख्यान।

व्याहारः (पुं०) [वि+आ+हृ+घञ्]०कथन, प्रवचन, व्याख्यान।
०भाषण, उपदेश।
०स्वर, ध्वनि, गूंज।

व्याहृत (भू०क०कृ०) [वि+आ+हृ+क्त] कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ, कथित। (जयो०वृ० २/३७)
प्रतिपादित, निरूपित।

व्याहृति (स्त्री०) [वि+आ+हृ+क्तिन्] उच्चारण, कथन, विवेचन।

व्युच्छित्तिः (स्त्री०) [वि+उत्+छिद्+क्तिन्] ०उन्मूलन, विनाश।
०पृथक् करण, विभाजन।

व्युत्क्रमः (पुं०) [वि+उत्+क्रम्+घञ्] अतिक्रमण, विचलन, उल्लंघन।
०वैपरीत्य, उलटाक्रम।
०अव्यवस्था।

व्युत्क्रान्त (भू०क०कृ०) [वि+उत्+क्रम्+क्त]
०अतिक्रान्त, उलंघित।
०विसर्जित।
०परित्यक्त, छोड़ा गया।
०बिदा किया गया।

व्युत्थानं (नपुं०) [वि+उत्+स्था+ल्युट्] महान् क्रिया कलाप, रुकावट।
०स्वतंत्र कर्म।

व्युत्थित (वि०) आनन्दित, हर्षित। (जयो० २३/१५)

व्युत्पत्तिः (स्त्री०) [वि+उत्+पद्+क्तिन्] ०मूल उत्पत्ति, मूल कथन।
०विवेचन, व्युत्पादन, पूर्ण विवरण। (दयो० १/९)
०पूर्ण जानकारी, शब्द संज्ञा, क्रियादि की विवेचना पूर्वक ज्ञान।

व्युत्पन्न (भू०क०कृ०) [वि+उत्+पद्+क्त] ०विद्वान्, ज्ञानी, प्रज्ञ। (सुद० ४/३८) प्रवीण।
०निरुक्त, निर्वचन द्वारा प्रतिपादित।
०व्याकरण के नियम द्वारा निष्पन्न।
०पूरा किया गया, सम्पन्न किया गया।

व्युत्त (भू०क०कृ०) [वि+उन्द्+क्त] क्लिन्न, आर्द्र, भिगोया हुआ।

व्युत्सर्गः (पुं०) छोड़ना, त्यागना, ममत्व त्याग, व्युत्सर्ग समिति।

व्युदस्त (भू०क०कृ०) [वि+उद्+अस्+क्त] अस्वीकृत, तिरस्कृत, दूर किया हुआ।

व्युदासः (पुं०) [वि+उद्+अच्+घञ्] अस्वीकृत, निष्कृति।
०निकाला गया।
०उपेक्षा, उदासीनता।
०घात, विनाश, क्षति।

व्युपदेशः (पुं०) [वि+उप+दिश्+घञ्] ब्याज, बहाना।

व्युपरत (वि०) निवर्तित, रहित।

व्युपरतः (पुं०) क्रिया निवर्ति ध्यान का भेद। (भक्ति० ३३)

व्युपरतक्रियावृत्तिः (स्त्री०) क्रिया से रहित ध्यान, चौथा शुक्लध्यान। 'विशेषेणापरता निवृत्ता क्रिया यत्र तद्, व्युपरतक्रियां च तद्निवृत्ति चानिवर्तकं च तद्व्युपरतक्रिया-निवृत्तिसंज्ञं चतुर्थं शुक्लध्यानम्। (जैन०ल० १०/४६)

व्युपरमः (पुं०) [वि+उप+रम्+अप्] यति, समाप्ति, पूर्णता, विराम।

व्युपशमः (पुं०) [वि+उप+शम्+अच्] ०अशान्ति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०अभाव, विराम।
०अलगाव।
व्युष्ट (भू०क०कृ०) [वि+उष्+क्त] प्रज्ज्वलित किया हुआ, उज्ज्वल किया हुआ।
०प्रभात, पौफटी।
व्युष्टं (नपुं०) पौ फटना, प्रभात।
व्युष्टिः (स्त्री०) [वि+वस्+क्तिन्] ०प्रभात, प्रातःकाल, पौ फटना।
०समृद्धि, प्रशंसा।
०फल परिणाम।
व्यूढ (भू०क०कृ०) [वि+वह्+क्त] ०विशाल, विस्तृत, व्यापक।
०फुलाया हुआ, विकसित।
* व्यवस्थित, क्रमहीन।
व्यूत (वि०) [वि+वे+क्ता] अन्तर्बलित, सीया हुआ।
व्यूतिः (स्त्री०) [वि+वे+क्तिन्] बुनाई, सिलाई।
व्यूहः (पुं०) [वि+ऊह्+घञ्] ०सैनिक रचना, सैन्य प्रक्रिया।
०शत्रु को घेरने की पद्धति।
०सेना, समूह, दल।
०समवाय, समुच्चय, संग्रह, समुदाय।
०शोध।
०भाग, अंश, उपशीर्ष।
०संरचना, निर्माण।
०तर्कना, तर्क।
व्यूहनं (नपुं०) [वि+ऊह्+ल्युट्] सेना को व्यवस्थित करना, सेना को क्रमबद्ध करना।
व्यृद्धिः (स्त्री०) [विगता ऋद्धि] समृद्धि का अभाव।
व्ये (सक०) ढकना, सिलना, सिलाई करना।
व्योकारः (पुं०) [व्ये+मनिन्] आकाश, अंतरिक्ष, गगन, नभ (जयो० ३/१११)
०जल।
०सूर्यमन्दिर।
०अभ्रक।
व्योमकेशः (पुं०) शिव, महादेव।
व्योमकेशिन् (पुं०) शिव।
व्योमचारिन् (पुं०) पक्षी, खग।
०तारा, नक्षत्र।
व्योमतलं (नपुं०) आकाश भाग। (वीरो० २१/७)
व्योमधूमः (पुं०) मेघ, बादल।
व्योमनाशिका (स्त्री०) बटेर, लवा।
व्योमभंजरं (नपुं०) ध्वजा, पताका।
व्योममण्डलं (नपुं०) ध्वजा, पताका।
व्योममुद्गरः (पुं०) पवन का वेग, वायु प्रवाह।
व्योमयानं (नपुं०) ०विमान, ०आकाशयान, ०हवाई जहाज ०वायुयान। (समु० ४/३६) (जयो० १०/८६)
व्योमसद् (पुं०) देव, सुर, गन्धर्व,
०भूतप्रेत, पिशाच, राक्षस।
व्योमसर्सिणी (वि०) आकाश व्यापिनी। (जयो० ३/५७)
व्योमस्थली (वि०) गगनचुम्बी, आकाश को छू जाने वाली।
व्रज् (सक०) जाना, चलना, प्रगति करना। (सुद० २/२४)
०पधारना, पहुंचना। व्रजिष्यासि (दयो०६०२, जयो०१/३९)
०आना-'अपि निर्भयमास्थिताः कथं व्रजतीतः खलु वाजिनां व्रजः। (जयो० १३/१४) व्रजः समूहो व्रजति
०अनुगमन करना-विपदि वज्रायते सत्वाद् (सुद० १२४)
व्रजः (पुं०) समूह, समुच्चय, समुदाय। (जयो० ५/८, जयो० १३/१४) वज्रः समूहो व्रजति (जयो०वृ० १३/१४)
०चरगाह स्थान, गौशाला, गोष्ठ।
०आवास, आरामगृह, विश्रामालय।
०पथ, मार्ग, रास्ता, सड़क।
०मथुरा के समीपस्थ स्थान।
व्रजनं (नपुं०) [व्रज्+ल्युट्] घूमना, विचरण करना, हिंडन, भ्रमण, परिभ्रमण।
०फिरना, टहलना।
०निर्वासन, देश निकाला।
व्रज्या (स्त्री०) [व्रज्+क्यप्+टाप्] ०प्रव्रजित होकर घूमना।
०प्रस्थान, गमन।
०आक्रमण।
०समुदाय, ओघ, सम्प्रदाय।
०रंगभूमि, नाट्यशाला।
व्रण् (अक०) ध्वनि करना, शब्द करना।
०चोट पहुंचाना, घायल करना।
व्रणः (पुं०) [व्रण+अच्] दाग, चिह्न, कलंक। (जयो० १५/५६)
०घाव, चोट। (मुनि० ३१)
०व्रणसद्भाव। (जयो० ११/६३)
०फोड़ा, नासूर।
व्रणकृत् (वि०) घाव करने वाला।
व्रणकृत् (पुं०) एक वृक्ष विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्रणविरोपण (वि०) घाव भरने वाला।
व्रणशोधनं (नपुं०) फोड़ा साफ करना, पट्टी बांधना।
व्रणहः (पुं०) एरंड पादप।
व्रणारिः (स्त्री०) एक गन्ध विशेष।
व्रणित (वि०) [व्रण्+इतच्] घायल।
व्रणित्व (वि०) घाव युक्त, चोट ग्रस्त। (जयो०वृ० २०/७०)
व्रतः (पुं०) प्रतिज्ञा, नियम, साधना।
व्रतं (नपुं०) ०संकल्प, दृढ़ता, निश्चय। (जयो० २८/१०७)
०संस्कार, अनुष्ठान, अभ्यास।
०आचरण, चर्या।
०कर्म, कार्य। ०प्रतिज्ञा, नियम, साधना।
०कर्त्तव्य।
०हिंसादि से विरत होना।
०संकल्पर्वूक नियम का सेवन। (सम्य० ८४)
०सार्वसावद्ययोग की निवृत्ति।
०सर्वसंग/परिग्रह का त्याग। (सम्य० ९८)
व्रतकारिन् (वि०) आचरण करने वाला।
व्रतगत (वि०) अभ्यास को प्राप्त हुआ।
व्रतग्रहणं (नपुं०) नियम लेना, संकल्प करना।
व्रतचर्य (वि०) ०प्रतिज्ञाशील, ०अहिंसादि व्रतों का आचरण करने वाला।
व्रतचर्या (स्त्री०) नियम आचरण, साधना में तत्पर।
व्रतजन्य (वि०) अनुष्ठान युक्त।
व्रतति (स्त्री०) लता, बेल।
व्रतधारणं (नपुं०) कर्त्तव्य पालन। (सुद० ९६)
व्रतधारिन् (वि०) व्रत को धारण करने वाला।
व्रतपरिरक्षणं (नपुं०) व्रत निर्वाह। व्रतपरिरक्षणमेव चात्मपरिक्षण-मतस्तदेव सम्भालनीयमितियतो (दयो० १६)
व्रतपारणा (स्त्री०) व्रत-उपवास विधि की समाप्ति, व्रत खोलना, व्रत समाप्त करना।
व्रतपूर्वक (वि०) नियम सहित। तदुत्तमं यदव्रतपूर्वकं स ययौ नन्दतटाकहंसः। (दयो० ४३)
व्रतभङ्गः (पुं०) नियम भङ्ग, व्रत में अतिचार, व्रत में दोष, व्रत में शिथिलता, शिथलाचार।
०प्रतिज्ञा तोड़ना।
व्रतभिक्षा (स्त्री०) व्रत की याचना।
व्रतलोपनं (नपुं०) प्रतिज्ञा तोड़ना।
व्रतवैकल्पं (नपुं०) व्रत में अतिचार लगना, व्रतभङ्ग होना, व्रत पूर्ण न होना।
व्रतसंयुज (वि०) व्रत/नियम में लगा हुआ, व्रताधीन। (सुद०९५)
व्रताचरणं (नपुं०) व्रत पालन।
व्रताचारः (पुं०) व्रताचरण, व्रत की प्रतिज्ञा का निर्वाह। (वीरो० ८/३८)
व्रतादेशः (पुं०) व्रत धारण, व्रत का संस्कार।
व्रताश्रिति (स्त्री०) त्यागगत। (जयो० १/८१)
व्रतित्व (वि०) व्रत वाला, नियम युक्त। (हित० १२)
व्रतिन् (वि०) [व्रत्+इनि] व्रत पालक। व्रताभिसम्बन्धिनो व्रतिमः। नियमधारी, दृढ़संकल्पी। (मुनि० ६) निशल्योव्रती (त०सू०७/१८)
अन्तो भोगभुगुपरि तु योगो
बकवृत्तिर्वृतिनो नियता।
(सुद० १०५)
व्रतिनी (स्त्री०) विधवा स्त्री, पतिविहीन स्त्री।
नयनोत्पलवासिजलैः,
प्रपां ददात्यरिवधूर्व्रतिनी। (जयो० ६/८६)
०नियमवती, सती। (जयो०वृ० ६/८६)
व्रश्च् (सक०) काटना, फाड़ना, चीरना।
०घायल करना।
व्रश्चनं (नपुं०) [व्रश्च्+ल्युट्] छोटी आरी, कररेंत, ०करोंत।
व्राजिः (स्त्री०) [व्रज्+इञ्] पवन प्रवाह। झंझावात, हवा का झौंका।
व्रातः (पुं०) [वृ+अतच्] समूह, शोध। (जयो०)
० समुदाय, समुच्चय।
व्रातं (नपुं०) शारीरिक श्रम।
व्रातीन (वि०) [व्रातेम जीवति-व्रात+न] बेलदार, दैनिक मजदूरी वाला।
व्रात्यः (पुं०) [व्रातात्, समूहात् च्यवतियत्] अधम व्यक्ति।
व्री (सक०) छांटना, चुनना, चयन करना।
व्रीड् (अक०) लज्जित होना, शर्मिन्दा होना। ०फेंकना, डालना।
व्रीडा (स्त्री०) [व्रीड्+भ+टाप्] ०लज्जा, (दयो० ५४)
०विनयशीलता, नम्रता।
व्रीडित (भू०क०कृ०) [व्रीड्+क्त] लज्जाशील, लज्जित किया गया।
व्रीस् (सक०) क्षति पहुंचाना, घात करना, हनन करना।
व्रीहिः (स्त्री०) [व्री+हि] धान्य, चावल। (जयो० ३/८)
व्रीहि-अगारं (नपुं०) धान्यागार, धान्य का कोठार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्रीहिकाञ्चनं (नपुं०) मसूर की दाल।

व्रीहिराजिकं (नपुं०) चना।

व्रुड् (सक०) ढकना, आच्छादित करना।

०डूबना, संचय करना।

व्ली (सक०) जाना, पहुंचना।

व्लेक्ष् (सक०) देखना।

श

शः (पुं०) यह उष्म ध्वनि है, इसका उच्चारण स्थान तालु है, इसलिए इसे तालव्यी 'श' कहते हैं।

शः (पुं०) शिव, महादेव।

०शस्त्र।

०काटने वाला, कतरने वाला विनाशक।

शं (नपुं०) आनन्द, हर्ष, कल्याण, मंगल। 'शं हिंसामटतीति शाटी वधकर्त्री' (जयो०वृ० ३/३९)

'शमानन्दमटतीति शाटी शर्मसम्पन्नेत्यर्थः' (जयो०वृ०३/३९)

०शस्य, प्रशंसनीय। (नास्ति दया तव शस्य) (सुद० ९४)

०सुख स्थान। (जयो०१२/१०८)

०शान्ति। (जयो०वृ० ३/८७) 'शं शान्तिं पातीति शम्पा' (जयो०वृ० ३/८७)

०सुख, शान्ति (जयो० १५/४१) (जयो० १८/४८)

शंयु (वि०) [शं शुभं अस्त्यस्य-शम्+युस्] प्रसन्न, समृद्ध, सुख, आनन्द।

शंवः (पुं०) [शम्+व] आनन्द, कल्याण, प्रसन्न, हर्ष।

०इन्द्र वज्र।

शंस् (सक०) प्रशंसा करना, स्तुति करना।

०कहना, बोलना, अभिव्यक्ति करना।

०संकेत करना, जताना।

०प्रशंसा करना। (जयो० २/१५८)

०क्षति पहुंचाना, चोट करना।

०विवरण देना, वर्णन करना।

०अनुमोदन करना, सराहना करना।

शंस (वि०) श्रद्धायुक्त। (जयो० २/१०६)

शंसनं (नपुं०) [शंस+ल्युट्] प्रशंसा करना, कथन, निरूपण, प्रतिपादन।

०पाठ करना।

शंसा (स्त्री०) श्लाघा, प्रशंसा। (समु० १/४)

०अभिलाषा, इच्छा, आशा, चाह।

०दोहराना, वर्णन करना, विवेचन करना।

शंसित (भू०क०कृ०) [शंस्+क्त] ०श्लाघित, प्रशंसित।

०अभिलषित, इच्छित, वाञ्छित।

०कथित, प्रतिपादित, विवेचित।

०निश्चित, निर्धारित, निरूपित, स्थापित, नियुक्त।

०बोला गया, कहा गया।

०उक्त, घोषित।

शंसिन् (वि०) [शंस्+इनि] ०श्लाघा करने वाला, प्रशंसा करने वाला।

०घोषित, निरूपित, प्रतिपादित।

०कथित, भाषित।

०संकेतित, सूचित करने वाला।

शक् (अक०) सक्षम होना, समर्थ होना, योग्य होना, सम्भव होना। शक्यते (जयो० २/५८) शक्नोति (सुद० ९४)

०सहन करना, सहना, अमल करना।

शकः (पुं०) [शक्+अच्] एक राजा।

०शक संवत्।

शकटः (पुं०) गाड़ी, छकड़ा, भारी बोझ ले जाने में समर्थ। (जयो०वृ० १३/३४)

शकटः (पुं०) सैनिक व्यूह, सैन्य रचना।

०एक तौल विशेष। ०एक राक्षस।

शकटकर्मन् (पुं०) गाड़ी चलाकर जीविका चलाना।

शकटाङ्गं (नपुं०) चक्रवाक पक्षी। (जयो० १०/८)

शकटजीविका (स्त्री०) गाड़ी बनाकर जीविका चलाना।

शकटिका (स्त्री०) [शकट+ङीष्+कन्+टाप्] छोटी गाड़ी, बाल गाड़ी, मृच्छकटिका, मिट्टी की गाड़ी।

शकटी (स्त्री०) गाड़ी। (जयो०वृ० ११/९०)

शकन् (नपुं०) मल, विष्ठा, गोबर।

शकनार्थनामधर

शकनाभिमान (वि०) शक्ति का अभिमान करने वाला, सामर्थ्य का अहंकारी। (जयो०वृ० २४/८६)

तत्याज शक्रः शकनाभिमानं

पुनीत यावत्तव कीर्तिगानम्। (जयो० २४/८६)

शकनस्याभिमानं शक्रोऽपि

शकनार्थनामधरोऽपि' (जयो०वृ० २४/८६)

शकलः (पुं०) [शक्+कलक्] भाग, अंश, खण्ड। (जयो० ६/२५)

०हिस्सा, टुकड़ा। ०परत, छिलका।

शकलित (वि०) [शकल+इतच्] खण्ड-खण्ड किया हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शकलिन् (वि०) [शकल+इनि] मछली।

शकार: (पुं०) एक आदिवासी जाति।

०शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम। नाटक का पात्र।

शकुन: (पुं०) [शकु+उनन्] पक्षी, गिद्ध, चील, बाज़।

शकुनं (नपुं०) सगुन, शुभ-अशुभ संकेत, चिह्न, शंका युक्त कारण। (समु० ३/१६)

शकुनज्ञ (वि०) सगुन जानने वाला, शकुन विशेषज्ञ।

शकुनज्ञानं (नपुं०) भवितव्यता का बोध, भविष्य ज्ञान, दृश्यगत वस्तु से भविष्य का आंकलन।

शकुनशास्त्रं (नपुं०) शुभाशुभ शकुन का विवेचन करने वाला शास्त्र। (वीरो० १५/६)

शकुनि: (पुं०) धृतराष्ट्र की पत्नि गान्धारी का भ्राता। दुर्योधन का मामा।

शकुनि: (स्त्री०) पक्षी।

शकुनिप्रण (स्त्री०) पक्षियों की प्याऊ।

शकुनिवाद: (पुं०) पक्षी कलरव, खग गुंजन।

शकुनिशास्त्र (नपुं०) पक्षी शास्त्र। (वीरो० १५/६)

शकुनि समूह: (पुं०) पक्षी समूह, खगकुल। (जयो०वृ० १/८७)

शकुनी (स्त्री०) गैरेया, एक पक्षी विशेष।

शकुन्त: (पुं०) पक्षी। नीलकण्ठ।

शकुन्तक: (पुं०) [शकुन्त+कन्+घञ्] पक्षी।

शकुन्तगण: (पुं०) पक्षी समूह। (जयो० १८/३) सूक्तिं प्रकुर्वति शकुन्तगणेऽर्हतीव' (जयो० ७८/३)

शकुन्तला (स्त्री०) दुष्यंत भार्या। [शकुन्तै: लायते-ला घञर्थे क+टाप्]

शकुन्ति: (स्त्री०) [शक्+उन्नि] पक्षी।

शकुन्तिका (स्त्री०) [शक्+उन्ति+कन्+टाप्] पक्षी, ट्ड्डिडी, झींगुर।

शकुल: (पुं०) [शक्र+उलच्] मछली विशेष।

शकुलादनी (स्त्री०) एक जड़ी-बूटी, कटकी, कुटकी।

शकुलार्भक: (पुं०) मत्स्यडिम्भ, मछली का बच्चा। (जयो० ६/६७)

शकृत् (नपुं०) [शक्+ऋतन्] गोमय, गोबर। (जयो० २/८७) ०मल, विष्ठा।

शकृत्करिन् (पुं०) वत्स, बछड़ा।

शकृत्करी (पुं०) वत्स, बछड़ा। शकृत्करिस्तु वत्स: स्यात् इत्यमरकोषे (जयो० २५/६८)

शकृतद्वारं (नपुं०) मलद्वार, गुदा।

शकृतपिण्ड: (पुं०) गोबर का गोला।

शक्कर: (पुं०) बैल, सांड।

शक्करी (स्त्री०) [शक्कर+ङीष्] नदी।

०करधनी, कंदौरा, मेखला।

शक्त (भू०क०कृ०) [शक्+क्त] ०सक्षम, योग्य, सामर्थ।

* दृढ़, ताकतवर, समृद्धशाली।

०सार्थक, अभिव्यञ्जक।

०चतुर, प्रवीण, कुशल।

शक्ति: (स्त्री०) [शक्+क्तिन्] बल, वीर्य।

०पराक्रम, योग्यता, धैर्य। (जयो० १/४०)

०ऊर्जा, ताकत, कार्यशीलता।

एकोन्यत: सम्मिलतीति यावद्धै
भाविकी शक्तिरूदैति तावत्।
तयोरथैकाकिताऽन्वये तु,
शक्ति: पुन: सा खलु मौनमेतु।। (सम्य० २३/१३)

०शस्त्र विशेष, बर्छी, भाला, कुंतल, त्रिशूल। (जयो० ८/१५)

०शब्दसंकेत, अभिधा शक्ति।

०शक्ति नामक पुत्री। (जयो०वृ० १/४०)

०रचना कला, काव्यप्रतिभा।

शक्तिकुण्ठनं (नपुं०) शक्ति को क्षीण करना।

शक्तिग्रह (वि०) शक्तिधारी, भाला युक्त।

शक्तिग्राहक (वि०) शब्द शक्ति को स्थापित करने वाला।

शक्तिघात: (पुं०) शक्तिघात। (दयो० ९३)

शक्तित्रयं (नपुं०) राज्यशक्ति के तीन घटक।

शक्तिधर (वि०) शक्तिशाली, बलिष्ठ।

शक्तिपाणि: (पुं०) बर्छीधारी।

शक्तिभृत् (पुं०) शक्तिधारक व्यक्ति।

शक्तिपूजक: (पुं०) शाक्त।

शक्तिपूजा (स्त्री०) शक्ति अर्चना।

शक्तिवैकल्यं (नपुं०) शक्ति की क्षीणता, बल की कमी।

शक्तिशालिता (वि०) शक्ति युक्त। (जयो०वृ० १/४४)

शक्तिहीन (वि०) बलहीन। (जयो० २२/७३)

शक्तुसार: (पुं०) स्ववश, अपनी शक्ति के अनुसार। (जयो०वृ० २/८४)

शक्न (वि०) [शक्+न] मिष्ठभाषी, प्रियवादी, हितवादी।

शक्य (सं०कृ०) [शक्+यत्] संभव, क्रियात्मक, किये जाने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योग्य, समर्थ। (जयो० २/१६)

०अभिहित, प्रतिपादित।

शक्यार्थ (वि०) अभिहितार्थ।

शक्रः (पुं०) [शक्+इक्] इन्द्र, पुरिन्दर। (जयो०वृ० ३/२९)

०अर्जुन तरु।

०कुटल वृक्ष।

०उल्लू।

०ज्येष्ठा नक्षत्र।

शक्रगोपः (पुं०) इन्द्रगोप, एक तरल क्रीड़ा।

शक्रचापः (पुं०) इन्द्रधनुष। (जयो० ५/६५)

शक्रजातः (पुं०) काक, कौवा।

शक्रजित् (पुं०) मेघनाद।

शक्रद्रुमः (पुं०) देवदारु का वृक्ष।

शक्रधनुष् (पुं०) शक्र की पताका, इन्द्र पताका।

शक्रपदं (नपुं०) इन्द्रपद।

शक्रपर्यायः (पुं०) कुटज वृक्ष।

शक्रपादपः (पुं०) कुटज वृक्ष।

०देवदारु का वृक्ष।

शक्रपुरं (नपु०) इन्द्र की नगरी। (समु० ६/१)

शक्रप्रस्थः (पुं०) इन्द्रप्रस्थ।

शक्रभवनं (नपुं०) स्वर्ग, इन्द्रलोक।

शक्रभुवनं (नपुं०) इन्द्रलोक।

शक्रभिद् (पुं०) मेघनाद।

शक्रलोकः (पुं०) इन्द्रलोक। ०शक्रभुवन।

शक्रवासः (पुं०) स्वर्गपुरी।

शक्रवाहनं (नपुं०) मेघ, बादल।

शक्रशाखिन् (पुं०) कुटज तरु।

शक्रसारथिः (पुं०) इन्द्र का यान चालक।

शक्रसुतः (पुं०) जयन्त।

०अर्जुन।

०बालि।

शक्राणी (स्त्री०) [शक्र+ङीष्-आनुक्] शचि, इन्द्राणी, इन्द्र की भार्या।

शक्रि (पुं०) मेघ, बादल।

०वज्र।

०हस्ति, हाथी।

०पर्वत।

शङ्कु (अक०) संदेह होना, शंका होना, संकोच होना, संदिग्ध होना। (शङ्क्यन्ते (सुद० ९५)

०डरना, भय होना, त्रस्त होना। शङ्क्यते हृदि (दयो०१०२)

०सोचना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना।

०कल्पना करना, आक्षेप करना।

शङ्कः (पुं०) [शङ्क+अच्] कर्षक बैल, कठोर वृषभ।

शङ्कर (वि०) [शं सुखं करोति] आनन्ददायक, सुख दायक।

०मङ्गलमय, आनन्दमय।

०शुभसूचक।

शङ्करः (पुं०) महादेव, शिव, ०ऋषभदेव।

०शङ्कराचार्य।

शङ्करी (स्त्री०) पार्वती, गौरी, शिवा।

शङ्का (स्त्री०) [शङ्क+अ+टाप्] आशंका, अविश्वास। (सुद० २/१४)

०कण्टक, काटा। (जयो०वृ० १/८९)

०आतंक, भय, डर। (सुद० १/६)

०संदेह, दुविधा।

शङ्काकारिन् (वि०) अविश्वास करने वाला।

शङ्कागत (वि०) आतंक को प्राप्त हुआ, भययुक्त।

शङ्काचर (वि०) दुविधाशील।

शङ्काजात (वि०) आशंका को प्राप्त हुआ।

शङ्काधर (वि०) संदेह धारक।

शङ्काभावः (पुं०) भय-भाव।

शङ्कामतिः (स्त्री०) आतंकित बुद्धि।

शङ्कारहित (वि०) आंशका से मुक्त। (जयो० १३/४८) निर्भय।

शङ्काशील (वि०) आशंका युक्त।

शङ्काकृत (वि०) डर से युक्त।

शङ्कित (भू०क०कृ०) [शङ्क्+क्त] सन्दिग्ध, संशय युक्त, अविश्वासपूर्ण।

०भ्रान्त, विभ्रम युक्त, भययुक्त। (मुनि० ११)

०आतंकित।

शङ्कितचित्त (वि०) भीरु, डरपोक, भयाक्रान्त, शंका से युक्त हृदय वाला, शंकाकुल।

शङ्किन् (वि०) [शङ्का+इनि] संदेह करने वाला, अविश्वास करने वाला, शंकाशील। (जयो० २/५७)

शङ्कुः (स्त्री० [शङ्क्+उण्] कांटा, बर्छी, त्रिशूल। शल्य। (जयो० ४/१३)

०कील। (जयो०१३/६७)

०खूंटा, खम्भा, स्तम्भ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०बाण का तीक्ष्ण भाग।
०विष।
०वामी।
०राक्षस।

शङ्कुला (स्त्री०) [शङ्क+उलच्] ०चाकू।
०सरौंता।

शङ्कुलाशोधननिभ (वि०) शल्योद्धरणकल्प, कांटा निकालने वाला। (जयो० ४/१३)

शङ्खः (पुं०) घोंघा, शंख। ०एक द्वीन्द्रिय जलजीव।

खङ्खं (नपुं०) शंख, घोंघा, कम्बल। (जयो०वृ० २४/५१) 'शङ्खस्तु प्रभाते देवालयादौ सहजमेव ध्वन्यते' (जयो०वृ० १८/४९)
०मस्तक की हड्डी।
०काशी का एक राजा। (वीरो० १५/२०)

शङ्खकः (पुं०) शंख, कम्बुक, दो इन्द्रिय जीव।
०कड़ा, कंगन।

शङ्खकारः (पुं०) एक नाम विशेष।

शङ्खचरिन् (पुं०) चन्दन का तिलक।

शङ्खचूर्ण (नपुं०) शंख का चूरा, शंखभस्म।

शङ्खत्व (वि०) शंखपना। (वीरो० २/४८)

शङ्खद्रावः (पुं०) शंख भस्म का घोल।

शङ्खध्मः (पुं०) शंख ध्वनि वाला, शंख बजाने वाला।

शङ्खध्वनिः (स्त्री०) शंख की आवाज।

शङ्खनकः (पुं०) छोटा शंख, घोंघा।

शङ्खनादः (पुं०) शंखध्वनि। (वीरो० ७/२)

शङ्खप्रस्थः (पुं०) चन्द्र कलक।

शङ्खभृत् (पुं०) विष्णु।

शङ्खमुखः (पुं०) घड़ियाल, मगर।

शङ्खश्वनः (पुं०) शंखध्वनि।

शङ्खसद्ध्वनि (स्त्री०) शंखनाद (वीरो० ७/२)

शङ्खिन् (पुं०) सागर, समुद्र।
०शंखवादक।

शङ्खिनी (स्त्री०) [शङ्खिन्+ङीप्] अप्सरा, परी, सुन्दरी, पद्मिनी।

शच् (सक०) बोलना, कहना, समझाना, बतलाना, बोधित करना, ज्ञान कराना।

शचिः (स्त्री०) [शच्+इन्] इन्द्राणी, शक्रिणी। इन्द्रभार्या।

शचिपतिः (पुं०) इन्द्र-'निर्माता तु शचीपतेः प्रतिनिधिः श्रीमान् कुबेरोऽग्रणी (वीरो० १२/५३)

शची (स्त्री०) पुलोमजा, इन्द्राणी, शक्रिणी। (सुद० १/३०) (जयो०वृ० १२/९९)

शचीभतृ (पुं०) इन्द्र।

शचीन्द्रिरा (स्त्री०) शचि रूप लक्ष्मी। (वीरो० ७/१४)

शञ्ज् (सक०) जाना, पहुंचना।

शट् (अक०) बीमार होना।
०बांटना, वियुक्त करना।

शट (वि०) [शट्+अच्] खट्टा, अम्ल, कसैला।

शटा (स्त्री०) [शट+टाप्] जटाएं, बाल के झुण्ड।

शटिः (स्त्री०) [शट्+इन्] कचूर पादप, आमा हल्दी।

शठ् (सक०) धोखा देना, ठगना, धूर्तता करना।
०हनन करना।
०कष्ट उठाना।
०समाप्त करना, नाश करना।

शठ (वि०) [शठ्+अच्] चालाक, धोखेबाज, कपटी, छली, बेईमान।

शठः (पुं०) ठग, धूर्त, मूर्ख।
०मक्कार, झूठा। (जयो०२३/६४) (मुनि० २९)
०मूढ, बुद्धु।
०सुस्त, परिश्रमहीन, उद्यमहीन।
०आलसी, प्रमादी, मोही, आसक्तजन।

शठं (नपुं०) केसर, जाफरान।
०अयस्क, लोहा।

शठकार्यः (पुं०) धूर्ततापूर्ण कार्य।

शठगत (वि०) मूढता युक्त।

शठग्राहिन् (वि०) आलस्य को ग्रहण करने वाला, आलस्य की ओर अग्रसर होने वाला।

शठजनः (पुं०) धूर्तजन, मूढव्यक्ति। (मुनि० २९)

शठचारिन् (वि०) झूठ का सहारा लेने वाला, झूठ का आचरण करने वाला।

शठभावः (पुं०) ठगभाव, छलभाव।

शठमतिः (पुं०) प्रमाद सहित प्रवृत्ति, प्रमाद का संयोग।

शठराज (पुं०) शठ शिरोमणि, धूर्तराज। (वीरो० ६/३४)

शठशिरोमणि (पुं०) धूर्तराज। (वीरो० ६/३४)

शणं (नपुं०) [शण्+अच्] सन, पटसन। (समु० १/१७)

शणसूत्रं (नपुं०) सन से निर्मित बोरी। रस्सियां, डोरिया।

शण्डः (पुं०) [शण्ड्+अच्] नपुंसक, हिंजड़ा।
०सांड।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शण्डं (नपुं०) संग्रह, समुच्चय।
 ०खण्ड।
शण्ढः (पुं०) [शाम्यति ग्राम्यधर्मात् शम्+ढ] हिजड़ा, नपुंसक।
 ०टहलुआ, अन्त:पुर का सेवक।
 ०सांड।
 ०उन्मत व्यक्ति।
शतं (नपुं०) [दश दशत: परिमाणस्य दशन् त, श आदेश:] सौ, सौ की संख्या। (जयो० ३/९३) सञ्जातानि मनोहराणि शतशो मुक्ताफलानि स्वयम्। (जयो० ३/९३) शतानि (सम्य० ३)
शतक (वि०) [शत+कन्] सौ से युक्त।
शतकं (नपुं०) शताब्दी, सौ श्लोकों का संग्रह। 'नीतिशतकं, वैराग्यशतकं, श्रमणशतकम्'
शतकार्यः (पुं०) सैकड़ों कार्य।
शतकेन्द्रः (पुं०) सौ केंद्र।
शतकुम्भः (पुं०) सौ घट।
शतकृत्यः (अव्य०) सौ गुणा।
शतकोटि (स्त्री०) सौ करोड़।
शतक्रतु (पुं०) इन्द्र। (जयो० २४/४०)
 ०सैकड़ों यज्ञ में तत्पर। (जयो० २२/६६)
 ०पूर्व दिक्पाल। (जयो० २२/६६)
शतखण्डं (नपुं०) सोना, स्वर्ण।
शतगु (वि०) सौ गायों का स्वामी।
शतगुण (वि०) सौ गुणा।
शतग्रन्थिः (स्त्री०) दूर्वाघास।
शतघ्नी (स्त्री०) ०गले का रोग।
 ०एक शिला।
 ०एक अस्त्र विशेष।
शतच्छदं (नपुं०) कमल। (जयो० १७/७१)
शतजिह्वः (पुं०) शिवा।
शततम (वि०) सौंवा।
शततारका (स्त्री०) शतभिषा नक्षत्र।
शतत्व (वि०) सौ संख्या वाला। (जयो० १/२६)
शतदल (नपुं०) कमल, अरविंद, पद्म।
शतदला (स्त्री०) सफेद गुलाब।
शतधा (अव्य०) [शत+धाच्] सौ तरह से, सौ भागों से।
शतधामन् (पुं०) विष्णु।
शतधार (वि०) सौ का धारक।
शतधारं (नपुं०) वज्र।
शतधृतिः (स्त्री०) ०इन्द्र।
 ०ब्रह्मा।
शतपत्रं (नपुं०) कमल, पद्म। (जयो० २६/८१) खुटबढ़ई।
शतपत्रकं देखो ऊपर। ०अरविंद, सरोज।
शतपत्रनीति (स्त्री०) शतपत्र रूप कथन। पत्राणां शतं तदेवैकी भूयं शतपत्रं कमलमिति कथन रूपा सत्या।
 ०दार्शनिक दृष्टि–अङ्ग और अङ्गी, अवयव और अवयवी में ऐक्य अभेद नहीं हैं, पृथक्ता ही है, ऐसा कहना ठीक नहीं जान पड़ता, परन्तु अभेद कथन शतपत्र के समान सत्य है। जैसे कि सौ पत्रों-कलिकाओं का समूह शतपत्र/कमल कहलाता है। यहां सौ पत्रों और कमल में भेद नहीं है, अभेद है, क्योंकि एक एक पत्र के पृथक् करने पर शतपत्र/कमल ही नष्ट हो जाता है। यही बात गुण और गुणी में है। प्रदेश भेद न होने से गुण-गुणी में अभेद है, क्योंकि गुणों के नष्ट होने पर गुणी भी नष्ट हो जाता है।
शतपद (वि०) सौ पैरों वाला।
शतपक्ष (स्त्री०) कनखजूरा।
शतपद्मं (नपुं०) सौ पत्रों वाला कमल, श्वेत कमल।
शतपर्वन् (पुं०) बांस। ०आश्विन मास की पूर्णिमा।
 ०दूर्वाघास।
 ०कटुक पादप।
शतमखः (पुं०) इन्द्र।
शतमन्यु (पुं०) इन्द्र।
 ०उल्लू।
शतमुख (वि०) सौ द्वार वाला।
शत यज्वन् (पुं०) इन्द्र।
शतयज्ञ (वि०) सौ यज्ञ वाला। (सुद० ४/४७) पौलोमी शतयज्ञतुल्यकथनौ कालं तकौ निन्यतु:। (सुद० ४/४७)
शतरञ्जः (पुं०) शतरञ्ज, जिसमें वजीर, बादशाह, घोड़ा, हाथी आदि की कल्पना करके खेला जाने वाला खेल। (वीरो० १७/४)
शतरञ्जतूर्णः (नपुं०) शतरंज का खेल। (वीरो० १७/१४)
शतरञ्जाख्यखेलनं (नपुं०) शतरंज नामक खेल।
 श्रुतमस्ति भवान् दक्ष:, शतरञ्जाख्यखेलने,
 भवता कलयिष्यामि, तदद्य गुण शालिना।। (समु० ३/४१)
शतवर्षं (नपुं०) सौ वर्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शतशस् (अव्य०) [शत+शस्] सैंकड़ों, सौ सौ करके। सौ बार। (जयो० ४१/२६) अनुभूता शतशो मयाऽहो दशा परिभ्रमणस्य। (सुद०पृ० ९४)

शतसहस्त्रं (नपुं०) सौ हजार।

शतसाहस्त्र (वि०) सौ हजार से युक्त।

शतह्रदा (स्त्री०) विद्युत, बिजली, चपला।
०इन्द्र का वज्र।

शतक्षी (स्त्री०) रात्रि, रजनी।
०दुर्गादेवी।

शताग्रगण्य (वि०) सौ में अग्रणी। (वीरो० १८/४६)

शताङ्गः (पुं०) गाड़ी, रथ, यान। (जयो० १३/२६)

शताङ्गं (नपुं०) उन्नत अंग, समुन्नताङ्ग, (जयो०वृ० ८२५)

शताङ्गमाला (स्त्री०) [रथानां माला] रथपंक्ति, रथ तति। (जयो० १३/२६)

शतानीकः (पुं०) वृद्ध पुरुष, बूढ़ा व्यक्ति, सौ सिपाहियों का नायक।

शतानकं (नपुं०) श्मशान।

शतानन्दः (पुं०) जनकराज का पुरोहित।

शतायुस् (वि०) सौ वर्ष की आयु वाला।

शतावधानं (वि०) प्रहार बुद्धिशाला, तीव्र शक्तियुक्त, तीव्र स्मरण।

शतवधानि (वि०) सौ का उदारक, सौ तक की संख्या का ज्ञातक।

शतावधिः (स्त्री०) सौ दिन की अवधि। (मुनि० ७)

शतावर्तः (पुं०) विष्णु।

शतिक (वि०) सौ से युक्त/सौ से प्रभावित।

शतिन् (वि०) [शत+इनि] सौ गुणा।
०असंख्य।

शत्रिः (पुं०) [शद्+त्रिप्] हस्ति, हाथी।

शत्रुः (पुं०) [शद्+त्रुन्] वैरी, विरोधी, दुश्मन।
०प्रतिपक्षी। (सुद० ११८) शत्रुश्च मित्रं च न कोऽपि लोके ह्यय्ज्जनोऽज्ञो निपतेच्च शोके। (सुद० ११०)

शत्रुकर्षण (वि०) शत्रु का दमन करने वाला, शत्रु संहारक।

शत्रुखण्डं (नपुं०) शत्रु समूह।

शत्रुगत (वि०) शत्रु भाव युक्त, दुष्ट भाव गत।

शत्रुघ्नः (पुं०) सुमित्रा पुत्र, लक्ष्मण भ्राता।
०शत्रुनाशक।

शत्रुचक्र (नपुं०) दुष्ट का चाक।

शत्रुजालं (नपुं०) प्रतिपक्षी का व्यूह।

शत्रुञ्जयः (पुं०) एक तीर्थ, पालीताना में स्थित।
०[शत्रु+जि+खच्] हस्ति, हाथी।
०एक पर्वत, गिरनार पर्वत।

शत्रुत्व (वि०) शत्रुता, विरोधिता। (वीरो० १६/११, सुद०४/९)

शत्रुदमन (वि०) शत्रुघातक।

शत्रुन्तप (वि०) [शत्रु+तप्+खच्] शत्रु को परास्त करने वाला, शत्रुजयी।

शत्रुपक्षः (पुं०) विरोधी का पक्ष। प्रतिपक्षी।

शत्रुभूपः (पुं०) शत्रु नरटाट्। (जयो० ३/१०९)

शत्रु विनाशन (वि०) विरोध नाशक।

शत्रुसदृश (वि०) शत्रु के समान। (जयो०वृ० १/३८)

शत्रुसमूहः (पुं०) परचक्र। शत्रुदल। (जयो०वृ० २/१२१)

शत्रुरूपी (स्त्री०) शत्रु की स्त्री। (जयो०वृ० १/२६)

शत्रुहत्या (स्त्री०) शत्रुघात।

शत्रुहन् (वि०) विरोधी का हनन।

शत्रुहानि (वि०) प्रतिपक्षी की समाप्ति।

शत्वरी (स्त्री०) रजनी, रात्रि, रात।

शद् (अक०) पतन होना, नाश होना, क्षीण होना।
०मुर्झाना, म्लान होना।

शद् (सक०) पहुंचाना, ठेलना, गिराना, फेंकना, डालना, वध करना, नष्ट करना।

शदः (पुं०) [शद्+अच्] खाद्य, शाक भाजी, फल-सब्जी।

शद्रि (पुं०) [शद्+किन्] ०हस्ति, हाथी। ०मेघ (जयो० १५/२३) बादल। ०अर्जुन।

शद्रिः (स्त्री०) विद्युत्, बिजली।

शद्रु (वि०) [शद्+रु] गतिशील, प्रवाहमान।
०पतनशील, ०नश्वर, क्षीण होने वाला।

शनकैः (अव्य०) [शनैः+अनच्] शनैः शनैः, धीरे धीरे, मंद से मद। मन्दगत्या (जयो०वृ० १३/५१)
विनोदवार्तामनुसम्विधात्री
समं तयाऽगाच्छनकैः सुगात्री। (वीरो० ५/३७)
शनकै! समितोऽपि तन्द्रितां
न शेते पुनरेष शायितः। (सुद० ३/२६)

शनिः (पुं०) [शो+अनि] शनिग्रह।
०सूर्यपुत्र। ०शनिवार।

शनिपित (पुं०) सूर्य, दिनकर। (जयो० ६/३८)

शनिप्रदोषः (पुं०) सन्ध्यार्चना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शनिप्रियं (नपुं०) नीलम।
शनिवारः (पुं०) शनिवार का दिन।
शनैस् (अव्य०) [शण्+डैस्] धीरे से, चुपके से। मंद से मंद। (जयो० १/८९)
०उत्तरोत्तर, उपयुक्त कर्म से।
प्रत्युक्तया शनैरास्यं
सनैराश्यमुदीरितम्' (सुद० ८४)
शनैश्चरः (पुं०) शनिग्रह।
शनैश्चर (वि०) धीरे-धीरे चलने वाली। मंद यामि। (जयो० ५/९१)
शनैःशनैः (अव्य०) धीरे धीरे, अहिस्ता, आहिस्ता। श्रयन् गोपपति। प्राप गोपुरं स शनैः शनैः' (जयो० ८/१०७)
शन्तनुः (पुं०) [शं मंगलात्मका तनुर्यस्य] एक वंशी नृप।
शप् (सक०) शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, कोसना, विरोध करना-शयन्ति क्षुद्रजन्मानो (वीरो० १०/३४) सौगन्ध उठाना।
०विश्वास को उत्पन्न करना। विशाखनन्दो शपति स्म भूरि ततोऽगमं रोषमहं च सूरिः। (वीरो० ११/१५)
शपः (पुं०) [शप्+अच्] अभिशाप, कोसना।
०शपथ, सौगन्ध।
शपथः (पुं०) [शप्+अथन्] प्रतिज्ञा, घोषणा।
०सौगंध लेना।
०कोसना, अभिशाप।
०आक्रोश, फटकार।
शपथपूर्वक (वि०) सौगन्धपूर्वक। (दयो० ४७)
शपनं (नपुं०) [शप्+ल्युट्] शपथ, सौगन्ध, प्रतिज्ञा।
शप्त (वि०) उष्ण। (वीरो० १२/८)
शफः (पुं०) [शप्+अच्] वृक्ष की जड़।
शफं (नपुं०) खुर। (जयो० ८/१६)
शफरः (पुं०) [शफ-राति-रा+क] चमकीली मछली।
शफरता (वि०) झषता, मछली युक्त-रसयोरभेदात् सफलता झषेत वा कुत। (जयो० ९/१४)
शफराजयः (पुं०) खुररेखा, खुरचिह्न। 'वैरीश-वाजि-शफराजिभिरप्यगम्याम्' (जयो० ३/२७)
शबरः (पुं०) भीलजाति, आदिवासी व्यक्ति। ०भिल्ल। (जयो० ७/७८)
शबरनायक (पुं०) म्लेच्छ राजा। (जयो० २१/४१)
०शिव, शंकर। (जयो० २०/६०)
शबरी (स्त्री०) भीलनी, भील स्त्री।
शबरालयः (पुं०) पर्वतीय स्थल।
शबल (वि०) मिश्रित, मिला हुआ। (जयो० २३/५७)
शब्द् (सक०) शब्द करना, ध्वनि करना, शोर करना।
शब्द् (सक०) बुलाना, पुकारना, आवाज देना। (जयो०वृ०१/३८)
शब्दः (पुं०) [शब्द्+घञ्] ध्वनि, स्वर, गूंज। (जयो०वृ०१/१९) राव-रव (जयो० ५/७०)
०निश्वन। (जयो० १९/९३)
०वचन, सार्थक प्रयोग।
०कलरव, कोलाहल।
०आकाश गुण।
०ज्ञानाचार का एक भेद-शब्दाचार। (भक्ति० ८)
०शब्द-अर्थ को बतलाना।
०श्रोत्रेन्द्रिय की विषयभूत ध्वनि।
०शब्दनमभिधानम्।
०श्रवणेन्द्रियगोचर।
०वर्ण, पद एवं वाक्यात्मक ध्वनि।
शब्द कोशः (पुं०) अभिधान, शब्दसंग्रह। ०ज्ञाननिलय, * शब्दागार, ०शब्दनिचय।
शब्दगत (वि०) शब्द के अन्दर रहने वाला।
शब्दग्रहः (पुं०) शब्द पकड़ना, श्रवण, श्रोत्र, कर्ण, करन।
शब्दचातुर्यं (नपुं०) वाक्पटुता, वचन प्रवीणता।
शब्दचित्रं (नपुं०) कर्णमधुर आभास।
शब्दचोरः (पुं०) साहित्य चोर।
शब्दच्छल (नपुं०) शब्द का कारण। (जयो०वृ० १/१५)
शब्दतन्मात्र (नपुं०) ध्वनि का सूक्ष्म तत्त्व।
शब्ददोषः (पुं०) मौन तोड़कर बोलना।
शब्दन (वि०) शब्द करने वाला, ध्वनि करने वाला। (वीरो०१५/६)
शब्दनयः (पुं०) शब्दार्थ ग्राह्य नय। (त०सू० १/३३)
शब्दपातिन् (वि०) शब्दवेधी, शब्द पर निशाना लगाने वाला।
शब्दप्रमाणं (नपुं०) मौखिक प्रमाण।
शब्दबोधः (पुं०) ध्वनि ज्ञान।
शब्दब्रह्म (नपुं०) वेद, शब्द निहित आध्यात्मिक ज्ञान।
शब्दभेदिन् (वि०) निशाने में प्रवीण, शब्दपूर्वक निशाना साधने वाला। ०ध्वनि पर लक्ष्य साधने वाला।
शब्दभेदिन् (पुं०) अर्जुन।
शब्दयोनिः (पुं०) धातु, मूल शब्द।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्दविद्या (स्त्री०) शब्दशास्त्र, व्याकरण ग्रंथ।

शब्दविरोधः (पुं०) शब्दों के प्रति विरोध।

शब्दविशेषः (पुं०) ध्वनि भेद।

शब्दवृत्तिः (स्त्री०) शब्द प्रयोग।

शब्दवेधिन् (वि०) ध्वनि सुनकर निशाना लगाने वाला।

शब्दवेधिन् (पुं०) अर्जुन।

शब्दव्युत्पत्ति (स्त्री०) सूक्त विग्रह। (जयो०वृ० १८/९१)

शब्दशक्तिः (स्त्री०) शब्दों का प्रयोग, स्थान, प्रयत्नादि पूर्वक प्रयोग। (जयो०वृ० १०/५२)

शब्दशास्त्रं (नपुं०) व्याकरण शास्त्र। (जयो० २/५२)

शब्दशुद्धि (स्त्री०) शब्दों की शुद्धि, प्रयत्नादि पूर्वक शुद्धि।

शब्दसंग्रहः (पुं०) शब्दकोश। (जयो०वृ० १/२४)

शब्दसञ्चारणं (नपुं०) पदरीति। (जयो०वृ० १/३१)

शब्दसौष्ठवं (नपुं०) पद लालित्य। प्राञ्जल शैली।

शब्दाकुलिन (वि०) शब्द की आलोचना करने वाला।

शब्दातीत (वि०) अनिवर्चनीय, शब्दों से परे।

शब्दाधिष्ठानं (नपुं०) कर्ण, कान, श्रवणेन्द्रिय।

शब्दाध्याहारः (पुं०) शब्दपूर्ति।

शब्दानुपात (पुं०) शब्द की मर्यादा तोड़ना।

शब्दानुशासनं (नपुं०) व्याकरणशास्त्र।

शब्दार्थः (पुं०) शब्द और अर्थ।

शब्दालंकारः (पुं०) एक अलंकार विशेष, जो शब्द सौंदर्य पर निर्भर रहता। भ्रमन्ति ययं परितो मदोत्कटाः। कटा श्रयन्ते ननु चेतनात्मनाम्। (जयो० २४/१८)

शब्दित (वि०) ध्वनित। ०उच्चरित, ०कथित।

शब्दोच्चारणं (नपुं०) संवेदन, प्रवचन, कथन। (जयो०वृ० १८/५०)

शम् (अव्य०) [शम्+क्विप्] ०कल्याण, आनंद, हर्ष, खुशी। (जयो० ३/२२)
०समृद्धि, मंगल कामना।

शम् (अक०) शांत होना, प्रसन्न होना, खुश होना।
०थमना, ठहरना, विश्राम लेना, रुकना।
०प्रशान्त होना।
०धीरज रखना, सान्त्वना देना।

शमः (पुं०) [शम+घञ्] ०धैर्य, शान्ति, प्रसन्नता। शमाम्बुधिर्मेरुरिवेद्धधैर्य (भक्ति० २३)
०विश्राम, आराम, ठहराव।
०शान्त। (जयो० ९/२३)
०निराकरण, लघूकरण।
०प्रथम, प्रशांत, उन्नयन, प्रशमन।
०कषायेन्द्रिय जय
०निर्विकारमन।

शमथः (पुं०) [शम्+अथच्] शन्ति, स्थिरता, धैर्य, प्रशान्त मुद्रा।

शमनं (नपुं०) [शम-ल्युट्] प्रशमन, शान्त, निराकरण, उपशमन, क्षय, शान्ति। (जयो०वृ० १८/९९)
०बुझाना-'लग्नस्य वाश्रयभुजः शमनेऽपि शापम्' (वीरो० २२/२४)
०प्रसन्न करना, निराकरण करना, उन्नयन करना।
०स्थैर्य, स्थिरता, व्याकुलता का अभाव। (मुनि० १०)

शमनः (पुं०) यमराज, अन्तक। शमनमेष शिरः स्थितमीक्षतां नहि पुनः कवलेऽपि रुचिस्तता। (जयो० २५/४०) बालोऽस्तु कश्चित्स्थविरोऽथवा तु न पक्षपातः शमनस्य जातु। (सुद० १२१)

शमनी (स्त्री०) [शमन+ङीप्] रजनी, रात्रि।
०राक्षस, पिशाच, भूत-प्रेत।

शमलं (नपुं०) [शम्+कलच्] मल, विष्ठा, लीद।
०गोमय, गोबर।
०पाप, नैतिक मलिनता। 'शमलं च मलं शकृत् इत्यमरकोषे' (जयो०वृ० २५/२६)

शमश (वि०) कल्याण सहि-शम एव शो धर्मो यस्य स (जयो० २६/)

शमितं (भू०क०कृ०) [शम्+णिच्+क्त] ०प्रशान्त किया गया, प्रसन्न किया गया।
०समझाया गया।
०विश्राम दिया गया।
०सौम्य, शान्त।

शमितविवाद (वि०) विसंवादरहित। (जयो० २/१३७)

शमिन् (वि०) [शम्+इनि] सौम्य, शान्त।
०प्रशान्त। (सुद० १२४)
०आत्मनियन्त्रित।

शमिना (स्त्री०) भूमि, भू, धरा, पृथ्वी। (मुनि० ६) 'संतापादिविवर्जितेन शमिनामीशेन संपश्यता' (मुनि० ६)

शमी (स्त्री०) [शम्+इन्+ङीप्] प्रशमभाव, प्रशान्त भाव (सुद० ११७)
०फली, सेम, छीमी।

शमीगर्भः (पुं०) अग्निहोत्री ब्राह्मण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शमीनः (पुं०) समत्वधारी व्यक्ति। समन्तातः समतां शमीनः (वीरो० १२/३३)

शमीधान्यं (नपुं०) द्वि दल युक्त दाल।

शमीशानः (पुं०) ऋषिराज, समता सम्पन्न, समत्व शिरोमणि। (जयो० १/८७)

शम्पा (स्त्री०) [शम्+पा+क] विद्युत बिजली। (जयो० ८/८) (वीरो० २/३३) 'शं शान्तिं पातीति शम्पा' (जयो० ३/८७)

शम्फली (स्त्री०) सम्भली, विलासिनी। (जयो० २६/१७)

शम्ब् (सक०) जाना, पहुंचना।
 ०संचय करना, एकत्रित करना।

शम्ब (वि०) [शम्ब्+अच्] ०प्रसन्नता, खुशी, आनंद।
 ०भाग्यशाली, अभागा।

शम्बः (पुं०) [शम्ब्+अरच्] एक राक्षस विशेष।
 ०पर्वत, गिरि।
 ०युद्ध, संग्राम।

शम्बरं (नपुं०) जल, वारि।
 ०मेघ, बादल।

शम्बरी (स्त्री०) [शम्बर+ङीष्] माया, जादू। जादूगरनी स्त्री।

शम्बलः (पुं०) ०तट, किनारा।

शम्बलं (नपुं०) ०पाथेय, मार्गव्यय।
 ०स्पर्धा, ईर्ष्या।

शम्बली (स्त्री०) कुटनी, दूती।

शम्बु/शम्बुकः (पुं०) घोंघा। ०शंख।

शम्भः (पुं०) [शम्+भः] इन्द्र वज्र। ०हर्षित व्यक्ति।

शम्भली (स्त्री०) [शम्भल+ङीष्] दूती, कुटनी।

शम्भु (वि०) [शमृ+भू+डु] हर्षित करने वाला, आनन्द देने वाला, कल्याणकर। (जयो० १/३०)

शम्भुः (पुं०) शिव, महादेव, रुद्र। (जयो० १/३०) प्रजासु शम्भुः कल्याणकरः, रुद्रश्च सन् महीभृतां राज्ञां शिरस्सु (जयो०वृ० १/३०)

शम्भुतनयः (पुं०) कार्तिकेण, गणेश।

शम्भुनन्दनः (पुं०) गणपति, गणेश। ०शिवतनय।

शम्भुप्रिया (स्त्री०) दुर्गादेवी।

शम्भुवल्लभं (नपुं०) श्वेत कमल।

शम्भुस्तुतः (पुं०) कार्तिकेय, गणेश।

शम्मुक् (स्त्री०) दन्तकान्ति, दशनप्रभा। 'शमानन्दं मुञ्चतीति शम्मुक्'। (जयो०वृ० ३/२२)

शम्या (स्त्री०) [शम्+यत्+टाप्] छड़ी, डंडा, झांझ।

शय (वि०) [शी+अच्] शयन करने वाला, सोने वाला।

शयः (पुं०) निद्रा, नींद।
 ०शय्या, आसन, विस्तरा।
 ०हाथ।
 ०अजगर
 ०अभिशाप।
 ०हस्त (जयो० ६/२०) (जयो० १/४७, ११/४१)

शयण्ड (वि०) [शी+अण्डन्] निद्रालु।

शयथ (वि०) [शी+अथच्] निद्रालु, आलसी।

शयथः (पुं०) मृत्यु, मरण।
 ०अजगर।
 ०मत्स्य, मछली।

शयनं (नपुं०) [शी+ल्युट्] निद्रा, सोना, शयन करना, नींद लेना। चकार शय्यां शयनाय तस्याः (वीरो० ५/३८)
 ०शय्या। (सुद० ९९)
 ०संभोग, मैथुन।

शयनगृहं (नपुं०) शयनकक्ष, निद्रालय, सोने का कमरा।

शयनजन्य (वि०) निद्रा को प्राप्त।

शयनभावः (पुं०) स्वप्न। (जयो० ५/१०)

शयनविकल्पः (पुं०) स्वप्न। (जयो०वृ० २२/५८)

शयनसखी (स्त्री०) शय्याकेली की सहेली।

शयनसदनं (नपुं०) शय्यागृह, शयनकक्ष। (जयो० १८/२४)

शयनस्थानं (नपुं०) शय्या स्थल, शयन स्थल, सोने का स्थान।

शयनार्थ (वि०) शय्यार्थ, शयन के लिए प्राप्त। (दयो० ८९)

शयनावस्था (स्त्री०) शयनभाव। (जयो०वृ० ५/१०)

शयनीय (वि०) [शय+अनीयर्] शय्या को प्राप्त हुआ, शय्यागत। (सुद० ३/२२)

शयनीयं (नपुं०) शयन, बिस्तरा, बिछौना।

शयप्रद (वि०) शय प्रदान करने वाला। (समु० ३/८)
 * शय्याप्रदायक, ०आसनदायक।

शयानकः (पुं०) [शी+शानच्+कन्] गिरगिट।
 ०सर्प, अजगर।
 ०शय्या। (सुद० ९८)

शयाना (वि०) सोती हुई, शयन करती हुई। (सुद० २/१०)

शयालीन्द्रियकुशेशयः (पुं०) भ्रमर रूप नेत्र। (वीरो० २१/६)

शयालु (वि०) [शी+आलुच्] सोए हुए (सम्य० १/७) निन्द्रालु, आलसी, तन्द्रालु।

शयालुः (पुं०) सर्प, सांप, अजगर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शयित (भू०क०कृ०) [शी+कर्तरि+क्त] सुप्त, सुसुप्त, सोया हुआ।
०लेटा हुआ।

शयु (पुं०) अजगर सर्प, सांप। (समु० ५/३२)

शयोपचित (वि०) हाथ में स्थित, करगत, हस्त गत। (जयो० १२/११)

शयोभयोपयोक्त्री (वि०) दोनों हाथ जोड़ने वाली। खड़ी। शययोरुभयस्य हस्तद्वयस्य उपयोक्ती भवामि। (जयो०वृ० १२/३)

शय्या (स्त्री०) [शी आधारे क्यप्+टाप्] आसन, बिछौना, विस्तरा, संस्तर। (सुद० ७८)
समदायि जनेश्वरेण मह्यामपि पद्मप्रणयेश्वराय शय्या।
यदहीनगुणैर्नरोत्तमाय विषदैः सङ्घटितेऽपि सम्प्रदाय।।

शय्यागारः (पुं०) शयन भवन, शय्यागृह।

शय्यागृहं (नपुं०) शयन स्थान। (जयो० १५/७३)

शय्यापालः (पुं०) नृप शय्या अधीक्षक।

शय्यापालः (पुं०) नृप शय्या का अधीक्षक।

शय्यामूलं (नपुं०) शय्यास्थान। (जयो० १८/९५)

शय्यासदृशी (वि०) शयनके सदृश, शय्या के समान। (जयो०वृ० १६/२४)

शय्यास्थं (नपुं०) शय्यास्थान, शय्यागृह, शयनकक्ष। (जयो० १८/९५)

शय्योत्सङ्गः (पुं०) पलंग का पार्श्वभाग, पलंग का पीछे का हिस्सा।

शरः (पुं०) [शृ+अच्] बाण, तीर। (सुद०१/४०) तेजनक, तीक्ष्ण। (जयो० ३/२७)
०पांच की संख्या।
०चोट, क्षति, घाव।
०मलाई।

शरटः (पुं०) [श+अटन्] गिरगिट।
०कुसुम्भ।

शरणं (नपुं०) [शृ+ल्युट्] ०आश्रय, सहारा, स्थान, विश्रामस्थल। (भक्ति० २५)
०प्रतिरक्षा, सहायता, साहाय्य।
०ओट।

शरण्डः (पुं०) [शृ+अंडच्] पक्षी, गिरगिट।
०ठग, धूर्त, छली।
०लम्पट, स्वेच्छाचारी।
०एक आभूषण विशेष।

शरण्य (वि०) [शरणे साधुः यत्] प्रतिरक्षक, रक्षा करने योग्य, बचाने योग्य।
०आश्रय योग्य, आधार योग्य।

शरण्यं (नपुं०) आश्रय स्थल, शरणगृह, प्रतिरक्षा, सुरक्षित स्थान।

शरण्युः (पुं०) प्रतिरक्षण, मेघ।

शरत्कालः (पुं०) शरद ऋतु। (जयो०वृ० ४/५६)

शरत्कालीन (वि०) शरद ऋतु सम्बंधी।

शरत्सम्मुखः (पुं०) शरद ऋतु के समीप। (वीरो०२१/९)

शरत्समनुयायिनी (वि०) शरद ऋतु का अनुसरण करती हुई। शरदृतोरनुकरणशीला (जयो०वृ० ३/८)

शरद् (स्त्री०) [शृ+अदि] शरत्काल, शीतकाल, आश्विन एवं कार्तिक मास में होने वाली ऋतु। (सुद० ३/३२, जयो० ३/५७) (सुद० १/८)
०शरं ददातीति शरदं-मुक्तावली सहित। ०हार देने वाली। (जयो०वृ० २२/२)
०वर्षावसान समय (जयो० ४/९)
पक्वबाल सहिता शरदेषा शालिकालिभिरुपाद्रियते वा।
(जयो० ४/५७) भूरिधान्यहितवृत्तिमतीतन्निर्जरत्वधि-गन्तुमपीतः।
संविकाशयति वा जडजातमप्युदर्कमनुयात्यथवाऽतः।।
(जयो० ४/५८)
शरदि उज्ज्वलैर्विकाशिभिः जलोद्भवेः कमलैर्निष्ठं युक्तं तथा, प्रोल्लसत्तमेन परमप्रसक्तियुक्तेन मरालेन हंसेन विशिष्टं नीरं सरोवरजलं तत् तस्य। (जयो०वृ० ४/५९)

शरद्धरा (स्त्री०) शरत्काल की पृथ्वी। (वीरो० २१/३)

शरद्मेघः (पुं०) शरद्कालीन बादल।

शरदा (स्त्री०) [शरद्+टाप्] ०पतझड़। ०वर्ष।

शरदिज (वि०) [शरदिजायते-जन्-ड सप्तम्या अलुक्] पतझड़ से संबंध रखने वाला।

शरदीव (वि०) शरद ऋतु की तरह। (सुद० ७८)

शरद्योगिसभा (स्त्री०) शरद ऋतु में रोगियों की सभा।
विलोक्यते हंसरवः समन्तान्मौनं पुनर्भोगभुजो यदन्तात्।।
दिवं समाक्रामति सत्समूहः सेयं शरद्योगिसभाऽस्मदूहः।।
(वीरो० २१/५)

शरधि (पुं०) तूणीर, तरकश। (वीरो० ८/१९)
०जलधि, समुद्र। (वीरो० ८/१९)

शरन्नवोढा (स्त्री०) शरद ऋतु रूपी नवोढा बहु। (वीरो० २१/२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शरपुंखः (पुं०) बाणों के पंख।

शरप्रवृत्ति (स्त्री०) शरसंचालन की प्रवृत्ति, शीतकाल स्थिति। (वीरो० ९/२८)

शरभः (पुं०) [शृ+अभच्] हस्ति शावक।
०टिड्डी।
०ऊँट।

शरयु (स्त्री०) [शृ+अयुः] सरयु नदी।

शरलकं (नपुं०) पानी, जल।

शरवर्षशतोत्तरि (वि०) पांच सौ वर्ष पीछे। (वीरो० २२/६)

शरव्यं (नपुं०) [शरवे शरशिक्षायै हितं-शरु-यत्] निशाना, लक्ष्य।

शराग्रयः (पुं०) तीक्ष्ण तीर।

शराक्षेपः (पुं०) बाण क्षेपण, बाणों की वर्षा।

शराटिः (पुं०) पक्षी विशेष।

शराधिकारि (पुं०) जल अधीक्षक, पानी की अधिकारी। (समु० ६/१०)

शरारु (वि०) [शृ+आरु] अहितकर, कष्टकर, हानिकारक।

शरार्पित शाप (वि०) बाणों से आविद्ध। (जयो० ५/९)

शरावः (पुं०) कोरा, कड़वका, सकोरा।

शरावं (नपुं०) ०पात्र विशेष। मिट्टी का एक छोडा पात्र। (जयो० ५/१०५) ०सकोरा।

शरावती (स्त्री०) एक नगरी विशेष।

शरिमन् (पुं०) [शृणाति यौवनं-शृ+इमन्] पैदा करना, जन्म देना।

शरीरं (नपुं०) [शृ+ईरन्] देह, काया, तनु। शीर्यन्त इति शरीराणि। 'शरीरमेन्तमलमूत्रकुण्डं यत्पूतिमांसास्थिवसादिझुण्डम्। (सुद० १०१)
०कलेबर (जयो०वृ० २५/५८) जानाम्यनेकाणुमितं शरीरं जीवः पुनस्ततप्रमितं च धीरः। (वीरो० १४/३०) भोगायतन, भोगस्थान। (सम्य० २४)
०औदारिक आदि शरीर। (सम्य० ४२)

शरीरकर्तृ (पुं०) पिता, जनक।

शरीरकर्मन् (नपुं०) शरीर का कार्य।

शरीरकर्षणं (नपुं०) शरीर की कृषता।

शरीरगत (वि०) देहगत। (सुद० १३६)

शरीरच्छायः (पुं०) शरीर प्रतिबिम्ब, शरीर की परछाई। (जयो०१२/१२०)

शरीरजः (पुं०) रोग, आधि, व्याधि।
०पुत्र, सन्तान।
०कामोद्दीपन।

शरीरतुल्य (वि०) देह सदृश।

शरीरदण्डः (पुं०) देह दण्ड्, शारीरिक दण्ड।

शरीरदेशः (पुं०) काय के प्रदेश (सुद० १२३)

शरीरधारिन् (वि०) देह को प्राप्त षट् काय जीवादि।

शरीरधृक् (वि०) शरीर धारक।

शरीर नन्दिन् (वि०) देहगत आनन्द मनाने वाला।

शरीरपतनं (नपुं०) मृत्यु, मौत, मरण।

शरीरपर्याप्ति (स्त्री०) शरीर रूप परिणमन।

शरीरपातः (पुं०) मरण, मृत्यु।

शरीरबद्ध (वि०) शरीरी।

शरीरबन्धः (पुं०) दैहिक रचना प्रक्रिया, शरीर की बनावट।

शरीर भेदः (पुं०) शारीरिक अन्तर, शरीर वियोग मृत्यु, मरण।

शरीरयष्टिः (स्त्री०) दैहिक क्षीणता, पतला शरीर, कृशकाय।

शरीरयात्रा (स्त्री०) जीवन-यापन, देह पुष्टि का साधन।

शरीरवर्गः (पुं०) संसारी जन। (जयो० १६/२५)

शरीरवर्जित (वि०) अङ्गातिग, देह रहित। (जयो०वृ० २/१५३)

शरीरविवेकः (पुं०) सुख-दु:खादि का विवेक।

शरीरशोभा (स्त्री०) देहप्रभा, शरीर की चमक। (जयो०१/७०)

शरीरसंघातः (पुं०) शरीरगत शुद्धि।

शरीरसंलेखना (स्त्री०) आहारादि का त्याग करना।

शरीरसंस्कारः (पुं०) देह को सजाना।

शरीरस्थितिः (स्त्री०) देह पुष्टि। (दयो० ३४/)

शरीरहानि (स्त्री०) क्षीण शरीर। (वीरो० १८/२४)
०मरण, मृत्यु।

शरीराङ्गोपाङ्गनाम (पुं०) अंग-उपांग की उत्पत्ति, शरीर रचना।

शरीरिन् (वि०) [शरीर+इनि] शरीरधारी, शरीर युक्त।
०जीवित, चेतनामय, प्राणयुक्त। संचेत्यते यावदसंज्ञिकर्मफलं शरीरीपरिभिन्नमर्म।
यतो नहि ज्ञानविधाथियकर्मकर्तुं तदा प्रोत्सहतेऽस्य नर्म।। (सम्य० ४१)
०जिसके शरीर होता है-शरीरमस्यास्तीति शरीरी। (धव० ९/२२१) सरीरमेयस्स अत्थि त्ति सरीरी (धव० १/१२०)

शर्करजा (स्त्री०) [शृ+कान्-जन्+ड+टाप्] मिश्री।

शर्करा (स्त्री०) [शृ+कान्+टाप्] शक्कर खाण्ड।
०कंकड़ी, रोड़ी, बजरी।
०बालू से युक्त भूमि, रेत।
०ठींकरा।

शर्करायुक्त (वि०) सिताश्रित, शर्करा मिश्रित, शक्कर युक्त। (जयो०वृ० १६/९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शर्करिक (वि०) कंकर, कंकड़ी, बजरीयुक्त। (जयो० २७/४९) किरकिरा, कंकरीला।

शर्करिलः (वि०) देखो ऊपर।

शर्करी (स्त्री०) नदी।

०करधनी, मेखला, कंदौरा।

शर्धः (शृध्+घञ्) अफारा, अपानवायु का छोड़ना, पदास, पादना।

०दल, समूह।

०सामर्थ्य, शक्ति।

शर्धजह (वि०) [शर्ध+हा+खश्] अफारा उत्पन्न करने वाला, वायु विकार वाला।

शर्धजहः (पुं०) [शर्ध+हा+वश्+घञ्] उड़द, माष।

शर्धनं (नपुं०) [शृध्+ल्युट्] पादना, उदास, वायु छोड़ना।

शर्ब् (सक०) जाना, पहुंचना।

०नाश करना, क्षतिग्रस्त करना।

शर्मकारि (वि०) सुख दायक।

शर्मन् (पुं०) [शृ+मनिन्] दास, गुप्ता।

शर्मन् (नपुं०) प्रसन्नता, आनन्द, खुशी।

०आशीर्वाद।

०आश्रय, आधार। स्त्री प्रसंगादि सुख (जयो० ३/१,) कल्याण, सुख। (जयो० २/४४, १२/४८)

शर्मरः (पुं०) [शर्मन्+रा+क] वस्त्र विशेष, परिधान विशेष।

शर्मलेखिनी (स्त्री०) आनन्द समुद लेखकर्त्री। (जयो० १२/८१)

शर्मवत् (वि०) सुख सदृश। (जयो० ७/१००)

शर्मवारि (नपुं०) सुखपूर्ण जन। ०स्वच्छ जल।

शर्मसूक्ति (स्त्री०) कल्याणोत्पत्ति। (जयो० २३/२१)

शर्माज्झिति (स्त्री०) सुख त्याग। (मुनि० १७)

शर्मार्थ (वि०) शान्तिलाभार्थ। (जयो० २३/६९)

शर्या (स्त्री०) [शृ+यत्+टाप्] रजनी, रात्रि।

०अंगुली।

शर्व् (सक०) जाना, पहुंचना।

०क्षति पहुंचना, मारना, घात करना।

शर्वः (पुं०) विष्णु।

शर्वरः (पुं०) [शृ+ष्वरच्] कामदेव।

शर्वरं (नपुं०) तम, अन्धकार।

शर्वरी (स्त्री०) तम, अंधकार।

शर्वरी (स्त्री०) [शृ+वनिप्+ङीप्] रजनी, रात्रि (जयो० १५/३४) (जयो० ११/९३) 'शर्वरी तु त्रियामायां हरिद्रायोषितो रपि' इति विश्वलोचनः (जयो० १८/४७) युवती शर्वरी तु त्रियामायां हरिद्रायोषतोरपि' इति विश्वलोचन (जयो०वृ० २२/१७)

शल् (सक०) हिलाना, हरकत देना।

०क्षुब्ध करना।

०कांपना।

शलः (पुं०) [शल्+अच्] सांग, चन्द्र। (जयो० २४/४९) बर्छी।

०मेख।

०ब्रह्मा। शलं तु शल्लकीलोक्नि शलो भृङ्गिगणे विधौ इति वि

शलकः (पुं०) [शल+कन्] मक्कड़ मकड़ा।

शलक्ष (वि०) चिकना।

शलक्षकेशः (नपुं०) चिकने केश। (सुद० २/७)

शलङ्गः (पुं०) [शल्+अङ्गच्] नृप, राजा।

०प्रभु, स्वामी।

शलभः (पुं०) [श्शल्+अभच्] पतंगा। (जयो० २५/२४) झषचातकशलभाशीः (सुद० १/४९) अनवयन्दहनं शलभोऽतति वडिशमांसमितश्च झषोऽमतिः। (जयो० २५/७७)

शलभपंक्तिः (स्त्री०) पतङ्गावलि। (जयो० १०/११५)

शलभसमूहः (पुं०) पतंग समूह।

शललं (नपुं०) [शल्+अलच्] साही का कांटा।

शलली (स्त्री०) छोटी साही।

शलाका (स्त्री०) [शल्+आक्ः+टाप्] छोटी खूंटी, कील, टुकड़ा, सींखचा। लोह कीलक (३/१७)

०सलाई, अंजन आंजने की तीली।

०बाण, तीर।

०सांग।

०अंकुर, फुनगी, कोंपल।

०दंत कुदेरनी, दंत प्रक्षालिनी।

०महत् व्यक्तिव युक्त पुरुष तत्व। (जयो० १/५९)

०विशिष्ट व्यक्ति, वीतरागानुगामी पुरुष।

शलाकापुरुषः (पुं०) वीतरागानुगामी पुरुष। विशिष्ट पुरुष, तीर्थंकर, चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव आदि।

एत्तो सलायपुरिसा, तेसट्ठी सयल-भुवण विक्खादा।
जायेति भरखेत्ते णरसीहा पुण्णपाकेण।। (ति०प० ४/५१७)

शलाटु (वि०) [शल्+आटु] अनपका, अपरिपक्व।

शलोपलः (पुं०) चन्द्र कान्तमणि। (जयो०२४/४९)

शल्कं (नपुं०) मछली।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०बल्कल, छाल।

०भाग, अंश, खण्ड।

शल्कलिन् (पुं०) [शल्कल+इनि] मछली।

शल्भ् (सक०) प्रशंसा करना।

शल्मलिः (स्त्री०) [शल्+मलच्+इन-] सेमल वृक्ष।

शल्यं (नपुं०) [शल+यत्] 'ऋणति हिनस्तीति शल्यं' (स०सि० ७/१८) बाण।

०अन्तर्निविष्ट परिणाम तीर।

०कांटा, कील। (जयो० २/१०)

०शूल। (जयो० २/७०)

०खूंटी, थूणी।

०कष्ट, दुःख, पीड़ा।

शल्यः (पुं०) शल्यक्रिया, एक चिकित्सा विधि, जिसमें शरीर भेदन कर पीड़ा को शान्त किया जाता है।

शल्यकः (पुं०) सलाख, खपची, कांटा, फांस।

शल्यक्रिया (स्त्री०) शल्यशास्त्री की क्रिया।

शल्यलोमन् (नपुं०) साही का कांटा।

शल्यशास्त्रं (नपुं०) शल्यक्रिया सम्बंधी ग्रंथ।

शल्यहर्तृ (पुं०) चिकित्सक, वैद्य।

शल्लः (पुं०) [शल्ल्+अच्] मेंढक।

शल्लं (नपुं०) वल्कल, छाल।

शल्लकी (स्त्री०) [शल्लक+ङीष्] साही। जीव विशेष।

शल्लकीद्रवः (पुं०) धूप, लोबान।

शल्वः (पुं०) एक देश विशेष।

शव् (सक०) जाना, पहुंचना।

०बदलना, परिवर्तन करना।

शवः (पुं०) [शव्+अच्] लाश, मुर्दा, मृतक। (जयो० ८/३९)

शवं (नपुं०) जल, वारि, पानी।

शवकाम्यः (पुं०) श्वान, कुत्ता।

शवगत (वि०) मृतक हुआ, मरा हुआ, मृत्यु को प्राप्त हुआ।

शवभू (स्त्री०) श्मशान, भूमि, शवस्थल। (सुद० ९२)

शवभूदा (स्त्री०) श्मशानस्थल।

शवयानं (नपुं०) अरथी, मृतक यान।

शरथः (पुं०) अरथी, शवयान।

शवशिविका (स्त्री०) अरथी, परेतरथान्त। (जयो०वृ० २५/४७)

शवसानः (पुं०) [शव+असानच] यात्री, पथ, मार्ग, रास्ता।

शवसानं (नपुं०) श्मशानभूमि, शवस्थान, शवस्थल।

शश् (अक०) समर्थ युक्त, शशाक। (सुद० ७६)

शशः (पुं०) [शश्+अच्] खरगोश, खरहा। (दयो० ७६)

०चन्द्र कलंक।

शशकः (पुं०) खरगोश, खरहा। (दयो० ७६)

शशकृत् (पुं०) खरगोश। (सुद० ९२)

शशधरः (पुं०) चंद्रमा, चन्द्र, शशि। (दयो० ५४)

शशभृत् (वि०) चुद्रतुल्य, चन्द्र सदृश। नर्मेष्टिं सुमुखेट्टगेतु शशभृत्कल्पे कथं नाथः नः' (जयो० ११/१००)

शशभृत् (पुं०) शिव, महादेव।

शशमूर्तिः (स्त्री०) चन्द्रमा, शशि।

शशमौलिः (पुं०) महादेव, शिव, शंकर।

शशलक्ष्मणः (पुं०) चंद्रमा, शशि।

शशलाच्छनः (पुं०) चंद्रमा, शशि। चन्द्रचिह्न। (जयो० ९/९५) तत्रासीच्छशलाञ्छनस्य रसनात् प्रारब्धपूर्णात्मनो' (जयो०वृ० ९/९५)

शशलेखा (स्त्री०) चन्द्रकला, चन्द्ररेखा।

शशलोमन् (पुं०) खरगोश की रोम राजि।

शशविषाणं (नपुं०) खरगोश के सींग।

शशस्थली (स्त्री०) गंगा के बीच की भूमि। दोआबा।

शशाङ्कः (पुं०) चन्द्र। ०कपूर। (सुद० १/४०)

शशादः (पुं०) बीज, स्येन, ०पुरंजय के पिता का नाम।

शशादनः (पुं०) बाज, स्येन।

शशार्धमुख (वि०) अर्ध चन्द्र की आकृति युक्त बाण।

शशिन् (पुं०) [शशोऽन्त्यस्य इनि] सर्वात्मना कमनीयत्वलक्षण-मन्नर्थमाश्रित्य चन्द्रः। चन्द्र, शशि, चन्द्रमा (सुद० ३/३) शशिना शुचिशर्वरीव सा दिनवच्छ्रीर विणा महायशाः। (सुद० ३/१६)

शशिकला (स्त्री०) चन्द्ररेखा, चन्द्र प्रभा, चन्द्रकिरण।

शशिकान्त (वि०) शुद्धतम, अतिस्वच्छ। (जयो० ३/६४)

शशिकान्तः (पुं०) शशिकान्तमणि।

शशिकान्तं (नपुं०) कमलिनी।

शशिकान्ति (स्त्री०) चन्द्र प्रभा।

शशिकोटिः (स्त्री०) चद्रश्रृङ्ग।

शशिगृहं (नपुं०) चन्द्रग्रहण।

शशिग्रहणं (नपुं०) चन्द्रग्रहण।

शशिजः (पुं०) बुध।

शशिनीत्थः (पुं०) शान्त अवस्था। (जयो० २६/२३)

शशिप्रभा (स्त्री०) चन्द्र किरण।

शशि भा (स्त्री०) आदित्य राजा की रानी। विजयार्ध पर्वत के राजा की रानी। (जयो० २३/५१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शशिभृत् (पुं०) महादेव, शिव।
शशिमौलिः (पुं०) महादेव, शिव।
शशिलेखा (स्त्री०) चन्द्र किरण।
शशिशेखः (पुं०) महादेव, शिव।
शशिहरः (पुं०) सूर्य, दिनकर, रवि।
शशिहर (वि०) चन्द्रापहारक। (जयो० २५/३७)
शश्वत् (अव्य०) [शश्+वत्] लगातार, अनारत, निरन्तर। (जयो०२३/५९)
०सदा के लिए, सतत्, बार-बार, सदैव। (वीरो० २१/१५)
बहुशः पुनः पुनः (सुद० १०२)
शश्वतकृतिन् (स्त्री०) शाश्वतबुद्धि। (जयो० १/४२)
शश्वत्कार्यः (पुं०) सदैव काम। ०प्राय कार्य करना।
शश्वत्गतिः (स्त्री०) निरंतर गति। ०प्रगति, प्रतिगति।
शश्वच्चारि (वि०) निरंतर गमनशील। ०जन्म जन्मान्तर।
शश्वज्जन्म (वि०) पुनर्जन्म।
शश्वत्प्रतिष्ठाश्रयः (पुं०) निरन्तर प्रतिष्ठा का पात्र।
शश्वदपि (अव्य०) सदैव, बार बार भी, पुनरपि, फिर से भी। (जयो०वृ० ५/१९)
शष्कुली (स्त्री०) [शष्+कुलच्+ङीष्] कान का विवर, श्रवणमार्ग।
०चावल की कांजी।
०कर्ण रोग।
शष्पः (पुं०) [शष्+पक्] प्रतिभाक्षय, बुद्धि वैशिष्ठ का अभाव।
०तृण घास। (जयो०वृ० ८/९२)
शष्पं (नपुं०) बुद्धि कौशल का अभाव।
शस् (सक०) काटना, नष्ट करना। ०दिखना। शस्यते (जयो० ९/९५)
०हनन करना, मार डालना।
शसनं (नपुं०) [शस्+ल्युट्] घायल करना, चोट पहुंचाना, क्षत-विक्षत करना।
०बलि, मेघ।
शस्त (भू०क०कृ०) प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया।
०शुभ, आनन्द प्रद, सुंदर, रमणीय-मातुर्मुखं चन्द्रमिवैत्य हस्तौ सङ्गो चमाप्तौ तु सरोजशस्तौ। (वीरो० ५/२६)
०प्रशस्त। (जयो० २/४४)
०यथार्थ, सर्वोत्तम। (जयो० १/२०)
०प्रशंसनीय। (जयो० ६/३९, प्रशंसायोग्य।
०क्षतिग्रस्त, घायल।
०वध किया हुआ, घायल किया हुआ।

शस्तं (नपुं०) सुख, हर्ष, आनन्द।
०कल्याण, भद्र, मंगलमय।
०शरीर।
०अंगुलिप्राण।
शस्तानुरागः (पुं०) ०प्रशस्तानुराग। ०स्तुत्य अनुराग। (जयो० १८/३४)
शस्तिः (स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।
शस्त्रं (नपुं०) [शस्+ष्ट्रन्] आयुध, शस्त्र, हथियार।
०उपकरण, औजार।
शस्त्रकारः (पुं०) शस्त्रनिर्माता।
शस्त्रकोषः (पुं०) म्यान, आवरण।
शस्त्रग्रहणं (नपुं०) शस्त्रधारण। (वीरो० १०/२९)
शस्त्रग्राहिन् (वि०) शस्त्र धारण करने वाला।
शस्त्रजीविन् (पुं०) सैनिक, योद्धा, जाबाज, बहादुर, पराक्रमी।
शस्त्रधर (वि०) शस्त्रधारक।
शस्त्रन्यासः (पुं०) हथियार डाल देना।
शस्त्रपाणि (वि०) हस्तगत अस्त्र वाला।
शस्त्रपूत (वि०) शहीद, बहादुरी से लड़कर मरने वाला, शहीद होने वाला, शहादत पर मर मिटने वाला।
शस्त्रप्रहारः (पुं०) शस्त से आघात।
शस्त्रभृत् (पुं०) योद्धा, सैनिक।
शस्त्रमार्गः (पुं०) शस्त्रनिर्माता। ०आयुध शिक्षा।
शस्त्रविद्या (स्त्री०) युद्धकला, आयुध चलाने का ज्ञान।
शस्त्र वैद्य (वि०) आयुध ज्ञाता। (समु० ९/२९)
शस्त्रशास्त्रं (नपुं०) आयुध विद्या का ग्रंथ। ०असिज्ञान।
शस्त्रशास्त्रविद् (वि०) शस्त्रविद्या का ज्ञाता। (जयो० ५/१)
शस्त्रसंचालन (नपुं०) शस्त्र चलाना। (वीरो० १०/२९)
शस्त्रसंपातः (पुं०) आयुध गिरना।
शस्त्रसंहतिः (स्त्री०) शस्त्रसंग्रह, आयुधशाला, शस्त्रागार।
शस्त्रहत (वि०) अस्त्र से मारा गया।
शस्त्रहतिः (स्त्री०) शस्त्र की चोट, अस्त्र प्रहार से घायल। हथियार की चोट। (समु० १/६)
शस्त्रहस्त (वि०) आयुध धारी।
शस्त्रिका (स्त्री०) [शस्त्रक्+टाप्] चाकू।
शस्त्रिभावः (पुं०) शस्त्रग्रहण का भाव।
शस्त्री (स्त्री०) चाकू।
०आयुधी। (जो०वृ० २/४१)
शस्त्रोत्तेतनपाषाणं (नपुं०) शाण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शस्त्रोपजीवित (वि०) क्षत्रिय। (जयो० २/१११) (जयो०वृ० २/४१)

शस्त्रोपयोगिन् (वि०) शस्त्र उपयोग करने वाला।
शस्त्रोपयोगिने शस्त्रमयं विश्वं प्रजायते।
शस्त्रं दृष्ट्वाऽप्यभीताय स्पृहयामि महात्मने।
(वीरो० १०/३३)

शस्यं (नपुं०) [शस्+यत्] धान्य, अन्न (समु० १/७) (वीरो०२/६, सम्य० ४७) शस्यात्म-सम्पत्समवायिनस्तान् स्वर्गप्रदेशान्मनुते स्म शस्तान्। (सुद० १/३०)

शस्य (वि०) भविष्य (सुद० २/२८)
०ख्यात, प्रसिद्ध। (जयो०१/७६) भालानलप्लुष्टमुमाधवस्य स्वात्मानमुज्जीव यतीति शस्यः।। (जयो० १/७६) शस्यः-ख्यात (जयो०वृ० १/७६)
०प्रशंसनीय-'स्याद्वाच्यता वा नकुलस्य यस्य ख्यातश्च सद्भि सहदेवशस्यः। (जयो० १/१८) देवैः शस्यः प्रशंसनीय सन्' (जयो० १/१८)

शस्यतम (वि०) प्रशस्ततम, श्रेष्ठतम्। अनुचानत्वमापन्ना स्त्रीषु शस्यतमा मता (वीरो० ८/३९)

शस्यतमस्वभावः (पुं०) प्रशंसनीय स्वभाव। (जयो० ११/७१)

शस्यतिलाङ्कः (पुं०) प्रशस्त चिह्न, सामुद्रिक शास्त्रानुकूल चिह्न। 'पश्यति शस्यतिलाङ्के नश्यतु तृष्णाप्यभुष्यारम्। (जयो० ६/२१) 'शस्यः सामुद्रिक शास्त्रानुकूल प्रशंसार्हस्य। तिलस्याङ्कश्चिह्नो यस्यः सा। (जयो०वृ० ६/२१)

शस्यद्युतिः (स्त्री०) मनोहरकान्ति। (जयो० जयो० ६/४२)

शस्यपूर्णः (पुं०) धान्य से परिपूर्ण। (दयो० १६)

शस्यभक्षक (वि०) धान्य भक्षक, अन्नाहारी, शाकाहार युक्त।

शस्यमञ्जरी (स्त्री०) धान्य का बाल, धान्य के पुष्प गुच्छ।

शस्यमालिन् (वि०) हरे भरे खेत वाला।

शस्यवाक् (नपुं०) मञ्जुलवचन,

शस्यवाक् (वि०) मञ्जुभाषिणी। (जयो० ११/५२)

शस्यवृत्तिः (स्त्री०) प्रशंसनीय चेष्टा। (जयो० २२/७) धान्य सहित वृत्ति। (जयो० वृ० २२/७)

शस्यशालिन् (वि०) धान्य से परिपूर्ण।

शस्यशूकं (नपुं०) धान्य भूषी।

शस्यसंपद् (स्त्री०) धान्य सम्पदा, अनाज की व्यापकता।

शस्यसंपन्न (वि०) धान्य से परिपूर्ण।

शस्यशम्बरः (पुं०) शाल वृक्ष।

शस्याङ्कुरं (नपुं०) धान्य के अंकुर, घास के अंकुर। (समु० १/२६)

शस्यात्मसम्पद् (वि०) धान्य से सम्पन्न। (सुद० १/२०)

शाकः (पुं०) [शक्यते भोक्तुं-शक्+घञ्] शाक, साग-सब्जी, हरी सब्जिया। (जयो० १२/११५, सुद० ४/३४)

शाकं (नपुं०)

शाकः (पुं०) सामर्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, बल।
०सागौन वृक्ष, शिरीष वृक्ष। कर्कदू (जयो०वृ० ६/९६)
०शाकाहार। (दयो० ३८)
समस्ति शाकैरपि यस्य पूर्तिर्दग्धोदरार्थे कथमस्तु जूर्तिः। (दयो० ३८)

शाकचुक्रिका (स्त्री०) इमली।

शाकट (वि०) गाड़ी सम्बंधी।

शाकटायनः (पुं०) एक वैयाकरण।

शाकटिक (वि०) गाड़ी सम्बंधी।

शाकतरु (पुं०) सागौन।

शाकपणः (पुं०) अल्प शाक-भाजी।

शाकपार्थिवः (पुं०) नाम चलाने वाला व्यक्ति।

शाकपिण्डः (पुं०) शाकाहार। (दयो० ३८)

शाकप्रति (अव्य०) थोड़ा सी वनस्पति।

शोकयोग्यः (पुं०) धनिया।

शाकल (वि०) [शकल+अण्] टुकड़े से सम्बन्धित।

शाकलः (पुं०) ऋग्वेद की एक शाखा।

शाकलप्रातिशाख्यं (नपुं०) ऋग्वेद का प्रातिशाख्य।

शाकलष (वि०) शाक के टुकड़ों पर पेर भरने वाला। 'शाकस्य लवैः कतिपयैग्रासैरपि पूर्यत पूरितं भवति'। (जयो० २६/१६)

शाकलशाखा (स्त्री०) ऋग्वेद का पाठ विशेष।

शाकल्यः (पुं०) [शकलस्यापत्यम्] एक प्राचीन वैयाकरण।

शाकारी (स्त्री०) शकार द्वारा बोली गई भाषा। प्राकृत भाषा का एक रूप, जिसमें र का ल एवं श-श, स-श एवं ष-श अर्थात् श, स, ष का श प्रयोग होता है। 'मृच्छकटिकं' में इनका प्रयोग विशेष रूप से हुआ है।

शाकाहारः (पुं०) साग, फलादि का आहार। (दयो० ३८/)

शाकिनं (नपुं०) [शाक+इनच्] शाक जैसा।

शाकिनी (स्त्री०) [शाकिन्+ङीप्] साग-भाजी-का खेत। एक पिशाचिनी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाकुन (वि०) [शकुन+अण्] पक्षियों से सम्बंध रखने वाला।
०सगुन सम्बंधी।

शाकुनिकः (पुं०) [शकुनेन पक्षिवधादिना जीवति ठञ्] बहेलिया, चिड़िमार।

शाकुनिकं (नपुं०) शकुन का विवेचन। शकुनवक्ता।

शाकुनेयः (पुं०) [शकुनि+ढक्] छोटा उलूक, घूका।

शाकुन्तलः (पुं०) [शकुन्तला+अण्] भरत का मां के नाम से सम्बोधित शब्द।

शाकुन्तलं (नपुं०) महाकवि कालिदास का प्रसिद्ध नाटक, जिसमें राजा दुष्यंत और शकुन्तला के प्रेम प्रसंग एवं वियोग का मार्मिक चित्रण हुआ है। इसमें राजा दुष्यंत, मंत्री संस्कृत का प्रयोग करते हैं और अन्य जनसामान्य से जुड़े पात्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करते हैं। शकुन्तला, उसकी सखियां शौरसेनी प्राकृत का प्रयोग करती हैं। लव और कुश भी मातृ रूप शौरसेनी भाषा का प्रयोग करते हैं। मछुआरा मागधी प्राकृत का प्रयोग करता है। -'अभिज्ञानशाकुन्तलं नाम से प्रसिद्ध नाटक दृश्यकाव्य की उच्चतम अभिव्यक्ति है।

शाकुलिकः (पुं०) [शकुल+ठक्] मछुआरा, मल्लाह।

शाक्करः (पुं०) [शक्कर+अण्] वृषभ, बैल, बलिवर्द।

शाक्ति (स्त्री०) दिव्य शक्ति युक्त व्यक्ति।

शक्तिकः (पुं०) [शक्ति+ठक्] शक्ति पूजक।

शाक्तीकः (पुं०) [शक्ति+ईकक्] भालाधारी, बर्छीयुक्त व्यक्ति।

शाक्तेयः (पुं०) शक्ति का उपासक।

शाक्यः (पुं०) [शक्+घञ्] बुद्ध।

शाक्यभिक्षुकः (पुं०) बौद्धभिक्षु।

शाक्यमुनिः (पुं०) बुद्ध, गौतमबुद्ध।

शाक्री (स्त्री०) [शक्र+अण्+ङीप्] शची, इन्द्राणी।
०दुर्गादेवी।

शाखा (स्त्री०) [शाखति गगनं व्याप्नोति शाख्+अच्+टाप्] डाली, शाखा, टहनी। (सुद०२/१५) 'समुच्छलच्छाखतयाऽय वीनां कलध्वनीनाभृशमध्वनीनान्। (सुद० १/१७) 'शाखा यथा कल्पमहीरुहस्य' (समु० ६/१८) एकस्य वृक्षस्य भवन्ति शाखा, विधोरनेका अथवा विशाखा। (समु० ६/१९)
०भुजा।
०दल, अनुभाग, हिस्सा।
०उपभाग, सम्प्रदाय, पथ, परम्परा।
०वेद ऋचाओं का पाठ।

शाखानगरं (नपुं०) नगर परिसर, नगर का उपभाग।

शाखाग्रभागः (पुं०) शाखा का कोंपल भाग। (जयो० ११)
०वृक्ष की शाखा का अग्रभाग/ऊपरी भाग।

शाखाचारः (पुं०) शाखाभाग। शाखाया आचरणं स्वकुलचरणरूप निर्वहणं। (जयो० १२/१७)

शाखापदं (नपुं०) दलभाग।

शाखापित्तः (पुं०) कन्धादि भाग।

शाखाभृत् (पुं०) वृक्ष।

शाखाभेदः (पुं०) शाखाओं में अंतर।

शाखाभृगः (पुं०) लंगूर, वानर, बन्दर।
०गिलहरी।

शाखारण्डः (पुं०) पंथ को बदलना।

शाखालः (पुं०) [शाखा+ला+क] बेंत, बानीर।

शाखिन् (वि०) [शाखा इनि] शाखाधारी, पंथ धारी।
०टहनीमय।

शाखिनि-प्रवह्न (वि०) शाखाओं पर कुठार घात। 'शाखिनि-प्रवहन्नन्ते कुठारः केवलं करे।' (सम्य० १४२)

शाखिपदं (नपुं०) वृक्षस्थान। 'दृष्ट्वा विवादमिह शाखिपदेषु नाना' (जयो० १८/६१) 'शाखिनां वृक्षाणां पदेषु स्थानेषु यद्वा' (जयो०वृ० १८/६१)

शाखिशाखा (स्त्री०) वृक्ष की शाखा। (दयो० ११२)

शाखोटः (पुं०) [शाख्+ओटन्] एक वृक्ष विशेष।

शाखोटकः (पुं०) एक वृक्ष विशेष।

शाङ्करः (पुं०) वृषभ, बैल।

शाङ्करिः (पुं०) [शङ्कर+इञ्] कार्तिकेय, गणेश।
०अग्नि।

शङ्खिकः (पुं०) [शङ्ख+ठक्] शंखकार।

शाटकः (पुं०) [शट्+कन्+घञ्] अधोवस्त्र।

शाटकं (नपुं०) [शट+कन्+ल्युट्] साड़ी, वस्त्र, कपड़ा। (सुद० ४/३१)

शाटिका (स्त्री०) साड़ी।

शाटी (स्त्री०) साड़ी। (सुद० ४/३१) (समु० ५/१८)
०दुकूल, दुपट्टा। (जयो०१३/५६) बुर्का, आवरणवस्त्र। (जयो०१५/२७) कापीन वापी सरसा सुवृत्ता, मुद्रेव शाटीव गुणैकसत्ता। (सुद २/६)

शाटी (वि०) शर्मसम्पन्न, वधकर्त्री। (जयो० ३/३९)

शाठ्य (वि०) [शठ+ष्यञ्] बेईमानी, छल, कपट, चालाकी, जालसाजी। ०धूर्तता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाठ्यकर्म (वि०) छलकर्म वाला।

शाठ्यगत (वि०) कपट को प्राप्त हुआ।

शाठ्यभाव: (पुं०) धूर्तता का भाव।

शाड्वल: (पुं०) हरित घास, दुर्वांकुर। (जयो० ३/४७)

शाढक (वि०) सम्यङ् निगूढ, अच्छी तरह से आच्छादित। (जयो० १७/१७)

शाण (वि०) [शणेन निर्वृत्तम्+अण्] सन से निर्मित, पटसन से बना हुआ।

शाण: (पुं०) कसौटी, सोने परखने का पत्थर। (जयो० १०/२८) (सुद० १०२)

०आरा।

०तोल।

०शस्त्रोत्तजन पाषाण। (जयो० २/४१)

शाणं (नपुं०) मोटा कपड़ा।

०द्योतन (वीरो० २१/१४) छुरी। (समु० १/१)

शाणाजीव: (पुं०) वस्त्रनिर्माता, सिकलीगर।

शाणि: (स्त्री०) [शण्+इण्] सन का पादप, पटुआ।

शाणित (भू०क०कृ०) [शण्+णिच्+क्त] सान पर रक्खा हुआ, पीसा हुआ।

शाणी (स्त्री०) [शण्+ङीप्] कसौटी, सान।

०आरा।

०सम वस्त्र।

०चिथड़ा।

०छोटा पर्दा।

शाणीरं (नपुं०) [शण्+ईरण्] शोण नदी का तट, शोण नदी स्थल।

शाणोपल: (नपुं०) उत्तेजक पाषाण। (जयो० २४/१११) घर्षणपाषाण। (जयो० १५/९२) ०चकमक पत्थर, अग्नि उत्पन्न करने वाला पत्थर।

शाण्डिल्य: (पुं०) [शण्डिल+यञ्] विधिशास्त्र निर्माता। * एक ब्राह्मण, शाण्डिल्य ऋषि।

०बिल्ववृक्ष। शाण्डिल्य-पारा-शरिका द्वयस्य पुत्रोऽभवं स्थावर नामशस्य (वीरो० ११/१०)

शाण्डिल्यगोत्रं (नपुं०) शाण्डिल्य ऋषि की परम्परा।

शाण्डिल्यजात (वि०) शाण्डिल्य गोत्र में उत्पन्न हुए।

शात (भू०क०कृ०) [शो+क्त] तीक्ष्ण किया हुआ, पैना किया हुआ।

०पतला, कृश।

०दुर्बल।

०सुंदर, रमणीय।

०प्रसन्न।

शात: (पुं०) धतूरे का पौधा।

शातं (नपुं०) विनोद, आनन्द, खुशी। (समु० ३/८)

शातकर (वि०) प्रसन्नता दायक। (जयो० ४/२)

शातकुम्भ: (पुं०) [शतकुम्भे पर्वते भवं अण्] ०सोना।

०धतूरा।

शातकौम्भं (नपुं०) [शतकुम्भ+अण्] स्वर्ण, सोना।

शातद्युति: (स्त्री०) विनोद छटा, हर्ष भाव की झलक।

हे तात! शातद्युतिरेषजातमात्रस्थितिर्वारिनिधे: प्रयात:। (समु० ३/८)

शातनं (नपुं०) [शो+णिच्+लङ्+ल्युट्] पैना करना, तीक्ष्ण करना, तेज करना।

०विनाशकर्ता, नाश करने वाला।

०नष्ट करना।

०मुर्झाना।

शातपत्रक: (पुं०) [शतपत्र+अण्+कन्] चन्द्रप्रभा, चन्द्रकिरण।

शातपत्रकी (स्त्री०) चन्द्रप्रभा।

शातभीरु: (स्त्री०) [शाता: दुर्बला: पान्था: भीरवो यस्या] मल्लिका पुष्प।

शातमान (वि०) [शतमानेन क्रीतं अण्] सौ में मोल लिया हुआ।

शात्रव (वि०) [शत्रु+अण्] शत्रु सम्बंधी, विरोधी, प्रतिपक्षी।

शास्त्रव: (पुं०) दुश्मन, शत्रु, बैरी।

शास्त्रपूरग (वि०) शत्रु से पूर्ण। (समु० ७/२७)

शात्रवीय (वि०) [शत्रु+छ] विरोधी, वैरी, शत्रुतापूर्ण, शत्रुसम्बंधी।

शाद: (पुं०) [शद्+घञ्] छोटी घास।

०कर्दम, कीचड़।

शादहरित: (पुं०) हरित स्थल।

शाद्वल (वि०) [शादा: सन्त्यत्र वलच्] दुर्वाङ्कुर (जयो० १३/५६)

पुलिन-द्वितयाग्रवर्तिनी स्फुटशाटीसमयानुवर्तिनी।

सरित: परितोष संस्कृति: समभाच्छाद्वल सार-सन्तति:।। (जयो० १३/५४) शाद्वलानां दुर्वाङ्कुराणां सारभूता या सन्तति:। (जयो०वृ० १३/५६)

०हरा भरा, हरित घास युक्त, चरगाह स्थल।

शाद्वल: (पुं०) हरियाली, चरगाह स्थान।

शाद्वलं (नपुं०) हरियाली, चरगाह प्रान्त।

शाद्वलावलि (स्त्री०) बाल तृण, हरी हरी घास। हरिताङ्कुर। (जयो० ३/४७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शान् (सक०) तेज करना, पैना करना।

शानः (पुं०) [शान्+अच्] कसौटी, कस वट्टिका। एक पत्थर, जिस पर सोने को परखा जाता है।

शानं (नपुं०) रुचिदल। (जयो०२६/२१)

शानवादः (पुं०) चंदनघर्षक शिल, परिजात पर्वत।

शान्त (भू०क०कृ०) [शम्+क्त] दमन किया गया, उपशमित, प्रशान्त, धैर्यवान्, संतुष्ट किया हुआ। (दयो० २/८)
०विरत, उपरत, विराग युक्त।
०मौन, चुप, निस्तब्ध, मूक।
०सधाया हुआ, पाला हुआ।
०आवेश रहित, संतुष्ट।

शान्तचेतस् (वि०) सौम्य, शान्तमना, धीर, संतुष्ट।

शान्तता (वि०) सकुशलता। शकारोऽन्त यस्य ततां शकारान्ततां सकुशता। (जयो० १७२२३)

शान्ततोय (वि०) स्थिर जल युक्त।

शान्तनवः (पुं०) [शन्तनु+अण्] शन्तनु का पुत्र भीष्म।

शांतमूर्तिः (स्त्री०) प्रशान्त मूर्ति। (दयो० ११४)

शान्तरसः (पुं०) मौन भाव, मूकभाव। ०प्रशान्त स्वरूप।

शान्तला (स्त्री०) शान्तला देवी, (वीरो० १५/४७) विष्णुवर्धन राजा की पट्टरानी।
विष्णुवर्धन भूपस्य शान्तला पट्टदेविका।
श्रीप्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देव शिष्यत्वमागता।।
(वीरो० १५/४६)

शान्त (स्त्री०) वस्त्र नाम विशेष, दशरथ पुत्री।

शान्तिः (स्त्री०) [शम्+क्तिन्] ०शमन। (जयो० १३/९९)
०धैर्य, प्रसन्नता, संतुष्टि (सुद० ५/३) भूराजी शान्तये वन्दितुं पादौ लगतु विरागभृतः। (सुद०पृ० ६९)
०निराकुलता। (जयो० १/११०)
०शान्त, विराम, निवृत्ति, बुझाना। (सुद० १२६)
०सान्त्वना, ढाढस।
०प्रायश्चित्त अनुष्ठान, तृप्ति।
०सौभाग्य, मांगलिक आनंद।
०कमेजनित संताप का उपशम।
०उपशान्त।
०शान्तिनाथ तीर्थंकर, सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथ। (भक्ति० १९)
०चारित्र चक्रवती आचार्य शान्तिसागर। (सुद० ३७)

शान्तिक (वि०) [शान्ति+कन्] प्रायश्चित्तात्मक, सान्त्वनाप्रद, तुष्टिकर। (जयो० १२/६५)

शान्तिकर (वि०) शान्ति प्रदान करने वाला, धैर्य उत्पन्न करने वाला। (जयो० १८/९३)

शान्तिकवारिं (नपुं०) शान्तिधारा का जल। (जयो० १२/६५)

शान्तिकृत (वि०) शान्तिकारक, सान्त्वक, प्रशामक, उपशमक। (मुनि० ३०)

शान्तिगृहं (नपुं०) विश्रामालय, विश्रामगृह, आरामघर।

शान्तिजा (वि०) शान्ति को उत्पन्न करने वाला। 'शानिर्जाया प्रिया यस्य स शान्तिजार्मुनिर्निर्गतः शान्तेराश्रयः' (जयो० २७/५८)

शान्तिज्योतिः (स्त्री०) प्रशान्त ज्योति। ०प्रियभाव, उत्तम भाव।

शान्तिदायक (वि०) धैर्य भाव को प्रदान करने वाला।

शन्तिदानी (वि०) निराकरण देने वाला।

शान्तिनाथः (पुं०) सोलहवें तीर्थंकर का नाम।

शान्तिप्रदायी (वि०) बधाई देने वाला। आशीर्वाद देने वाला।

शान्तिप्रभु (पुं०) शान्तिनाथ, सोहलवें तीर्थंकर।

शान्तिपरिकर्ता (वि०) शान्ति, उत्पादक। (जयो० २३/४८)

शान्तिधारा (स्त्री०) दोष परिमार्जन हेतु धारा, परिरक्षण धारा।

शान्तिभक्तिः (स्त्री०) शान्तिप्रभु की भक्ति, सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथ प्रभु की अर्चना। (भक्ति० २४)

शान्तिभावः (पुं०) प्रसन्नभाव, धैर्यभाव।

शान्तिमयी (वि०) तृप्तिमयी, संतुष्टियुक्त। (सुद० ७४)

शान्तिलाभः (पुं०) शान्ति प्राप्ति। (मुनि० २७)

शान्तिवर्मन् (पुं०) श्रीधर राजा का ज्येष्ठ भ्राता, आचार्य समन्तभद्र-'शान्तिवर्मा नाम नृपस्य ज्येष्ठ भ्राता (जयो०वृ० ३/६७) शान्तिवर्मा नाम समन्तभद्र आचार्यस्तस्य भावस्तया' (जयो०वृ० ३/६७)
०स्वयंवर मंडप का एक रचनाकार। (जयो०वृ० ३/६७)
०शान्तेर्वर्म कवचं तस्य भावस्तया। (जयो० ३/६७)

शान्तिविधात्री (वि०) शान्ति प्रदायक, शान्ति विधायक, धर्म का प्रकाश करने वाले। (सुद० ९७)
भूरास्तां चन्द्रमसस्तमसो हन्त्री शान्तिविधात्री।
सकलजनानां निजवित्तस्य च, लुण्टाकेभ्यस्त्रात्री-यमाताऽरमहो कलिरात्रिः। (सुद० ९७)

शान्तिविवृद्धिः (स्त्री०) शान्ति की वृद्धि। (जयो० १२/१०२)

शान्तिसंवितान (वि०) शान्तिदायिनी। (जयो० २३/५४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शापः (पुं०) [शप्+घञ्] अभिशाप, दुर्वचन, शपथोक्ति।
०मिथ्यावचन।
०दुराशीष। (वीरो० ४/१२)
०आक्रोश, अवक्रोश। (जयो० २३/४५)
०पाप-'लग्नस्य वाश्रय भुजः शमनेऽपि पापम्' (वीरो० २२/२४)

शापग्रस्त (वि०) अभिशाप ग्रस्त।

शापजन्य (वि०) शाप से घिरा हुआ।

शापमुक्त (वि०) अभिशाप मुक्त।

शापमुक्तिः (स्त्री०) अभिशाप से छुटकारा।

शापमोक्षः (पुं०) शाप से मुक्ति।

शापयन्त्रित (वि०) अभिशाप से नियन्त्रित किया गया।

शापल (वि०) दुराशिष। (जयो० २७/२४)

शापान्तः (पुं०) अभिशाप का अन्त। ०दोषाभाव।

शापावसानं (नपुं०) शाप से निवृत्ति। ०दोषों की समाप्ति।

शापाश्रिय (वि०) दुराशीष। (जयो० १६/३७)

शापास्त्रः (पुं०) अभिशाप रूपी अस्त्र।

शापित (वि०) सुलाया हुआ। (सुद० ३/२२)

शापोत्सर्गः (पुं०) आक्रोश का उच्चारण। ०शाप देना।

शापोद्धारः (पुं०) शाप से मुक्ति।

शाफरिकः (पुं०) [शफरान् हन्ति-शफर-ठक्] मछली पकड़ने वाला, मछुआरा।

शाबर (वि०) असम्भ, आदिवासी।

शाबरः (पुं०) अपराध, दोष। ०पाप, दुष्कर्म, अधम भाव।।

शाबरी (स्त्री०) पहाड़ी बोली, प्राकृत की एक उपशाखा।

शाब्द (वि०) [शब्द्+अण्] शब्द सम्बन्धी, शब्द से व्युत्पन्न। ०ध्वनिगत। ०मौखिक। ०मुखरित।

शाब्दः (पुं०) वैयाकरण।

शाब्दबोधः (पुं०) प्रत्यक्षीकरण, शब्द ज्ञान।

शाब्दव्यञ्जना (स्त्री०) व्यंग्योक्ति।

शाब्दिक (वि०) [शब्द+ठक्] ०मौखिक, ०शब्द सम्बंधी। ०जबानी, वचन से कथित। (जयो० २६/८५)

शाब्दिकः (पुं०) वैयाकरण।

शामनः (पुं०) [शमन+अण्] यम, यमराज।

शामनं (नपुं०) वध, हनन, घात।
०शान्ति, सुख।
०नियंत्रण, उपशमन।
०कर्मावरण को हटाना।

शामनी (स्त्री०) दक्षिण दिशा।

शामित्रं (नपुं०) [शम्+णिच्+इत्रच्] यज्ञ करना। ०मेघ, बादल।

शामिलं (नपुं०) [शमी+ष्लञ्] भस्म, रास।

शामिली (स्त्री०) स्रुच्, स्रुवा, यज्ञ की भस्म।

शाम्बरी (स्त्री०) [शम्बर+अण्+ङीप्] जादूगरी, बाजीगर।

शाम्बविकः (पुं०) [शम्बु+ठक्] शंखों का व्यापारी।

शाम्बुकः (पुं०) ०घोंघा, ०शंख, ०द्वीन्द्रिय जल में उत्पन्न होने वाला जीव।

शाम्भव (वि०) [शम्भु+अण्] शिव से सम्बन्धित।

शाम्भवः (पुं०) शिव का उपासक।
०कपूर।
०शिव पुत्र।

शाम्भवं (पुं०) देवदारु का पेड़।

शाम्यता (वि०) शान्त पना, धैर्यता। (समु० ३/३६)

शायकः (पुं०) [शो+ण्वुल्] बाण। ०तीक्ष्ण तीर।
०तलवार।

शायिनी (वि०) शयन कर्त्री-सोने वाली। सोने के पश्चात् सोती हुई। विश्वैकभानोरुत सुप्तशायिनी। (जयो० २२/८८)

शार् (सक०) कृश करना, क्षीण करना।
०पतला करना, दुर्बल करना।

शार (वि०) चितकबरा, धब्बेदार, चित्तीदार, शवल।

शारः (पुं०) पवन, वायु।
०रंग-बिरंगा।
०शंतरज का मोहरा।

शारङ्गः (पुं०) [शारं अङ्गं यस्य] ०मोर, मयूर। ०भ्रमर, भौंरा।
०हरिण।
०हस्ति, हाथी।
०चातक पक्षी।

शारङ्गी (स्त्री०) [शारङ्ग+ङीष्] एक वाद्य विशेष।

शारद (वि०) [शरदि भवं-अण्] शरत्कालीन, पतझड़ से सम्बंधित। शरद ऋतु से सम्बंधित। (वीरो० २१/१४)
०विनीत, शर्मीला।
०नया, नूतन।

शारदः (पुं०) वर्ष। ०संवत्सर।
०नूतन।
०शरत्कालीन। शरदोऽसौ शारदस्तद्वत् अस्ति यः किलानेकधार-बहुप्रकारेणान्यस्यार्थं (जयो० १९/२९)
०ते शारदा गन्ध वहाः सुवाहा। (वीरो० २१/१३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०लोबिया, उड़द।
०बकुल वृक्ष।
०मौलसिरी।
शारदा (स्त्री०) सरस्वती, वाग्देवी, भारती। (जयो० १०/१००) (सुद० ३/३१) वाणी (जयो०वृ० २/४१) हे शारदे! शारदवत्तवाय: समस्तु मेघस्य विनाशनाय। (जयो० १९/२९)
शारदी (स्त्री०) कार्तिकमास की पूर्णिमा।
शारदीय (वि०) आश्विनमास सम्बंधी। (वीरो० २१/११) पतझड़ सम्बंधी, शरद् ऋतु से सम्बन्ध रखने वाली।
शारि: (पुं०) [शृ+इञ्] शतरंज कर मोहरा, गोट।
०पांसा।
शारि: (स्त्री०) सारिका, मैना।
०हस्ति झूल।
शारिपट्ट: (पुं०) शतरंज की बिछात।
शारिका (स्त्री०) सारिका, मैना।
०गोटी, शतरंज का मोहरा।
शारी (स्त्री०) मैना, सारिका।
शारीर (वि०) [शरीर+अण्] शारीरिक, शरीर से सम्बन्धित। (समु० ९/१)
०शरीरधारी, मूर्तिमान।
शारीर: (पुं०) शरीरधारी, जीव युक्त आत्मा।
०सांड।
०एक औषधि विशेष।
शारीरिक (वि०) [शरीर+कन्+अण्] शरीर से सम्बन्धित। दैहिक, भौतिक। (जयो० १२/९९)
शारुक (वि०) अनिष्टकर, उपद्रवी।
शार्कक: (पुं०) [शर्क+अण्+कन्] शक्कर, खांड।
शार्कर: (पुं०) शक्कर, चीनी। ०पपड़ी, मलाई ०कंकरीला। (जयो० १०/१०८)
शार्कर (वि०) शक्कर से सम्बंधित।
शार्ङ्ग (वि०) [शृङ्ग+अण्] सींग से निर्मित।
शार्ङ्ग:/शार्ङ्ग (पुं०/नपुं०) धनुष।
शार्ङ्गधर: (पुं०) धनुषधारक विष्णु।
शार्ङ्गिन् (पुं०) [शार्ङ्ग+इनि] धनुर्धारी, तीरंदाज। ०विष्णु।
शार्दूल: (पुं०) [शृ+उलल्] व्याघ्र, तेदूंआ, चीता। ०प्रमुख, प्रधान, श्रेष्ठ।
०पूज्य।
शार्दूलवा: (पुं०) श्रेष्ठ व्यक्ति। (जयो० १७/१०)
शार्दूलविक्रीडितं (नपुं०) चीते की पीड़ा, शार्शूलविक्रीडित छन्द ०एकोनविंशत्यक्षर छन्द। ०'सूर्याश्वैर्मसजस्तता: समुरव: शार्दूलविक्रीडितम्'
ऽऽऽ (मगण), ।।ऽ (सगण), ।ऽ। (जगण) ।।ऽ (सगण) ऽऽ। ऽऽ। (तगण-तगण) और गुरु वर्ण जिसमें हों, उसे शार्दूलविक्राडित छन्द कहते हैं। जयोदय एवं वीरोदय के सर्गान्त में प्राय: इसी छन्द का प्रयोग हुआ है।
'श्रीमान् श्रेष्ठिचतुर्भुज: स सुषुवे भूरामरोपह्वयम्',
वाणीभूषणवर्णिनं घृतवरी देवी च यं धीचयम्।
तत्काव्यं लसतात् स्वयंविधिश्रीलोचनाया जयराजस्याभ्युदयं
दधद् वसुट्टगित्याख्यं च सर्गं जयत्।।
०वीरोदय काव्य में भी इसी पद्धति को अपनाया है। प्रारम्भिक दो चरण सभी काव्यों में समान हैं परन्तु अन्तिम दो चरण काव्यसूचक एवं सर्ग समाप्ति से युक्त हैं।
शार्मण (वि०) सुखदायक। (जयो० २६/४४)
शार्वर (वि०) रात्रि सम्बन्धी, रात से सम्बन्धित। (जयो० १३/१०३) (समु० ७/२७)
०उपद्रवी, प्राणहर।
०तिमिर, अन्धकार।
शार्वरी (स्त्री०) रजनी, रात्रि। (जयो० १८/१८)
शाल् (स्त्री०) प्रशंसा करना, चमकना, पूरित होना।
शाल: (पुं०) [शल्+घञ्] शालतरु, शालवृक्ष।
०धान्य। (सुद० १/२५)
०बाड़ा।
०एक मछली।
०प्राकार, परकोटा। (जयो० ११/२३)
शालग्राम: (पुं०) शिवमूर्ति, प्रस्तर खण्ड।
शालगिरि (पुं०) एक पर्वत।
शालज: (पुं०) सालवृक्ष की राव/गोंद।
शालनिर्यास: (पुं०) सालवृक्ष की राव/गोंद।
शालभञ्जिका (स्त्री०) पुत्तलिका, पुतली गुड़िया।
०प्रतिमा, मूर्ति, बुत, पुतला।
शालभञ्जी (स्त्री०) पुत्तलिका, पुतली, गुड़िया, बुत, पुतला।
शालव: (पुं०) [शाल+वल्+ड] लोध्र तरु।
शालवेष्ट: (पुं०) शाल से निकली गोंद।
शालशृङ्ग: (पुं०) वप्रप्रांत, परकोटा। (वीरो० २/२७)
शालसार: (पुं०) शालवृक्ष।
०हींग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाला (स्त्री०) [शाल+अच्+टाप्] ०कक्ष, स्थल, बैठक, प्रकोष्ठ। (सुद० २/९)
०मण्डपशाला। (जयो० ३/७७)
०घर, आवास, आलय, निवास।
०वृक्ष की शाखा, वृक्ष का तना।
शालाकः (पुं०) पाणिनि।
शालाञ्जिरः (पुं०) मिट्टी का सकोरा।
शालामृगः (पुं०) गीदड़।
शालावृकः (पुं०) कुत्ता, श्वान, कुक्कर।
०भेड़िया, हरिण।
०बिल्ली।
०वानर, बंदर।
शालाकिन् (पुं०) [शालाक+इन्] बर्छीधारी, भालायुक्त व्यक्ति। गश्ती, पहरेदार।
०नाई।
शालातुरीयः (पुं०) [शालातुर+छ] पाणिनि।
शालारं (नपुं०) [शाला+स्+अण्] सीढ़ी, जीना, पायदान।
०पिंजरा। सोपान।
शालिः (स्त्री०) [शाल्+णिनि] धान्य, एक प्रकार का चावल।
शालि-ओदनः (पुं०) शालिधान्य के चावल की भात।
शालि ओदनं (नपुं०) देखो ऊपर।
शालिकः (पुं०) शालीधान्य। (वीरो० २१/१०)
शालिकः (पुं०) [शालि+कै+क] जुलाह, तन्तुकार।
०मार्गकर।
०शुक्ल।
०कृषक, किसान। (जयो० २/३१) (जयो० ४/५७)
शालिगोपी (स्त्री०) शालिरक्षिका, धान्यखेत रक्षिका।
शालिचूर्णः/शालिचूर्णं (पुं०/नपुं०) चावल का आटा।
शालिन् (वि०) सहित, युक्त, सम्पन्न।
०चमकीला, चमकदार।
शालिनी (स्त्री०) [शालिन्+ङीप्] गृहिणी, मालकिन।
०रमणीया। (जयो० १३/५२)
०एक छन्द का नाम, इस छन्द में ग्यारह वर्ण होते हैं-ऽऽऽ, ऽऽ।।, ऽऽ।, ऽऽ
शालिपिष्टं (नपुं०) स्फटिक।
शालिभवनं (नपुं०) धान्य खेत। धान्यागार
शालिमालः (पुं०) धान्य समूह, धान्य की क्यारियां। (वीरो० २१/१०)
शालिवाहनः (पुं०) एक प्रसिद्ध राजा।
शालिहोत्रिन् (पुं०) अश्व, घोड़ा।
शालीन (वि०) [शाला+खञ्] लज्जालु, विनीत, विनम्र, नत।
शालीनः (पुं०) गृहस्थ।
शालुः (पुं०) [शाल्+उण्] मेंढक, दर्दुर।
शालु (नपुं०) कुमुदिनी की जड़।
शालुकं (पुं०) कुमुदिनी की जड़, जायफल।
शालुकः (पुं०) मेंढक, दर्दुश।
शालूर (पुं०) [शाल्+ऊर्] मेंढक।
शालेयं (नपुं०) [शालि+ढक्] धान्य क्षेत्र।
शालोत्तरीयः (पुं०) पाणिनि।
शाल्मलः (पुं०) सेमल तरु।
शाल्मलिः (स्त्री०) सेमलतरु। (भक्ति० ३७)
शाल्मलिस्थः (पुं०) गरुड़।
शाल्मली (स्त्री०) सेमल तरु। ०नरक की भूमि।
शाल्वः (पुं०) [शाल्+व] एक देश।
शाव (वि०) [शव+अण्] शव सम्बन्धी। ०मृत्यु से उत्पन्न।
शावः (पुं०) शावक, पुत्र, जानवर का बच्चा। (जयो०६/४५)
शावकः (पुं०) शावक, पुत्र बच्चा। जानवर का छोटा बच्चा।
शाश्वतः (पुं०) महादेव, शिव।
०सूर्य।
शाश्वत (वि०) [शश्वद् भवः अण्] ०निरन्तर, सदा ही।
०नित्य, ०ध्रुव, ०चिरस्थायी।
शाश्वतं (अव्य०) नित्य, निरन्तर, सदैव, सदा के लिए, फिर से।
शाश्वतबुद्धिः (स्त्री०) नित्यबुद्धि। (जयो०वृ० १/४२)
शाश्वतस्थितिः (स्त्री०) आनन्त्यदशा, नित्यदशा। (भक्ति० पृ० २) ०प्राग् स्थिति।
शाश्वतिक (वि०) [शाश्वत+ठक्] नित्य, स्थायी, सतत्, * सनातन।
शाश्वती (स्त्री०) [शाश्वत+ङीप्] पृथ्वी।
शाष्कुल (वि०) मांस भक्षी।
शाष्कुलिकं (नपुं०) [शष्कुली+ठक्] पूरियों का ढेर।
शास् (सक०) पढ़ाना, लिखाना। (जयो० २/४२) ०अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, प्रशिक्षित करना, सीख देना।
०शासन करना, अनुशासित करना, नियंत्रित रखना। वारितुं तु परचक्रमुद्यतः, साम-दाम-परिहार भेदतः। प्राभवाभिबलमन्त्रशक्तिमान् शास्ति सम्यगवनिं पुमानिमाम्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जयो० २/१२१)

०राज्य करना, आज्ञा देना, आदेश देना।

शासक (वि०) शासन करने वाला, अनुशासक।

शासकः (पुं०) नृपति, राजा। (जयो०वृ० २/११८)

शासनं (नपुं०) [शास्+ल्युट्] आज्ञापन, आज्ञा देना। (जयो० ५/३८)

०अनुशासन, प्रशासन, नियंत्रण।

०आज्ञा, आदेश, आग्रह, निवेदन। (दयो० ८१)

०प्रभाव। (जयो० ९/१०)

०समय, प्रमाण। (जयो० १५/५९)

०विधि, नियम-अधिनियम, राजाज्ञा। (जयो० २/१३९) 'प्राप्त शासनमगादगारिवाडात्म'

०आग्रह, प्रभुत्व। (सुद० ४/४४)

०शिक्षण, अध्यापन, अनुशासन। (जयो० ३/३३) आत्मसीख-विश्वस्य रक्षा प्रभवेदितीयद्वीरस्य सच्छासनम-द्वितीयम्' समाश्रयन्तीह धरातलेऽसून्न कोऽपि भूयादसुखीति तेषु। (वीरो० १६/१)

शासनकृत् (वि०) शासन करने वाला, शासक। (समु० २/११)

शासन-ख्यापक (वि०) समय प्रख्यापक, प्रमाण विवेचक। (जयो०वृ० ५/५९)

शासनगतिः (स्त्री०) शिक्षण गति।

शासनचारिन् (वि०) आज्ञा पालन करने वाला।

शासनदायक (वि०) प्रभुत्व दायक।

शासनपत्रं (नपुं०) आज्ञापत्र, हुक्मनामा। (वीरो० १२/२४)

शासनप्रणाली (स्त्री०) अनुशासन पद्धति। शासनधारा। (जयो०वृ० १/४७)

शासनमन्त्रिन् (पुं०) आज्ञाकारी सचिव।

शासनविधि (स्त्री०) आज्ञाविधि, नियमविधान। (वीरो० १६/२७)

शासनशाला (स्त्री०) अध्यापन शाला, शिक्षण स्थल। (दयो० ११०)

शासनहारिन् (पुं०) राजदूत, संदेशवाहक।

शासनागारः (पुं०) शासनशाला।

शासनातीतिकृत (वि०) अवज्ञाकारिन्, आज्ञा नहीं मानने वाला। (जयो० १६/५)

शासनाधिपति (पुं०) नृपति, राजा।

शासनाधीनः (पुं०) प्रशासन के आधीन।

शासनाश्रयः (पुं०) शिक्षण का सहारा।

शासित (भू०क०कृ०) [शास्+क्त] अनुशासित, आज्ञापित, आदेशित।

०दण्डित।

०सम्बोधित। (जयो०वृ० १६/७५)

शासितृ (वि०) [शासृ+तृच्] शासक, प्रशासक, राज्य करने वाला।

शास्ता (वि०) स्पष्टवक्ता। (जयो० १२/५)

०शासक। (वीरो० २२/११)

०प्रतिपालक। (वीरो० ३/१)

शास्तार (वि०) शास्त्रप्रणेतार, शास्त्रकार। (जयो० १७/९२)

शास्ति (वि०) अल्पज्ञानी। (सुद० १/१)

शास्तृ (वि०) अध्यापक, शिक्षक, शासक। नृप, राजा।

०पिता, आचार्य, जैन श्रमण।

शास्त्रं (नपुं०) आप्त द्वारा उपदिष्ट वचन।

०हितकर प्रवचन। (सम्य०९३)

आप्तोपज्ञमनुल्लंघ्यममदृष्टेष्ट विरुद्धवाक्।

तत्त्वोपदेशकृत्सार्वं शास्त्रं कापथघट्टनम्।।

०समीचीन वाक्यसमूह रूप शास्त्र

शास्त्रमर्थयतु सम्पदास्पदं

यत्प्रसङ्गजनितार्थदं पदम्।। (जयो० २/४२)

[शिष्यतेऽनेन-शास्+ष्ट्रन्]

०ग्रन्थ, सिद्धांत, आगम, वेद।

०वाङ्मय, श्रुत। (जयो०वृ० २/८१)

०धार्मिक ग्रन्थ, धर्मशास्त्र पुराणशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि।

शास्त्रकारः (पुं०) रचनाकार, शास्त्र प्रणेता।

शास्त्रकृत् (पुं०) रचनाकार, शास्त्रप्रणेता, ग्रंथ रचयिता।

शास्त्रकोविद (वि०) सिद्धांत निपुण, शास्त्रप्रवीण, शास्त्र निष्णात।

शास्त्रगण्डः (पुं०) शास्त्र प्रदर्शक व्यक्ति, शास्त्र से अनभिज्ञ व्यक्ति।

शास्त्रचक्षुस् (नपुं०) व्याकरण शास्त्र।

शास्त्रज्ञ (वि०) शास्त्रवेत्ता, आगम रहस्य ज्ञाता। विज्ञ, विद्वान्।

शास्त्रज्ञानं (नपुं०) सिद्धांत बोध।

शास्त्रज्ञान युक्तः (पुं०) ऋषिवर। (जयो०वृ० २/९६)

शास्त्रतत्त्वं (नपुं०) सिद्धांत विचार, शास्त्र रहस्य, आगमज्ञान की जानकारी।

शास्त्रदर्शिन् (वि०) सिद्धांत दृष्टा, आगम दर्शक।

शास्त्रदानं (नपुं०) ज्ञानदान, चार दानों में एक दान शास्त्रदान।

शास्त्रदृष्ट (वि०) सिद्धांत का अवलोकन कर्ता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शास्त्रदृष्टिः (स्त्री०) आगम ज्ञान दृष्टि।
शास्त्रपरीक्षा (स्त्री०) आगम परीक्षा।
शास्त्रप्रमाणं (नपुं०) आगम सम्मत, आगम प्रमाण।
शास्त्रभेदः (पुं०) शास्त्र के भेद शास्त्रं द्विविध-संहिता सूक्तश्च। विस्तार से देखें-जयोदय महाकाव्य। (२/४१-६७)
शास्त्रयोनिः (स्त्री०) आगम का मूल उद्‌गम स्थल।
शास्त्र वार्तासमुच्चयं (नपुं०) एक न्याय ग्रंथ।
शास्त्रविद् (वि०) शास्त्रज्ञ, आगमवेत्ता। (वीरो० १७/२४)
शास्त्रविधानं (नपुं०) शास्त्रविधि, सिद्धांत नियम।
शास्त्रविधिः (स्त्री०) शास्त्रीय नियम, धार्मिक नीति।
शास्त्रविप्रतिषेधः (पुं०) शास्त्र विरोध।
शास्त्रविरोधः (पुं०) विरुद्ध आचरण।
शास्त्रविमुख (वि०) सिद्धांत विमुख।
शास्त्रविरुद्ध (वि०) सिद्धांत के विपरीत कथन करने वाला।
शास्त्रव्युत्पत्तिः (स्त्री०) शास्त्र के विषय की व्याख्या, आगम रहस्य का शब्दशः स्पष्टीकरण।
शास्त्रशिल्पिन् (पुं०) कलामर्मज्ञ।
शास्त्रसारज्ञ (वि०) आगम रहस्य ज्ञाता। ०श्रुत सार को जानने वाला। (जयो०वृ०२/८१)
शास्त्रातिक्रमः (पुं०) सिद्धान्त उल्लंघन, धर्मतत्त्व का अतिक्रमण।
शास्त्रानुष्ठानं (नपुं०) शास्त्रनियम का पालन।
शास्त्रानुमोदित (वि०) शास्त्र की अनुमोदना करने वाला। (जयो०वृ० ३/६६)
शास्त्राभिज्ञ (वि०) शास्त्रों में निपुण, शास्त्रप्रवीण। ०श्रुतसार में पारंगत।
शास्त्राम्बुनिधिः (स्त्री०) शास्त्र रूपी समुद्र। (दयो० १/५)
शास्त्रार्थः (पुं०) आगम ज्ञान का विवेचन।
शास्त्रिन् (पुं०) [शास्त्र+इनि] शास्त्र कुशल, शास्त्र प्रवीण।
शास्त्रिन् (पुं०) शास्त्री, शास्त्रविशेष व्यक्ति। विद्वान्।
शास्त्रीय (वि०) [शास्त्रेण विहितः छ] आगम में निरूपित, वेदनिहित ०शास्त्रानुमोदित। ०श्रुत प्रतिपादित।
शास्य (वि०) [शास्+ण्यत्] ०उपदेश देने योग्य, शासित किये जाने योग्य।
०दण्डनीय।
शि (सक०) तेज करना।
०कृश करना, क्षीण करना।
०पतला करना।
०उत्तेजित करना।
०सावधान करना।
०तीक्ष्ण करना।
शिः (पुं०) [शि+क्विप्] सौम्यता, शान्ति, धैर्य, ०स्वस्थता।
०शिव।
०कल्याण।
शिंशपः (पुं०) [शिवं पाति-शिव+पा+क] शीशमतरु।
०अशोक वृक्ष।
शिंशपा (स्त्री०) शिप्रा नदी के किनारे स्थित गांव। (दयो०१०)
शिक्कु (वि०) [सिच्+कु] सुस्त, आलस्य, उदासीन, प्रमादी।
शिक्थं (नपुं०) [सिच्+थक्] मोम।
शिक्यं (नपुं०) छींका, झोला।
शिक्ष् (सक०) सीखना, अध्ययन करना, अभ्यास करना, ज्ञान लेना। ०पढ़ाना। (जयो०वृ० २/४२)
शिक्षकः (पुं०) शिक्षक, अध्यापक, गुरु। (जयो०वृ० ११/२६)
शिक्षक (वि०) [शिक्ष्+णिच्+ण्वुल्] सीख देने वाला, ज्ञान कराने वाला।
शिक्षका (स्त्री०) अध्यापिका, गुरुणी। ०विशेषज्ञा।
शिक्षणं (नपुं०) [शिक्ष्+ल्युट्] ०अधिगम, ज्ञान, बोध।
०अध्यापन, सिखाना, पढ़ाना। (जयो० २/१३६)
शिक्षणकृता (स्त्री०) सरस्वती, वाग्देवी। शिक्षणं करोतीति स्त्री, शिक्षण कन्तया वाग्देव्या। (जयो० ५/९४) प्रेमपात्री
शिक्षणीय (वि०) [शिक्ष्+अनीयर्] ०सीखाने योग्य, अध्यापन, कराने योग्य। ज्ञानार्जन योग्य। (जयो० २/१३६)
शिक्षमाणः (पुं०) [शिक्ष्+शानच्] ०शिष्य, विद्यार्थी, * विद्याभिलाषि।
शिक्षा (स्त्री०) [शिक्ष्+भाव+अ+टाप्] ०अध्ययन, अधिगम, ज्ञानाभ्यास। (जयो० ५/४०)
०अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण।
०सीख, विनय, परीक्षा (सुद०)
शिक्षाकरः (पुं०) शिक्षक, अध्यापक।
शिक्षागृहं (नपुं०) शिक्षा केन्द्र। विद्यालय, शिक्षण संस्थान।
शिक्षागेहं देखो ऊपर।
शिक्षाज्ञानकेन्द्रः (पुं०) शिक्षण संस्थान।
शिक्षादानं (नपुं०) ज्ञानदान।
शिक्षादायक (वि०) शिक्षा देने योग्य। (जयो०वृ० ७/९६)
शिक्षाधनं (नपुं०) विद्याधन।
शिक्षानिर्देशः (पुं०) शिक्षा की दिशा।
शिक्षापदं (नपुं०) शिक्षा स्थान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिक्षाभेदः (पुं०) विद्या के प्रकार।
शिक्षालयः (पुं०) विद्यालय।
शिक्षाशक्तिः (स्त्री०) विद्या प्रवीणता।
शिक्षित (भू०क०कृ०) [शिक्ष्+क्त] अधिगत, अहीत।
०अध्यापित सिखाया गया।
० प्रशिक्षित, अनुशीलन।
* प्रवीण, निपुण, योग्य।
०विनीत, लज्जायुक्त।
शिखण्डः (पुं०) [शिखाममति+अभ्+ड] मुण्डन, ०काकपक्ष।
०मयूर पंख।
शिखण्डकः (पुं०) [शिखण्ड+इव+कन्] चोटी-मुण्डन के समय छोटी शिखा। बलगुच्छा, शेखर, चूडा।
०मयूर पुंच्छ।
शिखण्डिनः (पुं०) [शिखण्डिन्+कै+कः] मुर्गा।
शिखण्डिन् (वि०) [शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि] शिखाधारी, चोटी धारी।
शिखण्डिमंडलं (नपुं०) मयूर समूह। (जयो० २४/२२)
शिखिण्डन् (पुं०) मयूर, मोर। ०मुर्गा, ०बाण। (जयो०वृ०३/११)
०चमेली, ०विष्णु।
शिखण्डिबाल (पुं०) मयूर बालक। शिखिण्डनां केकिनां बालाश्चचुकुञ्जु। (जयो० ८/८)
शिखण्डिवंशः (स्त्री०) सरस्वती-शिखण्डिना मयूराणां वेशो दया सा सरस्वती। (जयो० १९/२६)
शिखण्डिनी (स्त्री०) [शिखण्डिन्+ङीप्] मयूरी, मोरनी।
०द्रुपद पुत्री।
शिरवत्व (वि०) शिखर युक्त। (सुद० १/१६)
शिखरः (पुं०)
शिखरं (नपुं०) चोटी, कूट, पर्वत का उन्नत भाग। (सुद०१/३६)
०सम्मेदशिखर जी, जो बिहार के गिरीडीह क्षेत्र में है। जैनों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल।
०कलगी, चूडा।
शिखरत (वि०) उपरिष्ट। (जयो० १/९८)
शिखराग्रः (पुं०) शिखर का उन्नत भाग। (२/३४)
शिखरावलि (स्त्री०) शिखर समूह। (वीरो० २/५०)
शिखरिणी (स्त्री०) [शिखरिन्+ङीप्] महिलारत्न।
०श्रीखण्ड। मल्लिका, मालती। (जयो० २१/३५)
स्त्रियां शिखरिणो वृत्तभेदेतकुभभेदेयोः
स्त्रीरत्ने मल्लिकायां च रोमावल्यामपि स्मृता। इति विश्व०
०एक छन्द विशेष। यह सत्तरह अक्षरों वाला छन्द है- रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी' (वृत्तरत्नाकर-३/९०)
।ऽऽ (यगण) ऽऽऽ (मगण), ।। (नगण) ।।ऽ (सगण), ऽ।। (भगण) और (।) एक लघु और एक अन्त्य (ऽ) गुरु युक्त शिखरिणी छन्द है।
अभूद् दारासारेष्वखिलमपि वृत्तं त्वनुवदन्,
समालीनः सम्यक् सपदि जनतानन्द जनकः।
तदेतच्छ्रुत्वाऽसौ विघटितमनोमोहमचिरात्,
सुरश्चिन्तांचक्रे मनसि कुलटाया कुटिलताम्।।
(जयो० २/१४३)
शिखरिन् (वि०) [शिखरमस्त्यस्य इनि] ०चोटी, ०वाला, ०शिखाधारी।
* नुकीला, तीक्ष्ण, ०शिखरयुक्त।
शिखरिन् (पुं०) ०पर्वत, पहाड़।
०पहाड़ी दुर्ग, ०वृक्ष, ०टिटिहरी।
शिखरिवरः (पुं०) पर्वतराज। (जयो० २/१५४) ०हिमगिरि।
शिखा (स्त्री०) [शि+खक्] चोटी, शिखर। ०शाखा (जयो० १३/६८) शीर्षबिन्दु।
०धार, नोक, तीक्ष्ण भाग।
०चूलिका। (वीरो० २/११)
०अग्नि, ज्वाला।
०प्रकाश किरण।
शिखाघरः (पुं०) मयूर पंख।
शिखाजं (नपुं०) मयूर पंख।
शिखाधारः (पुं०) मोर, मयूर।
शिखान्त (वि०) चोटी पर्यन्त, शिखर तक। (जयो० ११/९०)
शिखामणिः (स्त्री०) चूड़ामणि।
शिखामूलं (नपुं०) गाजर। ०मूली।
शिखालु (स्त्री०) मोर की कलगी।
शिखालुता (वि०) चूडायुक्त, चोटीधारी, सिक्ख। (जयो० २८/२९)
शिखावत् (वि०) [शिखा+मतुप्] कलगीदार।
०ज्वाला युक्त।
शिखावरः (पुं०) कटहल का पेड़।
शिखावलः (पुं०) मयूर, मोर, मयूर गण। (वीरो० २१/११)
समेति निष्ठां सरसे शिखावलः साद्रनगालवाले (वीरो० १२/१२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिखावृक्षः (पुं०) दीपाधार, दीवट।
शिखावृद्धिः (स्त्री०) बढ़ने वाला ब्याज।
शिखावृत (वि०) शिखाभिर्वृक्षशाखाभिर्वृत-शाखाओं से आच्छादित वृक्ष। (जयो०१३/६८) ०शाखा युक्त तरु।
शिखिन् (वि०) [शिखा अस्त्यस्य इनि] शिखाधारी, चोटी युक्त, कलगीदार।
०घमण्डी।
शिखिन् (पुं०) अग्नि, आग।
०मुर्गा।
०बाण। मयूर। (जयो० १२/५१)
०वृक्ष, ०दीपक।
०सांड।०अश्व।
०पर्वत। ०ब्राह्मण।
०साधु, ०केतु, ०चित्रक वृक्ष।
शिखिकण्ठः (पुं०) तूतिया, नीला थोथा।
शिखिग्रीषं (नपुं०) नीला थोथा।
शिखिजनः (पुं०) मयूरवर्ग। ०हिन्दू लोग। (जयो० ४/६७)
शिखिध्वजः (पुं०) कार्तिकेय। ०धुआं।
शिखिपत्रं (नपुं०) मोरपंख। (दयो० २५) (जयो० १३/४९)
शिखिपुच्छं (नपुं०) ०दुम, मोर पुंच्छ।
शिखियूपः (पुं०) बारह सिंगा।
शिखिवर्धकः (पुं०) लौकी-गोल लोकी।
शिखिवाहनः (पुं०) कार्तिकेय।
शिखिशिखा (स्त्री०) ज्वाला। ०अग्नि लौ। ०दीपक लौ।
०मयूरकलगी।
शिग्रु (स्त्री०) सागभाजी।
०सहजन तरु।
शिङ्ख् (सक०) जाना, पहुंचना।
०प्राप्त होना।
शिङ्घ् (सक०) सूंघना, गन्ध लेना।
शिङ्घाणः (पुं०) [शिङ्घ+आणक] पपड़ी, झाग।
०बलगम, कफ।
शिङ्घाणं (नपुं०) नाक का मैल।
०लोहे की जंग।
०शीशे का बर्तन।
शिङ्घाणकः (पुं०) [शिङ्घ्+अणक] नासिकामल, सिणक।
शिङ्घाणकं (नपुं०) कफ, बलगम।
शिङ्ग (वि०) उन्मत्त, प्रोन्मत्त। (जयो० ८/१५)
शिञ्ज् (सक०) टनटनाना, झनझनाना।
०खड़खड़ाना।
शिञ्जः (पुं०) [शिञ्ज+घञ्] टंकार, झनझनाहट।
शिञ्जिका (स्त्री०) कटिबंध, करधनी, कंदौरा।
शिञ्जा (स्त्री०) [शिञ्ज+अ+टाप्] टंका, झंकार।
०धनुष की डोरी।
शिञ्जित (भू०क०कृ०) [शिञ्ज+क्त] टंकृत, झंकृत, ध्वन युक्त।
शिञ्जिनी (स्त्री०) [शिञ्ज्+णिनि+ङीप्] धनुष की डोरी।
०झांवर, नुपूर।
शिट् (सक०) घृणा करना, तिरस्कार करना, तुच्छ समझना।
शिडी (स्त्री०) उन्मत्त-शिडीति देश भाषायाम् (जयो०वृ० ८/१५)
शित (भू०क०कृ०) [शो+क्त] तेज किया हुआ, पैना किया हुआ।
०पतला, कृश, दुबला।
०कलुषित। (जयो० ९/६६)
०क्षीण, बलहीन, दुर्बल।
०श्यामल। (जयो० ७/१०४)
शितद्रु (स्त्री०) सतलज नदी।
शिताग्रः (पुं०) कंटक, कांटा।
शिति (स्त्री०) भुर्जवृक्ष।
शिति (वि०) [शि+क्तिच्] ०श्वेत, शुभ्र, धवल।
शितिकण्ठः (पुं०) शिव, शंकर।
०जल कुक्कुट।
शितिकृत (वि०) श्यामलता। (जयो०१५/११)
शितिछदः (पुं०) हंस।
शितिपक्षः (पुं०) हंस।
शितिरत्नं (नपुं०) नीलम।
शितिवायसः (पुं०) बलराम।
शिथिल (वि०) [श्लथ्+किलच्] धीमा, ढीला।
०सुस्त, विश्रान्त।
०खुला हुआ, मुक्त।
०निढाल, निश्शक्त, असमर्थ।
०दुर्बल, कृश, क्षीण, बलहीन।
०पिलपिला, ढीलाढाला।
०मुर्झाया हुआ।
०निष्क्रिय, निरर्थक, व्यर्थ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिथिलं (नपुं०) सुस्ती, आलस्य, उदासीनता।
०शिथिलता, ढीलापन।
शिथिलत्व (वि०) शिथिलता, ढीलापन। (जयो० १७/६२)
शिथिलित (वि०) [शिथिल+इतच्] ढीला किया हुआ।
०विश्रान्त, खोला हुआ।
०प्रविलीन।
शिनिः (पुं०) [शी+निः] योद्धा।
शिपिः (स्त्री०) [शी+क्विप्] किरण, प्रभा।
०त्वचा, चमड़ी।
शिप्रः (पुं०) [शि+रक्] हिमालय स्थित सरोवर।
शिप्रा (स्त्री०) [शिप्र+टाप्] शिप्रा नदी, उज्जयिनी नगर इसी नदी के तट पर स्थित है। जिसे क्षिप्रा भी कहते हैं।
शिफा (स्त्री०) रेशेदार जड़।
०कमल की जड़।
०मां, ०एक नदी।
शिफाकः (पुं०) [शिफा+कन्] कमल जड़।
शिफाधरः (पुं०) शाखा।
शिखारुहः (पुं०) वटवृक्ष।
शिवि (वि०) शिकारी।
शिवि (पुं०) भूर्जवृक्ष।
शिविका (स्त्री०) [शिवं करोति-शिव+णिच्+ण्वुल्] डोली, पालकी।
शिबिरं (नपुं०) [शेरते राजबलानि अत्र शी-किरच् बुकागमः] तम्बू, खेमा, पड़ाव, सैन्य विराम।
शिम्बा (नपुं०) [शम्+इम्बच्] फली, छीभी, सेम।
शिम्बिका (स्त्री०) [शिम्बा+कन्+टाप्] सेमफली, बालौर।
शिम्बी (स्त्री०) फली, सेमफली, बालौर।
शिरं (नपुं०) [शृ+क] सिर। ०पिप्परामूल, पीपल की जड़।
शिरः (पुं०) शय्या। ०अजगर।
शिरस् (नपुं०) [शृ+असुन्] सिर, मस्तक।
०खोपड़ी, शिखर,श्रृंग, चोटी। (जयो०वृ० २/३०)
०ऊपरी भाग, उन्नत भाग। (सुद० पृ० ७०)
०भाल, ललाट। (सुद० १२५)
०कंगूरा, कलश, उच्चतम शिखर। (सुद० ११५)
०मुख्य, प्रधान, प्रमुख, विशिष्ट। (जयो० १/६९)
०वाद्य विशेष। (जयो० १०/१५)
०कुम्भस्थल। (जयो० ६/२२)
०अग्रभाग, अगला हिस्सा।

शिरगृहं (नपुं०) चन्द्रशाला, अट्टालिका।
शिरग्रहः (पुं०) सिरदर्द, सिर पीड़ा, शिरो वेदना।
शिरश्चालनं (नपुं०) अग्रभाग चालन। (जयो० १/८२, ३/६१)
शिरश्प्रदेशः (पुं०) मुख्य भाग। (समु० ३/१५) ०उन्नत कूट, उन्नत शिखर भाग।
शिरसिजः (पुं०) सिर के बाल।
शिरखी (वि०) शिरोमणि (समु० २/१३)
शिरस्कं (नपुं०) लोहे का टोप, पगड़ी, टोपी।
शिरस्का (स्त्री०) [शिरस्क+टाप्] पालकी। ०शिविका।
शिरस्तस् (अव्य०) [शिरस्+तस्] शिर सम्बंधी, सिर से।
शिरस्तिर (वि०) मस्तक, झुका हुआ। (सुद० २/२५)
शिरस्थित (वि०) सिर पर स्थित। (वीरो० ७/१८)
शिरस्य (वि०) [शिरसि भवः यत्] सिर सम्बंधी।
शिरस्वः (पुं०) सिर का टोप। (समु० ३/१६)
शिराल (वि०) शिरायुक्त, स्नायवी।
शिरि (पुं०) [शृ+कि] असि, तलवार।
०बाण।
०टिड्डी।
शिरीषः (पुं०) सिरस का पेड़।
शिरीषं (नपुं०) सिरस पुष्प।
सिरीषकोषः (पुं०) शिरीष पुष्प समूह। (जयो० ३/२५) 'शिरीषस्य कोषादपि।
शिरोधरा (स्त्री०) ग्रीवा, गर्दन।
शिरोधार्य (वि०) स्वीकार। (दयो० ७०)
शिरोमणिः (स्त्री०) चूड़ामणि रत्न। (जयो०वृ० १/७९)
शिरोमर्मन् (पुं०) सूकर, सूअर।
शिरोमालिन् (पुं०) शिव।
शिरोरत्नं (नपुं०) चूड़ामणि रत्न।
शिरोरुजा (स्त्री०) सिर की वेदना।
शिरोरुह् (पुं०) सिर के बाल।
शिरोशूलं (नपुं०) सिरदर्द।
शिरोहारिन् (पुं०) शिव।
शिल् (सक०) इकट्ठा करना, पत्थर एकत्रित करना।
शिलः/शिलं (पुं०/नपुं०) [शिल्+क] बालें चुनना।
शिला (स्त्री०) [शिल+टाप्] चट्टान, पत्थर।
०मैनशिल।
०कपूर।
शिलाजितः (पुं०) शिलाजीत। ०एक शक्तिवर्धक औषधि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिलातलं (नपुं०) प्रस्तरखण्ड। (जयो० २४/३८)

शिलात्मकं (नपुं०) लोहा।

शिलादद्रु (पुं०) शिलाजीत।

शिलाधातुः (पुं०) खड़िया मिट्टी।

शिलापट्टः (पुं०) पत्थर की शिला, एक सा चौकोर प्रस्तर।

शिलापुत्र (पुं०) सिल, मशाला पीसने की सिल।

शिलाप्रतिकृतिः (स्त्री०) प्रस्तरमूर्ति।

शिलाफलकं (नपुं०) प्रस्तर सिल।

शिलाभवं (नपुं०) शैलेयगन्धद्रव्य।

शिलाभेदः (पुं०) छैनी, टांकी।

शिलामूलः (पुं०) प्रस्तर भाग। (जयो० १७/४७) ०शिलापट्ट।

शिलारसः (पुं०) धूप। ०शैलेयगन्धद्रव्य।

शिलावल्कलं (नपुं०) शिला पर जमी हुई काई।

शिलावृष्टिः (स्त्री०) प्रस्तर वर्षा।

शिलावेश्मन् (नपुं०) गुफा, दरार।

शिलाव्याधिः (स्त्री०) शिलाजीत।

शिलासृति (स्त्री०) शिलासंचालन-शिलायाः श्रुतिश्चालनं भवति (जयो० ५/५८)

शिलिः (स्त्री०) भुर्जवृक्ष।

शिली (स्त्री०) [शिलि+ङीष्] चौखट के नीचे की लकड़ी।
०भूकीट।
०केंचुआ।
०भाला।
०बाण, गण्डूपद, मेंढकी।

शिलीमुखः (पुं०) भ्रमर, भौंरा।
०बाण। (जयो० ८/१९) (जयो० १/९२, जयो० १४/५०)

शिलीन्ध्रः (पुं०) [शिली धरति-धृ+क] मछली। ०वृक्ष विशेष।

शिलीन्ध्रं (नपुं०) कुकुरमुत्ता।
०सांप की छतरी। ०ओला।

शिलीन्ध्रकं (नपुं०) [शिलीन्ध्र+कन्] कुकुरमुत्ता, खुंद।
०सांप की छतरी।

शिलीन्ध्री (स्त्री०) [शिलीन्ध्र+ङीष्] मृत्तिका, मिट्टी।

शिलोच्चयः (पुं०) प्रस्तरखण्ड, प्रस्तरसमूह। (जयो० २४/४४)

शिलोत्तानिभ (वि०) प्रस्तर सदृश। (जाये० १७/५२)

शिल्पं (नपुं०) [शिल्+पक्] कला, ललितकला, यान्त्रिक, कला।
०कारीगरी, कुशलता, पटुता। (जयो० ११/३७)
०कृत्य, अनुष्ठान।
हस्तादि कौशलं शिल्पमाहवस्तुविभावने।
शूद्राणां वृत्तये साधु, साधनं स महीशिता।।
(हित०सं०पृ०९)

शिल्पकर्मन् (नपुं०) दस्तकारी, यान्त्रिक कला, कारीगर।

शिल्पकारः (पुं०) दस्तकार, ०कलाविंद।

शिल्पकारकः (पुं०) दस्तकार, कारीगर। कलाकार। ०कलाविद, ०विद्यानिपुण।

शिल्पकारिन् (पुं०) ०शिल्पकार, ०कलाकार।

शिल्पकृत् (वि०) निर्मापक। (जयो० १७/५२)

शिल्पगत (वि०) दस्तकारी को प्राप्त हुआ।

शिल्पशाला (स्त्री०) शिल्प विद्या केन्द्र, शिल्पग्रह, निर्माणकला केंद्र। (जयो० ८/३७)

शिल्पशास्त्रं (नपुं०) शिल्पविज्ञान, वास्तुकला, दस्तकारी आदि का शास्त्र। यान्त्रिक एवं ललितकला आदि का ग्रन्थ। ०अभियान्त्रिक ग्रन्थ।

शिल्पिन् (वि०) [शिल्प+इनि] दस्तकारी, कलाकारी, कारीगरी। कारू। (जयो०वृ० २/१११)

शिल्पिन् (पुं०) विधाता, सृष्टा। (वीरो०वृ० ३/२९)

शिल्पिजनः (पुं०) शूद्रजन। यस्यां द्विजो बाहुज एव नासाद्वैश्योऽपि वा शिल्पिजनः शुभाशी। (वीरो० १४/४८)

शिव (वि०) [श्यति पापं-शो+वन्] शुभ, मांगलिक, श्रेष्ठ (जयो० १२/१)
०स्वस्थ्य, प्रसन्न, समृद्ध, सौभाग्यशाली।

शिवः (पुं०) महादेव, शंकर, आदिनाथ। नेमिनाथ, शिवोऽथैव नाम चन्द्रस्य वामन। (दयो० २९)
०रुद्र। (वीरो० १७/२१)
०हस्तिनापुर के एक राजा का नाम। (वीरो० १५/२०)
०हस्तमागाधिपः शिवः।
०वेग।
०मोक्ष, मुक्ति।
०कल्याण।
०गुग्गुल, पारा, काला धतूरा।

शिवं (नपुं०) कल्याण, समृद्धि, मंगल, आनन्द, परमानन्द, मोक्ष। 'शिवं मोक्षे सुखे जले' इति विश्वलोचन (जयो०वृ० १४/४६)
०सेंधा नमक।
०शुद्ध सोहागा।
०जल। (जयो०वृ० ४/७९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिवकः (पुं०) [शिव+कन्] खूंटा।
शिवकर (वि०) आनन्दप्रद, कल्याणकारक।
शिवकीर्तनः (पुं०) भृंगी।
शिवकेलिः (स्त्री०) जलकेलि। जलक्रीडाशिवस्य जलस्य या केलिः क्रीडा।
शिवगतिः (स्त्री०) मोक्ष गति।
शिवघोषः (पुं०) शिवघोष नामक मुनि।
शिवता (वि०) कल्याण। (सम्य० ३७) (जयो०२३/८८)
शिवतातिः (स्त्री०) कल्याण परम्परा। (जयो० १२/५) (सुद० १२३) भूरानन्दस्स्येयमतोऽन्या काऽस्ति जगति खलु शिवतातिः।
शिवद्रुमः (पुं०) बेल का वृक्ष। (सुद० १२३)
शिवधर्मजः (पुं०) मंगलग्रह।
शिवधवनु (पुं०) पारा।
शिवध्वन् (नपुं०) मोक्षमार्ग। (भक्ति० ४५)
शिवपत्तनं (नपुं०) मोक्ष नगर, मुक्तिपुरी। (समु० ८/४१)
शिवपक्षा (स्त्री०) कल्याण पथ का यात्री। (जयो० ६/२)
शिवपुरं (नपुं०) मोक्षपुर, मुक्तिनगर।
शिवपुरी (स्त्री०) मुक्तिपुरी।
शिवपुराणं (नपुं०) अठारह पुराणों में एक पुराण शिवपुराण। (दयो० ३१)
शिवपूः (स्त्री०) काशी, मुक्ति, वाराणसी।
शिवपौरुस (पुं०) चरम पुरुषार्थ। (जयो० १२/२ (जयो० ३/११४) ०मोक्ष।
शिवप्रापणं (नपुं०) कल्याण प्राप्ति। (मुनि० ३१)
शिवप्रियः (पुं०) धतूरा।
०स्फटिक।
शिवमल्लकः (पुं०) अर्जुनवृक्ष।
शिवमा (स्त्री०) मोक्षलक्ष्मी, सुख लक्ष्मी।
शिवराजधानी (स्त्री०) वाराणसी, बनारस, काशी।
शिवराज्यपदं (नपुं०) मोक्षपद। (वीरो० ४/५२)
शिवरात्रिः (स्त्री०) फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि।
शिवलिङ्गं (नपुं०) शिव पिण्ड।
शिवलोकः (पुं०) कल्याणगृह, सुख स्थान, सुखागार।
शिववल्लभ (पुं०) आम्र तरु।
शिववाहनः (पुं०) सांड, वृषभ, नन्दी।
शिवशेखरः (पुं०) चंद्र, धतूरा।
शिवश्री (स्त्री०) मोक्षलक्ष्मी। (सुद० ३/१९) 'सुमचया रुचया च शिवश्रिया इव दृशां नभसो विभवाः प्रियाः। (जयो० १/३३)
शिवा (स्त्री०) उज्जैनी नगरी के राजा प्रद्योत की प्रिया (वीरो०१५/२३)
०शृंगाल, गीदड़।
०पार्वती।
०आंवला, दूर्वाघास।
०दूब।
०हल्दी।
शिवाक्ष (नपुं०) रुद्राक्ष।
शिवानी (स्त्री०) [शिव+ङीप्] पार्वती, गौरी।
शिवाप्तिः (स्त्री०) शिव प्राप्ति, कल्याण की प्राप्ति। (सुद० १/३५)
शिवाभ्युपं (नपुं०) कल्याण, भला। (समु० २/६)
शिवायनं (नपुं०) शिवपथ, मोक्षमार्ग। (सुद० ८३)
शिवारातिः (पुं०) कुत्ता, श्वान।
शिवारि (पुं०) शिव का शत्रु। (जयो० १२/२)
शिवारुत (वि०) गीदड़ के रोने की आवाज।
शिवार्यः (पुं०) भगवती आराधना के रचयिता शिवार्य। (जयो० २८/४७)
०मोक्षनिमित्त, पार्वतीनिमित्त। (जयो०वृ० २८/४७)
शिविका (स्त्री०) डोली, पालकी। (जयो० ६/९०)
शिविकावंशः (पुं०) पालकी का मानदण्ड। (जयो० ६/४०) डोले के बांस। 'अंसोपरिस्थशिविकावंशैर्मितमिङ्गितञ्च वारायाः' (जयो० ६/४०)
शिविकावाहकः (पुं०) पालकी वाहक, कहार, वोढाजन। (जयो० ६/९०)
०यान्यजन। (जयो० ६/२६)
शिविरः (पुं०) तम्बू, पटभवन। शिविराणि पटभवनानि। (जयो० १३/६५)
शिविरप्रगुणः (पुं०) तम्बुओं का रज्जूबल।
०तम्बुओं की सरलता-शिविराणामुपकार्याणां प्रगुणउपचयस्तस्य रज्जूवलस्य। (जयो० १३/६७)
शिशिञ्ज (वि०) संशब्दित। (जयो० १७/७०)
शिशिर (वि०) [शश+किरच्+नि] शीतल, ठंडा, सर्द। भूगर्भमन्ये शिशिरं विशन्ति (वीरो० १२/१४)
शिशिरं (नपुं०) ओस, तुषार, बर्फ, पाला।
०सर्दी, सर्दी का मौसम।
०ठंडक, शीतलता।
शिशिरकरः (पुं०) चन्द्रमा, शशि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिशिरकालः (पुं०) सर्दी के समय।

शिशिरकिरणः (पुं०) चंद्रमा, शशि।

शिशिरदीधितिः (स्त्री०) चन्द्र, शशि।

शिशिररश्मिः (स्त्री०) चन्द्र, शशि।

शिशिरात्ययः (पुं०) सर्दी का अन्त, वसंत ऋतु।

शिशिरापगमः (पुं०) सर्दी का अंत।

शशिरांशुः (पुं०) चन्द्र, शशि। (जयो० १०/९)

शिशिरोचित (वि०) अनुष्णोचित। (वीरो० १५/७४, वीरो०९/२०)

शिशुः (पुं०) [शो+कु-सान्वद्भावः, द्वित्वम्] (दयो०१७, भक्ति०१६)।
०बालक।
०पुत्र। (जयो० १/५५) बाल। (जयो० २/३०)
०छोटा बच्चा (हित० सं० ४९) भान्ति क्रीडनकतो यतः शिशोः (जयो० २/३०)
०वत्स, बछड़ा, छौना।
०स्तमंप। (जयो० १७/१५)

शिशुकः (पुं०) लघुतर बालक। (वीरो० १/८) (सुद० १/५)

शिशुक्रन्दः (पुं०) बच्चे का रुदन।

शिशुक्रन्दनं (नपुं०) बच्चे का रुदन।

शिशुपालः (पुं०) दमघोष का पुत्र, चेदि देश के राजा का पुत्र।

शिशुभावः (पुं०) बाल रूप। (जयो० ११/१२)

शिशुमती (स्त्री०) छोटी बच्ची। (मुनि० ११)

शिशुमारः (पुं०) सूंस नामक जन्तु।

शिशुवाहकः (पुं०) जंगली बकरा।

शिश्नं (नपुं०) पुरुष की जननेन्द्रिय।

शिश्विदान (वि०) [श्वित्+सन्+आनच्] सद्गुणी, पुण्यात्मा।
०दुष्ट, पापी।

शिष् (सक०) चोट पहुंचाना, मार डालना।
०बचा देना।

शिष्ट (भू०क०कृ०) [शास्+क्त] छोड़ा हुआ, बचा हुआ।
०शिष्टाचार। (जयो० २/४०)
०प्रशिक्षित, शिक्षित, अनुशिष्ट।
०अवशिष्ट, बाकी, बचा हुआ।
०प्रशंसनीय। (जयो० ३/२३)
०बुद्धिमान्, विद्वान्।
०सभ्य। (जयो० १४/७)
०शिष्य, नम्र।
०मुख्य, प्रमुख, प्रधान। (सुद० १२५)
०उत्तम, योग्य, सज्जन, पूज्य। (समु० १/२१)

शिष्टः (पुं०) विशिष्ट व्यक्ति, सज्जन पुरुष। सभ्यजन। (जयो०वृ० १/३२) योग्य पुरुष (जयो०१२/१४२) 'किं वावशिष्टमिह शिष्टसमीक्षणीयम्' (जयो० १२/१४२)

शिष्टसभा (स्त्री०) विद्वत्सभा, सज्जन सभा। ०राज्यसभा।

शिष्टस्तवनं (नपुं०) श्रेष्ठ स्तवन। (समु० ४/४)

शिष्टाचारः (पुं०) सच्चरित्र, उत्तम आचरण। (जयो०वृ०२/४०) सम्पादनीयानीति (जयो०वृ० ३/२२) (जयो०वृ० ७/४७)

शिष्टात्मन् (पुं०) विशिष्ट व्यक्ति। (समु० १/३८)

शिष्टिः (स्त्री०) [शास्+क्तिन्] राज्य, शासन।
०आज्ञा, आदेश।
०सजा, दण्ड।

शिष्यः (पुं०) [शास्+क्यप्] छात्र, चेला, विद्यार्थी।

शिष्यता (वि०) शिष्यत्व, शिष्यपना।
एवं पर्यटतोऽमुष्य देशं देशं जिनेशिनः।
शिष्यतां जगृहुर्भूपा बहवश्चेतरे जनाः।। (वीरो० १५/१५)

शिष्यत्व (वि०) शिष्यपना। (वीरो०१५/४६)

शिष्यपरम्परा (स्त्री०) शिष्यपना की विशेषता। (जयो० २/४२) छात्रपने की योग्यता।

शिष्यभावः (पुं०) छात्रभाव, विद्यार्थी रूप। (जयो०वृ० १/५५)

शिष्यशिष्टिः (स्त्री०) छात्र अनुसंधान, छात्रचयन।

शिष्यसंचालनं (नपुं०) छात्रानुशासन।

शिष्या (स्त्री०) छात्रा (वीरो०१५/३८)
जाकियव्वे सत्तरस-नागार्जुनस्य भामिनी।
श्रीशुभचन्द्रसिद्धान्त-देवशिष्या बभूव या। (वीरो० १५/३८)

शी (अक०) शयन करना, आराम करना, लेटना, सोना, विश्राम करना। दर्भे शयानं (जयो०वृ० ११/५०) दृग्यामितः पञ्चशरः स्मरोऽतिशेते विधिं तौ सफलीकरोति (जयो० ११/६५) 'क्वचित् स शेतेऽथ शुचेव तूर्णम्' (वीरो०१२/१७)

शी (स्त्री०) शयन, विश्राम, सोना। ०शान्ति।
०परस्त्री-शी स्त्रीषु स्व-परस्त्रीषु इति वि० (जयो० १६/६६)
०समान। (सुद० १/४३)

शीक् (सक०) तर करना, छिड़कना।
०आर्द करना, गीला करना।

शीकरः (पुं०) [शीक्+अरन्] बौछार, तुषार।
०जलकण, वृष्टिकण। (जयो० १३/१९) ०जलांश (वीरो० ४/६६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शीकरं (नपुं०) साल वृक्ष।
शीघ्र (वि०) [शिङ्घ्+रक्] त्वरित, जल्दी, सत्वर, फुर्तीला। (जयो० १४/८९)
शीघ्रः (पुं०) ग्रहयोग।
शीघ्रं (अव्य०) जल्दी से, शीघ्रता से। (जयो० १/२६)
शीघ्रकारिन् (वि०) चुस्त, फुर्तीला, गतिशील, शीघ्रता (दयो०७६)
शीघ्रकोपिन् (वि०) क्रोधी, कोपी।
शीघ्रगामिन् (वि०) द्रुतगामी। (जयो०वृ० २१/१०)
शीघ्रचेतनः (पुं०) श्वान, कुकुर, कुत्ता।
शीघ्रबुद्धिः (स्त्री०) तीक्ष्णबुद्धि।
शीघ्रलङ्घन (वि०) तेज करने वाली, फुर्ती से।
शीघ्रवेधिन् (पुं०) तेज धनुर्धर।
शीघ्रिन् (वि०) [शीर्घ+इनि] सत्वर, जल्दी, त्वरित।
शीत् (अव्य०) आकस्मिक, पीड़ा।
शीत (वि०) [श्यै+क्त] ठण्डा, शीतल, सर्द, (सम्य० ४६)
०मन्द, आलसी, उदासीन।
०सुस्त।
शीतः (पुं०) नीलवृक्ष।
०शीत ऋतु।
०कपूर।
शीतं (नपुं०) ठण्डक, सर्दी।
०जल।
०दालचीनी।
शीतक (वि०) [शीत+कन्] ठण्डा, सर्द।
शीतकालः (पुं०) सर्दी का समय, ठण्ड का मौसम।
शीतकालीन (वि०) शीतऋतु सम्बंधी।
शीतकृच्छ्रः (पुं०) शीत में की जाने वाली साधना।
शीतगन्धं (नपुं०) सफेद चन्दन।
शीतगुः (पुं०) चन्द्र, शशि।
०कपूर।
शीतचम्पकः (पुं०) दीपक।
०दर्पण।
शीतदीधिति (पुं०) चन्द्र, शशि।
शीतधामा (पुं०) चन्द्रमा, शशि। (जयो० १६/१०)
शीतपुष्पः (पुं०) सिरस वृक्ष, शिरीष वृक्ष।
शीतपुष्पकं (नपुं०) शैलेय गन्धद्रव्य।
शीतप्रभः (पुं०) कपूर।
०चन्द्र, शशि।

शीतभानुः (पुं०) चन्द्र, शशि।
शीतभीरु (स्त्री०) मल्लिका, चमेली।
शीतमयूखः (पुं०) चन्द्र, शशि।
०कपूर।
शीतमरीचि (पुं०) चन्द्र, शशि।
शीतरश्मि (पुं०) चन्द्र, शशि। (जयो० ४/५०) (जयो० ३/१५)
गुप्तिभागिह च कामवत्तु नः पक्षपाति च शीतरश्मिवत्पुनः। (जयो० ३/१५)
शीतरुच् (पुं०) चन्द्र, शशि।
शीतल (वि०) [शीतं लाति-ला+क] ठण्डा, सर्द।
शीतलः (पुं०) शीतलनाथ तीर्थंकर, ग्यारहवें तीर्थंकर शीतलनाथ (भक्ति० १८)
०चन्द्र, शशि।
शीतलं (नपुं०) ठण्ड, सर्द।
०कमल।
०तूतिया।
०मोती।
०चंदन।
शीतलछदः (पुं०) चम्पक वृक्ष।
शीतलजलं (नपुं०) कमल, पद्म।
शीतलनाथः (नपुं०) ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम।
शीतलप्रदः (पुं०) चंदन।
शीतलप्रसादः (पुं०) एक बीसवीं सदी के जैन तत्त्व विचारक।
शीतलषष्ठी (स्त्री०) माघ शुक्ला छठ।
शीतला (स्त्री०) [शीतल+टाप्] चेचक। ०शीतला माता, एक देवी।
शीलपूजा (स्त्री०) शीतलादेवी की पूजा।
शीतली (स्त्री०) चेचक।
शीतवाधा (स्त्री०) सर्दी का प्रकोप। (जयो० १४/७१)
शीतसमीरः (पुं०) ठण्डी हवा। (जयो० १४/७१)
शीतकुलित (वि०) ठण्ड से व्याकुल, सर्दी से पीड़ित। (वीरो० ९/२९)
शीताक्रमणं (नपुं०) शीत प्रकोप, सर्दी का प्रकोप। (वीरो० ९/३९) शीतानुयोगात्पुनरर्धरात्रेः।
शीतार्ति (स्त्री०) शीतपीड़ा, सर्दी का दुःख। शीतस्य पीडामनुभवतेवामि शीतसमीर-भाज। (जयो० १४/७१) अतिशीतलवायु।
शीतालु (वि०) [शीतं न सहते-शीत-आलुच्] ०शीत प्रकोप युक्त, ०सर्दी की पीड़ा वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शीधु (पुं०/नपुं०) अंगुर की शराब।
शीधुगन्धः (पुं०) बकुलवृक्ष।
शीन (वि०) [श्यै+क्त] धनीभूत, जमा हुआ।
शीनः (पुं०) जड़, बुद्धु, मूर्ख। ०अजगर। दरिनोऽजगरमूर्खयो, अवकाशे सुरके वीचि 'इति वि० (जयो० १५/६)
शीभ् (सक०) बतलाना, कहना, समझाना।
०शेखी बघारना।
शीकयः (पुं०) सांड। (शिव)
शीरः (पुं०) [शीङ्+रक्] अजगर।
०सूर्य। (वीरो० २/२२)
शीरोचित (वि०) सूर्य के समान।
मदुक्तिरेषा भवतोः सुवस्तु
समस्तु किन्नो वृषवृद्धिरस्तु।
अनेकधान्यार्थमुपायकर्त्रोर्महत्सु
शीरोचित धम्मभर्त्रोः। (सुद० २/२९)
शीर्था (भू०क०कृ०) [शृ+क्त] मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।
०म्लान, क्लांत, सूखा, शुष्क।
०टूटा-फूटा, चूर-चूर हुआ।
०कृश, दुर्बल, क्षीण, कमजोर।
शीर्थं (नपुं०) एक गन्ध विशेष।
शीर्णपादः (पुं०) यम। ०शनिग्रह।
शीर्णपर्णं (नपुं०) मुर्झाया हुआ पत्ता, शुष्क पत्ता।
शीर्षावृन्तं (नपुं०) तरबूज।
शीर्णाङ्घ्रिः (पुं०) यम। ०शनिग्रह।
शीर्वि (वि०) [शृ+क्तिन्] विनाशकारी, अनिष्टकर, क्षतिकर, आघात युक्ता।
शीर्षं (नपुं०) काला अगर।
०सिर, उन्नत।
शीर्षछेदः (पुं०) सिर काट डालना, मस्तक घात।
शीर्षछेद्य (वि०) सिर काटने योग्य।
शीर्षण्यः (पुं०) [शीर्षन्+यत्] साफ-सुथरा सिर।
शीर्षन् (नपुं०) सिर, मस्तक।
शीर्षरक्षकं (नपुं०) लोहे का टोप, सिरस्त्राण।
शील् (सक०) सेना करना, सम्मान करना। पूजा करना।
* अभ्यास करना।
०अध्ययन करना, चिन्तन करना।
०ध्यान करना, ०धारण करना, पहनना।
शीलः (पुं०) [शील्+अच्] अजगर सर्प।
शीलं (नपुं०) प्रकृति, स्वभाव, प्रवृत्ति, चरित्र, सदाचरण।
शीलस्य पालनेवैवमन्तरात्मा विशुद्धयति।
यतो निश्चितरूपेण, पुमान्ह सद्गति भाग्भवेत्।। (हित०४३)
वंशशील विभवादि वराणाम्। (जयो० ५/३७)
०रुचि, आदत, प्रथा, पद्धति, नियम।
०व्रतों, की रक्षा-पदपरिरक्खणं सीलं। (सुद० १३२)
०ब्रह्मचर्य, समाधि।
०सावद्ययोग का प्रत्याख्यान।
०व्रतों का परिपालन।
०सद्गुण, सज्जीवन।
शीलखण्डनं (नपुं०) सद्गुण का विनाश।
शीलगत (वि०) सदाचरण को प्राप्त हुआ।
शीलधारिन् (वि०) शील पालक।
शीलनं (नपुं०) [शील्+ल्युट्] ०समागमन। (वीरो० १/१७)
०अनुशीलन, प्रयोग (सुद० १/९) यच्छीलनादेव निरस्तदोषा पयस्विनी स्यात्सुकवेश्वच गौः सा (सुद० १/१) (समु०)
शीलभू (वि०) शीलवती, शील वाली। हरेः प्रिया सा चपलस्व भावा मृडस्य निर्लज्जतयाऽघदा वा।
रतिस्त्वदृश्या कथमस्तु पश्य तस्याः समाशील भुवोऽत्र शस्या।। (वीरो० ३/१७)
शीलवंचना (स्त्री०) शील का उल्लंघन, शील विनाश, सद्गुणों का घात।
शीलवती (स्त्री०) साकेत अधिपति वज्रषेण की रानी। (वीरो० ११/२८)
शीलसुगंधयुक्त (वि०) शील की सुरभि से युक्त, सदाचरण की गन्ध से परिपूर्ण। (सुद० २/९) मालेव या शीलसुगन्ध-युक्ता शालेव सम्यक् सुकृतस्य सूक्ता। (सुद० २/९)
शीलान्वित (वि०) शील युक्त। (समु० ६/४)
शीलाधारः (पुं०) शील का आश्रय।
शीलाश्रयः (पुं०) शील गुण। ०सदाचरण।
शीलित (भू०क०कृ०) [शील्+क्त] ०युक्त, सहित, सम्पन्न।
०प्रयुक्त, प्रवृत्ति युक्त।
०शील सम्पन्न, शील पालक।
०कुशल, प्रवीण।
शीवन् (पुं०) [शीङ्+क्वनिप्] अजगर।
शीशः (पुं०) सिर, मस्तक।
शुंशुमार (पुं०) सूंस, एक जलजन्तु मगर की तरह।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुक् (सक०) जाना, पहुंचना।

शुकः (पुं०) [शुक्+क] तोता।

०सिर तरु, कीर। (जयो० १/६१)

शुकं (नपुं०) वस्त्र, कपड़ा।

०लोहे की टाप।

०पगड़ी, शिरस्त्राण।

शुकतरु (पुं०) सिरस वृक्ष।

शुकद्रुमः (पुं०) सिरस वृक्ष।

शुकदेव मुनिः (पुं०) शुकदेव नामक साधु। (जयो०वृ० १/६१)

शुकनास (वि०) तोते जैसी नाक वाला।

शुकनासिका (स्त्री०) तोते जैसी नाक।

शुकनासोपदेशः (पुं०) एक नाम विशेष।

शुकसन्निचयः (पुं०) वीरसमूह। (जयो० १३/६०)

शुक्त (भू०क०कृ०) [शुंच्+क्त] उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ, विशुद्ध।

०अम्ल, खट्टा।

०कर्कश, खरखरा, कड़ा, कठोर।

०परित्यक्त, छोड़ा गया।

०संयुक्त. जुड़ा हुआ।

शुक्तं (नपुं०) मांस।

०कांजी।

०खट्टा तरल पदार्थ।

शुक्तिः (स्त्री०) [शुच्+क्तिन्] सीप। (सुद० २/४२) मोक्तिकोत्पादिकसीप। (जयो० ५/१०२)

०पुट्ठा। ०शंख, ०घोड़े की छाती।

शुक्तिका (स्त्री०) [शुक्ति+कनृ+टाप्] सीपी। ०मोती बनने की सीप। (सुद० ८४) ०दो इन्द्रिय जलचर जीव।

शुक्तिकोदरः (पुं०) सीप। (दयो० २/७)

शुक्तिजं (नपुं०) मोती, मुक्ताफल। मौक्तिक। शुक्तेर्जातं शुक्तिज। (जयो० ९/६०)

शुक्तिपुटं (नपुं०) सीप का पुट, सीप का खुला हुआ मुंह।

शुक्तिपेक्षी (स्त्री०) सीप पुट।

शुक्तिमुक्ता (स्त्री०) सीप का मोती। (जयो० ११/६०)

शुक्तिवधूः (स्त्री०) मोती का सीप।

शुक्तिबीजं (नपुं०) मोती।

शुक्रः (पुं०) शुक्रग्रह। ०ज्येष्ठमास।

०अग्नि।

शुक्रं (नपुं०) वीर्य।

०वस्तु का निचोड़, सत्। मज्जा से उत्पन्न वीर्य।

शुक्रकर (वि०) वीर्य सम्बन्धी।

शुक्रल (वि०) वीर्य सम्बन्धी। शुक्र/वीर्य बढ़ाने वाला।

शुक्रवारः/शुक्रवासरः (पुं०) शुक्रवार, जुमा।

शुक्रशिष्यः (पुं०) राक्षस।

शुक्ल (वि०) [शुच्+लुक्] उज्ज्वल, स्वच्छ, सफेद, विशुद्ध।

०धवल। (जयो० ३/११४)

शुक्लः (पुं०) धवल, शुभ्र।

०शुक्लपक्ष। ०सुदी पक्ष। (जयो० १/१०१)

शुक्लं (नपुं०) रजत, चांदी, वर्ण। (जयो०वृ० ३/८०)

०ध्यान, निष्कषाय। (जयो० ३/११४)

०शुक्ल ध्यान, शुक्ललेश्या। (भक्ति० ३२)

शुक्लकण्ठकः (पुं०) सद्गुणी, शुद्धाचारी।

शुक्लकुष्ठं (नपुं०) सफेद कोढ़।

शुक्लधातु (पुं०) सफेद मिट्टी।

शुक्लता (वि०) धवलीभाव वाला। (जयो० १५/६९)

शुक्लत्व (वि०) श्वेतत्व, शुभ्रता। (जयो० १/२५) ०विशुद्धत्व।

शुक्लध्यानं (नपुं०) शुचिगुण का योग, शुचित्व पूर्वक ध्यान। चार ध्यानों में तृतीय ध्यान (भक्ति० ३२)

०कषायमलविच्छेद, निष्कषाय भाव।

०मलरहितात्मपरिणामोद्भवं शुक्लम्।

शुक्लपक्षः (पुं०) मास का शुभ्रपक्ष, सुदी पक्ष, जिस पक्ष में चन्द्र क्रमशः बढ़ता हुआ पूर्णिमा/पूनम तक पहुंचता है। (समु० १/३०)

०कषायमलविच्छेद निष्कषायभाव।

०मलरहितात्मपरिणामोद्भवंशुक्लम्।

शुक्ललेश्या (स्त्री०) राग-द्वेष एवं मोह रहित होना, छह लेश्याओं में अन्तिम लेश्या।

शुक्लवर्णः (पुं०) समुज्ज्वल, स्वच्छवर्ण। (जयो०वृ० ३/११२)

शुक्लवस्त्रं (नपुं०) श्वेतवस्त्र।

शुक्लवायसः (पुं०) सारस।

शुक्लस्थानं (नपुं०) शुभ्रस्थान।

शुक्ला (स्त्री०) [शुक्ल+टाप्] सरस्वती।

०काकोली का पौधा।

०श्वेतवर्णा स्त्री।

शुक्लिमन् (पुं०) [शुक्ल+इमनिच्] सफेदी, धवलता, स्वच्छता।

शुक्लीकृत् (वि०) धवलता करने वाला। (जयो० १/१५)

शुक्लैकवस्त्रं (नपुं०) एक मात्र शुभ्र वस्त्र। (सुद० ११५)

शुक्षि (स्त्री०) [शुस्+क्सि] हवा, वायु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०प्रकाश, कान्ति।

०अग्नि।

शुगस्थानं (नपुं०) बाणासन।

शुङ्गः (पुं०) बड़ का पेड़, पेबंदी बेर।

शुङ्गा (स्त्री०) [शुङ्ग+टाप्] जौ की बाल, किंशारु।

शुङ्गिन् (पुं०) [शुङ्गा+इनि] वट वृक्ष। बड़ का पेड़।

शुच् (अक०) खिन्न होना, दुःखी होना। शोक करना, विलाप करना। (जयो० ५/२३)

०पछताना, खेद करना।

शुच्शुचा (स्त्री०) शोक, संताप। (सुद० १/४१)

०कष्ट, दुःख, रंज।

शुचमापन्न (वि०) दुःखी, कष्ट को प्राप्त। (जयो०वृ० १२/३)

शुचि (स्त्री०) सफेद, धवल, शुभ्र।

शुचिनिशानमुदेति अदो बल्। (समु० ७/२)

०विमल, विशुद्ध, निर्मल। (जयो० १/६)

०निर्दोष, विशुद्ध। (जयो० २/८०)

सम्प्रपश्यति हि किन्न

साधुचिद्वारिचारितमुदूखलं शुचि। (जयो० २/८०)

०निष्कलंक, निष्पाप, पवित्रात्मा। सद्गुणी।

०पुनीत, पूत, सच्चा, निश्छल।

०मानस-शुद्ध।

०भद्रता, शुद्धता, यथार्थता।

शुचिः (पुं०) सूर्य चन्द्र।

०अग्नि।

शुचिचित्तं (नपुं०) विशुद्ध चित्त। (समु० २/१६)

शुचिचित्रकः (पुं०) उत्तम चित्र, अच्छा चित्र। (जयो० १०/१०) स्वच्छ-साफ एवं स्पष्ट चित्र।

शुचित्व (वि०) निर्दोषत्व, निर्मलत्व। (जयो० ४/६५)

०पवित्रत्व, पवित्रता। (जयो० १९/४४)

शुचिनाम्बरं (नपुं०) स्वच्छ वस्त्र-शुचिना पवित्रेण स्वच्छेन चाम्बरेण वस्त्रेण। (जयो०वृ० १९/११)

शुचिनिशानं (नपुं०) सफेद निशान, सफेदी युक्त बालों के चिह्न। (समु० ७/२)

शुचिपक्षः (पुं०) शुक्लपक्ष। (वीरो० ४/२)

शुचिपात्रं (नपुं०) स्वच्छपात्र। (जयो० १२/११५)

शुचिबोधः (पुं०) उत्तम बोध, अच्छा ज्ञानं। (सुद० ३/२२) सम्यग्ज्ञान।

शुचिबोधवदायतेऽन्वितः

शयनीयोऽसि किलेति क्षायितः।

(सुद०३/२२)

शुचिरश्मिन् (पुं०) चन्द्र, शशि। (जयो० ११/४९)

शुचिराट (पुं०) उत्तम राजा। (सुद० १००)

शुचिर्वाक्यं (नपुं०) हर्षयुक्त वाक्य, मन्दहास युक्त वचन। 'शुचिरवदाता चेति मदीयमिदं वाक्यमस्तीति' (जयो० ११/५३)

शुचिवारि (नपुं०) निर्मल जल। (जयो० १२/३२)

०पुनीतवाक्य।

शुचिव्रत (वि०) सद्गुणी, पुण्यात्मा।

शुचिशर्वरी (स्त्री०) चन्द्र से युक्त चांदनी रात।

शुचिस् (नपुं०) प्रकाश, कान्ति। (सुद० ३/१६)

शुचिसन्निवेशः (पुं०) शुचिता का प्रवेश, पवित्रता का स्थान। (सुद० १/१५)

शुचिस्मित (वि०) मधुर मुस्कान।

शुचिहास (वि०) प्रेमस्मित, प्रेमपूर्ण हंसी। (जयो० १६/२०)

शुचेव-चिन्तयेव (जयो०)

शुच्य् (सक०) स्नान करना, नहाना।

०प्रक्षालन करना, धोना।

०निचोड़ना, निकालना।

०अर्क सींचना।

शटीरः (पुं०) वीर, योद्धा।

०नायक।

शुठ् (अक०) लड़खड़ाना, लंगड़ा होना।

०बाधा डाला जाना।

शुण्ठ् (सक०) पवित्र करना, शुद्ध करना।

०सूखना।

शुण्ठिः (स्त्री०) सोंठ, सूखा अदरक। (जयो०वृ० २८/२९)

शुण्ठः (पुं०) [शुण्ड्+अच्] हाथी की सूंड।

०उन्मत्त हाथी का मद।

शुण्डकः (पुं०) शराब सींचने वाला कलाल

०वाद्यमन्त्र।

शुण्डा (स्त्री०) हाथी की सूंड।

०मद्यालय, मद्यपान गृह, मधुशाला।

०वेश्या, रण्डी, कुटनी, दूती।

०कमन नाल।

शुण्डारः (वि०) शराब खींचने वाला, कलाल।

०हाथी की सूंड।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुण्डालः (पुं०) हस्ति, हाथी।
शुण्डावत् (पुं०) हस्ति, हाथी। (जयो० ८/६७)
शुण्डिका (स्त्री०) [शुण्डा+कन्+टाप्] हस्ति, हाथी, सूंड।
शुण्डिन् (पुं०) [शुण्ड्+णिनि] कलाल।
०हस्ति, हाथी, बाज।
शुण्डि-शुण्डः (पुं०) हस्ति सूंड, हाथी की सुंड। (जयो० १/२५)
शुद्ध (भू०क०कृ०) [शुव्+क्त]
०विमल, निर्मल, स्वच्छ।
०रागांश रहित। (सम्य० १०९)
किन्तुपयोगो नहि शुद्ध एव
प्राहेति सम्यग् जिनराजदेवः।
०श्वेतरूप, कलुषतारहित, मात्सर्यादिरहित, पारदर्शकस्वभाव। (जयो०१९/०३)
०पुनीत, पवित्र, निष्कलंक।
०यथार्थ, वास्तविक, सही, स्वच्छ (जयो० २४/८२)
०विशुद्ध, श्रेष्ठतम, सित। (जयो०वृ० ३/२९)
०वीतराग स्वरूप। (सम्य० ११९)
०अर्थ एवं शब्दगत दोषों से रहित।
०स्पष्ट। (जयो० २/१५)
शुद्धकोपहितः (पुं०) संसर्ग से रहित अन्नादि।
शुद्धचेतना (स्त्री०) ज्ञान का अनुभव।
जीवस्य ज्ञानानुभूतिलक्षणा शुद्धचेतना।(पंचा० अमृ० वृ०१)
शुद्धचेता (स्त्री०) शुद्ध चेतना, ज्ञानजन्य आत्मा। (वीरो० १४/३५)
शुद्धजाति (स्त्री०) उत्तम जाति।
शुद्धजीविन् (वि०) सुजीवन वाला, अच्छे जीवन वाला। (जयो०वृ० २/१०)
शुद्धत्व (वि०) विशुद्धत्व, रागदि रहित पना। (सम्य० ११०)
शुद्धद्रव्यं (नपुं०) यथार्थ द्रव्य, सही पदार्थ।
शुद्धद्रव्यार्थिकनयः (पुं०) कर्मोपाधिरहित।
०द्रव्य की प्रमुखता करने वाला नय।
शुद्धध्यानं (नपुं०) ०आत्म स्वरूप का ध्यान, ०आत्म ज्ञान की प्राप्ति।
शुद्धनयः (पुं०) द्रव्य की मूल, विशेषता वाला पय,
शुद्धनीतिः (स्त्री०) श्रेष्ठतम नीति।
शुद्धपदं (नपुं०) विशिष्ट पद, अच्छा स्थान।
शुद्धपरिहारः (पुं०) पंच महाव्रत रूप क्रिया।
शुद्धपर्यायः (पुं०) स्पष्ट पर्याय।
शुद्धप्रज्ञा (स्त्री०) श्रेष्ठ बुद्धि।
शुद्धभावः (पुं०) विशुद्धभाव, आत्मगत परिणाम। (सुद० २/९)
श्री श्रेष्ठिनो मानसराजहंसीव।
शुद्धभावा खलु वाचि वंशी।।
(सुद० २/९)
०हेयोपादेय से रहित परमोदासीन भाव। (सम्य०१०८)
शुद्ध भावना (स्त्री०) उत्तम भावना, यथेष्ठ चिन्तन।
०पवित्राशय-सा शुद्ध भावनया पवित्राशयेन सहिता
बुद्धिनाम्नी साजी। (जयो० ६/४)
शुद्धमतिः (स्त्री०) निर्दोष बुद्धि।
शुद्धलेश्या (स्त्री०) विशुद्धतेश्या, शुक्ललेश्या। (सम्य० ११५)
शुद्ध वचनं (नपुं०) पुनीत वचन, मधुर वचन, पवित्रवाणी।
शुद्ध वाचनोच्चारणं (नपुं०) शुद्धार्थ प्रतिपादक वचन रूप कथन। (जयो०वृ० २/५२)
शुद्धवर्णः (पुं०) शुद्धजाति। (जयो० २४/१२५)
शुद्धवर्णका (स्त्री०) स्वच्छ मणि, श्रेष्ठ भाषा। (जयो० २४/८२)
'शुद्ध स्वच्छो वर्ण एव वर्णको येषां ते'
(जयो०वृ० २४/८२)
शुद्धसंग्रहः (पुं०) सत्ता सामान्य का विषय-शुद्ध संग्रहनय।
शुद्धसंप्रयोगः (पुं०) परमेष्ठियों के प्रति भक्ति भाव।
शुद्ध सर्पिषः (पुं०) शुद्ध घी, ताजा घी।
शुद्ध सर्दिषः कर्पूरस्याप्युत
माणिक्यकलायाः। (सुद० ७२)
शुद्ध स्वभावः (पुं०) विशुद्ध स्वभाव, आत्म ज्ञान से समन्वित स्वभाव।
शुद्धात्मन् (वि०) समस्त दोषों से रहित आत्मा।
सुद्धो जीव सहावो
जो रहिदो दव्वभावकम्मेहिं
सो सुद्धणिच्छवादो
समासिओ शुद्धणाणीहिं।।
(जैन०वृ० १०६३)
०निकल परमात्मन्।
(सम्य० १०८)
शुद्धात्मस्वरूपः (पुं०) शुद्ध आत्मा का स्वरूप।
शुद्धस्वभावः (पुं०) विशुद्ध आत्मा का परिणाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्धिः (स्त्री०) विशुद्धि, चित्त का प्रसन्न रहना।
०निर्मल ज्ञान और दर्शन का आविर्भाव।
०प्रायश्चित्त परिशोधन।
०समाधान, संशोधन।
०संकलकर्मोपाय।
०चमक, कान्ति।

शुद्धिसम्पादक (वि०) निर्मल करना, स्वच्छ करना। (जयो० २/७७)

शुद्धोदनः (पुं०) बुद्ध के पिता, गौतम बुद्ध के पिता।

शुद्धोपयोगः (पुं०) विशुद्धोपयोग,
रागादि रहित उपयोग,
रागित्वमुज्झित्य तदुत्तरत्र
शुद्धत्वमाप्नोति गणनाष्टमादि,
सूक्ष्मस्थलान्तं विभुनान्यगादि।
(सम्य० ११०)

शुध् (अक०) पवित्र होना, शुद्ध होना।
०अनूकल होना, स्पष्ट होना।
०संदेह रहित होना।
०शुभ होना।

शुध् (सक०) पवित्र करना, स्वच्छ करना। निर्मल करना, प्रक्षालन करना।
०धोना, प्रमार्जन करना।
०परिशोधन करना।

शुन् (सक०) जाना, पहुंचना।

शुनःशेपः (पुं०) एक ऋषि विशेष।

शुनकः (पुं०) [शुन्+क] भृगुवंश में उत्पन्न ऋषि।
०कुत्ता, श्वान।

शुनाशीरः (पुं०) उल्लू।
०इन्द्र।

शुनिः (पुं०) [शुन्+इन्] कुत्ता, श्वान।

शुनि (स्त्री०) कुत्ती, कूकरी, कुत्तिया। (वीरो० १७/३२)

शुनीरः (पुं०) [शुनी+र] कुतियों का समूह।

शुन्ध्युः (स्त्री०) हवा, वायु।

शुभ् (अक०) शोभित होना, सुंदर होना, अच्छा लगना। (सुद० ३/७) (जयो० ५/२६)
शुभभे शुशुभे छविरस्य साऽन्विताऽरुण,
माणिक्य-सुकुण्डलोदिता।
(सुद० ३/१९)
०उपयुक्त होना, योग्य होना।

शुभ् (सक०) सजाना अलंकृत करना, संवारना। चमकाना।

शुभ (वि०) [शुभ्+क] सुंदर, रमणीय, मनोहर, यथेष्ट, अच्छा।
०मांगलिक, सौभाग्यशाली, प्रसन्नता।
०भद्र, सद्गुणी, प्रमुख।
०अनुकूल।

शुभं (नपुं०) प्रशस्त। (जयो० १/१८)
०उद्गम स्थान।
अङ्गीकृता अप्यमुनाशुभेन
पर्यन्तसम्पत्तरुणोत्तमेन।
(सुद० १/१८)
०अच्छी चेष्टा। (सुद०वृ० ६९)
०दृढ़ मजबूत। (जयो० ३/३९)
०कल्याण। (जयो० २/१५८)
०पुण्य, मंगल।
०सद्भावना।

शुभकर (वि०) कल्याणकारी। आनंदवर्धक।

शुभंकर देखो ऊपर।

शुभगः (पुं०) सुंदर, मनोहर। (सुद० १०४)

शुभगेहिनी (स्त्री०) उत्तम गृहिणी।

शुभगेहिनी-नीति (स्त्री०) अच्छी गृहिणी की नीति। (सुद० १०४)
सुभगे शुभगेहिनीतिसत्समयः
शेषमयः स्वयं निशः। (सुद० १०४)

शुभग्रहः (पुं०) अनुकूल ग्रह।

शुभचर (वि०) अच्छा आचरण करने वाला।

शुभचर्या (स्त्री०) शुभ राग से युक्त चारित्र। अहरंतादि के प्रति गुणानुराग।

शुभचारित्रं (नपुं०) प्रशस्तत्ररित्र।

शुभचन्द्रः (पुं०) आचार्य शुभचन्द्र, जिन्होंने ज्ञानार्णव जैसे योगशास्त्र की रचना की। (जयो० २८/४८)
ज्ञानार्णवोदयायासीदमुष्य शुभचन्द्रता।
योगतत्त्व समग्रत्वभागजायत सर्वतः। (जयो० २८/४८)

शुभचन्द्रसिद्धांतः (पुं०) ज्ञानार्णवकर्ता। (वीरो० ३८)

शुभतत्त्वं (नपुं०) यथार्थ तत्त्व।

शुभ-तत्त्वार्थ (नपुं०) पदार्थों के अर्थ की अनुकूलता। (सुद०)

शुभतपः (पुं०) श्रेष्ठतप।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुभतर (वि०) अच्छे से अच्छा, श्रेष्ठतर। (समु० ९/१९)
शुभदः (पुं०) बट वृक्ष।
शुभदंती (स्त्री०) सुंदर दांतों वाली, चमकीले दांतों वाली।
शुभदानं (नपुं०) प्रशस्तदान, योग्यदान।
शुभपरिणामः (पुं०) शुभ भाव, शुभफल अच्छे परिणाम। (मुनि० २५)
शुभपरिणामिन् (वि०) सुवविपाकिन्, अच्छे विपाक वाला। (जयो० ४/३४)
शुभफल-जनक (वि०) सुपरिणाम-लक्षण युक्त। (जयो० २/६)
शुभभक्त (वि०) कल्याणकारी भक्त। (जयो० २/१५८)
शुभभावः (पुं०) प्रशस्त परिणाम, अच्छे भाव। (समु० ५/१५)
देवतामनुवभूव मुदा वैडूर्य-
नाम्नि खपदे शुभभावैः।
(समु० ३/१५)
शुभभावनाकरी (वि०) अच्छी भावना आने वाला, प्रशस्त भावना युक्त। (सुद० ११६)
पाटलिपुत्रेऽभवद् व्यन्तरी
प्राक् कदापि शुभभावनाकरी।
(सुद० ११६)
शुभयोगः (पुं०) प्रशस्त योग। (जयो० १२/६३)
प्रशस्तपुण्यं शुभयोगभावाच्छुवोपद्येगेन भवेत् स्वा वा।
(जयो८/३०)
शुभयोगवशः (पुं०) भाग्योदयवश। (जयो० २३/३०)
शुभलक्षणं (नपुं०) उत्तम लक्षण, योग्य चिह्न। (सुद० ३/१)
सुहुवे शुभलक्षणं सुतं
रविमैन्द्रीव हरित्सतीतु तम्।
(सुद० ३/१)
शुभलग्नः (पुं०)
शुभलग्नं (नपुं०) शुभ मुहूर्त, मंगल बेला, अच्छा अवसर।
शुभ्रयशस् (पुं०) धवलकीति, स्वच्छ प्रभा। (जयो० ६/२९)
शुभवती (स्त्री०) शुभशीला। (जयो० १६/६२)
शुभवार्ता (स्त्री०) शुभ समाचार, अच्छे विचार।
शुभवासनः (पुं०) सुगन्ध।
शुभशंसिन् (वि०) शुभदायक, कल्याण सूचक, प्रशस्त प्रतिपादक।
शुभस्थली (स्त्री०) पूजास्थली, प्रशस्त स्थान, धर्मानुष्ठान युक्त स्थान।
शुभहृदया (वि०) शुमाशी। (वीरो० १४/७)

शुभा (स्त्री०) [शुभ+टाप्] प्रशस्ता, शुभयुक्ता। (जयो० १५/१४)
कान्ति, प्रभा, प्रकाश।
०सौन्दर्य, ०गोरोचन, पीलारंग।
०शमीवृक्ष, ०देवसभा, ०पियंगुलता।
०शोभनाङ्ग। (जयो० १८/१०३)
शुभाक्षः (पुं०) शिव।
शुभांग (वि०) सुंदर, रमणीय, प्रशस्त अंगों वाली।
शुभाङ्गी (स्त्री०) सुंदर स्त्री, कामिनी।
०रति, कामदेव की पत्नी।
शुभाचार (वि०) सद्गुणी, सदाचरण वाला। सदाचारी।
शुभाभिवादिन (वि०) सद्गुणों का अभिवादन करने वाला। (समु० ८/२८)
शुभनना (स्त्री०) मनोरमा, रम्या स्त्री।
शुभाया (स्त्री०) सुंदर गृहिणी, निःशंकितगृहिणी। (जयो० २२/)
शुभाशंसन् (स्त्री०) आशीः। (जयो० ३/१४३)
०आशी, आशीर्वाद। (जयो० १६/२)
'कस्यात्मन आशीः शुभाशंसनं वर्तते।
(जयो० ३/३०)
शुभाशंमनं (नपुं०) शुभाशीर्वादं, मंगल कामना। (जयो०वृ० ३/३०)
शुभाशंसा (स्त्री०) आशीष, शुभ-कामना।
शुभाशिर्वादः (पुं०) शुभाशंसन् शुभकाना, मंगल आशीष। (समु० ३/९)
शुभाश्री (स्त्री०) शुभार्शिवाद, शुभकामना, शुभहृदया, प्रशस्त कामना। (वीरो० १४/७) शुभाशयवाली। (वीरो० १४/५३)
०अच्छी कामना वाली। (जयो०वृ० १२/१५)
मातर्वयस्यैः सह यामि,
देशान्तरं शुभाशीर्भवतात्तु ते सा। (समु० ३/१२)
शुभाश्रमं (नपुं०) शुभ कर्मों का आना। (जयो० ३/४)
शुभाकर्कनशर (वि०) शुभ कारण से। (सुद० ४/१८)
शुभोपयोगः (पुं०) शुभ कर्मों का उपयोग।
०प्रशस्त पुण्य का उदय। (समु० ८/)
शुभोगपयोगी (वि०) प्रशस्त परिणाम वाला। (समु० ८/३७)
शुभ्र (वि०) [शुभ्+रक्] श्वेत, धवल, सफेद।
०उज्जल, कान्तिमय।
शुभ्रः (पुं०) श्वेत रंग। ०चन्दन।
शुभ्रं (नपुं०) रजत, चांदी।
०अभ्रक, ०कपास।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुभ्रकरः (पुं०) चन्द्र, शशि।
०कपूर।
शुभ्ररश्मिः (स्त्री०) शशि, चन्द्रमा।
शुभ्रा (वि०) [शुभ्र+टाप्] ०गंगा।
०वंशलोचन।
०स्फटिक।
शुभ्रांशः (स्त्री०) शशि, चन्द्र।
शुभ्रिः (स्त्री०) [शुभ्+क्रिन्] ब्रह्मा।
शुम्भ् (अक०) ०चमकना, ०भासित होना, ०प्रकाशित होना। (जयो० ११/७६)
शुम्भः (पुं०) [शुभ्+अच्] एक राक्षस विशेष।
शुम्भ् (अक०) आघात पहुंचाना, मारना।
शुम्भत् (वि०) शोभायमान। (जयो० ११/७६)
शुर् (सक०) चोट पहुंचाना, मार डालना।
शुर् (सक०) दृढ़ करना, स्थिर करना, ठहराना।
शुल्क् (सक०) लाभ उठाना, देना, प्रदान करना।
०रचना करना।
०कहना, बोलना, वर्णन करना।
०छोड़ना, त्यागना, विसर्जन करना।
शुल्कः (पुं०) [शुल्क+घञ्] कर, चुंगी। (जयो०वृ० २१)
शुल्कं (नपुं०) शुल्क देना, सीमा कर देना।
०विद्यादि के लिए शुल्क देना। फीस देना।
०उपहार देना, भेंट देना, वस्तु प्रदान करना।
०विक्रय मूल्य।
शुल्कग्राहक (वि०) ०शुल्कसंग्रह कर्ता ०कर अधीक्षक।
शुल्कवाहिन् (वि०) शुल्क संग्रह कर्ता।
शुल्कदः (पुं०) वाग्दान, वचनदान।
०विवाह वचन।
शुल्कवंत (वि०) कर वाले।
यदसङ्ख्याकरा नृपास्त्रपां,
भुवि नीता बिभुनाऽमुना पुनः।
क्व महस्तव तत्सहस्त्रिणो
रविमश्वाद्युदधूयन् खुरैः।।
(जयो० १३/२८)
शुल्कशाला (स्त्री०) चुंगीधर, करशाला, शुल्क स्थान।
शुल्कस्थानं (नपुं०) चुंगीधर, करशाला।
शुल्क समादानं (नपुं०) करपात-टेक्स लेना, टैक्स हासिल करना। (जयो० १३/२७)
०किरणक्षेप। (जयो०वृ० १३/२७)

शुल्लं (नपुं०) [शुल्व्+अच्] ०सुतली, रस्सी ०डोरी। ०ताम्र, तांबा।
शुल्व् (सक०) देना, प्रदान करना।
०भेजना, ०मापना।
०इधर, उधर करना।
शुल्वं (नपुं०) ०रस्सी, डोरा, धागा।
०नियम, कानून, विधिसार।
शुशुभाते-भूतकालिक क्रिया। शोभा को प्राप्त हुए।
द्युहितदीप्तिमताङ्गजन्मना
शुशुभाते जननी धनी च ना।
शशिना शुचिशर्वरीव सा
दिनवच्छ्रीरविणा महायशः।। (सुद० ३/१६)
शुश्रू (स्त्री०) [श्रु+यङ लुक्] जननी, माता।
शुश्रूषक (वि०) [श्रु+सन् द्वित्वादि ण्वुल्] सावधान, आज्ञाकारी।
शुश्रूषक (वि०) सेवक, अनुचर।
शुश्रूषणं (नपुं०) [श्रु+सन् इत्यादि ल्युट्] सर्ववर्णानां सुश्रूषण सेवनं।
०सेवन। (जयो० २/११४)
०सेवा, परिचर्या।
ये शुश्रूषणशीला स्तान् पुनः शुद्रेतिसंज्ञया। (हित० ८)
०श्रवणेच्छा, सुनने की अभिलाषा।
०कर्त्तव्यपरायणता, आज्ञाभिवादन।
०आज्ञा मानना।
शुश्रूषणशीला (स्त्री०) आज्ञाकारी, सेवार्थी। (हित० ८)
शुश्रूषा (स्त्री०) [श्रु+सन् द्वित्वादि+अच टाप्] श्रवणेच्छा।
०सेवा, परिचर्या। (हित० ८)
०सम्मान, समादर, विनम्रभाव।
०बोलना, कहना।
शुश्रूषु (वि०) [श्रु+सन्, द्वित्वादि-उ]
०श्रवणेच्छा वाला, परिचर्या वाला।
०सेवा करने वाला।
०आज्ञापालन।
०सजग, सावधान।
शुश्रूषणः (पुं०) श्रोताजन।
शुश्रूषूणामनेका वाक् नानादेशनिवासिनाम्।
अनक्षरायितं वाचा सार्वस्यातो जिनेशिनः।।
(वीरो० १५/८)
शुष्: (पुं०) [शुष्+क] सूखना, शुष्क होना।
०बिल, भूरन्ध्र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुषिः (स्त्री०) [शुष्+कि] सुखाना।
०रन्ध्र, छिद्र, विवर, बिल।
शुषिर (वि०) [शुष्+किरच्] छिद्र युक्त, रन्ध्रमय विवरयुक्त।
शुषिरः (पुं०) अग्नि, बह्नि, ज्वाला।
०चूहा, मूषक।
शुषिरं (नपुं०) ०छिद्र, ०अन्तरिक्ष ०छिद्रयुक्त वाद्य, ०जो हवा की फूंक से बजाता है।
शुषिरा (स्त्री०) [शुषिर+टाप्] नदी।
०एकगन्धद्रव्य विशेष।
शुषिलः (पुं०) [शुष्+इलच्] पवन, वायु, हवा।
शुष्क (भू०क०कृ०) [शुष्+क्त] सूखा, म्लान हुआ, मुर्झाया हुआ। (दयो० ३५)
०रिक्त, व्यर्थ, अनुपयोगी, अनुत्पादक।
०निराधार, निष्कारण। झुर्री सहित, कृशता सहित।
०कठोर, कर्कश।
शुष्ककलहः (पुं) निराधार झगड़ा, व्यर्थ की कलह।
शुष्कगत (वि०) सूखे पने को प्राप्त।
शुष्कघोषः (पुं०) व्यर्थ का उद्घोष।
शुष्कजडः (पुं०) सूखी जड़।
शुष्कज्योति (स्त्री०) निराधार ज्योति।
शुष्कपादपः (पुं०) सूखा पेड़।
शुष्कभावः (पुं०) कठोर भाव।
शुष्कमाला (स्त्री०) म्लान माला, मुर्झाई हुई माला।
शुष्कयात्रा (स्त्री०) संघर्षशील यात्रा।
शुष्कयोजना (स्त्री०) निराधार योजना।
शुष्क राग (वि०) राग रहित, ममत्व विहीन।
शुष्कलः (पुं०) [शुष्क+ला+क] सूखा मांस।
शुष्कवृक्षः (पुं०) सूखा वृक्ष।
शुष्कश्रीफलं (नपुं०) सूखा नारियल।
शुष्कास्थियुक् (वि०) सूखी हड्डी चबाने वाला। (सुद० १२१)
शुष्मः (पुं०) [शुष्+मन्] ०सूर्य, रवि।
०अग्नि, आग।
०पवन, हवा।
०पक्षी।
शुष्मन् (पुं०) [शुष्+ङ्+मनिप्] ०अग्नि, आग।
शुष्मन् (नपुं०) पराक्रम, बल, वीर्य, शक्ति।
०प्रभा, आग।
शुष्मन् (नपुं०) पराक्रम, बल, वीर्य शक्ति।
०प्रभा, कान्ति, प्रकाश।
शुष्मं (नपुं०) पराक्रम, बल, शक्ति।
शुष्यत् (वि०) सूखी हुई। (जयो०वृ० २०/६३)
शुष्यतसलिला (स्त्री०) सूखी नदी।
शीलसहस्त्रांशुतेजसेव शुष्यत्सलिलासा-सरिदेव। (जयो०२०/६३)
शूकः (पुं०) [शिव+कक्] जौ की बाल।
०दयाभाव।
शूकः स्यादनुकम्पायाम्। इति। विलो० (जयो० २७/४०)
शूकं (नपुं०) पौधों के रोएं।
शूकं (नपुं०) नोट, अग्रभाग, सिरा, किनारा।
०करुणा, कोमलता।
०विषैला कीड़ा।
शूककीकः (पुं०) रोएंदार कीड़ा।
शूककीटकः
शूकधान्यं (नपुं०) टूंट से निकला धान्य।
शूकरः (पुं०) [शू इत्यव्यक्तं शब्दं करोति- शू+कृ+अच्] सूअर, सूकर। (जयो० २५/२१)
शूकरेष्टः (पुं०) मोथा, नागरमोथा, एक घास विशेष।
शूकलः (पुं०) [शूकवत् क्लेश ददाति- शूक+ला+क] अड़ियल अश्व।
शूद्रः (पुं०) [शुच्+रक्] ०संस्कार हीन।
ब्राह्मण्या अपि शूद्रत्व,
संस्काराभावतोऽवन्तः। (हित०सं० २४)
०भ्रष्टाचार प्रहीण (जयो० ५/१०२)
'शूद्रो भ्रष्टाचारः प्रहीणो ना जनः स' (जयो०वृ० ५/१०२)
०शिल्पकार, शिल्पी व्यक्ति, जो नक्कासी आदि करता है।
करकौशलेन च कलाबलेन
कुंभादिनर्तनादिबला।
शूश्रूषणं हि शूद्रा,
जीवा खलु विश्वतो मुद्रा।
(जयो० २/११४)
'कारुः शिल्पी कुशील वो
नटस्तस्य कर्म नर्तनम्।
एतद्विद्याकर्मण उपलक्षणम्।
तस्मिन रतेषु शिल्पविद्योप,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीविशूद्रेषु संस्काधारा नास्ति।
परपरागत-गर्भाधानादिक्रिया न विद्यते। (जयो०वृ० २/१११)
पिण्डशुद्धेरभावत्वान्मद्य-मांस-निवेषणात्।
न्यग्वृत्तेश्चाक्रियाचाराच्छूद्रेष्वमोक्षवर्त्मता।
(हित० सं० २४)
हस्तादिकौशलं हिल्पमहावस्तुविभावने।
शूद्राणां वृत्तये साधु, साधनं स महीशिता।। (हित० सं० ९)
नृत्य-गान-वादित्रादि, विधिना वर्तनं पुनः।
विद्येति नामतः ख्यातः तेषामेवामुना परम्।। (हित० १०)
०चार वर्णों में चतुर्थ वर्ण।
०तुच्छ, अधम, परम्परा विहीन।

शूद्रकः (पुं०) मृच्छकटिकं नाटक का प्रसिद्ध रचनाकार, जिसने जन-जीवन की यथार्थता का परिचय देने के लिए पात्रोचित भाषा का प्रयोग भी किया है। इस रचनाकार ने शकारी, मागश्री, चाण्डाली शौरसेनी महाराष्ट्री आदि का प्रयोग बहुतायत किया है। इसमें जहां संस्कृत को। (१५ से २०) ही स्थान मिल पाया है, वहां विविध प्राकृतो को ८० प्रतिशत से ८५ प्रतिशत स्थान मिला है।

शूद्रकृत्यं (नपुं०) शूद्र कार्य, क्षुद्र कार्य।

शूद्रजातिः (स्त्री०) शिल्पकला प्रवीण जाति। (वीरो० १७/२८)

शूद्रत्व (वि०) सुच्छता, निम्न का सेवन। (वीरो० १७/२८)

शूद्रधमः (पुं०) शूद्र का कर्तव्य।

शूद्रपात्रं (नपुं०) शिल्प युक्त पात्र, नक्कासी युक्त पात्र।

शूद्रप्रियः (पुं०) शिल्पप्रिय।

शूद्रवर्णः (पुं०) पामर वर्ण।

शूद्रवर्णत्व (वि०) पामरत्व।
'शूद्राणामाधिक्यं।' (जयो०वृ० १८/५०)

शूद्रा (स्त्री०) शूद्रा नामक दासी। (जयो०वृ० २५/२६) (पृ० ११६४)
एको दूरात्यजति मदिरां ब्राह्मणत्वाभिमाना-
दन्यः शूद्रः स्वयमहमिति स्नाति नित्यं तयैव।
द्वावप्येतौ युगपदुदराान्निर्गतौ शूद्रिकायाः
शूद्रौ साक्षादथ च चरतो जातिभेदभ्रमेण।।
(जयो०वृ० ११६४)

शूद्राजनी (स्त्री०) शूद्र स्त्री।

शूद्राजीवा (स्त्री०) शूद्र की आजीविका।
सर्ववर्णानां शुश्रूषणं सेवनमित्यादि,
शूद्राणामाजीवा जीविका विश्वतः
सर्वेषां मुदं हर्ष राति। (जयो०वृ० २/११४)

शूद्राणी (स्त्री०) [शूद्र+ङीष् पक्षे आनुक्] शूद्र की भार्या, शिल्पिनी।

शूद्रिका (स्त्री०) शूद्रभार्या, शूद्रा, शिल्पकारिणा। (जयो० २५/२५)

शूद्री (स्त्री०) शूद्रिका, शूद्राणी, शिल्पिनी।

शून (भू०क०कृ०) [श्वि+क्त]
०वर्धित, बढ़ा हुआ, समृद्ध।
०सूजा हुआ।

शूना (स्त्री०) मृदुतालु, घंटी, उपजिह्विका।
०बूचड़ खाना।
०चक्की, ओखली।

शून्य (वि०) [शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्य स्थानत्वात् यत्]
०रिक्त, खाली। (सुद० ९८)
०शून्य स्थान, निर्जन स्थान।
पारावार इव स्थितः पुनरहो
शून्ये श्मसाने तया। (सुद० ९८)
०सूनी, एकाकी। (दयो० ३९)
०अविद्यमान।
०अभाव, कमी।
०अन्त, नाश, विनाश।
०विविक्त, वीरान, जनविहीन।
०खिन्न, उदास, उत्साहहीन।
०वञ्चित, रहित, अभावयुक्त।
०निर्दोष, अर्थहीन।

शून्यं (नपुं०) खोललापन, रिक्त।
०बिन्दू।
०आकाश, अन्तरिक्ष।
०शून्यवाद, क्षणिकवाद, प्रमाण और प्रमेद्य का विभाव स्वप्न की तरह होना।
०अविद्यमानता, अस्तित्वहीनता।

शून्यकार्य (वि०) कार्यमुक्त, कर्तव्य पथ से विमुख।

शून्यकृत् (वि०) निरर्थक किया हुआ।

शून्यकोष (वि०) कान्ति विहीनता, कौमुदी/चन्द्र की चांदनी का अभाव।

शून्यगत (वि०) अभाव को प्राप्त हुआ।

शून्यगेहं (नपुं०) सूनाघर, एकाकीघर। उजड़ा हुआ घर, जर्जरगृह।

शून्यघट (वि०) खाली घड़ा, रीता हुआ घट।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शून्यघोष (वि०) उद्घोष का निरर्थकता।
शून्यचेतना (स्त्री०) चेतनता रहित।
शून्यजीव (वि०) जीवों का अभाव हुआ।
शून्यज्ञान (वि०) श्रुतज्ञान का अभाव।
शून्यटंकार (वि०) अतिक्षय निर्जनता। (जयो० ५/२)
शून्यतप (वि०) तप की कमी।
शून्यतमता (वि०) अतिशय निर्जनता। (जयो० ५/२)
शून्यता (वि०) क्षणिकता, अभावपना।
शून्यदान (वि०) दान का अभाव।
शून्यदासत्व (वि०) दासता का अभाव वाला।
शून्यदैन्य (वि०) दीनतात से रहित।
शून्यधन (वि०) धन के अभाव वाला, निर्धन।
शूनयधैर्य (वि०) धीरता की कमी।
शून्यनन्दभाव: (पुं०) आनन्द का भाव का अन्त।
शून्यपत्रं (नपुं०) टूंट, सूखा वृक्ष।
शून्यप्रीति (वि०) प्रीति का अभाव।
शून्यप्रीति (वि०) प्रेम भाव से रहित।
शून्यफल (वि०) फल की निरर्थकता।
शून्यभक्ति (स्त्री०) भक्ति का अभाव।
शून्यभाव (वि०) निराधार परिणाम।
शून्यभावना (स्त्री०) चिन्तन की कमी।
शून्यभेद (वि०) भेदों से रहित, विकल्प रहित।
शून्यमति (स्त्री०) बुद्धि की कमी, मूढमति, अज्ञनता।
शून्यमन्त्रं (नपुं०) मन्त्र का अभाव।
शून्ययोनि: (स्त्री०) उत्पत्ति रहित।
शून्ययौवन (वि०) क्षीण यौवन वाला।
शून्यरहित (स्त्री०) रति/राग भाव से रहित।
शून्यवाद: (पुं०) बौद्ध की एक विचारधारा।
०शून्यवाद नाम यमतमुपयामि' (जयो०वृ० ५/४३)
शून्यं वदतीति शून्यवादम्। (जयो०वृ० ५/४३)
मुक्तिस्तुशून्यता दृष्टे: तदर्थ शेषभावना। (प्रमाणवार्तिक १/२५६)
०वह वाद जो ईश्वर, जीवादि की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है।
शून्यवादिन् (पुं०) नास्तिक।
०शून्यवाद का कथन करने वाले माध्यमिक मतानुयायी बौद्ध।
शून्यशाला (स्त्री०) निर्जन स्थान, एकान्त स्थल। शून्यागार।

शून्यस्थानं (नपुं०) एकाकी स्थान।
शून्यहृदयं (वि०) अन्यमनरक, व्याकुलता युक्त।
शून्या (स्त्री०) [शून्य+टाप्] बांझ स्त्री।
शून्यागार: (पुं०) शून्य गृह, निर्जन स्थान, एकाकी स्थल। (मुनि० २९)
०धर्मशाला। (दयो० ८८)
विपीदामीव भो भार्ये
शून्यागारप्रपालक:। (दयो०८८)
०सूना मुक्त मकान, देवस्थान।
शून्यायतनं (नपुं०) शून्यागार। (भक्ति० १६) (दयो० २२)
शूर् (अक०) प्रबल उद्यमी होना, शक्तिशाली होना, बलिष्ठता युक्त होना।
शूर (वि०) [शूर्+अच्] वीर, योद्धा, पराक्रमी। शक्तिशाली। (सुद० १/२७)
शूर: (पुं०) शूरवीर व्यक्ति, वीर पुरुष। (जयो०वृ० ५/९१)
०सूर्य, ०सिंह, ०सूअर, ०सालवृक्ष।
०कृष्ण के दादा।
०सूर्यग्रह। (जयो० ५/९१)
शूरकीट: (पुं०) तिरस्कार योग्य योद्धा।
शूरणं (नपुं०) [शूर्+ल्युट्] कन्दमूल, शूरण।
शूरमानं (नपुं०) अहंकार, अभिमान।
शूरशिरोमणि (पुं०) वीर कुञ्जर। (जयो०वृ० १३/२७)
शूर्प: (पुं०) एक माप विशेष, दो द्रोण का एक तोल।
शूर्पं (नपुं०) [शृ+प+ अश्च नित्] छाज।
शूर्पकर्ष: (पुं०) हस्ति, हाथी, करि।
शूर्पणखा (स्त्री०) रावण की बहन, रावण भगिनी।
शूर्पी (स्त्री०) [शूर्प+ङीष्] ०पंखा, ०सोपड़ा, सूपड़ा, ०छोटा छाज।
शूर्म: (पुं०) [सुष्ठ: ऊर्मि अस्ति अस्या:] लोह प्रतिमा, अयस्क मूर्ति।
०घन, निहाई।
शूर्मि:/शूर्मिका (स्त्री०) घन, निहाई।
०अयस्क प्रतिमा।
शूल् (अक०) ०बीमार होना, ०व्याधि ग्रसित होना, ०कोलाहल करना, दु:खी होना।**शुद्धि:** (स्त्री०) विशुद्धि, चित्त का प्रसन्न रहना।
०निर्मल ज्ञान और दर्शन का आविर्भाव।
०प्रायश्चित्त परिशोधन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०समाधान, संशोधन।
०संकलककर्मोपाय।
०चमक, कान्ति।
शुद्धिसम्पादक (वि०) निर्मल करना, स्वच्छ करना। (जयो० २/७७)
शूलः (पुं०) त्रिशूल। (जयो० ८/१५)
शूलं (नपुं०) [शूल्+क] पैना, नुकीला।
०त्रिशूल, तीक्ष्ण, बर्छी, भाला।
०अयस्क शलाका।
०पीड़ा, कष्ट, व्याधि।
०गठिया, जोड़ा का दर्द।
०झण्डा, ध्वजा।
शूलकः (पुं०) [शूल+कन्] घड़ियल घोड़ा।
शूलग्रन्थि (स्त्री०) एक घास विशेष, दूर्बा, दूब।
शूलघातनं (नपुं०) लोह चूर्ण।
शूलघ्न (वि०) शामक औषधि, वेदनाहर।
शूलधन्वन् (वि०) शिव, महोदव।
शूलधर देखो ऊपर।
शूलधारिन् (पुं०) महादेव, शिव।
शूलधृक् देखो ऊपर।
शूलपाणि (पुं०) शिव, महादेव।
शूलभृत् (पुं०) शिव, महादेव।
शूलशत्रु (पुं०) एरण्ड।
शूलस्थ (वि०) सूली पर स्थित।
शूलहन्त्री (स्त्री०) एक जौ विशेष।
शूलहस्तः (पुं०) भालाधारी, बर्छीधारी।
शूला (स्त्री०) [शूल+टाप्] वेश्या।
शूलाकृतं (नपुं०) [शूल+अच्-कृ+क्त] भुना हुआ मांस।
शूलिक (वि०) [शूल+ठन्] शूलधारी, त्रिशूल युक्त। सलाक पर भुना हुआ।
शूलिकः (पुं०) खरगोश, शश।
शूलिकं (नपुं०) भुना हुआ मांस।
शूलिन् (नपुं०) [शूलमस्त्यास्य इनि] बर्छीधारी, शूलधारक, उदर शूल से पीड़ित।
शूलिन् (पुं०) खरगोश। ०शिव, महादेव।
शूलिनः (पुं०) [शूल+यत्] सूली पर स्थित।
०सलाख पर भुना हुआ।
शूल्यं (नपुं०) भुना हुआ मांस।
शूष् (सक०) पैदा करना, उत्पन्न करना।
०जन्म देना, सृजन करना।
शृकालः (पुं०) गीदड़।
शृगालः [असृजं लाति-ला+क] गीदड़।
०ठग, धूर्त, उचक्का।
०भीरु, दुष्ट प्रकृति वाला। कटुभाषी।
०कृष्ण।
शृगालकेलिः (स्त्री०) एक प्रकार का बेर।
शृगालजम्बु (स्त्री०) ककड़ी, खीरा।
शृगालजम्बु
शृगालिका/शृगाली (स्त्री०) [शृगाल+ङीष्] गीदड़ी, लोमड़ी।
०पलायन, प्रत्यावर्तन।
शृङ्खलः (पुं०)शृङ्खला (स्त्री०) [शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन]
शृङ्खला (स्त्री०) ०करधनी, कंदौरा।
०श्रेणी, परम्परा।
०सांकल। (वीरो० ६/२६)
शृङ्खलकः (पुं०) [शृङ्खल+कन्] जंजीर।
०ऊंट।
शृङ्खलित (वि०) [शृङ्खला+इतच्] जंजीर में बंधा हुआ, जकड़ा हुआ।
०पंक्तिबद्ध। (जयो०१०/५५)
शृङ्गं (नपुं०) [शृ+गन्] सींग।
०शिखर, चोटी, कूट। (सम्य० ११६)
'ग्रीष्मे गिरेः शृङ्गमधिष्ठित्' (वीरो० १२/३५)
०उत्तुंग भाग, ऊंचाई।
०उन्नत, सर्वोत्तम, सर्वोपरि।
०अग्रभाग, नोक्त।
०सानु शिखर। (जयो० १५/१३)
शृङ्गकः (पुं०) सींग।
०चन्द्रचूडा।
शृङ्गकं (नपुं०) बाण।
शृङ्गकं (नपुं०)
शृङ्गजः (पुं०) बाण।
शृङ्गप्रहारिन् (वि०) सींग से मारने वाला।
शृङ्गप्रियः (पुं०) शिव, महादेव।
शृङ्गमोहिन् (पुं०) चम्पक वृक्ष।
शृङ्गवत् (वि०) चोटी वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शृङ्गवत् (पुं०) पर्वत, गिरी।

शृङ्गाटः/शृङ्गाटकः (पुं०) [शृङ्गप्रधान्यं अटति-शृङ्ग+अट्+अण्] पर्वत, पहाड़।

०एक पौधा।

शृङ्गागः (पुं०) शिखर प्रान्त। (वीरो० २/३३)

शृङ्गाग्रसंलग्नः (वि०) शिखर के अग्र भाग से जुड़ी हुई। (सुद० १/३१)

शृङ्गारः (पुं०) [शृङ्गं कामोदेकमृच्छत्यनेन ऋ+अण्] प्रेम, प्रीति, प्रणय, संभोगेच्छा।

०मैथुन, ललित प्रसंग।

०चिह्न।

शृङ्गारं (नपुं०) लौंग, लवंग।

०सिंदूर। ०अदरक।

शृङ्गारकः (पुं०) प्रेम।

शृङ्गारकं (नपुं०) सिंदूर।

शृङ्गारकृतः (नपुं०) काम भावना युक्त।

शृङ्गारचेष्टा (स्त्री०) कामानुक्ति की भावना।

शृङ्गारदेवी (स्त्री०) परमार वंश में उत्पन्न राजा धारावंश की भामिनी। (वीरो० १५/५२)

शृङ्गारभाषितं (नपुं०) प्रणयलीला की अभिव्यक्ति। प्रणयकथा।

शृङ्गार भूषणं (नपुं०) सिंदूर/सुहाग।

शृङ्गारयोनिः (स्त्री०) कामदेव।

शृङ्गाररसः (पुं०) प्रणयरस, रस का एक भेद।

शृङ्गारवादः (पुं०) सयसुरत बेला। (जयो० १५/५९)

शृङ्गारविधिः (स्त्री०) प्रेमालाप।

शृङ्गारवेशः (पुं०) प्रेमालाप का सहयोगी व्यक्ति।

शृङ्गारित (वि०) [शृङ्गार+इतच्] प्रेमाविष्ट, प्रणयोन्मत्त।

०सिंदूर से लाल।

०अलंकृत, सजा हुआ।

शृङ्गारिन् (वि०) [शृङ्गार+इनि] प्रेमासक्त, प्रणयोन्मत्त,शृङ्गारप्रिय।

शृङ्गारिन् (पुं०) प्रणयोन्मत्त।

०प्रेमी।

०प्रेमी, ०लाल, ०हस्ति, हाथी।

०वेशभूषा, सजावट।

०सुपारी का वृक्ष।

०पान का बीड़ा।

शृङ्गिः (स्त्री०) सिंगी मछली।

शृङ्गिकं (नपुं०) [शृङ्ग+ठन्) विष विशेष।

शृङ्गिणी (स्त्री०) [शृङ्गिन्+ङीष्] गाय, गऊ।

०मल्लिका, मोतियां।

शृङ्गिन् (वि०) [शृङ्ग+इनि] सींगों वाला।

शिखाधारी, चोटीवाला।

शृङ्गिन् (पुं०) पर्वत, पहाड़, गिरि।

०हस्ति, ०शिव।

शृङ्गी (स्त्री०) सिंगी मछली।

शृङ्गीपात्त (वि०) शिखरों पर लगी हुई। (जयो० ३/७४)

शृणिः (स्त्री०) [शृ+क्तिन्] अंकुश, प्रतोद।

शृत (भू०क०कृ०) [शृ+क्त] पकाया हुआ, उबाला हुआ।

शृध् (अक०) अपान वायु छोड़ना, पाद मारना।

०आर्द्र करना, गीला करना।

०प्रयत्न करना, लेना, ग्रहण करना।

०अपमान करना, नकल करना।

शृधु (स्त्री०) बुद्धि। ०गुदा।

शेखरः (पुं०) [शिख्+अरन्] चूड़ा, कलगी, फूलों का गजरा।

०किरीट, मुकुट।

०चोरी, कूट, शिखर।

०शृंग।

शेखरं (नपुं०) लवंग, लौंग।

शेपः (पुं०) लिंग, पुरुष की जननेन्द्रिय।

०अण्डकोष।

शेफालिः (स्त्री०) [शेफाः शयनशलिनः अलयो यत्र] निर्गुण्डी, नीलिका, नील पादप।

शेमुली (स्त्री०) [शी+क्वि=शैः मोहः तं मुष्णाति-शे+मुष्+क+ङीष्] मति (जयो० २५/२७, जयो० ११/१८) बुद्धि, धी। (जयो० १६/३४)

०विवेक बुद्धि। (मुनि० ३३)

०प्रज्ञा, ज्ञान। (जयो० २/८१)

शेल् (सक०) जाना पहुंचना।

शेवः (पुं०) [शुक्रपाते सति शेते-शी+वन्] ०सर्प, ०सांप, ०विषधर।

०लिंग, ०उन्नत।

०आनन्द, ०धन, सम्पत्ति, वैभव।

शेवं (नपुं) लिंग।

०आनन्द।

शेवधिः (स्त्री०) मूल्यवान्, कोष।

शेवलं (नपुं०) [शी+विच् तथा भूतः सन् वलते वल्+अच्]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक पादप। कमल के साथ उगने वाली घास।
०पानी के ऊपर हरे रंग की रेशेदार घास।

शेवलिनी (स्त्री०) नदी, सरिता।

शेवालः (पुं०) घास, पानी के ऊपर हरे रंग की रेशेदार घास। चोई (मुनि० ६)

शेष (वि०) [शिष्+अच्] बाकी, बचा हुआ।
०अवशिष्ट। (जयो० ३/८०)
०अवशेष, रिक्त, खाली। (सम्य० १८)
०समवशिष्ट।
०शेष अन्य।
प्रणेभि शेषानपि तीर्थ भगवान्,
समस्ति येषां गुणर्गुणगाथा। (जयो० ११/४३)

शेषः (पुं०) शेषनाग, सर्पराज।
'शेषः नागपतिः लोकख्यातः' (जयो० ११/४३)
०परिणाम, प्रभाव।
०अन्त, समाप्ति, उपसंहार।
०मृत्यु, विनाश।

शेषं (नपुं०) चढ़ावे से बचा हुआ।

शेषक्रिया (स्त्री०) क्रिया की समाप्ति।

शेषकीर्तिः (स्त्री०) कीर्ति का विनाश।

शेषखण्डं (नपुं०) अवशिष्ट हिस्सा।

शेषगत (वि०) अवशिष्टता को प्राप्त।

शेषग्रन्थिः (स्त्री०) गांठ की समाप्ति।

शेषजरस् (स्त्री०) जन्म का शेष रहना।

शेषजातिः (स्त्री०) उत्पत्ति का अन्त।

शेषभागः (पुं०) शेष हिस्सा।

शेषभोजनं (नपुं०) जूहन, अवशिष्ट आहार।

शेषनागः (पुं०) ०शेषनाग, ०एक प्रसिद्ध सर्पाधिराज, ०सहस्त्र कलीन्द्र। (वीरो० २/२३)

शेषनागधारित्व (वि०) शेषनाग के नृप को धारण करने वाला। (जयो०वृ० १/३०)

शेषमय (वि०) विशेषकर। (सुद० १०४)

शेषयोनिः (स्त्री०) योनि का अन्त।

शेषविद्वेषपरायणं (नपुं०) शेषनाग से विद्वेष करने में तत्पर। (जयो० ७/८८)
'शेषस्य तस्यैव नागराजस्य
विद्वेषणे विरोधे परायण इति'
(जयो०११/४४)

शैक्षः (पुं०) [शिक्षां वेत्त्यधीते अण् वा] शिक्षा को ग्रहण करने वाला विद्यार्थी।
०मुनिचर्या में उद्यत शिष्य।
०शिक्षाशील। पठन बगैर शिक्षा पाना ही जिनका काम हो। (स०सू० ९/२४), (त०सू०पृ० १५२)
'अचिरप्रव्रजितः शिक्षयितव्यः शिक्षः,
शिक्षामर्हतीति शैक्षो वा' (त०भा० ९/२४)
०शास्त्राभ्यासी।
०अभिनव प्रव्रजित।

शैक्षिकः (पुं०) [शिक्षा+ठक्] शिक्षा शास्त्र में निपुण।

शैक्ष्यं (नपुं०) शिक्षाशील, शास्त्राभ्यासी।
०अधिगम, प्रवीणता। [शिक्षा+यत्]

शैघ्रयं (नपुं०) [शीघ्र+ष्यञ्] स्फूर्ति, तत्परता, शीघ्रता, सत्वरता।

शैत्यं (नपुं०) [शीत+ष्यञ्] ठंडक, ठंडा। (जयो० १२/१२०)
शैत्यमुपेत्य सदाचरणेषुकलहमिते द्विजगणेऽत्र मे शुक्। (वीरो० ९/४३)

शैथिल्यं (नपुं०) [शिथिल+ष्यञ्]
०ढीलापन, शिथिलता, नरमी। (वीरो० २/४९)
०मन्थरता, मंदता।
०कमजोरी, भीरुता।

शैथल्य (वि०) शिथिलता। (वीरो० १२/९)

शैलः (पुं०) [शिला+अण्] गिरि, पर्वत, पहाड़।
०चट्टान, प्रस्तर खण्ड। (वीरो० २/३)

शैलं (नपुं०) सुहागा, धूप, गुग्गुल।
०शिलाजीत।
०अंजन विशेष।

शैलकं (नपुं०) [शैल+कन्] धूप, शैलेय गन्ध।

शैलकटकः (पुं०) पर्वत ढलान, गिरि ढलान, पर्वत उतार।

शैलकर्मन् (नपुं०) प्रस्तर कर्म, पत्थर पर उत्कीर्ण कार्य।
'सेलो पत्थरो, तम्हि घड़िदपडिमाओ सेलकम्मं' (धव० ९/२४९)

शैलगन्धं (नपुं०) एक चन्दन विशेष।

शैलजं (नपुं) धूप, शैलयगन्ध।
०शिलाजीत।

शैलजा (स्त्री०) गौरी, पार्वता।

शैलजात (वि०) पर्वत से उत्पन्न हुई।

शैलतति (स्त्री०) पर्वत माला। (सुद० १/१३)

शैलतनया (स्त्री०) गौरी, पार्वती, शिवाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शैलधन्वन् (पुं०) शिव, महादेव।

शैलधरः (पुं०) कृष्ण, वासुदेव।

शैलनिर्यासः (पुं०) शैलयगन्ध, शिलाजीत।

शैलपत्रः (पुं०) बिल्वतरु।

शैलपुत्री (स्त्री०) गौरी, पार्वती।

शैलभित्तिः (स्त्री०) टांकी, प्रस्तर छैनी।

शैलभूपः (पुं०) गिरिराज। (जयो० १६/१४)

शैलभेदक (वि०) पत्थर तोड़ने वाला।

शैलमाला (स्त्री०) पर्वत श्रृंखला, गिरिकूट।

शैलरन्ध्रं (नपुं०) गुफा, कन्दरा।

शैलशिविरः (पुं०) समुद्र, सागर।

शैलसारः (वि०) चट्टान की तरह दृढ़, अत्यंत कठोर।

शैलसुता (स्त्री०) गौरी, पार्वती।

शैलांशः (पुं०) एक देश का नाम।

शैलाग्रं (नपुं०) पर्वत कूट।

शैलाटः (पुं०) पहाड़ी, असम्भ व्यक्ति।
०सिंह।

शैलाधिपः (पुं०) हिमालय, ०हिमगिरि।

शैलाधिराजः (वि०) हिमगिरि, हिमालय।
०मेरु पर्वत।

शैलानुकर्तु (वि०) पर्वत सदृश अनुकरण करने वाला।
'शैलं पर्वतमनुकरोतीति तस्य शैलानुकर्तुः' (जयो०वृ० ८/३५)

शैलालिन् (पुं०) [शिलालिना मुनिना प्रोक्तं, नर सूत्रमधीयते शिलालि-णिनि] नर्तक, नायक, अभिनेता।

शैलिक्य (वि०) [गर्हितं शीलमस्त्यस्य-ठन्, शीलिक-ष्यञ्] पाखण्डी, छल, धूर्त, ठग।

शैली (स्त्री०) [शीलमेव स्वार्थे ष्यञ् ङीपि य लोपः] अभिव्यक्ति, ०विचार निरूपण की पद्धति, ०विवेचना का प्रकार।
०वृत्ति, विश्लेषण, व्याख्या।
०निरूपण, कथन।

शैलूषः (पुं०) [शिलूषस्यापत्यं-शिलूष+अण्] नर्तक, नायक, नेता, अभिनेता। (सुद० १२८)

शैलूषिक (वि०) [शैलूषं तद्वृत्तिं अन्वेष्टा-ठक्] अभिनय का व्यवसायी।

शैलेय (वि०) [शिलायां भवः, शिला+ठक्] पर्वतीय, पहाड़ी।
०पथरीला, प्रस्तर सदृश कठोर।

शैलेयः (पुं०) सिंह। ०भ्रमर, भौंरा।

शैलेयं (नपुं०) पर्वत ग्रन्थ द्रव्य, धूप, सुगन्धित राल।
०सेंधा नमक।

शैलेश (पुं०) मेरु पर्वत, 'सेलेसो किर मेरु' (जैन०ल० १०६६)

शैलेशी (वि०) शैलेश की तरह निश्चल रहने वाला, शील में विशिष्ट। शीलानोमीशः शैलेशः तस्य भावः। (जैन०ल० १०६६)
शीलनामष्टादश सहस्त्रसंख्यानामीशः
शैलेशः शैलेशस्य भावः शैलेशी' (जैन०ल० १०६६)

शैलेश्य (वि०) पर्वत की तरह दृढ़ रहने वाला।
०शील में स्थिर रहने वाला।

शैलोचितः (पुं०) पर्वत प्रदेश के उचित। (जयो० ६/२४)

शैल्य (वि०) [शिला+ष्यञ्] पथरीला, पत्थरों से युक्त।

शैलयं (नपुं०) कठोर, दृढ़।

शैव (वि०) [शिवो देवताऽस्य-अण्] शिवसम्बंधी, शिव को मानने वाले।
०कर्म की उपाधि से रहित।
कर्मोपाधि विनिर्मुक्तं तद्रूपं शैवमुच्यते' (जैन०ल० १०६६)

शैवः (पुं०) शिवभक्त लोग।

शैवं (नपुं०) अष्टादश पुराणों में से एक पुराण।

शैवंकटी (स्त्री०) शिवकंटा रानी। (जयो० २६/२)

शैवधर्मी (वि०) शिवभक्त। (वीरो० १५/४५)

शैवलः (पुं०) [शी+बलच्] शैवाल, पानी की घास।
०सेवाई, चोई, काई, मोक्ष। सेवार (जयो० ८/९१)
०पद्म काष्ठ।

शैवलं (नपुं०) सुगन्धित लकड़ी।

शैवलपलं (नपुं०) काई समूह-जलमलानां दलस्य। (जयो० १४/४९)

शैवलिनी (स्त्री०) [शैवल+इनि+ङीष्] नदी, सरिता।

शैवालः (पुं०) पानी की घारस, जलीय घास, सेवाई चोई। (सुद० २/७) (जयो० १३/९२) काई, मोथा।

शैवालदलं (नपुं०) जलीय घास समूह। (जयो० १३/९७)

शैव्यः (पुं०) पाण्डु सेना का योद्धा।

शैशवं (नपुं०) [शिशोर्भावः अण्] बाल्यकाल। (जयो० २३/५७)
बाल्यावस्था, बचपन, सोलह वर्ष से नीचे का समय।

शैशवयुक्त (वि०) बाल्यावस्था सहित। (जयो० ५/७१)

शैशिर (वि०) [शिशिर+अण्] सर्दी से सम्बंधित।

शो (सक०) तेज करना, तीक्ष्ण करना। पैना करना।
०पतला करना, कृश करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शोकः (पुं०) [शुच्+घञ्] रंज, दु:ख, कष्ट, विलाप, रुदन, वेदना। (सुद० ११०)
०विषाद। (जयो०वृ० ३/१४)
०अप्रसन्न। (सुद० १/१०)
विरज्यतेऽतोऽपि किलैकलोकः
स कोकवत्किन्वितरस्त्व शोकः।'
(सुद० १/१०)
०संतप्त, व्याकुल (दया० ८७)
०संताप। (जयो० १५/१९)
०पीड़ा, आकुलता-'शोकस्थानसहस्त्राणि' (सम्य० ३)
०चिन्ता-तथैव निर्वृत्तिगृहस्थलोकः, सदान्तरात्मन्यनुबद्धशोकः। (समु० २/३३)
०सम्बन्ध विच्छे से विकलता।
०गुणानुस्मरणपूर्वक विलाप। 'शोचनं शोकः, शोचयतीति शोकः' (जैन०ल०१०६६)
०खेद, खिन्नता, दु:खोत्कर्ष।
शोकगत (वि०) वेद को प्राप्त हुआ।
शोकजन्य (वि०) व्याकुलता युक्त।
शोकनाशः (पुं०) अशोक वृक्ष।
शोकपरायण (वि०) शोक से पीड़ित।
शोकप्रबन्धः (पुं०) शोक समूह। (वीरो० १३/१८)
शोकमोहनीय (वि०) गुणानुस्मरण पूर्वक विलाप करने वाला।
शोकलासक (वि०) शोकाकुल।
शोकविकल (वि०) शोक युक्त।
शोकसमूहः (पुं०) शोक प्रबन्ध।
शोकस्थानं (नपुं०) दु:ख स्थान, वियोग का कारण, आकुलता का स्थान। (सम्य० ३)
शोकहर (वि०) पीड़ा नाशक।
शोकाकुलः (पुं०) संताप से परिपूर्ण। (जयो० १५/९)
शोकाग्निः (स्त्री०) वेदना जनक अग्नि।
शोकातुरः (पुं०) विषाद से भरा। (समु० ४/३५)
शोकानलः (पुं०) रंज दूर करना।
शोकाभिभूत (वि०) कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त।
शोकोपहत (वि०) दु:ख से परिपूर्ण।
शोचनं (नपुं०) [शुच्+ल्युट्] विलाप, शोक, रंज, दु:ख।
शोचनीय (वि०) [शुच्+अनीयर्] चिन्तनीय, विचारणीय।
०विलाप करने योग्य, दु:खद।
शोच्य (वि०) [शुच्+ण्यत्] शोचनीय, विलाप करने योग्य।
०चिन्तनीय, दयनीय।
शोचिस् (नपुं०) [शुच्+इसि] ०कान्ति, ०प्रकाश, ०चमक, ०उजाला, प्रभा।
शोचिष्केशः (पुं०) अग्नि, आग।
शोच्यते-चिन्तन करता है।
शोटीर्यं (नपुं०) [शुटीर+ष्यञ्] ०पराक्रम, ०बल, ०शक्ति, ०शौर्य, ०शक्ति।
०शूरवीरता, बलिष्टता।
शोठ (वि०) [शुठ्+अच्] मूख, मूढ।
०धूर्त, छली, कपटी, ठग।
०अधम नीच।
०आलसी, सुस्त।
शोठः (पुं०) मूर्ख, अज्ञानी व्यक्ति।
०आलसी, उद्यमहीन।
शोण् (सक०) जाना, पहुंचना।
०लाल होना, तमतमाना।
शोण (वि०) [शोण्+अच्] लाल गहरा रंग।
शोणः (पुं०) लोहित वर्ण।
०आनन्द भाव।
शोणोधरस्तु बाले
सरस्वती तन्मयं मुखं चाथ।
०अरुण, लाल। (जयो० १३/२९)
०रुवारुण। (जयो० ११/१५)
०अग्नि, आग।
०लाल रंग।
०ईख, गन्ना।
०एक अश्व विशेष।
०मंगल ग्रट।
शोणं (नपुं०) रुधिर, सिंदूर, रक्त, लालिमा।
शोणमणिः (स्त्री०) माणिक्य। (जयो० ६/५२)
शोणरसनं (नपुं०) माणिक्य, पद्मरागमणि।
शोणाननं (नपुं०) लालिमा युक्त मुख। (जयो० १५/४६)
शोणाम्बु (पुं०) लालिमा युक्त बादल।
शोणाश्मन् (पुं०) लाल पत्थर, माणिक्य।
शोणित (वि०) [शोण+इतच्] रक्तिम्, लालिमा युक्त। (सुद० १०२)
०लाल, लोहित।
शोहितं (नपुं०) रुधिर, केसर।
शोणितकः (पुं०) अरुणवर्ण। (जयो० १८/२२)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शोलिचन्दनं (नपुं०) रक्त चन्दन।
शोणितप (वि०) रुधिर पीने वाला।
शोणितपुरं (नपुं०) बाणासुर का नगर।
शोणिताह्वयं (नपुं०) केसर, जाफरान।
शोणितोपल: (पुं०) पद्मराग मणि।
शोणिमृच् (पुं०) लाली, लालिमा।
शोणोज्ज्वल: (पुं०) अरुण एवं धवल। (जयो० १३/२९)
शोणोधर: (पुं०) रक्त अधर, लाल लाल ओंठ।
शोथ: (पुं०) [शु+थन्] सूजन, स्फीति।
शोथघ्न (वि०) सूजन दूर करने वाला।
शोथजित् (वि०) सूजन हटाने वाला।
शोथजिह्व: (पुं०) पुनर्नवा।
शोथरोग: (पुं०) जलोदर रोग, श्वपथु, रतौंधी। (जयो०वृ० १८/१८)
शोथहृत् (वि०) सूजन हटाने की औषधि।
शोध: (पुं०) [शुध्+घञ्] संशोधन, समाधान।
०शुद्धि संस्कार।
०परिशोध।
०प्रतिहिंसा।
०प्रतिदान।
०बदला।
शोधक (वि०) [शुध्+णिच्+ण्वुल्] शुद्ध करने वाला।
०रेचक।
०संशोधन करने वाला।
शोधन (वि०) [शुध्+णिच्+ण्वुल्] ०शुद्ध करने वाला, ०साफ करने वाला। ०स्वच्छ करने वाला।
शोधनं (नपुं०) उद्धरण, संशोधन। (जयो० १/१३) परिशोधन, यथार्थ निर्धारण।
०प्रायश्चित्त, परिमार्जन, परिशुद्धि।
०प्रतिहिंसा, प्रतिदान, दण्ड।
०व्यकलन, तूतिया।
०मल विष्ठा।
शोधनक: (पुं०) [शोधन+कन्] दण्ड न्यायालय का अधिकारी।
०प्रायश्चित्त देना, दण्ड देना।
शोधनकारिणी (वि०) परिशुद्धि करने वाला। (जयो० २/१२२)
शोधनी (वि०) बुहारी, झाडू।
शोधयन्-प्रमाजित करने वाला। (मुनि० १२)
शोधयन्तु-प्रमाजित करने वाला। (जयो० २/७७)
शोधयेत्-मार्जन करें।
शोधित (भू०क०कृ०) [शुध्+णिच्+क्त] शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ। सुसंस्कृत, सुसंकारित।
०संशोधित, समाहित, परिमार्जित।
०परिशोधित।
शोध्य (वि०) [शुध्+णिच्+यत्] शुद्ध किए जाने योग्य, संशोधन योग्य।
शोफ: (पुं०) [शु+फन्] सूजन, अर्बुद, रसौली, शोथ।
शोफजित् (पुं०) भिलावे का पादप।
शोभन (वि०) [शोभते-शुभ्+ल्युट्]
०चमकीला, रमणीय, उज्जवल।
०प्रभावान्, कान्तियुक्त, रमणीय।
०सुंदर, लावण्यमय।
०भद्र, शुभ, सौभाग्यशाली।
०सदाचारी, पुण्यात्मा।
शोभन: (पुं०) शिव, महादेव।
०ग्रह।
शोभनं (नपुं०) सौन्दर्य, कान्ति, दीप्ति, प्रभा, आभा।
०कमल।
शोभनदन्ति (स्त्री०) सुदन्ति, स्वच्छ दांत। (जयो० १२/११७)
शोभना (स्त्री०) हल्दी।
शोभमान (वि०) [शुभ्+शानच्] लसता, सुंदर प्रतीत होता हुआ। कान्तिमान्, प्रभावान्। (जयो०वृ० १/५५)
शोभा (स्त्री०) [शुभ्+अ+टाप्] कान्ति, दीप्ति, प्रभा, आभा।
०सौंदर्य, लालित्य, चारुता।
०लावण्य, नैसर्गिक, चारुता।
०छाया, अनातप। (जयो० ३/११३)
०सौभाग्य।
अद्‌भुतां लभते शोभां
सिन्दूरेणेव संस्कृता। (जयो० ३/५९)
०स्वर्ण प्रतिमा।
शोभाञ्जन: (पुं०) सौहजंना तरु।
शोभाधार: (पुं०) सौभाग्य का आधार।
शोभाननं (नपुं०) लावण्य युक्त वदन।
शोभालय: (पुं०) लालित्य का गृह।
शोभाश्रय: (पुं०) दीप्ति का आधार।
शोभित (भू०क०कृ०) [शुभ्+णिच्+क्त] अलंकृत्, चारु, सौंदर्य युक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०लावण्य से परिपूर्ण।
०सुंदर, प्रिय, रमणीय।
शोभा (स्त्री०) कान्तिमया, सुमा। (जयो०वृ० ६/८७)
शोषः (पुं०) [शुष्+घञ्] सूखना, कुम्हलाना, म्लान होना।
०कृशता, क्षीणता।
शोषक (वि०) म्लान करने वाला, कृश करने वाला।
अस्मिन्नहन्तयाऽमुष्य
पोषकं शोकं पुनः। (वीरो० १०/१०)
शोषण (वि०) [शुष्+ल्युट्] सूखना, शुष्क करना।
०कृश करना।
शोषणः (पुं०) चूसना, कृश करना। रसाकर्षण, अवशोषण।
शोषणं (नपुं०) [शुष्+ल्युट्] सूखना, शुष्क होना।
०क्षीण होना। कृशता।
शोषायायास (भूतकालिका प्रयोग) सुखा दिया था। निःशेषयति स्म। (जयो०वृ० १/२६)
शोषयेत् (विधि० वि०) सुखाने योग्य।
'न शोषयेत्तं भुवि वायुतातिः' (वीरो० १२/३४)
शोषिक (वि०) कृश करने वाली, क्षीण करने वाली। 'झणिका शरीरस्य शोषिकाऽस्ति' (जयो०वृ० २/१३३)
शोषित (भू०क०कृ०) [शुष्+णिच्+क्त] सुखाया गया, कृश हुआ, मुर्झाया हुआ।
०परिश्रान्त।
शोषिन् (वि०) [शुष्+णिच्+णिनि] सुखाने वाला, क्षीण करने वाला।
शौच (वि०) शुचिता, ०पवित्रता, निर्मलता, रमणीयता।
शौचदिग्दर्शनं (नपुं०) निर्मलता का कथन।
शौचदृष्टिः (स्त्री०) निर्मल दृष्टि पवित्रावलोकन।
शौचधर्मः (पुं०) दशधर्मो में एक धर्म।
शौचपरायण (वि०) शौचधर्म युक्त। (जयो० २८/३६)
शौचभावः (पुं०) शुचिता का भाव।
शौचयोनिः (स्त्री०) स्वच्छ योनि।
शौचार्थ (वि०) मल शुद्धि के लिए। (वीरो० १९/२८)
०पवित्रार्थ, निर्मलार्थ। (समु० ९/२)
शौचेयः (पुं०) [शुचि+ढक्] धोबी।
शौट् (अक०) अहंकारी होना, अभिमानी होना।
शौटीर (वि०) [शौटेः ईरन्] अहंकारी, घमण्डी।
शौटीरः (पुं०) मल्ल, योद्धा, शक्तिशाली।
शौटीर्यं (नपुं०) घमण्ड, अभिमान, दर्प।
शौण्डिकः (पुं०) मद्य व्यवसायी, कलाल। [शुण्डा सुरा पण्यमस्य ठक्]
०कल्पपाल-शौण्डिक कल्पपालः' (जैन०ल० १०६७)
शौण्डिकी (स्त्री०) कल्पपाली, कलाली।
शौण्डिकेयः (पुं०) राक्षस।
शौण्डी (स्त्री०) गजपिप्पली, बड़ी पीपल।
शौण्डीर (स्त्री०) [शुण्डा गर्वोऽस्ति अस्य-शुण्डा ईरन्+अण्] घमण्डी, अभिमानी।
०उत्तुंग, उन्नत, ऊंचा।
शौद्धोदनिः (पुं०) [शुद्धोदन+इञ्] बुद्ध।
शौद्र (वि०) [शूद्र+अण्] शूद्र सम्बंधी।
शौद्रः (पुं०) शूद्रा स्त्री का पुत्र।
शौनं (नपुं०) [शूना+अण्] मांस।
शौनिकः (पुं०) [शूना प्राणिवधस्थानं प्रयोजनमस्य ठक्] कसाई। ०बहेलिया, शिकारी।
०शिकार, आखेट।
शौभः (पुं०) [शौभायै हित शोभा+अण्] देवता, दिव्यता।
०सुपारी का पेड़।
शौभाञ्जनः (पुं०) [शोभाञ्जन अण्] एक वृक्ष विशेष।
शौभिकः (पुं०) [शौभं व्योमपुरं शिल्पमस्य-शौभ+ठक्]
०मदारी, बाजीगर।
०शिकारी, बहेलिया।
शौरसेनी (स्त्री०) [शूरसेन+अण्+ङीष्] एक प्राचीन प्राकृत, जिसका प्रयोग शिलालेखों, षट् खंडागम, धवला टीकाओं एवं कुन्दकुंदादि के ग्रंथों के अतिरिक्त संस्कृत में मान्य सभी नाटकों में इसका प्रयोग हुआ है। इसकी पहचान क्रिया में भणदि अर्थात् 'त' का 'द' होने पर होती है। अन्यत्र थ का ध-अथवा अधवा आदि।
शौरिः (पुं०) [शूर+इञ्] कृष्ण।
शौक (नपुं०) [शुक्+अण्] तोतों की लार। तोतों का झुण्ड।
शौक्त (वि०) [शुक्ति+अण्] अक्ल। खट्टा।
शौक्तिक (वि०) [शुक्ति+ठक् शुक्ति कायां भवं] मौक्तिक। (जयो० २/८२) मोती से सम्बन्धिं
०खट्टा।
शौक्तिकेयं (नपुं०) [शुक्तिका+ठक्] मोती, मुक्ताफल।
शौक्तिकेयः (पुं०) [शुक्तिका+ढक्] एक प्रकार का विष।
शौकल्य (वि०) [शुक्ल+ष्यञ्] स्वच्छ। (वीरो० १७/२८) सफेदी, स्वच्छता, धवलता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शौक्ल्यजः (पुं०) विशद, स्पष्ट, स्वच्छ। (जयो० १३/६४)

शौचं (नपुं०) [शुचेर्भावः अण्] स्वच्छता, धवलता, निर्मलता, पवित्रता।
०शुद्धि। (सम्य० ८४)
०आचारशुद्धि।
०शुचेर्भावः कर्म वा शौचम्।
०लोभ निवृत्ति।
०शुचिता।
०शौचधर्म, दश धर्मों में एक शौचधर्म। लोभ को न बढ़ने देना एवं संतोष धारण। (त०सू०महा० ९/६)

शौचकल्पः (पुं०) शुद्धि संस्कार।

शौचकूपः (पुं०) शौचालय।

शौचगत (वि०) शुचिता को प्राप्त हुआ, पवित्रता को प्राप्त हुआ।

शौचजन्य (वि०) पवित्रता युक्त।

शौर्यं (नपुं०) [शूरस्य भावः ष्यञ्]
०पराक्रम, शूरता, वीरता, धीरता।
०सामर्थ्य, शक्ति। (जयो० १/१६)
०विक्रम। (जयो० ६/८)

शौर्यप्रशस्तितः (स्त्री०) शूर-वीरता की प्रशंसा।
शौर्यप्रशस्तौ लभते कनिष्ठां
श्रीचक्रपाणेः स गतः प्रतिष्ठाम्। (जयो० १/१६)

शौल्कः (पुं०) [शुल्के तदादानेऽधिकृतः अण्] चुंगी अधीक्षक, कराधिकारी।

शौल्विकः (पुं०) [शुल्व+ठक्] कसेरा।

शौव (वि०) [श्वन्+अण्] कुक्कुर सम्बंधी।

शौवं (नपुं०) कुत्तों का झुण्ड। श्वान संतति।

शौष्कलः (पुं०) मांस भक्षी, मांसजीवी।

श्च्युत् (सक०) टपकना, रिसना, बहना, चूना।
०उड़ेलना, फैलाना, बखेरना।

श्च्योतः (पुं०) रिसना, बहना।

श्मशानं (नपुं०) [श्मानः शया शेरतेऽत्र+शी+आनच्, डिच्च, अथवा श्मन् शब्देन शवः प्रोक्तः तस्य शानं शंयनम्] शवस्थान, मशान, शवदाहस्थान, मारघट। (सुद० ९८) (दयो० २/९)
'शून्यागार-गुहा-श्मशान-निलयप्राये प्रतीतो मुदा' (मुनि० २९)

श्मशानगोचर (वि०) मसान में घूमने वाला।

श्मशानगत (वि०) मसान को प्राप्त हुआ।

श्मशानकुक्करः (पुं०) श्मशान का कुत्ता।

श्मशाननिवासिन् (पुं०) भूत-प्रेत।

श्मशानभाज् (वि०) शिव, महादेव।

श्मशानभूमिः (स्त्री०) मसान स्थल, शवस्थान दाहगृह।

श्मशानवर्तिन् (पुं०) भूत-प्रेत।

श्मशानवासिन् (पुं०) शिव, महादेव।

श्मशानवेश्मन् (पुं०) शिव। ०भूत-प्रेत।

श्मशानवैराग्यं (नपुं०) क्षणिक विरक्ति, अस्थाई वैराग्य, व्याकुलता युक्त विराग।

श्मश्रु (नपुं०) दाढ़ी, मूंछ। कूर्चतति। (वीरो० १/३४)

श्मश्रुप्रवृद्धिः (स्त्री०) दाढ़ा का बढ़ना।

श्मश्रुमुखी (वि०) दाढ़ी-मूंछ वाली स्त्री।

श्मश्रुल (वि०) [श्मश्रु+लच्] दाढ़ी मूंछ वाला।

श्मील् (सक०) आंख झपकना, आंख मारना, पलक झपकना।

श्मीलनं (नपुं०) [श्मील्+ल्युट्] पलक झपकना, आंख बंद होना, झपकी लगना।

श्यान (भू०क०कृ०) [श्यै+क्त] ०गया हुआ, जमा हुआ।
०पिण्डीभूत, धनीभूत।
०चिपगना।
०सूखा हुआ, म्लान।

श्याम (वि०) [श्यै+मक्] काला, कृष्ण, गहरा, नीला, काले रंग का।
०भूरा, गहरा रंग।

श्यामः (पुं०) मेघ, बादल।
०कोयल।

श्याम (नपुं०) समुद्रा नमक।
०काली मिर्च।

श्यामकण्ठः (पुं०) शिव, नीलकण्ठ।

श्यामकर्णः (पुं०) अश्वमेघ यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा।

श्यामकल्याणरागः (पुं०) एक छन्द की लय।
जिनप परियामो मोदं तव मुख भासा।
खिन्ना यदिव सहजकद्विधिना,
निःस्वजनी निधिना सा।' (सुद० ७४)

श्यामपत्रः (पुं०) तमालवृक्ष।

श्यामभास् (वि०) चमक युक्त कालिम्प।

श्याममुखत्व (वि०) कृष्ण मुख वाला। (वीरो० ६/७)

श्याममूर्ति (स्त्री०) कृष्ण छवि, कृष्ण प्रतिबिम्ब। (दयो० २६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्यामरुचि (वि०० चमक युक्त कालिमा।

श्यामल (वि०) [श्याम+लच्] काला, गहरा नीला। (जयो०वृ० ६/१०७)

श्यामलः (पुं०) कृष्णवर्ण, धूर्मवर्ण। (जयो० ७/१०३) काला रंग।

०काली मिर्च।

०भ्रमर, भौंरा।

०बटवृक्ष।

श्यामलता (वि०) शिलीकृत। (जयो०वृ० १५/११) कृष्णवर्ण युक्त।

श्यामला (स्त्री०) कृष्णा, काला रंग। (जयो०वृ० ३/५५)

श्यामलिका (स्त्री०) नील का पौधा।

श्यामवर्णा (वि०) अन्धकार रूपिणी। (जयो०वृ० १५/२७) तमोमयी।

श्यामा (स्त्री०) [श्याम्+टाप्] रजनी, रात्रि। (जयो० १५/४८)

०स्त्री 'श्यामास्ति शीतकुलितेति मत्वा'। (वीरो० ९/२९)

०गाय, ०हल्दी, ०मादा कोयल, ०प्रियंगुलता।

०नील का पौधा।

०यमुना नदी।

श्यामाकः (पुं०) [श्याम+अक्+अण्] धान्य विशेष, समा का चांवल।

श्यामालिः (स्त्री०) धान्य।

श्यामाशयः (वि०) कृष्णपक्ष, कलुष परिणाम।

श्यामिका (स्त्री०) [श्याम+ठञ्+भावे] कालिमा, कृष्णा।

०मलिनता, कृष्णता।

श्यामित (वि०) [श्याम+इतच्] कृष्ण किया हुआ, काला किया हुआ। कलूटा।

श्यालः (पुं०) [श्यै+कालन्] साला।

०पत्नी का भाई।

श्यालकः (पुं०) [श्याल+कन्] साला, पत्नी का भाई।

श्यालकी (स्त्री०) साली, पत्नी की बहन।

श्याव (वि०) [श्यै+वन्] ०काला, ०गहरा भूरे रंग का, ०धूसर धूमल, धुंधला।

श्यावः (पुं०) भूरा रंग।

श्यावतैलः (पुं०) आम्रतरु।

श्येत (वि०) [श्यै+इतच्] सफेद, धवल।

श्येनः (पुं०) [श्यै+इतच्] सफेद रंग।

०सफेदी, धवलता।

०हिंसा, प्रचण्डता।

०बाज, ०शिकरा।

श्येनकरणं (नपुं०) पृथक् शवदाह करना।

श्येलकरणिका (स्त्री०) बाज की भांति झपटना।

श्येतचित् (पुं०) बाज को पकड़कर बेचने वाला।

श्येतनीविन् (पुं०)

श्रङ्क् (सक०) जाना, फेंकना।

श्रङ्गः (सक०) जाना, पहुंचना।

श्रण् (सक०) प्रदान करना, देना, सौंपना। ग्रहण करना। (मुनि० ११), बिखेरना (जयो० २/१५५)

०अर्पण करना।

श्रणत (वि०) मुक्त हस्त। (जयो० १२/८७)

श्रणनं (नपुं०) दान। (जयो० ९/८२)

श्रणनाद (वि०) अंक में गया हुआ। (सुद० ३/२१)

श्रणता (वि०) पथक। (सुद० ९९)

श्रत् (अव्य०) [श्री+डति] उपसर्ग धातु से पूर्व लगने वाला।

श्रथ् (सक०) चोट पहुंचाना, घायल करना।

०खोलना, ढीला करना, स्वतन्त्र करना।

०मुक्त करना।

०(अक०) प्रयत्न करना, निर्बल होना।

श्रथनं (नपुं०) [श्रथ्+ल्युट्] मारना, विनाश करना, खोलना।

०प्रयत्न, चेष्टा।

०बांधना।

०मुक्त करना।

श्रद्धा (स्त्री०) [श्रत्+धा+अङ+टाप्]

०आस्था, विश्वास, निष्ठा, भरोसा। (जयो० १/६६, जयो०वृ० १/१६)

०आदर, सम्मान, तत्त्वार्थाभिमुखी बुद्धि। (सुद० ७१)

०प्रबल इच्छा, विज्ञातार्थरुचि। (जयो० २/१४८)

०शान्ति, मन की स्वस्थता। (जयो० ४/६५)

०दोहद, गर्भशीलता की आकांक्षा।

श्रद्धानं (नपुं०) आस्था, विश्वास, रुचि। (सम्य०८२)

श्रद्धाविधिः (स्त्री०) सम्मान विधि। (वीरो० २२/१५)

श्रद्धापरिणामः (पुं०) समादर, श्रीगुण परिणाम।

श्रद्धाभावः (पुं०) समाद भाव।

श्रद्धालु (वि०) [श्रद्धा+आलुच्]

०निष्ठावान्, सम्मानशील।

०इच्छुक, अभिलाषी।

०विश्वास करने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रद्धता (वि०) श्रद्धा रखने वाले। (जयो० १/६८)

श्रन्थ् (अक०) ०दुर्बल होना, ०विश्रान्त होना, ०थकना, ०उदास होना।

श्रन्थः (पुं०) [श्रन्थ्+घञ्] ढीला करना, स्वतन्त्र करना।

श्रन्थनं (नपुं०) [श्रथ्+ल्युट्] मारना, विनाश करना, निर्बल होना।
०प्रयत्न, चेष्टा।
०बांधना।
०मुक्त करना।

श्रद्धा (स्त्री०) [श्रत्+या+अङ्+टाप्]
०आस्था, विश्वास, निष्ठा, भरोसा। (जयो० १/६६, जयो०वृ० १/१६)
०आदर, सम्मान, तत्त्वार्थाभिमुखी बुद्धि। (सुद० ७१)
०प्रबल इच्छा, विज्ञातार्थरुचि। (जयो० २/१४८)
०शान्ति, मन की स्वस्थता। (जयो० ४/६५)
०दोहद, गर्भशीला की आकांक्षा।

श्रद्धानं (नपुं०) आस्था, विश्वास, रुचि। (सम्य ८२)

श्रद्धाविधिः (स्त्री०) सम्मान विधि। (वीरो० २२/१५)

श्रद्धापरिणामः (पुं०) समादर श्री गुण परिणाम।

श्रद्धाभावः (पुं०) समादर भाव।

श्रद्धालु (वि०) [श्रद्धा+आलुच्]
०निष्ठावान्, सम्मानशील।
०इच्छुक, अभिलाषी।
०विश्वास करने वाला।

श्रद्धता (वि०) श्रद्धा रखने वाला। (जयो० १/६८)

श्रन्थ् (अक०) दुर्बल होना, विश्रान्त होना, थकना, उदास होना।

श्रन्थः (पुं०) [श्रन्थ्+घञ्] ढीला करना, स्वतन्त्र करना।

श्रन्थनं (पुं०) [श्रथ्+ल्युट्]
०ढीला करना, खोलना।
०चोट पहुंचाना, मारना।
०विनाश करना, बांधना।

श्रपणं (नपुं०) [श्रा+णिच्+ल्युट्] गरम करना, उबालना, खोलाना।

श्रपित (भू०क०कृ०) [श्रा+णिच्+क्त] गरम किया गया, उबलाया गया।

श्रपिता (स्त्री०) मांड, कांजी।

श्रम् (अक०) चेष्टा करना, उद्योग करना, प्रयत्न करना। परिणाम करना। (जयो० १८/३२)
०परिश्रम करना, मेहनत करना।
०ताश्चर्या करना, इन्द्रिय दमन करना।
०श्रान्त होना, थकना।
०दुःखी होना, म्लान होना, खिन्न होना।
०विश्राम करना। (जयो० २७/५८) श्राम्यति-विश्रामं करोति।

श्रमः (पुं०) [श्रम्+घञ्] परिश्रम, चेष्टा प्रयत्न। (जयो० ३/८१)
०थकान, श्रान्त, परिभान्ति। (दयो० ३९)
०कष्ट, दुःख।
०तपस्या, साधना। (वीरो०)
०इन्द्रियदमन।
०व्यायाम। (जयो० ३/८२)

श्रमकर्मिन् (वि०) मेहनती, परिश्रमी।

श्रमकर्षित (वि०) थकाहारा।

श्रमगतः (वि) परिश्रम को प्राप्त हुआ।

श्रमजनित (वि०) परिनिःस्विन्न। (जयो० १३/७१)

श्रमजलं (नपुं०) पसीना।

श्रमण (वि०) [श्रम्+युच्] परिश्रमी, मेहनती।

श्रमणः (पुं०) साधु, अनगार। संयती।
०त्यागी-क्षमायामस्तुविश्रामः
श्रमणानां तु भो गुण!
सुराजा राजते वंश्यः
स्वयं माञ्चकमूर्धनि।। (जयो० ७/४६)
०समो सव्वत्थ मणो जस्स भवइ स समणो।
०सर्वग्रन्थविनिर्मुक्त, तपोनिष्ठ।
०श्रमणाः श्रमहन्तारं सत्त्वानां सन्ति साम्प्रतम्। (दयो० १/६)

श्रमणकर्मिन् (वि०) तपस्वी कर्म वाला।

श्रमणगत (वि०) साधुपने को प्राप्त हुआ।

श्रमणचर्या (स्त्री०) संयती की चर्या।

श्रमणतपश्चर्या (स्त्री०) महाव्रती की तपाराधना।

श्रमणधीरत्व (वि०) श्रमण की धीरता।

श्रमण संघः (पुं०) साधु संघ।

श्रमणसूक्तं (नपुं०) श्रमण सम्बंधी विचार। (दयो०)

श्रमहन्तार (वि०) थकान दूर करने वाला। (दयो० १/१६)

श्रमणाचारः (पुं०) संयत के आचार-विचार।

श्रमणाधारः (पुं०) श्रामणों का अवलम्बन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रमणिडा (स्त्री०) श्रमणी, सन्यासिनी। (मुनि० ११)
श्रमभारः (पुं०) थकावट, थकान। (जयो० १३/७५)
श्रमलवः (पुं०) पसीने की बूंद। (जयो० ६/५९)
श्रमपारिषातित (वि०) प्रस्वेद युक्त। (जयो० ७३/७७)
श्रमहा (वि०) श्रमहर्त्री, थकान दूर करने वाली। (जयो० २२/४२)
श्रमी (स्त्री०) परिश्रमी। (वीरो० १८/५७)
श्रमणाभासः (पुं०) संयत होता हुआ भी वस्तु तत्त्व से प्रति अश्रद्धानी।
श्रमणी (स्त्री०) साध्वी, आर्यिका। भिक्षुणी, सन्यासिनी।
श्रमनीरनिर्झरः (पुं०) स्वेद जल पुर, पसीने की धारा। (जयो० १३/७६)
श्रमारम्भः (पुं०) स्वेद जल। (जयो० १९/९९)
श्रम्भू (अक०) उपेक्षक होना, असावधान होना, उपेक्षा करना। लापरवाह होना।
श्रयः (पुं०) [श्रि+अच्] शरण, आश्रय, आधार, सहारा।
श्रयणं (नपुं०) [श्रि+ल्युट्] शरण, सहारा, आश्रय, आधार।
श्रणणीय (वि०) ग्रहण करने योग्य। (जयो० २८/१०६)
श्रयंतु (विधि) चाहे, सेन को। (जयो० २/७१)
श्रयेत् (वि०) अध्ययन करे।
श्रवः (पुं०) [श्रु+अप्] सुनना, श्रवण करना।
श्रवणः (पुं०) कर्ण, कान।
श्रवणं (नपुं०) सुनने की क्रिया। (समु० ४/२२)
०ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति।
श्रवणकुमारः (पुं०) एक मातृ-पितृ भक्त कुमार।
श्रवणकार्यः (पुं) सुनने का कार्य।
श्रवणगत (वि०) कर्णभाग को प्राप्त हुआ।
श्रवणगोचर (वि०) कर्णभाग में समाहित।
श्रवणगोचरः (पुं०) सुनाई देने की सीमा।
श्रवणपथः (पुं०) कर्णपथ।
श्रवणपथागत (वि०) कर्णमार्ग का आया हुआ। (जयो०वृ० १/६४)
श्रवणपालिः (स्त्री०) कर्ण भाग, कान का हिस्सा।
श्रवणपूरः (पुं०) कर्ण से उत्पन्न, कर्णपथ। श्रवणसम्भव। (जयो० ६/८९)
श्रवणपूरमुपेत्य विलासिनी
हृदयमाशु ददावकनाशिनी। (जयो० ९/७८)
श्रवणाविषयीकृत (वि०) कर्ण प्रान्त गत। (जयो० १/६९)
श्रवणशील (वि०) सुनने वाला। (जयो०वृ० १/२६)
श्रवणसन्निहित (वि०) कर्णप्रानत में समाहित। (वीरो० २/१३)
श्रवणसुभग (वि०) कर्णप्रिय।
श्रवणासुभग (वि०) सुनने में बुरा। (दयो० ६४)
श्रवःस्रुचः (पुं०) कर्णपात्र। (जयो० २७/१९)
श्रवस् (नपुं०) [श्रु+असि] कर्ण, कान। (वीरो० ३/१४)
०ख्याति, प्रसिद्धि।
०धन, वैभव।
श्रवसोस्तृप्तिः (स्त्री०) कर्णतृप्ति वदत्यपि जनस्तस्यै श्रवसोस्तृप्तिकारणम्। (वीरो० ८/३६)
श्रवस्यं (नपुं०) [श्रवस्+यत्] कीर्ति, यश, प्रसिद्धि, ख्याति।
श्राविष्ठा (स्त्री०) [श्रवः ख्यातिः, अस्ति अस्याः श्रव+मतुप्-इष्ठनि मतुवो लुक्] घनिष्ठा नक्षत्र।
०श्रवणा नक्षत्र।
श्रव्य (वि०) [श्रु+यत्] सुनने योग्य। (वीरो० १८/३१)
श्रा (अक०) पकाना, उबालना, परिपक्व करना।
०भोजना बनाना।
श्राण (वि०) [श्रा+क्त] पकाया हुआ। परिपक्व किया हुआ।
०आर्द्र, गीला, तर।
श्राणा (स्त्री०) [श्राण+टाप्] कांजी, यवागू।
श्राद्ध (वि०) [श्रद्धा हेतुत्वेनास्त्यस्य अण्] निष्ठावान्, श्रद्धावान्, विश्वास करने वाला।
०श्रद्धापूर्वक आदि देने वाला। (जयो० १८/५)
श्राद्धं (नपुं०) अनुष्ठेय संस्कार। (जयो० २/८८)
श्राद्धकर्मन् (नपुं०) अन्त्येष्टि संस्कार। (वीरो० १५/६१)
श्राद्धक्रिया (स्त्री०) अन्त्येष्टि संस्कार।
श्राद्धकृत् (स्त्री०) अन्त्येष्ठि संस्कार करने वाला।
श्राद्धदः (पुं०) श्राद्ध का उपहार।
श्राद्धदिन् (पुं०) सम्मान दिवस, पुण्यतिथि।
श्राद्धदिनं (नपुं०) पुण्यतिथि।
श्राद्धदेवः (पुं०) अष्ठिात्री देव।
श्राद्धिक (वि०) श्राद्ध सम्बंधी। (वीरो० २०/२२)
श्राद्धीय (वि०) श्राद्ध संबंधी।
श्रान्त (भू०क०कृ०) [श्रम्+क्त]
०थका हुआ, परिश्रम युक्त।
०क्लान्त, परिश्राक्त। (दयो० १८)
०शन्त, सौम्य।
श्रान्तः (पुं०) संयत, श्रमण, साधु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रान्ततार (वि०) आलस्य भाव युक्त। (जयो० २१/१९)

श्रान्तिः (स्त्री०) [श्रम्+क्तिन्] ०क्लान्ति, ०परिश्रन्ति। (दयो० ६२)

०थकान, थकावट।

श्रान्तिवशः (वि०) थका हुआ। (दयो० ६२)

श्रामः (पुं०) [श्राम्+अच्] समय, काल।

०अस्थायी, ०छाजन।

श्रामण्यकर्मन् (पुं०) जिनदीक्षा। (वीरो० ११/३)

श्रामण्यात्मबोधः (पुं०) श्रमणपना अंङ्गीकार का ज्ञान। (वीरो० १५/२६)

श्रायः (पुं०) [श्रि+घञ्] आश्रय, आधार, सहारा, शरण, संरक्षण।

श्रावः (पुं०) [श्रु+घञ्] सुनना, कर्णदेना, कान लगाना।

श्रावकः (पुं०) [श्रु+ण्वुल्] व्रती, अणुव्रत, धारक व्यक्ति, बारह व्रत पालक व्यक्ति।

०सप्त व्यसवत्यागी पुरुष।

०सुदृढोपयोग व्यक्ति। (जयो०वृ० ७/३४)

०उपासक। (जयो०वृ० १/१३३)

०श्रोता।

०शिष्य छात्र।

श्रावण (वि०) [श्रवण+अण्] कर्ण सम्बंधी।

०श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न।

श्रावणमासः (पुं०) सावन मास। (वीरो० १३/२९) वि०सं० १९८३ के सावन मास की सुदी पूर्णिमा में जयोदय महाकाव्य की रचना की गई।

श्रावणमासमितिं प्रति याति पूर्णं
निजपरहितैक जाति। (जयो० २८/१०९)

श्रावणिक (वि०) श्रावण मास सम्बंधी।

श्रावणिकः (पुं०) सावन मास।

श्रावणी (स्त्री०) [श्रवणेन नक्षत्रेण युक्ता मौर्णमासी-श्रवण+अण्+ङीप्] श्रव्रवण मास की पूर्णिमा।

श्रावस्ति (स्त्री०) श्रावस्ती नामक नगर, गंगा नदी के उत्तर में स्थित एक नगर।

श्राविका (स्त्री०) व्रती गृहिणी। व्रत पालन करने वाली स्त्री। (वीरो० १५/२९)

सुधर्मस्वामिनः पार्श्वं
उष्ट्रदेशाधियो यमः।
दीक्षा जग्राह तत्पत्नी
श्राविका धनवत्यभूतः। (वीरो १५/२९)

०उपासिका, जो शक्ति के अनुसार मूल गुण और उत्तर गुण का पालन करती है।

श्राव्य (वि०) [श्रु+णिच्+यत्] सुने जाने योग्य, श्रवण करने योग्य।

०सुनने में स्पष्ट।

श्रि (सक०) शरण लेना, सहारा लेना, आश्रय लेना। (सुद० १/१८) श्रयन्ति।

०चाहना, सेवन करना, इच्छा करना। (जयो०वृ० २/७१)

०अध्ययन करना, शिक्षा लेना। (जयो०वृ० २/४७)

०मानना, स्वीकार करना। (सुद० १२१)

०जाना, पहुंचना, धारण करना।

०निवास करना, वसना।

०सम्मान करना, सेवा करना।

०पूजा करना, अर्धना करना।

०चुनना, चयन करना, छांटना।

०कहना, बोलना। (जयो० १५/१२)

०ग्रहण करना। (जयो० ३/१०७)

श्रित (भू०क०कृ०) [श्रि+क्त] गया हुआ, (जयो० १३/१२) संबद्ध।

०आच्छादित, बिछाया हुआ।

०युक्त, पूरित।

०सहित, सम्पन्न। (सुद० ४/१४)

श्रिताडिम्बः (पुं०) विप्लव। (जयो० ५/२३)

श्रितवान् (वि०) गया हुआ। (सुद० ३/८)

श्रिता (वि०) पालिता। (सुद० ४/३३)

श्रितिः (स्त्री०) [श्रि+क्तिन्] आश्रय, आधार, शरण, अवलम्ब।

०पहुंच।

श्रिस् (सक०) जलाना, प्रज्वलित करना।

श्री (स्त्री०) [श्री+क्विप्] धन, सम्पत्ति, वैभव, सम्पदा, समृद्धि। (सम्य० १५६)

०ऐश्वर्य, राजसत्ता, सम्प्रभुता। (सम्य० ६७)

०सौन्दर्य, चारुता, लालित्य, कान्ति।

०शोभा, आभा, प्रभा। (सुद० १३६)

०उत्तम, श्रेष्ठ। (सुद० ८३)

०लक्ष्मी, विष्णुप्रिया।

श्री लक्ष्मी भारती शोभा प्रभासु सरलद्रुमे इति विश्वलोचनः। (जयो० १५/१५)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीदेव भूषयति या मम वामभागम्। (दयो० १०९)
गुण, श्रेष्ठता, बृद्धि, समझ।
श्रीकदः (पुं०) लक्ष्मी के हाथ। ०विष्णु।
श्रीकर (वि०) शोभा दायक। (सुद० १३६)
श्रीकरण (वि०) शोभाधारक। (वीरो० ६/२५)
श्रीकरणं (नपुं०) लेखनी, कलम, निर्झरणी।
श्रीकशः (पुं०) जल से परिपूर्ण कुम्भ। (जयो०१५/७१)
श्रीकान्तः (पुं०) विष्णु।
श्रीकारिन् (पुं०) बारहसिंहा।
श्रीखण्ड (पुं०) श्रीखण्ड, एक खाद्य पदार्थ, जो दही एवं शर्करा के मिश्रण से बनता है।
श्रीखण्डं (नपुं०) चन्दन की लकड़ी।
श्रीगदितं (नपुं०) लघु नाटिका।
श्रीगर्भः (पुं०) विष्णु, तलवार।
श्रीगुणः (पुं०) क्षमा गुण। (जयो० १/११३)
श्रीग्रहः (पुं०) पानी पिलाने की कुण्डी।
श्रीधनं (नपुं०) खट्टा दही।
श्रीचक्रं (नपुं०) भूमण्डल, भूचक्र।
श्रीचक्रपाणि (स्त्री०) भरत चक्रवर्ती का विशेषण। (जयो० १/६)
श्रीजः (पुं०) काम, इच्छा, वासना।
श्रीजिनः (पुं०) अर्हत् प्रभु। (सुद० ७०)
श्रीजिनकृष्णा (स्त्री०) जिनदेव की कृपा। (सुद० ७३)
श्रीजिनामोच्चारणं (नपुं०) जिनदेव के नाम का उच्चारण। (सुद० ८६) जिनप्रभु का स्मरण।
श्रीजिनराजः (पुं०) अर्हत प्रभु। (सुद० २/२३)
श्रीछान्दसी (स्त्री०) अनुकूल स्वभावी।
०शोभन छंद वाला। (जयो० २२/८१)
श्रीतिलकः (पुं०) सौभाग्य सूचक तिलक। (जयो० १२/१४) पुष्प (जयो० १४/२९)
श्रीदः (पुं०) कुबेर, धनपति।
श्रीदत्तः (पुं०) उज्जयिनी का एक सार्थवाह। (दयो० १/२०)
श्रीडयितः (पुं०) विष्णु।
श्रीदेवादि (पुं०) सुमेरु पर्वत। (सुद० ९७)
श्रीधरः (पुं०) श्रीधर नामक देव। (समु० ४/३६)
०विष्णु, ०श्रीधर नामक राजा। (जयो० ७/८८)
०कुबेर (जयो० ३/३०) एतन्नामकः कुबेरः'
०श्रीधर नामक राजा। (जयो० ३/३७) अकम्पन का नाम।
'श्रियं धरतीति श्रीधर इत्येवमुक्तः' (जयो०वृ० १२/५४)
०श्रीराचार्य-विश्वलोचनकोश कर्ता। (जयो०वृ० १/१७)
श्रीधरपुत्रिका (स्त्री०) अकम्पन राजा की पुत्री सुलोचना। (जयो० ८/६३)
श्रीधरसन्निवेशः (पुं०) भाण्डागार। (जयो० १/१७)
०श्री सम्पन्न।
०राजा का परिवेश। कुबेर की सम्पन्नता। (सुद० १/३२)
श्रीधरा (स्त्री०) अलकापुरी के राजा दर्शक की रानी। (समु० ५/२१) धरणी तिलक नगर के राजा आदित्यवेग। सुलक्षणा दासी की पुत्री, श्रीधरा। (समु० ५/१९)
श्री नगरं (नपुं०) श्रीनगर।
श्रीनन्दन (पुं०) राम।
श्रीनिकेतनः (पुं०) विष्णु।
श्रीनिवासः (पुं०) विष्णु।
श्रीपट्टदमहादेवी (स्त्री०) गंगहेमाण्डिमान्धाता की सहधर्मिणी। (वीरो० १५/४४)
श्रीपञ्चशास्त्रः (पुं०) हस्त। ०कल्पद्रुम। (जयो० १/५१)
श्रीपतिदर्शनं (नपुं०) जिनदर्शन। (जयो० १९/२३)
श्रीपद (नपुं०) गुरचरण। (जयो० २७/१३)
श्रीपथः (पुं०) राजमार्ग, मुख्य सड़क। (सुद० ३/४०)
श्रीपद्मखण्डः (पुं०) एक नगर विशेष। (समु० १/२९)
श्रीपर्णं (नपुं०) कमल।
श्रीपर्वतः (पुं०) एक पर्वत विशेष।
श्रीपादपः (पुं०) कल्पवृक्ष, फलशाली वृक्ष। (सुद० १/१७ भक्ति १३)
श्रीपाद पपः (पुं०) चरणाविर। (जयो० १/६८)
श्रीपादपीठः (पुं०) सिंहासन। (जयो० २०/१७)
श्रीपिष्टः (पुं०) तारपीन।
श्रीहिताश्रवः (पुं०) तपस्वी। (समु० ६/३१)
श्रीपुष्पं (नपुं०) लवंग।
श्रीपालः (पुं०) श्रीपाल नामक राजा, जो कुष्ठ रोगी था, बाद में मैनासुंदर की भक्ति एवं सेवा/श्रद्धा से पूर्ण सुंदर हो गया। (सम्य० ६७)
श्रीप्रमाणदेवी (वि०) व्याकरणज्ञ। (जयो० ५/५२)
श्रीफलः (पुं०) बेल तरु। बिल्ववृक्ष। नारियल (जयो०वृ० १२/१०९)
श्रीफला (स्त्री०) नील का पौधा। आंवला, आमली। आमलकी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीशाज् (पुं०) श्रीमन्। (सुद० ११०)
श्रीभूति (पुं०) राजा सिंहसेन का मंत्री। (समु० ३/२१)
श्रीभ्रातृ (पुं०) चन्द्र। ०अश्व।
श्रीमत् (वि०) [श्री+मतुप्] श्रीमंत।
०श्रीसहित। (जयो० १/१११)
०सम्भसत। (जयो० ३)
०आपकी। (दयो० ७३)
०भाग्यशाली, महाभाग। (सुद० ३/४५)
०महापुरुष। (जयो० २/४६)
०लक्ष्मीवान्, धनवान्।
०सुखी, सौभाग्यशाली, शोभा युक्त। (सुद० २/७)
०सुंदर, सुहावना, सुखद।
०विख्यात, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित।
श्रीमत् (पुं०) कुबेर। ०विष्णु।
०शिव। ०अर्हत्।
०तिलकवृक्ष।
श्रीमता (वि०) अर्हता। (जयो० २/७५)
श्रीमती (स्त्री०) कान्तिमति। (जयो० २/४१)
सौभाग्यशालिनी श्री। (सुद० ९४)
श्रीमत्तरङ्गिणी (स्त्री०) श्रीमती तां तरंगिणी रांगाभुक्त।
०गंगा नदी।
श्रीमत्तोरणं (नपुं०) शोभनीय। (जयो० २०/४६) तोरण द्वार। (जयो० ३/८१)
श्रीमद (वि०) श्रीमन्, श्रीमान्।
०धनवान्, भाग्यवान्।
श्रीमद्भागवत: (पुं०) एक पुराण ग्रन्थ। भगवत् गीता। (जयो० ३०)
श्रीमदहीन (वि०) लक्ष्मी मद से रहित। (जयो० १/३०) वैभव मद से हीन।
श्रीमन्त (वि०) श्रेष्ठ जन, विशिष्ठ जन। (जयो० ३/८६)
श्रीमस्तक: (पुं०) लहसुन।
श्रीमुद्रा (स्त्री०) तिलक विशेष।
श्रीमान् (वि०) भद्र! (सुद० १३२)
धर्माख्यकल्पद्रुमवरोऽभ्युदरा:
श्रीमान् स जीयात्समितिप्रसार:। (सुद० १३२)
०शव्यात्मन्।
दास्यासऽदर्शि सुदर्शनो मुनिरिव
श्रीमान् दृशा सूत्कया। (सुद० ९८)
०महाशय। (दयो० ६७)
'श्रीमान् य: खलु पूर्वपरिचित इव।' (दयो० ६७)
श्रीमानमूच्छ्री (स्त्री०) श्री रूपी पृथ्वी की श्री। (जयो० १/४३)
हंस: स्ववंशोरूसरोवरस्य
श्रीमानभूच्छ्रीसुहृदां वयस्य:'
श्रीमूर्ति: (स्त्री०) लक्ष्मी की मूर्ति।
श्रीयुक्त (वि०) भाग्यशाली, महाशय। महादश (जयो० ३/१०१) शोभा सहित (जयो० ३/१३)
श्रीरङ्ग: (पुं०) विष्णु।
श्रीरस: (पुं०) तारपीन। ०राल।
श्रीरोद् (स्त्री०) पृथवी, भू, धरा। (सुद० १/३१)
श्रीवत्सकिन् (पुं०) अश्व चिह्न युक्त।
श्रीवनञ्चानुकुर्वत (वि०) वनरक्षक, वनपाल, माली। (जयो० १/८८)
श्रीवर: (पुं) जिनवर। (सुद० ७४)
०श्रीमन्त। (जयो० २/९६)
०विष्णु।
श्रीवल्लभ: (पुं०) विष्णु।
श्रीवामरूप (वि०) महादेव रूप। (जयो० १/४६)
०शोभा से रमणीय रूप वाला।
श्रीवास: (पुं०) विष्णु। शिव, ०कमल, ०तारपीन।
श्रीवासस् (पुं०) तारपीन।
श्रीवासुपूज्य: (पुं०) बारहवें तीर्थंकर का नाम। (सुद० १/३५)
श्रीविभु (पुं०) श्रीप्रभु। (वीरो० १९/३३)
श्रीवी: (वि०) श्रेष्ठ पक्षी। (जयो०वृ० १/४४)
श्रीवीर: (पुं०) वीर प्रभु, महावीर, चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का अपर नाम। (जयो० १/४४)
श्रीवीरदेव: (पुं०) तीर्थंकर महावीर।
श्रीवीरदेवस्य यशोभिरामं,
वप्रं तपो राजतमाश्रयाम:। (वीरो० १३/१२)
श्रीवृक्ष: (पुं०) बिल्व तरु।
श्रीवेष्ट: (पुं०) तारपीन। ०राल।
श्रीश (वि०) श्रीमत्, महायश, सौभाग्यशाली। (जयो० २६/५६)
श्रीश्रुतसागर: (पुं०) आचार्य शिरोणि श्रुतसागर। (वीरो० ११/३०)
श्रीश्रेष्ठिन् (वि०) लक्ष्मी विभूषित श्रेष्ठी। (सुद० २/३६)
श्रीश: (पुं०) श्री के ईश, जिनेन्द्र देव। (जयो० २४/७५)
०विष्णु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीशरणं (नपुं०) समवशरण।
वृत्तं तथा योजनमात्र मञ्चं
सार्द्धद्वय क्रोश समुन्नतं च।
ख्यातं च नाम्ना समवेत्य यत्र
ययुर्जनाः श्रीशरणं तदत्र।। (वीरो० १३/१)

श्रीश्रेष्ठिन् (पुं०) श्री वृषभदास सेठ। (सुद० २/९)

श्रीसंज्ञं (नपुं०) लवंग, लौंग।

श्रीसद्भः (पुं०) काश रोग, खांशी, श्वांस रोग। (जयो० १८/२२)

श्रीसहोदरः (पुं०) चन्द्र।

श्रीसुंदरी (स्त्री०) कामसुंदरी। (सम्य० ६७)

श्रीसवला (वि०) ०प्रमोद सहिता। आनन्द युक्ता श्रीबलमुत्सवे लातीति धीसबला। (जयो० १५/५४)

श्रीसमागमः (पुं०) सौभाग्य प्राप्ति।
श्रियः सौभाग्यसम्पत्तेः समागमः प्राप्तिः' (जयो० ३/११५)
'श्रीयुक्तः सम्यगागम आप्तोपज्ञो ग्रन्थः' (जयो०वृ० ३/११५)

श्रीसरिता (स्त्री०) उत्तम सरिता। (वीरो० २/१५)

श्रीसुमन (वि०) कुसुम युक्त। (जयो० १/७७)

श्रीसूक्तं (नपुं०) एक वैदिक ग्रंथ।

श्रीस्थितिः (स्त्री०) बिल्वफल। (जयो०वृ० २८/३०)

श्रीहर (वि०) शोभापहारक। (जयो० १२/६४)

श्रीहरि (पुं०) विषु।

श्रु (सक०) जाना, पहुंचना।
०सुनना, श्रवण करना। (वीरो० १४) श्रुणु (जयो०वृ० १/२६)
०अधिगम करना, अध्ययन करना।
०समाचार देना।

श्रुत (भू०क०कृ०) [श्रु+क्त] श्रृणोति श्रवणमात्रं का श्रुनम्। सुना हुआ, श्रवण किया हुआ। (जयो० २/४०) (समु० ३/४१)
श्रुतमश्रुतपूर्वमिदं तु कुतः
कपिले त्वया स वैक्लैव्ययुतः। (सुद० ८४)
'सुज्ञात, प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत।

श्रुतं (नपुं०) शास्त्र, धर्म विवेचन। (जयो० २/१४०)
०आप्तवचन निबन्धन।
०आगम, सिद्धांत। (जयो० २/५६)
०अस्पष्ट ज्ञान।
०विख्यात। (जयो० २६/४०)
०श्रुत ज्ञान के भेदों में द्वितीय ज्ञान। (जयो० १/३)
'मतिज्ञान के विषयभूत पदार्थ से सम्बन्ध रखने वाले किसी दूसरे पदार्थ का जानना। (त० सू० पृ० १७)

श्रुतकीर्तिः (पुं०) एक आचार्य विशेष।

श्रुतकेवली (वि०) जो श्रुत द्वारा शुद्धात्मा को जानता है। जो सुदणाणं सव्वं जाणादि सुदकेवलिं। (सम०पा० ९/१०)

श्रुतज्ञानं (नपुं०) ज्ञान का द्वितीय भेद। मति पूर्वक जाना गया ज्ञान। (सम्य० १३०)
श्रुतज्ञान विभाव के साथ नियम से अन्वय वाला होता है।
'श्रुतं विभावान्वयि' (सम्य० १३०)

श्रुतज्ञानमंत्रं (नपुं०) 'णमो चोद्दसपुव्वीण' ऐसा श्रुतज्ञान मंत्र है।

श्रुतदेवी (स्त्री०) सरस्वती, भारती।

श्रुतधरः (वि०) आगम श्रावक।

श्रुतधर्मः (पुं०) श्रुत/शास्त्र के स्वभाव का बोध।

श्रुतभक्तिः (स्त्री०) द्वादशांग भक्ति। (भक्ति०वृ०५)

श्रुतप्रमाणं (नपुं०) आगम प्रमाण।

श्रुतप्रान्तगत (वि०) श्रवण विषयकृत, कर्ण प्रान्त को प्राप्त हुआ। (जयो० १/६९)

श्रुतरचरिन् (वि०) श्रुतरसज्ञ, शास्त्र में रुचि लेने वाला। (जयो० २/८१)

श्रुतवत् (वि०) [श्रुत्+मतुप्] वेदज्ञ, वेदज्ञाता। श्रुतज्ञाता, शास्त्रज्ञ, सिद्धान्तज्ञ।
०आगम प्रवीणता युक्त।

श्रुतवाक् (नपुं०) आगम वचन, सिद्धांत वचन। (मुनि० ८)

श्रुतवाचनं (नपुं०) आगम वचन। (मुनि०८)

श्रुतविनयं (नपुं०) सूत्रार्थ का ग्रहण।

श्रुतसंहरहः (पुं०) श्रुत प्रवीण, शास्त्र में चतुर, ०आगम प्रवीण। (जयो० १९/६६)

श्रुतसारः (पुं०) श्रुतसागर आचार्य।
आचार्य शिरोमणि श्रुतसागर।
दिगम्बरीभूय तपस्तपस्समायमात्मा
श्रुतस्मपमस्यन् (वीरो० ११/३१)

श्रुतस्थविरः (पुं०) श्रुतधारक स्थविर।

श्रुता (वि०) सुना गया। (सुद० ३/४१)

श्रुताज्ञान (वि०) निरर्थक आदेश वाला।

श्रुतातिचारः (वि०) श्रुत पढ़ने में दोष।

श्रुताधिगम्य (वि०) श्रुत पढ़ने की ओर लगने वाला। (वीरो० २०/१८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुताराम (वि०) तत्त्वार्थ शास्त्र पर आधारित। (जयो०वृ० १८/४)

श्रुतावर्णवादः (पुं०) श्रुत की जाने वाली निन्दा।

श्रुतिः (स्त्री०) आगम, वेद। (जयो० २७/४८)

०शास्त्र। (जयो० २/९५)

०श्रवणश्रुति सूयते वा।

०श्रवणपथ आगत। (जयो० १/६४)

०सुनना, धर्म प्रतिपादक शास्त्र श्रवण। (जयो० ३/१५)

श्रुतिदेशः (पुं०) कर्णप्रदेश। (जयो० ४/२०)

श्रुतिपान्तगत (वि०) कर्ण भाग को प्राप्त हुआ। (सुद० २/८)

श्रुतिपुत्री (वि०) सुनने वाला। (दयो० ८२)

श्रुतिलङ्घनोत्सुकः (पुं०) अध्यात्म शास्त्र का उल्लंघन। (जयो० १६/८०)

श्रुती (स्त्री०) कर्ण, कान। (वीरो० ५/१३, जयो० १०/३८)

श्रेष्ठि (स्त्री०) गणनांग।

श्रेणिः (स्त्री०/पुं०) [श्रि+णि] रेखा, पंक्ति, शृंखला।

०प्रवाह। (जयो० ११/७०)

०दल, संचय, समूह।

०एक प्रमाण विशेष। (सम्य० १०८)

श्रेणिकः (पुं०) श्रेणिक राजा, राजगृह नगर का अधिराज।

राजगृहाधिराजो यः श्रेणिको नाम भूपतिः।

लोक प्रख्यातातिमायातो बभूव श्रोतृषूज्ञमः।। (वीरो० १५/१६)

श्रेणिका (स्त्री०) [श्रेणि+कन्+टाप्] तम्बू, खेमा, डेरा, पड़ाव।

श्रेष्ठिपृष्ठपदं (नपुं०) मध्य भाग। (जयो०वृ० १३/९५)

श्रेणी (स्त्री०) पंक्ति, रेखा, शृंखला।

श्रेणी समन्ताद्विलसत्पलीनां

पान्थोपधोराय कशाप्यदीना।। (वीरो० ६/२६)

श्रेयम् (वि०) [अतिशयेन प्रशस्यं ईयसुन्] श्रेष्ठतर, अपेक्षाकृत, अच्छा, वरीयस्।

०सकल दुःख निवृत्तिः। (त० लो०)

०कल्याण। (जयो० ७/५२)

०सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, आनन्ददायक।

०मोक्ष, मुक्ति, शुभ अवसर।

श्रेयसभा (वि०) कल्याणकारी। (मुनि० ३३)

श्रेयांसः (पुं०) ०ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम। ०श्रेयांसनाथ। (भक्ति० १९)

श्रेयांसकुमारः (पुं०) जयकुमार का चाचा। (जयो०वृ० ९/८२) दान देने अग्रणी।

'दानेऽनृणीजयपितृव्यज्ञनः

श्रेयासंकुमारोऽस्ति। (जयो०वृ० ९/८२)

श्रेयार्थी (वि०) कल्याणार्थी। (मुनि० २७)

श्रेयोमार्गनेता (वि०) मोक्ष मार्ग का नेता।

श्रेष्ठ (वि०) [अतिशयेन प्रशस्यः]

०उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा।

०समृद्ध, उन्नत।

०अत्यंत प्रिय।

श्रेष्ठः (पुं०) आर्य। (जयो०वृ० २२/८३)

०कुलकर, कुलश्रेष्ठ।

कुलकरस्तु कुलश्रेष्ठे इति विश्वलोचनः। (जयो०वृ० ४/१६)

०विज्ञ, प्रज्ञ, विद्वान्, सज्जन कुमार।

श्रेष्ठज्ञानी (वि०) विज्ञवर। (वीरो० १२/४४)

श्रेष्ठगतिः (स्त्री०) उत्तम गति।

श्रेष्ठजन्मन् (वि०) उत्तम जन्म वाला।

श्रेष्ठचारित्र (वि०) अच्छे चारित्र वाला, सदाचरण युक्त।

श्रेष्ठदानं (नपुं०) उत्तम दान, पात्रोचित दान।

श्रेष्ठदानी (वि०) उत्तम दान देने वाला।

श्रेष्ठधनी (वि०) परिपूर्ण धन से युक्त।

श्रेष्ठनायिका (स्त्री०) उत्तम नायिका। अभिनय में परिपूर्ण अभिनेतृ।

श्रेष्ठपदं (नपुं०) उचित स्थान।

श्रेष्ठफल (नपुं०) रुचिकर फल।

श्रेष्ठभक्तिः (स्त्री०) उत्तम भक्ति।

श्रेष्ठभावः (पुं०) उचित परिणाम।

श्रेष्ठयोनिः (स्त्री०) उत्तम जन्म।

श्रेष्ठ यौवनं (नपुं०) परिपूर्ण यौवन।

श्रेष्ठरत्नं (नपुं०) श्रेष्ठ रत्न, सर्वोत्तम रत्न।

श्रेष्ठ राशिः (स्त्री०) उत्तम राशि।

श्रेष्ठसमागम (वि०) अच्छा योग।

श्रेष्ठाचार (वि०) सद्गुणी।

श्रेष्ठरधार (वि०) उचित आधार वाला।

श्रेष्ठार्थक (वि०) उत्तमार्थक। (जयो०वृ० २/२५)

श्रेष्ठिकुमारः (पुं०) सेठ पुत्र। (दयो० २६)

श्रेष्ठिन् (वि०) [श्रेष्ठं धनादिकमस्त्यस्य इनि]

०सेठ, धनी। (इति श्रेष्ठिसमाकृतं निशक्याऽऽयनीश्वरः (सुद० ४/९)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०पूज्य, समादरणीय।
०भद्र, महायश। (दयो० १/१४)

श्रेष्ठिचतुर्भुज (पुं०) चतुर्भुत नामक सेठ। आचार्य ज्ञानसागर के गृहस्थ जीवन के पिता।
ब्र० भूमामल के पिताश्री।
श्रीमान् श्रेष्ठिचतुर्भुजः स सुषुवे
भूरामलोपाह्वयं
वाणीभूषण वर्णिनं घृतवरी
देवी च यधीचयम्। (जयो० २/पृ०१३०)
वीरो जयोदय के प्रत्येक सर्ग के अंत में उक्त पंक्तियां दी गई हैं।

श्रेष्ठिपदं (नपुं०) सेठ पद। (समु० ४/३)

श्रेष्ठिवर्य (वि०) सेठ, उत्तम सेठ, नगर सेठ। (सुद० २/१)
श्री श्रेष्ठिवर्यो वृषभस्य दासः।

श्रेष्ठिसत्तम (वि०) श्रेष्ठिवर्य। (सुद० ३/४७)

श्रेष्ठोक्ति (स्त्री०) कुलकोक्ति-'कुलकरस्तु कुलश्रेष्ठे इति विश्वलोचनः' (जयो०वृ. ४/१६)

श्रे (सक०) पकाना, उबालना। पसीना निकालना, स्वेद आना।

श्रोण् (सक०) एकत्र करना, ढेर लगाना।

श्रोण (वि०) [श्रोण्+अच्] विकलांग, लगड़ा।

श्रोणः (पुं०) एक रोग विशेष।

श्रोणा (स्त्री०) [श्रोण्+टाप्] कांजी।
०श्रवण नक्षत्र।

श्रोणिः (स्त्री०) [श्रोण्+इन्] कटी, कमर। (जयो०वृ० २१/३१)
कूल्हा, नितम्ब, चूतड़। (जयो०वृ०)
०कटिरपुरभाग। (वीरो० ३/२२)
'श्रोणौ विशालत्वमथो धराया'
०वृक्ष विशेष। श्रोणि नामक वृक्ष। (जयो०वृ० २१/३०)

श्रोणिकरधनी (स्त्री०) कूल्हे पर करधनी।

श्रोणिगत (वि०) नितम्ब युक्त।

श्रोणिबद्ध (वि०) नितम्ब पर बंधी हुई, कूल्हे पर स्थित।
'श्रोणिवद्धसुरसासमन्वितः' (जयो० २४/३१)
'कटः श्रोणो शयेऽत्यल्पे
किलिञ्जगजगण्डयो इति
कटी स्यात्कटिभागध्यो' इति विश्वलोचनः (जयो०वृ० २१/३१)
०श्रोणिश्च वृक्ष विशेषस्तेन बद्धा। (जयो०वृ० २१/३१)
'श्रोणौ वा संकटीप्रदेशे वा बद्धा। (जयो०वृ० २१/३१)

श्रोणि बिम्बं (नपुं०) नितम्ब चक्र, श्रेष्ठ वर्तुलाकार नितम्ब बिम्ब। (जयो० ११/७) श्रोणिबिम्बे भूभुजां दुर्गस्थाने। श्रोणिभार्ययोः इति विश्वलोचनः (जयो०वृ० ११/७)
०कमरपट्टा, करधनी, कंदौर।

श्रोणिसूत्रं (नपुं०) मेखला, करधनी।

श्रोणी (स्त्री०) नितम्ब, कूल्हा, कटिपुर भाग।

श्रोतस् (नपुं०) [श्रु+असुन् तुट् च]
०कर्ण, कान, श्रवण। (जयो०वृ० २७/१६)
०हस्तिसुंड।
०ज्ञानेन्द्रिय।
०सरिता, प्रवाह।

श्रोतृ (पुं०) [श्रु+तृच्] छात्र, शिष्य, विद्यार्थी सुनने वाला। (वीरो० १/१)
०श्रोता।

श्रोतृजनः (पुं०) श्रोताजन।
श्रिये जिनः सोऽस्तु यदीयसेवा,
समस्त संश्रोतृजनस्य सेवा। (वीरो० १/१)

श्रोतृषूत्तम (वि०) श्रोताओं में उत्तम। (वीरो० १५/१६)

श्रोता (वि०) सुनने वाला। (समु० १/३५)

श्रोतुः (ष०ए० श्रेतृ०) क्रोता के वक्तु श्रोतुः क्षेमहेतवे' (समु० ३/३१)

श्रोत्रं (नपुं०) [श्रूयतेऽनेन-श्रु-करणे ष्ट्रन्] कर्ण, कान, श्रवण, श्रवणेन्द्रिय। (जयो०वृ० २७/१६)

श्रोत्रदेशः (पुं०) कर्णवाली। (जयो०वृ० २७/१६)

श्रोत्रमूलं (नपुं०) कान की जड़।

श्रोत्रिय (वि०) [छन्दो वेदमधीयते वेति वा छन्दस्+घ-श्रोत्रादेशः] वैदिक ब्राह्मण।
'श्रोत्रिया इव नित्य होत्रिणो वैदिक ब्राह्मणा इव' (जयो०वृ० ३/१६)

श्रौत (वि०) [श्रुतौ विहितं अण्]
०वेद से सम्बन्धित।
०कर्ण से सम्बन्धित।

श्रौतं (नपुं०) वेद विहित कर्म, याज्ञिक अनुष्ठान, क्रिया खण्ड।

श्रौतकर्मन् (नपुं) वैदिक क्रिया।

श्रौतगत (वि०) अनुष्ठान को प्राप्त हुआ।

श्रौतजन्म (वि०) याज्ञिक क्रिया की उत्पत्ति।

श्रौतदान (वि०) याज्ञिक दान वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रौतभाव (वि०) याज्ञिक भाव वाला।
श्रौत सूत्रं (नपुं०) वेदसूत्र संचय।
श्रौत्रं (नपुं०) [श्रोत्र+स्वार्थे अण्] कर्ण, कान। वेद प्रवीणता।
श्रौषट् (अव्य०) आहूति सम्बंधी उच्चारण, पूजन के समय आह्वान पर बोला जाने वाला शब्द।
श्लक्ष्ण (वि०) [श्लिष्+कस्न] ०मृदु, ०कोमल, ०सौम्य, ०स्निग्ध।
०चिकना, चमकदार।
०स्वल्प सूक्ष्म, पतला, सुकुमार।
०सुंदर, लावण्य युक्त।
श्लक्ष्णकं (नपुं०) [श्लक्ष्ण+कन्] सुपारी, पूगीफल।
श्लक्ष्णत्व (वि०) सचिक्कणता, चिकनापन। (वीरो० ३/३२)
श्लक्ष्णदेहं (नपुं०) स्निग्ध शरीर। कृश शरीर, पतला शरीर।
श्लक्ष्णभावः (पुं०) मृदुभाव, कोमल परिणाम।
श्लक्ष्णशरीर: (पुं०) स्निग्धतनु। (जयो०वृ० १३/८)
श्लङ्क् (सक०) जाना, पहुंचना।
श्लङ्ग् (सक०) शिथिल होना, ढीला होना। बल होना।
०चोट पहुंचना, क्षति पहुंचाना।
श्लथ (वि०) [श्लथ्+अच्] शिथिल, ढीला, थकान युक्त।
०खुला हुआ, फिसला हुआ।
०जकड़ा हुआ।
०बिखरा हुआ।
श्लथीकृत् (वि०) आश्लेष, शिथिल हुआ। (जयो० १८/९२)
श्लाख् (अक०) व्याप्त होना, प्रविष्ट होना।
श्लाघ् (सक०) प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चना करना।
०गुणगान करना, कीर्तन करना, सराहना करना।
श्लाघनं (नपुं०) [श्लाघ्+ल्युट्] प्रशंसा करना, पूजा करना, गुणगान करना।
०कीर्तन, सराहना।
श्लाघनीय (वि०) [श्लाघ्+अनीयर] प्रशंसनीय। (दयो० ३१) प्रशस्य (जयो० १८/४१)
श्लाघा (स्त्री०) [श्लाघ्+अ+टाप्]
०प्रशंसा, स्तुति, सराहना। (जयो० २/१५८)
०प्रशस्ति। (जयो०वृ० १/१६)
०सर्वप्रिया। (वीरो० १/१६)
साधुर्गुणग्राहक एष आस्तां
श्लाघा ममारादसतस्तु तास्ता:'
०सेवा, वैयावृत्य।
०कामना, इच्छा, वाञ्छा, चाह।
श्लाघित (भू०क०कृ०) [श्लाज्+क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया।
०प्रशंसित, स्तुत्य, प्रशस्य।
श्लाघ्य (वि०) [श्लाघ्+ण्यत्]
०प्रशस्य, स्तुत्य। (जयो० १/५५)
०प्रशंसनीय, महनीय। (जयो० १८/९६)
०प्रशस्त, धन्य। (जयो०वृ० १/१०७)
०संश्लिष्ट। (जयो०वृ० १/६१)
श्लिकु (वि०) कामुक, लंपट, लालची।
०दास, आश्रित।
श्लिकु (नपुं०) नक्षत्र विद्या, फलित ज्योतिष।
श्लिक्युः (वि०) लंपट, सेवक।
श्लिष् (अक०) जलना, तप्त होना।
श्लिष् (सक०) आलिंगन करना, गले लगाना।
०ग्रहण करना, लेना, समझना।
०अंगीकार करना।
०जोड़ना, सम्मिलित करना। मिलाना।
श्लिषा (स्त्री०) [श्लिष्+अ+टाप्]
०आलिंगन, भेंट, मिलन।
०चिपकना, जुड़ना।
श्लिष्ट (भू०क०कृ०) [श्लिष्+क्त]
श्लिष्टिः (स्त्री०) [श्लिष्+क्तिन्] आलिंगन, परिरभण।
श्लिष्टोपमा (स्त्री०) श्लिष्टोपमा नामक अलंकार। जहां दो अर्थों की संभावना के साथ उपमा हो।
यत्रास्ति द्व्यर्थानां च संभावयहेव तु।
उपमा सादृशं अपि, श्लिष्टोपमा च उच्यते।। (जयो० वृ० ३/७७, ३/७६, ३/७५, ७९, ८/३२, ८/३३, १३/५८)
कर्बुरासारसम्भूतं पद्मरागगुणान्वितम्।
राजहंसनिषेव्यं च रमणीयं सरो यथा।। (जयो० ३/७६)
कर्बुर सुवर्णस्य य आमार:
प्रसारस्तेन सम्भूतं सम्पन्नम्।
वह मण्डप सरोवर के समान रमणीय है, क्योंकि सरोवर में तो कर्बुर अर्थात् जल का आसार/समूह होता है तो मण्डप भी कर्बुर या सुवर्ण से बना हुआ है।
सरोवर में पद्म/कमल होते हैं तो यह मण्डप भी पद्मराग मणि से युक्त है। सरोवर में राजहंस होते हैं तो यह मण्डप भी श्रेष्ठ राजाओं से सेवित है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्लीपदं (नपुं०) [श्री युक्तं वृत्ति युक्तं पदम् अस्मात्] सूजी हुई टांग, एक रोग विशेष।

श्लील (वि०) [श्री अस्ति अस्य+लच्] भाग्यशाली, समृद्ध।

श्लेषः (पुं०) [श्लिष्+घञ्]

०आलिंगन मिलन, चिपकना।

०जुड़ना, संलग्न होना।

०मिलाप, संपर्क, सम्बन्ध, संगम।

०श्लेषालंकार, अनेकार्थ शब्द प्रयोग, किसी भी शब्द या वाक्य में दो या दो से अधिक अर्थों की संभावना होती है। (जयो०वृ० ३/४६, ३/३०)

पदैस्तैरेव भिन्नैर्वा
वाक्यं वक्त्येकमेव हि।
अनेकमर्थं यत्रासौ
श्लेष इत्युच्यते यथा। (वाग्भट्टालंकार ४/१२७)

जहां उन्हीं पदों से अथवा भिन्न पदों से एक ही वाक्य अनेक अर्थों को व्यक्त करता है वहां श्लेषं अलंकार होता है।

संसदी तवर्गमण्डितेऽथा
पवर्गपरिणामपण्डिते।
श्रीत्रिवर्गपरिणायके तथा
तिष्ठतीष्टकृदसाव भूत्कथा।। (जयो० ३/२०, ७/८१, ७/८६ (जयो०वृ० १६/१६, २४/१२८, ३/४, ५/२१) (वीरो० २/३७)

श्लेष-गर्भोत्प्रेक्षा (स्त्री०) श्लेष सहित उत्प्रेक्षा। (जयो०वृ० ३/४२)

श्लेषगर्भो वक्रोक्त्यङ्कारः (पुं०) श्लेष सहित वक्रोक्ति अलंकार। (वीरो० ३/३)

श्लेषपूर्वक-उत्प्रेक्षा (स्त्री०) श्लेष सहित उत्प्रेक्षा अलंकार। (जयो०वृ० ३/५६)

इङ्गितेनोभयोः श्रेयस्करीहामुत्र पक्षयोः।
दुहिता द्विहिता नामैतादृशीपुण्यपाकतः।। (जयो०वृ० ३/५६)

श्लेषरूपकः (पुं०) श्लेष सहित रूपक अलंकार।

रूपामृतस्रोतस एव कुल्यामिमा-
मतुल्यामनुबन्धमूल्याम्।
लब्ध्वाऽक्षिमीन-द्वितयी नृपस्य,
सलालसा खेलति सा स्म तस्य।। (जयो० ११/१, जयो०वृ० २२/१९)

श्लेषपूर्वोपमालङ्कारः (पुं०) श्लेषपूर्वक उपमा अलंकार। (जयो० ५/२८, ७/८५)

राजमाप इव चारघट्टतो
भेदमाप कटकोऽपि पट्टतः।
यस्ततस्तु दररूपधारकः
सम्भवन्निह स सूपकारकः।। (जयो० ७/८५)

श्लेषात्मकोत्प्रेक्षा (स्त्री०) श्लेष सहित उत्प्रेक्षा। (जयो० ८/७)

श्लेषमिश्रितोत्प्रेक्षा (स्त्री०) अलंकार का नाम, जहां श्लेष सहित उत्प्रेक्षा हो। (वीरो० २/२८)

श्लेषानुप्राणित-रूपकालङ्कारः (पुं०) श्लेष समन्वित रूपक अलंकार। (जयो० ७/८४)

तस्य शुद्धतरवारिसञ्चरे
शौर्यसुंदरसरोवरे तरेः।
ईक्षितुं श्रियमुदस्फुरद्धुजा
शौचवर्त्मनि गुणेन नीरजा। (जयो० ७/८४)

श्लेषोऽनुप्रासः (पुं०) श्लेष सहित अनुप्रास का प्रयोग जहां हो।

मुहुर्नुबद्ध बद्धाञ्जलिरेष दासः
सदा सील! प्रार्थयते सदाशः।
कुतः पुनः पूर्णपयोधरा वा
न वर्तते सत्करकस्वभावा।। (जयो० १६/१३)

श्लेषोपमा (स्त्र०) श्लेष युक्त उपमा अलंकार। (जयो०वृ० ३/५९, २१/४३) ३/१०, ३/७, ५/२७, ३/८४, ३/८०, वीरो० १/१४, २/४४)

सुवृत्तभावेन समुल्लसन्तः
मुक्ताफलत्वं प्रतिपादयन्तः।
गुणं जनस्यानुभवन्ति सन्तस्तत्रा,
दरत्वं प्रवहाम्यहं तत्। (वीरो० १/१४)

श्लेष्मक (वि०) [श्लेष्मन्+कन्] कफ वाला, बलगम युक्त।

श्लेष्मकः (पुं०) कफ, बलगम।

श्लेष्मघ्नी (स्त्री०) मल्लिका, केतकी, केवड़ा।

श्लेष्मज (वि०) [श्लेष्मन्+लच्] कफ से उत्पन्न, कफ मूलक।

श्लेष्मन् (पुं०) [श्लेष्मन्+लच्] कफ की प्रकृति का बलगमी।

श्लेष्मातः (पुं०) एक वृक्ष विशेष।

श्लेष्मोजस् (नपुं०) कफ की प्रवृत्ति।

श्लोकः (पुं०) [श्लोक्+अच्]

०प्रबन्ध, छन्दोबद्ध रचना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०पद्य, कविता, काव्य।
०स्तोत्र, स्तुति, प्रशंसा।
०ख्याति, प्रसिद्धि, विश्रुति, यश।

श्लोकरचना (स्त्री०) काव्य मय प्रस्तुति।
०प्रशंसात्मक रचना।

श्लोकवार्तिकः (पं०) कुमारिक भट्ट का व्याख्या, मीमांसक मत का एक ग्रन्थ। (वीरो० १९/१७)

श्लोकसङ्कलितः (पुं०) प्रबन्ध काव्य। (जयो० ५/५)

श्लोण् (सक०) एकत्र करना, इकट्ठा करना, संग्रह करना।
०बीनना, चयन करना, चुनना।

श्लोणः (पुं०) [श्लोण्+अच्] विकलांग, लंगड़ा।

श्व (अव्य०) आगामी काल। (जयो० २१/५६)

श्वङ्क् (सक०) जाना, पहुंचना।

श्वच् (सक०) निन्दा करना, अलंकृत करना।

श्वण्ठ् (सक०) निन्दा करना।

श्वन् (पुं०) [श्वि+कनिन्] कुत्ता, कुक्कुर। (सुद० १२१, जयो, २/१३१, समु० २/३४)

श्वनक्रीडिन् (पुं०) पालतू कुत्ता।

श्वनगणिका (पुं०) शिकारी, बहेलिया।

श्वन्धूर्तः (पुं०) गीदड़।

श्वन्नरः (पुं०) नीच व्यक्ति, अधम पुरुष।

श्वन्निशं (नपुं०) कुत्ते के भौंकने की रात।

श्वन्पचः (पुं०) चाण्डाल, अधम।

श्वन्पदं (पुं०) कुत्ते का पैर।

श्वभ्र (सक०) जाना, पहुंचना।
०बींधना, मिलना।
०छिद्र करना।

श्वभ्रं (नपुं०) [श्वभ्र+अच्] रन्ध्र, छिद्र, विवर।

श्वयः (पुं०) [श्वि+अच्] शोथरोग, सूजन।
०वृद्धि।

श्वयथु (पुं०) ०सूजन, ०शोथरोग। ०स्थूलत्व, ०रतौंधी। (जयो० १८/१८)

श्वयौंची (स्त्री०) रतौंधी, रोग।

श्वल् (अक०) दौड़ना, भागना। जाना।

श्वल्ल् (अक०) दौड़ना, भागना।

श्वशुरः (पुं०) [शु आशु अश्नुते आशु+अश्+उरच्] ससुर, पति का पिता। (जयो० १२/२०)
श्वशुराश्वसुराजिरेषका मे
मनसे किन्न भवेद् भसद्यवामे। (जयो० १२/२०)

श्वशुरकः देखो ऊपर।

श्वशुरालवर्तित् (वि०) वल्लभपक्षीय, पति पक्ष वाला, ससुराल।
श्वशुरालवर्तिनो निजे पतितां दृग्भ्रमरीं मुखाम्बुजे। (जयो० १०/७०)

श्वशुर्यः (पुं०) [श्वशुरस्यापत्यं श्वशुर+यत्] साला, पत्नी का भाई।

श्वश्रुः (स्त्री०) [श्वशुर+ऊङ्] सासू। (दयो० १७) सास, पति की मां या पत्नी की मां। (दयो० १०७)

श्वस् (सक०) श्वांस लेना, सांस निकालना।
०आह भरना, हांपना, फूत्कार करना।
०सांत्वना देना, आराम देना, प्रसन्न करना।

श्वस् (अव्य०) पवन, वायु, हवा।

श्वसनं (नपुं०) श्वांस, सांस लेना।
०आह भरना।
०स्वादिष्ट। (भक्ति० १७)

श्वासनाशनः (पुं०) सर्प, सांप।

श्वसनीश्वरः (पुं०) अर्जुन वृक्ष।

श्वसनोत्सुकः (पुं०) सर्प, सांप।

श्वसित (भू०क०कृ०) [श्वसृ+क्त] सांस लिया हुआ, आह भरी हुई।

श्वसितं (नपुं०) सांस लेना।

श्वस्तन (वि०) ०भावी, ०भविष्यत्काल सम्बंधी। ०आने वाला समय।

श्वस्तावत् (वि०) अनागत-दिवस पर्यन्त, आने वाले दिन से सम्बन्धित। (जयो० २१/५६)

श्वा (पुं०) कुक्कुट, कुत्ता। (जयो० १७/४२)

श्वाकर्णः (पुं०) [शुनः कर्णः] कुत्ते के कान।

श्वागणिक (वि०) कुत्ते को गिगने वाला।

श्वादन्तः (पुं०) कुत्ते के दांत।

श्वानः (पुं०) [श्वैन+अण्-न टिलोपः]
कुत्ता। (सुद० १२१)

श्वापद (वि०) [शुन इव आपद अस्मात्] बर्बर, हिंस।

श्वापदः (पुं०) [शवन्+आपद्+अच्] जंगली जानवर।
०बाघ, चीता।

श्वापुच्छः (पुं०) कुत्ते की दुम।

श्वापुच्छ (नपुं०) श्वान् पूंछ।

श्वाविध् (पुं०) [शुना आविध्यते श्वन्+आ+व्यध् क्विप्] साही, शल्यक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्वासः (पुं०) [श्वस्+घञ्] ०सांस लेना, ०आह, ०हांपना। ०निश्वास, ०आश्वास।
बाह्यस्य वायोरामनं श्वासः' (योगशास्त्र स्वो० ५/४)
०दमा रोग, इसके लिए आचार्य ज्ञानसागर ने यह मन्त्र दिया-
'णमो पादाणुसारीणं
आं ह्रीं अहं सम्भिन्नसोहाराणम्। (जयो० १९/६३)

श्वासोच्छवासः (पुं०) प्राण तत्व। (जयो०वृ० १९/१३)

श्वि (सक) ०विकसित होना, ०बढ़ना, ०सूजना, ०फलना-फूलना। ०समृद्ध होना।

श्वित् (अक०) श्वेत होना, स्वच्छ होना, सफेद होना।

श्वित (वि०) [श्वित्+क] सफेदी। धवलता, स्वच्छता।

श्वितिः (स्त्री०) [श्वित्+इन्] सफेदी, धवलता।

श्वित्य (वि०) [श्वित्+यत्] सफेदी, धवलता, स्वच्छता।

श्वित्रं (नपुं०) [श्वित्+रक्] सफेद कोढ़, कुष्ठ रोग।

श्वित्रिन् (पुं०) कोढ़ी।

श्वेत (वि०) [श्वित्+घञ्] धवल, शुभ्र, सफेद।

श्वेतः (पुं०) धवल, शुभ्र, सफेद रंग।
०कौड़ी।
०रति पादप।
०जीरा।
०पर्वतश्रेणी।

श्वेतं (नपुं०) रजत, चांदी।

श्वेतक (पुं०) [श्वेत+कन] कौड़ी।

श्वेतकं (नपुं०) रजत, चांदी।

श्वेतकमलं (नपुं०) सफेद कमल।

श्वेतकुञ्जरः (पुं०) ऐरावत हाथी।

श्वेतकुष्ठः (नपुं०) सफेद कोढ़।

श्वेतकेतुः (पुं०) श्रमण साधु।

श्वेतकेश (नपुं०) पलित केश। (जयो०वृ० १८/४१) सफेद बाल।

श्वेतकेशैरुज्ज्वलः (पुं०) पतितोज्जवल। (जयो०वृ० १/३६)

श्वेतगजः (पुं०) सफेद हाथी, ऐरावती हाथी।

श्वेतगरुत् (पुं०) हंस पक्षी।

श्वेतछन्दः (पुं०) हंस पक्षी।
०सफेद तुलसी।

श्वेतजलं (नपुं०) शुभ्रजल। (जयो०वृ० ६/१०७)

श्वेतता (वि०) शुक्लता, शुभ्रता। (जयो०वृ० १५/५८)

श्वेतद्विपः (पुं०) एक महाद्वीप।

श्वेतधामन् (पुं०) चन्द्र, शशि। (जयो० २०/२६)
०कपूर, समुद्रफेन।

श्वेतनीलः (पुं०) मेघ, बादल।

श्वेतपत्र (पुं०) हंस।

श्वेतपाटला (पुं०)शृंगवल्ली का पुष्प।

श्वेतपिङ्गः (पुं०) सिंह, शेर।

श्वेतमरिचं (नपुं०) सफेद मिर्च।

श्वेतमालः (पुं०) मेघ, बादल।

श्वेतभृत्तिका (स्त्री०) धवल मिट्टी। (जयो०वृ० ७९)

श्वेतरक्तः (पुं०) गुलाबी रंग।

श्वेतरञ्जनं (नपुं०) सीसा।

श्वेतरथः (पुं०) शुक्रग्रह।

श्वेतरोचिस् (पुं०) गरुड़।

श्वेतवल्कलः (पुं०) गूलर तरु।

श्वेतवाजिन् (पुं०) चन्द्र, ०अर्जुन।

श्वेतवाह् (पुं०) इन्द्र।

श्वेतवाहः (पुं०) अर्जुन। ०इन्द्र।

श्वेतवाहनः (पुं०) अर्जुन। ०इन्द्र।

श्वेतवाहिन् (पुं०) ०अर्जुन, ०इन्दु।

श्वेतशृङ्गः (पुं०) जौ।

श्वेसरोजः (पुं०) पुंडरीक, सफेद कमल। (जयो० १३/६३)

श्वेता (स्त्री०) [श्वित्+अच्+टाप्]
०स्फटिक।
०वंशलोचन।
०कोड़ा, कपर्दिका।

श्वेताम्बरः (पुं०) जैन परम्परा का एक पंथ।

श्वेतांशु (नपुं०) श्वेत किरण। (सु० ८७)

श्वेतौही (स्त्री०) [श्वेताह+ङीष्] शचि, इन्द्राणी।

श्वेत्रं (नपुं०) सफेद कोढ़।

श्वैत्यं (नपुं०) [श्वेत+ष्यञ्] सफेदी धवलता।

ष

षः (पुं०) उष्म ध्वनि, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है। षत्व-सकार गर्विष्टत्व सकारत्वेन। (जयो० ९/२५)

षः (वि०) सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट।

षः (पुं०) हानि, विनाश। ०अन्त। शेष, अवशिष्ट। ०मुक्ति, मोक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षकारः (पुं०) श्रेष्ठ, उत्तम, षकाररस्तु मतः श्रेष्ठो सकारो ज्ञाननिर्णये इतिकोष (जयो० १८)

षट् (वि०) छह। (समु० २/१७)

षट्क (वि०) [षड्भिः क्रीतं-षष्+कन्] छः गुना। विचक्राय भ्रों भ्रौं अप्रतिचक्र फट। (जयो० १९/५५)

षट्कं (नपुं०) ०छह की समष्टि। ०मंत्र विशेष। (जयो०वृ० १९/५५)

षट्खण्डागमः (पुं०) जैन सिद्धांत का एक प्राचीन ग्रन्थ, जो शौरसेनी प्राकृत में निबद्ध है। पुष्पदंत भूतबलि आचार्य की प्रसिद्ध सूत्र रचना है। (हित०सं० २६)

षट्खण्डं (नपुं०) छहखण्ड।

षट्कर्मविधिः (स्त्री०) छहकर्म की विधि, छह आवश्यक कर्म विधि।

०छः आजीविका के उपाय-असि, मषि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और कला।

प्रज्ञासु आजीवनिकाम्भुपाय,

मस्यादिषट्कर्मविधिं विधाय।

षट्कायिक (वि०) षडावश्यक कर्म सम्बंधी। षडावश्यक कर्म सम्बंधी। (प्रव० १४७)

षट्वोणः (वि०) छः कोनों वाला।

षट्खण्डक (वि०) छः खण्ड वाला।

षट्खण्डकः (पुं०) चक्रवर्ती।

षट्खण्ड भूमीश्वरः (पुं०) चक्रवर्ती। (वीरो० ११/३३)

षट्खण्डविभूतिजन्य (वि०) छः खण्ड की विभूतियों से युक्त। (मुनि० १५)

खट्खण्डिन् (पुं०) चक्रवर्ती। चक्राधिपति। (जयो० १३/४६)

'षट्खण्डिबलाधिराडितः' (जयो०वृ० १३/४६)

षट्खण्डिनश्चक्राधिपतेर्बलस्याधिराट्।

खट् खण्डाधिपतिः (पुं०) चक्रवर्ती द्वात्रिंशत्सहस्त्रराजस्वामी छः खण्डभूत भरतक्षेत्र का स्वामी, जिसके आधीन बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा रहते हैं।

षट्चर (वि०) मुनि के छः आवश्यक कर्म का आचारण करने वाले।

०असि, मषि, कृषि आदि कर्म वाले।

०गृहस्थ के आवश्यक कर्म आदि। (सुद० ८२)

दिगन्तव्याप्तकीर्तिमयः

प्रथिषट्चरण सङ्गीतिः। (सुद० ८२)

षट्चरण

षट्चरणस्थितिः (स्त्री०) छः कर्मोंके परिपालन की स्थिति। (सुद० ९७)

'षट्चक्रं (नपुं०) शरीर के छः चक्र।

षट्पदः (पुं०) भ्रमर, भौंरा।

'षडभिः पदैरित्यस्मात्पूर्वमपि'

०षट्कर्म-षट्कर्माणि दिने दिने गृहस्थ कर्म। (जयो०वृ० १२/३२) कौतुकपरिपूर्णतया याऽसौ षट्पदमतगुञ्जाभिमता। (सुद० ८२)

षट्पदच्छायः (पुं०) भ्रमर की छाया। कलंक (जयो०वृ० २०/३७)

षट्त्रिंशत् (स्त्री०) छत्तीस।

षट्पदराजिः (स्त्री०) भ्रमर समूह। (जयो० २४/१०८)

षट्पदी (स्त्री०) भ्रमरी। (वीरो० ३/३३)

षट्परमस्थानं (नपुं०) छः उत्कृष्ट स्थान। (हित० सं० २९)

षट्स्थानवृद्धि (स्त्री०) छः स्थानपतित वृद्धि रूप।

षट्स्थानहानि (स्त्री०) छः स्थानपतित हानि।

षड्गवं (नपुं०) छः बैलों की जोड़ी।

षड्गुण (वि०) छः गुना।

षड्ग्रन्थि (वि०) पिप्परामूल।

षड्विकायः (पुं०) छः जीव निकाय।

षड्रसमयी (वि०) छः रस मयी।

यतः सौभाग्यं भायात्-

षड्रसमय-नानाव्यञ्जन

दलमविकलमपि च सुधायाः।

षड्दर्शनं (नपुं०) छः दर्शन-चार्वाक, बौद्ध, जैन न्याय, वैशेषिक, सांख्य योग, मीमांसक। (सुद० १३२)

षर्डाङ्घ्रमाला (स्त्री०) भ्रमरतति। (जयो० २४/८३, सुद० ७२) ०अलि समूह।

षडरचक्रबन्धः (पुं०) एक छन्द की विशेष योजना।

प्रातः सन्ध्यामधिकुर्यादेवभवन्ध्यां

तत्त्वार्थाध्ययनेकुशलस्तस्मादाविः।

सम्भूयाच्च हरेत् कुवासनाया वादं

दम्भप्रायं तदसम्बन्ध्यात्मविषादम्।। (जयो०वृ० १९/९५, जयो०वृ० २१/९२)

षण्डः (पुं०) [सन्+ड] ०सांड, बलीवर्द।

०नपुंसक। (सुद० १/७)

'निवेषमाणो मयियस्तु षण्डः'

स केवलं स्यात् परिफुल्लगण्डः। (सुद० १)

०समूह, समुच्चय, संग्रह, ढेर, राशि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षण्डक् (पुं०) नपुंसक, हिजड़ा।

षण्डाली (स्त्री०) [षण्ड+अल+अच्+ङीष्] सरोवर, तालाब, जोहड़।
०व्यभिचारिणी। ०असती स्त्री।

षण्ढः (पुं०) [सन्+ढ] नपुंसक, हिजड़ा।

षष् (संख्या वा०वि०) छः।

षष्टि (वि०) [षड्गुणिता दशतिः] साठ।

षष्ठिभागः (पुं०) शिव।

षष्टिमत्तः (पुं०) साठ वर्ष की आयु का हस्ति।

षष्ठ (वि०) छठा, छटवां। (सुद० ९३) (दयो० ७६)

षष्ठसत (वि०) षष्ठांश युक्त। (जयो० २५/८)

षष्ठसर्ग (वि०) छठा सर्ग।

षष्ठांशः (पुं०) छठा भाग। (जयो० २५/८) छठा हिस्सा। (जयो०वृ० ११/३८)

षष्ठाक्षरं (नपुं०) छठा अक्षर युक्त छन्द। (जयो०वृ० २४/१४४)
जग्मुर्निवृतिसत्सुखं समधिकं निर्देशतातीतिपं' (जयो०वृ०२७/६६)

षष्ठी (स्त्री०) [षष्ठ+ङीप्] छठी विभक्ति।

षष्ठीतत्पुरुषः (पुं०) तत्पुरुष समास का भेद।

षष्ठीपूजनं (नपुं०) छठी देवी का पूजन।

षहसानु (पुं०) मयूर, मोर। ०यज्ञ।

षाटु (अव्य०) [सह+ण्वि] सम्बोध संबंधी अव्यय।

षाट्कौशिक (वि०) [षट्कोश+ठक्] छः परतों में लिपटा हुआ।

षाडवः (पुं०) [षड्+अव+अच्] ततः स्वार्थे अण्। ०राग, मनोयोग। ०संगीत स्वर। ०गीत।

षाड्गुव्यं (नपुं०) [षड्गुण+ष्यञ्] छः गुणों की समष्टि। छः उपाय।

षाड्गुण्यप्रयोगः (पुं०) राजनीति के छः उपाय।

षाण्मातुरः (पुं०) [षणां मातृणाम् अपत्यम्, षण्मात्+अण्-उत्व रपर] छः माताओं वाला। कार्तिकेय।

षाण्मासिक (वि०) [षण्मास+ठक्] छमाही, अर्धवार्षिक।

षायात् (विधि काल) रक्षा करे। (सुद० ७५)

षाष्ठ (पुं०) छठा।

षिड्गः (पुं०) [सिट्+गन्] विलासी, कामुक।
०असंगत, प्रेमी।

षुः (स्त्री०) [सु+डु] प्रसूति, प्रजनन।

षोडश (वि०) सोलहवां। (वीरो० ३/३०)

षोडशं (नपुं०) [संख्या०वि०] सोलह। (जयो० १९/३१)

षोडशकलः (पुं०) चन्द्र, शशि।

षोडशकारणं (नपुं०) सोलह कारण भावना। (जयो० २४/८)

षोडशगत (वि०) सोहल को प्राप्त हुआ।

षोडशब्धि (पुं०) सोलह समुद्र।

षोडशभावना (स्त्री०) सोलह कारण भावना।

षोडशभुजा (स्त्री०) दुर्गा की मूर्ति।

षोडशमातृका (स्त्री०) सोलह दिव्य माताएं।

षोडशयामः (पुं०) सोलह प्रतर। (सुद० ९६)

षोडशवर्षिका (स्त्री०) सोलह वर्ष वाली स्त्री। (जयो० १५/४८)

षोडशसर्गः (पुं०) सोलहवां सर्ग।

षोडशस्वर्गपतिः (पुं०) सोलह स्वर्ग का पति। अच्युतेन्द्र देव। (जयो० २८/६९)

षोडशस्वप्नं (नपुं०) सोलह स्वप्न। (वीरो० ४/२७)

षोडशी (स्त्री०) सोलह वर्ष की स्त्री। (वीरो० ४/३५)

षोडशिक (वि०) सोलह भागों से युक्त।

षोठा (अव्य०) छह प्रकार से।

ष्ठिव् (अक०) थूंकना, खखारना।
०प्रक्षेपण करना।

ष्ठीवनं (नपुं०) [ष्ठिव्+ल्युट्] थूकना। ०लाट, ०खखार।

ष्वक्क् (सक०) जाना, पहुंचना।

स

सः (पुं०) यह उष्म ध्वनि है, इसका उच्चारण स्थान दन्त्य है।
स-(सर्वनाम शब्द तत्)

स (अव्य०) क्रिया विशेषण बनाने के लिए शब्द से पूर्व स उपसर्ग लगाने पर के साथ, मिलाकर, संयुक्त होकर, सहित, सह, सम, तुल्य आदि का अर्थ व्यक्त होता है। 'सलक्षण (जयो० १५/६६) लक्षणयुक्त। सदोष-रात्रि सति। (जयो० १५/८५)

सः (पुं०) सर्प, सांप। ०पवन, वायु, हवा।
०पक्षी, ०षड्ज स्वर।
०शिव, शंकर।

संधृ (सक०) धारण करना। (दयो० ३९)

संधूप् (अक०) धुंआ देना, संधूपयित्वा। (जयो०वृ० १९/७६)

संधृत (वि०) धारण किया गया। (वीरो० १/८)

संयः (पुं०) [सम्+यम्+ड] कंकाल, पंजर।

संयत् (स्त्री०) [सम्+यम्+क्विप्] युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संयत (भू०क०कृ०) [सम्+यम्+क्त] संयमित, दमित, दबाया हुआ, वश में किया हुआ। (जयो०वृ० १/२)
०बन्दी, कैदी।
संयतः (वि०) कर्म को वश में किए हुए।
संयतगतिः (स्त्री०) नियन्त्रित गति।
संयतचेतस् (वि०) नियन्त्रित मन वाला।
संयतमनः परावर्तनं (नपुं०) मन स्थिर करना।
संयतवाक् (वि०) मूक, मौन।
संयतवाक् परावर्तनं (नपुं०) अरहंत पद का उच्चारण करना।
संयतासंयतः (पुं०) जो हिंसादिक से देशतः निवृत्त है।
संयतीदोषः (पुं०) व्रत में दोष होना।
संयत्त (वि०) [सम्+यत्+क्त] तत्पर, सन्नद्ध, तैयार, उद्यत।
०सावधान, सतर्क।
संयमः (पुं०) [सम्+यम्+अप्] धारण, पालन, निग्रह, त्याग। (सम्य० ८४)
०योगनिग्रह। ०आस्रवद्वार रहित। इन्द्रियदमन। (जयो० २८/३७)
०विषय कषाय उपरत।
०नियन्त्रण, प्रतिबन्ध, रोक।
०अनुप्रवर्तन।
०धर्म प्रयत्न। संयम धर्म। (जयो० २८/३७)
०सकलेन्द्रिय व्यापार परित्याग।
०मन की एकाग्रता।
०तपससाधना।
संयमनं (नपुं०) [सम्+यम्+ल्युट्]
०निरोध, निग्रह, रोक, प्रतिबन्ध।
शान्तेस्तथा संयमनस्य नेता (वीरो० १४/३६)
०बांधना, रोकना।
संयमनः (पुं०) शासक, नियामक।
संयमधर्मः (पुं०) समितियों में प्रवर्तन।
०दश धर्मों में छठा धर्म।
संयमयुक्त (वि०) संयम सहित।
संयमविराधना (स्त्री०) किसी का घात।
संयमस्थानं (नपुं०) यम, नियम आदि के लिए प्रयत्न।
संयमा संयमः (पुं०) स्थूल प्राणातिपात से निवृत्ति। त्रस-स्थावर का रक्षण।
संयमित (भू०क०कृ०) [संयम+णिच्+क्त] नियन्त्रित, संयत।
०बद्ध, जकड़ा हुआ।
०निरुद्ध, रोका हुआ। संयम युक्त, इन्द्रिय निग्रह से परिपूर्ण। (भक्ति० २४)
संयमिन् (वि०) [सम्+यम्+णिनि] दमन करने वाला, नियन्त्रित करने वाला।
०संन्यस्त, वैरागी। संयमी (सुद० ११८)
संयमिनामधारिन् (वि०) संयमी नाम धारक। (वीरो० १९/२९)
संयम्य (सं०कृ०) वश में करके-संयम्य योग परिशाधश्च। (समु० ८/४०)
संयानः (पुं०) [सम्+या+ल्युट्] सांचा।
संयानं (नपुं०) यात्रा करना, प्रगति करना।
०ले जाना।
संयामः (पुं०) संयम।
संयावः (पुं०) [सम्+यु+घञ्] हलुवा।
संयुत (वि०) सहित, युक्त। (सम्य० १५५) (समु० ५/३)
संयुक्त (भू०क०कृ०) [सम्+युज्+क्त]
०मिला हुआ, जुड़ा हुआ। (जयो०वृ० १३/१२)
०सम्मिलित, सम्मिश्रित।
०मिली हुई, ०सहित, युक्त।
०सम्पन्न, अन्वित।
०बना हुआ।
संयुगः (पुं०) [सम्+युज+क]
०संयोजन, मिलाप, मिश्रण।
०युद्ध, संघर्ष, संग्राम, लड़ाई।
संयुञ् (सक०) समागम करना, बुलाना। (जयो० ३/८७)
संयुज् (वि०) [सम्+युज्+क्विन्] संबद्ध, सम्बन्ध रखने वाला।
संयुत (भू०क०कृ०) [सम्+यु+क्त]
०मिला हुआ, संबद्ध।
०मिला हुआ, मिश्रित।
०संपन्न, सहित।
०भरा हुआ। (जयो० ४/५३)
संयोगः (पुं०) [सम्+युज्+घञ्]
०संयोजन, मिलाप, मिश्रण। (जयो०वृ० १/२२)
०संगम, मिलान। (जयो०वृ० ३/६२)
यथौदनस्य शोभा सूपसंयोगे भवति। (जयो० ३/६२)
०जोड़, पृथक् भूत पदार्थों के मेल का नाम।
०समुच्चय।
संयोगगति (स्त्री०) निमित्त से उत्पन्न गति।
संयोगज (वि०) संयोग सहित। (मुनि० २१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संयोगिन् (वि०) [संयोग+इनि]
०सम्मिलित, मिलाया हुआ।
०मिलने वाला।

संयोजनं (नपुं०) [सम्+युज्+ल्युट्]
०मिलाप, मिश्रण, योग।
०संगम, जोड़ना।
०मैथुन, संयोग।

संयोजनक (वि०) मेल, योग।
सहोपयोगेनशुभेन शस्यं
योगस्यसंयोजनकं समस्य। (समु० ८/३८)

संयोजना (स्त्री०) संसार से संयुक्त करना।

संरक्त (भू०क०कृ०) [सम्+रञ्ज्+क्त]
०आवेशपूर्ण, कामुक वासना से दग्ध।
०मुग्ध, मोहित।
०लावण्य-सुंदर
०रंगीन, लाल।

संरक्षः (पुं०) प्ररक्षण, देखभाल, संधारण।

संरक्षणं (नपुं०) [सम्+रक्ष्+ल्युट्]
०प्ररक्षण, संधारण। (जयो०वृ० ३/१)
०उत्तरदायित्त, सुरक्षा प्रदान।
०रक्षा भाव।

संरब्ध (भू०क०कृ०) [सम्+रम्भ्+क्त]
०उत्तेजित, विक्षुब्ध।
०प्रज्ज्वलित, भयानक।
०वर्धित, बढ़ा हुआ।
०अभिभूत।

संरम्भः (पुं०) [सम्+रभ्+घञ्]
०आरम्भ, विक्षोभ, हिंसा। संकल्प
०प्रभाद प्रयत्नावेश।
०उत्तेजना, रोष, क्रोध, कोप।

संरंभिन् (वि०) [संरम्भ+इनि]
०उत्तेजित, विक्षुब्ध, क्रुद्ध।
०रोषयुक्त, क्रोधित।

संरस (वि०) रसत्व, स्वाद/रस युक्त। (समु० २/२७)
किं पश्यस्यपि संरसेऽपि न किं
नो रोचकं व्यञ्जनम्। (जयो० १२/१२८)

संरागः (पुं०) [सम्+रञ्ज्+घञ्]
०प्रणय प्रसंग, रतिभाव।
०रागभाव, अनुराग, अनुरक्ति।
०रोष, क्रोध, कोप।

संराधनं (नपुं०) [सम्+राध्+ल्युट्]
०प्रसन्न करना, खुश करना।
०हर्ष उत्पन्न करना, तुष्ट करना।

संरावः (पुं०) [सम्+रु+घञ्]
०शोरगुल, हल्लागुल्ला।
०कोलाहल।

संरुग्ण (भू०क०कृ०) [सम्+रुज्+क्त]
०बाधित, रोका गया।
०भरा हुआ, वेष्टित।
०उपरुद्ध, आवृत।
०छिपाया गया, आवरण युक्त किया गया।
०अस्वीकृत, अटकाया हुआ।

संरुढ (भू०क०कृ०) [सम्+रुह्+क्त]
०साथ-साथ उगा हुआ।
०फूटा हुआ, अंकुर निकाला हुआ।
०मुकुलित, विकसित।
०उत्पन्न हुआ, उपजा हुआ।
०साहसी, भरोसे का।

संरोधः (पुं०) [सम्+रुध्+घञ्]
०विघ्न, बाधा, अड़चन।
०रोक, अवरोध।
०बन्धन, घेरा, रुकावट।
०बेड़ी, हथकड़ी।
०फेंकना, डालना।

संरोधनं (नपुं०) [सम्+रुध्+ल्युट्]
०रुकावट, अवरोध।
०रोकना, घेरना।

संरोधिन् (वि०) रोकने वाला, अवरोध उत्पन्न करने वाला। (जयो० २८/६२)

संलक्षणं (नपुं०) [सम्+लक्ष्+ल्युट्] चित्रण करना, वर्णन करना
०बतलाना, प्रतिपादन करना।

संलग्न (भू०क०कृ०) [सम्+लग्+क्त] समासक्त। (जयो०१७/५५)
०संयुक्त, मिश्रित, मिला हुआ।
०तत्पर, तैयार, उद्यमशील।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०संहत, जुड़ा हुआ। (सुद० १/३१)

०घनिष्ट।

संलग्नकथा (स्त्री०) [सम्+ली+अच्]

०लेटना, शयना करना, सोना।

०घुल जाना, मिलना।

संलप् (सक०) बोलना, कहना, समझाना। (जयो० ७/६१)

संलभ् (सक०) थाना, ग्रहण करना। (जयो० ४/३९)

संलयनं (नपुं०) [सम्+ली+ल्युट्]

०जुड़ना, मिलना, चिपकना।

०घुलना, संयुक्त होना।

संललित (भू०क०कृ०) [सम्+लल्+क्त]

०स्नेहित, प्रिय, प्यार किया हुआ।

संलापः (पुं०) [सम्+लप्+घञ्]

०बातचीत, वार्तालाप।

०प्रवचन, उपदेश। (मुनि० ३)

०स्वाद, अन्योन्य वार्ता।

०सम्भाषण।

संलापकः (पुं०) [संलाप+कन्] उपरूपक, संवादात्मक विचार।

संलापादिवर्जित (वि०) वार्तालाप आदि रहित। (मुनि० ६)

संलीढ (भू०क०कृ०) [सम्+लिह्+क्त]

०चाटा हुआ, अवलेहित किया।

संलीन (भू०क०कृ०) [सम्+लीरुक्त] चिपका हुआ, जुड़ा हुआ।

०मिलाया हुआ, छिपाया हुआ।

संलिख् (सक०) लिखना, समाचार होना। (जयो० २/१३)

संलेखना (स्त्री०) शरीर कृश करना, अच्छी तरह अपना प्रमार्जन करना।

संलोडनं (नपुं०) [सम्+लोड्+ल्युट्] बाधा डालना, व्यधान।

०अवरोध।

संल्लग्नता (वि०) अनुयोग से युक्त। मिला हुआ, संयुक्त हुआ।

संल्लभ् (सक०) प्राप्त होना, ग्रहण होना।

सं शब्दस्य इह अप्रशस्तार्थे ग्रहणं महत्तरवत्' (जयो०वृ० १/२४)

संलमालित (भू०क०कृ०) [सम्+लाल्+क्त] वर्द्धित, बढ़ाया हुआ, पालित, संरक्षित।

संवत् (अव्य०) [सम्+वय्+क्विप्]

०वर्ष, साल।

संवत्सरः (पुं०) [संवसंति ऋतवोऽत्र संवस्-सरन्] वर्ष, साल, अब्द। (जयो० २२/२९)

०दो अयन या छह-छह माह का एक संवत्सर।

संवत्सरतुल्यः (पुं०) अब्दप्रमाण, लवर्तमान। (जयो० २२/२९)

संवदनं (नपुं०) [सम्+वद्+ल्युट्]

०संवाद, वार्तालाप, शब्दोच्चारण। (जयो० १८/५०)

०परीक्षण, समाचार देन।

संवरः (पुं०) [सम्+वृ+अप् वा अच्]

०निरोध, संपीडन, संकोचन।

०बांध, सेतु, पुल।

०रोकना, आत्मनियन्त्रण करना।

०सहनशीलता, छिपाव।

०रुक जाना, न होना। (त०सू०पृ० १३८)

०संवरण-कर्म संवरण।

०मिथ्यादर्शनादि परिणाम का निरोध।

०इन्द्रिय-नो इन्द्रिय गोपन।

संवरकारक (वि०) इन्द्रिया निग्रह करने वाला। (भक्ति० १५)

संवरणं (नपुं०) [सम्+वृ+ल्युट्]

०आवरण, आच्छादन, संपीडन।

०निरोध, रोक।

संवरानुप्रेक्षा (स्त्री०) संवर के गुणों का विचार।

संवर्जनं (नपुं०) [सम्+वृज्+ल्युट्]

०रोकना, निरोध करना।

०आत्मसात्करण, संभुजन।

संवर्तः (पुं०) [सम्+वृत्+घञ्]

०मुड़ना, घुलना।

०विनाश, क्षय, नाश।

०मेघ, बादल।

०वर्ष, संग्रह, समुदाय, समुच्चय।

संवर्तकः (पुं०) [सम्+वृत्+णिच्+ण्वुल्]

०प्रलयाग्नि, बड़वानल।

संवर्तकिन् (पुं०) बलराम।

संवर्तिका (स्त्री०) [सवर्तक+टाप्] कमलपर्ण, पारकुड़ी।

संवद् (सक०) कहना, समझना। (जयो० ४/३०, ३/२३)

संवर्धक (वि०) [सम्+वृध्+ण्चि्+ण्वुल्]

०बढ़ने वाला, वृद्धि करने वाला।

संवर्धित (भू०क०कृ०) [सम्+वृध्+णिच्+क्त]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०बढ़ाया हुआ, पालित, संरक्षित।

संवलित (भू०क०कृ०) [सम्+वल्+क्त]

०मिश्रित, मिलाया हुआ।

०संबद्ध, संयुक्त, तर किया हुआ।

संवल्गित (वि०) [सम्+वल्ग्+क्त] पद दलित किया हुआ, रौंधा गया।

संवशिन् (वि०) जितेन्द्रिय, मन निग्रहकर। (जयो०वृ० २५/५७)

संवश (वि०) वश में रहने वाला। (जयो० २/७३) 'सम्यग्वशीभूताऽस्तु।'

संवसथः (पुं०) [सम्+वस्+अथच्] ग्राम, बस्ती खेड़ा।

संवहः (पुं०) [सम्+वह्+अच्] प्रवाह। वायुवेग।

संवादः (पुं०) [सम्+वद्+घञ्]

०वार्तालाप, कथोपकथन।

०चर्चा, वाद-विवाद, आपस में कथन।

०सूचना, समाचार। ०स्वीकृति, सहमति।

०समानुरूपता, समानता।

०सादृश्यता।

संवारः (पुं०) [सम्+वृ+घञ्] आवरण, आच्छादन।

०संरक्षण, संवाराण।

संवासः (पुं०) [सम्+वस्+घञ्] समुदाय, मण्डली।

०घर, आवास, निवास।

संवासानुमति (स्त्री०) आरंभ की अनुमति।

संवाहः (पुं०) [सम्+वह्+घञ्]

०पर्वतादि का स्थान।

०मालिश, संमर्दन, दबाना।

०मुट्ठी भरना, दबोचना।

संवाहकः (वि०) मालिश करने वाला।

संवाहनं (नपुं०) [सम्+वह्+णिच्+ल्युट्] बोझा ढोना, मालिश करना।

०निपीडन। (वीरो० ५/३८)

०संमर्दन, दबाना।

संवाहन योग्यः (पुं०) संर्दन योग्य, ढोने योग्य। (जयो० ११/८०)

संविकास (वि०) अच्छी तरह विकसित। (सुद० २/८)

संविकाशफ (सक०) प्रसन्न पना। (जयो० ४/५८)

संविक्त (वि०) [सम्+विज्+क्त]

०अलग किया हुआ, विभक्त।

०विभाजित।

संविग्न (वि०) [सम्+विज्+क्त]

०विक्षुब्ध, उत्तेजित, व्याकुल।

०अशान्त, उद्विग्न।

०त्रस्त, भयभीत।

संविज्ञात (भू०क०कृ०) [सम्+वि+ज्ञा+क्त] सर्वसम्मत, पूर्वाज्ञान।

संविचार्य (वि०) अच्छी तरह समझकर। (जयो० २/४२)

संवितानं (नपुं०) शान्दियिनी। (जयो० २३/५४)

संवित्तत्व (वि०) पाण्डित्यपूर्ण। (जयो०वृ० २८/६०)

संवित्तिः (स्त्री०) [सम्+विद्+क्तिन्] ज्ञान, चेतना, बुद्धि समझ। समस्त विकल्प नाशक। लक्षण के आश्रय में अपने लक्ष्य का अनुभव करना।

०पहचान, प्रत्यास्मरण।

संविक्षिभज (वि०) ज्ञानी। (मुनि० १७)

संविद् (स्त्री०) [सम्+विद्+क्विप्] ज्ञान, बुद्धि, समझ, प्रज्ञा।

०प्रतिज्ञा, अनुबन्ध।

०स्वीकृति, सहमति।

०नाम अभिधान, संकेत, चिह्न।

०सहानुभूति, साथ देना।

०वार्तालाप, कथोपकथन, संवाद।

०युद्ध, संग्राम, लड़ाई। (जयो० ७/९०)

संविदम्बरं (नपुं०) युद्ध रूपी गगन।

संविदोरणस्याम्बरे रसे गगने वा' (जयो०वृ० ७/९०) रणे सम्भाषणे-तथा अम्बरं रसे कार्पासे इति च। विश्वलोचन। (जयो०वृ० ७/९०)

संविदा (स्त्री०) [संविद्+टाप्] प्रतिज्ञा, अनुबन्ध।

संविदात (वि०) जानने वाला। ०प्रतिभशाली।

संविदित (भू०क०कृ०) [सम्+विद्+क्त]

०ज्ञात, समझा हुआ, पहचाना हुआ।

०सुविदित, विश्रुत। ०अन्वेषित।

०उपदिष्ट, समझाया हुआ।

संविध (स्त्री०) [सम्+वि+धा+अङ्+टाप्]

०व्यवस्था, उपक्रमण, आयोजन।

०सम्यग् विधानकारण। (जयो० १३/१७)

०रीति, ०अनुष्ठान। ०अनुपमेय (जयो० १९/१७)

संविधानं (नपुं०) [सम्+वि+धा+ल्युट्]

०प्रबन्ध, व्यवस्था। सौभाग्य। (जयो० १/५१)

०आयोजन, समायोजन, सम्भावन। (वीरो० २/१०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०रीति, पद्धति, विधि।
०कारण। (जयो० २३/४९)

संविधानकं (नपुं०) [संविधान+कन्] घटनाक्रम, कथावस्तु क्रम।
०अद्‌भुतकर्म, ०असाधारण घटना।

संविभजनीय (वि०) परिहारयोग्य। (जयो० ६/२५)

संविभागः (पुं०) [सम्+वि+भर्ज्+घञ्]
०विभाजन, बांटना, पृथक् करना।
०भाग, अंश, हिस्सा।

संविभागिकृत (वि०) सहज में लगाया गया, सम्यक्-कथा करने वाला। (जयो० २/११०)

संविभागिन् (पुं०) [संविभाग+इनि] सहभागी, हिस्सेदार, साझीदार।

संविरागिणी (स्त्री०) सम्यक् विरक्ता स्त्री। (२३/४३)

संविरोधिन् (वि०) ०विपरीत। (जयो० २/१८) ०अवरोधक (जयो० २४/४६) ०अधिक रोध युक्त।

संविवेचनं (नपुं०) पृथक्करण, अनुसन्धान। (जयो० ४/३८)

संविष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+विश्+क्त]
०सोता हुआ, लेटा हुआ।
०प्रविष्ट, घुसा हुआ।

संविह् (सक०) छोड़ना, त्यागना। (जयो० ४/२६)

संवीक्षणं (नपुं०) [सम्+वि+ईक्ष्+ल्युट्] पूर्ण रूप से देखना, अवलोकन करना, परीक्षण करना।
०जांचना, परखना।

संवीत (भू०क०कृ०) [सम्+व्ये+क्त] वस्त्रों से सुसज्जित, परिधान युक्त।
०आवृत, ढका हुआ।
०अलंकृत, आच्छादित, परिवेष्टित।
०अभिभूत, लिपटा हुआ।

संवृक्त (भू०क०कृ०) [सम्+वृज्+क्त] ०उपभुक्त, खाया हुआ। ०नष्ट।

संवतृं (नपुं०) गुप्त स्थानं, एकान्त स्थल।
०गोपनीयता। ०दुरुपलक्ष।
सम्यग्वृतः संवत इति दुरुपक्षः। (त०वा० २/३२)

संवृतयोनिः (स्त्री०) दुरुपलक्षणयोनि।

संवृंतिः (स्त्री०) [सम्+वृ+क्तिन्] आवरण, अच्छादन।
०छिपाव, दबाना। गुप्त रखना, ढांकना।

संवृतिसत्य (नपुं०) वचन व्यवहार वाला सत्य।

संवृत्त (भू०क०कृ०) [सम्+कृत्+क्त] घटा, घटित हुआ।
०भरा गया। सम्पन्न। ०संचित, एकत्रित।
०ढका हुआ।

संवृत्तिः (स्त्री०) [सम्+वृत्+क्तिन्]
०होना, घटित होना।
०निष्पन्नता।
०आवरण, आच्छादन।

संवृद्धिः (स्त्री०) वृद्धि, प्रसार।

संवृद्धि (भू०क०कृ०) [सम्+वृध्+क्त]
०पूर्ण विकसित, बढ़ा हुआ।
०वृद्धिगत, ०समृद्धिशाली।

संवेगः (पुं०) [सम्+विज्+घञ्]
०संसार भीरुत्व विक्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना।
०भीति, भय।
०प्रचण्डगति, तीव्रता, प्रचण्डता।
०अभिलाषा, इच्छा।

संवेजनीकथा (स्त्री०) तप प्रधान कथा।

संवेदः (पुं०) [सम्+विद्+घञ्]
०प्रत्यक्षज्ञान, स्पष्ट ज्ञान।
०अनुभव, ज्ञान, चेतना, जानकारी।
०अनुभूति, आत्मसमर्पण।

संवेशः (पुं०) [सम्+विश्+घञ्]
०विश्राम, आराम।
०निन्द्रा, नींद।
०स्वप्न, आसन। ०मैथुन।

संवेशनं (नपुं०) [सम्+विश्+ल्युट्] ०मैथुन, संभोग, रतिबन्ध।

संव्रज् (सक०) चलना, जाना। (जयो० ५/८)

संव्यवहारः (पुं०) समीचीन व्यवहार, समीचीन प्रवृत्ति।
समीचीन प्रवृत्तिरूपो व्यवहारः संव्यवहारः (जयो०)

संव्यानं (नपुं०) [सम्+व्ये+ल्युट्] आवरण, आच्छादन, पर्दा, परिवेष्टन।
०वस्त्र, कपड़ा, परिधान। (जयो० १८)
०उत्तरीय वस्त्र।

संशनकृत् (वि०) प्रशंसा करने वाला। (भक्ति० ४३)

संशप्तकः (पुं०) [सम्यक् शप्तमङ्गीकारो यस्य कप्] शपथ युक्त व्यक्ति।

संशब्द (वि०) अप्रशस्तार्थ। (जयो०वृ० १/२४)

संशब्दित (वि०) विशिज्ञ। (जयो०वृ० १७/७०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संशयः (पुं०) [सम्+शी+अच्] संदेह, अनिश्चितता, संकोच। ०मिथ्या। (जयो० २/८६)
०शंका, शक- ०अनिर्णय की स्थिति।
०अनवस्थित कोटि।

संशयगत (वि०) शंका को प्राप्त हुआ।

संशयछेदः (पुं०) आशंका का निवारण।

संशयनिवारक (वि०) संदेह प्रतिकारी। (जयो०वृ० ३/९६)

संशयमिथ्यात्वं (नपुं०) वस्तु स्वरूप का निश्चय न होना-सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः किं भवेन्नो वा।

संशयवचनीभाषा (स्त्री०) संदिगध वचन युक्त भाषा।

संशयान् (वि०) [सम्+शी+शानच् संशय+आलुच्] संदेहपूर्ण, अस्थिर, अनिश्चित, चंचल।

संशयालंकारः (पुं०) संशय अलंकार। जिसमें धर्मसाम्य के कारण अमुक वस्तु यह है कि यह है इस प्रकार जब संशय की उद्‌भावना होती है तब संशय अलंकार होता है।
इदमेतदिदं वेति साम्याद् बुद्धिर्हि संशयः।
हेतुभिर्निश्चयः सोऽपि निश्चयान्तः स्मृतोयण। (वाग्भट्ट०४/७८)
धान्यस्थली पालक-बालिकानां
गीतश्रुतेर्निश्चलतां दधानाः।
चित्तेऽध्वनीनस्य विलेप्यशङ्का-
मुत्पादयन्तीह कुरङ्गरङ्का।। (वीरो० २/१३)

संशयित (वि०) शंका से युक्त।

संशयितमिथ्यात्वं (नपुं०) संशयपूर्वक श्रद्धान होना।

संशरणं (नपुं०) [सम्+शॄ+ल्युट्] आक्रमण, युद्ध का आरम्भ। ०चढ़ाई, धावा।

संशायिन (वि०) शयन भाव युक्त। (जयो० १७/१८)

संशित (भू०क०कृ०) [सम्+शो+क्त]
०तेज, तीक्ष्ण।
०निर्णीत, सुनिश्चित, निर्धारित निश्चित।
०क्रियान्वित, पूर्ण किया गया।

संशीरः (पुं०) संश्रित। (वीरो० १२/१४)

संशुच् (अक०) सोचना, विचारना-संशोच्यताम्। (जयो० १८/४१)

संशुद्ध (भू०क०कृ०) [सम्+शुध्+क्त]
०विशुद्ध, पवित्र, श्रेष्ठ। (जयो०वृ० १/१५)
०सुसंस्कृत, अभीष्ट।

संशुद्धि (स्त्री०) [सम्+शुध्+क्तिन्] विशुद्धि, परिशुद्धि, विशेष शुद्धि, पूर्णनिर्मलता, स्वच्छता।
०परिशोधन, संशोधन, समाधान।
'आग संशुद्धये राजा सुदर्शनमहात्मनः' (सुद० १०९)

संशुध् (सक०) पवित्र करना, स्वच्छ करना, संशोधन करना। निर्मल करना। संशोधयेमुर्दभत्सदारीङ्गना। (वीरो० १७/१५)
०प्रतिक्रमण करना।
'तदर्थं प्रतिक्रमणं करोतीत्यर्थः' (जयो० २७/५१)
०साफ करना, परिमार्जित करना। (जयो०वृ० १३/१६)
संशोधयेत्। (मुनि० १२)

संशोचनीय (वि०) विचारणीय। (वीरो० ९/४५)

संशोधनं (नपुं०) [सम्+शुध्+ल्युट्]
०समन्वेषण। (जयो० २४/९८)
०पवित्रीकरण, स्वच्छ, शुद्ध।
०परिमार्जन, प्रक्षालन। (मुनि० १३)

संशोधनकर्त्री (स्त्री०) विशोधिनी, परिमार्जित करने वाली स्त्री। (जयो० १२/९६)

संशोधित (भू०क०कृ०) परिमार्जित। (वीरो० २२/४)
स्वच्छता युक्त-संशोधितं में भवताच्चरित्रम्। (भक्ति० ४९)

संश्चत् (नपुं०) [सम्+श्चु+डति] दाव-पेंच, जादूगरी, इन्द्रजाल, मरीचिका।

संश्यान (भू०क०कृ०) [सम्+श्यै+क्त] संकुचित, सिकुड़ा हुआ। ०जमा हुआ, ठिकुरा हुआ, ०लपेटा हुआ, ०अवसन्न।

संश्रत (वि०) आरुढ़। (मुनि० ३)

संश्रयः [सम्+श्रि+अच्] आवास स्थल, निवास स्थान, आरामगृह, विश्राम स्थल। (सुद० १/१५)
तदेकदेशः शुचिसन्निवेशः
श्रीमान् सुधीमानवसंश्रये सः। (सुद० १/१५)
०आश्रय, आधार, शरण, आश्रम।

संश्रवः (पुं०) [सम्+श्रु+अप्] प्रतिज्ञा। (जयो० १३/२०) वचनबद्धता। ध्यानपूर्वक सुनना।

संश्रवणं (नपुं०) [सम्+श्रु+ल्युट्] सुनना। ०कर्ण, कान। निशमन। (जयो० ६/३९)

संश्रि (सक०) आश्रय देना। (जयो० ३/६५)

संश्रित (भू०क०कृ०) [सम्+श्रि+क्त] आश्रय दिया हुआ, सहारा दिया हुआ।
०शरण में गया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संश्रु (अक०) सुनना, संयुक्त होना। (सुद० २/३५) (जयो० १८/४३) संश्रूयते।

संश्रुत (भू०क०कृ०) [सम्+श्रु] प्रतिज्ञात, भलीभांति सुना हुआ।

संश्रुतापादप: (पुं०) प्रसिद्ध वृक्ष-महात्मनां संश्रुतपाद पाना पत्राणि जीर्णानि किलेतिमावात। (वीरो० ९/३४)

संश्रोतृ (वि०) श्रोता। (वीरो० १/१)

संश्रृंखडल (वि०) श्रृंखला सहित, सांकल युक्त, जंजीर सहित। (जयो० १३/११०)

संश्लिष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+श्लिष्+क्त]
०संयुक्त, मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
०श्लाघ्य, प्रशंसनीय। (जयो०वृ० १/७९)
'महर्षि संश्लिष्टाशायां जगाम, वन्दनार्थमित्यर्थ:' (जयो०वृ० १/७९) सश्लिष्टं श्लाघ्यं बभूव। (जयो०वृ० १/६१)
०सुसज्जित।
०संस्पर्शी, आलिंगित।

संश्लेष: (पुं०) [सम्+श्लिष्+घञ्] आलिंगन, परिरंभण, मिलाप सम्बंध, सम्यक। (जयो० १७/७७)

संश्लेषजन्य (वि०) हर्षजन्य। (जयो०वृ० १२/६६)

संश्लेषणं (नपुं०) [सम्+श्लिष्+ल्युट्] आलिंगन, भींचना, दबाना।

संसक्त (भू०क०कृ०) [सम्+सञ्ज्+क्त]
०जुड़ा हुआ, मिला हुआ।
०संलग्न, आसक्त, सटा हुआ।
०आसन्न, निकट।
०प्रयुक्त। (जयो० ६/६७)
०मिश्रित, संपन्न, प्रतिबद्ध।

संसक्ति: (स्त्री०) [सम्+सञ्ज्+क्तिन्]
०संगम, मिलन, मिलाप।
०बांधना, घनिष्टता।
०आपसी मेलजोल।

संसज् (अक०) द्रवीभूत होना। (मुनि० २८)

संसद् (स्त्री०) [सम्+सद्+क्विप्]
०सभा, सम्मिलन, मंडल। (जयो० ३/९२) (सुद० २/१)
०परिषद। ०समिति। (जयो० १०/२)
इत्थं वारिविवर्षैरङ्कुरयन् संसदे तथैव रसै:। (जयो० ३/९२)

संसमान (वि०) प्रस्खलित हुआ। (जयो० २४/३५)

संसरणं (नपुं०) [सम्+सृ+ल्युट्]
०प्रगति, जाना।
०देशान्तरगमन। (जयो०वृ० १/२२)
०संसार, लौकिक जीवन, सांसारिक। (जयो०वृ० १/९५)
०जन्म-जमान्तर। (जयो० १/२२)
०निर्बाध कूच। ०प्रयाण।

संसरणनिवृत्ति: (स्त्री०) संसार से हटना, सांसारिक कार्यों से अलग होना। (जयो०वृ० १/९५)

संसर्ग: (पुं०) [सम्+सृज्+घञ्] संगम, मिलन, मिश्रण।
०संगति, सम्पर्क, साहचर्य।
०परिचय, मेल-जोल।
०सामीप्य, संस्पर्श।
०मैथुन, संभोग।
०प्रसक्ति। (वीरो० २/१२)

संसर्गप्रभव: (पुं०) संसर्ग से उत्पन्न। (मुनि० २८)

ससर्गविधा (स्त्री०) संगति प्रधान नीति। (सुद० १/२३)
विसर्गमात्मश्रिय ईहमान:
स साधुसंसर्गाविधानिधान:। (सुद० १/२३)

संसर्गिन् (वि०) [संसर्ग-इनि] संयुक्त, मिश्रित, मिला हुआ, सम्बंधित। संस्पर्शित।

संसर्गिन् (पुं०) सहचर, साथी।

संसर्जनं (नपुं०) [सम्+सृज्+ल्युट्]
०परित्याग करना, छोड़ना, विसर्जन करना।
०अलग करना, पृथक् करना, हटाना।

संसर्प: (पुं०) [सं+सृप+ल्युट्] सरकना, रेंगना।

संसर्पणं (नपुं०) [सम्+सृप्+ल्युट्] सरकना।

संसर्पिन् (वि०) [संसर्प+इनि] सरकने वाला, रेंगने वाला।

संसाद: (पुं०) [सम्+सद्+घञ्] सभा, समिति।

संसाधनं (नपुं०) उचित साधना। (दयो० २/२६)

संसाध्य (वि०) प्राप्त करने योग्य। (मुनि० १६)

संसार: (पुं०) [सम्+सृ+घञ्] लोक, विश्व।
०संसरण, परिभ्रमण, गति, प्रगति।
गुणोऽस्ति जीवस्य किलोपयोगस्तेनाप्य जीवेन समं योग:।
ततो हि संसार इयानिहास्ति, वियोग एवास्तु
शिवाश्युपास्ति। (समु० ८/६)
०संसृति-प्रापय यामपि तु तामसारतां संसृतिस्त्यजति तामसारताम्। (जयो० ११/९४)
०आवागमन, पुनरागमन, पुनर्जन्म।
०परम्परा, रीति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०चार गतियों में परिभ्रमण।
०ग्रन्थानुबन्धी।
०गर्भादिसंचराण।
०भवान्तर प्राप्ति।
०भवानुभूति।
०कर्मकलाप युक्त।
'भव: पवित्रसारहित: संसार:' (जयो० १/१५)

संसारकर्मन् (नपुं०) सांसारिक क्रिया।
संसारखिन्न (वि०) संसार से उदासीन।
संसारगत (वि०) संसार को प्राप्त।
संसारगति (स्त्री०) संसार परिभ्रमण।
संसारजन्य (वि०) संसरण को प्राप्त।
संसारतत्वं (नपुं०) परिभ्रमण शील तत्त्व।
संसारधृत (वि०) संसार को पकड़ने वाला।
संसारपरीत (वि०) संसार को परिमित करने वाला।
संसारपार (वि०) संसार को पार करने वाला।
संसारबन्ध (वि०) संसार में बंधने वाला।
संसारभाव: (पुं०) संसार का कारण।
संसारसिन्धु (पुं०) संसार सागर। (मुनि० ३४)
संसारस्फीति: (स्त्री०) संसार से छूटना।
संसारमोक्ष: (पुं०) योनिक जीवन से छूटना।
संसारसाग: (पुं०) संसार रूपी समुद्र। (जयो० १/१०३)
संसारात्तरणं (नपुं०) संसार से पार। (मुनि० ५)
संसारभाव: (पुं०) संसार का अभाव।
संसारानुप्रेक्षा (स्त्री०) संसार भावना।
संसारिन् (वि०) [संसार+इनि] लौकिक, ऐहिक, संसार से सम्बन्धित। संसार में परिभ्रमण करने वाले।
निजेङ्गिताङ्गविशेषभावात्।
संसारिणोऽमी ह्यचराश्चरा वा।
तेषां श्रमो नारकदेवमर्त्यतिर्यक्त्या
तावदित: प्रवर्त्य:। (वीरो० १९/२६)
संविदन्नपि संसारी स नष्टो नश्यतीतर: (वीरो० १०/५)

संसारिजन् (पुं०) परिभ्रमणशील, शुभाशुभ परिणाम जन्य जीव।
संसारीतावस्था (स्त्री०) मुक्ति/मोक्ष अवस्था। (जयो० १८/३)
संसारोचितवर्त्मन् (नपुं०) संसार के अनुकूल मार्ग।
मनोऽपियस्य नो जातु
संसारोचितवर्त्मनि। (सुद० १३२)

संसारोदयवर्तिन् (वि०) संसार के मध्य रहने वाले।
सोऽयं जन्मजरान्तकत्रयभवं सन्तायमुन्मूलयन्।
संसारोदयवर्तिनां तनुभृतां शान्तिं च सम्पादयन्।। (मुनि०७)

संसिक्त: (वि०) छोड़ी गई। (जयो०वृ० १२/६५)
संसिद्ध (भू०क०कृ०) [सम्+सिध्+क्त] सर्वथा निष्पन्न, पूर्ण तैयार हुआ।
०पकाए गए। (वीरो० २२/२३)
०मुक्त, विमुक्त, सिद्धि को प्राप्त हुए।

संसिद्धि (स्त्री०) [सम्+सिध्+क्तिन्]
०मुक्ति, मोक्ष। (जयो० २४/९६)
०कैवल्य, परमगति, सिद्धगति।
०प्रकृति, नैसर्गिक वृत्ति।

संसूच् (सक०) प्रकट करना, सूचित करना, सिद्ध करना।
०संकेत करना, भेद खोलना।
०भर्त्सना, झिड़कना।

संसूचक (वि०) प्रतिपादक, निवेदक। (जयो० ६/३०)
संसूचका (स्त्री०) विजय सूचक ध्वनि। (जयो०वृ० २६/१८)
संसूचनं (नपुं०) [सम्+सूच्+ल्युट्]
०सूचित करना, समाचार देना।
०संकेत करना, निर्देश देना।
०निर्देशन, प्रवेदन।
०कथन, प्रतिपादन।
०भर्त्सना, झिड़कना।
०भेद खोलना, रहस्य प्रकट करना।

संसूय (अक०) उत्पन्न होना। (जयो० १८/४३)
संसूयित्री (स्त्री०) संकेत करने वाली। (जयो०वृ० १६/७५)
संसृति: (स्त्री०) संसार, जगत, विश्व। संसारचक्र, लौकिक जीवन। (दयो० ८, जयो० १९/९४, २/१२)
०मार्ग, पथ, ०धारा, प्रवाह, ०आवागमन।

संसृतिनापक: (पुं०) यमराज। (समु० ७/१०)
संसृतिवत् (वि०) संसारवत्, संसरण की तरह।
संसृतिविलासवासिन् (वि०) विविध सांसारिक आरंभ-परिग्रह में आसक्त। ( )
'संसृतेर्विलासास्तेषु वसन्ति तान्
विविधारम्भ-परिग्रहासकान्' (जयो० २/)

संसृष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+सृज्+क्त] ०मिश्रित, मिला हुआ, सम्मिलित किया हुआ।
०प्रशान्त, ०पुनर्युक्त, ०निर्मित, बनाया हुआ।
०परिष्कृत् संस्कारित। (जयो०वृ० २/७७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संसृष्टता (वि०) [सम्+सृज्+क्त] समाज, संघ।
संसृष्टत्व देखों ऊपर।
संसृष्टिः (स्त्री०) [सम्+सृज्+क्तिन्]
०सम्बंधी, जोड़, मिलाप, मिलन।
०साहचर्य, सहभागिता, साझीदारी।
०संग्रह, संचय करना, जोड़ना।
संस्रवत (वि०) भरता हुआ, प्रच्यवत। (जयो० १०/६१)
संसेकः (पुं०) [सम्+सिच्+घञ्] तर करना। (वीरो० १३/१५)
संसेवमान् (वि०) सेवा करने वाला। छिड़कना।
संस्रोतर (वि०) उक्ति प्रवाह। (जयो० ३/९३)
संस्कृ (सक०) संस्कारित करना, योग्य बनाना। (सुद० ३/१२)
संस्कर्तृ (पुं०) [सम्+कृ+तृच्] संस्कारित करना, बनाना, तैयार करना।
संस्कारः (पुं०) [सम्+कृ+घञ्] संस्कृति। (जयो० २२/८३)
०सजावट। (मुनि० ३)
०शिक्षा, अनुशासन, सीख, प्रशिक्षण।
०सत्क्रिया। ०अलंकरण।
०अन्तःशुद्धि, पवित्रीकरण।
०पुनीतकार्य, अच्छे भाव।
०रश्मि, आशा। (जयो०वृ० ४/४३)
०प्रमार्जन, प्रक्षालन।
०प्रत्यास्मरण शक्ति, संस्मरण।
संस्कारधारा (स्त्री०) परम्परागत धारा। (जयो०२/१११)
संस्काराभावः (पुं०) संस्कार का अभाव, अनुशासन की कमी। (हित० २४)
संस्कृत् (भू०क०कृ०) [सम्+कृ+क्त]
०परिष्कृत्, परिमार्जित।
०संस्कारित, संस्कार युक्त किया गया।
०अनुभावित। (जयो० ३/५९)
०सुनिर्मित, सुसम्पादित, सुरचित।
०विधिवत् घटित, अच्छी तरह व्यवस्थि किया गया।
०व्याकरण निष्ठ बनाया गया।
०भासित। (जयो० १०/८९)
अर्थसंस्कृतकुड्येषु संक्रातप्रतिमा नराः।
विलोक्यते स्फुटं यत्र चित्राङ्का इव मञ्जुलाः। (जयो० १०/८९)
०'संस्कृतस्य जगतो देववाणी। (जयो०वृ० २२/८६)
संस्कृतिः (स्त्री०) संस्कारित विधि, परिष्कृत विधि, जिसमें संस्कारों में बल दिया जाता है। संस्कार (जयो० २२/८३)
यस्मात् गेहिभिन्नसंस्कृति-
विधौ नाना त्रुटि ह्रीऋषिः। (मुनि० ३१)
संस्क्रिया (स्त्री०) संस्कार युक्त क्रिया। (सुद० १/३१) शुद्धि संस्कार, परिमार्जित, क्रिया, अनुशासत्मक क्रिया।
संस्तम्भः (पुं०) [सम्+स्तम्भ्+घञ्]
०आश्रय, आधार, सहारा। ०टेक।
०दृढ़ करना, सबल बनाना।
०विराम, यति। ०जड़ता।
संस्तपनः (पुं०) सूर्य, रवि-संस्तापितः संस्तपनस्य पादैः पथि प्रजन् पांशुभिरुत्कृदङ्गः (वीरो० १२/११)
संस्तरः (पुं०) [सम्+स्तृ+अप्] शय्या, पलंग, आसन, बिछौना, बिस्तर।
संस्तरणं (नपुं०) बिछाना, फैलाना।
०शय्या, पलंग।
संस्तवः (पुं०) [सम्+स्तु+अप्] प्रशंसा, स्तुति, पूज्य। (समु० २/१४)
०सम्मान योग्य, समादरित।
०रक्षण करना, स्तवन करना। (जयो० ३/७)
०जान-पहचान, घनिष्टता।
०प्रार्थना, विनय, भक्ति। (मुनि० २७)
मुक्तात्मभावोदरिणी जवेन
समर्हणीया गुणसंस्तवेन। (जयो० २/४२)
संस्तवनं (पुं०) [सम्+स्तु+घञ्] प्रशंसा, ख्याति।
०स्तुतिपाठ, प्रार्थना।
संस्तुत (भू०क०कृ०) [सम्+स्तु+क्त] प्रशस्त, प्रशंसित।
०पूजित, अर्जित। (समु० ४/२४) (वीरो० १०/२, समु० २/१९)
०महिमा युक्त, प्रसिद्ध। (सुद० ३/६)
०सम्मत, सम्वादी।
०घनिष्ट, परिचित।
संस्तुतिः (स्त्री०) [सम्+स्तु+क्तिन्] प्रशांस, स्तुति, गुणगान।
संस्त्यायः (पुं०) [सम्+स्त्ये+घञ्] संचय, राशि, संघात, सामीप्य।
०प्रसार, विस्तार।
०घर, आवास, निवास।
सांस्थ (वि०) [सम्+स्था+क] स्थित रहने वाला, ठहरने वाला।
०विद्यमान, मौजूद, उपस्थित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०समाप्त, मृत, नष्ट।
०स्थिर, अचल।
०सूख गया। (वीरो० १२/३१)

संस्थः (पुं०) निवासी, वास्तव्य पड़ौसी, स्वदेशी। ०गुप्तचर।

संस्था (स्त्री०) [सम्+स्था+अङ्+टाप्]
०सभा, समुदाय, समूह, समिति।
०परिषद्।
०धन्धा, व्यवसाय।
०अन्त, पूर्ति, क्षति, नाश।
०प्रलय, ०राजकीय आज्ञा।

संस्थान (नपुं०) [सम्+स्था+ल्युट्]
०संचय, राशि।
०आकार-प्रकार। (सुद० ८३)
०आकृति विशेष।
०विन्यास, अनुकृति।
०रूप, आकृति, दर्शन, सूरत।
०संरचना, निर्माण, संस्थिति।
०निशान, चिह्न।
०नाश।
०समचतुरस्रनादिलक्षण, औदारिक शरीर का आकार।

संस्थानविचयः (पुं०) द्रव्य, क्षेत्र आकारादि का चिंतन। (समु० ८/३९)

संस्थापनं (नपुं०) [सम्+स्था+णिच्+ल्युट्] निर्धारण, जमाना, बिठाना, स्थपित करना।
०नियंत्रण करना, दमन करना।
०संचय करना, संग्रह करना।

संस्थापना (स्त्री०) नियंत्रण, दमन।

संस्थापकार्थ (वि०) मारणानार्थ, उपनिवेश, रोकने के लिए। (जयो० ८/५४)

संस्थित (वि०) स्थित, विद्यमान।
०संचित, स्थापित, रखा हुआ।
०मृत, उपरत।
०निष्पन्न समाप्त।

संस्थितिः (स्त्री०) [सम्+स्था+क्तिन्]
०निवासस्थान, आवासस्थल, विश्रामगृह।
०निकटता, समीपता।
०संचय, ढेर।
०अवधि, कालावधि।
०अवस्थान, स्थिति, जीवन की दशा।
०प्रतिबंध।

संस्पर्शः (पुं०) [सम्+स्पृश्+घञ्] ०संपर्क, ०छूना, ०सम्मिलन, ०मिश्रण।
०संवेदन, प्रत्यक्षज्ञान।

संस्पर्शी (स्त्री०) [सम्+स्पृश्+अच्+ङीष्] गंध युक्त पौधा।

संस्पृत्यालु (वि०) अभिलाषी। (जयो० २७/२३)

संस्फालः (पुं०) [सम्यक् स्फाल स्फुरणं यस्य] ०मेंढा।
०मेघ, बादल।

संस्फुर् (सक०) प्रकट करना, व्यक्त करना। (जयो० १६/७६)

संस्फेटः (पुं०) संग्राम, युद्ध लड़ाई।

संस्मरणं (नपुं०) [सम्+स्मृ+ल्युट्] याद करना, मन में लाना, विचारना, चिन्तन करना। (जयो० २७/५५)

संस्मारक (वि०) स्मरण। (जयो० १९/२)

संस्मृ (सक०) चिन्तन करना, याद करना, स्मरण करना। (जयो० ४/६२) स्मरण (मुनि० १७)

संस्मृत (वि०) [सम्+स्मृ+क्त] याद किया हुआ।
०स्मरित, स्मरण किया हुआ। (दयो० ३९)

संस्मृति (स्त्री०) स्मरण, याद चिंतन, (जयो० ४/६२) विचार। (जयो० ९/४८)
'स्वं यशोऽग्रजननाम संस्मृतिः' (जयो० २/१०५)

संस्रवः (पुं०) [सम्+स्रु+अप्] बहना, टपकना, रिसना, झरना।
०सरिता।

संहत (भू०क०कृ०) [सम्+हन्+क्त] ०बन्द, अवरुद्ध।
०समुदित, एकत्रित। (जयो० २/२०)
०सम्पृक्त, संबद्ध, युक्त, जुड़ा हुआ।
०संघात, संचित।

संहतता (स्त्री०) [संहत+तल+टाप्] मेल, मिलन, संहति।
०संपर्क, घनिष्ट मेल।
०संयोजन, सहमति, एकता।

संहतिः (स्त्री०) [सम्+हन्+क्तिन्] संपर्क, मेल।
०संचय, समुदाय, ढेर।
०पिण्ड, समवाय।

संहननं (नपुं०) [सम्+हन्+ल्युट्]
०सघनता, दृढ़ता, सामर्थ्य शक्ति।
०अस्थि-निबन्धन, हड्डियों की बनावट।
०हड्डियों का संचय। ०देह रचना।

संहरणं (नपुं०) [सम्+हृ+ल्युट्] लेना, ग्रहण करना।
०मिलाना, संचय करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संहर्तृ (पुं०) [सम्+हृ+तृच्] विनाशक, नष्ट करने वाला।
संहर्ष: (पुं०) [सम्+हृष्+घञ्] आनन्द, हर्ष, खुशी।
०रोमांच।
०पवन, वायु। ०रगड़ना।
संहात: (पुं०) [सम्+हन्+घञ्] संघात।
संहार: (पुं०) [सम्+हृ+घञ्] संकोचन, भींचना, संक्षेपण, प्रतिबन्ध लगाना।
०विनाश, समाप्ति। ०उपसंहार।
०संघात, समूह।
संहारक (वि०) विनाशक, घातक। (जयो० ६/६८)
०संघातकाय (जयो०वृ० १/९४)
संहारक: (पुं०) महादेव, शिव। (जयो०वृ० ३/५४)
संहारकृत् (वि०) विनाश करने वाला, घातक। (वीरो० ९/४०)
संहार्यमति: (स्त्री०) असमीचीन बुद्धि।
संहित (भू०क०कृ०) [सम्+धा+क्त हि आदेश:]
०संयुक्त, मिला हुआ, समाहित।
०संचित, अन्वित, सहित, युक्त।
०सहमत, समनुरूप, अनुकूल।
संहिता (स्त्री०) [संहित+टाप्] सम्मिश्रण, समायोजन।
०संचय, संकलन, संग्रह।
०नियम, विधि।
०संहिता शास्त्र-सूत्र की व्याख्या।
०पद विन्यास, उच्चारण की विशेषता।
शस्तमस्तु तदुताप्रशस्तकं
व्याकरोति विषयं सदा स्वकम्।
पारवश्यक विचारवेशिनी
संहिता हि सकलाङ्गदेशिनी।। (जयो० २/४३)
संहितासद्भाव: (पुं०) कार्य प्रारम्भ। (जयो० ३/७१)
०संगठित शक्ति।
संहितत्व (वि०) परम्परा युक्त। (वीरो० ११/२४)
संहूति: (स्त्री०) [सम्+ह्वे+क्तिन्] चीखना, चिल्लाना, शोरगुल करना।
संहृ (सक०) खींचना, दबाना।
०नियंत्रण करना। नष्ट करना। (सुद० १२८)
संहृत (भू०क०कृ०) [सम्+हृ+क्त] ०संचित, संगृहित।
०पकड़ा हुआ। दबाया हुआ।
संहृति: (स्त्री०) [सम्+हृ+क्तिन्] सिकुड़न, भींचना।
०विनाश, हानि, क्षति, संहार। (वीरो० ९/५)
०लेना, ग्रहण करना, पकड़ना।
०प्रतिबन्ध, संचय।
संहृष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+हृष्+क्त] हर्षित, रोमांचित, पुलकित।
संह्राद: (पुं०) [सम्+ह्रद्+घञ्] चीत्कार, कोलाहल, होहल्ला।
संह्रीण (वि०) [सम्+ह्री+क्त] लज्जालु, शर्मीला, विनयशील।
सकं (नपुं०) सुख, आनंद, हर्ष।
'इत्येवं सकं सुखं ददातीति तत्प्रकार:' (जयो० ११/४३)
सक: (पुं०) अर्ककीर्ति राजा। (जयो० ८/७४)
सकज्जलं (वि०) [कज्जलेन सहति] कज्जल सहित। ०कालिमा युक्त। (जयो० ७/९९)
सकट (वि०) [कटेन अशुचिना शवादिना सह वर्तमान:] दुष्ट, बुरा, कुत्सित।
सकण्टक (वि०) [कण्टेन सह] कांटेदार, चुभने वाला। (दयो० २/९)
०कष्ट प्रद भयानक।
सकण्टक: (पुं०) शेवाल जलीय घास।
सकन्दल (वि०) [कन्दलेन कलहेन सहितं] कलह सहित। आघात (जयो० १३/७०)
सकम्प (वि०) ०कम्पेन सह, ०कांपता हुआ, ०कम्पमान। (जयो० ८/८) ०डरता हुआ, ०थरथराता हुआ।
सकम्पन (वि०) [कम्पनेन सह] कांपता हुआ, थरथराता हुआ।
स-करुण (वि०) करुणया सह, करुणा युक्त, कोमल, दयालु।
सकर्ण (वि०) [कर्णेन सह] कान सहित, सकर्मक क्रिया। जिसमें कर्ता के साथ कर्म को महत्त्व दिया जाता है।
०कर्म से युक्त, कर्म रखने वाला।
सकल (वि०) [कलया कलेन सह वा]
०समग्र, सम्पूर्ण, सब, समस्त। (जयो० १८/१६)
भूरानन्दमयीयं सकला। (सुद० ८१) (जयो० २/१६)
०कृत्स्नं। (जयो० १८/१६)
०कोई भी-विश्वं सुदर्शनमयं विवभूव तस्या।
रुच्या न जातु तमृते सकला समस्या।। (सुद० ८६)
०कला सहित। (सुद० १/२८)
०भागो सहित, अंश युक्त।
०सब अंकों से युक्त।
सकलजन: (पुं०) सम्पूर्ण व्यक्ति, समस्त मानव। (सुद०९७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकलजनानां निजवित्तस्य च
लुण्टाकेभ्यस्त्रात्री-यमायाताऽरमहो कलिरात्रि। (सुद०९७)

सकलज्ञ (वि०) सर्वज्ञ, भगवान्।
सकलज्ञं सर्वत्रं भगवन्तं
सम्प्रार्थयितुमाप्तवान्' (जयो० ८/८८)

सकलज्ञता (वि०) सर्वज्ञता, सर्व वस्तु जानने वाला।
व्याख्याति तत्त्वं सकलज्ञतातः
बहिर्न किञ्चिद्यदुपेयतातः। (भक्ति० ३२)

सकलङ्क (वि०) [कलङ्क सहितः] कलंक सहित।
सकलङ्कः पृषदङ्कक:
स क्षय सहितः सहजेन। (सुद० ८७)

सकलजातिः (स्त्री०) सम्पूर्ण जाति।

सकल-तापस् (वि०) समस्त तपस्वी।

सकलदत्ति कारकत्व (वि०) महादान के दाता। (जयो०वृ० १/१०८)

सकलदानं (नपुं०) समग्रदान।

सकलदोषः (पुं०) सम्पूर्ण सम्पत्ति।

सकलधनं (नपुं०) समस्त धर्म।

सकल परमात्मन् (पुं०) सकल परमात्मा।

सकलभावः (पुं०) सम्पूर्ण परिणाम।

सकलभेदः (पुं०) समस्त भेद।

सकलयोनिः (स्त्री०) सम्पूर्ण उत्पत्ति स्थान।

सकलराशिः (पुं०) समस्त राशि।

सकलविद्या (स्त्री०) समस्त विद्याएं।
कुशल सद्भावनोऽम्बुधिवत्,
सकलविद्या सरित्सचिवः। (सुद० ३/३०)

सकलव्यञ्जनं (नपुं०) समस्त पकवान्।
सकलानि व्यञ्जनानि। (जयो० १२/११५)

सकलसम्मत (वि०) जनमान्य। (दयो० १/१४)

सकलाङ्गदेशिनी (वि०) सांगोपांग वर्णन करने वाली।
सकलान्यङ्गनि दिशतीति
साङ्गोपाङ्गनिर्देशिनी भवति। (जयो० २/४३)

सकलादेशः (पुं०) प्रमाण वृत्ति। (जयो० २८/४४)

सकलाधर (वि०) कलायुक्त। (दयो० १०४)

सकलित (वि०) सम्पादित। (जयो० १२/१३२)

सकलेन्द्रियः (पुं०) समस्त इन्द्रियां, पंचेन्द्रिय।
यामि चेत्तु सकलेन्द्रियभोग-
भोगिनोनुरिह कोऽस्तु नियोगः। (समु० ५/७)

सकरङ्कः (वि०) कन्यादानार्थ कर झारी, शृंङ्गारक। झारी युक्त हस्त। (जयो० १२/५३)

सकल्प (वि०) [कल्पेन सहितं] कल्प/क्रिया सहित।

सकाम (वि०) [कामेन सह] कामना युक्त, कामी, लब्ध काम, तुष्ट, तृप्त।

सकामनिर्जरा (स्त्री०) निर्जरा का एक भेद।

सकाय (वि०) [कायेन सह] शरीर सहित, शरीरधारी। (जयो० १५/३९)

सकाल (वि०) [कालेन सहितः] काल सहित। ऋतु के अनुकूल। समयोचित।

सकालं (अव्य०) कालानुरूप, समय से पूर्व, ठीक समय पर।

सकावशस्य (वि०) कंकर सहित धान्य। (जयो० २/१७)

सकाश (वि०) [काशेन सह] दृश्य, प्रस्तुत निकटवर्ती।
'सकाशात् प्रतिष्ठां गतः' (जयो०वृ० १/१६)

सकाशः (पुं०) उपस्थिति, पड़ौस, सामीप्य।
०निकट।

सकुक्षि (वि०) [सह समानबुद्धिः] सहोदर, एक ही माता से जन्म लेने वाले।

सकुल (वि०) [कुलेन सह] कुल से सम्बंध रखने वाला। एक ही परिवार सका, सपरिवार।

सकुलः (पुं०) सम्बंधी जन, निकटवर्ती लोग।

सकुल्यः (पुं०) [समाने कुले भावः] ०एक ही परिवार सम्बंधी जन।

सकूर्चक (वि०) [सहित सकूर्चक] दाढ़ी-मूंछ युक्त। (जयो० २/१५३)

सकृत् (अव्य०) एक बार, एक समय, एक अवसर, पहले दफा का।
०साथ-साथ। (जयो० ४/४९)

सकैतव (वि०) [कैतवेन सह] धोखा देने वाला, जालसाज।

सकैतवः (पुं०) ठग, धूर्त।

सकोप (वि०) [कोपेन सह] क्रोधित, क्रुद्ध, कुपित।

सकोपं (अव्य०) क्रोधपूर्वक, गुस्से से।

सकौतुक (वि०) जिनोदभाव युक्त। (जयो० १/८६)

सक्त (भू०क०कृ०) [सज्+क्त] ०चिपका हुआ, ०संसक्त, ०जुड़ा हुआ।
०भक्त, अनुरक्त, आसक्त।
०सम्बन्ध रखने वाला। संलग्न। (सुद० १२७)

सक्तिः (स्त्री०) [सञ्ज्+क्तिन्] संपर्क, स्पर्श, मेल, सङ्गम।
०अनुराग, आसक्ति, भक्ति। (जयो० २/२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सक्तु (पुं०) सत्तू, जौ का सत्तू।
सक्थि (नपुं०) [सञ्ज्+क्थिन्] जंघा।
०हड्डी।
०गाड़ी का लट्ठा।
सक्रिय (वि०) [क्रियया सह] गतिशील, तत्पर, उद्यमशील।
सक्षण (वि०) [क्षणेन सह] अवकाश वाला। समय युक्त।
सखि (पुं०) [सह समानं ख्यायते ख्या+डिन्] मित्र, सहचर, साथी। (सुद० ७०, ९०)
सखिराजन् (पुं०) राज राजेश्वर। (वीरो० ३/८) मित्रकर, (जयो० ४/३६)
सखी (स्त्री०) सहेली, सहचरी, संगिनी, सहभागिनी।
सखीकृत् (वि०) आत्मसात्कृत्, मैत्रीकृत। (जयो० ३/५१)
सखिसमूहः (पुं०) सहेली वर्ग। आलिमण्डल। (जयो०वृ० १२/५८)
सख्यं (वि०) मित्रता, मैत्री, घनिष्टता। (वीरो० २/३८)
सखैर (वि०) साहसपूर्वक।
सखायमीरयति-सखैरः
सखं बुद्धिसहितमीरयति। (जयो०८)
सख्यः (पुं०) मित्र, सहचर, साक्षी।
सगणय (वि०) [गणेन सह] गण सहित, दल-बल सहित।
सगणः (पुं०) शिव, महादेव।
सगदेव (स्त्री०) रोगिणी की तरह। (सुद० ८४)
सगर (वि०) [गरेण सह] विषैला, विषयुक्त। सगर-नगरं त्यक्त्वा विषभेऽपि सर्भरसः, जहरीला। (वीरो० १०/१९) (सुद० ९०)
सगरः (पुं०) एक राजा।
सगरी (वि०) (दे) सारी, समस्त। (जयो० ३/७८)
सगरोदनः (वि०) विष सहित जल। (सुद० ९०)
सगर्भः (पुं०) [सह समानो गर्भो यस्य] सहोदर भाई।
सगुण (वि०) [गुणेन सह] गुणों से युक्त, सद्गुणी।
०डोरी से युक्त, रस्सी सहित।
०ज्यायुक्त।
०साहित्यिक गुणों से परिपूर्ण।
सग्रन्थः (वि०) गांठ सहित, हृदय ग्रन्थि युक्त। (सुद० १/१६)
सग्रंथकन्था (स्त्री०) फटी हुई गुदड़ी। (वीरो० ९/२५)
सगोत्र (वि०) [सह समानं गोत्रमस्य] बन्धु, कुटुम्बी, एक ही गोत्र में उत्पन्न हुआ।
सगोत्रः (पुं०) परिवार, कुल, वंश।
सग्धिः (स्त्री०) साथ-साथ, भोजन करना।
सघन (वि०) अतिगम्भीर। रथपुट। (जयो० २३/१३) (जयो० १०/१६)
सघनः (पुं०) मोथा। (जयो०२१/३४)
सघनीभूत (वि०) गाढता युक्त। (जयो० १३/४८) गढ़ी।
सङ्कट (वि०) [सम्+कटच्] [सम्+कट्+अच्] कठिनाई, डर, जोखिम।
०संकीर्ण, अभद्य।
सङ्कटं (नपुं०) भय, आपत्ति, व्याधि।
०कष्टमयी। (सुद० ९४)
०कष्ट परम्परा। (जयो०वृ० २/१२६)
'सङ्कटघटोपटोपिणी'
सङ्ककृत (वि०) कष्टकारि। (जयो०१२/१२४)
सङ्कटगत (वि०) कष्ट को प्राप्त हुआ।
सङ्कटबहुल (वि०) कष्ट की अधिकता। (जयो०वृ० १/१०९)
सङ्कटसमाहित (वि०) कष्ट से परिपूर्ण।
सङ्कथ (वि०) मनोरथ, अंतरंगाभिप्राय। (जयो० २६/२०)
सङ्कथा (स्त्री०) [सम्+कथ्+अ+टाप्] कीर्तिवार्ता, प्रासंगिक कथा, विशेष कथन। (जयो० ५/२६) समालाप।
०बातचीत, वार्तालाप।
सङ्करः (पुं०) [सम्+कृ+अप्] सम्मिश्रण, मिलावट, मेल। मिश्रण।
०धूल, रजकण, बुहारन्।
सङ्कर्षणं (नपुं०) [सम्+कृष्+ल्युट्] खींचना, आकर्षण।
०सिकुड़न।
सङ्कल् (सक०) [समृ+कल्] संग्रह करना, इकट्ठा करना, संचना करना। सङ्कलितं। (जयो० २/६५)
सङ्कल (वि०) [सम्+कल्+अच्] व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ। (जयो०वृ० २/१२५)
सङ्कलः (पुं०) [सम्+कल्+अच्] संग्रह, संचय, एकत्र करना।
सङ्कलनं (नपुं०) [सम्+कल्+ल्युट्] सम्पर्क, संगम।
०संचय, संग्रह।
०योग, जोड़।
०पकड़ा गया, हाथ में लिया गया।
सङ्कलित (भू०क०कृ०) [सम्+कल्+क्त] संचित किया गया, एकत्रित किया गया। (दयो० ६५) संग्रही। द्वात्रिंशद्वर्णात्मक-वृत्तविशेष सकंलनम्। (जयो० ६/४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०संपादित। (जयो० ३/६)

०जोड़ा गया, मिलाया गया, संकलन किया गया।

सङ्कलितुम् [सम्+कल्+तमुन्] संकलन करने के लिए। (वीरो० १६/१६)

सङ्कल्पः (पुं०) [सम्+कृप्+घञ्]

०उद्देश्य, विचार, उत्प्रेक्षा।

०इच्छाशक्ति, प्रबल भावना। (भक्ति० ५०)

०दृढ़ता, बलवती इच्छा।

सङ्कल्पता (वि०) संकल्प शीलता। (सुद० ३/२९)

सङ्कल्पजः (पुं०) कामदेव, मदन।

सङ्कल्पकारिन् (वि०) विचारशीलता। (जयो०वृ० १/४२)

सङ्कल्पजन्मन्

सङ्कल्परूपः (पुं०) ऐच्छिक भाव।

सङ्कसुक (वि०) [सम्+कस्+उकञ्] अस्थिर, चंचल, परिवर्तनशील।

०अनिमित, ०अनिश्चित।

०संदिग्ध, दुष्ट, बुरा, अहितकर।

०बलहीन, शक्ति रहित।

सङ्कारः (पुं०) [सम्+कृ+घञ्] धूल, बुहारन, कूड़ाकरकट।

सङ्कारी (स्त्री०) [सङ्कार+ङीष्] नई दुलहन।

सङ्काश (वि०) [सम्+काश्+अच्] सदृश, समान, मिलता-जुलता। (सुद० २/८)

०निकट, समीप, पास।

सङ्काशः (पुं०) दर्शन, उपस्थिति।

०पड़ौस।

सङ्किलः (पुं०) [सम्+किल्+क] मशाल, जलती हुई लकड़ी।

सङ्कीड (वि०) साथ में खेलने वाला। (समु० ३/४२)

सङ्कीर्ण (भू०क०कृ०) [सम्+कृ+क्त] अव्यवस्थित।

०बिखरा हुआ।

०तुच्छ, संकुचित, कुंठित।

०तंग।

सङ्कीर्णः (पुं०) संकर जाति का व्यक्ति।

सङ्कीर्णजातिः (स्त्री०) वर्णसंकर।

सङ्कीर्णधारा (स्त्री०) तुच्छ धारा।

सङ्कीर्णयोनि (वि०) वर्णसंकर युक्त योनि।

सङ्कीर्णयुद्धं (नपुं०) अव्यवस्थित लड़ाई। रणसंकुल।

सङ्कीर्तनं (नपुं०) [सम्+कृत्+णिच्+ल्युट्]

०प्रशंसा करना, गुणगान करना।

०सराहना, स्तुति।

सङ्कीर्तित (वि०) वर्णित। (जयो०वृ० २८/३९)

सङ्कुच् (अक०) संकुचित होना, संकीर्ण होना। संकोच करना। (जयो० १७/५८) सङ्कुचति, सङ्कोचमञ्चति। (जयो० ११/२५)

सङ्कुच (वि०) दृढद्व कुच। (जयो० ३/६०)

सङ्कुचता (स्त्री०) संकुचित रहना। (सुद० ७/४)

सङ्कुचित (भू०क०कृ०) [सम्+कुच्+क्त] सिकोडता हुआ, संक्षिप्त किया हुआ, संकुचित किया हुआ।

०ढका हुआ, बन्द किया हुआ।

०आवृत, आवरण।

०हीन, तुच्छ।

सङ्कुचितत्व (वि०) संक्षिप्तिकरण। (वीरो० ९/४३)

सङ्कुल (वि०) [सम्+कुल्+क] व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ। (जयो० १३/७४)

०आकीर्ण, परिपूर्ण। (वीरो० १/३९)

०संकीर्ण। (जयो० १०/६०)

०अव्यवस्थित, विकृत।

सङ्कुलं (नपुं०) भीड़, जमघट। संग्रह, छत्ता झुण्ड। समूह।

०रणसंकुल। असंगत।

सङ्कृष्ट (वि०) खींची गई। (जयो० ११/२९)

सङ्केतः (पुं०) [सम्+कित्+घञ्] इंगित, इशारा।

०चिह्न, निशान। (सुद० २/३२)

०प्रतीक, अंकन। मुद्रा।

०प्रतिबन्ध, शर्त।

सङ्केतकः (पुं०) [सङ्केत+कन्] अहमति, सम्मिलन।

०नियुक्ति, निर्देशन।

सङ्केतकालः (पुं०) सम्मिलन का समय। (जयो०वृ० १२/१२९)

सङ्केतगृहं (नपुं०) निर्दिष्ट स्थान।

सङ्केतनिकेतनं (नपुं०) चिह्नित घर।

सङ्केतित (वि०) [सङ्केत+इतच्]

०निर्धारित, निर्देशित, चिह्नित।

०ठहराया हुआ, निर्दिष्ट। (जयो०वृ० ६/२०)

०आमन्त्रित, बुलाया हुआ।

सङ्कोचः (पुं०) [सम्+कुच्+घञ्]

०लज्जा। (वीरो० ५/२१, २२/२३)

०कुड्मली भाव। (वीरो० ५/२६)

०संक्षेपण, न्यूनीकरण,

०सीचना, ०त्रास, भय।

०बंद करना, मूंदना, बांधना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सङ्कोचं (नपुं०) केसर, जाफरान।
सङ्कोचकरणं (नपुं०) न्यूनीकरण। (दयो० ६१)
सङ्कोचतती (वि०) लज्जालुता । (जयो० १७/१२)
सङ्कोचदशा (स्त्री०) मुद्रितदशा।
'वनवासिषु सङ्कोचदशा सा' (सुद० ९७)
सङ्कोचनं (नपुं०) निमीलन। (जयो०वृ० १५/४९)
सङ्कोचशलि (पुं०) लज्जालु। (जयो० १६/४५)
सङ्कोचशील (वि०) विनम्रीभूत, समेटते हुए। (जयो० १/१००)
सङ्कोचवर्जित (वि०) निर्लज्जता। (जयो०)
सङ्कृतिः (स्त्री०) संकटनामक दोष। (जयो० २६/८२)
सङ्क्रन्दनः (पुं०) [कृष्ण]
सङ्क्रमः (पुं०) [सम्+क्रम्+घञ्]
०सहमति, संगमन।
०संक्रान्ति, यात्रा।
'समीचीनशामित क्रमः शक्लौपरिपाटयाम् इति वि० (जयो० ५/७७)
०स्थानान्तरण, प्रगति। गमन। (जयो० २३/३६)
सङ्क्रमं (नपुं०) कठिन मार्ग, संकरा मार्ग।
०सेतु, पुल।
०संक्रमण। (समु० ८/१५)
सङ्क्रमणं (नपुं०) [सम्+कम्+ल्युट्]
०संक्रान्ति, प्रगति, गमन, यात्रा।
०संगमन, सहमति।
०एक बिन्दु से दूसरी बिन्दु पर जाना।
सङ्क्रमित (वि०) चलायमान। (जयो० ५/७३)
सङ्क्रमोदित (वि०) प्रसिद्धि प्राप्त हुई। (जयो० २२/२०)
सङ्क्रान्त (भू०क०कृ०) [सम्+क्रम्+क्त]
०संगमन, मेल, मिलान।
०हस्तान्तरण, स्थानान्तरण।
०प्रतिमा, प्रतिबिम्ब।
सङ्क्रीडनं (नपुं०) [सम्+क्रीड्+ल्युट्] साथ में खेलना, एक साथ कीड़ा करना।
सङ्क्रीणं (नपुं०) खरीदना। (जयो० ३/६१)
सङ्क्लेदः (पुं०) [सम्+क्लिद्+घञ्] तरी, नमी।
सङ्क्रशित (वि०) क्लेश सहित। (जयो० २/१२७)
सङ्क्लेश (पुं०) दुःख। (वीरो० १८/११)
सङ्क्लेशकृतत्व (वि०) क्लेश करने वाला। (सुद० २/२६)
सङ्क्लेशदेशः (पुं०) कष्टभाव। (जयो० २६/९७)
सङ्क्षयः (पुं०) [सम्+क्षि+अच्] विनाश, घात, हानि, क्षय। उपभोग।
०अन्त, प्रलय।
सङ्क्षालन् (नपुं०) धोना। (जयो० २७/९)
) संघसङ्गमात्। (सुद०४/२९)
सङ्गिरा (स्त्री०) ओष्ठ वचन। (जयो० ५/५५)
सङ्गिन् (वि०) [सञ्ज्+घिनुण्]
०संयुक्त, मिला हुआ।
०अनुरक्त, स्नेहशील।
०संगम युक्त, संगत सहित।
सङ्गीत (भू०क०कृ०) [सम्+गै+क्त] सहगान, सामूहिक गान, मिलकर गाया गया गान।
सङ्गीतं (नपुं०) सामूहि ज्ञान/गायन, गान, मधुर तान।
०गोष्ठी, सहसंगीत।
सङ्गीतगुणः (पुं०) नीचे का गुण, गायन की विशेषता। (जयो० २८/२९)
सङ्गीतशाला (स्त्री०) गायन शाला।
सक्षिप्तपदं (नपुं०) लघुमंदचरणक्षेप। (जयो० २४/५२)
सङ्क्षिप्तिः (स्त्री०) [सम्+शिप्+क्तिन्]
०भींचना, संक्षेपण।
०फेंकना, भेजना।
सङ्क्षेपः (पुं०) [सम्+क्षिप्+घञ्]
०छोटा करना।
०लाघव, संहति, ह्रास।
०निचोड़, सरांश।
०फेंकना, भेजना।
०अपहरण करना।
सङ्क्षेपणं (नपुं०) [सम्+ष्विप्+ल्युट्]
०लघूकरण, छोटा करना।
०ह्रस्वीकरण, संक्षिप्तिकरण।
सङ्क्षोभः (पुं०) [सम्+क्षुभ्+घञ्]
०आंदोलन, कपकंपी।
०बाधा, हलचल।
०अहंकार, अभिमान।
०दुःख, व्याकुलता, कष्ट।
सङ्ख्यं (नपुं०) [सम्+ख्या+क] संग्राम, युद्ध, लड़ाई।
सङ्खननं (नपुं०) खुदवाना। (वीरो० २२/२४)
सङ्ख्या (स्त्र) [सम्+ख्या+अङ्+टाप्]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०गणना, गिनती।
०जोड़, संग्रह, गुणन।
०हेतु, समझ, प्रज्ञा।
०रीति, पद्धति, विचार, विमर्श।

सङ्ख्यात (भू०क०कृ०) [सम्+ख्या+क्त] गिना हुआ, गणना किया हुआ।
०गणित किया गया।
०संख्या का क्रम।

सङ्ख्यातं (नपुं०) अंक, गिनती।

सङ्ख्याति (स्त्री०) प्रसिद्धि, प्रशंसा। (जयो० ११/८८)

सङ्यातीत (वि०) असंख्य, अनगिनत। अगणित। (जयो०वृ० १/९४)

सङ्ख्यावाचकः (पुं०) संख्याबोधक अंक।

सङ्गः (पुं०) [सञ्ज्+मात्रे घञ्] संसर्ग। (जयो० १२/७६)
०सम्मिलन, संगम स्थान।
०संस्पर्श।
०मेल, मिलान।
०संगति, साहचर्य, मैत्री, अनुराग, प्रीति। अनुरक्ति। (जयो०वृ० १/२०)
०आसक्ति। मुठभेड़, लड़ाई।

सङ्गकृत (वि०) प्रसंग कर्ता। (जयो० १७/२४)

सङ्गच्छन् (वि०) साथ चलने का इच्छुक। (सुद० १२३)

सङ्गजगं (वि०) गजाकार। (जयो० ८/११)

सङ्गडः (पुं०) साधन। (जयो० २/५८)

सङ्गतहा (वि०) रोग देने वाली। संगं ददातीति (जयो० १४/४३)

सङ्गणिका (स्त्री०) [सम्+अण्+ण्वुल्+टाप्] श्रेष्ठ प्रवचन, अनुपम उपदेश।

सङ्गत (भू०क०कृ०) [सम्+गम्+क्त] मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
०स्पर्शित। संसर्गित, सम्मिलित।
०संचित, संयोजित, एकत्रित।

सङ्गतं (नपुं०) [सम्+गम्+क्त] सम्मिलन, मिलाप, मेल।
०वर्णित। (जयो०वृ० १/११३)
०समन्वित। (जयो० १९/८३)
०समाज, मण्डली।
०परिचय, मित्रता घनिष्टता।
०सुसंवत वाणी।

सङ्गतदृष्टि (स्त्री०) आसक्त दृष्टि। (वीरो० २१/२२)

सङ्गतात्मन् (वि०) संश्लिष्टात्मन्। (जयो० २४/१९)

सङ्गतिः (स्त्री०) [सम्+गम्+क्तिन्]
०संगम, मेल, मिलना। (सुद० ९१)
०संसर्ग, सहयोगिता, साहचर्य।
वारीणां किल संस्काराभावतः काऽस्य संगतिः (हित० २३)
०मैथुन, संभोग।
०सहावस्थान। (जयो० २/४७)
०दुर्घटना, दैवयोग, आकस्मिक घटना।
०संगत, सम्बंध
०दर्शन करना, बारबार जाना।

सङ्गम् (सक०) पहुंचना, जाना-सङ्क्मिष्यासि। (दयो० १०४) आगमन् (जयो० ६/१२९)

सङ्गमः (पुं०) [सम्+गम्+अप्] मिलना, मेल। (जयो० १३/९१)
०साहचर्य, संगति, सहभागिता। (सुद० ८६)
०सहकारिता, परस्परिक सम्बंध।
०संयोग। (जयो० १०/२४)
०संपर्क, स्पर्श।
०मैथुन, रति क्रिया।
०योग्यता, अनुकूलन।
'लोपेऽपि गङ्गा-यमुना-सरस्वतीनां सङ्गमः प्रयाग इति सुप्रसिद्धम्' (जयो० ६/१०७)
०अनुरक्ति, अनुराग। (जयो० ४/५५)

सङ्गमतीर्थः (पुं०) प्रयागराज। (जयो०वृ० ६/४३)

सङ्गमनं (नपुं०) [सम्+गम्+ल्युट्]
०मिलना, मेल, संगति।
०साहचर्य। (भक्ति० ९)
०संगत, सम्बन्ध। (सुद० ११९)

सङ्गमात्तर (वि०) संगम युक्त। (जयो०वृ० ४/५५)

सङ्गमान्तरवती (वि०) संगम वाली।
'सङ्गभान्तरं द्वितीयसङ्गमोऽस्या,
अस्तीति सङ्गभान्तरवती युवती। (जयो०वृ० ४/५५)

सङ्गमित (वि०) प्रशंसा योग्य। संगम के योग्य। (जयो० ५/६१)

सङ्गरः (पुं०) [सम्+गृ+अप्]
०प्रतिज्ञा, करार।
०कलह-नारी-नरयोश्च सङ्गरः। (वीरो० ९/८)
०रणकार्य। (जयो० ८/८६)
०संग्राम, युद्ध, लड़ाई। (जयो० १/७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०स्वीकृति।

०दुर्भाग्य, संकट। ०विष।

सङ्गराश्रयः (पुं०) युद्धाश्रय। (जयो० २१/३८)

सङ्गरलेकमूर्ति (स्त्री०) पूर्ण विषभरी मूर्ति। (जयो० १/७)

सङ्गरल (वि०) रण करने वाला। (जयो० १/७)

सङ्गवः (पुं०) [संगता गावो दोहनाय अत्र] चरगाह का समय।

सङ्गसुखं (नपुं०) गृहवास सुख। (जयो० २५/३१)

सङ्गाढसंदेशिन् (वि०) सुदृढ़संदेशकारी। (जयो० २३/२८)

सङ्गादः (पुं०) [सम्+गद्+घञ्] प्रवचन, वार्तालाप, समालाप।

सङ्गामः (पुं०) समागम।

तत्रास्याः पुण्ययोगेनाप्यार्यिका।

सङ्गालित (वि०) छाते हुए। सङ्गलिते वारिणि जीवजन्तु। (वीरो० १९/२१

सङ्गीतशास्त्रं (नपुं०) गायनशास्त्र।

सङ्गीति (स्त्री०) विचारगोष्ठी, श्रुताचार्य की विचार गोष्ठी, वाचना, आगम-विचार गोष्ठी। (सुद० ८२)

०उदय। (जयो० १४/६)

दिगन्तव्याप्तकीर्तिमयः

प्रथिमतषट्चरण सङ्गीतिः। (सुद० ८२)

सङ्गीतिपरायणः (पुं०) गोष्ठी में निपुण। (सुद० १२३)

सङ्गीर्ण (भू०क०कृ०) [सम्+गृ+क्त]

०सम्मत, स्वीकृत।

०प्रतिज्ञात। समर्थित। (जयो० १/६९) युक्त। (जयो० ३/३९)

सङ्गुणित (वि०) पूर्वापेक्ष गुणवत्। (जयो०वृ० ११/१०)

सङ्गुप्त (वि०) निग्रहयुक्त। आवृत। (सुद० ७७)

सङ्गुष्ट (वि०) अंगुष्ट सहित।

सङ्ग्रहः (पुं०) [सम्+ग्रह्+अप्]

०समूह। (जयो० २१/५)

०संचय। (जयो० २/८२)

'को न संवदति सङ्ग्रहे पुनर्मो,

घृणोद्धरणमात्रवस्तुनः। (जयो० २/८२)

०उत्तम ग्रह। (जयो०वृ० ५/५१)

०सभासंघ-करसौम्यमूर्तिर्मम कौमुदाश्रयोऽस्मिन्

सङ्ग्रहे स्यातु शनैश्चरात्यहम्। (जयो० ५/९१)

०भरना, संचय करना, संग्रह करना।

०अवधारणा, संकलन।

०सारांश, सार, संक्षेपण।

०जोड़, राशि।

०प्रयत्न, चेष्टा।

०उल्लेख, संकेत।

सङ्ग्रहणं (नपुं०) [सम्+ग्रह्+ल्युट्]

०संलन, संचय। (जयो० १/१६)

०मंढना, जड़ना।

०आशा स्वीकार।

०स्वीकार करना।

०मैथुन, स्त्रीसंभोग।

०व्यभिचार।

०पकड़ना, लेना।

०सहारा देना।

०प्रोत्साहित करना।

सङ्ग्रहणता (वि०) जकड़े रहने वाला।

सङ्ग्रहिन् (वि०) संग्राहक। (जयो०वृ० २/२१, जयो० २/१०७)

सङ्ग्रहीतृ (पुं०) [सं+ग्रह्+तृच्] सारथि।

सङ्ग्रहणानुरागः (पुं०) उपचर्याकरणानुराग। (जयो० २७/७)

सङ्गुणित (वि०) गुण सहित। (जयो० ११/१०)

सङ्ग्रामः (पुं०) [सङ्ग्राम्+अच्] रण, युद्ध। (जयो० ६/३८)

०समाहव/युद्ध। (जयो०वृ० /३२)

सङ्ग्रामकर (वि०) युद्ध करने वाला। (जयो० ७/११३)

सङ्ग्राहः (पुं०) [सम्+ग्रह्+घञ्] ग्रहण करना। पकड़ना, ले लेना।

०हाथ डालना।

सङ्ग्राहक (वि०) ग्रहण करने वाला। (सम्य० ९६)

सङ्ग्राहिन् (वि०) पकड़ने वाला, छीनने वाला।

संग्रहण तल्लीन, संगृह्णातीति संग्राही। (जयो०वृ० २८/४५)

सङ्ग्राहिणी (वि०) ग्रहण करने वाली।

'कविता च सम्यग्रूपाणां सुप्तिङन्तानां

पदानां शब्दानां सङ्ग्रहिणी' (जयो०वृ० ३/४१)

सङ्घः (पुं०) [सम्+हन्+अप्] ०समूह, ०समुदाय, ०संगठन, ०झुण्ड, ०समुच्चये, ०संग्रह, चतुर्विध संघ।

सङ्घगत (वि०) समूह युक्त।

सङ्घचारिन् (वि०) साथ में चलने वाला।

सङ्घटनं (नपुं०) समुदाय, समुच्चय, समूह, एकता, सामञ्जस्य। (जयो० ५/९०)

०निर्माण। (जयो० ११/७५)

पदयोर्निर्माणकाले संघटनेसमये' (जयो०वृ० ११/७५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सङ्घटना (स्त्री०) सम्मेल, सम्मिलन।
०एकता, एकरूपता।
सङ्घटित (वि०) [सम्+घत्+णिच्+क्त]
०सम्मिलित, एकत्रित, समूहगत।
'स्वाहितार्थमेव धर्माचरणे सङ्घटिता भवन्ति। (जयो०वृ० २/२०)
सङ्घटिता (वि०) घटित होती हुई।
उद्धूलिता धूलिरहस्करा याप्यपेत्य
सा मूर्ध्नि नुरस्त्विलायाः।
इमां सदुक्ति वलये प्रसिद्धा-
मुपैति मे संघटिता सुविद्धा।। (दयो० ९६)
सङ्घट्टः (पुं०) [सम्+घट्ट+अच्]
०टक्कर, मुठभेड़।
०संघर्ष, भिडंत।
०सम्मिलन, मेल, मिलन।
०आलिंगन, भेंट।
सङ्घट्टनं (नपुं०) [सम्+घट्ट+ल्युट्]
०संघर्षण, रगड़ना।
०संपर्क, मेल।
०पारस्परिक चिपकना।
०मिलना।
सङ्घतः (पुं०) [सम्+हन्+घञ्] हत्या, वध।
०समुदाय, समुच्चय, समूह।
०संघ, मिलाप, समाज।
सङ्घशस् (अव्य०) [संघ+शस्] झुंडों में, दल बनाकर।
सङ्घर्षः (वि०) [सम+घृष्+घञ्]
०टक्कर, भिडंत, जूझना।
०लड़ना, भिड़ना।
०प्रतिद्वन्द्विता, प्रतिस्पर्धा।
०होड़।
०ईर्ष्या, डाह।
सङ्घाटिका (स्त्री०) [सम्+घट्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] जोड़ा, सम्पत्ति।
०दूती, कुटनी।
सङ्घाणकः (पुं०) नाक का मल, सिणक।
सङ्घृणा (स्त्री०) निरादर। (जयो० २१/७९)
सङ्घूर्ण (अक०) हिलना। (जयो० १८/९१)
सङ्घूर्णमान (व०कृ०) हिलता हुआ। (जयो० १८/४१)

सचकित (वि०) विस्मित, आश्चर्यजनक।
०भयभीत।
सचकितं (अव्य०) चौकन्ने होकर, विस्मित होकर।
सचिः (पुं०) [षच्+इन्] मैत्री, मित्र।
सचित्त (वि०) सजीव, चेतनतन युक्त।
धूलिः पृथिव्याः कणशः सचित्तास्तत्कायिकैरार्हतसूक्तवित्तात्। (वीरो० १९/२८)
सचिल्लक (वि०) [सह क्लिन्ने, सहस्य स+कप्] चकाचौंध युक्त अक्षि।
सचिवः (पुं०) [सचि+वा+क] ०मन्त्री। (समु० ३/२१), (जयो०वृ० ३/१४) परामर्शदाता।
०मित्र, सहचर, अनुगामी।
तत्र तस्य सचिवेन सदक्तं वाच्यमेव समये खलु युक्तम्। (जयो० ४/२२)
०सम्पन्न। (सुद० ३/३०)
सचिहितकृत (वि०) मैत्री पूर्ण व्यवहार करने वाला। (दयो०)
सचेतन (वि०) जीवधारी, प्राणवान्। (मुनि० २५)
०विवेकपूर्ण।
सचेतस् (वि०) [सह चेतसा] प्रज्ञावान्। विचाशील (जयो० १४/३५)
०भावुक, ०एकमत। चेतनायुक्त।
०जाग्रत।
सचेता (स्त्री०) विचारशीला स्त्री। (जयो० १४/३५)
सचेल (वि०) [सह चेलेन] वस्त्रों में सुसज्जित, वस्त्र सहित।
सचेलकत्व (वि०) सचेकता, वस्त्र सहित।
सचेष्टः (पुं०) [सच्+अच्, तथा भूतः सन् इंष्टः] आम्र वृक्ष।
सचेष्ट (वि०) चेष्टा सहित।
सच्च्यमरीचय (वि०) अरण्य गाय के संग्रह युक्त।
सतीना चमरीणां वनगवां च यस्य संग्रहस्य। (जयो० २४/२४)
सच्चवचा (स्त्री०) सत्यवादी। (समु० ६/३७)
सच्चाक्ष (वि०) सत्काम। (जयो० १०/४५)
सच्चितत्त्व (वि०) सौमनस्य। (जयो०वृ० ११/७४)
सच्चिदानन्दः (पुं) सम्यक् आनन्द रूप आत्मा। (सुद० ४/१)
सच्छिर (वि०) शिरसहित। (जयो० २/१३८)
सच्छिद्रकर (वि०) मन्दफल। (जयो०वृ० १२/१३१)
सच्छकुन (वि०) शोभन लक्षण। (जयो० ३/८६)
सजन (वि०) [सह जनेन] प्राणियों सहित।
सजनः (पुं०) बन्धु, कुटुम्बीजन, पारिवारिक लोग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सजन्य (वि०) मातृ सहित।
जन्यया मुदा सहितः सजन्यो
जन्या मातृसखीमुदो' इति वि (जयो० २७)
०जन समुदाय युक्त।
सजप (वि०) जपा सहितेषु-सजपेषु, जपा कुसुम सहित। (जयो० ६/६४)
सजल (वि०) [सह जलेन] जल युक्त, जल सहित।
०आर्द्र, गीता तर।
सजाति (वि०) [समान जातिः अस्य] एक ही जाति का, एक ही वर्ग का।
सजातिसमूहः (पुं०) कुटुम्बीजन, जाति के लोग। परिवार। (जयो०वृ० ५/३)
सजातीय (वि०) समान वर्ग के, एक से, एग वर्ग के।
सजीव (वि०) चेतनता सहित।
सजीववेशः (पुं०) दिगम्बर वंश। जन्माज बालक का वेष। (भक्ति० ४४)
सजुष् (वि०) [सह जुषते-जुष्+क्विप् सहस्य स]
०प्रिय, अनुरक्त।
०मित्र, साथी, सम्बंधी।
सजुष् (अव्य०) सहित, युक्त।
सज्ज (वि०) [सस्ज्+अच्] तत्पर, तैयार किया हुआ।
०वस्त्रों से सुसज्जित।
०समयानुकूल, परिपूर्ण, प्रशस्य। (जयो० ७/५७)
सज्जघनं (नपुं०) सुश्रोणी-श्रेणी पुरभाग। सज्जानि धनानि च तानि। (जयो० ३७/११३)
सज्जङ्घभावः (पुं०) तल्लीनता के भाव।
०दृढ़ जंघा युक्त-सती समीचीना चासौ
जङ्घा च तस्या भावं भजतो धारयतः'
सुदृढजङ्घावत इत्यर्थः। (जयो०वृ० १/४८)
सज्जनः (पुं०) भद्र व्यक्ति, उत्तम व्यक्ति। (जयो० १/१८) (सुद ८२) सत्पुरुष। (जयो० २/१२)
'सन्ति गेहिषु च सज्जना अहा,
भोसंसृतिशरीरानि, स्पृहा।
तत्त्ववर्त्मनिरता यतः
सुचित्रप्रस्तरेषु मणयोऽपि हि क्वचित्। (जयो० २/१२)
सज्जनं (नपुं०) [सस्ज्+णिच्+ल्युट्]
०बांधना, जकड़ना, धारण करना।
०सुसज्जित करना।
०चौकीदार, पहरेदार।
०घाट।
सज्जक्रमकर (वि०) सज्जनक्रम पर चलने वाला। (जयो० ६/८१)
सज्जनता (वि०) भद्रता, समीचीनता, श्रेष्ठता।
समी समीचीना चासौ जनता तया,
पक्षे सज्जनस्य भावः सज्जनता तया। (जयो० १४/४०)
सज्जनपतिः (पुं०) शिरोमणि। (जयो० १/१०५)
सज्जनपालकः (वि०) सत्पुरुष पालक। (समु० ४/२३)
०नृप, राजा।
सज्जनपुरुषः (पुं०) नृराट्, नृपराज। (जयो०वृ० २/५९)
सज्जनसहवासित्व (वि०) सत्समागत युक्त। (जयो०वृ० ३/४)
०नक्षत्र सहित। (जयो०वृ० ३/४)
सज्जनोहः (पुं०) सज्जनों का ज्ञान। (सम्य० ११०)
सज्जवाणी (स्त्री०) समयानुकूल वाणी। (जयो०वृ० ७/५७)
सज्जल (वि०) उत्तम जल। (जयो० ३/१०, जयो० १/३०)
सज्जा (स्त्री०) [सस्ज्+अ+टाप्] सजावट, चित्रकारी।
०वेशभूषा।
०कवच, सैन्य सुरक्षा कवच।
सज्जाति (वि०) उत्तम जाति वाला। (जयो०वृ० १२/७३) विशुद्ध जाति।
सज्जित (वि०) [सज्जा+इतच्] सजाया हुआ, वस्त्र धारण किये हुए।
०तैयार किया हुआ।
०संवारा गया, सुसज्जित किया गया।
सज्जीकरणं (नपुं०) [सत्क्रिया] उत्तम कार्य। (जयो०वृ० २१/४)
सज्जीकृत (वि०) सम्यक् सम्पादित। (जयो० ३/१०२)
सज्य (वि०) [सहज्यया-सहाय सः] धनुष की डोरी सहित। डोरी से कसा हुआ।
सज्योत्स्ना (स्त्री०) [सह ज्योत्स्नया] चांदनी रात, स्वच्छ रजनी।
सञ्गद् (वि०) कथित कहा, सञ्गाद। (सुद० ११०)
सञ्चः (पुं०) [संचीयते अत्र सम्ः+चि+ड] पत्र संग्रह।
सञ्चत् (पुं०) [सम्+चत्+क्विप्] ठग, धूर्त, दगाबाज।
सञ्चयः (पुं०) [सम्+चि+अच्]
०ढेर, राशि, समूह, मण्डन। (सुद० १०७)
०संग्रह। ०निश्चित। (जयो० २३/५९)
०एकत्र करना, इकट्ठा करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सञ्चयनं (नपुं०) [सम्+चि+ल्युट्]
०चयन, चुनना, इकट्ठा करना।

सञ्चर (अक०) ०घूमना, ०यात्रा करना, ०पर्यटन करना। (जयो० ७/२) ०व्यवहार करना। (जयो० २/१८)
०गमन करना। (जयो० २/३२)

सञ्चरः (पुं०) [सम्+चर्+क]
०पथ, रास्ता, मार्ग।
०संकरा मार्ग, संकीर्ण पथ।
०प्रवेश द्वार।
०शरीर, देह।

सञ्चरणं (नपुं०) [सम्+चर्+ल्युट्] ०गमन, ०गति, ०जाना। (जयो० १/५८)
०प्रस्थान करना, यात्रा करना।

सञ्चरितपदं (नपुं०) समीचीन चरित पद। समीचीनं चरितं ददादीति सञ्चरितपदं। (जयो० १४/९६)

सघृण (वि०) घृणोपादक। (जयो० २५/२६)

सङ्घटनं (नपुं०) समुदाय, समुच्चय, समूह, एकता, सामञ्जस्य। (जयो० ५/९०)

सञ्चल (वि०) [सम्+अल्+अच्]

सञ्गद् (वि०) कथित, कहा सञ्जगाद। (सुद० ११०)

सञ्चः (पुं०) [संचीयते अत्र सम्-चि+ड] पत्र संगह।

सञ्चत् (पुं०) [सम्+यत्+क्विप्] ठग, धूर्त, दगाबाज़।

सञ्चयः (पुं०) [सम्+चि+अच्] ०ढेर, राशि, समूह, भंडार। (सुद० १०७)
०संग्रह।
०निचित। (जयो० २३/५९)
०एकत्र करना, इकट्ठा करना।

सञ्चयनं (नपुं०) [सम्+चि+ल्युट्] ०चयन, चुनना, इकट्ठा करना।

सञ्चर (अक०) ०घूमना, ०यात्रा करना ०पर्यटन करना। (जयो० १/२)

सञ्चरः (पुं०) [सम्+चर्+क] ०पथ, रास्ता, मार्ग।
०संकरा मार्ग, संकीर्ण पथ।
०प्रवेश द्वार।
०शरीर, देह।

सञ्चरणं (नपुं०) [सम्+चर्+ल्युट्] गमन, गति, जाना। (जयो०वृ० १/५८)
०प्रस्थान करना, यात्रा करना।

सञ्चरितपदं (नपुं०) समीचीन चरितपद। समीचीनं चरितं ददादीति सञ्चरितपदं। (जयो० १४/९६)

सञ्चल (वि०) [सम्+चल्+अच्] ०कांपने वाला, चलायमान होने वाला।

सञ्चलता (वि०) आवेल्लता (जयो०वृ० ३/११२)

सञ्चाय्यः (पुं०) [सम्+चि+ण्यत्] एक यज्ञ विशेष।

सञ्चारः (पुं०) [सम्+चर्+घञ्] गमन, गति, यात्रा।
०पारणा।
०पथ, रास्ता, मार्ग।
०दर्रा, सड़क।
०गतिमान् करना।
०संक्रमण, स्पर्शसंचार। (जयो०वृ० १७/५९)
०मार्गदर्शन करना।
०कठिनाई, दुःख।

सञ्चारक (वि०) [सम्+चर्+ण्वुल्] संक्रमण करने वाला।
०नेतृत्व प्रदान करने वाला।

सञ्चारकः (पुं०) नेता, पथ प्रदर्शक।

सञ्चारणं (नपुं०) [सम्+चर्+णिच्+ल्युट्] गतिशील होना, संप्रेषण, भेजना।
०नेतृत्व करना, आगे होना। (जयो० १/३१)

सञ्चारिका (स्त्री०) [सम्+चर्+ण्वुल्+टाप्] दूती, कुटनी।
०संदेशवाहिका।
०दम्पत्ती।

सञ्चारिन् (वि०) [सम्+चर्+णिनि] ०गतिशील, गमनीय।
०पर्यटन, भ्रमण।
०परिवर्तनशील,
०अस्थिर, चंचल।
०दुर्गम, अगम्य।
०क्षण भंगुर।
०आनुवांशिक, परम्परागत।

सञ्चारिन् (पुं०) पवन, वायु, हवा। ०धूप।

सञ्चाली (स्त्री०) [सम्+चल्+ण+ङीप्] गुंजों की झाड़ी।

सञ्चित (भू०क०कृ०) [सम्+चि+क्त] संगृहीत, एकत्रित, इकट्ठा किया गया, रक्खा गया, जमाया गया।
०जोड़ा गया, गिना गया।
०युक्त, सहित, सुसम्पन्न।
०बाधित, अवरुद्ध, भरा हुआ।

सञ्चितिः (स्त्री०) [सम्+चिन्त्+ल्युट्] विचार विमर्श।
* अनुचिन्तन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सञ्चेतना (स्त्री०) ज्ञानचेतना। (सम्य० ४१, ११७)

सञ्चूर्ण (नपुं०) [सम्+चूर्ण+ल्युट्] चूर चूर करना, खण्ड खण्ड करना, पीसना, मसलना।

सञ्चेत्ये-चेतना को प्राप्त होता है। (सम्य० ४१)

सञ्छन्न (भू०क०कृ०) [सम्+छद्+क्त] लिपटा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ।

०वस्त्र धारित।

सञ्छादनं (नपुं०) [सम्+छद्+णिच्+ल्युट्] ढकना, छिपाना। (वीरो० ५/१४)

सञ्छादनवृत्ति (स्त्री०) छिपाने की प्रवृत्ति। (जयो० २३) संञ्चेत सह चेतनातया। चेतना सहित (सम्य० ४०)

सञ्ज (अक०) संलग्न होना, जुड़े रहना, चिपके रहना।

०अच्छा होना। (जयो० २/२)

०सञ्जायते-तत्पर रहना। (जयो० १९/९४) * उद्यत होना। (मुनि० २२/)

सञ्ज (सक०) जकड़ना, फेंकना, रखना, मिलाना, जोड़ना। (सुद० १०३) सञ्जायते झरना-सञ्जातातानि (जयो० ३/९०)

०प्रेरित करना, निर्दिष्ट करना। (मुनि० १८)

सञ्जः (पुं०) [सम्+जन्+उ] ब्रह्मा। ०शिव।

सञ्जय (वि०) जीतना, (सुद० १०४) ०जय, विजय।

सञ्जयः (पुं०) [सम्+जि+अच्] धृतराष्ट्र के सारथि का नाम।

सञ्जल्पः (पुं०) [सम्+जल्प्+घञ्] ०वार्तालाप, बातचीत।

०शोरगुल, हंगामा।

सञ्जवनं (नपुं०) [सम्+जु+ल्युट्] चतु:शाल, आंगन युक्त गृह।

सञ्जा (स्त्री०) [सञ्ज्+टाप्]

सञ्जात (वि०) उत्पन्न हुआ। (सुद० ३/३०)

सञ्जीविता (स्त्री०) अपहृता, अपहरण की गई। (सुद० ८८)

सञ्जीवनं (नपुं०) [सम्+जीव्+ल्युट्] जीवनाधार भूत। (जयो० २६/७५)

सञ्जीवनभृत् (वि०) जीवन दान देने वाला। (वीरो० १९/३०)

सञ्जजीवनी (स्त्री०) एक औषधि, जीवन दान देने वाली औषधि।

सञ्जजीवनीयः (पुं०) जीवनदायक औषधि 'जीवनदं जीवनदायकं सञ्जीवनीयमौषधं' (जयो०वृ० ६/७५)

सञ्जीविनी (स्त्री०) एक औषधि, अमृतत्व युक्त औषधि।

सञ्जीविनीव सा शक्तिर्विषा ज्योत्स्नेव मे विधो।
समभाति जगन्मान्या किन्त्वियं तु प्रसन्नता।।
(दयो० ११०)

सञ्ज्योतिर्धामः (पुं०) परम ज्योति के धाम। भुवि देवा बहुशः स्तुता भो सञ्ज्येतिर्धाम' (सुद० ७३)

सञ्ज्वल् (अक०) जलना, दाह होना। (सम्य० १०५)

सञ्ज्वलनं (नपुं०) जलन, दाह, पीड़ा।

०सञ्ज्वलन कषाय।

सञ्ज्ञ (वि०) [सम्+ज्ञा+क] चेतना युक्त, सचेतना। ०होश प्राप्त।

सञ्ज्ञं (नपुं०) सुगन्धित काष्ठ।

सञ्ज्ञपनं (नपुं०) [सम्+ज्ञा+णिच्+ल्युट्] हत्या, वध, घात।

सञ्ज्ञा (स्त्री०) [सम्+ज्ञा+अङ्+टाप्] चेतना, होश। चैतन्य शक्ति।

०जानकारी, समझ।

०बुद्धि, मन।

०संकेत, इंगित, इशारा, निशान, चिह्न।

०नाम, पद, अभिधान।

०संज्ञा शब्द विशेष-व्याकरण शास्त्रोक्ते संज्ञो तद्वान् (जयो०वृ० १/९५)

सञ्ज्ञाकरणार्थ (वि०) संज्ञा शब्द बनाने के लिए। (जयो०वृ० १/९५)

सञ्ज्ञात (वि०) सञ्ज्ञात्मक शब्द वाले।

सञ्ज्ञात्मक (वि०) सञ्ज्ञाशब्द युक्त।

सञ्ज्ञानं (नपुं०) जानकारी, समझ।

सञ्ज्ञान्तरकरणार्थ (वि०) सञ्ज्ञा शब्दों की विधि बतलाने वाले।

सञ्ज्ञापनं (नपुं०) [सम्+ज्ञा+णिच्+ल्युट्] ०वध, घात, हत्या।

०अध्यापन, शिक्षण।

०सूचना।

सञ्ज्ञापत् (वि०) [सञ्ज्ञा+मतुप्] नाम वाला, नामक, नामधारी।

सञ्ज्ञिन् (वि०) नाम वाला, जिसका नाम रखा जाए। अथ सागरदत्त संज्ञिनः (सुद० ३/३४) ०मन वाले जीव। समनस्क (त०सू०पृ० ३४)

सञ्ज्ञु (वि०) [संहते जानुनी यस्य] जिसके घुटने चलने पर टकराते हो।

सञ्ज्वरः (पुं०) [सम्+ज्वर्+अप्] अतिताप, ज्वर, बुखार।

०गर्मी, संताप।

०कोप, क्रोध।

सञ्ज्वल (वि०) देदीप्यमान। (जयो० २४/४९)

सञ्सेज् (सक०) मानना, स्वीकार करना। (वीरो० ९/८) ज्योऽतियुक्तिर्गुरुभिश्चं संसेजत् (वीरो० ९/८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सञ्ज्ञापत् (वि०) [सञ्ज्ञा+मतुप्] नाम वाला, नामक, नामधारी। ज्योऽतियुक्तिर्गुरुभिश्चं संसेजत् (वीरो० ९/८)

सट् (सक०) बांटना, भाग बनाना।

सटं (नपुं०) जटा, बालों का समूह। ०शिखा, चोटी।

सटङ्कः (पुं०) सिंह।

सटा (स्त्री०) जटा-बालों का समूह। (जयो०२४/१०) केशर वाली (जयो०१३/७२) (वीरो० ९/१५)

सट्ट (सक०) चोट पहुंचाना, घात करना, मार डालना। ०देना। ०ग्रहण करना।

सट्टकं (नपुं०) [सट्ट+ण्वुल्] एक उपरूपक जो प्राकृत भाषा में निबद्ध किया जाता है। जिसमें अभिनय की प्रधानता के साथ-साथ नृत्यादि के माध्यम से शृंगार रस को बढ़ाया जाता है। इसके पात्र काल्पनिक होते हैं। सो सट्टओ त्ति भण्णदि दूरं जो णाडिआए अणुहरदि। किं पुण पवेसअ-विक्खम्भआइ इह केवलं णत्थि।। (कर्पूरमंजरी १/६)

सट्वा (स्त्री०) एक वाद्य यन्त्र।

सद् (सक०) समाप्त करना, पूरा करना, पूर्ण करना। ०जाना, पहुंचना। ०अलंकृत करना। ०सुशोभित करना, विभूषित करना।

सड्डमरु (स्त्री०) एक वाद्य विशेष, डमरु। (जयो० ८)

सणं (नपुं०) सन।

सणसूत्रं (नपुं०) सन् की बनी हुई रस्सी।

सण्डिशः (पुं०) चिमटा, संडासी।

सण्डीनं (नपुं०) [सम्+डी+क्त] पक्षियों की उड़ान।

सत् (वि०) [अतीस्+शत् अकार लोप] ०वर्तमान, विद्यमान। सकल पदार्थाभिगत भाव। ०वास्तविक, यथार्थ, सत्य। (सुद० २/४१)०कुलीन, योग्य, उचित। ०सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, उत्तम, महान्। (जयो० २/१०२) ०मनोहर, रमणीय, सुंदर। ०दृढ़, स्थिर।

सत् (पुं०) सज्जन, भद्रपुरुष, विद्वान्। (जयो० १/१८) (जयो० १/१६, सुद० २/२४) (सुद० १/१६) ०बुद्धिमान, ज्ञानी। भुवि वरं पुरमेतदियं मतिः प्रवितता खलु यव लतां ततिः। (सुद० १/३१)

सत् (नपुं०) सत्ता, अस्तित्व, सर्व निरपेक्ष सत्ता, वस्तुतः, सच्चाई। (सम्य० ११०) ०वस्तु का तादात्म रूप। ०उत्पाद-व्यय ध्रौव्ययुक्तं सत् (स०सू० ३/३०) ०सत् द्रव्य का स्वरूप (विस्तार से देखें (जयो० २६/८०-८८) सद् द्रव्यलक्षणम् (त०सू० ५/२९) न सामान्यात्मनो देति न व्येति व्यक्तमन्वयात् व्येत्युदेति विशेषात्ते सहैकत्रोदयादि सत् (त०सू०पृ० ८४)

सत्कटकानुकारिन् (वि०) उत्तम सेना का अनुकरण करने वाला। (जयो० १२४/१५)

सत्कन्धरात्मन् (वि०) शोभनग्रीव युक्त। शोभजलधर। (जयो० ७/२३) ०अच्छे कन्धों वाला। ०शोभ जल को धारण करने वाला। धारापातस्तु दूरेऽस्तु यन्मे सत्कन्धरात्मनः

सत्कन्यका (स्त्री०) उत्तम कन्या (जयो०१२/१४२) (जयो० ७/२३)

सत्करणं (नपुं०) सत्कार, सम्मान, आदर, समादर। (दयो० ५८)

सत्कर्त्तव्य (वि०) सत्कार्य। (वीरो० १६/२०)

सत्कर्मन् (नपुं०) पुण्यकार्य, सद्गुण गुणयुक्त।

सत्कर्माख्य (वि०) पुण्यकर्म नाम वाला। (मुनि० १)

सत्काण्डः (पुं०) चील, बाज पक्षी।

सत्कायः (पुं०) सुंदर शरीर (सुद० ८२)

सत्कारः (पुं०) सम्मान, आदर, समादर। (सुद० ३/४४) ०पूजा-प्रशंसात्मक वंदन, स्तव, पूजा। (दयो० ५८) ०आतिथ्यपूर्ण व्यवहार। ०अभ्यर्चन। ०देखभाल, ध्यान।

सत्कार्यसाधिका (स्त्री०) सत्तासिद्धिदायक। (जयो० २३/८१)

सत्कारपुरस्कारपरीषजयः (पुं०) एक परीषह का नाम। (त० सू०)

सत्काराचरणं (नपुं०) सत्प्रवृत्तियों का आचरण (जयो०वृ० ३/११६)

सत्कुचः (पुं०) उन्नत स्तन। (जयो० ५/४२) पुष्ट कुच। (सुद० २/४६)

सत्कुलं (नपुं०) उन्नत कुल, उत्तम कुल, समीचीन कुल (जयो०वृ० १/९१) 'सत् समीचीनं कुलं समूहः' (जयो०वृ० १/९२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्कुलीन (वि०) उच्च कुल वाला। कुलीन।

सत्कुलोत्पन्न (वि०) अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ, कुलीन। (जयो०वृ० १/६७)

सत्कृष (सक०) [सत्+कृ] सत्कार करना, आदर करना, सम्मान करना।
०सेवा करना। सत्करोमि यत्पदयुगं सन्निधिरयमिह नाम। (जयो० २०/८८) चरणयुगलं सत्करोमि सेवयामि।

सत्कृत (वि०) पूज्य, प्रतिष्ठित, सम्मानित।
०पूजित, अलंकृत।
०स्वागत किया गया।

सत्कृतपंक्तिः (स्त्री०) पुण्यपरिणाम। (जयो० ५/६३)

सत्कृतलता (स्त्री०) पुण्यकृतलता, सत्कारविषयी बल्लरी। (जयो० ३/९)

सत्कृतशेमुषी (स्त्री०) उत्तम बुद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि। (जयो० १२/१०२)

सत्कृति (स्त्री०) अतिथि सत्कार। (जयो० १२/१४१)

सत्कृतिक (वि०) उत्तम कार्य करने वाले। 'लोकोऽखिलः सत्कृतिकः पुनस्ताः' (सुद० १/२९)
०मृतिका नक्षत्र सहित।

सत्क्रिया (स्त्री०) सत्कर्म, पुण्यकार्य। (जयो० ९/१०)
०शिष्टाचार, अभिवादन।
०आतिथ्यपूर्ण स्वागत, सत्कार। (सु० १२४)
०सज्जीकरण। (जयो० २१/४)

सतत् (वि०) [सम्+तन्+क्त] निरंतर, नित्य, शाश्वत। (जयो०वृ० १/४२)

सततं (अव्य०) लगातार, अविच्छिन्न रूप से, नित्य, सदा हमेशा। (दयो० २/४) (मुनि० १७) (सुद० ११२)

सततगमनं (नपुं०) पवन, वायु।

सततगति (स्त्री०) वायु, हवा।

सततभुक्तिः (स्त्री०) निरंतर आहार। (जयो० १/९५

सततोदयः (पुं०) सदायक, सन्मार्ग। (जयो०वृ० १/१०८)

सतर्क (वि०) [तर्केण सह] सचेत, सावधान, सजग, जाग्रत।

सतानिकः (पुं०) कौशाम्बी का राजा। (वीरो० १५/२२) कौशम्ब्या नरनाथोऽपि नाम्ना शेऽसौ सतानिकः' (वीरो० १५/२२)

सतारा (स्त्री०) [तारया युक्ता सतारा] नयन पेक्षणिका, तारा, आंख की पुतली। (जयो० १६/६२)

सतिः (स्त्री०) [सम्+क्तिन्] अन्त, विनाश, घात, नाश।
०उपहार, भेंट, दान।

सतिका (स्त्री०) सती, ०साध्वी, ०साधिका।

सती (स्त्री०) [सत्+ङीप्] साध्वी, श्रमणी सन्यामिनी।
०सदाचारणी स्त्री। सज्जन स्त्री (जयो० २/११२) (वीरो० ४/३२) (सुद० ४/३७) सेठानी (सुद० २/५०) सुशीला (जयो० १/२०)

सतीत्व (वि०) सतीपन, सदाचारत्व। (जयो० ११/११)

सतीनः (पुं०) [सती+नी+ड] मटर।
०बांस।

सतीर्थः (पुं०) [समानः तीर्थः गुरुर्यस्य] तीर्थ में सहभागी।
०ब्रह्मचारी।
०साथ में अध्ययन करने वाला।

सतीलः (पुं०) [सता+लक्ष्+ड] बांस।
०पवन, वायु।
०मटर, दाल।

सतुष (वि०) सदोष (जयो० २/१३) (वीरो० २२/४)

सतेरः (पुं०) भूसी, चोकर।

सतृष्णा (स्त्री०) पिपासा, पिपासिना। (जयो० ११/५१)

सत्कृ (अक०) वर्णन कना-सत्क्रियते व्यावर्ण्यते (वीरो० २/९)

सत्कर्मन् (वि०) अच्छे कर्म वाला। (जयो० १/१०)

सत्त (वि०) [सत्+क्त] बुनी हुई, गुम्फित। (सुद० २/६)

सत्तनु (वि०) उत्तम शरीर।

सत्तनु (स्त्री०) सुलोचना का नाम। (जयो०वृ० ४/२८)

सत्तनुपितृ (पुं०) सुलोचना के पिता। 'सत्तनोः सुलोचनायाः पिता' (जयो०वृ० ४/२८)

सत्तम (वि०) सज्जन-सज्जनोत्तम। (जयो० ३/८८)
०श्रेष्ठ (जयो० ४/४५) सत्तमैर्नृपसुतां तु वरीतुम् (जयो० ५/२) सज्जनोत्तम (जयो० २४/१३१)

सत्तरङ्ग (वि०) चंचलता युक्त। सन्तश्च ते तरङ्गास्त इव तरलाश्चन्चलास्तै हयवेरेवश्वश्रेष्ठैः (जयो०वृ० ५/१७)

सत्तरलाञ्चल (वि०) वायु से चंचल, पवन से खिले हुए। (जयो०२१/६३)

सत्तरसनागार्जुनः (पुं०) नाम विशेष। (वीरो० १५/२८)

सत्ता (स्त्री०) [सत्+तल्+टाप्] अस्तित्व, विद्यमानता।
०वस्तुस्थिति, वास्तविकता। (जयो०वृ० १/४२)

सत्तारक (वि०) तारा सहित, नक्षत्र सहित। (वीरो० २१/८)
०सत् स्वरूप की उपस्थिति। (जयो०वृ० २६/८०)
०उत्तमता, श्रेष्ठता। (सुद०पृ० ९६)
०वस्तु का अस्तित्व गुण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्तागत (वि०) सत्ता को प्राप्त। (समु० ८/१५)

सत्तलोकः (पुं०) सत्त्व सामान्य का निर्विकल्पक ग्रहण।

सत्रं (नपुं०) सद्‌गुण, उदारता। सदाव्रत (सुद०१/१९)
 ०आवरण, धन-दौलत।
 ०अरण्य, वन।
 ०तालाब, पोखर।
 ०शरणगृह, आश्रम।
 ०आश्रयस्थान।

सत्रयी (वि०) त्रिवली युक्त। सत्रयी तु वलिपर्वविचारा। वेदानां सत्रयी ऋग्यजुः-सामत्रयीव (जयो०वृ० ५/४३)

सत्रा (अव्य०) [सद्+त्रा] के साथ, मिलकर, सहित।

सत्रिः (पुं०) [सद्+त्रि] हस्ति, हाथी।
 ०मेघ, बादल।

सत्रिन् (पुं०) कर्मगत गृहस्थ। ०कार्यरत गृहस्थ।

सत्पत्रं (पुं०) कमलपत्र।

सत्पथः (पुं०) सन्मार्ग, श्रेष्ठमार्ग। संश्चासौ पन्था सत्पथः (जयो० २/४८)
 ०कर्त्तव्यपथ, पुण्याचरण।
 ०यथेष्टमार्ग। (सम्य० ९४) शुद्धाचरण। (समु० २/२२)

सत्पथप्रवृत्त (वि०) सन्मार्गचर, सन्मार्ग में लगा हुआ। (जयो०वृ० १८/७६)

सत्पथशाण (वि०) प्रसादनकर। (जयो० ५/२६)
 ०आकाशचारी। (जयो०वृ० १८/७६)

सत्परिखा (स्त्री०) उत्तम परिखा (सुद०१/२५) ०स्वच्छपरिखा।

सत्परिग्रहः (पुं०) ग्रहण करने योग्य दान।

सत्पशुः (पुं०) उत्तम पशु, श्रेष्ठ जाति का पशु।

सत्पात्रं (नपुं०) योग्य व्यक्ति, पुण्यात्मा। (जयो०वृ० २/१०४)

सत्पुत्रः (पुं०) तनयरत्न। (जयो०वृ० १८/४३)

सत्पुष्पतल्पः (पुं०) उत्तम फूलों की शय्या। (सुद० ८६)

सत्पुण्यसम्पत् (वि०) उत्तम पुण्य को प्राप्त। (सुद० ४/४७)

सत्प्रयत्न (वि०) उत्तम यत्न। (सुद० २/४०)

सत्फलता (वि०) सफलता (सुद० ११८)

सत्व (वि०) सहित, युक्त। (सुद० १/३५)

सत्त्व (नपुं०) [सतो भावः सत् त्व] सत्, अस्तित्व। (सुद० ४/३०)
 ०अस्तित्व, सत्ता, वस्तु की यथार्थता।
 ०प्रकृति, मूलतत्त्व। स्थिति। (जयो० १/२४)
 ०जीवन, जीव, प्राण, चेतना। (सुद० ९९)
 ०मन, प्राणशक्ति।
 ०सभी एकेन्द्रिय प्राणी-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति जीव।
 ०सामर्थ्य, शक्ति, बल, ऊर्जा। (जयो० ३/१०९)
 ०तत्त्वार्थ, पदार्थ, वस्तु, सम्पत्ति।
 ०भूत, प्रेत, पिशाच।
 ०प्राणी। (जयो० ७/९७)
 ०संज्ञा, नाम।
 ०गर्भ।

सत्त्वगुणरक्षक (वि०) यथार्थ गुणों का रक्षण। सत्त्वप् (जयो०वृ० १/११३) सत्त्वगुण के रक्षक। प्राणिरक्षक।

सत्त्वगत (वि०) प्राणशक्ति युक्त।

सत्त्वजात (वि०) यथार्थता को प्राप्त, वस्तु के यथार्थ स्वरूप को प्राप्त।

सत्त्वधर (वि०) प्राणवान्। ०सामर्थ्ययुक्त, शक्ति सम्पन्न।

सत्त्वप (वि०) सत्त्वगुण रक्षक। (जयो०वृ० १/११३)

सत्त्वप्रतिबोधक (वि०) प्राणिमात्र को बोध देने वाले। (भक्ति०२१)

सत्त्वप्रतिष्ठाक्षमः (पुं०) प्राणिमात्र पर आदर भाव-सत्त्वानां प्रतिष्ठायां क्षमो वर्तेत्। (जयो०वृ० ४/६८)

सत्त्वरञ्जित (वि०) बल सुशोभित। 'सत्त्वेन बलेन रञ्जितः शोभितः। (जयो०वृ० ३/१०९)

सत्त्वलक्षणं (नपुं०) गर्भ के लक्षण, गर्भ के चिह्न।

सत्त्वविप्लवः (पुं०) चेतना की क्षति, प्राणतत्त्व का विनाश।

सत्त्वविहित (वि०) प्राकृतिक, सद्‌गुणी, पुण्यात्मा, सज्जन, सामर्थ्य युक्त।
 ०शक्तिशाली।

सत्त्वसञ्चयः (पुं०) प्राणिवर्ग। (जयो० ७/९७)

सत्त्वसंशुद्धिः (स्त्री०) प्रकृति की शुभ्रता, स्वच्छ पर्यावरण।

सत्त्वसंहारः (वि०) प्राण घात। (दयो० ४९)

सत्त्वसम्पन्न (वि०) सद्‌गुणी, श्रेष्ठ गुणों से युक्त।

सत्त्वसंप्लवः (पुं०) शक्तिक्षीणता, बल की क्षति।
 ०प्रलय, विश्वसंहार।

सत्त्वसारः (पुं०) शक्तिशाली, शक्तिसम्पन्न।

सत्त्वस्थ (वि०) प्रकृतिस्थ, स्वभावगत।
 ०सत्त्वगुण युक्त, विशिष्ठ, उत्तम, श्रेष्ठ।

सत्त्वहीन (वि०) सामर्थ्य रहित, बलहीन। (जयो०वृ० १/७१)

सत्य (वि०) [सत्सु साधु वचनं, सत्यर्थे भवः वचः सत्यम्]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

*सच्चा, यथार्थ, वास्तविक, जैसे का तैसा। (जयो० ५/४६) (जयो० १/२५)

०सद्गुण, सम्पन्न, निष्ठावान्।

०सुंदर-'सत्या: सुबालभावं लभते सुदत्या' (जयो०११/६७)

सत्यं (नपुं०) सत्यधर्म, साधु वचन, प्रशस्त वचन, सम्यग्वाद।

०तथ्यात्मक कथन, (सुद० ४/३३) सत्यमेवोपयुज्जाना।

०सद्भूतार्थ प्रतिपत्ति।

०असावद्यकथन।

०मृषावाद विरमण, असत्य परिहार।

०सत्याणुव्रत, सत्यमहाव्रत।

सत्येन लोके भवति प्रतिष्ठा:, सत्येन लक्ष्मीर्भवताद्विशिष्ठा।

सत्येन वाच: सफल त्वमस्तु, सत्यं समन्तान्महदस्तिवस्तु।।

(समु० १/८)

सत्य: (पुं०) सत्य लोक।

सत्यकाम: (पुं०) सत्य का प्रेमी, सत्य का इच्छुक व्यक्ति। (मुनि० २२)

सत्यगत (वि०) सम्यग्वाद को प्राप्त हुआ।

सत्यघोष: (पुं०) कपट वेशधारी साधु। (सुद० ३/२३)

सत्यतारक (वि०) प्रशस्ततारक। (जयो० ५/४१)

सत्यतावं (नपुं०) यथार्थ तत्त्व (वीरो० १३/९६)

सत्यदर्शिन् (वि०) यथार्थ का प्रतिपादक, वस्तु की प्रामाणिकता प्रदर्शित करने वाला।

सत्यंधर: (पुं०) एक राजा का नाम, जिसका पुत्र जीवन्धर कुमार हुआ।

सत्यधर्मन् (नपुं०) सत्यधर्म, चौथा उत्तम सत्यधर्म। (त०सू०९/६) (जयो०वृ० २८/३७) जिसे विज्ञ और अज्ञ सभी स्वीकार करें।

सत्यधन (वि०) सत्य गुण से समृद्ध।

सत्यधर्ममय (वि०) सम्यगनुष्ठान में तत्पर। (जयो०वृ० १/१०८) सत्यधर्म के पालक।

सत्यधृति (वि०) परम सत्यवादी।

सत्यपथगामिन् (वि०) सन्मार्गगामी।

सत्यपाल: (पुं०) एक राजा।

सत्यपुरं (नपुं०) उत्तम लोक।

सत्यपूत (वि०) यथार्थ में पवित्र, परम पवित्र।

सत्यपूर्ण: (वि०) सत्ययुक्त, सत्य समाहित। (समु० ५/११)

सत्यप्रतिज्ञ (वि०) सत्य प्रतिपादक।

सत्यप्रतिज्ञा (स्त्री०) सत्य प्रतिपादन। (समु० १/२८)

सत्यप्रवाद: (पुं०) सत्यप्रवाद नामक एक पूर्व ग्रन्थ, संयम और सत्यवचन, सत्य के भेदों को प्रतिवादन करने वाला ग्रंथ।

सत्यभाव: (पुं०) सम्यग्भाव, उचित परिणाम।

सत्यभामा (स्त्री०) सत्राजित की पुत्री, कृष्ण की पत्नी। (सुद० ११२) सत्यभामा महिषी। (जयो० २२/३७)

सत्यमनोयोग: (पुं०) समीचीन पदार्थ युक्त मन।

सत्यमहाव्रतं (नपुं०) मृषावाद विरमणव्रत, असत्यवचन का पूर्ण परित्याग। महाव्रती का एक महाव्रत। (मुनि०३)

सत्यमार्ग: (पुं०) सम्यग्मार्ग। (भक्ति०१)

सत्यमोषमनोयोग: (पुं०) सत्य और मृषा दोनों का योग।

सत्य युगं (नपुं०) सत् युग। अवसर्दिर्णीकाल। (वीरो०१८/९)

सत्यवचस् (वि०) सत्यवादी, सत्यनिष्ठ।

सत्यवचनयोग: (पुं०) सत्यवचन का आश्रय।

सत्यवस्तुपरिशोधन (नपुं०) यथार्थ वस्तु शुद्धि। (जयो० २/३०)

सत्यवादी (वि०) सत्य बोलने वाला।

सत्यव्रत: (पुं०) एक धूर्त ब्राह्मण वेषधारी व्यक्ति।

सत्यव्रतिन् (वि०) सत्यव्रत पालन। (दयो० ४५)

सत्यशंसा (स्त्री०) सत्यप्रशंसा। (समु० १/१४)

सत्यसंदेश: (पुं०) ऊहोपोह रहित भाव।

सत्यसंदेशसंज्ञप्त्यै प्रसादं कुरु भो जिन। (वीरो० १३/३२)

सत्यसम्पत् (स्त्री०) सत्य की महिमा। (समु० १/४)

सत्यसम्मत (वि०) सत्य स्वरूप संबंधी। (वीरो० २९/१)

सत्या (स्त्री०) पातिक्षात्य धर्मा। (सुद० ८८) सीता।

सत्यागमाश्रय: (पुं०) जैनाश्रय, जिनागम का आधार। (जयो० १६/९९)

सत्याख्य: (पुं०) सत्युग, अवरूपिणी काल। (वीरो० १८/९)

सत्यागुणव्रत (नपुं०) श्रावक का दूसरा व्रत, स्थूल मृषा/असत्य वचन का त्याग।

स्थूलमलीकं न वदति न परान्

वादयति सत्यमपि वदते।। (रत्नकाण्ड० ३/९)

सत्याधार: (पुं०) सत्य का आश्रय। (दयो० ७३)

सत्यानुयायिन् (वि०) सत्यानुगामी, सत्य के मार्ग पर चलने वाला। (वीरो० १३/३२) (वीरो० २२/२८)

अहिंसा वर्त्म सत्यस्य त्यागस्तस्या: परिस्थिति:।

सत्यानुयायिना तस्मात्संग्राह्यस्त्याग एव हि।।

(वीरो० १३/३६)

सत्यानुगत (वि०) सत्यधर्म युक्त। (जयो० २८/३७)

सत्यानृत (वि०) सत्य और मिथ्या।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्यानुगत (वि०) अनेकान्तमार्ग युक्त। (वीरो० २०/२३)
सत्यान्वित (वि०) सत्य युक्त। (समु० ३/७)
सत्यापिर (अव्य०) ससि स्त्री। (सुद० ८८)
सत्याभिसन्धिः (वि०) निष्कपट, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने वाला।
सत्यारम्भः (पुं०) समीचीनारम्भ। (जयो० २३/९०)
सत्यार्थता (वि०) अन्वर्थता, यथार्थता। (जयो० १८/९)
सत्यार्थ प्रकाशक (वि०) सत्य के रहस्य को प्रकट करने वाला। (जयो० १८/६४)
सत्याशंसा (स्त्री०) सत्य भामा सती। (सुद० ११२) कृष्ण की अर्धांगिनी।
कृतकं सभयं सततमिङ्गितं यस्य बभूव धरायाम्।
इह सत्याशंसा पायात्।। (सुद० ११२)
सत्येश्वरधामः (पुं०) पुण्य धाम। (मुनि० ३) सत्य रूप परमेश्वर का स्थान।
सत्योत्कर्षः (पुं०) सत्य की प्रमुखता।
सत्योद्य (वि०) सत्य बोलने वाला, सत्यभाषी।
सत्योपयाचन (वि०) प्रार्थना पूर्ण करने वाला।
सत्र (वि०) मौन (जयो० १९/३१) छदम् सत्रं यज्ञे सदादनि कैतवे बसने पने इति विश्व। (जयो० १५/५९)
सत्रप (वि०) [सह त्रपया] लज्जाशील, विनयी।
सत्राजित् (पुं०) निघ्न का पुत्र, सत्य भामा के पिताश्री।
सतृष (वि०) पिपासित। (जयो० १२/१११)
सतृणाशिन् (वि०) तृण भक्षण युक्त। (जयो० २/२०)
सत्व (वि०) सत्, चित् और आनंद रूप। (सुद० १३३)
सत्वर (वि०) [सहत्वरया] द्रुतगामी, शीघ्रगामी, चुस्त। (जयो०१४/८९) शीघ्रता (जयो० २१/१)
इत्थमाह समनीकिनीश्वरो गत्वरसमयातिसत्वरः।
सत्वरः शीघ्रताकरः।
सत्याग्रह (पुं०) सत्य पर दृढ़ होना। (वीरो० ११/३९)
सत्याग्रहप्रभावेण महात्मात्वनुकूलयेत्। (वीरो० १०/३४)
सत्यानुकूलः (पुं०) सत्य के अनुकूल।
सत्यानुकूलं मतयात्मनीनं कृत्वा समन्ताद् विचरन्नदीनः। (वीरो० १७/२३)
सत्यसमूहः (पुं०) सज्जन समूह। (वीरो० २१/५)
सत्सामान्यः (पुं०) सत्सामान्य, वस्तु की सामान्य सत्ता। जो वस्तु सत्सामान्य की अपेक्षा एक प्रकार की है, वही चेतन और अचेतन से दो प्रकार की है।

सत्यवर्त्मन् (नपुं०) सत्यमार्ग-मुहुः प्रयतमानोऽपि सत्यवर्त्म न विन्दति। (वीरो० १०/१६)
सद्ध्यान (वि०) उत्तम ध्यान वाला, प्रशस्त ध्यान युक्त। (सम्य० ११५)
सद्वाक्यं (नपुं०) सदाचरण युक्त वचन। ज्ञनाद्विना न सद्वाक्यं ज्ञानं नैराक्ष्यमञ्चतः। (वीरो० २०/२४)
सद्विधुबिम्ब (नपुं०) शरच्चन्द्रबिम्ब। (वीरो० २२/३५)
सद्वृत्तभावः (पुं०) सदाचारण का भाव।
विप्रोऽपि चेन्मांसभुगस्ति निन्द्यः सद्वृत्तभावाद्
वृषलोऽपि वन्द्यः। (वीरो० १७/१७)
सद्वृत्तिः (स्त्री०) सदाचरण। (सम्य० १२८)
सद्वंशजः (पुं०) कुलीन। (जयो०वृ० ६/३३)
सत्त्वरं जितभावान (वि०) सत्त्व गुण से अनुरक्त मनोवृत्ति वाले। सन् सत्त्वेन नामगुणेन रञ्जिता भावना मनोवृत्तिर्यस्य सः' (जयो०वृ० २८/१५)
०शीघ्र ही नक्षत्रों के रक्षण को जीतने वाला-सत्त्वेन शीघ्रमेव जितं भानां नक्षत्रामाभवनं रक्षणं येन सः' (जयो०वृ० २८/१५)
सत्वरं (अव्य०) शीघ्र, जल्दी से, तुरन्त-शीघ्र ही, (जयो० १२/१३२) नरराट् परराङ्वैरी सत्वरं सत्त्वरञ्जितः। (जयो० ३/१०९)
सत्वाद (वि०) सात्विक। (सुद० १२४)
सत्सङ्गः (पुं०) सत्संगति, सहवास। (दयो० २/१) सत्सङ्गत प्रहीणोऽपिपूततामेति भूतले।
सत्सङ्गतः (वि०) अभिराम, मनोज्ञ। (जयो०वृ० १/२७)
सत्समयः (पुं०) उत्तम समय, योग्य समय।
सत्समागमः (पुं०) सज्जन सहवास। (सुद० १०४)
सत्सम्प्रयोगः (पुं०) सन्त प्रयोग। (सुद० ४/३०) सन्तजनो का संयोग-सत्सम्प्रयोगवशतोऽङ्गवतां महत्त्वं सम्पद्यते सपदि तद्वदभीष्टकृत्वम्। (सुद० ४/३०)
सत्सुरतः (पुं०) देवभाव, दिव्य आभास। (जयो० २०/८७)
सत्सुलता (स्त्री०) उत्तम लता-'सम्येषु लता ख्याता वल्लरी प्रसिद्धा' (जयो० ११/९५)
सत्सुषमा (स्त्री०) सुश्री। (जयो० ५/११)
सत्सौधसमूहयुक्त (वि०) उत्तम सौध युक्त। (सुद० १/२७)
सत्स्थितिः (स्त्री०) सौस्थ्य, स्वस्थता। (जयो०वृ० १/३०)
सद् (सक०) बैठना, स्थित होना, रहना, बसना, निवास करना, स्थिर होना। (सुद० ९२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सद्गजः (पुं०) ऐरावत हाथी। (जयो० ७/१०१)
०लेटना, आराम करना।
०खिन्न होना, दुःखी होना, निराश होना।
०म्लान होना, नष्ट होना।

सद्गात्रलता (स्त्री०) सुंदर काय रूपी लता। (जयो० ११/८) भृङ्गीवद्‌दृग्धस्तिपुराधिपस्यावगाह्य सद्‌गात्रलतां च तस्याः। (जयो० ११/८) 'सुलोचनायाः गात्रस्य शरीरस्य लतां यद्वा गात्रमेव लता। (जयो०वृ० ११/८)

सद्गुण (वि०) श्रेष्ठ गुण वाला।

सद्गुणगान (वि०) उत्तम गुण गीति। (सुद० २/३९)

सद्गुणाम्वेषिणी (स्त्री०) गुणैषणा। (जयो० ७२/४३)

सद्गुणगणिनी (वि०) गणनकर्त्री। (जयो०)

सद्गृहीयस्व (वि०) उत्तम गृहस्थ वाला। (जयो०वृ० २/७३)

सद्दृष्टि (स्त्री०) सम्यक् दृष्टि (सम्य० १३३)

सद्गलनालः (पुं०) कण्ठकन्दल। (जयो० ५/५२)

सद्भावः (पुं०) उचित भाव, अच्छा विचार। (सुद० ९५)

सद्भावधृत (वि०) उत्तम भाव वाला। (सुद० ८२)

सद्भावना (स्त्री०) उत्तम कामना, अच्छा विचार। (सुद०९५)

सद्भाव वृद्धिः (स्त्री०) उच्छ्रिति, सद्भावना की जागृति।

सद्विषय (वि०) अच्छे विचार वाला। (सुद० ९१) (जयो० २/१०५)

सद्हारगङ्गा (स्त्री०) उत्तम आधार भूत गंगा–
'सन् चासौ हारो गलभूषणमेव गङ्गा धारतीति
तं तथैव सती धारा यस्यास्तां गङ्गा'

सद्विभव (पुं०) प्रसन्नभाव। (जयो० २१/१)

सद्विहारः (पुं०) वन विहार, वनक्रीडा।

सदः (पुं०) [सद्+अच्] वृक्ष का फल।

सदंशकः (पुं०) [दंशेन सह] केकड़ा।

सदंशवदनः (पुं०) [सदंशं वदनं यस्य] कंक पक्षी, बगुला का नाम।

सदंसा (वि०) शोभन स्कंधवती। (जयो० १०/११३)

सदक्ष (वि०) [दक्षेण सह] दक्षता युक्त, प्रवीणता, सहित।

सदक्ष (वि०) [इन्द्रियेन सह] इन्द्रिय सहित।

सदक्षर (वि०) सुस्पष्टाक्षर। (जयो० १७/५४)

सदक्षला (स्त्री०) निर्दोष इन्द्रियवती। (जयो० ११/८३) समीचीनान्यक्षाणि लालीति सदक्षला। निर्दोषइन्द्रियवती' (जयो०वृ० ११/८३) 'समीचीनाक्षक्षरवती-रलयोरभेदात्' (जयो०वृ० ११/८३)

सदक्षिणा (वि०) दक्षिण पार्श्वस्य। 'दक्षिणया गौरवेण समर्पितोपहारेण सहिता सा बुद्धिः सदक्षिणाऽतिकुशला' (जयो०वृ० ६/३)

सदङ्कपातिन् (वि०) सज्जन समर्थक। (जयो० १२/१४५) सताभङ्के महतां मध्ये पततीति सदङ्कपाती-'सत्सु प्रशंसायोग्येष्वङ्केषु ककरादिषु पतति' (जयो०वृ० १२/१४५)

सदङ्कशक्ति (स्त्री०) सुदर-शरीर शक्ति। (जयो० १६/४)

सदङ्कुर (नपुं०) सदाचार, रूपी अंकुर। जगत्यमृतापमानेभ्यः सदङ्कुरमीक्षमाणेभ्यः। (सुद० १२४)

सदङ्ग (वि०) लावण्य युक्त शरीर वाली। (जयो० १/४४)

सदञ्जनः (वि०) गाढ-मालिन्य (जयो० ६/१३१)

सदनं (नपुं०) [सद्+ल्युट्] भवन, गृह, सदने गृहेऽपि। (जयो० २/१२३) घर।
०आवास, निलय।
०कुञ्ज, निकुञ्ज।
०स्थान। (जयो० ३/७८)
०म्लान होना, उदासीन होना, क्षीण होना।
०अवसार, श्रान्ति, क्लान्ति, हानि।

सदनकक्षं (नपुं०) गृहकक्ष।

सदनगत (वि०) श्रान्ति युक्त, दुःख को प्राप्त हुआ।
०आवाज को प्राप्त हुआ।

सद्ध्यानम् (नपुं०) उत्तम ध्यान। (भक्ति० ३०)

सदनस्थित (वि०) घर में रहता हुआ।

सदनाश्रमः (पुं०) गृहस्थाश्रम। (वीरो० १०/२१) (जयो० १२/१४२) सदृकन्यकां प्रददता भवता प्रपज्ये दत्तस्त्रिवर्ग सहितः सदना श्रमश्चेत्।

सदनाश्रयः (पुं०) आधारभूत, सदन स्थान। (जयो० ३/१०८) (जयो० १२/१४२)

सदनुग्रहः (पुं०) अनुरोध, निवेदन, कथन, आज्ञा। कुरुतात् सदनुग्रहं हि तु स्वयमारोहणतः परीक्षितुम्। (समु०२/२३)

सदधीति (स्त्री०) रची गई। (सुद० ८२)

सदन्दुः (स्त्री०) अलंकृत स्त्री। 'सती समीचीना अदुरलङ्कृति-र्यस्यास्तस्या सदन्दोः स्त्रियाः' (जयो० १७/५२)

सदन्दुवसनं (नपुं०) वस्त्राभूषण। (जयो० १७/५२)

सदपत्य (वि०) सज्जनात्मज। (जयो० ६/६४)

सदम्भा (स्त्री०) मायाविनी स्त्री। 'दम्भेन छलेन सहिता सदम्भा मायाविनी सा रम्भां। (जयो०वृ० २४/१०२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सदय (वि०) [सह दयया] कृपालु, सुकुमार, दयापूर्ण, दयान्वित। (जयो० १२/१०२)

सदयं (अव्य०) कृपा करके, दया करके।

सदर्चिष (वि०) जठराग्नि जन्य।

सदर्थिनी (स्त्री०) शोभनाभिप्रायवती, सम्यग्वाच्यवती। (जयो०३/१८)

सदस् (स्त्री०) सभा। स्वयं वर मण्डप। (जयो० ४/२२)

सदर्प (वि०) अहंकार युक्त। (सुद० १/२०)

सदसत् (वि०) स्वच्छ-मलिन, ०सत्य, असत्य। 'सच्च असच्च सदसद्मुखमीयते' (जयो० २/४६)

सदश्वराज (वि०) श्रेष्ठ अश्वराज। (जयो० ८/१६)

सदस्यः (पुं०) [सदसि साधु वसति वा यत्] सभा का चयनित व्यक्ति, सभासद्। (जयो० ४/५६) (जयो० १/४३)

सदा (अव्य०) [सर्वस्मिन् काले-सर्व-दाच् सादेशः] हमेशा, निरंतर, नित्य। (सुद० ९९)

सदागतिः (स्त्री०) शाश्वत प्रगति, नित्य प्रगति।

सदागतिशील (वि०) प्रगति युक्त।

सदाचरणं (नपुं०) उत्तम आचरण, श्रेष्ठ चरित्र-कार्यसिद्धि-मुपयात्वसौ गृही नो सदाचरणतो व्रजन् बहिः। (जयो०२/३५)

सदाचरणशील (वि०) सुवृत्त। (जयो०वृ० ३/४६)

सदाचरणवृत्तिः (स्त्री०) उत्तम आचरण पूर्वक प्रवृत्ति करना।

सदाचारः (पुं०) ध्यान, स्वाध्यायादि युक्त आचरण। (सम्य०९८)

सदाचारपर (वि०) सदाचार में तत्पर। (सुद० १३०)

सदाचारजन्य (वि०) उत्तम आचरण युक्त।

सदाचारभृत् (वि०) समीचीनचरणशील। (जयो० १७/६)

सदाचारपरायणः (पुं०) ध्यान स्वाध्यायादिलक्षणे परायणः तत्परे। (जयो० २८/५)

सदाचारविहीन (वि०) ०निरंतर भ्रमण रहित। सदा निरंतरं यश्चारः पर्यटनं व्यर्थं भ्रमणं तेनविहीनः' (जयो०वृ० २८/५)

सदाचारवृत्तिः (स्त्री०) सुरीति । (जयो०वृ० ११/८८)

सदाज्ञः (पुं०) स्वामी आज्ञा, (सुद० ९२) दासस्यास्ति सदाज्ञस्यासौ स्वामिजनान्वितिरिति चरणेन।

सदात्मन् (वि०) सम्यङ्मनोवत् (जयो० २३/५२)

सदादान (वि०) सदैव दान देने वाला, निरंतर उपहार देने वाला। ०निरंतर मद बहाने वाला।

सदादानः (पुं०) गन्धद्विज, उन्मत्त हस्ति।

सदारम्भः (पुं०) पूर्ण रूप से आरम्भ। (सुद० ४/३२)

सदानन्द (वि०) पूर्णानन्द युक्त। (जयो० १८/९६)

सदानन्दा (स्त्री०) सर्वदा आन्ददायिनी, मधुरा। (सुद० १०९) (जयो० ६/८८)

सदानुरागिणी (वि०) सदा लालिमा सहित। (जयो० २२/८८)

सदापि (अव्य०) सर्वदैव। (जयो० २२/४५)

सदाफल (वि०) हमेशा फैलने वाला।

सदाफलः (पुं०) बिल्व तरु।
०कटहल।
०गूलर।
०नारिकेल।

सदायक (वि०) माप का उत्पादन। (जयो० २४/५५)

सदामलक्षण (वि०) सदैव माला के लक्षण से युक्त- सा च बाला तस्य वक्षः स्थलं सदामलक्षणं-दाम्ना माल्येन सहितं सदाम, तदेव लक्षणं यस्य तत्तथा-सदैवामलं शुद्धं प्रकाशरूपं क्षणं यत्र तं दिवसमिव पवित्रम्।

सदायक (वि०) सन्मार्ग दायक। (जयो० १/१०८) (जयो०वृ० १७/११९)

सदालिः (स्त्री०) [सज्जनानामालिः पंक्तिः] सज्जन समूह। (जयो० १०)

सदाशिवावति (स्त्री०) उत्तम अभिलाषा युक्त। (जयो० २३/३८)

सदिन्दीवरः (पुं०) समुत्कृष्टनीलोत्पल, उत्तम नीलकमल। (जयो०१५/६५)

सदिष्टशकुनं (नपुं०) अभीष्ट सूचक विघ्न, अभीष्ट शकुन। (जयो० १३/८९)

सदीशः (पुं०) श्रेष्ठ चक्रवर्ती। (जयो० १९/८९)

सदीशगौ (स्त्री०) चक्रवर्ती की वाणी-'सदीशस्य श्रेष्ठचक्रवर्तिनो गौर्वाणी' (जयो०वृ० ९/६६)

सदृक्ष (वि०) [समानं दर्शनमस्य] तुल्य, समान।

सदृश/सदृशी (वि०) तुल्य। (जयो० २/१२)
०तुल्य, समान, एक सा। तुलित। (जयो०वृ० ६/१०)
०योग्य, उपयुक्त, समानरूप।
०ठीक, उचित, संतोषप्रद।

सदृशस्थ (वि०) समानता युक्त। (जयो० ६/२)

सद्रसमागरः (पुं०) शृंगार सागर। (जयो० ११/३) सद्रसस्य शृंगारस्य सागरे समुल्वणे वृद्धि गते सति' (जयो० ११/३)

सदुपदेश (वि०) श्रेष्ठ उपदेश।

सदुवी (स्त्री०) प्रसन्नता युक्त। (जयो० २८/५)

सदुपापः (पुं०) उचित उपाय। (सुद० ७५)

सदेकसंसत् (स्त्री०) सज्जन सभा। (सुद० २/१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सदेश (वि०) [सह देशेन] किसी देश का स्वामी। एक ही स्थान से सम्बंध रखने वाला।
०आसनवर्ती, पड़ौसी।

सदेशतत्परः (वि०) समीपभाव में तल्लीन। (जयो० २१/४)

सद्देशचरः (पुं०) कामदेव-'सन् देशः स्थानं तस्मिन् चरतीति तस्य' सन् देशस्तस्मिन् चरतीति यस्य कामदेवः' (जयो०वृ० १६/२२)

सदैव (अव्य०) निरन्तर ही, नित्य ही, हमेशा ही। (जयो० २७/५६) महोदया अस्ति सुरम्पदैवं युस्माभिरस्माकमहो सदैव' (जयो० १२/१४०)

सदोकः (पुं०) परम्परा, क्रमबद्ध। सुखमुपलभाव एष लोकः सम्बभूव शिवकेलिसदोकः।

सदोष (वि०) त्रुटिपूर्ण। दोषयुक्त। (जयो० ६/६०) दूषणवाली। (समु० १/१४)

सद्दय (वि०) दयाशील। (जयो० ७/५९) (जयो० १४/४६)

सद्मन् (नपुं०) [सीदत्सस्मिन्-सद्+मनिन्] ०घर, गृह, आवास, निवास। (समु० ५/११)
०स्थान, स्थल।
०मंदिर, भवन। (दयो० २/९)
०वेदी, ०जल।

सद्मोदरः (पुं०) गृहस्थान, आवास स्थल। (जयो० १७/१२०)

सद्यस् (अव्य०) आज, उसी दिन। (वीरो० ८/३८)
०सदा। (जयो० १२/१) जयो० २७/५६)
०अतिजवेन (जयो० २१/५)
०शीघ्र, तुरंत, तत्काल। (जयो० २/१२४) दोषा योषास्यतः सद्यः प्रभवन्ति मृषादयः। (जयो० २/१४४)
०स्वयं। (सुद० १३३)
०पूर्व से, पहले से-त्यक्त्वैक खलु वज्रसेनवचः सद्योऽनुलग्नः कलेः' (समु० २/२८)

सद्यकालः (पुं०) वर्तमान काल। आधुनिक काल।

सद्यकालीन (वि०) हाल ही का।

सद्यजात (वि०) तत्काल उत्पन्न हुआ।

सद्यजातः (पुं०) बछड़ा, वत्स।

सद्यपातिन् (वि०) नश्वर, शीघ्र नाश होने वाला।

सद्यशुद्धिः (स्त्री०) नित्य शुद्धि, तत्क्षण की गई पवित्रता।

सद्यशौचं (नपुं०) बिस्तर की जाने वाली पवित्रता।

सद्यस्तनम् (नपुं०) अभिनव कुच। (जयो० ११/११३)

सद्यस्क (वि०) [सद्यस्+कन्] नवीन, नूतन, अभिनव।
०तात्कालिक।

सद्यस्मित (वि०) मन्दहास्य युक्त। (जयो० ११/८९)

सद्याजात (वि०) शोभा युक्त, सद्भाव सहित। (जयो० २०/१३)

सद्रु (वि०) [सद्+रु] विश्राम करने वाला, ठहरने वाला।
०जाने वाला।

सद्वन्द्व (वि०) [सह द्वन्द्वेन] झगड़ालू, कलहप्रिय।
०विवाद युक्त।

सद्भावः (पुं०) समीचीन परिणाम। (सुद० ७१)

सद्ववसथः (पुं०) [सद्+वस्+अथच्] ग्राम, गांव।

सद्धर्मभवना (स्त्री०) नीतिमार्ग की भावना। (२३/९०)

सद्धूलिः (स्त्री०) चरणरेणु, चरण रज। (जयो० ८/८)

सधरणी (स्त्री०) उत्तम पृथ्वी। (जयो० ५/४)

सधर्मन् (वि०) [समानो धर्मोऽस्य-सधर्म+अनिच्] समान गुण युक्त, समान पद्धति वाला।

सधर्मिणी (स्त्री०) सधर्मचारिणी। तुल्यविचारवती। (जयो०२२/) (वीरो० १५/४४) पत्नी (जयो० १/१)

सधर्मिन् (वि०) [सहधर्मोऽस्ति अस्य सधर्म+इनि] समान धर्म वाला। (सम्य० ७६) समान धर्मसील। (जयो० २/१००)

सधर्मिसंहतिः (स्त्री०) धार्मिक जनसमूह। (जयो० २/७२)

सधिस् (पुं०) [सह इसिन् हस्य धः] बैल, सांड, बलिवर्द।

सध्रीची (स्त्री०) [सध्र्यच्+ङीष्] सखी, सहेली, सहचरी।

सध्रीचीन (वि०) सहचर, साथ चलने वाला।

सध्र्यञ्च् (वि०) [सहाञ्चति सह+अञ्च+क्विन्] सध्रिआदेश। सहचर, साथ, साथ चलने वाला।

सध्र्यञ्चः (पुं०) सहचर, पति।

सन् (सक०) प्रेम करना, प्रीति करना।
०पसंद करना, पूजा करना, सम्मान करना।
०प्राप्त करना अधिगत करना। (जयो० २७/२२)

सनः (पुं०) [सन्+अच्] हस्थिकर्ण फड़फड़ाहट।
०एक ध्वनि विशेष।

सनत्कुमारः (पुं०) एक चक्रवर्ती।
०सनत्कुमार नामक देव। (त०सू०पृ० ६६)

सनभोभुव (वि०) नासिका युक्त। (जयो० १/)

सनसूत्रं (नपुं०) सन की रस्सी।

सना (अव्य०) हमेशा, नित्य, निरंतर।

सनागपाशः (पुं०) बाण विशेष। (जयो० ८/७७)

सनात् (अव्य०) हमेशा, निरंतर, नित्य।

सनातन (वि०) [सदा-ट्युल्, लुट् वि दस्य रः] ०पूर्वकालीन, प्राचीन, पुरातन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०नित्य, निरंतर, शाश्वत्।
०स्थायी।

सनातनः (पुं०) पुरातन पुरुष। 'वृष् विलुम्पन्तमहो सनातन' (वीरो० ९/१)

सनातनरीति (स्त्री०) पुरातन पद्धति, सानातनी। (जयो०वृ० २०/२८)

सनाथ (वि०) [सह नाथेन] स्वामी वाला, प्रभु वाला, नायक सहित। (वीरो० ५/६)
०परिजन सहित, पितृ-मातृ युक्त।
०सम्पन्न, सहित, युक्त, पूर्ण।

सनाभिः (पुं०) [समाना नाभिर्यस्य] सहोदर, एक ही माता के उदर से जन्म लेने वाले।
०समान मिलता-जुलता।
०बन्धु, भाई, कुटुम्बी परिजन।
०जातीय, जातिगत। (जयो०वृ० ८/६१) द्विपं द्वि पक्षा यतघण्टिकाभिः सुघोषमुत्तोषवतां सनाभिः। (जयो० ८/६१)

सनाभ्यः (पुं०) [सनाभि+यत्] वंश परम्परागत, एक ही कुल में उत्पन्न हुआ।

सनिः (स्त्री०) [सन्+इन्] सेवा, पूजा।
०उपहार, भेंट, प्राभृत, दान।

सनिद्रभाव (वि०) निद्रापन्न, निद्रायुक्त।
दीपेऽभिवीक्ष्य बहुकौतुकतोऽधुना वा
संघूर्णमानशिरसीह सनिद्रभावात्। (जयो० २८/७)

सनी (स्त्री०) [सनि+ङीष्] विनम्र निवेदन।
०दिशा, शब्द विशेष।

सनीड (वि०) [समानं नीडमस्त्यस्य] एक ही घोंसले में स्थित।
०निकटस्थ, ०समीपवर्ती।

सन्ग्राह्य (वि०) आश्रय करने योग्य। (वीरो० १३/३६)

सन्तः (पुं०) [सन्+क्त] अञ्जलि। सत्पुरुष। (सम्य० ३१)
०सज्जन पुरुष-सन्तं तं (सुद० १/२७) जयकुमारं साक्षीकृत्य (जयो०वृ० १०/११७)
०महात्मा। पीडाकरोऽन्यो विरहे परन्तु, सन्तोऽत्र माध्यस्थ्यमिता भवन्तु' (समु० १/२५)
०सत्पुरुष-लसन्ति सन्तोऽप्युपयोजनाय, रसैः सुवर्णत्वमुपैत्यथायः' (वीरो० १/११)
०सन्तजन-गुणं जनस्यानुभवन्ति सन्तस्तत्रादरत्वं प्रवहाम्यहं तत्। (वीरो० १/१४) ०सन्तश्चिदानन्दममुं श्रयन्तु' (सुद०१२१)

सन्त (वि०) निकटस्थ, अक्रान्त। सन्तमसारिः सूर्य एव शुशुभे (जयो० ८/८१)
०समीप। (सुद० १/१९)

सन्तक्षणं (नपुं०) [सम्+तक्ष्+ल्युट्] ताना, व्यंग्य।

सन्तत (भू०क०कृ०) [सम्+तन्+क्त] ०विस्तारित, फैलाया हुआ।
०नियमित, परम्परागत।
०नित्य, शाश्वत, स्थायी।
०विघ्नरहित, अनावरत, अनवच्छिन्न।
०बहुत, अनेक, नानाविध।

सन्ततं (अव्य०) शाश्वत, नित्य, सदैव, हमेशा, निरंतर, लगातार, क्रमशः।

सन्ततिः (स्त्री०) [सम्+तन्+क्तिन्] ०आली, पंक्ति, पम्परा (जयो० ११/३३)
०धारक, प्रवाह, प्रसार। द्विरदोष्विव मेदिनीयतिष्वभिमुख्यः शुचिचित्तसन्ततिः' (समु० २/१६)
०श्रेणी।
०कुल, वंश, परिवार।
०संतान, प्रजा।
०समुच्चय, समुदाय, समूह।
०ढेर, राशि।

सन्ततिभित (वि०) ०परम्पराछेदक ०सन्तानोच्छेदकारक। (जयो० १/७१)

सन्तन् (सक०) प्रकट करना, व्यक्त करना। सन्तनोति (जयो० ५/४४)

सन्तपनं (नपुं०) [सम्+तप्+ल्युट्] ऊष्म, उष्ण, गर्म। (जयो०वृ० १२/१२२)
०प्रज्वलन, जलन।
०संताप, कष्ट, दुःख।

सन्तप्त (भू०क०कृ०) [सम्+तप्+क्त] ०दुःखी, व्याकुल, अशान्त।
०तपा हुआ, गरम किया गया।
०प्रज्ज्वलित, प्रदीप्त।

सन्तप्त-जन (वि०) दुःखी लोग।

सन्तप्त ज्वाला (स्त्री०) प्रदीप्त अग्नि।

सन्तप्त सूर्यः (पुं०) ऊष्मा युक्त सूर्य। ०तेजस्वी सूर्य।

सन्तमस् (नपुं०) [सन्ततं तमा] सर्वव्यापी तम, पूर्ण अंधकार। (सुद० ९७)
०घोर अंधकार, प्रगाढ़ अन्धकार। (जयो०१५/६६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्तमसारिः (पुं०) सूर्य, दिनकर। शुशुभेऽप्यशुभेन चक्रितुक् तत्तमसा सन्तमसारिरेव भुक्तः। (जयो० ८/८१)

सन्तरणं (नपुं०) पार (समु० १/६)

सन्तर्जनं (नपुं०) [सम्+तर्ज्+ल्युट्] डांटना, फटकारना, दण्ड देना।

सन्तर्पक (वि०) [सम्+तृप्+कन्] सन्तुष्ट करने वाला।

सन्तर्पणं (नपुं०) [सम्+तृप्+ल्युट्] ०संतुष्ट करना, तृप्त करना।

०खुश करना, प्रसन्न करना।

सन्तर्पणभृत् (वि०) प्रसादनकर, सन्तर्पक।

सन्त्रस्त (वि०) भयभीत। (जयो० २८/३३)

सन्ताड् (सक०) प्रताहित करना, कष्ट देना, पछाड़ना। कन्दुः कुचारकारधरो युवत्या सन्ताड्यते वेस्यनुगोनाधारि। (वीरो० ३/३७) स्मरस्य सन्तर्पणभृत्तदीयधूमोच्छितिर्लोमततिः सतीयम्। (जयो० ११/३१)

सन्तानः (पुं०) [सम्+तन्+घञ्] ०परम्परा, ०प्रवाह।

सन्तानं (नपुं०) [सम्+तन्+ल्युट्] ०अविच्छिन्न, प्रवाह, परम्परा (जयो० ३/१०३)

०विस्तार, फैलाव, प्रसार। (जयो० १०/३७)

०बिछाना, फैलाना, विस्तृत करना।

०प्रवाह, धारा, परम्परा।

०प्रजा, परिवार, वंश, कुल।

०सन्तति, सन्तान, बाल बच्चा। (दयो० ५९)

सन्तानकः (पुं०) [सन्तान+कन्] एक वृक्ष विशेष, स्वर्ग सम्बंधी तरु।

सन्तानिका (स्त्री०) [सम्+तन्+ण्वुल्+टाप्] छाग, फेन।

०मकड़ी का जाला।

०चाकू, तलवार।

सन्तापः (पुं०) [सम्+तप्+घञ्] ०गर्मी, ऊष्मा, उष्णता। (सुद० १२७)

०तपन, जलन।

०दुःख, पीड़ा, कष्ट, वेदना, व्यथा।

०सताना, दुःख देना।

०आवेश, रोष, क्रोध, कोप।

०तमतमाना।

०पश्चाताप, तपस्या। (सुद० ७८)

सन्तापकर (वि०) पीड़ादायक। (समु० ३/३)

सन्तापकलापः (पुं०) [सन्तापस्तस्य कलापः समूहः] कष्ट समूह, व्याधि समुच्चय। (जयो० १३/९९)

सन्तापकृत् (वि०) वेदना उत्पन्न करने वाला। (सुद० ८७)

सन्तप्पनं (नपुं०) जलन, दाह।

सन्तापयुक्त (वि०) अनुतप्त, संवेदना युक्त। (जयो०वृ० ९/४३)

सन्तापित (भू०क०कृ०) [सम्+तप्+णिच्+क्त] ०पीड़ित, दुःखित, व्याधिग्रस्त।

०कष्टयुक्त।

०संतप्त किया हुआ।

सन्तप्तता (वि०) संताप युक्त। (वीरो० २१/३)

सन्तिः (स्त्री०) [सन्+क्तिन्] विनाश, अन्त, समाप्ति।

०उपहार, भेंट।

संतुल् (सक०) तोलना। (जयो० ८/९६)

सन्तुष्टता (वि०) सन्तोष जनक। (समु० ४/३)

सन्तुष्टभावः (पुं०) सुपरितोष भाव।

सन्तोषणं (नपुं०) प्रसन्न करना। (जयो०वृ० १/९९)

सन्तोषदायक (वि०) संतुष्टि प्रदायक, परितोष उत्पन्न करने वाला। (जयो०वृ० ४/४६)

सन्तोषदायी (वि०) तुष्टिदायी, इच्छापूर्तियुक्त। (दयो० ५७)

सन्तोषभावः (पुं०) प्रसन्न भाव, हर्षभाव।

सन्तोषवारि (नपुं०) सन्तोष रूपी जल। (वीरो० २०/२)

सन्तोषशील (वि०) सन्तुष्टि युक्त।

सन्तोषामृतधारिणी (स्त्री०) सन्तोष रूपी अमृत धारण करने वाली। (सुद० ४/३३)

सन्तोषी (वि०) सन्तोष रखने वाला।

सन्त्यजनं (नपुं०) [सम्+त्यज्+ल्युट्] छोड़ना, त्याग देना, परित्याग करना।

सन्त्रासः (पुं०) भय, डर, आतंक।

सन्दद् (वि०) दत्तवती। (जयो० ५/१५)

सन्दधता (वि०) स्पर्शकर्ता। (जयो० २२/५०)

सन्दधनी (वि०) सुशोभित होने वाली। (जयो० १/६८)

सन्दंशः (पुं०) [सम्+दंश्+अच्] ०सन्डासी, चिमटा।

०दांत भींचना।

सं दा (सक०) देना-संददत् (जयो० ३/३५)

सन्दर्शकः (पुं०) [संदृश्+कन्] चिमटा, सन्डासी।

सन्दर्भः (पुं०) [सम्+दृश्+घञ्] ०सन्तति, सम्बन्ध, संलग्नता।

०आत्म परिचय।

०क्रम करना, मिलाना।

०मिश्रण, संग्रह।

०संरचना, निबन्ध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्दर्शनं (नपुं०) [सम्+दृश्+ल्युट्] ०अवलोकन, परिलोकन, ०देखना, ताकना, टकटकी लगाना।
०ध्यान।
०दृष्टि।
०दर्शन।

सन्दानं (नपुं०) [सम्+दा+ल्युट्] ०रस्सी, डोरी, रज्जू।
०शृंखला, बेड़ी, बंधनी।

सन्दानः (पुं०) गण्डस्थल।

सन्दानित (वि०) [सन्दान+इतच्] बद्ध, आबद्ध, कसा हुआ।
०शृंखलित, बेड़ी में जकड़ा हुआ, आवेष्ठित।

सन्दानिनी (स्त्री०) [सन्दानं बन्धनं गवां अत्र-सन्दान+इनि+ङीप्] गोष्ठ, गोशाला।

सन्दावः (पुं०) [सम्+दु+घञ्] प्रत्यावर्तन, परिभ्रमण, परावर्तन, भगदड़।

सन्दाहः (पुं०) [सम्+दह्+घञ्] दाह, जलन, उष्णता।
०उपभोगता।

सन्दिग्ध (भू०क०कृ०) [सम्+दिह्+क्त] ०सना हुआ, ढका हुआ।
०आच्छादित, आवृत।
०भ्रामक, सन्देहात्मक, अनिश्चितता। (जयो० १४/६६)
०भ्रान्त-
०सशंक, सन्देहास्पद, सन्देहयुक्त।
०असुरक्षित,
०विषाक्त।

सन्दिग्धादिग्ध (वि०) सन्दिग्ध और असन्दिग्धपना। (जयो० १४/६६)

सन्दिष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+दिश्+क्त] ०इंगित, इशारा किया गया, संकेतित।
०निर्दिष्ट।
०उक्त, वर्णित, कथित।
०ज्ञात, परिज्ञात।
०सूचित।

सन्दिष्टः (पुं०) सन्देशवाहक, दूत।
०हल्कारा।

सन्दिष्टं (नपुं०) सूचना, समाचार, खबर।

सन्दित (वि०) [सम्+दो+क्त] बद्ध, आबद्ध, जकड़ा हुआ।
०शृंखलित, बेड़ी युक्त।

सन्दिश (वि०) सन्देशदायक। (जयो० २६/२३)

सन्दिशत्-प्रकट किया गया। (जयो० २१/२६)

सन्दी (स्त्री०) [सम्+दो+ड+ङीष्] खटिया, खाट।

सन्दीपनं (नपुं०) [सम्+डीप्+णिच्+ल्युट्] ०प्रज्वलित करना, सुलगाना।

सन्दीपनः (पुं०) कामदेव का एक बाण,

सन्दीप्त (वि०) [सम्+डीप्+क्त] ०प्रज्वलित किया हुआ, सुलगाया हुआ।
०उत्तेजित, उद्दीपित।
०भड़काया हुआ, उकसाया हुआ।

सन्दुःख (वि०) दुःख युक्त। (जयो० ४/११३)

सन्दुष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+दुष्+क्त] कलुषित किया हुआ, मलिन किया हुआ।
०दुष्ट, दुर्जन।

सन्दूषणं (नपुं०) [सम्+दूष्+णिच्+ल्युट्] दोष, दूषण।
०मलिनता, मल।
०भ्रष्ट करना, विषाक्त करना।

संदृश् (सक०) देखना, भली प्रकार से अवलोकन करना। (जयो० ६/६०)

सन्देशः (पुं०) [सम्+दिश्+घञ्] ०सूचना, समाचार। (दयो० ६२)
०ज्ञातव्यपलेश। (जयो० २३/३५)
०आज्ञा, आदेश।
०रहस्य निवेदन। (जयो० २४/९६)

सन्देशनः (पुं०) दूत, संवाहक। (जयो० १८/६२, १८/१०)

सन्देशगत (वि०) आदेश को प्राप्त हुआ।

शन्देशदायक (पुं०) सन्देश देने वाला, समाचार देने वाला, सूचक।

सन्देशपदं (नपुं०) वृत्त प्रेषण, प्रेम प्रेषण। (जयो० १/६७) प्रेम परक सूचना।

सन्देशवाच् (पुं०) समाचार, वृत्तप्रेषण।

सन्देशहरः (पुं०) दूत, संदेशवाहक।

सन्देशिन् (वि०) समाचार देने वाला, वृत्तप्रेषण करने वाला। (जयो० २३/२८)

सन्देहः (पुं०) [सम्+दिह्+घञ्] संशय, शंका।
०संदेहालंकार-जिसमें दो समान वस्तुओं की घनिष्टता के कारण भ्रान्ति से एक वस्तु को अन्य वस्तु समझ लिया जाता है। 'ससंदहेस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः' (काव्य०१०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्देहधारि (वि०) संशय धारक, शंका धारक। (जयो० ३/९६)
०अच्छी शरीर का धारक-'समित्तिसम्यग्रूपस्य देहस्य शरीरस्य धारकेणेति' (जयो०वृ० ३/९६)

सन्देहप्रतिकारि (वि०) संशय निवारक। (जयो० ३/९६)

सन्देहालङ्कारः (पुं०) सन्देह अलंकार। (जयो०वृ० ५/८७) (वीरो० २/३४) संशय अलंकार-
इदमेतदिदं वेति साम्याद्बुद्धिर्हि संशयः।
हेतुभिर्निश्चयः सोऽपि निश्चयान्तः स्मृतो यथा।।
(वाग्भटालङ्कार ४/७८)
किमिन्दिराऽसौ न तु साऽकुलीना,
कला विधोः सा नकलङ्कहीना।
रतिः सतीयं न तु सा त्वदृश्या
प्रतर्कितं, राजकुलैः स्विदस्याम्।। (जयो० ५/७८)

सन्दोहः (पुं०) [सम्+दुह्+घञ्] ०दुहना, निकालना, दूध दुहना।
०किसी वस्तु की समष्टि, समुच्चय।
०ढेर, राशि, संघात, समूह।
०सन्दोहन, प्रकटन। (जयो० १७/७५)

सन्द्रावः (पुं०) [सम्+द्रु+घञ्] प्रत्यावर्तन, भगदड़, परावर्तन।

संध (सक०) सन्धान करना। (जयो० २/१३६)

संधारणशील (वि०) धारण करने वाले। (जयो०वृ० १/३२)

सन्धा (सक०) धारण करना-सन्दधत् (वीरो० १९/३९)

सन्धा (स्त्री०) [सम्+धा+अङ्+टाप्] ०साहचर्य, मिलाप, मेल।
०प्रगाढ़ सम्बन्ध।
०स्थिति, दशा।
०सीमा।
०प्रतिज्ञा।
०स्थिरता, धैर्य।
०सन्ध्या।
०मद्यसंधान।

सन्धानं (नपुं०) [सम्+धा+ल्युट्] ०जोड़ना, मिलाना, योग करना।
०मिश्रण, संगत, योग।
०मुख। (मुनि० २६)
०जोड़, ग्रन्थि।
०आचार आदि बनाना। (सुद० १२९)

सन्धानकः (पुं०) अचार, मुरब्बा। (हित० १/६)

सन्धानित (वि०) [सन्धान+इतच्] मिलाया हुआ, मिश्रण किया हुआ, संगमित।
०बांधा हुआ, कसा हुआ।

सन्धारण (वि०) भारोद्वहन, बोझा। (जयो०वृ० १३/८३)

सन्धारक (वि०) रक्षक, रक्षा करने वाला। (जयो०वृ० ६/१०४)

सन्धिः (स्त्री०) [सम्+धा+कि] ०संधान, जोड़, योग, मेल।
०संगम, सम्मिश्रण, सम्बन्ध।
०मित्रता, मैत्री, संघट्टन।
०अन्तराल, विश्राम।
०पर्व, ग्रन्थि। (जयो० ३/४०)
०पद मेल, पार्थक्य।
०छेद, विवर, छिद्र।
०सुरंग, सेंध।
०वर्ण विकार, ध्वनि परिवर्तन की प्रवृत्ति।

सन्धिकः (पुं०) [सन्धि+कन्] एक ज्वर विशेष।

सन्धिका (स्त्री०) [सन्धिक+टाप्] आसवन।

सन्धित (वि०) [सन्धा+इतच्] बद्ध, मिला हुआ, मिश्रित।
०समाहित, आबद्ध।
०प्ररक्षित।
०अचार डाला गया।

सन्धिदूषणं (नपुं०) प्रस्ताव भंग, शान्ति भंग। वार्तालाप में गतिरोध।

सन्धिनी (स्त्री०) [सन्धा+इनि+ङीप्] गर्भिन गाय, गर्भिणी गाय।

सन्धिला (स्त्री०) [सन्धि+ला+क+टाप्] भित्तिछिद्र।
०नदी, ०मदिरा।

सन्धुक्षणं (नपुं०) [सम्+धुक्ष्+ल्युट्] सुलगना, प्रज्वलित होना।
०उद्दीपन, उत्तेजित करना।

सन्धूप (वि०) उत्तम धूप। (वीरो० २/३३)

सन्धृत (वि०) लिपटा हुआ। (हित० ४७)

सन्धेय (वि०) [सम्+धा+यत्] जोड़े जाने योग्य, मिलाए जाने योग्य।

सन्ध्या (स्त्री०) [सन्धि+यत्+टाप्-सम्-ध्यै+अङ्+टाप् वा] सायंकाल, सन्धिवेला। शशिनाऽऽप विभुस्तु वाञ्चनकलशाली सह सन्ध्यया पुनः। (वीरो० १/३४) सांझ का समय। (सुद० १११)
०उचित ध्यान, प्रार्थना।
०चिन्तन-मनन।

सन्ध्याकालः (पुं०) सायंकाल, सांझ का समय। (जयो०वृ० १५/१२)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्ध्यान (वि०) पर्व आदि पर ध्यान करने वाला।

सन्ध्यानपरायणत्व (वि०) सन्ध्यासु सन्ध्यानपरायणत्वादेन च पर्वण्युपवास-मृतत्वात्। (वीरो० ११/२९) सन्ध्याकालीन कर्त्तव्य में परायण रहने वाला।

सन्ध्यानुचरी (वि०) सन्ध्या के पीछे पीछे चलने वाली। (दयो० १११)

सन्ध्यारुणिमा (स्त्री०) सन्ध्या कालीन लालिमा। (जयो०वृ० १५/१३)

सन्ध्यावन्दना (स्त्री०) सन्ध्याकालीन ध्यान, सामायिकादि की क्रिया। आलोचना करना। (जयो०वृ० १५/७)
०सदाचरण प्रवृत्ति। (जयो०वृ० १/७८)

सन्ध्यावन्दनकारिन् (वि०) सन्ध्या वन्दन करने वाले। (जयो०वृ० १५/३१)

सन्ध्यासमयः (पुं०) सन्ध्याकालीन समय। सांझ का समय। (दयो० २/५) आप्रदोष (जयो०वृ० २/१२२)

सन्न (भू०क०कृ०) [सद्+क्त] आसीन, स्थित, बैठा हुआ।
०खिन्न, दुःखी, व्याकुल, उदास।
०विश्रान्त, थका हुआ, म्लान।
०क्षीण, दुर्बल।
०नष्ट, लुप्त।
०गतिहीन, स्थिर।

सन्नः (पुं०) पियाल तरु।
०चारोली तरु।

सन्नं (नपुं०) अल्पमात्रा, थोड़ा सा।

सन्नक (वि०) [सन्न+कन्] नाटा, छोटे कद का।

सन्नत (भू०क०कृ०) [सम्+नम्+क्त] नम्रीभूत, नत, झुका हुआ।
०प्रणत।

सन्नतर (वि०) [सन्न+टाप्] विषण्ण, अपेक्षाकृत धीमा।

सन्नतिः (स्त्री०) [सम्+नम्+क्तिन्] प्रणति, अभिवादन, नमन।
०सादर प्रणम्यभाव, सम्मान।
०ध्वनि, कोलाहल।

सन्नद्ध (भू०क०कृ०) [सम्+नह्+क्त] ०कटिबद्ध, उद्यत, तत्पर।
०सुसज्जित, सुव्यवस्थित।
०निकटस्थ, सीमावर्ती।

सन्नपि (अव्य०) होने पर भी। (जयो० १/१२)

सन्नयः (पुं०) [सम्+नी+अच्] ०संचय, समुच्चय, परिमाण।
०सन्मार्ग। (सुद० १३६)
०पृष्ठभाग।

संन्यासित् (वि०) संन्यास युक्त। (वीरो० ११/२४)

सन्नहनं (नपुं०) [सम्+नह्+ल्युट्] उद्यम, परिश्रम, उद्योग, प्रयत्न।
०सन्नद्ध होना, सुसज्जित होना।
०कवच।

सन्नहनकः (पुं०) कवच, उरश्छद, वक्षस्थलावरणक। (जयो० ७/९३)

सन्नहनरोधि (वि०) कवच धारण में बाधक। (जयो० ७/९५) कवच धारणे बाधकं-

सन्नाहः (पुं०) [सम्+नह्+घञ्] कवचित होना, युद्ध के लिए तैयार होना, सुसज्जित होना। (जयो० ८/५७)

सन्नाहकः (पुं०) कवच पहनना। (दयो० १२०) तेभ्योऽतिवर्तनं कस्मात् त्यागसन्नाहकं विना।

सन्नाह्यः (पुं०) [सम्+नह्+ण्यत्] युद्ध का हाथी।

सन्निकर्षः (पुं०) [सम्+नि+कृष्+घञ्] ०समीप लाना, निकटस्थ करना।
०सम्बन्ध, इन्द्रिय विषय से सम्बन्धित।
०उत्कर्ष-अनुत्कर्ष का विचार करना, एक वस्तु में किसी एक धर्म के विवक्षित होने पर शेष धर्मों के उसमें सत्त्व-असत्त्व का विचार करना।
०पड़ौस, सामीप्य।

सन्निकर्षणं (नपुं०) [सम्+नि+कृष्+ल्युट्] निकटस्थ करना, समीप लाना।
०पहुंचना, आना।
०सामीप्य करना।

सन्निकृष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+नि+कृष्+क्त] ०सींचा हुआ, आकृष्ट किया हुआ।
०समीपवर्ती, सटा हुआ।
०निकटस्थ, समीपस्थ।

सन्निग्रहणं (नपुं०) [सम्+नि+ग्रह्+ल्युट्] अच्छी तरह निग्रह करना, भली-भांति निग्रह करना। हृषीकसन्निग्रहाणैकवित्ताः स्वभाव सम्भावनमात्रचित्ताः। (सुद० ११८)

सन्निचयः (पुं०) [सम्+नि+चि+अच्] ०संग्रह, संचय।

सन्निधातृ (पुं०) [सम्+नि+धा+तृच्] निकट लाने वाला, जमा करने वाला।

सन्निधानं (नपुं०) [सम्+नि+धा+ल्युट्] सामीप्य, पड़ौस।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०उपस्थिति, दृष्टिगोचर होना।

०ग्रहण करना।

०उत्तमविधान भण्डार। (सुद० ४०४/)

०सम्मिश्रण, समष्टि।

सन्निधाय् (सक०) स्थापित करना, उपस्थित करना। (जयो० २/३१)

सन्निधिः (स्त्री०) [सम्+नि+धा+इक्] ०धनराशि (जयो० २१/५३)

०निकटवर्ती। (जयो० २०/८८)

०समागम। (दयो० ७२)

०दर्शन करना। यद्यसि शान्ति समिच्छकस्त्वं सम्भज सन्निधिमस्य। (सुद० ७१)

सन्निपातः (पुं०) [सम्+नि+पत्+घञ्] 'संसारे पतनं सन्निपातः' (जयो० २/६८)

०गिरना, उतरना, नीचे आना।

०सम्पर्क, संघर्षण, टकराहट।

०मिश्रण, मेल, संचय।

०संघात, समुच्चय, संग्रह।

०रोग विशेष। बात, पित्त, और कफ इन तीनों के योग से जो दोष उत्पत्ति होती है वह विषम ज्वर रूप होता है।

सन्निबन्धः (पुं०) [सम्+नि+बन्ध्+घञ्] ०आसक्ति, लगाव, जोड़, मेल।

०सम्बन्ध, कस कर बांधना।

सन्निबध्य (वि०) [सम्+नि+बन्ध्+ण्यत्] बन्धन योग्य, जोड़ने योग्य। (जयो० ११/२६)

सन्निनादः (पुं०) कडकड शब्द। (जयो० ८/१२)

सन्निभ (वि०) [सम्+नि+भा+क] समान, सदृश, तुल्य। (जयो० ६/१८) स्मर। चापसन्निभभ्रूः कटुकं परमर्कदलजातिः। (जयो० ६/१८)

सन्निभा (वि०) सादृशी। (जयो० १९/४६)

सन्निमेषः (पुं०) सन्तो निमेषा यस्यां सा तया सन्निमेषकदृशा। (जयो०वृ० ५/६९) अनुराग रखने वाली दृष्टि, निश्चल दृष्टि।

सन्नियोगः (पुं०) [सम्+नि+युज्+घञ्] ०नियुक्ति,

०परस्परिक योग, मेल।

०अनुराग।

०बीच, मध्यस्थ। (जयो० २१/७)

सन्निरोधः (पुं०) [सम्+नि+रुध्+घञ्] अड़चन, रुकावट।

सन्निविष्ट (वि०) उपस्थित। (जयो० १३/६३)

सन्निर्वृतः (पुं०) समीचीन निधि।

सन्निवृत्तिः (स्त्री०) [सम्+नि+विश्+घञ्] ०रचना ०संरचना (जयो०वृ० १/१७)

सन्निवेशः (पुं०) [सम्+वि+विश्+घञ्] ०भाण्डागार (जयो० १/१७)

०अवयव-आखण्डलोऽयमथवा

सन्निवेष् (सक०) बिठाना, ठहराना। (जयो० ५/२२)

सन्निहित (भू०क०कृ०) [सम्+नि+धा+क्त] उपस्थित।

०ताडित। (जयो० ९/१२)

सन्मङ्गलार्थ (वि०) उचितमंगल के लिए। (वीरो० ४/३७)

सन्मति (वि०) महावीर का अपर नाम।

सन्मतिभा (स्त्री०) यशोदा। (जयो०)

सन्मतिसंसद् (स्त्री०) विचारशील सभा सन्मतीनां विचारशीलानां वा संसदि सभायां पतत्येव' (जयो० २५/४०)

सन्मतिसम्प्रदायः (पुं०) वीर प्रभु का सम्प्रदायः। (वीरो० १५/६१) मृदुसन्निवेश। (दयो० १०८)

०अनुराग, उत्कृष्ट भक्ति।

०स्थान, स्थल।

०अवस्था।

०रूप, आकृति।

सन्मन (वि०) [एतां मनः] सत्पुरुष का मन। (जयो०वृ० २/६६) सतां विदुषां मनश्चित्तम्' (जयो० २/५२) शुद्धिचित्त गृही (जयो० २/९५)

सन्मार्गः (पुं०) मुक्ति पथ।

सन्मार्गगामी (वि०) मुक्तिपथगामी। (वीरो० १८/४२)

सन्मार्गदर्शक (वि०) मुक्तिपथदर्शक।

सन्मार्गप्ररूपण (वि०) उचित मार्ग का कथन। (जयो०१८/८६)

सन्मार्गप्रवृत्तिः (स्त्री०) मुक्ति पथ की प्रवृत्ति। (जयो० १८/८७)

सन्मुख (वि०) सामने। (भक्ति० १४)

सन्मञ् (सक०) पोंछना, साफ करना। (वीरो० ५/११)

सन्मार्जित (वि०) प्रमार्जित।

सन्यसनं (नपुं०) [सम्+नि+अप्+ल्युट्] ०विरक्ति, वैराग्य, त्याग।

०सौंपना, प्रदान करना।

सन्यस्त (भू०क०कृ०) [सम्+नि+अस्+क्त] डाला हुआ, नीचे रखा हुआ। त्यागा हुआ।

संयासः (पुं०) [सम्+नि+अस्+घञ्] ०छोड़ना, त्यागना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०वैराग्यभाव, विरक्ति परिणाम।
०धरोहर, निक्षेप।
०योगी। (जयो० २/११७)

सन्यास-आश्रमः (पुं०) योगी आश्रम। (जयो० २/११७) (जयो०वृ० १८/४८)

सन्यासाश्रमः (पुं०) योगी आश्रम, तपस्वी स्थल।

सन्यासिन् (पुं०) त्यागी, विरक्ति। (जयो० २६/१०३)
०विरागी (दयो० २५)

सन्यासोपनिषद् (वि०) सन्यास सम्बंधी उपनिषद। (दयो० २५)

सन्योगुणः (पुं०) सज्जन गुण। (समु० १/२४)

सन्विहर (वि०) साथ में विहार करने वाला। (समु० ३/८)

सप् (अक०) सम्मान करना, पूजा करना।

सपक्ष (वि०) पक्षेण सह-पंखों वाला।
०पक्षवाला, दलवाला।
०बन्धु, सदृश, समान।

सपक्षः (पुं०) समर्थक, अनुगामी, पक्षपाती।
०सजातीय, सम्बंधी।

सपक्षता (वि०) पक्षपना-रुचि। (जयो० २८/३२)

सपक्षयुक्तता (वि०) पक्षसहितपन। (जयो० २८/३२)

सपत्नः (पुं०) [सह एकार्थे पतति पत् न सहस्य सः] शत्रु, विरोधी।

सपत्नी (स्त्री०) [समानः पतिः यस्याः]
०अपनी भार्या, निजाङ्गना। (जयो० ८/६४)
०प्रतीयत्नी-सौत। (जयो० १४/३०)
०सहपत्नी, सौत।

सपत्नीक (वि०) [सपत्नी+कप्] पत्नी सहित।

सपत्नीगणः (पुं०) स्त्रीसमूह। (जयो०वृ० २३/२७)

सपत्राकरणं (नपुं०) [सह पत्रेण सपत्र+डाच्+कृ+ल्युट्] अत्यंत पीड़ाजनक। कष्टदायी।

सपत्राकृतिः (स्त्री०) [सपत्र+डाच्+कृ+क्तिन्] वेदना, पीड़ा, सन्ताप, दुःख।

सपदि (अव्य०) [सह+पद्+इन् सहस्य सः] इस समय, अब (सुद० ८१) (जयो० १/९५)
०अधुना। (जयो० ५/४) (जयो० ३/५)
०शीघ्र, तुरंत। (सुद० ४/३०)
०तत्काल, तत्क्षण।

सपर्ण (वि०) पर्ण सहित-पत्र सदृश। (जयो० ८/४१)

सपर्या (स्त्री०) [सपर्+यक्+अ+टाप्] पर्युपासना (जयो० २२/३६)
०अर्चना, पूजा, प्रार्थना। (वीरो० ५/६)
०सम्मान, आदर।

सपर्यापर (वि०) पूजा में तत्पर। (वीरो० ५/६)

सपाद (वि०) [सहपादेन] पैरों वाला। ०एक चौथाई बड़ा हुआ।

सपिक्ष (वि०) पिक्ष सहित-पार्श्व पिच्छया मयूर पक्ष निर्मिता (जयो० २१/२८)

सपिण्डः (पुं०) [समानः पिंडा मूलपुरुषो निवापो वा यस्य] पिण्डदान देने वाला।

सपिण्डिकरणं (नपुं०) पिण्डदान करना।

सपीतिः (स्त्री०) [सह एकत्र पीतिः-पानं+पा+क्तिन्] सहपान, मिलकर पान करना।

सपूत (वि०) पुत्र युक्त। (समु० ९/२)

सप्रकाशकर (वि०) स्व प्रकाशक। (हित० ४३)

सप्त (नपुं०) सात। (जयो० १/१९)

सप्तक (वि०) [सप्तानां समूहः] सातवां, सात की संख्या वाला।

सप्तकी (स्त्री०) [सप्तभिः स्वरैः इव कायति शब्दायते सप्तन्+कै+क+ङीष्] 'करधनी'ति प्रसिद्धा मेखला। (जयो० १५/४६) करधनी, कंदौरा, तगड़ी।

सप्ततिः (स्त्री०) [सप्तगुणिता दशतिः] सत्तर।

सप्तधा (अव्य०) [सप्तन्+धाच्] सात प्रकार से, सात गुणा।

सप्तन् (सं०वि०) [सदैव बहुवचनान्त] सात, सात संख्या। (सुद० १०८)

सप्तचत्वारिंशत् (स्त्री०) सैंतालीस।

सप्तच्छ्दः (पुं०) सप्तपर्ण। (वीरो० १३/११)

सप्तच्छदगन्धवाहः (पुं०) सप्तपर्ण वृक्षों की सुगन्ध-ते शारदा गन्धवहाः सुवाहा वहन्ति सप्तच्छदगन्धवाहाः। (वीरो० २१/२४)

सप्तजिह्वः (पुं०) आग, अग्नि।

सप्तज्वालः (पुं०) आग, अग्नि।

सप्ततत्त्व (नपुं०) सात तत्त्व। ०जीवाजीवादि ज्ञान।

सप्तत्रिंशत् (स्त्री०) सैंतीस।

सप्तदशन् (वि०) सत्रह।

सप्तदीधितिः (स्त्री०) अग्नि, आग।

सप्तद्वयोदारः (पुं०) चौदह। (वीरो० ११/५)

सप्तद्वीपा (स्त्री०) पृथ्वी।

सप्तधातु (पुं०) सात प्रकार की शारीरिक धातुएं। अन्नरस, रुधिर, मांस, चर्बी, हड्डी, मज्जा और वीर्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सप्तनवतिः (स्त्री०) सत्तानवे।
सप्तनाडीचक्रं (नपुं०) ज्योतिष सम्बंधी रेखा।
सप्तपर्णः (पुं०) सप्तच्छदवृक्ष। (वीरो० ४/१८)
सप्तपलाशकीयः (पुं०) सप्तपर्ण। (वीरो० २१/१८)
सप्तपदी (स्त्री०) सात पग चलना, वैवाहिक क्रिया का एक रूप जिसमें दूल्हा एवं दुल्हन को सात वचन साक्षी पूर्वक ग्रहण करने को कहे जाते हैं।
सप्तपरिक्रमा (स्त्री०) सात प्रदक्षिणा, सात फेरे। (जयो०१२/७३)
सप्तप्रवृत्तिः (स्त्री०) सात अंग।
सप्तप्रकारः (पुं०) सात भेद, सप्त भंग। (वीरो० १९/७)
सप्तप्रकारत्व (वि०) सात भंग वाले। सप्तप्रकारत्वमुशन्ति भोक्तुः फलानि च त्रीण्यधुनोपयोक्तुम्। (वीरो० १९/७)
सप्तभङ्गात्मक (वि०) सप्त भंग रूप। (भक्ति० ९)
सप्तभद्रः (पुं०) सिरस तरु।
सप्तभूमिक (वि०) सात खण्ड वाला।
सप्तभौम (वि०) सात खण्ड वाला।
सप्तम (वि०) [सप्तानां पूरणः सप्तन्+डट्] सांतवां। (सम्य० १२८)
सप्तमक (वि०) सांतवा। (सम्य० १४०)
सप्तमलम्बका (नपुं०) सांतवां लम्ब। ०चम्पूकाव्य में प्रयुक्त सांतवां अध्याय।
सप्तरात्र (नपुं०) सात रात का समय।
सप्तर्षि (पुं०) एक ऋषि विशेष।
सप्तला (स्त्री०) चमेली।
सप्तविंशतिः (स्त्री०) सत्ताईस।
सप्तविध (वि०) सात गुना, सात प्रकार का।
सप्तशतं (नपुं०) सात सौ।
सप्तसप्तिः (पुं०) सूर्य।
सप्तस्वरं (नपुं०) सात स्वर-निषाद, ऋषभ, षड्ज, गान्धार, मध्यम, पञ्चम और धैवत। (जयो०वृ० ११/४७)
सप्ताङ्ग (वि०) सप्त प्रकृति।
सप्तार्चिस् (वि०) सात जिह्वा वाला। अशुभ दृष्टि वाला।
सप्तार्चिस् (पुं०) अग्नि, आग।
०शनि। (जयो० ७/२४)
सप्ताशीतिः (स्त्री०) सतासी।
सप्ताश्रमः (पुं०) सतकोन, सात कोने।
सप्ताश्वः (पुं०) सूर्य, दिनकर। (जयो०वृ० १५/१६)
सप्ताश्वकः देखो ऊपर।
सप्ताहः (पुं०) एक सप्ताह।
सप्तिः (पुं०) अश्व, घोड़ा। (जयो० ३/११०)
सप्तिसमूहः (पुं०) अश्व समूह। (जयो० २/११०)
सप्रणय (वि०) [सह प्रणयेन] स्नेहपूर्ण, मित्रतापूर्ण।
सप्रतिपत्तिक (वि०) विश्वास उत्पन्न करने वाला-प्रतिपत्या सहित, विश्वासुत्पाद्य।
सप्रत्यय (वि०) [प्रत्ययेन सह] विश्वस्त, विश्वास योग्य। ०निश्चित।
सप्रीति (वि०) प्रीति युक्त। (सुद० ८२)
सफरः (पुं०) चमकीली मछली।
०सफल। (जयो० ४/१५)
सफरसमूहः (पुं०) मछली समूह। (दयो० ९)
सफल (वि०) [सह फलेन] सम्पन्न, पूर्ण, पूरा किया हुआ। (जयो० ४/१५) फलवान् (जयो० १६/१५)
०फलों से परिपूर्ण।
०उपजाऊ।
सफलता/सफलत्व (वि०) सम्पन्नता, पूर्णता। (सुद० ७२, समु० १/२)
सफलीकृत (वि०) सफलता युक्त। (जयो० २६/८१)
सफल प्रयत्नः (पुं०) कृतार्थ। (जयो०वृ० १२/४७)
सबन्धु (वि०) [सह बन्धुना] मित्रयुक्त, मित्रता से परिपूर्ण। ०परिजन सहित।
सबन्धुः (पुं०) बन्धुवर्ग, परिजन। माता-पितादि सहित।
सबन्धुवर्गः (पुं०) माता-पितादि सहित। स्थातुं समिच्छामि सबन्धुवर्गः पुरेऽत्रतत्सम्भविनो भवन्तु। (समु० ३/२५)
सबला (स्त्री०) लक्ष्मी। (जयो०१५/५४) ०धनश्री।
सबलिः (पुं०) [सह बलिना] सन्ध्याकालीन समय, गोधूलिबेला।
सबहुमान (वि०) सम्मान रहित। (दयो० १०८)
सबाध (वि०) [सह+बाधया] आघातपूर्ण, ०पीड़ाजनक, कष्टदायक, बाधायुक्त।
सब्रह्मचर्यम् (नपुं०) [समानं ब्रह्म आत्मज्ञानग्रहणकारिन् व्रतं चरति-चर+णिनि] सहपाठी, साथ में अध्यन करने वाला।
सभ (वि०) कान्ति युक्त, प्रकाश सहित, नक्षत्र सहित। (जयो० ३/४५)
सभय (वि०) भय सहित। (सुद० ११२)
सभया (स्त्री०) त्रपा, लज्जा। सभायां लज्जा न कार्या विद्वद्भिरिति (जयो० १७/३३)
सभा (स्त्री०) [सह भान्ति अभीष्ट निश्चयार्थमेकत्र यत्र गृहे]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०शोभावती (जयो० १०/११४) परिषद्, समिति, संगठन। पक्षति (जयो०वृ० ३/७)

०गोष्ठी (जयो०वृ० १/१२) सदस। (जयो०वृ० १/४३)

सभाज् (सक०) प्रणाम करना, नमस्कार करना।

०अर्पित करना, बधाई देना।

०पूजा करना, आदर देना।

०अलंकृत करना, सुशोभित करना।

सभाजनं (नपुं०) [सभाज्+ल्युट्]०प्रणाम करना, अभिवादन करना।

०स्वागत करना, बधाई देना।

सभामण्डपम् (नपुं०) सभास्थल, सभावनि। (जयो० ५/९०)

सभामध्य (वि०) सभा के बीच के। (समु० ३/३९)

सभावनः (पुं०) [सह भावनेन] शिव, शंकर।

सभाव (वि०) भाव सहित। (जयो०वृ० ५/९०)

सभावनि (स्त्री०) सभा मण्डप। (जयो० ५/९०)

सभासमारोहः (पुं०) परिषद का आयोजन। (जयो० ५/२६)

समङ्कित (वि०) व्याप्त। (वीरो० २/२९)

समङ्गनावर्गः (पुं०) समीचीन अंगना समूह। (जयो० १/६९)

समञ्च् (सक०) प्रदान करना, फैलाना। तयोरुदर्कं सुरभि समञ्चत् (सुद० २/२८)

समञ्चनक्षत्रपतिः (पुं०) समीचीन गति से युक्त नक्षत्र स्वामी। सम्यगञ्चनमाचरणं यस्य तस्य क्षत्रपतेः क्षत्रियशिरोभागेः (जयो०वृ० १९/६) सम्यगञ्चनं येषां तानि समञ्चनानि, तानि च तानि नक्षत्राणि तेषां पतिः स्वामी तस्य' (जयो०वृ० १९/६)

सभानिवेद्वणः (पुं०) सभापति। (जयो०वृ० ६/२३)

सभानिवासिन् (वि०) सभा में रहने वाला। (जयो० ३/१३)

सभापति (पुं०) अध्यक्ष।

सभाशा (स्त्री०) आशा, अभिलाषा। (सुद० ११५)

सभासदः (पुं०) सदस्य। (जयो०वृ० ४/५०)

सभाह (भूतकालिक प्रयोग) उत्तर दिशा। (सुद० ३/३२)

सभासारः (पुं०) सभासा रजन्या निशाया सारः। (जयो० १७/४)

सभिकः (पुं०) [सभा द्यूतं प्रयोजनमस्य] जुआं खेलने वाला।

सभामण्डपः (पुं०) स्वयम्बर मण्डप। (जयो० ३/७१)

सभिद (वि०) भेद सहित। (जयो० २३/)

सभीति (वि०) भयपूर्ण। (जयो० १/३५) भयान्वित। (जयो० २७/६१)

सभ्य (वि०) [सभायां साधुः-यत्] ०सुसंकृत, संस्कारयुक्त, परिष्कृत।

०सुशील, विनम्र, शिष्ट।

०विश्वस्त, विश्वसनीय।

सभ्मनिकायः (पुं०) सुसंस्कृत समूह। (जयो० १४/४५)

सभ्यता (स्त्री०) [सभ्यः+तल्+टाप्] विनम्रता, सुसंस्कारित, सुशीलता, कुलीनता। (सम्य०७०) कष्ट सहन सभ्यतयैति वासः। (दयो० ६१)

सम् (अक०) विक्षुब्ध होना, अव्यवस्थित होना।

०खिन्न होना, उदासीन होना।

सम् (अव्य०) [सो+उमु] धातु या कृदन्त शब्दों से पूर्व लगने वाला प्रत्यय।

०बहुत, अधिक, अत्यंत। (सम्य० ५३)

०उत्कृष्ट, उत्तम। (जयो० १/१३)

०निकट, समीप। ०परम। (सुद० २/४२)

०पूर्व जैसा। ०समयुक्त। (सम्य० ८८)

समः (पुं०) समभाव। 'सन्तः सदा सभा भान्ति मर्जूमतिनुतिप्रिया। (वीरो० २२/४०)

सम (वि०) [सम्+अच्] समभाव, समान। समं समन्ता दुपयोगि। (सम्य० ४, वीरो० १७/८) एक जैसा।

०निष्पक्ष, तर्कसंगत, न्याय संगत

०मित्र-बांधवभाव। (जयो० ३/९६) सम संख्या विशेष। (जयो०वृ० १/१९)

०सब, प्रत्येक, सारा, सम्पूर्ण। स्वयं। (सुद० ९६)

समः (पुं०) समभाव प्रथम भाव। (जयो० २८/३३)

समं (अव्य०) के साथ, मिलकर। समं समालोच्य (जयो०वृ० ३/६६) सादृश्यता। (जयो० ३/४३)

समकन्या (स्त्री०) उपयुक्त कन्या, विवाह योग्य कन्या।

समकर्णः (पुं०) चतुष्कोण।

समकारि (वि०) यथावत् स्थिर रहने वाला। (वीरो० २२/८)

समकालः (पुं०) सही समय, वही काल।

समकालं (अव्य०) उसी समय, युगपत्।

समकालीन (वि०) समसामायिक।

समकोलः (पुं०) सर्प, अहि।

समक्ष (वि०) [अक्ष्णो समीपम्-समक्ष्+अच्] दर्शनीय।

०प्रत्यक्ष। (वीरो० ७१/३९)

समक्षः (पुं०) वर्तमान। सर्वसाधारणांतर गोचरः यद्वा सम्यक्।

समक्षता (वि०) साक्षात्कारी। (जयो० २०/८०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समन्ततोऽस्मिन् सुमनस्त्वमस्तु पुनीतयाकन्दविधायिवस्तु। (वीरो० ६/२४)

समगाल् (वि०) अनुभव करने वाला। (वीरो० ५/३६)

समक्षेत्रं (नपुं०) नक्षत्र क्रम।

समगन्धकः (पुं०) धूप।

समगसः (पुं०) कारण। (समु० ७/१४)

समगेय (वि०) स्वरादि से संयुक्त गेय।

समग्र (वि०) [समं सकलं यथा स्यात्तथागृह्यते-सम्+ग्रहन्+ड] समस्त, पूर्ण, सम्पूर्ण, पूरा। (सुद० १/३१)

समङ्कित (वि०) लिखित। (जयो० ११/५८) आरोपित। (जयो० १५/१५, ३/२४) पूरित

समचतुरस्र (वि०) समभुज, चतुष्कोण।

समचतुरस्रसंस्थानं (नपुं०) अंग-उपांग अधिकृत अवयवों से परिपूर्ण।

०शरीरगत अवयवों की रचना।

समचतुर्भुजा (पुं०) विषमकोण।

समचित्त (वि०) प्रशान्तचित्त, प्रसन्नचित्त।

समञ्च् (अक०) पूजना, पूजा करना। अञ्चगतिपूजनयो। (सम्य० ४/०)

समजः (पुं०) [सम्+अज्+अप्] पशुओं का झुण्ड, रेवड़।

समजं (नपुं०) अरण्य, जंगल।

समजाय (वि०) समानता को उत्पन्न हुई। (जयो० ६/१२९)

समजाति (वि०) समान जाति।

समज्या (स्त्री०) [सम्+अज्+क्यप्+टाप्]

०सभा, परिषद।

०ख्याति, यश, कीर्ति।

समज्ञा (स्त्री०) ख्याति, प्रसिद्धि।

समञ्जस (वि०) [सम्यक्+अञ्जः औचित्यं यत्र] उचित, तर्कसंगत, ठीक।

०यथार्थ, सत्य।

०स्पष्ट।

०न्यायोचित।

०अभ्यस्त, अनुभूता।

समञ्जसं (नपुं०) औचित्य, योग्यता, यथार्थता।

समता (स्त्री०) [सम्+तल्+टाप्] ०सम रूपता, साम्यभाव, समभाव।

०मध्यस्थ भाव।

समतिक्रमः (पुं०) [सम्+अति+क्रम्+घञ्] सीमातिक्रमण (जयो० २१/७५) अतिक्रमण, उल्लंघन।

०भूल, विस्मृति।

समतिक्रमरोधः (पुं०) सीमातिक्रमणनिवारण। (जयो० २१/७५)

समतिलोत्तमा (स्त्री०) तिलोत्तमा के समान। (सुद० ४/३८)

समतीत (वि०) [सम्+अति+इ+क्त] बीता हुआ, गया हुआ।

समत्व (वि०) समत्व युक्त। ०समभाव सहित।

समत्वहेतु (वि०) तुल्यभाव के कारण वाला। (जयो० १६/३३)

समत्तु-भोजन करने योग्य। (जयो० २/१०७)

समद (वि०) [सह मदेन] मद युक्त, मदहोश।

समदत्ति (स्त्री०) श्रद्धापूर्वक पृथ्वी आदि देना।

समदर्शन (वि०) समदर्शी, निष्पक्ष, समभाव का दर्शन करने वाला।

समदर्शिका (स्त्री०) समभू। (जयो० २४/१३०) समभाव दर्शिका।

समदर्शिन् (वि०) समदीर्श, निष्पक्षी।

समदाग्जिन (वि०) प्रकट हुए जिन। (वीरो० ७/१४)

समदुःख (वि०) सहानुभूति रखने वाला।

समदृश् (वि०) पक्षपात रहित।

समदृष्टसारः (पुं०) उत्तमसारभूत दृश्य। (सुद० २/१९)

समदृष्टिः (स्त्री०) समदर्शी, निष्पक्ष दृष्टा।

समद्धित (वि०) ऋद्धि युक्त। (मुनि० १५)

समधारी (वि०) समत्वधारी, समभाव युक्त। (सुद० ३/२१)

समधिगम्य (सं०कृ०) पहुंचकर। (जयो० २/१५८)

समधिक (वि०) [सम्यक् अधिक] ०अत्यधिक, अत्यंत, विशाल।

०व्यापक, परिपूर्णता युक्त।

समधिकवेशशालिन् (पुं०) समपूर्वक विचरण करने वाला। अधिकवेग युक्त। (जयो० २१/२१)

समधिगमनं (नपुं०) [सम्+अध+गम्+ल्युट्] आगे बढ़ना, अग्रगामी होना, अग्रसर होना।

०जीत लेना, पार कर लेना।

समधिरुह (वि०) आरुढ़, सवार हुआ। (जयो० २१/६)

समधी (वि०) समत्व बुद्धि वाला, प्रशस्त व्रतों से युक्त।

०अहंकार रहित।

समध्व (वि०) [समानः अध्वः यस्य] साथ-साथ चलने वाला, साथ साथ यात्रा करने वाला।

समनस्क (वि०) [संज्ञिनः समनस्काः] सम्प्रधारणं संज्ञायां संज्ञिनो जीवाः समनस्काः भवन्ति। संज्ञा युक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समनस्कः (पुं०) संज्ञी जीव। मनसहित जीव।

समनीकिनीश्वरः (पुं०) सेनानायक, सेनापति। (जयो० २१/१)

समानुभावः (पुं०) बोध करना। (जयो० २/५९)

समनुकूलित (वि०) अनुकूल करते हुए। (जयो० ४/४४)

समनुयापिनी (वि०) अकुरणशीला। (भक्ति०)

समनोज्ञ (वि०) ज्ञानादि सहित, रमणीयता युक्त, अत्यंत प्रिय।
०सम्भोग सहित।

समन्त (वि०) [सम्यक्+अन्तो यत्र] ०पूर्ण, व्याप्त, पूरा, समस्त।

समन्तः (पुं०) व्यापक, सीमा, मर्यादा। 'समन्तम्, समन्ततः समन्तात्' (जयो०वृ० ३/७४) (जयो० ११/९०) (सुद० १/२९) क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। (दयो० ३१)

समन्तभडः (पुं०) आचार्य समन्तभद्र। (वीरो० १/२४)

समन्तभद्र (वि०) समन्ताद्भद्र-कुशलं तस्मै समस्तु भवतु (वीरो० १/२४) *

समरसः (पुं०) पवित्र रस। (जयो० २५/६६)

समन्तभद्र (वि०) सभी तरह से योग्य। (जयो०वृ० ४/९०)

समन्तभद्रः (पुं०) शान्तिवर्मा। (जयो०वृ० ३/६४) आचार्य समन्तभद्र। (समु० १/११)
शान्तिवर्मा नाम समन्तभद्रः। देवागम स्तोत्र रचनाकार। (सुद० ८२)

समन्तमार्गः (पुं०) चतुष्कपथ, चौराहा। (जयो०वृ० ४/४) (जयो०वृ० ३/५४)

समभूत् (वि०) हुआ। (जयो०वृ० २६/१)

समभूतरक्षणम् (नपुं०) समस्त जीवों का संरक्षण। समानां सर्वेषां भूतानां रक्षणं यत्र (जयो०वृ० २६/१) सदृक् सर्वमान्येषु च समं त्रिषु इति विश्वलोचने (जयो०पृ० ११७४)

समन्तरी (स्त्री०) समादरणीयस्थान। (जयो० २४/३)

समन्तरीय (वि०) सुप्रशस्त अधोवस्त्र। (जयो० १७/७४)

समन्यु (वि०) [सह मन्युना] शोकाकुल, रोषपूर्ण, रुष्ट।

समन्वयः (पुं०) [सम्+अनु+इ+अच्] पारस्परिक सम्बन्ध। (जयो०वृ० ११/७६)
०समकक्षभाव, सम्मेलन (जयो० ६/७६) अनुक्रम युक्त।
०संयोग।

समन्वयानन्दः (पुं०) सब लोगों को होने वाला आनन्द। (समु० १/५)

समपादि (वि०) बनाई गई, निर्मित की गई। (दयो० १६)

समन्वित (भू०क०कृ०) [सम्+अभि+प्लु+क्त] समुदाय सहित (जयो० १३/१२) सम्बद्ध (दयो० १/१९) आबद्ध।
०अनुगत सार्धम्। (जयो०वृ० १/५५)
०सहित, युक्त, परिपूर्ण, पूरित, भरा हुआ। (जयो०३/७५)

समन्वयालङ्कार (पुं०) एक अलंकार विशेष। (वीरो० २/३८) नासौ नरो यो न विभाति भोगी भोगोऽपि नासौ न वृषप्रयोगी वृषो न सोऽसख्यासमर्थितः स्यात् सख्यं च तन्नात्र कदापि न स्यात्।। (वीरो० २/३८)

समपूज् (अक०) पूजा करना, अर्चना करना। (सुद० ३/२)

समभावत (वि०) सुशोभित होते हुए। (वीरो० ८/१०)

समभिप्लुत (भू०क०कृ०) [सम्+अभि+प्लु+क्त] ०बाढ़ग्रस्त।
०ग्रहण युक्त।

समभिव्याहारः (पुं०) [सम्+अभि+वि+आ+हृ+घञ्] ०साहचर्य, समन्वित, साथ।
०सामीप्य।

समभिसरणं (नपुं०) [सम्+अभि+सृ+ल्युट्] ०पहुंचना, जाना।
०प्राप्त होना।
०खोज करना, कामना करना।

समभिहारः (पुं०) [सम्+अभि+हृ+ञ्] साथ साथ ले जाना।
०आवृत्ति।
०अतिरिक्त।

समभू (वि०) समदर्शिका। (जयो०वृ० २४/१३०) हो गए। (१२३) विचारना (सुद० १०८)

समभूत (वि०) सुन्दरतम। (जयो० ५/२०)
०प्रसन्न रहने वाला। (सुद० २/१)

समभून्मिलनम् (नपुं०) निर्दोष सम्मिलन। (वीरो० २२/४)

समभ्यर्चनम् (नपुं०) [सम्+अभि+अर्च्+ल्युट्] ०पूजा करना, अर्चना करना।
०समादर करना।

समभ्याहारः (पुं०) [सम्+अभि+आ+हृ+घञ्] साहचर्य, साथ।

समय् (अक०) विलीन होना। समयतो प्राप्नोतु (जयो० ९/४४)

समय (वि०) समान रूप से स्थित होने वाला। (सुद० १/१५)

समयः (पुं०) [सम्+इ+अच्] काल,
०अवसर। (सम्य० ८८)
०उपयुक्त समय। (सुद० ७१)
०सिद्धान्त, विचार।
०आचार आचरण। (जयो० १२/११०)
०सहज, स्वाभाविक। (जयो० १/१९)
०आत्म सार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०शास्त्र। (जयो०वृ० २/५४)
०समूह। (जयो० १९/८५)
०रुढ़ि, प्रथा संस्थापित नियम।
०सम्प्रदाय। (जयो० २/२५) संस्कार।
०संकेत। (जयो० ३/७)
०शास्त्र। (जयो०वृ० १/५)
०नियम, ०संकेत, इंगित, इशारा।
०उपहार, भेंट।

समयक्रिया (स्त्री०) नियम पालन। ०नियमबद्धता।

समयपरिरक्षणम् (नपुं०) समय पालन।

समयरीतिः (स्त्री०) काल नियम। (जयो० २/४७)

समयसारः (पुं०) आचार्य कुन्दकुन्द की एक प्रसिद्ध प्राकृत रचना, जो आत्मा के विशुद्ध स्वभाव को कथन करने वाली है।

समया (अव्य०) [सम्+इ+आ] अनुकूल, ठीक समय पर, निश्चित समय पर।
०बीच में, अंदर।
०निकट।

समयानुवर्तिनी (स्त्री०) समयानुसार। (जयो० १३/५६)

समयानुसारः (पुं०) समयानुकूल। (जयो०वृ० १३/५६) (वीरो० ४/३९)

समयी (वि०) स्वामी। (जयो० ४/५१)

समयोचित (वि०) समय योग्य।

समरः (पुं०) [सम्+ऋ+अप्] युद्ध, संग्राम।

समरम (नपुं०) लड़ाई।

समरक्षेत्रम् (नपुं०) रणक्षेत्र।

समरभूमिः (स्त्री०) युद्धस्थल।

समरमूर्धन् (पुं०) संग्राम का अग्रभाग।

समरस (वि०) साम्य भाव। (सुद० १२३) ०समत्व शक्ति युक्त।

समशिरस् (पुं०) संग्राम का अग्रभाग।

समरसङ्ग (वि०) युद्ध कुशल। (सुद० १/३९)

समराङ्गणम् (नपुं०) रणभूमि। (१७/११३)

समरसङ्गमित (वि०) युद्ध करने वाला। (समु० ७/२९)

समरी (वि०) युद्धकुशल, सत् प्रतिज्ञावान्। (जयो० ६/९३)

समरूप (वि०) समान दृष्टि वाले। (सुद० ११९)

समल (वि०) [मलेन सह] मल सहित। (जयो०वृ० १/३८)

समलङ्कृत (वि०) विभूषित। (जयो० १/३८)

समर्थनम् (नपुं०) अनुवाद रूप, संकल्प रूप। (जयो० १२/१६)
०कथनस्यानुकथन, हां में हां मिलाना। (जयो० १२/३१)

समर्पितभावः (पुं०) अनन्यसेवा भाव। (भक्ति० १२)

समवर्ष् (अक०) बरसाना, वर्षा करना। (जयो० १०/४६) (जयो० १२/१३३)

समवलोक्य (सं०कृ०) सम्यक् प्रेक्षा। (जयो० २/५३)

समवाप् (सक०) [सम्+अव्+आप्] उपहार देना। (जयो० ३/९४)

समवादसूक्ता (स्त्री०) सदा ही समदर्शिना। सत्तेव नित्यं समवादसूक्ता द्राक्षेव याऽऽसीन्मृताप्रयुक्ता। (वीरो० ३/१९)

समर्जनं (नपुं०) कमाना। (समु० ३/४)

समर्त्यनागः (पुं०) सुदर्शन सेठ, पुरुष शिरोमणि सुदर्शन। (सुद० १०१)

समरूपः (पुं०) समान रूप। समानं रूपं येषां ते (जयो०वृ० ३/१२)

समरोपयत् (वि०) आरोपित किया। समरोपयदेष सम्मतं पुनरैरावणवारणस्य तम्। (वीरो० ७/१६)

समर्चनम् (नपुं०) [सम्+अर्च्+ल्युट्] बढ़ाई, स्तुति। (दयो० २/९) आराधना, पूजा, अर्चना।

समर्चिन् (पुं०) समीचीनौ यो हवमाग्निः (जयो०१२/६९) हवनाग्नि

समर्ज् (अक०) समर्थन करना। (जयो० ८/६५) भ्रमण करना (जयो० २४/३)

समर्ज (वि०) सरल, ऋजुता युक्त। (जयो० २४/५०)

समर्जनिश्रेणिः (पुं०) सरल खर्जूर वृक्ष। (जयो० २४/५०)

समर्ण (वि०) [सम्+अर्द्+क्त] पीड़ित, दुःखित, कष्टजन्य।
०घायल।

समर्तुक (वि०) सुंदरकान्ति धारक। (जयो० ९/९२)

समर्थ् (अक०) समर्थ होना, शक्तिशाली होना, सार्थक करना (जयो० १/११) समर्थताम् (सुद० २/२२)
०सम्पन्न, वैभव युक्त, योग्य।
०असाधारण, शक्तिमान्, प्रभूतवित्तयुक्त। (जयो०वृ०१/७२)

समर्थः (पुं०) सार्थक शब्द, क्रय मूल्य। (सुद० ७१) ईश्वर, प्रभु (जयो०वृ० ५/५)

समर्थक (वि०) पक्ष होने वाला। (जयो०वृ० २६/७९)

समर्थकम् (नपुं०) [सम्+अर्थ्+ण्वुल्] अगर लकड़ी। ०चंदन की लकड़ी।

समर्थनम् (नपुं०) [सम्+अर्थ+ल्युट्] पुष्टि (मुनि० १७) व्यर्थं च नार्थाय समर्थनं तु पूर्णो यतः। (जयो० १/१७)
०चिंतन करना, विचार करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०निर्णय करना।

०ऊर्जा, बल, शक्ति।

समर्थनार्थ (वि०) पूजनार्थ। (जयो०वृ० २७/२२)

समर्थिन् (वि०) समर्थक, पक्ष वाला। (जयो० २६/७९)

समर्थित (वि०) कार्यों वाली। (समु० ३/२०) प्रशंसित (जयो०वृ० १९/३८) समर्थनक्रिया (वीरो० १/२) स्तुत (जयो० ५/५६)

समर्धक (वि०) [सम्+रुध्+ण्वुल्] वर प्रदाता, वरदान देने वाला।

समर्प् (सक०) देना, सौंपना। समपयिष्टति (जयो० ११/३८)

समर्पणम् (नपुं०) सौंपना, देना, हस्तांन्तरण करना।

समर्पित (वि०) प्रदत्त, दी गई, पकड़ा दिया। (दयो० १८) (समु० ७/११) (सुद० ११५)

समर्पितदृष्टि: (स्त्री०) निक्षिप्तदृष्टि। (जयो० ५/१९)

समर्पक (वि०) समर्पण। (जयो०वृ० १२/५४)

समर्याद (वि०) [सह+मर्यादया] सीमित, बंधा हुआ।

०निकटवर्ती, समीपवर्ती।

०शिष्ट।

समल (वि०) [मलेन सह] मैला, गन्दा।

समर्हण (वि०) मान्य। (जयो०१२/७३)

समर्हित (वि०) श्लाघनीय। (जयो० २०/३२)

समवकृप (सक०) लेना, ग्रहण करना। (जयो० ५/५०)

समयस्क (वि०) समान वय वाहक, मित्र। (वीरो० ६/१२)

समवयस्कता (वि०) समान अवस्था वाला। (दयो० ७०)

समशिष्ट (वि०) शेष, अवशेष। (जयो०वृ० ११/४३)

०मलिम, दूषित।

०अपवित्र।

समलङ्कृ (सक०) सुशोभित करना। (वीरो० ६/२३, जयो० १०/११९)

समलं (नपुं०) पुरीष, मल, विष्ठा।

समलि (वि०) अली सदृश, भ्रमर सदृश। (जयो० ७/१०३)

समवकार: (पुं०) [सम्+अच्+कृ+घञ्] नाटक का भेद।

समवतार: (पुं०) [सम्+अव्+तृ+घञ्] ०उतार,

समलम्बित (वि०) बंधा हुआ। आबद्ध। (दयो० ६३)

समवभास् (अक०) प्रतीत होना। (दयो० ४)

समवस्था (स्त्री०) [समा तुल्या अवस्था वा सम्+अव्+स्था+क्त+अङ्+टाप्] निश्चित अवस्था, सदृश अवस्था, समान स्थिति।

समवसरणं (नपुं०) अर्हदुषाश्रय, अर्हत् सभा मण्डप। (जयो० २६/५७) ०अरहंत की दिव्य देशना का स्थल।

समवस्थित (भू०क०कृ०) [सम्+अव+स्था+क्त] स्थिर रहता हुआ, दृढ़भूत।

समवाततित् (नपुं०) फैलाया। (वीरो० १५/५४)

समवाद: (पुं०) समाचार, संदेश। (जयो०वृ० २१/३)

समवाप्ति: (स्त्री०) [सम्+अव+आप्+क्तिन्] प्राप्ति, अभिग्रहण।

समवाय (पुं०) [सम्+अव+इ+अच्] ०सम्बन्ध, मिश्रण, मिलाप।

०संयोग, समष्टि, संयुक्त। (सुद० १/४२)

०प्राप्त। (सुद० ३/३२)

०संख्या, समूह, समुच्चय।

०अविच्छिन्न संयोग।

०परस्पर सम्मेल। (वीरो० १/१३)

०अभेद्य सम्बंध।

०वैशेषिक द्वारा मान्य एक पदार्थ।

समवायहेतु (पुं०) परस्पर सम्मेल का कारण (वीरो० १/१३)

समवायसम्बन्ध: (पुं०) वैशेषिक मान्यता। (जयो० २६/८२)

समवायिन् (वि०) [समवाय+इनि] बुद्धिमन्त। (जयो०१२/१२५)

०प्रगाढ़ सम्बन्ध युक्त, दृढ़ संबद्धता।

समवेत (भू०क०कृ०) [सम्+अव+इ+क्त] सम्मिलित, एकत्रित, मिले हुए, जुड़े हुए।

०अन्तर्भूत, संयुक्त।

०समाविष्ट।

०इकट्ठे। (जयो० १३/४५)

समवेत्य (सं०कृ०) [सम्+अव+इ+यत्] देखकर, अवलोकन कर। स्त्रियां यदङ्गं समवेत्य गूढमानन्दित: सम्भवतीह मूढ:। (सुद० १०२)

समश्वन् (वि०) आस्वादन। (जयो० २७/१४)

समष्टि: (स्त्री०) [सम्+अश्+क्तिन्] संग्रह। (वीरो० १७/२१) (सम्य० १४) समुच्चयात्मक व्याप्ति, पूर्णता।

समष्टिकर्ता (वि०) संग्रहकर्ता। (वीरो० १७/२१)

समस् (अक०) विचारना, सोचना। समस्यते (जयो० ९/७५)

समसनम् (नपुं०) [सम्+अस्+ल्युट्] ०सम्मिश्रण, संयुक्त करना, मिलाना।

०समास युक्त करना।

समस्यक् (वि०) निजीर्ण करने वाला। (सुद० ११९) विषय (जयो० १/४२)

समस्तं (भू०क०कृ०) [सम्+अस्+क्त] ०पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण, भरा हुआ।

०संक्षिप्तिकरण, संकुचित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समस्तजनहितकारिन् (वि०) सम्पूर्ण लोगों का हित करने वाली। (वीरो०२२/२१)

समस्तविद्यैकविभूति (वि०) समस्त विद्याओं के एकमात्र अधिपति। (वीरो० १८/१८)

समस्ति: (स्त्री०) समुत्पत्ति। ऋषभ मुदिन्दिरामङ्गलदीपकल्प: समस्तिमस्तिब्कवतां सुजल्प:। (सुद० १/१२)

०समान। (जयो० १/१४) अङ्गाभिधान समय: समस्ति यस्यासकौ पुण्यमयी प्रशस्ति:।

समस्तिवृत्ति (स्त्री०) अजीविका युक्त। (समु० ६/८) (सुद० १/१५)

समस्तु (वि०) समर्थ। (सुद० १३४)

समस्तोपधि: (वि०) समस्त परिग्रह। (सुद० ११५७)

समस्या (स्त्री०) [सम्+अस्+क्यप्+टाप्] समाचार। (जयो० ४/१९)

०कठिनाई, पीड़ा, वेदना। (सुद० १०७) (सुद० ८६) मनोरमायां तु कथं सरस्यां सुदर्शनस्येथमभूत्समस्या। (सुद० ४/१५)

०भाग पूर्ति, चरण पूर्ति।

०घटना (जयो० ११/२०)

समस्यावश (वि०) संग्रहणवश। (जयो० ११/१६)

समहोत्सव: (पुं०) बड़ा महोत्सव। (सुद० २/२१)

समा (स्त्री०) [सम्+अच्+टाप्] वर्ष, संवत्सर, समय। (सुद० १०९)

समा (अव्य०) से, साथ, मिलाकर।

समांसमीना (स्त्री०) [समां समां विजायते प्रसूते] प्रतिवर्ष ब्याने वाली गाय।

समाकर्षणार्थ (वि०) [सम्+आ+कृष्+णिनि] आकर्षण, प्रसार करने वाला।

समाकीर्ण (वि०) व्याप्त, फैला हुआ। (सुद० १२८)

समाकुल (वि०) [सम्यक्-आकुल:] आकीर्ण, भरा हुआ, व्याप्त, पूर्ण।

०युक्त। (जयो० १४/८९)

०व्याकुल, क्षुब्ध, खिन्न, उद्विग्न।

समाकूत: (पुं०) अभिप्राय। (सुद० ४/५)

समाख्या (स्त्री०) [सम्+आ+ख्या+अङ्+टाप्] यश, कीर्ति, प्रसिद्धि, ख्याति। (मुनि० २२)

०नाम, अभिधान।

समाख्यात (भू०क०कृ०) [सम्+आ+ख्या+क्त] ०विख्यात, प्रसिद्ध।

०मिला हुआ, मिश्रित, सम्मिलित।

०वर्णित, प्रकथित, प्रतिपादित।

समाख्यानं (नपुं०) प्रकथन। (जयो० १२/१४७)

समागत (भू०क०कृ०) [सम्+आ+गम्+क्तिन्] ०मिलाप, साथ साथ आना।

०पहुंचना, प्राप्त होना।

०उपगमन।

समागत्य (सं०कृ०) आकर। (सुद० १०८)

समागम: (पुं०) [सम्+आ+गम्+घञ्] समागम करना, मेल करना, मिलना। (सुद० २/२२) विनतिरस्ति समागमनाय मे समुपधामुपयामि तव क्रमे। (जयो० ९/४६)

०सम्मिलन। (समु० २/१८)

०संयोग, संगति, साहचर्य, संसर्ग। (जयो० ३/३२)

०उपगमन, पहुंच।

समागमन (नपुं०) अवतार।

०नियोजिनी। (जयो० २०/३४) इन्दुनियोगनीं चन्द्रस्यैव समागमनयोग्य। 'तुण्डीरूप-जलाशयेऽवतार: समागमनमपि' (जयो० ११/५)

समाग्निलद्ध (वि०) परस्पर संयोग, एक दूसरे से मिला हुआ। (जयो० १०/२) समतलतया संयोगं गच्छद्ध:।

समाघात: (पुं०) [सम्+आ+हन्+घञ्] ०वध हत्या।

०संग्राम, युद्ध, लड़ाई।

समाचयनम् (नपुं०) [सम्+आ+चि+ल्युट्] ०चयन करना, बीनना, चुनना।

समाचर् (सक०) आचरण करना, ०अभ्यास करना, पालन करना। (भक्ति० ३६)

समाचर् (अक०) व्याप्त होना। (जयो० ६/१३२)

समाचरणम् (नपुं०) [सम्+आ+चर्+ल्युट्] आचरण करना, पालन करना, अभ्यास करना।

समाचार (वि०) [सम्+आ+चर्+घञ्] गति, गमन।

०अभ्यास, आचरण, व्यवहार।

०सूचना, विवरण, वार्ता।

समादरशील (वि०) सम्माननीय (जयो० २२/४६)

समाचाराधार: (पुं०) पत्र। (जयो०वृ० ३/३५)

समाच्छादि (वि०) संयमशील। (वीरो० १/३२)

समाच्छादित (वि०) आवृत, ढका हुआ। (जयो० १३/६८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाजः (पुं०) [सम्+अज्+घञ्] ०सभा, सम्मेलन।
०मण्डल, गोष्ठी। (सम्य० १५६)
०समूह (जयो० १/५३)
०समिति, परिषद्
०संग्रह, समुच्चय।
०दल, संगठन।
समाजमान्य (वि०) समुदाय द्वारा मान्य। (वीरो० १/२१)
समाजराजिब्याज (वि०) भ्रमर समूह के बहाने। (वीरो०२१/१६)
समाजादुत्थित (वि०) समाज का अनुशासन। (हित० ५)
समाजिकः (पुं०) सभा सद।
समाजीजनः (पुं०) सामाजिक व्यक्ति। (जयो०वृ० ११/१९)
समाज्ञा (स्त्री०) [सम्+आ+दा+ल्युट्] ०आसक्ति (सुद० १०२) उपहार लेना, समीचीन ग्रहण।
०विरति के प्रति अभिमुखता। 'समादानं समीचीनग्रहणे नित्यकर्मणि इति विश्वलोचने' (जयो०वृ० २१/५९)
०नित्यकर्म, देवपूजनादिकर्म।
'समादानं नित्यकर्म देवपूजादि'
समादरः (पुं०) उदार आशय, मनोऽभिलषित भाव। (जयो०३/९४)
समादरणम् (नपुं०) आदर, सम्मान। (जयो० ४/२१)
समादिश (अक०) आज्ञा देना। (समु० २/२१) (जयो०२७/५९)
समादेशः (पुं०) [सम्+आ+दिश्+घञ्] ०आज्ञा, निर्देश।
समाहत (वि०) बुलवाया हुआ। (समु० ४/१२) सम्मानित। (जयो० १/२३)
समाधा (स्त्री०) [सम्+आ+धा+अङ्+टाप्] समाधान।
समाधानम् (नपुं०) [सम्+आ+धा+ल्युट्] ०निवारण, समस्या निदान। (वीरो० ११/१६)
०गहनचिन्तन।
०प्रतिज्ञा करना।
समाधारः (पुं०) उचित आश्रय। (जयो० ३/७५)
समाधिः (स्त्री०) आत्म तल्लीनता, साम्यभाव। (जयो० ७/५२)
०तपस्या, साधना, चित्त की एकाग्रता। 'मुनिगणतपः संधारणं समाधि' (त०वा० ६/२४)
०दर्शन, ज्ञान और चारित्र में स्थित होना।
०आत्म तल्लीनता। (भक्ति० २६)
०समाधान, विशेष मनन-चिंतन (सम्य० १४०) 'निमज्य, निर्गुन्तुमशक्त इत्यतः समाधिमेव प्रवबन्ध संरसात्। (समु०४/३४)
०मनोयोग, केन्द्रीकरण, (सुद० ४/२५)
०प्रतिक्षा, स्वीकार, अंगीकार।
समाधिगत (वि०) साधना रत।
समाधिमरणं (नपुं०) एकग्रचित्त होकर मरण प्राप्त करना।
समाधिवश (वि०) समाधि के कारण। (समु० ५/१४)
समाधि-सिन्धु (पुं०) समाधि के समुद्र। (सुद० १/३)
समाध्यात (भू०क०कृ०) [सम्+आ+धरा+क्त] ०फूंक मारा हुआ।
०फुलाया हुआ।
०प्रफुल्लित, स्फीत, हवा युक्त।
समाधृ (सक०) [सम्+धृ] धारण करना। समादधाना विबभौ गृहाश्रमे। (वीरो० ५/४०)
समान (वि०) [सम्+अन्+अण्] सदृश, तुल्य, एक सा, एक रूप, सवर्ण।
०सामान्य, साधारण।
समानः (अव्य०) समान रूप से, सदृश। समानमेवेति मतिप्रपंचः (सम्य० ८५)
समानकालः (पुं०) सदृश समय। ०तुल्य काल।
समानकालीन (वि०) सदृश, रूप, समकालीन, एक कालिक।
समानगोत्रः (पुं०) एक ही गोत्र का।
समानजातीय (वि०) एक अवस्था वाली।
समानता (स्त्री०) ०सदृशता, ०एक रूपतप्रसज्जलसन्ततिः सतां हृदये चद्रिकया समानताम्। (वीरो० ७/३४)
समानदयिः (स्त्री०) समान धर्मों के लिए।
समानबुद्धि (स्त्री०) सदृशबुद्धि (सुद० ११७)
समानभावः (पुं०) सदृशभाव, तुल्यभाव, समादर भाव। (जयो० ४/६६) (वीरो० १८/६)
समानयनम् (नपुं०) [सम्+आ+नी+ल्युट्] संचालन, संग्रह करना, साथ लाना।
समानवंशः (पुं०) तुल्यकुल। (जयो० २३/२५)
समापः (पुं०) [समा आपो यस्मिन्] आहूति देना।
समापतत् (सम्+आ+पत्) गिरना।
समापत्तिः (स्त्री०) [सम्+आ+पद्+क्तिन्] ०मिलना, प्राप्त होना।
०दुर्घटना, घटना।
०मुठभेड़।
समापद् (अक०) प्राप्त होना। (सुद० १२७)
समापनम् (नपुं०) [सम्+आप्+ल्युट्] ०उपसंहार, समाप्ति, पूर्ति।
०अभिग्रहण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०अनुभाग।
०अध्याय।
०नष्ट करना, हनन करना।

समापन्न (भू०क०कृ०) [सम्+आ+पद+क्त] ०प्राप्त, अवाप्त, घटित हुआ।
०समागत, आया हुआ, आघात, पहुंचा हुआ।
०पूर्ण, समाप्त, सम्पन्न।
०दुःखी, व्याकुल, कष्टयुक्त।

समापदनम् (नपुं०) [सम्+आ+पद्+णिच्+ल्युट्] सम्पन्न करना।
०पूर्ण करना, मूर्त रूप देना।

समापित (वि०) समाप्त। (सुद० ४/२५)

समाप् (सक०) समाप्त होना। (सुद० १३७) पुण्यादहं समाप्नोमि-

समाप्त (भू०क०कृ०) [सम्+आप+क्त] ०पूर्ण किया हुआ, पूरा किया हुआ। (सुद० १३७)
०उपसंहृत, समेटा हुआ।

समाप्तकल्पः (पुं०) परिपूर्ण, सहाय युक्त कल्प।

समाप्तालः (पुं०) [समाप्ताय अलति पर्याप्नोति-समाप्त+अल्+अच्] ०प्रभु, स्वामी। ०पति।

समाप्तिः (स्त्री०) [सम्+आप्+क्तिन्] ०उपसंहार, अंत, पूर्ति। ०पूरा करना, पूर्ण करना।

समाप्तिक (वि०) [समाप्ति+ठन्] समापक,
०अन्तिम, निष्पन्नता युक्त, समाप्त करने वाला।

समाप्लुत (भू०क०कृ०) [सम्+आ+प्लु+क्त] ०बाढ़ ग्रस्त, बाढ़ में डूबा हुआ।
०पूरित, भरा हुआ।

समाभाषणम् (नपुं०) [सम्+आ+भाष्+ल्युट्] वार्तालाप, संवाद, कथोपकथन।

समाम्नानम् (नपुं०) [सम्+आ+म्ना+ल्युट्] ०आवृत्ति, उल्लेख। ०गणना।

समाम्नायः (पुं०) [सम्+आ+म्ना+य] म्ना अभ्यासे समाङ्पूर्वः भावे घजि।
०अनुश्रुति, परम्परागत।
०पाठ, सस्वर पाठ।
०निर्देशन।
०समष्टि, संग्रह।

समायः (पुं०) [सम्+आ+इ+अच्] ०पहुंचना, आना।
०गोपनशील, गुप्त। (जयो० ११/६) समचलत् (जयो० ६/३) क्वापि बाधा समायाता। (सुद० १०९)

समायत (भू०क०कृ०) [सम्+आ+यम्+क्त] लंबा किया हुआ, बढ़ाया हुआ।

समायसमयः (पुं०) समुचित अवसर।
०माया युक्त चेष्टा के शास्त्र। (जयो० ३/४)
समाययु। एकत्रित हुए।

समायात् (वि०) आगतवान्, आया हुआ। (जयो० ३/६८) (सम्य० ७५)

समायुक्त (भू०क०कृ०) [सम्+आ+युज्+क्त] ०संयुक्त, संबद्ध, संलग्न।
०सज्जित, तैयार किया हुआ।
०नियुक्त किया हुआ।

समायुज् (सक०) जोड़ना, संग्रह करना। (सुद० २/२०)

समायुत (भू०क०कृ०) [सम्+आ+यु+क्त] संयुक्त, संबद्ध, संलग्न।
०सहित, युक्त, अन्वित।

समायुक्त (वि०) सहित। (सुद० ४/३)

समायोगः (पुं०) [सम्+आ+युज्+घञ्] ०सम्बंध, संयोग, मेल। (दयो० ७१) उम्प्रयोग (जयो० २३/४२)
०संग्रह, ढेर, समुच्चय।
०कारण, प्रयोजन, उद्देश्य।

समायोजनम् (नपुं०) समायोग। (सुद० १०२)

समारब्धः (पुं०) आरब्ध। (जयो० २/११६) प्रारम्भ। (जयो०१५/८)

समारम्भः (पुं०) [सम्+आ+रभ्+घञ्] प्रतिसार। ०आरम्भ शुरु। (सुद० ११२) (जयो० १०/१)
०कार्य प्रारम्भ, उत्तरदायित्वप्राणव्यपरोपण, पूर्ण कार्य।
०परितापकारी व्यापार। जीवापमर्द।
०परितापन।

समाराध् (सक०) आराधना करना। (मुनि० १६)

समाराधनम् (नपुं०) [सम्+आ+राध्+ल्युट्] प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना।

समारुह (अक०) [सम्+आ+रुह्] आरुढ़ होना। (जयो०११/६)

समालोचनम् (नपुं०) समीक्षा। (जयो० ५/४०)

सम्परोपणम् (नपुं०) [सम्+आ+रुह्+णिच्+ल्युट्] रखना, अवस्थित करना।
०सौंपना, देना।

समारोपित (भू०क०कृ०) [सम्+आ+रुह्+णिच्+क्त] आरोपित, आरूढ़ किया गया, चढ़ाया हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०रक्खा गया, प्रतिष्ठित, किया हुआ। (जयो० ३/९७)

०रौंदा गया।

समारोहः (पुं०) [सम्+आ+रुह्+घञ्] अभिनायक। (जयो०वृ० ४/१३)

०अभिनय, सभासङ्घटन।

०उत्सव (जयो० ५/२६) 'अस्मिन्नभिनये समारोहे सभासङ्घटने (जयो०वृ० ६/२०)

०बढ़ना, आरुढ़ होना।

०संचरण करना। (जयो०वृ० २/१३२)

०सवारी करना, समहत होना।

समार्द्र (वि०) स्नेह युक्त। (जयो० २४/९९)

समार्दता (स्त्री०) स्निग्धता। (जयो० ९/४०)

समालम्बनम् (नपुं०) [सम्+आ+लम्ब्+ल्युट्] आश्रय लेना, सहारा लेना।

समालम्बिन् (अव्य०) [सम्+आ+लभ्+घञ्] ००पकड़ना, छीनना, ग्रहण करना।

समालिङ्गित (भू०क०कृ०) [सम्+आ+लिङ्ग+क्त] आलिंगन की गई। (दयो० १७/७३)

समालिङ्गनम् (नपुं०) [सम्+आ+लिङ्ग+ल्युट्] ०आलिंगन, परिरम्भ। (जयो०वृ० १०/६४)

समालोक्य (सं०कृ०) देखकर। (सुद० ९९)

समालोकि (वि०) समदर्शी। (जयो० १०)

समालोकत्व (वि०) अच्छी तरह देखने वाला। सम्यक् प्रकारेण दर्शकत्वं दधति अनुरागपूर्वकं पश्यति। (दयो० २२/)

समालोच्य विचार करके। (जयो० ३)

समावर्तनम् (नपुं०) [सम्+आ+वृत्+ल्युट्] वापसी, लौटना, प्रत्यावर्तन करना।

समवर्तित (वि०) रहता हुआ। (दयो० १०)

समावायः (पुं०) [सम्+आ+अव+इ+अच्] ०साहर्च, सम्बन्ध। ०समष्टि।

०एक दूसरे से सम्बन्ध।

समवायरीतिः (स्त्री०) परस्परिक सम्बन्ध की पद्धति। (वीरो० १७/५)

समावासः (पुं०) [सम्+आ+वस्+घञ्] ०निवास स्थान, आवास भवन।

समाविष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+आ+विश्+क्त] व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ।

०प्रविष्ट, समाहित।

०निश्चित, स्थिर किया हुआ, बिठाया हुआ।

०छीना हुआ, पराभूत।

समावृत्त (भू०क०कृ०) [सम्+आ+वृ+क्त] आच्छादित, आवृत।

०पर्दे से युक्त, ढका हुआ।

सच्चित्तेन समावृत्तं च गुरुणाऽचित्तेन वा संवृतम्।' (मुनि०११)

०गुप्त, छिपाया हुआ।

समाव्रज् (सक०) आना, पहुंचना। (जयो० १३/१४)

समावेशः (पुं०) [सम्+आ+विश्+घञ्] ०साहचर्य, मिलना, प्रविष्ट होना।

०सम्मिलित करना।

समावृत (वि०) लुप्त हो गई। (सुद० १०१) घिरा हुआ। (सुद० ११०)

समाश्रमः (पुं०) समताश्रम, त्यागमार्ग। (जयो० २७/५४)

समाश्रयः (पुं०) [सम्+आ+श्रि+अच्] ०शरण, आश्रय, आधार। ०घर, आवास, निवास स्थान।

समाश्लिष्ट (वि०) स्पष्ट। (जयो० ३/८२)

समाश्लेषः (वि०) [सम्+आ+श्लिष्+घञ्] प्रगाढ़ आलिंगन।

समाश्वनम् (नपुं०) आश्वासन, धैर्य देना।

समाश्वासः (पुं०) [सम्+आ+श्वस्+घञ्] सुख चैन, राहत, तसल्ली।

समासीन (वि०) उपविष्ट, बैठा हुआ, (जयो० २/१४३)

समासोक्तिलंकारः (पुं०) अलंकार विशेष (जयो० ७/९०) (जयो० २४/७९, ८/२४, ८/४७, ५१, ५०, ८/५४, ५३) (वीरो० ६/१२)

उच्यते वक्तुमिष्टस्य प्रतीतिजनने क्षमम्।

सधर्मं यत्र वस्त्वन्यत् समासोक्तिरियं यथा।। (वाग० ४/९४)

विवक्षित अर्थ में प्रीति उत्पन्न करने के लिए जिस अलंकार में उसके योग्य समान धर्म वाले किसी अन्य अर्थ की उक्ति की जाती है उसे समासोक्ति अलंकार कहते हैं।

वीर श्रियं तावदितो वरीतुं भर्तुर्व्यपायादथवा तरीतुम्।

भटाग्रणीः प्रागपि चन्द्रहास यष्टिं गलालङ्कृतिमाप्तवान् सः।। (जयो० ८/२४)

समास्वादनम् (नपुं०) अच्छा स्वाद होना, चूसना। (जयो०वृ० १२/१२७) परिचुम्बन (जयो० १२/७८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समास्वाद्य (वि०) चखने योग्य, स्वाद लेने योग्य। समागाज्जगाम्- 'समाता समास्वाद्य रसं तदीयम्' (वीरो० ५/३६)

समास्थित (वि०) प्रतीत होने वाला, ज्ञान होने वाला। (वीरो० २/२४)

समाश्वासनम् (नपुं०) [सम्+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] ०प्रोत्साहन, ढाढस बंधाना। सान्त्वना। (भक्ति० १२)
०विचार करना-अयं नरः सुखाय समाश्वासनहेतवेऽह किलाद्यादौ' (जयो० २७/५५)

समाश्वासनावस्था (स्त्री०) आशा। (जयो०वृ० २३/६५)

समाश्वसि (वि०) आश्वासित, धैर्य बंधाया गया। जनतां च नतां समाश्वसेः स्वमनस्यम! नैव विश्वसेः' (जयो० २६/२४) 'सदाचारधारिणीं विनीतां जनतां समाश्वसेः आश्वासनेन सम्भावये' (जयो०वृ० २६/२४)

समासः (पुं०) [सम्+अस्+घञ्] ०समष्टि, मिलाप, सम्मिश्रण। ०शब्दरचना, समाहार। संक्षिप्तरूपाप्रदीपयुक्ता मृदुदारभावा, समासतस्तद्धितकृत् प्रभावा' (जयो० १५/३५)
०संक्षिप्तिकरण, समाष्टि।
०सिकुड़न, संहति।
०समास नाम। (जयो०वृ० १५/३५) द्वयोर्बहूनां पदानां सम्मेलनं समासः'

समासक्त (वि०) संलग्न, सम्बंधित। (जयो० १७/५५)

समासक्तवार्ता (स्त्री०) संलग्न कथा। (जयो० १७/५५)

समासक्तिः (स्त्री०) [सम्+आ+सञ्ज+क्तिन्] आसक्ति, अनुरक्ति, प्रगाढ़, प्रेस अनुराग।
०मिलाप, सम्मिलन।

समासजन् (वि०) स्नान करने वाले। समासजन् स्नानकर्ता स वीरः विज्ञानःनीरैर्विलसच्छरीरः' (वीरो० १२/४६)

समासञ्जनम् (नपुं०) [सम्+आ+सञ्ज+ल्युट्] ०मिलाना, संयुक्त करना।
०जमाना, रखना।
०संपर्क, सम्मिश्रण।
०सम्बंध, मेल।

समासर्जनम् (नपुं०) [सम्+आ+सृज्+ल्युट्] पूर्ण त्यागना, विसर्जन करना, हटाना।

समासाद्य (वि०) प्राप्य, प्राप्त करने करने योग्य। (जयो०१/५)

समासादमम् (नपुं०) [सम्+आ+णिच्+क्त]
०पहुंचना, प्राप्त करना, मिलना।
०निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना।

समासादित (वि०) [सम्+आ+सद्+णिच्+क्त] ०लभित, निपुण।

समासोक्त्यलङ्कारः (पुं०) अलंकार नाम। (जयो० ७/८३)

समासोक्त्यलङ्कारः (जयो०वृ० ३/११३)

समाहृ (सक०) [सम्+आहृ] संचय करना, संयुक्त करना। ०सम्मिश्रण करना। 'समाहरन् हैमकुलानुकूले' (वीरो०९/३३)

समाहरणं (नपुं०) [सम्+आ+हृ+ल्युट्] संयुक्त करना, संग्रह करना, मिश्रण करना।

समाहारः (पुं०) [सम्+आ+हृ+घञ्] ०संग्रह, संघात, समविष्ट।
०अन्तर्भाव। (जयो०वृ० ३/१)
०संक्षेपण, संकोचन, संहति।
०प्रयोग (जयो०वृ० १/३९) सम्पत्ति (जयो०वृ० १/३९)

समाहृत (भू०क०कृ०) मिलाया गया, संगृहीत, संचित।
०ग्रहण किया गया, स्वीकृत।
०अंगीकार किया गया।

समाहृतिः (स्त्री०) [सम्+आ+हृ+क्तिन्] संकलन, संक्षेपण।

समाह्वे (सक०) [सम्+आ+ह्वे] बुलाना। (सुद० १/१७, जयो० ३/६७१)

समाह्वः (पुं०) [सम्+आ+ह्वे+घ] ललकार, चुनौती।
०संग्राम, युद्ध। (जयो० २/९२)

समाह्वयः (पुं०) [सम्+आ+ह्वे+अच्] पुकारना, बुलाना।
०संग्राम, युद्ध।

समाह्वानम् (नपुं०) [सम्+आ+ह्वे+ल्युट्] ०संबोधन, बुलाना।
०चुनौती देना।

समि (वि०) योगी, ध्यानी। (जयो० २८/२)

समिकम् (नपुं०) [समि+कन्+ल्युट्] भाला, बल्लम, नुकीला अस्त्र।

समिच्छ (सक०) कहना-समिच्छन्ति (जयो० ३/६४)

समिच्छन (वि०) समत्व चाहने वाले। (सुद० ७१)

समिच्छित (वि०) वाञ्छित, चाहा गया। (जयो० ३/९६)

समित् (स्त्री०) [सम्+इ+क्विप्] ०युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

समित (वि०) वेष्टित, लपेटा हुआ। (सुद० ५/२) (जयो० १०/९)

समिता (स्त्री०) [सम्+इ+क्त+टाप्] गेहूं का आटा।

समिता (वि०) संप्राप्ता। (जयो० २०/२९)

समिताचारः (पुं०) सम्य आचार। ०समत्व आचरण।

समितिः (स्त्री०) [सम्+इ+क्तिन्] ०साहचर्य, मिलना, मिलाप।
०सभा, परिषद।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०संग्राम, युद्ध, लड़ाई।
०सादृश।
०समानता, समभाव।
०सम्यक् अयन, सम्यक् प्रवृत्ति।
०प्रशस्त चेष्टा।
०आगम के अनुसार गमन। (त०सू० पृ० १४१) अच्छी चाल चलन करना, जिससे किसी जीव को पीड़ा न हो।

समितिप्रसारः (पुं०) पञ्च समितियों की छाया। (सुद० १३२) 'श्रीमान् स जीयात्समितिप्रसारः'

समितिभावः (पुं०) समानता का भाव, सम्यक् प्रवृत्ति का भाव।

समीक्ष (वि०) प्रेक्षण, प्रतीक्षा करते हुए। (जयो० १२/२४)

समिद्ध (भू०क०क०) [सम्+रन्ध्+क्त] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ।
०प्रज्वलित, उत्तेजित। (भक्ति० १)

समिध् (स्त्री०) [सम्+इन्ध्+क्विप्] ईंधन, लकड़ी, समिधा। 'समिधो यज्ञार्थं चन्दनादीनां काष्ठखण्डाः' (जयो०वृ० १०/१०९)

समिधः (पुं०) [सम्+इन्ध्+क] अग्नि, आग।

समिन्धनम् (नपुं०) [सम्+इन्ध्+ल्युट्] ईंधन, आग सुलगाना।
समियत्-समागच्छत् (जयो० १०/६४)

समिरः (पुं०) पवन, वायु, हवा।

समिष्टिवाक्यं (नपुं०) पूजा वाक्य, पूजा पद्धति। (जयो०२/२९)

समी (वि०) समताभावी। (जयो० २४/८०)

समीकम् (नपुं०) [सम्+ईकक्] संग्राम, युद्ध, लड़ाई।

समीकरणम् (नपुं०) [उत्तमः समः क्रियतेऽ नेन-सम+च्वि+कृ+ल्युट्] पूरा अन्वेषण, समस्त खोजबीन।

समीक्ष (सक०) अन्वेषण करना। (जयो० ११/८४)

समीक्षणीय (वि०) दर्शनीय, देखने योग्य। (जयो० १२/१४२)

समीक्षा (स्त्री०) [सम्+ईक्ष्+अङ्+टाप्] उपदेश (सुद० ७४)
०अनुसंधान, अन्वेषण, खोज।
०विचार, निरीक्षण, समालोचन।
०मीमांसा पद्धति, विचार विश्लेषण।

समीक्षकाम् (नपुं०) देखना, निरीक्षण करना। (सुद० १/१३)

समीक्षित (भू०क०कृ०) [सम्+ईक्ष्+क्त] प्रत्यवेक्षित, समालोचित। (जयो०वृ० ५/४९)

समीचः (पुं०) [सम्+इ+चट] समुद्र। ०सागर, उदधि।

समीचकः (पुं०) [समीच+कन्] रतिक्रिया, मैथुन।

समीची (स्त्री०) [समीच्+ङीप्] हरिणी।
०प्रशंसा।

समीचन (वि०) [सम्+अञ्च+क्विन्+ख] सही अच्छा।
०सत्य, श्रेष्ठ।
०योग्य, समुचित।
०सुसंगत।
०औचित्य।

समीचीनवाक्यसमूहः (पुं०) सम्पदास्पद, समुचित वाक्य समूह। (जयो०वृ० २/४२)

समीन (वि०) वर्ष सम्बन्धी।

समीनिका (स्त्री०) [समां प्राप्य प्रसूते समा+ख+कन्+टाप्] प्रतिवर्ष व्याहे वाली गाय।

समीप (वि०) [संगता आपो यत्र] निकट, नजदीक, पास, सटा हुआ। (जयो० १/४) (सुद० २/३३)

समीपक (वि०) सन्निटकता (जयो० ९/२४)

समीपम् (नपुं०) सामीप्य, पड़ौस। (वीरो०) निकटता, उपकण्ठ (जयो० वृ० १३/७)।

समीरः (पुं०) [सम्+ईर्+अच्] पवन, हवा। (सुद० १२०) (जयो० ९/४५)

समीरणः (पुं०) पवन, हवा, वायु। (समु० ६/३३) (दयो०३८)

समीरित (वि०) प्रार्थित। (जयो०१२/५१) ०प्रेरित, ०आन्दोलित।

समीरोत्थरजः (पुं०) समीरेणोत्तिष्ठति रजः। (जयो० १३/८९) ०पवन से उठी धूली।

समीह् (सक०) आकांक्षा, वाञ्छा करना, इच्छा करना। (वीरो० ९/६२) समीहमानः स्वयमेष।

समीहा (स्त्री०) [सम्+ईह्+अ+टाप्] प्रबल इच्छा, वाञ्छा, आकांक्षा, चाह।

समीहित (भू०क०कृ०) [सम्+ईह्+क्त] इच्छित, अभिलषित, अभीष्ट।

समीहितम् (नपुं०) कामना, वाञ्छा, इच्छा, अभिलाषा। चाह।

समीह्य (वि०) अभिलाषा युक्त। (जयो० २१/१८)

समुक्तवान् (वि०) कहने वाला। (सुद० ११३)

समुक्षणम् (नपुं०) [सम्+उक्ष्+ल्युट्] ढालना, बहाव, प्रसार।

समुच्च (वि०) समान उन्नत। (जयो०वृ० १/५)

समुच्चयालङ्कारः (पुं०) समुच्चय नामक अलंकार। (जयो०वृ० ७/१००)

समुचित (वि०) ०संकोचशील ०विनम्रशील। (जयो० १/१००, २/८०)

समुचितसमाधान (नपुं०) उद्धार करने वाला। (जयो० ३/६६)

समुच्चय (वि०) [सम्+उत्+चि+अच्] समुदाय। (सुद० ४/९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संग्रह, समूह, संघात, राशि, पुंज। (जयो० १३/७९)
०शब्द संयोग।
०अलंकार विशेष।

समुच्चलच्चरणम् (नपुं०) समुच्चलन्ति चरणानि चलायमान चरण। (जयो० १३/२६)

समुच्चरः (पुं०) [सम्+उत्+चर्+अच्] ०चढ़ना, आरुढ़ होना।
०गमन करना, प्रयाण करना, प्रस्थान करना।

समुच्चल् (सक०) चलना, गमन करना। करद्वयी कुडमलकोमला सा समुच्चलापि तदैव तासाम्। (वीरो० ५/२५)

समुच्छ्वसन् (वि०) उच्छवास। (जयो० १३/४६)

समुच्छल (वि०) उछलती हुई। (सुद० १/१७)

समुच्छेदः (पुं०) [सम्+उद्+छिद्+घञ्] समूलोन्मूलन, उखाड़ना, हटाना।

समुच्छलतरंगः (वि०) उद्भूत तरंग। (जयो०वृ० ५/३४)

समुच्छ्रयः (पुं०) [सम्+उद्+श्रि+अ्] ०विरोध, शत्रुभाव।
०उत्तुंगत, ऊंचाई।

समुच्छ्रायः (पुं०) [सम्+उद्+श्रि+घञ्] उत्तुंग, ऊंचाई।

समुच्छ्वासितम् (नपुं०) [सम्+उत्+श्वस्+क्त] गहरी सांस लेना, दीर्घ सांस लेना।

समुज्जगर्ज (वि०) गर्जनायुक्त। (सुद० २/३६)

समुज्जवल् (अक०) चमकना। (जयो० ११/६८)

समुज्ज्वल (वि०) [सम्+उत्+ज्वल्] निर्दोष, निर्मल। (जयो० २/८१) शुक्लवर्ण। (जयो० ३/११२) 'सम्यक् प्रकाशयुक्तम्' (जयो० वृ० ११/२)

समुज्ज्वलज्वालः (पुं०) बड़ी-बड़ी ज्वालाएं, उन्नत ज्वाला। (सुद० २/१७)

समुज्ज्वलरूपः (पुं०) विशदस्वभाव। (जयो०वृ० १७/४९)

समुज्ज्वलाकारः (पुं०) निर्मलाकृति। (जयो० ५/९६)

समुज्ज्वलाम्बरः (पुं०) परिरब्ध पूतवेष, मञ्जुलवेष, सुंदर परिधान। (जयो० १२/१२१)

समुज्झ् (सक०) छोड़ना, त्यागना। 'मदं समुज्झंति हिमोदयेन तम्' (वीरो० ९/२७)

समुज्झित (वि०) [सम्+उज्झ्+क्त] ०त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ। (जयो० ११/७५)
०विसर्जित, मुक्त, परित्यक्त। (जयो० १५/१२)

समुत् (वि०) सहर्ष। (जयो० १/१११)

समुत्कण्ठित (वि०) उत्कण्ठा युक्त। (जयो० १/११)

समुत्कर (वि०) उच्छिष्टांश। (जयो० ११/४३) ०अवशेष।

समुत्कर्षः (पुं०) [सम्+उत्+कृष्+घञ्] ०समुन्नत प्रगति।

समुत्क्रमः (पुं०) [सम्+उत्+क्रम्+घञ्]
०ऊपर उठना, चढ़ाई करना।
०सीमातिक्रमण।

समुत्क्रोशः (पुं०) [सम्+उद्+क्रुश्+घञ्] चिल्लाना, गर्जरा, तीव्र आक्रोश करना।

समुत्थ (वि०) [सम्+उद्+स्था+क] उठता हुआ, जागृत होता हुआ।
०जगा हुआ, प्रबोध गत।
०उड़ती हुई। (जयो० ५/८)
०उत्पन्न, जन्मा।

समुत्थरज (वि०) उड़ती हुई धूली। (जयो० ५/८)

समुत्थात (वि०) उपस्थित हुआ। (सुद० ९६)

समुत्थानम् (नपुं०) [सम्+उद्+स्था+ल्युट्] ०उठना, जागना।
०जीवन प्राप्त करना, दूर हटना। (दयो० ६५)
०परिश्रमशील होना, उद्यम करना।

समुत्थित (भू०क०कृ०) [सम्+उद्+स्था+क्त] उर्ध्वगत (जयो० १३/६६) उपस्थित हुआ, मच गया, व्याप्त हुआ। (जयो०वृ० १/५) अनुभूतमतः समुत्थित।
०उत्थापितं (जयो० ८/४) पुरि कोलाहल मा निवेदितम्। (समु० २/२४)

समुत्थापित (वि०) अभ्युदय, उत्पन्न हुआ। (जयो०वृ० १२/१२२)

सुमुत्तर (वि०) निकला हुआ, तीर्ण हुआ। (जयो०वृ० १२/१२२)
०संशोधन किया। (जयो० १३/१६)
सुदा सहितं समुदधिकः समुत् समुत्तर वर्तते। अधिक गुण वाली। (जयो० ५/८९)

समुत्तरन्-संशोधयन (जयो० १३/१६)

समुत्तरंती-पार करती हुई, निकलती हुई। (जयो०वृ० १४/८८)

समुत्तर्तुम् ( ) पार करने के लिए, पार पहुंचने के लिए। यैः शास्त्राम्बुनिधेः पारं समुत्तर्तुं महात्मभिः। (दयो० १/५)

समुत्तानित (वि०) समुपलब्ध, व्याप्त हुए। (जयो० १७/५५)

समुत्पतनम् (नपुं०) [सम्+उदृ+पत्+ल्युट्] ०उठना, ऊपर चढ़ना।
०प्रयत्न, चेष्टा।

समुत्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+उद्+पद्+क्तिन्] जन्म, उत्पत्ति।

समुत्पन्न (वि०) उत्पन्न हुई। (जयो० ५/७७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समुत्पीन (वि०) प्रसन्नोन्नत। (जयो० १६/२८)

समुत्सवः (पुं०) [सम्+उद्+सू+अप्] श्रेष्ठ उत्सव। (जयो० १३/६९) (सुद० ५/२) महान् पर्व, महोत्सव।

समुत्सवक (वि०) सम्यगुत्सव कारक। (जयो० १/११)

समुत्सर्गः (पुं०) [सम्+उद्+सृज्+घञ्] ०विसर्जन, परित्याग, छोड़ना।

०डालना, प्रदान करना, देना।

समुत्सयः (पुं०) शुभाशीर्वाद। (सुद० १३३)

समुत्सह (वि०) उत्साह युक्त। 'सुमुत् सदा सम्यगुत्साहवती'

समुन्सर् (अक०) सहर्ष चलना। (जयो० ३/३३) (जयो० ११/४०)

समुत्सारणम् (नपुं०) [सम्+उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] ०हांकना, हटाना।

०पीछा करना, अनुसरण करना।

समुत्सक (वि०) [सम्यक् उत्सुकः] आतुर, अधीर, बैचेन। उत्कण्ठित, उत्सुक।

समुदङ्कुर (वि०) रोमाञ्चित। (जयो० १२/६१)०हर्षित।

समुद्भावित (वि०) दिखलाए गए। (दयो० ४)

समुत्सुक (वि०) उत्सुक होता हुआ। (समु० ९)

समुत्सेधः (पुं०) [सम्+उद्+सिध+घञ्] ऊंचाई, उन्नति।

समुदक्त (भू०क०कृ०) [सम्+उद्+अञ्ज्+क्त] उठाया हुआ, ऊपर निकाला हुआ।

समुदग (वि०) उल्लंघन करने वाला, पार करने वाला। (जयो० ३/१०९)

समुदङ्ग (वि०) प्रफुल्लित शरीर वाला। (जयो० ३/१०९)

समुदयः (पुं०) [सम्+उद्+इ+अच्] ०उगता, उठना। (जयो०वृ० ६/४३)

०प्रदान, चेष्टा।

०यशोलाभ। (जयो० ३/१३)

०संग्रह, समुच्चय, ढेर, राशि।

समुदयप्रकाशिन् (वि०) यशोलाभ युक्त कीर्ति सहित। 'समुदयो यशोलाभस्तस्य प्रकाशिनः' (जयो०वृ० ३/१३)

समुदागमः (पुं०) [सम्+उद्+आ+गम्+ल्युट्] पूर्ण ज्ञान, विशेष ज्ञान।

समुदाचारः (पुं०) [सम्+उद्+आ+चर+घञ्] उचित व्यवहार, प्रचलन।

०प्रयोजन, रूपरेखा।

०उपयुक्त रीति।

समुदायः (पुं०) [सम्+उद्+अय्+घञ्] वर्ग (जयो०वृ० ५/२०)

०समूह, संघ, समुच्चय, समिति। (सम्य० ४३) (जयो० ४/४)

०सभा, परिषद्, संगठन।

समुदायवस्तु (नपुं०) सामूहिक पदार्थ। (सम्य० ४३)

समुदायिन् (वि०) समुदाय युक्त। (जयो० २२/८९)

समुदाभावित्तः (पुं०) शिष्य परिकर शिष्य समूह। (वीरो० १४/१७) ०सभासद।

समुदायवान् (वि०) समुदाय वीला। (सुद० ३/११)

समुदारं (वि०) उदार चित्त।

समुदारमाया (वि०) उदार मा वाला। ०प्रसन्नमातृ वाला।

०नित्य लक्ष्मी रूप वाला। (जयो०वृ० ११/५२) समुदारा 'मा' जाननी यस्यास्तस्यास्तदेतन्मुखं लपनं तावन्मुकारस्य 'खं' नाशेस्तस्मात्सदारमाया नित्यलक्ष्मी रूपाया' (जयो०वृ० ११/५२)

समुदासीनतामय (वि०) उदासीनता युक्त। (सुद० ८७)

समुदाहरणम् (नपुं०) [सम्+उद्+हृ+ल्युट्] ०उच्चारण करना, उद्घोषणा करना।

समुदारहृदयः (पुं०) महाशय। (जयो०वृ० ६/२०)

समुदीक्ष्य (सं०कृ०) देखकर-नरोऽपि नारीं समुदीक्ष्य मञ्जुलाम्। (समु० २/१९) (वीरो० ९/१०)

समुदित (भू०क०कृ०) [सम्+उद्+इ+क्त] संहत, एकत्र, संयुक्त। (जयो० २/२०)

०ऊपर गया हुआ, उठा हुआ।

०प्रमुदित, सद्भावना युक्त। (सुद० ८२)

०उगा, उत्पन्न हुआ।

०सहित, सज्जित।

०समवाय। (जयो० ११/९३)

समुदितभावः (पुं०) समवायरूप। (जयो० ११/९३)

समुदीरणम् (नपुं०) [सम्+उद्+ईर्+ल्युट्] बोलना, अभिव्यक्त करना, उच्चारण करना, दुहराना।

समुदीर्णसारः (पुं०) उद्वेल भाव। (जयो० १०/१०२)

समुद्घाट (वि०) उखाड़ने वाला। कुचं समुद्घाटयति प्रिये स्त्रियः (वीरो०)

समुंद्ग (वि०) [सम्+उद्+गम्+ड] उगने वाला, व्याप्त होने वाला।

०आवृत, ढक्कन सहित।

समुद्गः (पुं०) ढका हुआ संदूक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समुद्गकः (पुं०) [समुद्ग+कन्] ०पेटी, संदूक।

समुद्गमः (पुं०) [सम्+उद्+गम्+घञ्] उन्नत। (जयो० १७/५३) चढ़ाव, ऊंचाई वाला हिस्सा।

समुद्गमनम् (नपुं०) घदिङ्गण (जयो०वृ० १२/२४)

समुद्गिर् (सक०) कहना, बोलना। (जयो० ४/५) ०ऊंचाई की ओर गमन।

समुद्गिरणय् (नपुं०) [सम्+उद्+गृ+ल्युट्] उगलना, वमन करना।

समुदाहिय् (सक०) ०कहना। (जयो० ४/१) ०प्रतिभाषित करना

समुद्दिश् (अक०) लक्ष्य करना, निर्देश करना। (जयो० ३/७३)

समुदीक्ष्य (सं०क०) देखकर, अवलोकन कर। (सुद० २/९०)

समुदैक्षत (वि०) रक्षित। (सुद० २/४९)

समुद्गीतम् (नपुं०) [सम्+उद्+गै+क्त] उच्च स्वर में गाने वाला।

समुदुद्रवत् (वि०) उड़ने वाला। (जयो० १३/८६)

समुद्देशः (पुं०) [सम्+उद्+दिश्+घञ्] निर्देश करना, विवरण देना। (जयो० १७/१२)

समुद्धत (भू०क०कृ०) [सम्+उत्+हृ+क्त] ०उन्नत, ऊंचा हुआ।
०उत्तेजित।
०घमण्डी, अभिमानी।
०अशिष्ट, असभ्य।
०धृष्ट, ढीठ।

समुदूह (सक०) स्वीकार करना। (जयो० २/१८)

समुद्धरणम् (नपुं०) [सम्+उद्+हृ+ल्युट्] ०निवारण, उद्धार, मुक्ति।
०भारोत्थापन, बोझ ढोना। (जयो० २/११५)
०उठाना, ऊपर करना।

समुद्धर्तृ (पुं०) [सम्+उद्+हृ+तृच्] मुक्तिदाता।

समुदभवः (पुं०) जन्म, उत्पत्ति।

समुद्यत (वि०) उद्यत हुआ, तत्पर हुआ। (सुद० १२०)

समुद्यमः (पुं०) [सम्+उद्+यम्+घञ्] उपक्रम, समारम्भ, कार्य प्रारम्भ।

समुद्योगः (पुं०) [सम्+उद+युज्+घञ्] सक्रिय चेष्टा, ऊर्जा शक्ति।

समुद्रः (पुं०) सागर, उदधि। पयोधि-पयोधि। (जयो० १२/१८) (जयो०वृ० १६/८२) नदीन (जयो०वृ० १४/८३) (सुद० ३/४०)

समुद्र (वि०) [सह मुद्रया] मुद्रा सहित। मुद्रया सहितः (जयो० १२/५) मुद्रा भीरुप्यकादिभिः सहितोऽभूदिति। (जयो०वृ० १/४) मुहर, युक्त। मुद्रांकित।

समुद्रजा (स्त्री०) सरस्वती। (जयो०वृ० १९/३४)

समुद्रमेखला (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

समुद्रान्त (वि०) [समुद्रेण अन्ता व्याप्ता] समुद्र पर्यन्त व्याप्त, समुद्र तक फैला हुआ।

समुद्रान्तम् (नपुं०) समुद्रतट।
०ज़ायफल।

समुद्रान्ता (स्त्री०) कपास का पौधा।

समुद्राम्बरा (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

समुद्रारु (पुं०) मगरमच्छ।

समुद्रोद्धारकारक (वि०) मुद्राओं का उद्धारक। (सुद० १/४४)

समुद्भव (वि०) उत्पन्न हुआ। (जयो० ३/१२)

समुद्वहः (पुं०) [सम+उद्+वह+अच्] ढोना, भार वहन करना।

समुद्वाहः (पुं०) [सम्+उद्+वह्+घञ्] अधिक व्याकुलता, आतंक।

समुद्वेगः (पुं०) [सम्+उद्+विज्+घञ्] अधिक व्याकुल, आतंक, खिन्न, दु:ख।

समुद्वेलम् (अक०) उद्वेलित होना। (जयो०वृ० १०/८२)

समुन्दनम् (नपुं०) [सम्+उन्द्+ल्युट्] आर्द्रता, गीलापन, तरी।

समुन्न (वि०) [सम्+उन्द्+क्त] आर्द्र, गीला।

समुन्नत (भू०क०कृ०) [सम्+उद्+नम्+क्त] अधिक ऊंचाई युक्त, उत्तुंगता प्राप्त, ऊंचा किया गया। (जयो० १/५) (सुद० १/२४)

समुन्नतत्व (वि०) उदारभाव युक्त। उन्नति युक्त। (वीरो० ३/१३) (जयो० ३/१२)

समुन्नतार्थ (वि०) ऊंचाई युक्त।

समुन्नति (स्त्री०) प्रगति, अभ्युदय, विकास। सर्वतो विनयताऽसतीं सतीं भूरिशोऽभिनयता समुन्नतिम्। (जयो० २/११९)

समुन्नद्ध (भू०क०कृ०) [सम्+उद्+नह्+क्त] बन्धन युक्त, छुटा हुआ।
०उन्नत, ऊंचा।

समुक्ताङ्कः (पुं०) सम्यग्वर्णित अङ्क विधि। (जयो० ११/८८)

समुन्नयः (पुं०) [सम्+उद्+नी+अच्] हासिल करना, प्राप्त करना।
०घटना, बात।

समुन्नायक (वि०) प्रसत्तिकर, उन्नति करने वाला। (जयो० ११/१००)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समुन्मत्ता (स्त्री०) पगली। (सुद० ८४)

समुन्मान्त (स्त्री०) रोगिणी स्त्री। (सुद० ८४)

समुन्मूलनम् (नपुं०) [सम्+उद्+मूल्+ल्युट्] जड़ से उखाड़ना, पूर्ण विनाश।

समुप् (अक०) उपस्थित होना। (जयो० ४/२४)

समुप् (सक०) माना, समझना। 'हा हन्त किन्तु समुपैमि कले प्रतापम्' (वीरो० २२/२५)

समुपगम् (अक०) [सम्+उप्+गम्] समीप आना, निकट पहुंचना।

समुपगमः (पुं०) [सम्+उप+गम्+अप्] सम्पर्क, पहुंच।

समुपजोषम् (अव्य०) [सम्+उप्+जुष्+अम्] प्रसन्नतापूर्वक, इच्छानुसार।

समुपभोगः (पुं०) [सम्+अप्+भुज्+घञ्] संभोग, मैथुन।

समुपदेशनम् (नपुं०) [सम्+उप्+विश्+ल्युट्] आवास, निवास, भवन, गृह, घर।
०बिठाना, ठहराना।

समुपभा (अक०) [सम्+उप्+भा] प्रतीत होना। (जयो०वृ० १/९२)

समुपादन (वि०) जूता युक्त, पादत्राण युक्त। (जयो० १७/११)
०उपानयुक्त।

समुपानहः (वि०) जूता, पादत्राण। (जयो०वृ० १३/११)

समुपस्थ (वि०) उपस्थित होकर। विधृताङ्गुलि उत्थितः क्षणं समुपस्थाय पतन् सुलक्षणः। (सुद० पृ० ५२)

समुपस्थापनम् (नपुं०) [सम्+उप्+स्था+अङ्+ल्युट्] निकटता, समीपता।
०पहुंच, सम्पर्क।

समुपस्थित (वि०) उपस्थित हुआ। (दयो० १०८)

समुपहृ (सक०) उठाना। (जयो० १२/११९)

समुपागम (वि०) समीप आना। (जयो० १५/९८)

समुपार्जनम् (नपुं०) [सम्+उप्+अर्ज्+ल्युट्] अभिग्रहण, प्राप्त करना।

समुपाल (वि०) उपभोग करना। (सुद० ४/९९)

समुपेत (भू०क०कृ०) [सम्+उप्+इ+क्त] ०सहित, युक्त।
०एकत्रित, इकट्ठे हुए।

समुपेत्य (सक०) आकर। (सुद० ३/१९)

समुपोढ (भू०क०कृ०) [सम्+उप्+वह्+क्त] उठा हुआ, ऊपर गया हुआ।

समुल्लसन् (वि०) सुहावना। समुल्लसन्मानसवत्युदारा। (सुद०१/८)
०अभिमानी, अहंकारी।

समुल्लासः (पुं०) [सम्+उन्+लस्+घञ्] अधिक उत्साह।
०अधिक कान्ति, प्रभा, तेज। ०हर्ष, आनन्द।

समुल्लासित (वि०) प्रसन्नतापूर्वक, हर्ष युक्त, आनन्दित। (वीरो० १८/४०)

समुल्वणम् (नपुं०) वृद्धिं गते सति उद्वेलभाव। (जयो० १६/२१) उद्वेलण। (जयो० ३/९३) (जयो० ७१/३)

समुल्लेखनीय (वि०) उल्लेख करने योग्य। (जयो०२३/८६)

समुवाच (वि०) कहा गया। (समु० २/२६)

समुष्णीकृत् (वि०) प्रासुक किया गया। (वीरो० १९/२७)

समूढ (भू०क०कृ०) [सम्+ऊह्+क्त] ०संचित, संगृहीत
०निकट लाया गया।
०शान्त, वशीकृत।
०वक्र, झुका हुआ।

समूरः (पुं०) [संगतौ ऊरु यस्य] हिरण।

समूल (वि०) [सह मूलेन] जड़ सहित।
०मुद्गर सहित। (जयो० ८)

समूहः (वि०) [सम्+ऊह्+घञ्] ०योग (जयो० १/२४)
०समुच्चय, संग्रह, संघात।

समूहगः (पुं०) समुच्चय। (जयो० १३/२) (सुद० २/१३)

समूहनम् (नपुं०) [समूह्+ल्युट्] संग्रह, समुच्चय, समुदाय।

समूहनी (स्त्री०) बुहारी, झाडू।

समूहमाणी (स्त्री०) समूह खान। (समु० १/५)

समूह्यः (पुं०) [सम्+ऊह्+ण्यत्] यज्ञाग्नि।

समृत्तिक (वि०) मृत्तिक सहित, मिट्टी युक्त। (जयो० १९/५)

समृद्ध (भू०क०कृ०) [सम्+ऋध्+क्त] ऐश्वर्यशाली। (जयो० १/७१) ०सम्पन्न, पूर्ण वैभवयुक्त।

सम्पत्कर (वि०) सम्पादन कर। (जयो०वृ० ११/३१)

सम्पत्निधिः (स्त्री०) प्राप्त सम्पत्ति। (सुद० ४/४७)

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+पद्+क्तिन्] ०धन, वैभव, सम्पदा। (सुद० १११)
०समृद्धि, ऐश्वर्य, धन सम्पदा।
०सौभाग्य, आनन्द।
०सफलता।

सम्पथ (वि०) सम्पन्था दस्यां सा-सन्मार्ग युक्त। (जयो०वृ० २/१२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्पत्तिशाली (वि०) वैभव युक्त, श्रीपति (जयो०वृ० १२/८६)
०हित, लाभ।
०सद्गुण वृद्धि।

सम्पन्नता (वि०) पूर्णता। (भक्ति० २६)

सम्पन्निसर्गः (पुं०) सम्पदा प्राप्ति। (भक्ति० २६)

समेखला (स्त्री०) समस्थल। (सुद० २/५)

समुपस्थित (वि०) खड़ी हुई। (दयो० ७५)

सम्पत् (वि०) सुंदर/सुपरिणमन। (जयो० २/४९)

सम्पर्कजात (वि०) सहयोग से उत्पन्न हुआ। (वीरो० २२/१५)

सम्पठित (वि०) पढ़ा गया। (वीरो० १३/३०)

सम्पठ् (सक०) अच्छी तरह पढ़ना। (जयो० २/४५)

सम्पत्तिकरिन् (वि०) सम्पत्ति को करने वाली। महीपतेर्धाम्नि निजेङ्कितेन सुरीति सम्पत्तिकरी हि तेन। (वीरो० ३/२४)

सम्पदादरकारिणी (स्त्री०) सम्पत्ति का आदर करने वाली। (जयो० ३/११)

सम्पदि (अव्य०) अब, बस, इस समय। सभवित्री समाहाहो विपदाप्ताऽपि सम्पदि (सुद० १०३)

सम्पादयितुम् (हेत्वर्थ कृदन्त) सम्पादन करने के लिए। (हित०६)

सम्प्रथित (वि०) सम्पादित। (जयो० वृ० १/१०)

सम्दृश् (वि०) संपश्य, अच्छी तरह से देखने वाला। (सम्य० १३८)

सम्पत्तियुग्म (वि०) सम्पत्ति युक्त। (सुद० १११)
०वैभव युक्त, धन संपन्न।
०भाग्यशाली।

समृद्धिः (स्त्री०) [सम्+ऋध्+क्तिन्] वृद्धि, सम्पन्नता।
०सम्पत्ति, वैभव, धनसम्पन्नता।
०हर्ष सम्पत्ति (जयो०वृ० ११/५३)
०शक्ति, बल, सर्वोपरिता।

समेत् (सक०) धारण करना, स्वीकार करना, लेना।

समेत (भू०क०कृ०) [सम्+आ+इ+क्त] आंगत (जयो० १/८४) संयुक्त, सहित।
०एकत्रित। (भक्ति० ४४)

समेतान्वित (वि०) सहित। आर्यात्वं समेति पण्यललना दासी समेतान्वितः (सु० १३३)

समेत्य (सं०कृ०) छोड़कर (सुद० १/२७)

समोदन (वि०) मोद सहित। (जयो० ३/६२) सम्यगोदन-भक्त सहित।

समोह (वि०) मोहसहित। (सुद० १२०)

सम्पद् (सक०) प्राप्त होना। [सम्+पद्] 'फलं सम्पद्यते जन्तोर्निजोपार्जितकर्मणः' (सुद० १२५) (सम्य० ८४)

सम्पद् (स्त्री०) [सम्+पद्+क्विप्] वैभव, धन, सम्पत्ति। (जयो० २/८५) गुणोत्कर्ष स्त्रियां सम्पद्गुणोत्कर्ष इति वि (जयो० २३/३७)
०समृद्धि, ऐश्वर्य।
०सौभाग्य, आनन्द।
०लाभ, हित, इष्ट।

सम्पदा (स्त्री०) सम्पत्ति, धन, वैभव। (वीरो० ७/१, सुद० ४/१४)
ध्यानाख्या निधिरेष एवं हि भवेद् हेतुश्चितः सम्पदाम् (मुनि० २१)

सम्पदास्पद (वि०) समीचीन वाक्य समूह। (जयो० २/४२)

सम्पदिन् (वि०) सम्पत्ति शाली। (जयो० ९/४३)

सम्पन्न (भू०क०कृ०) [सम्+पद्+क्त] ०वैभव युक्त, ऐश्वर्यवान्, धनाढ्य।
०भाग्यशाली, सफल, प्रसन्न।
०पूरा किया गया, निष्पन्न, पूर्ण। (सम्य० १४२)
०परिपक्व, पूर्ण विकसित।
०सहित, युक्त।

सम्परायः (पुं०) [सम्+परा+इ+अच्] ०पराजय ०संघर्ष, मुठभेड़।
०संग्राम, युद्ध।
०पराभव, जीव परिभ्रमण स्थान।
०संकट, दुर्भाग्य।
०भविष्य।

सम्परायकम् (नपुं०) संग्राम, युद्ध।

सम्परायत्व (वि०) सूक्ष्म सम्पराय नामक दशम गुणस्थान वाला। (जयो० २०/१८)

सम्पर्कः (पुं०) [सम्+पृच्+घञ्] ०मेल, मिलन, मिलाप। (मुनि० ६)
०मैथुन, संभोग, संसर्ग, ग्रहण। (जयो०१२/६२)
०शीलन। (समु० १/२६)

सम्पल्लव (वि०) अच्छे-अच्छे पत्रों वाला। (दयो० ७०)

सम्पल्लवत्व (वि०) उत्तम हरे-भरे पत्तों से युक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्पश्यन्ती [सम्+पश्य्+शतृ+ङीप्] समवलोकयंती। (जयो० १८/९४)

सम्पा (स्त्री०) [सम्यक् अतर्कितं पतति-सम्+पत्+उ+टाप्] विद्युत, बिजली।

सम्पाक (वि०) [सम्यक् पाको यस्य यस्मात् वा] तार्किक। बुद्धिशाली।
०लम्पट, विलासी।
०थोड़ा, अल्प।

सम्पाकः (पुं०) परिपक्व होना।

सम्पाटः (पुं०) [सम्+पट्+णिच्+घञ्] ०तुकआ।
०त्रिभुज की रेखा।

सम्पातः (पुं०) [सम्+पत्+घञ्] भिड़ना। (समु० २/२८) गिरना, एक साथ गिरना।
०अध:पतन, उतरना।
०जाना, पहुंचना।

सम्पातनम् (नपुं०) पतन, अध:पतन। (मुनि० २६)

सम्पातिः (स्त्री०) [सम्+पद+णिच्+इन्] पक्षी का नाम।

सम्पाति (वि०) पड़े हुए, गिरे हुए। (भवान्धुसम्पातिजनैक) (सुद० १/३)

सम्पातित (वि०) गिरे हुए, पतित हुए।

सम्पादः (पुं०) [सम्+पद्+णिच्+घञ्] पूर्ति, निष्पन्नता।
०अभिग्रहण।

सम्पादनम् (नपुं०) [सम्+पद्+णिच्+ल्युट्] निष्पादन, कार्यान्वयन।
०पूरा करना, वलन। (जयो० २८/६८)
०उर्जाजन करना, प्राप्त करना।
०सम्पत्ति। (जयो०वृ० १/३९)
०स्वच्छ करना, उचित प्रस्तुतिकरण।

सम्पादनार्थ (वि०) निष्पादन हेतु, पुण्यार्जनार्थ। (जयो० १२/१६४) (दयो० ६२)

सम्पादयितृ (वि०) कर्तृ। (जयो० ११/८५)

सम्पादित (वि०) गुंफित, निष्पादित (सुद० ११५, दयो० ८४, जयो० १/९५)

सम्पण्डित (भू०क०कृ०) [सम्+पिण्ड्+क्त] राशिकृत।
०सिकुड़ा हुआ, उत्पीडित।

सम्पीडः (पुं०) [सम्+पीड+घञ्] उत्पीड़न, पीड़ा, वेदना, कष्ट, यातना, विक्षोभ, बाधा।
०हांकना, प्रणोदन।

सम्पीडनम् (नपुं०) [सम्+पीड्+ल्युट्] दबाना, निचोड़ना।
०क्षुब्ध करना। (वीरो० २/४९)

सम्पीतिः (स्त्री०) [सम्+पा+क्तिन्] सहपान, मिलकर पीना।

सम्पुटः (पुं०) [सम्+पुट्+क] अञ्जली, गह्वर।
०खोवा।

सम्पुटकः (पुं०) [सम्पुट+कन्] संदूक, रत्नपेटिका।

सम्पुलकित (वि०) रोमाञ्चित। (जयो० ६/१२४)

सम्पूर्ण (वि०) [सम्+पूर्+क्त] भरा हुआ।

सम्पूर्णज्ञानम् (नपुं०) परिपूर्ण ज्ञान।
०पूर्ण, परिपूर्ण, समस्त, सारा।

सम्पूर्णजातिः (स्त्री०) समस्त जाति।

सम्पूर्णदातृ (वि०) सभी प्रकार का दान देने वाला।

सम्पूर्णपृथिवी (स्त्री०) समस्त भूमि। (जयो०वृ० १/५७)

सम्पूर्णभारतवरः (पुं०) समस्त भारत वर्ष (वीरो० २२/११)

सम्पूर्णरात्रम् (नपुं०) सायमारम्भ प्रभात पर्यन्त, पूरी रात्रि। 'सम्पूर्णरात्रमुचितां रतिनामलीलाम्' (जयो० १८/७)

सम्पूर्णवर्णः (पुं०) समस्त अक्षर कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग य, र ल व एवं श ष-स ह वर्ण।

सम्पूर्ण शोभा (स्त्री०) पूर्ण कान्ति। ०परिपूर्ण प्रभा।

सम्प्लवाय् (वि०) अभिषिञ्च, स्नान। (जयो० ५/७८)

सम्पृक्त (भू०क०कृ०) [सम्+पृच्+क्त] ०संयुक्त, सम्बद्ध।
०मिश्रित परिपूर्ण, मिला हुआ।

सम्पृक्लृप्तिः (स्त्री०) संकलन करना। (सुद० १३१)

सम्पोष्य (सं०वृ०) पोषण कर। (हित० ४९)

सम्पोषय् (सक०) आनन्दित करना। (वीरो० ७/३८) सम्पोषयापि पुरप्रजा सुललिता-

सम्पोपोषणम् (नपुं०) भरण पोषण। (हित० ४९)

सम्प्रक्षालनम् (नपुं०) [सम्+प्र+क्षल्+णिच्+ल्युट्] पूर्ण मार्जन,
०स्नान, अभिषेक, प्रक्षालन।

सम्प्रणेतु (पुं०) [सम्+प्र+णी+तृच्] शासक, न्यायधीश।

सम्प्रति (अव्य०) अब, इस समय। (समु० १/४; (सुद० २/४१) चित्तवृत्तिविचारधारापि सम्प्रति का (जयो० ४/४३) इदानीम् (जयो० १३/५) तब-

सम्प्रति (पुं०) राजा सम्प्रति। (वीरो० २२/१२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्प्रतिकालः (पुं०) वर्तमान काल। (भक्ति० १८)

सम्प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [सम्+प्रति+पद्+क्तिन्] उपगमन, प्राप्ति, पहुंच।
०उपस्थिति।
०लाभ, उपलब्धि।
०सहयोग, साहचर्य।

सम्प्रतिरोधकः (पुं०) [सम्+प्रति+रुध्+घञ् कन्] पूर्ण अवरोध, रोकध, बाधा।
०कैद, जेल।

सम्प्रतीकः (पुं०) अवयव। (जयो० १७/८४)

सम्प्रतीक्षा (स्त्री०) [सम्+प्रति+ईक्ष्+अङ्+टाप्] आशा लगाना, बांधना।

सम्प्रतीत (भू०क०कृ०) [सम्+प्रति+इ+क्त] ०प्रमाणित, माना हुआ।
०विश्रुत।
०सम्मान पूर्ण।

सम्प्रतीतिः (स्त्री०) [सम्+प्रति+इ+क्तिन्] ०ख्याति, प्रसिद्धि।
०कार्य पालन।

सम्प्रत्यमल (वि०) निर्मल, स्वच्छ। (जयो०वृ० १३/९३)

सम्प्रत्ययः (पुं०) [सम्+प्रति+इ+अच्] दृढ़ विश्वास। (जयो०वृ० १२/११८)

सम्प्रद् (सक०) देना। (जयो० १२/८३) ०प्रदान करना।

सम्प्रदा (स्त्री०) प्रदान। (समु० १/३)

सम्प्रदानम् (नपुं०) [सम्+प्र+दा+ल्युट्] ०उपहार देना, भेंट देना। जिसको दान दिया जाए। (हित०सं०पृ० ४९)
०चतुर्थी विभक्ति का नाम।

सम्प्रदानीयम् (नपुं०) [सम्+प्र+दा+अनीयर्] ०भेंट, दान, उपहार, प्राभृत।

सम्प्रदायः (पुं०) [सम्+प्र+दा+घञ्] ०समुदाय, परम्परा। (जयो०१२/३१) (हित० ५) यत्सम्प्रदाय उदितो वसनग्रहेण सार्धं पुरोपवसनादिविधी रयेण (वीरो० २२/५) लोकोऽयं सम्प्रदायस्य (वीरो० १०/१६) गतानु गतिकत्वेन सम्प्रदायः प्रवर्तते। (वीरो० १०/१७)
०प्रचलित प्रथा, प्रचलन।

सम्प्रदायश्रायिन् (वि०) सम्प्रदाय के आश्रित। (वीरो० १८/५५)

सम्प्रदायिन् (वि०) सम्प्रदाय वाले। (वीरो० १५/५७) 'देवर्द्धिराय पुनरस्य हि सम्प्रदायी'

सम्प्रदृश (सक०) स्वीकार करना। (जयो० २/८०) (वीरो०२२/६)

सम्प्रधानम् (नपुं०) [सम्+प्र+धा+ल्युट्] निश्चय करना।

सम्प्रधारणम् (नपुं०) [सम्+प्र-धा+णिच्+ल्युट्] विचार।

सम्प्रपदः (पुं०) [सम्+प्र+पद्+क] भ्रमण, पर्यटन।

सम्प्रबुद्ध (वि०) प्रकृष्टबोध युक्त। (जयो० १८/२७)

सम्प्रभिन्न (भू०क०कृ०) [सम्+प्र+भिद्+क्त] विदीर्ण हुआ, फटा हुआ।

सम्प्रमोदः (पुं०) [सम्+प्र+मुद्+घञ्] अति प्रसन्नता, अधिक हर्ष।

सम्प्रमोषः (पुं०) [सम्+प्र+मुष्+घञ्] हानि, क्षति, विनाश।

सम्प्रयाणम् (नपुं०) [सम्+प्र+या+ल्युट्] विदाई, प्रस्थान, विरक्ति पूर्वक गमन।

सम्प्रयुक्त (वि०) [सम्यक् प्रकारेण प्रयुक्तम्] अच्छी तरह प्रयोग किए गए।

सम्प्रयोगः (पुं०) [सम्+प्र+युज्+घञ्] ०संयोग, मिलाप, संयोजन। (सुद० ४/३०) सत्सम्प्रयोगवशतोऽङ्गवतामस्वम्
०सम्पर्क, सम्बंध।
०मैथुन, संभोग।

सम्प्रयोगिन् (वि०) [सम्+प्र+युज्+घिनुण्] संयोग वाला, मिलने वाला, सम्पर्क करने वाला।

सम्प्रविश् (अक०) प्रवेश करना, घुसना। (जयो० ५/९)

सम्प्रवृत्त (वि०) संलग्न। (मुनि० २१)

सम्प्रवृत्तिः (स्त्री०) समुचित प्रवृत्ति। (जयो० २/१२२) (वीरो०१/४)

सम्प्रवृष्टम् (नपुं०) [सम्+प्र+वृष्+क्त] उचित वर्षा, अच्छी वर्षा।

सम्प्रश्नः (पुं०) [सम्यक् प्रश्नः] पृच्छा, पृच्छना, पूछना।

सम्प्रसरच्छरः (पुं०) विशाल तालाब। (सुद० २/४५)

सम्प्रसादः (पुं०) [सम्+प्र+सद्+घञ्] ०अनुग्रह, कृपा, संतुष्टि।
०शान्ति, सौम्यता।
०विश्वास।
०संतुष्टिकरण, प्रसन्नता।

सम्प्रसारणम् (नपुं०) [सम्+प्र+सृ+णिच्+ल्युट्] विस्तार।

सम्प्रसृतमूर्तिः (स्त्री०) अखण्ड प्रसार मूर्ति। (जयो० ६/६५)

सम्प्रहारः (पुं०) [सम्+प्र+हृ+घञ्] ०संग्राम, युद्ध, लड़ाई।
०प्रहार, घात।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्प्राप्त (वि०) उपलब्ध। (मुनि० ४)

सम्प्राप्तिः (स्त्री०) [सम्+प्र+आप्+क्तिन्] ०अभिग्रहण, निष्पत्ति। ०प्रतिग्रहण। (सुद० ७०)

सम्प्रार्थित (वि०) समीरित। (जयो०१२/५१) प्रार्थना युक्त (सुद० ८५)

सम्प्रीतिः (स्त्री०) [सम्+प्री+क्तिन्] अनुराग, स्नेह।
०सद्भावना।
०हर्ष, उल्लास, प्रसन्नता।

समप्रेक्षणम् (नपुं०) [सम्+प्र+ईक्ष्+ल्युट्] ०अवेक्षण, अवलोकन।
०विचार करना, गवेषणा करना, चिन्तन करना।
०मनन करना।

सम्प्रेरित (वि०) प्रेरित हुआ। (सुद० २/३२)

सम्प्रैषः (पुं०) [सम्+प्र+इष्+घञ्] ०भेजना, प्रेषित करना।

सम्प्रोक्षणम् (नपुं०) [सम्+प्र+उक्ष्+ल्युट्] प्रमार्जन।

सम्प्लवः (पुं०) [सम्+प्लु+अप्] जल प्रलय, प्लावन, बाढ़।

सम्फालः (अक०) प्रफुल्लित होना, हर्षित होना। (जयो० ३/९३)

सम्फुल्लता (वि०) अत्यंत हर्ष, प्रफुल्लित भाव। (सुद०११४)

सम्फेटः (पुं०) क्रोध पूर्ण संघर्ष द्वन्द्व, युद्ध।

सम्भर्ता (वि०) सम्यक् पालक। (जयो० १२/१४७)

सम्भेदः (पुं०) दूर करना। (जयो० ५/१०१)

सम्ब् (सक०) जाना, पहुंचना।
०संग्रह करना, संचय करना।

सम्बम् (नपुं०) [लम्ब्+अच्] खेत जोतना।

सम्बद्ध (भू०क०कृ०) [सम्+बन्ध्+क्त] ०संयुक्त, जुड़ा हुआ।
०अनुरक्त।
०संग्रथित।

सम्भाषः (पुं०) [सम्+भाष्+घञ्] समालाप, भाषण, वार्तालाप।

सम्भाषणम् (नपुं०) वार्तालाप, बातचीत। (मुनि० ७) कथन (जयो० १/५)
०वृत्तान्त, निशम्य सम्भाषणमेतदेष। (समु० ३/१)

सम्भाषा (स्त्री०) प्रवचन, कथन, विचार, वार्तालाप, आपसी विचार विमर्श।

सम्भुव (वि०) उत्पन्न हुआ। (सुद० ३/२)

सम्भू (वि०) सम्पन्न। (जयो० ३/७६) पूर्ण, समस्त।

सम्भूतिः (स्त्री०) [सम्+भू+क्तिन्] उत्पत्ति, जन्म।
०प्राप्ति। (जयो० ११/४)

सम्भृत (भू०क०कृ०) [सम्+भृ+क्त] उद्यत, तैयार, अन्वित, संलग्न।
०पूरित, भरा हुआ। (जयो० ३/१११)
०युक्त, सहित, जुड़ा हुआ।
०लब्ध, अवाप्त।
०धृत। (जयो० १८/१०२)

सम्भृतिः (स्त्री०) [सम्+भृ+क्तिन्] ०संग्रह।
०उद्यत, तैयारी।

सम्भृष्ट (वि०) खण्डित। (सुद० १०३)

सम्भेदः (पुं०) [सम्+भिद्+घञ्] संगम, मिलान, मेल।
०मिश्रण।

सम्भोक्ता (वि०) भोगने वाला। सम्भोक्ता भगवानमेयमहिमा सर्वज्ञचूडामणि। (वीरो० १२/५३)

सम्भोगः (पुं०) सुरत, जिनशासन। सम्भोगो जिनशासने इति लोचो मौर्व्यां श्रश्लथचर्मणि च इति विश्वलोचनः' (जयो० ८/५१)
०व्यवाय-व्यवाय, सुरतेऽन्तर्द्धौ इति विश्वलोचने (जयो०वृ० २७/१२)
व्यायान् सम्भोगात् योजयति।
०रतिरस, मैथुन, सहवास।
०आनन्द।
०संसर्ग (जयो० १२/१२५)

सम्भोजनम् (नपुं०) सामूहिक भोजन। (जयो० ८/८)

सम्भोजय् (सक०) खिलाना, भोजन कराना। सम्भोजयेत् (दयो० ५५)

सम्भ्रमः (पुं०) [सम्+भ्रम्+घञ्] आतंक, भय, डर।
०त्रुटि, भूल।
०उत्साह।
०विक्षोभ, अव्यवस्था।

सम्भ्रमित (वि०) हलन चलन युक्त। (जयो० २४/२८)

सम्भ्रान्त (भू०क०कृ०) [सम्+भ्रम्+क्त] ०आवर्तित।
०विक्षुब्ध, व्याकुल।
०भ्रमित हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्मत (भू०क०कृ०) [सम्+मन्+क्त] ०मत (जयो० २/६९) सहमत, स्वीकृत।
०प्रिय।
०सम्बन्ध। (मुनि० ३३) अभिलाशा।
०मान्य, स्वीकार। (जयो० २/११)
'अहो विद्यालता सज्जनैः सम्मता' (सुद० ८२)
०आहत, सम्मानित, प्रतिष्ठित।

सम्मतिः (स्त्री०) [सम्+मन्+क्तिन्] सहमति, समर्थन, अनुमोदन। नाम्येनैव न शेमुषीश पुनरप्येषाऽहित मे सम्मतिः। (मुनि० ३३)
०स्मरण, स्मृति। (जयो० १०/६२)

समुत्तिष्ठ् (अक०) उठना। कथमिति समुत्तिष्ठेत्तस्य। (दयो० ८१)

सम्मतिदात्री (वि०) सम्मति देने वाली, 'सम्मतिं ददातीत्युचितसम्मतिदात्री' (जयो०वृ० २२/३७)

सम्मदः (पुं०) [सम्+मद्+अप्] ०आनन्द एतद्गुणानुवादादासादितसम्मदेव सा तनया (जयो० ६/७०)
०हर्ष (सम्मदेन सहसा समवापि) (जयो० ५/५५)
०आनन्द विभोर।

सम्मदाबुनिधि (पुं०) आनन्द रूपी समुद्र। निजबन्धुजनस्य सम्मदाम्बुनिधिं स्वप्रतिपत्तितस्तदा (सुद० ३/२७)

सम्मर्दः (पुं०) [सम्+मृद्+घञ्] घर्षण, मर्दन, घिसना।
०कुचलना, रौंदना।
०जनसंघट्टन। (जयो०वृ० १३/१५)
०संग्राम, युद्ध।

सम्मादः (पुं०) [सम्मद्+घञ्] मद, दशा, पागलपन।

सम्मानः (पुं०) [सम्+मन्+घञ्] आदर, प्रतिष्ठा।
०विनय। (जयो०वृ० ६/१५)

सम्मानजनक (वि०) आदर योग्य।

सम्मानीय (वि०) पूजनीय, आदरणीय, पूज्य। (भक्ति० २३)

सम्मानपूर्वक (वि०) विनयपूर्वक। (समु० ३/४२)

सम्मानभावः (पुं०) आदर भाव।

सम्मानयामास-सम्मान क्रिया। (वीरो० १८/४७)

सम्मानयुक्त (वि०) आदर सहित।

सम्मानसुखदमंत्रम् (नपुं०) प्रतिष्ठा जनक मन्त्र। णमो वड्ढमाणाणं, णमो लोए सव्वसिद्धायदणणं' (जयो०१९/८३)

सम्मानित (वि०) [सम्+मन्+क्त] पूजित, प्रतिष्ठित, आहत। सन्धानकाले तु शरस्य तस्य सम्मानितोऽभूत् स्वहृदा स वश्यः। (जयो० ८/८०)

सम्मार्जकः (पुं०) [सम्+मृज्+ण्वुल्] झाड़ने वाला, बुहारी लगाने वाला।
०सफाई करने वाला।

सम्मार्जनम् (नपुं०) [सम्+मृज्+ल्युट्] बुहारना, मांजना,
०साफ करना।

सम्मार्जनी (स्त्री०) [सम्मार्जन+ङीप्] झाडू, बुहारी।

सम्मित (भू०क०कृ०) [सम्+मान्+क्त] युक्त, सहित।
०माप युक्त।

सम्मिलनम् (नपुं०) सम्मेलन। (जयो० ४/४७) परस्पर मेल (सम्य० २३)

सम्मिश्र (वि०) [सम्+मिश्र्+अच्] मिलाया हुआ, संयुक्त किया गया।

सम्मिश्रणम् (नपुं०) मिलाना, मिश्रण करना। (वीरो० १९/३०)

सम्मिश्लः (पुं०) इन्द्र, पुरन्दर।

सम्मीलनम् (नपुं०) [सम्+मील्+ल्युट्] बन्द होना, ढकना, लपेटना।

सम्मुख (वि०) सामने, अभिमुख, मुख की ओर।

सम्मुखिन (वि०) सन्मुख, सामने। (जयो० १/७९)

सम्मुखिन् (पुं०) [सम्मुखमस्य अस्ति सम्मुख-इनि] दर्पण, शीशा।

सम्मुख्य (वि०) निश्चय युक्त। (भक्ति० २९)

सम्मुद (वि०) हर्ष युक्त, प्रसन्नता। (जयो० ९/३)

सम्मूर्धनम् (नपुं०) [सम्+मूर्छ+ल्युट्]

सम्यक् (अव्य०) समञ्चतीत्येव हि सम्यगस्ति, तत्त्वं तु तद्भाव इति प्रशस्ति। (सम्य० ५/४)

सम्यक्भाषी (वि०) उचित बोलने वाला। (वीरो० २०/६)

सम्यक्त्वम् (नपुं०) सम्यक्पना, आत्मा की शुद्ध अवस्था, सर्वज्ञता, वीरतरागता। स
सम्यक+त्व=सम्यक्त्व-
'तद्दर्शन-ज्ञान-चरित्रभेदं, प्रणीयते पूर्णतया मयेदं।
मुक्तेः स्वरूपं परथा तदध्वायतोऽभ्यधीता खलु तीर्थकृद् वाक्।। (सम्य० ५)
०मूर्छा, बेहोशी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०पूर्ण व्याप्ति।
०ऊंचाई।
०शरीर की रचना विशेष।

सम्मूर्छित (वि०) मरणोन्मुखी। (जयो० ७/१०९) मूर्छायुक्त। (दयो० ९३)

सम्मूछिमः (पुं०) सम्मूर्छिम जीव, जो जीव सब होर से पुद्गलों को ग्रहण कर उत्पन्न होते हैं।

सम्मृद् (सक०) [सम्+मृद्] पादमर्दन करना, पैर दबाना। (जयो० २३/१६)

सम्मृष्ट (भू०क०कृ०) [सम्+मृज्+क्त] प्रमार्जित, स्वच्छ किया गया।

सम्मेलनकः (पुं०) सम्मेलन, मिलाप, एकत्रित होना। (जयो० ८/६५)

सम्मेलनम् (नपुं०) सम्मेलन, मिलाप, एकरूप। परस्पर मिलन (सम्य० २१) (जयो० २/८३)

सम्मोचनम् (नपुं०) स्वार्थवश। (दयो० ९९)
सं+अञ्च्-अञ्चगतिपूजनयोः-इस आर्षवाक्यानुसार गमन करना/पूजन करना होता है।
समञ्चति अर्थात् जो अच्छी तरह से गमन होता है अपने सहज स्वभाव में परिणमन कर रहा हो वह 'सम्यक्' ऐसे क्विप् प्रत्यय होकर शब्द बन जाता है। गत्यर्थक से जो पूर्ण रूप से सम्पूर्ण विश्वभर के पदार्थों को एक साथ जानता है वह सम्यक् है।

सम्मोहः (पुं०) [सम्+मुह्+घञ्] आसक्ति, ०अत्यन्तमूढता, किं कर्त्तव्यत्व मूढत्त।
०मूर्छा, बेहोशी।
०मूर्खता।
०आकर्षण।

सम्मोहदंशः (पुं०) मोह रूपी डांस मच्छर। (वीरो० २०/९)

सम्मोहनम् (नपुं०) [सम्+मुह्+णिच्+ल्युट्] मंत्रमुग्ध करना, मोहित करना। (दयो० १०८)

सम्मोहनः (पुं०) कामदेव का एक बाण।

सम्मोद (वि०) रोमहर्ष युक्त। (जयो० १२/१२)

सम्मोहिनी (वि०) मनोमोहकारी। (जयो०वृ० ११/७०)

सम्यक् (अव्य०) भली प्रकार, अच्छी तरह के साथ, अच्छा उचित रूप से। (सुद० १/३६)
०यथावत्, यथोचित। (जयो०वृ० १/२४)
०उत्तम (सुद० २/९)
०वास्तव में, यथार्थ में समीचीन। (जयो० १२/१४६) (सम्य० ५७)
समञ्चतीत्येव हि सम्यगस्ति। (सम्य० १६) [सं+अञ्च]
०जो सहज स्वभाव में परिणमन हो-समञ्चति गच्छति व्याप्नोति सर्वान् द्रव्य भावानिति सम्यक्।

सम्यक्-कथा (स्त्री०) समीचीन कथा-सम्यक् समीचीना कथा यस्य तं संविभागीकृतम्। (जयो० २/११०)

सम्यक्-कल्याणकारी (वि०) उत्तम हित करने वाला। (जयो०वृ० २/१)

सम्यक्शुद्ध (वि०) शोभनरीति युक्त। सम्यक् शोभनरीत्या वरं श्रेष्ठं मस्तकपर्यन्तमित्यर्थः। (जयो० १८/२६)

सम्यक्चारित्रम् (नपुं०) उत्तम चारित्र, सर्वसावद्य योग रहित चारित्र।
०रागादि परिहरण रूप चारित्र।

सम्यक्दर्शनम् (नपुं०) उचित श्रद्धान, वस्तु तत्त्व के प्रति पूर्ण श्रद्धा। (सम्य० ६०)

सम्यक्त्वम् (नपुं०) तत्त्वश्रद्धानभाव। (जयो० ६/८३) समाचतीत्येव हि सम्यगस्ति, तत्त्वं तु सद्भाव इति प्रशस्तिः। (सम्य० ४)
०सम्यक् पना (सम्य० ५९) सं अञ्च तद्भावस्तत्त्वम् (सम्य० ५)

सम्यक्त्वक्रिया (स्त्री०) सम्यक्त्ववर्धिनी क्रिया।

सम्यक्त्वबोधः (पुं०) सम्यक्त्व/सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान। (भक्ति० १)

सम्यक्त्वसारशतकम् (नपुं०) ग्रन्थ नाम-आचार्य ज्ञानसागर प्रणीत।

सम्यक्त्वसारदीपकः (पुं०) आचार्य ज्ञान सागर का एक सम्यक्त्व से सम्बंधित शातक।

सम्यक्श्रद्धानम् (नपुं०) समीचीन श्रद्धान। (हित० २५)

सम्यक्श्रुतम् (नपुं०) सर्वज्ञ प्रणीत शास्त्र।

सम्यग्रीति (स्त्री०) उचित पद्धति। (जयो०वृ० १/१२)

सम्यग्ज्ञानिन् (वि०) सम्यक् ज्ञानी। (जयो० १/१)

सम्यगुत्थानम् (नपुं०) उन्नतशाही। (जयो०वृ० १/७९)

सम्यगञ्जलित्व (वि०) हस्तसंयोगजन युक्त। (जयो० २०/७७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्यगनुष्ठानतत्पर: (पुं०) सत्यधर्ममार्ग में तत्पर। (जयो०वृ० १/१०८)

सम्यगनेकान्त: (पुं०) अस्तित्व-नास्तित्व के स्वरूप का निरूपक सिद्धान्त।

सम्यगर्थवान् (वि०) समर्थवान्। (जयो०वृ० १/७२)

सम्यगाचार: (पुं०) समीचीन चारित्र।

सम्यगागम: (पुं०) आप्तोपज्ञो ग्रन्थ:। (जयो०वृ० ३/११५)

सम्यगेकान्त: (पुं०) एक देश की प्रामाणिकता वाला कथन।

सम्यग्गोलाकार: (पुं०) सुवृत्त। (जयो०वृ० ३/४६)

सम्यग्ज्ञानम् (नपुं०) संशय, विमोह, विभ्रम रहित ज्ञान, उत्तम ज्ञान। परमज्ञान। (त०लू०पृ० ७)

सम्यग्दर्शनम् (नपुं०) प्रशस्त दर्शन, तत्त्वार्थ श्रद्धान् (त०सू०७) (सम्य० ८९)

सम्यग्दृश (वि०) सम्यक् श्रद्धा वाला, सम्यक् दृष्टि वाला। (सम्य० ७९)

सम्यग्दृशाञ्चित (वि०) सम्यग् दृष्टा, सम्यक् दृष्टि वाला। (जयो० १०/८४)

सम्यग्दृष्टि: (स्त्री०) शोभन दृष्टि, सत्पदार्थावलोकिनी दृष्टि। (सम्य० १२८)

सम्यग्धुत (वि०) अच्छी तरह नष्ट हुआ। भो भो! मोहमहातमस्ततिरित: किन्नैव सम्यग्धुता। (मुनि० १)

सम्यग्वलिन् (वि०) अत्यन्त बलशाली। (सुद० २/४३)

सम्यग् वाच्यवती (वि०) शोभनाभिप्रायवती (जयो०वृ० ३/१८)

सम्यग्वाद: (पुं०) यथार्थ भाषण, वदनं वाद: राग-द्वेषपरिहारेण।

सम्वपुष्य् (वि०) मूर्तिमान। (जयो० ११/१६)

सम्वर्धमान (वि०) बढ़ते हुए। (वीरो० ८/६)

सम्वर्त् (अक०) होना। (मुनि० १)

सम्वल: (पुं०) आधार, कलेवा। (समु० ४/३१) (समु० ३/१६)

सम्यग्विभव: (पुं०) यथार्थ वैभव। 'जानन्ति सम्यग्विभवो रहस्ते' (सुद० ८/४)

सम्च् (सक०) कहना, बोलना। हेऽवनीश्वरि सम्वच्मि सम्वच्मीति न नेति स:। (सुद० ८५)

सम्वद् (अक०) कहना, समर्थन करना, बोलना। (जयो० २/८२) चाहना (समु० २/२६) (समु० ३/१४)

सम्वदा (स्त्री०) प्रतिज्ञा। (सुद० ९६)

सम्वय: (पुं०) मित्र, तुल्यावस्था-सं समानं वय आयु-तुल्यावस्था (जयो० १२/१३१)

सम्वशा (वि०) सम्यग्वशीभूत। (जयो० २/७३)

सम्वृतिका (स्त्री०) परदा, यवनिका, आवरण। (जयो० २४/३७)

सम्वरखा (वि०) पानी के समान आकाश सहित।

०निर्मल जल सहित।

०संवरं जलं तद्वत् खमाकाशं यस्या:

०संवरो जिन भगवानेव तद्वत् सं बुद्धिर्यस्या: सा-खमाकाशे दिवि सुखे, बुद्धौ संवेदने पुरे।

संवरे सलिले मेघे, संवरोऽथ जिनान्तरे' इति विश्वलोचने (जयो०वृ० २६/४९)

सम्वर्द्धिनी (स्त्री०) बढ़ने वाली। (जयो०वृ० ११/६८)

सम्वारित (वि०) निवारित, दूर किया हुआ। (जयो० १३/२१)

सम्वत्सर: (पुं०) वर्ष, अब्द (जयो० २०/५)

सम्वाद: (पुं०) उत्तम वार्तालाप। (जयो०१/३)

सम्वर्मित (वि०) विसर्जित। (सुद० १०३)

सम्विधापिन् (वि०) धारक, धारण करने वाला। (सुद० १०७)

सम्विषय: (पुं०) गंभीर विषय। (सुद० ११८)

सम्व्यचर् (अक०) विचरण करना। (सुद० ११८)

सम्वरित (वि०) विनाशित। (जयो० १५/१५)

सम्वश (वि०) वशीभूत। (सुद० १२७)

सम्वाञ्छा (स्त्री०) प्रबल इच्छा। (सुद० ११३)

सम्वाद: (पुं०) शोभन वचन, वार्तालाप।

सम्वादकरी (वि०) आशीर्वादसूचिनी। (जयो० १२/९७)

सम्वादवादी (वि०) सम्वादपक्षपाती। (जयो० १५/६१)

सम्वादविधि (स्त्री०) वार्तालाप पद्धति। परिचर्चा विधि (वीरो० १७/६) (समु० ८/२९)

सम्वाहनम् (नपुं०) पादचम्पन, पैर दबाना। (जयो० १७/४१)

सम्वंश (वि०) स्वाधीन। (जयो० १०/६७)

सम्वरोह (वि०) पापापहारक, पाप को नष्ट करने वाले। सम्वराय पापावरोधाय ऊहो वितर्को यस्य स:। (जयो०वृ० १०/९५)

सम्विदा (स्त्री०) सम्यग्बुद्धि। (जयो० २/८४)

सम्वित्तत्व (वि०) पाण्डित्यपूर्ण। (जयो० २८/६०)

सम्विदित (वि०) अनुभूत। (जयो० ५/५५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्विसर्जनम् (नपुं०) सम्प्रेषण। (सम्य० ८९)

सम्विभागीकृत (वि०) बराबर विभाग करने वाला, (जयो० २/११०)

सम्विधाकार (वि०) सुव्यवस्थादायक। (जयो० २/१००)

सम्विभूषणम् (नपुं०) उचित अलंकरण। (जयो० १४/८०)

सम्विशः (पुं०) प्रवेश-विट् पुंसि वैश्ये मुनजे प्रवेशे सु पुनः स्त्रियाम् इति वि। (जयो०वृ० २५/५१)

सम्विद (वि०) जानने वाला। (सम्य० ८९)

सम्विघ्नवाधा (स्त्री०) सभी तरह की विघ्न बाधाएं। (सुद० २/२३)

सम्विघातिन् (नपुं०) नुकसान करने वाला, हानिकारक। (समु० १/३४)

सम्विधानम् (नपुं०) सभी नियम। (सुद० ११५)

सम्विधि (स्त्री०) सुविधालक्षण, सुहावनी। (जयो० १२/३८)

सम्विभा (स्त्री०) समीचीन प्रभा। (जयो० २६/४८)

सम्विभाज्य (वि०) विभागयोग्य। (जयो० १२/११७)

सम्विभृ (सक०) धारण करना। 'प्रपा त्रपानः किल सम्विभर्तिः' (वीरो० १२/२७)

सम्विराग (वि०) विराग युक्त। (सुद० १०१) विराग सहित।

सम्विलोडनम् (नपुं०) निर्मथन (जयो०२३/८५)

सम्विलोपिन् (वि०) भागने वाला। (समु० ६/३२)

सम्वेगः (पुं०) सम्यग्दर्शन का एक भेद, सम्यक्त्व भाव। (सम्य० ७५) धर्म के प्रति तत्पर होना। (सम्य० पृ०७६)

सम्व्यवहारः (पुं०) खरीद। (जयो० वृ० १३/८७)

सम्विशिष्ट (वि०) अति विशिष्ट, विशेष रूप से। दीनस्वरसम्विशिष्टाम्। (समु० ३/३७)

सम्विसित (वि०) माना गया, समझा गया। (जयो० १४/७७)

सम्विह् (अक०) घूमना, परिभ्रमण करना। (समु० २/२२)

सम्वेदकर (वि०) विश्वज्ञायक। (वीरो० १९/३७)

सम्वेशिन् (वि०) सुंदराकार धारिन्। (जयो०वृ० २३/२८)

सम्वेगधर (वि०) सुष्ठुवेगयुक्त। (जयो० २३/३) संवेगं धर्मानुरागं धरतीति।

सम्वेशभावः (पुं०) विवेकशील। (सुद० १३१)

सम्स्मृ (सक०) स्मरण करना। (सुद० २/२३)

सम्राज् (पुं०) [सम्यक् राजते-सम्+राज्+क्विप्] सर्वोपरिप्रभु, विश्वराट्।

संहननम् (नपुं०) अस्थि बनावट। (मुनि० ३२)

संहिता (स्त्री०) स्मृतिशास्त्र। (जयो० वृ० ३/१२)

संहितार्थ (वि०) पवित्रार्थ। (जयो० ९/९०) हितामार्ग युक्त। (जयो० २/४)

संहति (स्त्री०) समूह। (सुद० १२३)

सहतलिप्स (वि०) मिलनेच्छुक। (जयो० १६/५७)

संहारकारक (वि०) बरबाद कारक, नष्ट कारक। (समु० १/२३) (वीरो० ३/१३)

संहारकर्ता (वि०) नष्ट करने वाला।

सय् (सक०) जाना, पहुंचना।

सयूक्ष्यः (पुं०) [सयूथ+यत्] एक ही वर्ग का, एक जाति का।

सयोनिः (वि०) [समाना योनिर्यस्य] सहोदर, समान गर्भ से उत्पन्न।

सर (वि०) [सृ+अच्] गतिशील, जाने वाला।
०दस्तावर, रेचक।

सरः (पुं०) बाण।
०गति, जाना।
०लड़ी, हार।

सरम् (नपुं०) सरोवर, तालाब, झील, तटाक। (जयो० ५/२२) (सुद० ४/२५) (जयो० १२/१४०)

सरकः (पुं०) [सृ+वुन्] पंक्ति।
०मदिरा। (जयो० १६/२७, ११/७६) मद्य।
०प्याला, कटोरा।

सरकम् (नपुं०) गति, जाना,
०तालाब, सरोवर।

सरघा (स्त्री०) मधुमक्खी, मक्षिका। (जयो०वृ० २/१३०)

सरङ्गः (नपुं०) [सृ+अङ्गच्] चतुष्पाद, चौपाया।
०पक्षी।

सरजस् (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

सरट् (पुं०) [सृ+अटिः] पवन, वायु।
०मेघ, बादल।
०छिपकली।
०मधुमक्खी।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरटः (पुं०) [सृ+अच्] ०पवन, वायु।
०छिपकली, गिरगट। (जयो० ५/१३)
सरटिः (पुं०) [सृ+अटिन्] ०पवन, वायु।
सरण (वि०) [सृ+ल्युट्] गतिशील, जाने वाला, बहने वाला।
सरणम् (नपुं०) प्रगतिशील, गतिशील।
०लोहे की जंग।
सरणिः (स्त्री०) [ऋ+निः] रास्ता, पथ, मार्ग।
०नसैनी, सीढ़ी। (जयो० १/८९)
०पंक्ति।
०कण्ठरोग।
सरंडः (पुं०) [सृ+अण्डच्] पक्षी।
०धूर्त, लम्पट।
०एक आभूषण।
सरण्युः (पुं०) [सृ+अन्युच्] ०पवन, वायु।
०मेघ, बादल।
सरत्निः (स्त्री०/पुं०) एक हाथ का माप।
सरथ (वि०) [समानो रथो यस्य रथेन सह वा] एक ही रथ पर सवार।
सरन्ध्रः (पुं०) गह्वर, गर्त, छिद्र। (जयो० २४/२७)
सरभस् (वि०) [सहरभसेन] वेगवान्, फुर्तीला।
०प्रचण्ड।
०उग्र।
०क्रोधपूर्ण।
०प्रसन्न।
सरभसम् (अव्य०) अत्यन्त वेग।
सरमा (स्त्री०) [सृ+अम्+टाप्] एक नाम विशेष।
सरयुः (सृ+अयु) हरा, पवन, वायु
०(स्त्री०) सरयु नदी जिसके किनारे अयोध्या नगरी बसी हुई है।
सरल (वि०) [सृ+अलच्] सीधा, वक्रता रहित, ऋजु। (जयो०वृ० ८/४४)
०निश्छल-मनो वचः शरीरं स्वं सर्वस्मै सरलं भजेत्। (सुद० १२५)
०निष्कपट।
०सीधा-सादा।
०अनक, निष्पाप। 'अनकं कष्टवर्जितं सरलमित्यर्थः' (जयो० १/१०९)
सरलः (पुं०) सरल वृक्ष, चीड़ तरु।
०अग्नि।
सरलत्व (पुं०) ऋजुता युक्त। (हित० ४५)
सरलपरिणामः (पुं०) ऋजुता के भाव। (जयो०वृ० ८/४४)
सरस् (नपुं०) [सृ+असुन्] तटाक, तालाब, सरोवर। ०पोखर।
सरस (वि०) [सेन सह] रसवती। (जयो० ३/४७)
०सरल। (सुद० २/६)
०सजल। (जयो०वृ० ३/४७)
०उत्तम। (सुद० ७८) रसपूर्ण। (जयो०वृ० १/४)
सरसम् (नपुं०) झील, तटाक, तालाब।
सरसता (वि०) रस सहित, रस से परिपूर्ण।
सरसत्व (वि०) सरसता से संयुक्त। (जयो०वृ० १४/५१) नम्रता। (जयो० १२/२७) 'निम्नगेव सरसत्वमुपेता' (सुद० १/४३)
सरसभावः (पुं०) स्वभाव/सरसतया सकामभावेन। (जयो०वृ० ४/१७) ०पूर्ण रस सहित स्वभाव, सरल परिणाम।
सरसहास (वि०) प्रिय हास्य। (जयो० ४/५३)
सरसा (वि०) शृंगार रसवती। (जयो० १०/११०)
सरसी (स्त्री०) [सरस्+ङीष्] सरोवरी, (सुद० २/१) तटाकी, पोखरी-स्रोतो विमुच्य स्रवणं स्तनान्ताद, यूनामिदानीं सरसीति कान्ता' (वीरो० १२/१३०)
सरसीरुहम् (नपुं०) कमल, सरोज।
सरसलेशः (पुं०) माधुर्य स्थान। (जयो० ६/४६)
सरसेङ्गित (वि०) शृंगारमयचेष्टा। (जयो० २२/१८)
सरस्वत् (वि०) [सरस्+मतुप्] सजल, जलयुक्त।
०रसीवा, रसयुक्त, स्वादिष्ट।
सरस्वत् (पुं०) उदधि, समुद्र। (जयो० ९/६१)
०सर, तालाब, नद। सागर
सरस्वती (स्त्री०) [सरस्वत्+ङीप्] ०भारती, वाणी, पद्मासिनी। (जयो० १९/२८) (जयो० २/४१)
०वचोऽभिदेवता। (जयो०वृ० १२/२)
०गी (जयो०वृ० १२/१३) ०वागेश्वरी, ०वागिनी।
०अम्बा (जयो० १२/२) ०अम्बेश्वरी।
०मयूरवाहिनी, चतुर्भुजावती,
०कलापिनाभी, कल्याणी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०शिखण्डिनीशिरोमणि।

०जिनवाणी। (जयो०वृ० १९, २४, २५, २६)

०शारदा (जयो० १९/२९)

०सिद्धिदा (जयो० १९/३२)

०नदी (जयो० ५/१०७, ५/११०)

०गाय।

०श्रेष्ठ स्त्री।

०बोली, वचन।

सरस्वतीसंग्रह (पुं०) सरस्वती का ग्रहण, काव्य रचना। (समु० १/१२)

सराग (वि०) [सह रागेण] राग युक्त, प्रेम से परिपूर्ण, मुग्ध, आसक्त।

०राग परिणाम सहित, जो संसार के कारणों को छोड़ने में उद्यत है पर छोड़ नहीं पाता। (सम्य० ८६) (सुद०८४)

सरागचर्या (स्त्री०) राग सहित चर्या।

सरागचारित्रम् (नपुं०) कषाय जन्य चारित्र, संज्वलन और नो कषाय के उदय से जो चारित्र होता है।

सरागसम्यक्त्वम् (नपुं०) जो तत्त्वार्थ श्रद्धान प्रशम, संवेगादि गुणों से जाना जाता है।

सरागसंयमः (पुं०) राग सहित संयम।

सराव (वि०) [सह रावेण] शब्द करने वाला, कोलाहल करने वाला।

सरावः (पुं०) ढक्कन, आवरण।

०सकोरा, तश्तरी।

सरिः (स्त्री०) [सृ+इन्] झरना। ०प्रवाह, ०स्रोत।

सरित् (स्त्री०) [सृ+इति] नदी, सरिता। (सुद० १०४) (जयो०१३/५६) ०प्रवाहिनी, कल्लोलिनी।

०धागा, सूत्र।

सरित्सुवेशिनी (वि०) नदी रूपवती। (जयो०वृ० ३/१०)

०विभङ्गदेशिनी, तरंगधारिणी (जयो०वृ० ३/१०)

सरिद्भवदूर्मी (स्त्री०) नदी में उत्पन्न तरंग। (जयो० १४/१९)

सरित्भर्तृ (पुं०) समुद्र, उदधि।

सरिद्वृत्तिः (स्त्री०) नदी तट। सरितो नद्या वृती चोभयपार्श्वतती (जयो० १३/५७)

सरिदवलम्बनामकचक्रबन्धः (पुं०) छन्द प्रतिपादन की एक पद्धति। (जयो०ृ० १४/५६)

सरिमन् (पुं०) [सृ+ईमनिच्] गति, सरकना।

०पवन, वायु।

सरिलम् (नपुं०) [सृ+इलच्] जल। ०वारि, अप, आप।

सरीसर्त्तिः (स्त्री०) शीत की अधिकता। (वीरो० ९/३५)

सरीसृपः (पुं०) सर्प, सांप, रेंगने वाला जंतु।

सरुः (पुं०) [सृ+उन्] तलवार की मूठ।

सरूप (वि०) [रुषेन सह] रोष युक्त। (जयो० ६/६७)

सरूप (वि०) रूप युक्त, समान रूप वाला।

सरोजम् (नपुं०) कमल। (सुद० २/३२)

सरोजराजि (स्त्री०) कमल समूह। (जयो० १०/११८) कमल श्रेणी। (जयो० ५/७९)

सरोजवीरुधा (स्त्री०) कमलिनी। (जयो० १७/७७)

सरोजिनी (स्त्री०) कमलिनी/कमलवल्ली।

०सरोजिनी नायडू। (जयो० १८/८३)

सरोजिनी सौरभम् (नपुं०) कमलिनीगंध। (वीरो० १२/२२)

सरोब्जवृन्दः (पुं०) कमल समूह। (जयो० १२/१४०)

सरोगः (पुं०) तटाक, तालाब। मराल एवान्वयते सरोगः, परं मुरल्यां विवरप्रयोगः। (समु० ६/७)

सरोरुहम् (नपुं०) कमल। (सुद० २/३३) (जयो० १/९३)

सरोवरः (पुं०) जलाशय, तालाब, (समु० ५/१५) (सुद०२/४५) (जयो० ३/२४, १/४३)

सरोवरजलम् (नपुं०) जलाशय का जल। (जयो० ४/५९) विशिष्टं नीरं सरोवरजलम्।

सरोवरभङ्गः (पुं०) सरोवरस्य भङ्ग। (जयो० ४/५९) ०तरङ्ग।

सरोवरी (स्त्री०) हंसिनी, तडांगी। (जयो० १३/१८) अधिपस्य बभौ तनूदरी विलसद्धंसवयाः सरोवरीः। (सुद० ३/३)

०तलैय्या (समु० ३/१३)

सरोष (वि०) [सह रोषेण] रोषपूर्ण, क्रोधित, कुपित।

सरोषदोषः (पुं०) रोषपूर्ण, दोष। (जयो० १७/५४)

सर्कः (पुं०) [सृ+क] पवन, वायु, हवा।

०मन।

सर्गः (पुं०) [सृज्+घञ्] निर्माण। (जयो० ११/४५) (जयो० ११/८४)

०अध्याय-देशादेर्नृपतेश्च वर्णपरः सर्गोऽयमाद्योऽनकः। (सुद० पृ० ४७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० छोड़ना, परित्याग करना।
० सृष्टि रचना।
० अनुभाग, अंश। ० अध्याय, अध्ययन।
० निर्माण (वीरो० ४/२०) क्रम।
सर्गक्रमः (पुं०) सृष्टिक्रम, अनुक्रम।
सर्गपरिणामः (पुं०) पर्यटन भाव। (जयो० १८/५५)
सर्ज् (सक०) अवाप्त करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना, उपार्जन करना। (सुद० २/३६)
सर्जक (वि०) स्रष्टा (जयो०वृ० ७/३३)
सर्जः (पुं०) [सृज्+अच्] सालवृक्ष। (जयो० १४/१५)
सर्जकः (पुं०) साल वृक्ष।
सर्जनम् (नपुं०) [सृज्+ल्युट्] परित्याग, छोड़ना।
सर्जवृक्षः (पुं०) सालवृक्ष। (जयो० १४/१५)
सर्जिका (वि०) [सर्जि+कन्+टाप्] सज्जीखार।
सर्जुः (पुं०) व्यापारी।
सर्पः (पुं०) [सृप्+घञ्] नाग, अहि, सांप, काद्रवेय (जयो० ११/९६) भुजंग। (दयो० २५/६९) (सुद० १०५) (सुद० १/३०)
० खिसकना, गमन, अनुसरण।
सर्पछत्रम् (नपुं०) कुकुरमुत्ता।
सर्पणम् (नपुं०) [सृप्+ल्युट्] रेंगना, सरकना।
० वक्रगति, कुटिलगति।
सर्पतृणः (पुं०) नेवला।
सर्पदंश (वि०) भुजग भुक्त। (जयो०वृ० २५/६७)
सर्पदंष्टः (पुं०) दर्प दांत।
सर्पधारकः (पुं०) सपेरा।
सर्पभुज् (पुं०) ० मयूर,
० सारस।
० अजगर।
सर्पमणिः (पुं०) नागमणि।
सर्पराजः (पुं०) वासुकि।
० शेषनाग। (जयो०वृ० ११/३१)
सर्पसरोवरः (पुं०) सर्पस्थान। (जयो० २३/७१)
सर्पशिरोत्नम् (नपुं०) नागमणि। (जयो०वृ० २/१६)
सर्पिणी (स्त्री०) [सृप्+णिनि+ङीप्] पन्नगी। (जयो०वृ० ३/५५) सांपनी, अहिनी, नागिन। भुजरीचरा (जयो० २०/६८)
० जड़ी, बूटी।
सर्पिन् (वि०) व्यापिन् । (जयो० ५/५७)
सर्पिन् (वि०) [सृप्+णिनि] रेंगने वाला, सरकने वाला।
सर्पिविधानम् (नपुं०) घृत क्रिया। (जयो०वृ० २/१४)
सर्पिस् (नपुं०) [सृप्+इसि] घी, घृत। (सुद० ७२)
सर्पिष्मत् (वि०) [सर्पिस्+मतुप्] घी युक्त, घृत युक्त।
सर्ब् (सक०) जाना, पहुंचना।
सर्मः (पुं०) चाल, गति।
० आकाश।
सर्व् (सक०) चोट पहुंचाना, घायल करना।
सर्व (वि०) (सर्वनाम) सभी जगत्, सर्वत्र (जयो० २१/१७) सब, प्रत्येक। (जयो० १/२५)
० समस्त अवयव। (सुद० १/११)
सर्वङ्कषः (पुं०) दुष्ट, दुर्जन।
सर्वकांक्षा (वि०) सभी तरह की आकांक्षा।
सर्वग (वि०) सर्वव्यापक।
सर्वगत (वि०) व्यापक। (हित० १४)
सर्वगामिन् (वि०) सर्वव्यापक, पूर्ण व्याप्त, सभी जगह पहुंचने वाला।
सर्वदेवमय (वि०) सबसे प्रमुख, देव युक्त। (दयो० १०६)
सर्वदैव (अव्य०) सदा ही, हमेशा ही। (जयो०वृ० १/४२)
सर्वज्ञात (वि०) सब कुछ जानने वाला। (वीरो० २०/५)
सर्वज्ञ (वि०) सब कुछ जानने वाला। सकलज्ञ। (जयो०वृ० ८/८८) अखिलार्थसाक्षात्कारी। (सम्य० ९५) लोकोलोक के समस्त पदार्थों को जानने वाला।
० दोषवृत्ति रहित सर्व ज्ञापक।
सर्वज्ञः (पुं०) जिन, वीतराग प्रभु। विश्वभर, त्रिलोकनाथ। मोहवर्जित सर्वज्ञः। (जयो०वृ० १६/९५)
सर्वजित् (वि०) विजयी, विजेता, सर्वजयी।
सर्वपरिस्तवः (पुं०) सर्वज्ञस्तुति। (वीरो० १८/३०)
सर्वज्ञचूडामणि (पुं०) वीरप्रभु। (वीरो० १२/५३)
सर्वज्ञजिनः (पुं०) वयोऽस्तु सर्वज्ञजिनस्यचेति-वीतराग प्रभु। (वीरो० १४/१७)
सर्वज्ञदेवः (पुं०) जिनदेव। (मुनि० २९)
सर्वज्ञवाक् (नपुं०) सर्वज्ञ वचन। (मुनि० ३१) सर्वज्ञवाणी। (भक्ति० १३)
सर्वविद (वि०) सब कुछ जानने वाला। (जयो०वृ० १/१)
सर्वसात् (वि०) सकल जनादीन। (जयो० २/१३३)
सर्वाङ्गसुंदर (वि०) अविकलित सुंदर। (जयो०वृ० २२/५)
सर्वाङ्गीण (वि०) पूर्णतः, पूर्ण रूप से। (सुद० १०२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वज्ञत्व (वि०) सर्वज्ञपना। (सम्य० ९३)

सर्वज्ञासम्बन्धि (स्त्री०) सर्वज्ञ से सम्बन्धि। (वीरो० २०/२३)

सर्वतः (अव्य०) [सर्व+तसित्] प्रत्येक दिशा से, (जयो० २/२७) सब ओर से, चारो ओर से। (सुद० ९१)

सर्वदमन् (वि०) सब कुछ नष्ट करने वाला।

सर्वनामन् (नपुं०) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द।

सर्वत्र (अव्य०) [सर्व+त्रल्] प्रत्येक स्थान पर, सब जगह पर। (सम्य० ९२, १३३)

सर्वतोऽपि (अव्य०) सभी ओर से भी। (जयो० ३/९)

सर्वतोमुखम् (नपुं०) ० जल।
- ० चुम्बन। सर्वतोमुखं जलम्, अर्थाच्च सर्वभावेन तव मुखं। (जयो०वृ० १२/१२९)
- ० नाम विशेष। (जयो० १४/५६)

सर्वतोभद्रकः (पुं०) सभामण्डप। (जयो० ३/७१)

सर्वतोमुखं (नपुं०) जल, वारि। (जयो० १२/१११)

सर्वथा (अव्य०) [सर्व+थाल्] हर प्रकार से, सब तरह से, पूर्णता, पूर्ण रूप से। (मुनि० ३)
- ० बिलकुल, नितान्त।

सर्वदा (अव्य०) [सर्व+दात्र्] सदैव, (मुनि० १४) हमेशा।

सर्ववित्क (वि०) सर्ववेत्ता। (वीरो० २०/२१)

सर्ववेत्ता (वि०) ० सर्वज्ञ, ० सर्वज्ञायक। (वीरो० २०/११)
- ० परमात्मन् (वीरो० १६/२६)

सर्वशः (अव्य०) [सर्व+शस्] पूर्णतः, पूरी तरह से सर्वत्र।

सर्वशावकसन्तति (स्त्री०) सर्वकाल वाला। (जयो०वृ० ३/५५)

सर्वसत्त्वः (पुं०) प्राणिमात्र। (वीरो० १२/४३) हितं प्रकर्तुं प्रति सर्वसत्त्वम्।

सर्वसम्मत (वि०) पूर्णमान्य, सभी लोगों द्वारा स्वीकृत। (जयो०२/४४)

सर्वसाधारणं (नपुं०) सामान्य। (जयो०वृ० १/८६)

सर्वस्यदायक (वि०) सब कुछ देने वाली। (जयो०वृ० १२/८७)

सर्वस्यविनाशन (वि०) मूल हरण (जयो० २/११०)

सर्वात्मप्रियः (पुं०) सभी आत्मीय जनों के लिए प्रिय। (वीरो० १६/२७)

सर्वानुकम्पा (स्त्री०) सभी जीवों के प्रति दया।

सर्वाधि-व्याधिनाशक (वि०) समस्त आधि एवं व्याधि को नाश करने वाला। (जयो० १९/८१) 'णमो मदु रसवीणं'

सर्वारम्भः (पुं०) सभी प्रकार का आरम्भ। (जयो० २०/४१)

सर्वार्थसिद्धिः (स्त्री०) तत्त्वार्थसूत्र की एक टीका।
- ० जो भी प्रकार के अभ्युदय से सिद्धि को प्राप्त है।
- ० विशुद्धात्मस्वरूप की सिद्धि।
- ० वीतराग अवस्था की प्राप्ति।

सर्वावधि (स्त्री०) जिसके विषय की अवधि समस्त विश्व है। सर्वं विश्वं कृत्स्नमवधिर्मर्यादा यस्य स बोधस्सर्वावधिः'

सर्वावधिज्ञानम् (नपुं०) सम्पूर्ण अवधि का बोध। (समु० ४/३१)

सर्वावधिबोधः (पुं०) सर्वावधिज्ञान। (समु० ४/३१)

सर्वावधिमरणम् (नपुं०) सर्व मर्यादा पूर्वक मरण, जो प्रकृति, स्थिति, अनुभव एवं प्रदेश का उदय हो, वह बांधना।

सर्वावयवः (पुं०) पूर्ण अवयव। (जयो०वृ० ३/७९)

सर्वोदयतीर्थः (पुं०) निरपेक्ष तीर्थ। ० सभी का कल्याणकारक का स्थान।

सर्वौषधिः (स्त्री०) एक ऋद्धि, जिसकी प्राप्ति पर समस्त औषधियां प्राप्त हो जाती हैं।

सर्षपः (पुं०) सरसों।

सल् (सक०) जाना, पहुंचना।

सलम् (नपुं०) [सल्+अच्] जल, वारि।

सलक्ष्मण (वि०) लक्ष्मण सहित। (जयो० १३/५९) अभिरामतया सलक्ष्मणा।
- ० लक्ष्मण नामक औषधि सहित। सलक्ष्मण, लक्ष्मणा नाम सारस्यस्ताभिः सहिता।
- ० लक्ष्मणेन च सहिता। (जयो०वृ० १३/५९)

सलज्ज (वि०) [लज्जया सह] लज्जशील, विनम्र।
- ० सत्रप।

सललितगेय (वि०) श्रोत्रेन्द्रिय को प्रिय लगने वाला गीत।

सलव (लवेन सह) विलास सहित। (जयो० १३/५९)

सलालसा (वि०) लालसा सहित। (जयो० ११/१) सोत्कठा।

सलिलम् (नपुं०) [सलति गच्छति निम्नम् सल्+इलच्] जल, वारि। (जयो० १/५०)
- ० पाताल। (जयो०वृ० १/५०)

सलिलक्रिया (स्त्री०) स्नान क्रिया।

सलिलजम् (नपुं०) कमल।

सलिलनिधिः (स्त्री०) समुद्र, वारिधि।

सलिलाशयः (पुं०) तालाब, सरोवर।

सलिलोद्भवः (पुं०) कमल। (जयो० १८/९)

सलील (वि०) [सहलीलया] क्रीड़ा शील, स्वेच्छाचारी। लीलायुक्त, प्रणयवान्, प्रेमासक्त। विषयी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सलोकता (स्त्री०) [समान: लोको यस्य इति सलोक: तस्य भाव: तल्+टाप्] एक ही लोक का होना।

सल्लकी (स्त्री०) एक वृक्ष विशेष।

सल्लीन (वि०) मुग्ध। (जयो०वृ० २३/५)

सव: (पुं०) [सु+अच्] तर्पण, चढ़ावा।
 ० स्तवन। (जयो० १/११)
 ० सूर्य।
 ० यज्ञ।
 ० चन्द्र।

सवर्णा (स्त्री०) सवर्ण संज्ञा। तुल्या वर्णनां यस्या: साऽसि व: सान्त्वनार्थे वर्तते, तेन सान्त्वनेन सहित: सवस्तस्मिन्नृणं कृपा यस्या: सा सवर्णाऽसि:। (जयो० ६/८५)

सवल्गा: (पुं०) खलीनसहित, लगाम। (जयो० २१/१९)

सवदर्शनम् (नपुं०) विवाहोत्सवावलोकन। (जयो० १०/१३)

सवनम् (नपुं०) [सु+ल्युट्] ० यज्ञ।
 ० स्नान।
 ० जनन, प्रसव।

सवराज्यम् (नपुं०) राज्याभिषेक। (जयो० २६/१८)

सवयस् (वि०) [समानं वयो यस्य] समवय वाला, समान अवस्था युक्त।

सवयस् (पुं०) मित्र।

सवयस् (स्त्री०) सखी, सहेली, सहचरी।

सवर: (पुं०) जल। ० शिव।

सवर्ण (वि०) [समानो वर्णो यस्य] समान वर्ण वाला, एक ही रंग वाला। तुल्या वर्णानां यस्या साऽसि (जयो० ६/८५) वर्ण श्रवणशील। (जयो० १/६२)
 ० तुल्य वर्ण। (जयो० ६/८५)
 ० उच्च वर्ण वाला। (हित० ९)
 ० एक ही जाति वाला।

सवर्णसंज्ञा (स्त्री०) वर्णों का समान संज्ञा।

सवसंत (वि०) जड़ता का अन्त। (सुद० ८१)

सविकल्प (वि०) [सह विकल्पेन] विकल्पयुक्त।
 ० संदिग्ध।

सविक्रिय (वि०) विकार युक्त। (जयो० ७/७३)

सविग्रह: (वि०) [सह विग्रहेण] संघर्षरत।
 ० सार्थक।

सवितर: (पुं०) सूर्य। (दयो० ५२)

सवितर्ज (वि०) विचारवान्।

सविभव (वि०) [सत्त्वेन सह] प्राणियों सहित।
 ० आन्नदायिनी। (जयो० ३/११५)

सवितानुकूल: (पुं०) सूर्यानुकूल। (वीरो० १२/२३)

सवितृ (वि०) जनक, उत्पादक। जन्म देने वाली। (जयो०१/६४)

सवितृ (पुं०) सूर्य, रवि। (जयो० ८/८९)

सवित्री (स्त्री०) माता। ० गाय।

सविध (वि०) [सह विधया] विधि सहित।

सविधम् (नपुं०) सामीप्य, पड़ौस।

सविनयम् (अव्य०) विनयपूर्वक।

सविभाव: (पुं०) सूर्य। (जयो० १३/१२)

सविभूति (वि०) विभूति युक्त, भस्मधारक। विभूतिमत्त्वं वैभवयुक्तता भस्मधारिता। (जयो०वृ० १/३०)

सविलास (वि०) हास भाव परक। (जयो० १०/११९)

सविशेष (वि०) [सह विशेषेण] विशिष्टता युक्त।
 ० असाधारण।
 ० प्रमुख, श्रेष्ठ। (सुद० ३/३१)
 ० विलक्षण।

सविस्तर/सविस्तार (वि०) [सह विस्तरेण] विवरण सहित, विस्तार युक्त। (जयो० ४/६४)

सविस्मय (वि०) [सह विस्मयेन] आश्चर्यचकित, आश्चर्य जनक, चकित, अचम्भे युक्त। (सुद० १०७)

सवृद्धिक (वि०) [सह वृद्ध्या] वृद्धि युक्त, ब्याज युक्त।

सवेग (वि०) सरभ, सहसा। (जयो० ८)

सवेश (वि०) [सह वेशेन] अलंकृत वेश युक्त।

सवेग (सह वेगेन) वेग युक्त, तीव्रता सहित। (जयो० १/१९)

सवेगगमनम् (नपुं०) शीघ्र गमन। (जयो० १/१९)

सवेदन (वि०) ज्ञान सहित।
 ० वेदना सहित। (जयो० ११/८९) अलंकरण सहित, वेशभूषा सहित।

सव्य (वि०) [सु+य] बाया, वाम। (जयो० २४/१०)
 ० वाम।
 ० दक्षिणी।
 ० विरोधी। (जयो० २५/६४)

सव्यम् (अव्य) अपसव्य।

सव्यपेक्ष (वि०) [व्यपेक्षया सह] संयुक्त, निर्भर।

सव्यभिचार: (पुं०) [सह व्यभिचारेण] हेत्वाभास का एक भेद।

सव्याज (वि०) [सहव्याजेन] छलक पटी, चालाक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सव्यपार (वि०) [व्यापारेण सह] व्यस्त, व्यापृत, कार्य में नियुक्त।

सव्रीड (वि०) [व्रीडया सह] लज्जाशील।

सव्येष्ठु (पुं०) [सव्ये तिष्ठति-सव्ये स्था+वरन्] सारथि।

सशक्त (वि०) ताकतवर, सामर्थ्य युक्त। (भक्ति०पृ० १०)

सशर्म (वि०) शान्ति सहित। (जयो०२३/५०)

सशल्य (वि०) [सह शल्येन] कांटेदार, शल्य युक्त, पीड़ा जनक।

सशस्य (वि०) [सह शस्येन] अन्नोत्पादन सहित, धान्य से परिपूर्ण।

सशीकर (वि०) जलकण युक्त। (भक्ति० १४)

सशमश्रु (वि०) [सह श्मश्रुणा] दाढ़ी मूंछ वाला।

सश्रीक (वि०) [श्रिया सह] लक्ष्मी सहित, समृद्धियुक्त।
 ० प्रिय, सुंदर।

सशुद्ध (वि०) शुद्धोपयोग युक्त। (सम्य० ११५)

सस् (अक०) सोना, शयन करना।

ससत्त्व (वि०) [सह सत्त्वेन] ओजस्वी, शक्तिशाली, प्राणवंत, साहसी।

ससन्देह (वि०) [सह सन्देहेन] संदेह युक्त, संशय युक्त, संदिग्ध।

ससन्देहः (पुं) संदेह अलंकार।

ससनम् (नपुं०) [सस्+ल्युट्] शमन।

ससन्ध्य (वि०) [सन्ध्या सह] सन्ध्या सहित, सायंकालीन।

ससार (वि०) सारभूत। (जयो० २८/७१) सारेण सहित। (जयो० ५/१६)

ससित (वि०) सितया सहितं ससितः मिश्री युक्त। (जयो० २/१५२)

सस्पृहा (स्त्री०) साभिलाषा, इच्छा, वाञ्छा। (जयो०वृ० ३/४६,११)

सस्पन्दनभावः (पुं०) स्फुरभाव। (जयो० १८/६)

सस्मित (वि०) मन्द हास्य युक्त। (वीरो० ७/३६)

ससुतः (वि०) पुत्र सहित। (सुद० ३/१२)

संस्तवः (पुं०) स्तवन करना, रक्षण करना। (जयो० ३/७)

सस्मर (वि०) कामार्त, काम से पीड़ित। (सुद. ८६)

सस्यम् (वि०) अच्छे गुणों वाला।

सस्वज (वि०) समालिविङ्गत । (जयो० १४/९१)

सस्वेद (वि०) [सह स्वेदेन] पसीने से युक्त, स्वेद से तर।

सह् (सक०) संतुष्ट करना, झेलना। सहेरन् (सुद० २/४४)
 ० सहन करना।
 ० सामना करना। (जयो० १/८४)

सह (वि०) [सह्+अच्] सहन करने वाला, झेलनेवाला।
 ० धीर।
 ० योग्य।

सह (अव्य०) के साथ, साथ साथ, सहित, युगपत। (सुद० ८८/ (जयो०वृ० १/१८)

सहकारः (पुं०) सहयोग। (सुद० ८१)

सहकार (पुं०) आम्र, (सुद० ८१) आम्रवृक्ष (जयो० २२/४) (वीरो० ६/२१)
 आम्रस्य गुञ्जत्कलिकान्तरालेर्नीलीकमेतत्सहकारनाम्।

सहकारगणः (पुं०) आम्रवृक्ष। (वीरो० ६/३५)

सहकारतरु (पुं०) आम्र किसलय। (जयो० १०/२६)

सहकारिन् (वि०) सहायता करने वाला। (जयो० १४/६५)

सहकारिता (वि०) सहयोगी।

सहकारित्व (वि०) सहभाव, सहयोग। (जयो० वृ० ३/७०, जयो० १/२९) सहायता।

सहकारिकुण्डः (पुं०) सहयोगी कुण्ड। (जयो० ११/३०)

सहकारिसत्ता (स्त्री०) सहकारी पना, सहयोगपना, सहभाविता, सगभागिता। (जयो०)

सहकृत् (वि०) सहयोग देने वाला।

सहकृत् (पुं०) सहकर्मी।

सहगमनम् (नपुं०) साथ जाना।

सहगामिन् (पुं०) अनुचर, सेवक। (भक्ति० २५)

सहचर (वि०) साथ में जाने वाला, साथ रहने वाला।

सहचरी (स्त्री०) सखी, सहेली (दयो० ६५) सहभागिनी सहयोगिनी। (जयो०वृ० ५/७३)
 ० भिण्डी का वृक्ष। (जयो० २१/३९)

सहचरित (वि०) सेवा में उपस्थित रहने वाला।

सहचारिणी (स्त्री०) साथ चलने वाला। (सुद० २/३४)

सहचारिन् (वि०) मित्र, यार।

सहचेति (अव्य०) साथ ही। (वीरो० ७/३५)

सहज (पुं०) नैसर्गिक, स्वाभाविक। (जयो० १/३) (सुद०८१)
 ० सरल (जयो० ४/३३)

सहजक (वि०) स्वाभाविक, नैसर्गिक। (जयो० २/११२)

सहजकवि (पुं०) सरल कवि, स्वाभाविक कवि। (सुद० ७४)

सहजक्रीर्तिमान् (वि०) यशस्वी। (जयो० २९/६७)

सहजप्रयातः (पुं०) सहज स्वभाव। (वीरो० १९/३४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहजभावः (पुं०) स्वाभाविक परिणाम। (सुद० ३/३०) सहजभावेन सञ्जातः सुदर्शन एष भो भ्रातः।

सहजमञ्जुलप्राय: (वि०) सहज सुंदर स्वभाव वाली। ० प्रियांशुनी, सम्भाषिनी। (सुद०७५)

सहजमेषः (पुं०) निर्ग्रन्थ, दिगम्बर। (वीरो० २२/७)

सहजात (वि०) सहजभाव गत। (जयो० १२/१३७) सहजेन स्वभावेनायाता-

सहता (स्त्री०) [सह+तल्+टाप्] साहचर्य, मेल, मिलाप।

सहत्व (वि०) साहचर्य युक्त।

सहदार (वि०) विवाहित, सपत्नीक।

सहदेवः (पुं०) पाण्डवों का एक भाई। (जयो० १/१८)

सहधर्मः (पुं०) समान कर्तव्य।

सहनम् (नपुं०) झेलना, सहन करना।

सहपांशुक्रीडिन् (पुं०) मित्र, सखा।

सहभावः (पुं०) सहकारिता (जयो० ३/७०)

सहभाविन् (पुं०) मित्र, सखा, अनुचर।

सहभू (वि०) सहजात, एक साथ उत्पन्न हुआ।

सहमरणम् (नपुं०) सह गमन।

सहयोगः (पुं०) [सहार्थेन योगः] सह भाव, सहकारिता। (सुद० ११९) ० सहभागिता।

सहयोगिनी (स्त्री०) सहधार्मिणी (हि०सं० १२, वीरो० १८/३२)

सहर्ष (वि०) हर्षयुक्त। (जयो० १२/२२)

सहवसतिः (स्त्री०) मिलकर रहना। ० मिथुन क्रीड़ा। ० संभोग।

सहवासः (पुं०) मिलकर रहना।

सहस् (पुं०) [सह्+असि] मगसिर माह, सर्दी का समय। ० शक्ति, सामर्थ्य।

सहस (वि०) हास युक्त। (सुद० २/३७)

सहसा (स्त्री०) अनायास, अचानक, अकस्मात्। (जयो० ६/१२८) सहज (सुद० ८१) (जयो० ३/९८)
० तभी, तव (सहायेन सहसा) (सुद० ९५)

सहसानः (पुं०) [सह्+असानच्] ० मोर, मयूर।
० यज्ञ।
० आहूति।

सहसान्धकारः (पुं०) दैत्य विशेष।

सहसैव (वि०) एकाएक (दयो० ७) (जयो० १८/३०, २२/४०)

सहस्यः (पुं०) [सहसे बलाय हितः सहस्+यत्] पौष मास।

सहस्रम् (नपुं०) हजार। (वीरो० ३/३)

सहस्रकरः (पुं०) सूर्य, दिनकर। (जयो० १५/३१)

सहस्रकिरणः (पुं०) दिवकान्त, सूर्य, भानु।

सहस्रकाण्डः (पुं) सफेद दूब।

सहस्रकृत्वम् (अव्य०) हजार बार।

सहस्रद (वि०) उदार।

सहस्रदीधितिः (पुं०) सूर्य। ० दिवाकर, दिनमणि।

सहस्रधा (अव्य०) हजार प्रकार से।

सहस्रधामन् (पुं०) सूर्य। ० दिनपति।

सहस्रपत्रम् (नपुं०) कमल। (सुद० ४/१९)

सहस्रपादः (पुं०) सूर्य, दिनकर।

सहस्रबाहु (पुं०) नाम विशेष, एक राजा का नाम।

सहस्रमरीचिः (पुं०) दिनकर, सूर्य।

सहस्ररश्मिः (पुं०) सूर्य। (जयो० १५/९१)

सहस्रवयस् (पुं०) हजार वर्ष। (सुद० १/४५)

सहस्रशस् (अव्य०) [सहस्र+शस्] हजार हजार करके। बहुसंख्यक। (जयो० २१/२१)

सहस्रसंभुजः (पुं०) सहस्त्रबाहु। (वीरो० ७/३०)

सहस्राब्दिन् (पुं०) एक हजार वर्ष। (वीरो० १५/३०)

सहस्रारः (पुं०) स्वर्ग। (समु० ४/३६) (वीरो० ११/३४)

सहस्रांशु (पुं०) सूर्य।

सहस्रांशुककीर्तनः (पुं०) रजक, धोबी। (जयो० ७/९)

सहस्रंशुतेजस् (नपुं०) सूर्यप्रभा। (जयो० २०/६३)

सहस्रिन् (वि०) [सह स्त्र+इनि] हजार से युक्त, हजार संख्या तक।

सहस्वत् (वि०) [सहस+मतुप्] समर्थ, शक्तिशाली।

सहा (स्त्री०) [सह्+अच्+टाप्] पृथ्वी।
० केतकी पुष्प।

सहाभिगम (वि०) समागम, संयोग। (जयो० २५/५५)

सहायः (पुं०) [सह एति-सह+इ+अच्] ० मित्र, सखा, साथी, सहयोगी। (जयो० ६/११४)
० अनुयायी, अनुगामी।
० सहायक। (भक्ति० १६)
० अभिभावक।

सहायक (वि०) सहभागी। (सम्य० १५)

सहायकर (वि०) सहकारि, सहभागी। (जयो०वृ० १४/६५)

सहायता (स्त्री०) [सहाय+तव्+टाप्] मैत्री, मिलाप।
० सहायता, सहयोग। (दयो० ९१)

सहायधी (स्त्री०) साधनबुद्धि। (जयो० २५/५)

सहायवत् (वि०) [सहाय+मतुप्] मित्रों सहित, मित्रता से बंधा हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहायिन् (वि०) सहयोगी। (जयो० २/५६)

सहारः (पुं०) [सह+ऋ+अच्] आम्र तरु।

० प्रलय, विनाश।

सहावान (वि०) आह्वानन। (दयो० २८)

सहास (वि०) [ससेन सहितं सहास्यं] मंदस्मित युक्त। (जयो० ११/४९)

सहासवक्त्रं (वि०) प्रसन्नमुखी, स्मेरमुखी। (जयो०वृ० १५/७२)

सहित (वि०) युक्त, संयुक्त।

सहितम् (अव्य०) साथ साथ।

सहितृ (वि०) सहनशील।

सहिम (वि०) पाले सहित। क्वापि बाधा समायाता द्रुमाकीवेष्यते सहिमा। (सुद० १०९)

सहिष्णु (वि०) [सह+इष्णुच्] सहन करने योग्य, समर्थ, शक्तिशाली। (जयो० ८/३५) (वीरो० १७/२८)

सहिष्णुता (वि०) क्षमाशीलता (जयो०वृ० ११/८८ जयो०वृ० ५/३०) ० धैर्यवान्।

सहिष्णुत्व (वि०) सहनशीलता युक्त। परोत्कर्षसहिष्णुत्वम्। (सुद० ४/४२)

सहुरिः (पुं०) सूर्य (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

सहृदय (वि०) [सहहृदयेन] कृपालु, करुणाशील।

सहृदयः (पुं०) सज्जन।

सहल्लेख (वि०) [हृदयस्य लेखः] सह हल्लेखेन। सन्दिग्ध।

सहेल (वि०) [सह हेलेन] केलियुक्त, क्रीड़ावान्।

सहोदरः (पुं०) सगा भाई। (दयो० ८६) सहोदरोऽनुसर्तव्यो यदिनासित विक्रिया। (हित० ११)

सह्य (वि०) सहन करने योग्य।

सा (स्त्री०) [सो+उ+टाप्] लक्ष्मी, पार्वती।

सा (अव्य०) समान, सदृश। (सुद० ३/४०) 'सोम सा कैरव-हारमुद्रा'।

सांख्यः (पुं०) सांख्यदर्शन। (जयो०वृ० ५/२०)

सांख्यमतः (पुं०) सांख्यदर्शन का पक्ष। (दयो० ९३)

प्रकृति करोति कार्यं सुमहदहङ्कारपूर्वकं मानात्।

पुरुषश्चेतयते पुनरेव समयोऽपि सांख्यानाम्।। (दयो० ९३)

सांख्यसम्पत (वि०) सांख्य परम्परा युक्त। (दयो० ४१)

सांयात्रिकः (पुं०) [संयात्रा+ठञ्] समुद्रव्यापारी, पोतवाणिक्।

सांयुगीन (वि०) [संयुगे साधु] युद्ध सम्बन्धी, रणकुशल।

सांराविणम् (नपुं०) [संराविन्+अण्] उच्च स्वर, तीव्र कोलाहल।

सांवत्सर (वि०) वार्षिक, सालाना।

सांवत्सरिकः (पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिष।

सांवादिक (वि०) [संवाद+ठञ्] संवाद वाला, विवादग्रस्त।

सांवृत्तिक (वि०) [संवृत्ति+ठक्] तत्त्वविषयक।

सांव्यवहारिक प्रत्यक्षम् (नपुं०) इन्द्रिय और मन के आश्रय से होने वाला ज्ञान। 'सांव्यवहारिकं इन्द्रियानिन्द्रियप्रत्यक्षम्' (लघीय० स्वो०वि० ४/७४) समीचीनः प्रवृत्ति निवृत्तिरूपो व्यवहारः सांव्यवहारः, स प्रयोजनमस्येति सांव्यवहारिक-प्रत्यक्षम् (प्रमेयरत्नमाला २/५)

सांशिः (पुं०) म्लेच्छ। (जयो० २/१३०)

सांशयिक (वि०) [संशय+ठक्] सन्दिग्ध, संदेह होना। अनिश्चित।

सांशयिकमिथ्यात्वम् (नपुं०) सर्वत्र संदेह बना रहना।

सांसारिक (वि०) [संसार+ठक्] संसार सम्बंधी, लौकिक, भौतिक, इहलोक सम्बंधी।

सांसारिकसौख्यं (वि०) सातावेदनीयजन्य सुख।

सांसिद्धिक (वि०) [संसिद्धि+ठन्] प्राकृतिक, सहज, स्वाभाविक, अन्तर्हित।

सांस्थानिकः (पुं०) [संस्थान+ठञ्] समानदेशीय, एक ही देश का निवासी।

सांस्राविणम् (नपुं०) [सम्+स्रु+णिनि+अण्] सामान्य प्रवाह।

० सरिता।

सांहनिक (वि०) [संहनन+ठक्] शारीरिक, कायिक, शरीर सम्बंधी।

साकम् (अव्य०) [सह+अकृति] समर्थ के साथ, साथ मिलकर। (सुद० ९८) (वीरो० ११/७)

० संभव। (सुद० २२/२)

० युगपत्, एक साथ, एक ही समय। अन्नेन नाद्युद्विंदलेन साकनाम।

साकल्यम् (नपुं०) [सकल+ष्यञ्] समष्टि, सम्पूर्णता, समग्रता।

साकल्यदाता (वि०) सम्पूर्ण देने वाला।

साकल्यभाज् (वि०) भव्य सामग्री, हवन सामग्री। (जयो०२३/६)

साकूत (वि०) [सह आकूतेन] साभिप्राय, सार्थक, अर्थयुक्त।

० अभिप्राय युक्त।

० प्रिय, सुंदर, यथेष्ट।

साकूतम् (अव्य०) भावुकता सहित, मार्मिकता पूर्ण।

साकेतम् (नपुं०) [सह आकेतेन] अयोध्या नगरी का नाम। उत्तमानि आकेतानि भवनानि। (वीरो० ११/२८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साकेतकः (पुं०) अयोध्या निवासी।

साक्षमता (स्त्री०) होशियारी। (समु० ७/१३)

साक्षरः (पुं०) कर्कन्दु। (जयो०वृ० ६/९६)

साक्षरा (स्त्री०) यक्ष प्राप्त। (जयो० २६/७८)

साक्षरा (स्त्री०) पाशकवती। (जयो० २०/७७)

साक्षात् (अव्य०) [सह्+अक्ष्+आति]

○ सौभाग्य शाली। (जयो० २/१५७)

○ सामने, दृश्य के सम्मुख।

○ व्यक्तिशः, वस्तुतः।

○ प्रत्यक्ष। (सम्य० ११६)

साक्षात्कारितः (वि०) समक्षता। परिचय (जयो० ६/६) (जयो० २०/८०)

साक्षिक (वि०) अनुभवकर्ता। (जयो० २२/४)

साक्षितिः (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि। (समु० २/१०)

साक्षिणिः (स्त्री०) गवाही, संज्ञापन। (जयो० १२/४०)

साक्षिन् (वि०) [सह+अक्षि+अस्य, साक्षाद् द्रष्टा साक्षी वा] देखने वाला, अवलोकन करने वाला। (जयो० २६/३७)

साक्षिन् (पुं०) साक्षी, गवाही, प्रमाणभूत। (वीरो० ६/१४) साक्षी स्मराक्षीणहविर्भुगेष (वीरो० ६/१४)

○ अवेक्षक।

साक्ष्यम् (नपुं०) [साक्षिन्+ष्यञ्] साक्षी, गवाही।

○ सत्यापन।

साक्षेप (वि०) [सह आक्षेपेण] व्यंग्य युक्त, दुर्वचनयुक्त।

साखेय (वि०) [सखि+ढञ्] मैत्रीपूर्ण, सौहार्दपूर्ण।

साख्यम् (नपुं०) [सखि+ष्यञ्] मित्रता, सौहार्द्र।

सागरः (पुं०) [सगरेण निर्वृतः] सागर, समुद्र, उदधि, वारिधि।

○ सरस्वत। (जयो०वृ० ९/६१)

सागरतटः (पुं०) समुद्र का किनारा।

सागरगा (स्त्री०) गंगा।

सागरगामिनी (स्त्री०) सरिता, नदी।

सागरदत्तः (पुं०) चम्पापुरी का एक सेठ। (सुद० ३/३४)

सागरनेमि (स्त्री०) मेखला, करधनी।

सागरमेखला (स्त्री०) पृथ्वी।

सागरानुकूल (वि०) समुद्र के किनारे स्थित।

सागरार्यः (पुं०) सागर दत्त सेठ। (सुद० ३/४५)

सागरालयः (पुं०) वरुण।

सागाव्रतम् (नपुं०) श्रावक व्रत। (हित०सं० ३१)

साग्नि (वि०) [सह अग्निना] अग्नि सहित।

साग्निक (वि०) [सह अग्निना] अग्नि से सम्बद्ध।

साग्र (वि०) [सह अग्रेण] ○ समस्त। अत्यधिक, अपेक्षाकृत अधिक रखने वाला।

साङ्कर्यम् (नपुं०) [सङ्कर+ष्यञ्] मिश्रण, मिलाया हुआ, घोल, मिश्र। (जयो० ३/८०)

साङ्कल (वि०) [सङ्कल+ष्यञ्] संलग्न, जोड़, मिलान।

साङ्कश्यम् (नपुं०) कुशध्वज की राजधानी।

साङ्कुर (वि०) अंकुरसहित, रोमाञ्चित। (जयो० ३/९३)

साङ्केतित (वि०) [सङ्केत+ठक्] संकेतपरक, प्रतीकात्मक इंगित।

साङ्क्षेपिक (वि०) [संक्षेप+ठक्] संक्षिप्त, छोटा, लघुक, छोटा किया हुआ।

साङ्ख्य (वि०) [सङ्ख्या+अण्] संख्या सम्बंधी, गणक।

○ आकलन करने वाला।

साङ्ख्यपरम्परा (स्त्री०) सांख्यमत की परम्परा। (दयो०४१)

सांङ्ख्यमतः (पुं०) सांख्यदर्शन की विचारधारा। प्रकृतिः करोति कार्यं समुहदहङ्कारपूर्वकं मानात्।

पुरुषश्चेतयते पुनरेवं, समयोऽपि साङ्ख्यानाम्।। (दयो०९३)

साङ्ख्यसम्पद् (स्त्री०) सांख्य परम्परा। (दयो० ४१)

साङ्ग (वि०) [सह+अङ्गैः] अंगों सहित। प्रत्येक भाग में पूर्ण।

साङ्गतिक (वि०) [सङ्गति+ठक्] साहचर्य युक्त, समुदाय से सम्बन्धित।

साङ्गमः (पुं०) [सङ्गम+अण्] मिलन, संयोग, जुड़ना।

साङ्ग्रामिक (वि०) [संग्राम+ठञ्] युद्ध सम्बंधी, योद्धा, सैनिक, सामरिक।

साङ्गुष्ठ (वि०) अंगूठा सहित। (जयो० ६/३२)

साङ्गोपाङ्ग (वि०) सकल/सम्पूर्ण अंग युक्त। (जयो०२/४३)

साचि (अव्य०) [सच्+इण्] तिर्यक, वक्रगति से, तिरछेपन से।

साचिजल्पित (वि०) वक्रोक्तिपूर्ण कथन। (जयो० ७/६६)

साचिनिरीक्षणम्ः (नपुं०) तिर्यगवलोकन। (जयो० २३/३१)

साचिव्यम् (नपुं०) [सचिव+ष्यञ्] मंत्रालय, मंत्रित्व।

○ मंत्रिमंडल।

साजात्यम् (नपुं०) [सजाति+ष्यञ्] जाति, वर्ग, समुदाय, श्रेणी।

○ समान वर्ण।

साञ्जनः (पुं०) [सह अञ्जनेन] छिपकली।

साट् (सक०) बतलाना, प्रकट करना।

साटोप् (वि०) [सह+आटोपेन] अहंकारी, अभिमानी।

साडम्बर (वि०) आडम्बर सहित। (वीरो० २२/१६)

सातल (वि०) ○ आनन्द युक्त, हर्ष सहित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सातिरेक (वि०) अत्यधिक (जयो०वृ० १/७८)
सात् (अव्य०) एक तद्धित प्रत्यय।
सात्क्रियता (वि०) काव्यकर्तापना। (समु० १/१६)
सातत्यम् (नपुं०) [सतत्+ष्यञ्] निरंतरता, स्थायित्व।
सातन (वि०) नाशक। (जयो०वृ० २/२२)
सातपः (पुं०) ग्रीष्मऋतु। (जयो० २२/२)
 ० समतल। (जयो० ५/९०)
सातल (वि०) आनन्द युक्त।
सातिः (स्त्री०) [मन्+क्तिन्] भेंट, उपहार, प्राभृत, दान।
सातिशयः (पुं०) एक खाद का नाम। (सम्य० १०७)
सातीनः (पुं०) मटर।
सात्त्विक (वि०) प्राकृतिक, सत्त्वगुण से युक्त शुद्धसित। सहज स्वाभाविक। (जयो०वृ०१२/१२२)। (जयो०वृ० ८/१४४)
सात्त्विकसङ्गतिः (स्त्री०) सात्त्विक विचार। (दयो० ११८)
सात्यकि (पुं०) सात्यकि नामक रुद्र।
 ० कृष्ण का सारथि। (जयो० २३/८६)
सात्यवतः (पुं०) सत्यवती से उत्पन्न पुत्र, व्यास मुनि।
सात्रम् (नपुं०) सदादान। (जयो० २७/४४)
सात्वत् (पुं०) [सातयति सुखयति सात्+क्विप्] उपासक।
सात्वतः (पुं०) विष्णु।
सात्वती (स्त्री०) शिशुपाल की माता।
सादः (पुं०) [सद्+घञ्] बैठना, रहना, निवास करना।
 ० क्लान्ति, थकावट, क्षीणता।
 ० ध्वंस, क्षय, लोप।
 ० आत्मशुद्धता। (सम्य० १५)
सादनम् (नपुं०) [सद्+णिच्+ल्युट्] क्लान्त करना, थकाना।
 ० थकावट, क्लान्ति।
 ० घर, स्थान।
सादर (वि०) आदर पूर्वक (जयो० ३/११६) प्रसन्नतापूर्वक। (जयो० १०/१२८)
सादरदृष्टिः (स्त्री०) सुदृकपथ। (जयो० २/९५)
सादिन् (वि०) [सद्+णिच्+णिनि] बैठा हुआ।
सादिन् (पुं०) घुड़सवार, आरोहण कारिन्।
सादिवर (वि०) उष्ट्ररोही। (जयो० १३/७३) हस्तिपक, महावत। (जयो०१३/४) (जयो० २१/२१)
सादृश्यम् (नपुं०) [सदृश+ष्यञ्] ० समानता, समरसता, एक रूपता।
 ० प्रतिलिपि, प्रतिमूर्ति।

सार्द्धद्वयद्वीपः (पुं०) अढ़ाई द्वीप। (भक्ति० ३५)
साद्यन्त (वि०) [सह+आद्यन्ताभ्याम्] सम्पूर्ण, समस्त, पूर्ण, पूरा।
साध् (सक०) पूरा करना, समाप्त कराना।
 ० सम्पन्न करना।
 ० जीतना।
 उपासना करना (जयो० २/३९) साधपत्यवगोचरं (सुद०)
 ० निष्पन्न करना, घटित करना।
 ० धारण करना, प्राप्त करना।
साधक (वि०) [साध्+ण्वुल्] सम्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला।
 ० दक्ष, प्रभावशाली।
 ० कुशल, निपुण।
 ० मददगार, सहायक।
 ० कार्य परिणत करने वाला-साध्योऽप्यहं साधक एवमस्मिन्। (भक्ति० ३१)
 ० योगी-साधना करने वाला।
 योगि तदन्यभेदेन, द्वेधा भवति साधकः।
 आत्मनो हि भवेदाद्यः परस्यापीक्षकः परः।। (हित० ३)
साधकता (स्त्री०) अभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला। सर्वस्यार्थकुलस्य साधकतया सार्थीकृतात्मप्रथं। (जयो० २/११०) 'अन्यार्थसाधकतया विचरन् सुवंशे' (जयो० १२/१४५)
साधन (वि०) [सिध+णिच्+ल्युट्] निष्पन्न करने वाला, उपार्जन करने वाला। (जयो० १/११३)
साधनम् (नपुं०) पूरा करना, पूर्ण करना।
 ० उपकरण, आधार, सहारा (जयो० २/२१) गेहमेकमिह भुक्तिभाजनं पुत्र तत्र धनमेक साधनम्।
 ० भोगकारण। (जयो०वृ० २/२१)
 ० किसी पदार्थ की पूर्ण अवाप्ति। (सम्य० ८२)
साधनता (वि०) उद्देश्य पूर्ति।
साधनत्व (वि०) उद्देश्य पूर्ति।
साधना (स्त्री०) [सिध्+णिच्+युच्+टाप्] ० आराधना, उपासना, पूजा, अर्चना।
 ० पूर्ति, निष्पन्नता।
साधनासरणिः (स्त्री०) साधना पद्धति। (वीरो० १३/३१)
साधन्तः (पुं०) [साध्+क्षच्-अन्तादेशः] भिक्षुक।
साधर्म्यम् (नपुं०) [सधर्म+ष्यञ्] समानधर्मता, गुणों की समानता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधारण (वि०) [सह धारणया] समान, संयुक्त।
o मामूली।
o सार्वजनिक।
o सर्वव्यापी, विश्वव्यापी।
o तुल्य, सादृश्य, समान।
o सार्वजनिक विधि।
साधारणम् (नपुं०) साधारण, सामान्य। (सुद० ४/४५) वनस्पति का एक भेद। (वीरो० १९/३२) जातिगत।
साधारण धनम् (नपुं०) समान धन, संयुक्त धन।
साधारणभेदः (पुं०) साधारण भेद। सामान्य भेद। प्रत्येक-साधारण-भेदभिन्नं वनस्पतावेवमवेहि किन्न। (वीरो०१९/३१)
साधारणलोकः (पुं०) जन साधारण। (जयो०वृ० ३/४५)
साधारणसम्पत्तिः (स्त्री०) संयुक्त धन, मिला हुआ धन, एकत्रित धन।
साधारणी (स्त्री०) साधारण स्त्री। (सुद० १३४)
साधारण्यम् (नपुं०) [साधारण+ष्यञ्] समानता।
साधि (स्त्री०) मानसिक पीड़ा। (भक्ति० २६)
साधिका (स्त्री०) [सिध्+णिच्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] कुशल स्त्री, साधनाशीला, निपुण स्त्री। वाञ्छिता। (जयो० २३/८१)
साधित (भू०क०कृ०) [साध+क्त] निष्पन्न, कार्यान्वित, अवाप्त, पूर्ण, सम्पूर्ण हुआ।
o समाप्त, o सिद्ध। o प्राप्त, उपलब्ध।
o उन्मुक्त, वश में किया गया, दमन किया हुआ।
साधिमन् (पुं०) [साधु+इमनिच्] भद्रता, श्रेष्ठता, उत्तमता।
साधिष्ठ (वि०) [साधु+इष्ठन्] श्रेष्ठ, सर्वोत्तम्। उचिततम, अत्यन्त दृढ़, कठोर।
साधीयस् (वि०) [साधु+ईयसुन्] अत्यधिक उत्तम, श्रेष्ठतम्।
o कठोरता युक्त, अधिक दृढ़।
साधु (वि०) o उत्तम, श्रेष्ठ, गुणी। समीचीन (जयो० १/५६) सज्जन (जयो० १/५६)
o योग्य, उचित, o शुद्ध, पवित्र, गौरवपूर्ण।
o निर्मल (जयो० १/१००) अच्छा (सुद० १/२३)
o भद्र, कल्याणकारी। 'चिरप्रव्रजितः साधुः।
o मनोहर (जयो० ३/१०५)
साधुः (पुं०) साधु पुरुष, मुनि, श्रमण, ऋषि, संत। (सुद० ४/१३) (समु० १/३४) अभिलषिमर्थं साधयतीति साधुः (जैन०ल० ११४७)
सद्वृत्तः समभात्समुत्थितः। (दयो० ११६)
साधयेतृस्वयमितः साधुः। (मुनि० ३२)
o योगीराज (सुद०वृ० ११५) ध्यानाध्ययनतत्परः। (सम्य०९४)
साधु (अव्य०) अच्छा, उचित, योग्य ठीक-ठीक।
साधुचित् (वि०) साधूनांचित्-सज्जनबुद्धि वाला। (जयो० २/८०)
साधुजनः (पुं०) सज्जन पुरुष, सत्पुरुष। (जयो०वृ० १/६३) (जयो० ६/४९)
साधुता (वि०) आत्म उपासना वाला-आत्मोपासितयैहिकेषु विषयेष्वाशाधुतासाधुता। (मुनि०वृ०१) (जयो० २४/१२९)
साधुसंसर्गः (पुं०) अच्छे आचरण। (जयो० १५/३५)
साध्य (वि०) [साध्+णिच्+यत्] निष्पन्न, होने योग्य। (जयो० २८/३२)
इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यम्। (परीक्षा सुद० ३/१५)
o जो किया जा सके, प्राप्त करने योग्य।
तत्राद्यः साध्यरूपस्याद्
द्वितीयस्तस्य साधनम्' (सम्य० ८२)
साध्योऽप्यहं साधक एवमस्ति। को बाधको सम्भवादिहास्मिन्। (भक्ति० ३१)
साध्यता (स्त्री०) [साध्य+तल+टाप्] सम्भावना, शक्यता।
साध्यत्व (वि०) सिद्ध करने योग्य।
साध्यत्वेन मनुष्यस्य समाह जगदीश्वरः। (हित० ६)
साध्वी (स्त्री०) [साधु+ङीप्] श्रमणी, जैन साध्वी। o पवित्रता युक्त स्त्री। चेतश्चुरा मनोहरा। (जयो० ११/७८)
o-सती (जयो०वृ० १/२०)
सानन्द (वि०) [सह आनन्देन] हर्ष, खुशी। आनन्दयुक्त। (समु० २/२९)
सानसिः (पुं०) स्वर्ण, सोना।
सानातनी (वि०) सनातन रीति सम्बंधी। (जयो० २०/२८)
सानिका (स्त्री०) [सन्+ण्वुल्+टाप्] बांसुरी।
सानु (पुं०/नपुं०) वनखण्ड, अरण्य। सानु शृंगेबुधेऽरण्ये वात्यायां पल्लवे पथि इति वि (जयो० २१/३२) (जयो० १५/२५)
o चोटि, शिखर, कूट, शृंगमाला। (जयो० १/१३)
o बिन्दु, किनारा। o सूर्य।
o पर्वत (जयो० ४/३८) (भक्ति० ४४)
सानुकूल (वि०) अनुकूलात्मक। (जयो० ४/११, ४/४७)
सानुक्रोश (वि०) [अनुक्रोशेन सह] दयालु, करुणाशील।
सानुमत् (पुं०) [सानु+मतुप्] पर्वत, पहाड़।
साधीयस् (वि०) [साधु+ईयसुन्] अत्यधिक उत्तम,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सानुग्रहः (पुं०) संग्रह, समूह। सानूनां शिखराण ग्रहः संग्रहः। (जयो० २८/३)

सानुनय (वि०) [सह अनुनयेन] सभ्य, शिष्ट, विनीत।

सानुप्रास (वि०) अनुप्रास सहित। (जयो०वृ० ३/८२)

सानुबन्ध (वि०) [सह अनुबन्धेन] क्रमबद्ध, अविच्छिन्न।

सानुराग (वि०) [सह अनुरागेण] आसक्त, राग युक्त, अनुरक्त। (सुद० ३/४६)

सान्तपनम् (नपुं०) [सम्+तप्+ल्युट्+अण्] उग्र तप, कठोर तपस्या।

सान्तानिक (वि०) फैलाने वाला, विस्तार करने वाला।

सान्त्वना (स्त्री०) ढाढस बंधाना, शान्त करना। समाश्वासन (भक्ति० १२)

सान्दीपिनिः (पुं०) एक ऋषि।

सान्दृष्टिक (वि०) तात्कालिक, देखते ही देखते होने वाला।

सान्द्र (वि०) [सह अन्द्रेण] आस पास, सटा हुआ, अन्तराल।
० घनीभूत (जयो० ५/६२) निविडत्व, भरा हुआ। (जयो० २५/१९)
० घन, मोटा।
० प्रचुर, प्रबल, प्रचण्ड।
० स्निग्ध, मृदु, सौम्य। सुरम्य सन्द्रो स्थीपते हि महात्मना। (वीरो० १०/२०)

सान्द्रः (पुं०) राशि, ढेर।

सान्द्रनगालवालः (पुं०) आर्द्र क्यारी, गीली क्यारी। (वीरो०२/१२)

सान्धिकः (पुं०) [सन्धां सुराच्यावनं शिल्पं वेत्ति-ठक्] कलाल।

सान्धिविग्रहिकः (पुं०) [सन्धिविग्रह+ठक्] विदेश मन्त्री।

सान्ध्य (वि०) [सन्ध्या+अण्] सन्ध्याकालीन।

सान्नहनिक (वि०) [सन्नहन्-ठक्] कवचधारी।

सान्नहनिकः (पुं०) कवचधारी।

सान्निध्यम् (नपुं०) [सन्निधि+ष्यञ्] सामीप्य, पड़ौस। (सुद०११३)

सान्निपातिक (वि०) कफ, पित्त और वायु, तीनों से विकृत होने वाला।
० जटिल।

सान्यासिक (वि०) [सन्यासः-प्रयोजनमस्य ठक्] सन्यासधारी।

सान्वय (वि०) [सह अन्वयेन] आनुवंशिक।

सापत्न (वि०) [सपत्नी अण्] सौतेली पत्नी से उत्पन्न।

सापत्न्यम् (नपुं०) [सपत्नी ष्यञ्] प्रतिद्वंद्विता, शत्रुता।

सापत्न्यः (पुं०) सौतेली पत्नि का पुत्र।

सापेक्ष (वि०) [सह अपेक्षया] अपेक्षा सहित, सहायता युक्त। (वीरो० २०/२०)
० निर्भर।

साप्तपद (वि०) [सप्तपद+अण् खञ् वा] सात पैर चलने वाला।

साप्तपदम् (नपुं०) वैवाहिक विधि, जिसमें वर-वधू अग्निसाक्षी आदि पूर्वक प्रतिज्ञाशील होते।

साप्तपौरुष (वि०) [सप्त पुरुष+अण्] सात पीढ़ियों तक फैला हुआ।

साफल्यम् (नपुं०) [सफल+ष्यञ्] सफलता, उपयोगिता। (समु० ३/९) (जयो० १२/१९)

साफल्याभावः (पुं०) सफलता का अभाव। (दयो० ९३)

साभिधेय (वि०) अभिधान वाचक, वाच्य-वाचक का समन्वय। (जयो० २/५५)

साभ्यसूय (वि०) [सह अभ्यसूयया] ईर्ष्यालु, ईर्ष्या करने वाला।

साम् (सक०) सान्त्वना देना, ढाढस बंधाना।

सामः (पुं०) शान्ति, शीत, क्षेमपृच्छा। (जयो०५/६)

सामकम् (नपुं०) [समक अण्] मूल ऋण।

सामकः (पुं०) साण।

सामकरणम् (नपुं०) सामनीति प्रयोग। (जयो० ७/८०)

सामग्री (स्त्री०) [समग्रस्य भावः ष्यञ्] सकलकारककलारूपा किल सामग्री। संघात, उपकरण, सामान।

सामग्रयम् (नपुं०) [समग्र+ष्यञ्] समग्रता, पूर्णता।

सामञ्जस्यम् (नपुं०) [समञ्जस+ष्यञ्] संगति, मेल, एकता।
० यथार्थता, शुद्धता।

सामधामः (पुं०) परम शान्त स्थान। (दयो० २/१२)

सामन् (नपुं०) [सो मनिन्] शांत करना, आराम पहुंचाना।

सामन्त (वि०) [समन्त+अण्] सीमावर्ती।

सामन्तः (पुं०) नेता, नायक।

सामन्तम् (नपुं०) पड़ौस।

सामयिक (वि०) [समय+ठञ्] समय सम्बंधी, समय पर होने वाला। नियत समय पर होने वाला।

सामायिकसंक्रम् (पुं०) सामायिक कृतिक। (भक्ति० ४७)

सामर्थ्यम् (नपुं०) [समर्थ+ष्यञ्] ० शक्ति, बल। (जयो०वृ० १/४२)
० हित, लाभ।

सामवायिक (वि०) [समवाये प्रसृतः ठञ्] अटूट सम्बन्ध युक्त।

सामाजिक (वि०) [समाजः सभावेशनं प्रयोजनमस्य ठञ्] समाज से सम्बंधित, सभा से सम्बंधित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामाजिकता (स्त्री०) संग्रहणता। (जयो० २/१०७)

सामानाधिकरण्यम् (नपुं०) [समानाधिकरण+ष्यञ्] एक ही पदार्थ से सम्बंध रखने वाला।

सामानिकः (पुं०) देव समूह का नाम, जो इन्द्र के समान वैभवादि युक्त होते हैं।

सामान्य (वि०) [समानस्य भावः ष्यञ्] ० समान, साधारण।
० सदृश, तुल्य।
० समस्त, सम्पूर्ण, वस्तु की समग्रता।
० समष्टि, समस्त रूप। (जयो० २६/९१)
यो वस्तुनां समानपरिणामः स सामान्यः (जैन० ल० ११५८)
सर्वेऽपि प्राणिनोऽस्माभिः सम ज्ञान प्रवृत्तयः।
अयं शत्रुरयं बन्धुरित्यज्ञानमयी हि धीः।। (हित० ५८)
० गुण और पर्याय से संयुक्त तत्त्व। (वीरो० १९/१९)

सामान्यरूपः (पुं०) वस्तु-तत्त्व की अभिव्यक्ति का एक प्रकार। (हित०सं० १४)

सामायिक (वि०) समभावता,
० सावद्ययोग विरतिमात्र।
० सुख दुःख में मान्यता। आवश्यक कर्त्तव्य।
० साधु के आवश्यक कर्मों में एक कर्म।
० सामायिक व्रत। (सुद० ४/३३)

सामायिककालः (पुं०) सामायिक विधि करने का समय-पूर्वाह्न, मध्याह्न और अपराह्न।

सामायिकक्षेत्र (नपुं०) सामायिक विधि के लिए उपयोगी स्थान।

सामायिकचारित्रम् (नपुं०) समताभाव पूर्वक आचरण।

सामायिकचिन्तनम् (नपुं०) समभाव का स्मरण।

सामायिकचिन्तम् (नपुं०) समभाव का स्मरण
परमात्मा शरीरातिवत्येतीन्द्रिय चिन्मयः।
शश्वद्रूपाद्यतीतत्वात्, तुल्योऽहं स्वभावतः।।
(हित०सं० ६५८)

सामायिकप्रतिमा (स्त्री०) कायोत्सर्गपूर्वक आत्मस्वरूप का स्मरण करना।

सामायिकशिक्षाव्रतम् (नपुं०) समस्त प्राणियों पर समताभाव पूर्वक चिंतन।

सामायिकसमयः (पुं०) सामायिक का काल।

सामायिकसंयमः (पुं०) सावद्ययोग से विरत होकर रहना।

सामायिकस्थानम् (नपुं०) सामायिक का क्षेत्र।
त्रैवर्गिक कार्यक्रमं, संकोच्यैकान्तसुस्थले।
स्थित्वा प्रसन्नचित्तेन, कार्यं सामायिकं हि तत्।। (हित० ५७)

सामायिकासनम् (नपुं०) सामायिक विधि की आसन।
कायोत्सर्गेण पल्यङ्कासनेनाथ निषीदता।
पूर्वोत्तरदिशास्थेन, सामायिकं तु साध्यताम्।। (हित० ५७)

सामासिक (वि०) समुच्यात्मक, समास सम्बन्धी।

सामि (अव्य०) [साम्+इन्] अपूर्ण, आधा।

सामिधेनी (स्त्री०) प्रार्थना मन्त्र।

सामीची (स्त्री०) प्रार्थना, स्तुति।

सामीप्यम् (नपुं०) [समीप+ष्यञ्] पड़ौस, निकटता, आसन्नता।

सामीप्यः (पुं०) पड़ौसी।

सामुद्र (वि०) [समुद्र+अण्] समुद्र में उत्पन्न।

सामुद्रः (पुं०) नाविक, समुद्रयात्री।

सामुद्रम् (नपुं०) समुद्री नमक।
० शारीरिक चिह्न।

सामुद्रकम् (नपुं०) [सामुद्र+कन्] समुद्रीनमक।

सामुद्रिक (वि०) [समुद्र+ठञ्] समुद्र से उत्पन्न।
० शारीरिक चिह्न से युक्त।

सामुद्रिकम् (नपुं०) हस्त रेखाओं से फलादेश।

साम्पराय (वि०) [सम्पराय+अण्] ० सामरिक, युद्ध सम्बन्धी।
० परलोक, लोक सम्बंधी।

साम्परायम् (नपुं०) संघर्ष, झगड़ा, कलह।
० भवितव्यता।
० परलोक की प्राप्ति का उपाय।
० पृच्छा, गवेषणा।
० अनिश्चय।
० संसार, सं सम्यक् पर उत्कृष्टः अयो गतिः पर्यटनं प्राणिना यत्र भवति स सम्परायः संसार इत्यर्थः। (जैन०ल० ११५५)

साम्परायिकम् (नपुं०) आत्मा के पराभव को प्राप्त होना।
० संसार का प्रयोजन होना। 'सम्परायः प्रयोजनं यस्य कर्मणः तत् कर्म साम्परायिकं कर्म।
० संसार पर्यटन कर्म, संसार परिभ्रमण कर्म। 'संसार पर्यटन कर्म साम्परायिकमुच्यते' (त०वृत्ति ६/४) (जैन०ल० ११५५)
० कषाय सहित जीव का आस्रव या योग साम्परायिक।
० युद्ध, कलह, संघर्ष।
० आश्रव का एक भेद।

साम्प्रतः (वि०) ० योग्य, उचित, उपयुक्त।
० संगत, तर्कयुक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साम्प्रतः (पुं०) नाम, स्थापना आदि का वाच्य-वाचक रूप प्रसिद्ध शब्द।

साम्प्रतम् (अव्य०) तब, इस समय, तात्कालिक, ठीक तरह से। अधुना (जयो० ४/१२) इदानीम् (जयो० ११/९४) आज। (जयो० २/९३) (मुनि० १९)

साम्प्रतिक (वि०) [सम्प्रति+ठक्] वर्तमान काल सम्बन्धी।
० सही समय, उचित, योग्य।

साम्प्रदायिक (वि०) [सम्प्रदाय+ठक्] ० परम्परागत प्राप्त सिद्धान्त।
० क्रमागत।
० सम्प्रदाय/समूह से सम्बंधित।

साम्भोगिक (वि०) सम्भोग से युक्त, ० परस्पर उपाधि से सहित।

साम्बः (पुं०) [सह अम्बया] शिव।

साम्बन्धिक (वि०) [सम्बंध+ठक्] सम्बंन्ध से उत्पन्न।

साम्बन्धिकम् (नपुं०) मित्रता, रिश्तेदारी, सम्बंध।

साम्बरी (स्त्री०) [सम्बर+अण्+ङीप्] जादूगरनी।

साम्भवी (स्त्री०) [सम्भव+अण्+ङीप्] शक्यता, सम्भावना।

साम्यम् (नपुं०) [सम्+ष्यञ्] (जयो० २७/५१) ० समता, समभाव, सामञ्जस्य। साम्यं जना आशु समाचरन्ति। (भक्ति० ३६)
० मोह एवं क्षोभ रहित आत्मा का परिणाम। (मुनि० १३)
० निर्विकारभाव, जीव का आत्यन्तिक निर्विकारी भाव।
० समानता। (जयो० ५/७९)
० तुल्यता, सादृश्य। (सुद० १३२)

साम्यभावः (पुं०) समताभाव। (भक्ति० ४)

साम्यभृत (वि०) समबुद्धियुक्त। (जयो० २४/१४१)

साम्राज्ञी (स्त्री०) चक्रवर्तिनी। (जयो० ५/९२)

साम्राज्यम् (नपुं०) [सम्राज+ष्यञ्] ० प्रभुत्व, एकाधिपत्य, पूर्णाधिकार। (जयो० ५/७५)
० सर्वोत्कृष्ट राज्य, सार्वभौमिक राज्य।

साम्राज्यक्रिया (स्त्री०) सर्वोत्कृष्ट राज्य की क्रिया, प्रभुत्व की उपस्थिति।

साम्राज्यपदं (नपुं०) सर्वोत्कृष्ट स्थान। (वीरो० २१/१८) र्विजयित्वप्रतिपादक। (जयो० ११/३२)

साम्राज्यस्तुकः (पुं०) साम्राज्य स्थान। (जयो० ७/११३)

सायः (पुं०) [सो+घञ्] समाप्ति, अन्त, अवसान।
० दिन की समाप्ति।
० सान्ध्यकाल।

सायकः (पुं०) [सो ण्वुल्] बाण। (सुद० ७/१०)

सायकम् (नपुं०) तलवार, अस्त्र।

सायनम् (नपुं०) [सो+ल्युट्] देशान्तर रेखा।
० बिंदु से मापी माने वाली रेखा।

सायन्तन (वि०) [सायम्+ट्युल्] सान्ध्यकाल सम्बंधी, सायंकालीन। (दयो० २०)

सायम् (अव्य०) [सो+अमु] सायंकाल के समय। आशासिता सायमुपैति रोषान्। (वीरो० १२/२१)

सायंकालः (पुं०) संध्याकाल, दिनात्यय। (वीरो० १/२१) (जयो० २४/२७)

सायंविधि (स्त्री०) सान्ध्यवन्दनादिविधि। (जयो० २२/५७)

सायपर्यन्त (वि०) दिवान्त पर्यन्त। (जयो०वृ० १५/१४)

सायमय (वि०) संध्याकाल युक्त। (जयो०)

सायंश्रिय (वि०) सन्ध्याकालीन। (जयो० ३/९)

सायाख्या (स्त्री०) सन्ध्यारूपिणी। (जयो० १५/१३)

सायिन् (पुं०) [साय+इन] अश्वारोही, घुड़सवार।

सायुज्यम् (नपुं०) [सयुज+ष्यञ्] समरूपता, प्रगाढ़ मेल। आपसी सम्बंध।

सार (वि०) [सृ+घञ्, सार+अच् वा] उत्तम (जयो० २२/१)
० सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ उच्चतम।
० मनोहर, प्रिय। (जयो० १०/५७)
० वास्तविक, यथार्थ, सत्य, सच्चा।
० दृढ़, मजबूत।
० श्रेष्ठ। (जयो० १६/१५)
० सिद्ध, पूर्णतः युक्त।

सारः (पुं०) देखो नीचे।

सारम् (नपुं०) सत्त्व, सत्।
० रस, रहस्य, निचोड़, प्रशस्त। (जयो० ५/४८)
० संक्षिप्तसार, संक्षेप, सारांश। संगृह्य सारं जगतां तथात्राऽसौ निर्मितासीद्विधिना विधात्रा। (जयो० ५/८०)
० सारभूत। (सुद० ७९)
० गुण। (जयो० १/१०)
० मूल्य। ० वस्तु की वास्तविक स्थिति।
० सामर्थ्य, शक्ति, बल।

सारघम् (नपुं०) मधु, शहद।

सारगन्धाः (पुं०) चन्दन दारु, चन्दन की लकड़ी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सारग्रीवः (पुं०) शिव, शंकर।
सारङ्ग (वि०) [सृ+अङ्च्+अण्] चितकबरा, रंग-बिरंगा।
सारङ्गः (पुं०) ० कुरंग, हरिण, मृग।
० सिंह, हस्ति, भौंरा, कोयल।
० सारस, राजहंस।
० मयूर।
० छतरी, बादल मेघ।
० परिधान।
० शंख। ० कमल,
० कपूर, ० चंदन।
० आभूषण, स्वर्ण। ० रजनी।
सारङ्गिकः (पुं०) [सारङ्गं हन्ति+ठक्] बहेलिया, चिड़िमार।
सारङ्गी (स्त्री०) [सारङ्ग+ङीप्] एक वाद्ययन्त्र, सितार, वायलिन।
० चित्तीदार मृग।
सारजन्मन् (वि०) पवित्र जन्म वाला। (जयो०)
सारण (वि०) [सृ+णिच्] भेजना, फैलाना, प्रसारित करना।
सारणः (पुं०) पेचिस।
० पेंबदी वेर।
सारणम् (नपुं०) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।
सारणा (स्त्री०) [सृ+णिच्+युच्+टाप्] ० चेतना प्रवर्तना (जैन०ल० ११५६) धातु प्रक्रिया, पारे आदि धातुओं की प्रक्रिया।
सारणि/सारणी (स्त्री०) कुल्या, नहर, पनाला।
० जलमार्ग।
० छोटी सरिता।
सारण्डः (पुं०) [सृ+णिच्+अण्ड्] सांप का अण्डा।
सारतः (अव्य०) [सार-तसिल्] धन के अनुसार।
० बलपूर्वक।
सारथिः (पुं०) रथवान्, साथी, सहायक। वाहक, रथाग्रणी। (जयो०वृ० १३/५, १/१९) ० सामर्थवान्।
सारथ्यम् (नपुं०) [सारथि+ष्यञ्] सारथी का पद, वाहक नाम।
सारमयी (वि०) श्रेष्ठतम्। (जयो० १६/१५)
सारमेयः (पुं०) [सरमा+ढक्] श्वान, कुत्ता।
सारमेया (स्त्री०) [सारमेय+ङीप्] कुतिया।
सारयती (वि०) प्रसारितवती, प्रसार करने वाली। (जयो० ६/२०)
सारल्य (वि०) [सरल+ष्यञ्] सीधापन, सरलता।
सारवत् (वि०) [सार+मतुप्] तत्त्वमुक्त, रस सहित, भाव युक्त।
सारवती (स्त्री०) सार युक्ता। (जयो०वृ० ३/४, ११/९४)
सारवाक् (नपुं०) मनोहरवचन, प्रियवचन। (जयो० १०/५७)
सारस (वि०) [सरस+इदम्+अण्] सरोवर सम्बंधी।
सारसः (पुं०) ० हंस, सारसी पक्षी।
० चन्द्र (जयो० ५/३४)
सारसम् (नपुं०) कमल। (जयो० २२/५२) (जयो० ८/८१)
सारसकेलि (स्त्री०) ० रसक्रीड़ा, सरसकेलि। (जयो०वृ० २२/७१)
० सारस पक्षियों की क्रीड़ा। (जयो० २०/७१)
सारसविसः (पुं०) कमल मृणाल। (जयो० ६/२२)
सारसबन्धु (पुं०) सूर्य। (जयो० २२/१)
सा-रसाधिका (वि०) सा रसाधिका, प्रभूतजलवती, अधिक जल वाली।
सारसाक्षि (नपुं०) कमले सारसे रूपके इवाक्षिणी-सुलोचना। (जयो० ८/८१)
सारसाधिका (वि०) सारस पक्षियों की शोभा वाली। (जयो० २०/४७)
सारसालय (पुं०) कमल स्थान। सारसं पङ्कजे क्लीवमिति कोष। (जयो० ३/३०)
० लक्ष्मीस्थान।
सारस्वतः (पुं०) लौकान्तिक देव विशेष। (जैन०ल० ११५६)
० सारस्वत व्याकरण, एक जैनाचार्य विरचित व्याकरण-अनुभूति स्वरूपाचार्य का उपकरण-६०० सूत्र।
सारस्वत (वि०) सरस्वती से सम्बंध रखने वाला। ० वाक्पटु, विज्ञ, विद्वान्।
सारस्वतम् (नपुं०) भाषण, प्रवचन।
सारायण (वि०) आदरणीय। (दयो० ४२)
सारालः (पुं०) [सार+आ+ला+क] तिल पादप।
सारिः (स्त्री०) शतरंज की गोटी।
० सारिका पक्षी।
सारिका (स्त्री०) [सरति गच्छति सृ+ण्वुल् टाप् इत्वम्] मैना, सारिका पक्षी।
सारिणी (स्त्री०) कुल्या, नहर। (जयो० १७/११)
० विस्तारिणी। (जयो० ३/४१)
सारिन् (वि०) [सृ+णिनि] जाने वाला, सहारा लेने वाला।
सारूप्य (वि०) सादृश्य रूप वाला, समानता युक्त।
सार्गल (वि०) [सह अर्गलेन] रोका हुआ, अवरुद्ध।
सार्तवादिन् (वि०) सज्जाति का कथन करने वाले। (हित २८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सार्थ (वि०) [सह अर्थेन] सार्थक, समूह। (सुद० १/४) प्रयोजन भूत। ० अर्थ युक्त। (जयो० ३/१०९)

सार्थः (पुं०) ० धनवान्, धनी पुरुष।

सार्थक (वि०) अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण। अर्थोऽनुरूप। (जयो०५/१२)

सार्थातिशयप्रभूति (स्त्री०) शिष्य मण्डली सहित। (वीरो० १४/१५)

० समर्थन। (जयो०वृ० ३/१)

सार्थिक (वि०) प्रयोजन भूत। (मुनि० ८)

सार्थिकः (पुं०) [सार्थ+ठक्] व्यापारी, सौदागर।

सार्द्र (वि०) [सह आर्द्रेण] गीला, भीगा हुआ।

सार्द्रविरामः (पुं०) स्वयं विश्राम। (जयो० २२/८१)

सार्ध (वि०) [सह अर्धेण] आधे से अधिक अढाई। (सुद० १/४५)

० अर्धखण्डसहित। (जयो० १/५५)

० अर्थ सहित। (जयो० १/१३)

सार्धम् (अव्य) [सह ऋध्+अमु] साथ साथ, एक साथ (जयो०वृ० १/५५) (सुद० ७१)

० समकाल (जयो०१/१३) सुवृत्तभावेन च पौर्णमास्य-सुधांशुना सार्धमिहोपमाऽस्य। (वीरो० २/४)

सार्धद्वयाब्दायुतपूर्व (वि०) अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व। (१/२९)

सार्द्धम् (अव्य०) साथ साथ। (मुनि० २८)

सार्पः (पुं०) [सर्पो देवताऽस्य सर्प+अण्] अश्लेषा नक्षत्र।

सार्पिष्क (वि०) घी में तला हुआ।

सार्व (वि०) सभी तरह (पतितोद्धारकस्यास्य सार्वस्य किमु मानकाः' (वीरो० १५/१०)

सार्वकामिक (वि०) [सर्वकाम+ठक्] समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला।

सार्वकालिक (वि०) [सर्वकाल+ठक्] नित्य, शाश्वत, सदैव रहने वाला।

सार्वजनिक (वि०) व्यापक, लोक में व्याप्त। (जयो०वृ०४/१३)

सार्वज्ञम् (नपुं०) [सर्वज्ञ+अण्] सर्वज्ञता, समस्त पदार्थों को जानने वाला।

सार्वत्व (वि०) सर्वधर्मात्मकत्व। (वीरो १०/१२)

सार्वधातुक (वि०) सभी धातुओं में लगने वाला।

सार्वभौतिक (वि०) [सर्वभूत+ठक्] सभी प्राणवान् तत्त्वों से युक्त।

सार्वभौम (वि०) [सर्वभूमि+अण्] लोक व्याप्त, सम्पूर्ण क्षेत्र में व्याप्त।

० चक्री। (सम्य० ६४)

सार्वभौमः (पुं०) सम्राट्, चक्रवर्ती।

० कुबेर दिशा।

सार्वलौकिक (वि०) [सर्वलोक+ठक्] सम्पूर्ण लोक में व्याप्त, सार्वजनिक, विश्वव्यापी।

सार्ववर्णिक (वि०) प्रत्येक वर्ग का, प्रत्येक जाति का।

० प्रत्येक वर्ण वाला।

सार्वविभक्तिक (वि०) सभी विभक्तियों में घटने वाला।

सार्ववेदसः (पुं०) [सर्ववेदस्+अण्] सम्पूर्ण देने वाला व्यक्ति।

सार्षपम् (नपुं०) सरसों का तेल।

सालः (पुं०) [सल्+घञ्] एक वृक्ष नाम। सर्जवृक्ष। (जयो० १४/७५) सालानां नाम वृक्षाणां काननं वनं। (जयो० २१/४०) सागौन

० परकोटा, चार दिवारी, भीत।

सालकाननम् (नपुं०) सालवन, वृक्ष समूह। (समु० ६/२२, जयो० २१/४५)

सालङ्कार (वि०) अलङ्कार सहित। (सुद० १/७)

सालनम् (नपुं०) [सल्+णिच्+ल्युट्] साल वृक्ष की राल।

सालसाक्षिन् (वि०) अलसाए नेत्र। (जयो० १८/९४)

सालारम् (नपुं०) दीवार की खूंटी।

सालूरः (पुं०) मेंढक।

सालेयम् (नपुं०) मैथी, सोआ।

सालोक्यम् (नपुं०) [सामानो लोकोऽस्य] उसी लोक का होना।

साल्वः (पुं०) देश नाम विशेष।

साल्विकः (पुं०) [साल्व+ठक्] सारिका, मैना।

सावः (पुं०) [सु+घञ्] तर्पण।

सावक (वि०) [सु+ण्वुल्] उत्पादक, जन्म देने वाला।

सावकः (पुं०) पशु बालक, जानवर का शिशु।

सावकाश (वि०) [सह अवकाशेन] अवकाश सहित।

० खाली, आकाश सहित।

सावग्रह (वि०) [अवग्रहेण सह] अवग्रहयुक्त, नियम सहित, ० चिह्न समन्वित।

सावतीर्ण (वि०) बिखरे हुए। (जयो० ८/४१)

सावद्य (वि०) प्राण विघातक रूप।

सावद्य (वि०) [अवद्येन सह] संयमी द्वारा प्राप्त।

सावद्ययोगः (पुं०) प्राणि हिंसा में बुद्धिपूर्वक उपयोग।

सावधान (वि०) [अवधानेन सह] चित्तैकाग्रता। (जयो०२/७४) दत्तचित्त, सचेत, ध्यान देने वाला। (जयो० २/८५) 'सावधानमनसा खलु शर्मकारणं' (समु० ५/२८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सावधि (वि०) [सह अवधिना] सीमित, सीमाबद्ध, समापिका।
सावरः (पुं०) दोष, अपराध।
  ० पाप, दुष्टता।
  ० लोध्र वृक्ष।
सावरण (वि०) [सह आवरणेन] गूढ़, गुप्त, रहस्यपूर्ण।
  ० आवरण सहित, आच्छादित, ढका हुआ, पर्दा सहित।
सावलेप (वि०) [सह अवलेपेन] अभिमानपूर्ण, घमण्डी।
सावशेष (वि०) [सह अवशेषेण] अधूरा, शेष युक्त।
सावष्टम्भ (वि०) [सह अवष्टम्भेन] प्रतिष्ठित, उत्कृष्ट।
  ० साहसी, दृढ़ी।
सावष्टम्भम् (अव्य०) दृढ़तापूर्वक, साहस के साथ।
सावसर (वि०) [सह अवसरेण] अवसर सहित, समय युक्त।
सावहेल (वि०) [सह अवहेलया] घृणा करने वाला।
सावहेलम् (अव्य०) घृणा पूर्वक।
साविका (स्त्री०) [सू+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] दाई, प्रसव परिचायिका।
  ० सेवाभाविनी।
सावित्र (वि०) [सवितृ+अण्] सूर्य सम्बंधी।
सावित्रः (पुं०) सूर्य। ० भ्रूण।
सावित्रसम्वत्सरः (पुं०) बारह मासों में एक सावित्रसम्वत्सर।
सावित्री (स्त्री०) ० प्रभा, आभा, कान्ति।
  ० पार्वती।
  ० सत्यवान् की पत्नी।
साविष्कार (वि०) [सह आविष्कारेण] आविष्कार सहित।
  ० घमण्डी, अहंकारी।
साशंस (वि०) [सह आशंसया] इच्छुक, आशावान्।
साशंसम् (अव्य०) आशा से, कामना से।
साशङ्क (वि०) [सह अशङ्कया] आशंका करने वाला।
  ० डरने वाला।
साशयन्दकः (पुं०) छिपकली विशेष।
साशिका (स्त्री०) आशावती, मंगधारिणी। (जयो० ३/८९)
साशूकः (पुं०) गलकम्बल, सास्ना। ० गौ की लटकती हुई सास्ना।
साश्चर्य (वि०) [सह आश्चर्येण] आश्चर्यजनक, विलक्षण।
साश्चर्यम् (अव्य०) आश्चर्य के साथ, अद्भुत रूप से।
साश्र (वि०) [सह अश्रेण] ० कोणदार।
  ० अश्रु युक्त।
साश्रुधी (स्त्री०) [साश्रुध्यायति साश्रुध्यै क्विप्] सास, पत्नी की मां।
साष्टाङ्गम् (अव्य०) [सह अष्टाङ्गैः] लम्बायमान लेटकर, दण्डवत् सभी अंग घुमाकर।
सास (वि०) [सह आसेन] धनुर्धारी।
सासनम् (नपुं०) एक गुणस्थान। सम्यग्दृष्टि (दयो०) मिथ्यात्व से अभिमुख हुआ जीव।
सासादनम् (नपुं०) एक गुण स्थान विशेष।
सासासनम् (नपुं०) एक गुण स्थान का नाम। (समु० ३/२४)
सासुसु (वि०) बाण धारण करने वाला।
सासूय (वि०) [सह असूयया] ईर्ष्यालु।
सासूयम् (अव्य०) डाह के साथ, रोषपूर्वक।
सास्ना (स्त्री०) [सस्+न, णित् वृद्धि] गाय या बैल का गल कम्बल।
साह (वि०) आक्षेप युक्त। आह क्षेपनियोगार्थे-इति (जयो० २०/६२)
साहचर्यम् (नपुं०) [सहचर+ष्यञ्] साथ रहना, सहभागिता।
साहजिक (वि०) सहज, आसान। (सम्य० ४) 'नैव साहजिकमस्ति यदेषा' (जयो० ४/३८)
साहनम् (नपुं०) [सह्+णिच्+ल्युट्] सहन करना, भुगतना।
साहसम् (नपुं०) [सहसा बलेन निर्वृत्तम् अण्] क्रूरता, अत्याचार।
  ० उतावलापन।
  ० साहसिक कार्य। (सुद० ८५)
साहसिक (वि०) निर्भीकता युक्त, शक्ति युक्त।
  ० क्रूर, निर्दय।
साहसित (वि०) उत्साहित। (जयो० ८/२५)
साहसिन् (वि०) [साहस+इनि] प्रचण्ड, उग्र, भीषण।
साहस्र (वि०) [सहस्र+अण्] हजार से सम्बंध रखने वाला।
साहायकम् (नपुं०) [सहाय+वुण्] मैत्री, सौहार्द, सहचरत्व।
  ० मदद, सहयोग।
साहाय्यम् (नपुं०) [सहाय+ष्यञ्] ० सहायता, मदद, सहकार। (दयो० ९१)
  ० सौहार्द, मैत्री।
साहाय्यकरिन् (वि०) दानशीला। (वीरो० ५/२३)
साहित्यम् (नपुं०) [सहित+ष्यञ्] ० साहचर्य, भाईचारा।
  ० आलंकारिक काव्य।
साह्यम् (नपुं०) [सह+ष्यञ्] संयोजन, सहयोग, साहचर्य।
सि (सक०) बांधना, कसना, जकड़ना।
सिंहः (पुं०) [हिंस्+अच्] सिंह, शेर, मृगाधिपति। (सुद०३२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिंहचन्द्रः (पुं०) सिंहसेन राजा। (समु० ४/९)

सिंहचिह्नं (नपुं०) तीर्थंकर महावीर की पहचान का चिह्न।

सिंहनलम् (नपुं०) अञ्जली।

सिंहतुण्डः (पुं०) एक विशेष मछली।

सिंहदर्प (वि०) शेर की भांति गर्जना।

सिंहद्वारः (पुं०) मुख्य द्वार, प्रवेश द्वार।

सिंहध्वनिः (स्त्री०) सिंह गर्जना।

सिंहनादः (पुं०) सिंह गर्जना।

सिंहपुरं (नपुं०) नगर विशेष। (समु० ३/१८)

सिंहयशा (स्त्री०) कलिङ्ग देश के राजा खारखेल की रानी। (वीरो० १५/३२)

सिंहराशि (स्त्री०) राशि विशेष। (वीरो० २१/१३)

सिंहपुरी (पुं०) बनारस के समीप स्थित एक नगरी।

सिंहलम् (नपुं०) ० पीतल। ० बल्क।

० वृक्ष की छाल।

० लङ्काद्वीप।

सिंहसेनः (पुं०) एक राजा का नाम। (समु० ३/१८)

सिंहली (वि०) लंका निवासी।

सिंहसमीक्षणं (नपुं०) सिंहावलोकन। (वीरो० ११/१)

सिंहाङ्ग (वि०) सिंहरूप वाला। (वीरो० ११/२०)

सिंहाणम् (नपुं०) नाक मल।

सिंहावलोकनम् (नपुं०) सिंह की ओर देखना।

सिंहंवन्नरः (पुं०) सिंह की तरह मनुष्य। (समु० २/३४)

सिताश्वः (पुं०) श्वेत अश्व।

सिताश्रित (वि०) शर्करायुक्त, शक्कर सहित। (जयो० १६/९)

सितासित (वि०) शुक्ल-कृष्ण सहित। (जयो० १५/६१)

सितासितः (पुं०) बलराम।

सिति (वि०) सफेद।

सिताश्वादनम् (नपुं०) मिश्री का आस्वादन। (सुद० १११)

सितेतर (वि०) श्वेत के भिन्न काला।

सितोद्भवम् (नपुं०) सफेद चंदन।

सितोपलः (पुं०) स्फटिक।

० पुण्डरीक। (वीरो० ६/४)

सितोपला (स्त्री०) मिश्री, चीनी।

सिद्ध (भू०क०कृ०) [सिध्+क्त] सम्पन्न, कार्यान्वित, अनुष्ठित।

० प्रख्यात (सुद० २/६) अवाप्त, पूर्ण।

० निर्णीत।

० कृतकृत्य।

० सकल विषय रहित।

० जन्म मरण रहित।

० मुक्त हुआ, अष्ठकर्म रहित हुआ, कर्मकलंकरहित हुआ।

० सर्वकर्मविमुक्त।

० भेद विज्ञान से सिद्ध। (सम्य० १०७)

सिद्ध (पुं०) सिद्ध प्रभु, अष्टकर्ममुक्त परमात्मा। ० स्वाभाविकज्ञानतया समिद्धाः' (भक्ति० १)

सिद्धकूटः (पुं०) सिद्धशिला, सिद्धपर्वत के जिनाशु। (समु० ५/२१)

सिद्धगति (स्त्री०) जन्म मरण रहित अवस्था।

सिद्धजलम् (नपुं०) कांजी।

सिद्धनदी (स्त्री०) गंगा।

सिद्धपक्षः (पुं०) तर्कसंगत पक्ष, निर्णीत पक्ष।

सिद्धप्रभुः (पुं०) सिद्धभगवान्।

सिद्धभक्तिः (स्त्री०) आचार्य कुंदकुंद प्रणीत एक भक्ति। आचार्य ज्ञानसागर की रचना (भक्तिसंग्रह पृ० १)

सिद्धयोगिन (पुं०) परमात्मा।

सिद्धशिला (स्त्री०) सिद्धालय का स्थान। (सुद० १२२)

सिद्धसेनः (पुं०) सन्मति तर्क प्रकरण के रचनाकार।

सिद्धसौख्य (वि०) अनुपम सुख युक्त, परम सुख वाला।

सिद्धार्थः (पुं०) कुण्डनपुर का शासक, भगवान महावीर के पिता। (वीरो० ३/२) राजा सिद्धार्थ।

० सिद्धार्थ वृक्ष। (जयो० ६/४१)

सिद्धात्मन् (पुं०) परमात्मा, कर्मयुक्त आत्मा।

सिद्धान्तः (पुं०) तत्त्व विवेचन, परम तत्त्व निरूपण।

सिद्धान्तविरोधिनि (वि०) सिद्धान्त विरोध वाला। (जयो०३/९७)

सिद्धान्तशाली (वि०) अभिप्राय धारक। (जयो० ३/७९)

सिद्धान्तशास्त्रम् (नपुं०) सिद्धान्तसूत्र। (जयो०वृ० ३/३६)

सिद्धालयः (पुं०) सिद्धस्थान। परमस्थान।

सिद्धासनम् (नपुं०) सिद्ध स्थान।

सिद्धि (स्त्री०) स्वात्मोपलब्धि।

० लोकान्तक्षेत्र। (सम्य० १५)

० मुक्ति। (वीरो० २/२) सिद्धयन्ति निष्ठितार्था भवन्त्यस्यां प्राणिन इति सिद्धिः लोकान्तक्षेत्रलक्षणाः।

० निष्पन्नता, पूर्णता, निष्पत्ति। (जयो० ११/९८)

० कल्याण, शान्ति।

० मुक्ति। (हित० २)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० कार्यनिष्पत्ति। (जयो० १०/८४)

० प्रसिद्धि, ख्याति। सिद्धान्तप्रसिद्धान् वसुकर्ममुक्तान् (सिद्ध भक्ति० ९)

० समृद्धि। कार्य सिद्धि। (सुद० ९१) कार्य सम्पन्नता। (सम्य० १४)

० प्रयोजन। (दयो० ३२)

० प्रतीत, आभास। (सम्य० ११६)

० अनन्त ज्ञानादि स्वरूपोपलब्धिः।

सिद्धिकरणं (नपुं०) सिद्धि प्रक्रिया। (जयो० १/३१)

सिद्धिगत (वि०) प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ।

सिद्धिदातृ (वि०) कल्याण देने वाला।

सिद्धि प्रियः (पुं०) कल्याण प्रिय। (सम्य० १५)

सिद्धिमार्गः (पुं०) मुक्तिपथ। (हित० २)

सिद्धिवधू (स्त्री०) मुक्ति लक्ष्मी। (वीरो० २१/२२)

सिद्धिवनिता (स्त्री०) मुक्तिवधू। (वीरो० २१/२४)

सिद्धिश्री (स्त्री०) मुक्तिलक्ष्मी। (वीरो० २१/२०)

सिध् (सक०) सिद्ध होना, मुक्त होना। (भक्ति० १) स्ववाञ्छितं सिद्धयति येन तत्प्रथा। प्रयाति लोक! परलोकसंकथा। (वीरो० ९/११)

० सम्पन्न होना, पूर्ण होना।

० प्रमाणित होना।

सिधाला (वि०) सुख देने वाला। (समु० १/२२)

सिध्मम् (नपुं०) [सिध्+मन्] छाला, खुजली।

० कोढ़, कुष्ठ ग्रस्त स्थान।

सिध्यः (पुं०) [सिध्+णिच्+यत्] पुष्य नक्षत्र।

सिनः (पुं०) [सि+नक्] ग्रास, कौर, कबल।

सिमी (स्त्री०) गौर वर्ण की स्त्री।

सिन्दुकः (पुं०) एक वृक्ष विशेष।

सिन्दूरः (पुं०) एक प्रकार का वृक्ष।

सिन्दूरम् (नपुं०) सिंदूर, लाल वर्ण का, जो सुहागिन स्त्रियों के द्वारा अपनी मांग में भरा जाता है। सौभाग्य सूचक। (जयो०३/५९)

सिन्दूरकला (स्त्री०) सौभाग्यकला। (जयो० १४/८१) राग परिणाम। (जयो० ११/११)

सिन्दूलम् (नपुं०) सिंदूर। (जयो० १३/१०७)

सिन्धुः (पुं०) [स्यन्द्-उद् संप्रसारणं दस्य धः] उदधि, सागर, समुद्र, वारिधि। (सम्य० १२५) (जयो० ५/३४) (सुद०१/३)

० सिन्धु नदी। (वीरो० २/८, ४/१२)

सिन्धुकः (पुं०) एक वृक्ष विशेष।

सिन्धुदेशाधिपति (पुं०) सिन्धुदेश का राजा। (जयो० ६/५८)

सिन्धुनदः (पुं०) समुद्र। (सुद० १/१४)

सिन्धुनदी (स्त्री०) सिन्धु नामक नदी। (जयो० ६/५८)

सिन्धुनिर्मथनम् (नपुं०) समुद्र मंथन। (जयो० १४/८८)

सिन्धुपति (पुं०) सिन्धु देश का राजा।

० समुद्र। (जयो०वृ० ६/५८)

सिन्धुरः (पुं०) [सिन्धु+र] हस्ति, हाथी, कटि। (जयो०१३/३२)

सिन्धुवधू (स्त्री०) नदी रूप वधू। (जयो० १३/९६)

सिन्व् (सक०) गीला करना, तर करना।

सिप्रः (पुं०) पसीना, स्वेद, प्रस्वेदजल। (जयो० १३/७९) (जयो० १२/१२२)

० निदाघसलिले सिप्रे' इति वि' (जयो० १४/९३)

० चन्द्र।

सिप्रझर (वि०) पसीना झरना। (जयो० १४/९३)

सिप्रभाग् (वि०) पसीना बहने लगना। (जयो० १२/१२२) 'जनस्तत्रौष्ठयसम्भावनयापि' (जयो० १२/२२)

सिप्रशिवः (पुं०) प्रस्वेदजल, पसीना। (जयो० १३/७९)

सिप्रा (स्त्री०) सिप्रा नामक नदी, जो उज्जैनी नगरी के समीप बहती है।

० करधनी, कन्दौरा, तगड़ी।

सिम (वि०) [सि+मन्] सम्पूर्ण, सब, समस्त।

सिरः (पुं०) [सि+टक्] पीपलमूल।

सिरा (स्त्री०) [सिर+टाप्] धमनी, नाड़ी।

० हिस्सा।

सिव् (सक०) सीना, रफू करना।

सिवरः (पुं०) हस्ती, हाथी।

सिसृक्षा (स्त्री०) [सृज्+सन्+डा+टाप्] रचना भाव।

सिहुण्डः (पुं०) सेहुंड नामक पौधा।

सिह्लकः (पुं०) गुग्गुल, गन्धद्रव्य।

सीक् (सक०) छिड़कना, बखेरना।

सीकरः (पुं०) [सीम्यते, सिच्यतेऽनेन-सीक्+अरन्] फुहार, जलकण।

सीत्कृतिः (स्त्री०) सीतकार शब्द-सिसकारी। रदच्छदं सीत्कृतिपूर्वकं। (वीरो० ९/२३)

सीता (स्त्री०) ० सीता नामक नदी, ० जनकात्मजा। (जयो० १३/५३)

० सीता राम पत्नि। मिथिलानरेश की पुत्री। (जयो०६/१२०)

० हल की रेखा, खेत की खुदी हुई रेखा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीतानकः (पुं०) मटर।

सीताफलम् (नपुं०) सीताफल।

सीतारामः (पुं०) सीता और राम। (जयो० ६/२०) ० आदर सूचक शब्द।

सीदशितः (पुं०) आकाश। (सुद०पृ० ३१)

सीद्यम् (नपुं०) आलस्य, सुस्ती, शिथिलता।

सीमन् (स्त्री०) [सि+मनिन्] सीमा, हद।

सीमन्तः (पुं०) सीमारेखा, विभाजक रेखा।

सीमन्तकम् (नपुं०) सिन्दूर।

सीमन्तित (वि०) [सीमन्त+णिच्+क्त] विभाजित, सीमाकरण।

सीमन्तिनी (स्त्री०) [सीमन्त+इनि+ङीप्] स्त्री, महिला।
० अंतिम सीमा। (वीरो० ११/५)

सीमा (स्त्री०) हद, मर्यादा, किनारा।
० तट।

सीमातिक्रमणम् (नपुं०) सीमातिक्रम, मर्यादा उल्लंघन। (जयो० १२/२५)

सीमातीत (वि०) असीम। (जयो० १/२१)

सीमानिश्चयः (पुं०) सीमा रेखा।

सीमाविवादः (पुं०) सीमा पर झगड़ा।

सीमिकः (पुं०) बामी, चींटियों का घर।

सीमोचितसूत्रम् (नपुं०) सीमाकरणसूत्र, विभागकारकरज्जु। (जयो० १२/१३)

सीरः (पुं०) ० सूर्य।
० आक, मदार का पौधा।

सीरकः (पुं०) [सीर+कन्] सीर, आक पादप।

सीरिन् (पुं०) [सीर+इनि] बलराम।

सीलन्दः (पुं०) एक मछली विशेष।

सीवनम् (नपुं०) [सिव्+ल्युट्] सीना, टांका लगाना, सिलाई। (जयो० २/५०)
० जोड़, सन्धिरेखा।

सीवनी (स्त्री०) [सीवन+ङीप्] सुई।

सु (सक०) जाना, प्राप्त होना।
० भींचना, दबाना।

सु (अव्य०) ० अच्छा, अद्वितीय। (सुद० २/१) उत्तम, श्रेष्ठ विशेष। (जयो० २/५) शोभना (जयो०) ० सुंदर, भला। (जयो० १/१०) सभी (सुद० १/३०)
० अतिशय।
० कठोर, उचित। (जयो० २४/४३)
० अधिक, अत्यधिक। (जयो० २४/४३)

सुकृत् (वि०) ०भला करने वाला, ०उचित किया जाने वाला। ०अच्छी तरह से किया गया।

सुकृतम् (नपुं०) पुण्य (सुद० २/९, २/४७)
०स्वर्णमेव कलितं सुकृताय।

सुकृत प्रवर्तिनी (स्त्री०) पुण्यस पादिका।

सुकृतवत् (वि०) पुण्यकर्म सदृश। (जयो० ३/१४)

सुकृतवित्ति (नपुं०) ०पुण्यधन। (जयो० ३/६) ०शुभलाभ।

सुकृतसंगीतिः (स्त्री०) पुण्योदय। (जयो० १४/६) ०शुभोदय।

सुकृता (वि०) सौन्दर्ययुक्त-सौन्दर्येण विहीता। (जयो० ८/८१)

सुकृतांशः (पुं०) पुण्यसमय। (जयो० १२/१०४)

सुकृतांशः (पुं०) पुण्यलेश। (जयो० ६/५६)

सुकृतांशु (नपुं०) स्वच्छ वस्त्र। (जयो०)

सुकृतार्जनम् (नपुं०) पुण्यार्जन, पुण्य सम्पादन्। (वीरो० २/३५)

सुकृतावलोकिन् (वि०) पुण्यशाली। (सुद० २/१५)

सुकृति (स्त्री०) कृपा, सद्गुण। (जयो० १/५६)

सुकृतोदयः (पुं०) पुण्यप्रसार, पुण्य योग। (जयो०वृ० ३/५६) (सुद० २/१०)

सुकृतोपयोगः (पुं०) ०पुण्योपयोग, ०शुभोपयोग। (समु० ६/२३)

सुकारिन् (पुं०) नापित, नाई। शोभना कारिःक्रिया यस्यास्तस्याः वारिः क्रिया नापिताद्यो' इति वि' (जयो०वृ० १७/५१)

सुकन्दः (पुं०) कं जलं ददातीवि कन्दो मेघः। मेघ, बादल। (जयो० ३/८७)

सुकर्मन् (नपुं०) पवित्र कार्य। (जयो० २/८५)

सुकीर्ति (वि०) उत्तम दशा। (जयो०१/१०) ० प्रशंसा। (जयो०वृ० १/१०)

सुकुटुम्ब (वि०) परिवार सहित। (जयो० १२/४२)

सुकृतवत् (वि०) पुण्यकर्मसदृश। (जयो० ३/१४)

सुकुमारः (पुं०) नवयुवक, शोभनाः कुमाराः (जयो० ५/१)

सुकुमार (वि०) मृदु, कोमल।

सुकुमारी (स्त्री०) अबला। (जयो०वृ० १/७१)

सुकोमलः (पुं०) मृदु, अत्यन्त कोमल, सुकुमार। (सुद० ३/२३) (जयो० ११/८९)

सुकोमलत्व (वि०) मृदुता। (वीरो० २२/५)

सुकाञ्चीगुणं (नपुं०) करधनी, रसतासूत्र। (जयो० ११/२४)

सुकपोलः (पुं०) चिकने गाल। (सुद० ३/१९)

सुकविः (पुं०) उत्तम कवि, कुशल काव्यकार। (सुद० १/९)

सुकुण्डलम् (नपुं०) विकसित कमल। (जयो० ६/२०)

सुकेशि (वि०) शोभनकच वाला। (जयो० २/३१) मृदुलश्यामलकचवति (जयो० ६/८५)

सुख (वि०) [सुख्+अच्] हर्ष, आनन्द। (सुद० १२४)
० मधुर, मनोहर, रमणीय, सुहावना, इष्ट, प्रिय। (सम्य० १५४)
० योग्य, उपयुक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखम् (नपुं०) आनन्द, हर्ष, सुखी,। प्रसन्नता। 'सुखं पुनर्विश्वजनैकदृष्टैः' (जयो० ११/५१)

० इन्द्रियार्थनुभव, प्रीति परिणाम।

० दुःख का उपशम।

० मन और इन्द्रिय का आनन्द।

० इष्ट अनुभव।

'सुखमालभतां चित्तधारकः परमात्मनि' (सुद० १२८)

सुखं तदात्मीयगुणं सुदृष्टम् (सुद० १२१)

सुखम् (अव्य०) प्रसन्नतपूर्वक, हर्षपूर्वक।

सुखकर (वि०) सुख देने वाला, सुखदायक। (जयो० ११/५१)

सुखकार (वि०) सुखकर, सुखदायक।

सुखहेतु (पुं०) हर्ष का कारण। (सुद० ९२)

सुखावह (वि०) सुखकर, सुखदायक। (सुद० ४/२९) (सुद० १२४)

सुखाशः (पुं०) वरुण वृक्ष। सुखाशेन वरुणनाम वृक्षेण संहतिः सुखाशानां वरुणानां संहतिर्गणो' (जयो० २१/३१)

सुखाशयः (पुं०) सुख का अभिप्राय सुखमस्त्वित्यभिप्रायवान्' (जयो० १३/७)

० आनन्दवाञ्छा, स्वर्गाभिलाषा। (जयो० ६/४३)

सुखिता (वि०) सुखमयी। (सुद० १००)

सुगतः (पुं०) बुद्ध, (जयो० २/२६)

'सर्वज्ञः सुगतो बुद्धा धर्मराजस्तथागतः' इत्यमरः (जयो०१४/२)

सुगतशक्रः (पुं०) स्वर्ग। (जयो० वृ० ३/२९)

सुगन्ध (पुं०) चन्दन।

सुगन्धकः (पुं०) लाल तुलसी, ०संतरा, ०नारंगी।

सुगंधगम्य (वि०) सुगन्धित, सुरभि युक्त, सुगन्ध को प्राप्त हुई। (जयो० ११/६१)

सुगन्धदायिन् (वि०) सुरभिदायक, सुगन्ध देने वाली। (दयो०३१)

सुगन्धयुक्त (वि०) सुरभि सहित। (सुद० १/३५)

सुगन्धाश्रयणम् (नपुं०) गन्दोदक। (जयो०वृ० ३/८३)

सुगन्धि (वि०) मधुर गन्ध वाला।

सुगन्धिक (पुं०) धूप, गन्धक।

सुगभीर (वि०) अत्यन्त गम्भीर। (जयो० २२/६९)

सुगह्वरः (पुं०) महादेव। गहनस्तु गुहायां स्यात् गहने कुञ्जदम्भ्योरि'ति वि (जयो० ६/४४)

सुग्रहित (वि०) अच्छी तरह से पकड़ा गया।

सुगम (वि०) उत्तम मार्ग। सुष्ठु शोभनो गमा मार्गो (जयो० १३/२४)

सुगात्री (वि०) मनोज्ञदेहा। (वीरो० ५/३७)

सुगुण (वि०) उत्तम गुण वाला। (सुद० ७५)

सुगुणः (पुं०) शोभनरज्जू। (जयो० १३/६६)

सुगुणवंशः (पुं०) उत्तम बांस।

सुगुणवती (वि०) परोपकारिणी। (जयो० १३४)

सुगुणाश्रयः (पुं०) उत्तम गुणों का आश्रय। (सुद० १२२)

सुगुणैकरूपः (पुं०) उत्तम गुणों का रूप। (समु० १/१६)

सुगुरु (पुं०) उत्तम गुरु, वीतरागमार्गगामी गुरु।

सुगुरु (वि०) अत्यन्त भारी।

सुगुरुश्रेणिजुषः (पुं०) स्थूल नितम्ब। (जयो० १४/६५)

सुगीति (स्त्री०) मधुर गीतिका। (वीरो० २२/१०)

सुगीतिरिति (स्त्री०) मधुर गीतों की पद्धति। (वीरो० २१/१०)

सुग्रीवः (पुं०) वालि का भाई, ०नायक, ०बहंस।

सुगौरगात्री (वि०) सुंदराङ्गी। (जयो० १०/११८)

सुगृहीत (वि०) अच्छी तरह से पकड़ा गया।

सुचक्षुस् (वि०) दीर्घ नेत्र वाला, अच्छी आंखों वाला।

सुचक्षुस् (पुं०) बुद्धिमान् व्यक्ति, विचारशील पुरुष।

सुचरणानुयोगः (पुं०) चरणानुयोग। (जयो० २/४८)

सुचरित (वि०) सदाचरण युक्त। (मुनि० २९)

सुचित् (वि०) शोभन्। (जयो० २/१२)

सुचित प्रस्तर (वि०) अच्छा पाषाण। (जयो० २/१२)

सुचित (वि०) शुक्त शोभायुक्त। (वीरो० १/२५)

सुचित्रकः (पुं०) राम चिरैया।

सुचित्रा (स्त्री०) नामक विशेष। ० लौकी।

सुचित्क (वि०) सुचेता। (वीरो० २०/११)

सुचिन्ता (स्त्री०) गहन चिन्तन, गम्भीर विचार।

सुचिरस् (अव्य०) लम्बे समय तक।

सुचिरपरिचित (वि०) पुरातन पहचान। (जयो० १४/९४)

सुचिरायुस् (पुं०) अमर, देवता।

सुचेत (वि०) उत्तम चित्त वाला। (वीरो० २०/११)

० समझदार। (वीरो० १७/३)

सुजनः (पुं०) सज्जन, सद्गुणी।

सुजनदृश् (पुं०) सज्जनों की दृष्टि। (समु० ६/४१)

सुजनचक्रः (पुं०) जनसमुदाय। (जयो० ६/४८)

सुजनी (स्त्री०) परिचारिका। (जयो० १२/११३)

सुजमन्मन् (वि०) कुलीन, उच्चकुल वाला।

सुजल्पः (पुं०) उत्तम वाणी, अच्छा कथन। स्वाभाविक विचारशील। (सुद० १/१२)

सुजात (वि०) सुंदर, प्रिय, रमणीय।

० अच्छे कुल में उत्पन्न।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुजाति (स्त्री०) प्रसूति। (जयो० १२/८४)
सुजानु (वि०) शोभन जानु युक्त। (जयो० ११/१४)
सुजीविन् (वि०) शुद्ध जीवन। (जयो० २/१०६)
सुत (भू०क०कृ०) [सु+क्त] निकाला गया, निचोड़ा गया।
 ० पैदा किया गया।
 ० उत्पादित।
सुतः (पुं०) पुत्र, वत्स। (सुद० ३/२३) ० राजा। (हित० ११, सुद० २/३९)
सुतता (वि०) पुत्रपना। (जयो० २१/८३)
सुतत्त्व (वि०) वास्तविकत्व। (जयो० २३/८४)
सुतसंहृतिः (स्त्री०) सुतसंहार। (वीरो० ९/६)
सुतपःपदी (वि०) तपस्वी। (वीरो० १९/३०)
सुतनु (वि०) सुंदर शरीर वाला। (जयो० ४/३९)
सुतरशुभम् (नपुं०) नितान्तपावन। (जयो० २३/८२)
सुतवग्म (अव्य०) स्वयं (सुद० ९१) अत्यंत। (भक्ति० ३१) स्वत: (सुद०३/१५, सहज (समु०१/२६) अतिशय (सम्य० १२२)
सुतसारः (पुं०) पुत्रभाव। (समु० ५/२३))
सुता (स्त्री०) पुत्री। (हित०११, जयो० १०/३०, सुद० ३/३४) कन्या। (जयो० २०/२८)
सुतार्थ (वि०) पुत्र प्रयोजन। जाया सुतार्थं भुवि विस्फुरुमना कुर्यादजाया: सुतसंहृतिं च ना। (वीरो० ९/५)
सुतिक्तकः (पुं०) मूंगे का वृक्ष।
सुतीक्ष्ण (वि०) अत्यंत तीखा। तीव्र कष्टदायक। (जयो० ११/४६) अति पीड़ादायक।
सुतोष (वि०) सुखभाव युक्त-शोभनस्तोष: सुखभावो: (दयो० ११/८)
सुतोषा (वि०) संतोषवती। (जयो० १६/३५)
सुतीर्थ (वि०) उत्तम तीर्थ, अतिशय तीर्थ।
सुतुङ्ग (वि०) अति उन्नत, बहुत ऊँचा।
सुदक्ष (वि०) अति उदार। ० अतिशय चतुरा।
सुदक्षिणा (स्त्री०) एक राजकन्या। शोभना दक्षिणा नाम दिशा दया सा सुदक्षिणा। (जयो० १९/२३)
सुदण्डः (पुं०) बेंत।
सुदत्तः (पुं०) पद्मखण्ड नगर का एक वैश्यवर। (समु० १/२९)
सुदन्तः (पुं०) स्वच्छ दांत।
सुददति (जयो० १२/११९, शोभनरदा। (जयो० ११/१५)
सुदन्ती (स्त्री०) शोभना दन्ती, दन्तावती। (जयो० ५/४९)
सुदन्तपालिः (स्त्री०) शोभना दन्तानां पालि: पक्ति: सुदर दन्त पंक्ति। (जयो० ११/७९)
सुदर्शन (वि०) इष्ट अवलोकन।
 ० अच्छा दर्शन। ० पुण्याकारक दर्शन (सु० १५)
 ० सम्यक् दर्शन। (भक्ति० ७)
 ० रम्य दर्शन। (सुद० ३/३०)
सुदर्शन (पुं०) सुदर्शन नामक सेठ।
 ० सुदर्शन चक्र। (जयो० २४/५)
 ० सुदर्शन नामक अन्तिम कामदेव।
 सुदर्शनाख्यान्तिमकामदेव
 कथा पथायातरथा मुदे:। (सुदशनोदय: १/४)
सुदर्शनः (पुं०) चम्पापुरी के सेठ वृषभदास का पुत्र, जो श्रेष्ठ उपासक एवं शील पालन में श्रेष्ठ था।
 सुतदर्शनत: पुराऽसकौ जिनदेवस्य ययौ सुदर्शनम्।
 इति तस्य चकार सुंदरं सुतरां नाम तदा सुदर्शनम्।।
 (सुद० ३/१५)
 ० सुदर्शन नामक मुनि (सुद० ९२) दास्याऽदर्शि सुदर्शनो मुनिरिव'
सुदर्शनमहोदयः (पुं०) सुदर्शनोदय काव्य। (सुद० १३७)
सुदर्शनधनीशनादोयः (पुं०) सुदर्शनोदय काव्य। (जयो० १३७)
सुदर्शनसमुद्गम (वि०) सुदर्शनोदय काव्य प्रणयन। सम्यग्दर्शन के उदय को प्राप्त होने वाला।
सुदर्शिन् (वि०) सम्यगन्वेषकारी। (जयो० ३/१४)
सुदर्शनमहात्मन् (पुं०) महात्मा सुदर्शन। (सुद० १०९)
सुदर्शना (स्त्री०) शोभना, रमणीया। (वीरो० २/२०)
 ० आदेश।
 ० आज्ञा।
सुदर्शनान्वय (वि०) सुदर्शनमय। (सुद० ८६)
सुदर्शनी (वि०) सम्यग्दर्शनयुक्त। (जयो० १३/६६)
सुदर्शनोदयम् (नपुं०) आचार्य ज्ञान सागर प्रणीत काव्य। (सुद० १/४६)
सुदर्शयन्ती (वि०) साक्षात् सुंदर दिखने वाली। (जयो०६/६)
सुदा (वि०) यथेष्ट।
सुदाम् (वि०) सुंदर पुष्पहार। (जयो० १०/१)
सुदामन् (वि०) उदारतापूर्वक देने वाला।
सुदामन् (वि०) ० मेघ, बादल।
 ० पर्वत गिरि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० समुद्र।
० कृष्णमित्र सुदामा। (दयो० ५८)
सुदारुण (वि०) भयङ्कर। (जयो० ८/१७)
सुदायः (पुं०) मांगलिक उपहार, मांगलिक प्राभृत।
सुदास (वि०) उत्तम दास। (जयो०वृ० १/३७)
सुदिनम् (नपुं०) शुभ दिन, उत्तम दिवस।
सुदीक्षित (वि०) उचित प्रव्रज्यागृहीत। (मुनि० ९)
सुदीर्घ (वि०) विस्तृत, विस्तीर्ण, बड़ी। (समु० २/१५)
सुदुर्लभ (वि०) विरल, अत्यन्त अप्राप्त। (सुद० ९८) दुष्प्राप्य।
सुदूर (वि०) दूरवर्ती, अत्यधिक दूर।
सुदृक् (वि०) सुदृश्य, अत्यन्त दर्शनीय। (जयो० ३/८९)
सुदृक्त्व (वि०) सम्यग्दृष्टिपना। (सम्य० १२३)
सुदृक्पथः (पुं०) सादर दृष्टि, शोभनो दृशः पन्था तेन। (जयो० २/९६)
सुदृक्सिद्धान्त (वि०) सुलोचना रूप।
० उत्तम दृष्टि वाले, सिद्धान्त सज्जनों की दृष्टि वाले सिद्धान्त। (जयो० ३/९७)
सुदृक्सुदृक्षी (वि०) सुंदर नयना। (जयो० २३/१२)
सुदृग् (वि०) अत्यंत दर्शनीय।
सुदृग् कुसुमम् (नपुं०) सुंदर दृष्टि रूप पुष्प। (जयो० ३/९७)
सुदृग्गुणानुसारः (पुं०) सौंदर्यादि गुणों के अनुकूल। (जयो० ३/९७)
सुदृगाप्ति (स्त्री०) प्रथम पहुंचने का प्रयत्न। (जयो० ५/९)
सुदृढ (वि०) अत्यधिक शक्तिशाली।
सुदृढजङ्घ (वि०) सज्जङ्घ, शक्तिशाली जंघा वाला। (जयो० १/४८)
सुदृढजात (वि०) शक्ति को प्राप्त।
सुदृढतपस्विन् (वि०) तीव्र तपस्वी, उग्र तपधारी।
सुदृढधर्मिन् (वि०) उचित धर्म प्रवृत्ति वाला।
सुदृढव्रतिन् (वि०) परमव्रती।
सुदृढोपयोगः (पुं०) दृढ़ उपयोग वाला श्रावक। (जयो०१/३४)
सुदृप्त (वि०) अति प्रखर, तीव्र। (जयो० १/२६)
सुदृश् (वि०) सुंदर आंखों वाली, सुदर दृष्टि युक्त। (जयो० १/६६)
० मनोहर। (जयो० ४/१६)
सुदृशा (स्त्री०) सुलोचना स्त्री, शोभना स्त्री। (जयो० ५/८९)
सुदृशीश्वर (वि०) आनन्ददायक। (जयो० ९/५७)
सुदृष्टिः (स्त्री०) शोभननेत्र। (जयो० ३/७७)
० सम्यग्दृष्टि। (समु० ३/२४)
सुदृष्टिचरः (पुं०) एक स्वर्णकार का नाम। (वीरो० १७/३७)
सुदेवः (पुं०) परम देव, वीतरागी देव।
० वृषभादि तीर्थंकर। (वीरो० २/६)
सुदेवता (पुं०) परम देव, इष्टदेव, सर्वज्ञ। 'मच्चित्तभानाम-सुदेवतापि' त्वं येन लोकेष्विन् देवतापि'(जयो० २०/८३)
सुदेवपादः (पुं०) उत्तम देव के चरण। (सुद० ७०)
सुदेवमन्त्रम् (नपुं०) परमेष्ठिवाचक मन्त्र। (जयो० २४/८२)
सुदेवसूनु (पुं०) उत्तम पुत्र-'नाभेरसा वृषभ आस सुदेवसूनु' (दयो० ३०)
सुधरः (पुं०) स्वर्ग। (समु० ६/१)
सुधर्मकीर्ति (पुं०) एक नाम विशेष, आचार्य नाम। (जयो० १६/८०)
सुधर्मन् (वि०) कर्त्तव्य परायण।
सुधर्मन् (पुं०) सुधर्मास्वामी। पांचवा गणधर। (वीरो० ११/६)
सुधर्मलोपिन् (वि०) धर्म का लोप करने वाला। (वीरो० ११/२१)
सुधर्मी (स्त्री०) इन्द्रसभा।
सुधा (स्त्री०) पीयूष, अमृतः। (जयो० १/७९) (सुद० १०४)
सुधा (स्त्री०) [सुष्ठु धीयते पीयते] अमृत। (सम्य० ४३) ० उत्तम धारा, उत्तम अर्थ (जयो० १/३)
सुधांशुः (पुं०) चन्द्र सुधाकर। (जयो० १०/२५७) (वीरो० २/४) चन्द्र की चन्द्रिका। (सुद० ४/१३)
सुधाकरः (पुं०) चूना, कलई। (जयो० १२/१३४)
सुधाकिन् (वि०) सुख दायक-सुष्ठु धाकः प्रभावो यस्य तस्मै।
सुधादिकन्तु (स्त्री०) चूना की कली। (वीरो० १९/२८)
सुधारणं (नपुं०) शुभ धारणा वाला। (जयो० ७/५६)
सुधालम् (नपुं०) चूना, सफेदी।
० अमृत किरण। (जयो० ११/७९) कलई इति देशभावायाम् तद्वल्लसंती (जयो० २२/५)
सुधाता (वि०) अमृत सदृश। (समु० १/२२)
सुधाधारा (स्त्री०) श्वेत मृत्तिका का आधार। (जयो० ३/७९) सुधायाः श्वेतमृत्तिकाया आधारभूता सुधाया अमृतस्य धारा प्रवाही यस्यामेवम्भूता (जयो०वृ० ३/७९)
सुधांशु (पुं०) चन्द्र, सुधाकर। (जयो० १/२५७, वीरो० २/४) ०चन्द्र की चन्द्रिका। (सुद० ४/१३)
सुधाराधरा (स्त्री०) अमृतमयी। (जयो० २७/६८)
सुधाधी (स्त्री०) चतुर, प्रज्ञावंत, विद्वान्।
सुधाधरी (स्त्री०) पीयूषमयी।
सुधाधुनी (स्त्री०) अमृतनदी, पीयूष सरिता, (जयो० ५/७३) (जयो० ११/७४) अमृत बरसाने वाली। (सुद० १/१०)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुधानिधानम् (नपुं०) सुधाकर, चन्द्र। (जयो० ६/५०) (वीरो० १२/३७)

सुधाप्रवाहः (पुं०) सुधासूति। (वीरो० ८/३६) स्वकणयोः सुधासूति तद्वचः श्रोतुमिच्छति (वीरो० ८/३६)

सुधारण (वि०) प्रशस्त धारणा शक्ति युक्त। सम्यक् धारण। (जयो० २/११२)

सुधारवादिन् (वि०) सुधार करने वाला। (जयो० १८/८३)

सुधारसः (पुं०) अमृत (सुद० १/३९)

सु-धारस (वि०) अच्छाई धारण करने वाला। (सुद० १/३९)

सुधारसमय (वि०) चूना, कत्था और अमृत चूर्ण खदिरसार युक्त। (जयो० १२/१३५)

सुधारसहित (वि०) सुधार करने वाला। (सुद० १/३९)

सुधारान्वया (वि०) प्रमोदयुक्त, प्रेम परिपूर्ण। (जयो० २२/६८)

सुधारिन् (पुं०) प्रजोन्नति विधायक, प्रजा हित करने वाला। ० शोभा वाला। (जयो० १/४७) विधायक (जयो० ९/६)

सुधालिन् (वि०) सुधारवादी। (जयो० १८/७३)

सुधाव (वि०) सुष्टु धावतीति सुधाव प्रसरणशील। (जयो० ६/९६)

सुधावाक् (नपुं०) मधुर भाषण।
० चूर्ण, कलई। (जयो० २३/५४)

सुधालतिका (स्त्री०) अमृत लता। (सुद० ३/१७)

सुधाशि (पुं०) देव, अमर। (जयो० १२/१)

सुधाश्रयः (पुं०) स्वर्ग-सुधाया आश्रयं स्वर्गमेव। (जयो० १७/४०)

सुधाशिधामः (पुं०) स्वर्गधाम, देवस्थान। सुधाशिनां देवानां धाम स्वर्गं। (जयो० ७/१०९)

सुधासमृद्ध (वि०) अमृत से परिपूर्ण। (भक्ति० ७)

सुधासिक्त (वि०) पीयूष सिंचित। (सुद० २/१७)

सुधासुरसः (पुं०) चूना। (जयो० १०/९)

सुधासूतः (पुं०) चन्द्र, सुधाकर। (जयो० ८/९३)

सुधास्रक् (पुं०) निर्मल चन्द्र। (जयो० १/१००)

सुधास्रोतः (पुं०) अमृतप्रवाह। (भक्ति० ८)

सुधाकशिम्बः (पुं०) अमृतात्मक छत्र। (जयो० ८/१४) अमृतमयगुच्छक। (जयो० १५/६२)

सुधास्वादकः (पुं०) भ्रमर, भौंरा। (जयो०वृ० १/४७)

सुधिः (स्त्री०) बुद्धि मति। (सुद० १३०)

सुधी (वि०) चतुर, बुद्धिमान, प्रज्ञावंत, प्रज्ञाशील। (दयो० १२१, जयो० २/४१)

सुधीगत (वि०) बुद्धिमंत।

सुधीजनः (पुं०) प्रज्ञाशील व्यक्ति।

सुधीन्द्र (पुं०) बुद्धिमान। (सम्य० ३१)

सुधीमान् (वि०) बुद्धिमान्। (सुद० १/१५)

सुधीरः (पुं०) धैर्यवान्। (सुद० ११९)

सुधीवर (पुं०) प्रज्ञाशील व्यक्ति। (दयो० ७/२४)

सुधृ (सक०) चलाना, संचालन करना। (जयो० २/११८)

सुधौघधुर्यः (पुं०) अमृतवृष्टिकर/चन्द्र। (जयो० ८/६९)

सुनन्दा (स्त्री०) दशवें शीतलनाथ की माता का नाम।

सुनयः (पुं०) उत्तम नय, कथन करने की श्रेष्ठतम् शैली। ० अच्छी नीति।

सुनयन (वि०) सुंदर नेत्रों वाली।

सुनयना (स्त्री०) सुलोचना नामक रानी। (जयो० ९/८२)

सुनाद (वि०) शोभनध्वनियुक्त। (जयो० २/१५७)

सुनाभ (वि०) सुंदर नाभि वाला।

सुनमि (पुं०) विद्याधर पुत्र दक्षिण-उत्तर के विद्याधर पुत्र का नाम। (जयो० ६/६)
० विद्याधरेश। (जयो० ८/७२)

सुना (पुं०) परम पुरुष। (वीरो० २/२२)

सुनाशीरः (पुं०) उत्तम पुरुष, इन्द्र (वीरो० २/२२, जयो० १०/५२) सुना परम पुरुष शीरस्य सूर्यस्य।
० प्रतापी। (दयो० १/११)
० सूर्य तुल्य। (दयो० १/११)

सुनासिका (स्त्री०) उत्तम नाक। (जयो० ११/६०)

सुनिश्चित (वि०) नियमित। (दयो० १०३) जानना (सम्य०८२) तत्त्वार्थानां सुनिश्चितम्। (सम्य० ८२)

सुनिष्ठा (स्त्री०) श्रद्धा। (जयो० १०/९९)

सुनीति (स्त्री०) अच्छा आचरण, सदाचरण, शिष्टाचार। (सुद० १२३)

सुनेत्र (वि०) सुंदर आंखों वाला।

सुनेत्रा (वि०) शोभनाक्षी। (जयो०वृ० ६/३२)

सुनोहरा (स्त्री०) महुआ। (जयो० १६/४९)

सुन्दः (पुं०) एक राक्षस का नाम।

सुन्दर (वि०) [सुन्द्+अरः] प्रिय, श्रेष्ठ, उत्तम, मनोहर, रमणीय, आकर्षक, ललित। (जयो०वृ० ५/४६) (समु० २/१९)

सुन्दरतम (वि०) रमणीयतम्। (जयो० ५/२०)

सुन्दरदेहं (नपुं०) आकर्षक शरीर।

सुन्दरपथं (नपुं०) उत्तम मार्ग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुन्दरपरिभ्रमणम् (नपुं०) ललितावर्त। (जयो०वृ० १४/५३)
सुन्दरप्रतिसारः (पुं०) महान् समारम्भ। (जयो० १०/१)
सुन्दरभावः (पुं०) अच्छे परिणाम।
सुन्दरमाला (स्त्री०) आकर्षण माला।
सुन्दरवनम् (नपुं०) समृद्ध वन।
सुन्दरवेरम् (नपुं०) सुंदर शरीर।
सुन्दराकार (पुं०) सौम्य आकार। (जयो०वृ० १२/११८)
सुन्दराकृति (स्त्री०) (जयो० ५/९१) उत्तम आकृति। (वीरो० ४/३१) ० सौम्याकार।
सुविशालेऽवनिललिते समुन्नते सुन्दराकारे। (वीरो० ४/३१)
सुन्दराङ्गिन् (वि०) सुगौरगात्री, आकर्षक अंगों वाली। (जयो० १०/११८)
सुन्दरी (स्त्री०) ऋषभ पुत्री, आदिनाथ की दो पुत्रियों में से एक पुत्री सुंदरी-गणितविद्या प्रवीणा (वीरो० ८/३९) (सम्य०६७)
० चक्रपुर के अपराजित राजा की रानी सुंदरी। सा सुन्दरी नाम बभूव रामा वामासु सर्वास्वधिकाभिरामा। (समु०६/११)
सुन्दर्यासक्त (वि०) सुंदरियों को आकर्षित करने वाला। सुन्दरीषु युवतिषु आसक्तं संलग्नं मनो यस्य सः। (जयो० ६/१०८)
सुन्दल (वि०) सुंदर, ललित। (सुद० ९४)
सुपक्व (वि०) परिपक्व, पूर्ण पका हुआ।
सुपत्नी (स्त्री०) भद्रपरिणामी पत्नी।
सुपदम् (नपुं०) सुंदर शब्द। (जयो० ३/१७)
सुपथः (पुं०) सुमार्ग, सुंदर पथ। सुष्ठु पन्थाः सुपथः (वीरो०२/१४)
सुपथिन् (पुं०) राजमार्ग, उत्तम मार्ग।
सुपरिणमनं (नपुं०) सुंदर, परिणामी। (जयो० २/४३)
सुपरिणामः (पुं०) शुभ फल। शोभनः परिणामः सुपरिणामः (जयो० २/६)
सुपरिणाह (वि०) विस्तृत। (जयो० २२/६०)
सुपरितोषः (पुं०) संतुष्ट भाव। (जयो० १/९९)
सुपर्ण (वि०) शोभन पत्र,
० उत्तम पंख।
सुपर्णकुमारः (पुं०) भवनवासी देव।
सुपर्णशाला (स्त्री०) उत्तम कुटिया।
सुपर्व (वि०) हर्ष, आनन्द। (सुद० ३/१४)
सुपर्वणा (वि०) देव समागम युक्त। महोत्सव युक्त। (जयो० २४/२३)
सुपर्वपुरम् (नपुं०) स्वर्ग (समु० ५/३३)
सुपर्ववाहिनी (स्त्री०) स्वर्ग गङ्गा, गगनगङ्गा। (जयो० १३/५३)
सुपाण (पुं०) सुंदर पवन। सुष्ठु पस्य पवनस्याणः शब्दो यत्र तस्मिन् सुपाणे। (जयो० २७/२७)
सुपात्रम् (नपुं०) उपयुक्त बर्तन। मनोहर पात्र। (जयो० १२/११२)० सज्जन।
० उत्तम पात्रता युक्त व्यक्ति, व्रतधारी जो सम्यग्दर्शनादि गुणों से युक्त होता है।
सुपाद् (वि०) कोमल चरण वाली।
सुपार्श्वः (वि०) उत्तम समीपता युक्त।
सुपिच्छल (वि०) कीचड़ युक्त। (वीरो० २१/१५)
सुपीन (वि०) पीनतर (जयो० १७/४४) अत्यधिक भरे हुए। पुष्ट। (वीरो० ९/३९)
सुपुण्यशाली (वि०) अत्यन्त पुण्यवान्। (जयो० १२/८६)
सुपुष्कराशय-तनु (वि०) कमलगर्भ शरीर युक्त।
सुपुष्प (वि०) रमणीय पुष्प युक्त।
सुपुस्तक (वि०) सुशास्त्र, अच्छी पुस्तक। (सुद० ३/३१)
सुपूतः (पुं०) सुपुत्र।
सुपूतः (वि०) पुनीततर। (जयो० ५/३१)
सुपेशला (वि०) सुंदर रूपधारिणी।
सुप्त (वि०) [स्वप्+क्त] सोया, पीड़ाग्रस्त। (जयो० २१/९) (सुद० ७८)
सुप्रतर्कः (पुं०) स्वस्थ विचार।
सुप्रतीक (वि०) सुंदर आकृति वाला।
सुप्रभ (वि०) यशस्वी, प्रतिभाशाली।
सुप्रभा (स्त्री०) पिंगह्व गान्धार की रानी। सूर्यवंशीराजा दशरथ की रानी। (वीरो० १५/२७) (जयो० २४/१०४)
सुप्रभाकुक्षित (वि०) रानी सुप्रभा की कुक्षी से उत्पन्न। (जयो० ३/३७)
सुप्रभातम् (नपुं०) प्रातःकाल, सुबह, प्रारम्भिक बेला, प्राप्त शिष्टाचार।
सुप्रयोगः (पुं०) अच्छा प्रबन्ध।
सुप्रसिद्ध (वि०) प्रथित। (जयो०वृ० ११/६०)
सुप्रिया (स्त्री०) एक रानी का नाम।
सुप् (पुं०) सुप् प्रत्यय। (जयो०वृ० १/३१)
सुबन्धः (पुं०) तिल।
सुबल (वि०) अत्यन्त बलशाली।
सुबालभाव (वि०) शिशुत्वभाव। (जयो० ११/६७) ० लड़कपन।
सुबीज (वि०) उन्नत बीज। (जयो० २/१२४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुबुद्धि (स्त्री०) सुधीकर (सुद० १/१)
० (पुं०) मंत्री का नाम। (समु० ३/१७)
सुबोध (वि०) सम्यक् ज्ञान युक्त।
सुभ (वि०) अत्यन्त भयङ्कर। (जयो० ८/६)
सुभग (वि०) सुंदर, मनोरम, रमणीक सुहावना, आकर्षक।
० सौभाग्यवती। (सुद० १०४)
० प्रिय, भाग्यशाली, पुण्यात्मन्।
० सम्माननीय, समादरणीय, महानुभाव।
० प्रीतिप्रभव। सौभाग्यदायक।
सुभगनामकर्मन् (नपुं०) जो कर्म सौभाग्य को प्राप्त हो।
सुभगा (वि०) भाग्यशालिनी, प्रियकारिणी।
सुभङ्गः (पुं०) नारिकेल तरु।
सुमङ्गल-वेला (पुं०) माङ्गलिक अवसर। (जयो० ५/५३)
० पुण्य काल।
सुभटः (पुं०) योद्धा, वीर। (जयो० ६/४३)
सुभटसूर्यः (पुं०) रतिवर के पिताश्री। (जयो० २३/५३)
सुभव (वि०) सौभाग्यशाली।
सुभावः (पुं०) परम भाव। (जयो० २/१२३)
सुभाषित (वि०) सुकथित, सुंदर भाषण।
सुभाषितम् (नपुं०) समुपयुक्तवचन, सारगर्भित वाणी, उपयुक्त वाग्वैभव।
० नीतिपरक विचार।
सुभगकोकः (पुं०) चकवापक्षी। (समु० ७/२८)
सुभगतमपक्षी (पुं०) अति उत्तम पक्षी गरुड़। (सुद० १०९)
सुभगत्व (वि०) सौभाग्य देने वाला। (समु० २/६४)
सुभगसामर्थ्य (वि०) सुकृतं परिणाम युक्त। सुभागस्य सुकृतपरिणामस्य टङ्कणस्य वा सामर्थ्यं न। (जयो० ६/७४)
सुभगा (स्त्री०) सुंदरी, सौभाग्यशालिनी। (जयो० ३/३९)
सुभद्र (वि०) कल्याणकारी, भद्रपरिणामी। (जयो०४/३६)
सुभद्रा (स्त्री०) चक्रवर्ती भरत की पत्नी। सुभद्रा भरतस्य वल्लभा। (जयो० ३/८८) पट्टरानी। (जयो० २८/६९)
सुभागा (वि०) सुभगाया भागशलिन्या सौभाग्यशालिनी। (जयो० १४/३०)
सुभासः (पुं०) सुभाष बोस। (जयो० १८/८१) सुभासः सूर्यदीप्त्याः सती यासौ कीर्तिरभ्युदयमञ्चति कीर्तिर्यस्य स सुभाष-महोदयोऽभ्युदयमञ्चति' (जयो० १८/८१)
सुभामिनी (स्त्री०) उत्तमकामिनी। (समु० २/१२)
सुभाषा (स्त्री०) उत्तमवचन। (जयो० ३/८४)

सुभोगः (पुं०) उत्तम योग। (जयो०वृ० १/२२) परिपूर्ण भोग। (जयो० १/२२)
सुभौमः (पुं०) सुभौम नामक चक्रवर्ती। (सम्य० ६४)
सुफलस्तन शालिनी (स्त्री०) उत्तम फल रूपी स्तन धारण करने वाली स्त्री। 'सुफाल्येन स्तनाः पयोधरा यस्याः सा तैः शालिनी रमणीया। (जयो० १३/५२)
सुफला (स्त्री०) नशीला पदार्थ। (सुद० १३०)
सुफेनिलः (पुं०) उत्तम साबुन। (जयो० २५/६६)
सुभा (स्त्री०) शोभा, कान्ति। (जयो० १२/४४)
सुभास (वि०) शोभन कान्ति युक्त। (जयो० १/३७)
सुभिक्षम् (नपुं०) प्रबल धन-धान्य उत्तम धान्यावली, प्रचुर धान्य। सुगमता से प्राप्त होने वाला धान्य।
सुभृङ्गः (पुं०) सुशोभित भ्रमर। (सुद० २/४५)
सुभ्रू (वि०) सुंदर भौंहे वाला। 'शोभने भ्रुवौ यस्याः' (जयो०९/७३)
सुभ्रूः (स्त्री०) रमणीय स्त्री।
सुमं (नपुं०) पुष्प। (जयो० ९/४३) (जयो० ५/९४)
सुमता (वि०) प्राणधारि, सचेतन।
सुमति (वि०) बुद्धिमान्, प्रज्ञाशील, विद्वान्, सद्बुद्धि, समीचीन बुद्धि। (जयो० १/८०)
सुमतिः (पुं०) सुमतिनाथ तीर्थंकर, पांचवें तीर्थंकर का नाम। (भक्ति० पृ० १८)
० सुमति नामक मंत्री। (जयो० ४/१२)
० अनुग्रह, उपहार, आशीष, प्रार्थना, कामना।
सुमतिसुधाद (वि०) सद् बुद्धि रूपी सुधा देने वाला। सुमतिसुधादं विगतविषादं शमितविवादं जयतु सुनादम्। (जयो० २/१३७) सुमतिरेव सुधाऽमृतं तां ददातीति।
सुमत्यवरोधिः (स्त्री०) सुमति ज्ञानावरण। (जयो० २५/१)
सुमत्व (वि०) कुसुमत्व। (जयो० १२/७१)
सुमदनः (पुं०) आम्र तरु।
सुमध्य (वि०) पतली कमर वाली।
सुमन (वि०) प्रिय, मनोज्ञ, श्रेष्ठ, सुंदर, रमणीय, आकर्षण, विचारशील। (जयो० ४/२५)
सुमनः (पुं०) ० गेहूं।
० धतूरा।
सुनमस् (वि०) संतुष्ट, प्रसन्न। (सुद० ६९) (सुद० ८२)
सुमनस् (पुं०) देव, अमर, देवकुल। (दयो० १/११)
० सज्जन। (जयो० ३/४६) (जयो० ३/३०)
० पुष्प, कुसुम। (जयो० १/८५)
भवानृषिवरः सुमनः समुदायवान्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुमनस्ता (वि०) विकासवृत्ति। (सुद० ८) (सुद० ४/१)
सुमनः समन्वित (वि०) सहृदय युक्त, सर्वतोऽपि सुमनोभिः सहृदयैः समन्विताऽऽसीत् (जयो० ३/९)
० पुष्प युक्ता।
सुमनोज्ञा (वि०) अतिशय सुंदरी स्त्री, मनसोऽनुकूला। (जयो० ६/२८)
सुमार्गः (पुं०) सुपथ, उत्तम मार्ग। (सुद० ९७)
सुमातृ (स्त्री०) श्रेष्ठ जननी। (जयो० ३/८६)
सुभानिनी (स्त्री०) सौभाग्यवती। (जयो० १२/३५)
सुमान्य (वि०) माननीय, समर्थित। सुमनोभिः पुष्पैः सुमान्यां समर्थिताम्। (जयो० ११/९०)
सुमायुध (पुं०) कामदेव। (जयो० २६/४५)
सुमाशयः (पुं०) पुष्प राशि। (वीरो० ६/३०)
सुमिता (स्त्री०) अयोध्यापति की रानी। (समु० ४/२५)
सुमित्रा (स्त्री०) दशरथ पत्नी। ० पद्मखण्ड के वेश्य की पत्नी। (समु० १/२९)
सुमुख (वि०) सुंदर आनन युक्त, रूपवान् मुख। (जयो० ४/३७)
सुमुखम (पुं०) अकम्पन राजा का एक दूत। (जयो० ९/५८)
सुमुखिः (वि०) शुभानन, सुदर मुख, प्रियाननी।
सुमुद्वती (वि०) प्रशस्ति युक्त। (जयो० १५/३९)
सुमृद्धरूपिणी (स्त्री०) कोमलरूप धारिणी। (जयो० २१/६)
सुमेधस् (वि०) समझदार, बुद्धिमान्।
सुमेरु (पुं०) सुमेरु पर्वत। (सुद० १/११) कनकाद्रीन्द्र-(जयो०वृ० १२/७४)
सुमेरुशीर्षः (पुं०) सेमुरु पर्वत। (वीरो० ४/४४)
सुमेषः (पुं०) कामदेव। (जयो० ११/३२) (जयो० ११/७६)
सुमेषु
सुमोच्चयः (पुं०) माला पहनना। (जयो० १२/१३)
सुयवसम् (नपुं०) चरागाह, सुंदर घास।
सुयानम् (नपुं०) सुंदर वाहन। (जयो० ५/५८)
सुयोधनः (पुं०) दुर्योधन।
सुयोगः (पुं०) उत्तम योग। (सुद० ४/१०) सर्वयोग (सुद० १/३०)
सुयोष (स्त्री०) युवति। (जयो० १४/८)
सुरः (पुं०) [सुष्ठु राति ददात्यभीष्टम्-सु+रा+क] अमर, देव। (सुद० १/२७)
० स्वर। (सुद० १/२७)
० सूर्य, ० ऋषि।

सुरकारु (पुं०) विश्वकर्मा।
सुरकार्मुकम् (नपुं०) इन्द्रधनुष।
सुरक्षणम् (नपुं०) सु लक्षण, प्रशस्त लक्षण। (जयो० १/४५)
सुपदु रक्षाकर। (जयो० २३/४५)
सुर-क्षणम् (नपुं०) सुराणां देवानां क्षण एव क्षण उत्सवो येषां तथा च। देवोत्सव। (वीरो० २/२२) (जयो० १/४५)
सुरगिरि (पुं०) सुमेरु।
सुरगुरुः (पुं०) बृहस्पति।
सुरग्रामणी (स्त्री०) इन्द्र।
सुरङ्गः (पुं०) भीतरी मार्ग, सेंध।
० सुमुख। (समु० २/५)
सुरङ्गयुग्मक (वि०) दो सुरङ्ग वाला, सुराख वाला। (समु०२/५)
सुरत (वि०) अच्छी तरह से लीन। मैथुन। (जयो० ६/९)
सुरतः (पुं०) [स्त्री-पुरुष मिलन, प्रेमालिंगन]
सुरतवारः (पुं०) स्त्री-पुरुष सङ्गम। (वीरो० ६/२८)
सुरत-विचार (पुं०) समागम विचार। (जयो० १४/२)
सुरतस्थलं (नपुं०) रङ्गस्थल। (जयो०वृ० ६/६८)
सुरताङ्कः (पुं०) सुरत लक्षण सुरतस्याङ्को लक्षणम्। (जयो० १६/८०)
सुरताभिसन्धिः (स्त्री०) संगमाभिलाषी। (जयो० २४/३७)
सुरतार्थिन् (वि०) सुरतस्य रतेरर्थिभिः आराध्या सेव्या (जयो० १/१९)
सुरताश्रयः (पुं०) निकुञ्ज। (जयो० २१)
सुरतीर्थः (पुं०) हस्तिपुर, हस्तिनापुर। (जयो० २३/६)
सुरतोषकः (पुं०) कौस्तुभमणि।
सुरदारुः (पुं०) देवदारुवृक्ष।
सुरदीर्धिका (स्त्री०) गङ्गा।
सुरदुन्दुभी (स्त्री०) पवित्र तुलसी।
सुरद्विपः (पुं०) ऐरावत हाथी।
सुरद्विष् (पुं०) राक्षस।
सुरद्रि (पुं०) कल्पतरु। (जयो० १/५०)
सुरद्रुमः (पुं०) कल्पवृक्ष। (जयो० १३/७६)
सुरथः (पुं०) उच्चरथ। (जयो० १३/७)
सुरधनुस् (नपुं०) इन्द्रधनुष।
सुरधूपः (पुं०) तारपीन, राल।
सुरनिम्नगा (स्त्री०) गङ्गा।
सुमनोहर (वि०) अत्यंत प्रिय। (समु० ४/२६)
सुमर्मभित् (वि०) सुमर्मवेरि। (जयो० २६/४४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरतचेष्टा (स्त्री०) बीजग्रहण, शुक्रपर्यायवाची। (जयो०वृ० १६/३१)

सुरतवेला (स्त्री०) शृंगारवार। (जयो० १५/५९)

सुरतश्रमः (पुं०) रतिक्रीड़ाजन्य परिश्रम। (जयो० २४/१९)

सुरतार्थ (वि०) सुरतं वाञ्छति-संभोग इच्छुक। (जयो० १५/९४)

सुरतोपयोगिनी (स्त्री०) रति क्रीड़ा योग्य। (जयो० २४/१)

सुरगिरि (पुं०) सुमेरु। (२/१४)

सुरभिस्थानम् (नपुं०) गोकुल स्थल, गौशाला। गाय समूह। (जयो० १०/१५)

सुरभिवत् (वि०) वसंत की तरह। (सुद० १२४)

सुराङ्कः (पुं०) स्वर्ग। (सुद० २/१४)

सुराङ्गना (स्त्री०) देवाङ्गना। (सुद० ४/१५)

सुरोनोकहकः (पुं०) कल्पवृक्ष। (सुद० २/१५)

सुराद्रि (पुं०) सुमेरु। (सुद० २/१४) (वीरो० ११/२७)

सुरपः (पुं०) इन्द्र।

सुरपतिः (पुं०) इन्द्र (वीरो० ७/३०) (जयो० ५/३१) (जयो०वृ० १/२६)

सुरपथम् (नपुं०) आकाश, नभ।

सुरपर्वतः (पुं०) सुमेरु।

सुरपादपः (पुं०) कल्पतरु।

सुरप्रियः (पुं०) इन्द्र।

सुरपुरलक्ष्मी (स्त्री०) स्वर्गश्री। (जयो०वृ० ३/१०३)

सुरभि (वि०) [सु+भृ+इन्] मधुर गन्ध युक्त, सुगन्धियुक्त। (जयो०)

० सुहावना, मनोहर, प्रिय, विख्यात।

० शोभा (जयो० १/४२)

सुरभिः (पुं०) सुगन्ध, सुवास।

० जायफल। (सुद० २/२८)

० चम्पकवृक्ष।

सुरभिः (स्त्री०) गाय।

सुरभिरीदृङ् (पुं०) वसन्त ऋतु। (वीरो० ६/१२)

सुरभूयम् (नपुं०) देवग्रहण।

सुरभूरुहः (पुं०) देवदारु वृक्ष।

सुरयुवतिः (स्त्री०) अप्सरा, देवाङ्गना।

सुरर्षिः (पुं०) लौकान्तिक देव। (भक्ति० २२)

सुरलासिका (स्त्री०) बांसुरी, मुरली।

सुरलोकः (पुं०) स्वर्ग।

सुरवरवंशम् (नपुं०) नन्दन वन, स्वरवंश। (जयो० २२/५६)

सुरवर्त्मन् (नपुं०) आकाश, नभ।

सुरवल्ली (स्त्री०) पवित्र तुलसी।

सुरविद्विष् (पुं०) दैत्य, असुर।

सुरव्रजः (पुं०) देव समूह। (वीरो० ७/१०)

सुरस (वि०) सरसता युक्त, रस से परिपूर्ण। (जयो० ३/४४, सुद० १/२६)

रसीला। सुरसनमशनं लब्ध्वा रुचिरं सुचिरक्षुधितजनाशा (सुद० ७४)

० शोभनरस-उत्तम शृंगार-'शोभनो रसः शृङ्गारो यस्याः सा तस्याः। (जयो० ३/६९)

सुरसरित् (स्त्री०) स्वर्ग गंगा। (जयो० ६/४३)

सुरसार्थ (वि०) सरसतार्थ, 'सुरसो रससहितो यो अर्थः' (वीरो० १/२३)

सुरसार्थलीला (स्त्री०) देव समूह की क्रीड़ा, धन सम्पत्ति का प्रभाव। (सुद० १/२६)

सुसार्थिन् (वि०) रमणीयता का इच्छुक।

सुरसाला (वि०) रस से परिपूर्ण। (दयो० ११०)

सुरसिन्धुः (स्त्री०) स्वर्ग गङ्गा, आकाश गंगा। (जयो० २६/१६)

सुरसुंदरी (स्त्री०) दिव्याङ्गना, अप्सरा।

० एक राजकन्या। (सम्य० ६७)

सुरस्त्रोतः (पुं०) गंगा प्रवाह। (जयो० १५/६४)

सुरा (स्त्री०) [सु+क्रन्+टाप्] शराब, मदिरा, मद्य। (मुनि०९) (सुद० १२७)

० पान पात्र, सुराही।

सुराट (पुं०) महाराज। (जयो० ७/८७)

सुराजहंसः (पुं०) उत्तम राजहंस पक्षी। (जयो० १४/५४)

सुरापगा (स्त्री०) गङ्गानदी। (जयो० २४/३०) (जयो० १३/९४)

सुरापाणम् (नपुं०) मदिरापान। (जयो०वृ० १६/२५) (वीरो० १३/१४)

सुरापानम् (नपुं०) ० मद्यपान, ० शराब पीना।

सुर्षिः (पुं०) देवर्षि। (वीरो० १०/२२)

सुरालयः (पुं०) नागलोक। (सुद० १/२७) ० स्वर्ग। त्रिदिव-(वीरो० २/१०)

सुराद्रि (पुं०) ० सुमेरु। (वीरो० २/२) ० कल्पवृक्ष। (दयो०४३)

० देवालय। (जयो०वृ० ५/५०)

सुराशिः (पुं०) समुद्र। (सुद० २/२५)

सुरी (स्त्री०) देवाङ्गना, देवी, अप्सरा। (समु० २/७)

सुरीगणः (पुं०) देवाङ्गना समूह, देवलक्ष्मी समूह। (वीरो० ५/५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरीतिः (स्त्री०) सम्यक् पद्धति, उचित परम्परा। (वीरो०२/२२) आगममोक्तविधि। (जयो० २४/८२)

सुरीतिसूक्तम् (नपुं०) उत्तमरीति के सूक्त/वचन। (सुद० १/२६)

सुरीतिकर्त्री (वि०) दौर्गत्यकारिणी-सुरीते: शोभनस्य पित्तलस्यकर्त्रीतिविरोधे। (जयो० ११/८८)

सुरीसुसारः (पुं०) देवाङ्गनाओं का उचित सार सुरीषु देवाङ्गनासु शोभन: सारस्तत्त्वार्थो विद्यते। (वीरो० ५/५)

सुरुचिर (वि०) रुचिपूर्ण। (जयो० १/९४)

सुरूप (वि०) सुंदर रूप। (समु० ४/२४)

सुरेन्द्रः (पुं०) देवेन्द्र, अमरेन्द्र। (जयो०वृ० १२/७३)

सुरेन्द्रकोणीपः (पुं०) पूर्वदिशा। (वीरो० ११/२५)

सुरेशः (पुं०) देवेन्द्र, इन्द्र। (जयो० ७२/८)

सुरोक (वि०) सम्यग्दीप्तिशाली-रोकस्तु रोचिषीति विश्वलोचन। (जयो० १/८४)

सुरोचन (वि०) परम सुंदर। (जयो० ३/९०)

सुरोचना (स्त्री०) राजकन्या, काशीनरेश, अकम्पन की पुत्री। (जयो० ३/९०) सूत्तमतया रोचना रुचिकरी। (जयो०वृ० ३/६३)

सुरोचनाऽन्याय सुरोचनेति
समिच्छतः का पुनरम्भ्युदेति। (जयो० ३/९०)

सुलक्षण (वि०) भाग्यशाली, सुंदर लक्षणों वाली। (सुद० ३/२४)

सुलक्षणसमन्वित (वि०) उत्तम लक्षणों से युक्त। (दयो०१/१९)

सुलक्षणा (स्त्री०) एक राजकन्या। सौभाग्यवती। (जयो० ९/७९)

सुलक्षणी (स्त्री०) शोभन लक्षण युक्त। (जयो० २२/४०)

सुलक्षणा (स्त्री०) आदित्यवेग नगर के राजा धरणी तिलक की रानी। (समु० ५/१८)

सुलताङ्गी (स्त्री०) बल्लीतुल्याङ्गी। (जयो० १०/१४)

सुललित (वि०) अत्यंत प्रिय, बहुत सुंदर। (जयो० ४/७)

सुलसत् (वि०) सुशोभित। (सुद० २/५०)

सुलभीकृत् (वि०) सुगमता को प्राप्त हुई। (जयो० १२/९६)

सुलेख (वि०) आपुष्पकर्म रेखा। (जयो० १/५१)

सुलभ (वि०) सुप्राप्य, सुकर, सहजता से उपलब्ध। सुविधाजन्य। (जयो० ३/१५)

सुलास्यः (पुं०) उत्कृष्ट नृत्य, शोभनं लास्यं नृत्यम्।

सुलोचन (वि०) सुंदर नेत्र वाली।

सुलोचना (स्त्री०) काशीनरेश अकम्पन की पुत्री। (जयो०वृ०१/६६) पुत्री।
० सुंदर स्त्री।

सुलोचनिका (स्त्री०) सुलोचना। (जयो० ४/१५)

सुलोचनी (स्त्री०) सुदृशा स्त्री। (जयो०वृ० ५/८९)

सुलोहकम् (नपुं०) पीतल।

सुलोहित (वि०) गहरा लाल।

सुवंशः (पुं०) शिविका दण्ड। (जयो० ६/५६)

सुवधू (स्त्री०) उत्तम स्त्री। (जयो० १३/७)

सुवक्त्रम् (नपुं०) सुंदर मुख।

सुवचनम् (नपुं०) मधुर वचन, मृदु वचन।

सुवर्चिकः (पुं०) सज्जी, क्षार, खार।

सुवल्लभा (स्त्री०) प्यारी, प्रिया। (समु० ४/२५)

सुवर्ण (वि०) उत्तम अक्षर। (सम्य० ६१)
० आकर्षक रंग युक्त। (जयो० ३/७२)

सुवर्णः (पुं०) सोना। (सम्य० ८९)

सुवस्तु (वि०) ठीक-ठीक पदार्थ। (वीरो० २०/१५, २/२९)

सुवह (वि०) सहनशील, धैर्यवान्।

सुवाणी (स्त्री०) जिनवाणी। (सुद० १२२)

सुवासं (नपुं०) उत्तम वस्त्र। (सुद० २/१२)

सुवासिनी (स्त्री०) श्रेष्ठता से युक्त आवास वाली।

सुवाह (वि०) अच्छी तरह प्रवाहित। (वीरो० २१/१४)

सुविक्रान्त (वि०) साहसी, बलिष्ठ, बहादुर, शक्तिशाली।

सुरायोगः (पुं०) मदिरापान, मद्यपान। (जयो० १६/२५)

सुरीतिकर्ता (वि०) सम्यक् रीति का प्रचारक। (जयो०वृ०१/१२)

सुवयःस्वरूपा (स्त्री०) लक्ष्मी समान श्री। (जयो० १/७४) उत्तम अवस्था। (जयो० २/६९)

सुवंशः (पुं०) उत्तम बांस। (सुद० ४/४) उत्तम कुल।

सुवाच (वि०) उत्तम वाणी। (भक्ति० १२)

सुवासिनी (स्त्री०) सौभाग्यवती। (जयो० १२/१०८)

सुवासिनीमहिला (स्त्री०) सौभाग्यवती स्त्री। (जयो० १२/१०८)

सुवर्णः (पुं०) सोना। (समु० ८/७) कनक (जयो० ३/७२, शोभन। (जयो० वृ० ३/७२)

सुवर्णकलित (वि०) उत्तम कुल जात। (जयो० ५/४५)

सुवर्णकारः (पुं०) कला। (जयो० १६/७४)

सुवर्णताति (स्त्री०) अच्छे वर्णों की पंक्ति। (जयो०)

सुवर्णपरिस्थितिः (स्त्री०) अच्छे वर्णों की स्थिति। (दयो० ६८)

सुवर्णय् (सक०) बनाना, सोना तैयार करना। (जयो० ६/७४)

सुवर्णमूर्ति (स्त्री०) सूक्ति युक्त वचन की प्रतिमा। (जयो०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३/५९) उत्तम वर्ण (सुद० १/३५) शोभन रूपा। (जयो० ४/१०)

सुवर्णवर्णः (पुं०) अगुरुवृक्ष। (जयो० २४/२६) सुवर्णस्तु सुवर्णालौ कृष्णागुरुमयान्तरे 'इति वि। (जयो० २४/२६) सुवर्णस्य हेम्नो वर्ण इव वर्णो यस्य सोऽपि (जयो० २४/२६)

सुवर्णसूत्रम् (नपुं०) काञ्चीदाम। (जयो० १७/१२४) करधनी (जयो० ११/६)

सुवर्णानुगत (वि०) हेमघटितानुसारिणी। (जयो० ११/१८)

सुवर्णोत्थपदम् (नपुं०) सुंदर वर्णों का स्थान।
० ललिताक्षरसम्पन्न शब्द। (जयो० ३/२८)

सुवृत्तः (पुं०) अंगीकारक, शोभन वर्तुलाकार, सदाचारवान्। (जयो० १०/८०)

सुवृतत्त्व (वि०) शोभनं वृत्तमाचरणं यस्य तत्त्वात् तथा स्तम्भोऽपि। (जयो० २२/८२) ० वर्तुलाकार।

सुवृत्तभाज (वि०) सदाचारी। (जयो० ५/९९)

सुवृत्तभावः (पुं०) सदाचारचेष्टा। (जयो० १८/५३) साध्वाचार सम्पत्ति। (जयो० ५/८१) सुवर्तुलाकार। (वीरो० २/४)

सुवर्ष (वि०) उत्तमवर्ष। (जयो० २२/५२)

सुवर्षणः (पुं०) मेघ, बादल। (जयो० १७/२१)

सुवर्षणशील (पुं०) अच्छी वृष्टि युक्त मेघ। (जयो० १७/२१)

सुवर्षा (स्त्री०) सुवृष्टि। (जयो० १७/१०२)

सुविधाकर (वि०) सुख से परिपूर्ण। (जयो० ११/७१)

सुविधातृ (वि०) विधानकर्ता। (जयो०वृ० १२/११३)

सुवासित (वि०) अनुभावित। (जयो० १३/९४)

सुविकासिन् (वि०) विकसित, पूर्ण खिला हुआ। (सुद०३/३)

सुविश्रमः (पुं०) अधिक विराम। (जयो० २४/४)

सुविष्टर (वि०) मनोभिलषितासन। (जयो० २७/४३)

सुविस्तृत (वि०) परिणाहपूर्ण। (जयो० १३/३४) अधिक विस्तार वाला।

सुविचारः (पुं०) उत्तम विचार। (जयो० २/१०३)

सुविचारचेष्टित (वि०) अच्छे विचारों की चेष्टा युक्त। (जयो० ७७/१३२)

सुविज्ञ (वि०) जानकार। (सुद० १२२)

सुविद् (वि०) बुद्धिमान्, प्रज्ञावंत।

सुविपाकिन् (वि०) शुभ परिणामिन्। (जयो० ४/३९)

सुविद्या (वि०) शोभना विद्या, उत्तम विद्या। (जयो० १/१३)

सुविध (वि०) पुण्यात्मन्। (जयो० २४/१३२)

सुविधम् (अव्य०) आसानी से, सहज में, सम्यक् प्रकार से। (जयो० १/९८)

सुविधा (स्त्री०) सुख। (सम्य० १२३)

सुविधाप्रबुद्धिः (स्त्री०) सन्तानोत्पत्ति। (जयो० २/१२४)

सुविधिः (पुं०) तीर्थंकर सुविधिनाथ नवें तीर्थंकर का नाम, जिन्हें तीर्थंकर पुष्पदन्त भी कहते हैं।
शोभनो विधिः सर्वत्र कौशलमस्येति सुविधि।

सुविधिः (स्त्री०) उत्तम पद्धति।

सुविनीत (वि०) विनयी, विनम्रशील।

सुविस्तारयन् (वि०) सुविस्तृत करना। (मुनि० ७)

सुविहितं (वि०) अच्छी तरह से रखा गया।

सुवीर्य (वि०) शक्तिशाली, बलिष्ठ, शूरवीर, पराक्रमी।

सुवृत्त (वि०) गुणी, सद्‌गुणी, सदाचरणशील, उत्तम आचरण। (सुद० २/६)
० अच्छा गोल, पूर्ण गोलाकार। (सुद० २/६)

सुव्रता (स्त्री०)पुष्कल देश के पुण्डरीक नगर के अधिपति सुमित्र की रानी। (वीरो० ११/३२)

सुवेल (वि०) ० शान्त, निश्चल।
० विनम्र, निस्तब्ध।

सुवेशिनी (स्त्री०) रूपवती। (जयो० १३/१०)

सुवेश (वि०) शोभनवेशवती। (जयो० ५/३८) प्रसारशील। (जयो० ५/८) शोभनाकार। (जयो० ३/२४)

सुवेशः (पुं०) मुनिवेश, निर्ग्रन्थ।

सुवेशा (स्त्री०) शोभनवेशमती।

सुशंस (वि०) प्रख्यात, प्रसिद्ध।
० यशस्वी, प्रशंसनीय।

सुशक (वि०) आसान, सरल, सहज। (दयो० १२२)

सुशाकम् (नपुं०) अदरक।
० उत्तमशाक। (जयो० २/१२८)

सुशाखिन् (वि०) उत्तम शाखाओं वाला। (सुद० ८५)

सुशासित (वि०) नियन्त्रित, पूर्ण शासन युक्त।

सुशीलत्व (वि०) सदाचरण युक्त।

सुशीला (स्त्री०) उत्तम आचरण वाली स्त्री। (सुद० १/२६)

सुशिक्षित (वि०) प्रशिक्षित, सधा हुआ।

सुशिखः (पुं०) अग्नि।
० मयूर शिखा।

सुशील (वि०) मिलनसार, शीलवान्, अच्छे आचरण वाला।

सुशुचि (स्त्री०) अति पावन। (जयो० २/८७)

सुशुभङ्गणम् (नपुं०) शुभाङ्गण। (जयो० १२/४७)

सुशेषावती (स्त्री०) शुभाशीर्धारिणी। (जयो० २८/६९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुश्रावकत्व (वि०) उत्तम श्रावपकना। (जयो० १८/४६)
सुश्रुवः (पुं०) श्रवणमनोहर। (जयो० ९/८७)
सुश्रान्त (वि०) प्रशस्त। (जयो० ८/१६)
सुश्रुत (वि०) अच्छी तरह से सुना गया।
 ० उत्तम शास्त्र, श्रेष्ठ श्रुत/आगम।
सुश्रुतः (पुं०) आयुर्वेद पद्धति।
सुश्रुतसंहिता (स्त्री०) आयुर्वेद ग्रन्थ।
सुश्रुतादरः (पुं०) सुश्रुतसंहिता का आदर। (जयो० ३/१६)
सुश्लिष्ट (वि०) संयुक्त, क्रमबद्ध।
सुश्लेषः (पुं०) मिलाप, मिलकर, आलिंगन।
सुषभ (वि०) [सुष्ठु समं सर्वं यस्मात्] अत्यन्त प्रिय, इष्ट, मनोज्ञ।
सुषम-दुषमा (स्त्री०) काल का एक भेद, जिसका प्रमाण कोडाकोडी माना गया। इस समय में दिव्य मनुष्य और अप्सरा सदृश स्त्रियां होती हैं।
सुषम-सुषमा (स्त्री०) उपद्रव रहित काल, इसका प्रमाण चार कोडीकोडी सागर माना गया।
सुषमा (स्त्री०) परम सौंदर्य, अत्यन्त रमणीय, शोभा। (वीरो० ३/२०) परम आभा, उत्कृष्ट कान्ति, तीव्र प्रभा।
 ० एक काल विशेष, इस काल का प्रमाण तीन कोडाकोडी सागरोपम माना गया। सुसमम्मि तिण्णि जलही उवमाणं होंति कोडकोडीओ (ति० प० ४/३१८)
 ० मौर्य चन्द्रगुप्तकी रानी-मौर्यस्य चन्द्रगुप्तस्य सुषमाऽऽसी-दथाऽऽर्हती। (वीरो० १५/३३)
सुषमाभिमानम् (नपुं०) शोभाविषयक गर्व। (जयो० ११/१६)
सुषवी (स्त्री०) [सु-सु+अच्+ङीष्] काला जीरा।
सुषादः (पुं०) शिव का नाम।
सुषिम (वि०) शीतल, ठण्डा।
सुषिमः (पुं०) चंद्रकान्तमणि।
सुषिर (वि०) [शुष्+किरच्] छिद्र युक्त, सरन्ध्र, खोखला।
सुषिरम् (नपुं०) एक वाद्य विशेष, जो वायुवेग से बजता है। (जयो० १०/१८)
सुषीमः (वि०) सुशोभन। (जयो० २६/७४)
सुषुप्तिः (स्त्री०) [सु+स्वप्+क्तिन्] प्रगाढ़ निन्द्रा, अधिक निन्द्रा।
सुषुम्णः (पुं०) सूर्य किरण का नाम।
सुषुम्णा (स्त्री०) शरीर की एक नाड़ी का नाम।
सुष्ठु (अव्य०) [सु+स्था+कु] सुंदरता के साथ, अच्छाई युक्त।
 ० अत्यन्त, प्रगाढ़, दृढ़।
 ० सचमुच, यथार्थ, ठीक।
सुष्ठुकार्यकृत् (वि०) उत्तम कार्य करने वाला। (जयो० २/६१) शोभनकर्मकर।
सुष्ठुप्रकृतिः (स्त्री०) उत्तम प्रकृति, पूर्ण सुरक्षित प्रकृति। (मुनि० २४)
सुहृदः (पुं०) तालाब, सरोवर। (जयो० १/४३)
 ० सज्जन। (जयो० १/४३)
 ० मित्र। (सुद० ३/५७)
सुहृदि (वि०) सहृदय। (सुद० ७७)
सुसंहित (वि०) एकत्रित। (समु० ७/१३)
सुहंसः (पुं०) अद्वितीय हंस। (सुद० २/१)
सुहावनीः (वि०) प्रिय लगने वाली। (दयो० ११३)
सुहासमय (वि०) ईषत्स्मितान्वित। (जयो० ३/१४)
सुहित (वि०) हितेच्छुक। (जयो० ६/१०)
सुस्नेहदशा (स्त्री०) प्रशस्त प्रेमावस्था।
 ० उत्तम स्नेही।
 ० तेल युक्त। चासौ दशा वर्त्तिका। (जयो० ६/१३)
सुसमाधि (स्त्री०) उत्तम समाधि। (सम्य० १३९)
सुसमादरः (पुं०) उचित सम्मान। (वीरो० २२/१७)
सुसृणिः (स्त्री०) प्रशस्तांकुश। (जयो० १३/३६)
सुहृदः (पुं०) मित्र, सख। (जयो० ४/४८)
सुहेतु (पुं०)एक राजा का नाम। (जयो० ७/८८)
सुस् (अक०) उत्पन्न होना। (सुद० १/४६)
सुसंस्कृत (वि०) स्नेहजन्य, तेल से चुपड़ी हुई। (जयो०१३/५)
सुसज्ज (वि०) हृष्ट-पुष्ट, तैयार। (जयो० १७/११३)
सुसज्जनौका (स्त्री०) प्रशस्त नांव। (जयो०२२/७८)
सुसज्जि (वि०) पूर्णरूप से तैयार हुई। (दयो० ६२)
सुसन्तानं (नपुं०) उत्तम सन्तति। (समु० ६/४)
सुसमीक्षा (स्त्री०) सम्यक् समालोचन चेष्टा। (जयो० ५/४०)
सुसमीरः (पुं०) शुद्धवायु। (जयो० २/७६)
सुसम्पदा (स्त्री०) सुखसम्पदा। (जयो० १२/१४०)
सुसाफल्य (वि०) पूर्ण सफलता। (जयो०)
सुसारः (पुं०) उचित सार, रहस्यमय। (सम्य० ८८)
सुस्वादु (वि०) स्वाद युक्त। (वीरो० २१/४)
सुस्तनम् (नपुं०) पृथुल स्तन। (जयो० १२/१२४)
सुस्थ (वि०) स्थिर। (भक्ति० ३२)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुस्थितिः (स्त्री०) उत्तम स्थिति। (जयो० २/४७) शोभावस्था।

सू (सक०) उत्पन्न करना, जन्म देना।

सू (वि०) [सू+क्विप्] पैदा करने वाला।

सूकः (पुं०) [सू+कन्] ० बाण।

० पवन, वायु।

० कमल।

सूकरः (पुं०) [सू+करन्] वराह, सूअर।

सूक्त (वि०) शोभन कथन। (जयो० २/४४)

० प्रेरित (जयो० १२/१२५) व्यक्त, कथित। (जयो०१/२२)

० उपयुक्त वचन (सुद० १/२७)

० भण्डार। (सुद० २/९)

० आगम वाक्य-सूक्तोद्घोषवरप्रयोजनंतयैकान्ते वसेद् बुद्धिभृत्। (मुनि० ३०)

सूक्ता (वि०) निर्दिष्टा, कथिता। (जयो०५/१०३) ० कही हुई।

सूक्तानुशीलनम् (नपुं०) उपयुकत वचन का मनन। (दयो० १०१) (वीरो० १३/३८)

सूक्तिसुभिद (वि०) शोभन कथन के भेद वाला। (जयो०२/५०)

सूक्तामृतम् (नपुं०) वचनामृत। (सुद० १२४)

सूक्तिः (स्त्री०) आत्म बोधक कथन, उक्ति मंगल वचन विचार। (जयो० ५/१०२)

० अगम्य विचार। (जयो० ४/३४)

सूक्तिपरा (स्त्री०) मङ्गलवचन परायण। (जयो०)

सूक्तिपूर्वकः (पुं०) विचार पूर्वक। (सुद० ४/२५)

सूक्ष्म (वि०) [सूक्+मन्] महीन, बारीक।

० स्वल्प, थोड़ा। (मुनि० १८)

० पतला।

० तेज, तीक्ष्ण।

सूक्ष्मः (पुं०) अणु।

सूक्ष्मम् (नपुं०) सर्वव्यापक, सूक्ष्म तत्त्व।

० पुद्गल का एक भेद।

० कार्मणस्कन्ध।

सूक्ष्मकायः (पुं०) प्रतिघात रहित शरीर।

सूक्ष्मक्रियाध्वानं (नपुं०) सूक्ष्म प्रतिपातिध्वनि। (भक्ति० ३३)

सूक्ष्मजीवः (पुं०) अवरोध रहित जीव।

सूक्ष्मत्व (वि०) इन्द्रियगत ज्ञान का न होना, सूक्ष्मता। (भक्ति० ५३)

सूक्ष्मदोषः (पुं०) स्वल्पदोष, किञ्चित्मात्र भी दोष।

सूक्ष्मदृष्टिः (स्त्री०) पैनी दृष्टि। (वीरो० २०/१०)

सूक्ष्मबुद्धिः (स्त्री०) अतिशय बुद्धि, पदार्थज्ञान के करने में प्रवीण बुद्धि।

सूक्ष्मवस्तु (नपुं०) सूक्ष्म पदार्थ, अणुतत्त्व। (वीरो० २०/१०)

सूक्ष्मसाम्परायः (पुं०) सूक्ष्म कषाय का अस्तित्व।

सूक्ष्माङ्गिन् (स्त्री०) तन्वि, कृशाङ्गी स्त्री (जयो०वृ० १२/१२३)

सूग्र (वि०) अति भयंकर। (जयो० ८/७४)

सूच् (सक०) बींधना, इंगित करना, समझना। (जयो०वृ०६/४८) बतलाना, प्रकट करना, सूचित करना।

० सूचना देना-सूच्यन्ते (जयो०वृ० ६/१२८)

सूचः (पुं०) [सूच्+अच्] अंकुर का ऊपरी भाग।

सूचक (वि०) संकेत परक, सूचित करने वाला, वक्ति। (जयो० ३/१०६)

सूचकः (पुं०) वेधक।

० राक्षस, पिशाच।

० सुई।

० श्वान।० दुष्ट।

सूचनम् (नपुं०) बतलाना, इंगित करना, ० संकेत करना, वर्णन करना।

सूचना (स्त्री०) इशारा, संकेत, भाव, अभिप्राय, बतलाना, दिखलाना, दर्शाना।

सूचनात्मक (वि०) संकेतात्मक। (जयो०वृ० ३/३६)

सूचनायुक्त (वि०) वर्णन युक्त। (जयो० २१/७९)

सूचनावती (वि०) सूचित करने वाली। (जयो०वृ० २१/७९)

सूचा (स्त्री०) ० बींधना, भेंदना।

० देखना।

० हाव-भाव, दृष्टि, इशारा, इंगित।

सूचिः (स्त्री०) [सूच्+इन् वा ङीप्] सूई। (जयो० १०/१११)

० तीक्ष्ण, शंकु, स्तूप।

सूचिकः (पुं०) [सूचि+ठन्] दर्जी, नामदेव।

सूचिका (स्त्री०) सूई। ० शंकू।

० सूंड।

० सूचना। (जयो० १३/३)

सूचिकाधरः (पुं०) हस्ति हाथी।

सूचिखातः (पुं०) शंकु।

सूचित (वि०) बतलाई गई, कथित, इंगित। (सुद० ३/१)

० बेधी गई, बींधी गई। (जयो० १०/१११)

सूचिन् (वि०) छिद्र करने वाला, बींधने वाला।

सूचिनी (स्त्री०) सूई। ० रात।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूची (स्त्री०) तीक्ष्णाग्र, सुई। (जयो० १५/३३)

सूच्य (वि०) [सूच्+ण्यत्] सूचित करने योग्य, इंगित करने योग्य।

सूत् (अव्य०) अनुकरणात्मक ध्वनि।

सूतं (भू०क०कृ०) [सू+क्त] उत्पन्न, जन्मा हुआ, पैदा हुआ, प्रसूत। (जयो० १०/११७)

० प्रेरित, उद्गीर्ण।

सूतः (पुं०) सारथी। (जयो० १/१९)

सूतकं (नपुं०) [सूत+कन्] ० जन्म, उत्पत्ति।

० अशौच, जनन अशौच। (जयो० २८/३६)

सूतकः (पुं०) पारा।

सूतका (स्त्री०) [सूत+कन्+टाप्] सद्यः प्रसूता।

सूता (स्त्री०) [सूत+टाप्] जच्चा स्त्री।

सूति (स्त्री०) [सू+क्तिन्] उत्पत्ति। (जयो० २३/७१) ० जन्म, प्रसव, जनन। ० संतान।

० प्रजा,

० स्रोत।

सूतिका (स्त्री०) [सूत+कन्+टाप् इत्वम्] प्रसूति (मुनि०११)

० जच्चा।

सूतिकाग्रहम् (नपुं०) प्रसूतिग्रह, प्रसवस्थान।

सूतिकागेहम् देखो ऊपर।

सूतिकाभवनम् देखो ऊपर।

सूतिगृहम् (नपुं०) प्रसूतिगृह, प्रसवघर।

सूतिमासः (पुं०) प्रसवमास।

सूत्कया (वि०) उत्सुकता। (सुद० ९८)

सूत्थ (वि०) उत्थित। (जयो० ९/२७)

सूत्थान (वि०) ० उत्पत्तिशाली। (जयो० १/१९) ० समुद्गान। (जयो० ६/३६)

सूत्परम् (नपुं०) [सु+उद्+पृ+अप्] मदिरा खींचना।

सूत्या (स्त्री०) [सू+क्यप्+टाप्] सोमरस निकालना।

सूत्र (सक०) बांधना, कसना, नत्थी करना।

० सूत्र रूप करना, संक्षेप करना।

० योजना बनाना, क्रमबद्ध करना।

सूत्रम् (नपुं०) [सूत्र्+अच्] धागा, डोरी, रेखा, रस्सी, तार। (सुद० ३/१३)

० रज्जू। (जयो० १२/१३)

० संक्षिप्त विधि, संक्षिप्त वाक्य रचना।

० सूचक। (जयो० ६/१२५) सूचना (जयो० १२/५८)

० प्ररूपणा, निरूपण, कथन।

० मांगलिक सूत्र। (जयो० ३/३६)

सूत्रकण्ठः (पुं०) खंजन पक्षी।

सूत्रकर्मन् (नपुं०) बढ़ई का काम।

सूत्रकल्पित (वि०) सूत्र ग्रंथों का अध्ययन।

सूत्रकृताङ्गम् (नपुं०) बारह अंग ग्रंथों में द्वितीय सूत्र-सूत्रकृत, सूयगड, जिसमें ज्ञानविनय, प्रज्ञापना, कल्प्य-अकल्प्य, छेद उपस्थापना आदि का विवेचन हो। यह लोक, अलोक, परसमय एवं स्वसमय आदि की सूचना देने वाला दार्शनिक ग्रंथ है।

सूत्रकार (वि०) सूत्र रचने वाला।

सूत्रकृत् (वि०) सूत्रकार, सूत्र रचने वाला।

सूत्रकोणः (पुं०) डमरु, डुगडुगी।

सूत्रगण्डिका (स्त्री०) धागा लपेटने की चरखी।

सूत्रग्राहणविनयम् (नपुं०) विनयपूर्वक सूत्र का ग्रहण कराया जाना।

सूत्रणम् (नपुं०) क्रमबद्ध करना।

सूत्रणक्रिया (स्त्री०) सीमाकरण, रेखांकन। समपूरि तु सूत्रणक्रिया नयने वर्धयितुं वयः श्रिया। (जयो० १०/३६)

सूत्रदरिद्र (वि०) झीण वस्त्र वाला। ० फटे वस्त्र वाला।

सूत्रधरः (पुं०) रंगमंच प्रबन्धक। ० महेन्द्र दत्त नाम। (जयो० ५/६०)

सूत्रधरः (पुं०) ० रंगमंच प्रबन्धक।

सूत्रप्राभृतम् (नपुं०) आचार्य कुन्द कुन्द का एक सूत्र ग्रंथ।

सूत्रपिटकः (पुं०) बुद्धवचन का सारभूत सूत्रग्रन्थ।

सूत्रपुष्पः (पुं०) कपास पादप।

सूत्रप्रचालनं (नपुं०) राज्य तंत्र परिचालन। (जयो० १८/८२)

सूत्रप्रयोगः (पुं०) संक्षिप्त प्रयोग। (जयो०वृ० १/३१)

सूत्रभिद् (पुं०) दर्जी।

सूत्रभृत् (पुं०) सूत्रकार।

सूत्रयन्त्रम् (नपुं०) ढरकी, खड्डी, धागा यंत्र।

सूत्ररुचिः (स्त्री०) अंग सूत्रों के प्रति रुचि, सूत्र ग्रन्थों के प्रति श्रद्धा।

सूत्रण (वि०) स्वीकार करने योग्य। (सुद० ३/२५)

सूत्रला (स्त्री०) [सूत्र+ला+क+टाप्] तकली।

सूत्रवेष्टनम् (नपुं०) जुलाहे की ढरकी।

सूत्रसमम् (नपुं०) श्रुतकेवली का श्रुतज्ञान। जिन वचन से निर्गत बीजपद। सुत्तं सुदकेवली, तेण समं सुदणाणं सुत्तसमं (धव० १४/८)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्रसंश्रयः (पुं०) श्रुत का विनयपूर्वक पठन। ०श्रुताधार।

सूत्रसारः (पुं०) आगम सूत्र का सार। (वीरो० १/२४)
 ० श्रुत रहस्य।

सूत्रार्थः (पुं०) तत्त्वार्थसूत्र नामक शास्त्र। (जयो० ६/५)

सूत्रिका (स्त्री०) [सूत्र+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] सेंवई, सीमी।

सूत्रित (भू०क०कृ०) [सूत्र्+क्त] क्रमबद्ध, क्रमानुसार, पद्धतियुक्त।

सूत्रिन् (वि०) [सूत्र+इनि] धागों वाला।

सूद् (सक०) ० प्रहार करना, घायल करना।
 ० नष्ट करना, उड़ेलना। (जयो० २/२३)
 ० उकसाना, उत्तेजित करना।

सूदः (पुं०) [सूद्+घञ् अच् वा] जनसंहार, विनाश, प्रतिघात।
 ० रसोइया, ० रसा, झोल।
 ० कीचड़, दलदल।
 ० पाप, दोष।

सूद्घोष (वि०) सभी ओर घोषणा युक्त। (वीरो० १३/१०)

सूदन (वि०) नाश करने वाला, विनाशक।

सूदनम् (नपुं०) नष्ट करना, विनाश करना, संहार, प्रहार, घात।

सून (भू०क०कृ०) [सू+क्त, क्तस्य नः] ० उत्पन्न, प्रसूत, उत्पन्न हुआ।
 ० प्रफुल्लित, मुकुलित।
 ० रिक्त, खाली।

सूनरी (स्त्री०) सुंदर स्त्री।

सूनवती (स्त्री०) गर्भवती। (जयो० १३/५२)

सूना (स्त्री०) [सुञ: नः दीर्घश्च] बूचड़खाना, कत्लखाना।
 ० मारना, विनाश करना।
 ० वध करना।
 ० पुत्री।

सूनिन् (पुं०) [सूना+इनि] कसाई, शिकारी, शृंगाल।

सूनुः (पुं०) [सू+नुक्] पुत्र। ० शिशु। (दयो० ३०)
 ० पोता, दोहित्र।
 ० मदारपादप। ० सूर्य।

सूनू (स्त्री०) [सूनु+ऊङ्] पुत्री।

सूनृत (वि०) ० सुखद, ० कृपालु, ० निष्कपट।
 ० सुशील, सज्जन, शिष्ट।
 ० शुभ, सौभाग्यसूचक।
 ० प्रियतम, प्यारा, स्नेही।

सूनृतम् (नपुं०) सत्य भाषण, सत्यवचन।
 ० प्रिय एवं सत्य। सत्यं प्रिय हितं चाहुः सुनृतं सुनृतव्रताः (अन धर्म० ४/४२)

सूपः (पुं०) [सुखेन पीयते सु+पा+घञर्थे क] ० व्यञ्जन। (जयो० ७/८५) यूष, रस।
 ० रसोइया, चटनी। ० खाद्य। (जयो० ७/८५)
 ० पेय पदार्थ। ० कड़ाही, बर्तन।

सूपकल्पित (वि०) सुष्ठुप्रकल्पित, सुपाख्यव्यञ्जता। (जयो० ६/१२१)

सूपकारः (पुं०) रसोइया, रसवतीकर। (वीरो० २२/३४) सूपं व्यञ्जनं करोतीति सूपकारकः।

सूपकारकः देखो ऊपर।

सूपकारक (वि०) श्रेष्ठ उपकार-सुष्ठु उपकारको मनसा सहायकरः। (जयो०वृ० ७/८५)

सूपकारिणी (स्त्री०) रसोइन। (दयो० १/१) ० रसाई बनाने वाली।

सूपधूपनम् (नपुं०) हींग।

सूपमता (स्त्री०) दाल का संयोग। (दयो० ३/६२)

सूपसंयोगः (पुं०) दालिकाख्य, सूपमता। (जयो० ३/६२)

सूमः (पुं०) जल, पानी।
 ० दूध, आकाश।

सूर् (सक०) चोट पहुंचाना, मार डालना, वध करना।

सूरः (पुं०) सूर्य, दिनकर, रवि।
 ० मदार पादप।
 ० सोम, ० बुद्धिमान।
 ० नायक, ० नृप।

सूरणः (पुं०) [सूर+ल्युट्] सूरन, जमीकंद।

सूरत (वि०) [सु+रम्+क्त] दयालु, कृपालु।
 ० मृदु, कोमल।
 ० शान्त, धीर।

सूरिः (पुं०) ० सूर्य। ० प्रज्ञावान्। ० आचार्य। प्रव्रज्यादायकः सूरिः संयतानां निगीर्यते। (योगसारप्र० २/९)

सूरिन् (वि०) बुद्धिमान्, प्रज्ञावंत।

सूरिन् (पुं०) पण्डित, विज्ञ।

सूरी (स्त्री०) कुंती।

सूर्क्ष् (अक०) आदर करना, सम्मान करना।

सूर्यः (पुं०) [सरति आकाशे सूर्यः, यद्वा सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति] [सृ+क्यप्] दिनकर, रवि, सूरज। (सुद० १२५) (सम्य० ७२) (दयो० १/८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० शनिपितृ।
० हिमनाशक। (जयो० २४/३४) (जयो० ५/३६)
० गभस्ति। (जयो०वृ० १/३३)
० अब्जय। (वीरो० २/११)
० शीर। (वीरो० २/२२)
० सवितृ। (जयो० वृ० ८/८९)
० दिनकर। (जयो० १/१९)
० छ। (जयो०वृ० २८/१)
० तपोधन। (जयो०वृ० २८/३)
० दिनकान्तमणि (जयो०वृ० १८/१८)
० सविभाव। (जयो०वृ० १३/१३)
० अर्यमा। (भक्ति० २५)
० तपन, तेजस्विन्। (जयो०वृ० ३/१०२)
० महस्कर। (दयो० १८)
० तरणि। (जयो०वृ० ५/२८)
० भास्वान्। (जयो० १७/२)
० दिन श्री, सप्ताश्वक। (जयो० १५/१६)
० अब्जनेतृ (जयो० १५/४)

सूर्यकान्त (पुं०) एक तेजस्वी मणि।
सूर्यकिरणम् (नपुं०) सूर्यरश्मि। (भक्ति० २१)
सूर्यग्रहः (पुं०) सूर्य ग्रहण। ० राहु।
सूर्यग्रहणम् (नपुं०) सूर्यग्रहण।
सूर्यजः (पुं०) ० सुग्रीव, यम। ० शनिग्रह।
सूर्यजा (स्त्री०) यमुना नदी।
सूर्यतनयः (पुं०) कर्ण, ० सुग्रीव।
सूर्यतेजस् (पुं०) गर्मी, ऊष्मा, तपन।
सूर्यनक्षत्रम् (नपुं०) सूर्य नक्षत्र।
सूर्यपर्वन् (नपुं०) पुण्यकाल।
सूर्यप्रसव (वि०) सूर्य से उत्पन्न।
सूर्यभक्त (वि०) सूर्य का उपासक।
सूर्यमणिः (स्त्री०) सूर्य कान्तमणि।
सूर्यमण्डलम् (नपुं०) सूर्य परिवेश।
सूर्यमुखीपुष्पम् (नपुं०) बन्धुनिबन्ध। (जयो०वृ० ६/५८)
सूर्ययन्त्रम् (नपुं०) सूर्य उपासक यन्त्र।
सूर्यरश्मिः (स्त्री०) दिनकर प्रभा। (भक्ति० २१)
सूर्यलोकः (पुं०) सूर्यलोक।
सूर्यवंशः (पुं०) इक्ष्वाकुवंश।
सूर्यवंशीय (वि०) सूर्यवंश वाले। (वीरो० १५/२७)
सूर्यवर्चस् (वि०) सूर्य की तेजस्विता।
सूर्यसारथी (पुं०) अरुण। (जयो०वृ० १२/८२)
सूर्या (पुं०) सूर्य की पत्नी।
सूर्यातिशायी (वि०) सूर्य का महा प्रकाश। (वीरो० ५/१)
सूर्यार्ध्यम् (नपुं०) सूर्यपूजा।
सूर्यावर्तः (पुं०) भास्करपुर का राजा। (समु० ३/२२)
सूर्याश्मन् (पुं०) सूर्यकान्तमणि।
सूर्यास्तम् (नपुं०) सूर्य का छिपना। (मुनि० १२)
सूर्योत्थानम् (नपुं०) सूर्योदय।
सूर्योदयः (पुं०) सूर्य का उदय होना, अर्कचार। (सम्य० १/११) (जयो०वृ० १८/२)
० तिग्मकरोदय। (जयो०वृ० २०/८९)
० अधिपोदय। (जयो० १९/१)
सूर्योदययुता (स्त्री०) पूर्व दिशा। (जयो०वृ० १७/११९)
सूष् (सक०) फल उत्पन्न करना, उत्पन्न करना, जन्म देना।
सूष् (अक०) रहना, निवास करना। 'सर्वेमनुष्यैरिह सूषितव्यमितीव' (वीरो० १३/८)
सूषणा (स्त्री०) [सूष्+युच्+टाप्] माता।
सूष्यती (स्त्री०) प्रसवोन्मुखी, आसन्न प्रसवा।
सृ (अक०) जाना, पहुंचना, दौड़ना, चलना।
सृकः (पुं०) [सृ+कक्] पवन, वायु, हवा।
० बाण, ० वज्र, ० कमल। ० रक्त। (हि० ४३)
सृकसमितः (वि०) रक्तरंजित। (जयो० ८/३६)
सृकण्डु (स्त्री०) खुजली।
सृकालः (पुं०) [सृ+कालन्] श्रृगाल।
सृक्कन् (नपुं०) मुख का किनारा।
सृगः (पुं०) [सृ+गक्] ० भिंदिपाल, तेज बाण।
सृगालः (पुं०) श्रृगाल।
सृङ्का (स्त्री०) मणियों का हार।
सृज् (सक०) रचना, बनाना, तैयार करना।
० प्रसव करना, जन्म देना।
० उगलना, निकालना।
० फेंकना, छोड़ना।
सृजिकाक्षारः (पुं०) शोरा, देह, सञ्जीसार।
सृणिका (स्त्री०) [सृणि+कन्] लार। ० थूक।
सृणिप्रकार (पुं०) अंकुश। (समु० ३/१९)
सृतिः (स्त्री०) [सृ+क्तिन्] सरकना।
० संचालन। (जयो० २/५८)
० पथ, मार्ग, रास्ता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सृत्वर (वि०) सरणशील, जाने वाला।

सृत्वरी (स्त्री०) [सृ+क्वरप्] नदी, सरिता, दरिया। ० माता।

सृदरः (पुं०) सर्प, सांप।

सृदारकः (पुं०) [सृ+काकु+दुकच्] पवन, हवा, वायु।
० अग्नि, ० हरिण, ० इन्द्र का वज्र।

सृदाकु (स्त्री०) नदी, सरिता।

सृप् (अक०) रेंगना, सरकना, खिसकना, इधर-उधर घूमना।

सृपाटः (पुं०) एक माप विशेष।

सृपाटिका (स्त्री०) [सृपाट+ङीष्+कन्+टाप्] पक्षी का चोंच।
० एक संहनन।

सृप्रः (पुं०) [सृप्+कन्] चन्द्र, शशि।

सृभ् (सक०) चोट पहुंचाना, घायल करना।

सृमर (वि०) [सृ+क्मरच्] गमन करने वाला, जाने वाला।

सृष्ट (भू०क०कृ०) [सृज्+क्त] रचित, प्रतिपादित, ० परित्यक्त, छोड़ा गया।
० निर्धारित, ० संयुक्त, संबद्ध।
० अलंकृत, ० अधिक, बहुत, प्रचुर, पर्याप्त।

सृष्टा (वि०) विधाता। (वीरो० १८/१५)

सृष्टिः (स्त्री०) [ऋज्+क्तिन्] रचना, विनिर्माण। (जयो० ११/२९) सर्जक। (जयो० ७/३३)
लोकोक्तरकपि सृष्टैः पितामहो ब्रह्मा सर्जकः
० प्रकृति रचना। ० भेंट।
एवं तु षड्द्रव्यमपीयमिष्टिर्यतः
समुत्था स्व्यमेव सृष्टिः। (वीरो० १९/३८)
दृष्टिः सृष्टिरपूर्वैकृष्टिर्विश्वस्य
सृष्टितथेयं चिदचिद्विघातः। (समु० ८/५)

सृष्टिकः (पुं०) पाक्षिक श्रावक। (जयो० २/१३)

सृष्टिसम्पादकः (पुं०) प्रजापति। (जयो०वृ० ११/१२)

सेक् (सक०) जाना, पहुंचना।

सेकः (पुं०) [सिच्+घञ्] छिड़कना, पानी देना, सींचना।
० तपर्ण।

सेकिमम् (नपुं०) [सेक+ठिम्] मूली।

सेक्तृ (वि०) [सिच्+तृच्] सींचने वाला।

सेक्तृ (वि०) पति।

सेक्त्रम् (नपुं०) [सिच्+ष्ट्रन्] ढोलची।

सेचक (वि०) सींचने वाला।

सेचकः (पुं०) मेघ, बादल।

सेचनम् (नपुं०) [सिच्+ल्युट्] सींचना, पानी डालना।
० अभिषेक।
० स्राव, छिड़काव। ० टपकना, ० रिसना।

सेचनी (वि०) डोलची।

सेटुः (पुं०) [सिट्+उन्] तरबूज।

सेतिका (वि०) अयोध्या।

सेतुः (पुं०) [सि+तुन्] पुल, बांध (समु० १/२) तटबंध (भक्ति० १)
० किनारा (सम्य० १२५) मेंड।
० दर्रा, संकीर्ण मार्ग।
० दृढ़, सीमा, परिसीमा।

सेतुकः (पुं०) [सेतु+क] पुल। ० समुद्रतट।
० दर्रा।

सेतुबन्धः (पुं०) पुल का निर्माण।
० एक प्राकृत का महाकाव्य।

सेतुभेदिन् (वि०) बन्धन तोड़ने वाला। बाधा समाप्त करने वाला।

सेत्रम् (नपुं०) बंधन, हथकड़ी, बेड़ी।

सेन (वि०) प्रभु सत्ता युक्त। ० नेतृत्व युक्त।

सेना (स्त्री०) [सि+न+टाप्] ध्वजिनी। (जयो० १३/३७) जिसमें अनेक घोड़े, हाथी, पदाति एवं हथियार हो।

सेना-मृगसेन की धीवर की धीवरी। (दयो० १०)

सेनाचरः (पुं०) सैनिक, अनुचर वर्ग। (वीरो० १९/२)

सेनानायकः (पुं०) सेनापति, समनीकिनीश्वर। (जयो० २१/१)

सेना निवेशः (पुं०) सेना शिविर, पड़ाव।
सेना की चौकी। ० सुरक्षा कर्मियों का पड़ाव।

सेनापतिः (पुं०) [सेनायाः प्रभु] सेनानायक, चमूपति। (जयो०वृ० २१/२) (वीरो० १५/५०)

सेनापरिच्छद (वि०) सेना से घिरा हुआ।

सेनापृष्ठम् (नपुं०) सेना का पिछला भाग।

सेनाभङ्गः (पुं०) सेना का विखराव। सैनिकों का तितर-बितर होना।

सेनामुखम् (नपुं०) सेना की टुकड़ी।

सेनायोगः (पुं०) सेना की सज्जा। ० चतुरंगिणी सेना समूह।

सेनारक्षः (पुं०) सन्तरी, पहरेदार।

सेनास्तम्भनम् (नपुं०) सेना कीलन। (जयो० १९/७२)

सेमन्ती (स्त्री०) [सिम्+झि+ङीष्] सेवती, सफेद गुलाब।

सेरः (पुं०) माप, वस्तु क्रय-विक्रय का बांट।

सेव् (अक०) सेवा करना, सम्मान करना। सेवामो यां वयं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुवि। (वीरो० १७/४१)

० सेवन करना। (सुद० १२२) (जयो० २/१८, १/९५)

० आराधना करना। (जयो० ३/५, ३/१०८)

० संरक्षित करना। (जयो० ३/५)

० पोषण करना। (वीरो० ५/३०)

० अनुगमन करना, पीछा करना। अनुसरण करना।

० सहारा लेना, रहना।

० अभ्यास करना, अनुष्ठान करना।

सेवक (वि०) [सेव्+ण्वुल्] सम्मान करने वाला, सेवा करने वाला।

० आराधक। (भक्ति०)

सेवकः (पुं०) दास, भक्त, पूजक। (दयो० १०८) (जयो०वृ० १/१०८)

० अनुजीविजन (जयो०वृ० १६/४३) सेवकस्य चेष्टा सुखहेतुः। (सुद० ९२)

० दर्जी, ० भृत्य (जयो० ४/१८) परिचारक (जयो०५/२०)

सेवकता (वि०) सेवकपना। (वीरो० १५/४०)

सेवकोत्कर्षः (पुं०) सम्मान का उत्कर्ष। (जयो०)

सेवधि (अव्य०) सेवा भाव से।

सेवनम् (नपुं०) [सेव्+ल्युट्] उपयोग करना, उपभोग करना।

० पूजा करना, सम्मान करना।

० अनुगमन करना, अभ्यास करना।

सेवनी (स्त्री०) [सेवन+ङीप्] सुई, सीवन।

० संधिरेखा।

सेवमान (सेव्+शानच्) सेवा करने वाला। (वीरो० १५/२३)

सेवा (स्त्री०) [सेव्+अङ्+टाप्] परिचर्या (वीरो० ५/५)

० सम्मान। (सुद० ७३)

० संलग्नता, तत्परता।

० पूजा, भक्ति।

० उपयोग, ० अभ्यास।

० आश्रय लेना।

सेवाकारक (वि०) परिचारक। (जयो०वृ० २०/१९)

सेवाकार (वि०) दासता युक्त।

सेवाकाकु (स्त्री०) सेवा परिवर्तन।

सेवापरायणः (पुं०) सेवा में तत्पर। (वीरो० १४/१८)

सेवार्तसंहननम् (नपुं०) एक संहनन का नाम।

सेवावृत (पुं०) कि कर्त्तव्यविमूढ। (सुद०)

सेवि (वि०) नपुं०) बेर। ० सेव।

सेविका (स्त्री०) परिणेत्री, परिचारिका। (जयो०वृ० १२/१८)

सेवित (भू०क०कृ०) [सेव्+क्त] सेवा किया गया। ० अनुगत, अभ्यस्त।

० उपभुक्त।

सेवितृ (पुं०) [सेव्+तृच्] सेवक, दास।

सेविन् (वि०) [सेव+णिनि] सेवा करने वाला, सम्मान करने वाला, पूजा करने वाला।

सेविनी (वि०) सेवाकारिणी। (जयो० १/४)

सेव्य (वि०) [सेव्+ण्यत्] सेवनीय। सेवा करने योग्य। (वीरो०५/२१) (जयो० ५/४७)

० सम्मान योग्य, पूजनीय, समादरणीय।

सै (सक०) क्षीण होना, नष्ट होना।

सैकत (वि०) [सिकताः सन्त्यत्र अण्] रेतीला, कंकरीला, ०बालुकामयी, ०धूलीप्राय। सिकताया इदं सैकतम्। (जयो० ११/५९)

सैकतलक्षणा (वि०) उत्तम अभिलाषा युक्त। एकं तलं तस्य क्षण उत्सवो यस्या उत्तमाभिलाषवती। (जयो० ११/५९)

सैकतिक (वि०) [सैकत+ठन्] रेतीले तट वाला, कंकरीट युक्त।

सैकतिकः (पुं०) साधु।

सैद्धान्तिक (वि०) [सिद्धान्त+ठक्] सिद्धान्त सम्बन्धी। यथार्थ उद्घाटन करने वाला मत।

सैनापत्यम् (नपुं०) [सेनापति+ष्यञ्] सेना की अध्यक्षता।

सैनिक (पुं०) सिपाही, फौजी, सुरक्षाकर्मी।

० संतरी।

सैन्धव (वि०) [सिन्धुनदीसमीपे देशे भवः अण्] सिन्धु प्रान्त में उत्पन्न होने वाला।

० सिन्धु नदी सम्बंधी।

सैन्धवः (पुं०) सैन्धव नमक, सेंधा नमक।

० प्रशंसनीय घोड़ा। (जयो० २१/२२)

सैन्धवक (वि०) [सैन्धव+वुञ्] सैन्धव से सम्बंध रखने वाला।

सैन्यः (पुं०) [सेनायां समवैति वुञ्] सैनिक, सिपाही, फौजी, संतरी।

सैन्यम् (नपुं०) सेना की टुकड़ी, सैन्य समूह, सैनिक जत्था।

सैन्यभयः (पुं०) सेना का भय। (जयो० १३/५१)

सैन्यसागरः (पुं०) सेना रूपी समुद्र, सैन्य समूह। (जयो०१३/३२)

० चतुरंगिणी सेना।

सैमन्तिकम् (नपुं०) [सीमन्त+ठक्] सिन्दूर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सैरन्ध्रः (पुं०) [सीरं हलं धृति-सीर+धृ+क] किंकर, भृत्य।
सैरन्ध्री (स्त्री०) किंकरी, दासी, परिचारिका, सेविका।
सैरिक (वि०) [सीर+ठक्] हल से सम्बंधित।
सैरिकः (पुं०) हाली, हल चलाने वाला बैल।
सैष (अव्य०) वही-सैष इत्यत्र स चैष इति पादपूर्तौविधिः (जयो० २७/६५)
सो (अक०) ० वध करना, नाश करना, समाप्त करना।
० परिणाम होना, निर्धारित होना, नष्ट होना, क्षीण होना।
सोढ (भू०क०कृ०) [सह+क्त] सहन किया गया, भुगता गया।
सोढुम्-अङ्गीकर्तुम् (वीरो० ६/७)
सोढृ (वि०) [सह+तृच्] सहनशील, सहिष्णु।
० शक्तिशाली, समर्थ, बलवान्।
सोत्क (वि०) [सह उत्केन्] अत्यन्त, उत्सुक, आतुर, आकुल, खिन्न। दुःखपूर्ण।
सोत्कण्ठ (वि०) उत्कण्ठा युक्त, उत्साहजन्य।
० सलालसा। (जयो०वृ० ११/१)
० आतुर, व्याकुल, खिन्न।
सोत्कण्ठम् (अव्य०) उत्साहपूर्वक।
सोत्कण्ठमनस् (वि०) उत्साह युक्त मन वाला। (वीरो०१२/२६)
सोत्प्रास (वि०) [सह उत्प्रासेन] व्यंगपूर्ण, अतिशयोक्तिपूर्ण।
सोत्प्रासः (पुं०) अट्टहास, तीव्र ह्रास, व्यंगवचन।
सोत्सव (वि०) [उत्सवेन सह] उत्सव युक्त, हर्ष से परिपूर्ण।
सोत्साह (वि०) [सह उत्साहेन] ०प्रबल, ०सक्रिय, ०उत्साही, ०धीर। (सम्य० ९५) ०उत्साह सहित, ०उमंग से परिपूर्ण।
सोत्सुक (वि०) आतुर, खिन्न, व्याकुल।
० उत्कण्ठित, लालायित।
सोत्सेध (वि०) [सह उत्सेधेन] उन्नत, ऊंचा, उत्तुंग।
सोदक (वि०) शीतल जल युक्त। (सुद० ८६)
सोदर (वि०) [समानमुदरं यस्य] सहोदर, एक ही उदर से उत्पन्न। (वीरो० ९/८)
सोदर्यः (पुं०) सहोदर भाई, सगा भाई।
सोदाहरणप्रसिद्धिः (स्त्री०) उदाहरण सहित ख्याति। (समु० १/३५)
सोद्योग (वि०) [सह उद्योगेन] परिश्रमी, उद्यमी, सक्रिय। धीर, मेहनती।
सोद्वेग (वि०) [सह उद्वेगेन] आतुर, व्याकुल, शोक समन्वित, दुःख से घिरा हुआ।
सोनहः (पुं०) [सु+विच्+सो] लहसुन।
सोन्माद (वि०) [सह उन्मादेन] मदविक्षिप्त, पागल, उन्मत्त, मदहोश।
सोपकरण (वि०) [सह उपकरणेन] उपकरण युक्त, सुसज्जित।
सोपद्रव (वि०) [सह उपद्रवेण] उपद्रव सहित, संकट ग्रस्त।
सोपध [सह उपधया] उपधा सहित, कपटी, छल से परिपूर्ण।
सोपधि (वि०) [सह उपधिना] छली, कपटी, धूर्त।
सोपप्लव (वि०) [सह उपप्लवेन] संकटग्रस्त, आक्रान्त, भयाकुल।
सोपरोध (वि०) [सह उपरोधेन] अवरुद्ध, बाधायुक्त, अनुगृहीत।
सोपसर्ग (वि०) [सह उपसर्गेण] उपद्रव युक्त, उपसर्ग युक्त, संकट युक्त।
सोपहारकरण (वि०) उपहार युक्त। (जयो०)
सोपहास (वि०) [सह उपहासेन] व्यंगमय, उपलंभपूर्ण।
सोपहासम् (अव्य०) उपालंभपूर्वक।
सोपाधि (वि०) [सह उपाधिना] उपाधि सहित।
० सीमित, मर्यादित।
सोपानम् (नपुं०) [उप+अन्+घञ्] उपानः उपरिगतिः सह विद्यमानः उपानः येन। सीढ़ी, जीना, पंक्ति।
सोपानततिः (स्त्री०) सोपान परम्परा। (सुद० २/१०)
सोपानपंक्ति (स्त्री०) सीढ़ियां। (जयो० २४/७)
सोपानपथः (पुं०) सीढ़ी, जीना।
सोपमार्गः (पुं०) देखो ऊपर।
सोपानसम्पत्ति (स्त्री०) सीढ़ियां। (वीरो० ४/२७)
सोपाहरत्व (वि०) अपहरण युक्त। (सुद० ९९)
सोमः (पुं०) किरण, चन्द्र।
० पवन, वायु। सोमः समस्त्वेष सतां (जयो० १/३३) वतंसः (जयो० ११/१४)
० नाभि, चन्द्र। (सुद० ३/४०)
० सोम राजा। (जयो० १/२५) जो जयकुमार के पिता थे।
सोम (वि०) यश, कीर्ति, सौम्यता।
० सुन्दराकार। (जयो० १२/११८) (सुद० ८७)
सोमम् (नपुं०) आकाश, नभ, गगन।
सोमकला (स्त्री०) चन्द्रकला। (जयो० ६/५६)
सोमकान्तः (पुं०) चन्द्रकान्त मणि।
सोमकुलप्रदीपः (पुं०) जयकुमार। (जयो० ६/१३१)
सोमक्षयः (पुं०) चन्द्रह्रास।
सोमग्रहं (नपुं०) सोमारस रखने का पात्र।
सोमच्छल (नपुं०) चन्द्र के ब्याज, शशि के बहाने। (जयो० १/३३) सोमश्चन्द्रः तयोश्छलात् मिषात् (जयो० १/३३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोमज (वि०) चन्द्र से उत्पन्न।

सोमजः (पुं०) जयकुमार का नाम। जो एक कुशल शासक था। ० बुधग्रह।

सोमजोज्ज्वलः (पुं०) जयकुमार। (जयो० ७/८६)

सोमजम् (नपुं०) दुग्ध, दूध, क्षीर।

सोमदत्तः (पुं०) कोशाम्बिका का एक पंडित। (दयो० ९१)

सोमदासः (पुं०) शिंशपावासीधीवर। (दयो० १०)

सोमधारी (स्त्री०) गगन, आकाश, नभ।

सोमनाथः (पुं०) ० अष्ठमतीर्थंकर चन्द्रप्रभु। ० शिव।

सोमप (वि०) सोमरस पान करने वाला।

सोमपतिः (पुं०) चन्द्र, शशि।

सोमपानम् (नपुं०) सोमरस का पान, अमृतपान।

सोमपाथिन् (वि०) सोमदर पीने वाला।

सोमपुत्रः (पुं०) बुध। ० सोमराजा का पुत्र। ० जयकुमार। (जयो० ८/४६)

सोमप्रवाकः (पुं०) सोमयज्ञ कर्ता।

सोमबन्धुः (पुं०) कुमुद।

सोमभूः (पुं०) बुध।

सोमयज्ञः (पुं०) सोमरस से समन्वित यज्ञ।

सोमयोनि (स्त्री०) चन्द्र योनि।

सोमराजन् (पुं०) जयकुमार के पिताश्री।

सोमलता (स्त्री०) गोदावरी नदी।

सोमवंश (पुं०) चन्द्रवंश, इन्द्रवंश। (जयो० ७/९१)

सोमवंशजात (वि०) सोमवश में उत्पन्न। (जयो० ७/९१)

सोमवारः (पुं०) सोमवार, चन्द्रवार।

सोमवासरः (पुं०) सोमवार, चन्द्रवार।

सोमविचारः (पुं०) सोमस्य विचारो यत्र तत्सोमविचारम् चन्द्रतुल्यमित्यर्थः। (जयो० ५/४१) ० सरल विचार।

सोमवृक्षः (पुं०) सफेद खैर।

सोमशकला (स्त्री०) एक ककड़ी का नाम।

सोमशर्मन् (पुं०) सोमशर्मा नामक ब्राह्मण कोशाम्बिका नगरी एक पण्डित। (दयो० ९१) सोमशर्माङ्गनेवाहं साहाय्यं ते तनोमि भो!

सोमशिला (स्त्री०) चन्द्र शिला। (जयो० १/११) यशः प्रशस्ति।

सोमशोभिन् (वि०) चन्द्र शोभित। (जयो० ४/५९) (जयो०वृ० १/१५)

सोमसिन्धुः (पुं०) विष्णु।

सोमसुत् (पुं०) सोम खींचने वाला व्यक्ति।

सोमसुतः (पुं०) जयकुमार।

सोमसुता (स्त्री०) नर्मदा।

सोमसूत्रम् (नपुं०) चन्द्र प्रवाह।

सोमसूनु (पुं०) जयकुमार। (जयो० ७/२३, ५/२९)

सोमा (स्त्री०) पार्वती। (जयो०वृ० ५/५९)

सोमाङ्गजः (पुं०) सोमाख्य राज्ञः पुत्रः सोमराजा। का पुत्र। (जयो० ६/११२)

सोमात्मजः (पुं०) जयकुमार। (जयो० ७/१०)

सोमोदयकारिन् (पुं०) सोमवंश का उदय-जयकुमार। (जयो० ८/५०)

सोम्य (वि०) [सोम+यत्] सोम रस के योग्य, अमृत तुल्य। ० मृदु, सुकुमार, सरल, मिलनसार।

सोरस्ताडम् (नपुं०) प्रशस्ति। (जयो० ६/६०)

सोल्लुकण्ठः (पुं०) [उल्लुण्ठेन सह] ० व्यंग्य, ताना, उपहास। चुटकी।

सोष्मन् (वि०) [सह उष्मणा] गरम, तप्त।

सौकर (वि०) सूकर सम्बन्धी।

सौकर्यम् (वि०) सुअरपना। ० आसानी, सुविधा। (जयो० २३/७५)

सौकान्त (वि०) कान्तियुक्त होना।

सौकुमार्यम् (वि०) सुकुमारता, कोमलता, मृदुता, सरलता।

सौक्ष्म्यम् (वि०) [सूक्ष्म+ष्यञ्] सूक्ष्मता, महीनता।

सौख्यम् (वि०) [सुख+ष्यञ्] संतोष, प्रसन्नता, हर्ष, खुशी। आनन्द। मोहादहो पश्यति बाह्यवस्तुन्यङ्गीति सौख्यं गुणमात्मनस्तु (सुद० १११)

सौख्यपदम् (नपुं०) सुख स्थान। (समु० ४/२७)

सौख्य-संसरणं (नपुं०) सुख पूर्वक परिभ्रमण। (जयो०वृ०२/१२)

सौख्यसाधनम् (नपुं०) सुख-सुविधा। (जयो० २/५५)

सौगतः (पुं०) [सुगत्+अण्] बौद्ध, बुद्धप्रवर्तक। अविकल्पक-तोत्साहे सौगतस्येव दर्शने (वीरो० ८/२१) ० बौद्धमत। (जयो०वृ० १८/६०)

सौगत (वि०) अच्छी तरह। (जयो०वृ० १८/६०)

सौगन्तिकः (पुं०) [सुगत+ठक्] बौद्ध, बौद्ध भिक्षु।

सौगन्ध (वि०) [सुगन्ध+अण्] सुगन्धित, सुरभि युक्त।

सौगन्धिक (वि०) [सुगन्ध+ठन्] सुरभित, सुगन्ध से परिपूर्ण। ० सुगंधी जानने वाला। (वीरो० २०/८)

सौगन्धिकः (पुं०) गन्धक द्रव्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सौगन्धिकम् (नपुं०) सफेद कुमुद, नील कमल, घास विशेष।

सौगन्ध्यम् (नपुं०) सुवास, गन्ध, सुरभी। (जयो० २०/९५)

सौगन्ध्यवायु (पुं०) सुरभियुक्त पवन। (जयो० ३१)

सौचिकः (पुं०) दर्जी, नामदेव, नागर।

सौजन्यम् (नपुं०) [सुजन+ष्यञ्] भलाई, महिमा, उदारता। (जयो० १२/११, दयो० ९८)

० कृपा, करुणा, अनुकम्पा।

सौण्डी (स्त्री०) [शुण्डा+अण्+ङीप्] गजपीपल।

सौति (पुं०) कर्ण।

सौत्र (वि०) [सूत्र+अण्] सूत्र सम्बंधी, सूत्र में निर्दिष्ट।

सौत्रः (पुं०) ब्राह्मण का एक वर्ग।

सौत्रान्तिकः (पुं०) बौद्धमत की एक विचारधारा।

सौदर्यम् (नपुं०) [सोद+ष्यञ्] भ्रातृत्व, भाईपना।

सौदामनी/सौदामिनी (स्त्री०) [सुदामा पर्वत भेदः तेन एकादिक्, सुदामन्+अण्+ङीप्] विद्युत, तडित, बिजली। (जयो० १७/१०२)

सौदायिक (वि०) उपहारित वस्तु, दहेज।

सौदार्हवंशगत (वि०) स्वाभाविक प्रीति युक्त। सौदार्हसहजप्रेम्णो वशंगताभिः। (जयो० १९/८)

सौध (वि०) [सुधया निर्मित रक्त वा अण्]

० अमृतमय, पीयूषसम। (जयो० ११/४९)

० चूने से पुता, धवलित। शुभ्र (वीरो० ११/२७)

सौधम् (नपुं०) रङ्ग प्रासाद, राजमहल। (जयो०वृ० ११/४९)

० हर्म्य। (जयो० १५/४५)

० भवन, प्रासाद। (सुद० ११७) ० विशाल भवन।

सौधकारः (पुं०) मकान बनाने वाला, भवन निर्माता।

सौधकेतुः (पुं०) शुभ्रपताका। (वीरो० ११/२७)

सौधगणग्रहीतिः (स्त्री०) प्रासाद परम्परा प्राप्ति। (जयो० २०/३०)

सौधपदम् (नपुं०) धवल भवन। (वीरो० २/३३)

सौधशिरम् (नपुं०) छत, भवन का ऊपरी भाग।

'सौधं हर्म्यं तस्य शिर उपरिभागम्' (जयो० १५/४५)

सौधसमूहः (पुं०) प्रासाद मण्डल। (सुद० १/२६)

सौधसम्पद्दलम् (नपुं०) नागवल्ली-सुधायाश्चूर्णस्य सम्पद्यत्रतत् दलं (जयो० १२/१३४)

सौधाग्रः (पुं०) भवन का अग्रभाग। (वीरो० २/४५)

सौन (वि०) [सूना+अण्] कसाईपना।

सौनन्दिन् (पुं०) [सौनंद+इनि] बलराम।

सौनिकः (पुं०) कसाई।

सौंदर्यम् (वि०) [सुंदर+ष्यञ्] मनोहरता, रमणीयता, लावण्यता सुंदरता। (जयो० २/१४८) (समु० ६/२५) लालित्य। (सुद०वृ० १२०)

० सुरूप। (जयो० १४/२५)

सौन्दर्यगर्विष्ठ्य (वि०) लावण्य के गर्व/अहंकार से परिपूर्ण।

वामाङ्ग्या परिभर्त्सितः

स्ववपुषः सौन्दर्यगर्विष्ठया। (सुद० ९८)

सौन्दर्यचर (वि०) रमणीयता युक्त।

सौन्दर्यधारग (वि०) लावण्य को धारण करने वाला।

सौन्दर्यमात्रा (स्त्री०) रमणीय सत्ता। (जयो० ३/८६)

सौन्दर्यमात्रारोपः (पुं०) सौन्दर्य मात्र का आरोपण। (जयो० ३/४९)

रमणीयतारोपणपरिणाम।

सौन्दर्यशालिन् (वि०) लावण्य युक्त। (दयो० १०८)

सौन्दर्यसमुद्रः (पुं०) सुरूपनिधि। (जयो० ४/४५) लावण्योदधि। (जयो० ३/६३)

सौन्दर्यसम्पत्तिः (स्त्री०) सुरूपराशि। (जयो० १४/२६)

सौन्दर्यार्थिनि (वि०) रमणीयता इच्छुक। (जयो० ३/८६)

सौपर्णम् (नपुं०) [सुपर्ण+अण्] सोंठ, सूखा अदरक। ० मरकत।

सौपर्णेयः (पुं०) [सुपर्ण्याः विनतायाः अपत्यं सुपर्णीः+ढक्] गरुड़।

सौप्तिक (वि०) [सुप्ति+ठक्] निद्राजनक।

सौबलः (पुं०) [सुबल+अण्] शकुनि।

सौबली (स्त्री०) [सौबल+ङीप्] धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी।

सौभम् (नपुं०) एक नगर का नाम।

सौभगम् (नपुं०) [सुभग+अण्] ० सौभाग्य। ० समृद्धि, धन, वैभव।

सौभद्रः (पुं०) सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु।

सौभद्रेय (पुं०) अभिमन्यु।

सौभागिनेयः (पुं०) [सुभगा ढक्, इनङ् द्विपदवृद्धिः] सबसे प्रिय पुत्र।

सौभाग्यम् (नपुं०) [सुभगायाः सुभगस्य वा भाव-ष्यञ्, द्विपदवृद्धिः] ० सुलक्षण, उन्नत भाग्य, सुख-सुविधा। त्वं तस्याः प्रकृतेः प्रयोगवशतः सौभाग्यमिच्छुर्वत (मुनि० २४)

० संविधान। (जयो०वृ० १/५१)

० अनुग्रह। (जयो० ५/७९)

० प्रसाद। (वीरो० २/३१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० एक दूसरे के प्रति परस्पर स्नेह।
० सुअवसर-'यत: सौभाग्यं भयात्' (सुद० ७२)
सौभाग्यकुसुमम् (नपुं०) पुण्य रूपी पुष्प। (जयो०वृ० २०/८१)
सौभाग्यगुणानुयोग: (पुं०) सौभाग्य के गुण का अनुयोग, पारस्परिक प्रेम का कारण। सापीह सौभाग्यगुणानुयोगादनेन सार्द्धं सुकतोपयोगा। (समु० ६/२३)
सौभाग्यभृत् (वि०) सौभाग्यशालिनी। (जयो० १६/७)
सौभाग्यवती (स्त्री०) ० सुवासिनी। (जयो०वृ० १२/१०८)
० सुमानिनी। (जयो०वृ० १२/३५) ० स्नही, प्रिया।
० सुलक्षणा। (जयो०वृ० ९/९७)
सौभाग्यशालिनी (स्त्री०) सुलक्षणा, गुणवती, स्नेही। (दयो०१/१६)
० सुभगा, सुंदरी। (जयो०वृ० ३/३९)
सौभाग्यसुमैकसृक्क (वि०) सौभाग्यकुसुमनिर्माणकारी। (जयो० २०/८१) ० माला बनाने वाली, मालिन।
सौभ्रात्रम् (नपुं०) [सुभ्रातृ+अण्] भाईचारा, बंधुता।
सौभिक: (पुं०) जादूगर, ऐन्द्रजालिक।
सौमनस (वि०) [सुमनस्+अण्] भावनानुकूल, सुखद, कृपायुक्त।
सौमनस्यम् (नपुं०) [सुमनस्+ष्यञ्] ० हर्ष, आनन्द। (भक्ति० ३६)
० देवत्व, सच्चितत्त्व। (जयो० ११/७४)
सौमनस्यायकी (स्त्री०) [सौमनस्य+अय+ल्युट्+ङीप्] मालती लता की मंजरी।
सौमायन: (पुं०) [सोम+फक्] बुद्ध का एक नाम।
सौमिक (वि०) [सोम+ठक्] सोमरस सम्बंध, चन्द्र सम्बंधी।
सौमित्र: (पुं०) [सुमित्रा+अण्] लक्ष्मण।
सौमिल्ल: (पुं०) एक नाटककार का नाम।
सौमेचकम् (नपुं०) स्वर्ण, सोना।
सौमेरुक (वि०) [सुमेरु+कञ्] सुमेरु सम्बंधी।
सौमेरुकम् (नपुं०) स्वर्ण, सोना।
सौम्य (वि०) [सोमो देवतास्य तस्येदं वा अण्] चन्द्र सम्बंधी।
० सुंदर, सुखद, शान्तभाव युक्त।
० प्रिय, मृदुल, कोमल, स्निग्ध।
सौम्य: (पुं०) बुधग्रह।
सौम्यगन्धी (स्त्री०) सफेद गुलाब।
सौम्यकृच्छ्र: (पुं०) धर्मसाधना विशेष।
सौम्यग्रह: (पुं०) सुखद ग्रह, शान्तिदायक ग्रह।
सौम्यधातु: (पुं०) कफ, श्लेष्मा।
सौम्यनामन् (वि०) सुखद नाम वाला।
सौम्यमूर्ति (स्त्री०) शान्त प्रकृति। (जयो० ५/१०२) चन्द्र। (जयो० ५/९१)
सौम्यवार: (पुं०) बुधवार।
सौम्यवासर: (पुं०) बुधवाद।
सौम्याकृति: (स्त्री०) अरुद्र, उत्तम आकृति। (जयो० १२/५)
सौर (वि०) [सूर्+अण्] दिव्य, देव सम्बंधी, स्वर्ग। (सुद०२/३९)
सौर: (पुं०) शनिग्रह। ० सौर्यमास।
० देव। (जयो० १८/५)
सौरथ: (पुं०) [सुरथ+अण्] वीर, योद्धा।
सौरभ (वि०) [सुरभि+अण्] सुगन्धित। सुराणां भा तदर्थमस्तु (जयो० ११/९५)
० परिमल, गन्ध। (जयो० ११/९५)
सौरभ: (पुं०) देव। (जयो० २२/१३)
सौरभम् (नपुं०) सुगन्ध। (जयो० ९/९१) सुराणां सम्बंधी सौरश्चासौ भवश्च स यस्यास्तीति-(जयो० १२/३२) विलसति सौरभे सुगन्धे। (जयो०वृ० १२/३२)
सौरभत: (वि०) सुगन्धि युक्त। (सुद० ९/२५)
सौरभव: (पुं०) देव जाति-सुरस्यैष सौर: स चासौ भवश्च सौरभवो देवजातिस्तु (जयो० १८/५१)
० स्वर्गवासी देव। (सुद० २/३९)
सौरभभाव: (पुं०) देवभाव-सुराणामसौ सौर: सौरभाव। (जयो० २२/१३)
सौरभविग्रह: (पुं०) सुगन्ध की चाह, सुरभि-इच्छा। 'सौरभे सुगन्धे विग्रह: शरीरं यस्य' (जयो०वृ० १२/३२)
सौरभाश्रयणम् (नपुं०) सौरभ युक्त। सूरस्याऽसौ सौरा सा चासौ भा च तस्या: श्रयणमाशु नयन्तु। (जयो० ४/१८)
सौरभ्भम् (नपुं०) [सुरभि+ष्यञ्] ० सुगन्ध, मधुर गन्ध।
० रोचकता, सौंदर्य।
० सदाचरण, कीर्ति।
सौरसेनी (स्त्री०) एक प्राचीन प्राकृत भाषा, जिसका उत्पत्ति स्थान शूरसेन/मथुरा के आसपास का क्षेत्र माना जाता है।
सौरसैन्धव (वि०) [सुरसिन्धु+अण्] स्वर्ग गंगा सम्बंधी।
सौराज्यम् (नपुं०) [सुराज्य+ष्यञ्] अच्छा प्रशासन, उत्कृष्ट राज्य व्यवस्था।
सौराष्ट्र (वि०) [सुराष्ट्र+अण्] सौराष्ट्र सम्बंधी, गुजरात का एक हिस्सा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सौराष्ट्रम् (नपुं०) सौराष्ट्र प्रदेश।
सौरिः (पुं०) [सूरस्यापत्यं पुमान् इञ्] शनिग्रह।
सौरिक (वि०) दिव्य, स्वर्ग सम्बंधी।
० आसवीय, मदिरा सम्बंधी।
सौरिकः (पुं०) शनि। ० स्वर्ग।
० कलाल, ० मदिरा।
सौरी (स्त्री०) सूर्य पत्नी।
सौरीय (वि०) सूर्य सम्बधी। सूर्य के योग्य।
सौर्य (वि०) सूर्य से सम्बंधित।
सौलभ्यम् (नपुं०) [सुलभ+ष्यञ्] सुलभता, सुगमता।
० प्राप्ति की सुविधा।
सौल्विकः (पुं०) [सुल्व+ठक्] ताम्रकार, कसेरा।
सौव (वि०) स्वर्गीय, दिव्य।
सौवम् (नपुं०) आदेश, राजाज्ञा।
सौवग्रामिक (वि०) गांव से सम्बन्धित।
सौवर (वि०) एक ध्वनि विशेष, स्वर सम्बंधी।
सौवर्चल (वि०) [सुवर्चल+अण्] सुवर्चल नामक देश को प्राप्त।
सौवर्ण (वि०) [सुवर्ण+अण्] सुनहरी।
० स्वर्णमुद्रा के तुल्य।
सौवर्ण्य (वि०) शोभनो वर्णो रूपं यस्य स-अच्छा वर्ण।
सौवस्तिक (वि०) [स्वस्ति+ठक्] आशीर्वादात्मक।
सौवाध्यायिक (वि०) [स्वाध्याय+ठक्] स्वाध्याय सम्बंधी, स्वाध्यायी।
सौविदः (पुं०) [सु+विद्+क अण् सुष्ठु विदन्नृपः लं लाति-ला+क+अण्] कञ्चुकी, अन्तःपुर का बृद्ध व्यक्ति। (जयो० ५/६०)
सौवीरम् (नपुं०) [सुवीर+अण्] बेर फल।
० अंजन, सुरमा।
० कौजी।
सौवीरकः (पुं०) [सौवीर+कन्] बेरी, बेर का पेड़।
सौवीर्यम् (वि०) [सुवीर+ष्यञ्] विक्रम, वीरता।
सौष्य (वि०) पराक्रम्प।
सौशील्यम् (नपुं०) [सुशील+ष्यञ्] सदाचरण, नैतिक आचरण।
सौश्रवसम् (नपुं०) [सुश्रवस+अण्] ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति।
सौष्ठवम् (नपुं०) परकौशल, पुष्टता, सौन्दर्य, लालित्य।
लोमोत्थितिः सौष्ठववैजयन्त्यां,
सुमेषु साम्राज्यपदं लिखन्त्याम्। (जयो० ११/३२)
० सौन्दर्य, सुंदरता। (जयो० ११/९२)
० भलाई, चतुराई, श्रेष्ठता, रमणीयता। इहाङ्गसम्भावित सौष्ठवस्य (जयो० १/४६)
सौस्थ्य (वि०) सुस्थिति युक्त। (जयो०वृ० १/३०)
सौस्नातिकः (पुं०) [सुस्नात+ठक्] स्नान को पूछने वाला।
सौहार्दः (पुं०) [सुहृद्+अण्] मित्र का पुत्र।
सौहार्दम् (वि०) सरलभाव। (हित० ५०)
० मैत्रीभाव-सौहार्दमङ्गिमात्रे तु क्लिष्टे कारुण्यमुत्सवम्। (सुद० ४/३५)
० मित्रता। (दयो० ६२)
० सद्भाव, मैत्री, स्नेह।
० आश्वासन। (जयो०वृ० १३/१७)
सौहार्दभावः (पुं०) सरलभाव।
सौहार्दसूचक (वि०) आश्वासन युक्त। (जयो० १३/१७)
सौहार्द्यम् (नपुं०) [सुहृद्+ष्यञ्] मित्रता, स्नेह, प्रेमभाव।
सौहित्यम् (नपुं०) [सुहित+ष्यञ्] ० तृप्ति, संतुष्टि।
० सद्भावना।
० पूर्णता, पूर्ति।
० कृपालुता।
सौहृद (वि०) सभ्यता, सद्भावना। (जयो० ४/४८)
स्कन्द (अक०) कूदना, उछलना, गिरना, टपकना।
स्कन्द् (सक०) उठाना, फैलाना।
स्कन्दः (पुं०) उछना।
० कार्तिकेय का नाम।
० शिव।
० चतुर व्यक्ति।
स्कन्दनम् (नपुं०) क्षरण, बहना, गिरना, रिसना।
स्कन्दपुराणम् (नपुं०) अष्टादश पुराणों में से एक पुराण।
स्कन्ध् (सक०) एकत्र करना, चुनना, इकट्ठा करना।
स्कन्धः (पुं०) [स्कन्ध्यते आरुह्यतेऽसौ सुखेन शाखाया वा कर्मणि घञ्] ० कन्धा अक्षोपरिप्रदेश (जयो० १४/३६)
० वृक्ष का तना, शाखा, डाली, पेड़ी, तना। (सुद० १३२)
० परिच्छेद, अध्याय, खण्ड।
० पथ, मार्ग, रास्ता।
० संग्राम, युद्ध, लड़ाई।
० सम्पूर्ण अंशों से परिपूर्ण। स्कन्धं सर्वांशसम्पूर्णं भवन्ति। (गो०जी० ६०४)
० अनन्त प्रदेशों से युक्त, अन्तानन्त परमाणुओं से युक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

○ पुद्गल का एकभेद। (वीरो० १९/३६)

○ स्निग्ध, रुक्षात्मक अणुओं का संघात।

○ परिप्राप्त बन्ध परिणाम। (सम्य० ८) स्थूलत्वेन ग्रहण निक्षेपणादि व्यापारं स्कन्धन्ति गच्छन्ति ये ते स्कन्धाः। (त०वृति ५/२५)

स्कन्धचापः (पुं०) बहंगी।

स्कन्धतरु (पुं०) नारियल का पेड़।

स्कन्धदेशः (पुं०) कंधा,

○ स्कन्ध का अर्ध भाग।

तदर्ध देशः। (त०वा० ५/२५)

स्कन्धपर्यन्त (वि०) कंधे तक। (जयो०वृ० २/६७)

स्कन्धपरिनिर्वाणम् (नपुं०) कंधों का लोप।

स्कन्धपुराणम् (नपुं०) अष्टादश पुराणों में एक नाम। (दयो०२६)

स्कन्धप्रदेशः (पुं०) स्कन्ध के आधे से आधा भाग।

स्कन्धफलः (पुं०) नारियल का पेड़।

स्कन्धबन्धना (स्त्री०) मैथी, सोया।

स्कन्धमल्लकः (पुं०) बगुला, कंकपक्षी।

स्कन्धरुहः (पुं०) वट वृक्ष।

स्कन्धशाखा (स्त्री०) मोटी शाखा, तना।

स्कन्धशृङ्गः (पुं०) महिषी, भैंस।

स्कन्धिकः (पुं०) सधा हुआ बैल।

स्कन्धिन् (वि०) कंधों वाला।

स्कन्न (भू०क०कृ०) [स्कन्द्+क्त] पतित गिरा हुआ।

○ उतरा हुआ।

○ सूख हुआ।

○ फैलाया हुआ।

स्कम्भ् (सक०) रोकना, रचना बनाना।

○ अवरोध करना। दबाना, नियन्त्रित करना।

स्कम्भः (पुं०) [स्कन्भ्+घञ्] थूणी, टेक।

○ आलम्ब, आधार।

स्कम्भनम् (नपुं०) [स्कम्भ्+ल्युट्] टेक, सहारा, आश्रय, आलम्बन।

स्कान्द (वि०) स्कन्द सम्बंधी।

स्कु (अक०) कूदकर चलना, उछलना।

स्कुन्द् (सक०) कूदना।

स्खद् (सक०) ○ काटना। ○ प्रताड़ित करना।

○ नष्ट करना।

○ टुकड़े करना।

○ परास्त करना, शांत करना, कष्ट देना।

स्खदनम् (नपुं०) [स्खद्+ल्युट्] ○ काटना, चोट पहुंचाना, मारना।

○ कष्ट देना, दुःखी करना।

स्खल् (अक०) लड़खड़ाना, गिरना, पतित होना। (जयो०६/८९)

○ डगमगाना, लहराना, इधर उधर होना।

स्खलनम् (नपुं०) [स्खल्+ल्युट्] लड़खड़ाना, फिसलना, गिरना, डगमगाना। (जयो० २३/२८)

○ हकलाना, रुकरुककर बोलना।

○ निराशा, विफलता, असफलता।

स्खलित (भू०क०कृ०) [स्खल्+क्त] भ्रष्ट। (जयो० ७/९२)

○ पतित, गिरा हुआ, खिसका हुआ।

○ डगमगाया हुआ, लड़खड़ाया हुआ।

स्खलितेंशुकम् (नपुं०) खिसके हुए वस्त्र। (जयो० १०/६२)

स्खलितम् (नपुं०) ○ त्रुटि, भूल, गलती।

○ दोष, पाप, अतिक्रमण।

○ धोखा, विश्वासघात।

स्खलन्ती (वि०) लड़खड़ाती हुई। (जयो० २१/४)

स्तक् (अक०) टक्कर लेना, मुकाबला करना।

स्तक् (अक०) आवाज करना, शब्द करना, गूंजना। ○ गरजना, दहाड़ना, कराहना।

स्तकम् (अव्य०) तत्काल, तुरन्त। (सुद० ३/१३)

स्तन् (अक०) आवाज करना, शब्द करना, प्रतिध्वनि करना।

स्तनः (पुं०) उरोज। (जयो० ११/४) पयोधर। (जयो० ११/९४)

○ स्तन। (जयो० १०/६१)

○ कुच। (जयो०वृ० १७/४३) थन।

○ चुचूक, औड़ी।

○ छाती, वक्षस्थल, स्त्रीविशेष का स्तन। (सुद० ५/४४)

स्तनकः देखो ऊपर।

स्तनकोरकः (पुं०) कुच कुड्मल, कुच-कली, पयोधर। (जयो० १७/४३) (जयो० ११/९०)

स्तनगौरवः (पुं०) उन्नत पयोधर। (जयो०वृ० ११/३३)

स्तनच्छलः (पुं०) पयोधर के वश। (जयो० ११/३७)

स्तनजन्मन् (पुं०) दुग्ध, दूध। (सुद० ३/१८)

स्तनतटः (पुं०) कुच भाग, उरोजतीर। (वीरो० १२/५)

स्तनन्धय (वि०) स्तनपानशील। स्तनं धावतीति स्तनन्धय। (जयो० १५/६९)

○ स्तयपानं। (जयो०वृ० १०/६१)

स्तननम् (नपुं०) ध्वनन, कोलाहल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तनपः (पुं०) शिश, दुहमुहा। (जयो० १७/१५) स्तनपान करने वाला शिशु।

स्तनपायक (वि०) दूध पीने वाला शिशु।

स्तनपायि (वि०) स्तन से दूध पीने वाला।

स्तनप्रदेशः (पुं०) पयोधर, थन। (जयो० ११/९३)
 ० बादल। (जयो० ११/३३)

स्तनफलः (पुं०) उन्नत कुच। (जयो० ११/९५)

स्तनभवः (पुं०) रतिबन्ध की प्रक्रिया, स्तन आलिंगन भाव।

स्तनमुखम् (नपुं०) चुचूक, कुच का श्याममुख, स्तन भाग।

स्तनशिला (स्त्री०) चुचूक का अग्रभाग।

स्तनशैल (पुं०) उन्नत पयोधर। (सुद० १/१३) समुन्नत कुच।

स्तनसंदेश (पुं०) कुच निर्देश, पयोधर युग्म। (जयो० ३/४९)

स्तनस्पर्धित (वि०) कुचाभोग। (जयो०वृ० ११/३७) छन्ना किलोच्चैः स्तनशैलमूले (जयो० ११/४९) अतिशयोन्नतश्चासौ शैलः।

स्तनस्तवकः (पुं०) कुचगुच्छ। (जयो० १७/११३)

स्तनहैमकुम्भः (पुं०) पयोधर रूपी स्वर्ण कलश। (जयो० ११/६८)

स्तनाङ्कः (पुं०) पयोधराङ्क। (जयो०वृ० १२/१२६)

स्तनाननम् (नपुं०) स्तन का मुख, कुच कुड्मल भाग। (सुद० २/४४)

स्तनाभोगवशः (पुं०) पयोधर के कारण। (जयो० ११/३४)

स्तनित (भू०क०कृ०) [स्तन् कर्तरि-क्त] ध्वनित, शब्दायमान।

स्तनितकुमारः (पुं०) एक देव नाम।

स्तनितम् (नपुं०) मेघगर्जन, बिजली की गरज। (जयो०)

स्तन्धयः (पुं०) अबोध बालक, शिशु। (हित०)

स्तन्यम् (नपुं०) मां का दूध।

स्तन्यत्यागः (पुं०) मां का दूध छुड़ाना।

स्तबकः (पुं०) [स्तु+बुन्] गुच्छा, झुण्ड। ((सुद० ८२) (जयो० १७/११३) (दयो० ५५)

स्तबकगुच्छम् (नपुं०) एक नगर का नाम महाकच्छ के समीप का एक नगर। सम्पातः समभूत्तयो स्तबकगुच्छोपकण्ठ स्थले। (समु० २/२८)

स्तबकोत्तरम् (नपुं०) स्तबक गुच्छ नगर का एक नाम। (समु० २/१५)

स्तब्ध (भू०क०कृ०) [स्तम्भ् कर्तणि कर्तरि वा क्त] ० अवरुद्ध, रोका हुआ।
 ० सुन्न, जड़ीकृत।
 ० गतिहीन, अचल।

स्तब्धता/स्तब्धत्व (वि०) [स्तब्ध+तत्+टाप् त्वा वा] जाड्य, असंवेद्यता।
 ० दृढ़ता, कठोरता।

स्तब्धिः (स्त्री०) [स्तम्भ्+क्तिन्] स्थिरता, दृढ़ता।
 ० जड़ता, धृष्टता।

स्तम्बः (पुं०) [स्था+अम्बच्] ० झुण्ड, गुच्छक, पुंज।
 ० गुल्म।
 ० पूली, गट्ठर।

स्तम्बकरि (वि०) अनाज की पूली बनाने वाली।

स्तम्बघनः (पुं०) खुरपा, घास खोदने का उपकरण।

स्तम्बघ्नः (पुं०) दरांती, खुर्पा।

स्तम्भ् (सक०) रोकना, पकड़ना, जकड़ना, बांधना।
 ० टेक लगाना, सहारा लेना।

स्तम्भः (पुं०) [स्तम्भ्+अच्] ० रोक, अवरोध, रुकावट।
 ० नियंत्रण, दमन, वशीकरण। (जयो० १६/८३)
 ० खंभा, स्थूण। (सुद० २/१४)
 ० मूढ़ता, जड़ता।
 ० जंघा (जयो० ३/७२)
 ० टेक, सहारा, आलम्बन, आश्रय।

स्तम्भकरिन् (वि०) वश में करने वाली। (जयो० १२/११) स्रग्रहोसुदृशः शयोपचिद्या द्विषते स्तम्भकरीव भाति विद्या। (जयो०)

स्तम्भकिन् (पुं०) वाद्य विशेष।

स्तम्भनम् (नपुं०) [स्तम्भ्+ल्युट्] ० दमन, वशीकरण, नियंत्रण। (जयो० १५/८३)
 ० शांत होना, दृढ़ करना।

स्तम्भनकारणम् (नपुं०) नियंत्रण हेतु। (जयो० ११/३४)

स्तम्भनकारिणी (स्त्री०) वशीकरण विद्या (जयो० १२/११)

स्तम्भनविद्या (स्त्री०) वशीकरण विद्या। (जयो० १६/८३)

स्तम्भनार्थ (वि०) वश में करने के लिए। (दयो० ६५)

स्तर (वि०) [स्तृ+घञ्] फैलाने वाला, विस्तार करने वाला, ढकने वाला।

स्तरः (पुं०) तह, परत।
 ० शय्या, बिछावन।

स्तरणम् (नपुं०) [स्तृ+ल्युट्] छितराना, बिछाना, फैलाना।

स्तरि/स्तरी (स्त्री०) शय्या, बिछावन, पलंग।

स्तरी (स्त्री०) बाष्प, धूम।
 ० बछिया, ० बांझ गाय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तवः (पुं०) [स्तु+अप्] स्तुति, स्तोत्र,
○ प्रार्थना। (जयो० ९/९)
○ स्तुति करना। (सुद० ७३) जय रवे वरवेशतस्तव चरणयो रणयोघनयोः स्तव। (जयो० ३/९)
○ प्रशंसा। (जयो० २/१५३)
○ यशोगान।

स्तवक (वि०) [स्तु+वुन्] प्रशंसक, अभ्यर्चक।

स्तवकः (पुं०) ○ स्तुति, स्तोत्र, गुणज्ञान।
○ गुच्छा, मञ्जरी। (समु० २/१५)
○ गुलदस्ता, कुसुमगुच्छ।
○ परिच्छेद, पुस्तक का अनुभाग, अंश।
○ समुच्चय, समुदाय।

स्तवकस्तनी (स्त्री०) उन्नत स्तन वाली स्त्री। (वीरो० ६/३२)

स्तवनम् (नपुं०) [स्तु+ल्युट्] गुणगान, प्रशंसा।
○ भक्ति, मंगलपाठाजिनेश्वरस्याभिषवं सुदर्शनः प्रसाध्य पूजां स्तवनं दधानः। (सुद० ११४)
○ अतिशय प्रशंसा। (जयो०वृ० १/९१)

स्तावः (पुं०) [स्तु+ण्वुल्] प्रशंसा, स्तुति, प्रार्थना।

स्तावकः (वि०) प्रशंसक, स्तुतिकर्ता।

स्ताविक (वि०) स्तुत्य, प्रार्थित।

स्ताविकवर्त्मन् (नपुं०) स्तुत्यसत्यमार्ग। (भक्ति० १)

स्तिघ् (अक०) चढ़ना, धावा बोलना।
○ रिसना, टपकना।

स्तिप् (अक०) टपकना, रिसना, झरना।

स्तिभिः (स्त्री०) [स्तम्भ्+इन्] ○ अवरोध, रुकावट।
○ गुच्छा, गुल्म, पुंज।

स्तिम् (अक०) गीला होना, स्थिर होना।

स्तिमितु (वि०) गीला, तर, निश्चल, निश्चेष्ट, शांत।

स्तिर् (अक०) झुकना, नमना। (सुद० २/२१)

स्तीविः (पुं०) इन्दु।

स्तु (अक०) प्रशंसा करना, प्रार्थना करना, गुणगान करना, भजन करना। (सुद० ७३, जयो० १/८२)

स्तुकः (पुं०) ग्रंथि, चोटी।

स्तुका (स्त्री०) [स्तुक+टाप्] ○ कूल्हा, जंघा।
○ बालों का चोटी।

स्तुच् (अक०) उज्ज्वल होना, शुभ्र होना, चमकना।

स्तुत (भू०क०कृ०) [स्तु+क्त] समर्थित। (जयो० ५/५६) प्रशंसा किया गया, प्रशस्त। (जयो०वृ० १/५०)

स्तुतवान् (वि०) प्रशंसावान (सुद० ३/९)

स्तुताञ्जन (वि०) आराधना करने योग्य। (सुद० १३५)

स्तुतिः (स्त्री०) [स्तु+क्तिन्] प्रशंसा, कीर्तन, स्तव, पुण्यगुणोत्कीर्ति, गुणगान। ○ श्लाघा, सराहना।

स्तुतिकर्ता (वि०) प्रशंसक।

स्तुतिगीतम् (नपुं०) सूक्त, सुभाषित गान, यशोगान।

स्तुतिपदम् (नपुं०) प्रार्थना पद।

स्तुतिपाठः (पुं०) स्तोत्र।

स्तुतिपाठकः (पुं०) यशोगान कर्ता, कीर्तिगायक, मागध। (जयो०वृ० १/६५) प्रशस्ति प्रस्तोता।
○ चारण, भाट, बन्दीजन। (जयो०वृ० ६/१३२)

स्तुत्य (वि०) [स्तु+क्यप्] प्रशंसनीय, श्लाध्य। (जयो० ११/९७)

स्तुत्यसत्यमार्गः (पुं०) प्रशंसनीय पथ। (भक्ति० १)

स्तुनकः (पुं०) [स्तु+नकक्] बकरा, अज।

स्तुभ् (अक०) प्रशंसा करना, गान करना, प्रार्थना करना।
○ रोकना, दबाना।

स्तुभः (पुं०) बकरा। [स्तुभ्+क]

स्तुम्भ् (सक०) निकाल देना, बाहर करना।

स्तूप् (अक०) संचित करना, ढेर लगाना, एकत्र करना, खड़ा करना, उठाना।

स्तूपः (पुं०) [स्तूप्+अच्] ढेर, टीला।
○ स्मारक। (दयो० ६५)

स्तूपाकार (वि०) स्तूपित, स्मारक रूप। (वीरो० २/१८)

स्तूपित (वि०) स्मारक।

स्तृ (सक०) फैलाना, छितराना, बिछाना, प्रसार करना, विकीर्ण करना।
○ लपेटना, ढांपना।
○ प्रसन्न करना, तृप्त करना।

स्तृ (पुं०) [स्तृ+क्विप्] तारा।

स्तृतिः (स्त्री०) [स्तृ+क्तिन्] ○ फैलाना, बिछाना, प्रसार करना।
○ ढकना, वस्त्र धारण करना।

स्तेन् (सक०) चुराना, अपहरण करना, छीनना, लूटना।

स्तेनः (पुं०) [स्तेन् कर्तरि अच्] चोर, लूटेरा। (दयो० २/६)

स्तेनम् (नपुं०) चोरी करना, चुराना।

स्तेनकृत (वि०) चुराई गई। (वीरो० ६/३७)

स्तेनप्रयोगः (पुं०) चोरी की ओर उद्यत होना, चोरी की अनुमोदना करना, चोर प्रेरणा। (भक्ति० ४०)
○ अचौर्याणुव्रत का एक अतिचार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तेनानीतादानम् (नपुं०) तदाहृतादान।

स्तेनानुज्ञा (स्त्री०) स्तेन प्रयोग, अचौर्याणुव्रत का एक अतिचार।

स्तेनानुबन्धी (वि०) चौर्यानन्द, दूसरे के द्रव्य हरण की ओर चित्त रहने वाला।

स्तेनित (वि०) चुराने का भाव वाला, छिपाने का भाव रखने वाला।

स्तेय् (अक०) रिसना, टपकना, झरना।

स्तेमः (पुं०) [स्तिन्+घञ्] नमी, गीलापन।

स्तेयम् (नपुं०) [स्तेनस्य भावः यत् न लोपः] ० बिना दी हुई वस्तु का ग्रहण, अदत्तादानं स्तेयम्। (त०सू० ७/१५) ० प्रमाद योग से बिना दी गई वस्तु का ग्रहण। आदानं ग्रहणं अदत्तस्याऽऽदानं अदत्तादानं स्तेयमित्युच्यते। (त०वा० २/१५) चोरी, लूट। (सुद० १३२)

स्तेयत्यागव्रतम् (नपुं०) अचौर्याणुव्रत। पर वस्तु के ग्रहण का भाव न रखना, चोरी का त्याग करना।

स्तेनानन्द (वि०) स्तेनानुबन्धी, पर वस्तु का ग्रहण में आनन्द करने वाला। पर विषय हरणशील।

स्तेयिन् (पुं०) [स्तेय+इनि] चोरी, लुटेरा।

स्तै (सक०) पहनना, अलंकृत करना।

स्तैनम् (नपुं०) [स्तेन+अण्] चोरी, लूट।

स्तैन्यम् (नपुं०) [स्तेनस्य भावः ष्यञ्] चोरी, लूट।

स्तैन्यः (पुं०) चोर, लुटेरा।

स्तैमित्यम् (नपुं०) [स्तिमित+ष्यञ्] स्थिरता, कठोरता।
० जड़ता।

स्तोक (वि०) [स्तुच्+घञ्] ० अल्प, थोड़ा। अल्प, कम।
० छोटा, लघु।

स्तोकः (पुं०) स्वल्पमात्र, बूंदभर।
० सात उच्छवास प्रमाण।

स्तोकम् (अव्य०) जरा सा, थोड़ा सा, किञ्चित् भी।

स्तोककाय (वि०) छोटे शरीर वाला, बौना, वामन, ठिगना।

स्तोकशः (अव्य०) [स्तोक+शस्] थोड़ा थोड़ा करके, कमी के साथ।

स्तोतव्य (वि०) [स्तु+तव्यत्] श्लाध्य, प्रशंसनीय।

स्तोतृ (पुं०) [स्तु+तृच्] प्रशंसक, स्तुतिकर्ता।

स्तोत्रम् (नपुं०) [स्तु+ष्ट्रन्] स्तुति, स्तवन, स्तव, प्रार्थना, स्तवक, गुणानुवाद, अर्चना, भक्ति।
० प्रशंसा पाठ।

स्तोभः (पुं०) [स्तुभ्+घञ्] रोकना, अवरुद्ध करना।
० विराम, यति, विश्राम।
० निरादर, तिरस्कार।
० सूक्त, प्रशस्ति।

स्तोमः (पुं०) [स्तु+मन्] स्तुति, प्रशस्ति।
० संग्रह, समुच्चय, समूह। (जयो० १/७४)
० संख्या, संघात, ढेर।

स्तोम्य (वि०) [स्तोम+यत्] श्लाघ्य, प्रशंसनीय।

स्त्यान (वि०) [स्त्यै+क्त] ढेर के रूप में संचित।
० घनीभूत, ठोस, स्थूल।
० पिण्डीभूत।
० मृदु, स्निग्ध, कोमल, चिकना। स्त्यायतीति स्त्यानं स्तिमितचित्त।

स्त्यानम् (नपुं०) ० स्वप्न-स्त्याने स्वप्ने। सुप्त अवस्था।
० सघनता, ठोसपना।
० प्रतिध्वनि, गूंज।
० चिकनाई, ढीलापन।

स्त्यानगृद्धिः (स्त्री०) सुप्त अवस्था में विशेष सामर्थ्य। स्त्याने स्वप्ने गृध्यते दीप्यते यदुदयार्तं रौद्रं च बहु च कर्मकरणं सा स्त्यानगृद्धिः। (भ०आ०वृ० २०५४)
सोते सोते ही, बेहोश अवस्था में ही जिससे बड़ी भारी ताकत प्रकट हो जाए ऐसी नींद को स्त्यानगृद्धि कहते हैं। स्त्यायति क्रिया के स्वाप अर्थ में ही गृद्धि/उत्तेजना होना। (त०सू०पृ० १२४, ८/७)

स्त्यायनम् (नपुं०) [स्त्यै+ल्युट्] भीड़ लगाना, समूह बनाना। समष्टि।

स्त्येनः (पुं०) [स्त्यै+इनच्] ० अमृत, चोर।

स्त्रागन्वेषयः (पुं०) मुनिधर्म। (मुनि० ८)

स्त्री (स्त्री०) [स्त्यायेते शुक्रशोणिते यस्याम् स्त्यै+ड्रप्-ङीप्] महिला, नारी, औरत। (जयो० २/१४७, १४२, १४९) (सुद० १०२) दोषैरात्मानं परं च स्तृणति छादयतीति स्त्री। (धव० १/३४०) प्रियोऽप्रियोऽथवास्त्रीणां कश्चनापि न विद्यते।
गावस्तृणमिवारण्येऽभिसरन्ति नवं नवम्।।
(जयो० २/१४७)
स्त्रियां सम्पद्गुणोत्कर्ष इत्यादि कोषात् (जयो०वृ० ६/५५)
० सहधर्मिणी, पत्नी। (जयो०वृ० १/१५) गौरी। (जयो०वृ० १/१५) चेष्टा स्त्रियां काचिद (सुद० १०७)

स्त्रीकथा (स्त्री०) स्त्रियों सम्बंधी कथा। कथा के चार भेदों में प्रथम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्त्रीकामः (पुं०) स्त्रीसंभोग का इच्छुक, पत्नी चाह।

स्त्रीकार्यम् (नपुं०) नारी धर्म।

स्त्रीकुसुमम् (नपुं०) रजःस्राव, स्त्रियों का मासिक धर्म।

स्त्रीक्षीरम् (नपुं०) माता का दूध।

स्त्रीगवी (स्त्री०) दूध देने वाली गाय।

स्त्रीगुरु (स्त्री०) पुरोहितानी, पंडितानि।

स्त्रीघोषः (पुं०) प्रभात, प्रातः, पौ फटना।

स्त्रीचिह्नम् (नपुं०) स्त्रीयोनि, स्त्रीत्वभाव।

स्त्रीचौरः (पुं०) लम्पट स्त्री।

स्त्रीजनः (पुं०) स्त्री समूह। (वीरो० २/४०)

स्त्रीजननी (स्त्री०) कन्या जन्मदात्री।

स्त्रीजातिः (स्त्री०) स्त्रीवर्ग, नारी समुदाय।

स्त्रीजित (वि०) नारियों को वश में करने वाला। जोरु, गुलाम।

स्त्रीताडनम् (नपुं०) नारी उत्पीड़न। (जयो०वृ० १/८४)

स्त्रीधनम् (नपुं०) स्त्री सम्पत्ति।

स्त्रीधर्मः (स्त्री०) नारी कर्त्तव्य। ० रजः स्राव धर्म।

स्त्रीधर्मिणी (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

स्त्रीनाथ (वि०) गृह मालकिन, गृहस्वामिनी।

स्त्रीबन्धनम् (नपुं०) नारी निबन्धन का कार्य क्षेत्र, गृहिणी मर्यादा। प्रायोऽस्मिन् भूतले पुंसो बन्धनं स्त्रीनिबन्धनम्। (वीरो० ९/३०)

स्त्रीपण्योपजीविन् (पुं०) स्त्री से वेश्यावृत्ति कराकर जीविका चलाना।

स्त्रीपरः (पुं०) लम्पट, कामी।

स्त्रीपरीषहसहनम् (नपुं०) वावीस परीषहों में एक परीषह सहन।

स्त्रीपिशाची (स्त्री०) राक्षसी प्रवृत्ति वाली पत्नी।

स्त्रीपुंसलक्षणा (स्त्री०) पुरुष के लक्षणों से युक्त स्त्री। मर्दाङ्गिनी।

स्त्रीप्रत्ययः (पुं०) स्त्रीलिंग के प्रत्यय।

स्त्रीप्रसङ्गः (पुं०) संभोग।

स्त्रीप्रसूः (स्त्री०) पुत्रियों को जन्म देने वाली।

स्त्रीप्रियः (पुं०) आम्र तरु।

स्त्रीभावः (पुं०) स्त्रीलिंग। (जयो०) स्त्रीपर्याय। (वीरो० २२/३३)

स्त्रीमात्रसृष्टिः (पुं०) सम्पूर्ण स्त्रियों की सृष्टि। (जयो० ११/८४)

स्त्रीभोगः (पुं०) संभोग।

स्त्रीमन्त्रः (पुं०) स्त्री कौशल।

स्त्रीमुतपः (पुं०) अशोक वृक्ष।

स्त्रीयन्त्रम् (नपुं०) कर्त्तव्य परायण स्त्री, अधिक कार्य करने वाली स्त्री।

स्त्रीरञ्जनम् (नपुं०) पान, ताम्बूल।

स्त्रीरत्नम् (नपुं०) रमणी मणि, उत्तम स्त्री। (जयो०वृ० ३/६३)

स्त्रीराज्यम् (नपुं०) महिलाओं द्वारा शासित प्रदेश।

स्त्रीरूपः (पुं०) महिला स्वरूप। (मुनि० ९) नारी सौंदर्य।

स्त्रीलिङ्गम् (नपुं०) स्त्रीलिंग की विशेषता। ० स्त्रीयोनि।

स्त्रीवशः (पुं०) नारी की आधीनता।

स्त्रीविधेय (वि०) पत्नी द्वारा शासित।

स्त्रीवेदः (पुं०) स्त्री के साथ विवाह। स्त्री के साथ परिणय।

स्त्रीभङ्गभावः (पुं०) स्त्री के प्रति कामभाव। (जयो०वृ०२/१०८)

स्त्रीसंसर्गः (पुं०) नारी संगति।

स्त्रीसंस्थान (वि०) स्त्री की आकृति वाला।

स्त्री सम्बन्धः (पुं०) नारी से सम्बन्ध। दाम्पत्य जीवन, विवाह। परिणय।

स्त्रीस्वभावः (पुं०) नारी की प्रकृति।

स्त्रीहरणम् (नपुं०) नारी अपहरण।

स्त्रैण (वि०) [स्त्रिया इदम् नञ्] मादा, स्त्रीवाचक।

स्थ (वि०) खड़ा होने वाला, ठहरने वाला।

स्थकरणम् (नपुं०) सुपारी।

स्थग् (सक०) ढांपना, छिपाना, गुप्त रखना।

स्थग (वि०) [स्थग्+अच्] परित्यक्त, निर्लज्ज।

स्थगनम् (नपुं०) रद्द, छिपाना, गुप्त रखना।

स्थगरम् (नपुं०) सुपारी।

स्थगिका (स्त्री०) [स्थग्+ण्वुल्+टाप्] वेश्या, पण्णभोगी।

स्थगित (वि०) [स्थग्+क्त] छिपा हुआ, गुप्त, प्रच्छन्न, ढका हुआ, समाप्त, रद्द हुआ।

स्थगी (स्त्री०) [स्थग्+क+ङीप्] पानदान, मचला।

स्थगुः (पुं०) [स्थग्+उन्] कूबड़, कुब्ज।

स्थण्डिलम् (नपुं०) [स्थल्+इलच्, लुक् लस्य डः] बंजर भूमि।

० मध्यस्तूप। (जयो० १०/९०) स्थण्डिलं प्रासुकंस्थानम्।

स्थपतिः (पुं०) प्रभु, राजा, स्वामी।

० वास्तुकार, रथकार।

० बढ़ई, विश्वकर्मा।

० सारथि।

० बृहस्पति।

० अन्तःपुर रक्षक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थपुट (वि०) सघन। (जयो० २३/१३) विपन्न, संकटग्रस्त।
स्थल् (अक०) स्थिर रहना, दृढ़ होना।
स्थलम् (नपुं०) [स्थल्+अच्] भूमि, भूभाग। (सम्य० १०५)
० स्थान, जगह (सुद० ७८) खेल, भूखण्ड। तदा प्रत्युत्तरं दातुं मृदङ्ग वचसः स्थले (सुद० ७८)
० समूह, समुच्चय। (सुद० ७२)
० गुणस्थान। (सम्य० १३२) 'स्थलं स्यामनर्घतायाः।'
० प्रस्ताव, प्रसंग, विचारणीय वार्ता।
स्थलकमलम् (नपुं०) पृथ्वी कमल, गुलाब।
स्थलगत (वि०) भू को प्राप्त।
स्थलचर (वि०) भूचर, चतुष्पादप पशु। वृक-व्याघ्रादयः स्थलचरा। (धव० १३/३९१) भूमि पर चलने वाले जीव जन्तु।
स्थलच्युत (वि०) स्थानापन्न, स्थान से पतित, पदच्युत।
स्थलदेवता (स्त्री०) ग्राम्यदेवी।
स्थलपद्मम् (नपुं०) गुलाब। (जयो०वृ० ३/७५)
स्थलपद्मभर (वि०) भू के पद्मों से परिपूर्ण। स्थलपद्मानां भराः समूह। (जयो० १३/६२)
स्थलपद्मिनी (स्त्री०) भू कमलिनी।
० लक्ष्मी।
स्थलपयोजनवशं (नपुं०) धूल, रज। (वीरो० ६/३४)
स्थलमार्गः (पुं०) सड़क, राजपथ।
स्थलवर्त्मन् (नपुं०) राजपथ, भूमार्ग, सड़क, पक्का रास्ता।
स्थलशुद्धि (स्त्री०) भू शुद्धि, भूपरिशोधन।
स्थला (स्त्री०) [स्थल+टाप्] सूखा भू भाग।
स्थलान्त (वि०) स्थान तक। (सम्य० १३०)
स्थलिनी (वि०) स्थलवाली, भू वाली। (जयो० १३/६१)
स्थली (स्त्री०) [स्थल+ङीप्] सूखा भूखण्ड।
० नंगी-भू (जयो०वृ० ३/५५) भूमि (जयो०वृ० २६/१७)
स्थलीयम् (नपुं०) अवनि, भूमि। (जयो०वृ० २६/१७) स्थलीयमवनिः सैव शक्फली वा सम्भली वा विलासिनी। (जयो०वृ० २६/१७)
स्थलेशय (वि०) [स्थले शेते-शी-अच्] भू भाग पर सोने वाला।
स्थलेशयः (पुं०) जानवर, स्थल या जल से सम्बंधित जानवर।
स्थविः (पुं०) [स्था+क्वि] जुलाहा, तन्तुवाय।
० स्वर्ग।
स्थविर (वि०) [स्था+किरच् स्थावादेशः] कठोर, दृढ़, स्थिर, पक्का।

स्थविरः (पुं०) वृद्ध, बूढ़ा।
० भिक्षुक। स्थविरो वृद्धः (जयो० १२/९) स्थविरो जरस! वृद्धशरीरः। बालोऽस्तु कश्चित्स्थविरोऽथवा। (सुद० १२१)
स्थविरकल्पः (पुं०) निर्ग्रन्थ, महाव्रती होना।
स्थविरत्व (वि०) वृद्धापना, बुढ़ापा। (दयो० १००)
स्थविरा (स्त्री०) भिक्षुणी।
० बूढ़ी स्त्री।
स्थविष्ठ (वि०) [अतिशयेन स्थूलः स्थूल इष्ठन् लस्य लोपः] हृस्ट-पुष्ट, सबसे अधिक विस्तृत।
स्थवीयस् (वि०) [स्थूल+ईयसुन्] बृहद्, सबसे बड़ा।
स्था (अक०) खड़ा होना, ठहरना, स्थित होना। (वीरो०२/३) तिष्ठति।
० बैठना। (जयो० २/८३)
० रहना, बसना, रुकना। (समु० ३/२५)
० विद्यमान होना, अनुरूप होना।
० आश्रित होना, निर्भर होना।
० निवास करना, टिकना।
० आ पड़ना, सचेत होना। त्यक्त्वा गृहमतः सान्द्रे स्थीयते महात्मना (वीरो० १०/२०)
स्थाणु (वि०) [स्था+नु] ढूंठ, खंभा, खूंटा। (मुनि० २७) (भक्ति० १५)
० अचल, गतिहीन, स्थिर।
स्थाणुभ्रमः (पुं०) ठूंठ समझना, खंभे का भ्रम होना।
स्थाणुवत् (वि०) स्थाणु की तरह (समु० ९/२२)
स्थाण्डिलः (पुं०) भूखण्ड पर शयन करने वाला भिक्षु।
स्थातुम् (स्था+तुमुन्) ० बैठने के लिए। (जयो० २/८३)
० बसने के लिए (समु० ३/२५)
स्थानम् (नपुं०) [स्था+ल्युट्] रहना, खड़ा होना, ठहरना।
० स्थल, घर, निवास, जगह।
० भूमि, भूभाग, संस्थिति, व्रज।
० संस्थान, स्थिति, अवस्था, अवगाहन।
० देश, क्षेत्र।
० पद, दर्जा, प्रतिष्ठा।
० अवसर, कारण, प्रसंग।
० उच्चारण स्थान।
० उचित पदार्थ।
० प्रांगण, क्षेत्र।
० मुख्य भाग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थानकम् (नपुं०) प्रांगण, क्षेत्र, ठहरने का एकान्त भाग।
○ अवस्था, स्थिति। ○ उपाश्रय, स्वाध्याय शाला।
○ शहर, नगर।
○ जैन संतों के ठहरने एवं उपासना करने के केन्द्र।

स्थानक्रिया (स्त्री०) कायोत्सर्ग की स्थिति।

स्थानचिन्तक: (पुं०) स्थान/शिविर के लिए चिंतन।

स्थानच्युत: (पुं०) पदभ्रष्ट।

स्थानपाल: (पुं०) आरक्षी, रखवाला, पहरेदार।

स्थानभूषण: (पुं०) स्वानुकूलपति। स्थानमेव स्वानुकूलपत्यादिरेव भूषणमलङ्कारो यस्या: सा। (जयो० ३/६५)

स्थानभ्रष्ट (वि०) विस्थापित, पद से हटाया गया, पदच्युत।

स्थानमाहात्म्य (वि०) किसी स्थान का महत्त्व।

स्थानयोग: (पुं०) उपयुक्त पद का योग।

स्थानाङ्गम् (नपुं०) द्वादश अंग ग्रन्थों में तृतीय सूत्र।

स्थानान्तर: (पुं०) अन्य स्थान। (जयो० ६/२६)○ बाहर। (दयो० ६४)

स्थानारोहणम् (नपुं०) पद प्रदान, पद स्थापन। (जयो०वृ० ११/३)

स्थानिक (वि०) [स्थान+ठक्] किसी स्थान से सम्बंध रखने वाला।

स्थानिन् (वि०) [स्थानमस्यास्ति रक्ष्यत्वेन इनि] स्थान वाला स्थैर्य सम्पन्न, स्थायी, अभिहित।
○ कायोत्सर्ग जिस स्थान में हो। स्थानं उर्ध्वकायोत्सर्ग: तद्विद्यते येषां ते स्थानिन:। (योग०भ०टी० २०२)

स्थानीय (वि०) उपयुक्त स्थान वाला, स्थान से सम्बंधित।

स्थाने (अव्य०) उपयुक्त स्थान पर, सही ढंग से, सचमुच, समुचित रीति से।

स्थापक (वि०) [स्थापयति-स्था+णिच्+ण्वुल्] स्थापित करने वाला, जमाने वाला, खड़ा करने वाला, वश में करने वाला। (जयो० ७/२२)

स्थापक: (पुं०) निदेशक, रंगमंच प्रबंधक।

स्थापत्य: (पुं०) [स्थपति+ष्यञ्] अन्त:पुर का रक्षक।

स्थापत्यम् (नपुं०) भवननिर्माण की कला, वास्तु विद्या।

स्थापनम् (नपुं०) [स्था+णिच्+ल्युट्] ○ स्थापित करना, रखना, जमाना, लगवाना। (सुद० १/१९)
○ ध्यान, धारण। 'सत्रपास्थापनबांछितानि' (वीरो० २/१९)
○ निवास, आवास।

स्थापन-स्थापनम् (नपुं०) गुणों की स्थापना।

स्थापना (स्त्री०) [स्था+णिच्+युच्+टाप्] ○ अध्योराप, कल्पना।
○ निक्षेप, नामकरण, द्रव्यनामकरण।
○ अभिधान, प्रतिष्ठा स्थान।
○ व्यवस्था, विनियमन।
○ खड़ा करने की क्रिया।
○ रंगमंच प्रबन्ध।

स्थापय् (अक०) सन्निधान करना, रखना, आरोप करना। (जयो०वृ० २/३१)

स्थापित (भू०क०कृ०) [स्था+णिच्+क्त] निदेशित, विनियमित, अवस्थित।
○ अंकित। (सुद० ८५)
○ निविष्ट, निर्धारित।
○ दृढ़, स्थिर, उठाया हुआ, खड़ा किया गया।

स्थाप्य (वि०) [स्था+णिच्+ण्यत्] रखे जाने योग्य, जमा किये जाने योग्य।
○ अंकित करने योग्य, स्थिर करने योग्य।

स्थामन् (नपुं०) [स्था+मनिन्] शक्ति, सामर्थ्य, स्थैर्य।

स्थायिन् (वि०) [स्था+णिनि युक्] स्थित रहने वाला, टिका रहने वाला।
○ स्थिर, दृढ़, पक्का, मजबूत, अचल।

स्थायुक (वि०) [स्था+उकञ् युक्] ठहरने वाला, स्थिर रहने वाला।
○ दृढ़, स्थिर, अचल।

स्थालम् (नपुं०) [स्खलति तिष्ठति अन्नाद्यत्र आधारे घञ्]
○ थाल, थाली, तस्तरी। ○ बर्तन।

स्थाली (स्त्री०) [स्थाल+ङीष्] थाली, कलश, कारक आदि। (जयो०वृ० २४/७२)
○ बटलोई। (दयो० ९३) कड़ाही।
○ पाक करने का पात्र।

स्थालीपुलाक: (पुं०) पकाया हुआ चांवल, पुलाव।

स्थालीविलम् (नपुं०) पाक पात्र का भीतरी भाग।

स्थावर (वि०) [स्था+वरच्] ○ अचल, स्थिर, अचिर, दृढ़, जड़।
○ नियमित, स्थापित।

स्थावर: (पुं०) पर्वत, पहाड़, पृथ्वी आदि। स्थिर रहने वाले पृथिवी आदि एकेन्द्रिय प्राणी। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति-'पृथिव्यप्तेजो वायुवनस्पतय: स्थावरा:' (त०सू० २/१३) जो तिष्ठन्ति-ठहरे हुए हों (त०सू० २/१२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० शाण्डिल्य ब्राह्मण और पाराशरिका नामक ब्राह्मणी का पुत्र स्थावर, जो पूर्वजन्म में महावीर की एक पर्याय का जीव था। जो राजगृह नगर में देवयोनी से च्युत होकर विश्वनन्दी ब्राह्मणी का पुत्र भी हुआ। (वीरो० ११/१०, ११)

स्थावर नामकर्मः (पुं०) एकेन्द्रिय का प्रादुर्भाव।

स्थावरप्रतिमा (स्त्री०) व्यवहार से पत्थर आदि की प्रतिमा को भगवान् मानना।

स्थाविर (वि०) दृढ, शक्तिसम्पन्न, मोटा।

स्थासकः (पुं०) [स्था+स+स्वार्थादौ क] सुगन्धित लेप करना, विलेपन करना।

स्थासु (नपुं०) [स्था+सु] दैहिक शक्ति।

स्थास्नु (वि०) [स्था+स्नु] स्थिर, दृढ, शक्तिशाली।

० स्थायी, नित्य।

स्थित (भू०क०कृ०) [स्था+क्त] खड़ा हुआ, ठहरा हुआ। पारावार इव स्थित: पुनरहो शून्ये श्मशाने तया। (सुद०९८)

० अवस्थित (सुद० ३/१२) गिरमर्थयुतामिव स्थितां ससुतां संस्कुरुते स्मं तां हिताम्। (सुद० ३/१२)

० ध्यानस्थ (सुद० ४/२३) मुनि हिमर्तौ द्रुममूल देशं स्थितं

० रुका हुआ, दृढ़ता युक्त खड़ा हुआ।

० निर्धारित, अवधारण किए हुए अवधृतमात्र।

० सहमत, व्यस्त, निकटस्थ।

स्थितकल्पः (पुं०) ० आचेलक्य आदि दश कल्पों/स्थानों में स्थित होने वाला साधु। ० ध्यानस्थ श्रमण।

स्थितिः (स्त्री०) [स्था+क्तिन्] ० परिस्थिति, दशा, अवस्था।

० परिपालन। (सुद० ९७)

० रहना, टिकना, खड़े होना। अघभूराष्ट्र-कण्टकोऽयं खलु विपदे स्थितिरस्याभिमता। (सुद० १०५)

० अवस्था। (जयो० २/४७)

० पावन स्थान, स्थिर होना।

० यति, विराम, विरति।

० अध्यादेश, आज्ञप्ति, निश्चित समय निर्धारण।

० अवस्थान, निष्ठापन। (जयो० ३/४७) स्तोत्रस्य स्थितिर्निष्ठापनम्। देवागमस्थिति, देवस्यागमनं देवागमस्तस्य स्थितिरवस्थानम्। (जयो०वृ० ३/६७)

० प्राकृति, स्वभाव-किं तेभ्यो वपुषा नास्ति भवत: सम्बंध एषा स्थितिः (मुनि० १७)

० स्वरूप। (सुद० ११७) ० निज भाव, आत्मभाव।

० सत्त्व। (जयो०वृ० १/२२४), वस्तु रहस्य।

० कालपरिच्छेद।

० कालावस्थान। कालकृत व्यवस्था।

० सत्ता (जयो० १/४२) ० पदार्थ की अवस्था।

० परिणाम।

० अपने मार्ग में स्थित रहना।

स्थितिकरणं (नपुं०) अस्थिर को स्थिर करना, दृढ़ीकरण, सुमार्ग में संलग्न करना। (जयो०वृ० १८/४५)

० सम्यग्दर्शन से आठ अंगों में से एक अंग स्थितिकरण अंग।

स्थितिक्षयः (पुं०) काल क्षय।

स्थितिबन्धः (पुं०) जो बांधा जाए, जिन परिणामों से स्थिति बंधती है। जो कर्म बांधा गया वह जब तक अपने कर्मपने को न छोड़े वही स्थितिबन्ध है। (त०सू० ८/३)

स्थितिभोजनम् (नपुं०) शुद्धस्थान पर स्थित होकर भोजन लेना।

स्थितिविधिः (स्त्री०) निर्वाह विधि, स्थितिकारीमार्ग। स्थितेर्निर्वाहस्य विधिर्यत्र (जयो०वृ० २/९१)

स्थिर (वि०) [स्था+किरच्] ० दृढ, शक्तिशाली, धैर्य युक्त।

० अचल, शान्त, प्रसन्न। मे त्वं मनसि स्थिरा स्याः। (जयो०वृ० १९/३६)

० सचेत, सजग, निश्चल। (जयो० ११/७) (जयो०१/५)

० कठोर (जयो०वृ० १/५) ० सुस्थ, सुस्त। (भक्ति०३२)

० धीर, गम्भीर।

स्थिरत्व (वि०) योग स्थान का दृढ पालक।

स्थिरा (स्त्री०) पृथ्वी, भू, भूमि।

स्थिराशयः (पुं०) निश्चलपाति, अभिप्राय। (जयो० १३/५९)

स्थुलम् (नपुं०) [स्थुड्+अच्] लम्बा तम्बु, ढेरा।

स्थूणा (स्त्री०) स्तम्भ, खंभा, दण्ड। (जयो० १/२५)

० धन, लौह प्रतिमा।

स्थूणाकृतिः (स्त्री०) दण्डाकृति, शुण्ड, हस्ति शुण्ड। (जयो०वृ० १/२५)

स्थूमः (पुं०) प्रभा, कान्ति, प्रकाश।

० चन्द्रमा, शशि।

स्थूरः (पुं०) [स्था+अरन्] ० सांड।

० मनुष्य।

स्थूल (वि०) [स्थूल्+अच्] मोटा, मांसल, पुष्टतर। (जयो०वृ० ४/६०) ० प्रगाढ़।

० विस्तृत, बड़ा, बृहत्, विशाल।

० बेडौल, भद्दा।

० सम्पूर्ण, साधारण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थूलकाय (वि०) मोटी, मांसल, पुष्ट शरीर वाला।
स्थूलक्षेडः/क्ष्वेडः (पुं०) बाण।
स्थूलचापः (पुं०) धनुकी।
स्थूलतनु (नपुं०) मोटा शरीर। (मुनि०)
स्थूलता/स्थूलत्व (वि०) भारीपन, विशालता, मुटापा।
स्थूलतालः (पुं०) हिंताल।
स्थूलधी (स्त्री०) मूर्ख, मूढ, बुद्धु।
स्थूलनालः (पुं०) सरकंडा।
स्थूलनास/स्थूलनासिका (वि०) मोटी नाक वाला।
स्थूलपटम् (नपुं०) मोटा कपड़ा।
स्थूलपट्टः (पुं०) कपास।
स्थूलपाद (वि०) मोटे पैर वाला, सूजे हुए पैरों वाला।
स्थूलपादः (पुं०) श्लीपद नामक रोग, पैरों में मुटापा नामक रोग। ० हस्तिपद की तरह पैर होना।
स्थूलफलः (पुं०) सेमल, शाल्मली।
स्थूलभद्रः (पुं०) एक जैनाचार्य। (वीरो० २२/३)
स्थूलभागः (पुं०) मोटा भाग। (जयो०वृ० ११/२०)
स्थूलमति (वि०) बुद्धु, मूढ, मूर्ख।
स्थूलमानम् (नपुं०) बड़ा हिसाब। ० विस्तृत प्रमाण।
० सम्पूर्ण हिस्सा।
स्थूललक्ष (वि०) दानशील, उदार।
स्थूलक्ष्य (वि०) लाभ-हानि ध्यान रखने वाला।
स्थूलशङ्का (स्त्री०) बड़ी सी आशंका।
स्थूलशरीरम् (नपुं०) नश्वर शरीर।
स्थूल शाटकः (पुं०) मोटा कपड़ा।
स्थूलशीर्षिका (स्त्री०) छुद्र पिपीलिका।
स्थूलषट्पादः (पुं०) ० भ्रमर, भौंरा।
स्थूलस्कन्धः (पुं०) लडुच वृक्ष, बड़हल तरु।
स्थूलस्तम् (नपुं०) हस्ति शुण्ड।
स्थूलान्त्रम् (नपुं०) बड़ी आंत।
स्थूलास्यः (पुं०) सर्प, सांप।
स्थूलिन् (पुं०) [स्थूल+इनि] ऊंट, उष्ट्र।
स्थेय (वि०) [स्था+यत्] निर्धारित करने योग्य, रक्खे जाने योग्य।
स्थेयः (पुं०) पंच, निर्णायक।
स्थेयस् (वि०) दृढ़तर।
स्थेष्ठ (वि०) [स्थिर+इष्ठन्] अत्यन्त दृढ, बलवान्।
स्थैर्यम् (नपुं०) [स्थिर+ष्यञ्] स्थिरता, दृढ़ता, अचलता। निश्चलता, निरन्तरता।
० संकल्प, स्थायित्व।
० सहनशीलता, ठोसपना।
स्थौणेयः (पुं०) एक गन्ध द्रव्य।
स्थौरम्ः (नपुं०) [स्थूर+अण्] शक्ति, बल, दृढ़ता, सामर्थ्य।
स्थौरिन् (नपुं०) [स्थौर+इनि] ट्टटू, बोझा ढोने वाला घोड़ा।
स्थौल्य (वि०) विशालता, हृष्ट पुष्टता।
स्थौल्यः (पुं०) उत्तरप्रान्त। (वीरो० २२/३)
स्वपनम् (नपुं०) [स्ना+णिच्+ल्युट्]
० स्नान करना, नहाना, ढुबकी लगाना।
० छिड़कना, सिंचन करना।
० अभिषेक, अभिसिंचन। (मुनि० २८)
स्नपनभावः (पुं०) अभिषेक। (जयो० ९/५४)
स्नपित (वि०) अभिसिंचित, अभिषेक युक्त। (सुद० ३/१४)
स्नपनार्द्रः (पुं०) स्नान से गीला। (जयो० १४/९३)
स्नपयति-स्नान करना। (जयो० २४/६०)
स्नवः (पुं०) [स्नु+अप्] टपकना, गिरना, रिसना, झरना।
स्नस् (अक०) बसना, ठहरना, रहना।
स्ना (अक०) नहाना, स्नान करना। (भक्ति० ५)
श्रीपतिं जिनमिवार्चितुं पुरा
स्नान्ति दिव्यतनरोऽपि ते सुराः। (जयो० २/४०)
० नहलाना, गीला करना, तर करना।
स्नातक (वि०) कृत स्नान वाला, जल में डुबकी लगाने वाला। (जयो०वृ० २८/२०)
स्नातकः (पुं०) [स्ना+क्त+क] सम्पूर्ण घातिया कर्म को नाश करके केवल ज्ञान को प्राप्त होने वाला मुनि। (त०सू० ९/४५) प्रक्षीणप्पातिकर्माणः केवलिनो द्विविधाः स्नातकाः। (स०सि० ९/४८)
० अर्हत्। (जयो०वृ० २८/२०)
० सुसंस्कृत (जयो०वृ० २४/६०)
० अनुष्ठेय विधि को समाप्त करने वाला ब्रह्मचारी।
स्नातकता (वि०) स्नातक दशा।
मनोरथा रूढतयाऽथवेतः
केनान्वितः स्नातकतामुपेतः। (वीरो० १२/३९)
स्नातकत्व (वि०) ० कृत स्नान वाला। (जयो०वृ० २८/२०)
० अर्हतत्त्व को प्राप्त होने वाला। (जयो०वृ० २८/२०)
० स्नातक पना।
स्वान्तं हि क्षालयामास,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्नातकत्वे समुत्सुकः।
पौद्गलिकस्य देहस्य,
धावन-प्रोञ्छनातिगः।। (समु० ९/१७)

स्नातकमन्त्रम् (नपुं०) सुसंस्कृत मन्त्र।
० अर्हतमन्त्र। (जयो०वृ० २४/६०)

स्नात्वा (सं०कृ०) [स्ना+क्त्वा] स्नान करके। (भक्ति०)
० अभिषेक करके।

स्नानम् (नपुं०) [स्ना भावे ल्युट्] ० स्नान, प्रमार्जन, प्रक्षालन।
० अभिषेक, अभिसिंचन।
० मार्जन, सुसंस्कारित करना।

स्नानजलम् (नपुं०) अभिषेक जल। (जयो०वृ० २/२८)
स्नानजलं सतां शिरोमस्तकं
पुनाति पवित्रीकरोतीत्यर्थः। (जयो०वृ० २/२८)

स्नानद्रोणी (स्त्री०) नहाने का बड़ा पात्र।

स्नानत्यागः (पुं०) स्नान का त्याग। जैन मुनियों के मूल गुणों में स्नान त्याग नामक गुण भी है। स्नानं ज्ञानसरोवरे यतिपते र्वासांसि सर्वादिशः। (मुनि० २०)

स्नानद्रव्यं (नपुं०) अभिसिंचन की सामग्री।

स्नानपात्रम् (नपुं०) नहाने का पात्र।

स्नानभावः (पुं०) अभिषेक भाव।
स्नानमकुर्वन्- यावत् पुरा निपातयोर्लट्' इति भूते लट्। (जयो०वृ० २/४०)

स्नानविधिः (स्त्री०) अभिसिंचन क्रिया, स्नानक्रिया, अभिषेक विधि, स्नाननियम।

स्नानीय (वि०) प्रमार्जन योग्य, स्नान के योग्य।

स्नापकः (पुं०) [स्ना+णिच्+ण्वुल् युक्] स्नान कराने वाला भृत्य, ० अभिसिंचन शील भृत्य।

स्नापनम् (नपुं०) [स्ना+णिच्+ल्युट्+पुक्] स्नान कराना, अभिसिंचन कराना।

स्नायुः (स्त्री०) नस, मांसपेशी।

स्नावः (पुं०) कंडरा, मांसपेशी, नस।

स्निग्ध (वि०) [स्निह्+क्त] ० चिकना, मसृण, तैलीय, तैलयुक्त, चुपड़ा हुआ। 'स्निह्यते स्मेति स्निग्धः'
० प्रिय, स्नेही, अनुरक्त, प्रेमी।
० गीला, तर।
० शान्त।
० कृपालु, मृदु, सौम्य, मिलनसार।
० मोहक, रुचिकर, कोमल। (जयो० ११/९)
० कान्ति।

स्निग्धः (पुं०) मित्र, हितैषी व्यक्ति।
० चमक, आभा, प्रकाश।

स्निग्धम् (नपुं०) तैल,
० मोम।

स्निग्धता (वि०) [स्निग्ध+तल+टाप् त्व वा] चिकनापन,
० सौम्यता, सुकुमारता।
० स्नेह, प्रेम।

स्निग्धत्व (वि०) चिकनापन।

स्निग्धच्छाया (स्त्री०) घनी छाया, कान्ति युक्त छाया। (जयो० ३/११३)

स्निग्धतनु (नपुं०) श्लक्ष्णशरीर, चिकना शरीर, आभा युक्त देह। (जयो० १३/८)
० वृद्धि गत शरीर। (सुद० २/४३)

स्निग्धा (स्त्री०) [स्निग्ध+टाप्] मज्जा, बसा।

स्निग्धाङ्गी (स्त्री०) स्नेह भूमि। (जयो० १५/८८)

स्निह् (अक०) स्नेह करना, प्रेम करना, अनुरक्त होना, प्रिय होना। दिनह्येत वत्सं प्रति धेनुतुल्यां (सम्य० ९६) ० चिपचिपाना।
० सौम्य होना।

स्नु (अक०) टपकना, रिसना, झरना।
० बहना, स्रवित होना, बूंद बूंद गिरना।

स्नु (पुं०) (नपुं०) [स्ना+कु] भूखण्ड, पर्वत शृंखला, सतह।

स्नु (स्त्री०) स्नायु, कण्डरा, मांसपेशी।

स्नुषा (स्त्री०) [स्नु+सक्+टाप्] पुत्रवधू।

स्नुह् (अक०) उलटी करना, कै करना।

स्नेहः (पुं०) [स्निह्+घञ्] प्रेम, अनुराग, आसक्ति, प्रीति। प्रेमभाव। (जयो० ३/४२)
० तैल। (जयो० ६/१३१)
० चर्बी, नमी।

स्नेहछेदः (पुं०) प्रेम विच्छेद।

स्नेहच्युतः (पुं०) वात्सल्य का अभाव।

स्नेहदोषः (पुं०) समाधिकरण के समय का दोष।

स्नेहनं (नपुं०) तैल। स्नेहनमुत्तरितमवतार्य।
त्रिवर्गवर्त्मनि गत्वोद्धार्यम्। (जयो० १२/१०८)

स्नेहकर्मन् (नपुं०) प्रेमोत्पादन, स्निग्धत्वार्थ। (जयो० १६/२३)

स्नेह पूर्वम् (अव्य०) अनुराग पूर्वक।

For Private and Personal Use Only

स्नेह प्रत्ययः (पुं०) प्रेम का कारण।
स्नेह प्रवृत्तिः (स्त्री०) प्रेम भाव, स्नेहभाव।
स्नेहप्रिय (वि०) अत्यधिक प्रिय।
स्नेहबन्धनं (नपुं०) प्रेम प्रवाह। (जयो० १/७१)
स्नेहभाव (पुं०) आसक्ति परिणाम।
स्नेहामात्मन् (पुं०) स्नेहभाव, आत्मीय भाव। (सुद० १३५)
स्नेहरङ्गः (पुं०) तिल।
स्नेहरागः (पुं०) पुत्रादि के प्रतिराग।
स्नेहरुद्रः (पुं०) स्नेहासक्ति। (वीरो० २२/२)
स्नेहवत् (वि०) वात्सल्य की तरह। (जयो० १२/११९)
स्नेहवर्तिका (स्त्री०) वत्ती। स्नेहस्तैलं यत्र सा सुस्नेहा चासौ दशा वर्तिका। (जयो०वृ० ६/१३१)
स्नेहविमर्दित (वि०) तैल चुपड़ने वाला। प्रेम के भण्डार वाला। (दयो० ९८)
स्नेहव्यक्ति (वि०) स्नेह, प्रेमी।
स्नेहसन्निधानी (वि०) ० प्रेम रखने वाला।
० प्रेम के भण्डार वाला। (दयो० ९८)
स्नेहित (भू०क०कृ०) [स्निह्+णिच्+क्त] ० कृपालु, स्नेही, प्रिय।
स्नेहिन् (वि०) [स्हिन्+णिनि] अनुरक्त, स्नेह युक्त।
स्नेहिन् (पुं०) चित्रकार। ० लेप करने वाला।
स्नेहुः (पुं०) [स्निह्+उन्] शशि, चन्द्र।
स्नै (अक०) बांधना, लपेटना, परिवेष्टित करना।
स्नैग्ध्य (वि०) [स्निग्ध+ष्यञ्] चिकनाहट, स्निग्धता।
० सुकुमारता, प्रियता।
स्पन्द् (अक०) धड़कना, हिलना, कांपना, ठिठुरना।
० कंपकंपी, थरथराहट, गति।
स्पन्दनम् (नपुं०) [स्पन्द्+ल्युट्] कांपना।
स्पन्दित (भू०क०कृ०) [स्पन्द्+क्त] कंपित, कप कपाया हुआ, ठिठुरा हुआ।
स्पर्द्धन (वि०) ईर्ष्याकरण। (जयो० १४/१३)
स्पर्द्धाकारिन् (पुं०) प्रतिशत्रु, प्रतिपक्षी। (जयो०वृ० १६/३३)
स्पर्द्धित (वि०) स्पर्धायुक्त। (जयो० २०/७२)
स्पर्ध् (अक०) स्पृहा करना, बराबरी करना, होड़ लगाना।
० प्रतियोगिता करना। ललकारना, उपेक्षा करना।
स्पर्धन् (वि०) ईर्ष्याकरण, बराबरी करना। (वीरो० ३/२६)
स्पर्धा (स्त्री०) [स्पर्ध्+अङ्+टाप्] बराबरी, आपसी टक्कर।
० प्रतियोगिता, होड़।
० चुनौती, सामना।
० ईर्ष्या, कुह।
स्पर्धिन् (वि०) [स्पर्धा+इनि] प्रतिद्वन्द्विता करने वाला, होड़ करने वाला।
० समानता करने वाला।
० सामना करने वाला।
स्पर्धिन् (पुं०) प्रतियोगी।
स्पर्श् (अक०) मिलना, लेना, संयुक्त होना।
० आलिंगन करना।
स्पर्शः (पुं०) छूना, संपर्क करना।
० आलिंगन, संयोग, सघर्ष।
स्पर्शक (वि०) छूने वाला, स्पर्श करने वाला। (दयो० ३७)
स्पर्शन (वि०) छूने वाला, हाथ लगाने वाला।
स्पर्शनम् (नपुं०) ०छूना, ०स्पर्श करना, ०संपर्क, ०संयोग। आत्मना स्पृश्यतेऽनेनेति स्पर्शनम्-स्पृशतीति स्पर्शनम्।
० स्पर्शन इन्द्रिय, स्पर्शजन्य ज्ञान। (सुद० १२७)
० एकेन्द्रिय-स्पर्शन इन्द्रिय।
स्पर्शनकम् (नपुं०) त्वचा, शरीर।
स्पर्शवत् (वि०) [स्पर्श+मतुप्] स्पर्श किये जाने योग्य।
स्पर्शनक्रिया (स्त्री०) चेतन-अचेतन पदार्थ के स्पर्श का चिंतन।
स्पश् (सक०) अवरुद्ध करना, रोकना।
० सम्पन्न करना।
० छूना।
० देखना, निहारना, भांपना, भेद करना।
स्पशः (पुं०) [स्पश्+अच्] गुप्तचर।
० युद्ध, संग्राम।
स्पष्ट (वि०) [स्पश्+क्त] साफ साफ, सरल, स्वच्छ। (सुद० १२५)
स्पष्टम् (अव्य०) स्पष्ट रूप से, साहस पूर्वक। स्पष्टं सुधासिक्त (सुद० २/१९)
स्पष्टगर्भा (वि०) गर्भ के चिह्न युक्त।
स्पष्टता (वि०) वास्तविकता, सत्यार्थता। (सुद० ९) (सम्य० १४२)
स्पष्टनिवेदनम् (नपुं०) असंदिग्ध कथन। (जयो० २/१३७)
स्पष्टपरिभाषणं (नपुं०) स्पष्ट कथन, गर्जन। (जयो०वृ० १२/४७)
स्पष्टप्रतिपत्तिः (स्त्री०) स्पष्ट प्रतीति, वास्तविक ज्ञान।
स्पष्टभाषिन् (वि०) साफ-साफ कहने वाला।
स्पष्टभेदः (पुं०) यथार्थभेद। (वीरो० १६/२६)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्पष्टवक्ता (वि०) शास्ता। (जयो०वृ० १२/२५९)

स्पष्टदशासनविद (वि०) यथार्थ शासन को जानने वाला। (वीरो० २२/४) (जयो०वृ० २०/३०)

स्पष्टाभ (वि०) स्पष्टाच्चार शोभित। (जयो० २/१४७)

स्पष्टी (वि०) स्पष्ट होने वाला। (हित० १७)

स्पृ (सक०) उद्धार करना, मुक्त करना।
 ० अनुदान देना, अंशदान देना।
 ० प्रदान करना, ० रक्षा करना।

स्पृक्का (स्त्री०) [स्पृश्+कक्] एक जंगली पौधा।

स्पृश् (अक०) छूना। ० थपथपाना।
 ० संपर्क करना, संयोग करना। (सुद० १/२१)
 ० प्रभावित करना, पसीजना।
 ० संकेत करना, उल्लेख करना।
 ० छुपाना।

स्पृश् (वि०) छूने वाला, स्पर्शित करने वाला।

स्पृष्ट (भू०क०कृ०) [स्पृश्+क्त] छुआ हुआ, स्पर्शित किया हुआ। सम्पर्क में सोया हुआ।

स्पृष्टिः (स्त्री०) छूना, संपर्क, स्पर्श।

स्पृह् (अक०) कामना करना, इच्छा करना। चाहना। (जयो० ३/६४) स्पृहयति।

स्पृहणम् (नपुं०) [स्पृह्+ल्युट्] इच्छा, कामना।

स्पृहणीय (वि०) [स्पृह्+अनीयर्] मन को भाने वाली, अभिलषणीय। (जयो० ६/७१) वांछनीय, चाहने योग्य।
 ० मनोहर। (जयो० १४/७)

स्पृहणीयता (वि०) आदरणीयता। (दयो० ५५)

स्पृहयालु (वि०) [स्पृह+णिच्+आलुच्] उत्सुक, उत्कठित, वाञ्छावती। (जयो०वृ० १०/७५)

स्पृहा (स्त्री०) [स्पृह्+अच्+टाप्] ० इच्छा, वाञ्छा, चाह, अभिलाषा।
 ० लालसा, कामना।

स्पृह्य (वि०) [स्पृह्+णिच्+यत्] वांछनीय, चाहने योग्य।

स्प्रष् (सक०) आलिंगन करना। (जयो०)

स्फट् (अक०) फूलना, विकसित होना।

स्फटः (पुं०) [स्फट्+अच्] सर्प का फैला हुआ फण/फणा। (जयो० १३/४५)

स्फटयः देखो ऊपर।

स्फटयोत्कट (पुं०) उच्च फण। (जयो० १३/४६)

स्फटा (स्त्री०) [स्फट्+टाप्] फिटकरी।

स्फटिकः (पुं०) [स्फटि+कै+क] बिलौर, कांचमणि। (जयो० ९/८६)
 ० स्फटिक मणि। आच्छ पाषाण (जयो० १२/११६)

स्फटिकाश्मः (पुं०) स्फटिक मणि। (वीरो० ७/९)

स्फटिकारी (स्त्री०) फिटकरी।

स्फटिकी देखो ऊपर।

स्फटिकोचितः (पुं०) स्फटिक निर्मित। (जयो० १२/११६)

स्फण्ट् (सक०) फूलना, विकसित होना।
 ० मजाक करना, हंसी उड़ाना।

स्फरणम् (नपुं०) [स्फर्+ल्युट्] कांपना, थरथराना, धड़कना।

स्फल् (अक०) कांपना, थरथराना, धड़कना। फड़फड़ाना, छपछपाना।

स्फाटिक (वि०) [स्फटिक+अण्] कांचमणि मय, बिल्लौरमय।

स्फाटिकं (नपुं०) बिल्लौर पत्थर 'जिनालय स्फाटिक सौधदेशे' (वीरो० २/३५)

स्फाटित (भू०क०कृ०) [स्फट्+णिच्+क्त] फाड़ा हुआ, फूला हुआ, विकसित हुआ।
 ० विदीर्ण किया हुआ।

स्फाति (स्त्री०) [स्फाय्+क्तिन्] सूजन, शोथ।
 ० वृद्धि।

स्फाय् (अक०) मोटा होना, स्थूल होना। विस्तृत होना, फैलना।
 ० सूजना, बढ़ना।

स्फार (वि०) [स्फाय्+रक्] विस्तृत, दीर्घ, फैला हुआ, बढ़ा हुआ।
 ० अधिक, पुष्कल। ० उच्च, ऊंचा।
 ० उभार, गिल्टी। ० फुटकी, पपड़ी। स्पन्दन, धड़कन।
 ० टंकार।

स्फारम् (नपुं०) प्रचुरता, आधिक्य।

स्फारणम् (नपुं०) [स्फुर्+णिच्+ल्युट्] कंपन, थरथराना।
 ० स्फुरण।

स्फाल् (सक०) खोलना, उद्घाटनय करना। (दयो० ९५)

स्फालः (पुं०) धड़कन, कंपन, थिरकन हिंडन।

स्फालनम् (नपुं०) [स्फाल्+ल्युट्] स्पन्दन, धड़कन।
 ० घिसना, फाड़ना।
 ० सहलाना, थपथपाना।
 ० आश्वासन, हाथ फेरना। (जयो० २१/१९)

स्फिचर (स्त्री०) [स्फाय्+डिच्] चूतड़, कूल्हा।

स्फिट् (अक०) चोट पहुंचाना, मार डालना। क्षति ग्रस्त करना। ० ढकना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्फिर (वि०) [स्फाय्+किरच्] ० बहुत, प्रबल, प्रचुर, प्रभूत। ० असंख्य, विस्तृत, आयत।

स्फीत (भू०क०कृ०) [स्फाय्+क्त] ० प्रशस्त, ० मोटा, बहुत, अधिक, (जयो० ४/५४)
० प्रबल, प्रचुर, पर्याप्त।
० सफल, समृद्ध, ० पवित्र।

स्फीतचन्द्रवदनीय (वि०) प्रशस्त चन्द्र वदन वाली।
० चन्द्रमुख की तरह।
स्फीत: प्रशस्तश्चन्द्र एवं वदनं मुखं यस्या: सा। (जयो०वृ० ४/५४)

स्फीत्कार: (पुं०) अङ्गस्फालन, अङ्गविक्षेप। (जयो०२७/१८)

स्फीति: (स्त्री०) [स्फाय्+क्तिन्] स्फूर्ति। (जयो० ८/७९)
० प्रक्रम, पराक्रम। ० समृद्धि। स्फूर्ति। (जयो० २३/४७)
० प्रसन्न, खुश। (सुद० ७८)
० प्राचुर्य, यथेष्टता, पुष्कलता।

स्फीतिधरी (वि०) स्फूर्तिदायक। (समु० ६/२०)

स्फीतिमण्डित (वि०) आनन्द मंडित। (सुद० ८६)

स्फुट् (अक०) फट जाना, विदीर्ण होना। दरार पड़ना, भंग होना, टूटना।
० खिलना, विकसित होना। (वीरो० ६/३९)
० कुसुमित होना, फूलना।
० भाग जाना, छलांग लगाना, तितर-बितर करना।
० प्रकट होना। (जयो०)
० बतलाना, स्पष्ट करना। (जयो० ५/५१)

स्फुट (वि०) [स्फुट्+क] स्पष्ट। (जयो० ५/५१)
० खिले हुए, विकसित, कुसुमित, प्रफुल्लित। (वीरो०६/३९)
० चमकती हुई (जयो०५/९६) ० प्रकट (जयो० १२)
० स्पष्टता-सम्यग्दृशो भाव चतुष्कमेतत् पर्येत्यमीस्फुटमस्य चेत: (सम्य० ७९)
० साफ, स्पष्ट, श्वेत, शुभ्र, उज्ज्वल। (सम्य० १२१)
० फैले हुए, प्रसारित, विकीर्ण। (जयो० ३/७४)
० प्रत्यक्ष-उत्तमपद-सम्प्राप्तिमितीदं स्फुटमेव प्रवदाम। (सुद०७०)
० निरंतर-जीवन्ति न: स्फुटम्। (दयो० १/४)

स्फुटत्व (वि०) सुस्पष्ट। (जयो० १/२४)

स्फुटदन्तरश्मि: (स्त्री०) चमकती हुई दन्त किरणावली। (जयो० ५/९६)

स्फुटदुकूल: (पुं०) शुभ्र दुपट्टा। (जयो० १३/५६)

स्फुटरूपक (वि०) स्पष्ट अर्थ करने वाली। नासीत्प्रसिद्धि: स्फुटरूपकाया:। (वीरो० १८/५६)

स्फुटशाटी (स्त्री०) हरी साड़ी। (जयो० १३/५६)

स्फुटहंसजन: (पुं०) धार्मिक जन।
० उत्तम हंस समूह-
स्फुटेन हंसजनेन हंसानां पक्षिणां
पक्षे धार्मिक परमहंसानां जनेन समूहेन। (जयो०१३/५८)

स्फुटि:/स्फुटी (स्त्री०) फट जाना।

स्फुटिका (स्त्री०) [स्फुटि+कन्+टाप्] टूटा हुआ, खण्डित, खण्ड, अंश।

स्फुटित (भू०क०कृ०) [स्फुट्+क्त] फटा हुआ, टूटा हुआ। (जयो० १/५०) स्फुटितकुम्भदेव धिगस्तु न:-
० स्पष्ट किया हुआ।

स्फुटितकुम्भदेवं (नपुं०) फूटा घड़ा।

स्फुटितभाव: (पुं०) फूट-फूट होना, बिखर पड़ना। (सुद०९५)

स्फुटीकृत (वि०) स्पष्ट किया हुआ। अपि स्फुटीकृत विश्वविधानं। (सम्य० १५२)

स्फुटीभाव: (पुं०) स्पष्ट भाव। (जयो०वृ० ३/५९)

स्फुट्ट (अक०) तिरस्कार करना, अपमान करना, निरादर करना।

स्फुड् (सक०) ढकना, आच्छादित करना।

स्फुण्ट् (सक०) खोलना, फुलाना। उपहास करना, हंसी उड़ाना।

स्फुण्ड् (सक०) ढकना।

स्फुत् (अव्य०) एक अनुकरण परक ध्वनि।

स्फुर् (अक०) थरथराना, कांपना, फटकना।
० खसोटना, संघर्ष करना, विक्षुब्ध होना।
० उछलना, उद्गत होना।
० चमकना, दमकना, जगमगाना। (जयो० ११/८९, जयो० ३/७१) शोभित होना (सुद० १/१४)
० फैलना, प्रसरित होना।

स्फुर: (पुं०) [स्फुट् भावे घञ्] धड़कना, चमकना, देदीप्यमान होना।

स्फुरकान्ति: (स्त्री०) देदीप्यमान् प्रभा। (जयो० ३/१०४)

स्फुरणम् (नपुं०) [स्फुर्+ल्युट्] चमकना, दमकना, देदीप्यमान होना। झलकना।
० धड़कना, हिलना, कांपना।

स्फुरत् (वि०) छलकने वाला। ० धड़कने वाला। स्फूर्ति (जयो० ८/५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्फुरित (भू०क०कृ०) [स्फुर्+क्त] कंपित, प्रकम्पित, हिलता हुआ।
० चमकता हुआ।
स्फुरद्यशः (पुं०) विकसित तारुण्यकीर्तिः। (जयो० १०/६१)
स्फुरायमाण-सुशोभित होता हुआ। (सुद० १/१४)
स्फुरदिष्टिः (स्त्री०) भाग्यसत्ता, भाग्यवान्। (जयो० २८/७)
स्फुर्च्छ् (अक०) फैलना, विस्मृत होना।
० भूल जाना, विस्मृत होना।
स्फुर्ज् (अक०) गरजना, ध्वनि करना। विस्फोट होना, धड़धड़ाना।
० दहाड़ना।
० प्रकट होना-
बोधः स्फूर्जाति चिद्गुणो भवति
यः प्रत्यामवेद्य सदा। (मुनि० १४)
स्फुल् (अक०) कांपना, धड़कना। लपकना। ० मार डालना।
स्फुलम् (नपुं०) [स्फुल्+क] तंबू, डेरा, शिविर।
स्फुलनम् (नपुं०) कांपना, फटकना, धड़कना।
स्फुलिङ्गः (पुं०) चिनगारी, अग्निकण। (सुद० २/१७)
० विद्युत्, बिजली। (जयो० ६/३६)
० तिलगा। (जयो० १६/६५)
तल्लिङ्गानि तदानीं
स्फुलिङ्गनीति निरगच्छन्।
स्फुलिङ्गम् (नपुं०) चिनगारी, अग्निकण।
स्फूर्जः (पुं०) [स्फुर्ज्+घञ्] मेघ गर्जना। ० इन्द्र वज्र।
स्फुर्जथुः (पुं०) मेघ गर्जना, गड़गड़ाहट।
स्फुर्तिः (स्त्री०) [स्फुर्+क्तिन्] उत्कण्ठा। (जयो० २७/४६)
० उत्साह, उमंग।
० धड़कन, स्फुरण, थरथराहट।
० छलांग, चौकड़ी प्रफुल्लभाव।
स्फुर्तिकर (वि०) रोमांच योग्य। (जयो०वृ० ११/८७)
योगोऽनयोः स्फूर्तिकरो विशेषात्। (जयो० १७/८)
स्फुर्तिमत् (वि०) [स्फूर्ति+मतुप्] धड़कने वाला। विक्षुब्ध।
० कोमल हृदय।
स्फेयस् (वि०) [अतिशयेन स्फिरः ईयसुन्] प्रचुरतर, प्रबल, विस्तारजन्य।
स्फेष्ठ (वि०) [स्फिर+इष्ठन्] प्रबल, प्रचुरतर, अत्यन्त विस्तृत।
स्फोटः (पुं०) [स्फुट करणे घञ्] फूट निकलना, फूट पड़ना।
० अभिव्यक्ति। (जयो०वृ० ११/६०)
० विकास। ० सूजन, कौड़ा, रसौली।
० शब्द व्यञ्जना।
स्फोटकः (पुं०) फोड़ा, पूति। (जयो०वृ० २/५)
स्फोटन (वि०) प्रकट करने वाला, फूटने वाला, विकसित होने वाला।
स्फोटनम् (नपुं०) फाड़ना, ० विकसित होना, चटकना।
० फटका, विदीर्ण होना।
स्फोटनी (स्त्री०) [स्फोटन+ङीप्] बरमा, छिद्र करने का औजार।
स्फोटयितुम्-विकासयितुम् (जयो० १२८/३)
स्फोटिका (स्त्री०) [स्फुट्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] एक पक्षी, कठफोड़ा पक्षी।
स्म (अव्य०) [स्मि+ड] वर्तमान कालिक क्रियाओं का भूतकाल में परिवर्तित करने के लिए लगाया जाने वाला निपात। पातालमूलमनुखातिकया स्म सम्यक्। (सुद० १/३६)
स्मयः (पुं०) अभिमान, अहंकार, गर्व। (सुद० १३४) (जयो० १७/११)
० आश्चर्य, घमण्ड, विस्मय। (जयो० १/६३)
स्मयकः (पुं०) अभिमान, अहंकार, गर्व-सा पदानि परिदृष्टवतीव प्रस्थितस्थ सहसा स्मयकस्य। (जयो० १५/९९)
० रहस्य भाव, आश्चर्य-सम्पादयत्यत्र च कौतुकं नः करोत्यनूढा स्मयकौतुकं न। (सुद० २/२१)
स्मयलोपिन् (वि०) अभिमान नष्ट करने वाली-सम्बभूव वचनं नभसोऽपि निम्न रूपतस्तत्स्मयलोपि। (सुद० १०८)
स्मयसद्मम् (नपुं०) आश्चर्य का स्थान। स्मस्य आश्चर्यस्य सद्म स्थानं यत्र सा। (जयो०वृ० ५/२८)
स्मयसारिणी (स्त्री०) गर्वकुल्या। (जयो० १७/११)
स्मयोच्छेदपटु (वि०) दुरभिमान नष्ट करने में समर्थ-स्मयस्य दुरभिमानस्योच्छेदे निराकरणे पटु समर्थं (जयो० १६/३५)
स्मरः (पुं०) [स्मृ भावे अप्] काम। (जयो० ३/४९)
० कामदेव, (जयो० १/४५, सुद० १/४०) स्मरस्य वागुरा वाला लावण्यसुमनोलता। (जयो० ३/३९)
० प्रत्यास्मरण, स्मरण, याद।
स्मरकल्पः (पुं०) कामावस्था। (सुद० १२२)
स्मरक्रिया (स्त्री०) काम क्रिया, भोगसक्ति की भावना। (जयो० १७/२७)
स्मरकूपकः (पुं०) स्त्री की योनि, भग।
स्मरागारम् (नपुं०) स्त्री की योनि।
स्मरादेशकर (वि०) रतीश शासन प्रवर्तक। (जयो० १६/४७)
स्मरायुधः (पुं०) वज्र, ० काम-बाण। (वीरो० ६/२३) स्मरायुधैः पञ्चतया स्फुरद्भिः। (वीरो० ६/२३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्मरारिः (पुं०) महादेव, शिव। (जयो० ११/६९)
स्मरार्थ (वि०) कामार्थ। (जयो० ११/२३)
स्मरोत्तानम् (नपुं०) कामरूप उत्तान, कामश्री।
लतेव मृद्वी मृदुपल्लवा वा कादम्बिनी पीनपयोधरा वा।
समेत्वलम्भुन्नतिमन्नितम्बा तटी स्मरोत्तानगिरेरियं वा।।
(सुद० २/५)
स्मार (वि०) [स्मर+अण्] काम सम्बंधी, स्मरण। (जयो० १८/१३)
स्मारक (वि०) स्मृति चिह्न, पूर्व पुरुष का यादगार स्तूप।
स्मारकम् (नपुं०) स्तूप, स्मरण स्थान।
स्मारणम् (नपुं०) [स्मृ+णिच्+ल्युट्] स्मरण करना, याद दिलाना।
स्मार्त (वि०) स्मृति सम्बंधी, कामजन्य, स्मृति पर आधारित। (जयो०वृ० १६/८०)
स्मार्तः (पुं०) पंथ, सम्प्रदाय, अनुयायी।
स्मार्तधर्मः (पुं०) स्मृति प्रतिपादिक धर्म। (जयो० १६/८०)
स्मासाद्य (वि०) आनन्दित करने वाले। (सुद० २/२८)
स्मि (सक०) मुस्कुराना, हंसना, अपहास करना। खिलना, फूलना।
स्मिट् (अक०) अपमानित करना, घृणा करना।
० प्रेम करना।
स्मित (भू०क०कृ०) [स्मि+क्त] हास्य मुस्कान युक्त, हंसी युक्त। (जयो० १२/१२९) (जयो० १२/११२) (सुद० ३/४०)
० मन्दहास्य। (जयो० २/१५५)
० खिला हुआ, प्रफुल्लित।
स्मितचेष्टा (स्त्री०) हास्यभाव। (जयो० १२/१२९)
स्मितम् (नपुं०) मंद हंसी, मुस्कान।
स्तिमपयस् (नपुं०) स्तन, पयोधर। (जयो० ३/६०)
स्मितपूर्वम् (अव्य०) मुस्कान के साथ, मंद हास्य से।
स्मितपुष्पं (नपुं०) हास्य रूप कुसुम। (जयो० १२/११९)
स्मितबाला (स्त्री०) हर्षित बालिका, हंसमुख बालिका।
स्मितभावः (पुं०) हास्य भाव, मधुर मुस्कान।
स्मितवारिमुक् (वि०) हंसी रूपी जल छोड़ने वाली। स्मितचेष्टा वाली। स्मितमेव वारि मुञ्चतीति। (जयो०वृ० १२/१२९)
स्मितसत्त्विषामय (वि०) सस्मितमय, हंसी के योग्य। (सुद० ३/१०)
स्मितसारजुष्टिः (स्त्री०) प्रीतिपूर्वको उपलब्धि। (जयो० १६/४६)

स्मितांशु (पुं०) स्मित किरण, प्रफुल्लित किरण। (जयो०५/८२)
स्मितामृतम् (नपुं०) मन्दहास्य रूप अमृत। (वीरो० २/१२३)
स्मितामृतांशुः (पुं०) चन्द्र (जयो० ११/५३) 'स्मितमेवामृतांशुश्चन्द्र'
० परितोषभाव, संतोषभाव। (जयो० १७/४)
स्मील् (अक०) झपकना, आंख से संकेत करना।
स्मृ (अक०) प्रसन्न होना, संतुष्ट होना।
० प्ररक्षा करना, सुरक्षा करना।
० याद करना, स्मरण करना, सोचना। (सुद० ८६) (सुद० ४/३४) सदा सुखस्यैव तव स्मरामः। (वीरो०५/७)
० चिंतन करना, ध्यान करना, याद करना। (जयो०४/४८)
० प्रकथन करना, जाप करना, उच्चारण करना।
स्मृत (वि०) याद आई। (दयो० ६५)
स्मृतिः (स्त्री०) स्मरण, याद, बोध, चिंतन।
० स्मृति ज्ञान। (वीरो० २०/१७)
० स्मार्त (जयो०वृ० १६/८०)
० स्मरण मात्र। (जयो० ११/८५)
० संहिताख्य शास्त्र। (जयो० ३/१२)
० प्रत्यक्ष को अन्वित करने वाली बुद्धि।
० पूर्व अनुभूत विषय का स्मरण।
स्मृतिज्ञानम् (नपुं०) पूर्व अनुभूत विषय का ज्ञान। स्मरणं स्मृतिः सैव ज्ञानं स्मृतिज्ञानम्। (त०भा० १/१३)
स्मृतिपथः (पुं०) स्मरण शक्ति।
स्मृतिप्रबन्धः (पुं०) स्मृतिशास्त्र।
स्मृतिभव (वि०) कामाधिगत । (जयो० १८/६१)
स्मृतिभ्रंशः (पुं०) स्मृति का नष्ट होना।
स्मृतिरोध (पुं०) स्मरण न रहना।
स्मृतिविभ्रमः (पुं०) याद न आना।
स्मृति विरुद्ध (वि०) अज्ञानता, मूढता।
स्मृतिविरोधः (पुं०) स्मृतियों का विरोध।
स्मृतिशास्त्रम् (नपुं०) संहिताख्य शास्त्र। (जयो० ३/१२) ० धर्म शास्त्र, धर्मसंहिता।
स्मृतिशेष् (वि०) उपरत, मृत। ० अचेत।
स्मेर (वि०) [स्मि+रन्] हंसने वाला, मुस्कराने वाला, प्रहास युक्त, प्रसन्नगत। (जयो० १५/७२)
० फूला हुआ, खिला हुआ, प्राफुल्लित।
स्मेरमुखी (वि०) प्रसन्नवदना, (जयो० वृ० १५/७२) सहायवक्त्रा।
स्मेरविष्किरः (पुं०) मयूर, मोर, कलापी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्यदः (पुं०) [स्यन्द्+क] तीव्रगति, अतिवेग।

स्यन्द् (अक०) टपकना, चूना, रिसना।

० स्रविह होना, बूंद बूंद गिरना।

० अर्क निकालना, बहना।

० उड़ेलना, पिघलना।

स्यन्दः (पुं०) [स्यन्द् भावे घञ्] बहना, रिसना, टपकना, छरना।

० जाना, चलना।

० निर्झर (जयो० ३/१०५) जल प्रवाह-'स्वर्णदीसलिलस्यन्दः।

० गाड़ी, रथ। (जयो० ७/१९) प्रत्यङ्मुखे सखे स्यन्दे रोषो मे प्रागिहोदितः।

स्यन्दन (वि०) द्रुतगामी, प्रवाहशील, गतिमान।

० चुस्त, फुर्तीला।

स्यन्दनः (पुं०) सेना, रथ, वाहन, यान। (वीरो० ६/२९) (जयो० २१/२४, १०/१)

० वायु, पवन। ० तिनिश वृक्ष। (जयो० २१/२५)

स्यन्दनम् (नपुं०) गति, प्रवाह, वेग।

० चलना, बहना।

० रिसना।

स्यन्दनसञ्चपः (पुं०) रथ समूह। (जयो० १३/१४)

स्यन्दनिका (स्त्री०) [स्यन्दन+ङीष्+कन्+टाप्] गतिमान, रिसने वाला, झरने वाला, गतिशील, द्रतगामी।

स्यन्दिनी (स्त्री०) लार, थूक।

स्यन्न (भू०क०कृ०) [स्यन्द+क्त] रिसा हुआ, टपका हुआ, गिरा हुआ।

स्यम् (अक०) शब्द करना, आवाज करना। ध्वनि करना।

० चीखना, चिल्लाना।

० विचार करना, चिंतन करना।

स्यमन्तकः (पुं०) [स्यम्+अच्+कन्] मूल्यवान् माणिक्य, मोती।

स्यमिमः (पुं०) मेघ, बादल।

० बामी।

स्यमिका (स्त्री०) [स्यमिक+टाप्] नील।

स्यात् (अव्य०) शायद, कदाचित्। (सुद० १/६) कथञ्चित्, ऐसा भी, इस तरह से भी। ऐसा करने में भी-'लोकाश्रयो भवेदाद्यः, परः स्यादागमाश्रयः। (हित०सं०३)

० अस् धातु के विधिलिङ्गः के प्रथम पुरुष एक वचन में-'स्यात्' का प्रयोग होता है। 'यतः स्यात् पौत्र-दौहित्रादि विधिचित्तरञ्जनः'। (हित०सं० १०) तद्व्यक्तावेव तत्त्वं स्यान्न च शूद्रोऽस्ति सा यदि। (हित० १४)

० है। सतां ततिः स्याच्छरदुक्तरीति। (सुद० १/८)

० जो उभय धर्मों की व्यवस्था करने वाली है वह 'स्यात्' है।

अनेकशक्त्यात्मकवस्तु तत्त्वं तदेकया संवदतोऽन्यसत्त्वम्।
समर्थयत्स्यात्पदमत्र भाति स्याद्वादनामैवमिहोक्तिजातिः।
(वीरो० १९/८)

स्यात्कार (वि०) अनेकान्तोद्योत्कार (जयो० ३/४३)

स्याद्वादः (पुं०) अनेकान्तात्मक वस्तु निरूपण, अनेक धर्म के स्वभाव का कथन। कथञ्चिद्वादः, अनेकान्तवाद। (वीरो० १९/८)

० जिसमें विवक्षा की अपेक्षा से कथन होता है। विस्तार के लिए वीरोदय का उन्नीसवां सर्ग दृष्टव्य है।

घटः पदार्थश्च पटः पदार्थः शैत्यान्वितस्यास्ति घटेन नार्थः।
पिपासुरभ्येति यमात्मशक्त्या स्याद्वादमित्येतु जनोऽति भक्त्या।। (वीरो० १९/१५) 'स्यात् कथञ्चित् प्रतिपक्षापेक्षया वचनं स्याद्वादः। (जैन०ल० २०२)

स्याद्वादतत्परः (पुं०) स्याद्वाद सिद्धान्त में लीन। (जयो० १८/६५)

स्याद्वादभाक् (नपुं०) अनेकान्तवाद का कथन स्याद्वादमनेकान्तवाद भजतीति। (जयो० १८/६०)

स्यादवादमुद्रा (स्त्री०) चक्रनय व्यवस्था, स्याद्वाद की व्यवस्था। मुमुक्षुभिस्तीर्थतया किलेष्टा स्याद्वादमुद्राङ्कितचक्रचेष्टा (भक्ति० ५)

स्याद्वादविद्याधिपति (पुं०) वीरप्रभु, तीर्थंकर महावीर। (वीरो० १३/१९)

स्यूत (भू०क०कृ०) सिला हुआ, नत्थी किया गया।

स्यूतिः (सिव् भावे क्तिन्) सीना, टांकना, सिलना।

० सन्तति-सन्ततौ सीव्यने स्यूति इति विश्वलोचने। (जयो०वृ० १४/२३)

० उत्पत्ति। (वीरो० १९/१६)

० वंशावली, कुल।

० थैला।

स्यूनः (पुं०) सूर्य। ० किरण।

० थैला, बोरा। (जयो० १८/७५) स्यूनोऽर्के किरणे इति वि।

स्यूमः (पुं०) [सिव्+मक्] प्रकाश किरण।

स्योतः (पुं०) थैला, बोरा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्योन (वि०) सुंदर, सुखद।
○ शुभ, कल्याणकारी।
स्योनः (पुं०) सूर्य। ○ आभा।
स्योनम् (नपुं०) थैला, बोरा।
स्रंस् (अक०) गिरना, रिसना, झरना, बहना।
○ लटकना, खिसकना। शिथिल होना।
स्रंसः (पुं०) [स्रंस्+घञ्] गिरना, खिसकना।
स्रसनम् (नपुं०) [स्रंस्+णिच्+ल्युट्] गिरना, झड़ना, खिसकना।
स्रंसिन् (वि०) [स्रंस्+णिनि] गिरने वाला, खिसकने वाला, लटकने वाला।
स्रक्करी (स्त्री०) मालाकारिणी, मालिन। (जयो० १०/१११)
स्रग्विन् (वि०) [स्रज्+विनि] माला युक्त, हारधारण किए हुए।
स्रज् (स्त्री०) [सृज्यते-सृज्+क्विन्] माला, हार, पुष्पहार। (सुद०)
स्रज्दामन् (नपुं०) माला की गांठ।
स्रज्धर (वि०) हार धारण करने वाला।
स्रज्पुष्पम् (नपुं०) माला के फूल।
स्रज्युक्त (वि०) हार सहित, माला युक्त।
स्रजाक्षरम् (नपुं०) अक्षरमाला। (जयो० २०/७२)
स्रज्वा (स्त्री०) [सृज् वा] रस्सी, डोरी, धागा।
स्रद्धू (स्त्री०) अपान वायू सूत्र।
स्रम्भ् (अक०) [स्रु+अप्] बहना, रिसना, चूना, टपकना।
○ बिंदु, प्रवाह।
○ फुहार, झरना।
स्रवणम् (नपुं०) [स्रु+ल्युट्] ○ बहना, चूना, रिसना।
○ पसीना, ○ मूत्र।
○ झरना, गिरना-स्रोतो विमुच्य स्रवणं स्तनान्ताद्। (वीरो० १२/३०)
स्रवत् (वि०) [स्रु+शतृ] बहने वाला, रिसने वाला, टपकने वाला।
स्रवता (स्त्री०) [स्रवत्+ङीप्] प्रसरता। (जयो० २३/१३)
स्रवन्ती (स्त्री०) नदी, सरिता। बहुधावलिधारणीं स्रवन्तीं नितरां नीरदभावमाश्रयन्तीम्। (जयो० २०/२)
स्रष्टु (पुं०) [सृज्+तृच्] बनाने वाला, रचने वाला, ब्रह्मा।
स्रस्त (भू०क०कृ०) [स्रंस्+क्त] गिरा हुआ, खिसका हुआ, नीचे आया हुआ।
○ च्युत, पतित, लम्बित।
स्रस्तरः (पुं०) [स्रस्+तरच्] पलंग, शय्या, आसन, बिछौना।
स्राक् (अव्य०) [स्रुक+ढाक्] फुर्ती से, तेजी से, शीघ्र से। (जयो० ३/६८) सहालिभिः पार्श्वमुपागमि प्राक् ततः शनैस्तेन तयैकया स्राक्। (जयो० १७/६) स्राक्-शीघ्रमेव
स्रागालिलिङ्ग (वि०) गले से आलिङ्गित। (जयो० २०/१५)
स्रावः (पुं०) [स्रु+घञ्] प्रवाह, झरना, निर्झर।
○ रिसना, टपकनी।
स्रावक (वि०) [स्रु+ण्वुल्] बहाने वाला, गिराने वाला।
स्राविणी (वि०) देने वाली। (दयो० ५३)
स्रिभ् (अक०) चोट पहुंचाना, मार डालना।
स्रिम्भ् देखो ऊपर।
स्रिव् (अक०) सूख जाना, म्लान होना, मुर्झाना।
स्रु (अक०) बहना, झरना, रिसना, टपकना। (सुद० ४/१०)
○ चूना, छीनना, नष्ट होना।
○ इधर-उधर होना, उड़ेलना, डालना, बखेरना।
स्रुघ्नः (पुं०) एक जनपद।
स्रुघ्नी (स्त्री०) [स्रघ्न+अच्+ङीष्] सज्जी, देह।
स्रुच् (स्त्री०) [स्रु+क्विप् चिट् आगम] लकड़ी का चमचा।
स्रुत् (वि०) [स्रु+क्विप्] बहने वाला, गिरने वाला, उडेलने वाला।
स्रुतिः (स्त्री०) [स्रु+क्तिन्] बहना, रिसना टपकना, झरना, चूना।
○ राल, ○ धारा, प्रवाह। (जयो० ९१/९)
स्रुवः (पुं०) चमचा, लकड़ी का चमचा।
○ झरना, निर्झर।
स्रेक् (अक०) गतिशील होना।
स्रै (अक०) उबालना, पकाना।
स्रोतम् (नपुं०) धारा, प्रवाह, निर्झर झरना। (वीरो० १२/३०) स्रोतो विमुच्य स्रवणं स्तनान्ताद् यूनामिदानीं सरसीति कान्ता। (वीरो० १२/३०)
स्रोतस् (नपुं०) [स्रु+तसि] सरिता, नदी, धारा, निर्झर, झरना, प्रवाह।
○ लहर।
स्रोतस्यः (पुं०) शिव, ○ चोर।
स्रोतस्वती (स्त्री०) नदी, सरिता।
स्रोतस्विनी (स्त्री०) [स्रोतस्+मतुप-विनि] (दयो० २३) सरिता, नदी।
स्व (वि०) [स्वन्+ड] अपना, निजी। (सुद० ४/७) तस्मिन् परः स्व आत्माः यस्य। (जयो० १/९८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० प्रधान (वीरो० २१/२४) विभेति मरणमिति श्रुत्वा स्वस्य सदा पुनः स्वं स्वं धाम ययुः समर्त्यो। (दयो० वीरो०७/३८)

स्वः (पुं०) आत्मीयजन, कुटुम्बिजन, बांधव।

स्वक (वि०) [स्व+अकच्] अपनी, निजी। (समु० ७/७) परिवदेदिह कोऽयमजं स्वकम्।

स्वकम्पन् (पुं०) पवन, वायु।

स्वकर (वि०) अपना हाथ-स्वकरे कुसुमस्रजः। (सुद० ४/२) ० स्वकिरण, स्वकान्ति, स्वहस्त। (जयो० ११/७)

स्वकर्त्तव्य-परायणाम् (नपुं०) अपने कार्य में निपुण। (सुद० ९४)

स्वकर्मन् (नपुं०) अपना कार्य। (वीरो० १६/१०)

स्वकर्मसत्ता (स्त्री०) अपनी कर्मशैली की प्रभुता। (सुद० ५/२१)

स्वकर्मिन् (वि०) स्वार्थी।

स्वकार्यम् (नपुं०) अपना काम।

स्वकीय (वि०) [स्वस्य इदं स्व-छ-कुक् आगमः] अपने (दयो० ९) आत्मीय, निज, अपना। (जयो०वृ० १३/१२) (जयो० १/६८)

स्वकीय-अज्ञानम् (नपुं०) आत्मतम। (भक्ति० ३)

स्वकीय-कार्यम् (नपुं०) अपना काम।

स्वकीयगृहम् (नपुं०) निजगृह।

स्वकीयचेटी (स्त्री०) निजदासी। (जयो० १२/११०)

स्वकीयदृष्टिः (स्त्री०) आत्मीय दृष्टि, आत्मदर्शन।

स्वकीयमञ्चलम् (नपुं०) स्वमुरोऽम्बर (जयो०वृ० १२/११४)

स्वकीयसाधना

स्वकीयहितम् (नपुं०) निज कल्याण। (मुनि० ६)

स्वकुलः (पुं०) अपना परिवार, आत्मज। (जयो०वृ० १/३८) बन्धुवर्ग। (जयो० १२/६५)

स्वकुलदेवता (पुं०) अपना कुलदेवता। आत्रिकेष्टहतिहापनोद्यतः साधयेत् स्वकुलदैवताद्यतः। (जयो० २/३९)

स्वकुलसक्ति (स्त्री०) अपने कुल की मर्यादा।

स्वकृत (वि०) अपने द्वारा किए गए। (दयो० ८) स्वनिहित (जयो० २/२२)

स्वकृतदोषः (पुं०) स्वकीय दोष/कष्ट। (जयो० १/९२)

स्वघातिस्पर्द्धिकः (पुं०) आत्मघाती गुण। (सम्य० ६०) स्वकुले सक्तिरस्यास्तीति (जयो०वृ० २/८)

स्वकुशल (वि०) अपने आपमें परिपूर्ण, समृद्धशाली।

स्वगति (पुं०) निज चेष्टा। (जयो० १४/२८)

स्वगनन्दिन् (वि०) आत्मानन्द। स्वगमात्मगतं यन्नन्दे: प्रसन्नताया (जयो०वृ० ६/१२७)

स्वगृहम् (नपुं०) अपना घर। (जयो०वृ० १३/१)

स्वङ्ग् (अक०) जाना, पहुंचना।

स्वङ्गः (पुं०) आलिंगन।

स्वङ्गिन् (वि०) शोभनमङ्गं यस्या सा स्वङ्गी। (जयो० ५/१०७) सुंदर शरीर वाली।

स्वचक्षुस् (नपुं०) अपनी आंख, निज अक्षि। (वीरो० ९/३)

स्वचेष्टित (वि०) अपनी चेष्टा वाला। (वीरो० १०/१३)

स्वच्छ (वि०) साफ, स्पष्ट, सुंदर, निर्दोष। (सुद०)

स्वच्छः (पुं०) स्फटिक।

स्वच्छं (नपुं०) मोती।

स्वच्छत्व (वि०) शुभ्रता। (सुद० २/४७) ० सौंदर्य।

स्वच्छदरः (नपुं०) निर्दोष द्वार। स्वच्छस्य निर्दोषस्य दरस्य द्वारस्य। (जयो०वृ० ११/९५)
० नाभिगर्त, निर्दोष समुदाय।
० निज पत्र। (जयो० ११/९५)

स्वच्छन्द (वि०) स्वातन्त्र्य (जयो०वृ० १३/११०) स्वेच्छाचारी।

स्वज (वि०) आत्मगत, अपने से उत्पन्न हुआ।

स्वजः (पुं०) रक्त-स्वजः स्वेदे स्वजं रक्ते 'इति विश्वलोचनः' (जयो०वृ० ७/९३)
० पुत्र।
० स्वेद, पसीना।

स्वजम् (नपुं०) रुधिर।

स्वजनः (पुं०) आत्मीय लोग, कुटुम्बिजन, बंधु परिजन, पारिवारिक सदस्य, रिश्तेदार।

स्वजनानुविधानम् (नपुं०) स्वजनों का मिलन। स्वजनानां पित्रादीनामनुविधानं सम्भालनम्। (जयो०वृ० १३/१)

स्वजीवनम् (नपुं०) अपना जीवन।

स्वञ्ज् (सक०) आलिंगन करना, भींचना, बांहों में लेना, दबोचना।
० घेरना, मरोड़ना, आबिद्ध करना।

स्वंजनः (पुं०) आत्मीय परिजन। (जयो० ५/१३)

स्वद् (अक०) नाश करना, समाप्त करना।

स्वतनयः (पुं०) उदरोद्भव पुत्र। (जयो०वृ० २/५२)

स्वतस् (अव्य०) [स्व+तसिल्] अपने आप, अचानक, अनायास ही। (सुद० १/३०) स्वयं-यत्र स्वतो वा गुणवृद्धिसिद्धिः (जयो० १/३१) स्वत एव अनायासेनैव (जयो०वृ० १/३१) अनायास। (जयो० २/५८)
० आत्मना। (जयो०वृ० ३/१९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वनिर्वाहिक (वि०) निर्दोष प्रवृत्ति वाला। (मुनि० ८)

स्वनिवासयोग्य: (पुं०) राजकीय सदन। (जयो०वृ० ४/२६)

स्वतंत्र (वि०) आत्माश्रित, आत्मनिर्भर। स्वाधीन (जयो० २/६१)
 ० पृथक्-पृथक् (सम्य० २१) जीवाश्च केचित्त्वणव: स्वतन्त्रा:।
 ० अनियन्त्रित, स्वेच्छाचार।

स्वतन्त्रवृत्ति: (स्त्री०) ०आत्मनिर्भर प्रवृत्ति ०स्वाधीन वृत्ति, ०आत्मधीन गति। स्वतन्त्रा वृत्तिर्व्यवहारो यस्य (वीरो० ४/५७) स्वतन्त्रवृत्ति: प्रतिभातु: सिंहवद्र मात्मवच्छ-श्वदखण्डितोत्सव:। (वीरो० ४/५७)

स्वतितार: (पुं०) उच्चै स्तार, समुन्नत भाव। (जयो० १३/३५)

स्वत्वम् (वि०) अपनी विद्यमानता, स्वामित्क।

स्वद् (अक०) मधुर होना, रुचिकर होना।
 ० स्वाद लेना, खाना।
 ० चखना, खाना।
 ० उपभोग करना।

स्वदनम् (नपुं०) [स्वद्+ल्युट्] चखना, स्वाद लेना, रसास्वदन करना।

स्वदारा (स्त्री०) अपनी स्त्री। (सुद० १०८)

स्वदारसंतोव्रतम् (नपुं०) श्रावकव्रत का भेद, जिसमें श्रावक एक पत्नी व्रतधारी होता है। (सुद० १११)

स्वदित (भू०क०कृ०) आस्वादित, चखा गया, खाया गया।

स्वदेश: (पुं०) जन्म स्थान, अपना देश, निज भूक्षेत्र।

स्वदृक् (नपुं०) अपने नेत्र। (सुद० ६९)

स्वधर्म: (पुं०) अपना धर्म, आत्मनिष्ठा। (सम्य० १/३)

स्वधृत (वि०) अपने द्वारा धारण किया गया। (जयो० ९/४८)

स्वन् (अक०) शब्द करना, ध्वनि करना, शोर मचाना, कोलाहल करना। ० गाना।

स्वनजित (वि०) कण्ठध्वनि से पराभूत, स्वर-माधुर्य तिरस्कृत। (जयो० ६/७)

स्वनि: (स्त्री०) ध्वनि।

स्वनिक (वि०) [स्वन+ठक्] शब्द करने वाला, शोर मचाने वाला।

स्वनित (भू०क०कृ०) ध्वनित, गुंजित, कूकित, कोलाहल जन्य।

स्वनिर्मित (वि०) अपने द्वारा बनाया गया। (जयो० २/१३५)

स्वनिभ (वि०) प्रसन्न, हर्षित। (जयो० १३/७४)

स्वपक्ष: (पुं०) ० आत्म पक्ष, ० अपना समूह।
 ० अपनी बात। (वीरो०वृ० २/१९)

स्वपक्षपरिरक्षणम् (नपुं०) अपने पक्ष का समर्थन, अपने मत की सुरक्षा। (वीरो० २२/१९)

स्वपदम् (नपुं०) आत्म चरण। (जयो० ६/४८)

स्वपरप्रकाशक: (पुं०) स्व और पर को प्रकाशक करने वाला। आत्मज्ञानपना, अपनी बोधता। (जयो०वृ० १/८५)
 ०प्रमाणाश्रितविषयं, ०निर्णयात्मक, ०व्यवसाय।

स्वपरमण्डल् (नपुं०) अपना और दूसरे का क्षेत्र।

स्वपाणि (नपुं०) अपना हाथ। (वीरो० १६/४)

स्वपुरं (नपुं०) अपना नगर। (जयो० ३/११६)

स्वपूर्वजन्मन् (नपुं०) अपना पूर्वजन्म, पूर्वभव, पूर्व पर्याय। (समु० ४/२२)

स्वपुज: (पुं०) ज्ञातिजन-स्वं ज्ञातिजनं पुष्णातीति। (जयो० ६/२७)

स्वप्रकाश (वि०) स्वत: स्पष्ट, अपने आप प्रतिभासित।

स्वप्रतिपत्ति: (स्त्री०) अपनी सुंदर चेष्टा।
 निजबन्धुजनस्य सम्मदाम्बुनिधिं
 स्वप्रतिपत्तितस्तदा। (सुद० ३/२७)

स्वप्रयोगात् (अव्य०) अपने प्रयोग से निज प्रयत्न से।

स्वप्राणेश्वर: (पुं०) पति। (सुद० ११३)

स्व:पुरी (स्त्री०) एक नगरी। (दयो० १/१०)

स्वप्रेष्ठ (वि०) परमप्रिय, अतिशय प्रेमाधिक्य। (जयो० ३/११६)

स्वप् (अक०) सोना, शयन करना।
 ० लेटना, विश्राम करना, आराम करना।
 ० तल्लीन होना, ध्यानस्थ होना।

स्वप्न: (पुं०) [स्वप्+नक्] शयन विकल्प। (जयो० २२/५८)
 ० कदाचित्, निन्द्रागत होना।
 ० आलस्य दशा, निन्द्राभाव। (सुद० ९९)
 क्षणभूरास्तांय न स्वप्नेऽप्युत।

स्वप्नकर (वि०) निन्द्राजन्य।

स्वप्नकृत् (वि०) ०स्वप्नजन्य, ०निन्द्रा युक्त।

स्वप्नगृहम् (नपुं०) शयनकक्ष।

स्वप्नजात (वि०) निन्द्रावस्थागत।

स्वप्नदोष: (पुं०) शुक्रपात, शयन में होने वाला वीर्यक्षरण।

स्वप्नधीगम्य (वि०) शयन में बुद्धिगत अनुभूति वाला।

स्वप्ननिकेतनम् (नपुं०) शयनकक्ष शय्यागृह।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वप्न प्रपञ्च (पुं०) निन्द्राभय।
स्वप्न विचारः (पुं०) स्वप्न फल पर चिन्तन।
स्वप्नशील (वि०) शयनशील।
स्वप्नषोडशं (नपुं०) सोलह स्वप्न।
स्वप्नषोडशी (वि०) सोलह स्वप्न देखने वाली। (वीरो० ४/३५)
स्वप्नावलिः (स्त्री०) स्वप्नक्रम। (सुद० २/९०)
स्वबाहुमूल (नपुं०) अपनी बाहु का भाग। (सुद० ११७)
स्वभट्टः (पुं०) अपने आप में योद्धा।
स्वभा (स्त्री०) निजकान्ति (सुद० ८४)
स्वभावः (पुं०) प्रकृति, मूलभाव, मूलगुण। (सुद० ३४)
 ० सहज भाव, प्राकृतिक भाव।
 ० निजकर्त्तव्य (वीरो० १६/१८)
 ० आत्मीय परिणाम। (भक्ति० ३) मयोऽहमन्यो न हि मे स्वभावः।
 ० आत्म तत्त्व। (जयो० ५/४२)
 ० निजभाव। (सम्य० ४१)
 ० भाव। (सम्य० ८४)
 ० मिलता, जुलता वर्णन।
स्वभाव-सम्भावनम् (नपुं०) अपने आत्म स्वभाव से निर्मल। (सुद० ११८)
स्वभावोक्तिः (स्त्री०) यथार्थ वर्णन।
स्वभावोक्तिरलङ्कारः (पुं०) एक अलंकार विशेष, जिसमें नाना प्रकार पदार्थों का साक्षात् रूप से वर्णन किया जाता है।
 किं फलं विमलशीलशोचना द्रक्ष,
 साक्षिकतया सुलोचनाम्।
 तं बलीमुखबलं बलैरलं,
 पाशबद्धमधुनेक्षतां खलम्।। (जयो० ७/७७)
 यहां वानर के चपल स्वभाव का वर्णन होने से स्वभावोक्तिः अलंकार है।
स्वभावोत्थः (पुं०) मनसोत्थ, मनसोत्पत्ति। (जयो० १९/८)
स्वभाषा (स्त्री०) अपनी भाषा। (वीरो० १५/४)
स्वभिराम (वि०) मनोहर। (जयो० ५/६४)
स्वभू (पुं०) ब्रह्मा।
स्वभूत (वि०) निजीय उत्पत्ति वाला। (जयो० २३/३३)
स्वमात्रम् (नपुं०) अपना ही कार्य। (वीरो० १६/१८)
स्वमुरोऽम्बरः (पुं०) स्वकीय अञ्चल। (जयो० १२/११४)
स्वमूर्ध्नि (नपुं०) स्वशिरस्, अपना मस्तक। (जयो० १८/३५)
स्वयम् (अव्य०) [सु+अय्+अम्] अपने आप, निजात्मरूप से, (सुद० ८३) स्वयं स्थाने परम शब्दो वास्तु (जयो०७/६२)
 ० अनायास ही, अचानक ही (सुद० ३/२७)
 नित्यानन्दपदे निरन्तररतो भूयाः स्वयं सर्वदा। (मुनि० १४)
स्वयंग्रहः (पुं०) बलात् ग्रहण करना।
स्वयंजात (वि०) अपने आप उत्पन्न हुआ।
स्वयंदत्त (वि०) अपने आप दिया हुआ।
स्वयंप्रभा (स्त्री०) पुण्डरीक नगर के राजा की पत्नी। (जयो० २३/५३)
स्वयंभुवः (पुं०) आदीश्वर ऋषभदेव। (मुनि० २)
स्वयंभू (पुं०) ब्रह्मा, आदीश्वर तीर्थंकर का नाम।
 ० प्रकृति। (जयो० २४/२०) (जयो० ११/६८)
स्वयम्भूराज (पुं०) नाम विशेष। ० ब्रह्मा, आदिनाथ।
 ० स्वयं भू मण्डल। (सुद० १२४)
स्वयमिति (अव्य०) स्वयं ही, अपने आप ही। (सुद० १०८)
स्वयमेव (अव्य०) स्वयं ही, अपने आप ही। (सुद० ३/४३) (समु० १/१) अनायासेनैव, अचानक ही। (जयो० ४/३५, २३/३५)
स्वयंवर (पुं०) इच्छानुसार वर का चयन, (जयो० ५/१) स्वयं बालामुखेनैव वरनिर्वाचनम्। (जयो०वृ० ३/६६)
स्वयंवरनुमा (स्त्री०) स्वयंवर शाला। (जयो० ४/६)
स्वयंवरमण्डलम् (नपुं०) स्वयंवर स्थान। (जयो० ५/१२)
स्वयंवरमहोत्समवः (पुं०) स्वयं वरण का विशाल उत्सव। (जयो० वृ० ५/२०)
स्वयंवरविधानम् (नपुं०) स्वयं वरण का नियम।
 हीनो वाऽस्तु कुलीनो वा, दीनो वा सधनोऽथवा।
 स्वयंवरविधाने तु, बालावाञ्छा बलीयसी।।
 (हित०सं० पृ० २१)
स्वयश (वि०) अपनी कीर्ति। (जयो० २३/३५)
स्वयोगः (पुं०) आत्मयोग। ० निज ध्यान योग।
स्वयोगभूतिः (स्त्री०) अपना योग वैभव।
 वनाद्वनं सम्व्यचरत्सुवेशः
 स्वयोगभूत्या पवमान एषः।। (सुद० ११८)
स्वयोनि (वि०) मातृपक्ष सम्बंधी।
स्वयोषित (वि०) विवाहित। (जयो० १६/३२)
स्वर् (अक०) दोष निकालना, कलंक लगाना, निंदा करना।
स्वर् (अव्य०) [स्वृ+क्विप्] स्वर्ग सा, परलोक जैसा।
स्वरः (पुं०) [स्वर्+अच्] शब्द, आवाज, ध्वनि। (जयो०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११/४७) अकारादि स्वर (जयो० ११/७८) अकारादिवर्णं गच्छतिः। संगीत। (जयो० ११/४७)

स्वरग्रामः (पुं०) स्वरसमूह, सप्तक स्वर।

स्वरबद्ध (वि०) ताल एवं लय में बंधा हुआ।

स्वरभक्तिः (स्त्री०) स्वर उच्चारण में र् और ल् अन्तर्निविष्ट स्वर की ध्वनि जब इन अक्षरों के पश्चात् कोई ऊष्मवर्ण या कोई अकेला व्यञ्जन हो। संयुक्त ध्वनियों के उच्चारण में कठिनाई का अनुभव होने के कारण उच्चारण सौकर्म के लिए उनके बीच में स्वरागम हो जाता है। सूर्य-सूर।

स्वरभङ्गः (पुं०) स्वर का उच्चारण का स्खलन।

स्वरमण्डलिका (स्त्री०) वीणा विशेष का नाम।

स्वरलासिका (स्त्री०) बांसुरी, मुरली।

स्वरशून्य (वि०) संगीत के ताल आदि स्वरों का अभाव या हीनता।

स्वरसः (पुं०) आत्म रस। (सम्य० १२)

स्वरसंयोगः (पुं०) स्वर का मिलन।

स्वरसङ्क्रमः (पुं०) स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम।

स्वरसम्पत्तिः (स्त्री०) गाए जाने वाले वाले गीत।
वीणायाः स्वरसम्पत्तिं सन्निशम्यापि मानवाः।
गायक एव जानामि।
रागोऽत्रायं भवेदिति।। (वीरो० १५/२)

स्वरसन्धि (स्त्री०) स्वरों का पारस्परिक मेल।

स्वराज्यः (पुं०) स्वाधीनता, आत्म राज्य। स्वराज्य प्राप्तये धीमान् सत्याग्रह धुरन्धरः।
० सुंदर राज्य। (जयो० १८/८२) (वीरो० ११/३९)

स्वरित (वि०) उच्चरित, ध्वनि युक्त।
० स्वर्ग सम्बंधी। (समु० ५/४)

स्वरु (पुं०) धूप।
० व्रज, ० बाण।

स्वरुचा (स्त्री०) अपनी कान्ति। (समु० २/३)

स्वरूपः (पुं०) अपना स्वरूप, आत्म रूप। (सुद० ८४)

स्वरूपकथनम् (नपुं०) सम्यक् कथा कथन। (जयो० ११/१००)

स्वरूपाचरणम् (नपुं०) चारित्र का एक भेद। आत्मा के यथार्थ स्वरूप में लीनता। स्वरूपे आसमन्ताच्चरणं..... स्वरूपाचरणं (भक्ति० ८०) चारित्र स्वसमय प्रवृत्तिरित्यर्थः (सम्य०१४३)
० शुद्धोपयोग के तीन नामों में प्रथम। (सम्य० १४३)

स्वरोटिका (स्त्री०) अपनी आजीविका। (वीरो० ९/९)

स्वर्गः (पुं०) [स्वरितं गीयते-गै+क, सु+ऋज्+घञ्] स्वर्ग, सुरपुट। (जयो० ५/१०३)
० दिव, देवस्थान, परमस्थान (जयो० ३/६८) (वीरो०२/६) (जयो० १/५०) तत्स्वर्गतो नान्यादि याद्वदान्य।
० आत्महस्त। (जयो०वृ० १२/१३४) (सुद० १२६)

स्वर्गगिरि (पुं०) सुमेरु पर्वत।

स्वर्गत (वि०) स्वर्गीय। (वीरो० १८/३९)

स्वर्गद (वि०) स्वर्ग प्रदायक।

स्वर्गद्वारम् (नपुं०) स्वर्ग स्थान।

स्वर्गधामः (पुं०) स्वर्ग निलय। ० स्वर्ग स्थान। ० शुभ स्थल।

स्वर्गपतिः (पुं०) इन्द्र, शक्र।

स्वर्गपादपः (पुं०) कल्पतरु।

स्वर्गप्रदेशः (पुं०) स्वर्गस्थान। (सुद० १/२०) (दयो० ४)

स्वर्गप्रमाणक्षणम् (नपुं०) स्वर्ग जाने का समय। (वीरो० १८/८)

स्वर्गप्रास्यभिलाषा (स्त्री०) सुखाशा। (जयो० ६/४३)

स्वर्गरमा (स्त्री०) मोक्षलक्ष्मी। (सुद० ७१) 'पतिः स्यां स्वर्गरमायाः'। (सुद० ७१)

स्वर्गलक्ष्मी (स्त्री०) स्वर्ग श्री। (जयो० ६/१३०) ० शुभश्री।

स्वर्गश्री (स्त्री०) सुरपुर लक्ष्मी। (जयो० ३/१०३) ० स्वश्री।

स्वर्गसम्पदा (स्त्री०) सुरपुर का स्थान, सुरपुर का वैभव।
गजपादेनाध्वनि मृत्वाऽसौ स्वर्गसम्पदां यातः। (सुद० ११४)

स्वर्गिन् (पुं०) [स्वर्गोऽस्त्यस्य भोगत्वेन इनि] देव, सुर, अमर, देवता।
० मृतक, मरा हुआ पुरुष।

स्वर्गिवत् (वि०) स्वर्ग में रहने वाले की तरह देव तुल्य। (सुद० १/३९)

स्वर्गीय (वि०) [स्वर्ग+छ यत् वा] दिव्य, दैवीय, दिव्य सम्बंधी। (जयो० ११/९२)

स्वर्गीयवनम् (नपुं०) नन्दन वन। (जयो० १४/५)

स्वर्गोदार (वि०) स्वर्ग सदृश्य। (जयो० ४/६८)

स्वर्णम् (नपुं०) [सुष्ठु अर्णो वर्णो यस्य] सोना, कनक। (जयो० ७/१०२।
० हैम। (जयो० ११/१५)

स्वर्णकः (पुं०) सोना, कथा (जयो० २/४३)

स्वर्णकणः (पुं०) सोने के दाना।

स्वर्णकणिका (स्त्री०) सोने का कण/एक हिस्सा।

स्वर्णकायः (वि०) सुनहरी काया वाला, गौरवर्ण वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वर्णकारः (पुं०) सुनार, कलार। (जयो०वृ० ६/७४)
स्वर्णगौरिकम् (नपुं०) गेरु, लाल खड़िया।
स्वर्णचूडः (पुं०) नीलकण्ठ।
० मुर्गा, कुक्कट।
स्वर्णजम् (नपुं०) रांगा।
स्वर्णदा (वि०) आकाश गंगा। (जयो० ७/१०१)
स्वर्णदी (स्त्री०) आकाश गंगा, व्योम गंगा। (जयो० ३/११२)
स्वर्णत्व (वि०) सुवर्णपना। (सुद० १३३)
स्वर्णदीधितिः (स्त्री०) अग्नि, आग।
स्वर्णदीपयस् (पुं०) स्वर्णदीप। (जयो० ७/१०१)
स्वर्णदीसलिलम् (नपुं०) आकाशगंगा का जल।
० सुमेरुपर्वत शिलातल। (जयो० ३/१०४)
स्वर्णपक्षः (पुं०) गरुड़ पक्षी।
स्वर्णपाठकः (पुं०) सुहागा।
स्वर्णपुष्पः (पुं०) चम्पक वृक्ष।
स्वर्णबन्धः (पुं०) सोना गिरवी रखना।
स्वर्णभृङ्गारः (पुं०) स्वर्ण पात्र।
स्वर्णमय (वि०) हैमतुल्य। (जयो०वृ० ११/१५)
स्वर्णमाक्षिकम् (नपुं०) स्वर्ण मक्खी।
स्वर्णमेखला (स्त्री०) ०सोने की करधनी, ०हेमसूत्रावली। (जयो० १६/८२)
स्वर्णयोगः (पुं०) सोने का संयोग।
स्वर्णरेखा (स्त्री०) सोने की लकीर, स्वर्णपंक्ति।
स्वर्णवणिज् (पुं०) सोने का व्यापारी।
० सर्राफ।
स्वर्णवर्णा (स्त्री०) हल्दी।
स्वर्णशैलः (पुं०) सुमेरु पर्वत। (जयो० ३/१०४)
स्वर्णाक्षरम् (नपुं०) सोने के अक्षर। (जयो०वृ० २०/७५)
स्वर्द् (अक०) चखना, आस्वाद लेना।
स्वर्लोकः (पुं०) स्वर्ग लोक। (जयो० ६/१३२)
स्वल् (अक०) जाना, हिलना डुलना।
स्वल्प (वि०) [सुष्ठु अल्पं] बहुत छोटा, बहुत कम।
स्वल्प-कङ्कः (पुं०) एक पक्षी।
स्ववंशः (पुं०) निजकुल। (जयो० १/४३)
स्ववपुष (नपुं०) अपना शरीर। (सुद० ९८)
स्ववृत्तिः (स्त्री०) अपनी आजीविका। (वीरो० १७/९)
स्ववार्तिकः (पुं०) श्लोक वार्तिक नामक न्याय ग्रन्थ मीमांसक कुमारभट्ट की वृत्ति। (वीरो० १९/१९)
स्व-वासनाभिव्यक्तिः (स्त्री०) अपनी वासना की अभिव्यक्ति। (जयो०वृ० १२/११४)
स्वशक्तिः (स्त्री०) आत्मबल। (सुद० १११)
स्वल्पकरः (पुं०) थोड़ा कर, अल्पअंश दान।
स्वल्पखण्डः (पुं०) लघु भाग।
स्वल्पघात (वि०) थोड़ी सी हानि।
स्वल्पजात (वि०) अल्प उत्पत्ति वाला।
स्वल्पतर (वि०) तनीयसी। (जयो० वृ० १३/४१)
स्वल्पतप (वि०) थोड़े तप वाला।
स्वल्पदानम् (नपुं०) अल्पदान, किञ्चित् दान।
स्वल्पधनम् (नपुं०) थोड़ा सा धन।
स्वल्पधर्मन् (वि०) किंचित धर्म युक्त।
स्वल्पनन्दिन् (वि०) अल्प हर्ष युक्त।
स्वल्प-पल्लवम् (नपुं०) अल्प पत्र। (सुद० ११२) निष्फललतेव विचाररहिता स्वल्पपल्लवच्छाया। (सु० ११२)
स्वल्पफलम् (नपुं०) किंचित् फल।
स्वल्पभावः (पुं०) थोड़ा परिणाम।
स्वल्पमति (स्त्री०) मूढमति।
स्वल्पमोह (वि०) किंचित् मोह युक्त।
स्वल्पयत्नम् (नपुं०) थोडा, प्रयत्न।
स्वल्पयोगः (पुं०) योग की कमी।
स्वल्पराग (वि०) किंचित् भी राग जन्य।
स्वल्पलालिमा (स्त्री०) किंचित भी अनुराग।
स्वल्पशरीर (वि०) ठिगने शरीर वाला।
स्वस्वभावः (पुं०) निज आत्म भाव। (जयो० २/२९)
स्वस्थानाङ्कित (वि०) अपने स्थान की पहचान करने वाला। (जयो० २/१२३)
स्वस्तिक्रिया (स्त्री०) शोभनक्रिया, स्वस्तिपाठ। (जयो० १८/२)
स्वल्पसंयोग (वि०) थोड़ा सा भी योग।
स्वल्पिष्ठ (वि०) [स्वल्प+इष्टन्] अत्यन्त सूक्ष्म।
स्वल्पाभावः (पुं०) लघिमा। (जयो०वृ० ४/६६)
स्वल्पीयस् (वि०) [स्वल्प+ईयसुन्] अपेक्षाकृत छोटा।
स्ववश (वि०) अपने आधीन। (जयो० २/८४)
स्ववाहिनीभूत (वि०) अपने वाहन पर स्थित। (जयो० ११/२६)
स्वव्यापिन् (वि०) अपने स्वभाव में व्याप्त। (वीरो० १९/१९)
स्वविभवः (पुं०) अपनी सम्पत्ति। (सुद० ४/४७) (मुनि०१५)
स्वशय (वि०) अपने हाथों से सुलाई गई। (सुद० ३/२३)
स्वशिष्यः (पुं०) प्रधानशिष्य, प्रमुख शिष्य। (वीरो० २१/२४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वशुरः (पुं०) अपने पति का पिता या पत्नी का पिता।
स्वश्री (स्त्री०) आत्म लक्ष्मी। (जयो० ३/७१)
स्वसृ (स्त्री०) [सू+असृ+ऋन्] भगिनी, बहिन। सासू (जयो० २/१३२)
स्वसार्थिन् (वि०) अपना साथी। (वीरो० १५/२६)
स्वसृत (वि०) [स्व+सृ+क्विप्] अपनी इच्छा से जाने वाला, स्वतंत्र चलने-फिरने वाला।
स्वस्थ (वि०) आनंद, क्षेमपूर्ण, कुशल। (सम्य० १३५) (दयो० ३०)
स्वस्थानम् (नपुं०) अपना स्थान।
स्वस्थाननिवेशः (पुं०) अपने आवास में प्रवेश। (जयो०वृ० ६/१३२)
स्वस्मात् अस्पृष्ट होना। (सुद० १०९)
स्वस्वान्त (वि०) इन्द्रिय निग्रह युक्त। (वीरो० १८/२८)
स्वस्ति (अव्य०) [सु+अस्+क्तिच्] वा अस्तीति विभक्तिरूपकं अव्ययम्। कल्याण हो, शुभ हो, अभिवंदनीय हो, नमन योग्य हो, जयवंत हो। (दयो० २९)
स्वस्तिकः (पुं०) [स्वस्ति शुभाय हितं क] (जयो० २४/९२) एक मांगलिक चिह्न। अष्ठ प्रतिहार्यों में से एक मंगल प्रतीक। मंगलकारी। (जयो० २/३४)
 ० अष्टमंगल द्रव्य। (जयो० १२/७)
स्वस्तिमुखः (पुं०) पत्र, मांगलिक पत्र।
 ० स्तुति पाठक।
स्वस्थिताक्षमनस् (वि०) आत्मवशीभूतेन्द्रियचित्त। (जयो० २/२३)
स्वस्त्रीयः (पुं०) [स्वस्+छ ढक् वा] भानजा, बह्नि का पुत्र।
स्वस्त्रीया (स्त्री०) [स्वस्त्रीय+टाप्] भानजी, बहिन की पुत्री।
स्वदृशा (वि०) स्वामी। (सुद० २/४९)
स्वहित (वि०) आत्महित, अपना कल्याण। (भक्ति० ३१)
स्वहृदयदेशः (पुं०) हृदय का टुकड़ा। (दयो० ५५)
स्वाकूतसाङ्केतः (पुं०) अपने अभिप्राय का संकेत। (सुद० २/३२)
स्वागतम् (नपुं०) [सु+आ+गम्+क्त] शुभागमन, शुभ अभिवादन। (जयो० १२/१४३) उचित समागम, श्रेष्ठ भाव युक्त, आगमन। (जयो० ५/१८)
 ० प्रतिग्रह। (दयो० ११५) सम्मानजनक आगमन। (दयो०१०५)
स्वागतगानम् (नपुं०) शुभागमन का गीत। (दयो० १८)
स्वागच्छम् (नपुं०) स्वागत, शुभागमन। (सुद० ७८)
स्वाङ्किकः (पुं०) [स्वाङ्क+ठक्] ढोल बजाने वाला।
स्वाचारसिद्धिः (स्त्री०) अपने इच्छा से कार्य करने की अभिलाषा, स्वच्छंदता, स्वतंत्रता।
स्वातन्त्रयम् (नपुं०) स्वतंत्रतापूर्वक। (जयो० ७/१५) स्वाधीनता। स्वच्छन्द। (जयो० १३/११०)
स्वातन्त्र्यप्राप्तिः (स्त्री०) स्वतंत्रता की उपलब्धि। (जयो० १८/८१)
स्वातिः (स्त्री०) [स्व+अत्+इन्] सूर्य की पत्नी।
 ० स्वाति नक्षत्र। (सुद०)
 ० शुभ नक्षत्र पुंज।
स्वातियोगः (पुं०) चन्द्रयोग।
स्वात्मन् (पुं०) निजात्म। (सुद० १२२)
 ० आप। (जयो० ४/२३)
 ० अपना आत्मा। (सम्य० ८३)
 ० अपने आप। स्वात्मानमुज्जीवयतीति शस्यः। (जयो० १/७६)
स्वात्मगत (वि०) आत्माधीन।
स्वात्मजन्य (वि०) आत्मा से युक्त।
स्वात्मपरिणतिः (स्त्री०) अपनी आत्मा परिणति। (जयो०वृ० २३/७२)
स्वात्मभावः (पुं०) अपने आत्मा का भाव।
स्वात्मविचारणा (स्त्री०) आत्मानुभूति। (सुद० ९६)
स्वात्मस्थित (वि०) निजात्मगत। (भक्ति० २३)
स्वात्मीय (वि०) अपने आत्मगत। (मुनि० १८)
स्वादः (पुं०) [स्वद्+घञ्] रस, चखना, खाना, स्वाद लेना रसास्वादन करना।
 ० पसन्द करना।
 ० उपभोग करना।
स्वादनम् (नपुं०) [स्वद्+ल्युट्] रस, चखना, खाना, आस्वाद लेना। (जयो० २७/१४)
 ० पसंद करना।
 ० उपभोग करना।
स्वादनवृत्ति (स्त्री०) स्वादुभोजन विचार। (जयो० २७/१४)
स्वादिमन् (पुं०) [स्वाद+इमनिच्] माधुर्य, रसभावता, आस्वादन रूपता।
स्वादिष्ठ (वि०) [स्वादु+इष्ठन्] सबसे माधुर्य युक्त, अत्यन्त मधुर।
 ० श्वसन। (भक्ति० १५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वादिष्ठता (वि०) माधुर्य पूर्ण। (जयो० २२/६०)

स्वादीयस् (वि०) [स्वादु+ईयसुन्] बहुत मीठा, अधिक मधुरता युक्त।

स्वादु (वि०) [स्वद्+उण्] मधुर, मीठा, रस युक्त। (वीरो० २२/३४)

० रुचिकर, चखने में मधुर।

० सुखद, पसंद करने योग्य।

० मनोहर, सुंदर, प्रिय।

स्वादुता (वि०) रुचिकर, पसंद करने योग्य, माधुर्य युक्त। (जयो० २२/६०)

स्वादुमूलं (नपुं०) गाजर।

स्वादुरसा (स्त्री०) द्राक्षा।

० मदिरा। ० अंगूर।

० काकोली मूल।

० शताबरी पादप।

स्वादुशुद्ध (नपुं०) सेंधा नमक।

० समुद्री नमक।

स्वाधारः (पुं०) स्व प्राणाधार। (जयो० १०/११९)

स्वाधीन (वि०) स्वतंत्र।

० दैवीधीन। (दयो० १०७/) आत्माधीन। (सम्य० ८४)

स्वाधीनवृत्तिः (स्त्री०) स्वतंत्रता की प्रवृत्ति। (जयो० २४/४१)

स्वाध्यायः (पुं०) ज्ञान भावना।

० प्रशस्त अध्यवसाय, शोभन हित, आत्म हित।

० निरंतर ज्ञानाभ्यास, ०सम्यगध्ययन (मुनि० १९)

० आत्मचिन्तन। (जयो० २८/९)

स्वानः (पुं०) [स्वन्+घञ्] ध्वनि, कोलाहल।

स्वान्त (वि०) प्रसन्न, खुश, हर्षयुक्त। (जयो० ११/८०)

० स्वमनस्। (जयो० २७/५३)

० व्याप्त (सुद० ८३)

० मन, चित्त। (जयो० ५/७२)

स्वान्तपत्रिणी (स्त्री०) मन रूपीपक्षी। (जयो० ५/७२) स्वान्तं चित्तमेव पत्री। (जयो० ५/७२)

स्वान्तरङ्गम् (नपुं०) अपना हृदय, अन्तरंग। (जयो० २३/८२)

स्वान्वयः (पुं०) स्व-कर्म निरत। (जयो० २/११८)

० कुलक्रमागत। (जयो० २/११६)

० स्ववंश। (जयो० २/१०४)

स्वान्दुरत्नम् (नपुं०) निजभूषण रत्न। (जयो० ५/६५)

स्वापः (पुं०) [स्वप्+घञ्] निद्रा, शयन।

० स्वप्न।

० आलस्य। इन्द्रियात्ममनोमरुतां सूक्ष्मावस्था स्वापः। (नीतिवाक्यामृत २५२)

० स्वप्नावस्था।

स्वापतेयम् (नपुं०) [स्वपते रागतं ढञ्] धन, वैभव, सम्पत्ति।

स्वाभाविक (वि०) प्रकृति गत, सहजरूप, अन्तर्हित। (जयो०वृ० २/११२)

स्वाभाविकज्ञानम् (नपुं०) सहजज्ञान। (भक्ति० १) आत्मगत ज्ञान, स्वतः उत्पन्न हुआ ज्ञान।

स्वाभाविकार्थ क्रिया (पुं०) अपनी सहज रूप की अर्थक्रिया। (सम्य० २२)

स्वाभाविकी (स्त्री०) सदानुकूला। (जयो०वृ० ९/५८) सहजगता (जयो०वृ० ६/५२)

स्वाभावोक्ति (स्त्री०) एक अलंकार स्वाभाविक कथन। (जयो० १३/७२)

अनकृष्य च नक्रलावलिं नमयन्नात्मवपुः पुरस्तराम्।
उपवेशयति स्म तद्गतः सहसा सादिवरः क्रमलेकम्।। (जयो० १३/७३)

स्वाभीष्ट (वि०) अनुकूलता। (जयो०वृ० २/१४९)

स्वाभ्युदयः (पुं०) निजोत्कर्ष-आत्मोन्नति। (जयो० १/१)

स्वामिता/स्वामित्व (वि०) [स्वामी+तल्+टाप् त्व वा] प्रभुत्व, आधिपत्य।

स्वामिन् (वि०) [स्व अस्त्यर्थे मिनि] अधिकार युक्त, प्रभुता युक्त।

स्वामात्यः (पुं०) आत्म रूप मन्त्रि। (जयो०वृ० ३/६६)

स्वामिन् (पुं०) प्रभु, मालिक। (सुद० ९२)

० गुरु, अर्हत्प्रभु। (सुद० ७३)

० धव। (जयो०वृ० १३/२०) पुनरपि न जाने कुतो न समायाति स्वामी। (दयो० २/७)

० पति। (जयो०वृ० १/२०)

स्वामि-उपकारकः (पुं०) अश्व, घोड़ा।

स्वामिकार्यम् (नपुं०) प्रभु का कार्य।

स्वामिजनः (पुं०) प्रभु। (सुद० ९२)

स्वामिनि (स्त्री०) मालकिन, रानी साहिबा। (सुद० ८७)

स्वामिभावः (पुं०) मालिक भाव, प्रभुभाव।

स्वामिभाषित (वि०) प्रभु द्वारा कथित। (जयो० ४/१२)

स्वामीदयानन्दः (पुं०) प्रसिद्ध आर्य समाजी, विचारक। (वीरो० ८/५७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वाम्यम् (वि०) [स्वामिन्+ष्यञ्] स्वामित्व, प्रभुता, मालिकपना।
स्वायंभुव (वि०) ब्रह्मा से सम्बंधित।
स्वायंभुवः (पुं०) आदिनाथ, आदिब्रह्मा।
स्वायंवरी (वि०) स्वयंवर से सम्बंधित। (जयो० २०/३०)
स्वारसिक (वि०) [स्वरस+ठक्] काव्यगत रस युक्त।
स्वारस्य (वि०) श्रेष्ठता, लालित्य।
स्वारुक् (वि०) दिव्य रूप वाली। (जयो० ११/५२)
स्वार्थः (पुं०) अपना निजी हित, लम्पटता, अपना कल्याण। स्वार्थस्येयं पराकाष्ठा (सुद० १२८)
स्वार्थकृत् (वि०) स्वार्थपूर्ति करने वाला। (सुद० १०५)
स्वार्थता (वि०) स्वार्थ भावना जन्य। (दयो० ३७)
स्वार्थपर (वि०) स्वार्थ में तत्पर। (वीरो० १६/८)
स्वार्थपरायणं (नपुं०) स्वार्थ से परिपूर्ण भाव। स्व-चक्षुषा स्वार्थपरायणां स्थितिं निभालयामो जगतीदृशीमिति। (वीरो० ८/३)
० स्वार्थी जन। (जयो० ५१)
स्वार्थपरायणत्व (वि०) अपने हित में लीनता। (सुद० १०८)
स्वार्थभावः (पुं०) अपने कल्याण का भाव। (सुद० ११०)
स्वार्थभृत (वि०) स्वार्थ युक्त। (जयो० १४/८३)
स्वार्थसमर्थनम् (नपुं०) स्वार्थपूर्ति की पुष्टि। (दयो० ११८)
स्वार्थसिद्धिः (स्त्री०) अपना उल्लू सीधा करना। (हित०सं०९)
स्वार्थाच्युतिः (स्त्री०) स्वार्थ से भ्रष्ट होना। 'स्वार्थाच्युतिः स्वस्य विनाशनाय' (वीरो० १७/११)
स्वालक्षणम् (वि०) विशेष लक्षण वाला।
स्वाल्प (वि०) थोड़ा सा, अल्पमात्र।
स्वास्थ्यम् (नपुं०) [स्वस्थ+ष्यञ्] ० तन्दुरुस्ती, निरोगता।
० कुशलक्षेम, सुख समृद्धि। (जयो०२)
० नीरुज। (जयो० ७/८४)
० आत्मनिर्भरता, दृढ़ता।
स्वास्थ्यप्राप्तिः (स्त्री०) लाभप्राप्ति, नीरुज भाव। स्वास्थ्यप्राति-रिवोच्यते बुधजनै वैंद्यस्य हत्वा व्रणम्। (मुनि०३१)
स्वालम्बनम् (नपुं०) आत्माधीन, अपने आप पर निर्भर, क्रियाशील, आत्मशक्ति का आश्रय। (सुद० ७४)
स्वाहा (स्त्री०) [सु+आ+ह्वे+डा] आहूति। ० सन्तर्पण। इत्यादिमयः स तृप्तिसार्थः सन्तर्पणकारकः। (जयो०वृ० १२/७२)
स्वित्/स्विद् (अव्य०) थोड़ा, अल्प भी। (जयो० ४/१०) 'यास्यतीव हि भवान् स्विददीनं'
० स्विदिति सन्देह द्योतकं पदम् (जयो० ५/८७)
० किन्तु (जयो० २/५७)
० श्वेत, शुभ्र। (मुनि० ९)
० क्या है? ऐसा भी हो सकता है।
० प्रश्नात्मक अव्यय।
० पृच्छात्मक अव्यय।
स्विद् (अक०) स्वेद आना, पसीना आना। (जयो० ३/८३)
० विशुब्ध होना। (सुद०७५) स्वीकार करना। (जयो०१/५५)
स्विदर्कः (पुं०) वास्तव में सूर्य। बभूव तच्चेतसि एष तर्कः प्रतीयते तावदयं स्विदर्कः। (वीरो० १४/२३)
स्विदपांशुल (वि०) शील व्रतधारिणी, स्विदपि पुनरपांशुलस्य, न पांशु धूलिं लाति स्वीकरोतीति (जयो० १९/१८)
स्विदहीन (वि०) रज रहित, शोभा युक्त। (जयो० १८/१९)
स्विन्नदशानुवर्तिन् (वि०) प्रस्वेददशानुवर्ती। (वीरो० १२/२७)
स्विन्ना (वि०) स्वेदन शीला, स्वेदयुक्ता। (जयो० २२/३२)
स्वीकरणम् (नपुं०) स्वीकार करना, लेना, ग्रहण करना।
० वाग्दान, पाणिग्रहण। (जयो० २/६५)
स्वीकार्यक (वि०) ग्रहण, लेना, अंगीकार करना, आप्य, प्राप्य।
स्वीक्रिया (स्त्री०) ग्रहण करना। (सुद० ८१)
स्वीकृ (सक०) स्वीकार करना, पाणिग्रहण करना, अंगीकार करना। (सुद० ७६) (जयो० ३/१०२)
(जयो० २/९५) स्थितः स्वीकुरुते स्म सेवाम्। (वीरो०१३/८)
स्वीकृतवती (वि०) स्वीकार की गई। (जयो० ६/१२०)
स्वीकृतवान् (वि०) स्वीकार करने योग्य। (जयो०वृ० १/३०)
स्वीकृतालङ्कारः (पुं०) ० शोभा युक्त आभूषण, अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषण।
स्वीकृति (स्त्री०) अनुमति। (जयो० २/१५) (जयो० ५/११)
स्वीय (वि०) अपना, निज। (वीरो० ९/३) आत्मीय, निजीय। (सुद० १/१)
स्वीयगुणार्जनम् (नपुं०) आत्मीय गुणों की प्राप्ति। (भक्ति० ४२)
स्वीयम (वि०) आत्मीय, निज। (जयो० २३/७९, सुद० ४/४३)
स्वृ (अक०) शब्द करना, कोलाहल करना।
० चोट पहुंचाना।
स्वेक् (अक०) जाना, प्राप्त होना।
स्वेच्छाविहार (वि०) स्वतंत्र विचरण। एकाकी विहार। (जयो० १३/१०८)
स्वेदः (पुं०) [स्विद् भावे घञ्] पसीना, श्रमबिन्दु।
स्वेदकणः (पुं०) पसीने के कण, श्रमबिन्दु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वेदजलश्पूरः (पुं०) श्रमनीरनिर्झर। (जयो०वृ० १३/७८)

स्वेदनं (नपुं०) पसीना, श्रमनीर। (जयो० १२/१२९)

स्वेदमिष (वि०) पसीने के बहाने। (वीरो० १२/१५)

स्वेदयुक्त (वि०) पसीने से सराबोर। (जयो०३/८३)

स्वेदोदम/स्वेदोदकम् (नपुं०) पसीना, श्रयनीर, श्रमबिन्दु।

स्वेदोदबिन्दु (नपुं०) स्वेदकण। (जयो० १७/५०)

स्वेचित (वि०) स्वयोग्य। (जयो० २/१७)

स्वोचितवृत्तिः (स्त्री०) निजकुल परम्परा का व्यवहार। (जयो० २/११०)

स्वोच्चवर्गः (पुं०) सर्वप्रधानवर्ग। (वीरो० २/८)

स्वैर (वि०) [स्वस्य ईरम् ईद्+अच्] स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित, निरंकुश।
- ० स्वतंत्र।
- ० मंथर, मंद।

स्वैरम् (अव्य०) इच्छा के अनुसार।

स्वैरविहारिणी (वि०) आराम से, यथेष्छ गमनशील। (जयो० १/२०)

स्वैरिणी (स्त्री०) स्वेच्छाचारिणी, असती, कुलटा, व्यभिचारिणी।

स्वैरित (वि०) स्वेच्छाचार युक्त। (जयो० २/१३६) मनमानी (जयो० २३/७१)

स्वैरिन् (वि०) [स्वेन ईरितुं शीलमस्य-स्व ईर+णिनि] स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला।

स्वोरसः (पुं०) पसीने से तर।

स्वोवशीयम् (नपुं०) आनंद, समृद्धि।

स्वौकः (पुं०) कल्याण में अद्वितीय, स्थान। स्वस्य परेषाञ्च कल्याणानामेकमद्वितीयम ओकः स्थानमभूत्। (जयो० ३/२)

ह

ह (अव्य०) बलबोधक निपात।

हः (पुं०) आकाश नभ।
- ० जल, ० रुधिर।

हंसः (पुं०) [हस्+अच्] मराल, मुर्गाबी। (सुद० ३/३) हंसः सूर्यमरालयोः इति वि (जयो० १५/१२)
- ० सूर्य। (जयो० २/५) हंस पक्ष्यात्सूर्येषु इत्यमरः (जयो०१५/१२)
- ० मानसपक्षी। (जयो०वृ० ३/६३)
- ० जीवात्मा, परमात्मा।
- ० वायु, पवन, वरटापति। (जयो० २५/५२)
- ० सूर्य। (जयो० १५/१२)
- ० विष्णु, ब्रह्मा।
- ० पर्वत, गिरि।

हंसकः (पुं०) [हंस+कन्] मराल, कारंडव।

हंसकान्ता (स्त्री०) हंसिनी, हंसी।

हंसकीलकः (पुं०) रतिबंध की क्रिया।

हंसगति (स्त्री०) राजसी गति, मंद एवं स्थिरगति।

हंसगद्गदा (स्त्री०) मधुरालपिणी स्त्री।

हंसगामिनी (स्त्री०) राजसी गति वाली स्त्री।

हंसध्वनिनिर्बन्धनम् (नपुं०) हंस की ध्वनि का होना। (वीरो० २१/१८)

हंसदाहनम् (नपुं०) अगर की लकड़ी।

हंसनादः (पुं०) हंस का कलरव।

हंसनादिनी (स्त्री०) मधुर संभाषिणी स्त्री।

हंसपदं (नपुं०) हंस का स्थान।

हंसमाला (स्त्री०) हंसों की पंक्ति।

हंसय् (अक०) हंस के समान प्रतीत होना। शशी विहायः सरसि प्रसन्नो हंसायते मेचकं शैवलाशी। (जयो०१५/६५) हंसायते, हंस इव लक्ष्यते।

हंसयुवन् (पुं०) युवा हंस।

हंसरथः (पुं०) ब्रह्मा।

हंसखः (पुं०) हंस का कलख। (वीरो० २१/५)

हंसलोमशकम् (नपुं०) कासीस।

हंसलोहकम् (नपुं०) पीतल।

हंसवाक् (नपुं०) हंस वचन। (जयो० ६/१६)

हंसश्रेणी (स्त्री०) हंसों की पंक्ति।

हंसाङ्घ्रिः (पुं०) सिंदूर।

हंसाधिगता (स्त्री०) भारती, सरस्वती।

हंसाधिरुढा (स्त्री०) सरस्वती, भारती।

हंसिका (स्त्री०) हंसनी, हंसी। मादा हंस। (जयो०१/७४)

हंसी (स्त्री०) हंसिनी।

हंहो (अव्य०) [हम् इत्यव्यक्तं जहाति-हम्-हा-डो] ० सम्बोधन वाचक अव्यय।
- ० नाटकों में प्रायः इसी तरह का बोध किया जाता है।

हकारः (पुं०) ह व्यञ्जन।

हकारपर्यन्त (पुं०) अ से ह तक। (जयो० ११/८०)

हक्कः (पुं०) हस्ति आह्वान की एक शैली।

हंजा/हंजे (अव्य०) दासी को बुलाने के लिए नाटक में यह प्रयोग होता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हट् (अक०) चमकना, उज्ज्वल होना, दमकना।

हट्टः (पुं०) [हट्+ट टस्य नेत्वम्] हा, बाजार, मेला।

हट्टपंक्तिः (स्त्री०) विपणि, दुकान का एक रूप होना। (जयो० १३/८९)

हट्टविलासिनी (स्त्री०) वारांगना, वेश्या, पण्डिका।

हठः (पुं०) [हट्+अच्] दुराग्रह, बल, प्रचण्डता। (जयो० २/१९) जिद करना, अडिग होना–प्रसरन् बालहठेन भूतले (सुद० ३/२५)

हठयोगः (पुं०) योग की एक विशेष पद्धति।

हठविद्या (स्त्री०) बलपूर्वक मनन करने का विज्ञान।

हठवृत्तिः (स्त्री०) दुराग्रह की प्रवृत्ति। (जयो० १८/४५) 'एकान्तवादो हठवृत्तिस्तद्विनिवृत्तिया' (जयो०वृ० १८/४५)

हडि (स्त्री०) काठ की बेड़ी।

हडिका (स्त्री०) निम्न व्यक्ति, नीच व्यक्ति।

हण्डा (अव्य०) [हन्+डा] ० सम्बोधनात्मक अव्यय, ० निम्न श्रेणी की स्त्री को बुलाने का सम्बोधन।

हण्डिका (स्त्री०) [हण्डा+कन्+टाप्] हांडी, मिट्टी का बर्तन।

हण्डे (अव्य०) सम्बोधनात्मक अव्यय।

हत (भू०क०कृ०) [हन्+क्त] ०मारा गया, ०वध किया गया, ०प्रहार किया गया। (वीरो० १६/३०) ०आहत करना, ०मारना (सुद० १२७) ०क्षतिग्रस्त, ०घायल।
 ० वञ्चित, हीन, रहित। (समु० ७/९)

हतक (वि०) [हत्+कन्] दुःखी, कष्ट गत।
 ० दुष्ट, निम्न, नीच।

हतत्व (वि०) हताश। (सुद० ९८)

हतभागिन (वि०) अभागा, भाग्यहीन। (सुद० ७३)

हतिता (स्त्री०) लड़ाई। (वीरो० २२/२८)

हति (स्त्री०) [हन्+क्तिन्] ०विनाश, ०क्षति, ०हानि। ०प्रहार ०घात।
 ० प्रवञ्चना, धोखा। (जयो० २/५७) (मुनि० १८)
 ० त्रुटि, दोष।
 ० नष्ट। (सुद० ७२)

हतिविरूप (वि०) बुरा हाल। (सुद० ९४) (दयो० १०६)

हत्नुः (नपुं०) शस्त्र, रोग।

हत्या (स्त्री०) ०वध, ०मारना, ०घात करना।
 ० संहार।

हद् (अक०) मलत्याग करना।

हदनम् (नपुं०) [दृद्+ल्युट्] मलत्याग, मलोत्सर्ग।

हन् (अक०) ०मारना, ०वध करना, ०नाश करना। हनन्ति हन्त मृगषाप्रसङ्गिनः (जयो० २/१३४) खड्गेनायसनिर्मितेन न हतो वज्रेण वै हन्यते। (वीरो० १६/३०)
 ० आहत करना, मारना। (सुद० १२७)
 ० आघात करना, पीटना, प्रहार करना।
 ० कष्ट देना, संताप देना, क्षति पहुंचाना। अहन्तुः (सुद० ८६)

हन् (वि०) ०वध करने वाला, ०मारने वाला, ०पीटने वाला, ०प्रहार करने वाला।

हनः (पुं०) [हन्+अच्] वध, हत्या, संहार, प्रहार, घात।

हननम् (नपुं०) [हन्+ल्युट्] वध करना, मारना, प्रहार करना, घात, विनाश।

हनुः (पुं०) शस्त्र। ० रोग। मृत्यु।
 ० एक औषधि विशेष।

हनुग्रहः (पुं०) बन्द जबड़ा।

हनुमत् (पुं०) अंजनापुत्र, पवनपुत्र।
 ० मारुति।

हन्त (अव्य०) [हन्+त] हर्ष, प्रसन्नता।
 ० करुणा, दया, खेद, दुःख, आदि, (समु० ७/५) प्रकट करने में 'हन्त' अव्यय का प्रयोग होता है। खेद है। (सुद० १०२) हन्तेति खेदे (जयो० २/१३४)
 ० अफसोस (सुद० ९८), शोक।
 ० शोक, ० हन्तेति खेदपूर्वक मुच्यते। (जयो० २१/३२)

हन्तृ (वि०) [हन्+तृच्] ० प्रहारकर्ता, वधकर्ता। (सुद० ८७)
 ० चोर लुटेरा।

हम् (अव्य०) [हा+डम्] क्रोध भाव से शिष्टाचार से उद्गार।

हम्बा (वि०) गाय का रंभाना।

हय (अक०) पूजा करना, अर्चना करना।
 ० शब्द करना।
 ० थक जाना।

हयः (पुं०) [ह्य+अच्] अश्व, घोड़ा, घोटक। (जयो० १/१९) वाजिन। (जयो०वृ० १३/५)

हयकोविदः (पुं०) घोड़ों के प्रबन्ध, अश्व विज्ञान।

हयङ्कषः (पुं०) चालक, रथवान्।

हयज्ञः (पुं०) अश्व विक्रेता।
 ० घुड़सवार, अश्वारोही।

हयद्विषत् (पुं०) भैंसा।

हयप्रियः (पुं०) जौ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हयप्रिया (स्त्री०) खजूर का वृक्ष।

हयमारः/हयमारकः (पुं०) कनेर, करवीर।

हयमारणः (पुं०) पावन कनेर।

हयमेधः (पुं०) अश्वमेध यज्ञ।

हयराड (पुं०) अश्वराज। (जयो० २/८७)

हयवरः (पुं०) श्रेष्ठ अश्व, उत्तम घोड़ा। (जयो० ५/१७)

हयवाहनः (पुं०) कुबेर।

हयशफाहति (स्त्री०) घोड़ों के खुरों की आहट। (जयो० ७/१०९)

हयशाला (स्त्री०) अश्वशाला।

हयशास्त्रम् (नपुं०) अश्व शिक्षा शास्त्र।

हयसंग्रहणम् (नपुं०) लगाम लगाना, घोड़ों को रोकना।

हयाननम् (नपुं०) अश्वमुख।

० व्यन्तरदेव। हयानामाननानीव आनमानि येषां ते सेवा वर्गस्तथा व्यन्तरदेवसमूहश्च। (जयो० ५/१२)

हयान्वयधर्ता (वि०) घोड़ा को रखने वाला। (समु०२/२२)

हयायमाना (वि०) विपुल काम वासनावती। (जयो० २३/२२)

हयी (स्त्री०) घोड़ी।

हर (वि०) [हृ+अच्] हरण करने वाला, (सुद० ७३) अपहरण करने वाला, खेदहर, शोकहर।

० अभ्यर्थी, दावेदार, अधिकारी।

हरः (पुं०) महादेव, शिव, शंकर। (जयो० १/७३) यदाज्ञयार्धाङ्गितया समेति प्रियां हरो वैरपरोऽप्यथेति। (जयो० १/७३)

० कामारि, शंकर। (जयो०वृ० १६/१०)

० अग्नि।

० गर्दभ।

० भाजक, भाग देने पर भिन्न की संख्या। (तिलोय)

हरगत (वि०) अपहरण शील।

हरगौरी (स्त्री०) शिव की प्रिया गौरी।

हरचन्दः (पुं०) शिव का चंद्र।,

हरचूडामणिः (स्त्री०) चंद्रमा।

हरणम् (नपुं०) ग्रहण, अभिग्रहण।

हरतेजस् (नपुं०) पारा।

हरसुनु (पुं०) स्कंद।

हरारिः (पुं०) काम। (जयो० १७/१५)

हरि (वि०) [हृ+कन्] कपिल, खाकी रंग वाला, हरा पीला।

हरिः (पुं०) ० विष्णु। (जयो०वृ० १/१३५) ब्रह्मा। (जयो०वृ० १/३५)

० कृष्ण। (मुनि० २४)

० हरिश्चन्द्र मुनि। (समु० ५/२५) (जयो०वृ० ४/६६)

० सिंह। (जयो० ७/११२)

० इन्द्र। ० यम। (जयो० २३/४९)

० सूर्य, ० चन्द्र, ० अग्नि, ० अश्व।

० सर्प, ० मयूर, ० मेंढक, तोता।

हरिकः (पुं०) जुआरी, चोर, पीला घोड़ा।

हरिकान्त (वि०) इन्द्र के लिए प्रिय।

हरिकान्थः (पुं०) चन्दन, एक विशेष सुगन्धित चन्दन।

हरिचन्दनः (पुं०) पीला चंदन। (जयो० २४/१६)

हरिचन्दनद्रवः (पुं०) हरिचंदन का द्रव। (जयो० २४/७४)

हरिचन्दनाञ्चित (वि०) हरिचन्दन नामक वृक्षों से युक्त। (जयो० २४/६)

हरिजनः (पुं०) हरिजन, मार्गादिमार्जनकरो जनः। (जयो०४/६७)

हरिण (वि०) [हृ+इनन्] फीका, पीला सा।

हरिणः (पुं०) मृग। दरिणो हरिणा बलादमी तव धावन्ति मुधा महीपते। (जयो० १३/४७)

हरिणकलङ्कः (पुं०) चन्द्र, शशि।

हरिणनयन (वि०) मृगनयनी, मृगाक्षी। (जयो० १८/९३)

हरिणलोचन (वि०) हरिणाक्षी।

हरिणहृदय (वि०) भीरु, भयभीत हृदय वाला।

हरिणाङ्गना (वि०) मृगी, हरिणी।

हरिणाङ्गनाखुरः (पुं०) मृगी खुर। (जयो० २५/१८)

हरिणाक्षी (वि०) मृगाशी।

हरिणी (स्त्री०) मृगी। (जयो० २२/६७) (जयो० १४/५६)

० एक अप्सरा विशेष। (जयो० २२/६७)

हरित् (वि०) [हृ+इति] हरा, हरितमायुक्त। (जयो० २१/७४)

० तृण सहित। (जयो० २१/७४)

० पीला सा, हरियाली युक्त।

हरित् (पुं०) ० अश्व, घोड़ा। (जयो०वृ० २१/२४)

० इन्द्र। (समु० ६/४१)

० दिशा-हरतः ककुभिस्त्रियाम्। (जयो० ५/७) (जयो०वृ० २६/४६) इति विश्वलोचनः (जयो० २६/४६)

० सूर्य, ० विष्णु, ० सिंह।

० घास। (जयो० २१/७४) तृण।

हरित (वि०) हरे रंग का।

हरितः (पुं०) ० सिंह।

हरितवर्णः (पुं०) हरवर्ण। (जयो०वृ० १९/१८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरिता (स्त्री०) दूर्वा, तृण, घास। (जयो०वृ० १/५८)

हरिताङ्कुरं (नपुं०) हरित, अंकुर, दूर्वा। (जयो०वृ० १/५८)

० तृण, घास (शाड् वल) (जयो०वृ० ३/४७)

हरितांशु (नपुं०) हरित अंकुर। (जयो०वृ० २२/४७)

हरितोहित (वि०) इन्द्र की तरह कल्याणकारी। ० हरितवर्ण युक्त।

हरितो हरिद्वर्ण इत्येवमूहितस्य तर्कितस्येति। (जयो०वृ० १९/१८)

हरिद्विषः (पुं०) कामदेव। (जयो० २८/६८)

हरिद्रा (स्त्री०) [हरि+द्रु+ड+टाप्] हल्दी-हरितो दिशा रातीति हरिद्रा समन्ततः प्रख्यातमती अथ च 'हलदी' इति देशभाषायाम्। (जयो० १५/३४, २७/५३)

हरिद्राराग (वि०) हलदी के रंग वाला।

हरिद्रावर्णः (पुं०) पीतवर्ण, पीलारंग।

हरिनादः (पुं०) सिंहनाद, शेर की दहाड़। (वीरो० ७/२)

हरिपीठः (पुं०) सिंहासन। (जयो० २६/९) मंगलपीठ, उत्कृष्ट सिंहासन। हरिपीठगत्-सिंहासनस्थ। (जयो०वृ० २६/१३) पर्वत इव हरिपीठो प्राणेश्वर-पार्श्व-सङ्गता महिषी। (वीरो० ४/३२)

हरिप्रियः (पुं०) कदम्ब तरु।

० शंख।

० मूर्ख।

हरिप्रिया (स्त्री०) लक्ष्मी, विष्णुप्रिया। (वीरो० २/१८)

० तुलसी का पौधा, औषधि नाम। (जयो० २१/८६)

० पृथ्वी, भू।

हरिभुज् (पुं०) सर्प, सांप।

हरिमन्थः (पुं०) मटर, चना।

हरिमन्थकः (पुं०) मटर, चना।

हरियः (पुं०) [हरि+या+क] पीत अश्व।

हरियव्वरसी (स्त्री०) शान्तलादेवी की पुत्री।

हरियव्वरसिः पुत्री शान्तलाया जिनास्पदम्।
कारयामास द्वादश्यां शताब्दयां विक्रमस्स सा।।
(वीरो० १५/४७)

हरिरामा (स्त्री०) लक्ष्मी। (जयो० १४)

हरिलोचनः (पुं०) केंकड़ा।

० उल्लू।

हरिवल्लभा (स्त्री०) लक्ष्मी।

० तुलसी।

हरिवासरः (पुं०) एकादशी।

हरिवाहनः (पुं०) गरुड़।

० इन्द्र।

हरिविष्ठरः (पुं०) इन्द्र सिंहासन। (वीरो० ७/३)

हरिश्चन्द्रः (पुं०) सूर्यवंश का एक राजा।

० धर्मशर्माभ्युदयमहाकाव्य के रचनाकार।

हरिषेणः (पुं०) जोणिपाहुड कर्ता एक आचार्य, जो आयुर्वेद काव्य रचयिता है। वृहत्कथाकार (जयो० १७/८९)

० साकेत नगरी के राजा वज्रषेण की रानी शीलवती का पुत्र। (वीरो० ११/२८)

हरिसुतः (पुं०) अर्जुन।

हरिहयः (पुं०) इन्द्र।

० सूर्य।

हरिहूतिः (पुं०) चक्रवाक पक्षी।

हरीतकी (स्त्री०) [हरिं पीतवर्णं फलाद्वारा इता प्राप्ता-हरि+इ+क्त+कन्+ङीष्] हरड़े का वृक्ष।

हरेणु (स्त्री०) नव यौवना। (जयो० १२/७८)

हर्तृ (वि०) [हृ+तृच्] अपहरण करने वाला। (सुद० ९७)

० छीनने वाला, लूटने वाला।

हर्तृ (पुं०) चोर।

० लुटेरा।

हर्ता (वि०) विनाशक। (जयो० २३/७६) (मुनि० २५)

हर्ति (वि०) अपरहण करने वाला। ० विनाशक।

हर्मन् (नपुं०) [हृ+मनिन्] जंभाई लेना, मुंह खोलना।

हर्मित (भू०क०कृ०) [हर्मन्+इतच्] जंभाई लेने वाला।

० फेंका गया, जलाया गया।

हर्म्यम् (नपुं०) [हृ+यत् मुट् च] प्रासाद, राजभवन, महल। (जयो०)

० तंदूर, अंगीठी, चूल्हा।

हर्म्यावलिः (स्त्री०) प्रासादतति। (जयो० १६/६४)

हर्ष (वि०) [हृष्+घञ्] आनन्द, (सुद० ९९) खुशी, प्रसन्नता, रोमाञ्च, पुलक।

० उल्लास, आह्लाद, प्रमोद।

हर्षक (वि०) [हृष्+णिच्+ण्वुल्] आनंदयुक्त।

हर्षकर (वि०) समुद्दीपक, प्रसन्नताप्रदायक। (जयो०वृ० १/६३)

० तृप्त करने वाला।

हर्षजड (वि०) जडवत् हो जाने वाला।

हर्षण (वि०) [हृष्+णिच्+ल्युट्] प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला। तृप्त करने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हर्षणं (नपुं०) आनंद, खुशी, प्रसन्नता।
हर्षधारिन् (वि०) प्रसन्नता धारण करने वाला। (जयो० ८/५९)
हर्षप्रतिपद् (स्त्री०) हर्षयुक्त, प्रतिपदा। (सुद० २/११)
हर्षप्रद (वि०) प्रीतिद, आनंद प्रदाता। (जयो०वृ० २०/८९)
हर्षभावः (पुं०) मुदञ्चन, प्रमोदभाव। (जयो०वृ० १२/५७)
हर्षवर (वि०) प्रसन्नता पूर्वक। (समु० ६/३२)
हर्षसञ्जात (वि०) रोमाञ्च उत्पन्न करने वाला, मुदङ्कुर। (जयो०वृ० २१/४)
हर्षसन्तति (स्त्री०) आनंद परम्परा। (वीरो० ७/३३) जलमुच्चलमाप तावतेन्दुपुरं सम्प्रति हर्षसन्ततेः (वीरो० ७/३३)
हर्षसर्गः (पुं०) आनंद भाग, प्रीति अंश। (समु० ६/१५)
हर्षस्वनः (पुं०) प्रसन्नता का भाव। आनन्द के स्वर।
हर्षाङ्कुरम् (नपुं०) हर्षभाव। (जयो०वृ० ३/८३)
हर्षाश्रु (स्त्री०) प्रमोदवाष्प। (दयो० १६/८१)
हर्षित (वि०) आह्लादित। (जयो० १/१०१)
० आनन्दित, प्रफुल्लित।
हर्षितमानस् (नपुं०) आह्लादितचित्त। (जयो०वृ० १/१०६)
हर्षिताङ्गम् (नपुं०) रोमाञ्चित देह। (जयो० १/९०) परिपुष्ट वेष। (जयो० वृ० १/८५)
हर्षुलः (पुं०) [हृष्+उलच्] हरिण।
० प्रेमी।
हर्षोकर्षः (पुं०) प्रमोद की वृद्धि। हर्षस्य प्रमोदस्योत्कर्षो वृद्धिभावो। (जयो०वृ० ९/८३)
हल् (अक०) हल चलाना, जोतना।
हलम् (नपुं०) [हल् घञर्थे करणे क] लांगल, हल, खेत जोतने का उपकरण।
हलधर (वि०) हल धारक, हल चलाने वाला।
हलधरः (पुं०) बलराम।
हलभृत् (पुं०) हाली, बलराम।
हलभूतिः (स्त्री०) किसानी, कृषिकर्म।
हलभृति देखो ऊपर।
हलहतिः (स्त्री०) खूड निकालना, जुताई, हल चलाना।
हला (स्त्री०) [ह इति लीयते ह+ला+क+टाप्] सखी, सहेली।
० पृथ्वी।
० जल।
० मदिरा।
हलाहलः (पुं०) विष।

हलिः (पुं०) हल। ० खूंड।
० कृषि।
० बलराम।
हलिन् (पुं०) बलराम, ० कृषि, खूंड।
हलिजनः (पुं०) किसान। ० चाण्डाल।
० कृषि बल। (जयो० ४/६७)
हलिनी (स्त्री०) [हलिन्+ङीष्] हलों का समूह।
हलीनः (पुं०) [हलाय हितः हल+ख] सागौन का पेड़।
हलीषा (स्त्री०) [हलस्य-ईषा] हल का दण्ड, हलस।
हल्य (वि०) [हल्+यत्] जोतने योग्य, हल चलाने योग्य।
० कुरुप, विकृताकृति।
हल्लकम् (नपुं०) [हल्ल्+ण्वुल्] रक्त कमल।
हल्लनम् (नपुं०) [हल्ल्+ल्युट्] लोटना, करवट बदलना।
हल्लीशम् (नपुं०) वर्तुलाकार नृत्य।
हवः (पुं०) [हु+अ, ह्वे+अप्] ० आहूति। ० यज्ञ, प्रार्थना, ० आहावन।
० आमन्त्रण। ० आदेश। ० चुनौती।
हवनम् (नपुं०) [हु भावे ल्युट्] आहूति। ० आह्वान, ० प्रार्थना, ० आमंत्रण।
हवनकर्ता (वि०) हवन करने वाला, आहूति, देने वाला। (जयो०वृ० १५/६७)
हवनीयम् (नपुं०) [हु+अनीयर्] आहूति देने योग्य।
हवनोचितः (पुं०) हवन के अनुरूप। (जयो०वृ० ७/८१)
हवित्री (स्त्री०) [हु+इत्रन्+ङीप्] आहूति स्थान।
हविटासनम् (नपुं०) आग, अग्नि, होमाग्नि, हवनाग्नि। (जयो २८/४४)
हविया (वि०) हवनाग्नि। (जयो० १२/६९)
हविष्मत् (वि०) [हविस्+मतुप्] आहूति वाला।
हविष्यम् (नपुं०) [हविषे हितं कर्मणि यत्] आहूति देने योग्य सामग्री।
हविस् (नपुं०) [हूयते हु कर्मणि असुन्] होम, आहूति। (जयो० १२/६९)
० घी। हविर्घृतमुत्तमस्तीति कारणम्। (जयो०वृ० १२/१८)
हव्य (वि०) [हु कर्मणि+यत्] ० साकल्य, हवन में आहूति देने योग्य पदार्थ। (जयो०वृ० २३/६)
हव्यम् (नपुं०) घृत, घी।
० आहूति।
हव्यमाहः (पुं०) अग्नि, हवनाग्नि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हव्यसामग्री (स्त्री०) साकल्यभाज।
 ० हवन सामग्री। (जयो० २३/६)
हस् (अक०) हसना, मुस्कराना, प्रसन्न होना। (जयो० ३/५३)
 ० उपहास करना। (सुद० ८५)
 ० खिलना, खुलना, हर्षित होना, प्रफुल्लित होना। (सुद० ४/१०)
हस (वि०) हंसी, ठहाका।
 ० उपहास, आमोद-प्रमोद।
 ० प्रसन्नता।
 ० खुशी, ० हर्ष।
हसनम् (नपुं०) [हस्+ल्युट्] हंसना, उपहास, अट्ठहास।
हसनी (वि०) [हसन+ङीप्] चूल्हा, अंगीठी, कांगड़ी।
हसन्ती (स्त्री०) मल्लिका, हंसती हुई। (वीरो० ५/३१) संतो हसन्ती मृगशावनेत्रा किल्वा हसन्ती परिवारपूर्णाम्। (वीरो० ७/३१) ०चूल्हा, ०अंगीठी।
हसिका (स्त्री०) [हस्+ण्वुल्+टाप्] उपहास, हंसी।
 ० अट्ठास।
हसित (भू०क०कृ०) [हस्+क्त] उपहास करता हुआ, हंसता हुआ।
 ० हर्षित। ० अट्ठाहास युक्त।
हसितवती (वि०) हंसने वाली स्त्री, प्रसन्नचित्त स्त्री। (जयो० ५/७०)
हस्तः (पुं०) [हस्+तन्] हाथ, कर। (सुद० ८०) (जयो० ११५) (दयो० ४२) पाणि। (जयो०वृ० १४/३५)
हस्तकः (पुं०) हाथ की अवस्थिति।
हस्तकमलम् (नपुं०) हाथ रूपी कमल। कमल जैसा हाथ।
हस्तकौशलम् (नपुं०) हाथ की दक्षता।
हस्तक्रिया (स्त्री०) दस्तकारी, हाथ का काम।
हस्तगत (वि०) हाथ में आया हुआ, अधिकार प्राप्त।
हस्तगामिन् (वि०) अधिकार जन्य, हस्तगृहीत।
हस्तग्राहः (पुं०) हाथ से पकड़ना।
हस्तचापल्यम् (नपुं०) हस्त कौशल, दस्तकारी।
हस्ततलम् (नपुं०) हथेली। (जयो० ४/४२)
हस्ततालः (पुं०) हथेली बजाना, तालियां बजाना।
हस्तदोषः (पुं०) हाथ से होने वाली भूल।
हस्तधारणम् (नपुं०) हाथ का उपयोग।
हस्तपादम् (नपुं०) हाथ और पैर।
हस्तपुच्छम् (नपुं०) कलाई के नीचे का भाग।
हस्तपृष्ठम् (नपुं०) हथेली का पिछला भाग।
हस्तप्रक्षालनम् (नपुं०) हाथ धोना। (जयो०वृ० १९/५)
हस्तप्राप्त (वि०) हाथ में आया हुआ, हस्तगत, उपलब्ध, समागत।
 ० सुरक्षित, संरक्षित।
हस्तप्राप्य (वि०) हाथ के पहुंचने योग्य।
हस्तबन्धूरः (पुं०) शुण्ड, सूड, हाथी की सूड। (जयो० १३/३२)
हस्तबिम्बम् (नपुं०) शरीर पर गन्ध लेप।
हस्तमणिः (स्त्री०) हाथ कंगन, मणिवलय, रत्नाभूषण।
हस्तयन्त्रम् (नपुं०) सिलाई मशीन, हस्तसीवन यन्त्र। (जयो० २/५०)
हस्तलाघवम् (नपुं०) हस्तकला, हाथ की सफाई, बाजीगरी।
हस्तविनोदसाधनम् (नपुं०) कर क्रीडनक। (जयो०वृ० ३/६९)
हस्तसंयोगः (पुं०) हाथ का योग, हाथ का प्रयोग। (जयो० २०/६२)
हस्तसंयोजनं (नपुं०) सम्यगञ्जलित्व। (जयो०वृ० २०/१७)
हस्तसंवाहनम् (नपुं०) हाथ मालिश, हाथ से दबाना।
हस्तसिद्धिः (स्त्री०) मजदूरी, श्रम, परिश्रम।
हस्तसूत्रम् (नपुं०) मंगलमय सूत्र, कंगन, कड़ा।
हस्तस्थित (वि०) हाथ में रखा हुआ। (जयो०वृ० १/९)
हस्ताग्रभागः (पुं०) पाणिलेश। (जयो०वृ० १४/३७)
हस्ताक्षरम् (नपुं०) दस्तखल, हस्त स्व नामाङ्कन।
हस्तांगुलिः (स्त्री०) हाथ की अंगुली।
हस्ताभ्यस्तः (पुं०) हाथ से कार्य करना।
हस्ताम्बुकणः (पुं०) सूंड से जल उछालना। (जयो० ८/२६)
हस्तालम्बनम् (नपुं०) हाथ का सहारा।
हस्तावलम्बिन् (वि०) हस्त आधारित। (सुद० १/३)
हस्तावापः (पुं०) हस्तत्राण, हाथ पोश, दस्ताना।
हस्ताहस्ति (वि०) दक्ष, कुशल, निपुण।
हस्तिकम् (अव्य०) [हस्तैश्च हस्तैश्च प्रहत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्] हाथापाई।
हस्तिन् (वि०) [हस्तः शुण्डादण्डोऽस्त्यस्य इनि] सूंडयुक्त।
 ० करयुक्त।
हस्तिन् (पुं०) हाथी। (जयो०वृ० १/२५) ० गज।
 ० करेणु, दन्ति, दशनि। (जयो० १२/८०)
 ० मतङ्गज, दन्तुर, दानधर, मदधर। (जयो०वृ० ८/१९)
 ० करि। (जयो०वृ० ६/२४)
 ० गणेश। (जयो० १/२)
 ० भद्र, सज्जन, कुशल, चतुर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हस्तिकक्ष्यः (पुं०)० सिंह, ० बाघ।

हस्तिकर्णः (पुं०) एरण्ड पादप।

हस्तिघ्न (वि०) हाथी को मारने वाला।

हस्तिचारिन् (पुं०) बलवान्, शूरवीर, बहादुर।
 ० महावत।

हस्तिदन्तः (पुं०) हाथीदांत।
 ० गजदन्तपर्वत। (भक्ति० ३६)

हस्तिदन्तकम् (नपुं०) मूली।

हस्तिनखम् (नपुं०) मिट्टी का ढला।

हस्तिनागपुरं (नपुं०) हस्तिनापुर। (जयो० १/२)

हस्तिनागाधिपः (पुं०) हस्तिनापुर का राजा। (वीरो० १/२०)

हस्तिपुरम् (नपुं०) गजपत्तन। (जयो०वृ० १३/१)

हस्तिनी (स्त्री०) हथिनी, गरेणु। (जयो०वृ० १३/१०८)

हस्तिपः (पुं०) महावत, सादीवर। (जयो० १३/३६, १३/४)

हस्तिपकः (पुं०) महावत, सादीवर।

हस्तिपंक्तिः (स्त्री०) गजराजि, हस्तिसमूह। (जयो० १३/१४)

हस्तिपुरम् (नपुं०) हस्तिनापुर। (जयो० १/५)

हस्तिपुराधिपः (पुं०) हस्तिनापुर का राजा, जयकुमार विशेष। (जयो० ११/८) (जयो० १/५)

हस्तिपुराधिराजः (पुं०) हस्तिनापुर का राजा।

हस्तिमदः (पुं०) हाथी का मद।

हस्तिमदादिहरणं (नपुं०) हस्तिमद आदि का नाश। (जयो० १९/६५) इसके लिए मंत्र दिया है- ओं ह्रीं अर्हं णमो बोहियवुद्धीणं (जयो० १९/६५)

हस्तिमौक्तिकः (पुं०) गजमुक्ता। (जयो०२१/४७)

हस्तिराजः (पुं०) गजेन्द्र, इभेन्द्र। (जयो० ८/७५)

हस्तिसंचयः (पुं०) हस्तिसमूह।

हस्तिस्नानम् (नपुं०) गजस्नान।

हस्तिहस्तः (पुं०) सूंड, शुण्ड।

हस्त्य (वि०) [हस्त+यत्] हाथ से दिया गया।

हहलम् (नपुं०) [ह+हल्+अच्] हलाहल विष।

हहा (पुं०) [ह+आ+क्विप्] हाहा नामक गन्धर्व।

हा (अव्य०) [हा+का] हाय, आह, रे (सुद० ९४) अरे।
 ० खेद, उदासी, खिन्नता। हा खेदवार्ता। (जयो० ४/३९, हेति खेदे। (जयो० २/८७) हा खेदप्रकाशने। (जयो० २७/५३, खेद प्रदर्शनार्थम्। (जयो० २५/७०) सुवृत्तभाजो ग्रहणाय वामां भुवीत्यपूर्वामपरस्य हा माम्।। (जयो० ५/९९)
 ० आश्चर्य खेदे। (जयो० ५/१०४)

हा (अक०) जाना, जुदा होना, चले जाना।
 ० छोड़ना, त्याग करना, भूल जाना।
 ० घटना, कम होना, क्षीण होना।

हाङ्गरा (स्त्री०) एक मछली। [हा विषादाय पीड़ायै वा अंग राति-हा-अङ्ग+रा+क]

हाटक (वि०) [हाटक+अण्] सुनहरी।

हाटकम् (नपुं०) सोना, कनक, कंचन।

हाटकगिरि (पुं०) सुमेरु।

हाटकपट्टिका (स्त्री०) आभूषण का नाम, स्वर्णाभूषण। (जयो० १०/३४)

हात्रम् (नपुं०) [हा करणे त्रल्] पारश्रमिक, मजदूरी, भाड़ा।

हानम् (नपुं०) [हा+क्त] छोड़ना, त्यागना। हानि क्षति।
 ० असफलता, अनुपस्थिति।
 ० तिलांजलि।
 ० न्यूनता। ० कमी।
 ० पराक्रम, बल।

हानयोग्य (वि०) छोड़ने योग्य। (जयो० २/६५)

हानिः (स्त्री०) [हा+क्तिन् तस्य निः] छुटकारा (सुद० १०४)
 ० परित्याग। (सम्य० १०२)
 ० असफलता, नुकसान।
 ० तिलांजलि।
 ० अत्यय। (जयो०वृ० २/१५४)
 ० बर्बाद होना, नष्ट होना।
 ० अवहेलना।
 ० न्यूनता, कमी।

हानिकर (वि०) अत्ययकर, अवहेलना करने योग्य।

हाप् (अक०) सेवन करना, उपभोग करना। (जयो० ३/१)

हापन (वि०) नाशक, मारक। (जयो० २/२२)

हाप्य (वि०) छोड़ने योग्य। (जयो० २/६५)

हाफिका (स्त्री०) जंभाई, जृम्भा।

हामवत् (वि०) चण्डवत्। (सुद० ३/१०)

हायनः (पुं०) वर्ष, सम्वत्सर।

हायनम् (नपुं०) शिखा, ज्वाला।

हारः (पुं०) [हृ+घञ्] वाहक, हलकारा।
 ० हटाना, पकड़ना, हराना।
 ० अपकर्षण, अलगाव।
 ० माला, हार, गजरा। (दयो० ५४, सुद० २/५०)
 ० कण्ठाभरण (जयो० ३/१०४) आभूषण। (जयो०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२/१२६)
० भाजक।
हारकः (पुं०) [हृ+ण्वुल्] चोर, लुटेरा।
० ठग, धूर्त।
० मोतियों का हार।
० भाजक ।
हारकण्ठी (वि०) गले की माला।
हारगत (वि०) विभाजित, भाग किया गया।
हारमुट्ठी (स्त्री०) एक आकृति विशेष। (सुद० ३/४०)
हारयष्टिः (स्त्री०) कण्ठाभूषण की लड़ी। (जयो० ११/३९)
० कण्ठाभरणावली। (जयो० १५/७७)
हारि (वि०) [हृ+णिच्+इन्] मनोहारि। (जयो० १६/४३)
० आकर्षक, मोहक, सुखकर। (जयो० ९/९४)
हारिः (स्त्री०) पराजय।
० सार्थवाह।
० यात्रियों का समूह।
हारिकण्ठः (पुं०) कोयल।
हारिणिकः (पुं०) [हरिण+ठक्] शिकारी।
हारित (भू०क०कृ०) [हृ+णिच्+क्त] हरण कराया हुआ, गृहीत, पकड़ा हुआ।
० आकृष्ट।
हारिन् (वि०) ले जाने वाला, हरण करने वाला।
हारिद्रः (पुं०) [हरिद्रा+अण्] पीलारंग, कदंब तरु।
हारिद्रवत्व (वि०) हल्दी का द्रव। हरिद्राया इदं हारिद्रं तद्वत्त्वं हारि मनोहरं च म् द्रवत्वत (वीरो०१/१३)
हारिमृणालः (पुं०) कमल नाल। (सुद० २/७)
हारीताः (पुं०) [हृ+णिच्+ईतच्] धूर्त, ठग।
० कबूतर विशेष।
हार्दम् (नपुं०) [हृदयस्य कर्म] स्नेह, प्रेम।
० कृपा, सुकुमारता।
० इच्छाशक्ति।
० अभिप्राय।
० अर्थ।
हार्दोचित (वि०) प्रेमोचित। (जयो० १६/४)
हार्य (वि०) [हृ+ण्यत्] हरण किये जाने योग्य।
हार्यः (पुं०) सर्प, सांप।
हालः (पुं०) हल। ० बलराम, ०हालकवि।
हालकः (पुं०) पीले रंग का घोड़ा।

हाला (स्त्री०) घातक विष, गरल। (सुद० १०५)
० मदिरा, शराब। (जयो० ६/३१)
हालाहलम् (नपुं०) गरल, विष, घातक विष। (दयो० ६१)
हालिकः (पुं०) कृषक, किसान। [हलेन सनति हलः प्रहदरणमस्य तस्येदं वा ठक् ठञ् वा]
हालिनी (स्त्री०) बड़ी छिपकली।
हाली (स्त्री०) [हल्+इण्+डीप्] साली।
हालुः (पुं०) दांत।
हावः (पुं०) [ह्वे भावे घञ् हुकरणे घञ् वा]
० आमंत्रण, बुलाना।
० आह्वान। रंगरेली, मधुर आभूषण।
हावे च भावे धृतिक क्षदावे (सुद० १०३)
० सविलास। (जयो० १०/११९)
० विभ्रम विलास। (जयो० १६/४२)
हाव-भावः (पुं०) मधुर सम्भाषण युक्त भाव। अहहाग्रह-हाव भावधात्री मम च प्रेमनिबन्धतैकपात्री। (जयो० १२/२१)
हावादिगण (नपुं०) विभ्रम विलास। (जयो० १६/४२) हाव आदिर्येषां ते हावादयस्तेषां गणः।
हासः (पुं०) [हस्+घञ्] ठहाका, हंसी, मुस्कराहट।
० विकास। (जयो० ६/१२) हर्ष, खुशी, आनंद।
० हास्य ध्वनि, हास्य रस।
० खुलना, विकसित होना।
हासगत (वि०) हंसी को प्राप्त हुआ।
हासजन्य (वि०) हंसी योग्य।
हासभासः (पुं०) हास्य विनोद। (जयो० ४/५३)
हासवृत्तिः (स्त्री०) विकास लक्षण। (जयो० १८/६१)
हासस्वरं (नपुं०) हंसी की गूंज। (जयो० ६/१२७)
हासिका (स्त्री०) [हस्+ण्वुल्+टाप्] अट्ठहास, हंसी ठहाका।
० आमोद, हर्ष, खुशी।
हास्य (वि०) [हम्+ण्यत्] हास्यापद, हंसी योग्य।
० हसन, स्मित। (जयो०वृ० १२/११९)
हास्यम् (नपुं०) हंसी, व्यंग्य, मज़ाक।
हास्यकुसुमम् (नपुं०) स्मित पुष्प। (जयो०वृ० १२/११९)
हास्यगत (वि०) हंसीगत, व्यग्ययुक्त। ० प्रफुल्लित पुष्प।
हास्यपदवी (स्त्री०) खिल्ली, दिल्लगी।
हास्यपरम्परा (स्त्री०) हसन परिणाम। (जयो० १७/४९)
हास्यभावः (पुं०) स्मितभाव। ० हर्ष परिणाम।
हास्ययुक्त (वि०) हंसी जनक। (जयो०वृ० १२/११५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हास्यरूपेन्दुः (स्त्री०) चन्द्रिका, कौमुदी। (जयो०वृ० ११/५३)

हास्यविनोदः (पुं०) हंसी-मजाक। (जयो०वृ० ३/१)

हारवः (पुं०) हाहा कार के शब्द।

हा हन्त (वि०) हाय। हा हंत किन्तु समुपैमि मले: प्रतापम्। (जयो० २२/२५)

हाहा (पुं०) [हा इति शब्दं जहति हा हा क्विप्] ० एक गन्धर्व।
० पीड़ा/शोक सम्बंधी उद्‌गार।

हाहाकारः (पुं०) शोक, विलाप, दुःख, रोना-धोना।

हाहान्धकारः (पुं०) हाय हाय! (जयो० १५/२४)

हि (अव्य०) क्योंकि ही, हु, फिर भी, इसलिए, कि, निश्चय, ही। (सम्य० १८/९) (सुद० १०२) (सुद० २/५०) हीति निश्चये (जयो० ५/४९) हयस्त्विति विचार्येत्यर्थः। (जयो० १३/६)
० उत्प्रेक्षार्थ-हीत्युत्प्रेक्षायां समस्ति। (जयो० १३/७८) (जयो० १८/४०)
० वाक्य पूरणार्थः। (जयो० १०/१९)

हि (अक०) भेजना, प्रेषित करना।
० चलाना, दागना।
० फेंकना, छोड़ना।
० भड़काना, उकसाना।
० तृप्त करना, प्रसन्न करना।

हिंस् (उभयपदी) हिंसा करना, मारना, घायल करना, प्रहार करना, नष्ट करना।
० कष्ट देना, संताप देना।
० आघात पहुंचाना, हानि करना।
० क्षति करना, नाश करना।
० हत्या करना, आरम्भ करना।
० प्रतिघात करना।

हिंसक (वि०) [हिंस्+ण्वुल्] घातक, मारक, प्रहारक।
० क्षतिकर, हानिकारक।
० आरम्भिक क्रिया।

हिंसकः (पुं०) शत्रु, शिकारी, घातक। दयते स्वकुटुम्बादौ हिंसकादपि हिंसकः। (वीरो० १५/५९)

हिंसनम् (नपुं०) [हिंस्+ल्युट्] प्रहार करना, चोट पहुंचाना।
० वध करना।

हिंसा (स्त्री०) [हिंस्+अ+टाप्] जीववध, प्राणीघात, सत्त्वविनाश, प्राणव्यपरोपण, प्राणवियोग, प्राणवियोजक।
० छेदन, भेदन, त्रास।
० दुःख।
० प्राणहापन।
० प्राणच्छेद।
० क्षति, हानि।
० वध, घात, विध्वंस।
० प्रहार, संहारभाव। (सुद० पृ० १२८) प्राणानां व्यपरोपणस्य करणं हिंसा प्रमादेन या (मुनि० ५)
० गमनागमन का आरम्भ (वीरो० १६/७२)
प्राणाः प्रणाशमुपयान्ति यथेति कृत्वा।
कर्ता प्रमाद्यति यतः प्रतिभाति हिंसा।
पापं पुनर्विदधती जगते न किं सा।। (सुद० १२५)

हिंसाकर्मन् (नपुं०) कोई भी हानिकारक कर्म।

हिंसादानम् (नपुं०) वध हेतु दान।

हिंसानन्दः (पुं०) हिंसानुबन्धी। हिंसायां रञ्जं तीव्रं हिंसानन्दं तु नन्दितम्। (जैन०ल० १२/५)

हिंसानन्दी (स्त्री०) हिंसानन्द का व्यापार।
० रौद्रध्यान की प्रमुखता। (मुनि० २२)

हिंसानुबन्धी (स्त्री०) हिंसानन्दी नामक रौद्रध्यान।

हिंसापरक (वि०) हिंसा जनक। (वीरो० १/३२)

हिंसाप्रदानम् (नपुं०) हिंसादान, वध हेतु दान।

हिंसारु (पुं०) बाघ, चीता।

हिंसालु (वि०) [हिंसा+आलुच्] हानिकारक, हिंसा करने वाला।
० घातकारी, आरंभी।

हिंसीरः (पुं०) [हिंस्+ईरन्] बाघ।
० पक्षी।
० उपद्रवी व्यक्ति।

हिंस्य (वि०) [हिंस्+ण्यत्] मारने योग्य, वध करने योग्य।

हिंस्त्र (वि०) [हिंस्+र्] घातक, हानिकारक, क्रूर, भयंकर।

हिंस्त्रः (पुं०) क्रूर प्राणी, हिंसक जीव।

हिंस्त्रपशु (पुं०) क्रूर जानवर।

हिक्क् (अक०) अस्पष्ट उच्चारण करना, हिचकी लेना। (जयो० १९/६२)

हिक्का (स्त्री०) हिचकी।

हिङ्कारः (पुं०) हुंकार भरना, मन्द ध्वनि करना।

हिङ्गु (पुं०/नपुं०) हींग का पौधा।

हिङ्गुलः (पुं०) ईंगुर, सिन्दूर। रक्तवर्ण, विशेष, ईंगुर इति प्रसिद्ध (जयो० १८/३५)

हिङ्गुलु (पुं०) ईंगुर, सिंदूर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिञ्जीरः (पुं०) हाथी बांधने की जंजीर, रस्सी।

हिडिम्बः (पुं०) एक राक्षस।

हिण्ड् (अक०) जाना, घूमना, भ्रमण करना।

हिण्डनम् (नपुं०) [हिण्ड्+ल्युट्] घूमना, भ्रमण करना।
 ० संभोग।
 ० लेखन।

हिण्डिकः (पुं०) [हिण्ड्+इन्-हिण्डि+कन्] ज्योतिषी, निमित्तशास्त्री।

हिण्डिखण्डः (पुं०) फेन। (जयो०वृ० १३/९०) समुद्र झाग।

हिण्डिरः (पुं०) [हिण्ड्+इन्+ङीप्] दुर्गा।

हित (वि०) [धा+क्त] हितकारी, उपयोगी, कल्याणकारी।
 ० कृपालु, स्नेही, सद्वृत्त।
 ० शुभकर। (जयो०२/३) आनंद प्रद। (सुद० ३/११)
 ० अच्छा, समुचित, लाभदायक। (सुद० ३/१२)

हितः (पुं०) मित्र, सहभागी।

हितम् (नपुं०) कल्याण, लाभ, उपकार, शुभ, क्षेम।

हितकर (वि०) कल्याणकारक।

हितकरी (वि०) हित को करने वाला, हितं करोति। (जयो० ५/४०)

हितकाम (वि०) मंगल कार्य।

हितकारिन् (वि०) हितकारक, कल्याण करने वाला, हितकर्मी (जयो० ३/९६) (जयो० २/६६)

हितकारिन् (पुं०) परोपकारी व्यक्ति, सज्जन। (जयो० ३/९६)

हितकारिणी (स्त्री०) परिणामिकी भावना, कल्याणकारक दृष्टि। (जयो० १०५)

हितकृत् (पुं०) परोपकारी। जगतां हितकृद् भवेदिति हरिणाऽकारि विभो सवस्थिति। (वीरो० ७/२९)

हितप्रणी (पुं०) गुप्तचर।

हितवृत्तिमति (स्त्री०) हित में तल्लीन बुद्धि। (जयो० ४/५८)

हितसम्पादकः (पुं०) आचार्य ज्ञानसागर की एक संस्कृत रचना।

हिंसाधनम् (नपुं०) आत्म साधन। (जयो० ३/९५)

हिताङ्गः (पुं०) हित रूप परिणाम। (जयो० १/६६)
 ० कल्याण भाव।

हितान्वित (वि०) कल्याण में तत्पर। (जयो० १३/१)

हितार्थिन् (वि०) शुभेच्छुक, कल्याण चाहने वाला। (दयो० १/१)

हितावाञ्छक (वि०) अहितेच्छुक, अशुभेच्छुक। (समु० ९/८)

हितेच्छु (वि०) शुभेच्छु, कल्याणकारी। (जयो० ७/५१)

हितैषिणी (वि०) स्वहितवाञ्छक। (जयो० ३/५१)
 ० कल्याणेच्छुक। (सुद० २/४२)

हितोपदेश (वि०) ०हितकर कथन, ०विचारपूर्ण कथन, ०सदाचरण सम्बंधी विचार, ०एक संस्कृत कथा का संकलनात्मक ग्रन्थ।

हिनहिनाहटः (पुं०) हेषा, घोड़े की ध्वनि। (जयो० १३/७२)

हिन्तालः (पुं०) [हीनस्तालो यस्मात्] एक खजूर का प्रकार।

हिन्दू (वि०) आत्मचिंतन से परिपूर्ण। हिंसा दूषयन्तीति हिन्दच स्तेषां तातेन पूज्येन। (जयो०वृ० २८/२२) विशेष देखें (वीरो०२२/१३)
 ० वेद ज्ञाता। (जयो०वृ० १४/७९)

हिन्दुजनः (पुं०) वेदानुयायी। (जयो०वृ० १४/७९)

हिन्दुस्तानम् (नपुं०) हिन्दुओं का क्षेत्र, वेदानुगामीजनों का स्थान। (जयो० १९/८३) (वीरो० २२/१२)

हिन्दुस्थानम् देखो ऊपर।

हिन्दोलः (पुं०) [हिल्लोह+घञ्] हिंडोला, झूला, ढोला।

हिन्दोलकः (पुं०) [हिन्दोल+कन् टाप् वा] हिंडोला, झूला।

हिम (वि०) [हि+मक्] ठंडा, शीतल, तुषार।

हिमः (पुं०) सर्द ऋतु, शीत, सर्द। (जयो० १/१०)
 ० चन्द्रमा।
 ० हिमालय पर्वत।
 ० उष्मापि भीष्मेन जितं हिमेन पुनस्तन्निखिलं क्रमेण। (वीरो० ९/३०)
 ० हेमन्त ऋतु। (जयो० ८/६४)
 ० कपूर।
 ० कमल।
 ० रजनी।
 ० ताजा मक्खन।

हिमकरः (पुं०) चन्द्र, शशि।
 ० शरदऋतु। चन्द्र किरण। (जयो० २०/५७)
 ० कपूर, तुषाररुक। (जयो० ११/५२)

हिमकूटः (पुं०) हिमगिरि, हिमालय।

हिमच्छल (वि०) तुषार के बहाने। (जयो० २४/३६)

हिमजः (पुं०) हिमालय।

हिमजा (स्त्री०) खिरनी का पेड़।
 ० पार्वती, गौरी, शिवभार्या।

हिमतैलम् (नपुं०) कपूर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिमदीधितिः (पुं०) चन्द्रमा।
हिमद्रुहः (पुं०) सूर्य, दिनकर।
हिमध्वस्त (वि०) पाले से युक्त, शीत से घायल।
हिमप्रस्थः (पुं०) हिमाचल।
हिमरश्मिः (पुं०) चंद्र, शशि।
हिमराजिः (स्त्री०) बर्फ, हिमखण्ड।
हिमर्तुः (पुं०) शरद। (वीरो० ९/३३)
हिमर्तिः (स्त्री०) हिमपात, तुषार, पाना। (सुद० ४/८०)
हिमवत् (पुं०) हिमालय, हिमगिरि।
हिमवान् (पुं०) ०हिमवान् पर्वत ०तुषाराद्रि, ०हिमगिरि। (जयो० १३/५४) ०हिमालय।
हिमवालुका (स्त्री०) कपूर।
हिमशीतल (वि०) बर्फ युक्त, शीतलता सहित।
हिमशैकः (पुं०) हिमालय।
हिमसारः (पुं०) कपूर। (जयो० १२/७६) हिमस्य सारः-कर्पूर (जयो० १/१०)
हिमसारगौरः (पुं०) कर्पूर से स्वच्छ। (जयो० १/१०)
हिमा (स्त्री०) पाला। (सुद० १०९)
○ बाधा।
हिमांशु (पुं०) चन्द्र, शशि। (जयो० १८/७०)
हिमाक्रान्तः (पुं०) पाला, तुषार। (वीरो० १०/१)
हिमाचल (पुं०) हिमगिरि, हिमवान्। (सुद० ३/७)
हिमाद (वि०) शीतप्रहारक। (जयो० १५)
हिमाद्रि (वि०) हिमगिरि। हिमवान पर्वत (भक्ति० ४)
हिमानिलः (पुं०) बर्फीली पवन, शीतल वायु।
हिमान्वित (वि०) बर्फ सहित। (भक्ति० १४)
हिमाराति (पुं०) सूर्य, दिनकर। (जयो० २४/३४)
हिमारि (पुं०) शरद, हिमऋतु।
○ हिमनाशक।
हिमालयः (पुं०) हिमगिरि, हिमवान्। कैलाश पर्वत। (जयो०वृ० १३/५४) (जयो० ६/३३) हिमस्यालयः स्थानमस्येति (जयो० ४/३४)
हिमालयपर्वतः (पुं०) हिमगिरि। (जयो० १७/४०)
हिमाहत (वि०) हिमपात। (दयो० ८७)
हिमोदयः (पुं०) हिमपात, बर्फ गिरना, पाला गिरना। (वीरो० ९/२७)
हिमानी (स्त्री०) बर्फ का ढेर, बर्फ समूह, हिम संहति।
हियतः (अव्य०) ठीक ही है (जयो० २/१२)

हिरणम् (नपुं०) [हृ+ल्युट्] स्वर्ण, सोना।
○ वीर्य, कौड़ी।
हिरण्यः (वि०) स्वर्ण निर्मित, सोने से बना हुआ।
हिरण्यः (पुं०) ब्रह्मा।
हिरण्यम् (नपुं०) [हिरणमेव स्वार्थे यत्] ○ सोना, कंचन, स्वर्ण।
○ चांदी, रजत।
○ वीर्य, शुक्र।
○ कौड़ी।
○ दौलत, सम्पत्ति।
हिरण्यकक्ष (वि०) सोने की करधनी वाली।
हिरण्यकपिशुः (पुं०) प्रह्लाद के पिताश्री एक राजा विशेष।
हिरण्यकोशः (पुं०) सोना चांदी।
○ विष्णु।
हिरण्यगर्भः (पुं०) ब्रह्मा, महादेव। (जयो० ३/२३) ऋषभदेव।
हिरण्यनाभः (पुं०) सुमेरु, कैलाश पर्वत।
हिरण्यबाहु (पुं०) महादेव, शिव।
हिरण्यमय (वि०) स्वर्णमय, हैममय। (जयो० १४/८०)
हिरण्यरेतस् (पुं०) अग्नि, आग।
○ सूर्य, चित्रक पौधा।
हिरण्यवती (स्त्री०) अयोध्या के राजा की रानी सुमित्रा।
हिरण्यवर्णा (स्त्री०) नदी नाम। (जयो० ४/२५)
हिरण्यवर्मन् (पुं०) रतिवर कपोत का नाम। (जयो० २३/५०)
हिरण्यवर्मन् (पुं०) पुण्डरीकनगरी के राजा का पुत्र। (जयो० २३/५३)
हिरण्यवाहः (पुं०) सोन दरिया।
हिरण्यसम्मती (स्त्री०) आर्यिका का नाम। (समु० ४/१६)
हिरुक् (अव्य०) बीच के, निकट।
हिल् (अक०) कामेच्छा प्रकट करना, आलिंगन करना,केलिक्रीड़ा करना।
हिल्लः (पुं०) [हिल्+लम्] एक प्रकार का पक्षी।
हिल्लोलः (पुं०) [हिल्लोल्+अच्] लहर, उर्मी, झाल।
○ हिंडोल राग।
○ धुन, ○ सनक।
○ एक प्रकार का रतिबंध।
हिसारः (पुं०) हिसार जिला। (सम्य० १५३) इसी में सम्यक्त्व कौमुदी की रचना की गई।
ही (अव्य०) आश्चर्य बोधक अव्यय। ही विस्मय-विषादयो इति विश्वलोचनः (जयो० १७/१६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० खेद प्रकाशने। (जयो० २७/३२)
० थकावट, उदासी, खिन्नता।
हीत (वि०) सम्माननीय। (वीरो० १७/७)
हीन (भू०क०कृ०) [हा+क्त, तस्य नः ईत्वम्] कम (सम्य० ४६) अल्प, छोटा।
० परित्यक्त, त्यागा हुआ। (जयो० ३/६)
० अभाव, रहित। (सुद० २/४९) विहीन।
० त्रुटिपूर्ण, सदोष।
० नीच, अधम।
० निम्न।
हीनकुल (वि०) निम्नकुल वाला।
हीनचारिन् (वि०) हीन आचरण वाला। (जयो०वृ० ११/२७)
हीनज (वि०) नीच कुल में उत्पन्न होने वाला।
हीनजनः (पुं०) तुच्छ लोग। निधिघटीं धनहीनजनो यथाऽधिपतिरेष विशां स्वहशा तथा। (सुद० २/४९)
हीनजाति (वि०) निम्न जाति में उत्पन्न हुआ।
० पतित, तुच्छता युक्त।
हीनतप (वि०) अल्प तप, दोषपूर्ण तप।
हीनदोषः (पुं०) वंदना दोष।
हीनधन (वि०) निर्धन, कमधन वाला।
हीनधर्म (वि०) धर्म च्युत।
हीनधाम (वि०) आवास विहीन।
हीननन्दिन् (वि०) हर्षविहीन।
हीनबोध (वि०) समझ की कमी।
हीनमन्त्रं (वि०) त्रुटिपूर्ण मन्त्र वाला।
हीनमात्रा (वि०) अल्पमात्रा, मात्राओं की कमी।
हीनमातृत्व (वि०) मातृत्व विहीन।
हीनमोह (वि०) मोह की कमी वाला।
हीनयन्त्र (वि०) दोषपूर्ण यन्त्र।
हीनयम (वि०) यम/संयमन की कमी।
हीनयोनि (वि०) योनि/जन्मस्थान में निम्नता।
हीनयौवन (वि०) युवावस्था का अभाव।
हीनवर्ण (वि०) रूप-सौंदर्य से विरूप।
हीनवादिन् (वि०) दोषपूर्ण कथन करने वाला।
हीनशस्त्र (वि०) शस्त्र रहित।
हीनशास्त्र (वि०) सिद्धान्त विहीन।
हीनसंयम (वि०) संयम का अभाव।
हीनसाम्यभाव (वि०) समत्व की अल्पता।
हीनसेवा (वि०) तुच्छ लोगों की चापलूसी करने वाला।
हीनाधिकमानोन्मानम् (नपुं०) अचौर्यव्रत का एक अतिचार, कम-ज्यादा माप एवं प्रमाण आदि रखना, कम ज्यादा रखना, लोभ के वश होकर हलके बार से तोल देना और भारी बाट से लेना। (त०सू०पृ० १०८)
हीन्तालः (पुं०) [हीनस्तालो यस्मात्] छोटा खजूर वृक्ष, जो प्रायः छोटे पोखर आदि के समीप होता है या जहां खुला स्थान भी कीचड़ युक्त हो, वहां ऐसा खजूर का पेड़ उग जाता है।
हीय (वि०) ० हीनता हीयमान अवधिज्ञान का भेद।
हीरः (पुं०) [हृ+क] ० हार, सिंह। ० सर्प।
० इन्द्र, वज्र। (जयो० १०/८८)
हीरम् (नपुं०) हीरा, इन्द्र का वज्र एक बहुमूल्य धातु। (जयो० ८/९९)
हीरकः (पुं०) हीरा, रत्न विशेष। (जयो०वृ० ८/९७)
हीरवीरः (पुं०) श्रेष्ठतम् वज्र। (जयो० ३/२५)
हीरा (स्त्री०) [हीर+टाप्] लक्ष्मी। ० चिऊंटी।
हीलम् (नपुं०) [ही विस्मयं लाति-ला+क] वीर्य।
ही ही (अव्य०) [ही+ही] आश्चर्य बोधक अव्यय।
० प्रसन्नता ज्ञापक अव्यय।
हु (अक०) यज्ञ करना, आहूति देना।
० प्रस्तुत करना, सम्मान देना।
० अनुष्ठान करना।
हुंकारधर (वि०) हुंकार लगाने वाला। (जयो० २७/२७)
हुंकृतिः (स्त्री०) हुंका (जयो० २१)
हुड् (अक०) संचय करना, जाना।
हुडः (पुं०) [हुड्+क] मेढा। कैदगृह, कारागृह।
० चोर रखने का स्थान।
हुडकः (पुं०) वाद्य विशेष। (जयो०वृ० १०/२१)
हुडुक्कः (पुं०) [हुड्+उक्क] एक पक्षी विशेष, दात्यूह।
० दरवाजे की कुंडी।
हुडुत् (नपुं०) [हुड्+उति] सांड की रंभाना।
हुण्डः (पुं०) [हुण्ड्+क] व्याघ्र, मेंढा।
० ग्राम शूकर।
हुण्डकसंस्थानम् (नपुं०) विरूप आकार, शरीर के अवयव की बनावट में हीनाधिकता। 'अवच्छिन्नावयवं हुण्डसंस्थानं नाम।' (जैन०ल० १२/७)
हुण्डशरीरम् (नपुं०) विरूप आकृति वाला शरीर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुत (भू०क०कृ०) [हु+क्त] आहुति युक्त, होम किया हुआ। भस्मीकृत। (जयो०१२/८७)

हुतम् (नपुं०) आहूति, होम, चढ़ावा। (जयो० २/१३) (मुनि०१)

हुतजात (वि०) होम से उत्पन्न हुआ।

हुतधूपः (पुं०) हवन धूप। (जयो० १२/६७)

हुतभुज् (पुं०) अग्नि, आग।

हुतवहः (पुं०) अग्नि, आग।

हुम् (अव्य०) [हु+डुमि] स्मरण बोधक अव्यय। रोष, अरुचि, भर्त्सना, स्मरण, दाहड़ना, चिल्लाना आदि के रूप में प्रयुक्त होने वाला अव्यय। (जयो०वृ० १/९०)

हुर्छ् (अक०) टेढ़ा होना, बंक होना।

हुल् (अक०) ढांपना, छिपाना।

हुलहुली (स्त्री०) अस्पष्टध्वनि।

हु हु (पुं०) गन्धर्व शब्द।

हूणः (पुं०) असम्भ, एक जाति विशेष।

० सोने का सिक्का।

हूत (भू०क०कृ०) [ह्वे+क्त] आहूत, निमन्त्रित, आमन्त्रित। बुलाया गया।

हूतिः (स्त्री०) आहूति। ० होम।

० निमंत्रण, बुलावा।

० चुनौती।

हूरवः (पुं०) [हू इति रयो यस्य] गीदड़।

हृ (सक०) लेना, पकड़ना, ग्रहण करना। (सुद० ७२)

० हरण करना-हरतीति। (जयो०वृ० १/७)

० अपहरण करना, छीनना। (जयो० २/२८) हरन्त (सुद० ७६) हर्तुम् (जयो० २/१३५)

० रखना, निक्षेप करना।

० चुराना, लूटना। परं कलत्रं ह्रियतेऽन्यतो। (वीरो० ९/१५)

० आकर्षित करना, लुभाना। (जयो०वृ० ३/४६) हर्तुम्-वशीकर्तुम्-आकृष्टकर्तुम्।

० त्याग करना, छोड़ना।

० उत्पन्न करना। (सुद० ३/१)

० प्रहार करना, आघात पहुंचना।

हृज्ज (वि०) त्याग करने वाला। (दयो० २२)

हृणीया (स्त्री०) [हृणी+यक्+अ+टाप्] निन्दा, भर्त्सना।

० लज्जा। ० करुणा।

हृत् (वि०) [हृ+क्विप्, तुक्] ले जाने वाला, अपहरण करने वाला।

० हटाने वाला।

हृतः (पुं०) हृदय-न तूर्यस्थलं एवं हृतः। (सम्य० १३७) ० चित्त (जयो० २७/१८) (जयो० २/६१)

हृतः (भू०क०कृ०) [हृ+क्त] अपहृत, ले जाया गया, ० विभक्त।

हृत्कम्पकर (वि०) चित्त कम्पोत्पादक। (जयो० २७/१८)

हृत् प्रदीपः (पुं०) मुदित दीपक। (जयो० १७/६५)

हृतसतत् (वि०) हृदय की विशेषता। (सुद० १२१)

हृतान्धकार (वि०) अन्धकार हरण करने वाला। (जयो० ५/१०५)

हृद् (नपुं०) [हृदयस्य हृदादेशो वा] ० हृदय-संवेग भावो हृदयं प्रपुष्य। (सम्य० ७५)

० निजनिजान्तरङ्ग (जयो० ४/५०) 'संविद्धि सिद्धप्रिय भी हृदा त्वं। (सम्य० १५)

० चित्त, मन, हृदोऽनुकूल। (जयो० ३/९४) पयोनिधिस्त्वद् हृदि वाप्यवार। (सुद० २/१६)

० छाती, सीना, वक्ष।

० चेत-चित्त। (जयो० ९/४३)

० मानस। (जयो० १५/४९)

हृद्कम्पः (पुं०) धड़कन, हृदयगति।

हृद्गत (वि०) मन में सोचा हुआ।

हृदग्रन्थि (वि०) माया। (जयो० १७/६९)

हृदनुतप्त (वि०) संताप युक्त। हृद् हृदयं चेदनुतप्तं सन्ताप युक्तं। (जयो० ९/४३)

हृदन्त (वि०) अन्तर्हृदय। (जयो० २३/४०)

हृदब्जम् (नपुं०) मानस कमल। 'हृदेव अब्जं तस्मिन् मानसकमले' (जयो० ९/४५)

हृदर्पणम् (नपुं०)प्रतिदान। (जयो० १२/९०)

हृदयम् (नपुं०) [हृ+कयन्] चेतस्, मानस, मन, चित्त। (सुद० ८८, १०८)

० सीना, छाती।

० वक्षस्थल। (जयो० ५/४५)

हृदयकमलं (नपुं०) प्रफुल्लमन। (जयो० १/४९)

हृदयकम्पः (पुं०) ० चित्त धड़कन।

हृदयकम्पनम् (नपुं०) धड़कन, चितप्रकम्पन। (सुद०१३४)

हृदयग्राह्य (वि०) मन के योग्य। (जयो०वृ० ३/३६)

हृदयचोरः (पुं०) दिल चुराना।

हृदयछिद् (वि०) हृदय विदारक, मनस् पीड़ा युक्त।

हृदयज (वि०) हृदय सम्बंधी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हृदयङ्गम (वि०) मर्म स्पर्शी, रोमाञ्चकारी।
० मधुर, आकर्षक, चित्तयोग्य।
० सुखद, रुचिकर।
हृदयपयोधिः (पुं०) विशाल हृदय, गहीर हृदय।
हृदयपीड़ा (स्त्री०) मन की अशान्ति। (वीरो० १४/१४) (जयो० २०/३०)
हृदयभू (स्त्री०) चित्त रूपी भूभाग। (जयो० ६/१२५)
हृदयविध्/हृदयवेधिन् (वि०) हृदय को बींधने वाला।
हृदयविदारक (वि०) चित्त को अशान्त करने वाला। चित्तघातक। (दयो० ६४)
हृदयवृत्तिः (स्त्री०) चित्त की प्रवृत्ति, हृदय का स्वभाव।
हृदयास्थानम् (नपुं०) वक्षःस्थल।
हृदयालङ्कारः (पुं०) हार, कंठाभरण। (जयो०वृ० १/८७)
हृदयालु (वि०) [हृदय+आलुच्] कोमल हृदय वाला, सरस चित्त युक्त।
हृदयेश्वरः (पुं०) प्राणेश्वर। (जयो०वृ० १५/४८)
हृदयोपरूपिणी (स्त्री०) सब लोगों की अच्छी लगने वाली। (समु० २/१३)
हृदानुवृत्तम् (नपुं०) हृदयस्थान। रमां समाराधयितुं प्रवृत्तः प्रसूनतुल्येन हृदानुवृत्तः। (जयो० १९/९१) हृदा चित्तेनानुवृत्तो युक्त आसीदीति।
हृदार्तिः (स्त्री०) हृदय पीड़ा, चित्त की आकुलता।
हृदाशिका (स्त्री०) हृदय की आशा, चित्ताशा। (जयो० १०/७६)
हृदिकः (पुं०) हृदय।
हृदिस्पृर्श (वि०) प्रिय, प्यारा, स्नेही।
० रुचिकर, मनोहर, सुंदर।
हृदीशः (पुं०) [हृदो ईशः] पति। (जयो० १/९३)
हृदीशप्रतिबिम्बं (नपुं०) प्राणनाथ की परछाई-हृदि स्ववक्षः स्थले ईशस्य सम्मुखस्य प्राणनाथस्यैव यत् प्रतिबिम्बम्। (जयो० १७/२८)
हृदीषाङ्गीकरणयोग्य (वि०) हृदय से स्वीकार करने योग्य।
हृदेकदेवः (पुं०) हृदय का एक मात्र स्वामी। (सुद० २/१२)
हृदुदारः (पुं०) हृदय का प्रिय। (जयो० ४/३)
हृदोऽनुकूलः (पुं०) हृदयग्राह्य। (जयो० ३/९४)
हृल्लवः (वि०) मनोरथ। (जयो० ५/१८)
हृष् (अक०) खुश होना, हर्षित होना।
० आनन्दित होना, प्रसन्न होना।
० रोमांचित होना।

हृषद (वि०) पूज्य।
हृष्यञ्जन (वि०) हर्ष युक्त होने वाला। (सुद० ११०)
हृषित (भू०क०कृ०) [हृष्+क्त] खुश, प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित, आह्लादित। रोमाञ्चित, प्रफुल्लित।
हृषीकम् (नपुं०) [हृष्+ईकक्] ज्ञानेन्द्रिय, इन्द्रिय। (सुद० ११८) हृषीकाणि समस्तानि माघन्ति प्रमदाऽऽश्रयात्। (वीरो० ८/९१)
हृषीकसुखं (नपुं०) इन्द्रिय सुख। (जयो० २५/८४)
हृष्ट (भू०क०कृ०) [हृष्+क्त] हर्षयुक्त, हर्षित, श्लाघापरायण। (वीरो० ४/१८)
हृष्टचित्त (वि०) मन से प्रसन्न, आनन्दित।
हृष्टमानस (वि०) प्रसन्नचित्त, आनन्दित।
हृष्टरोमन (वि०) ० पुलकित, रोमाञ्चित।
० प्रफुल्लित, आनंदित।
हृष्टवदन (वि०) प्रसन्नमुख, हर्षयुक्त मुख हंसमुख।
हृष्टसंकल्प (वि०) संतुष्ट, खुशी।
हृष्टिः (वि०) [हृष्+क्तिन्] आनन्द, उल्लास।
० हर्ष, खुशी।
हृस्ट (वि०) सुसज्जित, सुसज्ज। (जयो० १२/१३)
हे (अव्य०) [हा+डे] सम्बोधन वाचक परक अव्यय। हे नाभिजातासि किलाभिजातः। (जयो० १३/१७) ईर्षा, डाह, द्वेष आदि प्रकट करने वाला अव्यय। हे विश्वभूषण! विभाति दिनस्य भर्ता। (जयो० १८/७६)
हे शारदे! शारदवत्तवायः। (जयो० १९/२९)
हेक्का (स्त्री०) हिचकी।
हेठः (पुं०) [हेठ्+घञ्] बाधा, अवरोध, विरोध, रुकावट।
० क्षति, हानि।
हेड् (अक०) तिरस्कार करना, अवज्ञा करना।
० घेरना, वस्त्र लपेटना।
हेतिः (स्त्री०/पुं०) [हृ करणे क्तिन्] शस्त्र, अस्त्र।
० आघात, क्षति।
० प्रकाश, कान्ति, आभा।
० ज्वाला।
हेतुः (पुं०) [हि+तुन्] कारण, निमित्त। (सुद० १०१) (सम्य० ४३)
० उद्देश्य।
० प्रयोजन-कारणभूत। (जयो० १७/५३)
० सहायक-ममास्त्वमुष्मिंस्तरणाय हेतुरदृष्टपारे कविताभरे तु। (सुद० १/२)
० फल-भृङ्गायते तन्मकरन्दहेतोः। (सुद० २/१३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

० साधन, उपकरण।

० तर्क, ० युक्ति। साध्याविनाभाविलिङ्गम्-साध्य के साथ अन्वय-व्यतिरेक का होना।

हेतुक (वि०) [हेतु+कन्] तार्किक, तर्क शक्ति युक्त।

० प्रामाणिक, युक्त, संगत।

हेतुकः (पुं०) कारण, तर्क।

हेतुता/हेतुत्व (वि०) हेतुपना। 'बन्धस्य हेतुत्वमुपैत्यसौ' (सम्य० २७)

हेतुमत् (वि०) [हेतु+मतुप्] सकारण, तर्कयुक्त।

सर्वेभ्यः स्वपदं तहेद्धितविधेर्भूमावहो हेतुमत्। (मुनि० १५)

० कारण और कार्य की विद्यमानता।

हेतुवादः (पुं०) तर्क, वितर्क, शास्त्रार्थ। हेतु का निरूपण। तर्कशास्त्र (वीरो० २/१९) हिनोति गमयति परिच्छिनत्त्यर्थमात्मानं चेति प्रमाणपञ्चकं वा हेतुः स उच्यते कथ्यते अनेनेति हेतुवादः श्रुतज्ञानम्। (जैन०ल० १२/७)

हेतुविचयः (पुं०) तर्क का आश्रय लेना।

हेतुकोत्प्रेक्षा (स्त्री०) हेतु द्वारा विवेचन।

एतत्कीर्तेरग्रे तृणायितं चन्द्ररश्मिभिश्च यतः।

जीवति किलैणशावोऽसावोजस्के तदङ्कगतः।

(जयो० ६/४५)

हेत्वलङ्कारः (पुं०) हेनु नामक अलंकार, जिस अलंकार में किसी अर्थ को उत्पन्न करने वाले कर्ता की योग्यता की युक्ति का प्रकाश किया जाता है।

यत्रोत्पादयतः किञ्चिदर्थं कर्तुः प्रकाश्यते।

तद्योग्यतायुक्तिरसौ हेतुरुक्तो बुधैर्यथा।। (वाग्म० ४/१०४)

व्यञ्जनेष्विव सौन्दर्यमात्रारोपावसान कौ।

विसर्गौ स्तन सन्देशात् स्मरणेदेशितावितः।। (जयो० ३/४३)

हेत्वाभासः (पुं०) हेतु का आभास होना, जो हेतु किसी कार्य का कारण न हो, परन्तु हेतु की तरह प्रतीत हो। अर्थात् जिसमें सव्यभिचार, अनैकान्तिक, विरुद्ध, असिद्ध, सत्प्रतिपक्ष और बाधित भाव हो।

हेमम् (नपुं०) स्वर्ण, सोना। (जयो०वृ० ६/७४)

हेमः (पुं०) काले रंग का घोड़ा, ०हेमचन्द्राचार्या।

हेमन् (नपुं०) [हि+मनिन्] स्वर्ण, सोना।

० जल, बर्फ।

० धतूरा, ० केसर पुष्प।

हेमकंदलः (पुं०) प्रवाल, मूगा।

हेमकट/हेमकार/हेमकर्तृ (वि०) सुनार, स्वर्णकार। (जयो० १५/१३)

हेमकिञ्जल्कम् (नपुं०) नागकेशर पुष्प।

हेमकुम्भः (पुं०) स्वर्णपट।

हेमकूटः (पुं०) सुमेरु, एक पर्वत विशेष।

हेमगन्धिनी (स्त्री०) रेणुका नामक गन्धद्रव्य।

हेमगिरिः (पुं०) सुमेरु।

हेमगौरः (पुं०) अशोक वृक्ष।

हेमघटम् (नपुं०) स्वर्णघट। (जयो० १७/४२) स्वर्ण कलश।

हेमचन्द्रः (पुं०) सर्वविद्या प्रवीण आचार्य।

हेमपुष्प (पुं०) अशोकवृक्ष, लोध्र वृक्ष, चम्पकवृक्ष।

हेमलः (पुं०) सुनार।

हेममालिन् (नपुं०) दिनकर, सूर्य।

हेमयूथिका (स्त्री०) सोमजूही।

हेमरागिणी (स्त्री०) हल्दी।

हेमशंखः (पुं०) विष्णु।

हेमसंजात (वि०) स्वर्णमय, सोने के समान।

हेमसत्त्वं (नपुं०) सोना, स्वर्ण, कंचन।

हेमसहित (वि०) सोने से परिपूर्ण।

हेमसूत्रं (नपुं०) स्वर्ण मेखला।

हेमसूत्रावली (स्त्री०) स्वर्ण मेखला, सोने की करधनी।

हेमस्तम्भः (पुं०) स्वर्ण स्तम्भ।

हेमाङ्ग (वि०) सुनहरा।

हेमाङ्गः (वि०) गरुड़।

० सिंह, ० सुमेरु।

हेमाङ्गदम् (नपुं०) बाजूवन्द।

हेमाण्डकः (पुं०) स्वर्ण कुश। (वीरो० २/३३)

हेमाब्जिनी (नपुं०) स्वर्णारविंद, सोने का कमल। (जयो० १८/९५)

हेमाम्भोरुहम् (नपुं०) सुनहरा कमल।

हेय (वि०) [हा+यत्] छोड़ने योग्य, त्याज्य। स्त्रियास्तु वार्तापि सदैव हेया। (वीरो० १८/२९)

हेयोपादेय (पुं०) छोड़ने एवं ग्रहण करने योग्य।

हेरम् (नपुं०) [हि+रन्] मुकुट विशेष।

हेरम्बः (पुं०) ० गणेश। ० भैंसा।

हेरिकः (पुं०) [हि+रक्-रुट आगमः] भेदिया, गुप्तचर।

हेलनं (नपुं०) [हिल्+ल्युट्] अवज्ञा करना, निरादर करना। तिरस्कार करना, अपमान।

हेला (स्त्री०) तिरस्कार, अपमान, अनादर।

० केलि, क्रीड़ा, प्रेमालिंगन।

० कौतुक। (जयो० ७/७८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेलिः (स्त्री०) सूर्य की स्त्री।
हेवाकः (पुं०) उत्कृष्ट इच्छा, उत्कण्ठा।
हेष् (अक०) हिनहिनाहट, दहाड़ना, रेंगना
हेषः (पुं०) हिनहिनाहट। (जयो० १३/७२)
हेषिन् (पुं०) अश्व, घोड़ा।
हेहे (अव्य०) सम्बोधन वाचक अव्यय।
हैः (अव्य०) सम्बोधनात्मक अव्यय।
हैतुक (वि०) [हेतु+ठक्] कारणमूलक, तर्क सम्बंधी, तर्कपूर्ण।
हैतुकः (पुं०) मीमांसक। ० तर्कवादी।
हैम (वि०) [हिम+अण्] शीतल, ठंडा।
० सुनहरी। स्वर्णमय। (जयो० २२/३) हेम्न इदं हैमं, (जयो० ११/१५)
० हेमन्त ऋतु।
हैमनः (पुं०) शरदऋतु, हेम ऋतु।
हैमन्तिक (पुं०) [हेमन्ते काले भा: ठञ्] ठण्डा। ० सर्दी से उत्पन्न होने वाला।
हैमवत् (वि०) स्वर्ण की तरह। ० बर्फीला।
हैमवत् (पुं०) हैमवत् क्षेत्र, भरत क्षेत्र एवं ऐरावत क्षेत्र के अतिरिक्त हैमवत् क्षेत्र। (त०सू० ३/२९, त०सू०पृ०५८)
हैमवती (स्त्री०) पार्वती। ० गंगा।
० हरीतकी, हरड़े। ० अलसी।
हैयङ्गवीनम् (नपुं०) [हयो गोदोहान् भवं] नवनीत, मक्खन। (जयो०वृ० १/१००, १०/१५)
हैरिकः (पुं०) [हिर+ठक्] चोर, तस्कर।
हो (अव्य०) किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला अव्यय।
त्मन्यात्मा विलगत्य हो
विजयतां सम्यक्त्वमेतत्सदा। (सम्य० १५४)
होड् (अक०) उपेक्षा करना, अनादर करना।
होडः (पुं०) [होड्+अच्] बेड़ा, नाव।
होढाकृत् (वि०) शर्त लगाने वाला। (जयो० २/१२७)
होतु (नपुं०) हवन, होम। (जयो०वृ० १२/५६)
होतृ (वि०) [हू+तृच्] हवन करने वाला, यममान।
होतृ (पुं०) यज्ञकर्ता।
होतृगृहम् (नपुं०) यज्ञशाला। (दयो० २२)
होत्रम् (नपुं०) [हु+ष्टुन्] यज्ञ, हवन में भस्म सामग्री।
होत्रीयः (पुं०) [होत्राय हितं होतुरिदं वा छ] यज्ञकर्ता।
होमः (पुं०) [हु+मन्] यज्ञ, हवन।
होमकुण्डम् (नपुं०) हवन कुण्ड।
होमधान्यम् (नपुं०) तिल, जवादि।
होमधूमः (पुं०) होमाग्नि का धुंआ।
होमभस्मन् (नपुं०) हवन की राख।
होमरवः (पुं०) हवन स्वर, हवनमन्त्र।
ओं सत्यजाताय स्वाहा-इत्यादि (जयो०वृ० १२/७२)
होमवेला (स्त्री०) हवन का समय।
होमशाला (स्त्री०) यज्ञशाला, यज्ञगृह।
होमाग्निः (स्त्री०) होम की आग।
होमाभिधः (पुं०) हवनाक्षर। हवनमन्त्र। (जयो०वृ० १९/५५)
ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असि आ उ सा
अप्रतिचक्रे फट् विचकाय भ्रीं भ्रौं स्वाहा। (जयो०वृ० १९/५५)
होसि (नपुं०) नवनीत, मक्खन। ० जल, ० अग्नि।
होमिन् (पुं०) यज्ञकर्ता, यजमान।
होमीय (वि०) हवन सम्बंधी।
होरा (स्त्री०) [हु+रन्+टाप्] राशि का उदय। ० एक घण्टा।
० चिह्न, रेखा।
होलाका (स्त्री०) होलीमास, फाल्गुनमास।
होलिका (स्त्री०) होली का त्यौहार।
हो हो (अव्य०) सम्बोधनात्मक अव्यय।
होम्यम् (नपुं०) नवनीत, मक्खन, ० घी।
ह्नु (अक०) ले जाना, लूटना।
० छिपाना, ढकना, रोकना।
ह्यस् (अव्य०) बीता हुआ कल।
ह्यस्तन (वि०) बीते हुए कल से सम्बंध रखने वाला।
ह्यस्त्य (वि०) कल से सम्बंधित।
ह्रुत् (वि०) विनष्ट, प्रणष्ट। (जयो० १६/३४)
ह्रदः (पुं०) तालाब, सरोवर।
० छिद्र, विवर, गर्त।
ह्रदिनी (स्त्री०) [ह्रद्+इनि+ङीप्] ० नदी, ० विद्युत।
ह्रद्रोगः (पुं०) कुम्भराशि।
ह्रस् (अक०) ० शब्द करना, ध्वनि करना।
० नाश होना, नष्ट होना। (जयो० ३/८)
ह्रसिमन् (पुं०) [ह्रस्व+इमनिच्] हलकापुन।
० लघुता।
ह्रस्व (वि०) [ह्रस्+वन्] लघु, अल्प, थोड़ा।
ह्रस्वः (पुं०) छोटा, ठिगना, बौना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ह्रस्वगर्भः (पुं०) कुश नामक घास।

ह्रस्वमात्रा (स्त्री०) लघुमात्रा, छोटी मात्रा।

ह्रस्वमूर्ति (स्त्री०) ठिगना, बौना।

ह्राद (अक०) शब्द करना, कोलाहल करना।

ह्रादः (पुं०) [ह्राद्+घञ्] ध्वनि, शोर।

ह्रादिनिका (स्त्री०) विद्युत। (जयो० २४/२८)

ह्रादिनी (स्त्री०) नदी, विद्युत, शल्लकी वृक्ष।

ह्रासः (पुं०) [ह्रस्+घञ्] क्षय, अवनति, पतन, प्रनाश, नाश।
○ शब्द, कोलाहल।
○ घटी, कमी।
○ छोटी संख्या।

ह्रीणीया (स्त्री०) [ह्रिणी+यक्+अ+टाप्] भर्त्सना, निन्दा।
○ शर्म, लज्जा।

ह्री (अक०) लज्जित होना, शर्माना।

ह्री (स्त्री०) [ह्री+क्विप्] लज्जा, शर्माना।
○ संकोच। (मुनि० १) (जयो० १२/११४, १६२)
○ विनयभाव। (वीरो० २/४२)

ह्रीं (पुं०) शिव, मंगल। (जयो० २१/१००)

ह्रींकारक (वि०) [ह्रींकार एव ह्रींकारक] स्वार्थक (जयो० १९/५१)

ह्रीण (वि०) लज्जित, लज्जा युक्त। (जयो० ५/९२)

ह्रीणता (वि०) लज्जापन, लज्जा युक्त, लज्जालुता (जयो० १७/२८)

ह्रीवेरम् (नपुं०) [ह्रियै लज्जायै वैरम्] एक गन्ध द्रव्य विशेष।

ह्रेष् (अक०) अश्व हिनहिनाना, रेंकना, शब्द करना।

ह्रेषा (स्त्री०) हिनाहिनाहट।

ह्लग् (अक०) ढापना।

ह्लत्तिः (स्त्री०) हर्ष, प्रसन्नता, खुशी।

ह्लाद् (अक०) प्रसन्न होना, खुश होना। ○ शब्द करना।

ह्लादः (पुं०) हर्ष, खुशी, आनन्द।

ह्लादनम् (नपुं०) खुशी, प्रसन्नता।

ह्लादिन् (वि०) [ह्लाद् णिनि] खुश होने वाला।

ह्वल् (अक०) जाना। ○ थरथराना। ○ कांपना।

ह्वानम् (नपुं०) [ह्वे ल्युट्] आमंत्रण, क्रन्दन।

ह्वृ (अक०) कुटिल होना। ○ ठगना। ○ धोखा देना।

ह्वे (सक०) बुलाना, पुकारना, आह्वान करना। प्रार्थना करना।

◇◇◇

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारिभाषिक शब्द

अ

अकर्म- अबन्धक स्थिति।

अकषाय-राग द्वेष रहित अवस्था।

अजीवक-१ मूर्तिक २ अमूर्तिक-चेतना रहित।

अजीवक भेद-१ पुद्गल २ धर्म ३ अधर्म ४ आकाश और ५ काल।

अक्ष-०आत्मा ०इन्द्रिय।

अट्ट-संख्या का प्रमाण।

अणु-पुद्गल का सबसे छोटा अंश। इसमें एक वर्ण, एक रस, एक गन्ध और दो स्पर्श होते हैं। ०पुद्गल का अविभागी अंश।

अणुव्रत-हिंसा, असत्य, चौर्य, कुशील और परिग्रह इन पांच पापों का एक देश स्थूल रूप से त्याग करना अणुव्रत है, ये पांच होते हैं।

अतिसार-व्रत का उल्लंघन करना।

अतिदुःषमा-अवसर्पिणी छठा काल। दूसरा नाम दुःषमा दुःषमा भी है।

अधःकरण-सप्तम गुण स्थान की श्रेणी चढ़ने के सम्मुख अवस्था इसमें जीव के परिणामरूप समय और भिन्न समय में समान और असमान दोनों प्रकार के होते हैं।

अधर्म-जो जीव और पुद्गल की स्थिति में सहायक हो।

अनिवृत्तिकरण-नौवां गुणस्थान इसमें समसमयवर्ती जीवों के परिणाम समान और विषम समयवर्ती जीवों के परिणाम असमान ही होते हैं।

अनीक-देवों का एक भेद

अनुकम्पन-सम्यग्दर्शन का एक गुण मोह तथा राग-द्रेष से पीड़ित जीवों को दुःख से छुटाने का दयार्द्र परिणाम होना।

अनुमननत्याग-अन्तरंग परिषद् के सदस्य देव।

अपूर्वकरण-आठवां गुणस्थान इसमें भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम भिन्न और समसमयवर्ती जीवों के परिणाम भिन्न तथा अभिन्न दोनों प्रकार के होते हैं।

अपृथग् वक्रिया-अपने ही शरीर को नाना रूप परिणमाने की शक्ति।

अप्रतिबुद्ध-आत्मा को कर्म-नोकर्म समझने वाला।

अप्रत्याख्यान-देश संयम को घातने वाली कषाय।

अभव्य-जिसे मुक्ति प्राप्त न हो सके ऐसा जीव।

अभिन्नदशपूर्विन्-उत्पाद पूर्व आदि दशपूर्वों के ज्ञाता मुनि।

अमन्नांग-सब प्रकार के बरतन देने वाला एक कल्पवृक्ष।

अमम-संख्या का एक प्रमाण।

अमृतश्राविन्-अमृतश्राविणी ऋद्धि के धारक मुनि।

अम्बरचारण-चारण से ऋद्धि का एक भेद

अर्हत्-अरहन्त चार घातियां कर्मों को नष्ट करने वाले जिनेन्द्र अर्हत्। अरहन्त कहलाते हैं।

अलोक-लोक के बाहर का अनन्त आकाश जिसमें सिर्फ आकाश ही आकाश रहता है।

अवधि-अवधिज्ञानावरण के क्षयोपशम से प्रकट होने वाला देश प्रत्यक्ष ज्ञान, मर्यादित/सीमित ज्ञान।

अवसर्पिणी-जिसमें लोगों के बल, विद्या, बुद्धि आदि का ह्रास होता है। इसमें दश कोड़ा कोड़ी सागर के सुषमा आदि छह काल हैं।

अष्टुण-अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ गुण हैं।

अष्टप्रातिहार्य-समदसरण में तीर्थ कर केवली के प्रकट होने वाले आठ प्रातिहार्य-१. अशोक वृक्ष, २. सिंहासन, ३. छत्रत्रय, ४. भामण्डल, ५. दिव्य ध्वनि, ६. पुष्पवृष्टि, ७. चौंसठ चमर, ८. दुन्दुभि बाजों का बजना।

अष्टांग-सम्यग्दर्शन के निम्नलिखित आठ अंग हैं-१. निःशंकित, २. निःकांक्षित, ३. निर्विचिकित्सित, ४. अमूढ दृष्टि, ५. उपगूहन अथवा उपबृंहण, ६. स्थितिकरण, ७. वात्सल्य, ८. प्रभावना।

अस्तिकाय-बहुप्रदेशी द्रव्य जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश ये पांच अस्तिकाय हैं।

अहमिन्द्र-सोलह स्वर्ग के आगे के देव अहमिन्द्र कहलाते हैं।

अहःस्त्रीसंगवर्जन-दिवामैथुनत्याग नामक छठीं प्रतिमा। संग रहित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ

आकर–जहां सोने-चांदी की खानें होती हैं।

आकार–तद्-तद् पदार्थ के भेद से पदार्थ को ग्रहण करना। ०रूप प्राप्त करना।

आकाश–जो स्वमत का निरूपण करने वाली कथा, स्वपक्ष की कथा।

आगम–वीतराग सर्वज्ञदेव की वाणी, सच्चा शास्त्र।

आचाम्लवर्धन–एक तप।

आत्मरक्ष–इन्द्र के अंगरक्षक के समान देव।

आत्मवाद-*आत्मचिन्तन का कथन।*

आत्मा-ज्ञान-दर्शन स्वरूप जीव।

आध्यात्मिक चेतना-आत्मा और ज्ञान का तादात्म्यभाव।

आभियोगिक-पराधीनता।

आभिनिवोधिक-अभिमुख और नियत पदार्थ को इन्द्रिया और मन से जानना।

आद्यशुक्लध्यान–पृथक्त्ववितर्क वीचार शुक्ल ध्यान।

आनुपूर्वो–वर्णनीय विषय का क्रम, इसके ३ भेद हैं-पूर्वानुपूर्वी, अन्तानुपूर्वी, यत्रतत्रानुपूर्वी।

आभियोग्य–देवों का एक भेद।

आमर्ष–एक ऋद्धि।

आरम्भ परिच्युति–आरम्भ त्याग नामक आठवीं प्रतिमा, इसमें व्यापार मात्र का त्याग हो जाता है।

आराधना–समाधि, अर्चना, पूजा, भक्ति।

आर्त्त–ध्यान का एक भेद। इसके चार भेद हैं–१. इष्ट वियोगज, २. अनिष्टसंयोगज, ३. वेदनाजन्य और ४ निदान। ०पीड़ा, कष्ट।

आस्तिक्य–सम्यग् दर्शन का एक गुण, आत्मा तथा परलोक आदि का श्रद्धान होना।

आहार-शरीर और पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों का ग्रहण करना।

इ

इन्द्र–देवों का स्वामी। ०इन्द्रिय विशेष।

इन्द्रक–श्रेणीबद्ध विमानों के बीच का विमान।

इन्द्रप्रस्थ–प्राचीन नगर जो दिल्ली नाम को प्राप्त है।

इन्द्रिय-आत्मा की पहचान।

उ

उत्कृष्टोपारुक स्थान–ग्यारहवीं प्रतिमा का धारक क्षुल्लक

उत्सर्पिणी–जिसमें लोगों के बल विद्या, बुद्धि आदि की वृद्धि होती है, यह १० कोड़ा-कोड़ा सागर का होता है इसके दु:षमा-दु:षमा आदि छह भेद हैं।

उत्कर्षण-कर्म प्रकृति की स्थिति और अनुराग मे वृद्धि।

उपक्रम–शास्त्र के नाम आदि का वर्णन, उपोद्घात-प्रस्तावना; इसके पांच भेद हैं–आनुपूर्वी, नाम, प्रमाण. अभिध ये, अर्थाधिकार

उपपादशय्या-देवों के जन्म लेने का स्थान।

उपयोग–१. ज्ञानोपयोग, २. दर्शनोपयोग। ०योग या अस्तित्व।

उपशम श्रेणी–चारित्र मोहनीय। कर्म का उपशम करने वाले आठवें से लेकर ११वें गुण स्थानवर्ती जीवों के परिणाम।

उपशान्त कषायता–ग्यारहवां गुणस्थान।

उदय-कर्म-विपाक का प्रकट होना।

उदीरणा-स्थिति और अनुभाग को न्यून करके फल देने के लिए उन्मुख करना।

ऋ

ऋजुमति–ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान नामक ऋद्धि के धारक इस ऋद्धि का धारक सरल मन वचन काय से चिन्तित दूसरे के मन में स्थित रूपी पदार्थों को जानता है।

ऋजुसूत्र-वर्तमान समय मात्र को विषय करना।

क

कथा-कथन-सत्कथा, धर्मकथा और विकथा।

कनकावली–एक व्रत का नाम।

कमल–संख्या का एक प्रमाण।

करण–सम्यग्दर्शन प्राप्त कराने वाले भाव। इसके ३ भेद हैं–१ अध:करण, २. अपूर्व करण, ३. अनिवृत्तिकरण। आत्मा का विशुद्ध परिणाम।

करणानुयोग–शास्त्रों का एक भेद जिसमें तीन लोक का वर्णन होता है।

कल्प–उत्सर्पिणी और अत्रसर्पिणी को मिलाकर बीस कोड़ा-कोड़ी सागर का एक कल्प काल होता है।

कल्पपादप–कल्पवृक्ष, जिससे मनचाही वस्तुएं मिलती हैं।

कामदेव–कामदेव पद का धारक (कुल २४ कामदेव होते हैं)

कायगुप्ति–काय=शरीर को वश में करना।

कायबलिन्–कायबल ऋद्धि के धारक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काल—वर्तना लक्षण से युक्त एक द्रव्य। एक प्रदेशी। घड़ी, घण्टा, दिन, सप्ताह आदि।

किल्विषिक—देवों का एक भेद।

कुमुद—संख्या का एक भेद।

केवली—ज्ञानावरण कर्म के क्षय से प्रकट होने वाला पूर्णज्ञान जिन्हें प्राप्त हो चुका है। उन्हें अहरन्तसर्वज्ञ अथवा जिनेन्द्र भी कहते हैं।

केशव—नारायण, ये नौ होते हैं।

कैवल्य—केवलज्ञान, संसार के समस्त पदार्थों को एक साथ जानने वाला ज्ञान।

कोष्ठबुद्धि—कोष्ठबुद्धि ऋद्धि के धारक।

क्ष

क्षीरस्राविन्—क्षीरस्राविणी ऋद्धि के धारक।

क्षेत्र—लोक।

क्ष्वेल—एक ऋद्धि।

ख

खर्वट—जो सिर्फ पर्वत से घिरा हो ऐसा ग्राम।

खेट—जो नदी और पर्वत से घिरा हो ऐसा ग्राम।

ग

गणधर—तीर्थकरों के समवसरण में रहने वाले विशिष्ट मुनि। ये चार ज्ञान के धारक होते हैं।

गुणव्रत—जो अणुव्रतों का उपकार करें। ये तीन हैं—दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदण्डव्रत, कोई-कोई आचार्य भोगोपभोग। परिमाण को गुणव्रत और देशव्रत को शिक्षा व्रत में शामिल करते हैं।

गुणस्थान—मोह और योग के निमित्त से उत्पन्न आत्मा के भावों को गुणस्थान कहते हैं, वे १४ हैं—१. मिथ्यादृष्टि, २. सासादन, ३. मिश्र, ४. अविरत सम्यग्दृष्टि, ५. देशविरत, ६. प्रमत्तसंयत, ७. अप्रमत्तसंयत, ८. अपूर्वकरण, ९. अनिवृत्तिकरण, १०. सूक्ष्मसाम्पराय, ११. उपशान्त मोह, १२. क्षीणमोह, १३. सयोग केवली, १४. अयोगकेवली।

गृहांग—वह बस्ती जो बाड़ से घिरी हुई हो और जिसमें अधिक तर शूद्र और किसान लोग रहते हों। बगीचा तथा तालाब हो।

घ

घातिकर्म—ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोह और अन्तराय ये चार कर्म घातिया कहलाते हैं।

घोष—जहां अहीर रहते हैं।

च

चक्रवर्ती—चक्ररत्नका स्वामी, राजाधिराज। ये १२ होते हैं तथा भरत ऐरावत और विदेह क्षेत्र के छह खण्डों के स्वामी होते हैं।

चतुर्थव्रतभावना—१. स्त्री कथा-त्याग, २. स्त्र्यालोक त्याग, ३. स्त्रीसंसर्ग त्याग, ४. प्राग्रतस्मरण त्याग, ५. वृष्येष्टरस-गरिष्ठ-उत्तेजक आहार का त्याग।

चतुर्दश महाविद्या—उत्पाद पूर्व आदि चौदह पूर्व।

चरणानुयोग—शास्त्रों का एक भेद, जिसमें गृहस्थ मुनियों के चारित्र का वर्णन रहता है।

चारण—आकाश में चलने वाले ऋद्धिधारी मुनि।

चारित्र के पांच भेद— १. ज्ञानाचार, २. दर्शनाचार, ३. चारित्राचार, ४. तप आचार, ५. वीर्याचार। यह पांच प्रकार का आचार भी कहलाता है। चारित्र के पांच भेद इस प्रकार भी हैं १. सामायिक, २. छेदोपस्थापना, ३. परिहारविशुद्धि, ४. सूक्ष्म साम्पराय, ५. यथाख्यात चारित्र भावना-ईर्यादि समितियों में यत्न करना, मनोगुप्ति आदि गुप्तियों का पालन और परिषह सहन करना ये चारित्र भावनाएं हैं।

छ

छ बाह्यतप—१. अनशन, २. अवमौदर्य, ३. वृत्तिपरिसंख्यान, ४. रस परित्याग, ५. विविक्त शय्यासन, ६. काय क्लेश।

छेदोपस्थापना—चारित्र का एक भेद।

छह प्रकार का अन्तरंग नय—१. प्रायश्चित्त, २. विनय, ३. वैय्यावृत्य, ४. स्वाध्याय, ५. व्युत्सर्ग, ६.ध्यान।

ज

जङ्घाचारण—चारण ऋद्धि का एक भेद।

जलचारण—चारण ऋद्धि का एक भेद।

जल्ल—एक ऋद्धि।

जिनकल्प—मुनि का एकाकी विहार करना।

जिनगुणर्द्धि—एक नय।

जिनेन्द्रगुणसंपत्ति—एक व्रत का नाम विधि छठे पर्व के १४३-१४४ श्लोक में है।

जीव—चेतना लक्षण से युक्त। ०ज्ञान-दर्शन उपयोग युक्त।

जीव के नामान्तर—जीव, प्राणी, जन्तु, क्षेत्रज्ञ, पुरुष, पुमान्, अन्तरात्मा, ज्ञानी, यज्ञ, सत्त्व, प्रज्ञ। ०आत्मा, ज्ञ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीव के पांच भाव–१. औपशमिक, २. क्षायिक, ३. क्षायोपशमिक, ४. औदयिक, ५. पारिणामिक।

ज्योतिरङ्ग–प्रकाश को देने वाला एक कल्पवृक्ष।

ज्ञ

ज्ञान–पदार्थों को साकार-सविकल्पक जानना।

ज्ञानोपयोग के आठ भेद–१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मन:पर्ययज्ञान, ५. केवलज्ञान, ६. कुमतिज्ञान, ७. कुश्रुत ज्ञान, ८. कुअवधि ज्ञान।

त

तत्त्व–जीवादि पदार्थों का वास्तविक स्वरूप–१. जीव, २. अजीव। ०पदार्थ चिन्तन।

तत्त्व भेद–१. मुक्त जीव, २. संसारी जीव, ३. अजीव।

तत्त्वार्थ–जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये छह तत्त्वार्थ हैं। इन्हीं को छह द्रव्य कहते हैं। ०जीवादि सात तत्त्व।

तन्तुचारण–चारणऋद्धि का एक भेद।

तीर्थकृत्–धर्म के प्रवर्तक तीर्थंकर हैं, भरत और ऐरावत क्षेत्र में इनकी संख्या २४-२४ होती है, विदेह क्षेत्र में २० होते हैं।

तुटिकाशब्द–संख्या का एक प्रमाण।

तूर्याग–बाजों को देने वाला एक कल्पवृक्ष।

तृतीय व्रत की भावना–

१. मिताहार ग्रहण, २. उचिताहार ग्रहण, ३. अभ्यनुज्ञात ग्रहण, ४. विधि के विरुद्ध आहार ग्रहण नहीं करना, ५. प्राप्त आहार पान में सन्तोष रखना।

त्र

त्रायस्त्रिंश–देवों का एक भेद।

त्रिबोध–तीन ज्ञान, १. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान और ३ अवधि ज्ञान। ये तीन ज्ञान तीर्थ करके जन्म से ही होते हैं।

त्रिमूढ़ता–देवमूढ़ता, गुरुमूढ़ता, लोकमूढ़ता।

त्रिवर्ग–धर्म, अर्थ, काम।

त्रिषष्टिपुरुष–२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण, ९ बलभद्र ये त्रिषष्टि पुरुष ६३ शलाका पुरुष कहलाते हैं।

त्रिविध–तीन प्रकार का।

त्रैकाल्य–भूत भविष्यत्, वर्तमान काल।

द

दण्ड–चार हाथ का एक दण्ड होता है।

दर्शन–पदार्थों को अनाकार-निर्विकल्प जानना।

दर्शनमोह–मोहनीयकर्म का एक भेद जो सम्यग्दर्शन गुण को घातता है।

दर्शनोपयोग १. चक्षुदर्शन, २. अचक्षुदर्शन ३. अवधिदर्शन, ४. केवलदर्शन।

दीपांग–दीपकों को देने वाला एक कल्पवृक्ष।

देशावधि–अवधिकज्ञान का एक भेद।

दु:षमा–अवसर्पिणी पांचवां काल।

द्वितीयव्रत भावना–१. क्रोध त्याग, २. लोभत्याग, ३. भयत्याग, ४. हास्त्याग और ५ सूत्रानुगामी–शास्त्र के अनुसार वचन बोलना ये पांच सत्य व्रत की भावना है।

द्रव्यलेश्या–शरीर एक रूप रंग। इसके ६ भेद हैं–१. कृष्ण, २. नील, ३. कापोत, ४. पीत, ५. पद्म, ६. शुक्ल।

द्रव्यानुयोग–शास्त्रों का भेद, जिनमें द्रव्यों के स्वरूप का वर्णन रहता है।

द्रोणमुख–जो नदी के किनारे बसा हो ऐसा ग्राम।

ध

धनुष–चार हाथ का एक धनुष होता है।

धर्म–जो जीव और पुद्गल की गति में सहायक हो, ०धर्म द्रव्य। धर्म वस्तु स्वभाव।

धर्मचक्र–तीर्थकरके केवलज्ञान हो चुकने पर प्रकट होने वाला देवोपनीत उपकरण इसमें एक हजार अर होते हैं और वह सूर्य के समान देदीप्यमान रहता है, विहार के समय तीर्थ करके आगे-आगे चलता है।

धर्म्यध्यान–ध्यान का एक भेद–१. आज्ञाविचय, २. अपायविचय, ३. विपाकविचय, ४. संस्थान विचय।

न

नय–जो वस्तु के एक धर्म (नित्यत्व-अनित्यव आदि) को विवक्षावश क्रम से ग्रहण करे, वह ज्ञान। यह द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक, निश्चय, व्यवहार नय आदि के भेद से अनेक प्रकार का होता है।

नयुत–संख्या का एक भेद।

नयुतांग–संख्या का एक भेद।

नलिन–संख्या का एक प्रमाण।

नवकेवल लब्धियाँ–१. क्षायिक ज्ञान, २. क्षायिक दर्शन, ३. क्षायिक सम्यक्त्व, ४ क्षायिक चरित्र ५. क्षायिक दान, ६. क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, ७०. क्षायिक उपयोग, ८. क्षायिक वीर्य।

नवपदार्थ–जीव, अजीव, आस्त्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य और पाप ये नौ पदार्थ है।

निक्षेप–नय और प्रमाण के अनुसार प्रचलित लोक व्यवहार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निगोत (निगोद)– साधारण वनस्पति काय, जिसके आश्रित अनन्त जीव रहते है। इसका दूसरा नाम निगोद प्रसिद्ध है। इसी प्रकार का एक निकोत शब्द भी आता है जो कि सम्मूर्च्छुन जीवों का वाचक है।

निर्यापक–सल्लेखना- समाधि की विधि कराने वाला–निर्देशक

निर्वेद–संसार -शरीर और भोगों मे विरक्तता।

निर्वेदिनी–वैराग्यवर्धक कथा।

नैःषङ्गक व्रतभावना–बाह्याभ्यन्तर भेद से युक्त पंचेद्रिय सम्बन्धी सचित अचित विषयों में अनासक्ति।

प

पञ्चास्तिकाय–१. जीव, २. पुद्गल, ३. धर्म, ४. अधर्म, ५. आकाश,

पत्तन–जो समुद्र के पास बसा हो तथा जिसमें नावों से उतरना-चढ़ना होता है।

पदानुसारिन्–पदानुसारी ऋद्धि के धारक।

पदार्थ–जीव, अजीव, आस्त्रव, बन्ध, संवर, निजरा, मोक्ष, पुष्य, पाप ये नौ पदार्थ कहलाते हैं।

पद्म–संख्या का एक भेद।

परग्राम–जिसमें पाँच सौ घर हों तथा सम्पन्न किसान हों इसकी सीमा २. काश की होती है।

परमावधि–अवधिज्ञान का भेद।

परमेष्ठी–अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये ५ परमेष्ठी कहलाते हैं। जो परमपद में स्थित होते हैं।

पर्याप्त–जिनके शरीर पर्याप्ति पुर्ण हो चुके है।

पर्व–संख्या एक भेद।

परिग्रहपरिच्युति–परिग्रह त्याग नामक नौवीं प्रतिमा, इसमें आवश्यक वस्त्र तथा निर्वाहयोग्य बरतनों के सिवाय सब परिग्रहक त्याग हो जाता है।

पल्य–असंख्यात वर्षों का एक पल्य होता है।

पारिषद– देवों का एक भेद।

पुद्गल–वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से सहित द्रव्य जो पुरण, गलन स्वभाव आदि रूप होता है।

पुद्गलके छद भेद–१. सूक्ष्म सूक्ष्म, २. सूक्ष्म, ३. सूक्ष्मस्थूल, ४. स्थूल सूक्ष्म, ५. स्थूल, ६. स्थूल-स्थूल।

पुर–जो परिखा, गोपुर, कोट तथा अट्टलिका आदि से सुशोभित हो, बाग-बगीचे और जलाशय से सहित होता पुर है।

पुष्पचारण–चारणऋद्धिका एक भेद।

पूर्वकोटी–एक करोड़ पूर्व चौरासी लाख वर्ष का एक पूर्वांग होता है और चौरासी लाख पूर्वांग का एक पूर्व होता है। ऐसे एक करोड़ पूर्व।

पूर्वरंग–नाटक का प्रारम्भिक रूप।

पृथकत्व–तीन से ऊपर और नौ से नीच के संख्या।

पृथक्त्वध्यान (पृथक्त्ववितर्क)–शुक्ल ध्यान का प्रथम पाया।

प्रकीर्णक–फुटकर बसे हुए विमान।

प्रत्यय–सम्यग्दर्शन का पर्यायन्तर नाम।

प्रत्येक बुद्ध–वैराग्य का कारण देख स्वयं वैरागय धारण करने वाले मुनि।

प्रथम व्रत भावन–१. मनोगुप्ति, २. वनचगुप्ति, ३. कायगुप्ति, ४. ईर्या समिति ये पाँच अहिंसाव्रत की भावनाएँ हैं।

प्रथमानुयोग–शास्त्रों का एक भेद जिसमें सत्पुरूषों के कथानक लिखे जाते हैं भिषष्टि शलाका पुरूष चरित्र कथा का योग।

प्रमाण–जो वस्तु के समस्त धर्मों (नित्यत्व-अनित्यत्व आदि) को एक साथ ग्रहण करे वह ज्ञान सर्वग्राही प्रमाण होता है।

प्रशम–सम्यर्ग्दशन का एक गुण, कषाय के असंख्यात लोक प्रमाण स्थानों में मन का स्वभाव से शिथिल होना।

प्रायोपणापगम (प्रायोपगम)–संन्यास।

प्रायोपगमन––संन्यास-सल्लेखना

प्रोषधव्रत–प्रोषधोपवास नामक चौथी प्रतिमा। इसमें प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशी को उपवास करना पड़ता है।

फ

फलचारण–चारण ऋद्धिका एक भेद। इस ऋद्धि के धारी वृक्षों में लगे फलों पर यपैर रखकर चलें फिर भी फल नहीं टूटते हैं।

ब

बल–बलभद्र, नारायण आदि जब होते हैं।

बीजबुद्धि–बीजबुद्धि ऋद्धि के धारक।

ब्रह्मचर्य–यह सातवीं प्रतिमा है, इसमें स्त्री मात्र का त्याग कर पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण करना पड़ता है। ब्रह्म/आत्म में रत होना।

भ

भव्य–जिसे सिद्धि-मुक्ति प्राप्त हो सके ऐसा जीव। (भ)

भावना–भवनवासी देव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावलेश्या–कपाय के उदसये अनुरंजित योगों की प्रवृत्ति।

भुक्ति–भोग का क्षेत्र।

भोजनांग–सब प्रकार का भोजन देने वाला एक कल्पवृक्ष।

म

मढम्ब–जो पाँच सौ गाँवों से घिरा हो ऐसा नगर

मघांग–एक कल्पवृक्ष, इससे अनेक रसों की प्राप्ति होती है।

मधुस्त्राविन्–मधुस्त्राविणी ऋद्धि के धारक।

मनोगुसि–मनको वश में करना।

मनोबलिन्–मनोबल ऋद्धि के धारक।

मातृकापद–१. ईर्या, २. भाषा, ३. एषणा, ४. आदान निक्षेपण और, ५. प्रतिष्ठापन ये पाँच समितियाँ तथा १. मनोगुप्ति, २. वचनगुप्ति और ३. कायगुप्ति ये तीन गुप्तियाँ ये आठ मातृकापद अथवा प्रवचनमातृ का कहलाती है। मात्राष्टक भी यही हैं।

मात्राष्टक–ईर्या, भाषा एषणा आदान निक्षेपण और प्रतिष्ठान ये पाँच समितियाँ तथा मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति ये ३ गुप्तियाँ।

मार्गग्राएँ–१. गति, २. इन्द्रिय, ३. काम, ४. योग, ५. वेद, ६. कषाय, ७. ज्ञान, ८. लेश्या, ९. दर्शन, १०. लेश्या, ११. भव्यत्व, १२. सम्यक्त्व, १३. संज्ञित्व और, आहारक।

मुक्तावली–एक तप का नाम।

मोक्ष–आत्म का कार्मों से सर्वथा सम्बन्ध छुट जाना।

र

रज्जु–असंख्यात योजन की एक रज्जू-राजू होती है।

रत्नावली–सम्यदर्शन, सम्यगज्ञान, सम्यक्चारित्र।

रूचि–सम्यग्यर्शन पर्यान्तर।

रौद्रध्यान–ध्यान का का एक भेद। इसके चार भेद है- १. हिंसानन्द, २. मृषानन्द, ३. स्तेयानन्द, ४. विषयरंक्षणानन्द।

ल

लोक–जहाँ तक जीव, पुदगल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये छहो द्रव्य पाये जाते हैं उस १४ राजु ऊँचे और ३४३ राजु धन फल वाले आकाश को लोक कहते हैं लोक्यते लोक:। यह द्रव्य समूह का नाम।

लोकपाल- देवों के एक प्रकार, ये देव कोतवाल समान नगर-के रक्षक होते हैं।

व

वचोबलिन्–वचन बल ऋद्धि के धारक।

वन (चतुर्विध)–१. भद्राशालबन, २. नन्दवान, ३. सौमनसवन, ४. पाण्डुकवन।

वन्य–व्यन्तर देव, इनके किन्नर, किंपुरूष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच ये आठ भेद होते हैं।

वाग्गुसि–वचन को वश में करना।

वाग्विप्रुट्–एक ऋद्धि।

विकृष्टग्राम–जिसमें सौ घर हो ऐसा ग्राम। इसकी सीमा १ कोश की होती है।

विक्रियर्द्धि–एक ऋद्धि विशेष इसके आठ भेद है-अणिमा, महिमा, गारिमा, लधिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, और वशित्व।

विक्षेपिणी–परमतका निराकरण करने वाली कथा।

विपुलमति–विपुलमतिमन: पर्यय-ज्ञान ऋद्धि के धारक।

विभंग–मिथ्या अवधिज्ञान, विभंग ज्ञान।

विभूषणांग–आभूषण देने वाला कल्पवृक्ष।

वैराग्यस्थैर्यभावना–विषयोंमें अनासक्ति, कायके स्वरूपका बार-बार चिन्तन करना और जागृत स्वभावका विचार करना। ये वेराग्यस्थैर्य भावनाएँ

भावना–१. धृतिमत्ता-धैर्य धारण करना।

२. क्षमावत्ता-क्षमा धारण करना।

३. ध्यानैकतानता-ध्यान में लीन रहना।

४. परीषहों के आने पर कार्य से च्युत नहीं होना।

व्रतोद्योत–दूसरी व्रत प्रतिमा जिसमें ५. अणुव्रत ३. गुण-व्रत और ४. शिक्षाव्रत ये १२. व्रत धारण करने पड़ते हैं

श

शिक्षाव्रत–जिनसे मुनिव्रत धारण करने की शिक्षा मिले। ये चार हैं- सामायिक, प्राषधो-पवास, अतिथि संविभाग और संन्यास-सल्लेखना। कोई-कोई आचार्य सल्लेखना का पृथक् निरूपण कर उसके स्थान पर अतिथिसंविभाग व्रत अथवा वैयावृत्यका वर्णन करते हैं।

शुक्लध्यान–ध्यान का एक भेद इसके चार भेद होते हैं–१. पृथक्त्व, वितर्क विचार, २. एकत्व वितर्क, ३. सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति और ४ व्युपरतक्रिया निवर्ति।

श्र

श्रद्धा–सम्यग्दर्शन का पर्यायान्तर नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रमण संघ के चार भेद—१. ऋषि, २. मुनि, ३. यति, ४ अनगार। श्रुत्-सूत्र, शास्त्र, सिद्धान्त, प्रवचन आगम है।

श्रुतकेवली—पूर्ण श्रुतज्ञान के धारक मुनि।

श्रुतज्ञान—एक ज्ञान का नाम, गतिपूर्वक होने वाला ज्ञान।

श्रुतज्ञानविधि—एक तप।

श्रेणीचारण—चारण ऋद्धि का एक भेद।

श्रेणीबद्ध—श्रेणी के अनुसार बसे हुए विमान।

ष

षड्द्रव्य—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये छह द्रव्य हैं।

स

सचित्तसेवाविरति—सचित्त त्याग नामक पांचवीं प्रतिमा। इसमें सचित्त वनस्पति तथा कच्चे पानी का त्याग होता है।

संख्याद्यनुयोग—१. सत्, २. संख्या, ३. क्षेत्र, ४. स्पर्शन, ४. काल, ६. अन्तर, ७. भाव, और ८. अल्प बहुत्व।

सदर्शन—दर्शन प्रतिमा श्रावक की पहली प्रतिमा जिसमें आठ मूल गुणों के साथ सम्यग्दर्शन धारण करना पड़ता है।

सप्तांग—कथा मुख के निम्नलिखित सात अंग हैं—१. द्रव्य, २. क्षेत्र, ३. तीर्थ, ४. काल, ५. भाव, ६. महाफल और प्रकृत।

सप्ताम्बुधि—सात सागर।

समता—सामायिक नामक तीसरी प्रतिमा, इसमें दिन में ३ बार कम से कम दो-दो घड़ी पर्यन्त सामायिक करना पड़ता है।

समाहित—समाधि मरण से युक्त पुरुष।

सम्यक्चारित्र—मोक्षाभिलाषी एवं संसार से निःस्पृह मुनि की माध्यस्थ वृत्ति को सम्यक् चारित्र कहते हैं।

सम्यक्त्वभावना—संवेग, प्रशम, स्थैर्य, असंमूढता, अस्मयगर्व नहीं करना, आस्तिक्य और अनुकम्पा ये सम्यक्त्व भावनाए हैं।

सम्यग्ज्ञान—जीवादि पदार्थों की यथार्थत को प्रकाशित करने वाला ज्ञान।

सम्यग्दर्शन—सच्चे देव-शास्त्र गुरु का श्रद्धान् अथवा जीवादि सात तत्त्वों का श्रद्धान।

सर्पिः स्राविन्—घृतस्राविणी ऋद्धि के धारक।

सर्वतोभद्र—एक व्रत का नाम।

सर्वावधि—अवधि ज्ञान का एक भेद।

सर्वौषधि—एक ऋद्धि।

सल्लेखना—समाधिमरण। सम्यक् विधि का अभिलेखन। ०समभाव पूर्वक मरण।

सामानिक—देवों का एक भेद जो कि इन्द्र के माता-पिता आदि के तुल्य होता है।

सिद्ध—अष्ट कर्म से रहित त्रिलोक के अग्र भाग पर निवास करने वाले जीव।

सिद्ध के आठ गुण—१. सम्यक्त्व, २. दर्शन, ३. ज्ञान, ४. वीर्य, ५. सौक्ष्म्य, ६. अवगाहन, ७. अव्याबाध, ८. अगुरुलघुता।

सुदर्शन—एक तप। ०सुष्ठु दर्शनं सुदर्शनम्।

सुषमा—अवसर्पिणी का दूसरा काल।

सुषमासुषमा—अवसर्पिणी का पहला काल।

सूक्ष्म—कार्मणस्कन्ध।

सूक्ष्म—अणु स्कन्ध के भेदों की अपेक्षा द्व्यणुक।

सूक्ष्मराग—दसवां गुणस्थान।

सूक्ष्मसूक्ष्म—अणु स्कन्ध के भेदों अपेक्षा द्व्यणुक।

सूक्ष्मस्थूल—जो आंखों से न दिखे पर अन्य इन्द्रियों से ग्रहण में आये जैसे शब्द स्पर्श, रस, गन्ध।

संकल्प—विषयों में तृष्णा बढ़ाने वाली मन की वृत्ति को संकल्प कहते हैं। इसी का दूसरा नाम दुष्प्रणिधान भी है।

संग्रह—दस गांवों के बीच का बड़ा गांव। ०संग्रह नय विशेष।

संभिन्नश्रोतृ—संभिन्नश्रोतृ ऋद्धि के धारक।

संवाह—जहां मस्तक पर्यन्त ऊंचे-ऊंच धान्य के ढेर लगे हों ऐसा ग्राम।

संवेग—सम्यग्दर्शन का एक गुण-धर्म और धर्म फल में उत्साह युक्त मन का होना अथवा चतुर्गतिके दुःखों से भयभीत रहना।

संवेदिनी—धर्म का फल वर्णन करने वाली कथा।

संसारी जीव के २ भेद-१. भव्य, २. अभव्य।

सिंहनिष्क्रीडित—एक व्रत का नाम।

स्कन्ध—द्व्यणुक से लेकर लोकरूप महास्कन्ध तक का पुद्गल प्रचल स्कन्ध कहलाता है।

स्थविर कल्प—मुनिव्रत का पालन करते हुए साथ-साथ विहार करना स्थविर कल्प हैं

स्थूल—जो अलग करने पर अलग हो जाये और मिलने पर मिल जाये जैसे तेल पानी आदि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थूल-स्थूल–जो अलग करने पर अलग हो जाये और मिलाने पर न मिले जैसे पत्थर आदि।

स्थूल-सूक्ष्म–जो आंखों से दिखे पर पकड़ने में न आये जैसे चांदनी आतप आदि।

स्पर्श–सम्यग्दर्शन का पर्यायान्तर नाम।

स्वयंबुद्ध–बाह्य कारणों के बिना स्वयं विरक्त होने वाले मुनि।

स्वोद्दिष्टपरिवर्जन–उद्दिष्टत्याग नामक ग्यारहवीं प्रतिमा। इसमें अपने उद्देश्य से बनाये हुए आहार का भी त्याग हो जाता है।

स्त्रगङ्ग–सब प्रकार की मालाएं देने वाला कल्पवृक्ष।

❖❖❖

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भौगोलिक शब्द

अ

अक्षोम्य–एक नगर।
अजयमेरु-अजमेर राजस्थान का एक नगर।
अचलपुर-नगर विशेष।
अग्निज्वाल–एक नगर।
अङ्ग–भागलपुर का पार्श्वती प्रदेश।
अच्युत–सोलहवां स्वर्ग।
अंजनशैल–नन्दीश्वर द्वीपके अंजन गिरि।
अंजना–स्रोथी पृथिवी, नरक भूमि।
अधोग्रैवेयक–सोलह स्वर्गों के ऊपर नौ ग्रैवेयक विमान हैं। नीचे के तीन विमान अधोग्रैवेयक कहलाते हैं।
अनुदिश–अच्युत कल्प का अनुदिश नामक विमान।
अपराजित नगर–एक नगर।
अमरावती–इन्द्र की नगरी।
अम्बर तिलक–विदेह का एक पर्वत।
अम्बर तिलक– एक नगर।
अयोध्या--धात की खण्ड के पूर्व भागस्थ पश्चिम विदेह क्षेत्र के गन्धिल देश की एक नगरी।
अयोध्या–उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध नगरी।
अर्जुनो–एक नगरी।
अरजस्का–एक नगर।
अरिंजय–एक नगर।
अरिष्टपुर–पूर्व विदेह के महाकच्छ देश का एक नगर।
अलका–विजयार्ध पर्वत की उत्तर श्रेणी पर स्थित एक नगरी।
अवन्ती–एक देश। उज्जैन का पार्श्ववर्ती प्रदेश।
अश्मक–एक देश।
अशोका–एक नगर।
आनर्त--एक देश।
आन्ध्र–दक्षिण का एक देश।
अभिसार–एक देश।
आभीर–*एक देश।*
आरट्–एक देश।
उग्र (उण्डृ)–एक देश।
इन्द्रप्रस्थ–एक प्राचीन नगर।
उज्जेनी–नगरी(म०प्र०)प्राचीन नगरी।
उत्तर कुरू–विदेह क्षेत्र के अन्तर्गत एक प्रदेश जहाँ उत्तम भोग भूमि है।
उत्पलखेटक–विदेह क्षेत्र पुष्कलावती देश का एक नगर है।
उदक्कुरू–उत्तर कुरू-मेरू पर्वत की उत्तर दिशा में वर्तमान विदेह क्षेत्र का एक भाग जहाँ उत्तम भोग भूमि की रचना है।
उशीनर–एक देश।
ऊर्मिमालिनी–विभंगा नदी।

ऋ

ऋतु–सौधर्म स्वर्ग के प्रथम पटल का इन्द्रकविमान।

ए

एशानकल्प–दूसरा स्वर्ग।

क

कच्छ–एक देश।
कनकाद्रि–सुमेरूपर्वत।
कर्णाट–दक्षिण का एक देश।
करहाट–एक देश।
कलिंग–आधुनिक नाम उड़ीसा।
कांचन–ऐशान स्वर्ग का एक विमान।
काम्बोज–काबुल का पार्श्वततीं प्रदेश।
काशी–एक देश। वाराणसी का पार्श्ववर्ती प्रदेश। अस्सी और वरूण नदी का।
काश्मीर–एक देश।
किन्नोरगोत–एक नगर।
किन्नामित–विजायार्ध का एक नगर।
किलिंकिल–एक नगरी।
कुण्डग्राम–*वैशाली गणराज्य का एक नगर, महावीर का* जन्मस्थल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुण्डल–कुण्डलवर द्वीप में स्थित एक चूड़ी के आकार का पर्वत।

कुण्डलपुर–दमोह (म०प्र०) के पास स्थित तीर्थ।

कुन्द–एक नगर।

कुमुद–वि० उ० श्रेणी० का एक नगर।

कुरु–एक देश। मेरठ का पार्श्ववर्ती प्रदेश।

कुरुजांगल–हस्तिनापुर का पार्श्ववर्ती प्रदेश।

केकय–एक देश।

केतुमाला–एक नगर।

केरल–दक्षिण भारत का देश।

कैलास वारुणी–एक नगरी।

कोंकण–एक देश। पूना का पार्श्ववर्ती प्रदेश।

कोसल–अयोध्या का पार्श्ववर्ती प्रदेश।

क्ष

क्षेमपुरी–एक नगरी।

क्षेमकर–एक नगर।

ख

खचराचल–विजयार्ध पर्वत।

खेचराद्रि–विजयार्ध पर्वत।

गगनचारी–एक नगर।

गगनन्दन–एक नगर।

गगनवल्लम–एक नगर।

ग

गङ्गा–एक नदी जो हिमालय से निकली है।

गजदन्त–मेरु पर्वत के कोणम स्थित चार गजदन्त नामक पर्वत।

गन्धर्वपुर–एक नगर।

गान्धिला–विदेह का एक खण्ड।

गरुडध्वज–एक नगर।

गान्धार–एक देश।

गिरिशिखर–एक नगर।

गोक्षीर–एक नगर।

घ

घर्मा–पहला नरक=रत्नप्रभा।

च

चतुर्मुखी–एक नगर।

चन्द्रपुर–एक नगर।

चन्द्रपुरी–वाराणसी के पास स्थित।

चन्द्राभ–एक नगर।

चमर–एक नगर।

चारुणी–एक नगरी।

चित्रकूट–एक नगर।

चित्रांगद–ऐशान स्वर्ग का विमान।

चूडामणि–एक नगरी।

चेदि–एक देश। चन्देरी का पार्श्ववर्ती प्रदेश।

चोल–दक्षिण भारत का एक देश।

ज

जगन्नाडी–लोकनाड़ी १४ राजु प्रमाण लोक के मध्य में स्थित एक राजु चौड़ी एक राजु मोटी और १४ ऊंची नाड़ी। इसे त्रसनाड़ी भी कहते हैं।

जम्बू-द्रुम–विदेह क्षेत्र का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके कारण इस द्वीप का नाम जम्बू द्वीप पड़ा।

जम्बू द्वीप–पहला द्वीप।

जय–एक नगर।

जयन्ती–एक नगर।

जाबालि–जबलपुर।

त

तमःप्रभा–छठी पृथिवी (छटा नरक)।

तमस्तमःप्रभा–सातवीं पृथ्वी।

तिलका–एक नगर।

तुरुष्क–एक देश–तुर्क।

त्रिकूटा–एक नगर।

द

दशार्ण–आधुनिक विदिशा का पार्वती प्रदेश।

दारु–एक देश।

दुर्ग–एक नगर।

दुर्धर–नगर।

देवकुरु–विदेह क्षेत्र के अन्तर्गत एक प्रदेश जिसमें उत्तम भोग भूमि की रचना है।

देवाद्रि–सुमेरुपर्वत।

द्युतिलक–एक नगर।

द्युतिलक–अम्बर तिलक पर्वत।

ध

धञ्जंय–एक नगर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धारणी–एक नगर। एक नदी।

धातकी खण्ड–इस नाम का दूसरा द्वीप इसका विस्तार ४ लाख योजन है।

धान्यपुर–एक नगर।

धूमप्रभा–पांचवीं पृथिवी।

ध्यानचतुष्क–आर्त्तध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म्यध्यान, शुक्ल ध्यान।

न

नन्द–ऐशान स्वर्ग का विमान।

नन्दन–मेरु पर्वत का एक वन।

नन्दीश्वर–आठवां द्वीप जहां ५२ जिनालय है।

नन्दोत्तरा–समवसरण की एक वापिका का नाम नन्दोत्तरा, नन्दा, नन्दवती, नन्दघोषा ये चार वापिकाएं पूर्वमानस स्तम्भ की पूर्वादि दिशाओं में है।

विजया, वैजयन्ती, जयन्ती और अपराजिता ये चार वापिकाएं दक्षिण मान स्तम्भ की पूर्वादि दिशाओं में हैं।

शोका, सुप्रतिबुद्धा, कुमुदा और पुण्डरीका ये चार वापिकाएं पश्चिम मानस्तम्भ की पूर्वादि दिशाओं में है। हृदयानन्दा, महानन्दा, सुप्रबुद्ध और प्रभंकरी ये चार वापिकाएं उत्तर दिशा के मानस्तम्भ की पूर्वादि दिशाओं में हैं।

नन्द्यावर्त–ऐशान स्वर्ग का एक विमान।

नरगीत–एक नगर।

नित्यवाहिनी--एक नगर।

नित्योद्योतिनी–एक नगर।

निमिष–एक नगर।

निषध–एक कुलाचल जिस पर सूर्योदय और सूर्यास्त होते हैं।

नील–एक एक कुलाचल।

प

पंकप्रभा–चौथी पृथिवी।

पञ्चमार्णव–क्षीरसागर।

पञ्चाल–एक देश।

पल्लव–दक्षिण का देश।

पलालपर्वत–धात की खण्ड विदेह क्षेत्र गन्धिला देश काा एक ग्राम।

प्रभा–दूसरे स्वर्ग का विमान।

प्रभाकर–ऐशान स्वर्ग का एक विमान।

प्रभाकरपुरी–पुष्करवर द्वीपस्थ विदेह की एक नगरी।

पाटलीग्राम–धात की खण्ड विदेह क्षेत्र गन्धिला देश का एक नगर।

पाण्डुक–मेरु का वन।

पाटाद्रि–प्रत्यन्त पर्वत।

प्राग्विदेह–पूर्वविदेह।

प्राणत–चौदहवां स्वर्ग।

प्रीतिवर्द्धन–एक विमान।

पुण्ड्र–आधुनिक बंगाल का उत्तरी भाग, अपर नाम गौड देश।

पुण्डरीक–एक नगर।

पुरंजय–एक नगर।

पुरिमताल–एक नगर।

पुष्कलावती–विदेह का एक देश।

पुष्पचूल–एक नगरी।

पूर्वमन्दर–पूर्वमेरु।

पोदनपुर–प्राचीन नगर। बाहुबली द्वारा शासित।

फ

फेन–एक नगर।

ब

बंग–बंगाल

बलाहक–एक नगरी।

बहुकंतुक–एक नगर।

बहुमुखी–एक नगर।

भ

भद्रशाल–मेरु का एक वन।

भद्राश्व–एक नगर।

भरत–भरत क्षेत्र।

भारत–हिमवत्कुलाचल और लवण समुद्र के बीच का क्षेत्र जो कि ५२६-६/१९ योजन विस्तार वाला है।

भूमितिलक–एक नगर।

म

मगध–विहार प्रदेश राजगृही का पार्श्ववर्ती प्रदेश।

मधवी–छठीं पृथिवी।

मंगलावती–विदेह क्षेत्र का एक देश।

मणिवज्र–एक नगर।

मनोहर–एक उद्यान।

मन्दर–मेरु पर्वत।

मन्दिर–एक नगर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाकच्छ–पूर्व विदेह का एक देश।
महाकूट–एक नगर।
महाज्वाल–एक नगर।
महापूतजिनालय–एक मन्दिर का नाम।
महाराष्ट्र–एक प्रदेश।
महेन्द्रपुर–एक नगर।
माधवी– सातवीं पृथिवी।
मानुषोत्तर पर्वत–पुष्कर वर द्वीप के मध्य में स्थित चूड़ी के आकार का एक पर्वत।
मालव–एक देश।
माहेन्द्र–चौथा स्वर्ग।
मुक्ताहार–एक नगर।
मेघकूट–एक नगर।

य

यवन–एक देश (यूनान)।

र

रुचक–रुचकवर द्वीप में स्थित एक पर्वत।
रतिकूट–एक नगर।
रत्नपुर–एक नगर।
रत्नप्रभा–पहली पृथवी (पहला नरक)
रत्नसञ्चय–विदेह क्षेत्र मङ्गलावती देश का एक नगर।
रत्नाकार–एक नगर।
रथनूपुरचक्रवाल–एक नगर।
रम्यक–एक देश।
रुषित–दूसरे स्वर्ग का एक विमान।
रौप्याद्रि–विजयार्ध पर्वत।

ल

लोहार्गल–एक नगर।

व

वज्रपुर–एक नगर।
वज्राढ्य–एक नगर।
वज्रर्गल–एक नगर।
वत्स–एक देश।
वत्सकावती–पुष्करार्ध के पश्चिम भागस्थ पूर्व विदेह का एक देश।
वनवास–दक्षिण भारत का एक देश।
वसुमती–एक नगर।
वसुमत्क–एक नगरी।
वालुका प्रभा–तीसरी पृथिवी।
वाह्लीक–एक देश।
विचित्रकूट–एक कूट।
विजयपुर–एक नगरी।
विजयपुर–एक नगर।
विजया–एक नगर।
विजयार्द्ध–विजयार्द्ध पर्वत, इनकी अढाई द्वीप में १७० संख्या है।
विदर्भ–बरार।
विदेह–मिथिला का पार्श्ववर्ती एक देश।
विदेह–जम्बूद्वीप का एक क्षेत्र।
विद्युत्प्रभ–एक नगरी।
विनीता–अयोध्या। उत्तर भारत का एक नगर।
विनेयचरी–एक नगर।
विपुलाद्रि–राजगृही का प्रथम पर्वत।
विमान–देवों का निवास स्थान।
विमुखी–एक नगर।
विमोच–एक नगर।
विरजस्का–एक नगर।
विशोका–एक नगर।
वीतशोका–एक नगर।
वैजयन्ती–एक नगर।
वैतरणी–नरक की नदी।
वैश्रवणकूट–एक नगर।
वंशा–दूसरा नगर नरक=शर्कराप्रभा।
वंशाल–एक नगरी।

श

शक–एक देश।
शकटमुखी–एक नगर।
शत्रुञ्जय–एक नगर।
शर्कराप्रभा–एक नगरी।
शशिप्रभा–एक नगरी।
शाल्मलि–विदेह क्षेत्र का एक प्रसिद्ध वृक्ष।
शिला–तीसरी पृथिवी, इसका दूसरा रूढ़ि नाम मेघा भी है।
शिवङ्कर–एक नगर।
शिवमन्दिर–एक नगर।
शुक्रपुर–एक नगर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शूरसेन–एक देश, मथुरा के समीप स्थित।

श्र

श्रीधर–एक नगर।

श्रीनिकेत–एक नगर।

श्रीप्रम–ऐशान स्वर्ग का एक विमान।

श्रीप्रभ–एक पर्वत।

श्रीप्रभ–एक नगर।

श्रीवास–एक नगर।

श्रीहर्म्य–एक नगर।

श्वेतकेतु–एक नगर।

स

सज्जयन्ती–एक नगर।

समुद्रक–एक देश।

सर्वार्थसिद्धि–पञ्च अनुत्तर विमानों का मध्यवर्ती निकटवर्ती एक नदी।

साकेत–अयोध्या का नाम।

सिद्धकूट–विजयार्धिका एक कूट।

सिद्धार्थक वन–अयोध्या का निकटवर्ती एक वन जहाँ भगवाान् आदिनाथ ने दीक्षा धारण की थी।

सिद्धार्थक–एक नगर।

सिद्धायतन–विजयार्ध पर्वत के सिद्धकूट सम्बन्धी चैत्यालय के समीप।

सिन्धु–एक देश १० सिन्धु नदी।

सिंहध्वज–एक नगर।

सिंहपुर–पश्चिम विदेह के गन्धिला देश का एक नगर। सिंहपुरी वाराणसी के समीप स्थित नगर।

सीतोदा–विदेह क्षेत्र की एक महा नदी।

सुकोसल–एक देश। आधुनिक नाम मध्य प्रदेश अपर नाम महाकोसल।

सुगन्धिनी–एक नगर।

सुदर्शन–एक नगर।

सुप्रपिष्ठित–एक नगर।

सुमुखी–एक नगर।

सुराद्रि–सुमेरू पर्वत।

सुराष्ट्र–सौराष्ट्र देश गिरिनार का पार्श्ववर्ती प्रदेश।

सुरेन्द्रकान्त–एक नगर।

सुसीमानगर–जम्बूद्वीप-पूर्व विदेह क्षेत्र महात्सव देश का एक नगर।

सुह्य–एक देश।

सूर्यपुर–एक नगर।

सूर्याम–एक नगर।

सौमनस–मेरू का एक वन।

सौमनस–मेरू का एक वन

सौवीर–एक देश।

स्वपादिगिरि–प्रत्यन्त पर्वत (गजदन्त पर्वत)

स्वर्यप्रभ–सौधर्म स्वर्ग का एक विमान।

स्वयम्प्रभ–ऐशान स्वर्ग का एक विमान।

स्वयंभूरमरण–अन्तिम द्वीप।

स्वयम्भूरमणोदधि–अन्तिम समुद्र।

ह

हरिवर्ष–जम्बूद्वीप का दक्षिण दिशा सम्बन्धी तीसरा क्षेत्र।

हंसगर्भ–वि०उ०श्रे० की एक नगरी।

हास्तिनाख्यपुर–हस्तिनापुर।

हेमकूट–एक नगर।

◇◇◇

For Private and Personal Use Only

नामवाचक शब्द

अ

अकम्पन–वज्रजङ्घ का सेनापति।

अकंपन–नाथवंयश का नायक, वाराणसी का राजा जिसे भगवान् आदिनाथ ने स्थापित किया था दूसरा नाम श्रीधर एक आचार्य।

अक्ष्य्य–भगवान् के लक्षणोंमें एक लक्षण।

अक्षय्य–भगवान् के नामों में एक नाम, न क्षेतुं शक्योऽक्ष्य्य: अविनाशेत्यार्थ:।

अक्षय्य– भगवान् के नामों में एक नाम।

अक्षर–भगवान् के नामों में एक नाम, न क्षरतीति अक्षरो नित्य:।

अक्षर–भगवान् के नामों में एक नाम।

अक्षोभ्य–भगवान् के नामों में एक नाम अखिलज्योतिस-भगवान् के नामों में एक नाम

अगण्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

अगाह्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

अगोचर–भगवान् के नामों में एक नाम।

अग्रज–भगवान् के नामों में एक नाम।

अग्रणी–भगवान् के नामों में एक नाम।

अग्रिम–भगवान् के नामों में एक नाम।

अग्रय–भगवान् के नामों में एक नाम।

अवलस्थिति–भगवान् के नामों में एक नाम।

अचल–भगवान् के नामों में एक नाम।

अचिन्त्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

अचिन्त्यर्द्धि–भगवान् के नामों में एक नाम।

अचिन्त्यवैभव–भगवान् के नामों में एक नाम।

अचिन्त्यात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अच्छेद्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

अच्युत–भगवान अदिनाथ का पुत्र।

अच्युत–भगवान् के नामों में एक नाम, अनन्तज्ञानादिभिगुणैर्न च्युत इत्यच्युत:।

अच्युत–भगवान के नामों में एक नाम, जन्मरहितत्वात् अज: न जायते इति अज:।

अज–भगवान के नामों में एक नाम एक राजा।

अजन्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।

अजर–भगवान के नामों में एक नाम, न विघते जरा वार्धक्यं यस्य सोऽजर:।

अजर–भगवान के नामों में एक नाम।

अजर्य–भगवान के नामों में एक नाम।

अजात–भगवान के नामों में एक नाम।

अजित–द्वितीय तीर्थकर।

अजित–भगवान के नामों में एक नाम।

अजितञ्जय–विदेह का एक चक्रवती।

अजितेशी–अजितनाथ नामक दूसरे तीर्थंकर।

अजितञ्जय–वत्सकावती सुमीमा नगर का राजा।

अणिष्ठ–भगवान के नामों में एक नाम, अतिशयेन अणु:।

अणीयस्–भगवान् के नामों में एक नाम अतिशयेन अणु: अणीयान्।

अणोरणीयस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अतिगृध्र–प्रभाकरी पुरी का राजा।

अतिबल–अलका नगरी का राजा एक विद्याधर।

अतिबल–महाबल का पुत्र।

अतिबल–धात की खण्ड विदेह क्षेत्र पुष्पकलावती देश पुण्डरीकिणी नगरी के राजा धनंजय और रानी यशस्वती का पुत्र (नारायण पद का धारक)।

अतीन्द्र–भगवान् के नामों में एक नाम।

अतीन्द्रिय–भगवान् के नामों में एक नाम।

अतीन्द्रियार्थदृक्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अतुल–भगवान् के नामों में एक नाम।

अधर्मधक् (अधर्मदह)–भगवान् के नामों में एक नाम।

अधर्मारि––भगवान् के नामों में एक नाम।

अधिक–भगवान् के नामों में एक नाम।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधिगुरु–भगवान् के नामों में एक नाम।

अधिज्योति–भगवान् के नामों में एक नाम, अधिक लोकोत्तर ज्योति: प्रभा केवलज्ञानं वा यस्य स:।

अधिदेवता–भगवान् के नामों में एक नाम।

अधिप–भगवान् के नामों में एक नाम।

अधिप–भगवान् के नामों में एक नाम।

अधिप–भगवान् के नामों में एक नाम। ०राजा, नृप।

अधिष्ठान–भगवान् के नामों में एक नाम।

अध्यात्मगम्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

अध्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।

अध्वर्यु–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनक्ष–भगवान् के नामों में एक नाम, न विद्यन्तेऽक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य सोऽनक्ष:, क्षायिकज्ञानयुक्त्वेन क्षायोपशमिकज्ञानजनितभावेन्द्रियरहितत्वात् नाम्न: सार्थकत्वम्।

अनक्षर–भगवान् के नामों में एक नाम, न विद्यते क्षरो नाशो यस्मात् सोऽनक्षर:।

अनघ–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनणु–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनत्यय–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्त–भगवान् के नामों में एक नाम, द्रव्यार्थिकनयापेक्षया न विद्यतेऽन्तो यस्य सोऽनन्त:। अन्तरहित:।

अनन्त–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्त–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्तग–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्तजित्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्तजिद्–भगवान् के नामों में एक नाम, अनन्त: संसारस्तं जयतीति अनन्त जिद्।

अनन्तदीप्ति–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्तधामर्षि–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्तमति–आनन्द पुरोहित की मा।

अनन्मति–नन्दिषेण राजा की स्त्री। एक शीलवती नारी।

अनन्तमती–पुण्डरीकिणी के कुलेर दत्त वणिक् की स्त्री।

अनन्तर्द्धि–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्तविजय–भगवान् ऋषभदेव का पुत्र।

अनन्तशक्ति–भगवान् ऋषभदेव का पुत्र।

अनन्तात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनन्तौजस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनलप्रभ–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनादि–भगवान् के नामों में एक नाम, न विद्यते आदिर्यस्य स अनादि: द्रव्यार्थिकयव्यपेक्षयानादित्वम्।

अनादिनिधन–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनामय–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनामय–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनाश्वान्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनिश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम, न एतुं गन्तुं शीलं यस्य स अनित्वर:।

अनिद्रालु–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनिन्द्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनिन्द्रिय–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनीदृश–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनीश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनुत्तर–भगवान् के नामों में एक नाम।

अनुन्धरी–भगवान् के नामों में एक नाम।

अन्तकृत्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अपराजित–चौदह पूर्व के ज्ञाता एक मुनि।

अपराजित–वज्रसेन और श्रीकान्ता का पुत्र (नकुल का जीव)

अपराजित सेनानी–अकंपन सेनापति का नाम।

अपार–भगवान् के नामों में एक नाम।

अपारधी–भगवान् के नामों में एक नाम।

अपारि–भगवान् के नामों में एक नाम, अपगता अरयो यस्य स: अपारि।

अपुनर्भव–भगवान् के नामों में एक नाम।

अप्रक्यात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अप्रतिघ–भगवान् के नामों में एक नाम।

अप्रतिष्ट–भगवान् के नामों में एक नाम।

अप्रमेयात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

अबन्धन–भगवान् के नामों में एक नाम।

अमध्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

अभयवोष–विदेह के एक चक्रवर्ती।

अभयंकर–भगवान् के नामों में एक नाम।

अभव–भगवान् के नामों में एक नाम।

अभिचन्द्र–दसवां कुलकर।

अभिनन्दन–चतुर्थ तीर्थंकर।

अभिनन्दन–एक मुनि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिनन्दन–एक योगीन्द्र।
अभिनन्दन–भगवान् के नामों में एक नाम।
अभीष्ट–भगवान् के नामों में एक नाम।
अभेद्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
अभ्यग्र–भगवान् के नामों में एक नाम।
अभ्यर्च्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
अभ्यर्च्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमल–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमित–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमित–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमितगति–एक आचार्य।
अमिततेजस्–वज्रदन्त चक्रवर्ती का पुत्र।
अमितशासन–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमूर्त–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमूर्तात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमृतचद्र–एक आचार्य।
अमृतज्योतिस्–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमृतमति–अजितंजयका मन्त्री।
अमृतात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमृतोद्भव–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमृत्यु–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमेय–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमेयर्द्धि–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमेत्यात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमोघ–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमोघवाच्–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमोघशासन–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमोघाज्ञ–भगवान् के नामों में एक नाम।
अमोमुह–भगवान् के नामों में एक नाम।
अयोनिज–भगवान् के नामों में एक नाम, योनो न जायते इति अयोनिजः।
अयोनिज–भगवान् के नामों में एक नाम।
अर–अठारहवें तीर्थंकर।
अरजस्–भगवान् के नामों में एक नाम, कर्मरजोरहित तत्वात् अरजाः।
अरजस्–भगवान् के नामों में एक नाम।
अरविन्द–स्वयंबुद्ध के व्याख्यान में आगत एक विद्याधर राजा महाबल का पूर्व वंशज।
अर्हत्–भगवान् के नामों में एक नाम।
अर्हत्–भगवान् के नामों में एक नाम।
अरहस्–भगवान् के नामों में एक नाम, न विद्यते रहोऽन्तरायकर्म यस्य सोऽहाः।
अरिञ्जय–एक मुनिराज।
अरिञ्जय–भगवान् के नामों में एक नाम।
अरिह्न–भगवान् के नामों में एक नाम।
अरुण–सूर्य का सारयि-प्रातः काल के समय सूर्योदय के पूर्व फैलने वाली लाली।
अरुण–लोकान्तिक देवों का एक भेद।
अलेप–भगवान् के नामों में एक नाम।
अविज्ञेय–भगवान् के नामों में एक नाम।
अव्यक्त–भगवान् के नामों में एक नाम।
अव्यय–भगवान् के नामों में एक नाम।
अव्याबाध–लोकान्तिक देवों का एक भेद।
अशोक–भगवान् के नामों में एक नाम।
असंगात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
असंख्येय–भगवान् के नामों में एक नाम।
असंभूष्णु–भगवान् के नामों में एक नाम।
असंस्कृत (वैकल्पिक)–भगवान् के नामों में एक नाम।
असंस्कृत सुसंस्कार–भगवान् के नामों में एक नाम।
अहमिन्द्रार्च्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
अरिष्ट–लौकान्तिक देवों का एक भेद।

आ

आज्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
आत्मज्ञ–भगवान् के नामों में एक नाम।
आत्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
आत्मभू–भगवान् के नामों में एक नाम, आत्मना भवतीति आत्मभूः स्वयं बुद्धत्वेन नाम्ना सार्थकत्वम्।
आत्मभू–भगवान् के नामों में एक नाम, ऋषभदेव।
आदित्य–लोकान्तिक देवों का एक भेद।
०आदिनाथ का एक नाम।
०सूर्य।
आदित्यगति–एक मुनिराज।
आदित्यवर्ण–भगवान् के नामों में एक नाम।
आदिदेव–आदिनाथ, प्रथम तीर्थंकर।
आदिदेव–भगवान् के नामों में एक नाम।
आदिपुरुष–ऋषभदेव के नामों में एक नाम। आदिश्चासौ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरुषः आदिपुरुषः कर्मभूमेः प्रथमव्यवस्थापकत्वात् आदिपुरुषत्वम्।

आद्यकवि–भगवान् के नामों में एक नाम।

आनन्द–वज्रजङ्घका पुरोहित।

आनन्द–भगवान् के नामों में एक नाम।
०आनन्द श्रावक।

आप्त–भगवान् के नामों में एक नाम।

आर्जवा–अकम्पन सेनापति की माता।

अणीयस्–भगवान् के नामों में एक नाम अतिशयेन अणुः अणीयान्।

ज

जगच्च्डामणि–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगज्जयेष्ट–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगज्जयोतिष्–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगज्जयोतिस्–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगत्पति–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगत्पति–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगत्पाल–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगद्गर्भ–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगद्बंन्धु–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगद्धर्तु– भगवान के १००८ नामों में एक नाम, हितामार्गदर्शकत्वात् जैगद् विभर्ति पालयतीति जगद्भर्ता।

जगदादिज–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगाद्धित–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगद्विभु–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगद्योनि–भगवान के नामों मे एक नाम।

जगन्नन्दन–एक मुनिराज।

जगन्नाथ–भगवान के नामों मे एक नाम।

जटाचार्य–भगवान के नामों मे एक नाम।

जम्बु–सुधर्म स्वामी के बाद होने वाले अनुबद्ध केवली ।

जम्बू-जम्बूस्वामी केवली।

जय–ग्यारह अङ्ग दर्शक पर्वक ज्ञाता एक मुनि।

जयकुमार–एक राजकुमार।

जयकीर्ति–चन्द्रकीर्ति मित्र ७१८।

जयन्त–वज्रसेन और श्रीकान्त का पुत्र (वानर का जीव)

जयपाल– ग्यारह अङ्गके ज्ञाता एक मुनि।

जयवर्मा–सिंहपुर के राजा श्रीपेण और सुन्दरी रानी का श्रेष्ठ पुत्र।

जयवर्मा–गान्धिला देश अयोध्या नगरी का राजा।

जयसेन–रत्नसंचय नगर के राजा महाधर और रानी सुन्दरी का पुत्र शतधी मन्त्री का जीव, जो नरक से निकलकर उत्पन्न हुआ।

जयसेन–महासेन और वसुन्धरा का पुत्र।

जयसेन–नागदत्त और समुत्ति का पुत्र ।

जयसेन–एक पुरातन तपस्वी आचार्य।

जयसेना–धात की खण्ड विदेह क्षेत्र पुष्कलावती देश पुण्डरीकिणो नगर के राजा धनञ्जय की रानी।

जरत्–भगवान के नामों में एक नाम।

जागरूक–भगवान के नामों मे एक नाम।

जातरूप–भगवान के नामों मे एक नाम।

जातरूपाभ–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितकामारि–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितक्राध–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितक्लेश–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितजेय–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितमन्मथ–भगवान के नामों मे एक नाम।

जिताक्ष–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितानङ्ग–भगवान के नामों में एक नाम।

जितान्तक–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितान्तक–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितामित्र–भगवान के नामों मे एक नाम।

जितेन्द्रिय–भगवान के नामों मे एक नाम।

जिस्वर–भगवान के नामों मे एक नाम, जेतुं शीली जित्वरः ।

जिन–भगवान के नामों मे एक नाम।

जिन–भगवान के नामों मे एक नाम।

जिनसेन-एक आचार्य विशेष।

जिन्कुञ्जर–भगवान के नामों मे एक नाम।

जिनसेन–महापुरण के कर्ता आचार्य।

जिनेन्द्र–भगवान के नामों मे एक नाम।

जिनेश्वर–भगवान के नामों मे एक नाम।

जिष्णु–भगवान के नामों मे एक नाम।

जेतृ–भगवान के नामों मे एक नाम, जेतुं शीलो जिष्णुः।

जेतृ–भगवान के नामों मे एक नाम।

जोइन्दु–परमात्म प्रकाश के कर्ता।

ज्येष्ठ–भगवान के नामों में एक नाम। ०मास।

ज्योमूर्ति–भगवान के नामों मे एक नाम।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्वलज्ज्वलनसप्रभ–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञ

ज्ञानगर्भ–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञानचक्षुष्–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञानधर्मदमप्रभु–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञाननिग्राह–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञानभावना–१. वाचना, २. पुच्छना, ३. अनुप्रेक्षण, ४. परिवर्तन और ५. सद्धर्मदशाना ये पाँच ज्ञानभावनाएँ हैं।

ज्ञानसावर्ग–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञानात्मन्–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञानात्मन्–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञानत्मन्–भगवान के नामों मे एक नाम।

ज्ञानाब्धि–भगवान के नामों मे एक नाम।

त

तनुनिर्मुक्त–भगवान के नामों मे एक नाम।

तन्त्रकृद्–भगवान के नामों मे एक नाम।

तपनीयनीम–भगवान के नामों मे एक नाम।

तसजाम्बूनदधुति–भगवान के नामों मे एक नाम।

तसचामीकरच्छवि–भगवान के नामों मे एक नाम।

तमोऽरि–भगवान के नामों मे एक नाम, तमसोऽज्ञानान्त्रकारस्य अरिः शत्रुरिति नाम्नः सार्थक्यम्।

तीर्थकृत्–भगवान के नामों मे एक नाम।

तीर्थंकर–सिद्दिपथ उपदेशक।

तुङ्ग–भगवान के नामों मे एक नाम।

तुषित–भगवान के नामों मे एक नाम।

तेजोमय–भगवान के नामों मे एक नाम।

तेजोराशि–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्यागिन्–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्र

त्रसु–दुःख युक्त जीव।

त्रातृ–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्रिकालदर्शिन–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्रिकालविषयार्थध्श्–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्रिगद्वल्लम–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्रिजगन्मंगलादेश–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्रिजगतपतिपूज्याङ्घ्रि–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्रिजगत्परमेश्वर–भगवान के नामों मे एक नाम।

त्रिदशाध्यक्षचन्द्रपुर–भगवान के नामों में एक नाम।

त्रिनेत्र–भगवान के नामों में एक नाम।

त्रिपुरारि–भगवान के नामों में एक नाम।

त्रिलोकाग्रशिखामणि–भगवान के नामों में एक नाम।

त्रिलोचन–भगवान के नामों में एक नाम।

त्र्यक्ष–भगवान के नामों में एक नाम।

त्र्यम्बक–भगवान के नामों में एक नाम।

द

दक्ष–भगवान के नामों में एक नाम।

दक्षिण–भगवान के नामों में एक नाम।

दण्ड–महाबल विद्याधर का पूर्व वशंज एक विद्याधर।

दमतीर्थेश–भगवान के नामों में एक नाम।

दमधर–एक मुनि।

दमिन्–भगवान के नामों में एक नाम संयमी ।

दमीश्वर–भगवान के नामों में एक नाम, संयमी,योगी इन्द्रियजयी।

दमीश्वर–भगवान के नामों में एक नाम, इन्द्रियजयी।

दयागर्भ–भगवान के नामों में एक नाम।

दयाध्वज–भगवान के नामों में एक नाम।

दयानिधि–भगवान के नामों में एक नाम।

दयायाग–भगवान के नामों में एक नाम।

दवीयस्–भगवान के नामों में एक नाम।

दान्त–भगवान के नामों में एक नाम।

दान्तात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।

दिग्वासस्–भगवान के नामों में एक नाम।

दिवाकरप्रभ–दूसरे स्वर्ग का एक विमान।

दिव्य–भगवान के नामों में एक नाम।

दिव्यभाषापति–भगवान के नामों में एक नाम।

दिष्टि–भगवान के नामों में एक नाम।

दीन–श्रीण, हीन व्यक्ति।

दीप्त–भगवान के नामों में एक नाम।

दीप्रकल्याणात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।

दुर्ग–शत्रु विजय उद्योग।

दुन्दुभिस्वन–भगवान के नामों में एक नाम।

दुर्दान्त–महापूत जिनलायमें पण्डिता धायके प्रसारित प्रसारित चित्रपट के कल्पिता ज्ञाता-धूर्त।

दूराधर्ष–भगवान के नामों में एक नाम

दुःषमासुषमा–अवसर्पिणी का चौथा काल।

दुरदर्शन–भगवान के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देव–भगवान के नामों में एक नाम।
देव–देवनन्दी अपर नाम पूज्यपाद आचार्य जैनेन्द्रव्याकरण आदि के कर्ता।
देवदेव–भगवान के नामों में एक नाम।
देवराट्–इन्द्र।
देवाधिदेव–भगवान के नामों में एक नाम।
देविल–पलाल पर्वत ग्राम का एक ग्रामक-पटेल।
देवी–मरूदेवी।
देवी–राज्ञी।
दैव–भगवान के नामों में एक नाम।
द्युम्नाभ–भगवान के नामों में एक नाम।

ध

धनञ्जय–धात की खण्ड विदेह क्षेत्र पुष्पकलावती देश पुण्डरीकिणी नगर का राजा। ०एक नाम मालाकार। शब्दकाशकार।
धनदत्त–धनमित्र सेठ का पिता।
धनदत्ता–धनमित्र सेठ की माता।
धनदेव–कुबेरदत्त वणिक् और अनन्तमती, सठानी का पुत्र (श्रीमती अथवा केशव का जीव)
धनमित्र–वज्रजंध का सेठ।
धनवती–हस्तिनापुर के सागरदत्त की स्त्री।
धनश्री–पलालपर्वत ग्राम के देविल नामक पेटलकी सुमति स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र।
धर्म–पन्द्रहवें तीर्थकर।
धर्मघोषण–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मचक्रायुध–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मचक्रिन–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मतीर्थकृत्–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मदेशक–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मध्वज–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मनायक–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मनेमि–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मपति–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मयूप–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मराज–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मसाम्राज्यानक–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मसेन–ग्यारह अंग दश पुर्वक ज्ञाता एक मुनि।
धर्माचार्य–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्मादि–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्माध्यक्ष–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्माराम–भगवान के नामों में एक नाम।
धर्म्य–भगवान के नामों में एक नाम।
धाता–भगवान के नामों में एक नाम।
धातु–भगवान के नामों में एक नाम।
धिषण–भगवान के नामों में एक नाम।
धीन्द्र–भगवान के नामों में एक नाम।
धीमत्–भगवान के नामों में एक नाम।
धीर–भगवान के नामों में एक नाम।
धीरधी–भगवान के नामों में एक नाम।
धीश–भगवान के नामों में एक नाम।
धीश्वर–भगवान के नामों में एक नाम।
धुर्य–भगवान के नामों में एक नाम।
धृति–षट् कुमारी देवियों में से एक देवी।
धृतिषेण–ग्यारह अंग दश पूर्वक ज्ञाता एक मुनि।
ध्यातमहाधर्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
ध्यानगम्य–भगवान के नामों में एक नाम।
ध्येय–भगवान के नामों में एक नाम।
ध्रुवसेन–ग्यारह अंग के ज्ञाता एक मुनि।
ध्दधर्म–एक मुनि।
ध्ढवर्मा–ललितांगदेव की स्वयं प्रभा देवो के अन्त परिषद-का सभासद एक देव।
ध्ढव्रत–भगवान के नामों में एक नाम।
ध्ढीयस्–भगवान के नामों में एक नाम।

न

नकुलार्य–नकुल का जीव जो कि भोगभूमि में आर्य हुआ।
नक्षत्र–ग्यारह अंग के ज्ञाता एक मुनि।
नन्द–भगवान के नामों में एक नाम।
नन्द–नागदत्त और सुमति का पुत्र।
नमि–भगवान आदिनाथ के साले कच्छ राजा का पुत्र।
नमि–इक्कीसवें तीर्थंकर।
नयोत्तुंग–भगवान के नामों में एक नाम।
नागदत्त–धान्य पुर के कुबेर वणिक् और उसकी स्त्री सुदत्ता का पुत्र।
नागदत्त–पाटलीग्राम का एक अणिक् पुत्र।
नागसेन–ग्यारह अंग दश पूर्वक ज्ञाता एक मुनि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नानैकतत्त्वदृश्–भगवान के नामों में एक नाम।
नन्दिमित्र–चौदह पूर्वक ज्ञाता एक मुनि।
नामि–चौदहवाँ कुलकर।
नामिज–भगवान के नामों में एक नाम।
नामिनन्दन–भगवान के नामों में एक नाम।
नामिराज–भगवान ऋषभदेव के पिता।
नाभेय–भगवान के नामों में एक नाम। ०सुषभ।
नित्य–भगवान के नामों में एक नाम।
नित्य–भगवान के नामों में एक नाम।
नन्दिषेण–विदेह का एक राजा।
निमितेन्द्रिय–भगवान के नामों में एक नाम।
निरक्ष–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्गुण–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्ग्रन्थेश–भगवान के नामों में एक नाम।
निरंजन–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्द्वन्द्व–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्धुतास्–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्नामा–नागदत्त और सुमतिकी छोटी पुत्री श्रीकान्ता का दुसरा नाम।
निर्निमेष–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्मद–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्मल–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्मोह–भगवान के नामों में एक नाम।
निरम्बर–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्लेप–भगवान के नामों में एक नाम।
निर्विघ्न–भगवान के नामों में एक नाम।
निरस्तैनस्–भगवान के नामों में एक नाम।
निरावाध–भगवान के नामों में एक नाम।
निराशंस–भगवान के नामों में एक नाम।
निरास्रव–भगवान के नामों में एक नाम।
निराहार–भगवान के नामों में एक नाम।
निरूक्तवाच्–भगवान के नामों में एक नाम।
निरूक्तोक्ति–भगवान के नामों में एक नाम।
निरूत्तर–भगवान के नामों में एक नाम।
निरूत्सक–भगवान के नामों में एक नाम।
निरूद्भव–भगवान के नामों में एक नाम।
निरूद्भव–भगवान के नामों में एक नाम।
निरूपद्रव–भगवान के नामों में एक नाम।
निरूपप्लव–भगवान के नामों में एक नाम।
निश्चल–भगवान के नामों में एक नाम।
निष्कल–भगवान के नामों में एक नाम।
निष्कलंक–भगवान के नामों में एक नाम।
निष्कलंकात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
निष्टसकनच्छाय–भगवान के नामों में एक नाम।
निष्किंचन–भगवान के नामों में एक नाम।
निष्क्रिय–भगवान के नामों में एक नाम।
निःसपत्न–भगवान के नामों में एक नाम।
नीरजस्क–भगवान के नामों में एक नाम।
नीलांजना–सुरनर्तकी। ०देव नृत्यांगना।
नेतृ–भगवान के नामों में एक नाम।
नेदीयस्–भगवान के नामों में एक नाम।
नेमि–बाईसवें तीर्थकर।
नैकधर्मकृत्–भगवान के नामों में एक नाम।
नैकरूप–भगवान के नामों में एक नाम।
नैकात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
न्यायशास्त्रकृत्–भगवान के नामों में एक नाम।

प

पञ्चब्रह्ममय–भगवान के नामों में एक नाम पंचपरमेष्ठिमय।
पण्डिता–श्रीमती की छात्री (धाय)।
पण्डितिका–पण्डिता धाय (स्वार्थे कप्रत्ययः)।
पति–भगवान के नामों में एक नाम।
पद्मगर्भ–भगवान के नामों में एक नाम।
पद्मनंदि–एक आचार्य।
पद्मनाभि–भगवान के नामों में एक नाम।
पद्मविष्टर–भगवान के नामों में एक नाम।
पद्मप्रभ–षष्ठ तीर्थकर।
पद्मयोनि–भगवान के नामों में एक नाम।
पद्मसम्भूति–भगवान के नामों में एक नाम।
पद्मांग–सख्या का एक भेद।
पद्मावती–एक आर्यिका।
पद्मेश–भगवान के नामों में एक नाम।
पर–भगवान के नामों में एक नाम।
परतत्त्व–भगवान के नामों में एक नाम, सर्वात्कृष्टजीव तत्त्वरूपत्वात् परं तत्वम्।
परतर–भगवान के नामों में एक नाम।
परम–भगवान के नामों में एक नाम।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परम–भगवान के नामों में एक नाम।

परमज्योतिष्–भगवान के नामों में एक नाम।

परमज्योतिष–भगवान के नामों में एक नाम, उत्कृष्ट केवलज्ञानज्योतिः सहित-त्वात परमज्योति।

परमात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम, परा उत्कृष्टा या लक्ष्मीर्यस्य स परमः परम आत्मा यस्य य परमात्मा।

परमात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।

परमानन्द–भगवान के नामों में एक नाम।

परमानन्द–भगवान के नामों में एक नाम।

परमेश्वर–वागर्थसंग्रह पुराण के कर्ता एक आचार्य।

परमेश्वर–भगवान के नामों में एक नाम।

परमेष्ठिन्–भगवान के नामों में एक नाम, परमे सर्वोत्कुष्टे पदे तिष्ठतीति परमेष्ठी अहेत्परमोष्ठरूप इत्यर्थः।

परमेष्ठिन्–भगवान के नामों में एक नाम।

परमोदय–भगवान के नामों में एक नाम।

परात्मज्ञ–भगवान के नामों में एक नाम।

परार्ध्य–भगवान के नामों में एक नाम।

परापर (परात्पर)–भगवान के नामों में एक नाम।

परिवृढ–भगवान के नामों में एक नाम।

परेज्योतिष्–भगवान के नामों में एक नाम।

परंब्रह्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।

पवित्र–भगवान के नामों में एक नाम।

पाण्डु–भगवान के नामों में एक नाम। ०पाण्डव पुत्र।

पातृ–भगवान के नामों में एक नाम।

पात्रकेसरी–एक पर्ववर्ती आचार्य।

पापावग्रह–पापरूपी वर्षा का प्रतिबन्ध।

पार्पापत–भगवान के नामों में एक नाम।

पारग–भगवान के नामों में एक नाम।

पावन–भगवान के नामों में एक नाम।

पार्श्व–भगवान के नामों में एक नाम। ०पार्श्वनाथ।

पितामह–भगवान के नामों में एक नाम।

पितृ–भगवान के नामों में एक नाम।

पिहितास्त्रव–एक मुनि।

पिहितास्त्रव–अजितंजय चक्री का दुसरा नाम।

पिहितास्त्रव–एक मुनि।

पीठ–वजसेन और श्रीकान्ता का पुत्र (अकम्पन सेनापति का जीव)

पुण्डरीक–व्रजाबाहु के पुत्र अमित तेज का पुत्र।

पुण्डीकाक्ष–भगवान के नामों में एक नाम।

पुण्डरीकिणी–विदेह की एक नगरी।

पुण्य–भगवान के नामों में एक नाम।

पुष्यकृत्–भगवान के नामों में एक नाम।

पुण्यगिर्–भगवान के नामों में एक नाम।

पुण्यधी–भगवान के नामों में एक नाम।

पुण्यनायक–भगवान के नामों में एक नाम।

पुण्यनायक–भगवान के नामों में एक नाम।

पुण्यराशि–भगवान के नामों में एक नाम।

पुण्यशासन–भगवान के नामों में एक नाम।

पुण्यापुण्यनिरोधक–भगवान के नामों में एक नाम।

पुमस्–भगवान के नामों में एक नाम, पुनातीति पुमान्।

पुराण–भगवान के नामों में एक नाम।

पुराण–भगवान के नामों में एक नाम।

पुराणपुरूष–भगवान के नामों में एक नाम।

पुराणपुरूषात्तम–भगवान के नामों में एक नाम।

पुराणाद्य–भगवान के नामों में एक नाम।

पुरातन–भगवान के नामों में एक नाम।

पुरू–भगवान ऋषभदेव।

पुरू–भगवान आदिनाथ।

पुरू–भगवान भगवान आदिनाथ।

पुरू–भगवान भगवान के नामों में एक नाम।

पुरू–भगवान के नामों में एक नाम।

पुरूदेव–भगवान के नामों में एक नाम।

पुरुष–भगवान के नामों में एक नाम।

पुरूहूत–इन्द्र।

पुष्कर–तीसरा द्वीप।

पुष्करेक्षण–भगवान के नामों में एक नाम।

पुष्कल–भगवान के नामों में एक नाम।

पुष्पदंत–एक प्राचीन आचार्य।

पृष्ट–भगवान के नामों में एक नाम।

पुष्टिद–भगवान के नामों में एक नाम।

पुष्पदन्त–नौवें तीर्थकर।

पुजार्ह–भगवान के नामों में एक नाम।

पूज्य–भगवान के नामों में एक नाम।

पूत–भगवान के नामों में एक नाम।

पूतशासन–भगवान के नामों में एक नाम।

पूत–भगवान के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूतवाच्–भगवान के नामों में एक नाम।
पूतात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
पुतात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
पूर्व–भगवान के नामों में एक नाम।
पृथिवीमूर्ति–भगवान के नामों में एक नाम।
पृथु–भगवान के नामों में एक नाम।
पौरूहुती–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रकाशातमन्–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रकृति–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रक्षीरणाबन्ध–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रजापति–भगवान के नामों में एक नाम। ०ब्रह्मा।
प्रजाहित–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रज्ञापारमित–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रणत–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रणव–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रणिधि–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रणेतृ–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रतिश्रुति–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रतिष्ठाप्रसव–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रतिष्ठित–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रत्यग्र–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रत्यय–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रथित–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रर्थायस्–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रदीस–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रधान–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रबुद्धात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रमंजन–विदेह का राजा
प्रभाकर–भगवान के नामों में एक नाम। ०एक न्यायवेता।
प्रभाकर–एक देव, सेनापति का जीव।
प्रभावती–गन्धर्वनगर के राजा वासवक्री स्त्री।
प्रभास्कर–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रभु–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रभूतविभव–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रभूतात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रभूष्णु–भगवान के नामों में एक नाम, प्रभवितुं शील: प्रभूष्णु: समर्थः इत्यर्थ:।
प्रभूष्णु–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रमाण–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रवक्तृ–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रशामाकर–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रशमात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रशान्त–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रशान्तमदन–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रशान्तमदन–प्रभञ्जन और चित्रमालिनोीका पुत्र नकुल का जीव।
प्रशान्तमदन–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रशान्तात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रशान्तारि–भगवान के नामों में एक नाम, प्रशान्ता अरय: कर्मशत्रवो यस्य स:।
प्रशास्तृ–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रष्ट–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रसन्नात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम. प्रसेनजित्–तरहवाँ कुलकर।
प्रहसित–वत्कावती सुसीमानगर के अमृतमति और सत्यभामा का पुत्र।
प्राकृत–भगवान के नामों में एक नाम। ०एक भाषा। ०पुरा भाषा।
प्राग्रहर–भगवान के नामों में एक नाम।
प्राग्रय–भगवान के नामों में एक नाम।
प्राज्ञ–भगवान के नामों में एक नाम।
प्राण–भगवान के नामों में एक नाम।
प्राणतश्वर–भगवान के नामों में एक नाम।
प्राणतेश्वर–भगवान के नामों में एक नाम।
प्राणद–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रासमहाकल्याणपंचक–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रांशु–भगवान के नामों में एक नाम।
प्रियदत्ता–राजा विभीषण की स्त्री।
प्रियसेन–जम्बद्वीप विदेह क्षेत्र पुष्कलावती देश पुण्डरी किणोनगरी का राजा।
प्रीतिंकर–एक मुनि (स्वयंबुद्ध का जीव)
प्रीतिंकर–स्वयंबुद्ध मन्त्री का जीव मणिचूल देव प्रीतिंकर नामक पुत्र हुआ (प्रियसेन राजा और सुन्दरी रानी का पुत्र तपस्वी मुनि)
प्रीतिदेव–प्रियसेन और सुन्दरी का छोटा भाई, जो तपस्वी मुनि हुआ।
प्रीतिवर्द्धन–एक राजा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रेष्ट–भगवान के नामों में एक नाम. अतिशयेन प्रियः।

प्रोष्ठिलाचार्य–ग्यारह अंग दश पूर्वक ज्ञाता एक मुनि।

ब

बन्धमोक्ष्ज्ञ–भगवान के नामों में एक नाम।

बहालक–एक देव का नाम।

ब्रहि–लौकान्तिक देव का एक भेद।

बहुश्रुत–भगवान के नामों में एक नाम।

बालार्काभ–भगवान के नामों में एक नाम।

बाहुबली–भगवान आदिनाथ का सुनन्दा स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

बुद्ध–भगवान के नामों में एक नाम। ०शुद्धोदन पुत्र।

बुद्ध–भगवान के नामों में एक नाम।

बुद्धघोष–नाम विशेष।

बुद्धबोध्य–भगवान के नामों में एक नाम।

बुद्धसन्मार्ग–भगवान के नामों में एक नाम।

बुद्धि–षटकुमारी देवियों में से एक देवी।

बुद्धिमान्–भगवान के नामों में एक नाम।

बंहिष्ट–भगवान के नामों में एक नाम,अतिशयेन बहुः।

ब्रहातत्वज्ञ–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मान्–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मन–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मनिष्ट–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मयोनि–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मापदेश्वर–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मबिद्–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मविदांध्येय–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मसम्भव–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रह्मात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रहोश–भगवान के नामों में एक नाम।

ब्रहोघाविद्–भगवान के नामों में एक नाम, एक नाम ब्रह्मणा वेदितव्यमावेत्तीति।

ब्राह्मी–भगवान आदिनाथ की पुत्री।

भ

भगवन्–भगवान के नामों में एक नाम।

भगवती–भगवान के नामों में एक नाम।

भगवान्–भगवान आदिनाथ के नामों में एक नाम,भग ऐश्वर्य विद्यते यस्य स।

भट्टाकलंक–राजवार्तिक आदि के कर्ता।

भदन्त–भगवान के नामों में एक नाम।

भद्र–भगवान के नामों में एक नाम।

भद्रकृत्–भगवान के नामों में एक नाम।

भद्रबाहु–प्रथम अंग के ज्ञाता एक मुनि।

भद्रबाहु–चौदह पूर्व के ज्ञाता एक मुनि।

भरत–भगवान आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र।

भरतमुनि–एक प्रसिद्ध नाट्यशास्त्रकर्ता।

भरत–प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का ज्येष्ठ पुत्र प्रथम चक्रवर्ती।

भर्तृ–भगवान के नामों में एक नाम।

भभीभ–भगवान के नामों में एक नाम।

भव–भगवान के नामों में एक नाम।

भवतारक–भगवान के नामों में एक नाम।

भवान्तक–भगवान के नामों में एक नाम।

भवान्तक–भगवान के नामों में एक नाम।

भच्यपेटकनायक–भगवान के नामों में एक नाम।

भव्यबन्धु–भगवान के नामों में एक नाम।

भव्याब्जिनीबन्धु–भगवान के नामों में एक नाम।

भव्यभस्कर–भगवान के नामों में एक नाम, भव्यानां भास्कर इव भव्यभस्कर।

भवोद्धव–भगवान के नामों में एक नाम,भवात् ससांराद् उद्गती दूरी भूतो भव उत्पत्तिर्यस्य सः।

भाव–भगवान के नामों में एक नाम।

भास–एक कवि विशेष।

भास्वत्–भगवान के नामों में एक नाम।

भिषग्वर–भगवान के नामों में एक नाम।

भुवनैकपितामह–भगवान के नामों में एक नाम।

भूतनाथ–भगवान के नामों में एक नाम।

भूतभव्यभवद्धर्तृ–भगवान के नामों में एक नाम।

भूतभावन–भगवान के नामों में एक नाम।

भूतभृद्–भगवान के नामों में एक नाम।

भूतात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।

भूरामल–बीसवीं शताब्दी का संस्कृत काव्य कार।

भूष्णु–भगवान के नामों में एक नाम।

भोगभूर्दश्य–भोग भूमि के सदृश।

भ्राजिष्णु–भगवान के नामों में एक नाम।

म

मखज्येष्ठ–भगवान के नामों में एक नाम।

मखाङ्ग–भगवान के नामों में एक नाम।

मङ्गल–भगवान के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मणिकुण्डली–एक देव जो कि वराह का जीव है।
मणिचूल–सौधर्म स्वर्ग के स्वंय प्रभ विमान का एक देव, सवयम्बुद्ध मन्त्री का जीव।
मणिमाली–दण्ड विद्याधर का पुत्र।
मतिवर–वज्रजङ्घ का महामन्त्री।
मतिसागर–मतिवर मन्त्री का पिता।
मतिसागर–एक मुनि।
मदनकान्ता–नागदत्त और सुमति की पुत्री।
मघ्यम–भगवान के नामों में एक नाम।
मनीषिन्–भगवान के नामों में एक नाम।
मनु–कुलकर।
मनु–भगवान् आदिनाथ का नाम।
मनु–भगवान के नामों में एक नाम।
मनोगति–मन्दरमाला और सुन्दरी का पुत्र।
मनोज्ञाङ्ग–भगवान के नामों में एक नाम।
मनोरथ–एक देव, जो कि नकुलर्य का जीव है।
मनोरमा–चक्रवर्ती अभयघोष की पुत्री सुविधि कि स्त्री।
मनोहर–एक देव जो कि वानरार्य का जीव है।
मनोहर–रतिषेण ओर चन्द्रमती का पुत्र (वानरका जीव)।
मनोहरा–अलका के राजा अति बल की स्त्री।
मनोहर –भगवान के नामों में एक नाम।
मनोहरा–रत्नसंचय नगर के राजा श्रीधर की स्त्री।
मन्तृ–भगवान के नामों में एक नाम।
मन्त्रकृत्–भगवान के नामों में एक नाम।
मन्त्रमूर्ति–भगवान के नामों में एक नाम।
मन्त्रविद्–भगवान के नामों में एक नाम।
मन्त्रिन्–भगवान के नामों में एक नाम।
मन्दरमाली–गन्धर्वपुर का राजा विद्याधर।
मन्दरस्थविर–एक मुनि।
मरीचि–भगवान् आदिनाथ का पोता, भरत का लड़का।
मरूदेव–बारहवां कुलकर।
मलघ्न–भगवान के नामों में एक नाम।
मलहन्–भगवान के नामों में एक नाम।
मल्लि–उन्नीसवें तीर्थकर।
महत्–भगवान के नामों में एक नाम।
महर्द्धिक–भगवान के नामों में एक नाम।
महर्षि–भगवान के नामों में एक नाम।
महसांधामन्–भगवान के नामों में एक नाम।
महसांपतिः–भगवान के नामों में एक नाम।
महाकच्छ–भगवान आदिनाथ का साला।
महाकर्मादिहन्–भगवान के नामों में एक नाम।
महाकवि–भगवान के नामों में एक नाम।
महाकान्ति–भगवान के नामों में एक नाम।
महाकान्तिधर–भगवान के नामों में एक नाम।
महाकारूणिक–भगवान के नामों में एक नाम।
महाकीर्ति–भगवान के नामों में एक नाम।
महाक्रोधरिपु–भगवान के नामों में एक नाम।
महाक्षम–भगवान के नामों में एक नाम।
महाक्षान्ति–भगवान के नामों में एक नाम।
महाक्लेशाङ्कुश–भगवान के नामों में एक नाम।
महागुण–भगवान के नामों में एक नाम।
महागुणाकर–भगवान के नामों में एक नाम।
महाघोष–भगवान के नामों में एक नाम।
महाज्योतिष्–भगवान के नामों में एक नाम।
महाज्ञान–भगवान के नामों में एक नाम।
महातपस्–भगवान के नामों में एक नाम।
महातेजस्–भगवान के नामों में एक नाम।
महात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
महादम–भगवान के नामों में एक नाम।
महादान्–भगवान के नामों में एक नाम।
महादेव–भगवान के नामों में एक नाम।
महाद्युति–भगवान के नामों में एक नाम।
महाधामन्–भगवान के नामों में एक नाम।
महाधृति–भगवान के नामों में एक नाम।
महाधैर्य–भगवान के नामों में एक नाम।
महाध्यान–भगवान् के नामों में एक नाम।
महाध्यानपति–भगवान् के नामों में एक नाम।
महाध्वरधर–भगवान् के नामों में एक नाम।
महान्–भगवान् के नामों में एक नाम।
महानन्द–भगवान् के नामों में एक नाम।
महानन्द–भगवान् के नामों में एक नाम।
महानाद–भगवान् के नामों में एक नाम।
महानाद–भगवान् के नामों में एक नाम।
महानीति–भगवान् के नामों में एक नाम।
महापराक्रम–भगवान् के नामों में एक नाम।
महापीठ–वज्रसेन ओर श्रीकान्ता का पुत्र (धनमित्र सेठ का जीव)।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाप्रभ–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाप्रभु–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाप्राज्ञा–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाप्रातिहार्याधीश–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाबल–अलका के राजा अति बल और रानी मनोहर का पुत्र।

महाबल–धातकीखण्ड विदेह क्षेत्र पुष्कलावती देश पुण्डरी किणी नगरी के राजा धनंजय और जय सेना रानी का पुत्र (रामपदका धारक)।

महाबल–भगवान् के नामों में एक नाम।

म्हाबाहु–वज्रबाहु और श्री कान्ता का पुत्र (आनन्द पुरोहित का जीव)।

महबोधी–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाब्रह्मपति–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाब्रह्मपदेश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाभवाधिसंतारिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाभाग–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाभूति–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामख–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामति–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामति–राजा महाबल का मन्त्री।

महामन्त्र–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामहपति–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामहस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामुनि–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामैत्रीमय–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामोहाद्रिसूदन–भगवान् के नामों में एक नाम।

महामौनिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

महायज्ञ–भगवान् के नामों में एक नाम।

महायति–भगवान् के नामों में एक नाम।

महायशस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

महायोग–भगवान् के नामों में एक नाम।

महायोगीश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।

महावपुष–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाविध–भगवान् के नामों में एक नाम।

महावीर–अन्तिम तीर्थकर इस युग के अन्तिम तीर्थकर वध 'मान, वीर, अतिवीर, सन्मति।

महावीर्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाव्रत–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाव्रतपति–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाशक्ति–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाशील–भगवान् के नामों में एक नाम।

महाशोकध्वज–भगवान् के नामों में एक नाम।

महासत्व–भगवान् के नामों में एक नाम।

महासम्पत्–भगवान् के नामों में एक नाम।

महासेन–धात की खण्ड पूर्व विदेह वत्सकावती देश प्रभाकरी नगरी का राजा।

महितोदय–भगवान् के नामों में एक नाम।

महिष्टवाच्–भगवान् के नाामों में एक नाम।

महीकम्प–महीधर का ज्येष्ठ पुत्र।

महीधर–एक विद्याधर राजा।

महीधर–गन्धर्व नगर के राजा वासव और रानी प्रभावती का पुत्र।

महीधर–रत्नसंचय नगर का राजा।

महीयस्–भगवान् के नामों में एक नाम,अतिशयेन महान् महीयान्।

महीयित–भगवान् के नामों में एक नाम।

महेज्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

महेन्द्र–भगवान् के नामों में एक नाम।

महेन्द्रमहित–भगवान् के नामों में एक नाम।

महेन्द्रवन्द्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

महेशितृ–भगवान् के नामों में एक नाम।

महेश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम। ०शिव।

महेश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।

महोदय–भगवान् के नामों में एक नाम।

महोदय–भगवान् के नामों में एक नाम।

महोदर्क–भगवान् के नामों में एक नाम।

महोपाय–भगवान् के नामों में एक नाम।

महोमय–भगवान् के नामों में एक नाम।

महौदार्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

मह्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

माणिक्यनंदि-एक दार्शनिक आचार्य।

मारजिद्–भगवान् के नामों में एक नाम।

मुक्त–भगवान् के नामों में एक नाम।

मुनि–भगवान् के नामों में एक नाम।

मुनिज्येष्ठ–भगवान् के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनिसुव्रत–बीसवें तीर्थकर।
मुनीन्द्र–भगवान् के नामों में एक नाम।
मुनीश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।
मुमुक्षु–भगवान् के नामों में एक नाम।
मूर्तिमत्–भगवान् के नामों में एक नाम।
मूलकर्तृ–भगवान् के नामों में एक नाम।
मूलकारण–भगवान् के नामों में एक नाम।
मृत्युंजय–भगवान् के नामों में एक नाम, अमर अजर तीर्थस्थान।
मोहारिविजयिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
मोहासुरारी–भगवान् के नामों में एक नाम, महोरूपी असुर के शत्रु।

य

यजमादात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
यज्ञपति–भगवान् के नामों में एक नाम।
याज्ञाङ्ग–भगवान् के नामों में एक नाम।
यज्वन–भगवान् के नामों में एक नाम।
यति–भगवान् के नामों में एक नाम।
यतिवृषभ-आचार्य का नाम।
यतीन्द्र–भगवान् के नामों में एक नाम।
यतीश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।
यमधर–एक मुनि।
यमधर–एक मुनि।
यशस्वति–धातकीखण्ड विदेह क्षेत्र पुष्कलावती देश पुण्डरी किणी नगरी के राजा धनंजय की रानी।
यशस्वति–भगवान आदिनाथ की पुत्री।
यशस्वान्–कुलकर।
यशोधर–एक मुनि राज।
यशोधर–एक योगिन्द्र।
यशोभद्र–प्रथम अगं के ज्ञाता एक मुनि।
यशोभद्र–एक प्राचीन आचार्य।
याज्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
युगज्येष्ठ–भगवान् के नामों में एक नाम।
युगन्धर–विदेह क्षेत्र के एक तीर्थंकर।
युगन्धर–एक मुनिराज।
युगन्धर–पुष्करार्ध के पूर्वार्ध विदेह के मंगलावती देशसम्बन्धी रत्नसंचय नगर के राजा अजितंजय और रानी वसुमती का पुत्र (तीर्थंकर)।
युगमुख्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
युगादि–भगवान् के नामों में एक नाम।
युगादिकृत्–भगवान् के नामों में एक नाम।
युगादिपुरुष–भगवान् ऋषभदेव।
युगादिस्थितिदेशक– *युग/समय देशक।
युगान्धार–भगवान् के नामों में एक नाम।
योगाविद्–भगवान् के नामों में एक नाम।
योगाविद्–भगवान् के नामों में एक नाम।
योगाविदांवर–भगवान् के नामों में एक नाम, योग के जानने वालों में श्रेष्ठ।
योगात्मन्–भगवान् के १०८ नामों में एक नाम।
योगात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
योगिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
योगिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
योगिवन्दित–भगवान् के नामों में एक नाम।
योगीन्द्र–भगवान् के नामों में एक नाम। ०एक आचार्य।
योगीश्वरार्चित–भगवान् के नामों में एक नाम।

र

रतिषेण–विदेह का एक राजा।
रत्नगर्भ–भगवान् के नामों में एक नाम।
राजर्षि–राजा श्रेणि राजगृही का राजा।
राजशेखर-प्राकृत सट्टक के प्रथम रचनाकार।

ल

लक्षण्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
लक्ष्मण-दशरथ पुत्र।
लक्ष्मी–षट्कुमारी देवियों में से एक देवी।
लक्ष्मीपति–भगवान् के नामों में एक नाम।
लक्षमीमति–पुण्डरीकिणी नगरी के राजा वज्रदन्तकी स्त्री।
लक्ष्मीमती–हस्तिनापुर के राजा सोमप्रभ की स्त्री।
लक्ष्मीवत्–भगवान् के नामों में एक नाम।
ललिताङ्ग–एक देव श्रीवर्मा की माता मनोहरा का जीव।
ललिताङ्ग–एक देव-महाबल का।
लोकचक्षुष्–भगवान् के नामों में एक नाम।
लोकज्ञ–भगवान् के नामों में एक नाम।
लोकधातृ–भगवान् के नामों में एक नाम।
लोकनाथ-त्रिलोक के स्वामी।
लोकपति–भगवान् के नामों में एक नाम।
लोकवत्सल्–भगवान् के नामों में एक नाम।
लोकाध्यक्ष–भगवान् के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोकालोकप्रकाशक–भगवान् के नामों में एक नाम।

लोकेश–भगवान् के नामों में एक नाम।

लोकोत्तर–भगवान् के नामों में एक नाम।

लोलुप–सुप्रतिष्ठितनगर का हलवाई।

लोहार्य–प्रथम अंग के ज्ञाता एक मुनि।

व

वचन-आगम व्यवहार, कथन, प्रतिपादन।

वचसामीशः–भगवान् के नामों में एक नाम।

वज्रजङ्घ–विदेहक्षेत्र पुष्कलावतीदेश-उत्पलखेटनगर के राजा वज्रबाहु और रानी वसुन्धरा का पुत्र ललिताङ्ग का जीव।

वज्रजङ्घार्य–वज्रजंघ का जीव जो कि भोगभूमि में आर्य हुआ था।

वज्रदन्त–वज्रनाभिका पुत्र।

वज्रनाभि–पुण्डरीकिणी के राजा वज्रसेन और रानी श्री कान्ता का पुत्र।

वज्रबाहु–विदेहक्षेत्र पुष्कला वतीदेश उत्पलखेट नगर का राजा।

वज्रसेन–जम्बूद्वीप पूर्व विदेह क्षेत्र पुण्डरीकिणी नगरी का राजा।

वदतांवर–भगवान् के नामों में एक नाम।

वन्द्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

वर्तना–द्रव्यों की पर्यायों के बदलने में सहायक काल द्रव्य की एक परिणति। ०प्रवर्तन, ०परिवर्तन।

वरद–भगवान् के नामों में एक नाम।

वरदत्त–राजा विभीषण और रानी प्रियदत्ता का पुत्र, यह शार्दूलका जीव है।

वरप्रद–भगवान् के नामों में एक नाम।

वर्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

वरवीर–भगवान् आदि नाथ का पुत्र।

वर्षीयस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

वरसेन–नागदत्त और सुमतिका पुत्र।

वरसेन–नन्दिषेण और अनन्तमती का पुत्र, यह शूकर का जीव है।

वराहार्य–वराह का जीव जो कि भोगभूमि में आर्य हुआ था।

वरिष्ठधी–भगवान् के नामों में एक नाम।

वरेण्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

वरेण्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

वशिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

वश्येन्द्रिय–भगवान् के नामों में एक नाम।

वसन्तसेना–विजयपुर के राजा महानन्द की स्त्री।

वसुन्धरा–विदेहक्षेत्र पुष्पकला वतीदेश उत्पलखेटनगर के राजा वज्रबाहु की स्त्री।

वसुन्धरा–धातकी खण्ड पश्चार्ध भाग के पूर्वविदेहसम्बन्धी वत्सकावती देश की प्रभा करीनगरी के राजा महासेन की स्त्री।

वस्त्राङ्ग–सर्वप्रकार के वस्त्र देने वाला एक कल्प-वृक्ष।

वागीश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।

वाग्मिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

वाचस्पति–भगवान् के नामों में एक नाम।

वाचस्पति–भगवान् के नामों में एक नाम।

वातरशन–भगवान् के नामों में एक नाम।

वादिसिंह–एक पूर्ववर्ती आचार्य।

वानरार्य–वानर का जीव जो कि वानर के बाद भोगभूमि में उत्पन्न हुआ।

वायुमूर्ति–भगवान् के नामों में एक नाम।

वासव–विजयार्ध के गन्धर्व नगर के राजा एक विद्याधर।

वासव–महापूतजिनालय में पण्डिता धाय के द्वारा प्रसारित चित्रपट के कल्पित ज्ञाता धूर्त।

वासवादत्ता-एक प्रसिद्ध गणिका।

वासुपूज्य–बारहवें तीर्थंकर।

विकलङ्क–भगवान् के नामों में एक नाम।

विकल्मष–भगवान् के नामों में एक नाम।

विकसित–वत्सकावती सुसीमा नगर का एक विद्वान् (प्रहसित का मित्र)।

विक्रमाङ्कदेवचरित्र-ग्रन्थ का नाम।

विक्रमिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

विघ्नविनायक–भगवान् के नामों में एक नाम।

विजय–ग्यारह अङ्ग दर्शपूर्व के ज्ञाता एक मुनि।

विजय–वज्रसेन और श्रीकान्ता का पुत्र (शार्दूलका जीव)।

विजय–भगवान् के नामों में एक नाम।

विजितान्तक–भगवान् के नामों में एक नाम।

विजिष्णु–भगवान् के नामों में एक नाम, विशेषेण जेतुं शीलो विजिष्णुः।

विदांवर–भगवान् के नामों में एक नाम।

विद्याघर–नाम विशेष।

विद्यानिधि–भगवान् के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्युल्लता–ललिताङ्ग देव की प्रधान देवी।
विद्वस्–भगवान् के नामों में एक नाम।
विधाता–भगवान् आदिनाथ का नाम। ०ब्रह्मा।
विधातृ–भगवान् के १०८ नामों में एक नाम, कर्मभूमेर्व्यवस्था विधानात् विधाता। विदधातीति विधाता।
विधि–भगवान के नामों में एक नाम।
विनमि–भगवान आदिनाथ के साले महाकच्छ का पुत्र
विनयन्धर–एक मुनिराज।
विनेतृ–भगवान के नामों में एक नाम।
विनेयजनताबन्धु–भगवान के नामों में एक नाम।
विनयात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
विपुलज्योतिसू–भगवान के नामों में एक नाम।
विभय–भगवान के नामों में एक नाम।
विभव–भगवान के नामों में एक नाम।
विभावसु–भगवान के नामों में एक नाम।
विभीषण–श्रीधर और मनोरमा का पुत्र।
विभीषण–विदेह क्षेत्र वत्सकावती देश का राजा।
विभु–भगवान के नामों में एक नाम, विशेषण भवतीति विभुः।
विभु–भगवान के १००८ नामों में से एक नाम।
विमल–तेरहवें तीर्थकर।
विमलवाह–विदेह एक तीर्थकर।
विमलवाहन–सातवाँ कुलकर।
विमुकतात्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
वियोग–भगवान के नामों में एक नाम, विगतो योग आतमपरिष्पन्दो यस्य सः।
वियोनिक–भगवान के नामों में एक नाम, पुनर्जन्म रहितत्वाद विगता योनिर्यस्य स वियोनिकः।
विरजस्–भगवान के नामों में एक नाम।
विरत–भगवान के नामों में एक नाम।
विराग–भगवान के नामों में एक नाम।
विलीनाशेषकल्मष–भगवान के नामों में एक नाम।
विवित्क–भगवान के नामों में एक नाम।
विवेद्–भगवान के नामों में एक नाम।
विशाल–भगवान के नामों में एक नाम।
विशिष्ट–भगवान के नामों में एक नाम।
विशोक–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्रुत–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्रकर्मन्–भगवान के नामों में एक नाम।
श्रिकर्मन–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्रकर्मा–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्रजिद्–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्रज्योतिष्–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्रतःपाद–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्रतश्चक्षु–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्रतोक्षमयज्योति–भगवान के १०८ नामों में एक नाम, विश्वतः समन्तात् अक्षमयं आत्मरूपं ज्योतिर्यस्य सः।
विश्रतोमुख–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वध्ग्–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वध्श्वन्–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वनायक–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वमावदि्–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वभुज्–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वभुद्–भगवान के नामों में एक नाम, विश्वं बोधतीति विश्वभुद्।
विश्वभू–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वभूतश–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वभृद्–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वमूर्ति–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वयोनि–भगवान के नामों में एक नाम, विश्वेषां गुणानामुत्पादकत्वाद् विश्वयोनिः।
विश्वयोनि–भगवान के नामों में एक नाम।
विश्वरीश–भगवान के नामों में एक नाम,विश्वरी पृथ्वी तस्या ईशाः।
विश्वरूपात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
विश्वलोकेश–भगवान् के नामों में एक नाम।
विश्वलोचन–भगवान् के नामों में एक नाम। ०एक संस्कृत कोश।
विश्वविद्–भगवान् के नामों में एक नाम।
विश्वविद्यामहेश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।
विश्वविद्येश–भगवान् के नामों में एक नाम।
विश्वव्यापिन्–भगवान् के नामों में एक नाम,सर्वज्ञत्वेन विश्वं व्याप्नोतीति विश्व व्यापी।
विश्वव्यापिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
विश्वशीर्ष–भगवान् के नामों में एक नाम।
विश्वसृज्–भगवान् के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विश्वात्मन–भगवान् के नामों में एक नाम।

विश्वाराट्–भगवान् के नामों में एक नाम, विश्वस्मिन् राजते शोभत इति विश्वा राट विश्वस्य वसुराटेः इति पूर्वपदस्य दीर्घः।

विश्वाशिष्–भगवान् के नामों में एक नाम।

विश्वेट्–भगवान् के नामों में एक नाम, ईटटे ऐश्वर्य सम्पन्नो भवतीति ईट्, विश्वेषामीट् इति विश्वेट।

विश्वेड–ससांर के स्वामी भगवान आदिनाथ।

विश्वेश्–भगवान् के नामों में एक नाम।

विश्वेश्–भगवान् के नामों में एक नाम।

विष्टरश्रवस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

विष्णु–भगवान् के १०८ नामों में एक नाम, केवल ज्ञानापेक्षाया व्यापकत्वाद् विष्णु।

विष्णु–चौदह पूर्व के ज्ञाता एक मुनि।

विसाखाचार्य–ग्यारह अङ्ग दश पूर्व के धारक एक मुनि।

विहतान्तक–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीतकल्मष–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीतमत्सर–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीतराग–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीतभी–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीर–भगवान् महावीर।

वीर–भगवान आदिनाथ का पुत्र।

वीर–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीरबाहु–श्रीमती और वज्रजङ्घ का पुत्र।

विसाखाचार्य–ग्यारह अङ्ग दश पूर्व के धारक

विहतान्तक–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीतकल्मष–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीतमत्सर–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीतराग–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीतभी–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीर–भगवान् महावीर।

वीर–भगवान आदिनाथ का पुत्र।

वीर–भगवान् के नामों में एक नाम।

वीरबाहु–श्रीमती और वज्रजङ्घ का पुत्र।

वृष–भगवान् के नामों में एक नाम।

वृषकेतु–भगवान् के नामों में एक नाम।

वृषध्वज–भगवान् के नामों में एक नाम।

वृषपति–भगवान् के नामों में एक नाम।

वृषभ–प्रथम तीर्थकर, इन्हें ऋषभ अथवा आदिनाथ भी कहते हैं।

वृषभ–प्रथम तीर्थकर। ०स्वच्छ, ०शुद्ध, ०निर्मल।

वृषभ–भगवान् आदिनाथ वृषेण धर्मेण भाति शोभत इति वृषभः। –बैल। ०एक आचार्य वृषभसेन।

वृषभ–भगवान आदिनाथ के नामों में एक नाम वृषेण ध र्मेण भातीति वृषभः।

वृषभ–भगवान् के नामों में एक नाम।

वृषभध्वज–भगवान् के नामों में एक नाम, वृषभो वलीवर्दी ध्वजो चिह्नं यस्य सः।

वृषभसेन–भगवान् ऋषभदेव का पुत्र। ०सक कवि विशेष।

वृषभसेन–भगवान आदिनाथ का पुत्र जो कि पीछे चलकर उन्हीं का गणधर हुआ।

वृषभाङ्क–भगवान् के नामों में एक नाम।

वृषाधीश–भगवान् के नामों में एक नाम।

वृषायुध–भगवान् के नामों में एक नाम।

वृषोद्भव–भगवान् के नामों में एक नाम।

वेदविद्–भगवान् के नामों में एक नाम।

वेदविद्–भगवान् के नामों में एक नाम।

वेदवेध–भगवान् के नामों में एक नाम।

वेदाङ्ग–भगवान् के नामों में एक नाम।

वेद्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

वेधस–भगवान् के नामों में एक नाम।

वैकृतान्तकृत–भगवान् के नामों में एक नाम।

वैजयन्त–वज्रसेन और श्रीकान्ता का पुत्र (वराहका जीव)।

व्यक्तवाच–भगवान् के नामों में एक नाम।

व्यक्तशासन–भगवान् के नामों में एक नाम।

व्योममूर्ति–भगवान् के नामों में एक नाम।

श

शक्त–भगवान् के नामों में एक नाम।

शङ्कर–भगवान् के नामों में एक नाम, शं करोतीति शंकर।

शङ्कर–भगवान् के नामों में एक नाम।

शतबल–सहस्रवल का पुत्र।

शतबल–महाबल विद्याधर का पितामह बाबा।

शतमति–राजा महाबल का मन्त्री।

शत्रुघ्न–भगवान् के नामों में एक नाम। ०दशरथ पुत्र।

शम्भव–भगवान् के नामों में एक नाम।

शम्भव––भगवान् के नामों में एक नाम, शं सुख भवति यस्मात् स शम्भुः।

शमात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शमिन–भगवान् के नामों में एक नाम।

शरण्य–भगवान् के नामों में एक नाम, शरणे साधु शरण्य।

शरण्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

शंवत्–भगवान् के नामों में एक नाम।

शंवद–भगवान् के नामों में एक नाम।

शंवद–भगवान् के नामों में एक नाम, शं सुखं वदतीति शंवद।

शयुं–भगवान् के नामों में एक नाम, शं विधते यस्य सः शंयुः मतुबर्थे, प्रत्ययः।

शान्त–भगवान् के नामों में एक नाम।

शान्त–भगवान् के नामों में एक नाम।

शान्तारि–भगवान् के नामों में एक नाम।

शान्ति–भगवान् के नामों में एक नाम।

शान्ति–सोलहवें तीर्थकर।

शान्तिकृत–भगवान् के नामों में एक नाम।

शान्तिवद्–भगवान् के नामों में एक नाम।

शान्तिनिष्ठ–भगवान् के नामों में एक नाम।

शान्तिभाज्–भगवान् के नामों में एक नाम।

शान्तिसार–आचार्य विशेष।

शार्दूलार्य–शार्दूलार्य जीव जो भोग भूमि में आर्य हुआ था।

शाश्वत–भगवान् के नामों में एक नाम।

शासितृ–भगवान् के नामों में एक नाम।

शास्तृ–भगवान् के नामों में एक नाम।

शांतकुम्भनिप्रभ–भगवान् के नामों में एक नाम।

शिव–भगवान् के नामों में एक नाम।

शिव–भगवान् के नामों में एक नाम।

शिव–भगवान् के नामों में एक नाम।

शिवकोटि–मूलाराधना के कर्ता शिवार्य।

शिवताति–भगवान् के नामों में एक नाम।

शिवप्रद–भगवान् के नामों में एक नाम।

शिष्ट–भगवान् के नामों में एक नाम।

शिष्टभुज्–भगवान् के नामों में एक नाम।

शिष्टेष्ट–भगवान् के नामों में एक नाम।

शीतल–दसवां तीर्थंकर।

शीलसागर–भगवान् के नामों में एक नाम।

शुचि–भगवान् के नामों में एक नाम।

शुचिश्रवस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

शुद्ध–भगवान् के नामों में एक नाम।

शुद्ध–भगवान् के नामों में एक नाम।

शुभलक्षण–भगवान् के नामों में एक नाम।

शुभंयु–भगवान् के नामों में एक नाम।

शूर–भगवान् के नामों में एक नाम।

शेषुषीश–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्र

श्रायसोक्ति–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्री–षट्कुमारी देवियों में एक देवी जो कि हिमवत्कुला चल के सरोवर में रहती है।

श्रीकान्ता–नागदत्त और सुमति की पुत्री।

श्रीकान्ता–पुण्डरीकिणी नगरी के राजा वज्रसेन की स्त्री।

श्रीगर्भ–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्रीधर–एक देव जो कि वज्रजंघ का जीव, भोगभूमि के बाद ऐशान स्वर्ग के श्री प्रभविमान में उत्पन्न हुआ था।

श्रीधर–विदेहक्षेत्र मङ्गालावती देश के रत्नसंचय नगर का राजा। एक आचार्य।

श्रीनिवास–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्रीपाल–एक पूर्ववर्ती आचार्य। ०एक राजा।

श्रीमती–मतिवर मन्त्री की माता।

श्रीमती–पुण्डरीकिणीनगरी के राजा वज्रदन्त और रानी लक्ष्मीपति की पुत्री (ललितांग की स्त्री स्वयं प्रभा का जीव)।

श्रीमान्–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्रीवर्मा–श्रीधर और मनोहरा का पुत्र।

श्रीवर्मा–सिंहपुर के राजा श्रीषेण और सुंदरी का छोटा पुत्र।

श्रीवीरसेन–जिनसेन के गुरु षट् खण्डागम के टीकाकार।

श्रीवृक्षलक्षण–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्रीश–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्रीश्रितपादाब्ज–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्रीषेण–सिंहपुर का राजा।

श्रीषेण–सिंहपुर का राजा।

श्रुतकीर्ति–आनन्द पुरोहित का पिता।

श्रुतात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्रेणिक–राजगृही का राजा।

श्रेयस्–हस्तिनापुर के राजा सोमप्रभ का छोटा भाई श्रेयान्स जिसने भगवावन् ऋषभनाथ को सर्वप्रथम आहार दिया था।

श्रेयस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

श्रेयान्–दानतीर्थ का प्रवर्तक हस्तिनापुर के राजा सोमप्रभ का भाई, श्रीमती का जीव।

श्रेयोनिधि–भगवान् के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रेष्ट–भगवान् के नामों में एक नाम।
श्लक्ष्ण–भगवान् के नामों में एक नाम।

स

सगर-द्वितीय चक्रवर्ती सत्कृत्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
सत्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
सत्यपरायण–भगवान् के नामों में एक नाम।
सत्यभामा–अमृतमति मन्त्री की स्त्री।
सत्यवाच्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सत्यविज्ञान–भगवान् के नामों में एक नाम।
सत्यशासन–भगवान् के नामों में एक नाम। ०एक ग्रन्थ विशेष।
सत्यसन्धान–भगवान् के नामों में एक नाम।
सत्यात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सत्याशिष्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सदागति–भगवान् के नामों में एक नाम।
सदातृप्त–भगवान् के नामों में एक नाम।
सदाभाविन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सदाभोग–भगवान् के नामों में एक नाम।
सदायोग–भगवान् के नामों में एक नाम।
सदाविद्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
सदाशिव–भगवान् के नामों में एक नाम। ०नाम विशेष।
सदासौख्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
सदोदय–भगवान् के नामों में एक नाम।
सद्योजात–भगवान् के नामों में एक नाम।
सनातन–भगवान् के नामों में एक नाम।
सन्ध्याभ्रबभ्रु–भगवान् के नामों में एक नाम।
सन्मति–चौबीसवें तीर्थंकर।
सन्मति–दूसरा कुलकर।
समग्रधी–भगवान् के नामों में एक नाम।
समन्तभद्र–भगवान् के नामों में एक नाम। ०आचार्य नाम।
समन्तभद्र–भगवान् के नामों में एक नाम। ०आचार्य नाम।
समयज्ञ–भगवान् के नामों में एक नाम।
समाधिगुप्त–एक मुनि।
समाहित–भगवान् के नामों में एक नाम।
समुन्मीलित कर्मारि–भगवान् के नामों में एक नाम।
संभिन्नमति–राजा महाबल का मन्त्र।
सयोग–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वक्लेशापह–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वग–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वत्रग–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वदर्शन–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वदिक्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वदोषहर–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वयोगीश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वलोकजित्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वलोकातिग–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वलोकेश–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वलोकैकसारथि–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्ववित्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सर्वादि–भगवान् के नामों में एक नाम।
सलिलात्मक–भगवान् के नामों में एक नाम।
सहस्रपात्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सहस्रबल–महाबल विद्याधर के पिता के पितामह।
सहस्राक्ष–भगवान् के नामों में एक नाम।
सहिष्णु–भगवान् के नामों में एक नाम।
संभव–तृतीय तीर्थंकर।
साक्षिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सागरदत्त–हस्तिनापुर का वैश्य।
सागरसेन–एक मुनि।
साधु–भगवान् के नामों में एक नाम।
सार्व–भगवान् के नामों में एक नाम।
सारस्वत–लौकान्तिक देव का एक भेद।
सिद्ध–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्ध–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्धशासन–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्धसंकल्प–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्धसाधन–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्धसाध्य–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्धसेन–जिनसेन से पूर्ववर्ती एक महाकवि।
सिद्धात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सद्धात्मन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्धान्तविद्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्धार्थ–भगवान महावीर के पिता।
सिद्धार्थ–हस्तिनापुर के राजा सोमप्रभ का द्वार पाल।
सिद्धार्थ–ग्यारह अगं दश पूर्व के ज्ञाता एक मुनि।
सिद्धार्थ–भगवान् के नामों में एक नाम।
सिद्धिद–भगवान् के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीता–विदेह क्षेत्र की एक नदी। राम की रानी।
सीमन्धर–विदेह क्षेत्र के तीर्थकर।
सीमंकर–पाँचवाँ कुलकर।
सीमंधर–छठा कुलकर।
सुकृतिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुखद–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुखसादूत–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुगत–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुगति–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुगुप्त–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुगुप्तात्मन–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुघोष–उत्तम ध्वनि।
सुतनु–सुन्दर शरीर।
सुत्रामपूजित–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुत्वन–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुदत्ता–धान्यपुर के कुबेर वणिक की स्त्री।
सुदर्शन–सुदर्शन सेठ, शीलव्रती।
सुदर्शना–एक आर्यिका।
सुदष्टि–सुसीमा नगर का राजा।
सुधर्म–एक मुनि।
सुधर्म–गौतम के बाद होने वाले अनुवद्ध केवली।
सुधर्म–एक मुनि।
सुधी–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुधी–(सुगी:) भगवान के नामों में एक नाम।
सुधौतकलद्योतश्री–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुनन्दा–आदिनाथ की पटरानी।
सुनय–एक नाम।
सुनयतत्ववित्–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुन्दरनन्दा–मुसीमा नगर के राजा सुदृष्टि की स्त्री।
सुन्दरी–सिहं पुर के राजा श्रीषेण की स्त्री।
सुन्दरी–गर्न्वपुर के राजा मन्दरमाली की स्त्री।
सुनदरी–राजा प्रियसेन की स्त्री।
सुन्दरी–रत्नसचंय नगर के राजा महीधर की स्त्री।
सुन्दरी–भगवान आदिनाथ की सुन्नदा स्त्री से उत्पन्न पुत्री।
सुपार्श्व–सप्तम तीर्थकर।
सुप्रभ–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुप्रभा–अयोध्या के राजा जय वर्मा की स्त्री।
सुप्रसन्न–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुबाहु–वज्रसेन और श्रीकान्ता का पुत्र (मतिवर मन्त्री का जीव।
सुभग–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुभद्र–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुभुत्–(सुभृत) भगवान के नामों में एक नाम (सुष्ठु ज्ञाता) (सुष्ठु पोपक:)।
सुभग–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुभ्रद्र–प्रथम अङ्ग के ज्ञाता एक मुनि।
सुभुत्–(सुभृत) भगवान के नामों में एक नाम (सुष्ठु पोपक:)।
सुमति–पंचम तीर्थकर।
सुमति–पाटलीग्राम के नागदत्त वणिक्पुत्र की स्त्री।
सुमति–पलालपर्वत ग्राम के देविल नामक पटेल की स्त्री।
सुमुख–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुमेधस–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुयज्वन–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुरूप–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुलोचना–एक राज कन्या।
सुवर्णवर्ण–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुवाच–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुविधि–सुसीमा नगर के राजा सुदृष्टि और रानी सुन्दरनन्दा का पुत्र (वज्रजड्घ श्रीनगर देव का जीव)।
सुविधि–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुव्रत–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुश्रुत–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुश्रुत–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुषमादु:षमा–अवसर्पिणी का तीसरा काल।
सुसंवृत–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुसंस्कार–(वैकल्पिक)भगवान् के नामों में एक नाम।
सुसौभ्यात्मन–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुस्थित–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुस्थिर–भगवान् के नामों में एक नाम।
सुहित–एक नाम।
सुहृत–एक नाम।
सूक्ष्म–एक नाम।
सूक्ष्म–एक नाम।
सूक्ष्मदर्शिन–एक नाम।
सूति–उत्पादक।
सूनृतपूतवाच–एक नाम।
सूर्यकोटिसमप्रभ–सर्वज्ञ।
सूर्यमूर्ति–एक नाम दिव्य मूर्ति।
सूरि–भगवान् के नामों में एक नाम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्रष्टृ–भगवान् के नामों में एक नाम, कर्मभूमिव्यव स्थाया: सर्जनात् स्रष्टा।

स्रष्टा–भगवान आदिनाथ का नाम।

सोमदेव–एक आचार्य। ०एक कवि।

सोमप्रभ–कुरूवशं का राजा हस्तिनापुर जिसकी राजधानी थी।

सोममूर्ति–भगवान् के नामों में एक नाम।

सौम्य–एक नाम चन्डा।

स्तवनार्ह–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्तुतीश्वर–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्तुत्य–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्थविर–एक नाम वृद्ध।

स्थविष्ट–एक नाम, अतिशयेन स्थूल: स्थविष्ठ।

स्थवीयस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्थवीयस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्थाणु–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्थावर–एक नाम।

स्थास्नु–एक नाम।

स्थास्न (स्थाणु)–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्थेयस्–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्थेष्ठ–भगवान् के नामों में एक नाम, अतिशयेन स्थिर:।

स्नातक–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्पष्ट–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्पष्टाक्षर–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्त्रष्ट–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वतन्त्र–भगवान् के नामों में एक नाम, सुष्ठु अन्तो यस्य स:।

स्वभू–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वामिन्–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वयम्प्रभ–एक देव जो कि श्रीमती का जीव भोग भूमि के बाद स्वयम्प्रभ विमान में देव हुआ।

स्वयम्प्रभा–ललितांग देव की प्रधान देवी।

स्वयम्बुद्ध–राजा महा बल का मन्त्रीं

स्वयम्बुद्ध–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वयम्भू–भगवान् महावीर।

स्वयंप्रभ–एक मुनि।

स्वयंप्रभजिन–विदेह के तर्थकर।

स्वयंप्रभ–एक देव जो कि वज्रजंघ की स्त्री श्रीमती का जीव था।

स्वयंप्रभ–भगवान के नामों में एक नाम, स्वयं प्रभा यस्य स: स्वयंप्रभ:।

स्वयंप्रभ–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वयंप्रभ–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वयंप्रभा–ललिताङ्ग देव की ३-९ पल्यकी आयु बाकी रहने पर उत्पन्न होने वाली एक देवी।

स्वयंप्रभा–ललिताङ्ग देव की स्त्री।

स्वयंभू–प्रथम तीर्थकर।

स्वयंभू–भगवान् के नामों में एक नाम, स्वयं भवतीति स्वयंभू।

स्वयंभू–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वयंभूष्णु–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वर्णाभ–भगवान् के नामों में एक नाम।

स्वसंवेद्य–एक नाम।

स्वस्थ–एक नाम।

स्वास्थ्यभाज्– एक नाम।

ह

हतदुर्नय–एक नाम।

हर–एक नाम, हरित कर्मशत्रूनिति हर:।

हरि (हरिकान्त)–हरिवंश का एक राजा जिसे सर्वप्रथम भगवान् आदिनाथ ने स्थापन किया था।

हरि–भगवान् के १०८ नामों मे एक नाम।

हरिचन्द्र–अरविंद विद्याधर का महाकाव्य। धर्म शर्माभ्युदय। ०एक जैल।

हरिवाहन–विजयपुर के राजा महानन्द की वसन्त सेना स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

हरिषेण–जोर्णि पाहुड के रचनाकार।

हविर्भुक्–भगवान् के नामों में एक नाम।

हविष्–भगवान् के नामों में एक नाम।

हव्य्–भगवान् के नामों में एक नाम।

हाटकद्युति्–भगवान् के नामों में एक नाम।

हिरण्यगर्भ्–भगवान् के नामों में एक नाम, हिरण्यं गर्भे यस्य स:। गर्भकाले हिरण्यवृष्टित्वात्।

हिरण्यर्ण्–भगवान् के नामों में एक नाम।

हृषीकेश्–भगवान् के नामों में एक नाम।

ह्री–षट्कुमारी देवियों में से एक देवी।

हेतु–भगवान् के नामों में एक नाम।

हेमगर्भ–भगवान् के नामों में एक नाम।

हेमाभ–भगवान् के नामों में एक नाम।

हेयादेयविचक्षण–भगवान् के नामों में एक नाम।

होतृ–भगवान् के नामों में एक नाम।

◇◇◇

For Private and Personal Use Only

विशिष्ट शब्द

अ

अकल्य—नपुंसक।

अकारु—धोबी आदि से भिन्न।

अकृत्त—अच्छिन्न।

अकृष्टपच्य—बिना हल जोते बखरे अपने-आप पैदा होने वाला धान्य।

अक्ष—बहेड़ा। आत्मा ०इन्द्रिय।

अक्षग्राम—इन्द्रियों का समूह।

अक्षणनीय—अछेद्य।

अगोष्पद—अत्यंत निर्जन जहां गायों का पहुंचना कठिन है ऐसे दुर्गम वन।

अग्रमहिषी—प्रधान देवी।

अङ्ध्रिप—प्रधान देवी।

अङ्भृत्—प्राणी, पक्ष में द्वादशाङ्ग के धारी गणधर देव।

अङ्गलास—शरीर की मोड़।

अङ्गहार—अङ्ग विक्षेप नृत्यकाल में अङ्गों का विशेष रीति से चलाना।

अच्छोद्य—दृढ़तापूर्वक कहकर।

अच्युतेन्द्र—सोलहवें स्वर्ग का इन्द्र।

अच्युतेन्द्र—अविनाशी, श्रेष्ठ ऐश्वर्य से युक्त, पक्ष में भगवान् ऋषभ देव की सोलहवें स्वर्ग के इन्द्र की एक पर्याय।

अतिरुन्द्र—अत्यंत विस्तृत।

अतिवर्ती—स्वच्छंद प्रवर्तने वाला।

अनृजु—कुटिल।

अत्युक्त—छन्दों की एक जाति।

अदभ्र—विशाल।

अदेवमातृक—मेघ की वर्षा पर निर्भर नहीं रहने वाले देश।

अधर—शरीर के नीचे का भाग। ०औष्ठ।

अधिश्रित—चूल्हे पर चढ़ाया हुआ।

अधीती—अध्ययनकुशल।

अध्वयोग—छन्द शास्त्र का एक प्रकरण-प्रत्यय।

अनञ्जितासित—बिना काजल लगाये ही काले।

अनन्तचतुष्ट—१. ज्ञान, २. दर्शन, ३. सुख, ४. वीर्य।

अनसूया—ईर्ष्या का भाव। ०नाम विशेष।

अनाराम—बगीचा के रहित।

अनाशितम्भर—अतृप्तिकर।

अनाशितम्भव—अस्थिर-विनाशशील।

अनाशितम्भवम्—अतृप्तिकर।

अनाशितम्भवम्—जिसके सेवन से तृप्ति न हो। ऐसा लगता रहे कि और सेवन करूं, और सेवन करूं।

अनाश्वान्—उपवास करने वाला।

अनाश्वान्—अनशन करने वाला।

अनीश्वर—असमर्थ।

अनुक्षपम्—क्षपां क्षपामनु अनुक्षपम्, प्रत्येक रात्रि में।

अनुजिघृक्षा—स्मरण।

अनुमान—स्मरण पूर्वक ज्ञान।

अनूप—जल की बहुलतास युक्त देश।

अनेकप—हाथी।

अनेनस्—निष्पाप।

अनेहस्—काल।

अन्तर्वत्नी—गर्भिणी।

अन्धस्—भोजन।

अन्वयिनिक—जामाता के लिए देव द्रव्य-दहेज।

अन्वीपता—अनुकूलता।

अपघन—अवयव।

अपचिति—पूजा।

अपवर्तिका—यष्टिहार का भेद जिसके बीच में निश्चित प्रमाण के अनुसार स्वर्ण, मणि, माणिक्य और मोती बीच-बीच में अन्तर देकर गूंथे जाते है।

अपुनर्भवता—मोक्ष।

अप्रतिपत्ति—ज्ञान।

अब्द—दर्पण।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अब्द–वर्ष।
अब्द–मेघ।
अब्द–मेघ।
अभिगम्य–सेवनीय।
अभिजात–योग्य उचित।
अभिज्ञान–पहचान।
अभिरूप–मनोज्ञ।
अभिष्टव–नाम।
अभिसिसीर्षा–अभिसार-संभोग के लिए गमन की इच्छा।
अभुत्–अज्ञानी।
अभ्यस्त–गुणित।
अभ्युदय–स्वर्गादिका। वैभव
अमर–दिव्य, देव।
अमा–साथ।
अमा–साथ।
अमेध्यादन–विष्ठा का भक्षण।
अमृतपद–मोक्ष।
अम्भोजवासिनी–लक्ष्मी।
अयुक्छद–सप्तपर्ण।
अयुत–दस हजार।
अर्चा–प्रतिमा। ०पूजा।
अर्चिष्–ज्वाला।
अरण्यचरक–म्लेच्छों की एक जाति जो अधिकतर जंगलों में घूमती है।
अर्धमाणव–जिसमें दस लड़ियां हों ऐसा हार।
अर्धगुच्छ–जिसमें चौबीस लड़ियां हों ऐसा हार।
अर्धमागधी–प्राकृत भाषा का एक रूप।
अर्धहार–जिसमें चौंसठ लड़ियां हो ऐसा हार।
अराल–कुटिल।
अरुष्करद्रव–भिलसाका तेल।
अलीकविचरक्षण–झूठा बोलने में चतुर।
अवघाटकयष्टि–जिसके बीच में एक बड़ा और उसके आजू-बाजू में क्रम से घटते हुए छोटे मोती लगे हों ऐसी एक लड़बाली माला।
अवघाटक–यष्टि नामक हार का एक भेद।
अवधीक्षण–अवधिज्ञानी।
अवनिप–राजा।
अवपात–गर्त।
अवभृथ (मज्जन)–कार्य के अन्त में होने वाला स्नान।
अवलग्न–मध्य भाग, कमर।
अवावा (अवावन्)–दूर करने वाला, ओणृ अपनयने इत्यस्माद् धातोर्वनिपृप्रत्ययः।
अवृजिन–निष्पाप।
अशनाया–भूख।
अशोकमहाङ्घ्रिप–अशोक वृक्ष नाम का प्रातिहार्य जिस वृक्ष के नीचे भगवान् को केवल ज्ञान होता है वह वृक्ष कहलाता है।
अश्वतरी–खच्चरी।
असिधेनुका–छुरी।
अस्पृश्यकारु–प्रजा के बाह्य रहने वाले चाण्डाल आदि।
अस्वन्त–जिनका अन्त अच्छा नहीं।
अहीन्द्र–धरणेन्द्र।

आ

आगम–सूत्रग्रन्थ, आप्तवचन।
आजुहुष–बुलाने का इच्छुक।
आञ्जस–वास्तविक।
आतोद्य–वादित्र।
आत्मनीन–आत्मने हितम् आत्मनीनम्।
आत्रिक–इस लोक सम्बन्धी।
आधि–मानसिक व्यथा।
आप्तपाश–आप्ताभास कुत्सिताः आप्तपाशाः याप्येपाशप्।
आप्यायन–सन्तोषपरक।
आभिगाभिक–सब के अनुकूल।
आमुत्रिक–पारलौकिक।
आयुर्वेद–वैद्य विद्या। जीवन विज्ञान।
आयुष्य–आयुवर्धक।
आराम–शरीरादि पर्याय।
आशा–दिशा। ०अभिलाषा।
आशुशुक्षणि–अग्नि।
आहार्य–आभूषण।

इ

इक्षुधन्वा–कामदेव।
इङ्गितकोविदा–चेष्टाओं के जानने में निपुण।
इज्या–पूजा।
इन–स्वामी।
इन्द्र–देवराज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्द्रकोश—बुरज।

इन्द्रगोप—बरसात में निकलने वाला लाल रंग का एक कीड़ा बीरबहूटी।

इन्द्रच्छन्द—हार विशेष।

इन्द्रच्छन्द—जिसमें लड़ियां हों ऐसा हार। यह हार सबसे उत्कृष्ट हार है इसे इन्द्र, चक्रवर्ती तथा तीर्थंकर पहनते हैं।

इन्द्रच्छन्दमाणव—इन्द्रच्छन्द हार के बीच में एक मणि लगा देने पर इन्द्रच्छन्दमाणव कहलाता है।

इन्द्रमह—कार्तिक का महीना।

इन्द्रवृषभ—इन्द्रश्रेष्ठ।

इन्द्रस्तम्बेरम—इन्द्र का हाथी ऐरावत।

इषुधि—तरकश।

इष्टि—पूजा।

ई

ईडा—स्तुति।

ईडा—स्तुति।

ईडिडिषन्—स्तुति करने की इच्छा करता हुआ।

ईति—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूषक, शलभ, शुक और निकटवर्ती राजा। ये छह ईतियां कहलाती है।

उ

उक्ता—छन्दों की एक जाती।

उडुप—चन्द्रमा।

उक्षन्—बैल।

उक्ष—बैल।

उत्कर—सूंड ऊपर उठाये हुए।

उत्प्रोथ—जिसकी नाक ऊपर की उठी हुई है।

उदय—प्रभात।

उदन्या—प्यास।

उद्गम—पुष्प। ०आगम द्वार।

उद्व—प्रशस्त-श्रेष्ठ।

उद्वाह—विवाह।

उद्रिक्त—तीव्र उदय से युक्त।

उद्बोधनालिका—प्रज्वलित करने वाली नदी ऐसी नली जिससे सुनार लोग अग्नि को फूंकते हैं।

उपघ्न—आश्रय।

उपनता—उपस्थित।

उपमा—एक अलंकार।

उपशीर्षक—यष्टि नामक हार का एक भेद।

उपशीर्षकयष्टि—जिसके बीच में क्रम-क्रम से बढ़ते हुए तीन मोती हों ऐसी एक लड़ी वाली माला।

उपह्वर—एकान्त स्थान।

उपधि—परिग्रह।

उपायन—भेंट-उपहार।

उपालम्भ—दोष देना।

उपोद्घात—प्रस्तावना।

उरसिल—चौड़े वक्षस्थल वाला।

उस्र—किरण।

ऊ

ऊर्ध्वकाय—ऊंचा शरीर।

ए

एकचर्या—एक विहार, अकेले विहार करना।

एकद्वित्रिघुक्रिया—छन्दशास्त्र का एक प्रकरण-प्रत्यय।

एकध्य—एकपना।

एकावली—यष्टि नामक हार का भेद, एक लड़ी माला जिसके बीच में एक बड़ा मणि लगता है।

एनस्—पाप।

ऐ

ऐरावत—सफेद वर्ण का हाथी, ०इन्द्र का हाथी।

ऐरावती—ऐरावत हाथी सम्बन्धी।

ओ

ओकस्—स्थान।

औ

औदय—उदयाचल सम्बन्धी।

औरभ्र—प्रातः काल सम्बन्धी।

क

कणय—एक हथियार का नाम जिससे लकड़ी छीली जाती है।

कण्ठीरव—सिंह।

कण्ठ्य—कण्ठ स्थान से उच्चारित।

कद्वद—कुवचन बोलने वाले, कुत्सितं वदन्तीति कद्वदाः।

कनक—स्वर्ण।

कनकराजीव—स्वर्ण कमल।

कपिशीर्ष—कोट का अग्रभाग।

कपोलशब्दक—गालरूपी दर्पण।

करक—झारी।

करक—ओला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करज–नख।
करट–हाथी का गण्डस्थल।
करण–इन्द्रिय अथवा शरीर।
करण–करन्यास–नृत्य काल में हाथों का चलाना।
करणग्राम–इन्द्रिय समूह।
कर्णेजपत्व–चुगली।
कापत्र–करोंत।
करसंबाधा–टेक्स की पीड़ा।
कलकण्ठी–कोकिला।
कलत्र–नितम्ब।
कलम्बित–मिश्रित।
कलाधर–चन्द्रमा।
कल्यदेहत्व–नीरोग।
कल्याणी–पुण्यशालिनी।
कशिपु–भोजन वस्त्र।
काचवाहजन–कांवर को उठाने वाले।
काञ्चीयष्टि–मेखला।
कादम्बिक–हलवाई।
कान्ताधर–सुंदर ओंठों से युक्त।
कान्तारचर्या–वन में ही आहारर्थ भ्रमण करने की प्रतिज्ञा।
कापिल–सांख्यमत।
कायमान–तम्बू।
कार्पण्य–दीनता।
कारु–शूद्रवर्ण काय एक भेद (धोबी आदि स्पृश्य शूद्र)।
कालकालाभ–अत्यंत काले।
काष्ठा–सीमा।
किञ्जल्क–केशर।
कुक्कुटसंपात्य–पास-पास में बसे हुए।
कुणप–मुर्दा।
कुतपन्यास–वाद्यों का न्यास।
कुन्दकुन्द-आचार्य नाम।
कुथार–हाथियों पर डालने की झूल।
कुरव-खोटे–शब्द से युक्त।
कुरुध्वज–कुरुवंश में श्रेष्ठ राजा सोमप्रभ और उनके, छोटे भाई श्रेयान्स।
कुरुशार्दूल–कुरुवंश में श्रेष्ठ हस्तिनापुर के राजा सोमप्रभ।
कुलधर–कुलकर, ये तृतीय काल के अन्त में हुए हैं इनकी संख्या १४ है।
कुलपत्र–ताम्रपत्र, जिसमें वंशावली आदि लिखी जाती है।
कुलाय–घोंसला।
कुलाल–कुम्भकार।
कुविन्द–जुलाहा।
कुवली–बेर।
कुवलीफल–बैर।
कुसुमेष–कामदेव।
कूटनाटक–कपट से भरा नाटक।
कृकवाकु–मुर्गा।
कृकवाकूयित–मुर्गा के समान आचरण करने वाले।
कृतयुगारम्भ–आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन भगवान् आदिनाथ ने कृतयुग का प्रारम्भ किया था।
केशव–नारायण।
केशाकेशि–बाल पकड़कर होने वाला युद्ध।
कोकी–चकवी।
कोण–भरी बजाने में काम आने वाला दण्ड।
क्रमणल्लव–पल्लवों के समान कामल चरण।
क्रमुक–सुपारी।
क्षण–उत्सव।
क्षणदा–रात्रि।
क्षणदामुख–रजनीमुख–रात्रि का प्रारम्भ काल।
क्षणप्रभा–बिजली।
क्षतज–खून।
क्षपग–एक महीना का उपवास।
क्षामता–कृशता।
क्षेम–प्राप्त वस्तु की रक्षा करना।
क्ष्माज–वृक्ष।
क्ष्माज–वृक्ष।

ख

खरांश–सूर्य।
खाता–परिखा।
खातिका-खाई, परिखा।
खात्कृत–खकारा हुआ।

ग

गणरात्र–बहुत रात्रियां।
गत्वरी–नाशशील।
गमक–टीकाकार।
गव्यूति–एक कोश।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गीर्वाणाधिप–इन्द्र।
गुच्छ–जिसमें बत्तीस लड़ियां हों ऐसा हार।
गुरु–पिता।
गुरु–पिहितास्रवमुनि।
गुरु–पिता।
गुह्यक–देव विशेष।
गृहकोकिल–छिपकली।
गोक्षुर–गोखुरु-कांटेदार एक वनस्पति।
गोमक्षिका–गाय पर बैठने वाली एक खास प्रकार की मक्खी, जिसे ग्रामीण लोग बघही कहते हैं।

घ

घनात्यय–शरत्कारल।

च

चक्रध्वज–चक्र के चिह्न से सहित ध्वजाएं।
चक्राह्वा–चकवी।
चतुरस्रिका–चार कोन वाली।
चतुष्टय–सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक् तप इन चार आराधना रूप।
चरमाङ्ग–अन्तिम शरीर धारण करने वाला-तद्भवमोक्षगामी।
चषक–पानपात्र-कटोरा ग्लास आदि।
चामीकर–सुवर्ण।
चार्वी–सुंदरी।
चित्तजन्मा–काम।
चैत्यद्रुम-चैत्य वृक्ष–जिसके नीचे प्रतिमा विराजमान रहती है।
चोद्यचुञ्चुत्व–प्रश्न करने की निपुणता।

छ

छान्दोविचित–छन्दों का समूह।
छाया–कान्ति।

ज

जगत्त्रय–ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलाक।
जनुष्यन्ध–जन्मान्ध।
जन्य–पुत्र।
जलवाहिन्–मेघ।
जलशया–जड़ अभिप्राय वाले, पक्ष में जल से युक्त।
जल्पाक–वाचाल, बहुत बोलने वाला।
जाङ्गल–जल की दुर्लभता से युक्त देश।
जातुषी–लाख की बनी हुई।
जानभूमि–देश।
जामी–बहन।
जाल्म–नीच।
जिघृक्षु–ग्रहण करने के इच्छुक।
जिनजननसपर्या–जिनेन्द्र देव की जन्म कालीन पूजा।
जीमूत–मेघ। जीव के २ भेद–१. मुक्त, २. संसारी। जीवकं अधिगम के उपाय-सत्, संख्या आदि अनुयोग, प्रमाण, नय और निक्षेप।

त

तनूनपाद–अग्नि।
तरलप्रतिबन्धयष्टि–जिसमें सब जगह एक समान मोती लगे हों ऐसी एक लड़वाली माला।
तरलाप्रबन्ध–यष्टि नामक हार का एक भेद।
तल्प–शय्या।
तानव–कृशता।
तान्त्र–तन्त्री सम्बन्धी, तन्त्र्या अयं तान्त्रः।
तामिस्रपक्ष–कृष्णपक्ष।
तामिस्रेतरपक्ष–कृष्ण और शुक्ल पक्ष।
तायिन्–रक्षक।
तारवी–तरु-वृक्ष सम्बंधी।
तारा–आंख की पुतली।
तिरस्करिणी–परदा।
तिरीट (किरीट)–मुकुट।
तीरिका–बाण।
तुणव–वाद्य विशेष।
तुष्टूषु–स्तुति करने का इच्छुक।
तृण्या–तृणों का समूह।
तोक–पुत्र।
तौयान्तिकी–आकण्ठ जलपूर्ण।
त्रिकूट–लंका का आधारभूत-पर्वत।
त्रिदोष–वात, पित्त, कफ।
त्रिरत्न–सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चरित्र।
त्रिरूपमुक्त्यङ्ग–१. सम्यग्दर्शन, २. सम्यग्ज्ञान, ३. सम्यक्-चारित्र।
त्रिवर्ग–धर्म, अर्थ, काम।
त्रिवेद–तीन वेद-ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद।
त्रिसाक्षिकम्–आत्मा, देव और सिद्ध परमेष्ठी की साक्षीपूर्वक।

द

दम–इन्द्रियों का वश करना।
दम्य–बछड़ा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दम्य–बछड़ा।

दम्यक–बछड़ा।

दर–कुछ।

दवथु–सन्ताप।

दवीयसी–अत्यंत दूर रहने वाला।

दशप्राण–काव्य के दस गुण। १. श्लेष, २. प्रसाद, ३. समता। ४. माधुर्य, ५. सुकुमारता, ६. अर्थव्यक्ति, ७. उदरता, ८. ओज, ९. कान्ति और १०. समाधि।

दशा–बत्ती, पक्षे अवस्था।

दशावतार–भगवान् ऋषभ देव के महाबल आदि १० पूर्व भव।

दात्यूह–कृष्ण वर्ण का एक पक्षी।

द्वादशगण–समवसरण में भगवान् के चारों ओर १२ सभा मण्डप होते हैं जिनमें क्रम से–१. गणधरादि मुनिजन, २. कल्पवासिनी देवियां, ३. आर्यिकाएं और मनुष्यों की स्त्रियां, ४. भवनवासिनी देवियां, ५. व्यन्तरिणी देवियां, ६. ज्योतिष्क देवियां, ७. भवनवासी देव, ८. व्यन्तर देव, ९. ज्योतिष्कदेव, १०. कल्पवासी, ११. मनुष्य और १२ पशु बैठते हैं। यही द्वादशगण कहलाते हैं।

दाम–करधनी। ०माला।

दिध्यासु–ध्यान करने के इच्छुक।

दिव्य–स्वर्ग सम्बन्धी। ०देव सम्बंधी, ०यथेष्ठ।

दिव्यचक्षुः–अवधि ज्ञान रूपी नेत्र को धारण करने वाले।

दिव्यहंस–अहमिन्द्र भगवान् आदिनाथ का जीव।

दिव्याष्टगुण–१. अनन्त ज्ञान, २. अनन्तदर्श, ३. अव्याबाधत्व, ४. सम्यक्त्व, ५. अवगाहनत्व, ६. सूक्ष्मत्व, ७. अगुरुलघुत्व, ८. अनन्त वीर्य।

दिव्यास्थानी–समवसरणभूमि।

द्विरूपोपयोग–१. ज्ञानोपयोग, २. दर्शनोपयोग।

दीधितिमालिन्–सूर्य।

दीर्घनिद्रा–मृत्यु।

दुर्गत–दरिद्र। ०विक्षोभ।

दूष्यकुटी–कपड़े की चांदनी।

दृब्ध–रचित।

देव–मेघ।

देवच्छन्द–जिसमें मोतियों की इक्यासी लड़ियां हों ऐसा हार।

देवधिष्ण्य–देवगृह–जिन मन्दिर।

देवमातृक–मेघ कीवर्षा पर निर्भर रहने वाले।

दोष्–भुजा।

दोष्–भुजा।

दोहद–गर्भकालीन इच्छा।

दौर्गत्य–दारिद्र्य।

द्युम्न–सुवर्ण।

ध

धनुर्वेद–शस्त्र विद्या।

धनुष्–चार हाथ प्रमाण।

धम्मिल–बालों का बंधा हुआ जूड़ा।

धात्रीफल–आंवला।

धारागृह–फव्वारा।

धेनुक–गायों का समूह।

धौरेय–श्रेष्ठ।

न

नक्षत्रमाला–इस नाम का एक हार।

नक्षत्रमाला–जिसमें २७ लड़ियां हों ऐसा हार।

नदीन–समुद्र।

नन्दन–पुत्र।

नभस्वत्–वायु।

नयचक्र–नीति से युक्त सुदर्शन चक्ररत्न (पक्ष में नैगमादि नयों का समूह)।

नलिन–कमल।

नवकेवललब्धि–१. केवलज्ञान, २. केवलदर्शन, ३. क्षायिक सम्यक्त्व, ४. क्षायिकचारित्र, ५. क्षायिकदान, ६. क्षायिकलाभ, ७. क्षायिकभोग, ८. क्षायिकउपभोग, ९. क्षायिक वीर्य।

नवपुण्य–नवधाभक्ति–१. प्रतिग्रहण-पडिगाहूना। २. उच्च स्थान पर बैठाना, ३. पैर धोना, ४. अष्टद्रव्य से पूजा करना, ५. नमस्कार करना, ६. मनशुद्धि, ७. वचनशुद्धि, ८. कायशुद्धि और ९ अन्न जलशुद्धि।

नष्ट–छन्दशास्त्र का एक प्रकरण प्रत्यय।

नाभि–नाभि-उदरगत।

नायक–हार के बीच का बड़ा मणि।

नार्पत्य–राज्य, नृपतेभविः कर्म वा नार्पत्यम्।

निकृति–कपट।

निधुवन–सम्भोग।

निभमात्र–छलमात्र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निर्णिक्ता–पोषक (पक्ष में युद्ध)।
निर्याण–अपांग प्रदेश आंख के कटाक्ष का निकटवर्ती प्रदेश, ढोह।
निर्वापिणी–सुखकारिणी-संतोषदायिका।
निर्विण्ण–विरक्त।
निर्वृत–समाप्त।
निर्वृति–निर्वाण-मोक्ष।
निर्वृति–सुख।
निर्वृति–समाप्ति।
निरारेका–सन्देह रहित।
निरारेका–संदेह रहित।
निरोति–अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूषण, शलभ, शुक और निकटवर्ती शत्रु राजा इन छह ईतियों से रहित।
निलिम्प–देव।
निवात–वायु के संचार से रहित।
निशान–तीक्ष्ण करना।
नि:श्रेयस–मोक्ष।
नि:श्रेयस–मोक्ष।
निष्क्रम–निकलना।
निष्क्रमण–दीक्षा धारण करना।
निषङ्ग–तरकश।
निष्ठयूत–थूका हुआ।
निष्ठा–समाप्ति। ०आस्था।
निष्ठितायु–जिसकी आयु पूर्ण हो चुकी है-मरणोन्मुख।
निष्ठितार्थ–कृतकृत्य।
निष्प्रवीचार–मैथुन रहित।
नीकाश–सदृश।
नीड–आश्रय।
नीहारांशु–चन्द्रमा।
नैगम–वैश्य। ०नय विशेष।
नैर्ग्रन्थी–दिगम्बर मुनि सम्बन्धी।
नै:संगी–दिगम्बर मुनि सम्बन्धी।

प

पङ्कजवासिनी–लक्ष्मी।
पञ्चकल्याण–१. गर्भ, २. जन्म, ३. तप, ४. ज्ञान, ५. निर्वाण।
पञ्चब्रह्मन्–१. अरहन्त, २. सिद्ध, ३. आचार्य, ४. उपाध्याय, ५. साधु।
पञ्चयन्ती–विस्तार करती हुई।
पञ्चाश्चर्य–१. रत्नवृष्टि, २. पुष्पवृष्टि, ३. गन्धोदकवृष्टि, ४. मन्दसुगन्धित पवन और ५. 'अहोदानं अहोदानं' की ध्वनि।
पटवास–कपड़ों को सुवासित करने वाला चूर्ण।
पटविद्या–विषा पहरण विद्या।
पणव–वाद्य विशेष।
पतत्पति–पक्षियों का स्वामी गरुड़।
पतिब्रुव–अपने को झूठ ही पति बतलाने वाले।
पत्र–पत्ते, पक्ष में वाहन।
पत्रिन्–पक्षी।
पदशास्त्र–व्याकरणशास्त्र।
पद्मविष्टर–पद्मासन।
पद्मा–लक्ष्मी।
पद्माकर–कमलों से सुशोभित तालाब-कमलवन।
पयस्विनी–दूध देने वाली गाय।
पयोधर–मेघ।
परचक्र–परराष्ट्र।
पर्जन्य–मेघ।
परासुना–मृत्यु।
परिक्रम–नृत्य काल में पाद विक्षेप अथवा फिरकी लगाना।
परिक्रम–पदविन्यास।
परिगति–प्रदक्षिणा।
परिणत–पके हुए।
परिणेता–विवाह करने वाले अथवा परि उपसर्गपूर्वक नीञ् धातु का लुट्लंकार का रूप विवाह करेंगे।
परिष्वक्त–आलिंगित।
पल्वल–छोटा तालाब।
पाकसत्त्व–क्रूर पशु।
पाणविक–पणवाद्य को बजाने वाला।
पादात–पैदल-सैनिकों का समूह।
पाप्मा–पापी।
पार्थिव–वृक्ष, पक्ष में, राजा पृथिव्यां भवा: पार्थिवा वृक्षा: पृथिव्या अधिपा: पार्थिवा राजान:।
पार्थिवकुंजर–श्रेष्ठ राजा।
पारदृश्वरी–पार को देखने वाली।
पार्वण–पूर्णिमा का।
पार्ष्णि–एडी।
पिठर–स्थाली-बटलोई।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिण्डी–शरीर।
पितृकल्प–पिता के तुल्य।
पुद्गव–बड़ा बैल।
पुत्री–पुत्रयुक्त।
पुरोगम–प्रधानपुरुष।
पुलिन्द–म्लेच्छों की एक जाति।
पुष्कर–वाद्य विशेष। ०एक सरोवर, ०एक द्वीप।
पुष्कर–हाथी की सूंड का अग्रभाग।
०क्षेत्र विशेष।
पुष्करार्ध–कमल रूप पूजा की सामग्री।
पुष्करिणी–कमलों से युक्त वापिका।
पुष्पधन्वा–कामदेव।
पुष्पवन्तौ–सूर्य-चन्द्रमा।
पूषन्–सूर्य।
पृथ्वी–विशाल।
पोगण्ड–विकलांग।
पौलोमी–इन्द्राणी।
प्रकाण्डक–यष्टि नामक हार का एक भेद।
प्रकाण्डकयष्टि–जिस के बीच में क्रम कम से बढ़ते हुए पांच मोती हों ऐसी एक लड़वाली माला।
प्रकृति–प्रजा।
प्रजा–पुत्र।
प्रणाम्या–असंमत-अप्रिय स्त्री।
प्रतायिनी–विस्तारिणी।
प्रतायिनी–विस्तृत।
प्रतिक्रमण–लगे हुए दोषों का प्रायश्चित्त लेना।
प्रतिच्छन्द–प्रतिनिधि।
प्रतिपत्तृ–शिष्य-श्रोता।
प्रतियातना–प्रतिबिम्ब।
प्रतिशिष्टि–प्रतिनिधि-तत्सदृश।
प्रतीक्ष्य–पूज्य।
प्रतीन्द्र–इन्द्र से नीचे का पद धारण करने वाला।
प्रत्यय–ज्ञान।
प्रमित्सु–नापने के इच्छुक।
प्रवीचार–मैथुन।
प्रवीचार–मैथुन।
प्रव्रज्या–दीक्षा। अभिनिष्क्रमण।
प्रसत्ति–प्रसन्नता।
प्रसेन–गर्भस्थ बालक के ऊपर का आवरण=जेर।
प्रस्तर–छन्द शास्त्र का एक प्रकरण-प्रत्यय।
प्रस्नुवाना–दूध देती हुई।
प्राज्या–श्रेष्ठा।
प्राबोधिक–जगाने के कार्य में नियुक्त।
प्रालम्ब–हार विशेष।
प्रालेयांशु–चन्द्र।
प्रावृषेण्य–वर्षा काल का।
प्रांशु–ऊंचा।
प्रीतिंकर–प्रीति उत्पन्न करने वाला।

फ

फलकहार–अर्धमाणव हार के बीच में यदिसय मणि लगा हो तो उसे फलकहार कहते हैं।

ब

बठर–स्थूल।
बद्धजीव–अष्ट कर्म से युक्त संसारी जीव।
बन्ध–आत्मा और कर्मों का नीर क्षीर के समान एक क्षेत्रावगाह होना।
बलाहककाकार–मेघ के आकार।
बहुरूपक–अनेक भूमिकाओं से युक्त।
बहुश्रेयान्–अत्यंत कल्याण से युक्त।
ब्रह्मोद्या–ब्रह्म-सर्वज्ञ के द्वारा कही हुई।
बीभत्सु–घृणित।
बुघ्न–मूल।
बुभुत्सा–जानने की इच्छा।
बुभुत्सु–जानने का इच्छुक।
बोधि–रत्नत्रय।
ब्रध्न–सूर्य।
ब्रध्न–सूर्य।
ब्रह्मसूत्र–जनेऊ।

भ

भगण–नक्षत्रों का समूह।
भटब्रुव–कायर योद्धा।
भरतात्मज–भरत चक्रवर्ती का प्रथम पुत्र अर्ककीर्ति।
भागवत–भगवान् सम्बन्धी।
भागीरथी–गंगा नदी।
भामह–काव्य-कला प्रतिपादक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिस–मृणाल।
भीमयोगी–भयंकर सांप।
भुजिष्या–चेटी।
भूतवादी–पृथिव्यादी चार भूतों के द्वारा जीव की उत्पत्ति मानने वाला चार्वाक।
भूतोपसृष्ट–जिसे प्रेत की बाधा है।
भोक्ता (भोक्तृ)–भगवान् के १००८ नामों में एक नाम।

म

मकराकर–समुद्र।
मङ्गलाष्टक–आठ मंगलद्रव्य। १. छत्र, २. ध्वज, ३. कलश, ४. चामर, ५. सुप्रतिष्ठक (ठौना), ६. भृंगार (झारी), ७. दर्पण और ८. तालपत्र (पंख)
मणिसोपान–जिसमें नीचे सोने के पांच दाने लगे हों ऐसा फलकहार।
मदनोत्कोचकारिन्–काम के उद्रेक को करने वाला।
मधुकृत्–मधुमक्खियां।
मधुव्रतं–भ्रमर, पक्ष में मद्यपायी।
मध्येयवनिकम्–परदा के भीतर।
मनु–भगवान् आदिनाथ।
मनु–भगवान् वृषभदेव का पुत्र।
मन्द्र–गम्भीर।
मम्मट-काव्य विचारक।
मन्मनालपित–अव्यक्त-तोतली बोली।
मन्वन्तर–एक कुलकर से दूसरे कुलकर के होने का मध्यवर्ती काल।
मरीमृजाः–बार-बार मार्जन करते हुए।
मरुद्–देव।
मरुमरीचिका–मृगतृष्णा।
मसृण–स्निग्ध, चिकनी।
महत्तर–प्रधान पुरुष।
महाङ्घ्रिप–कल्पवृक्ष।
महाप्रज्ञ-बुद्धिमान।
महाप्रज्ञप्तिविद्या–विद्याधरों को सिद्ध होने वाली विद्याओं में से एक प्रमुख विद्या।
महाप्राव्राज्य–दैगम्बरी दीक्षा।
महार्धक–महामूल्य।
महास्थपति–चक्रवर्ती का रत्नस्वरूप विश्वकर्मा।
माणव–जिसमें २० लड़ियां हों ऐसा हार।
माणवक–बालक।
मातरिश्वा–वायु।
मातुलिङ्ग–बिजौरा।
मार्गद्वय–१. शब्दालंकार, २. अर्थालंकार।
मार्तिकै–अच्छी मिट्टी से बने हुए।
मारुति-पवन कुमार।
मित्रमण्डल–सूर्यबिम्ब।
मुक्त–अष्टकर्म से रहित शुद्ध जीव जिन्हें मोक्ष प्राप्त हो चुका होता है।
मुनीनेन–मुनीन्द्र सूर्य, मुनि+इन+इन।
मुरज–मृदंगाकार शिखर।
मूर्द्धज–बाल।
मूषा–सांचा (धातुओं के गलाने का पात्र)।
मृग–पशु।
मृगयु–शिकारी।
मृषा-झूठ।
मेधाविनी–अत्यंत बुद्धिमती।
मैरवी–मेरु सम्बंधी।
मोच–कदली।
मौख–मुख सम्बन्धी।

य

यतिचर्या–मुनियों के आहार की विधि।
यवीयस्–तरुण।
यशस्य–यश को बढ़ाने वाला।
यादस्–जलजन्तु।
यामिनी–रात्रि।
यायजूक–पूजा करने वाले।
युग–जुंआरी। (चार हाथ प्रमाण)।
युग्यक–पालकी।
युतसिद्ध–पृथक् सिद्ध।
योग–समाधिमरण। ०जोड़ मिलान।
योग–अप्राप्त प्राप्य वस्तु की प्राप्ति होना।
योगबीज–ध्यान के निमित्त।
योगीन्द्र–राजा वज्रनाभि के पिता वज्रसेन महाराज मुनि होने पर योगीन्द्र कहलाये। ०एक कवि।

र

रजस्वला–पराग से सहित, पक्ष में रजस्वलाएं-मासिक धर्म से युक्त स्त्रियां।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रत्नसमुद्गक–रत्नों का पिटारा।
रत्नावली–रत्नों की वह माला जो सुवर्ण और मणियों से चित्रित होती है। ०व्रत विशेष।
रथकड्या–रथसमूह।
रथाङ्ग–गाड़ी का पहिया।
रश्मिकलाप–जिसमें ५४ लड़ियां हों ऐसा हार।
रसातल–नरक।
राजक–राजाओं का समूह।
राजत–चांदी के बने।
राजन्वती–योग्य राजा से युक्त।
राजन्वती–योग्य राजा से युक्त पृथिवी।
राजा–चन्द्रमा।
राम–बलभद्र।
रिरंसा-रमण–क्रीड़ा की इच्छा।
रूपक–नाटक।
रेचक–भ्रमण, नृत्य करते-करते फिरकी लगाना।
रैधारा–धन की धारा।
रैराट्–कुबेर।
रोदसी–आकाश और पृथ्वी का अन्तराल।
रौक्म–सुवर्ण सम्बन्धी।

ल

लव-एक प्रमाण विशेष। राम का पुत्र।
ललिताङ्ग–सुंदर, शरीर वाले, पक्ष में भगवान् ऋषभदेव की एक देव-पर्याय का नाम।
ललिताङ्गक–सुंदर शरीर का धारक।
ललिताङ्गचर–पहले का ललितांग।
लुब्धक–म्लेच्छों की एक जाति।
लौकान्तिक–ब्रह्म स्वर्ग में रहने वाले देवों की एक जाति।
लौकायतिकी–चार्वाक मत सम्बन्धी।

व

वज्रसङ्घ–वज्र के समान सुदृढ़ जांघों वाले, पक्ष में भगवान् ऋषभदेव की पूर्वपर्याय का नाम।
वज्रनाभि–वज्र के समान स्थिर नाभि से युक्त, पक्ष में भगवान् ऋषभदेव की पूर्वभवपरम्परा का एक नाम।
वज्राकर–हीरे की खान।
वज्री–इन्द्र।
वयस्या–तरुण अवस्था से युक्त।
वर्ण–ब्राह्मणादिवर्ण, पक्ष में अक्षर।
वर्षधर–वृद्ध कञ्चुकी अन्तःपुर के कर्मचारी।
वर्षवृद्धिदिन–जन्मोत्सव का दिन।
वर्षीयस्–वृद्ध।
वर्ष्मन्–प्रमाण, वर्ष देह प्रमाणयोः इत्यमरः।
वराककः–दीनप्राणी-बेचारा।
वरारोहा–उत्तम स्त्री।
वरीभृष्टि–अतिपाक।
वरीवृष्टि–अतिछेदन।
वलिभ–वलि-नाभि के नीचे विद्यमान रेखाओं से युक्त।
वल्लभिका–प्रिय देवांगनाए।
वल्लूर–सूखा मांस।
वसुन्धरा–पृथिवी।
वंशोचित–बांस के योग्य, पक्ष में कुल के योग्य।
वाग्मिन्–प्रशस्त वचन बोलने वाला।
वाङ्मय–व्याकरण, छन्द और अलंकार शास्त्र के समुदाय को वाङ्मय कहते हैं।
वाचंयमत्व–मौनव्रत।
वाजिवदन–किन्नर।
वातरशन–दिगम्बर।
वातवल्कला–दिगम्बर।
वादिन्–शास्त्रार्थ करने वाले।
वार्क्ष–वृक्ष सम्बन्धी वृक्षस्येदं वार्क्षम्।
वालधि–पूंछ।
वालधि–पूंछ।
वाल्लभ्यलाञ्छन–पतिपने का चिह्न।
वास्तुविद्या–मकान बनाने की विद्या।
विकच–विकसित।
विकृत्य–विक्रिया करके।
विचक्षण–विद्वान्।
विचतुरक्रीडा–विशिष्ट चातुर्यपूर्ण क्रीडा।
विजयच्छन्द–जिसमें पांच सौ लड़ियां होती हैं ऐसा हार। इसे नारायण तथा बलभद्र पहनते हैं।
वितनु–शरीर रहित।
वितस्ति–बारह अंगुल के एक वितस्ति होती।
विदेह–शरीर रहित मुनि।
विधुवीध्रः–चन्द्रमा के समान शुक्ल।
विद्रुम–मूंगा।
विधियः (विधि)–बुद्धिहीन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनेय–शिष्य।
विप्रलब्ध–ठगा हुआ।
विप्रलम्भक-वंचक–ठगने वाले।
विभावरी–रात्रि।
विमान–प्रमाण रहित-अत्यंत विस्तृत, विगतं मानंयस्य सः।
विमान–प्रमाण करता हुआ।
वियुत–दस लाख।
वियुतासु–मृत।
वियोग–नियम से करने योग्य कार्य। ०विछोह।
विरूपक–निकृष्ट-नीच।
विवक्षा–कहने की इच्छा, वक्तुमिच्छा विवक्षा।
विवक्षु–वक्तुमिच्छुर्विवक्षुः, धारण करने का इच्छुक।
विविक्ता–जानने के इच्छुक।
विशङ्कट–विशाल।
विशिख–बाण।
विश्राणन–दान।
विश्वजनीन–सर्वहितकारी।
विश्वदिक्कम्–सब दिशाओं में।
विश्वनाथ–काव्यानुशासनकर्ता।
विश्वभर्तृ–भगवान् वृषभदेव।
विश्वरीश–विश्वरी-पृथिवी का ईश।
विश्वास्या–विश्वतोमुखी, जिसके चारों तरफ गोपुरद्वार थे (पक्ष जो प्रत्येक विषय का प्रतिपादन करने वाली थी)
विश्वाण–आहार।
विष्वाण–भोजन।
विष्टि–भोजन।
विष्टिपुरुष–मजदूर।
विसंस्थुलासनस्थ–नाना प्रकार की अटपटे आसनों से स्थित।
वृत्रहन्–इन्द्र।
वृषभकवि–श्रेष्ठ कवि।
बृंहित–हाथी की गर्जना।
वेणुध्मा–बांसुरी बजाने वाले।
वेधस्–भगवान् वृषभदेव।
वैदग्धी–शोभा।
वैदग्धी–सौन्दर्य-शोभा।
वैदग्ध्य–चतुराई।
वैयात्य–धृष्टता-लज्जा।
वैशाखस्थ–पैर फैलाकर खड़े हुए।
व्यतिकर–कार्य।
व्यलीक–असत्य।
व्यातुक्षी–फाग।
व्याधि–शारीरिक व्यथा।
व्याहृति–वाणी-दिव्यध्वनि।
व्युत्सृष्टकाय–जिसने शरीर से ममताभाव छोड़ दिया है ऐसा मुनि।

श

शङ्ख–नौ निधियों में एक निधि।
शतधीचर–शतधी मन्त्री का जीव। (भूतपूर्व चरट्)
शतमख–इन्द्र।
शताध्वर–इन्द्र।
शयु–अजगर (दण्ड विद्याधर का जीव)।
शरद्–वर्ष 'हायनोऽस्त्री शरत्समा'।
शरीरान्वयिगुण–वपुः कान्तिश्च दीप्तिश्च लावण्यं प्रियवाक्यता। कलाकुशलता चेति शरीरान्तवयिनो गुणाः।
शल्क–खण्ड।
शवर–म्लेच्छों की एक जाति।
शाड्वल–हरी-हरी घास से युक्त।
शातमातुर–सौ माताओं का पुत्र।
शातित–तोड़े हुए, गिराये हुए।
शार–विविध वर्णवाली।
शार्वर–शर्वरी-रात्रि सम्बन्धी।
शिखावल–मयूर।
शिखावल–मयूर।
शिलोच्चय–पर्वत।
शिवा–श्रृगाल।
शीतक–मन्द कार्य में देर करने वाला।
शीतलिका–व्यंजन पंखा।
शीर्षक–यष्टि नामक हार का एक भेद।
शीर्षकयष्टि–जिसके बीच में एक बड़ा मोती लगा हो ऐसी एक लड़की माला।
शुचि–ग्रीष्म ऋतु-आषाढ़। ०पवित्र, ०शुद्ध।
शुद्धांत–अन्तःपुर।
शुभंयु–कल्याण से युक्त, शुभ मस्ति येषां ते शुभंयवः 'अहंशुभमोयुर्स' इति मतुवर्थे युप्रत्यय।
शूद्रक–एक नाटककार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रद्धादिगुणसम्पन्न–१. श्रद्धा, २. शक्ति, ३. भक्ति, ४. विज्ञान, ५. अलुब्धता, ६. क्षमा और ७. त्याग इन सात गुणों से युक्त। २०।८१, ८२, ८३, ८४।

श्राद्ध–श्रद्धा से युक्त।

श्रायंस–ग्यारहवें श्रेयान्सनाथ तीर्थंकर सम्बन्धी पुराण।

श्रीधर–लक्ष्मी के धारक, पक्ष में भगवान् ऋषभदेव की पूर्वभव परम्परा में एक देव पर्याय का नाम। ०कवि।

श्रेयान् (श्रेयान्स)–कुरुजांगल देश हस्तिनापुर के राजा सोमप्रभा का छोटा भाई।

श्रोता के आठ गुण–१. शूश्रूषा, २. श्रवण, ३. ग्रहण, ४. धारण, ५. स्मृति, ६. ऊह, ७. अपोह, ८. निर्णीत।

शूना–स्थूल।

श्वभ्र–नरक।

श्वाभ्री–नरकगति।

श्वेतभानु–चन्द्रमा।

ष

षट्कर्म–असि, मषि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या–ये छह कर्म हैं।

षड्भेदभाव–१. जीव, २. पुद्गल, ३. धर्म, ४. अधर्म, ५. आकाश, ६. काल।

षाड्गुण्य–सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, आश्रय ये छह गुण हैं।

स

संक्रन्दन–इन्द्र।

सचार–पादविक्षेप से सहित।

सजानि–स्त्री सहित।

सजानि–स्त्री सहित (जायया-सहित: सजानि:)

सत्यङ्कार–बयाना।

सत्त्वानुषङ्गीगुण–सत्यं शौचं क्षमा त्याग: प्रज्ञोत्साहो दया दम:। प्रशमो विनयश्चेति गुणा: सत्त्वानुषङ्गिण:।

सदाद्य–सत् को आदि लेकर–सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर, भाव, अल्पबहुत्व, निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति, विधान-ये अनुयोगद्वार।

सधर्मा–समान।

सध्रीची–सहचरी, श्रीमती।

सनाभि–बन्धु।

सपर्या–पूजा।

सप्तकक्षा–हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल, बैल, गन्धर्व, नर्तकी।

सप्तनय–१. नैगम, २. संग्रह, ३. व्यवहार, ४. ऋजुसूत्र, ५. शब्द, ६. समाभिरुढ़, ७. एवं भूत।

सप्तार्चिष्–अग्नि। २।९।

सप्तार्चिष्–अग्नि।

सभवान्–पूज्य।

सभावना–अहिंसादि व्रतों को पच्चीस भावनाओं से सहित।

सभावना–सभाओं के रक्षक देव।

समय समयसुन्दरगणि। ०समयसार, ०सिद्धान्त।

समया–समीप २२।२०७।

समवृत्त–जिसके चारों चरण एक समान लक्षण वाले हों ऐसा।

समा–काल विभाग।

समाहित–एकाग्रचित्त।

समिद्ध–अत्यंत तेज।

समीहा–चेष्टा।

सर्पण–पृथिवी पर सरकना।

सर्वज्ञोपज्ञ–सर्वज्ञ के द्वारा प्रथम उपदिष्ट।

सर्वार्थसिद्धिनाथ–सब सिद्धियों के स्वामी, पक्ष में भगवान् ऋषभदेव की पूर्वभव-परम्पराओं वे सर्वार्थसिद्धिनामक अनुत्तर विमान के स्वामी हुए।

सरस्वत्–समुद्र

सलय–ताल से सहित।

साकूता–अभिप्रायवती।

साकेत-एक नगरी।

साचिप्य–सहायता।

सात्त्विकबल–आत्मबल।

साधन–सेना।

साधन–सेना।

साधारण–देश का एक भेद।

साध्वस–भय।

सानुजन्मा–छोटे भाईयों से सहित।

सामायिक–चारित्र का एक भेद।

सामि–आधा।

सारव–आरव-शब्द से सहित।

सारव–सरयूनदी सम्बंधी।

सार्व–सर्वहितकारी।

सार्वभौमत्व–समस्त पृथिवी का स्वामित्व-चक्रवर्तीपना (सर्वस्या भूमेरधिप: सार्वभौमस्तस्य भावस्तत्त्वम्)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सारस–सरः-सरोवर सम्बंधी।
सासार–आसार-धाराप्रवाह वर्षा से सहित।
सितच्छदावली–हंसपंक्ति।
सितांशुकप्रति–सफेद वस्त्र से ढका हुआ।
सुत्रामन्–इन्द्र।
सुत्रामा(सुत्रामन्)–इन्द्र सुदती-सुंदर दांतों वाली स्त्री।
सुधाशी–देव।
सुधासूति–चन्द्रमा।
सुपर्वा–उत्तम पौरों से सहित।
सुरकुज–कल्पवृक्ष।
सुरभि–कामधेनु।
सुरसद्मन्–स्वर्ग।
सुराग–कल्पवृक्ष।
सुराग–कल्पवृक्ष। (सुर+अग
सुराग–कल्पवृक्ष। (सुर+अग)
सुरेभ-सु–उत्तम रेभ शब्द से युक्त।
सुरेभ-सु+इभ देवों के हाथी।
सुविधि–उत्तम भाग्य से युक्त, पक्ष में भगवान् ऋषभदेव की पूर्व पर्याय का एक नाम।
सुवृत्त–गोल।
सूक्ष्मादि–सूक्ष्म, अन्तरित, दूरवर्ती।
सूति–मणिमध्या यष्टि का एक भेद एक लड़की माला जिसमें बीच में नीचे एक मणि लगा रहता है।
सूत्रधार–शिल्पाचार्य-मकान आदि का नाम कराने वाला।
संख्या–छन्दशास्त्र का एक प्रकरण-प्रत्यय।
संविग्न–संसार से भयभीत होकर वैराग्य में तत्पर रहने वाले पुरुष।
संवृति–भ्रान्ति।
संव्यान–उत्तरीयवस्त्र।
संस्त्याय–रचनाविशेष।
संहार–प्रलयकाल।
सोपान–फलक हार में नीचे यदि सोने के तीन दाने लगे हों तो उसे सोपान कहते हैं।
सौगन्धिक–सुगन्धित पदार्थ।
सौध–अमृत सम्बन्धी, सुधाया अयं सौवः।
सौमुख्य–अनुकूलता।
सौरभेय–वृषभ।
सौरी–सूर्य सम्बंधी।
स्तन्य–दुग्ध पिलाने में।
स्तम्बेरम–हाथी सम्बन्धी (स्तम्बेरमस्येदं स्तम्बेरमम्)
स्थानीय–राजधानी का दूसरा नाम।
स्नानद्रोणी–स्नान करने का अप।
स्पृश्यकारु–नाई आदि।
स्फाति–वृद्धि।
स्फाति–विस्तार।
स्वःप्रष्ठ–स्वर्ग श्रेष्ठ-इन्द्र।
स्वभ्यस्त–अच्छी तरह अभ्यास किया हुआ।
स्वर्ग्य–स्वर्ग की प्राप्ति का साधक।
स्वरुद्भूतगन्ध–स्वर्ग में उत्पन्न गन्ध।
स्वस्रीय–भानेज।
स्वापतैयक–घन।
स्वायंभुवी–आदिनाथ भगवान् की वाणी।
स्वायंभुव–स्वयंभू भगवान् वृषभ देव-द्वारा कहा गया।
स्रग्धरा–माला को धारण करने वाली।
०एक छन्द नाम।

ह

हरि–इन्द्र।
हरित्–दिशा।
हरिविष्टर–सिंहासन।
हरिभद्र–आचार्य नाम।
हरिषेण–एक आचार्य विशेष।
हार–यष्टि-लड़ियों के समूह से बनी माला हार कहलाती है।
हार–जिसमें एक सौ आठ लड़ियां हों उसे हार कहते हैं।
हारिन्–सुंदर, रमणीय, कान्तियुक्त।
हारिन्–मनोहर।
हिमानी–अत्यधिक बर्फ, महद् हिमं हिमानी।
हिरणमयी–सुवर्णमयी।
हृदिशय–कामदेव।
हृषीक–इन्द्रिय।

◇◇◇

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Serving JinShasan
146909
gyanmandir@kobatirth.org

New BBC

न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन
5824, शिव मंदिर के पास, न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली - 110007
दूरभाष : 91-11-23851294, 23850437
ई मेल : newbbc@indiatimes.com

ISBN 81-8315-048-9
9788183150484

For Private and Personal Use Only